جلد سوم المائده ٥ الانعام علامه علام رواس میری بخالی رو دارانه و میرید کراچی.

ناشر فريديك شال مهم-أردوبازار الايوريم

البئ الوالفات المائخ

فهرست مضامين

| رامار | عثوان | 3 | فبرنه | متوان | ستى |
|-------|---|-----|-------|--|------|
| | سورة المائده | ra | | امر کامعتنی و بوب مونے پر دلائل | FI |
| 1 | t 200 | 14 | M. | ممانعت كيدوام كم مقتنى كى جحقيق | rr |
| * | ناشتعل | PA | | ني ما المار كالمار المار | 7 |
| - | سورة التساءاور الماكروش ارجاط اور مناسب | p. | r. | ای مالی کافعل کے سات متعباور | |
| * | سورة الماكره كم مضايين كاخلام | 100 | | واجب بول كاشابله | ("(" |
| ۵ | ينايهاالذين امتوااوقوابالمقود | | n | التني مقدار داومي ركهناست، | 4 |
| | (1 | PF | _ | آواسد كوروس استبلاشد والنكام | MA |
| 4 | منود كالنوى أور عملي معنى | m | m | حرمت عليكم الميتة والدمو | |
| 4 | متود کاشرمی معنی | rr | | لخم النعنزير (٣٠٠٠٠٥) | 14 |
| A | منؤد کی اقتهام | rr | | مردار کامنی اور اس کے شرق احکام | àl |
| 4 | يسهيدسة الانعام كامعتى | rr | 10 | خون کے شری اعلم | or |
| 10 | جانورون كذرع كرفيراعتراض كاجواب | ro | rı | خزر کے جس اور حرام موے کلیان | or . |
| | شعار الله كالغوى اور شرعي معنى | n | | "مااهل كفيرالله بما كامتى اوراسك | |
| | حرمت والي مينول مدى اوز قلا كركابيان | .m | | 46167 | or |
| - | آيت نه كوره كاشان زول | 74 | PA | السنعنفة كاستادراس كاشرى عم | ٥۴ |
| - | آيت يُركوره كم مفوخ اوني المفوخ ند | | 84 | الموقوذة كاعتى اوراس كاشرى عم | ۵۵ |
| | اوت عن اختاف | 74 | *** | المستردية كاستى اوراس كاشرى منهوم | ۵۵ |
| 10 | ميغه امرك متعدد مواضع استعل | FA | n | النطيحة كاستى اوراس كاثرى عم | 40 |
| 11 | تقاضل امر كوامد عوفي وليل | 6- | FF | جس جانور كودر عدے في كمالياء المكاشرى عكم | 20 |

| منى | عتوان | تبريكم | مغ | | 10 |
|-----|--|--------|-----|---|------|
| | جس شکار یاد بید پر سم الله ندر حمی گئی مواس کے | or | M | "الاماذكيتم"كمستني مدكليان | 17 |
| | عمم من فقهاء احتاف كانظريه اورائمه الله ك | | 04 | نسب كامعنى اوراس كاشرى تحكم | 10 |
| 40 | دلاكل كرجوابات | | ۵۷ | ازلام کامتی | +0 |
| 44 | غليل مكان اورد يكر آلات عشكار كرف كاعكم | ٥٢ | | نجومول كاينول اور ستاره شامول سے خيب كى | gar. |
| 49 | بندوق عارے موے شکار کی محقیق | | 44 | باتعى دريافت كرك كي ممانعت | |
| A* | بعدد ك وكار كورام كنوافي علام كدلاك | | 04 | مىدر يش مم كم معلق الحكره كرك كبداء | |
| | بعدوق كالكوطال قرارديندالعاء | | 4 | استخاره كرسية كالمريقة | |
| As. | كرواد كل | | | قرائن كي مناء يرمستنبل ك تلني اوراك عاصل | - |
| | بندول كے شكار معلق مصنف كى مختين اور | _ | 40 | FK2_5 | |
| A٠ | بحث ونظر | | - | في عدن عبدالوباب بعدى كالمغير مسلين ير | Pr. |
| M" | قرآن اور مديث يسيان كردورام جانور | | | بحثونظر | |
| A | افل كتاب كي تعريف اوران كي زيير كي تحقيق | | 10 | معزت على كى ظائت كافير منصوص موا | f* |
| | اال كاب مردول المسلمان مورتول ك | | | تدري الحكام كازول دين كالل موسائ | m |
| 4 | لكاح عائزهم _ في ديد | | 10 | منانى شير | |
| 1 | ويكر كفارك يرتكس الل كالب كازيوك | | | الملام كاكال دين بوغاديان مابته كال | |
| 61 | ملال بونے کی وجہ | _ | 77 | اوتے منافی نسیں | |
| ** | الل كتاب كور تول من مسلمان مردول ك | | 42 | يع ميادالتي ويهد كالميدود | • |
| 61 | نكاح طال مو في كاوجه نكاح طال مو في كاوجه | | U | يوم فاروق اعظم المنطقين برتعليل ندكر الا | |
| -11 | | | /1 | خلاف سياه محليه كامظامره | |
| d). | آزاداورپاک دامن مورنول کی تخصیص کادجه | | | مرو عيم الامت منايا جلية كاسفتي فيم | |
| dan | بايهاالذين امتوااذا قمتم الى | | 10 | ضرورت کی ماء پر حرام چیزوں کے استعمال کی | |
| 44 | الصلوة فاغسلوا(١) | | 10 | المانية | |
| 41- | آیت وضوی مابقد آیات ماسیت توسید ما در در | | 4 | 1.0.18.12M/c.745.1 | |
| dh | آمت د ضوکا شان نزول | | | زر بحث آیت کامعنی اور شان نزول دیم کراتی اور اور سی شده و بیرو | |
| | آیت و ضوکے زول سے پہلے فرضیت و ضوکا | W. | 48 | شکاری اقسام اور ان کے شری ادکام | |
| 40 | يان | | 28 | فكاركي شرائكا كليان | |
| | شرائع سايته اور كى دوريش قرضيت وضوك | | 45" | فكاركر فيوال جانورول كليان | ٥ |
| 44 | متعلق اطوعث | | | شكاري كت كم معتم (مد ما عدو ي) و ف | 0 |
| A.P | وضوك اجرو تواب كے متعلق اطاريث | 4. | 48 | كاسعياراور شرائظ | - |

غيان القر أن

| منۍ | عنوال | تبرعر | من | | A. |
|-------------|---|-------|------|---------------------------------------|----|
| #Z | مل لغات | * | 94 | ايك وضوت كى تمازى برعة كابواز | 4 |
| U '_ | بنوامرا كنل كى عمد فكنى كليان | | [00 | وضوك متفق عليه قرائض | 41 |
| | بعض رمولول كانكار كادجهت تجلت نسي | | [an | مرك مى كالقدارش قدام المد | 45 |
| PA | اوى افواد نيك عمل كيد اول | | 141 | ورون كرموتي دالاكل | 4 |
| #4 | أورات كي تحريف من علاء ك نظريات | | | ي ول كرموني علاء شيد كاعتراضات | 40 |
| 11-1 | انخزاج سائل | | 101" | ـــــــــــــــــــــــــــــــــــــ | |
| | ياهل الكتاب قدحاء كم | | H | وضوي علف فيه فرائض | |
| 01-1 | رسولتاييين لكم (عاسمه) | _ | 100 | وشوكى سنتين | |
| | رسول الله ملي يح تور او في متعلق | 46 | PA | وننو کے متجبات | 41 |
| 11-1- | علاوك نظريات | Þ | [4] | و فنوے آواب | 1 |
| 19-1- | الى مالكا كاورحى اوفى رول كل | | 104 | وخواة ويدائدامور | |
| W-Z | ئى ما كالم ما كالوريد اعت مو في دولا كل | | Nº | تهم كى شرط كم القداورد يكرانكام | |
| 174 | قرآن جيدك فوائداور مقاصد | | | واذكروانعمة الله عليكم | Ar |
| fla.e | حضرت عيلى كے فدا ہونے كارو | | W. | ميشاقه (۲۰۰۰۱) مؤلشه | |
| | وقالت اليهودوالنصارى نحن | he" | 40 | الله كي المت اوراس كم مدوستان كاستى | |
| 151 | ابتاءاللهواحياءه(۱۸۰۰۰۰۰۱۱) | | 14 | مح اور کی شاوت کی ایمیت | AF |
| | يمودكاس دعوى كاردك وهالله كميني اور | | | ناال كوسند بالانسنس دين كلعدم جوازاور | AO |
| IM | اس کے محبوبیں | 2 | M | بحشونظر | |
| ur'r | فترحه كالغوى أورامطلاحي معنى | 144 | 11 | شادعه کی تعریف | |
| 100 | معرت آدم ے لیکر بیدنا کے وہی تک کازانہ | 104 | | ناال مض كودوث دية كاعدم جوازاور | 14 |
| | واذقال موسى لقومه يقوم اذكروا | PA | 1. | بحضونكم المالية | |
| No. | نعمة اللمعليكم (٢٠٢٠١) | H. | W | طلب منعب كي مختيق | |
| 100 | آیات مابتدے مناسبت | | 41 | موجوده طريقه التقلب كافيراملاي ووا | 14 |
| 100 | بنوامرا كل كانبياء كلبيان | | | اميداركك شرانكا الميت نداوي | |
| IP4 | بنوامرا كل كے طوك (بلوشامون) كلبيان | | PT | अंध करे | |
| 1074 | وامراكل كالب تائش سب الفلى اونا | | | ولقداعذاللهميشاق بني | |
| Mad | ارض مقدسه كامعداق | | #A | اسرائيل(۱۳۰۰۰۰۳) | |
| #4 | جبارين كلبيان | * | IT | مابقه آيات ارتباط | 41 |

| مني | موان | تبرغار | منح | مثوان | برثار |
|------|--|--------|------|---|-------|
| | ذابساربد كاروشن فن داكو كمرف | 15-1 | | فاذهب انتوں كئيں يوامراكل ك | 110 |
| CAL. | 1762-11 | | IFA. | كفرادر فسق كي وجوبات | |
| | نداب اربدى روشى مى داكوك مرفسال | 112 | 184 | ميدان تيدي بوامراكل كابعكنا | IN. |
| CM1 | لوشخ ک سزا | | 1974 | دعرت يوشع كر لي سورج كو فحمرانا | IL |
| | دامب ربع كاروشى ش ذاكو كالل كال | | 10+ | ्रे मुद्धा अन्वर के हिंदी | .KA |
| 00 | اور مل لو نح ک سزا | | SÓL | مديث رومشس كى سندكى محتيق | |
| | صدود کے کفارہ مولے میں فقماد احتاف اور | 1074 | | واتلعليهمنياابنى ادم بالحق | 15.0 |
| m | فتهاما كليه كانظريه | | (a) | (r∠r1) | |
| | صدد کے کفارہ ہونے میں فقہاء شافعیہ کانظریہ | 100 | M | ريد آيات اور مناسب | |
| nz. | اورا مناف كاجواب | | | تا تل كالل كالل كو تل كرك | FF |
| NA. | صدودك كفاره وقي فتماه عنبليد كانظريه | (7) | IOF | تتميل | |
| | مدود کے کفارہ ہونے کے متعلق دو مدریوں | UT. | | الل كاس قول كي وجيد ك ميرااور تيراكناه | rr |
| 114 | مِن تَعْمِينَ | | 600 | تير _ عذمه کے | |
| | يبايهاالذين امنوااتقوااللهو | 100 | 104 | قائل ك قل كرك كيفيت | |
| 14. | ابتغوااليهالوسيلة(٢٠٠٠-٢٥٠١) | | | برنيك اوريد كام كاعباد كرف والول كويعد | |
| 141 | آيات مليتدئت مناسبت | 100 | M | والون كے عمل مد ملام متلب | |
| | وسيله بدمعني ذراجه تغرب | 100 | 104 | تانيل كالنجام | |
| | انبياء عليم انسلام اوراولياء كرام محوسله - | m | N. | من احل ذلك كتبناعلى بنى | 11/2 |
| 141 | رعاكاجواز . | | ΙΔΛ | اسرائيل(۲۳۲۳) | 1 |
| | انبياء عليم السلام اور اولياء كرام كوسيلات | 84 | 104 | آیات مابتد سے منامیت | I'A |
| 12F | دعاكے متعلق احلون | 88 | 116 | ایک اندان کو قل کرناتام انداوں کے قل کے | |
| KF | وسيله بدمعني درجه جنت | WA. | d'in | راير من طرحه و 85 | |
| 128 | وعاواذان يس مديث شفاعت كي تحقيق | | LA | شك نزول | |
| 120 | دعاءاذان كي بعض دير كلمات كي تحقيق | IQ+ | LAL | حرابه (داکه) کالغوی معنی | tr" |
| 141 | وسيلب معني مرشد كال | IOI | LA. | دُاكد كي اصطلاحي تعريف | 11-1 |
| | آیا اللہ نے کافرے کفر کار اور کیا تھایا سے | tor | C.M. | داكه كاركن | |
| KZY | ايلن | | IW. | | |
| IA+ | آیات مابقے مامیت | ior | LA | اكر كرم كي تعميل | 400 |

| منح | موان | برعا | منح | عنوان | ルウ |
|------|---|------|-----|---|-------------|
| j*** | تعاص کے عم کا شان فزول | | | امر قد کالفوی معنی | 101 |
| | ذى كىد كى ملكان كوقل كريمي | 129 | IA+ | مرق كاصطلاحي معنى | 100 |
| P+9 | غرابب نغماء | | IA+ | شان نزول | |
| ** | تورات ش قر آن مجيد كي صداقت | M. | IA+ | جاليت اور اسلام ش جن كرات كالقركة | 144 |
| l'el | اعصام ك تصاص كى يغيت يس قراب ربد | IN | IAE | چور كالمخ كاشخ كى مكست | ЮЛ |
| 14 | برلدند لين كالمنيلت | iAr | M | ومتصريث يدليل | 104 |
| | وقفيناعلى اثارهم بميسى ابن | M | IN | مد مرقد ك نساب ين الم شاقى كانظر | I.i. |
| r•r | مريسم (۵۰۰۰۰۰۵۰) | | IAF | مد مرقد ك نسلب ين الم بالك كانتري | |
| r-0 | آيات مابت سارتيا | M | M | مدمرة كفال علالما مرين خبل كانظريه | LAL |
| 1.0 | زول قر آن كيدواجيل يرعمل ك عم كى توجيد | No | | مد مرقد کے نصاب میں الم ابو حفید کا نظریہ اور | 14 |
| F+1 | قرآن جيد كاسابته آسال كنابوس كالحافظ وونا | | | ائمہ خلاہ کے جوالیات | |
| req. | ا شرائع سابقہ کے جمت ہونے کی وضاحت | WZ | M | نرب احتاف كم شوت ش احادث | |
| 1-4 | شكان نزول | MA | IAY | كون ملائق كس جكد علاجات؟ | No |
| | يابهاالذين امنوالاتتخذوا | M | MA | جن صور لول يس جور كالمح حيس كاللبا يا | m |
| F+A | اليهود(٥٦۵) | | | يايهالرسول لايحزنك الذين | NZ |
| P=4. | شكن نزول | He | IA | يسارعون في الكفر ٢٢١٢٢١ | |
| | کفارے ماترودی کی ممافعت میں | 191 | N | يهود كالورات من الفتلي أور معنوى تحريف كرنا | MA |
| 110 | قرآن ميدكي آيات | 3 | 191 | الى موالى كايمودى دائيون كورجم كرانا | 119 |
| | كفارك ما تفددوستى كى ممافعت بس اماويث | 198 | M | يودي ن كالعان شدة في في والم الم المان | 14. |
| 110 | اور آخار | | 187 | سحت كاستن اوراس كاسكم | IZI |
| | کفارے دو تی کے حق میں منافقوں کے | PF. | H | رشوت كى التيام اوراس كاشرى تحم | 145 |
| rir | بهانول كابطلان | TL. | 24 | الل ذم كورميان فيعلد كرف كم متعلق | IZ۳ |
| 1111 | حمد ر بمالت اور احد کے حرمد من کابیان | 197 | Ma | ائمداربد كانظريه | |
| rim | الذكى محبوب قوم كمصداق يسمتعددا قوال | Ma | HZ. | موجوده تورات ين آعت دجم | 4 |
| rio | حعرت الويركي ظافت يرولاكل | 199 | i | اناانزلناالتورثة فيهاهدىونور | |
| MZ | معرت او ير معيد ي فعا كل | MZ | R4 | (rrra) | |
| P14 | معرد الويرك فعناكل مسموضوع اعاديث | MA | MA | شرائع سابقه كاجمي جحت ونا | <u>IZ</u> Y |
| 14. | آیت ند کوره کے شان زول می متعدد اقوال | _ | 199 | قرآن كے مطابق فيمليند كرنے كاكفرووا | K |

| منح | منوان | فبرتا | منحد | مثوان | برعار |
|------|--|-------|------|--|--------------|
| | کناوں کو ترک کرنے اور نیکیاں کرنے | | | عفرت على كالمستحق خلافت وي علاوشيد | *** |
| rm | رزق مي وسعة اور فراخي | | PF+ | ي ديل | |
| | يايهاالرسول بلغ ماانزل اليك | | m | ملاء شيعه كي دليل كابواب | 14 |
| rer | من ربك ١٩٥٠ | | | يايهاالذين امنوالاتتخذوا | 14 |
| | ایک آیت کی تلخ د کرنے مطلقاً تبلغ | m | *** | (ac/1) | |
| ree | دسالت كى نفى كس طرى درستىد؟ | - | rrr | مناسبت اورشان نزول | 1-4- |
| | تلخ رمانت اور لوكون ك شرع آبكو | rre | | يهودونسارى اورمت برستول سعدمتملق | r-r |
| rra | محفوظ ر کھنے کے متعلق احادث | | m | قرآبن مجيدى اسطلاح | |
| | معرت على المنظية كاخلانت بالعل يرعلاء | 270 | | مكى اورجنكى معاللات من كفار س خد مت ليخ | |
| 174 | شيعه كاستدلال أوراس كاجواب | | **** | ش دابب | |
| | آيارسول الله ما الله على صرف احكام شرعيدكي | | *** | مناسبت اور شان نزول | |
| P/*4 | تبلغ پرامور تھ ااے تام علوم کی تبلغ پر؟ | | PTO! | ابند اوازان کی کیفیت | |
| roi | الله المنظل كم علم كل تمن التميس | 174 | m | كلمك اذان من أب اتمه | 1.4 |
| rai | ودعم جنكوتم مامت تك يخلاا آب راض ب | PFA | rrz. | صرت ابو مدوره كي روايت كامحل | 100 |
| rar | ووعظم حس كى تمليغ من آب كواحتيار ب | 174 | PPA | كلمات الاست شل وابها تر | \$10 |
| TOP | وهظم جس كافحاء آب رواجب | 11- | 174 | ازان كاجواب | |
| 100 | شك نزول | 777 | 1774 | دعابعد الاذان | |
| roo | میودونصاری کے می عمل کلائی شارندہونا | | | اذان كى فىنىلىت شى احلىت | rir |
| | منعل قرآن سے ان کے کفراور سر کھی کا | 1977 | m | مناسبه عاور شان ندهل | |
| PAY | โลเเป็นประเทศ | 100 | 0.00 | آءت ذكوره كى تركيب شيمات كيوالات | |
| 101 | الصابعون كرفي مالت ص موتى وجير | rrr | FIS | وترى كثيرامنهم يسارعونفي | |
| | ليامرف فيك عمل كرف يربوديون اور | mo | Hele | الارسالاستها | |
| 104 | عيسائيول كى نجلت ، وجلئے كى ا | | | | PIZ |
| 104 | منز کے معنی | | | | |
| ron | وامراتل كلم ايت عدد بارائد هااور برابونا | 3 | | فكى كالحكم نددية اوربرالك مت ندروكة يروعيد | |
| P%* | ميسائيول كم مقيده تشكيث كارد | | | | |
| | لقد كغرالذين قالواان الله | rre | FF2 | مناسبت اورشان نزول | |
| 14. | نالث ثلاثة (١٤١ ١٤) | | PTA | بدالله (الله كلافة) كاستى | 11 |

| مغ | عنوان | تبرنكر | منجد | عنوان | At. |
|-------|---|--------|------|--|-----|
| | المالك كزديك طال كوحام كالمم | PAA | | حقذ من اور مناخرین میسائیوں کا نظریہ شکیٹ | 17. |
| PAI | النيماع | | PE | اوراس کارد | |
| | الم شافعي كيزديك طال كو ترام كراتم ب | 104 | PF | حضرت ميئى عليه السلام ك فدائد اوفي روااكل | rm |
| PAI" | ياتسي | | m | معرت مريم كنيسة بوتيرولاكل | rer |
| | الماح كنديك طال كورام كالم | 171- | - | حعرت عينى طيدالسلام كى عبادت كزارى | rer |
| PAL | المنعى؟ | | PYF | ان کے خدانہ ہونے پر استدالال | |
| | الم أبوصيف كن ديك حلال كوحرام كرياتم | 11 | 276 | غلوحى أورغلوباطل كي تعريفين | ree |
| TAT | يانس؟ | - | | لعن المذين كفروامن بني | 770 |
| | يوى ع كالتو يحرر وام عاس م | PW | m | اسرائيل(٨٣٨٤) | |
| TAF | مغتى قول | | | تبلغ ندكرن كاوجه بنوامرا كل رلعنت | rm |
| | افضل يب كريمي نفس كے تقاضوں كو بورا | rw | MZ | איוויט | |
| TAG | كسادو بحي شرك | | me | نجاشي كاسلام لانا | |
| PAY | مناسبه عاور شان نزول | | | سلمانون كاحبشه جرت كرياد د كفار كمه كان كو | |
| PAN | يمين كالغوى اور اصطلاحي معنى | 276 | m | والبس بلاك كي سي كرنا | |
| YA4 | حم كملك كايوازاورمشروعيت | m | | معرت جعفر كالمجاشى كدرباري اسلام كا | re |
| PAA . | جعوث كالمدشرة والإداد التميس كماسة كابواز | nz | 14. | تعارف کرانا | |
| PA4 | في نفسه قسول كي اقسام | MA | 1 | كفار قريش كاسملمانون كونكلواني معمي | 10 |
| | اناق ابت كرت كراح ممارك | | 14 | र अनुभर | |
| P4+ | متعلق فتهاوي نظريات | | | واذاسمعواماانزلالى الرسول | |
| 241 | حم كما _ 2 كالحريق | | | ترى اعينهم (٨٧٨٧) | |
| 14 | فيرافله كالتم كمان كالمانعت كالتحقيق | 14 | TZT | משטינעל ורחים | |
| rer | يمين لغو كي تقريف | | | يايهاالذين امتوالاتحرموا | |
| Par | | | | طيبت ما احل الله لكم (٨٩عم) | |
| rer | يمين شوس كي تعريف | 125 | 12 | ملال جيزون سے اجتباب كى مماضت | 100 |
| rap | لغاره فتم كى مشروعيت | 1740 | | مباوات اور معللات ش میاند روی کے متعلق | |
| 190 | لقاره حم كالكام من قراب المد | 121 | 740 | آيات اور اطارعت | 1 |
| | بايهاالذين امتوااتماالحمرو | 844 | rA- | ملام معتدل مسل اوردين فطرت ب | |
| F40 | لعيسروالانصاب(١٩٠٠-٩٠) | | PA. | أياطال كوحرام كرناهم بيانيس؟ | ra |

| منحد | | تبرتكم | | خوان | برغار |
|------|--|----------|-------------|--|-------|
| rio | شكن زول اور مناسب | rei | PFI | مشكل الغاظ كے معنی | 14 |
| ria | الله الله يه جان كي الم جيسات | rer | 144 | شراب کی تریم کے متعلق احادث | 14 |
| PN | ماستاوام می شارکدنی مزا | | | فرك هيقت ص داب فقهاء | |
| | فكلى ك جانورول ك قل كى ممانعت بيانخ | T+ F | | فر كليينه حرام مو ياور فير خر كالقدار نشري | |
| m | فالق جانورول كالشنثاء | | P44 | צוקת ל | |
| | كيتول ك كوك كمالاده بركوك كو كل كرية | | | جى مشروب كى جيزى الدكند شد يوالى | PAI |
| rız | Fr | 36 | P91 | يرياني لماكرين كاجواز | |
| | تن صور الل يس محرم ك في الكارى جانورول | P=4 | 9 | جس مشروب کی کثیر مقدار نشد آور یواس کی | |
| MZ | كو تحل كريك كا جازت | | | تعیل مقدار کے طال ہونے پر نقمادا حاف | |
| | عرم مر الل كسيافظاه برصورت يل اس | P+Z | *** | کے دل کل | |
| rn | منمان کلوجوب | | Pes | انكريزى وداؤل اوريفوم كاشرى عم | PA |
| M | شكار كى تعريف | r•A | rer | شراب لوشي پروميد كي احاديث | PA |
| | شكارير دادات كرف كروج سے طان كاروم | p4 | *** | فرک مد کلیان | FA |
| MA | غل يداب اتمه | | Pier | بحك اور افون كاشرى تكم | |
| | شكار كى جزاوش اس كى خل صورى ضرورى | Pie | r-0 | سكون آوردداؤل كاشرى تحم | |
| rr- | اس کی قیت؟ | | P+6 | تمياكونو في كاخرى علم | |
| | جزاءش القيار منعنوں كى طرف داجع ب | 178 | F-0 | جليك كورف اوراس كرام و في كليان | 14 |
| PPI | عرم کی طرف؟ | | 1704 | معه کاری اورسد کاشری تقم | |
| | طعام كامدقه كمث كرناضروري بإدوس | FF | Pot | عميل اوردرزش كے متعلق اسلام كانتلا نظر | |
| rrr | فري بي مائزے؟ | | F+4 | چو سراور شاریج کے متعلق زابب نفضاء | 191 |
| | دو مرى يار شكار كو بار في يرا ولازم موكى | R - CO - | F-A | الركث يح على الم احدد ما لكرايت | |
| rrr | اشين و الداد الداد الداد | 0 | PH | شراب اور دوسے کی دیلی اور دیناوی خرامیان | 196 |
| | اضطرار کی صورت ش شکار اور مردارش ے | MA | l,lo | انساب اورازلام کی تغییر | 19 |
| rrr | كس كوالقياد كرناوتي يد؟ | | PF | شان زول کلیان | |
| | سندري شكاري تعريف اوراس مي | | PF | تريم فرى تاريخ | 14 |
| mer. | غاببات | | FF | 1 C . C C C . L | |
| | ことがはとしてりるこうがん | PTH | | بايهاالذين امتواليبلونكم الله | • |
| | متعلق اعلايث | | PP | بشدی(۹۳-۹۷) | |

| متحد | عوان | نبرتكر | من | موان | Fr. |
|------|--|--------|------|--|---------------|
| rra | البحيره كامنى | - | | مرم كي شكار كا كوشت كهات كمات كم | $\overline{}$ |
| FFA | المداشبه كاستن | | | ذاب ائد | |
| FF4 | الوصيله كاستني | FFF | | عرب لي ولا كاوشت كما لاك متلاش | TU |
| FF4 | الحامى كاستى | rra | PTO | المم أبو حنيف كم و تفتيرولاكل | |
| rr4 | بحيره اور سائنه وغيرهماك متعلق احادث | | | جعل الله الكعبة البهت الحرام | 1714 |
| | ايسل واب ك ليام د جانورول كاملال اور | rrs | 174 | قيماللناس(١٠٠-١٥) | |
| ** | طيبهونا | 0 | 1774 | مشكل الفاظ كمعنى | 1-1- |
| re | بحيرود فيروكي تحريم كاخلاف عمل اونا | PF. | PYA | مناعبت | rr |
| rm | تطيعة موم أود تطيد محود | rei. | | كعبداورد يكرشعارج مكاوكول كيلي مصلحاور | *** |
| | يايهاالذين امنواعليكم | FFF | PYA | مقومهونا | |
| rer | انفسكم لايضركم (١٠٨٠-١٠٥٠) | - | 5. | كسي كوجرا بداعت إفته يتافرائض دسالت | PPP |
| rer | مناسبت اور شان نزول | FFF | PP4 | - Just - | |
| | تجات كم في احرافه وف اور حى عن المنكر كا | 266 | | الله ك فرد يك ميكو كارول اوربد كارول كايرابر | 270 |
| ree | شرور ی او تا | | PP4 | t _{et,2} | |
| | امرالمعروف اور نمي عن المنكر كي ايميت ك | rfa | | يايهاالذين امنوالاتستلواعن | |
| ree | متعلق احاديث | | PPs | اشیاءان تبدلکم (۱۹۳۰–۱۹۹۱) | |
| | سفري وصب رائل كاب كوكوا ويناف | | | ای مالی سے سوالات کرنے کی محافظت کے | rr |
| 770 | متعلق اعاديث | | m | متعلق الملاءث | |
| | سترش دميت كرية لور فيرمسلون كوكواه | _ | rrr | آب سے موال کرنے کی محافت کی دھوات | rrz |
| rm | يال كروازر الم احرك ولاكل | | | آب سے سوال کرنے کی ممانعت اور اجازت | PYA |
| | سنري وصت وفير ملول كوكواهمان | | | 230 000 | |
| PPS | عدم جوازرجه ورفتها ميكولاكل | | 1 | آپ سے کیے ہوئے سوالات کے متعلق قرآن | 1 |
| | الل ذمه كي آلي ش كواي كيجواز رامام | | | مجيد کي آيات | |
| 464 | البوطنيفه بحدولاكل | | 770 | آب كي او ي سوالات كم متعلق احاديث | 77 |
| | المم أبو حقيف كاستدلال يرعلام قرطبي ك | | rrs | مشكل سوالات اور بجمارت والفي ممانعت | |
| 1779 | اعتراض كاجواب | | rrz | | |
| | ناكزير صورت من فيرمسلمون كوكوادينان | | | كثرت سوالات اور مطالبات كي وجد سي المحيلي | |
| ra- | كاجواز | | rtz | امتول كلبلاك مونا | |

| | | | | | 4 3 |
|------|---|------|-----|---|--------|
| سنح | منوان | | _ | حروان | مبرعاد |
| PW. | نزول اکده کے فرائشی مجزوکی وجیمات | | | شك اورشيد كي ياور ازميامهم كوتيدي | MAP |
| THE | عام آوی کی نظر اور ٹی کی نظر | rzr | 200 | ر کھنے کاجواز | |
| MA | اول اور آ قرك ليه حيد ہونے كامنى | T 28 | FAI | جرمول كوقيدش ركف كانواز | |
| M | بنواسرا كيل پر نازل مونے والے طعام كافوان | 720 | FAL | الراعه مقرض كوقيد كرف كم متعلق املوث | |
| PH | ميلاورسول مفتجوم | ٢٧٦ | | عادينده مقروض كوقيد كرير يحمضاتي | roo |
| PPR | محفل ميلاد كابد حت حسد وونا | -44 | ror | الماسياتي. | |
| rzi | نزول ائده كى كيفيت كى تختيق | 721 | rar | گواہ بنا <u>۔ کے ل</u> ے بعد از نمازدنت کی خصوصیت | 101 |
| 1727 | ومتزخوان اورميزر كملاكملية كاشرى تتم | | | مردلان أور كواومات يسمقام كى خصوصيت | roz |
| | وادقال الله يعيسي ابن مريم | ľA• | ror | ش زابب | |
| P2P | وانت فيلت (۲۹۰۰۰۰۹۳۰) | | | مرف الله كاذات كا تم كمال جائياس ك | FAA |
| | اس اشكال كابنواب كريم الى توصعرت مريم كو | t'Al | roo | مغلت كأبحى ذكر كياجات | |
| | خدانهي محتة اورالله كى الوہيت كى لغى نسي | | 701 | مدى كالتم ير فيعله كرف كالوجيه | |
| 723 | 2.5 | | | يوم يحمع الله الرسل فيقول | 44.44 |
| | حغرت ميلى عليه السلام كاكمال ادب عدايي | MAR | 402 | ماذاا بحيثم (الاستهدا) | |
| F22 | يائدكا ا | | FOA | آإدمابت مناسب | lu.A. |
| | حعرت مينى عليه السلام ك آسان رافعات | TAT | | قیامت کون انبیاء علیم السلام کے اس قول کی | b.Ah. |
| rze | جانب را يك الشكال كابواب | | FOA | وجيهات كرسبس بحرطم نيس" | |
| | اس اعتراض کاجواب که حضرت میسی علیه | 24 | m | الله تعالى راساه كاطلاق كانسابغه | (II- |
| PZA | السلام في شركين كي شفاحت كي | | m | آيات مايت ارجلا | |
| | العزيزالحكيم اور الغفور | 1700 | 17 | روح القدس تامعني | |
| P24 | الرحيم كافرق إااا | T | | ديات كادراك زين عزل موكى ديل | badd. |
| +24 | فساق موسنين كرالي في مانتياج كي شفاعت | FAY | FT | للب عكمت اور تورات اورا تجل كامعني | MZ |
| PA. | ي العلام مرف آخرت من كول موكا؟ | TAZ | | تعرت مين عليه السلام كاير ند المنانا يارول كو | ILIV |
| FAI | للدكى مظمت وجروت كانتام | FAA | FW | شفاء دینا در در مرفزات | |
| TA | شريعت اور حقيقت كي طرف اثناره | PA | P | تعرت مینی علیہ السلام کے معرات کی سمیں | 1711 |
| PA | نام مضاعن سورت كي ديل | | | دقال الحواريون يعيسي ابن | 1720 |
| PAP | , K area | 1 | 170 | سريم هل يستطيع (١١٠٠٠١١٠١) | |
| | | | PM | I to take the control | |
| | | | _ | | |

غيان القر ان

| | | | | | 1 4 |
|--------------|---|---------------|-------------|--|-------------|
| منى | حوان | برعه | 30. | عئوان | تمبرثار |
| | كفارك مطالب كيلوجوزي والمالي كالمالي | FIF | rar | سورة الانعام | |
| f*** | فرشة كوند ببيع كالمحلت | | | 1 | |
| | نى مانكور يرطعن اوراستهزاء كرفيدانون كي | Laster. | PAY | سورة الانعام كزول كم متعلق اعادت | rw. |
| 174 | 5 | | | سورة الانعام عدني آيات كاستناعك | rar |
| | قىل سيروا فى الارض ئىم انبطروا | rur . | PAY | متعلق احاديث | |
| (F+)* | کیف کان(۱۸۱۱) | | MAZ | سورة الانعام كي فنيات كم متعلق احاديث | 1447 |
| 6.46 | الوبيت ومالت أور قيامت يروليل | ۳b | ۲۸۸ | سورة الانعام كالموضوع | P46 |
| | الله تعالى كارجمت كمتعلق احاديث اوران كى | FN | P'A4 | سورة الانعام کے مضامین | PR |
| F-F | تخري | | | الحمدلله الذى خلق السموت | P44 |
| | سنفرت معاسدار وفول حنت كاسب الله تعالى | | | والارص(٢٠١) | |
| 6.4 ₩ | كافضل ب اندكدا عل | | rw | حد مرح اور شکر کافرق | r4A |
| 171% | الشرك فعنل اور وحت معوض بنت كي مختبل | ďΑ | re | تمام تعربيون كالشرك ساتير مختس بونا | 1-44 |
| | حقيقي حابت روامحار سازاور مستعان مرف | 6.64 | | عالم كبيرى حابق الشكوجوداوراسى | M.00 |
| m | الله تعلل ب | | 144 | ومدانيت براستدلال | |
| | انبياء كرام عنيم السلام اوراولياء كرام الله ك | /* [** | 14 1 | كفار كاحسان فراموهي | f*et |
| (*16** | دى وكى طالت اوراس كازن عاقرف | | | عالم مغيري حي يق الله كوجود اوراس ك | (°+1' |
| | کہ کے بیں | | 9147 | وحدانيت مراستدلال | |
| | قلااىشى اكبرشهادة قلالله | ď'n | F40 | دداجلول کی تفیریب | |
| دام | (PlP+) | | P41 | الله تعالى ك كمال علم يردليل | |
| | ان او کول کی تعمیل جن کو قر آن اور مدے کی | | | كفر بالله بر لمامت عيد كفريائر سول ك | F+0 |
| ma | 2500 | | P41 | يزمت | |
| | الل كالب كاني ما يجير كوالتي يؤن الما تياده | rrr | 744 | ديد آيات اورخلاصه معمون | |
| 614 | स्पूर् | | P4A | قرن کی محمقیق | |
| MA | كفار كے اخروى نشسان كاستن | PPP | PM | بض سوالول كے جوابات | ₽• Λ |
| | ومن اظلم ممن افترى على الله | rra | | ولونرلناعليكة كتابانى | lice# |
| (*19 | کذبا(۳۰۲۱) | | 2744 | قرطاس فلمسوء(۱۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰ | |
| | ميودونسارى اورمشركين كنظاع موع | rri | 7"99 | ربيا آيات اور شان نزول | Me |
| I'I'+ | بىتانوں كى تنميل | 1 | F*** | كفار كے انگار كا حقق سب | en l |
| | | | | | |

| متحد | خوان | نبرثار | منى | برغار عنوان |
|------|--|---------------|------|---|
| | زشن مس مرتك منافي اور آسان يرسيرهي | | | ١٢٦ روز تيامت مشركين كماكاى اور عمراوي |
| PP P | نگائے کے معالی اور توجیمات | | | المام شان نول |
| rez. | مغرونی کے احتیار ص بے انسی؟ | | | ٢٢١ كفارك كاتول يردا شنك في اعتراضات |
| FFA | جرا بدایت نددین کا مکت | | | جوابات |
| CCA. | كفار كوموده فراف كي وجيد | | | المان ابوطاب كي محتيق |
| 2779 | كفاركي مطلوبه نشاتيان نازل تدكرف كاسب | | | ١١٥ ابوطاب كايان دادك متعلق اطويث |
| | ومامن دايه في الارض ولاطمهر | | | الوطالب كاعلن دلات حملق مقرين |
| 60- | يطير(٣٨٠٠٠٠٠) | | | الكذاب كي تعريفات |
| rai | آيات مابتدے منام بداوروج ارتباد | F00 | ert. | اوطاب كايان كانتفلق معت كانظريه |
| | بالورول كرحساب اور تصاص كے متعلق | ran. | | المام ولوترى اذوقفواعلى النارفقالوا |
| res | احاويث | | 614 | (F≤ |
| | حوانون اور برعدل كافسانون سے ممالكت | FÖZ | 64.4 | المستكون كافرول كعذاب كى يغيت |
| rat | كادها | | | ٣٣ قدعسرالذين كذبوابلقاءالله |
| FOF | وسول الله معتبي عيم مثل موت كامحل | ۲۵۸ | rri | (PTP'Z) |
| | لوح محفوظ تمام مخلوظت كتام احوال كي | F64 | ret | ما المحرين قيامت كي خماره كابيان |
| rar | 5-0% | | | اسم روز قیامت کوساعت اور الله علا قات کاون |
| | قرآن مجيدتمام عقائد اسلاميه اورانكام شرعيه | E -10- | | فرملنے کی توجیہ |
| rof | 4-00/00 | | fro | المات مابت عاجت اوروج ارتباط |
| F66 | سنت كى جيمت پرواناكل | M | 670 | ٥٧٠ دنياكي زنركي كولهود لعب قراردين كردوبات |
| ray | آخار صحابه كي جيت پرولا كل | | | اس وناكيد وقعت او المحتال احادث |
| MAY | اجهام کی جیست پر دلا کل | | | ٢٨١ نيل راوش مرف كريكي ايت عل |
| 607 | قیاس کی جیست پر دلا کل | | | ونياكا تحسان |
| COA | قرآن جيدش برج كذكر وفي دلاكل | | | ۱۹۳۲ دنیای محبت مطلقاند موم نمیں ہے |
| | قرآن جيم مرقب دايت كند كور موت | | | ١٩٩٩ لهود العب معنى كالحقيق |
| F64 | پرولا کل | | 1777 | ٢٥٥٥ ميل اورورزش كے متعلق اسلام كاركام |
| * | قرآن مجدم مرجر كميان كم متعلق متند | | CFF | الهوم شان زول اور مناسبت |
| PM+ | مغرين كانظريه | | FFA | عام ني مراجع کا کل کا کا ا |
| PAR | الله تعالى كم اى اور دايت بد أكرن وجيه | MA | ምርግ | الهام شان زول |

جلدسوم

| _ | 14 | • | | | ــــــــــــــــــــــــــــــــــــــ | فيره |
|-------------|--------------|---|-------------------|-------|--|--------------|
| | | | La | 4 5. | | 4 1 |
| | 300 | عنوان | برعكر | 130 | ر هوان | <u>~</u> |
| $\ \cdot\ $ | | نی مراجع کے اجتماد کے متعلق علماء اسلام کے | "AZ | | المعيبةول مرف الله كويكار النسان كانطرى | PYR |
| | ۴Z۸ | لألهب للمالية | | ma | القائلة | |
| | 1729 | نی میں کا جنادے عدم جوازے قائلین | CAA | | ا ولقدارسلناالى اممن قبلك | *Z* |
| H | P24 | ی جانب کردستار کرداز کے تاکمین می میں میں استار کرداز کے تاکمین | CA1 | FRI | فاحديهم(۵۰-۵۰) | |
| | | نی مانتین کے اجتاب کے متعلق و اقت | F4- | | المصيبتين اور تكليفين يشرون كوالشدى طرف | "41 |
| | F24 | 6 عمين | | FΝ | راجع كرك كي العالم التي يس | |
| | | ني والمارك المتعلق | F1 | | الم النابون كباوجود تعملون كالمناالله كي طرف | 25 |
| | 6 'A* | راببعلاء تراببعلاء | | M | استدراج اورؤهل في | |
| | | في المنظم كالمتلكوة وكي تودين | (* 4 * | 14. | الله تعالى كے مستحق عبادت ہوتے پردليل | 4 |
| | FAL | اطويث | | | الم كافرول كے عموى عذاب من اتيامو من بھى جنا | |
| | | وانذريه الذين يحافونان | 1.8 | 620 | يون كيانس؟ | |
| | ۳۸۳ | يحشرواالي لهم (٥٥-٥٠) | | 10 | م انبياء عليم السلام كاسترد شده كام | 'حم |
| Ш | | كافرول اور مسلمانون كودر أفي كالك الك | 140 | | ا بي ما يور الما الما الما الما الما الما الما الم | 'Z1 |
| | FAF | محل | | 625 | مونے کی تغی | |
| | | متكين مسلمانوں كوان كى متكبنى كى مناور جلس | 640 | | الم نی مالید سے تدرت اور علم فیب کی لئی کا | 24 |
| | ۳۸۵ | ے اٹھائے کی خماندت | | rzr | المحل المحل | |
| | ran | من وثام اخلاص مرادت كرف كروضاحت | | | الم علامود يوبر ك زويك علم فيب كي نفي كامحمل | <u>ح</u> م ا |
| Ш | | مسكينون كاحداب آب كومدد اوي كي | | | م في ما اللها مر المراح علم فيب كالبوت | 24 |
| Ш | ran l | ومنادت | | المكا | المناه الميام الغيب كاطلال كاعدم جواد | 'A• |
| | | نى ما يكي كومنع كرفاد اصل امت كرا | | | م الله المالية علم فيب عمال المستدا | 'AI |
| | MAZ | اتر بيز ئے | | P20 | | |
| | FA4 | ای مان این مسست کرامتراض کاجواب این مان مان کابیا | 6.44 | | م کیائی میں کا تباعدی کرنا آپ کے اجتماد | AF |
| Ш | rA4 | بعض او گوں کی بعض پر نصیات کا آنائش ہونا | 400 | #21 | الم من الله على الله الله الله الله الله الله الله ال | |
| Ш | P4+ | شان زول می منظر اتوال | | | | A+- |
| 11 | (°4+ | | | | اس نی مطابع کے اجتماد پر دلائل اس محلبہ کرام کے اجتماد پر دلائل | |
| | 1 1 | اولیاءاللہ کی تعظیم کی تاکید حالہ چاک مدر میس کا ناموں کی معطال کی | | | | 1 1 |
| | | جنائت کی و یدے گناموں کی مطال کی | 5 T | dr | ام آپ کاو جی کی انتہاع کرچ جشناد کے متافی اند | 100 |
| | P | وصاحت | | 721 | 70. | |
| | P47 | مجرموں کے طریقے کوبیان کرنے کی حکمت | Q4/7 | PZA | ه اجتبادی تعریف | <u> </u> |
| 1 | | | | | | |

جلدسوم

| البرائر موان المداوه الله البرائر موان المداوه الله البرائر الموان المرائح الله البرائر الموان المو | | | | | | | | |
|---|------------|---|-----|------------|---|-------------|--|--|
| المنافع المنا | مفحد | | | | | _ | | |
| المنافع المنا | | | | | | | | |
| الم الله الله الله الله الله الله الله ا | 644 | قبض روح كي نسبت كي وضاحت | | | | | | |
| الم المنافع | | موت كونت مسلمانون اور كافرون كي مدحول | ora | prepri | | | | |
| الم الم المنافع المن | ΔI+ | کے لکنے کی کیفیت | | | فيرانفه كوبكار في مشركون اور مسلمانون كا | <u>م•</u> د | | |
| الم الم المنافذ المن | di | الله تعالى ك موالي اور حق بو في كاستن | an | FTF | 3,3 | | | |
| المن المن المن المن المن المن المن المن | | | | | كفادك مطالب كباوجودان برعداب نازل | ۵۰۸ | | |
| اس منار کالنے کی تغییر میں اطلاع کی افزر آ منار کالنے کی تغییر کی مطلاع کی تغییر کی مطلاع کی تغییر کے متعلق محالہ " پائیس اور میں افیر کی تغییر کی مطلاع کی دیا گئے ہے ۔ میں افیر کی تغییر کی مطلاع کی دیا گئے کہ اس مطلاع کی تغییر کے متعلق محالہ " پائیس اور میں افیر کی تغییر کی مطلور و سول افیر کی تخییر کے مطلاع کی مقداد پر حساب لیاجائے کا کہ اس محلو کا کھی تغییر کے مطلور کی تعلیر کے کا طریق میں فرق کے مسلول جائے کہ کہ اس محلو کا کھی تعلیر کی تعلیر ک | 24 | | | | | | | |
| من مناری النیس کی تغییری بعض علای کافرش می الله مناری الله می الله مناری ال | OH! | المام دازي كردااكل يربحث ونظر | OFA | _ | زم بحث آیت کا یک صدیث سے تعارض اور | 44 | | |
| المن المن الله الله الله الله الله الله الله الل | | جم عيم مل ووح كيد ابو فيرولاكل اور | P10 | 640 | | 1 1 | | |
| الله منا گالیب کی المیت کی کرد کی گالیت کا گلیت کے متعلق قر آن مجید کی آبات الله کا گلیت کے متعلق اطریق کا گلیت کے متعلق الله کا کہ کہ کا کہ کہ کا کہ کہ کا کہ | OR. | بحشدنظر | | | مفل الغيب كي تغييري بعض علاء كي لفرش | ۵۴۰ | | |
| المن الله الله الله الله الله الله الله الل | na | قيامت كون جلد حسلب لين كابيان | ar- | F94 | مفل الغيب كي تغييرهي احادث اور آثار | All | | |
| ۱۹۵۵ مران کی با الله الله الله الله الله الله الله ا | na | حساب کے متعلق قر آن جمید کی آیات | AP1 | PEA | | | | |
| الله تعلق علم اور و سول الله من التي المسلم الله تعلق الله | ۵۱۷ | صلب كى كيفيت كم متعلق اطاريث | OFT | | | | | |
| الله تعلق الله | | صاب كى كيفيست متعلق محايد الاجين اور | orr | P*44 | میں یا فیب کاعلم بھی دیا گیاہے؟ | | | |
| میں قرن اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ الل | or. | علاء کے نظریات | | | الله تعالى كے علم اور رسول الله معتبي علم | OIL. | | |
| ا الله الله الله الله الله الله الله ال | art | نعتول كى كتنى مقدار پر حماب لياجائ كا؟ | ore | ۵ | ين فرق | | | |
| المات علی الله الله الله الله الله الله الله ال | ∆r1 | حنب كو المران كرنے كا لم ديت | ara | 64 | | | | |
| علب کے حفظة (١٤-١٠٠٠) موس الله تعالی فرنست دیے با فرائے الله الله تعالی کی فرنست دیے با فرائے الله الله تعالی کا الله تعالی کی ت | | معيبت عى جانے كبدالله كو بحول جانے ير | art | 647 | | | | |
| مده الله تعالى كريا كاتبين ك تعريف اور ان كريا قرائض مده مده المت كانتان اور از اكور از اكور المناور ان كريا المن كانتيان كانتيان ك تعمل المن كانتيان ك تعمل المن كانتيان ك تعمل المن كانتيان كومن قرائل كانتيان ك منتان قرائل كانتيان ك قرائض اور و كانف ك منتان المناور و كانف ك منتان المناور و كانف ك منتان المناور و كانتيان ك قرائل كانتيان ك منتان كانتيان كومن ك منتان ك منتا | orr | | | | | | | |
| الله تعلق الله | | الله تعالى كى طرف سدري جاليوال | 000 | 0-1 | 1 | | | |
| مرا کانبین کے متعلق قرآن مجید کی آیت محمد اللہ تعلق کا آپ کو متع قربانا محمد محمد اللہ تعلق کا آپ کو متع قربانا محمد محمد محمد محمد محمد محمد محمد محم | orr | مذاب كي اقسام | | 045 | | | | |
| ما الدولان الما الما الما الما الما الما الما ا | | امت كا المقاف أورار الواسد الجلت كي دعا | orn | 0.0 | ارا ایکاتبین کی معریف اور ان کے قرائض | DI4 | | |
| ایات الذین یعوضون فی استان الحق الله الله الله الله الله الله الله الل | orm | ے اللہ تعالی کا آپ کو متع فر الا | | 0-0 | الا كانبين كم معلق قران ميدى آيت | or- | | |
| الما الما الما الما الما الما الما الما | an | | | | را اُ کاتبین کے قرائض اور وظائف کے | an | | |
| ایاتهافاعرض عنهم ۱۹۲۵ ایاتهافاعرض عنهم ۱۹۲۵ ایاتهافاعرض عنهم ۱۹۲۵ ۱۹۲۵ ۱۹۲۵ ۱۹۲۵ ۱۹۲۵ ۱۹۲۵ ۱۹۲۵ ۱۹۲۵ | | | | | تعلق اعاديث | | | |
| Orz (M20) 002 | | ياتسافاعرضعنهم | 1 | | أيادل كياون وكرا أكاتبين للمتين | ort | | |
| عدد اعل كوتكموات كي ممتى مدين عن تفرق والتي كندمت مدين عن تفرق والتي كندمت مدين عن تفرق والتي كندمت | 0FZ | | | 0.4 | 8,00 | | | |
| | OF A | ين ص تفرقد والخ كي ندمت | or | 044 | عل كونكسوان كى سمتى | ilorr | | |

| سنجد | محتوان | كبرتك | مور | التوان | أنبرثار |
|------|--|-------|------------|---|---------|
| ٦٥٥ | آزر کے متعلق مفسرین کے مختلف اقوال | 444 | | شيطان كسلي في ما المجلم كولسان على جاكرنا | orr |
| : | معرت ايرابيم عليه السلام كلبب مارخ تفا | 40 | art | ممکن نسیس | |
| DOF | د که آزرا | | | قرآن اورسنت كى روشنى بى انبياء عليم السلام | عدم |
| | آذر كو حفرت ايرائيم عليه السلام كابل كمن ك | òΉ | or- | كالسيان | |
| ۵۵۲ | توجيه | | | نی ماہیم کے مواور نسیان کے متعلق فقهاء | 944 |
| | حرت ارام عليه الماام كوالدك موس | OT | ۵PT | اور محد منمن كامونف | |
| ۵۵۵ | مونے کی دلیل م | | | فاس اور بد مقيده ابتناب كم متعلق | |
| 404 | تامت كون آزركوبك كمنى وجيه | | arr | قرآن استاور آخارے تقریحات | |
| • | ني سائي كانام آباء كرام كم موسى و في | | ora | الل يدعت كي مصداق | brna . |
| ۸۵۵ | يديل | | | فاسق اوربر مقيده مسابقتاب كمتعلق فتساء | M4 |
| ۵۵۸ | موصدین اور علیدین سے زیمن مجی خالی میں دی | ۵۲۵ | am | کی تصریحات | |
| | رسول الله على كتام أباء كرام كاب | | | احجابياداك آؤث كريك كاصل | ۵۳۸ |
| ۵۵۹ | البين زمان على سب الفنل اور بهتر وونا | | OFL | بىسىل كامتى | 6174 |
| | اوین کرمین کے ایمان کے مستلے میں تغیر کیر | | ora | بت پر ستی کالموولصب ہونا | 66+ |
| ATF | يرجح شونظر | | | قل اندعوامن دون اللممالا | 001 |
| | ابوین کریمین کے ایمان کے متعلق الم رازی کا | AYA | ort | ينقعبا(٣٠-١٠٠٠) | |
| ATT | سيح موتف | | 000 | المراى من بعظف والعضى كامثل | ۲۵۵ |
| OW | اوین کریمن کے ایمان کی جدیس حرف آخر | HO | | ا الول اور د ميول كو حل ك ما تقريد اكر ف | oor |
| ٥٢٥ | يون كارسش كالعلى وفي مراى موا | ٥٧- | ē# | کامغنی | |
| | معرت ابرايم عليد السلام كود كمائ ك مكوت | الده | | قرآن اوراماوي شي روشني من صور يمو كلت | موم |
| מרם | كامصداق | | ∆PT | كابيان | |
| | ستارے مار اور سورج کی الوہیت کے عقیدہ | مكا | | واذقال ابراهيم لابيه ازرات عد | |
| AYE | الوياطل كرنا | | ۵۵۰ | اصساماالهة (۵۲۰۰۰۰۸۲) | |
| | معرت إيرانيم علي السالام كاستار _ كو" عدا | 02r | ا۵۵ | آبات مابت عاب | |
| ۵۲۷ | راسی "كمنافلك كارور قس تما | | | معرت ايرابيم عليه السلام كايام منب اور مارع | 004 |
| AYA | استدلال سے اللہ تعالی کی معرونت حاصل کرنا | مكام | <u>aar</u> | پدائش | |
| | حرت ايم طي اللام كاني قرم كمات | ٥٧٥ | | حعزت ابراجم عليه السلام كى زندگى كابم | ۸۵۵ |
| AYA | ماد | | ۵۵۲ | واقعات | |
| | | | - | | |

| منح | متوان | نبرتك | منخد | موان | برعاد |
|------|--|------------|------------|---|-------|
| | ي ويها كي موى احت بريموديون | 644 | PFA | اس مبادة من الله تعالى كافيها | 941 |
| ۵4+ | اعتراض كاجواب | | | وتلك حنعتنا اتينها ابراهيم | |
| | آخرت را كان أن المنظم إلى الكان المناوات | 044 | AYA | علىقومه(۴۰–۸۳) | |
| 44- | مطوم | | 841 | ملااول يرمعا تبدال بوفي كوجوات | محم |
| 44 | تمام مباوات يس نمازي ايميت | 244 | | انبياء عليهم السلام علاءاه وموشين كدرجات | A44 |
| 44 | مَادِک الله معلق زاب انتهاء معلق زاب انتهاء | Ann | ۵۷۲ | کیاندی | |
| 4 | مناسبت اورشان نزول | 44 | | معرت ايرام عليه السلام يرافد تعالى كالعتون | ۵۸۰ |
| Δ9" | ميل اوراسودالمنى كاوال | 444. | 645 | שבווו | |
| 040 | سرفت كي جو فروادول | 44 | | معرت ايرايم كاولاد صصرت الايل كذكر | ōΛŧ |
| | كارولورابطل | | 04r | ئە كىكى دە | |
| 641 | معرت عبدالله بن معدين الى مرح كادوال | 44 | 845 | تواسول كا اولاد على واقل مونا | ۵۸۲ |
| 444 | كافرك جم عدور تكالح كى كيفيت | 4-0 | | نواسوں کواولادی شار کرنے حفل ذاہب | ۵۸۳ |
| | الىدولت اور شرك كے يرساروں كى آ اوت | 404 | ۵۷۳ | فقهاء | |
| 444 | على محروى | | <u>AZY</u> | معرت الباس كانسب اوران كالصداق | ۵۸۲ |
| | انالله فالق الحب والنوي | ₩ ∠ | ٥٧٨ | انياه مليم الملام كذك ايك فوع كالاست | ۵۸۵ |
| 044 | يخرج الحي من الميث (١٠٠٠-١٨٠٠) | | ۵۷۸ | انبياء عليم السلام كالماكر سدافضل عونا | PAG |
| | زين ك نشاندن مصورود بارى تعالى اور توحيد | Y•A | 524 | الله تعالى كرايت | |
| 44 | ي دلا كل | | ۵۸۰ | أي والكل كالمام مفات انبياء كاجام موة | ۸۸۵ |
| | آمان كي نشانون محددود بارى تعالى اور توحيد | Yell | | وماقدروااللهحققدرهاذقالواما | 001 |
| 147 | پداد کل | | ΔAI | انزلالله(۱۳۰۰۱۰۰۰) | |
| | اشان كالقس معدجود بارى تعالى اور توحيد | A4. | مم | مناسبت اورشان نزول | |
| 145. | يدلاكل | | | ورات يس فريف كرحملق المرادى | 4 |
| Yelf | قام انسان نسسال برابرين | w | DAT | موقف أور يحتضو نظر | |
| Aut. | مشقراور مستودع كالمعنى | ₩. | ΔAF | آيت ندكوره كالمنسوخ نديونا | |
| 40 | مابته آيات ارجلا | | ۵۸۵ | الشه تعالى اور رسول الله مايين كالقدر عاشاى | |
| | مجور کے تعنائل اور اس کامومن کی صفت پر | w | ΔΛΛ | قرآن جيد كي خراور يركت | |
| 440 | مشتل او ا | | AM | قرآن مجيد كاسابقه آلاني كمايوس كالمصدق اونا | |
| 1.4 | محجور انجور أنتون ادرانار كم خواص | WA. | 0.04 | مكه تحرمه كا ام القري يونا | 41 |

| مني | | | منح | | كبرثار | | | |
|------|---|------|-----|--|--------|--|--|--|
| 40 | سدة رائع كالماور ينول كويراكين كى ممانعت | | | پھون کی ابتدائی مالت اوران کے کھتے ہے | 44 | | | |
| 787 | فرمائش مجزات ندو كهانے كى وجه | | | وجود إرى يراستدلال | | | | |
| | جب الله تعالى في كفار كونول كو مجيرويا توان | 40 | | تو د عيني كنت بملدر دستر كليور | 44 | | | |
| 1971 | كاكفريس كياقسور ٢٠ | | Y+A | پهلوس کې چې کاعدم جواز | | | | |
| | ولوامنا نزلنا اليهم الملتكةو | AL.A | 144 | باغون على يالون كى موج يح كرواز كى صورتي | N/A | | | |
| WZ. | كلمهم الموتى (عا ١٠٠٠٠) | | | مشركين كاب شركاء كم معلق نظرات اور | 194 | | | |
| WA | الله تعالى كاسطلوب بندول كالعتبارى ايان ب | | 40 | ان کے فرقے | | | | |
| | اضانول اور جنول ش المساطين (مركشول) | | | الشرق فل كي مولودته او قريدلاكل | ₩. | | | |
| W4 | book | | | بديع السموات والارضائي | ₩ı | | | |
| W4 | و تی "ز خرف القول اور غرو ر کے معنی | ALd | W | يكون لمولد (١٥٠٠-١٠٠٠) | | | | |
| ₩*• | شيطان كرموسه اندازى كالمحتيق | A. | | معرد عيلى عليد السلام كابن الد مولاكا | w | | | |
| 1871 | شياطين كوينداكرسي كالمحست | wı | ж. | دلا كرسے رو | | | | |
| w | الشعب على كاستى | | | الله تعالى كموامد عوت يرولا كل | | | | |
| w | نيرت کي دود ليليس | YT | 711 | روع مارى كے متعلق فقهامامادم كے تظريات | | | | |
| 1 1 | كلت دب كمادق اورعادل موت | 444 | 111 | مكرين موجع كردا كل اور ان كريوالات | | | | |
| wr | معانى | | | الله تعالى كر كما كي ديد منطق قر آن مجيد | ¥6 | | | |
| WFF | الله تعالى كے كام ي كذب كال ب | ₩6 | N/ | كى آيات 🔍 🔻 . | | | | |
| 1177 | مقيده ادر عمل كالمرابيون كي تنسيل | YPY | | آ فرت بين الله تعلق كر كماني ويين | WY | | | |
| 110 | الباع تمن كالأصع كالإضافيين | YZ | W. | متعلق املوي | | | | |
| 1 | فكلوامماذكراسم اللهعليهان | | | شب معراج الله تعالى كديد ار ك متعلق علاء | ΨZ | | | |
| 41.0 | كنتم بايته مؤمنين (١٦١-١٨٠٠) | | Ψŧ | امت کے نظریات | | | | |
| | كى سورىت يى دى سورىت كوالد كافكال | w | WI | معرسهات التنظاكاتكاروي سكجاب | W۸ | | | |
| ₩~∠ | اوراس كاجواب | | | كياجيزر سول الله ويجيع كوزمد بالوركياجيز | | | | |
| ₩~∠ | تطيد مجيم اور تحليد باطل كافرق | 100 | ¥7' | آپ کامہ تیں ہے؟ | | | | |
| YE'A | فاجراور بوشيده كنامول كي عماضت | | WY | سيدناجر ويجيز كالبوشير كفار كاشب | | | | |
| W-V | اشركاستى | | WY | كفارى مل آزار باقرار في الجهير كو تولى ديا | | | | |
| WA | ائم کی تعریف کور مصاویت کے متعلق احادیث | YAF | | رسول الله معيد كساته معلك كرياف تعالى | | | | |
| 1174 | ول کے افیعال پر موافذہ کے دلائل | 1 | | ك ما تو معالمه ب | | | | |
| | 0 -3-427 30-5 -02 | | | | | | | |

| الما الما الما المن المن المن المن المن | من | 4.90 | # 2 | 30 | عثوان - | تمبرثار | 1 |
|---|------|--|---------------|------|--|---------|---|
| المن الما المن المن المن المن المن المن | 25 | - | گريم. در د | -5 | | | |
| الان الم | | and the second s | | | | | |
| الان مال کو درام کر قیا حرام کو طال کر قیا کا محل استان اور در ست کا ان قبال می مخصود کا محل الده مسافر امن الحدوث و استان کا محل الدی اور من کان میت اف الحدوث و استان کا محل الدی اور من کان میت اف الحدوث و استان کا کا الدی من الان ما الان ما الان ما الان الان ما الان ما الان ما الدی الدی الدی الدی الدی الدی الدی الد | | | | | | | ĺ |
| الان ما المراس | 102 | القد تعالى كے مسلمی ہوئے کے مستی | 122 | AM | | | ı |
| الاندما او است کان میت اف حیب نه و حسان الاندما او است کان میت که الان اور متول کے بطول اور مورشین الان کان کے مورد اور موسی کے عام الان کان کے مورد اور موسی کے عام الان کان کی مورد الان کان کی مورد کی ماشی کا مورد کی کرد کی کرد کرد کی کرد | YOM | | | | ا حلال او حرام کرنے یا حرام کو حلائل کرنے کا شرعی انتخا | 102 | l |
| المن المن المن المن المن المن المن المن | | | | WYY | | | l |
| الم المراد الم | Par | | _ | | | | l |
| اله الم المن الم المن الم المن الم المن المن | | _= | | W.L. | | | l |
| ال المار المراب المار المراب المار المراب | 1140 | | | | | | |
| ۱۹۲۲ کار کی مفاد کار کی کار کار کی کار | 111 | | , , | | | | |
| ال ا | 111 | آيات مابقد سارتباط | YAF | W4 | | | |
| ان کارو المسلم | | خانداني منعوبه بندي كالزغيب ادر تشيركا | W | ALA. | | | |
| الم | THE | | | | مكماء كرزديك التحقاق نبوت كي مفات اور | Him | |
| ۱۲۱۷ اسلام کے لے شرح صور کی علامت ۱۲۷۷ ۱۲۸۰ بیٹیوں کو تش کر ایسان کی شقادت ۱۲۷۷ ۱۲۷۸ بیٹیوں کو تش کر کے شقادت ۱۲۷۷ ۱۲۷۸ بیٹیوں کو تش کر کے شقادت ۱۲۷۷ ۱۲۷۸ بیٹیوں کو تش کر کے شقادت ۱۲۷۸ بیٹیوں کو تش کر اسلام تر اسلام تر اسلام تر اسلام تر اسلام تر اسلام کی تو جو تو تو جو اسلام کی تو جو تو | THE | مبدا وليد كبارك يس مصنف كي تحقيق | W | P'V' | الناكارو | | |
| ۱۱۱۱ اسلام کے فرص صور کی طلعت ۱۱۱۷ ۱۱۸۰ اور وال کی انتشاب است معروشت ۱۲۱۷ ۱۲۱۸ اسلام کی فرق کی انتشاب کی | 444 | مشركين كي فود ماختة احكام كار داور ابطال | 4AG | ۳Z | | | |
| ۱۱۱۱ اسلام کے فرص صور کی طلعت ۱۱۱۷ ۱۱۸۰ اور وال کی انتشاب است معروشت ۱۲۱۷ ۱۲۱۸ اسلام کی فرق کی انتشاب کی | 1114 | خودساخته شريعت سازى كارداور ابطل | PAY | ¥۷ | نى كى صفات لما زمه | 410 | ١ |
| ۱۱۸ الله الله الله الله الله الله الله الل | PAP | بينيول كو قتل كري شقاوت | YAZ | Y"A | اسلام كيالي شرح مدرى علامت | 44,4 | ı |
| ۱۲۸ الله الله الله الله الله الله الله الل | | وهوالذى انشاحنت معروشت | 144 | A.4 | جنت كودار السلام قراف في كودوات | 444 | ١ |
| الما المعدد الم | 1799 | | | | جنم کے ظود سے استثناء کی اوجیمات | APP | l |
| المن المن المن المن المن المن المن المن | 14.0 | مشكل الغاظ كمحافى | YAT | 101 | فالم كومت كاسب وام كاعلم ب | 446 | l |
| الما المنت كم الموسول المنت كم الما الما الما الما الما الما الما ا | 1/4 | | | | يمعشرالجن والأنس المياتكم | 420 | ١ |
| الما المن التراك و المن المال المن المن المن المن المن الم | | 7 | | 101 | رسل منکم (۲۵ سیه ۱۳۰۰) | | l |
| الما المارد في | 143 | | | 101" | جلت كم في رسولول كروكري وجمات | 144 | |
| الم ابر منیفہ کے موقف پردانا کل میں افل ہوں گیا ہیں۔ الم ابر منیفہ کے موقف پردانا کل اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ | 121 | | | | | | |
| الما المان حول كرون عن الله المول كرون الله الله الله الله الله الله الله الل | 141 | 4 | 1 | 100 | كياشندول كاحكم | | |
| اعلا جنات كوخول جنت كے متعلق علاوى آرام الاملا الاملا الله الله الله الله الل | | | | | | | |
| المان جنول كرجنون من دوائل و ترك الله مورشيول كردوو من الله تعالى كي تعتير المدا | 14 | | , | | | | |
| | 425 | | | | | | |
| | 444 | | | | | | 1 |

| سيوسيت | ì |
|--------|---|
| | |

| | e | å | |
|---|---|---|--|
| | • | ٦ | |
| • | | 7 | |

| الم | منح | مخوالتا | تبرغار | متي | عنوان | نبرثاد | |
|---|-----|--|---------------|----------------|--|--------|--|
| الما الما الما الما الما الما الما الما | 144 | فرقة بري كالأمت | Zr- | | فل لااجدفى مااوحى الىمحرما | 444 | |
| المن المنافذ كرام المنافذ كرا | | | | | (4° 010+) | | |
| الما العالم ال | 144 | امشالها(۲۱۵-۰۰۰-۲۱۵) | | | قرآن اور صدعت من حرام كي او عطعام كى | APP | |
| ا الله الله الله الله الله الله الله ال | | دس كناج مات وكناج ادرب صلب اجر | ZPF | اللا | تنصيل | | |
| الله المراكب | 144 | | | | يعض الغاظ ك معنى | 444 | |
| المن الله الله المن المن المن المن المن المن المن المن | 24 | نىك كاسىتى | ۷m | 141 | | | |
| ال المن المن المن المن المن المن المن ال | | المازكا فتتاح انى وحمهت بعداجب | Z FF | ٠٨٠ | مشركين ك شيمات كاجواب | 44 | |
| علی کرام الله الله الله الله الله الله الله ال | Z-1 | = 12.5 | | | جريه كارواو وابطل | 24° | |
| علی کرام الله الله الله الله الله الله الله ال | Z+Y | تي النظيم كالول المسلمين اوتا | 20 | | قل تعالوا اتل ماحرم بكم | 4.1 | |
| الدین کے ماتھ پر سلوکی کا ترام ہونا الدین کے ماتھ پر سلوکی کا ترام ہونا کی الدین کے ماتھ پر سلوکی کا ترام ہونا کا ترام ہونا کے ماتھ پر سلوکی کا ترام ہونا کے ماتھ کا ترام ہونا کے ماتھ کے ماتھ کے ماتھ کا ترام ہونا کے ماتھ کا ترام ہونا ک | 247 | فتنه کے ذیانہ میں نیک علاء کا کوشہ تشمین ہو تا | 471 | W | عليكم (١٥٢١٥١) | | |
| الدین کے ساتھ پر سلوی کا ترام ہوتا الدین کے سراتھ پر سلوی کا ترام ہوتا الدین کے سراتھ پر سلوی کا تران ہوتا الدی ترام ہوتا الدین کا ترام ہوتا الدی ترام ہوتا الدین ترام ہوتا ہوتا ہوتا ہوتا ہوتا ہوتا ہوتا ہوتا | | نسول كے مقدادروكيل كے تصرفات يس | 282 | W | | | |
| المن المن فرائل المن المن المن المن المن المن المن الم | 6.4 | ندايب تقماء | | WF | | | |
| | | برائی کے موجد کواس برائی کے مرتبین کی مزا | 4° A | YA I" - | | | |
| عدد کتاب ان و کام استان کام استان کام استان کام استان کام | 4.6 | | | AVQ | | | |
| عدد کتاب ان و کام استان کام استان کام استان کام استان کام | | کوئی مخص دو سرے جرم کی مزالسی یائے | ZF 4 | YAY | | | |
| ال التي التي التي التي التي التي التي ال | 4.0 | كالأس فاعده فيح بعض متعتنيات | | | | 1 | |
| علاد المستركين براتمام جمت كرام المستركيل المستركين براتمام جميد كرام المستركين برائم المستركين براتمام جميد كرام المستركين براتمام جميد كرام المستركين برائم المستركين المستركين برائم المستركين المستركين برائم | 2+1 | مسلمانوں کو خلیفہ بنائے کال | 2 1 °° | 1// | _ | | |
| عان الله تعالى عبد عمدى كرك كامرام جوة الله عبد على الله تعالى عبد عمدى كرك كامرام جوة الله تعالى عبد عمدى كرك كامرام جوة الله تعالى الله تعالى عبد عمدى كرك كامرام جوة الله تعالى الله تع | 24 | | | | * | | |
| الله تعلق عبد همدى كرح كامرام جونا ١٩٧ عبد الله تعلق عبد الله تعلق الله الله الله تعلق الله الله الله الله الله الله الله ال | | مسلمانول كے كنابول پرموافذ واور مغفرت كا | 4Pt | W | | | |
| عدد اکتاب افرانس کافری اتام جوت کی تورید کافری افرانس کافری | ۷٠۷ | ويأن | | W- | | | |
| ۱۹۲ دوست کی تعریف آور آس گی اقدام ۱۹۲ کاک دهدا کتباب انزلسه مبدار ک ۱۹۲ ۱۹۳ کاک دهدا کتباب انزلسه مبدار ک ۱۹۲ ۱۹۳ کاک دام انتخاب انزلسه مبدار ک ۱۹۲ ۱۹۳ کاک مشرکین پر اتمام جمعت کے قرآن جمید کو ۱۹۵ ۱۹۵ کاک کاک کاک کاک کاک کاک کاک کاک کاک کا | ∠•A | | | | The state of the s | | |
| علا وهدا کتاب انزل میبارک ۱۹۳ (۱۵۵۰۰۰۰۱۵۹) ۱۹۳ مشرکین پر اتمام بخت کے قرآن جمید کو ۱۹۳ ۱۹۳ ۱۹۵ ۱۹۵ ۱۹۵ ۱۹۵ ۱۹۵ ۱۹۵ ۱۹۵ ۱۹۵ ۱۹۵ ۱۹۵ | Z+4 | بالندوم الح | 27° | 196 | 7 7 7 - | | |
| ناتبعوه (۱۵۵۰۰۰۰۱۵۹) ۱۹۵۳ کام مشرکین پر اتمام جمت کے قرآن مجدکو ۱۹۵۳ کام ازل قربانا م | | | | 197 | - | | |
| ۱۹۵ مشرکین پر اتمام جمت کے قر آن جمد کو ازل فریکا | | | | | وهداكتاب انزلىه ميارك | 212 | |
| ال قربانا الله الله الله الله الله الله الله ا | | | | 767 | | | |
| | | | | | | ZΙΛ | |
| 19 آیامت سے پہلےوی فٹانیوں کا عمور 197 | | | | 140 | | | |
| | | | | 191 | اليامت يملمون فثانون كاللمور | 셔 | |

بمنسيرالله الترخاز التيجيدوا

العمد مله رب العالمين الدى استغنى في تمده عن العامدين وانزل القرآن تبيانا لكلشئ عندالماونين والمساوة والسلام على سيدنا محد إلذى استغنى بصاوة الله عنصلوة المصلين وانتص بارضاء رب المالمين الذى بلغ اليناما انزل عليد من الغران وبين لنآمانزل عليه متبيان وكان خلقه القران وتحدى بالنربتان وعجزعن معارضته الانس والحان وهوخليسل اللهم حبيب الرحن لواء . فوق كل لواء يوم الدين قائد الانبيا والرسلين أمام الاولين والاخرين شفيع المسالحين والمذنبين واختص بتنصيص المغفرة لم فىكتابميين وعلى الدالعليبين الطاهرين وعلى اصمابدالكاملين الراشدين وازواب الطاهرات امهات المؤمنين وعلى سائراولياءامته وعلماءملته اجعين -اشهدان لاالد الااللدوحدة لاشريك لغواشهدان سيدناومولانا عجلعبده ورسول مداعوذ باللدمن شرور نسى ومنسيات اعمالى من بهده الله فالامضل لدومن بصلاد فلاهمادى لد اللهمارني المقحقاوارزقنى اتبلعد اللهجرارف الماطل باطلاوارزقني اجتنابه اللهجراجعاني فى تبيان القران على صراط مستقيم وأبستني فيدعلى منهيج قويم واحصمنئ النطأ والزال في تعربيره والحفظني من شوالم أسدين وزيخ المعاندين في تعربيرًا للهموالق في هلبى اسوارالقرأن ولشرح مسدرى لهمانى المغربتان ومتعنى بغيوض الغران ونوبرني بانوار الغرقان واسعدني لتبيان القرأن، رب زدنى علمام بادخلنى مدخل صدق واخرجنى مخرج صدق واجعل لى من لدنك سلطانًا نصيرا اللهم اجعله خالصالوج بك ومقبولا عندك وعندرس ولك واجعله شائعا ومستفيضها ومنيضا ومرغوبا في اطراف العالمين إلى يومر الدين واجعله في دريسة للمغفرة ووسيلة للنباة وصدقت جارية إلى يوم القيامة وارزقني زيارة النبى صملى المصعليه ومسلم في الدنيا وشفاعته في الاخرة واحين على الاسلام بالسلامة وامتى على الايمان بالكرامة اللهم انت ربى لا الدالاانت خلقتني واناعبدك واناهلي عهدك ووعدك مااستطمت اعوذ بك من شرماصنست ابوء للث بنعمتك على وابوء لك بذنبى فاغفرلى فانه لايغفرال ذنوب الاانت أمين يارب المالمين

الله ي ك نام سے (شروع كر آمول) جو نمايت رحم فراف والا بهت مريان ب

ترام توبیس اللہ رب العالمین کے لیے مخصوص ہیں جو ہر تعریف کرنے والے کی تعریف سے مستننی ہے۔جس نے قرآن جيد نازل كياجو عارفين ك زديك برج كاروش بيان باور صلوة وسلام كاسيدنا محرير زول موجو خود الله تعالى ك صلوة نازل كرين كى دج سے برصلوة بينے والے كى صلوة سے مستنى بير-جن كى خصوميت يے كر اللہ رب العالمين ان كو راضى كريا ہے۔اللہ تعالی نے ان پرجو قرآن نازل کیااس کو انموں نے ہم تک پہنچایا اور جو پچھے ان پر نازل ہوا اس کا روش بیان انموں نے جمیں سمجملیا ان کے اوصاف مرایا قرآن ہیں۔انموں نے قرآن جید کی مثل النے کا چیلنے کیااور تمام جن اور انسان اس کی مثل لائے ہے عابز رہے۔ وہ اللہ تعالی کے خلیل اور محبوب ہیں۔ قیامت کے دن ان کا جمنڈ ا ہر جمنڈ ے باند ہو گا۔ وہ نبول اور رسولول کے قائد میں اولین اور آخرین کے الم میں منام نیوکاروں اور گذ گاروں کی شفاعت کرتے والے میں سے ان کی خصوصیت ہے کہ قرآن مجید میں صرف ان کی معفرت سے اعلان کی تصریح کی گئی ہے اور ان کی پاکیزہ آل ان سے کال اور ہادی امحاب اور ان کی ازواج مطرات اصلت الوسنين اور ان کی امت کے قام علاء اور اولياء ير مجى صلوة و سلام كانزول مو- يس موائ دینا موں کہ اللہ کے سواکوئی میادے کا مستحق تمیں۔وہ دامدے اس کاکوئی شریک تمیں اور میں کوائی دیتا موں کر سیدنامحہ ما اللہ کے بارے اور اس کے رسول ہیں۔ میں اپنے تھی کے شراور براعمالیوں سے اللہ کی بناد میں آ گاہوں۔ جس کو اللہ بداید دے اے کوئی مراہ میں کر سکا اور جس کووہ مرای پر چمو وے اس کو کوئی بدایت میں دے سکا۔ اے اللہ جمد پر حق واضح كراور عصاس كى الباع مطافرا اور بحدير ياطل كوواشح كراور فك است اجتناب مطافرا-اسدالله فيحد" تبيان القرآن" کی تعنیف میں مراما منتقم پر بر قرار رکھ اور جھے اس میں معتدل مسلک پر جابت قدم رکھ۔ جھے اس کی تحریر میں غلطیوں اور لغزشوں سے بچااور جھے اس کی تقریر میں صامدین کے شراور معائدین کی تحریف سے محفوظ رکھ۔اے اللہ امیرے ول میں قرآن ك امرار كاالقاكر اور ميرے سيد كو قرآن كے معانى كے ليے كمول دے۔ جھے قرآن مجيد كے أبوض سے بسرہ مند فرما۔ قرآن مجيد ے انور سے میرے قلب کی تاریکیوں کو منور فرال جھے "جیان القرآن" کی تعنیف کی معاوت عطا فرا۔ اے میرے رب ميرے علم كو زيادہ كرداے ميرے رب تو بھے (جمال ہى داخل فرلمت) بينديد، طريقت داخل فرمااور مجمے (جمال سے بھى باہر لاسة) ينديده طريقت بإبرانا اور جميم الى طرف سه وه غلبه مطافراجو (ميرب في) عد كار مو-اب الله اس تصنيف كو صرف ائی رضائے کے مقدر کردے اور اس کو اٹی اور اپ رسول کی بار گاہ میں مقبول کردے۔ اس کو قیامت تک کے لیے تمام دنیا می مشہور مقبول محبوب اور اثر آفرین بناوے۔ اس کو میری مغفرت کاذر بعد اور عملت کادسیار بنالور قیامت تک کے لیے اس کو صدقہ جاریہ کردے۔ بھے دنیا میں نی مطابع کی زیارت اور قیامت میں آپ کی شفاعت سے بمرہ مند کر۔ بھے ملامتی کے ساتھ اسلام پر زندہ رکھ اور مزت کی موت عطا فرا۔ اے افتد تو میرا رب ہے تیرے سواکوئی عبادت کاستی نسی ۔ تو نے جھے پیداکیاہے اور سی تیرا بندہ موں اور سی تھے سے کیے موسے وحدہ اور حمد پر اپنی طاقت کے مطابق قائم موں۔ میں اپنی برا ممالیوں کے شرے تیری پناہ میں آ آ ہوں۔ تیرے جھے م جو انعالت ہیں میں ان کا قرار کر آ ہوں اور اے گناہوں کا عراف کر آ ہوں۔ جمع معاقب قرما مي تك جيرے سوالور كوئي كتابول كومعاف كرتے والا نسي ب- آئن يارب العالمين ا



سورة البايانة (۵)



النبئ الداراتين الأثيمة

سورة المائده

مور ۃ المائدہ قرآن کی مجید کی ترتیب معضے کے اعتبارے پانچیں مورت ہے۔ قراء کو ایسن کے نزدیک اس میں ایک سو جيل آيتي جي عادے پال جو قران جيد كے تي جي ان عن ايك سو جي ايتي بي لكسي بوكي جي اور حجاؤ اس ك ندد کے اس میں ایک سویا کیس آیتی ہیں اور مصوصت کے زدیک اس میں ایک سو تمیں آیتی ہیں۔ یہ اختلاف مرف آجوں كے كئے كى وجہ سے ب ورند سب كے نزد يك سورة المائده كى دى آيتى جى جو اس بنى درج بي- البت البض كے نزد يك ب آيتي ايك سو بيس بي ابعض كے زويك ايك سو بائيس اور بعض كے زويك ايك سو تميں آيتي بي اور اس بي بالانفاق سول ر کوئیں۔

اس سورت كابام المائده بي كو تك اس كي دو آيون ش المائده (كمان كاخوان) كاذكركياكيا ب-دو آيتي يدين جب واربوں نے کمااے میٹی مریم کے بینے اکیا آپ کا رب بم را آسان سے (کھانے کا) خوان ا آر مکا ہے۔

إِذْ قَالَ الْمَحَوَارِ فِيُونَ بِلِيسَتِى ابْنَ مَرْبَهَ عَلْ يَسْنَطِيعُ رَفِّكَ أَنْ يُنَرِّلَ هَلَيْنَا مَا يُعَدُّ مِنَ السَّمَا و(المائدة:٣)

عيني اين مريم نے دعاكى: اے اللہ اجارے رب ايم بر أحان سے (كھانے كا) خوان نازل فرائ آ كه (اس كے نزول كا ون) ہمارے الگوں اور پچیلوں کے لیے عید اور تیری طرف ے نٹانی ہو جائے۔

فَالَ عِبْسَى ابْسُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبُّنا ٱلْرِلْ عَلَيْنَا مَآيِدَةً بِنَ السَّمَآءِ تَكُونُ لَمَا عِبُدًا لِأَوْلِنَا وَأَخِيرِنَا وَأَيَّةُ مِّنَّكُ (المالده: ٥٠)

واكثروميد زحيلي في العاب اس سورة عليم سورة العقود اور سورة المنتقد وجي ب-رسول الله ويا في فراياسورة الماكده الله كى ملوت عن منقذه كملاتى ب- كو تكه يه سورت الني يرصف والے كو عذاب كه فرشتوں كے باتموں سے نجلت ويل ہے۔(التغیر المنر اجرام من میں اس روایت کالمقد تس ل سکا۔ قاضى ابوالخير عبدالله بن عمر بيناوي شافعي متوفي ١٨٥ه م لكين بي.

نی چہرے روایت ہے کہ جس شخص نے سور کا کدہ کو پڑھا'اس کو دس نیکیوں کا جردیا جائے گا وراس کے دس گناہ مٹادیئے جا کیں گے اور اس کے درجات بلند کیے جا کیں گے اور یہ درجات ہر شنفس یہودی اور نفرانی کے عدد کے برابرہوں گے۔

علامه احمد شماب الدين خفاتي حنى متوفى ١٩٠١مد لكي ين

قاضی بیناوی نے جس مدیث کاذکر کیاہے " یہ موضوع ہے۔ امام ابن الجوزی نے اس مدیث کو حضرت الی کی روایت سے نقل کرے لکھا ہے۔ یہ موضوع ہے۔

(مناية القاشي عيم ٢٠٥٥ مطبور وارساده عيوت ١٢٨٣ه)

زمانه نزول

سور قالما کوہ علی ہے۔ اجرت کے بعد نازل ہوئی ہے۔ اگر چہ اس کی بعض آئیں مدیدیہ ہے لوٹے وقت کھ میں نازل ہوئی ہیں۔ اس سورت کی ابتداء میں عمرہ اور تج کے آواب اور احکام بیان کیے گئے ہیں۔ اس میں رسول اللہ جوہوں سو مسلمانوں کے ساتھ عمرہ کرنے کے لیے مند منورہ سے روانہ ہوگ کھ کرمہ سے ایک منزل کے فاصلہ پر ایک کنواں ہے ' بنے صدیدیہ کتے ہیں۔ وہ گاؤں بھی اس نام سے مشہور ہوگیا۔ اس مقام پر کفار نے مسلمانوں کو عمرہ اواکر نے سے روک ویا اور حسب دیل شرائد پر صلح کا؛

١- مسلمان أس مل والس عليه جا تعي-

ا - ا محلے سال عمرہ کرنے آئی اور صرف تین دن قیام کرکے ہلے جا کی۔

٣- التعياد لكاكرند أيس مرف كوار مائد لايس وه بحى نيام عن او اور نيام بهى تقيل من او-

- س کے بیں جو مسلمان پہلے ہے مقیم ہیں ان بی ہے کسی کو اپنے ساتھ ندینے جا کیں۔ اور مسلمانوں ہیں ہے کوئی مکہ میں روجانا جاہے تو اس کونہ روکیں۔
- ٥- كافرول إمسلمانوں بن سے كوئى مخص أكر عدينہ جائے تو إس كو واپس كر ديا جائے الكن أكر كوئى مسلمان مكہ بن جائے تو اس كو واپس نسيس كيا جائے گا۔

١- قبائل عرب كوالقياد مو كاك فريقين بي ب جس كے ساتھ جائيں معلمده بي شريك مو جا كي -

(مي الواري عور قر الحديد ٢٨٨٠ مع ١٠٠٠ مع مسلم عور قر الحديد ١٨٨٠ مدا مدا مل العدى والرشاد ع ٥٠٠٥)

ملت بجری کو مسلمانوں نے عمرة القسناء کیااور نو بجری میں مسلمان فرضیت تج کے بعد پہلی بار حضرت ابو بحری تیادت می جے کے لیے روانہ ہوئے۔اس لیے ضروری تقاکہ مسلمانوں کو عمره اور جے کے آداب اور احکام بتائے جاتے۔ کافروں کے بست سے

قبائل مسلمانوں کے مفتود علاقوں سے گزر کرج کے لیے کم کرمہ جاتے تھے۔ اس لیے یہ ہوسکا تفاکہ جس طرح کافروں نے

مسلمانوں کو عمرہ کرنے اور زیارت بیت اللہ ہے روک دیا تھا کمیں مسلمان بھی کافروں کو زیارت حرم ہے نہ روک دیں۔اس لیے ان کو اس معاملہ میں بھی ہدایت دیلی تقی۔ سور ۃ المائدہ کی ایتدائی آیات میں اس نوع کامضمون بیان فرمایا ہے۔

اے ایمان والوا این عمد بورے کرو تمادے لیے ہر تم کے جارپاؤں والے جانور طال کے گئے ہیں اسوانان کے جن کا تھم تم ہے جن کا تھم تا ہے۔ اے ایمان والوا اللہ کی نشانیوں کی ہے جرمتی نہ کرو اور نہ حرمہ والے ممینے کی اور نہ کعبہ میں جمیمی ہوئی قریانیوں کی اور نہ ان

جانوروں کی جن کے گلوں بی (قربانی کی علامت کے) پٹے پڑے ہوں اور ندان اوگوں کی جو اپنے رب کا فضل اور اس کی رضا تلاش کرنے کے لیے صحیر حزام کا قصد کرنے والے ہوں اور جب تم احزام کھول دو تو شکار کر بکتے ہو۔ اور کسی قوم کے ساتھ عداوت تمہیں اس پر ندائسلنے کہ انہوں نے تمہیں مجد حزام جس آنے ہے روک دیا تھا اق تم بھی ان کے ساتھ زیادتی کو۔ اور تم نیکی اور تقوی پر ایک دو سرے کی مدد کرواور گناولور تکلم جس ایک ود سرے کی مددنہ کرو اور انڈر سے ڈرتے رہو ہے شک اللہ سخت سزاد سے والا ہے۔ والما کھونا ہوں

ان آیات سے واضح طور پر بد معلوم ہو آ ہے کہ سور و المائدہ صلح مدیب کے بعد نازل ہوئی اس کی بعض آیات جمتہ الوداع کے موقع پر مکہ محرمہ میں نازل ہوئی ہیں۔

الم محدين اساعيل عفاري متوفى ٥٦ مد روايت كرتے مين

حقرت عمرین العقطاب بوائر بیان کرتے ہیں کہ ایک یہودی نے ان ہے کہ اے امیرالو مٹین آپ کی کآپ میں ایک آبت ہے جس کی آپ لوگ خلات کرتے ہیں۔ اگر وہ آبت ہم یمود یون پر نازل ہو تی ق ہم اس دن کو عمیر مناتے 'آپ نے پو چما وہ کون می آبت ہے؟ تو یمودی نے کما الیسوم اکسلت لکم دیندکم و انسمت علیکم معمنی و رضیت لکم الاسلام دیسا (السائدہ: ۳) حقرت عمر نے فرالی ہمیں معلوم ہے وہ کون سے دن نازل ہوئی تھی؟ اور کس مقام پر نازل ہوئی تھی؟ ہے آبت نی بڑی پر مقام عرفات ہی نازل ہوئی تھی اور وہ جمد کادن تھا۔

(می بخاری کی ارقم الحدیث: ۳۵ کی مسلم ج ۴ رقم الحدیث ۱۵۰ سنی ترزی کی ۵۴ رقم الحدیث ۲۰۵۳ سنی نسائی کی ده ۴ رقم الحدیث ۲۰۰۲ سنی کبریل للتسائی کی کر تم الحدیث ۱۳۵ سنی کبری للیمتی کیچه م ۱۸۵۰

نیزالم ترفری دوایت کرتے ہیں کہ معزت ابن عباس نے اس آیت کو پڑھا"الیوم اکسفت لکم دبنکم و انسست علیکم نعستی ورضیت لکم الاسلام دیا"اور ان کیاس ایک یمودی تحل اس نے کہا اگریہ آیت ہم پر نازل ہوتی تو ہم اس دن کو حمیر بنا لیت۔ معزت ابن عباس نے فرایا یہ آیت دو حمیدوں کے دن نازل ہوئی ہے۔ جمد کے دن اور عرف کے دن۔ اہم ترفری نے کمایہ حدے من فریب ہے اور حدیث ابن عباس میجے ہے۔

(سنن تريري عه و قر قم الحديث. ٥٠٠ ١ مطبوعه وار الفكر "بيروت)

حافظ احمد بن علی بن جر عسقلانی سوقی ۱۵۸ه اس مدعث کی شرح می لکستے ہیں سمیرے زدیک اہم بخاری نے اس مدعث میں اشارہ پر اکتفاء کیا ہے ' دونہ اہم المحق کی قبیصہ ہے روایت میں یہ تعریح کے یہ روایت بھد کے دن اور عرف ک دن نازل ہوئی ہے اور الجمدنلہ اید دونوں دن ہمارے لیے حمید میں اور اسی طرح اہم ترزی کی سمیت میں ہے کہ بعد کادن اور عرف کادن عمید میں "۔ (فخ الباری 'ج) میں ۵۰۱ مطبور دار فشر الکتب الاسلامیہ 'کابور ' ۱۰ میددی

مانظ جاال الدین سیوطی متوفی الاه بیان کرتے ہیں "الم اجر اور الم ترخی نے سند حسن کے ساتھ اور الم حاکم نے تھی سند کے ساتھ دواہت کیا ہے۔ الم ابن مردویہ نے اور الم بیعتی نے اپنی "سنن" میں محضرت عبد الله بین الله عنما سے دواہت کیا ہے۔ الم ابن مردویہ نے اور الم بیعتی نے اپنی "سند" میں الله عنما الله عنما ہے کہ آخری سورت ہو نازل ہوئی وہ سور ق الما کدہ اور سور ق الفتح ہے۔ الم ابن الی شیبہ نے اپنی "سند" میں الم بین الم ابن مردویہ نے اور الم بیعتی نے "دلا کل النبو ق " بین ام عمویت میں سے اور انہوں نے اپنی محترم سے دواہت کیا ہے کہ دسول الله بین ہوئی اور اس کے تقل سے آپ کم محترم سے دواہت کیا ہوئی اور اس کے تقل سے آپ کی اور انہ کی اور انہ کی اور انہ کی اور انہ کی گوئی مضباء کا شانہ ٹوٹ گیا۔

الم الوعبد في الم الوعبد في من كعب افتر على سے رواحت كيا ہے كه رسول الله علي إلى كمد لور هديند كه ورميان جند الوداع بن مورة الماكره فافل او في اس وقت آب الى او نتى پر سوار تقد اس كا شائد فوت كيا كور في علي اس سے الر كئے۔ الم معيد بن منصور لود للم ابن المنفذ و في ايو ميسوست وواعت كيا ہے كہ جو سورت آخر بن فازل او في و الماكده ہے اور اس من سرو قرائفن اين۔

انام فرانی اور آمام این المنذر فے ابر میموے روایت کیاہے کہ المائکرہ یں اٹھارہ ایے فرائض ہیں جو کسی اور مورت می نمیں ہیں عور اس کی کوئی آیت منسوخ نمیں ہے۔

آیام احد الم مُسائل الم این المنذر اور ایام بیمتی نے پی سن میں دوایت کیا ہے۔ جبید بن نفیر کہتے ہیں کہ میں ج کرنے

کے بعد حضرت بنائشہ رمنی اللہ عنما کی فد مت جی حاضر ہوا۔ حضرت عائشہ نے پوچھا اے جبید اکیا تم الما کدہ کی خلات کرتے

ہو؟ میں سے کما کہا مضرت عائشہ نے فرمایا ہے آخری سورت ناقال ہوئی ہے۔ اس جی جو طائل ہے تم اس کو طائل سمجھواور اس
میں جو حرام ہے 'تم اس کو حرائم سمجمو۔ الدر المشور 'ج ما میں میں مامطور کہتہ آب اللہ المعطمی 'ام ان)

ان اعلیت کو پڑھنے سے معلوم ہو جا آ ہے کہ مدیبہ سے واپسی کے بعد رسول اللہ بہیر کی وفات تک یعنی دھ ہے لے کر دار تک مورة الما کرد کے نزول کا زمانہ ہے۔

سورة النساء اور المائده من ارتباط أور مناسبت

سودة النساه اور سورة الما كده دونول بن ابل كلب يمود و نسادي منافقين اور مشركين كه اعتراضون كه بوايات بيان كه شي اور ان كه بالله عقائد اور نظريات كاردكيا كياب اور سيد بامجر منظير كي نيوت اور د مالت كو بابت فربايا به ان دونول سور توان سه بالله عقائد اور هميو د كويو راكرت كا تظم ديا كياب سورة النساه بن عقد فكاح اعتراكات عقد وميت الندو و كات اور عقد اجاره كويو راكرت كي ما كيدكي كل به اور سورة النساء كي ابتداء عقد كي بوراكرت كي تميد بيان كي تميد بيان كي تميد الدي بي المراح من قضى طور ير خركو حرام قرار ديا به سورة النساء بي تميد المراح سورة الماكدة بي تضي طور ير خركو حرام قرار ديا به سورة المراح سورة المراح بي مل سورة المراح سورة الماكدة بي المراح بورة المراح سورة المراح بورة المراح بورة المراح سورة المراح بورة المراح سورة المراح سورة المراح سورة المراح بورة المراح سورة المراح سور

الساء اور مورة الما كده في مساكل قرعيد اور احكم شرعيد بر زياده زور رياكيا ب-

و شو اور تھم کے انکام ان دو ٹوں سور توں میں مشترک ہیں۔ سور ۃ انتسام میں پاک وامن مسلمان مور توں سے نکاح کے انکام بیان فرمائے ہیں اور عدل و انعمائی انکام بیان کیے ہیں اور عدل و انعمائی کرنے اور توں سے نکاح کے انکام بیان کیے ہیں اور عدل و انعمائی کرنے اور توڑی ٹور پر چرکاری کا تھم این دولوں سور توں جی۔

سور ۃ المائدہ کھانے پینے افتار 'احرام ' یوروں اور ڈاکووں کی مداور کقارۃ حم کے احکام میں منفو ہے۔ جیسے سور ۃ النہاء خواتین کے حقوق 'ورافت اور قصاص کے احکام میں منفو ہے۔

سورة المائده کے مضامین کا غلاصہ

الله سے کے ہوئے ہر حمد کو پوراکرنے کا تھم " وحت والے مینوں اور قام شعار اللہ کی تنظیم کا تھم اوارہ میں اللہ اللہ کا منابطہ الل کا اللہ کے عمادت اور آداب کا منابطہ الل کاب کے شکار کرنے کی ممانعت ' جن چزوں کا کھنا وام ہے ' ان کابیان ' فکاری جانوروں کی تربیت اور آداب کا منابطہ الل کاب کے کھناوں اور آن کی موروں ہے نکاح کے احکام (المائدہ: ۵۰۱)

وضوى فرضيت كابيان والت عذر يس تيم كالحم مسلمانوں كو كفارك شراور فسادك باوجود عدل والمساف يرقائم رہے كا

جُيانُ اللَّرِ أَنْ

عم بنواسراكل سے اتباع شريعت كے حدوميثل فين كابيان اور اس حدك تو ثانى كادج سے ان كالعتى ہونا۔ (الما كدو: ١٠٠٣)

نساری سے میٹال لینے کاذکراور میٹال بورانہ کرنے ہان کے عذاب کابیان اعل کاب کود موت اسلام "یبود فور نساری کے اس دعویٰ کارد کہ وہ اللہ کے بیٹے اور اس کے محبوب ہیں۔ بواسرائیل پرافٹہ کی نعتوں کابیان کے دغیرت کی بیٹارت کے ساتھ ان کوارش مقدسہ میں داخل ہونے کا بھم فور این کی مافریاتی اور بیندل کی سزامی ان کا بیابی سال بھے معرامی بھی بات سائے دیا ہو۔ ان کو دیا ہا۔ سوال

ا الله المعالل كو قتل كرة اليد اندان كا قاتل قدام اندان كا قاتل به الكولال كرود مسلمان كو الناع شريده كا تقم ا چورى كي مد اني منظير كي عد الت مرح كرج كرف كرف كي يمود كي مازشون كابيان اور ان كارد به المدائدة الاسران الله ا فسار في كو ان كاحمد يادوانا قر آن جيد كا قول قيمل او فا الل كذب أكر الي بدعلت من إراد المن المرح قوانس ان كر مال ير چمو ذنا مسلمانون كو يمود اور فساري كو دوست نه يعاف كا تحم "يمود و فساري كرماني قساق ركاف كي بنا بر منافقون كو زجر و قراع الذكر منافقون كي كوكي بدواه المن خواه ود حرة الوجا كم براها كدوات المداهم

يهود كودوست بنائے پر منافقوں كو سرزنش يهودكى دحوك بازى لور ان كے علاء كى سے جميتى پر سرزنش يهود كے اللہ بر طخر كا جو اب يهود كا جنگ كى اگر بعثر كلتے دہنے كا بيان احمل كناب كو دحوت استلام "يهود كا اللہ سے حدد و ميثانی كرنے كے بور اس كے خلاف كرنا اور عبوں كو حمل كرنا۔ (المائمددن - عدہ)

نساریٰ کے متنیدہ طول اور شکیدہ کا گفر ہونا محترت میسیٰ اور ان کی والف کا محج مرجہ ' بنو اسرا کیل پر محترت واؤد اور محترت مسیح کا لعنت کرتا 'اسلام و شنی بھی بیوو' مشرکین قریش لور فصار ٹی کے مزاج کا فرق ' میسائیوں بھی ہے جن پر ستوں کی شمین۔(المائدو:۱۸-۱۷)

از فود کی طافل چڑکو حوام کرنے کی عماقت مد ہے راکرنے کی ٹاکید اسلم کے کفارہ کابیان مراب ہوئے ہے۔ اور قال نکالنے کے جہوں کے حوام ہونے کا بیان اصالت احرام عی شکار کرنے کی عماقت کا خودت سوال کرنے ہے معم کرہ بجیو، سائبہ ومیلا اور عام وفیرہ کو کفار کے حوام کئے کی قدمت کرنا اور کفار جو اپنے آباد کی اندھی تھید کرتے تھے اس کارد کرف

(AZ-I-A:::5UI)

سنری وصت پر کواہ مقرر کرنے کی ہدایت اکوائی کے آواب اور امکام اقیامت کے دن انہیاء طلیم السانام کا محدیا اور امکام اقیامت کے دن انہیاء طلیم السانام کا محدیا اور دست کے سیلی سے دنول ما کدہ معرت میسٹی علید السلام کی خصوصیا اپنی است کو تبلیغ کرنے کا بیان اصفرت میسٹی کے حوار ہوں کا حضرت میسٹی سے دنول ما کدہ کھانے کا خوان) کی درخواست کرنا اور ان کے لئے آمان سے ماکدہ کا نازل ہونا۔ میسائیوں سکے ایک مقیدے سے معرف میسٹی کا بیزار ہونا احترت میسٹی علید السلام کا کنہ گاروں کی شفاعت کرنا مور اوڈ کی مقلت اور کیروائی کا بیان۔

(الماكرة: ١٣٠٠)

سور ۃ المائدہ کا اہمال خاکہ میان کرنے کے بعد میں اللہ کی توثیق اور اعانت ہے سور ۃ المائدہ کی تغییر شروع کر آ ہوں۔ اللہ العالیمن الجھے اس تغییر میں ہراہے پر ہر قرار رکھتا اور خطاؤں اور لفزشوں ہے پچانا۔ اس تغییر کو اعتمام بک پہنچانا' اے اپی اور اپنے رسول کرم بڑھیے کی بارگاہ میں اور مسلمانوں کے نزدیک مقبول بنانا اور اس کو تیامت تک فیض آفریں اور نفع آور رکھنا اور اس کو میرے لیے صدقہ جارہ یہ بنانا اور محض اپنے فینل ہے جھے بخش دیا۔ آئین ہار ب التری کے نام سے انترق کری بول) جرایت دخم فوٹے والا بہت مبران سے 🔾 ے برل ، اور تر ال وگول کی جر لینے دسب کا نفس اوراس کی رضا کوش ک

یں آئے سے روک ویا تھا ترقم ہی ان محساط نیادل کرداور تم نیکی اور تعوٰی پر ایک وور

طبيان القر آن

بلدسوم

التريع

التَّقُوٰى وَلَاتَعَاوَنُواعَلَى الْإِنْمِ وَالْعُنُوانِ وَاتَّقُوا اللهُ

کی مدد کرو ، اور گناه اور علم یم ایک ودمرے کی مدد نه کرون اور الله سے وید ورمون

رات الله شريدُ العِقارِب @

ب ثك الله مخت بزا دينے والاس 0

الله تعالى كاارشادى: اے ايمان والوالي عود (مدول) كو يوراكرو

عقود كالغوى اور عرفي معنى

عقود عقد کی بینے ہے۔ عقد کا منی ہے کی چیز کو پہنٹی اور مضبو فی کے ماتھ دو مری چیز کے ماتھ واصل کیا' یا ایک چیز کی دو مری چیز کے ماتھ کی بینے کا انتہام کریا' یعنی اس دو مری چیز کے ماتھ کی بینے کا انتہام کریا' یعنی اس الاوم کو باننا' اور مقود ہے مراد دہ عمود جیں جو اللہ اور بیندوں کے در میان کیے گئے گئے وہ عمود جیں جو بیندوں نے آئی جی مقد تھے اور عقد نکاح د فیرو کے ماتھ کیے ' یا جو اوگوں نے آئی دو مرے کا ماتھ دسینے اور آئی دو مرے کی دو کرنے کے عد کے ' یا وہ ایک دو مرے کی دو کرنے کے عد کیے ' یا جی ایک میں جیزر طف اٹھ کر عدد کیا۔

عقود كاشرعي معني

انند تعالی کے قرایا ہے۔ "اے ایمان والوا اپنے مقود کو ہر راکو" ادلتہ تعالی کی ذات مقات اس کے ادکام اور اس کے افعال کو ماننے اور قبول کرنے کا ہم ایمان ہے اور اس کا نقاضا ہے ہے کہ ایمان والے اس کے تمام ادکام پر عمل کریں اور جن کاموں ہے اس نے متع کیا ہے ان ہے یاز رہیں۔ للذاجو شخص ایمان لا آئے "اس کا ایمان اس عقد اور حمد کو متضمین ہے کہ وہ الله تعالی کے تمام ادکام کو بجالا ہے گا تو اس آیت کا معنی ہے کہ اے ایمان والوا تم نے ادلتہ پر ایمان لا کر جس عقد کا الرام مرایا ہے اس کو بوراکرو۔

اس تہت میں متود سے کیا مراد ہے؟ اس کی کئی تغیریں کی گئی ہیں۔ اہم ابن جربر اپنی سند کے ساتھ روایت کرتے ہیں حضرت ابن عباس رضی اللہ تعمانے فرمایا اللہ تعالی نے اپنے بندوں سے سے عمد لیا ہے کہ وہ اس پر ایمان لا کیں 'اس کی اطاعت کریں 'جن چزوں کو اس نے حلال کیا ہے 'اس کی وطائل قرار دیں اور جن کو اس نے حرام کیا ہے 'ان کو حرام قرار دیں۔

ابن زید اور زید بن استم نے کمااس ہے مراد وہ مقد اور عمد ہیں جو لوگ آپس میں ایک دو سرے کے مانھ کرتے ہیں۔ مثلاً تھم کھاکر معاہد وکرنا محقد نکاح اور محقد زجے وغیرہ

مجامہ کے بیان کیائی سے مرادوہ محقود ہیں جو زمانہ جالمیت میں لوگ ایک دو سرے کی مدد کرنے کے لیے کرتے تھے افزادہ نے کما اس سے مراد وہ محقود ہیں جو افتہ تعالی نے اہل کتاب سے تورات اور انجیل میں لیے تھے کہ وہ نبی ہوتی ک تعدیق کریں کے اور آپ کی کتاب پر ایجان لا کمیں گے "۔

(جامع البيان "ج ٢٠ ص ٢٦- ١٦٠ ملحصا - مطبوعه وار الفكر "بيروت ١٣١٥ه)

عقود کی اقسام

بعض علاء تي بان كياب كر مقدكي تين فتميس بي

ئېيان انقر ان

فلدسوم

- (ا) الله اورباره کے درمیان عقد
- (۲) بنره اور اس کے نفس کے در میان عقد
- (۳) ایک انسان کادو مرے افسان کے ماتھ مقد۔

جو عقد الله اور برہ کے درمیان ہے اس کا موجب علی ہے یا شرع ہے۔ علی سے مرادیا قربداہت علی ہے کہ تک۔

انسان کی متل میں اللہ قبائی نے ایسانور رکھاہے جس سے انسان اپنے خالق کی معرفت عاصل کرلیتا ہے اور یا عقل سے مرادیہ ہے کہ انسان گلوق میں فورو گلر کرے قربر جز کاایک تقم اور صبا کے ماتھ کام کرنااور نظام کا نکات میں کی فرق اور وخد کا واقع نہ ہونا 'زبان طال سے یہ کمنا ہے کہ اس کا کوئی فائل ہے اور وہ فائق وصدہ لا شریک ہے 'اور یا اس عقد کا موجب شرع ہے اور شرع سے مراد کہ اور معت ہے۔ موکلب اور مالت میں اللہ تعالیٰ کے جو ادکام بیان کے گئے ہیں 'بھو ایمان النے کے بود ان سب پر عمل کرنے کا اللہ سے مواد ہے بیٹرہ کا نظر مین اللہ تعالیٰ کے جو ادکام بیان ہے گئے ہیں 'بھو ایمان النے کے بود ان سب پر عمل کرنے کا اللہ سے مواد ہے بیٹرہ کا نظر مین اللہ اور اس کے تھی حالات ہے۔ اور اس کو قر اکر نام تحب ہے۔ اگر وہ کی مباح کام کو قر کر اس کا نظر دان کی خم کھانا ہے قواس تھی جو داکر داس کا نظر دادا کرنا گھارہ دادا کرنا میں صعب ہور آگر وہ کمی معصبت کی یا کسی عبادت کو قرک کرنے کی خم کھانا ہے قواس تھی کو جو داکر تام توام ہے 'اور اس کو قر شراور اس کو جو داکر داس کو جو داکر داری ہور اکرنا جو میں میں جو داکر داری جو داکر داری کی میں معصبت کی یا کسی عبادت کو قرک کرنے کی خم کھانا ہے قواس تھی کو جو داکر داری جو داکر داری کی میں معصبت کی یا کسی عباد سے۔ اور آگر وہ کمی معصبت کی یا کسی عباد ہے۔ اور آگر وہ کمی معصبت کی یا کسی عباد سے۔ اور آگر وہ کمی معصبت کی یا کسی عباد سے۔ اور آگر وہ کمی معصبت کی یا کسی عباد سے۔

اور جو محقد ایک افسان اور دو مرے انسان کے در میان ہو آئے 'جے محقد نظا محقد نکاح دفیرہ۔ ان کا تھم معقود علیہ کے
اخترار ہے ہے۔ جس چڑ پر محقد کیا ہے آگر دہ واجب ہے تو محقد واجب ہے 'مثلاً غلبہ شموت کے وقت نکاح واجب ہے تو یہ محقد
واجب ہے۔ آگر دہ سنت ہے تو محقد سنت ہے 'جیے عام مالات میں محقد نکاح۔ آگر دہ جائز ہے تو محقد جائز ہے 'جیے بچے شراء۔ آگر
دہ کردہ ہے تو محقد کردہ ہے 'جیے نیز کی بچے۔ آگر دہ حرام ہے تو محقد حرام ہے 'جیے فر اور خنو او کی بچے۔ اس طرح محقد اجارہ
(کرایہ) کی اقتمام جیں۔

الله تعالی کاار شاوع: تمارے لیے ہر هم کے چاراؤں والے جانور طال کیے محے ہیں بھیست الانسام کامعتی

بہدے اس جاندار کو کتے ہیں جو بے مثل ہو اور عرف میں یہ سمندر اور منتکی کے چار پاؤں والے جانوروں کے ساتھ خاص ہے اور انعام اونٹ کلئے اور بحریوں کو کتے ہیں اور جو جانور ان کے ساتھ کمتی ہیں اجیے بھینس مجھیز اور ہران و فیرو۔ تاہم میں م

قرآن جوش ہے:

اَللهُ اللهِ في حَملَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِنَرْكَبُوا مِنْهَاوَمِنْهَاتَاكُلُونَ (المؤمن ٤٤)

وَ مِنَ الْانْعَامِ حَمُولَةً وَ مَرُسَا وَكُلُوا مِنَا رَرُفَكُمُ اللّٰهُ ٥٠٠٠ تَمْيِيَةَ أَرُواجَ مِنَ الطَّمَانِ النَّيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ الْنَبْنِ ٥٠٠٠ وَمِنَ الْإِبِلِ النَّيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ الْنَبْنِ ٥٠٠٠ وَمِنَ الْإِبِلِ النَّيْنِ وَمِنَ الْبَهَرِ الْنَبْنِ ٥٠٠١ (الانعام:٣٧٠٢)

اللہ ی ہے جس نے تمہارے لیے چوپائے بنائے ' آ کہ تم ان جس سے بہن پر سوار ہواور ان جس سے بعض کو کھاؤ۔

ادر بعن (قد آدر) چوپائ (بدائي) برجد افعال والے ادر بعض زعن سے لکے بوئ کھاؤ اس رزق سے جو اللہ نے جہیں دیا۔ آئی جو ثرے پیدا کے ' بھیڑے دو (فر و مادہ) اور کمری سے دو (فر و مادہ س...) اور اونٹ سے دو بیدا کیے اور

ائے۔ روپواک

ان آجوں میں آٹھ چوایوں بھیڑ بمری مونٹ اور گئے کے جو ڈول پر انعام کااطلاق فربایا ہے۔ اس آیت کا معتی یہ ہے کہ الله تعالى في الما كده كى تيرى آيت من جو الول كالشفاء فرمايا ب ان كے علقه باتى تمام جانوروں كو ذريح كرنے كے بعد ان كو کھنٹالور ان سے بار برداری دغیرہ کے دیگر منافع حاصل کرنا جائز ہیں۔ جانوروں کے ذریح کرنے پر اعتراض کا جواب

مجوى اور بعدود ك ك بعض فرق بيركت ين ك جاورون كوز كاجائز نسي ب كيو كديد جانور ب زبان بي اور اپن منؤن مدافعت نس کر سکتے اور ان کو پکڑ کر ذیمدی نن کردیا تلم ہے اور کمی پر تلم کرناجائز نہیں ہے۔ بعض مسلمانوں نے اس کے جواب میں کماکہ ذیج کے وقت ان کو تکلیف نہیں ہوتی اور اللہ ان سے اس تکلیف کو اٹھالیتا ہے۔ لیکن اس جواب میں مكابره ب اور بدابت كانكار ب معزل في كما ورولور تكليف مطلقة فيج نسي ب انسان مرجري اور جراجي كرياب أكد اس عمل جرای کے ذریعہ اس کو کمی بری تکلیف سے نجات فل جائے۔ ای طرح ان جانوروں کو آخرت میں ذرع کی اس تکلیف كے بدل بهت مور موض ملے كا اس ليے يہ فتيح شيں ہے اور اہل سنت نے يہ كماكہ چوہوں كو ذرع كا تكم اللہ تعالى نے ديا ہے اور الله برجز كالك ب اوروه برطرح تعرف كرسكان - اس يركوني اعتراض نس ب مظلم اس وقت مو آجب فيركي ملك مي تعرف کیا جاتا اور جب برجزاللہ کی ملک جس ہے او پرجب وہ اپنی ملک جس کوئی تعرف کرے و کمی کو احتراش کرنے کا کیا حق

> الله تعالى كالرشادي: المواان كرجن كالحكم تم ير أئتده تلادت كيا جائد المائده: ١) منسرین کاس پر اجماع ہے کہ اس استفتاء کا بیان (الما کدونا) من بیان کیا گیاہے اور وہ یہ ہے:

حردار 'ركون كابما بواخون منويو كاكوشت أورجس جانور ير ذرع ك وقت غيراند كانام بكار أكميا بو اور كالمحت جاند والا اور چ ث سے مارا ہوا اور اوپر سے گرا ہوا' اور جس کو در ندے سے کھالیا ہو تحر جس کو تم نے (اللہ کے نام پر) نزاع کرلیا اور جس کو بنوں کے لیے نسب شدہ چھوں پر فرا کیا گیا ہو (یہ سب) تم پر حرام کے محے ہیں۔

الله تعالی کاارشادے: کیکن تم مالت احرام میں شکار کو طال نہ مجمعا کے ٹک اللہ جو جاہتاہے تکم رہاہے۔

(tin L(U))

اس سے پہلی آست میں اللہ تعالی نے مصیدمہ الانعام (جوپایوں) کو طال فرمایا تھا۔ اب یہ قرمایا ہے کہ جو چوپائے شکار بول أوه طالت الزام من طال في إن أورجب الرام مكول ديا بو أو طال بي-

اس آیت سے بظاہریہ معلوم ہو آ ہے کہ محرم کے لیے ہر تئم کاشکار کرنا جائز نسیں ہے الیکن ایک اور آیت سے معلوم ہو تاہے کہ محرم پر صرف فظی کاشکار کی منوع ہے اور سمندری شکار کرنا جائز ہے و آن مجد میں ہے:

حمادے لیے سندر کا شکار اور اس کا طعام (اس کی سیجکی اول محملیان وغیرہ) طال کر دی گئی میں متمارے لیے (بھی)

اور تمهارے مسافروں کے لیے (مجی) اور جب تک تم محرم ہو' تم ي فتكل كافكاد كرياح ام --

أُجِلَّ لَكُمْ صَبْدُ الْبَحْرِ وَ طَعَامُهُ مَتَاعًالُكُمْ وَلِلسَّيَّارُودُ حُرِمَ عَكَيْدُمُ صَيْدٍ الْبَيْرِ مُنَادُّمُنَّمُ مُحَرِّمًا (السالدونا)

اگر کوئی مخص بید کے کہ اس کی کیادجہ ہے؟ کہ اللہ تعلق نے محرم پر خطی کا شکار کرنا ترام کیاہے اور سمندر کا شکار طال کر یا ہے؟ اس کاجواب بیرے کہ اللہ تعلق تمام چیزوں کا الک اور خالق ہے اور نمی عام تھم میں نمی چیز کو منتفی کرنے یا نمی چیز کی

ئبيان انقر ان

تخصیص کرنے کی دجہ سے اس پر کوئی اعتراض نہیں ہے "اس کیے اللہ تعلق نے قربلا ہے: بے ٹک اللہ جو جاہتا ہے ، تھم دیتا ہے۔
اللہ تعالی کا ارشاد ہے: اے ایمان والوا اللہ کی نشانیوں کی ہے حرمتی نہ کرو "اور نہ حرمت والے ممینہ کی "اور نہ کعبہ میں جبیجی ہوئی قربانی کی علامت کے) ہے پڑے ہوں۔ (المائدہ: ۱۲)
میں جبیجی ہوئی قربانیوں کی "اور نہ ان جانوروں کی جن کے گلوں میں (قربانی کی علامت کے) ہے پڑے ہوں۔ (المائدہ: ۱۲)
شعائر اللہ کا لغوی اور شرعی معنی

شعارُ شعرہ می جمع ہے 'ہروہ چیز جس کو کسی چیز کی علامت قرار دیا جائے 'اس کو شعیرہ 'شعار اور مشحرہ کہتے ہیں۔ جس مدی (قربانی کے جانور) کو مکہ بھیجا جا آ ہے 'اس کے گلے میں بار'جو آ' یا در دنت کی چھال ڈال دیتے ہیں۔ اس کو بھی شعار کھتے ہیں۔ شعائز کی شری تعریف میں حسب ذیل اتوال ہیں:

عطاء نے کما کہ شعارُ انلہ سے مرادیہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کی نار انسکی سے ایفٹاب کیا جائے 'اور اس کے احکام کی اطاعت کی جائے۔ خلاصہ بیہ ہے کہ شعارُ اللہ سے مراد ہے ایلہ کی معدو کی علامتیں 'اس کا امر' اس کی نمی 'اس کے مقرر کیے ہوئے فرائض اور محرات۔

حضرت ابن عباس نے فرمایا شعائز اللہ ہے مراہ ہیں مناسک جے۔ حضرت ابن عباس نے فرمایا مشرکین کعبد کا جج کرتے تھے' مدی بیمجے تھے' مشاعر کی تعظیم کرتے تھے اور سفر جے میں تجارت کرتے تھے۔ مسلمانوں نے ان پر حملہ کرنے کا اراوہ کیا تو اللہ تعالیٰ نے یہ آیت ٹازل فرمائی: کہ اے ایمان والوا شعائز اللہ کی ہے حرمتی نہ کرو۔

عابدے اس کی تغیری کیا: شعار اللہ سے مراوب صفاعموہ مدی اور دو سرے مشاعر۔

(جامع البيان ١٦٠٠م ٢٠٠٠م ١٠٠٠ مطبوعه داد الفكر محروت ١٣١٥ه)

حرمت والے مینوں مدی اور قلا کد کابیان

الله تعالى نے فرانیا "اور ند حرمت والے ممینہ کی ہے حرمتی کرد" حرمت والے مینوں کا بیان اس مدیث میں ہے۔ امام محدین اسامیل بخاری متونی ۲۵۷ مدروایت کرتے ہیں۔

(منج البخاري مع من تم الحديث:٢٠٣٠)

الله الفالي ت قربالا اور المدعدي كي (ب حرمتي كرو)

مدى كامعنى بيدوه اونك عمرى يا كائد جس كوبيت الله جس بديد كياجائد

الله تعالى في فرمايا أور نه علا كدكى (ب حرمتي كرو)

قلا کہ قلادہ کی جمع ہے مدی کے گلے میں قربان کیے جانے کی نشانی کے طور پر اون کا بار 'یا جوتی یا در شت کی چھال ڈال دی
جاتی ہے۔اس کو قلادہ کہتے ہیں اور سال اس سے مرادوہ جانور ہیں جن کے گلوں میں قلا کہ ڈالے جاتے ہیں۔ اور ابن زید نے سہ
کما ہے کہ جو مختص حرم کے در شت کی چھال اپنے اور لیسٹ لین تھا'وہ مامون قرار دیا جاتی' اور جمال جاتی' اور قلا کہ کا یمی
معنی ہے (جامع البیان 'ج ' م ٤٧) حرمت والے میتوں کی ہے حرمتی کا معنی ہے 'ان مینوں میں قبل دغارت کری اور لوث مارکی
جائے 'اور حدی کی ہے حرمتی کا معنی ہے ان جانوروں کو ان کے ماکنوں سے چھین لیا جائے یا این کو کھ میں نہ جننے دیا جائے 'اور

قلائد كى بے حرمتى كامنى يہ ہے كە مدى كے كلے سے قلاده الكر ليا جائے الى كو نوج الكسوت كر خزاب كرديا جائے الى جس فخص نے اپنے جسم پر حرم کے در خت کی چمل لیپٹ لی ہو ہم کی ہے حرمتی کی جائے۔

الله تعالی كاار شادى: اور ندان لوكوں كى (ب حرمتى كرد) جوائي رب كافعل اور اس كى رضا علاش كرنے كے ليے

معرحام كاتعد كرف وإلى الااكدوم

آيت له كوره كاشان نزول

الم ابوجعفر محدين جرير طبري متوفى ١٠١٠هم ائي سند كے ساتھ روايت كرتے بال

ابن جرت نے نے اس آیت کی تغیر میں بیان کیا اس آیت میں تجاج پر لوث مار کرنے سے منع فرمایا ہے۔ اس کی وجہ یہ ہے ك طلم في النال كان آيا كاكد آب كى دعوت كے متعلق فور و فكر كرے "اس في آب سے كماني الى قوم كے مائنے آپ کی دعوت ویش کروں گا۔ آپ بتلائے کہ: آپ کس چز کی دعوت دیتے ہیں؟ آپ نے فرمایا میں حمیس اس بات کی دعوت دین ہوں کہ تم صرف اللہ کی عباوت کرو اور اس کے ساتھ کی کو شریک ند کرو اور نماز قائم کرو اور زکو ہ ادا کرو اور رمضان کے ممینہ کے روزے رکھو اور بیت اللہ کا عج کرو۔ حلم نے کہا آپ کے اس وین میں بختی ہے۔ میں اپنی قوم کے پاس جاکر آپ کی و موت کاؤکر کروں گا 'اگر انہوں نے اس دین کو تبول کرلیا تو یس بھی ان کے ساتھ تبول کرلوں گا 'اور اگر انہوں نے اس سے بیٹے مجيرل تويس بحي ان ك سات مول كك

آب نے اس سے فرانی تم واپس ملو 'جبوہ چلا گیاتو نی جھیز نے فرالید میرے پاس کافر چرے کے ساتھ آیا اور میرے یاں سے دموکہ دیتا ہوا لکا۔ جب وہ الل مدینہ کی چراکھیوں کے پاس سے گزراتو آپ کے اسحاب نے اس کو پکڑنا جابا النین وہ نکل میااور علمہ بنج کیا۔ وہ نچ کے موقع پر ملکن تجارت نے کر آیا محلبہ نے آپ ہے اجازت طلب کی کہ اس کو پکڑ کراس کا سالن اس سے چھین لیس اس موقع پر سے آیت ازل ہو گی۔اے ایمان والوا الله کی نشانیوں کی ہے حرمتی ند کرو اور ند حرمت والے ممینہ کی۔ اور نہ کعب میں جمیعی ہوئی قرمانیوں کی اور نہ ابن جانوروں کی جن کے گلوں میں ہے یزے ہوں اور نہ ان لوگوں کی جو ابے رب کا نظل اور اس کی رضا الل س كرنے كے ليے معيد حرام كا تصد كرنے والے ہول-

(جامع البيان ' ١٦٦ من 24 مطبوع وارا انظر ١٥١٥ ٥ مروت)

آیت ند کورہ کے منسوخ ہونے یا منسوخ نہ ہونے میں اختلاف

حضرت ابن حماس رضی الله منهانے قربایا الله تعالی نے مسلمانوں کو اس سے منع قربایا ہے کہ وہ کمی مخص کو بیت اللہ کے ج سے منع کریں یا اس کو کوئی تکلیف کانچا کیں و فوادہ موسن ہویا کافر چراس کے بعد اللہ تعالی نے یہ آیات نازل فرما کیں :

اے ایمان والواتمام مشرک محض نایاک بیں ' دواس مال

يَاتِبُهَا الَّذِيْنَ أَمَدُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَحَسُ مَلَا يَغُرَبُوا الْمُسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ كَابد مجرام كرم عجاميهم لهذار . (الشوب ۲۵)

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسْجِدَ الله شهدين عَلْيَ أَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِد

مشركين كے ليے يہ جائز نسي بي كدوه الله كى معاجد كو آباد كري ور آنخاليك ووالي جانون كے كفرير كواويں۔

(التوبه: ١٨)

مرانته تعالى نے مشركين كومسجد حرام من آئے ہے منع فرماديا۔

لنادہ نے اس آیت کی تقبیر میں بیان کیا کہ ہیہ آیت منسوخ ہوگئ ہے' زمانہ جالیت میں کوئی مخص حج کے لیے روانہ ہو تا اور حدی کے گئے میں قادہ ڈالٹاتو کوئی مخص اس پر حملہ نہ کر تا ابن دنوں میں سٹرک کو بیت اللہ میں جانے ہے منع نہیں کیا جا تا تھا اور ان کو یہ تھم دیا کیا تھا کہ حرمت دالے میمیوں میں اور بیت اللہ کے پاس قبل نہ کریں 'حتی کہ یہ آیت تازل ہوئی: خَافَةَ مَلْكُوا الْلَّهُ مُنْ ہِرِ کِیْتُنَ حَبَیْتُ وَ جَدَّ تَنْصُوهُمَّ مِنْ مُنْ کِین کو جمال باؤ 'ان کو قبل کردو۔

(التوبه: ٣)

اس آیت کے نازل ہونے کے بعد وہ تھم منسوخ ہو گیا۔

تجانہ نے یہ کہا ہے: کہ یہ تھم منسوخ نمیں ہوا کہ ذاتہ جالیت میں لوگ تج کے لیے جانے والوں کو لوٹ فیتے تھے اور ان مینوں میں قبل بھی کرتے ہتھ اسلام کے ساتھ اللہ تعالی نے ان تمام کاموں کو حرام کردیا سواس آیت کا تھم سنسوخ نمیں ہوا۔ اہام ابن جریر نے لکھا ہے: کہ سطح قول یہ ہے کہ اس آیت کا تھم منسوخ ہو گیا کی تکہ تمام مسلمانوں کا اس پر اجماع ہے کہ مشرکین کے فااف ممال کے قبام میمیوں میں قبال کرنا جائز ہے ' فواہ وہ حرمت والے مینے ہوں یانہ ہوں۔ اس طرح اس پر بھی اجماع ہے کہ اگر مشرک اپنے گلے میں حرم کے قبام در فتوں کی میمال بھی ڈال کے تب بھی اس کا یہ فعل اس کے لیے قبل سے پند نمیں ہوگا جب تک کہ اس سے پہلے اس نے مسلمانوں سے پنادنہ عاصل کرلی ہو'یاکوئی معاہدہ نہ کرایا ہو۔

(جامع البيان عهم ٢٠٠٥ مسلط مطبور وار المكر كيورت ٥٠٠١ه)

اہم رازی نے تکھا ہے جو علاواس آبت کے مفرق ہوئے کے آگل نمیں ہیں وواس آب میں قضیع کے آگل اور ان جوں ہیں۔ ان جس علاو نے یہ کماکہ اس آبت کا یہ بعن ہے کہ جو مسلمان بیت اللہ کی زیارت کے تصد کے روانہ ہوں ان کی مدی کو لوٹنا اور ان پر حملہ کرنا جائز نمیں ہے کہ تھہ اس آبت کے شروع جی اللہ تعاقی نے قربلیا ہے ؛ کہ شعائز اللہ کو طال نہ کرو۔ اور شعائز اللہ کا طلاق مسلمانوں کی قربانیوں اور ان کی عباد توں ہے کا گر ہے 'نہ کہ کا مزان کی قربانیوں کے اور اس آبت کے مال کی ہے 'نہ کہ کا مزان کی قربانیوں کے اور اس آبت کے آخر میں قربانیا: جو لوگ اپنے رپ کا فضل اور اس کی رضا کو حملائ کرتے ہیں اور یہ بھی مسلمانوں کے لاکت ہے۔ ظامر یہ کہ یہ آبت ابتداء مسلمانوں کے ساتھ مخصوص ہے 'کافتر کو شامل ہی نہیں ہے 'حق کہ یہ کما جائے کہ یہ آبت ابتداء مسلمانوں کے ساتھ مخصوص ہے 'کھند کو شامل ہی نہیں ہے 'حق کہ یہ کما جائے کہ یہ آبت ابتداء مسلمانوں کے ساتھ مخصوص ہے 'کھند کو شامل ہی نہیں ہے 'حق کہ یہ کما جائے کہ یہ آبت ابتداء مسلمانوں کے ساتھ مخصوص ہے 'کھند کو شامل ہی نہیں ہے 'حق کہ یہ کما جائے کہ یہ آبت ابتداء مسلمانوں کے ساتھ مخصوص ہے 'کھند کو شامل ہی نہیں ہے 'حق کہ یہ کما جائے کہ یہ آبت ابتداء مسلمانوں کے ساتھ مخصوص ہے 'کھند کو شامل ہی نہیں ہے 'حق کہ یہ کما جائے کہ یہ آبت ابتدارت کے ساتھ مخصوص ہے 'کھند کو شامل ہی نہیں ہے 'حق کہ یہ کما جائے کہ یہ آبت ابتداری مسلمانوں کے ساتھ مخصوص ہے 'کھند کو شامل ہی نہیں ہے 'حق کہ یہ کمانے کہ ہو گھند کو شامل ہی نہیں ہے 'حق کہ یہ کہ یہ آبت ابتداری میں میں میں ہو گھند کی ساتھ کہ کو ساتھ کی ساتھ

ابومسلم استمال نے بید کو کہ اس آےت کے عموم میں وہ کافر داخل تنے جو نی جھیج کے عمد میں تھے اور جب سور ۃ توب کے نازل ہونے بعد ان سے مطیرہ ختم کر دیا گیا تو اب وہ کافر اس آےت کے عام تھم میں داخل نسیں رہے۔

ا تغیر کیر "ج" می ۳۵۳ مملومه داد اللکو 'وردت) الله تعالی کاار شاد ہے: اور جب تم احرام کمول دو تو شکار کرکتے ہو (المائدہ: ۳) میرفیہ اسر کے مواضع استعمال

اس آنت بن "ف احدها دوا" (شکار کرو) امر کامیخه به امر کامیخه متعدد مطانی بن استعل کیاجا آب-اس می مشهور جهیس مطانی بین-

ا- وجوبوك لي بي "واقيموا الصلوة وانوا الركوة" (البقرة: ٣٣) "نمازة كأم كولورزكوة اواكو"

1- استجاب ك لي بي "فكاتبوهم" (الور ٢٣٠) تمارك قلامون اور بانديون بي بوء مكاتب بوءا بإين انسي مكاتب كردو-

- ۳۰ ارشاد (دنیادی مصلحت کی طرف دہنمائی کرنے) کے لیے مثلاً واشبهدوا اذا تبایعتم "(البقرة ۲۸۳۰)"اور جب تم آپس میں خرید و فردخت کرونو کو ادینالو "استجاب اور ارشاد میں یہ قرق ہے کہ استجاب میں افروی تواب مطلوب ہو آہے، اور ارشاد میں دنیاوی فائدہ اور مصلحت ۔
- ۳۰ اباحث کے لیے "فکلوامساامسکن علیکم" (افاکد") "مواس (افار) کماؤ ہے وو (افاری جانور ار کا تمادے کے روک رمی "اس کی دو سری مثل ڈیر بحث آبت ہے" وادا حللتم فیاصطادوا" (الباکد: ۲) اور جب تم احرام کھل دو تو افکار کر بچے ہو"
- ۵- اکرام (عزت افرائی) کے لیے مثلاً اد معلوها بسسلام امسین "(انجزیس)" تم ان جنوں پس ملامتی کے ماتھ ہے خوف ہو کردافل ہوجاؤ"
- ۱- امّنان (احسان قرائد) کے لیے مثلا کیلوامسارز قسکم اللہ (الانعام: ۱۳۳) سم اللہ عرفی رزق ویا ہے اس سے کھاؤ"۔
- ٤٠ الخت (رمواكرية) ك لي مثلًا "دق اسك است العربر الكريم" (الدخان: ٣٩) " لي يك عزاب كامزو" ب الكريم " (الدخان: ٢٩) " لي يك عزاب كامزو" ب تك تك توى بدامعزز كرم ب
- ۸- تسویہ (وو پی وال علی مسلوات میان کرنے کے لیے) مثلاً "اصلوها ما صبروا او لا تصبروا سوا ، علیہ کے "
 (اللود: ۱۱) "اس آگ بیں داخل ہو جاؤ" پھرتم میر کردیا میرنہ کو "تم یر برابرہے"
- ٩٠ تب ك لي مثل اسمع بهم وابعسريوم ياتوسا" (مريم: ٢٨) وه كيمائة بول ك اور كياد كي بول ك اور كياد كي بول كريم والمحت اول كي المحت اول كي المحت اول كي المحت ا
 - ٠٠- كوين (كى بيز كوعدم من وجود من الدن) ك ليد مثلة "كن مبكون" (البقرد: ١٥) "بو سورد بو با آسي"
 - ١١- استقارك كي مثلة "الفواما استم ملقون "(يونن: ٨٠) "والوجو تم والتا يا يح بو"
- ۱۲- افبار کے لیے خالا ملیصب کوا فلیالا ولیب کوا کثیرا" (التوید: ۱۸۵) سوائیں جاہیے کہ تحوڑا آسی اور دو کی زیادہ"
- ۳۰۰ تمدید (دُرائے اور و حمکانے کے لیے) حملاً "اعتمالوا ماشتنم" (حم البعد ۳۰) "تم جو جاہو کے جاؤ" اس کی ایک اور یہ مثل ہے کہ اللہ تعافی نے شیطان ہے فرایا: "واستفرومی استعطعت منہم بعدونک "(نی امرائیل ۳۰) تو ان میں ہے جن کو اچی آوازے ڈکھا سکا ہے 'ڈکھا دے"
- ۱۳۰ انزار (ڈرائے) کے لیے۔ یہ بھی هم اول کے قریب ہے۔ حالاً عل تستعوا "(ایرائیم: ۳۰) "آپ کیے (چند دوزو) فاکموافعالو"
- ۱۵- تعصیر (عایز کرنے) کے لیے مثلاً افعانوا بسورة من مشله" (البقرد ۱۲۳) "مواس قرآن کی مثل کوئی مورت فے آؤ"
 - ١١٠ تخرك لي مثلًا "كونوا قردة عسايين "(القرده)" ومثكار عادية بقراء وبالا"
- عا- تمنى كري حال امواقيس ك شعرض ب "الاابها الليل الطويل انسعلى ""ن العلى دائساة كابر

١٩٠ استال (كى كى اطاعت شعارى بيان كرنے كے ليے) كوئى مخص كى سے كے عجمے بالى يادو۔

١٠- اجازت دينے كے ليے مثلاً كوئى فخص دروازه كمظمنانے والے سے كے اندر آجاؤ۔

١٦٠ انعام كركي شخا "كلوا من طيست ماررقنكم" (البقرة ٥٥) "تارى دى بوكى پاك يزول من عند كماؤ"

۲۲- کذیب کے شان ماتوابالتوراہ فاتلوهاان کنتم صدقیر"(آل مران: ۱۳۰)" آپ کیے کہ قدرات کے اور اس کوی موال تم سے بو

۲۳- مثورہ کے لیے' مثلاً معرت آبراہیم نے معرت اسامیل سے فرمایا "صاحطر میادا تیری" (الصفیتہ ۱۰۳) "تواب تم خور کرد 'تمهاری کیارائے ہے؟"

۳۳- انتبار (تدیر) کرنے کے لیے مثلاً "اسطروا الی شہرہ ادا انسسر و بینسعہ "الانعام ۴۹۱،" دیکھو در فت کے پھل کی طرف 'جب اس کو پھل گئے اور اس کے کینے کی طرف"

٠٢٥ - تغویض کے لیے 'مثلاً ایمان لانے والے ماحول نے فرعون سے کیا: "ها قبص ما است قباص" (للہ ٢٢) "لوجو فیعلد کرنا جابتا ہے سوکر"

۱۳۹- دعاکے کیے مثلاً" واعد عسا واعدر لسا وار حسسا" (البقرة:۲۸۳)" ہم کو معاف فرمااور ہم کو بحش دے اور ہم پر رحم قرما"۔

" ۲٪ تعیر کے لیے مثلاً "هدا عطاء ساه امس او امسک بغیر حساب" (س،۳۹) یہ ۱۵ری عطاب و آپ (جس پر چاپس) احسان کریں اور جس سے چاپیں احسان روک رکھیں۔ آپ سے پکو باز پرس نسیں ہوگی۔

(كنف الاسرار 'ج امس ۵۳ مطبوعه وار الكتاب العربي 'بيروت 'ااسلام و توضيح و نكويج 'ج ا'ص ۲۸۳ ۲۸۳)

تقاضائے امرے واحد ہوئے پر ولیل

ابن جریج نے کہ امران اللقت معانی میں استعمال کیاجاتا ہے اس کے اس کا منتنی و تف ہے۔ جی کہ کمی قرید ہے معلوم ہو جائے کہ یمیل پر کون سامعی مراد ہے؟ لیکن یہ قول صحیح نہیں ہے ؟ کہ تکہ اگر امر کا منتنی و قف ہو قو چر نبی کا منتنی بحی قائف ہونا چاہیے ، کے نکہ نبی کا استعمال بھی متعدد معانی میں ہوتا ہے۔ بھی نبی تحریم کے لیے ہوتی ہے مثل اور است کے الدر ہوا" (آل عمران : ۱۳۰) "موونہ کھاتو" اور بھی شخیرے لیے ہوتی ہے۔ مثلاً و لا تصدن تست کے الدر شرای "الدر شرای الدر الدول الدر اللہ شرای الدر سوا" (آل عمران : ۱۳۰) "موونہ کھاتو" اور بھی تحقیرے لیے ہوتی ہے۔ مثلاً و لا تصدن عب کے الی مامت سامہ ذیادہ لینے کے لیے کمی پر احسان نہ سمجے "اور بھی تحقیرے لیے ہوتی ہے۔ مثلاً و لا تصدن عب کے الی مامت سامہ ازواج المسلم " (انجر ۱۸۸) "آپ ابی آئی میں افعال بھی ان چڑوں کو نہ دیکھیں جو ہم نے کافروں کے گروہوں کو بچی فائدہ افعانے کے لیے دو کہ میں ہو ہم نے کافروں کے گروہوں کو بچی فائدہ افعانے کے لیے دو کر میں ہوتی ہوتی ہے۔ مثلاً "لا تست لموا عن اشب اور تری میں افعانی موال نہ کرد جو آگر تہمارے لیے فلا ہر کردی جائیں تو حسیں ناگوار ہوں "اور بھی شفقت کے لیے ہوتی ہے۔ مثلاً و سول اللہ میں تو تو اگر تہمارے لیے فلا ہر کردی جائیں آگوار ہوں "اور بھی شفقت کے لیے ہوتی ہے۔ مثلاً و سول اللہ میں قرت ہوتھی بھی قرقت ہوتو پر امراء و رنی میں کوئی فرت ہیں دہ گا مقتنی بھی قرقت ہوتو پر امراء و رنی میں کوئی فرت شمیں دہ گا حال کہ فعل کی طلب میں فرق پر احد کے مدی معل واحد " (تردی میں کوئی فرق نہیں دہ گا حال کہ فعل کی طلب میں فرق پر احد ہوتا تا بیت ہوتی ہا۔

امر کامقضیٰ وجوب ہونے پر دلا کل

عام علماء اور نقباء کے نزدیک امر کا مقتفی واحد ہے "کیونکہ امر کا ان معانی میں مشترک ہوتا غلاف اصل ہے۔ بعض علماء کے نزدیک بید واحد مقتفتی اباحت ہے "کیونکہ مید امر کا ادنی ورجہ ہے اور بعض علماء کے نزدیک امر کا مقتفی استجباب ہے "کیونکہ امر میں فعل کی جانب وجود کو ترجیح دیتا ضروری ہے اور اس کا ادنی ورجہ استجباب ہے اور اکثر علماء کے نزدیک امر کا مقتفی وجوب ہے " کیونکہ اللہ تعالی نے فرایا ہے:

مَلْيَحُدُرِ اللَّذِينَ يُتَخَالِعُونَ عَلَّ آمُرِهَ آنَ تُصِيْبَهُمْ فِنْكُ أَوْيُصِبْنَهُمْ عَذَابُ آلِيمُ

(النور: ۱۳) - الخياك-

اس آیت میں اللہ تعالی نے رسول اللہ بھی کے امر کی کالفت کرنے اور اس پر عمل نہ کرنے پر عذاب کی وعید سائی ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ امرے متعنیٰ پر عمل کرناواجب سے نیز اللہ تعالی نے ارشاد قرمایا

اور تد حمی مسلمان مرد کے لیے بیہ جائز نے اور ند حمنی مسلمان عورت کے لیے کہ جب اللہ اور اس کے رسول حمی کام کا بھم دے دیں او ان کے لیے اس بھم جس (کرتے یو ند کرنے کا) کوئی اعتبار ہو اور جو اللہ اور اس کے رسول کی باقرانی کرنے وہ ہے گئے کم کرای جس بھے گیا۔

جو نوگ رسول کے امرا تھم) کی مخالفت کرتے ہیں ' دواس

ے ڈرم کہ اہم کوئی آفت بنچ یا انہیں در دناک مذاب

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنَ وَلاَمُؤُمِنَ إِذَا فَتَعَسَى اللَّهُ وَ رَسُولُهُ أَمُرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْحِبَرَةُ مِنْ آمُرُومَمُ وَمَن يَعْمِضِ اللَّهَ وَرَسُولُهُ فَقَدْ صَلَ صَلْلًا مُبِينًا ٥٠ مُبِينًا ٥٠

اس آیت بی اللہ تعالی نے واشح طور پر فرمادیا ہے کہ اللہ اور اس کے رسول میجید کے امریکے مقتنیٰ پر عمل کرناواجب ہے اور اس بیس کرنے یانہ کرنے کا اختیار نسیں ہے اور اللہ اور اس کے رسول کے امریر عمل نہ کرنا تمرای ہے۔

اور الله تعالى كاارشاد ب

الله تعالى في شيطان كى مجده نه كرف كى اس ليه فرمت فرمانى به كه الله تعالى في اس كو مجده كاام كيا تعااور مد فرمت اس ونت موكى جب امروجوب كے ليے مور اسى طرح الله تعالى في حكامت كيا ہے كه حضرت مومىٰ عليه السلام في حضرت إرون عليه اسلام سے فتكوه كرتے موسے فرمايا "اف عصب امرى " (طر: ١٩٣)" كيا آپ في ميرے تھم كى نافرمانى كى؟"

ای طرح الله تعالی نے نقل فرمایا که حضرت موی علیہ السلام نے معترت فعنر علیہ السلام سے فرمایا.

وَلاَ اَعَتُصِلَى لَكُ اَمْرُا الكهدف الله) من آب كرى عم كى نافر الى ديس كرون كا- الله تعالى في تعالى في

ان دونوں صورتول می امری خلاف ورزی ای وقت لائق مواقف ہوگی جب امر کا مفتعنی وجوب ہو' اللہ تعالی نے فرشنوں کی درح کرتے ہونے فرایا:

لاَ يَعْصُونَ اللهَ مَنَا أَمْرَهُمْ وَيَعْعَلُونَ مَا (رَقِعْ)الله كرى عم كى افرانى نيس كرت اوردى كام ويُحْمَرُونَ (التحريمه) على الله مَنَا أَمْرَهُمْ وَيَعْعَلُونَ مَا كَرْفَعِينِ جَمِ كَاللهِ عَمْ دِياجًا عُه يَوْمَرُونَ (التحريمه)

تحمير عمل ندكرامعسيت اى وقت بو كابب عمير عمل كراوابب بو-

.

نيزالله تعالى في كغار كي فدمت كرتے موسية فرلما: وَإِذَا فِيلَ لَهُمُ أَرْكُعُوا لَا يُرْكُعُونَ

اور جب ان ہے کما جا آ ہے' نماز چ مو' تو وہ نماز نہیں

(المرسلات: ۲۸)

ان كى قدمت اس وجد سے كى كى ب كد ان كو نماز يزهن كا تكم ديا كيالور انهوں نے نماز نيس براحى اور يد قدمت اى وقت ورست اوگی ،جب ان کو نماز پرست کا حکم وجوب کے لیے ہو۔

. قرآن جيد كي ان آيات سے يدواضح موكياك امركامعتنى واحد ب كوروه معتنى دجوب ب- اس طرح نوكوں كاعرف ب كد جبود كى فنل كوجرة اورج طب كرية بن أو امر كاميند استعل كرية بن-

ممانعت کے بعد امرے مقتفیٰ کی تحقیق

جب پہلے می قتل سے منع کیا جلے اور پر بعد میں امرے میذ ہے اس قتل کو ظلب کیا جلے "تب ہی امر کا منتقلی وجوب ہو تاہے۔ اس منظر میں بھن علاء کا اختلاف ہے۔ بھن علاء نے کماد ممانعت کے بعد اس هل کا امراستجاب کے لیے ہو آہے۔ خلا اولد تعالی نے سور 3 جعد عل قربایا: "جب جعد کے ون اوّان دی جائے تو بھ (کاروبار) کو چمو ڑ دو 'اور اللہ کے ذکر کی طرف دو او اس کے بعد اللہ تعالی نے فریلا "جب لماز ہوری موجائے تو زمین میں مجمل جاؤ" اور:

وَابْتَغُوامِنُ فَضَلِ اللَّهِ (الحبعه:١٠) الله ك فعل كو الاش كروالين في الاروار كرو)

اس آعت میں ممانعت کے بعد رزق طلب کرنے اور کاروبار کرنے کا بوتھ ریا گیاہے کو بلور استجاب ہے۔

اور بعض طاوی کماک مماضد کے بعد اس کامیند الاست کے لیے ہوتا ہے۔ مثلاً سورة الما کددیس پہلے اللہ تعالی نے مات اوام ين شاركنے مع فريا اس كريو فريا.

إذَا حَلَلْتُم فَاصْعَادُوا(المائده:٢) جب تم احرام کمول دو و شار کر کتے ہو۔

ہم كتے يى كر ان دولوں اچوں عى استجاب لور ابادت قريندے البت ب اكو تكدرزق طلب كرے اور شكار كرنے كا عم بندول كوان كى منفعت ماصل كرف ك ليدواكياب أكراس عم كوواجب قراروب وإجائة تويه نفع ضررب منتلب مو جائے گا کے تک چرو ہے تس کے گا اٹکار نیس کے گا وہ گنے گار ہو گااور جو معنی کی قرید کی منام پر کیا جائے وہ مجاز ہو با ہے۔اس سے معلوم ہواکہ مماخت کے بعد بھی امرد جوب کے لیے ہو آ ہے۔

مماخت کے بعد امرکے دجوب کے لیے ہونے کی مثل بدہ اگد اللہ تعالی نے حرمت والے مینوں میں مشرکین کے خلاف قال سے منع فریا اور ان مینول کے بعد ان سے لال کرنے کا حکم ریا موریہ حکم وجوب کے لیے ہے۔

الله تعالى كاارشادي:

فَإِذَا انْسَلَّخَ الْأَنْهُمُ الْحُرْمُ فَاقْتُلُوا مكرجب حرمت والميض محزر جائي وتم مركين كو قل المسيركين حيث وحد تموهم (التوبه) كرومجان السي ياؤب

نیز اللہ تعالی نے پہلے نی مظیر کے محری بالنان وافل مونے سے منع فرمایا ، پھر فرمایا: جب تم کو بلایا جائے تو واخل مواور

ممانعت کے بعدیہ داخل ہونے کا علم بھی دجوب کے لیے ہے:

يَّا يُنْهَا الَّذِينَ أَمَنُوا لَا تَدْخُلُوا مِعْوَدَ النَّبِينِ اے اعان والواجب تک حمیں کھانے کے لیے بلایانہ إِلَّا أَنْ يُتُوْدَنَ لِلكُمِّ إِلَى طَعَلَمُ تَعْيَرٌ نَيْظِرِيْنَ إِلَّهُ جائے " ٹی کے محروں می وافل نہ ہو " پہلے ہے آگر کھانا کمنے کا

غيان القر أن

جلدموم

وَلْكِسُ إِذَادُ عِينَتُم هَادُ عُلُوا الاحراب: ٥٣) انظارة رو إلى جب الإجاعة أجادً

ای طرح جین اور فال یں جگا م روال کو نماز اور ووزے ہے مین کیا آیا اور جین اور فال منتظیم ہونے کے بعد نماز

پزشنہ اور دوزہ رکھنے کا تھم دیا گیا اور یہ تھم دیوب کے لیے ہے۔ ای طرح حالت نشرین نماز پزشنے ہے مین کیا گیا اور اس
عارض کے ذوال کے بعد نماز پزشنے کا تھم دیا گیا اور یہ تھم دیوب کے لیے ہے۔ ای طرح کی مسلمان فخض کو حالت اسلام میں
اور کافر کو عمد زمد کی وجہ ہے گل کرنے ہے مین کیا گیا گیا اس کے عرقہ ہونے یا ڈاک ڈوالے کی وجہ ہے اس کو قبل کرنے کا
تھم دیا گیا گیا شاوی شدہ کے ذنا کی وجہ ہے اس کو دیم کرنے کا تھم دیا گیا گور یہ تھم بھی دیوب کے لیے ہے۔ ای طرح کی مخض
کے باتھ اور ویر کانا نمنوع ہیں 'کیان چوری کی وجہ ہے اس کے باتھ اور ویر کاناواجب ہیں۔ ان مثاول ہے یہ واضح ہو گیا کہ کی
کہا ہے مین کرنے کے بعد جب اس کام کا امر کیا جائے قر ملبقہ ممافت اس امر کے وجوب کے منانی نیس ہے اور اس امر کے
کہا ہے مین کرنے کے بعد جب اس کام کا امر کیا جائے قر ملبقہ ممافت اس امر کے وجوب کے منانی نیس ہے اور اس امر کے
جو تا ہے۔ اور ایام ابو حیفیڈ 'ایام بانک اور شوافع میں ہے مختص 'مثالا ایم دازی اور قامتی بینداوی تو جمور اصوال میں کے ذرد کی
ممافت کے بعد بھی امروجوب تی کے لیے ہو تا ہے اور فضاء احداف میں ہے کیل الدین این العام کے زویک ممافت سے بسلے
امر کاج متعنیٰ ہو ممافت کے بعد بھی دی منتشنیٰ ہو تا ہے۔ اگر وجوب ہو تو وجوب اور استجماب ہو تو استجماب

(و في و كويخ الم ٢٨٨ مطور تور في المع المطابع و كنف الا مرار ع الم ٢٨٩-٢٤٩ مليما)

نی چھے کے افعال سے وجوب کا عابت نہ موتا

مدوالشرع علام عبدانندين مسعود لكية بيل:

امر کااطلاق جمهور کے فزدیک قول پر حقیقات ہور فعل پر امر کااطلاق مجازا ہے۔ اس میں بھی انفاق ہے اور بعض کے فزدیک نبی بڑھیا کے فعل پر بھی امر کااطلاق حقیقات ہے۔ کو تک آپ کافعل حقیقا امر ہے اور جرامروہ وب کے لیے ہو تا ہے اور فعل پر امر کے اطلاق کی دلیل ہے ہے کہ اللہ تعلق نے فرفا "و ساامر ضر صوں ہوشید" (حود عه) "اور فرمون کافعل درست شمل پر امر کے اطلاق کی دلیل ہے ہے کہ اللہ تعلق نے فرفا "و سالم نہ تما اور تی اصلی "(مجے البخاری کا اور تم المحد اساس طرح نماز پر حو جس طرح نماز پر حق اور نے اور نے وہ اور نے وہ کھتے ہو"

ہم کتے ہیں کہ امر کا اطلاق قبل پر حقیق تمیں ہے اور مشترک ہونا خلاف اصل ہے کو کلہ جب کوئی فض کوئی کام کے اور ب نہ کے کہ یہ کام کو قواس کے اس قبل ہے امر کی تنی کرنا مجے ہے اور سور کا حود کی آیت ہیں ہو قبل کو امر قربایا ہے 'وہ مجاز ہے اور اگر بالفرش ہم یہ بان لیس کہ قبل پر امر کا اطلاق حقیقت ہے ' تب ہمی دلا کل اس پر ولالت کرتے ہیں کہ امر قول وجوب کے لیے ہو تا ہے نہ کہ قبل ممیو تکہ جو ولا کل اس پر چش کے مجے ہیں کہ امروجوب کے لیے ہو تا ہے 'وہ مب امرقول سے متعلق ہیں۔ مثل یہ آیدہ

وہ لوگ ڈوی جو رسول کے امر اسم) کی الانت کرتے

فَلْيَحُذُرِ الْكُوْبُنَ يُحَالِفُونَ عَنْ آمْرِهِ

(الشور: ۳) اين.

اس آیت میں امرے مرادامر قولی ہے اور اس کو امر ضلی پر محمول کرنا تمکن جمیں ہے۔
اور امر قبل مقدم والعلب کو دراک زیر کر کر کاف سران تا ایک بنارف اصلا

اور امر قولی مقصود (الجلب) کو پردا کے کے کئی ہے اور ترفوف طاف اصل ہے کور نی جھیز لے ہو فرالیا: صلوا کسا دایت سونی اصلی "اس مدے می ایجاب آپ کے قول صلوا سے مشقاد ہوا ہے۔علاوہ ازیں جب آپ نے دسل کے دوزے دکھ اور آپ کو دکھ کر محلب نے دسال کے دوزے رکھ لیے اور جب آپ نے نماز می تعلین الدیں اور آپ کو دکھ کر آپ کے اصحاب نے بھی اپنی علین الدیس آپ نے ان کو منع فرلما طاد تک دونوں صور توں میں آپ کے اصحاب نے بھی اپنی علین الدیس آپ نے ان کو دیوب کے لیے نس ہو آل کے اصحاب نے آپ کے فعل کی اتباع کی تھی۔ ان معروش سے تابت ہو گیاکہ فعل دیوب کے لیے نس ہو آل کے اصحاب نے آپ کے فعل کی اتباع کی تھی۔ ان معروش سے تابت ہو گیاکہ فعل دیوب کے لیے نس ہو آپ کا ایس کا ایس کا ایس کا ایس کی انسان میں اور اور اس کا المطابح اگر ایس کی انسان میں کا ایس کی انسان میں کی انسان کی انسان کا ایس کی انسان کو انسان کی انسان کی تعلیم کی انسان کی تعلیم کی تعلیم کی انسان کی تعلیم کی انسان کا ایس کی انسان کی تعلیم کی انسان کی تعلیم کی انسان کی تعلیم کی تعلیم کی انسان کی تعلیم کی

علامد معد الدين مسعود بن عمر تغتاز اني متوني ١٩٥٥ م لكمة بن

خلاصہ یہ ہے کہ جب ہی بڑھیا ہے کوئی فعل جنٹول ہو اپس آگر وہ فعل سمو ہویا فہی ہویا آپ کا خاصہ ہوتو اس ہے۔ اجماعا وجوب ٹابت نسیں ہو آباور آگر وہ فعل قرآن مجید کی کسی مجمل آیت کا بیان ہوتو اس سے اجماعاً وجوب ٹابٹ ہوتا ہ آگر وہ فعل ان کے ماموا ہوتو پجراس میں اختماف ہے کہ کیا یہ کمنا جائز ہے کہ نمی مائٹی نے حقیقیا ہم کو اس فعل کاامر فرمایا ہے۔ اور جم پراس فعل کی انباع واجب ہے یا نسی ؟ سو بعض نے کما ہی اور اکثر نے کہ 'نسی 'اور می مخارے۔

(محري مع وضح على المعلم معلم ور توري المع الطائع اكراجي إ

علامه عبد انعزيز بن احمد بخاري متونى وساء الكعة بيرو:

الم ابوداؤد اپنی سند کے ساتھ حضرت ابو سعید خدری جہیں۔ سے دوایت کرتے ہیں اگر ایک ون رسول اللہ ساتی اپنی اسلام اسلام کو نماز پڑھا رہے تھے 'آپ نے اپنی تعلین ایکویں اور ان کو اپنی یا کی جانب رکھ دیا 'جب قوم نے یہ ویکھا قوانہوں نے بھی اپنی جو تیاں آباد دیں۔ جب رسول اللہ جہیں ہے نماز پر ری کرلی قوآپ نے قرمایا تم لوگوں کے جو تیاں آباد نے کا کیا سب تھا؟
محابہ نے کما ہم نے دیکھا کہ آپ نے اپنی جو تیاں آبادیں قو ہم نے بھی اپنی جو تیاں آباد دیں 'رسول اللہ جہیں ہے کہا جرائیل علیہ السلام میرے پائی آباد دیں آب نے اور قربایا جب تم جس سے کوئی خوس علیہ السلام میرے پائی آباد کر گئی خوس سے کوئی خوس معید جس آب تو اللہ میں ہوگئی جانب یا گھناؤنی چڑ ہو تو اس کو کھرج کر صاف کرنے 'پر ان

الم بخاری اپنی سند کے ساتھ حضرت انس جونی سے روایت کرتے ہیں کہ نی جونی نے فرمایا تم وصال کے روزے نہ رکھو محابہ نے عرض کیا اور سول اللہ اللہ وصال کے روزے رکھے ہیں۔ آپ نے فرمایا جس تم جس ہے کسی کی مثل نہیں موں۔ بچھے کھلایا جا آئے اور چالیا جا آئے۔ یا فرمایا: جس ایچ رب کے پاس رات گزار آبوں کھلایا اور چالیا جا آبوں۔

(محيح البخاري ج ائر تم الحديث ١٩٧١)

ان مدیوں علی اس پر واضح دلیل ہے کہ نی پھی کافٹل کمی چیز کو دابب نمیں کرتا کی تک اگر آپ کافعل آپ کے امر کی طرح موجب ہو تاق پھر آپ کے انکار کی کوئی وجہ نمیں تھی ایسے اگر آپ کمی چیز کاا مرقرا کیں اور سحلبہ اس پر عمل کریں۔ (کشف الا سرار 'جامی ۲۳۹۰۲۵ مطبوعہ دار الکتاب العربی ایروت)

نی رہیں کے افعال کے سنت مستحب اور واجب ہونے کا ضابطہ جس هل کو آپ نے احیانا (بھی بھی) کیا ہو اور غالب او قات میں ترک کیا ہو' وہ سنت فیر مؤکدہ یا سنت ستجہ ہے اور جس کو آپ نے غالب او قات میں کیا ہو اور احیانا ترک کیا ہو' وہ سنت موکدہ ہے اور جس پر آپ نے مواظبت فرمائی ہو' اور اس کے

ترک پر افکار فربایا ہو کو قتل واجب ہے۔ مان میں الحریط میں ملا کی طریق ال

علامه ابوالحن على بن ابي برافرميناني الحنني التوفي علامه لكعة بن "مجعيه بهاك المتكاف سنت مؤكده ب كيونك بي

عيان القر ان

التي المنان ك أخرى عشره من اس ير مواعبت (دوام) فرائل ب اور مواعبت سنت كى دليل ب

(حداب اولين عم ٢٢٩ مطيوند شركت طبي مكان)

علامہ محمود بن احمد مینی حنی متونی ۱۹۵۵ اس عبارت کی تشریح میں لکھتے ہیں "ایک قبل یہ ہے کہ مواظبت وجوب کی دلیل ہے۔ اس کا جواب یہ ہے کہ مواظبت منت متوکدہ کی دلیل ہے اور یہ وجوب کی قوت میں ہے اور زیادہ بہتریہ ہے کہ بوت کہا اس کے دور یہ وجوب کی قوت میں ہے اور زیادہ بہتریہ ہے کہ بوت کہا جائے کہ آپ نے احتکاف واجب ہو تاتو آپ اس کے ترک پر انکار قراعے"۔

جائے کہ آپ نے احتکاف ترک کرنے والے پر انکار قبیس قرایا"اگر احتکاف واجب ہو تاتو آپ اس کے ترک پر انکار قراعے"۔

دالت کے تعدید و مار سے انکار تعدید کا ایک انسان کا انکار تعدید کی انسان کی انگار انسان کے انسان کی انسان کا انسان کا انسان کا انسان کی انسان کا انسان کا در انکار تعدید کی انسان کا در انکار تو انسان کی انسان کا انسان کا در انکار تو انسان کا در انکار تو انسان کا در انکار تو انسان کا در انکار کی انسان کا در انکار کی انسان کا در انکار کو انسان کا در انکار کی در انسان کا در کا در انسان کا در انکار کی در انسان کا در انکار کی در انکار کی در انسان کا در انکار کی در انکار کی در انکار کی در انگار کی در انکار کی در انگار کی در انکار کی در انگار کی در انکار کی در انگار کی در انکار کی

(البتاية عيم على المطبوعة والالكر اليروت المالم)

اس عبارت کا خلاصہ سے کہ نی ہے جس منطل پر مواظبت فرمائی اور اس منطل کے بارک پر انکار نہ فرما کی تو وہ سنت موکدہ ہے اور اگر آپ کمی فعل پر مواظبت فرمائی اور اس کے بارک پر انکار فرمائی تو وہ فعل واجب ہے۔

علامہ کمال الدین محمرین عبدالواحد ابن الممام حتی متوفی ۱۸۱ کلمیتے ہیں "نبی ہو اور کے احتیاف پر بلا ترک مواظمیت فرمائی ہے 'کیکن جن صحابے نے اعتیاف نمیں کیا 'آپ نے ان پر انکار قبیل فرمایا 'توبیہ اعتیاف کے سنت ہونے کی دلیل ہے اور اگر آپ ترک کرتے والول پر انکار فرماتے توبیہ وجوب کی دلیل ہوتا"۔

(هخ القدم ي مع ٢٠ ص ١١٥ ٣ مطبوعه وار الكتب العليه " بيروت ١٥١١ماه)

علامه معدى جلبى متولى ٥ تبعد لكية بن:

اس عبارت سے معلوم ہو تاہے کہ سنت موکدہ کی تعریف یہ ہے کہ جس نفل پر آپ نے مواظبت فربائی ہو توانا تکہ سنت موکدہ کی تعریف یہ ہے کہ آپ نے کسی فعل پر مواظبت فربائی ہو اور بمجی بمجی اس کو ترک بھی کیا ہو۔ اس کا جو اب یہ ہے کہ جب آپ نے اس کے ترک پر انکار نمیں فرایا تو یہ احیانا ترک کرنے طبے تھم جس ہے۔ کیونکہ آپ کا احیانا ترک کرنا جو از ترک کی تعلیم کے لیے ہو تاہے اور آپ کا تارک پر انکار نہ فربانا بھی قعلیم جواڑ کے لیے تعل

ظامہ یہ ہے کہ سنت مؤکدہ کی تعریف میں جو احیافاترک کرنا فوظ ہے اوہ اس سے عام ہے کہ احیافاترک کرنا حقیقا ہویا عملاً 'اور اب سنت مؤکدہ کی تعریف یہ ہوگی کہ جس قبل پر نبی چھپر مواظبت فرہا میں اور بھی جمی اس کو ترک بھی فرمادیں ' خواہ ترک کرنا حقیقاً ہویا حکماً اور جس قبل پر نبی چھپر یا اترک مواظبت فرمائیں اور آرک پر انکار فرمائیں 'وہ فعل واجب

يو كاد (مائيد سعدى جلي مع فق القدير عن من مهدم اسلود وروت)

علامہ علاء الدین محمدین علی بن محمد صکفی حنل متونی ۱۸۸ مدید لکھتے ہیں: "سنت مؤکدہ میں شرط میہ ہے کہ مواخبت ہو اور اس کے ساتھ ترک بھی ہو' خواد سخنگ ہو ملکن تعریف میں عموماً شروط کا

وكرشيل كياجا لك (الدر الخارج ووالمعتار جامل المعلوم واراحياه الزاك العلي الدائد معد)

عظامه زين الدين ابن جيم حنى معيري متوفى مهده لكعيدين. ٠

المعرے فزدیک فاہرینے کہ تی مجین نے جس فطل پر بازا ترک مواظیت کی ہو اور اس کے بارک پر انکار نہ کیا ہوئو۔
سنت موکدہ ہے اور اگر کبھی بھی اس فعل کو ترک بھی کیا ہو تو وہ سنت فیرموکدہ ہے ہور جس فعل پر آپ نے مواظیت کی ہو اور
اس کے ترک پر انکار فرمایا ہو' وہ وہ جو ب کی دلیل ہے۔ البحرالرائق' جامی کا مطبوعہ کمتنہ بابدید الوئٹ)
غلامہ سیدا تیر فحطاوی متولی اسوالی کھنتے ہیں:

"البحرالراكق" عن سنت مؤكده كي دو تقريفون كو احتيار كياكيا - ايك تعريف يه ب ك.

الطريقة المسلوكة في الدين من غير وه فريد جي ين الغراروم كيث الرايايايور لزوم على سبيل المواظية

اور دو سری تعریف ہے ہے کہ نمی معلی ہے جس فعل پر بلائزک مواظمت کی ہو اور اس کے مارک پر انکار نہ فرمایا ہو اور ا آگر آپ نے ممی فعل پر مواظمت کی ہو اور اس کے مارک پر انکار فرمایا ہو "قرورو دوس کی دلیل ہے۔

(ماشيرالفنادي على الدر الخار "ج المن ١٦ مطيوندي وت ٩٥ ١١٠ه)

نيزطامد لمغلوى لكعة بين:

سنت اس طرفقہ مسلوکہ فی الدین کو بحتے ہیں جو سمی قول یا ضل ہے حصلتی ہو۔وہ قول یا ضل الذم نہ ہو اور نہ اس کے آرک پر الکار ہو اور نہ وہ خصوصیت ہو۔ ہم نے جو ہید کسام کہ وہ لاائم نہ ہو اس قید سے فرض سنت کی تعریف سے خارج ہو گیا اور ہم نے جو کسام کے قارف ہو اس تید سے موم وصل خارج ہو گیا اور ہم نے جو کسام کے خارک پر الکار نہ ہو گئی ہو الکار نہ ہو گئی ہو گئی

علامد المهستانى لے كما ہے كد دنيا على مطالبہ عمل كے لحاظ ہے منع مؤكدہ واجب كى شل ہے بحرواجب كے ترك پر آخرت على عذاب كاستى بوگا اور منت مؤكدہ كے ترك پر آخرت على حمل كاستى بوگا كور منت فيرمؤكدہ كى يہ مثاليں إلى: تنما مخص كالزان وننا وضوعى كردن پر مسح كرنالورواكس جانب ہے ابتداء كرنالور لفلى نماز انفل روزہ اور نفل مدق

(ماشيه مراقی اختاح می ۱۳۸۰ مطبوعه معر ۱۳۵۷ ۱۵)

علامه سيد محراجن ابن علدين شاي متونى عنه عدد كلية بين

کتنی مقدار ڈاڑھی رکھناسنت ہے؟

اس تمام تنمیل سے داشتے ہو کیا کہ وجوب صرف نی بھیر کام سے تابعت ہو تا ہے' آپ کے افعال سے وجوب ثابت نسیں مو تا۔ ان تام حضر نسل کے داجب مونے نسیں مو تا۔ ان ان من نسل کے داجب مونے نسیں مو تا۔ ان ان منسل کے داجب مونے

ک دلیل ہے۔ ڈاڑھی رکھے کامطلہ ایمای ہے۔ نی چھیز نے ڈاڑھی منڈانے پر انکار فربایا ہے اس لیے فنس ڈاڑھی رکھنا واجب ہے اور ڈاڑھی منڈانا کروہ ترکی ہے اور حرام کلتی ہے۔

الم ابو بكرعبدالله بن محدين الى شيد متوفى ٥ ١٠ مدايت كريم ين

عبدالله بن عنب میان کرتے ہیں کہ رسول اللہ علید کی خدمت میں ایک بھی آیا ،ور آنمائیک اس نے واڑ می منذائی اور کن عندائی اس نے واڑ می منذائی اور کو چیس لیں دکھی ہوئی تھیں۔ نی جھید نے اس سے قربالیا ہے ؟ اس نے کما سے امادے دین ہی ہے۔ آپ نے فربایا امادے دین ہی ہیں کہ ہم مو چیس کم کرائی اور ڈاڑھی پرھائی۔

(مصنف ابن الي شيد "ج ٨ م م ٢٥ م مطبوعه اوارة افتر آن مراحي ٢٠ ١٥٥٥)

چ نک نی پڑھ نے ذائر می منڈانے پر اٹکار فرانا ہے اس نے ذائر می منڈانا حرام (تھی) ہوالور ڈاؤر می رکھنا واجب ہوا۔

دہاس کی مقد اور کا مطلبہ ق نی بڑھ نے اس کی تحدید میں فرانی۔ البت آپ کی ڈاڑھی مبارک بست وراز اور تھی تھی ہو سید
مبارک کو جمرائی تقی۔ (التفاع عن اس ۲۹ مطبوعہ ملکن) اور اتن کی اور تھی ڈاؤر می رکھنا جو بید کو یا کم از کم بیند کے بالائی حصہ
کو جمرے است کے مطابق ہے اور رسول افلہ بڑھ ہے مجت اور کمال ایمان کا تلامنا ہے ہی اور تھی ڈاؤرمی ہی رکھنی
عالیہ الموم فقماء کرام نے بعند بحرڈاؤر می رکھنے کو منت کہا ہے اور بعض فقماہ (مثلاً الما علی قاری اور علامہ زبیری) نے بعند
کو ستحب لکھا ہے۔ وسول اللہ بڑھ ہے گا ڈاؤرمی مبارک برطل بھند سے زاکہ تھی کی گھ آپ کو آپار دان میں شے۔ آپ کی
کردان کہی تھی اور ریک حسن کا تقامنا ہے۔ ہم سیند مبارک کے بلائی حصد کو بحرف کے لئے بحی دو ڈھائی مشت ڈاؤرمی ہوئی
عاہیے اس کے دسول افلہ بڑھ کی صلحت بیند بحرڈاؤرمی میں ' بلکہ لیند سے زاکہ مقدار رکھنا ہے۔ اور فقماء نے جو بعند کو
صلت کھا ہے اس سے دسول افلہ بڑھ کی صلحت بیند بحر ڈاؤرمی میں ' بلکہ لیند سے داکہ مقدار رکھنا ہے۔ اور فقماء نے جو بعند کو
صدت کھا ہے 'اس سے دسول افلہ بڑھ کی صلحت بھی میں ' بلکہ لیند سے مراو نفوی معن ہے 'اپنی وہ طرف بھی ہے۔ کیو کہ کی صدت فیرموکدہ کھا ہے ' ہے بھی نفوی معن ہے 'اپنے وہ طرف بھی ہیں۔ کیونکہ کی صدت فیرموکدہ کھا ہے ' یہ بھی نفوی معن ہے 'اپنے کہ میں ہی ہوئی صدت فیرموکدہ کھا ہے ' یہ بھی نفوی معن ہیں جس کی کہ کی درور کے مسلم فول بھی ہے۔ کی ان شاہ بھی ہیں آب ہے بھی نفوی معن ہیں جانے کہ کی درور کی میں ہے۔

حضرت عبد کافتہ بن مراور حضرت ابو ہرہے ہے۔ بعد ڈاڑھی کاٹنا فابت ہے 'لیکن محالی کے فعل ہے وجوب فابت تعین ہو آئے۔ وجوب فابت کی ہو آئے۔ وجوب فابت کی ہو آئے۔ وجوب وابس کے تعین ہو آئے۔ وجوب دسول اللہ مجان ہو آئے۔ اور اس کے آئے۔ وجوب دسول اللہ مجان ہو آئے۔ محالی ان میں ہے۔ آرک پر وحمید فرمائی ہو 'تو یہ بھی وجوب کی دلیل ہے۔ لیکن آبھند کے متعلق ان میں ہے کمی چیز کا ثبوت نہیں ہے۔ ہر چند کہ بھند بھر ڈاڑھی و کھنا واجب نہیں ہے 'میکن ڈاڑھی کی انتی مقدار رکھنا ضروری ہے جس پر مراس میں ڈاڑھی کا ہوئند کہ بھند بھر ڈاڑھی و کھنا واجب نہیں ہے 'میکن ڈاڑھی کی انتی مقدار رکھنا ضوری ہے جس پر مراس میں ڈاڑھی کا

اطلاق كياما آاه واور من مقدار بحي وليل شرى ب-علامد ابن علدين شاى متوفى مد عد تيسية بين

انام ابو صنیفہ کا قائدہ میہ ہے کہ جس جنزی مقدار کے متعلق دلیل شرق نہ پائی جائے 'اس کی مقدار کو اس جس جنا افض ک تھن غالب کی طرف مغوض کردیتا جاہیے۔(روالحتار 'جن' ص ۱۲۹ مطبور وار احیاء التراث العربی جروت 'ے معدور)

سواکر کوئی طفس مشتند از طی یا فرنج ک زاز طی رکھتا ہے یا ایک یا دوانگل ڈاڑ می رکھتا ہے تو اس کو عرف میں مطلقا ڈاڑ عی نہیں گئے۔ بلکہ فرنج کٹ ڈاڑ ھی یا خشتی ڈاڑ ھی گئے ہیں۔ قنداڈاڑ ھی کی اتن مقدار رکھنا ضوری ہے جس کو عرف میں مطلقاڈاڑ ھی کماجائے۔خواہ وہ قبضہ ہے ایک آدھ انگل کم ہو یا زائد ہو۔

چونک رسول الله مظین نے واڑھی میں قبضہ کو واجب نمیں فرمایا اور آپ نے اس کی تحدید نمیں کی اس لیے ہم اس کی مد قبضہ مقرر کرنے کاخود کو مجاز نہیں محصے کو تک ہم مبلغ ہیں شارع نہیں ہیں اس بناویر ہمیں کانی مطعون ہمی کیا کیا ہے اور جارے ظاف کتابیں بھی لکمی تمکی۔ بسرطل اہم نے اپنا قرض اواکیا ہے اور اضافوں کی بطل ہوئی شریعت کے مقابلہ میں اللہ اور اس کے رسول میں بھیر کی شریعت کو بیش کیا ہے اور حق کو لوگ جردور میں شخصیت پر ستوں اور عالم اور جار او کوں کے اس طعن کا شکار ہوتے رہے جن اور اللہ می ہے جزاء سے طالب ہیں۔

الله تعالی کا ارشاد ہے: اور کمی قوم کے ساتھ عداوت حمیں اس کے ساتھ اس پر نہ اکسے کہ انہوں نے حمیس

معدحام میں الے سے روک دیا تھا او تم ہی ان کے ساتھ زیادتی کرد المائدہ ج

شاں کے معنی بغض ہیں اور آیت کا معنی یہ ہے تھی قوم کے ماتھ تسادا بغض تنہیں اس کے ماتھ زیادتی پر نہ ابھارے ایعنی جس طرح مشرکین نے حہیں عمرہ کے لیے مسجد حرام میں جانے سے روک دیا تھا اس طرح تم ان کو مسجد حرام میں جانے ہے نہ روکنا۔

> واضح رہے کہ اس آعت کے نزول کے بعد اللہ تعالی نے خود مشرکوں کو مجد حرام میں جانے ہے منع کر دیا۔ وہ تندال کے ال

اے ایمان والوہ آمام مشرک محض ناپاک ہیں 'وہ اس سال مے بعد مسجد حرام کے قریب نہ ہوں۔ يُنَايَّهُمَّا الَّذِيْسَ الْمَسُوا الْمَا الْمُشْرِكُونَ نَحَشَّ هَلَا يَغْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِيهِمُ لَهُذَا الْمَسْجِدِ الْحَرَامَ بَعْدَ

اُس خاص صورت کے علادہ میر بھم عام ہے اور کمی توم کے ساتھ عدادت رکھنے کی وجہ ہے اس کے ساتھ زیادتی کرنا جائز

الله تعالى كاارشادى، اورتم نكى اور تقوى براك دو مرى كى دوكرد اور كناه اور ظلم مى ايك دو مرى كى دوند كردا الله تعالى كاارشاندى، الله تعالى كالله عند الله كالله عند الله كالله عند الله كالله عند الله كالله كالله

اس آیت می اللہ تولا نے ہر (یکی) اور تفق کی پر ایک دو سرے کی مد کرنے کا تھم دیا ہے۔ یہ مراو ہردہ نیک کام ہے جمکا شریعت نے تھم دیا ہے اور تفق کی ہے سراد ہراس کام ہے اجتناب ہے جبکو کرنے ہے شریعت نے روکا ہے 'اور فرمایا ہے 'گناہ اور تقری کے مدار ہراس کام ہے اجتناب ہے جس سے شریعت نے سطح کیا ہے اور ہردہ کام جس پر کوں کے مطلع ہونے کو افسان ناپیند کرتا ہے 'اور تفلم کا معنی ہے دو سروں کے حقوق میں تقدی اور تصرف کرتا اور اثم اور عدد ان سے مراد وہ مماد وہ مراد وہ مراد وہ کام جس کے حقوق میں تقدی اور تصرف کرتا اور اثم اور عدد ان سے مراد وہ مراد وہ کام جرائم ہیں جن کی وجہ سے انسان امروک مزا کا مستحق ہوت ہے 'اور اللہ تعالی کی مقرد کردہ مددود سے تجاوز کرتا ہے۔

خلاصہ یہ ہے کہ اللہ تعالی نے جن کاموں کا تھم دیا ہے ان کو کرد اور جن کاموں سے منع فرمایا ہے ان سے باز رہو اور جو

لوگ اللہ تعالیٰ کے علم کی نافرمانی اور خلاف ور زی کریں 'قریے شک اللہ این کو سخت سزا دیے والا ہے۔ یہ آیت جوامع انکم میں ہے ہے اور یہ ہر خیراور شراور ہر معموف اور منکر کے عکم کو شال ہے۔

آیات فرکورہ سے استعباط شدہ احکام

قرآن مجید کی میدود میتی بست سے فقنی احکام کو شال ہیں۔

ا۔ اپنے عمد پورے کر الیمی افتہ تعالی ہے جن احکام شرعیہ کو بجالانے کاعمد کیا ہے ان کو پورا کرہ اور ایک دو سرے ک ساتھ جو عمد کیے جیں ان کو پورا کرد۔ خریدی ہوئی چزکی قیمت اوا کرنا ہو ہوں کا صراوا کرنا ان کا خرچ اٹھانا المانت عاریت اور رہن رکمی ہوئی چزکے حفاظت کے ساتھ اوا کرنا اور ذمیوں کے جان و مال کی حفاظت کرنا ان محقود میں شاق ہے۔ اس طرح

البيان القر أن

لايحبالله ١ 79 عباوات منصوره مثلًا نمازا روزه عج اعتكاف اور صد قات كى نذر مورى كرناجى اس من شال ب- كمى فير مقصوده عباوت مثلاً وضو الممي مباح كام كى غدر مانا جائز نسي ب-ان بره عوام ين جو جيون فقيون كى غدر مشهور ب يد محض جمات كالمتجد ے۔ کیونک نذر مباوت ہے اور فیرانڈ کی مباوت جائز نہیں ہے۔ ٧٠ شرى طريقة الدن ورك طال جاورول كاكفانا كيلول من جا الدندوال ورعول اور بالتو كده كواور بنول م شکار کرنے والے ہندوں کو نی بھی نے جام کردیا ہے اور اہل کد اس بھی ان جانوروں کی حرمت بیان کی گئی ہے جن کو شرعی طریقہ سے ذراع نہ کیا گیا ہو ان کے علادہ خنو مد کو قر آن جید لے حرام کیا ہے۔ -- مات احرام عل شار كرنے كى حرصت بيان كى كئى ہے "اى طرح وعن على شار كريائي منع ہے-ا جو مخص محرم ته او اس كے ليے حرفين كے علاد دو مرى جكون ير شكار كا طال او ال ۵- محرم کے لیے مرف فظی کاشکار ممنوع ہے۔ سمندری جانوروں کاشکار کرناجاز ہے۔ ١٠ قرباني ك في بيج بوع مانورون كو ضرو يتهاف كى حرمت جو اون قرباني ك في حرم من بيما ما آب اسك مح من قلادہ ڈال دیتے ہیں' آ کہ معلوم ہو کہ یہ مدی ہے۔ ایک طریقہ یہ ہے کہ اس کے کوہان پر معمول سائکاف ڈالتے ہیں جس ے اس کے کوہان پر خون بر جا آے اور یہ بھی اس کے مدی ہونے کی علامت ہے۔ اس کو اشعار کہتے ہیں ' یہ سات ہے۔ الم ابوطنیف کابھی میں قرمب ہے۔ البت اعجی اوگ جو اشعار کرنا تسم جانے ان کے حل میں یہ سنت تسیں ہے ایمو تک وہ زیادہ فكاف وال ديج بين جس من يداز فم يز جا آب ايس لوكون كوالم ابو منيفه اشعار كرنے من كرتے بيں۔ 2- شعارُ الله على مدى اور قلائد كے علاوہ حرمت والے مينے بھى داخل ميں ، فختين يد ب كداب مرميد ميں جماد كرنا جائز ٨- ممي ك ماته بخض ركين كى وجه انسان اس كه ماته بانساني اور زيادتي ندكر - ٨ ٩- نیک اور تقویل کے کاموں میں ایک دو مرے کی عدد کرنا اس میں ملک اور قوم کے اجہامی مفاد میں ایک دو مرے کی مدد کرنا اور ای فدمت اور سوشل در ک داخل بین.

۱۰- جرم اور گناویس کمی کی مدت کرنا۔ بیک اور بیر سمینی جوئے خانہ اور کمی بھی بری کے اؤے میں ملاز مت کرنا خواورہ

ملازمت کلری کی ہویا چوکیداری کی وہ بسرمال اس برائی کے ساتھ ایک لوع کا تعاون ہے اور ہاجا تز ہے۔

الاجل اجازر) پر (و رحسکه وقت اخر ا بر حوام كي عي مردار اور خون الد خنزير كا حوست 1 4 1 92 1 2 1 9 2 3 1 3 1 2 عه والموحودة والمتردية والنط

كانام يكاراتي براور كلاكه في جلنه والا والرجيث كما كرمها بوا اور جندى سے كركرمها بوا الدسينك فيف مرابرا الدي

و در بھرسے نے کھایا ہو ما موال کے جس کو تہ نے از زیرہ یا کر) ذریح کرلیا 'اور جو بتوں کے تقریبے لیے تعم

الدول سے ای تعمت معلی کرنا یہ آما کا کا افتق ہیں ، آج گفاد تم الحسے دیں الی اکا ک) سے ماہوس ہو وقم ان سے مزور اور بھر بی سے وروء کچ جی نے تمہائے ہے اور تھا اور محل کردیا اور تم ہر ای توست لے اسلام کو (بطور) دین لیندگرایا ، بس جو منس جوگ کی شدیت مجرر ہے ہے۔ اِس کے بیے کول می چیز کے ملاف کی تی ہے۔ کہ سیسے کو تھا ہے ۔ ایک جیز کے ملال کی تی ہی الد ہو تہ نے لٹکا میں جا معصابیے بی درال مالیوم النین شکار کا طریقہ متحاسفے والے ہو، تم انسرال وارع ادى جانور بترافعت بيدو وك ديمي واور تشار جوشة وقت) اس (فنارى جانور) پراب والدافش المنظامية بينك المرملة يلخ والله ب (أن بلاك لنه بالرييزي عن ال كردى تمين، اورايل تأب كاذبي اع تبارا ذبير ال كي علال به الد أزاد إلى دامن ملال ہے طال اورس الديم سے پہلے الى كتاب كى آزاد ياك دائن حديم د مي غيان القر أن ٥٥

قَبُلِكُمُ إِذَا اتَيْتُمُوهُ فَا أَجُورُهُ فَي مُحْصِنِينَ غَيْرُمُسَا فِينَ

یں ، جب تم ان کے جبر ان کو ادا کر دو ، دراں مالیکہ تم ان کو عال کو دالے ہون

وَلاَمُتَّخِرِي كَا نَحْدَاتٍ وَمَنْ يَكُفُرُ بِالْإِيْمَانِ فَقَلْ حَبِطَ

ملاہد مرکاری کرنے لائے اور مع تحضیر البقہ سے آشا بنا نے وائے اور میں سنے ایمان ولا نے میک بعد کفرکی توجیشک اس کاعمل

عَمَلُهُ وَهُو فِي الْاخِرَةِ مِنَ الْخُيرِينَ ٥

ضائع بوگیا اور وہ آخرے یں تقصان اشانے والوں یں سے ہے 0

مردار کامعنی اور اس کے شرعی احکام

جو بانور طبی موت مرجائے نہ اس کو ننگ کیا گیا ہو نہ شکار کیا گیا ہو اس کو میڈ (مردار) کتے ہیں اور اسطلاح شرع میں جو بانور اغیر ذری کے مرجائے اس کو میت اس کو شریعت میں حرام کر دیا گیا ہے کہ نظمت دگوں میں فون کے دک جانے یا کمی بخاری کی دچہ ہے جسم میں ڈہر لیے بارے برا ہو جاتے ہیں 'جو انسانی صحت کے لیے نقسان دو ہوتے ہیں اور اگر اس جانور کو نیا جائے ہیں ۔ عالمہ ذریر لیے اور نقسان دو اجزاء جسم ہے مال طون بر جاتا ہے اور فون کے مالا تر چرلیے اور نقسان دو اجزاء جسم ہے لکل جاتے ہیں۔ علامہ اذری طیحت کے اخترار ہے جسم میں اور اگر اس کے بات خطر ہوتی ہیں اس موار جانور صحت کے اخترار ہے جس محتر ہوتی ہیں اور اس کا استعمال کیا جانور کو کھانا بالا قاتی حرام ہے۔ البشا فقماء دین کے اخترار ہے جس کی گیا گیا گیا گیا گیا ہو راس کا استعمال کیا جانور کو کھانا بالا قاتی حرام ہے۔ البشا فقماء کر ایم سام کہ اور اس کا استعمال کیا جانور کو کھانا بالا قاتی حرام ہے۔ البشا فقماء کر ایم سام کہ اور اس کا استعمال کیا جانور کو کھانا بالا قاتی حرام ہے۔ البشا فقماء کر ایم سام کہ اور الم شافی کے زدیک موار کی فی خس ہے۔ البقی 'جن میں میں اس کے بالور اتی اصداء کی طرح اس کی مورد سے جس ہو جاتے ہیں اور الم مال ہور الم میں جو بات میں اور الم مالک اور الم الم اور کی مورد سے برادر بال پاک ہیں۔ کو تک الم دار تھنی نے دویک موار کے بی جو بی ہور سے خور اس کی مورد کی موار کے بی جو بی مورد کی مورد سے جس اور کی مورد سے جس اور کی مورد سے جس اور کی مورد سے جس نور کی حرب سے جانور کی مورد سے جس نور کی حرب سے جانور کی مورد سے جس نور کی حرب سے جانور ان میں دو کھانے کی اور الم میں مورد کھانے نور کی حرب سے جانور کی مورد سے جس نور کی مورد کھانے کی تورد کی مورد سے جس نور کی مورد کی مورد سے بی نور کی مورد سے جس نور کی مورد سے بی نورد کی مورد سے بی نور کی مور

موار جانور حرام ہے انکین اس کے عموم سے بلاتفاقی چھلی اور ٹری مشتی ہیں۔ الم این اجد متونی ساے عدد روایت کرتے میں صفرت عبداللہ بن عمر دمنی اللہ عنما بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ متجاج نے فرمایا الدے لیے وہ عموار طال کیے سے ہیں۔ مجھلی اور ٹری۔ اسٹن این ماجہ 'ج سا'ر تم اللہ عشد ۱۳۹۷ مطبور وار المعرف میدت)

ائد الله علاے زدیک تمام حم کے معدری بالور یفیرنے کے طال یں ان کادلیل یہ مدعث ہے۔

الم او عيني عمر من عيني تروى مولى عدد دوايت كرت يل

صرت او ہریرہ بھال کرتے ہیں کہ ایک فض نے رسول اللہ بھید سے موال کیا یار مول اللہ اہم مندر میں مقر الستے ہی اور عارسے ہاں بہت تھو ڈایال ہو تا ہے۔ اگر ہم اس سے وضو کرلی قریاسے رہ جا کی گے او کیا ہم مندر کے بانی

جلدموم

غيان القر أن

ے وضو کرلیا کریں۔ ہی درول اللہ روز ہے فر لیا سمتدر کا پائی یاک کرنے والا ہے اور اس کا مراہوا جانور طال ہے۔
(سنن ترفری ارقم الحصف: ٢٩ سنن ابوداؤو ارقم الحصف: ٨٣ سنن نسائل ارقم الحصف: ٥٠ سنن ابن ابد ارقم الحدیث: ٥٠ سنن ابن ابد اور اج ۲۸۱۰ موطا
الم مالک ارقم الحصف: ٣٣ منداحو اج عن مسود الحسندرک عناص میں

اس آیت می فون کو حرام کیا گیا ہے۔اس سے مراوسنے والا فون ہے "کیونک اللہ تعالی نے ایک اور آیت میں بہنے والے

خون كوحرام فرمايا ي:

آپ کے کہ بھے ہودی کی جاتی ہے اس بیں کمی کھائے والے مرجو وہ کھاتا ہو " صرف مردار" بہنے والے فون اور خسر ہو کے گوشت کو بیس ترام پاتا ہوں کی تکہ وہ نجس ہے " ایم ان کی وجہ سے جس جانور پر ذراع کے وقت غیر اللہ کانام فُلْ لَكُ الْحِدُ فِي مَا أُوْجِيَ إِلَى مُتَحَرِّمًا عَلَى طَاعِمٍ لَكُوْنَ مَيْنَةً أَوْ دَمًّا طَاعِمٍ لَلْعَامِهِ إِلَا أَنْ يَنْكُونَ مَيْنَةً أَوْ دَمًّا مَسْفُوحًا اللهِ (الانعام: ١٣٥)

- st/1/4

اسے معلوم ہواکہ فریج سے بعد گوشت میں جو خون علو یا باق رہ جاتا ہے اور حرام نہیں ہے اور جو خون جام ہو جسے کلجی اور تلی اور بھی حرام نہیں ہے۔الم ابن ماجہ روایت کرتے ہیں:

حضرت حبداللہ بن عمر دمنی اللہ مخمامیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ جیجیج نے فرمایا تنمارے لیے دو مردسے حال کیے سمجے ہیں کور دوخون حلال کیے سمجے ہیں۔ میٹے وکرنے تووہ چھلی اور نڈی ہیں اور رہے دوخون تووہ کیجی اور تلی ہیں۔

(سنن ابن اجه مح ۴ رقم الحديث ١٣٣٠ مطبوعه (ار المعرف ميروت)

ہے والے فون کے حوام ہونے کی وجہ یہ ہے کہ خون نجس ہور اس میں جرافیم اور زہر یلے اجراء ہوتے ہیں اور اس کو ہمنم کرا مشکل ہے اترام کم کی بار ہوں کے اجراء اور جرافیم خون میں ہوتے ہیں۔ اس لیے اوی طور پر بھی خون کو کھانا محت کے لیے سخت معرب۔

خنزیر کے جس اور حرام ہونے کابیان

اس آیت میں فرمایا ہے تم پر مودار خون اور عنزیو کاکوشت حرام کیا کیا ہے۔ اس طرح (الانعام: ۳۵) میں ہی عنزیو کے کوشعہ کو حرام فرمایا ہے۔ ای طرح مدیث میں ہے:

الم محدین اسائیل بخاری سونی ۱۵۱ مدروایت کرتے ہیں معرت جابرین عبداللہ رضی اللہ عنمایان کرتے ہیں کہ رسول اللہ مرابع کے محکم کے سال مکد میں فرایا اللہ اور اس کے رسول نے فر (شراب) مردار 'خنز او اور بنوں کی بچے کو حرام فرماریا ہے۔(می البحاری 'جسس'ر تم المدے: ۱۳۳۳ معلور دارالفکو 'جدت)

لام مسلم بن مجان قضیوی متوفی ۱۹ مد روایت کرتے ہیں۔ سلیمان بن بریدہ اپنے والد برہیز سے روایت کرتے ہیں کہ نی میں نے فرمایا جو مخص فردشیر کے ساتھ کھیلا اس نے کویا اپنا ہاتھ مھنز ہو کے کوشت نور اس کے خون میں ریک لیا۔

المح مسلم "ج" وقم الحديث ٢٢٦٠ مطبوعه داد الفكو "بيروت)

اس مدیث میں آپ نے خنزور کے فون اور گوشت سے نفرت دانائی ہے۔ عنزور کا فون گوشت اور اس کے تمام اجزاء حرام بیں۔ قرآن مجید میں خنزور کے گوشت کاذکر کیا ہے ، کو تک کسی جانور کا اہم مقصود اس کا گوشت کھانا ہو تاہے۔

طِيان القر آن

بھنویو کے گوشت کی حرمت کی وجہ یہ ہے کہ یہ بہت گدہ اور جی جانور ہے اور یہ بالعوم گندگی ش دہتا ہے۔ اس کے جم اور بانوں میں گیڑے ہوتے ہیں۔ اس کا گوشت بہت ٹیک اور در ہنم ہوتا ہے 'اور اس بی چہ پی بہت تیادہ ہوتی ہے اور اس بی چہ بی بہت تیادہ ہوتی ہے اور اس بی چہ بی بہت تیادہ ہوتی ہے اور اس بی چہ بی بہت تیادہ ہوتی ہے۔ جس جانور کا گوشت کھلیا جائے 'اس کے اوساف کا انسان کی طبیعت پر اثر پڑتا ہے۔ جانوروں بی خنو اور نمایت ہے فیرت جانور ہے۔ اس کی بادہ ہے آئیک خنو اور باتی کی خنواد اس کے قریب و رس کو تر آئی کی خنواد اس کے قریب کرے اپنی بادی کے مشترر ہے جی 'جبکہ وہ سرے جانور اپنی بادہ کے قریب و سرے نزکو آئے اس دیتے۔ یک وجہ اقیام خنواد کا گوشت کھاتی ہیں وہ بی بے فیرت ہوتی ہیں 'ان میں بہت تیادہ فاتی اور بدجانی ہوتی ہے۔ بسرطال اور ہے مسلمان کے لیے مرف یہ وجہ کانی ہی کہ اللہ اور اس کے دسول چہیج نے ختی کے ساتھ خنواد کو حرام فرادیا 'خواہ حرمت کی سروجوہ ہوں یا نہ ہوں۔ اس کی وجوہ ہوں یا نہ ہوں۔ اس کی وجوہ ہوں یا نہ ہوں۔ اس کی وجوہ نمایت معتول ہیں۔

"مااهل لغيرالله به"كامعى اوراس كے شرى احكام

علامہ حسین بن مجر رافب اصفرانی متوفی ۱۰۵ء تھے ہیں و مسامعی المد ب کامعیٰ ہے جس پر فیرانڈ کے ہام کا ذکر کیا جائے اور بیدوہ جانور ہے جس کو بتوں کے لیے ذیح کیا جائے۔ احمال کامعیٰ ہے چاند دیکھتے وقت بلند آواز ہے چانا' پھر ہر بلند اواز کو احمال کما کیا۔ لوزائیدہ بیچ کے روئے کو بھی احمائل کتے ہیں۔

(المغردات مع ١٠٠٠ مطبوع مكتبد مرتضويه الران ١٢٢ ١١١٥)

ملااحد جون بوری متونی و سلام لکھتے ہیں: "و سااھل لغیر الله به" کامعیٰ ہے جس جانور کو فیراللہ کے ہم پر ذرج کیا حمیابو مثلاً لات عزی اور انبیاء علیم انسلام و فیرہم کے ہام پر۔ (تغیرات احدید میں معبور مکتبہ مقاتب پیناور)

علامہ سید محمود الوی متوفی من ملے گھتے ہیں اس کا معنی ہے جانور کے ذیج کے وقت فیرانلہ کا نام بلند آواز ہے بکارہااور احملال کا معنی یماں پر ہے ہے کہ جس کے لیے جانور ذیج کیا جائے 'مثلاً فات اور عزی اس کا ذیج کے وقت بلند آواز ہے ذکر کرنا (روح المعانی 'ج' مسمیدی مطبوعہ دار احیاء التراث العربی 'بیروت)

علامہ ملاؤ الدین عجمین علی بن عجم مسکنی حنی متونی ۱۹۸۸ مد نکستے ہیں حاکم یا کسی بدے آدمی کی آرکے موقع پر جانور ذرج کیا میاتو یہ حرام ہے (اور اس ذرج سے جانور کا کوشت کھانا مقصود نہ ہو مرف اس کا خون بمانا مطلوب ہو) کیونکہ یہ "سااحل بہ لغیر اللہ" ہے۔ خواواس پر اللہ کانام ذکر کمیا کیا ہو اور اگر مممان کے لیے ذرج کیا کیاتو یہ حرام شمیں ہے کیونکہ یہ صفرت خلیل

غيان القر أن

طیہ السلام کی سنت ہے اور معمان کی تحریم اللہ تعالیٰ کی تحریم ہے اور وجہ فرق ہے کہ اگر اس نے جانور کو اس لیے زع کیا ا ما کہ یہ اس سے کھائے تو یہ ذی اللہ کے لیے ہوگا اور منفعت معمان کے لیے 'یار ہوت کے لیے 'یا فقع کے لیے ہوگی اور اگر اس نے کھانے کے سلیے نہیں ذی کیا' بلکہ اس لیے کہ کمی فیرے آنے پر محض اس کو ذیح کرے (بینی صرف فون بملے) تو اس جی فیر اللہ کی تعظیم ہوگی 'سویہ حزام ہو گا کیاوہ فض کا فرہ و جائے گا؟ اس جی دو تول جی۔ (برازیہ و شرح و مبایہ) جی کتا ہوں کہ
منیہ کی لکب المعید جی ہے کہ یہ فعل کموہ ہے' اور اس فض کی تخفیر نہیں کی جائے گا۔ کیو تک ہم کمی مسلمان کے ماتھ یہ
بر کمانی نہیں کرتے کہ وہ اس ذی کے ماتھ کمی آوئی کا تقرب (بہ طور عملوت کے تک می کمنز ہے۔ شہری) حاصل کرنے کی کوشش
کرے گا۔ شرح الوصیان میں ذی ہے ہے ای طرح معتمل ہے۔

(ور فار مع روافعار عدم مع عدا-۱۹۷ مطوع واراحيا والراث العربي وريت عدماه)

علام سید محراش این علیرین شای حوفی ۱۵ مد اس کی شرح می وجه فرق بیان کرتے ہوئے لکھتے ہیں" مدا احمل بد لغير الله" من تعقيم اور فيرتعيم ك لي ناع كافرل يه ب ك أكر ديوار ينة وت ياكى مرض سه شفاء ك حصول ك وقت جانور ذرع کیا جلے تو اس کے حال ہوتے میں کوئی شک نسی ہے۔ کو تک اس ذرع کا متعمد صدقد کریا ہے (حوی) ای طرح كى كے سفرے سلامتى كے ماتھ آنے پر قریانى كى غار بانى تا اس كائجى كى علم ہے۔ المحرائرائن اب اس يا لازم ہے كہ اس گوشت کو فقط فقراء پر معدقہ کرے۔ (لگوئ الشلبي) اور جو مخض کمي کے آتے پر جانور کو ذیج کرے اور پاراس کو يو نمي جموز دے کیا اس میں سے کل یا بعض لے لے اور قرق کا مدار ابتداء ذیج کے وقت ہے۔ اگر اس نے معمان کے اگرام ہور اس کو موشت كمالة كرسب م جانور كونة كياب أو ذي حلال ب اور اكر اس في كسى يد ادى كى الد ك موقع يراس كى تعقیم کے لیے محل فون بملنے کے قصدے جانور کون کیا ہے تو یہ حرام ہے اور یہ فرق اس طرح مزید خاہر ہو گاکہ اگر اس نے طام کی ضیالت کی اور اس کے آلے پر جانور کو ذی کیا۔ اگر اس فی عب اس کی تنظیم کا قصد کیاتو یہ ذیجہ حال نسی ہے اور اگر اس نزع سے اس کی معمانی اور اس کے اگرام کا تصد کیاتو یہ ذیجہ حلال ہے۔ خواہ یہ ذیجہ معمان کے علاوہ کمی اور کو مطا دے۔جو النص كى بوے آدى كى آمد كے موقع إس كى تعليم كے ليے جاؤد كو ذيع كر باہ ويد ذير حرام ب الكين يد كار نسي ب-كيونك بم كى مسلمان كے ساتھ بيد بر كمانى فيس كرتے كدوداس ذي كے ساتھ كى آدى كا تقرب على دجد العبادت حاصل كرے كا اور تحفیر کاای بر دارے اور یہ مسلمان کے مال سے بعد بعید ہے۔ اس کے ظاہریہ ہے کہ اس کاب قعل ونیاواری کے لیے ہے اس کے سلمنے اعمار محبت کرے اس کا عبول بنا چاہتا ہے انکین جبکہ اس مام کی تعقیم کی دجہ ہے زع کرنا تھا تو زع کے وتت الله كانم ليما عمل خالص الله ك ليه نه تما أوريه ايسه وكما بيد كولي فض فدع ك وتت ك الله ك نام مد اور فلال ك الم على الله يدوي وام موكد لين ومد اور كفري علام أسى -

(روالحتار عصم ١٩٤٠-١٩٤ مطوعه واراحيا والراث العربي ميروت ع٠٥٠ ١٥١٠)

المنه ونقة كامعى ادراس كاشرى عكم

منعنق ان جاؤر کو کتے ہیں ہو گل گفتے ہے مرجائے عام ازیں کہ کسی نے تصدا اس کا گلا گھوٹ دیا یا کی مادہ ہے۔ اس کا گلا گھٹ کی اور شرعا غدور نہیں ہے۔ اس کو مردار میں شال نمیں کیا' بلکہ الگ ذکر کیا ہے۔ کو نکہ مردار وہ ہے جو بغیر کسی سب کے طبق موت سے مرجائے اور گلا گھٹے سے مرنے والا ایک فارتی سب سے مرتا کے نکہ مردار وہ ہے جو بغیر کسی طارتی سب سے مرتا ہے۔ مرتا ہے ہوئے ہیں ہے۔ اصل مقسود ہے کہ افتہ کانام لے کر طال جانور کے گلے پر چمری پھیری جائے جس سے اس ک

ماردن دخیس کث جائیں اور جسم کا مارا فون بعد جائے۔ السمب و قبو فرق کا معنی اور اس کا شرعی تھم

جس فیردجار والی بھاری چڑے کی جانور پر ضرب یا چوٹ لگائی جائے 'خواہ دور سے پھر بارا جائے 'یا ہاتھ میں ڈنڈا پکڑ کر اس سے بارا جائے اس چوٹ کے نتیجہ میں دہ جانور مرجائے تو دہ بھی شرعائے ہوج نسیں ہے۔ یہ جانور بھی مردار کے تھم میں ہے' اور زبانہ جالیت میں اس کو کھایا جا تا تھا۔

اسلام ٹی ٹیکل شنے کی ضرب یا چوٹ ہے جانور کو ہلاک کرنے ہے منع کیا ہے 'اور کمی دھار والی چیزے جانور کو ذرج کرنے کا تھم دیا ہے ' تا کہ جانور کو افت نہ بہنچ اور آسانی ہے اس کی جان لکل جائے۔

الم محرین اسامیل بخاری متونی ۱۵ موریان کرتے ہیں حضرت این مہاں نے قربالا مندخشقہ "دو ہے جس کا گاؤ کھوئا جائے اور وہ مرج اسٹے۔ "موقو ذہ "وہ ہے جس کو لکڑی ہے ضرب لکائی جائے اور وہ چوٹ کھاکر مرج اسٹے۔ "متر دیہ "وہ ہے جو پہاڑے گر کر مرج اسٹے اور "معلیدے " وہ ہے جس کو دو مری بحری نے سیکھ مارا ہو 'اگر اس کی دم یا آ کھ بل رہی ہوتو اس کو ذرج کرکے کھالو۔ (میکم البحادی میں انسید والذبائع مور بہا)

الم مسلم بن علن تخيري متوفى ١٠١٥ روايت كرتم بين صفرت شد نوين اوس بريني بيان كرتم بين كه بن في دوياتي رسول الله برجيد سه ياد ركمي بين. آپ نے فرايا الله تعالى في برجيز كے ساتھ نگى كرنے كو فرض كرويا ہے۔ پس جب تم لئل كرو تو درست طريقہ سه كرو اور جب تم فرائكرو تو درست طريقہ سه فرائك كو كور تم بن سے كمى مخص كو الى چمرى تيز كر لئى چاہيے ' ماكر ذبير كو آسانى بو۔ (منج مسلم 'جسم' رقم الحدث دهدا)

جب جمری تیز ہوگی تو جلدی ہے جانور ذریح ہو جائے گالور مستحب یہ ہے کہ جانور کے سامنے چمری تیزند کی جائے اور آیک جانور کے سامنے دو سمرے جانور کو ذریح نہ کیا جائے اور جانور کو تھییٹ کرتہ کا تک نہ لے جایا جائے۔

معرت ابن مباس ومنی الله النمایان كرتے بيل كه ني وجيد نے قربايدس يزي روح مواس كو (مثل كے ليے) نشاند ند بناؤ - (مح مسلم "جا" وقم الحريد عديده)

المم محمن اسامل عفاري حول ١٥٠ مدروايت كرتي بن

حضرت عدى بن حاتم وہن بيان كرتے ہيں كہ عن نے رسول الله وجھ سے معراض (يغير كا تيم جم كاور ميانى حصد مونا 19) كے متعلق سوال كيا۔ آپ نے فرمليا جب جانور اس كى وهار سے زخمى ہو تو اس كو كھالو اور جب جانور كو اس كى جو ژائى كى جانب تيم تھے لورود مرجائے تو اس كو مت كھاتا ميمو تكہ وہو تيذ (جو شہدے مرا ہوا) ہے۔

(مح البحاري علائر قم الحديث: ۵۳۷)

موقودہ کی بحث میں بندوق سے بیے ہوئے شکار کا بھی ذکر کیاجا آ ہے۔ ہم نے یہ بحث تفسیل کے ساتھ شرح منج مسلم جلد ساوس میں لکھ دی ہے اور (المائمد: ۳) میں بھی انتاء اللہ اس پر محفظو کریں ہے۔ المسمتر دیدے کا معنی اور اس کا شرعی مفہوم

جو جائور کمی بہاڑے یا کمی بلند جگہ ہے حلاً چھت ہے گر جائے ' یا کنو کمی جم گرنے ہے اس کی موت واقع ہو جائے' اس کو متردیہ کتے ہیں۔ مردار کی طرح اس کا کھلا بھی جائز نہیں ہے۔ الایہ کہ اس جس کچھے رمتی حیات ہو قواس کو ذریح کر لیا عائے۔

النطيحة كامعني اوراس كاشرى تحكم

جس جانور کو دو سرے جانور نے سیکھ مارا ہو اور وہ اس کے سیکھ مار بے سے مرکبا' خواواس کے سیکھ مار نے ہے وہ ¿ ٹمی ہوا ہو 'اور اس کاخون بھی بما ہو 'اس کا تھم بھی مردار کی طرح ہے 'اور اس کا کھانا شریا جائز نہیں ہے۔ جس جانو رکو و ر ندے ہے کھالیا ہو 'اس کا شرعی تھم

منی در ندے مثلاً شیر' چیتے یا بھیٹر نے نے کسی طال جانور کو چیز بھاڑ کر زخمی کر دیا ہو اور اس کے کل یا بعض ھے کو کھا اب ہو' تو اس کا کھانا بلاجماع جائز نہیں ہے۔ خواہ اس کے جسم یا اس کے فتائج کی جگہ ہے خون بعد رہا ہو۔ زمانہ جاہلیت میں بعض عرب در ندہ کے بھاڑے ہوئے جانور میں ہے بیتیہ کو کھالیا کرتے تھے' حین طبائع سنیمہ اس کو پسند نہیں کرتی تھیں۔

"الاماذكيتم"كمشتى مندكابيان

مردار ون معزاد والمراهل لغير الله به " كالله بالأن باتورون من يو جانور زنده ل جاكي اوران كو مردار ون المراه و المراه و المراد الله به " كالله بالأن بالأن بالمرد و المراه بالمرد و المرد و ال

المام الوجعفر محرين جرير طبري متونى ماسات لكمية بين:

حطرت ابن عماس رمتی اللہ تعالی عنمانے فرمایا جس جانور کے ذکع کاموقع حمیس فل جائے ' بایں طور کہ اس کی دم بل رہی او ' یا وہ آگھ ہے وکچھ رہا ہو' اس کو اللہ کا نام لے کر ذکا کر دو' وہ حلال ہے۔

الدون بني مياك الحم الدفنزيوك سوابل تمام كو "الاساد كينم "كااشتناه لاحن ب- جب تم ديكموك وه مانور بلك محميكا دبائ وم بلا دبائه ألى منظرب او رى ب توتم اس كو ذرع كردو الله تعالى في اس كو تمهارك لي عال كردو الله تعالى في اس كو تمهارك لي عال كردو الله تعالى في اس كو تمهارك لي عال كردو الله تعالى في اس كو تمهارك الي عال كردو الله تعالى في المائية موقوده معروب اور تغير كو باته و بي بلات و يكورة اس كوروز كرك كماو

ان اقوال کی بناء پر اس آیت کامعن ہے ہے کہ موقوزہ متردیہ اللیو اور جس کو درندہ نے کھالیا ہو اور تم پر حرام کردیئے گئے بیں الکین اگر تم ان میں زندگ کے آثار ویکھواور این کے مرنے ہے پہلے تمہیں ان کو ذرج کرنے کاموقع مل جائے تو وہ تمہارے لیے طلال بیں اتم ان تو ذرج کرکے کھالو۔

ابعض علاء الل هدید نے ہماکہ یہ استفاد ان عربات میں ہے تس ہے جن کا اس آئے۔ میں ذکر کیا گیا ہے ' بلکہ یہ تریم سے استفاد ہے ' لیمن موار' قون' خنویو' ''و ما اهیل لعمیر الملہ یہ ''اور باتی فہ کورہ جانور تم پر ترام کردیے گئے۔ گرجن عال جانوروں کو تم شرق طریقہ ہے ذن کر کو' وہ تم پر حال ہیں۔ اہم مالک کا بھی قول ہے۔ اہم مالک ہے ہو جھا گیا کہ ایک در ندہ ایک بھیٹر پر عملہ کرتا ہے اور اس کی کر قو ڈوالنا ہے۔ قواگر اس کو حرف ہے پہلے ذکا کر لیا جائے قوکیا اس کو کھانا جائز ہے ' اہم مالک نے کمااگر اس کی ضرب اس کے بیت 'جگراور ول تک پہنچ جاتی ہے قوچراس کا کھانا جائز نہیں ہے 'اور اگر اس کے باتھ' بیر قر ثرے ہیں' تو پھراس کو ذریح کرکے کھانے میں کوئی ترج نہیں ہے۔ ان ہے چچاگیا' اگر وہ اس پر حملہ کر کے اس کی کر قو ڈوے ؟ اہم مالک نے کہ اس کو ترج خور جانور ذندہ نہیں وہتا۔ میرے نزدیک اس کا کھانا بہتر نہیں ہے 'ان ہے بو چھاگیا کہ بھیڑوا کمری کا پیت بھاڑ دے ' لیکن اس کی آئیس باہرنہ لکنیں 'اہم مالک نے کماجب اس کا بیت پھاڑ دیا جائے قو میری رائے میں اس کا کھانا جائز نہیں

اللہ تعالی کاارشادے: اورجو بتوں کے تقرب کے لیے نسب شدہ پھروں پر فٹ کیا گیا۔ نصب کامعنی اور اس کا شرعی تھم

قرآن مجدی نمب کالفظ ہے الین جو جانور نسب پر ذرج کیا گیا وہ جی حرام ہے۔ کعبے گرو تین مو ماٹھ پھر نصب کے بیٹھ اور زبانہ جالجیت میں عرب اپنے بول کا تقرب حاصل کرنے کے لیے ان پھروں ہے ہاں جانور ذرج کرتے تھے اور ابت اللہ کے سامنے ہو خون بہتا اس کو ان پھروں پر چھڑکتے تھے اور اس قربانی کو عبادت قرار دیتے تھے اور اس کو شب کے گلاے ان پھروں پر رکھ دیتے تھے اس کو نسب اور انساب کما جاتا ہے۔ نصب انصیب کی جھ ہے۔ نصیب اس پھرکو کہتے ہیں جس کو کسی بھروں پر اس کو نصب اور انساب کما جاتا ہے۔ نصب نصیب کی جھ ہے۔ نصیب اس پھرکو کہتے ہیں جس کو کسی گئے پر نصب کیا جاتا ہے۔ والمفروات میں سوت کی نصب نے معتقد ش پھر اور جمہ مناوں کو اس من مناوش پھر اور جو جانور نصب پر ذرج کے جاتے ہیں ان کا کھانا ان پر حرام کردیا۔ خواہ ان جانوروں پر ذرج کے وقت اللہ کا جاتا ہے اس کے اس شرک سے اجتماب ہو جس کو اللہ اور اس کے رسول نے حوام کر والے ان جانوروں پر ذرج کے وقت اللہ کا جاتا ہی جاتے ہیں اور میں گئے اس شرک سے اجتماب ہو جس کو اللہ اور اس کے رسول نے حوام کر والے۔

الله تعالى كاارشادى، اور فال كے ترون سے الى قست معلوم كرنايد (تمام كام) فتق بير-(الماكدون) الله كام كام كام كام

اُزلام ذَلَم کی جمع ہے۔ یہ تیم کی شکل کا تکوی کا ایک کلوا ہو آئے جس کی نوک پر لوہ کاوہ پھل جمیں ہو باجو شکار کو زخمی ۔
کر آئے از اند جالیت میں مشرکین اس ہے اپنی قست کا حال معلوم کرتے تھے۔ امام ابن جر پر طبری اپنی سند کے ساتھ روایت کرتے جیں۔ یہ تیم کابنوں سکے پاس ہوتے ہے 'جن میں ہے کسی پر تکھا ہو تا تھا' جھے منبع کیا ہے اور کسی پر تکھا ہو تا تھا' جھے منبع کیا ہے اور کوئی تیر ساوہ ہو تا تھا۔ جب کوئی فخص سنر کا ارادہ کرتا' یا شاوی کا ارادہ کرتا' یا کسی شخ کام کا ارادہ کرتا' اور اگر اس کا نقاضا ہو تا تو او کا بن کے پاس جا آباور تیر سے فال نکال آگر اس کا نقاضا ہو تا کہ دربارہ قال نگا ہے۔ اور کوئی تیر ساوہ تیر نگل آباتہ و دوبارہ قال نگا کے دوہ اس کام نہ کرے تو وہ کام کرتا' اور اگر اس کا نقاضا ہو تا وہ کام نہ کرے تو پھروہ کام نہ کرتے تو پھروہ کا در آگر اس کا نقاضا ہو تا وہ کام نہ کرے تو پھروہ کام نہ کرتا' اور اگر اس کا نقاضا ہو تا وہ کام نہ کرے تو پھروہ دار الفکو ' بیروٹ 'ماہوں کا میں دھوں کام نہ کرتا' اور اگر ساوہ تیر نگل آباتہ دوبارہ قال نگا گئے۔ (جائم البیان' جزا میں سوار مطبوعہ دار الفکو ' بیروٹ کام نہ کام نہ کرتا' اور اگر مورد دار الفکو ' بیروٹ کام نہ کرتا' اور اگر مورد دار الفکو ' بیروٹ کام نہ کرتا' اور اگر میں دور کی میں میں کام نہ کرتا' اور اگر میاں کا نقاضا ہو تا کو اوردہ قبل نگا گئے۔ دوبارہ قال نگا گئے۔ (جائم البیان' جزا 'می سوار مطبوعہ دار الفکو ' بیروٹ کام نے کھی کی کام نہ کرتا' اور آگر میاں وہ تیر نگل آباتہ دورارہ قبل نگا گئے۔ دورارہ قال نگا گئے۔ دورارہ قبل نگا گئے کام نے دورارہ قبل نگا گئے۔ دورارہ قبل نگا گئے۔ دورارہ قبل نگا گئے۔ دورارہ قبل نگا گئے۔ دورارہ قبل نگا گئے کی کی کام نے دورارہ قبل نگا گئے۔ دورارہ قبل کے دورارہ قبل کے دورارہ قبل کی کی کام کی کی کی کی کرنے کی کی کر کے دورارہ قبل کی کی کی کرنے کی کی کی کی کی کی کی کرنے کی کی کی کی کرنے کی کرنے کی کی کرنے کی کی کی کی کی کی کی کرنے کرنے کی کرنے کی کرنے

نجومیوں کابنوں اور ستارہ شناسوں سے غیب کی باتیں وریافت کرنے کی ممانعت

جس طرح فال کے تیرون کے ذریعہ اپنی قسمت کا طال معلوم کرنا اور المور لھیبدہ کو دریافت کہا جمنوع اور حرام ہے۔ اس طرح نیومیوں سے قسمت کا طال معلوم کرنا ہیا جو نوگ ستارہ شنای کے دعویٰ دار ہیں 'ان سے بستنقبل کا طال معلوم کرنا بھی ممنوع اور حرام ہے۔ جمارے بعض اخبار است اور د سائل میں اس عنوان سے کالم چھپتے ہیں آپ کامیہ بغتہ کیے گزدے گا؟ اور انگل بچو سے قیب کی یاتیں بتائی جاتی ہیں 'نیوی ہاتھ کی کیریں وکھ کر قیب کی یاتھی جاتے ہیں۔ طوطا اپنی چونی سے انفاف انکال ہ ، بھی صوفی پاسٹا ہم کے اوگ قر الن سے قال اللہ لیے ہیں۔ یہ انام امید دیا اللہ اللہ اللہ اللہ تعالی کے سوا اور کوئی فیب کو تمیں جانتا کا المیام اور کوئی فیب کو تمیں جانتا کا المیام اللہ کو جو العام ہو آ ہے وہ آ کے فداید وہ اللہ تھی ہے تھی ہے۔ نیاز جائیات میں کافر اور مشرک کا بنوں کے ہاں جانتا کو ایام اللہ کو جو العام ہو آ ہے وہ آ کے تعلق ترد ہو گا وہ این سے مسلوم کرتے اور وہ فال کے تیرون سے قال نکال کر جاتے ہور العمل معلی میں جس کام کے مطلق ترد ہو گا وہ این سے مسلوم کرتے اور وہ فال کے تیرون سے قال نکال کر الکل میں سے ان کو قیب کی باتھی ہائے۔ اسلام لے اس طرف کی محافظت کردی تھی جو انوں سے کمی کام کے کرنے یا ترکی میں تھی معلق معلقات مامل کرتے ہیں ان کا بھی ہی تھی سے۔

للم عمر عن استامیل بناری متحق این محد روایت کرتے این حضرت اوسسود انساری برینی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ ماللا نے بہتے کی قیست مواکف (روزی) کے معلوقہ اور کلمن کی مشمکل دیے ہے سے منع قربالا۔

ا کی الحادی کا از آم الحدیث کا از آم الحدیث کی استان کی استان کی استان کی از آم الحدیث کی از آم الحدیث کی از آم این از آم الحدیث الماری کی این باید کی از آم الحدیث العام مین القرابی از آم الحدیث المون داری کی از آم الحدیث این این می میدید المی کری الحدیث کی الحدیث کا ارقم الحدید این این الدی از آم الحدید میدید این ال

المام البوذاتور سليمان عن الشعث متولى شد الد دوايت كرية إلى:

حضرت الوجرية ويلي عان كرت إلى كروسل الله مالي الدفرالية والنس كنى كابن كراس ميالود اس كرول كي المدين كابن كراس ميالود اس كرول كي المدين كان المراس كروس كيالود المراس كي المراد المراد المراد كروس المراد المراد المراد كروس المراد المراد كروس كروس المراد كروس المرد كروس المرد كروس المرد كروس المرد كروس المرد كروس المرد كرو

اس مدیث کا محل ہے ہے کہ ہو محض کی آدی کے منطق ہے بین رکھے کہ اس کو فیب کا علم ہے اور پھر طلال اور جائز مجھ کراس سے فیب کی باغی دریافت کرے ان کافر ہو کیالور آگروں بابائز اور کناہ مجھ کرے کام کرے او پھر یہ کناہ کے و مقامہ او سلیمان ففائی حق ۸۸ مدھ کیستے ہیں:

عرب میں کائن تھے فور وہ متعد امرور کی سوفت کار ویل کرتے تھے کان عرب بعض یہ کتے تھے کہ جن آکران کو خری دیتے ہیں اور بعض مراف کہناتے تھے ہو دیتے ہیں اور بعض عراف کہناتے تھے ہو دیتے ہیں اور بعض عراف کہناتے تھے ہو قرائن اور اسباب ہے عظف چیوں کا با چا چا فیے تھے۔ مثل ہاتے میں محص نے جوری کی ہے اور قابل محض نے قابل مورت مرائن اور اسباب ہے عظف چیوں کا با چا چا فیے تھے۔ مثل ہاتے میں محص نے جوری کی ہے اور قابل محض نے قابل مورت

ے برکاری کی ہے' اور بعض تجوی اور ستارہ شاس کو کائن کتے تھے۔ صدعث عن ان قام لوگوں کے پاس جانے ہے منع فرمایا ہے'اور ان کے اقوال اور ان کی خیون کی تصدیق کرنے ہے منع فرمایا ہے۔

(معالم السن مج ٥ مع ١٥ - ١٠٠٠ مغبور وار المعرف ميروت)

مسى در چيش مهم كے متعلق استخاره كرے كى بدایت

الم محدين العاصل بخاري متونى ١٥١ مد دوايت كرت ين

حضرت جابر بن جرافد رضی افتہ عنما بیان کرتے ہیں کہ رسول افتہ ہو بات کام کاموں جی ہمیں استخارہ کی اس طرح تعلیم دیتے تھے۔ آپ قرائے تھے جب تم بی ہے کوئی عنص کمی کام کافصد کے قود در اس جرک قران جید کی کس سورت کی تعلیم دیتے تھے۔ آپ قرائے تھے جب تم بی ہے کوئی عنص کمی کام کافصد کے قود در اس کر آبوں اور تیری قدرت مل ہے تھے اور جی قود در اس کو اور تیری قدرت طام ہے اور جی تا اور جی تو در اس بوں اور تو عالم ہے اور جی عالم نے اور جی تا ہوں اور تو عالم النا اور جی عالم میں یہ کام میرے دین اور جبری تندگی جی افرایا جبری دنیا اور آفرت میں میں میں میں میں میں میں اور جو اس کام کو جبرے دین اور جرے آباد میری دنیا اور آفرت میں میرے دنیا اور آفرت میں میں میرے دنیا اور آفرت میں اور آفرت میں میرے دنیا اور آفرت میں میرے دنیا اور آفرت میں اور آفرت میں میرے دنیا اور آفرت میں اور گردے اور جرے کو مقدر کردے اور میرے لیے شراو او آباں کام کو جو سے دور کردے اور میرے لیے تیرک و مقدر کردے اور میرے لیے تیرک و مقدر کردے اور میرے کے تیرک میں میرے دو اور جو سے دور کردے اور جو سے دور کردے اور میرے لیے تیرک و مقدر کردے اور میرے اس کام میرے دور کردے کور میرے لیے تیرک و مقدر کردے اور میرے کے تیرک کی اس میں میں میں ہے دور کردے اور میرے اس کام میرے دور کردے کور میرے لیے تیرک و مقدر کردے اور میرے کی دور کردے کور میرے کیے تیرک کی کی دور کردے کور میرے کے تیرک کور میرے کے تیرک کی کی دور کردے کور میرے کے تیرک کور میرے کی دور کردے کور میرے کے تیرک کی کی کے۔

(مح المواري عن وقم المعتصد ١١٧ سنن تروي عه وقم المعتدد الاستن ابن الدري أوقم المعتدد ١٣٨١ مند الوريد

وقم المدعة والالالا

استخاره كريح كالحريقة

علامه بدر الدين محود عن احمد منى متوتى ١٥٥٥ لكيد بي-

اگر آیک باد دعاواستگارہ کرنے کے بعد آدی کادل کی کام کے کرنے یا نہ کرنے کی طرف نہ بھے تو آیا وہ بارہ ہم مل کرنا مشراع ہے انہیں میں کہ اس کو کمی کام کے کرنے یا نہ کرنے کے حفاق شرح صدر وہ جائے ہیں کتابوں کہ مطاق استگارہ اور دعا کو بار بار کرنامستحب ہے۔ ایام ابن النی نے عمل الیوم و اللہ جن آئی سند کے ساتھ روایت کیا ہے کہ رسول اللہ ساتھ اللہ بن اللہ جن اللہ جن اللہ بن اللہ الكافرون" إص اور دوسرى دكست من سورة فاتحدك بعد "قبل هوالله احد" إص الم فزال في بحى احياء انطوم من اى طرح لكما ب اور هار به في زين الدين دهم الله في الكماب ملاة استخاره من كى سورت كى قرات كرنامين نبي ب اوركمى مديث من اس تعين كاذكر نبي ب-

(عدة القاري عيد مص ١٢٢٠ مطبوعد اوارة اللباعة المنيريد معر ١٣٨٨ الد)

علامه سيد محراين ابن علدين شاى متونى ١٥٠ عد كفية ين:

متحب ہے کہ دعا کے شریع اور افری اللہ تعالی کی حد کرے تور ہی باتھ ہر صلوة پر ہے اور دہ کی رکعت میں قرائے کے بعد یہ زیادہ پر سے اور وہ مری رکعت میں او ماک اور اسکا ہوں کے بعد یہ زیادہ پر سے اور وہ مری رکعت میں او ماک ان لمعنومین و لا مؤمن قالایہ) پوری آیت پڑھے اور استخارہ کا عمل مات مرتبہ کرے جیسا کہ امام ابن اسمی نے اعد مال المبیوم و اللبیلہ میں) روایت کیا ہے اور شرح الشرعہ میں ذکور ہے کہ مشار تھے ہے ستا کیا ہے کہ نماز استخارہ پڑھ کو رہے کہ مشار تھے ہے ستا کیا ہے کہ نماز استخارہ پڑھ کر اور دعاہ ذکر کر کے موجلے "اگر اسے قواب میں کوئی سفیدیا مبرج زنظر آئے تو یہ کام اس کے لیے خرے اور اس کو ایون کو ایون کرنا چاہیے۔

(روالحنار "ج العن الاس مطبوعه واراحياء التراث العرلي بيروت ٢٠٠٧هم)

قرائن کی بناء پر مستنبل کے ملنی ادر اک حاصل کرنے کا تھم

آنام الخرائدين همرين عمر رازى متونى ١٠٠١ ه الصح بين بب تيروں ہے قسمت كامل معلوم كرنافش ہواس بريد اعتراض ہوگاكد نبى جيجيد فال (نيك شكون) كو پيند كرتے تھے اور تيروں ہے اپنے سفرا مستنبل كے كى كام كے متعلق معلومات عاصل كرنا بھى ايك تسم كى فال ہے تو پھر تيروں كے ذريعہ فال فكالنے كو كيون فسق فرايا ہے؟ ہم كيتے بيں كہ واحدى نے كما ہے كہ تيروں ہے فال فكافنا يا قسمت كا عال معلوم كرنا اس ليے حرام ہے كہ اس ميں فيب كى معرفت كى طلب ہے اور يہ حرام ہے "كيونكہ اللہ تعالى

اور کوئی فض شیں جانا کہ وہ کل کیا کرے گا۔

وَمَا لَدُرِي مُعْسُمُ اذَا لَكُسِبُ غَدًا

(لقسأن: ۲۳)

آپ کئے کہ اللہ کے مواجو بھی آ سانوں اور زمینوں میں ہے ' وہ (بڑاچہ) قیب کو نہیں جاتا۔ قُلُ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمْوْتِ وَ الْأَرْضِ الْعَيْبُولَالْلَهُ (النمل ١٥٥)

اور کوئی معترض یہ بھی کد سکاہ کہ اگر علامات متعادف کے ذریعہ نفتی علم حاصل کرنا(مثلاً موسی علامات کے ذریعہ درجہ
حزارت کیا بارش کے ہونے یا نہ ہونے کا علم حاصل کرنا کیا جدید سائنسی آلات کے ذریعہ سورج اور چاند کے کس نگنے کا علم
حاصل کرنا) معرفت فیب کی طلب ہو کو پھر خواب کی تعبیر معلوم کرنے کا علم بھی کفر ہونا چاہیے جمیو تکہ یہ بھی فیب کی طلب ہے اور کسی چیزے نیک قال ٹکالنا بھی کفر ہونا چاہیے کی تکہ یہ بھی فیب کی طلب ہے اور جو اصحاب کرامات اور اولیاء اللہ المام کا
دو کسی چیزے نیک قال ٹکالنا بھی کفر ہونا چاہیے کی تکہ یہ بھی فیب کی طلب ہے اور جو اصحاب کرامات اور اولیاء اللہ المام کا
دعویٰ کرتے ہیں کو ایسی کافر ہونے چاہیں اور یہ بداحثہ معلوم ہے کہ ان امور کا کفر ہونا باطل ہے کہ یکو تکہ یہ تمام امور شریعت

ے ٹابت ہیں۔

المام محدين اسائل عفاري متوفى ٢٥١ه روايت كرتي بي:

عبدالله بن بمیدہ اپنے والد بوپٹی ہے رواہت کرتے ہیں کہ ٹی پڑھین کی چڑے برشکونی نہیں لیتے تھے۔ آپ جب کی پڑھین کو عالی بناکر بھیجے تو اس کا بام بوچھے 'جب آپ کو اس کا بام بچھا لگاتو آپ ٹوش ہوتے 'اور آپ کے چرے ہے ثوشی ظاہر ہوتی اور آپ کو اس کا بام باپہند ہو آ' تو آپ کے چرے ہے گاراری ظاہر ہوتی 'اور جب آپ کی بہتی ہیں داخل ہوتے تو اس کا بام باپہند ہو آ' تو آپ کے چرے ہے گاراری ظاہر ہوتی 'اور جب آپ کی بہتی ہیں داخل ہوتے تو اس کا بام بوجی اور آگر آپ کو اس کا بام بوجی اور آگر آپ کو اس کا بام بوجی ہوتے اگر آپ کو اس کا بام بوجی اور آگر آپ کو اس کا بام باپہند ہو آتر آپ کو اس کا بام بوجی اور آگر آپ کو اس کا بام باپہند ہو آتر آپ کے پرے ہے تو تی ظاہر ہوتی اور آگر آپ کو اس کا بام باپہند ہو آتر آپ کے پرے سے تاکواری ظاہر ہوتی۔

(سنن ابو داؤ دئج عائد تم الدیث ۱۹۳۰ سند احد نجام ۱۸۰۰ مطبور کتب اسلای میروت اطبع قدیم)

سواس کاجواب سے کے قرآن اور حدیث میں فیب کے جس علم کی طلب سے منع فرمایا ہے اس سے مراد فیب کابینی
اور قطبی علم ہے اور علامات الات اور علم تجبیر اور قال سے جو فیب کا اور اک حاصل ہوتا ہے اوہ محض کان ہے۔ بعض
صور تواں میں بید خل قوی ہوتا ہے اور بعض صور تواں میں بید کل ضعیف ہوتا ہے۔ اس آیت کی توجید میں بیجی کہا کیا ہے کہ
کفار کا محقید و بید تھا کہ تیروں کے ذریعہ جو ان کو معلومات حاصل ہوتی ہیں وہ بیش کے تقرف سے حاصل ہوتی ہیں اور ان کابیہ محقید دفتی تھا اس لیے قربایا کرید فتی ہے۔

الله تعالی کا ارشاد ہے: "آج کفار تمسازے دین (کی کائی) ہے ماج سی او مجے ' سوتم ان ہے نہ ڈرواور جھے ہی ہے ڈرو"۔ (المائدور)

فيخ محدين عبدالوهاب نجدي كي تكفيرمسلين بربحث و نظر

اس ایت کے پہلے حصہ میں اللہ تعالی نے مسلمانوں کو چھ محرمات کے کھانے سے متح فرمایا جن کاذکر اس ایت کے شہری جا در تیروں سے قسمت کا مال دریافت کرنے سے متع فرمایا اور آیت کے اس حصہ میں اللہ تعالی نے انہیں ادکام شرعیہ کے عمل پر پراٹکیختہ فرمایا اور ان کو غلبہ کی بشارت دی آگا کہ شرعیت پر عمل کرنے کا عرم اور تو کی ہو اور ان کی شجاعت اور زیادہ ہو ۔ یہ آیت دس جمری مجند الوداع کے سال عرف کے دن نازل ہوئی اور دن جمد کا تھا اور اس میں فرمایا کھار تمہارے دین کو یا اور تو کہ اور تو کی ہو ہو اور اس میں فرمایا کھار تمہارے دین کو یا گئی کرنے اور تم پر غلبہ پانے سے اور اسلام کو چھو ڈکر کھرکی طرف تمہارے دون جد کا تعالی سے بوجے ہیں اور شیطان بھی مایوس ہو گئے ہیں اور شیطان بھی مایوس ہو گئے ہیں اور شیطان بھی مایوس ہو گئے ہیں اور شیطان بھی مایوس ہوگیا ہے۔

الم ابوجعفر محد بن جرير طبري متونى الله ابني سند كے ساتھ روايت كرتے ہيں يہ يوم عرف تفااور اس دن جمعہ تعاجب بي

علی نے میدان مرفات م نظر والی تو آپ کو موصدین کے سواکوئی نظر نیس آیا اور آپ نے کسی مشرک کو نیس دیکھا " تب آپ ف نے اللہ تعالی کی حمد کی اور معترت جر نیل علیہ السلام اس آیت کوئے کر نازل ہوئے۔

(جامع البيان * ١٦٪ من ١٠٥ منهورداً والفكو بيروت ١٣١٥ ه)

فام مسلم بن خاج قصیدی متوتی ۱۹۹ دوایت کرتے ہیں:

معرت جار بوینی میان کرتے ہیں کہ نی جھی نے قرطیا: شیطان برار اور می اپنی عبادت کے جانے سے باوی ہو گیا ہے ' نیکن دوان (مسلمانوں) کو ایک دو سرے کے خلاف بھڑ کائے گا۔

(مح سلم علم على وقم الحديث: ١٨١٣ مند الديع على ١٣٨٠-١٥٣ على ١٢١)

اس آعد اور ان اطاعت سے یہ واضح ہو گیاکہ جزیرہ عرب اور خصوصاً حض طبیعت بن شیطان کی میاوت نہیں ہو سکتی نہ بہت پر سی ہوگا اور اس سے یہ واضح ہوا کہ ترکوں کے دور بس حرین شریفین بس ہوالل سنت کے معمولات تھے۔ مسلمان روضہ افور کی جالیوں کو چریجے تے اور ابل بیت کرام کی تو افور کی جالیوں کو چریجے تے اور ابل بیت کرام کی تور سے استر او کو استان کی مجاوت تھی کرے تھے اس برای جو بر نے فرایا تور سے استر او کرتے تھے۔ ان بی سے کوئی چر شرک قسم تھی اور نہ شیطان کی مجاوت تھی کردے نے بی جو بر نے فرایا شیطان جزیرہ عرب بین ای مجاوت کے جانے سے باوی بودیا ہے۔

بار حوی مدی اجری ین بین محدی عرد او صلب نودی کا ظمور ہوا۔ اس کا عقیدہ یہ تھاکہ انبیاء علیم السلام ہے وسل کرتا ا اور ان سے شفاعت طلب کرنا شرک ہے اور یو عض یہ حقیدہ دیکھ اور کافر ہے اور اس کو الل کرنامباح ہے۔

ع مرين مرداوهن حول ١٠٠١هـ في الماعد

تم ہے جان بچے ہوکہ او گر اللہ کی راویت کا قرار کرنے کی دجہ سے اسلام میں داخل نمیں ہوئے الور فرشتوں اور نہوں کی شفاعت کا ارادہ کرنے کی دجہ سے نور ان کے وسیلہ سے اللہ کا تقرب حاصل کرنے کی دجہ سے ان کو قبل کرنا اور ان کا بال اوٹنا مہل ہوگیا ہے۔ (کشف اشبعات میں اصلور کمتبہ سلفیہ کمینہ منورہ)

 تمام ہمور پر تمام الل کہ افن کے موام امراہ فور علاہ جے سوسال سے زیادہ مرصہ میں براہیں اور تمبارا گلان ہے کہ یہ لوگ کافر ہیں اور یہ اطاوت تمبارے زعم فاسد کارد کرتی ہیں۔ (السوامن الالیہ می عبد معمارے کتیہ الیف ہی استبول) علامہ سید محد ایمن این عابرین شای متوتی ماں ملد کیستے ہیں ہمارے زیاد میں افرین حیدالوحاب کے متبعین نجد سے لیلے اور حرشن پر قابض ہو گئے۔ یہ فود کو منیلی ڈیس کی طرف منسوب کرتے ہیں الیمن ان کا حقیدہ یہ ہے کہ مرف وی مسلمان ہیں اور جوان کے اعتقادے خالف ہوں وہ مشرک ہیں۔ انسوں نے الل سات کے کمل اور ان کے علاء کے کمل کو جائز قرار دیا۔

(روالعار عم من ٢٠٠٩ معلوم واراحياء الراث العربي عروت ٤٠٠١هـ)

می جو اور شاد سخیری حوتی مده معد کھے ہیں را جرین میدالوهاب نیدی و دو پلید عض تھا ہم علم تھا اور دو بہت جلد کر کا تکم لگا با تفلہ ملائکہ سمیراس عض کو کرنی جا ہے جس کا علم بہت بات ہو اور دو ما خرد الح ہو الور کفر کی دیوہ اور اس کے امباب کا جائے والا ہو۔ (لیش البادی کا میں معاور معبد الحجازی الفتا ہو الدہ اللہ

مید احمد بن زیی دهان کی شافتی متونی می سعد کلیتے ہیں اور شخط نبوری به صراحت کماکر ناتھاکہ چو موسل ہے تمام امت کافر ہے' اور وہ ہراس فض کی بخیر کر ناتھا جو اس کی اجاع نہ کرے خواد وہ انتظا پر چیزگار فضی بن کیوں نہ ہو' وہ اپسے تمام مسلمانوں کو مشرک قرار دے کران کو تخل کرارتا' اور ان کے مل دمناع کو اوشے کا تھم دیتا اور جو فض اس کی اجاع کرفتا' اس کو مومن قرار دیتا۔ خوادی فض پر ترین فاس ہو۔ (خلامہ الکام فی امرابلد الحرام' میں میں میں مطبور کتے۔ الدیدی استول)

نيز حين المحدثي لكمة بين: ١- محرين مبرانوباب كامتيده تما

ا۔ گھرین میدانوباب کا مقیدہ تفاکہ جملہ اعلی عالم د تمام مسلمانان دیار مشرک و کافریس اور ان سے فکل و الل کرناان کے اموال کو ان سے چیمن ایما طول اور جائز بلکہ واجب ہے چیانچہ تواب معدیق حسن خلاف فرواس کے ترجمہ میں ان دونوں باتوں کی تقریم کی ہے۔ باتوں کی تقریم کی ہے۔

۲۰ نبودی اور اس کے انباع کا اب تک بی مقیدہ ہے کہ انبیاء علیم السلام کی حیات فظ اسی زمانہ تک ہے ' جب تک وہ دنیا یس تھے 'بعد ازاں وہ اور دیگر موسنین موت میں پرابر ہیں۔ (شاب ٹاقب میں ۲۲)

۱۰۰ زیارت دسول مقبول بینی و حضوری آستاند شریفد و لمانظ روضه مطمو کوید طاکفه بدعت سوام و فیره لکه تا به اس طرف اس نیت سے سفر کرنا محلور و ممنوع جانا ہے۔ بعض ان جس کے سفر زیارت کو معلق اللہ زیا کے ورجہ کو پہنچاتے ہیں اگر مجر زدی جس جانتے ہیں توصلو قاد سمام ذات اقد س نوی علیہ العملو قاد السام کو بسی پڑھتے کورند اس طرف متوجہ ہو کردعاؤ فیرہ مانتے ہیں۔ اشداب فاقب محمد میں ادر نمایت میں نبوت و معرت رہالت علی صامبحالله و والسلام میں واپنے نمایت گتائی کے کلمات استعال کرتے ہیں اور نمایت محوری می فضیلت نمانہ تبلغ کی ایک ہیں اور اپنی شعاوت قلبی و ضعف اعتقادی کی وجہ ہے جانے ہیں کہ ہم عالم کو ہدایت کر کے راو پر لا رہے ہیں۔ ان کا خیال ہے کہ رسول مقبول علیہ السلام کا کوئی حق اب ہم پر نسی اور نہ کوئی احسان اور قائدہ ان کی ذات پاک ہے بعد وقات ہے اور اسی وجہ ہے توسل و دعا میں آپ کی ذات پاک ہے بعد وقات ہے اور اسی وجہ ہے توسل و دعا میں آپ کی ذات پاک ہے بعد وقات ہا اور نمور کئی اور اسی وجہ ہے توسل و دعا میں آپ کی ذات پاک ہے بعد وقات ہا اور نمور کے بین اس کے بروں کا مقولہ ہے: نقل کفر اکفرنہ باشد اکر ہمارے باتھ کی لا تھی ذات مرور کا نمات علیہ العلو ق والسلام ہے ہم کو زیادہ نفع دینے والی ہے اس سے کتے کو بھی دفع کر سکتے ہیں اور ذات تحریا کم میں کر سکتے (شاب ٹا آپ اس کے س)

۵- وہابیہ اشغال باطنیہ و اعمال صوفیہ مراتبہ ذکرو نظر و اراوت و مشہدفت و ربط انقلب ہاشیخ و فناو بقاو خلوت و فیرو اعمال کو فناو بھا ہے۔ فناو بقاو خلوت و فیرو اعمال کو فناو بھا ہے۔ فناو بقاو خلوت و فیرو کہتے ہیں اور ان سلاسل میں داخل ہو نا فناول و فیرو کہتے ہیں اور ان سلاسل میں داخل ہو نا مجمی کروہ و مستقبعے ' الکہ اس سے زائد شار کرتے ہیں۔ (شماب ٹاقب اس میں)

۲- وإبير كمي ظام المام كى قليد كو شرك في الرسالت جائے إلى اور ائد اربد اور ان كے مقلدين كى ثمان ميں الفاظ وہابيد خيشہ استعال كرتے ہيں اور اس كى وجہ سے مسائل ميں وہ كروہ الل سنت والجماعت كے قالف ہو كئے 'چنانچ فير مقلدين بند اس طاكفہ شنيد كے ہي ہيں۔ وہابيہ نجد عرب اگر چہ ہوتت اظمار وعوى منيل ہوئے كا اقرار كرتے ہيں 'كين عمل ور آمد ان كا بركز بملہ مسائل ميں الم احمد بن منيل رحمت اللہ تعالى طيه كے زمب پر نہيں ہے 'بلكہ وہ بھی اپنے فهم كے مطابق جس حدیث كو مناف فقہ حنال خيال كرتے ہيں 'اس كى وجہ سے فقہ كو چھو ژدیتے ہیں۔ (شلب ٹاقب میں سے میں)

یا اشرف العدان ما لی من الوذ به سنواک عند حلول العدادث العمم
"اکاففل تلوقات مراکوئی نیم جم کی باله پکرال بکرتی کی روقت نزول دواوث" - (شاب ناقب م ۱۲)

ه و باید امرشفاعت می اس قدر تنگی کرتے بیل که بمنزله عدم کو پنچادیت بیل - (شاب ناقب م ۱۷)

۱۰ و باید سوائے علم انتکام الشرائع جمله علوم اسرار حقائی و فیرو سے ذات سرور کا تنات خاتم النبسین علید العلوة و السلام کو خالی

جانة بين - (شاب ثاقب مع ١٤)

۱۱۰ و بابیه نفس ذکر درادت حضور سرور کائنات علیه العلوی والسلام کو تبیجه بدعت کتے ہیں اور علی حذا الغیاس از کار اولیاء کرام رحمهم الله تعالی کو بھی برا سیجھتے ہیں۔وشاب ٹاقب من ۱۲

د إبيه نے علماء خرمن شريفين كے خلاف كيا تھا اور كرتے رہتے ہيں اور اى وجہ سے جبكہ وہ غلبہ كركے حرمين شريفين پر حاكم ہو گئے تھے ' ہزاروں كوية تيخ كركے شهيد كيا اور ہزاروں كو سخت ايذا كي پہنچا كيں ' بار بار ان سے مباحثے ہوئے۔ ان سب امور هي جمارے اكابران كے سخت مخالف ہيں۔ (شاب ٹاقب من ۱۶۰۸) معلموں كتب خانہ اعزازيہ ' ديوبند اضلع سمار نيور)

شیخ خلیل انبیشہوی نے ایک کماب لکھی ہے "انسدیقات لدخع التلبیسات" اس میں لکھا ہے کہ ہمارے زدیک محرین عبد انوهاب کاوئی تھم ہے جو صاحب الدر الخار نے خوارج کا لکھا ہے۔ اور جو علامہ شامی نے محرین عبدالوهاب کے متعلق لکھ، ہے۔ شیخ اشرف علی تمانوی شیخ شبیرا حمد عثانی کشیخ صبیب الرحمٰن اور دمیر اکابر دیو برند نے اس کی تعمد میں کی ہے۔

نواب مديق حس خال بحويال متوفى ١٠ ماده لكست بين

حرمین شریقین کے لوگ بیخ نجدی کے نام سے بھی ناراض ہوتے ہیں "کیو نکہ بیٹے نبجدی ان کے لیے شدید تکافیف اور مصائب کاسب بنا تھا۔ یس جو مخص بھی کھے معتبر اور مدینہ منورہ سے ہو کر آ با ہے 'وہ اپنے دل میں محمد بن عبد انو پاپ کے خلاف مخت غم و خصہ کے کر آ با ہے۔ (موائد انسوائد من عبون الدخبار والفوائد مس ۱۳۸۸)

حصرت على كي خلافت كاغير منصوص بونا

اس آءت میں فرمایا ہے کہ کفار آج تمہارے دین (کی ناکائی) ہے بابع ہی ہو گئے۔ پھراس کو موکد فرمایا'تم ان ہے نہ ڈروا جھ سے ڈرواس آبت ہے معلوم ہوا کہ حضرت علی برایش کی فلافت انتہ اور اس کے رسول کی طرف ہے منصوص اور داجب الاطاعت نہیں تھی' ورنہ جو فخص اس نص کو چھپانے کاارادہ کر آیا اس جس تغیراور تحریف کاارادہ کر آئ وہ اس دین کی ناکائی ہے مایوس ہو جا آئ جیسا کہ اس آبت کا تفاضاہے اور محماہ جس سے کوئی فخص بھی اس نص کو چھپانے پر قادر نہ ہو آ۔ اور جب اس نص کا کہیں کوئی ذکر نہیں آیا 'کسی حدیث اور کسی اثر جس اس کا بیان نہیں ہے تو معلوم ہوا کہ شیعہ اور رافضیوں کا یہ پروپیگنڈا بعض کا کہیں کوئی ذکر نہیں آیا 'کسی حدیث اور کسی اثر جس اس کا بیان نہیں ہے تو معلوم ہوا کہ شیعہ اور رافضیوں کا یہ پروپیگنڈا باطل ہے اس حضرت علی برایش کی امامت اور خلافت کے متعلق اللہ اور اس کے دسول کی طرف سے نص صریح تھی' اور سحاب باطل ہے اس کو چھیا لیا۔ کیونکہ آگر اس نص کا تعلق دین کی کاسیانی اور اس کے ظہر ہے ہو آئ جیسا کہ شیعہ کار تو ٹی ہے 'تو پھراس کے خیا نے دین کے خلاف اور کا خلاف اور کافیات کے دین کا خلاف اور کافی اور کا کافیات اور کان کسی کا تعلق دین کی کافیان اور کافیات اور کافیان کو جیسا کہ شیعہ کار تو ٹی ہے 'تو پھراس کے جسیا کہ شیعہ کار تو ٹی ہے 'تو پھراس کے خلاف اور کا خلاف اور کافیان کی دین کا خلاف اور کافیان کی دین کا خلاف اور کافیان کی اور کسی کی جسیا کہ دین کا خلاف اور کافیان کی تو ہیں۔

الله تعالیٰ کاار شاوہے: " ج جس نے تمہارے نے تمہاراوین کمل کر دیا اور تم پر اپنی نفت کو پورا کر دیا اور تمہارے لیے اسلام کو (بطور) دین پیند کر لیا الله اندوس)

تدریجا احکام کازول دین کے کامل ہونے کے منافی شیس

یہ آیت تجنہ الوداع کے مل دی اجری کو عرفہ کے دن نازل ہوئی ہے اور اس دن دین کال ہواہے۔ اس پریہ سواں ہو تا ہے کہ کیا اس سے پہلے دی مال تک دین ناقص رہا تھا؟ اس کا بواب یہ ہے کہ اسلام میں فرائض اور واجبات اور محرات اور محرات اور محمولات پر مشمل احکام کا نزول تدریجا ہوا ہے۔ اس طرح قرآن مجید کا نزول بھی قدریجا ہوا ہے اور اس آیت میں دین کے مطاب پر مشمل احکام کا نزول تدریجا ہوا ہوا ہے۔ اس طرح قرآن مجید کا نزول بھی قدریجا ہوا ہے اور اس آیات الله کالی ہوئے کا متعلق جھٹی آیات نازل ہوئی تھیں اور تمام آیات الله تعلق جھٹی آیات نازل کردی ہیں۔ مقائد کے باب میں تمام آیات نازل کردی تیس مل قیامت تک ویش آنے والے مسائل اور تعلق حال اور کی مسائل اور اس کی دیں تھا کہ دی تعلق حیل میں تمام آیات نازل کردی تمیں۔ اس طرح قیامت تک ویش آنے والے مسائل اور

حوادث کے متعلق تمام ادکام کے متعلق آیات نازل کردی تمکی اور ان کی تشریح زبان رسالت سے کردی گئے ہے۔ دین اسفام تو بیشہ ہے کال ہے "کین اللہ تعالی نے بندوں کی آسانی کے لیے اس کابیان قدریجا فرملیا" کیو تکہ جو لوگ کفراور برائی میں سرے ویر تک دُوسے ہوئے تھے "اگر این کو یک گفت این تمام آدکام پر عمل کرنے کا تھم دیا جاتما تو یہ این کی طبیعت پر سخت مشکل اور دشوار ہو تک اس لیے اللہ تعالی نے اپنے بندوں کی سمولت کی خاطر اس کابیان رفتہ رفتہ اور قدریجا فرملیا" اور آج یہ بیان اپنے تمام و کمال کو پہنچ کیا۔

اسلام کاکائل دین ہوتاادیان سابقہ کے کامل ہوئے کے منافی شیس

اس آب ہو و مراسوال ہے کہ اس آب جی اسلام کو کال دین فرایا ہے تو کیا دھرت موی معرت میں اور دیر انہاء سابقی کا دین کال فیص تھا۔ اس کے جاتا ہواں سابقہ اپنے دیانوں کے لحاظ ہے کال ہے۔ ان کے دانوں میں ترزیب و تیزن کے جو تقاضے تھے اور ان کی رعابت ہے جس طرح کے شرمی ادکام ہونے جائیں تھے اللہ تعالی نے ہر والی مان مان اللہ تعالی نے شرمی ادکام عادل فرمات کے بولنے اور ترزیب و قاضت کی ترقی ہے تعافی بر اللہ تعالی نے ہر بولنے میں ادکام عادل فرمات کے بعض ادکام منسوخ کردیے اور شخ ادکام کا ہے اسلہ سدعا مجہ جینی کی بعث تک جاری رہا کہ اس کی شریعت میں بھی بھی بعض ادکام منسوخ کے گئے۔ لیکن اس آب کے عائل ہونے کے بعض ادکام منسوخ کے گئے۔ لیکن اس آب کے عائل ہونے کے بعد کوئی تھی منسوخ نیس ہوگا اور اس کی دوجہ بھی ہو اب جس تدر ادکام ہیں اور عاقال میں اور عاقال سے بھی اور اتاقال سے بیا کہ اس وقت سے مسلمان ہو جا میں گئے۔ لیڈا کس سے برنے کی حت نزول میسی علیہ السلام تک ہے اور اس کی دوجہ بھی ہے سابقہ جس سے ہردین کال تھا ور اس کی دوجہ بھی ہے سابقہ جس سے ہردین کال تھا اور اس کی اس کا کمال اضائی تھا وہ وہ یہ کہ ایس سے جردین کال تھا اور اس کا کمال اضائی تھا وہ وہ یہ جس نے زول جس قور جس عفاقہ کے لیے تھا اس کے گان کال ہی تھی ہے۔ اند نزول سے لے کر قیامت تک کے لیے می اس کے گان ہے اور اس کا کمال حقیق ہے ' یہ اپنے زمانہ نزول سے لے کر قیامت تک کے لیے کہ اس کوئی سے اور جس عفاقہ کے لیے اور تم مفاق نے فرای سے کہ اور جس قور جس عفاقہ کے لیے اور تم دین کال جا در تم دین کال خوا کے در تم دین کے لیے اور تم دین کال جا در تم دین کی کمل حقیق ہے در اور کی کمل حقیق ہے فرای

یں بَسْیْرًا اور ہم نے آپ کو قیامت تک کے تمام لوگوں کے لیے (سب ، ۴۸) د مول بنایا در آنحالیکہ آپ خوشخبری دینے والے ہیں اور

ڈوائے والے ہیں۔ دہ برکت والا ہے جس نے اپنے (مقدس) بندہ پر کتاب

فیمل نازل فرمائی آ کہ وہ تمام جمانوں کے لیے ڈرانے والا ہو۔ جس مختص نے اسلام کے سوائسی اور دین کو طلب کیا' تووہ اس سے ہرگز قبول ضیں کیاجائے گا۔ نَبْرَكَ الَّذِي مَرَّلَ الْفُرْفَانَ عَلَى عَبُدِهِ لِيَكُنُونَ لِللْمُلْمِيْسَ لَدِيْرًا (العرفان!) "وَمَنُ يَّبُنَغُ عَيْسَ الْإِسْلَاعِ دِيْسًا فَلَنُ يُغْبَلَ مِنَهُ (آل عمران: ٨٥)

وَمَا آرْسُلُلُكُ إِلَّا كَآمَةً لِللَّهِ مَنْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

الم مسلم بن تجاج قشمدى متولى المهدروايت كرتي ين:

حضرت ابو ہر رہ ہو ہو ہیں کہ رسول اللہ سے اللہ اللہ علیہ انہاء پر چھ دیوہ سے نفیلت دی گئی ہے۔ جھے جو امع انظم (ایسا کلام جس میں الفاظ کم جوں اور معنی زیادہ ہوں) عطا کے گئے اور رعب سے میری مددکی گئی اور عسمتندی میرے میان کو ایسا کلام جس میں الفاظ کم جوں اور معنی زیادہ ہوں) عطاکے گئے اور رعب سے میری مددکی گئی اور میں میں الفاظ کم جو تام محلوق کی طرف اللے علال کردی گئیں اور میں اور جھے تمام محلوق کی طرف اللہ علی کہ میں ہوئے گیا اور معنوت میں ہے ہرنی کو یا جموس این توم کی طرف معوث رسول بناکر بھیا گیا اور جھے پر نبیوں کو ختم کردیا گیا اور معنوت جابر کی دوایت ہیں ہے ہرنی کو یا جموص این توم کی طرف معوث

وَّ مَا يُرُا

كياجا آنفا اور يحص بركائے اور كورے كى طرف مبعوث كيا كيا ہے۔

(ميح مسلم عن الرقم الحديث. ٥٢١-٥٢٠ سنن ترزى عن عن قم الحديث:١٥٥٩)

قرآن مجیدی آیات اور اس مدیث سے واضح ہوگیا کہ سیدنا مجد ہیں کو قیامت تک تمام لوگوں کیلئے رسول بیا آگیا ہے اور اسکا معنی میر ہے کہ آپکی شریعت قیامت تک کیلئے ہے اور اسکا افغہ تعالی نے قربایا کہ اسلام کے سوالور کوئی دین قبول نمیں کیا جائے گا۔ سوواضح ہوگیا کہ بلل اویان اپنے اپنے ذائوں کے اعتبار سے کال تھے اور اسلام قیامت تک کیلئے کال دین سہدای نے اللہ تعالی نے تساراوی کال کریا۔
سہدای نے اللہ تعالی نے قصوصیت کے ساتھ اسلام کے متعلق فربایا کہ آج میں نے تسادے لیے تساراوی کال کریا۔
یوم میلاوالنی بیجید کا عبد ہونا

امام ابوجعفر جمرین جرم طبری متوفی ماسامه میان کرتے ہیں۔ یہ آءے جمتہ الوداع کے سال ہوم عرف کو بروز جمعہ مازل ہوئی ا اس کے بعد فرائف سے متعلق کوئی آءے نازل ہوئی 'نہ طال امد حرام سے متعلق کوئی آءے نازل ہوئی اور اس آءے کے نازل ہوئے ہوئے کے بازل ہوئے اور اس آءے کے نازل ہوئے بعد نمی ہوئے ہوئے مرف آئیس روز زندہ رہے۔ ابن جرائے ہے اس طرح روایت کی می ہے۔

(جامع البيان " بر ٢ " ص ١ " المعلجور واد الفكو " بيروت "١٥١٥ ه.)

الم الم الوسيلي عمرين عيلى ترفدى متوفى على الدوايت كرتے إلى عمار بن ابى عمار بيان كرتے إلى كه حضرت ابن عباس رضى الله عنمانے ايك يمودى كے سامنے به آيت پڑھى "البوم اكسلت لكم دبنكم" الابدة تواس يمودى نے كمااكر جم پر به آيت نازل جو تى تو جم اس دن كو حميد بنا ليت- حضرت ابن عباس رضى الله عنمائے قربايا به آيت دو حميدوں كه دن نازل جوكى به مع الجمعہ اور يوم عرفه كو - إسنن ترقدى مع درقم الحديث: ٥٥٠ ما)

اس مدیث ہے معلوم ہواکہ جمد کادن مسلمانوں کی عیدہ اور عرف کادن بھی مسلمانوں کی عیدہ اور جن ہوگوں نے بید
کما ہے کہ مسلمانوں کی صرف دو عیدیں جی انہوں نے اس مدیث پر فور نہیں کیا۔ البت اپ کما جا سکما ہے کہ مشہور عیدیں
صرف عیدالنظراور عیدالا منی جی جن کے مخصوص انکام شرعہ جی۔ عیدالنظر جی جی افطار کیا جاتا ہے اس کے بعد صاحب
نماز عیدگاہ جی پڑھی جاتی ہے اور اس کے بعد خطہ پڑھا جاتا ہے اور عیدالا منی جی پہلے تمازاور قطبہ ہے اور اس کے بعد صاحب
تصاب پر قربانی کرنا واجب ہے۔ جعد کادن مسلمانوں کے اجتماع کادن ہے اور اس میں ظمر کے بدلہ جی نمازاور خطبہ قرض کیا گیا
ہے اور عرف کے دن فیر عباح کے لیے دوزہ رکھنے جی بری ضنیات ہے اور اس سے دو سال کے گناہ معاف ہو جاتے ہیں۔
علامہ رافہ اصلمانی مونی جون ہوں۔ کیلے جی

عبداس دن کو کتے ہیں جو ہار ہار لوٹ کر آئے اور شریعت میں عبد کادن ہوم الفراور ہوم النو (قربالی کادن) کے سائنہ مخصوص ہے 'اور جبکہ شریعت میں بید دن خوشی کے لیے بتایا گیا ہے۔ جیسا کہ نبی جہنے نے اپنے اس ارشاد میں متنبہ فرمایا ہے بیہ کھانے پینے اور افدوائی عمل کے دن ہیں اور حمید کالفظ ہراس دن کے لیے استعمال کیا جاتا ہے جس میں کوئی خوشی حاصل ہو اور اس پر قرآن مجید کی اس آیت میں دلیل ہے:

فَالَ عِبْسَى اللهُ مَرْيَمَ اللّهُمَ رَبُّنَا آئْرِلُ عَلَيْهُمْ رَبُّنَا آئْرِلُ عَلَيْهُمْ رَبُّنَا آئْرِلُ عَلَيْنَا مَآئِدَةً ثِمْلَ السَّمَّاءِ تَكُوُلُ لَنَا عِبْدُا لِإِزْلِيَا وَأَخِيرِنَا وَأَيَهُ يُسْكُنُ (العالده ١٣)

این مریم نے عرض کیا اے اللہ ا اعادے دب ا آ عان سے ہم پر کھانے کا خوان نازل فرباجو ۱۱۱ سے الکوں اور پہنوں کے لیے مید یو جائے اور تیری طرف سے نشانی ۔۔ (المغر دات میں ۲۵۳ معلوی الکتے المرتضویہ اور اس ۱۳۷۳ اللہ) یہ بھی کماجا سکتاہے کہ شری اور اصطلاحی عید فق صرف عید الفطراور عید الناصیٰ ہیں اور ہوم عرفہ اور ہوم جمعہ عرفاعید ہیں اور جس کی نامت اور خوشی عاصل ہو وہ بھی عرفاعید کا دن ہے اور تمام نعتوں کی اصل سید نامجہ سینجیز کی ذات کر ای ہے۔ سو جس دن کوئی نعمت اور خوشی عاصل ہوئی 'وہ تمام عیدوں ہے بڑھ کر عید ہے اور یہ بھی عرفاعید ہے 'شرعاعید شیس ہے 'اس لیے جس دن یہ تعظیم نعمت حاصل ہوئی 'وہ تمام عیدوں ہے بڑھ کر عید ہے اور یہ بھی عرفاعید ہے 'شرعاعید شیس ہے 'اس لیے مسلمان بیشہ سے اپنے نبی مرفیع کے دن بارہ ورقع الدول کو عید میلاد النبی مناتے ہیں۔

ایک سوال یہ کیا جا آہ کہ ہارہ رہے الاول ہی جیر کانوم وفادت ہے اور بعض اتوال کے مطابق آپ کانوم وفات ہی کی ح ہے ۔ تم اس دن نمی شخیر کی وفادت پر خوشی مناتے ہو۔ اس دن آپ کی دفات پر سوگ کوں نمیں مناتے؟ اس کا جواب یہ ہے کہ شریعت نے ہمیں فعت پر خوشی منانے اس کا اظہار اور بیان کرنے کا تو تھم دیا ہے اور کسی فعت کے بطے جانے پر سوگ منانے ہے منع کیا ہے۔ وہ مراجواب یہ ہے کہ ہم غم اور سوگ کوں کریں؟ نمی شخیر جس طرح پہلے ذندہ تھے 'اب بھی ذندہ ہیں۔ منانے ہے منع کیا ہے۔ وہ مراجواب یہ ہے کہ ہم غم اور سوگ کوں کریں؟ نمی ہی ہی ہی اور انتظامت بی ذائدہ تھے 'اب وار الجزاء اور جنت میں زندہ ہیں 'آپ پر امت کے اعمال پیش کیے جاتے ہیں 'نیک اعمال پر آپ اللہ تعال کی جمہ کرتے ہیں اور برے ایک کی جاتے ہیں 'نیک ملام کا جواب وہ ہے ۔ اس من شفاخت کرتے ہیں اور اللہ تعال کی تجذیب کے مطافد اور مشاہدہ میں مستنرق رہتے ہیں اور وہے ہیں اور اللہ تعال کی توب اور وہ جات میں ہم آن اور ہر کھ ترق دہتے ہیں۔ اس می غم کرنے کی کون می وجہ ہے؟ جبکہ آپ نے خود آپ کے مراتب اور وہ جات میں ہم آن اور ہر کھ ترق دہتے ہیں۔ اس می غم کرنے کی کون می وجہ ہے؟ جبکہ آپ نے خود اللہ میں دور جات میں ہم آن اور ہر کھ ترق دیں ہی ترق دیں اور الم فید اللہ میں دور جات میں ہم آن اور ہر کھ ترق دیا ہے ہی ترق اللہ میں دور جات میں ہم آن اور وہ جات ہوں اس میں می می ترق دیا ہم میں دور جات ہی ترق اللہ میں دور جات میں ہم آن اور ہر کھ دیا ہم میں می ترق دیا ہے میں ترق دور جات ہیں ہم آن اور ہر کھ دور ہوں ہو ہم کہ ترق اللہ میں دور جات ہی ترق اللہ میں دور جات ہیں ترق اللہ میں دور جات ہیں ترق دور جات ہیں ہم ان اور ہر کھ دور ہوں ہو کہ دور ہوں کو دور جات ہیں ترق دور جات ہیں ہوں دور جات ہوں دور جات ہوں دور جات ہوں ہوں دور جات ہیں ترق دور جات ہوں ہوں دور جات ہیں ہو ترق ہوتی دور جات ہوں ترق ہوتی دور جات ہیں ترق دور جات ہوں کی میں دور جات ہوں کو دور جات ہوں کی میں دور جات ہوں کی میں دور جات ہوں کو دور جات ہو ترق ہوتر کو دور جات ہوں کو دور جاتر ہوں کرنے کی دور جاتر ہوں کو دور جاتر ہوں کو دور جاتر ہوں کو دور جاتر ہوں کو دور جاتر ہوں

سید ابوالاعلی مودودی متونی ۱۹ میں فرا یہ انٹرویو کے دوران ایک سوال کے جواب میں کما مب سے پہلے تو آپ کو یہ
یوچھنا چاہیے تھاکہ اسلام میں حیر میلاد النبی کاتصور بھی ہے یا نسیں۔ اِس تبوار کو 'جس کو ھادی اسلام میں جی سے منسوب کیا جا آ
ہے حقیقت میں اسلامی تبوار می نہیں۔ اس کا کوئی جوت اسلام میں نہیں مانا حق کہ صحابہ کرام نے بھی اس دن کو نہیں منایا۔
افسوس ااس تبوار کو دیوالی اور دسروکی شکل دے دی گئ ہے 'لاکھوں روپے بریاد کیا جا آ ہے۔

(المنت روز الذيل الاور " اجرلا في ١٩٦٧ء)

عام طور پر شیخ محر بن عبدالوهاب کے متبعین اور علاء ویو بندیہ آثر دیے جیں کہ بارہ رہے الاول کو عید میلاد النبی منانا اهل سنت و جماعت کا طریقہ ہے اور ان کی ایجاد و اخراع ہے۔ جیسا کہ فد کور الصدر اقتیاس سے طاہر بو رہاہے الیکن یہ صحیح نہیں ہے ا بلکہ بیشہ سے الل اسلام ہاو رہے الاول میں رسول الله سرتیج کی ولادت پر خوشی کا اظمار کرتے رہے جیں 'اور ان ایام کو عمید مناتے دہے جیں۔ علامہ احمد محمد فی معونی معمد کستے ہیں:

ہیشہ سے اہل اسلام رسول افقہ میں ہیں والات کے مدینہ میں محفلیں منعقد کرتے رہے ہیں اور وقو تمیں کرتے دہے ہیں' اور اس ممینہ کی راتوں میں مختلف صم کے صد قات کرتے ہیں' فوشی کا اظہار کرتے ہیں' اور نیک اٹھال زیادہ کرتے ہیں اور رسول اللہ میں ہیں کی والات کا واقعہ بیان کرتے ہیں۔ اس کی برکت سے ان پر ضنل عام ظاہر ہو آہے۔ میلاد شریف منعقد کرنے سے میہ تجربہ کیا گیا ہے مکہ انسان کو اپنا نیک مطاوب حاصل ہو جا آ ہے۔ سواف تعالی اس مخص پر اپنی ر تحتیں نازل فرائے جس نے مونود مبارک کے ممینہ کی راتوں کو عمدیں بنادیا۔(الواہب اللدنیہ 'جا'می ۵۸ مطبوعہ دار الکتب اسلمیہ ابیردت ۱۹۹۱ه) علامہ محدثاتی نے علامہ محدین محد ابن الجزری متونی ۱۹۳۳ کی اس عبارت کو این کے حوالے ہے نقل کیا ہے۔علامہ محد بن عبدالباتی ذر قانی ماکنی متونی ۱۹۲۹ کے اس کی شرح میں لکھتے ہیں:

علامہ جلاں الدین سید کی نے تکھا ہے کہ قرون گاانہ میں اس محفل کے انعقاد کا اہتمام نہیں ہوتا تھا، لیکن ہیہ ہوعت دسنہ ہے۔ اس عمل میں بعض ونیا دار لوگوں نے جو متحرات شاش کر لیے ہیں ' علامہ ابن الحاج ماتل نے ہر خل میں ان کا رد کیا ہے اور یہ تصریح کی ہے کہ اس میں بیٹ نے کہ خل میں ان کا رد کیا ہے اور سے تعریح کی ہے کہ اس میں بیٹ نیک کے کام زیادہ کرنے جا ایس اور صد قات ' خیرات اور دیگر عبادات کو بہ کشرت کرنا چاہیے 'اور کی مولود منانے کا مستحسن محل ہے۔ علامہ آبن کشرنے اپنی آرتے میں لکھا ہے کہ اربل کے باد شاہ طک مظفر ابو معید متونی ہ ۱۲ ہے کی مولود منانے کا مستحسن محل ہے۔ علامہ آبن کشرنے اپنی آرتے میں لکھا ہے کہ اربل کے باد شاہ طف مظفر ابو معید متونی ہ ۱۲ ہے کہ سے پہلے میلاد النبی کی محفل منعقد کی۔ یہ بہت بماور عالم 'عاقل' نیک اور صالح باد شاہ تھا' یہ تمن سو دینار خرج کر کے بہت منظم موجود کا اجتمام کر تا تھا۔ (شرح المواج بسالا دیے ' جامی ہے اسلام ور دار المعرفہ ' بیروت' ۱۲۰۰۔ کا

شرے میجے مسلم جلد جائے میں ہم نے بہت تفعیل سے میلاد النبی منانے پر بحث کی ہے اور علامہ سیوطی ملا علی قاری اور و گیر علاء نے کہ و سنت سے جو میلاد النبی کی اصل نکال ہے اور معترضین کے جوابات دیئے میں اور اس پر دلا کل فراہم کیے ہیں ا ان کو تفعیل سے لکھا ہے۔ بعض شہوں میں میلاد النبی کے جلوس میں بعض لوگ باہے گئے اور فیر شرقی کام کرتے ہیں اور ہمادے علاء بیشہ اس سے منع کرتے ہیں۔ آہم اکثر شہوں میں بالکل پاکیزگی کے ساتھ جلوس ٹکالا جا آ ہے۔ ہیں دو مرتبہ برطانہ کی اور میں نے وہاں اس ممینہ میں متعدد جلوسوں ہیں شرکت کی۔ ان جلوسوں میں نعت خواتی اور ذکر اذکار کے سوا اور پکھے ضیم ہو آ کوئی فیر شرقی کام نمیں ہو آ اور تمام شرکاء جلوس باجماعت نماز پڑھتے ہیں اور بعد ازاں جلسہ ہو آ ہے 'جس میں نبی جہیر

پہلے دیوبند اور جماعت اسلامی کے علماء حید میلاد النبی منانے اور جلوس نکالنے پر انکار کرتے ہے 'لیکن اب تقریباً پندرہ جس سال کے عرصہ ہے دیوبند اور جماعت اسلامی کے مقدر علماء میلاد النبی پینچر کا جلوس نکالنے اور اس میں شرکت کرنے لکے جس اور سپاہ محلبہ کے اکابر علماء معنرت ابو بکر' معنرت عمراور معنرت علیمان کے ایام بھی متانے لگے جیں۔ ان دنوں میں جلوس نکالئے جیں اور حکومت ہے ان ایام میں سرکاری تعظیل کامطابہ کرتے ہیں۔

مفتی محد شفیع دیوبندی متوفی ۱۹ سام عید میلاد النبی کار در کرتے موے لکھتے ہیں:

کمیں قوم کے بڑے آدی کی پیدائش یاموت کا یا تخت نشنی کادن منایا جاتا ہے 'اور کمیں کمی فاص ملک یا شرکی فتح اور کسی مقیم تاریخی واقعہ کا جس کا حاصل اشخاص خاص کی عزت افزائی کے سوانچی ضیں۔ اسلام اشخاص برستی کا قائل نمیں ہے' اس نے ان تمام رسوم جالجیت اور محضی یادگاروں کو چمو ڈکراصول اور مقاصد کی یادگاریں قائم کرنے کا اصول بنادیا۔

(معارف القرآن مج ۱۳۹۸ معمومه اوار والمعادف محراجي معاهد)

لیکن اب ہم دیکھتے ہیں کہ علاء دیوبند کی طرف ہے نہ صرف ایام صحابہ منائے جلتے ہیں ' بلکہ وہ اپنے اکابرین مثلاً شخ اشرف علی تعانوی اور شخ شہر احمد عثانی کے ایام بھی مناتے ہیں اور دیوبند کاصد سالہ جش بھی منایا گیا۔ ہم پہلے میلاد النبی کے جلسوں اور جلوسوں میں مقتدر علاء دیوبند کی شرکت کو یاحوالہ بیان کریں ہے۔ پھرایام سحابہ اور ایام اکابرین دیوبند کو ان حضرات کا منانا بیان کریں گے۔ جماعت اسمالی کا ترجمان دو ذیاحہ جسارت لکھتا ہے:

پاکستان توی انتحاد کے سربراہ مولانا مفتی محمود نے کہا ہے کہ طک میں اسلامی قوانین کے بعد قومی اتحاد نے وہ مثبت مقصد

حاصل کرایا ہے جس کے لیے اس نے ان تھک اور مسلسل تحریک چلائی تھی۔ وہ آج بہاں مجد نیا گنبد پر نماز ظهر کے بعد توی انتخاد کے ذیر اہتمام عید میلاد النبی کے عظیم الشان جلوس کے شرکاء ہے خطاب کر رہے تھے۔ اس موقع پر توبی انتخاد کے نائب صدر نوابراوہ نصرافلہ خال امیر جماعت اسلامی پاکستان میاں محمد طفیل وظائی و ذیر قدرتی وسائل چود هری رحمت النبی اور مسلم لیگ چشد گروپ کے میکرٹری جزل ملک محمد قاسم نے بھی خطاب کیا۔ تقریروں کے بعد مفتی محمود اور ویگر رہنماؤں نے مسجد نیلا گنبد جس می نماز عصراواک جس کے بعد ان رہنماؤں کی قیادت جس سے مظیم الشان جلوس مختلف راستوں سے مسجد شداء بہنج کر ختم جوا'جمال شرکاء جلوس نے موالانا مفتی محمود کی قیادت جس نماز مغرب اواکی۔ (دوزنامہ جمادت 'افروری ۱۹۵۹ء)

جماعت اسلامی اور دیویندی ارکان پر مشمل قوی اتفادی طومت کے دور می عید میلاد النبی کے موقع پر روز نامہ جنگ کی ایک خبر کی مرخیاں ملاحظہ فرمائے۔

جشن مید میلادالنبی آج جوش و خروش سے مثلا جائے گا تقریبات کا آغاز ۱۱ تو پوں کی ملای ہے ہوگا محور نرکی صدارت میں جلسہ ہوگا شر بحر میں جلوس نکالے جائیں ہے انشز پارک آرام باغ اور دیگر علاقوں میں جلے نہوں گے۔

(روزنامه بخک مراحی ۴ قروری ۱۹۷۹ء)

روزنامه حرمت كي أيك فبركي مرخيال لماحظه فرماكي.

اسلای قوانین کے نفلا کے بعد قوی اتحاد کی تحریک کامثبت متعمد عاصل ہوگا۔ مفتی محمود نے کما' معاشرے کو مکمل طور پر اسلامی بنانے میں مجھ دفت نکے گا' ممید میلاد کے موقع پر مفتی محمود کی قیادت ببیس منظیم الشان جلوس۔

(روزنامه حريت '۱۱ فروري ۱۹۷۹)

روزنامد مشرق كى ايك فرطاحة مود

لاہور ۹ فروری (پ ب) توی اتحاد کے صدر موانا مفتی محود اور ناتب صدر نوابزارہ نصراللہ خال کل یمال عید میلاد النبی علیہ کے جلوس کی قیادت کریں مے اید اجلاس نیلا محتبد سے نکل کر سجد شداء پر ختم ہوگا۔

(روزنامه مشرق اکراچی ۱۰ فردری ۹ ۱۹۹۵)

جمعیت علاء اسلام کے مولانا محد اجمل خال نے مطالبہ کیا ہے کہ خلقاء راشدین کے ایام سرکاری طور پر منائے جا کمیں۔ (روزنامہ جنگ کلا بھور ۲۰۹۹ون ۱۹۹۴ء)

سیاہ محابہ کے سربراہ ضیاء الرحمٰن فاروتی نے اعلان کیاہے کہ مجرم کو حضرت محرفاروق اعظم بریش کا ہوم شہادت منایا جائے گا'اور جلوس بھی نکائے جائیں گے۔(نوائے وقت لاہور '۳۴جون ۱۹۹۴ء)

سیاہ سملیہ کے مرکزی صدر مینے ماکم علی نے کیم محرم الحرام کو ہوم فاروق اعظم کی سرکاری تعطیل پر کماہے ہی آج کاون عید کادن ہے۔(نوائے وقت محماجون ۱۹۹۴ء)

باہ صحابہ کے زیر اہتمام گزشتہ روز ۲۴ فروری کو پورے ملک جی مولانا جن نواز بھٹکوی شہید کابیم شادت انتمائی عقیدت و احترام سے متایا گیلہ بیاہ صحابہ جھٹک کے زیر اجتمام احرار پارک مخلہ جن نواز شہید جی ایک آریخی کانفرنس منعقد ہوئی۔ کانفرنس سے فطاب کرتے ہوئے سیاہ صحابہ کے قائم مقام سمریرست اعلی مولانا محد اعظم طارق ایم-این-اے لے کہا کہ ۲۲ فروری کانفرنس سے فطاب کرتے ہوئے سیاہ صحابہ کے قائم مقام سمریرست اعلی مولانا مقان افرارک کی نبعت کی دج سے میں دن حضرت علی کی نبعت کی دج سے میں دن حضرت علی مرتفعی شیر خداکی شادت کادن ہے۔ افرائ وقت الدور ۲۳ فروری ۱۹۹۵م

سپاہ محابہ کے بانی موادنا حق نواز بھنگوی کی دو سری بری کے موقع پر ۱۲ فروری کو پاکستان سمیت دیجر ممالک جی موانا ا بھنگوی کی یاد جی سپاہ محلبہ جانے "سیمیتار اور دیگر تقریبات منعقد کرے گی۔ سپاہ محابہ کے تمام مراکز و وفاتر جی ایصال ثواب کے لیے صبح نو ببح قرآن خوانی ہوگی۔ مرکزی تقریب جمنگ جی مولانا بھنگوی کی مسجد جی قرآن خوانی ہے شروع ہوگی اور بعد جی عظیم الثان جلسہ ہوگا جس جی قائدین خطاب کریں مجے۔ (نوائے وقت الا اور ۱۲ فروری ۱۹۴۴ء)

یوم فاروق اعظم جرجی پر تعطیل نہ کرنے کے خلاف ساہ محابہ کامظاہرہ

طفاع داشدین کے بوم سرکاری سطح برند منانا ناقائل فعم ب محد احد منی کامظاہرین سے خطاب

کراچی (پ ر) سیاہ صحابہ کے زیر ایتمام ہو م شاہت فاروق اعظم جوانی عقیدت و احرام سے منایا کیا اس ملیلے میں جامعہ صدیق آکبر ناکس جو رقی میں اجہام سے خطاب کرتے ہوئے ڈویٹ کل رہنماعلامہ جرادیس نے معزت عمر فاروق کے کارناموں پر روشنی ڈالی۔ بعد ازاں ہو م شاہت معزت عمر فاروق پر عام تعظیل نہ کرنے کے خلاف سیاہ صحابہ کے تحت احتجاجی مظاہرہ کیا گیا اسلامی سے کارڈ اور بینر اٹھائے ہوئے تھے 'جن پر ہوم ظفائے راشدین کو سرکاری سطح پر منانے 'اس روز عائم تعظیل کرنے 'اصحاب رسول بین ہے کارڈ اور بینر اٹھائے ہوئے تھے 'جن پر ہوم ظفائے راشدین کو سرکاری سطح پر منانے 'اس روز عائم تعظیل کرنے 'اصحاب رسول بین ہے طاف انٹری کی شبطی اور امیر رہنماؤں اور کارکنوں کی رہائی پر مشتل مطاقبات درج تھے۔ مظاہرین سے خطاب کرتے ہوئے صوبائی سیکرٹری جزل موادنا میں امیر بینی نے کہا کہ خلک میں مکی اور علاقائی سطح کے دہنماؤں کے ہوم منائے جان اس موقع پر ایک قرار داد کے ذرسایع جانے ہیں 'کین اسلامی حلک میں ظفائے راشدین کے ہوئے والانا عظم طارق 'مانظ احمد بخش ایڈوہ کیٹ 'موادنا غضور ندیم اور دیگر کی دہائی کامطابہ کیا گیا۔ دریں اثناء سیاہ صحابہ اسٹوڈ نئس کرا پی ڈوری اور ایم کرائی عامطابہ کیا گیا۔ دریں اثناء سیاہ صحابہ اسٹوڈ نئس کرا پی ڈوری اور ایم اور ایم کی مانی 'شخیق الرحمٰن 'ابو محاد 'جی اسے قادری اور ایم اسے مطابہ اسٹوڈ نئس کرا پی ڈوری اور ایم اور کی کاری ہوں گاہرہ میں شرکت پر طلبہ کاشکریہ اوا کیا۔

(روزنامدیک هراچی ۱۰ سی ۱۹۹۷)

عشرة حكيم الامت منايا جائے گا'مفتی تعيم

اور اصلامی خدمات ہمارے لیے مشعل راد ہیں " سے کوئی بھی عاشق رسول اور محب پاکستانی فراموش نمی تعانوی کی تعلیمی " سمنی اور اصلامی خدمات ہمارے لیے مشعل راد ہیں " سے کوئی بھی عاشق رسول اور محب پاکستانی فراموش نمیں کر سکتا۔ اجلاس سے خطاب کرتے ہوئے انہوں نے کہا کہ ہمارا ہزرگوں کے ساتھ لگاؤ اور تعلق اظہر من الشمس ہے۔ اجلاس میں سی مجلس عمل پاکستان کے زیر اجتمام مشرؤ محیم الامت سائے کا اعلان کرتے ہوئے مفتی محر ہیم نے کھا کہ کراچی کے تمام اصلاع میں مولانا اشرف علی تعانوی کی یاوی محلف پروگرام منعقد کے جائیں محروز نامہ بھی اور اس ایس اور انہ ہوئے موال کے اور نامہ بھی اور اور المان کرتے ہوئے مفتی محروبی کی اور میں محلف پروگرام منعقد کے جائیں محرور وزیاد بھی کراچی اور اور المان

الله تعلق كالرشادي: بس جو مخص بحوك كى شدت ، مجبور جوكر (كوكى حرام چيز كھائے) ور تنحاليك وه اس كى طرف مائل جوت والاند بواق بي شك الله بخشے والا بهت صربان ب الله عدد ٢)

ضرورت کی بنایر جرام چیزوں کے استعمال کی اجازت

اس آبت میں اللہ تعالی نے یہ تصریح قربائی ہے کہ اللہ تعالی نے جن جن وی کا کھانا سلمانوں پر عام حالات میں جام کردیا ہے اس سے ضرورت کے احوالی مشتیٰ ہیں۔ مثلاً بحوک کی شدت ہے کی شخص کی جان نگل دی ہو اور اس کے پاس کوئی علال چیز کھانے کے لیے جام چیز کھا سکتا ہے۔ بشرطیکہ اسے اس جام چیز کھانے کا شوق اور میلان نہ ہو اور وہ جبعا اس کی طرف واغب نہ ہو اور جس چیز کو کسی ضرورت کی بیاء پر لیا جائے اس کی جان کی جائے اور لذت لیا جاتا ہے۔ اس کی جان کی جائے اور لذت لیا جاتا ہے۔ اس کی جان کی جائے اور لذت لیا جاتا ہے۔ اس کی جان کی جائے اور لذت اندون کی حقوار میں کھانے ہے۔ اس کی جان کی جائے اور لذت اندون کی حقوار میں کھانے ہے۔ اس کی جان کی جائے اور لذت اندون کی حقوار میں کھانے ہے۔ اس کی جان کی جائے اور لذت اندون کے لیے اس حدے تجاؤز نہ کرے ان کی خوار کا کھانا ہم چیز کہ موان کروے گا۔ ای اصول پر اعار نے نتماء اور میر شین نے لاور وہ موروث کی دوروہ موروث کی دوروہ کی اور اس کے علم اور اس کی مان بی جائے کہ جان بچانے کے اس کے علم اور اس کی دسترس میں اب کے لیے می اندان کو خون دیا جا سکتا ہے "اور کی دوراؤں میں انکیل ہوتی ہے ان کو بھی علاج کے استعمال کیا جا سکتا ہے۔ جب کہ تھیل انکیل حرام اور نجس نسی ہے۔ حت جب کہ تھیل انکیل حرام اور نجس نسی ہے۔ حت جب کہ تھیل انکیل حرام اور نجس نسی ہے۔ خصوصاً جب دوراؤں میں انکیل ہوتا ہو۔ اس کی عمل اور بادوالہ جب انتقال کیا جاساتا ہے۔ جب کہ تھیل انکیل حرام اور نہ موروہ کے مسلم جلہ خانی میں جب کہ تھیل انکیل حرام اور نہ کی مسلم جلہ خانی میں جب کہ تھیل انکیل حرام اور نہ کہ کہ جم کے اس دور شرح صحیح مسلم جلہ خانی میں جب کہ تھیل انکیل حرام اور نہ کی مسلم جلہ خانی میں جب کہ تھیل انکیل حرام اور خور کو جسلم جلہ خانی میں جب کہ تھیل انکیل حرام اور خور کو جسلم جلہ خانی میں جب کہ تھیل انکیل حرام اور خور کہ جسلم جلہ خانی میں جب کہ تھیل انکیل حرام اور خور کہ جسلم جلہ خانی میں جسم کے اس کر معمل دور کو جسلم اور بادوالہ جب خور کے اس کے اس کی مسلم کی جسم کے اس کر معمل دورائی میں جائے کے استعمال کی جسم کے اس کر معمل دورائی میں جسم کے اس کر معمل دورائی میں کے اس کر معمل دورائی میں کے اس کر معمل کی کی ان کورائی کے اس کر کورائی کی کے اس کر میں کے اس کر معمل کی کی میں کی کے اس کی کورائی کی کورائی کے اس کی کی کی کی کی کورائی کی کی کر کی

الله تعالی کاارشاوے: (اے رسول کرم!) آپ ہے ہوچتے ہیں ان کے لیے کون می چیزیں طاں کی گئی ہیں؟ آپ کیئے کے تمہارے لیے گئی کا رشادے کے گئی ہیں؟ آپ کیئے کہ تمہارے لیے بیل ور آنحانیکہ تم انسیں شکار کا طریقہ سکھانے والے ہو تم انسیں اس کی گئی ہیں اور جو تم نے شکاری جانور) والے ہو تم انسیں اس طرح سکھاتے ہو جس طرح اللہ نے تمہیس سکھایا ہے۔ سو اس (شکار) ہے کھاؤ 'جس کو وہ (شکاری جانور) مائیوں کہ انسیال طرح سکھاتے ہو تم اس الشکاری جانور) تمہارے کی اور اللہ اللہ بی کھاتے ہے۔ اور اللہ کے درموا بیشائے بعد سماب لیلنے والدہ والمائیوں بی تمہارے کی تھا اور اللہ کے درموا بیشائے بعد سماب لیلنے والدہ والمائیوں بی ترول ور شمان شرول

اس آیت کا معنی ہے ہے کہ اے رسول معظم آپ ہے آپ کے اسحاب میہ سوال کرتے ہیں کہ ان کے کھانے کے لیے کون سے جانور حال ہیں تو اللہ تعلق نے کھانے کے جن جانوروں کو اللہ نے تمہارے لیے حال کردیا ہے ان کو ذیج کرنے کے بعد تم کھانے ہو اور تمہارے سد حالے ہوئے شکاری جانوروں نے جن جانوروں کو زخمی کرکے شکار کریا ہے ان کو بھی تم کھا سکتے ہو۔

اس آیت میں فرماً ہے تمہارے کے طبیات کو حلال کردیا ہے طبیات کا معنی ہے وہ چزیں جن سے طبائع سلیمہ کمن ند
کھاتی ہوں او شکر اور متوحش نہ ہوں۔ یہ بلخی کا قول ہے اور ایک تول یہ ہے کہ طبیات وہ چزی ہیں جن کی تحریم جی نفس وار و
نہ ہو' نہ ان کی حرمت پر اجماع ہواور نہ قیاس سے ان کی حرمت خابت ہو۔ پہلے قول کی بناء پر اس سے مراو لذیذ اشیاء ہیں' اور
دو مرے قوں کے مطابق اس سے مراو حلال اشیاء ہیں۔ یہ بھی کھاکیا ہے کہ اس سے مراو حلال اور دفیذ چزیں ہیں۔
اس تیت کے شان نزول جس اہام ابو جعفر محرین جریر طبری متوفی ۱۳۱۰ھ نے یہ روایت ذکر کی ہے:

حضرت ابورافع برہین بیان کرتے ہیں کہ حضرت جرئیل علیہ السلام نے نبی چیج کے پاس آنے کی اجازت طلب کی آپ نے ان کو اجازت دے دی۔ انہوں نے کما' یارسول اللہ آ آپ نے ہمیں اجازت دے دی ہے؟ آپ نے قربایا ہاں انہوں نے کما' لٹین ہم اس گھر ہیں واضل نہیں ہوتے جس میں کتا ہو۔ ابور افع کہتے ہیں کہ پھر آپ نے ججھے تھم دیا کہ میں مدید کے ہر کتے کو قتل

ببيان القر ان

کردوں آسویں نے کوں کو قتل کردیا۔ پھریں آیک مورت کے پاس پہنچاجس کے پاس کتا بھونک رہاتھا' ہیں نے اس پر رہم کھاکر اس کو چھو ڈریا' پھر ہیں نے رسوں اللہ جہنچ ہے پاس جاکر آپ کو اس کی خبردی۔ آپ نے جھے اس کو بھی قتل کرنے کا تھم دیا' پھر میں نے اس کو بھی قتل کردیا' پھر مسلمانوں نے آگر آپ سے پوچھا' یار سول اللہ آآپ نے بھیں ان کوں کو قتل کرنے کا تھم دیا ہے۔ ان کی کوئی چیز ہماد ہے لیے حلال ہے؟ تب یہ آیت نازل ہوئی آپ سے پوچھتے ہیں کہ ان کے لیے کون می چیزیں حلائل ک گئی ہیں؟ آپ کیئے کہ تمماد سے لیے پاک چیزیں حلال کی گئی ہیں اور جو تم نے شکاری جانور سد حمالیے ہیں' در آنحالیک تم انہیں شکار کے طریقہ سکھانے والے ہو۔ اللہ۔

(جامع البیان 'ج۱'م ۱۱۳ مطبوند دار الفکو 'بیروت ۱۳٬۵۱ ه 'سنن کیری فلیصتی 'ج۱'م ۲۳۵ المستد رک 'ج۲'م ۱۳۱۱) شکار کی اقتسام او ر ان کے شرعی احکام شکار کی اقتسام او ر ان کے شرعی احکام

علامه نووي شافعي متوفى الماه وللصح بين

شکار کرنامیار ہے 'اس پر تمام مسلمانوں کا جماع ہے۔ کتب 'سنت اور اجماع ہے اس پر بھڑت ولا کل ہیں۔ قاضی عمیاض ماکنی نے کہا ہے کہ جو فحض کب معاش کے لیے شکار کرے 'یا ضرورت کی بناء پر شکار کرے' یا شکار یا اس کی قیت ہے نفع ماصل کرنے کے لیے شکار کرے تو ان تمام صور توس میں شکاد کرنا جائز ہے۔ البت اجو فخص بطور امو و لعب کے شکار کھیلے 'لیکن اس کا تصد اس شکار کو ذرج کرنا اور اس سے نفع عاصل کرنا ہو' اس کے جواز میں اختلاف ہے۔ امام مالک نے اس کو تحروہ قرار دیا ہے 'اور ایسٹ اور این عبد الحکم نے اس کو جائز کما ہے۔ قاضی عمیاض نے کما ہے کہ آگر کوئی محض ذرج کی نمیت کے بغیر شکار کھیلے تو ہے دام ہے 'کیونکہ میر ذمین میں فساد کرنا ہے 'اور ایک جاند ار کو بے مقصد ضائع کرنا ہے۔

(شرح مسلم ع ٢ مل ١٥٥ مطبور كراجي)

علامه وشتاني الي مالكي متوني ١٩٨٨ ه لكمة بين: .

علامہ لئی نے شکار کے تھم کی پانچ تشمیں بیان کی ہیں۔ (۱) وزدگی برقرار رکھنے کے لیے ایسیٰ کھانے پینے کے لیے شکار کرنا مبلح ہے (۲) افل و عمال کی تنگی کے وقت یا سوائل سے بہنے کے لیے شکار کرنامستحب ہے (۳) اپنے آپ کو بھوک کی ہلاکت سے بہانے کے لیے شکار کرناواجب ہے (۴) ابو والعب کے لیے شکار کرنا کروہ ہے اجبکہ شکار کے بعد جانور کو ذریح کرے کو سیا جائے۔ (۵) ذریح کرنے اور کھانے کی نیت کے بغیرشکار کرنا ترام ہے۔

علامہ ابی اکلی فرائے ہیں' بلا ضرورت محض امود احب کے نیکار کرنے ہیں بہت مفاسد ہیں۔اس ہی محو ڑے کو کئے کے جی بھاکر تھکانا ہے 'اور یہ بھی ہوسکتا ہے کہ محو ڑااس کو جیجے بھاکر تھکانا ہے 'اور یہ بھی ہوسکتا ہے کہ محو ڑااس کو کھیے بھائی یا کتو کیس ہے جی ہوسکتا ہے کہ محو ڑااس کو کمی کھائی یا کتو کیس میں گراوے۔(اکمال اکمال العلم العلم 'جے ''صلاح دوار الکتب العلمیہ 'جے وت شکار کی شمراکط کا بیان

حمس الائمه علامه محدين احمد سرخي حنى متونى ١٨٣ ميريد لكيت بين:

او جس جانور کے ساتھ شکار کھیلاجائے وہ سدھلیا ہوا ہو۔

۲- جس جانور کے ماتھ شکار کیا جائے وہ زخمی کرنے والا ہو کیونکہ اللہ تعالی کا ارشاد ہے "و ما علمت مس المحدوارے مکسسس تعلموں ہن مما علمکم الله" اور جن شکادی جانوروں (زخمی کرنے والے) کو تم نے مدھالیا ہے "جن کو فدا کے دیجے ہوئے علم کے مطابق تم شکار کی تعلیم دیتے ہو 'جوارح (زخمی کرنے والے) کے متعلق دو توں

ہیں۔(۱) وہ جانور اپنے دانتوں اور بیوں نے حقیقاً زخم ڈالے (۱) وہ شکار کو پکڑ کرانانے والے جانور ہوں کیونکہ جرح کامعنی کسب بھی ہے۔

۳- شکاری جانور کو بھیاجائے کو تک نی شخیر نے صفرت مدی بن جاتم برجی ہے فرایا جب تم نے اپ سرھائے ہوئے کے بھیجااور اس پر بھم اللہ پڑھ اس کو کھنالواور آگر تسارے کئے کے ماتھ کوئی اور کنا شریک ہوگیا تو ہراس (شکار) کو مت کھاڑاور جب دو کتوں میں سے آیک کنا بھیجا ہوا نہ ہو تو کھنا حرام ہو جاتا ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ کئے کو بھیجنا شرط ہے۔ نیز زکاق حلت کا سب اس وقت ہوتی ہے جب اس کا حصول کمی آدی سے ہوا ہوا اس لیے شکار کے آلے کو آدی کا قائم متام بیائے کے لیے سے ضروری ہے کہ اس میں آدی کا قائم متام بیائے سے ضروری ہے کہ اس میں آدمی کا تھل ہواور سے صرف شکاری جانور کو بھیجے سے ہو سکتا ہے اور کئے کے لیے سرحائے ہونے کی شرط بھی اس میں بھیجے کے تحقل کے لیے لگائی گئی ہے۔

الله بره كرشاري مانوركو يمي

۵- اس کے بہتے ہوئے جانور کے ساتھ دو سرا جانور شریک نہ ہو۔

. ان جس جانور كاشكار كياجائي وه في نفسه طال مو-

شكار كرنے والے جانوروں كابيان

علامد ابوالحن على بن اني بجرالرخيناني الحنفي المتوفي مهدهد لكيمة بين:

احدامیا انجری اسم ۱۹۰۹ معلومه شرکت طبیه المان) شکاری کتے کے معلم (سد حائے ہوئے) ہوئے کامعیار اور شرائط شکاری کتے کے معلم (سد حائے ہوئے کامعیار اور شرائط ذکری ہیں: منٹس الائمہ سر فعی نے کلب معلم (سد حائے ہوئے کتے) کی حسب ذیل شرائط ذکر کی ہیں: ۱- اینے مالک کے بیچنے عملہ کرتے کے لیے نہ دو ڈے۔ ۲۰ مارے نہ سکھائے بلکہ شکاری دو سرے کتے کو شکار کھانے پر مارے ' آگ اس سے وہ کتا سکھ لے کہ شکار کو نہیں کھانا

جس شكار ياذ بيجه پر بسم الله نه پڑھی تئی ہواس کے تھم میں نقتهاء احتاف كا نظريه

ادرائمہ ثلاثہ کے دلائل کے جوابات

علامد الويكر صاص الحنفي متولى ١٥ مهد المحت بين

حارے اصحاب (فقهاء احتاف) انام مالک اور حسن بن صافح نے یہ کماہے کہ اگر مسلمان (شکاریا ذیجہ یر) عمر اسم الله ترک كردے تواس كو نسي كھلا جلے كاور أكر نسيانا بم اللہ كو ترك كرديا الذيكراس كو كھاليا جائے كا۔ الم شافعى نے يہ كما ہے كہ دونوں صورتوں میں ذیجہ کو کمالیا جائے گا۔ امام اوزاعی کابھی میں قول ہے۔ نسیانا بھم اللہ کو ترک کرنے میں اختلاف ہے۔ حضرت على وعزت ابن عباس رمنى الله منهم عجابه وطاء بن اني رباح معيد بن مسيب ابن شاب اور طاؤس في يد كما يه كرجس ذبيحه ر بسم الله كونسيانا ترك كرديا جائے اس كو كھانے ميں كوئى حرج تسيں ہے۔ حضرت ابن عباس نے كما مسلمان كے دل ميں الله كا ذكر و ما ہے۔ جس طرح مشرك كاذبير رائد كايام إينا سود مند نبي سے "اى طرح مسلمان كابھوسالے سے يام ندايمنا معرنبيل سب-این میرین نے کما اگر مسلمان نسیانا بھی ہم اللہ کو ترک کردے تو دہ ذبحہ نسیں کھلیا جائے گا۔ ابراہیم نے کما ایسے ذبحہ کو نہ کھانا

علامد ابو برجماس حنى لكعة بس كه فقهاء احتاف كالستدنال اس اعد عديد

وَلَانَا كُلُوامِمًا لَمْ يَدُكُمِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَ جس ذبعة يراند كانام نبي لياكما اس كومت كماؤا باشد إِنْهُ لَمِسْتَى (العام ٢٠١٢) اس کو کھاٹا گنادے۔

اس آیت سے بظاہر یہ معلوم ہو آ ہے کہ جس (شکاریا ذہرے) پر اللہ کا نام نہیں لیا کیا اس کا کھانا حرام ہے۔ خواہ اللہ کا نام مدا ترک کیا ہویا نسیاغ۔ لیکن ولائل ہے میہ ابت ہے کہ بہاں نسیان مراد نسیں ہے۔ البتدا اس محض کا قول اس آیت کے خلاف ہے جس نے یہ کما ہے کہ جس ذبیحہ یر عمر آبسم اللہ کو ترک کر دیا گیااس کا کھاتا بھی جائز ہے اور اس فخص کا یہ تول بکارت آٹار اور اماویٹ کے بھی خلاف ہے۔

اگرید اعتراض کیاجائے کہ اس آیت میں مشرکین کے ذبحہ کو کھانے سے منع فرمایا کیاہے "کیونکہ معترت ابن عہاس بیان كرتے بيں كد مشركوں نے كما جس جانور كو تمارے رب نے قل كيااور دو مركياتو تم اس كوشيں كھاتے اور جس جانور كو تم نے قتل کیا بعین فرج کیااس کو تم کھا لیتے ہو۔ اس موقع پر بیر آیت ٹازل ہوئی جس پر اللہ کا نام نسیں لیا کیااس کو مت کھاؤ" حضرت ابن عباس نے فرمایا معنی مردار پر 'اور جب اس جیت میں مردار اور مشرکین کا ذبید مراد ہے تو اس میں سلمانوں کا ذبید داخل نسي ہے۔ اس كاجواب يہ ہے كہ اصول فقد عن مير قاعدہ معروف ہے كہ جب كى آيت كامور و فزول خاص ہواور اس كے الفاظ عام ہوں ' تو پھر خصوصیت مورد کا اعتبار نہیں کیا جا آ' بلکہ عموم الفاظ کا اعتبار ہے اور خصوصیت مورد کا لحاظ نہیں ہے ' اور اگر یمال مشرکین کے ذبیعے مراد ہوتے تو اللہ تعالی من کاؤکر فرمایا اور صرف بسم اللہ کے ترک کرنے پر اقتصار نہ فرمای اور ہم کو یہ مجى معلوم ہے كه مشركين اكر اپنے ذيحوں پر مهم الله يؤه مجى لين تب مجى ان كاذبير وال نہيں ہو كا۔

اس آیت میں مشرکین کے ذیکے مراد نہ ہونے پر بیہ دلیل ہے کہ مشرکوں کا ذبیحہ کمی صورت میں طال نہیں ہے۔ خواہ وہ

ہم اللہ پڑھیں اند پڑھیں عمالتہ تعالی نے دو مری آیت میں مشرکوں کے ذبیوں کے حرام ہونے کی تصریح کی ہے۔ دو ہے "وساد ہے على المسسب "اورجى جانور كويتوں كے ليے نصب شده يتحون پر ذرج كيا كيا ہو"ا سے معلوم ہواكد اس آيت ميں مشركوں كا ذیجہ مراد شیں ہے الکہ بیہ مراد ہے کہ جس جانور پر فائے کے وقت بھم اللہ نہ پڑھی منی ہو "اس کا کھانا جائز نہیں ہے۔ کیونکہ وان الشياطين ليوحون الى اوليائهم ليحادلوكم (الانعام:٣١١) بلاثب ثيطان تم ، بمكراكرة كه الياي دوستول کے داوں میں وسوسے ڈالتے رہے ہیں۔اس آیت کی تغییر میں حضرت ابن عماس رمنی اللہ عظمابیان کرتے ہیں کہ شیطان ا ہے دوستوں کے دلوں میں بیروسوسہ والتے تھے کہ جس پر اللہ کانام لیا جائے اس کو مت کھاؤاور جس پر اللہ کانام نہ لیا جائے اس کو کھا او-تبالله تعالى في آيت تازل قرائي ولاتها كلواممالم بذكراسم الله عليه" (الانعام ١٣١) "جس رالله كانام نه ساجائے اس کومت کھاؤ "اس مدیث میں معزت این عباس نے بیابا ہے کہ مشرکوں کا بھگڑ اہم اللہ کے زک کرنے میں تھا اور ب آیت بسم اللہ کو واجب کرنے کے بارے میں نازل ہوئی ہے۔ مشرکوں کے ذبحوں کے متعلق نازل ہوئی ہے 'نہ کہ مردار کے بارے ميں- نيز مم اللہ كوعمد أترك كرنے ہے ذبحہ ماشكار كے حرام ہوئے ہے آيت وليل ہے:

ود آب ہے یو جھتے ہیں کہ ان کے لیے کون می چزیں طال کی منی میں * آپ فرماد یجئے کہ تمہارے لیے یاک چیزیں طال کی محلی ہیں اور تم نے جو شکاری جانور سد حالیے ہیں در آنحا یک تم الله تعالى كے تائے ہوئے طريق كے مطابق السيس شكار كا طريقه عمالے والے ہوا سووہ (شكارى جانور) بس شكار كو تهادے لیے روک رمیں اس کو کماؤ اور (شکار پر چمو ژینے ولت)اس (شکاری جانور) پر بسم الله پز هو۔

يَسْتَلُوْنَكُ مَا ذَا أُجِلُّ لَهُمْ قُلْ أُجِلُّ لَكُمْ التَطَيِّبُ ثُ وَمَاعَكُ مُنْ مُرْضَ الْحَوَارِحِ مُحَكِّرِبُنِ عُلِّمُونَهُنُّ مِنْ اعْلَىكُمُ اللَّهُ مُكُلُّا اللَّهُ مُكُلُّوا مِنْكًا أمسكن عنينكم وأد كروااسم الله عكيه

(الشائدوس)

اس آیت میں ہم اللہ پڑھنے کا مرکیا گیاہے "اور امروجوب کے لیے آتا ہے اور سے بدایت معلوم ہے کہ کھاتا کھانے والے ب ہم اللہ پڑھنا واجب نمیں ہے۔ اس سے معلوم ہواکہ شکار پر جانور چھوڑتے وقت ہم اللہ پڑھنا واجب ہے اور اس کی تائید حضرت مدى بن حاتم يوفي كى اس روايت ، بهى موتى ب بس من رسول الله مينير ن فرمايا جب تم إن سدهايا بواك چھوڑداوراس پر بسم اللہ پڑھاوتواس کو کھالیا کرو۔اس آیت کا تقاضایہ ہے کہ اس چیز کا کھاناممنوع ہوجس پر اللہ کانام نسیں رہائیا اور اس آبت کا یہ بھی نقاضا ہے کہ بسم اللہ کو ترک کرنا ممنوع ہواور اس مماخت کی یہ آگید تیت کے اس جزو ہے ہوتی ہو اسه لفسسق جس پرالله كانام نه مياكيا يواس كا كهانا كناو بيابهم الله كونزك كرنا كناه ب اور اس بيس يه بحي دليل ب كه بهم اللہ کو عمد از ک کرنا گناہ ہے۔ کیونکہ بھول کر کوئی کام کرنایانہ کرنا گناہ نہیں ہو آبادر اس کی مائید اس سے ہوتی ہے کہ حدیث میں ہے حضرت عائشہ معدیقہ رضی اللہ عنها بیان کرتی ہیں کہ لوگوں نے عرض کیا ایر سول اللہ ادیماتی لوگ جارے پاس کوشت لے كرآتے ہيں۔ اور ووسنے نے كفرے نكتے ہيں۔ ہم كو پائسيں كه انہوں نے اس پرالله كانام لياہ يا نہيں۔ آپ نے فرمايا تم اس پر الله کانام او اور کھالو "آگر بهم الله کو پر صنازع کی شرط نه ہو آاتو آپ بے فرماتے که آگر انہوں نے بهم الله کو نہیں پر ھاتو پحرکیا ہوا' لیکن آپ نے فرمایا تم اس کو نیم اللہ پڑھ کر کھاؤ' کیونکہ اصل اور قاعدہ سے کہ مسلمانوں کے افعال کو جواز اور صحت بر محول کیاجا آہے اور بغیر کسی دلیل کے مسلمانوں کے امور اور افعال کو فساویر محمول نہیں کیاجا آ اگريد اعتراض كياجائے كه اگريد مراد بوك بهم الله كوند پرهنا كناه ب توجو مخض ويدير بهم الله ند پرهے وه كنگار بوكا

حلائکہ اس پر اجماع ہے کہ وہ گناہ گار نہیں ہو تا۔اس لیے اس آیت میں مشرکین کے ذیعے یا مردار مراد ہونے چاہئیں۔اس کا جواب یہ ہے کہ ہمیں یہ اجماع تنکیم نمیں ہے اور جو مخص ذبیحہ پر عمر اہم اللہ کو ترک کرے گاوہ بسرحال گنہ گار ہوگا۔

بالى ربايد كدجو مسلمان بمول كربسم الله ترك كردك اسكاذ بيد جائز ب-اس كى دليل يد بك الله تعالى في تعلم ديا ہے کہ جس جانور پر اللہ کانام نہ لیا جائے اس کو مت کماؤ اور اس کو گناہ فربلا ہے۔اور یہ گناہ ای وقت ہو تا جب وہ عمر اس تکم کی خلاف ور زی کرے گا۔ کیونکہ یہ چیزانسان کی قدرت اور استطاعت میں نمیں ہے کہ وہ بھول کر بھی کوئی غلط کام نہ کرے اور اشان اپنی قدرت کے مطابق عی مکلت او آ ہے۔ اور اہام اوزاعی نے صفرت ابن عباس رمنی اللہ عنما ہے روایت کیا ہے کہ رسول الله عليه ينظيم في الله تعاتى في مرى امت كى خطا انسان اور جرست وركزر فرماليا ب اور جب وه نسان كى حالت میں بھم اللہ پڑھنے کا مکلت نہیں ہے تو اس صورت میں اس کا ذبیحہ حرام نہیں ہوگا۔ حالت نسیان میں بھم اللہ ترک کرنے کو حالت نسیان میں شرائط نماز (مثلاً تحبیراور وضوء غیرہ) ترک کرنے پر قیاس کرنا درست نمیں ہے۔اس لیے کہ جب انسان کو یاد آ جائے کہ اس نے بغیروضو کے قماز پڑھی ہے تو اس پر اس کا تدارک فرض ہے۔ پایس طور کہ وہ وضو کرکے دوبارہ نماز پڑھے 'اور جب اس نے بھول کرہم اللہ پڑھے بغیر جانور کو ذریج کر دیا تواب اس کا تدارک نہیں ہو سکتا 'اس لیے اس کاذبیحہ درست قرار پائے گا۔ اس کی نظیریہ ہے کہ آگر کمی مخص نے بھولے سے روزہ میں پچھے کھا' یا پی لیا تو اس کاروزہ میج اور بر قرار دہے گا۔ کیونکہ وہ اس کا مكلت ہے كدوہ است قصد اور ارادے سے روزہ ميں كھانے پينے سے اجتناب كرے اور صالت نسيان ميں بحي كھانے يہنے سے اجتناب كرناس كى استطاعت ميں نبيں ہے اس طرح حالت نسيان ميں ذبحہ پر بسم اللہ پر صناس كى استطاعت ميں نبيں ہے۔

إِ احْكَامُ القر آن "ج ٣٠٥ مل ٨-٥ مطبوعه سميل أكيدٌ مي لد جور "٥٠٠ ١١٥٠) غلیل ممکن اور دیگر آلات ہے شکار کرنے کا تھ

جن آلات ے شکار کیا جاتا ہے ان تمام آلات کے لیے قلعدہ کلیہ یہ ہے کہ آگر جانور اس آلہ کی ضرب ہے دب کر با چوٹ کھاکر مرکبایا گلا کھنے سے مرکباتووہ حرام ہو کیااور اگر جانور اس آلدے کٹ کریا چمد کر مرا اس کے زخم آیاور خون بماتو مجروہ جانور حلال ہے اور بسم اللہ پڑھ کر ایسا آلہ مجینکنا جس ہے جانور کا جسم کتے اور خون ہے " ذکاۃ اضطراری ہے۔ اعتباری ذکاۃ یہ ہے کہ جانور کو پکڑ کر بھم اللہ اکبر کہتے ہوئے اس کے مللے پر اس طرح چھری پھیریں کہ اس کی جاروں رکیس کٹ جا کیں اور جب جانور دور بینها بو یا جماک ر پابویا اژ ر پا بواور اس کو پکژ کر معروف طریقه سنه ذرخ کریا ممکن نه بهو تو بسم الله پژاه کراس پر تیریا کوئی اور آلہ جارجہ پھینک دیا جائے جس سے زخمی ہو کروہ جانور مرجائے تو وہ حلال ہو گااور سید ذکا ، اضطراری ہے۔اور اگر اس جانور پر لائنی ' پھریا کسی اور وزنی چیز کی ضرب لکائی جائے جس ہے وہ وب کر مرجائے یا اس کے تکے میں کوئی پہندا ڈالا جائے جس سے وہ گذا تھنے سے مرجائے تو پھریہ جانور حرام ہے۔ یہ قاعدہ کلیہ قر آن مجید کی اس آیت سے مستفاد ہے:

تم پر بیر حرام کیے محے ہیں۔ مرداد' فون' خصر بسر کا الْيَحِيْرِيْرِوْمَا أَكِيلَ لِعَبْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْ حَيِنَفَةُ وَ كُوشَت اج فيرالله كام يوزع كالياء وس كا كالكوع الياء جو تمی ضرب سے دب کر مرا ہوا' اوپر سے گر اہو' سینگ مارا موا ہو اور جس کو ورئدہ نے کمایا ہو 'البتہ ان میں ہے جس کو

تحيرت عَلَيْكُمُ الْمَيْنَةُ وَالدُّمُ وَلَحُمُ المُسْوقُودَةُ وَالْمُنَرَدِينَةُ وَالنَّيطِينَحَةُ وَمَا اكْلَ السَّمْ وَلَامَادَ كُيتُمُ (المائدو:٣)

تم فے (اللہ کے نام یر) ذیح کر لیادہ ملال ہے۔ اس آیت میں سے تصریح کی گئے ہے کہ موفودہ (جو کسی چیز کی ضرب سے دب کراور چوٹ کھا کر مراہو)اور م (جو گلا گھٹ کر مرا ہو) حرام ہے اس لیے آگر کسی ایسے آلہ سے شکار کیاجائے جس سے دب کر جانور مرجائے یا گلا گھٹنے سے مر جائے تو پچروہ جانور حرام ہو گا۔

علامد ابوعبدالله محرين احمد ماكلي قرطبي متوفى ١٩١٨ ماس آيت كي تغييريس لكستة بين:

موقودة ود جانور جو بغیر ذکاة کے لائمی یا پھر مارنے ہے مرجائے۔ قان کتے ہیں کہ زمانہ جالیت میں لوگ اس طرح جانور
کو مار کر کھا لیتے تنصبہ مسیح مسلم میں رسول اللہ بیجیور کایہ ارشاد ہے جب تم "معراض" کو پیچکو لور وہ جانور کے آرپار ہو جائے تو
اس کو کھانو 'اور آگر جانور اس کے عرض ہے مرے 'تو پھراس کو مت کھاتو اور ایک روایت یہ ہے کہ وہ و قید (مو توزہ) ہے ۔ علامہ
ابو عمو نے کما کہ حققہ میں اور متا تو بن علاء کا اس میں اختلاف ہے کہ بند قد ایسی مئی کی ختک کی ہوئی گولی جس کو غلیل یا کمان
سے پھینکا جاتا ہے '(عمد قد القاری 'جنا' می ایم) روائحتار 'جن می میں 'تعیر الرناد 'جن می میں کا الدوطار جن میں اس میں اس کیا ہوا آیا طال ہے یا تھیں؟

مفتی تحد شفیع دیو بندی نے اپنی تفریم علاسة قرطی کی اس عبارت کا فلاصد ذکر کیا ہے اور اس دلیل جی علاسہ جسامی کی یہ

ا'جو شکار بندوتی کی گولی سے ہلاک او گیا اس کو بھی فقماء نے موقودہ جی داخل کیا ہے اور اس دلیل جی علاسہ جسامی کی یہ

عبارت نقل کی ہے المستق ولتہ بالمسلد فقة نلک المسوفودۃ "المام اعظم "الم شافعی الم مالک و فیرہ سب ای پر شفق ہیں (معارف القرآن 'ج ۴ م ۴ م) عمل جی بیس سد و ف کا معتی ہے مٹی کی فتک کی ہوئی گولی۔ جیساکہ ہم نے بحوالہ بیان کیا ہے اور الم بندوتی کی گوئی۔ جیساکہ ہم نے بحوالہ بیان کیا ہے اور الم بندوتی کی گوئی کو حمل جی بندوق ہیں ہوئی ہے اور الم بندوتی کی گوئی کو حمل میں ہوئی ہے اور الم الم شافع ۱۹۰۳ء 'علامہ جسام ۲۰ اور علامہ قرطبی ۱۹۲۸ء جی فوت ہو ہے۔ سویہ اتمہ اور علاء بندوتی کی گوئی کے شام مالک ۱۹ کیا ہے اور الم علاء بندوقی کی گوئی کے شام کا کہ بندوتی کی گوئی کرتے جی بندو کی ایجاد ہے۔ سفتی محد شفح دیو بندی نے بند قد کا معنی بندوتی کی گوئی کرتے جی بیست خت مغالظہ کھایا ہے۔ فادی دار اصلوم (ج ۲ می ۱۹۵۹ء میں انہوں نے میں مغالظہ کھایا ہے۔ فادی دار اصلوم (ج ۲ می ۱۹۵۹ء میں انہوں نے میں مغالظہ کھایا ہے۔ فادی دار اصلوم (ج ۲ می ۱۹۵۹ء میں انہوں نے میں مغالظہ کھایا ہے۔ فادی دار العلوم (ج ۲ می ۱۹۵۹ء میں انہوں نے میں مغالظہ کھایا ہے۔ است

اور آج کل کی متعارف بندوق کی گول جو سید کی ہوتی ہے اور اس میں یارود بھرا ہوا ہوتی ہے۔ اس کو عمل میں سدو قد نا السر صماص کتے ہیں ۔۔۔۔ سعیدی غفرلد) پھراور معراض ہے جس جانور کو ماد دیا جائے 'آیا وہ حلال ہے یا نہیں؟ بعض علماء نے
یہ کماکہ یہ موقو ذہ ہے 'آگریہ مرگیا تو پھراس کا کھٹا جائز نہیں ہے۔ حصرت این عمر المام مالک 'الم م ابو صنیفہ 'الم شافعی اور توری کا
یکی نظریہ ہے۔ فقہاء شام اور المام او ذائی نے یہ کما ہے کہ معراض ہے مارا ہوا جانور طال ہے۔ خواہ وہ جانور کے آر پار گزرے یا
نہیں۔ حضرت ابوالدر داء 'حضرت فضلا بن عبید اور یکوں اس میں کوئی حرج نہیں سجھتے تھے 'لیکن اس مسئلہ میں تول فیمل
دسوں اللہ سراتیج کی ہے حدیث ہے کہ آگر جانور معراض کے عرض سے مرے تواس کو مت کھاؤ 'کیو تکہ وہ وہ تیذ ہے۔

(الجامع لذ كام القرآن 172 من ١٨)

علامد ابوالحن الرخيناني حنى منوفي سهه ٢٠٠٥ اس مسئله من لكييت بين:

جس جانور کو معراض کے عرض ہے مارا کیا ہو اس کو کھانا جائز نہیں ہے 'اور اگر معراض نے اس جانور کو زخمی کردیا تو پھر
اس جانور کو کھانا جائز ہے۔ کیونکہ رسول اللہ پڑتیں نے فرمایا جو جانور معراض کی دھارہے مرااس کو کھالوا درجو جانور معراض کے
عراس سے مرااس کو مت کھاؤ۔ نیز شکار کے طابل ہونے کے لیے اس کا زخمی ہونا شروری ہے ' آ کہ اس بس ذکا تا کامعنی متحقق
ہو سکے۔ جیساکہ ہم اس سے پہلے بیان کر پچے ہیں۔ (علامہ المرضنانی نے پہلے یہ بیان کیا ہے کہ خاہر الروایہ کے مطابق شکار ہیں

زخم كرنا ضروري ٢٠٠٠ آك ذكاة اضطراري متحتق بولور ذكاة اضطراري كي تعريف يد بك شكاري كي آكد استعل كرف كي وجد ے شکار کے برن کے کمی حصہ میں بھی زخم آ جائے۔اللہ تعنالی کا ار ثلاب "و مباعلمتهم من المعوار "اور تم نے زخی كرف والے شكارى جانور سدهائے بي- اس آيت بي شكار كو زخمي كرنے كي شرط كي طرف اشاره بي كيونك جوارح جرح سے ماخود ہے اور اس کامعتی ہے "زخمی کرتے والے" (جراب اخرین مصدد) اور جو مانور غلیل یا کمان کی گول سے مرا ہو اس کو بھی کمناجائز نہیں کو تک یہ کول شکار کے جسم کو کو ٹتی ہے اور تو ژتی ہے اور اس کو زخمی نہیں کرتی۔ سویہ معراض کی طرح ہے جو شکار کے آربار نہ ہو۔ای طرح اگر بھرے شکار کو مار ڈالاتو اس کا کھانا بھی جائز نہیں ہے۔اگر پھر بھلدی اور وهار والا ہوتو اس سے مرسنے والے جانور کو کھانا جائز نہیں ہے۔ خواہ وہ جانور کو ذخمی کروے چھوٹک یہ احتمال ہے کہ وہ جانور اس پتمرے ثقل ك وجه سے مرا يو اور أكر وہ پار خنيف يو اور اس ين دهار يو اور جانور زخى يو جائے تواس كا كمانا جائز ہے۔ كو كله اب بيد متعین ہو کیا کہ جانور کی موت زخم کی وجہ ہے واقع ہوئی ہے اور اگر پھر خنیف ہو اور دہ اس کو تیر کی طرح اساکرے اور اس میں وهار ہو تو اس سے کیاہوا شکار طال ہے 'کیونکہ اس پھرے جانور زخمی ہو کر مرے گا۔ اگر شکاری نے دھار والی سکے مرمر کو پھینکا اور اس نے جانور کو کاٹائسیں تو وہ جانور حلال نسیں ہے۔ کیونکہ اب جانور اس کے کوشنے سے مرا ہے۔ اس طرح اگر اس چرکے پینے ہے اس کا سرالگ ہو کیایا اس کی گردن کی رکیس الگ ہو گئیں ' تو دہ جانور طلال نسیں ہے۔ کیو تک جس طرح پتر کی دھار ے رکیس کنتی ہیں ای طرح پھرکے ثقل ہے بھی رکیس کٹ جاتی ہیں۔ اس لیے اب شک واقع ہو کیااور یہ بھی ہو سکا ہے کہ ر کوں کے کتنے سے پہلے وہ جانور مرکمیا ہو ' اور اگر جانور کولا تھی یا تکڑی ہے اور ڈالا تو وہ حلال نسیں ہے " کو تک وہ لا تھی یا تکڑی ك ثقل سے مرا ب- بال اكر اس تكرى يالا تفى كى دهار او اور اس سے جانور كث جائے قواب اس جانور كو كھانا جائز ہے۔ كيونك أب وه ما تفي مكوار اور نيز ال علم من إور ان تمام مسائل من قاعده كليه يه ب كرجب بدينين مو جائ كه شكار كى موت زخم كى وجد سے ہوئى ب توشكار طال ب كور جب يہ يقين ہوك موت فقل كى دجد سے ہوئى ب توشكار حرام ب اور جب یہ شک ہوادر یہ پتانہ ہلے کہ موت زخم ہے ہوئی ہے یا فعل ہے تو پر شکار کاحرام ہو نااحتیاطا ہے۔

(بدای انجری ۱۳۰۵-۱۱۱ مطبوعه شرکند ملمیه کمسان)

بندوق سے مارے موے شکار کی تحقیق

آٹھویں مدی اجری سے پہلے دنیا بارودی بندوق ہے متعارف نمیں ہوئی تھی۔ دائرۃ المعارف جس لکھا ہے دستی بندوق کا استعال ہے رپ جس ۱۵ جاء جس شروع ہوا تھا' اور مسلمان ممالک جس اس کی ابتداء سلطان قانیباتی کے عمد میں ۱۹۸۵ھ/۱۹۰۰ء جس ہوئی۔ (اردو' دائرہ معارف اسماسیہ' ج ۴'می ۱۸۸۵ مطبور لاہور)

بسرطال اوسویں صدی تک بنروق کا استعال عام نمیں ہوا تھا۔ می وجہ ہے کہ بارھویں صدی ہے پہلے علاء نے بعد ورق ہے ہوئے شکار کے تھم پر بحث نہیں کی۔ بارھویں صدی میں علاء نے اس مسئلہ پر بحث کی اور یہ بحث بنو زجاری ہے۔ بعض علاء بندوق سے کے ہوئے شکار کو اس بناء پر ناجائز کہتے ہیں کہ بندوق کی کولی ہے شکار ٹوٹا ہے 'کٹنا نہیں اور جائور اس کے ٹفل ہے مرتا ہے۔ اس لیے یہ موقو ذو ہے اور حرام ہے۔ اس کے پر ظاف دو سرے علاء یہ کہتے ہیں کہ بندوق کی گوئی ہے شکار زخی ہوتا ہے۔ اس کے پر ظاف دو سرے علاء یہ کہتے ہیں کہ بندوق کی گوئی ہے شکار زخی ہوتا ہے 'اس کا خون بہتا ہے اور ایمن او قات گوئی شکار کے آریار ہوجاتی ہے اور ذکا قاضران کی گار نے شکار زخی ہوتا ہے 'اس کے بندوق ہے کیا ہوا شکار اضطراد کی کا دار ذخم کی اور خون بہتے ہے اور وہ بندوق کے شکارے حاصل ہوجا آ ہے 'اس لیے بندوق سے کیا ہوا شکار خوان کا در شریل اپنی کریں گے اور "خریں اپنی رائے کا جو جائے ہے اور یہ کی دائے کا در "خریں اپنی رائے کا جو جائے کا در "خریں اپنی رائے کا در "خریں اپنی رائے کا در "خریں اپنی رائے کا در "خریں کے دلائل چیش کریں گے اور "خریں اپنی رائے کا در خان کیا ہوئی کی دلائل جائی کی دلائل گار کے اور "خریں اپنی رائے کا در "خریں اپنی رائے کا در خون بیٹے دلائل چیش کریں گے اور "خریں اپنی رائے کا در گار تھی کی دلائل گار کے دور کو دلائل چیش کریں گے دلائل چی کر دلائل گار کیا گارے دلائل گار کے دلائل گار کی گار کی گارے دلائل گار کی گار کی گار کی گار کے دلائل گار کی گار کے دلائل گار کو خون کی دلائل گار کی سے دلائل گار کو خون کی دلائل گار کی گار کے دلائل گار کی گار کی گار کی گار کے دلائل گار کو خون کی دلائل گار کی گار کے دلائل گار کی گار کی کا در "خری کی دلائل گار کی کا در آئی کی دلائل گار کی گار کی کے دلائل گار کی کو دلائل گار کی کا در ان کی گار کی کی دلائل گار کی کا در آئی کی دلائل گار کی کا در آئی کا در گار کی کا در آئی کی کا در آئی کی کا در آئی کا در کا در کا در کا در کا در کی کا در آئی کا در گار کی کا در آئی کا در آئی کا در آئی کی کا در آئی کی کا در آئی کی کا در آئی کا در آئ

ذركري مع-فىقول وبالله التوفيق ومه الاستعامة يليق-

بندوق کے شکار کو حرام کنے دالے علماء کے ولائل

علامد ابن عليدين شاي خني متولى ١٥٠ عد لكية بن

میر بات واضح ہے کہ بندوتی کی گولی پریشرے نگلنے کی بناپر جلاتی ہے اور اس کے بوجھ کی وجہ سے زخم پیرا و یہ ہے۔ کیونکہ اس میں دھار نہیں ہوتی اس بناپر بندوق ہے کیا ہواشکار طلال نہیں ہے۔علامہ این نجیم کابھی بسی فتویٰ ہے۔

اروالمحتار عن ١٦٥ مل ١٦٥ مطبوى مليق عمّانيه الشنبول ١٣٢٤ ايد)

مولاۃ امجد علی تکھتے ہیں بندوق کا شکار مرجائے یہ بھی حرام ہے کہ گولی یا چھرا آک جار حد نہیں 'بلکہ اپنی توت دافعت کی وجہ سے تو ژاکر تاہے۔(بمار شریعیت کے ۱۰مس ۱۲۰ مطبور شخ خلام علی اینڈ سز اکراچی)

مفتی محد شفیع دیوبندی لکھتے ہیں بندوق کاشکار اگر ذی کرنے سے پہلے مرجائے تودہ حرام ہوجا آہے۔ کھانااس کا مدر شیس

ہے۔ افادی دارالعلوم دیوبرز 'ج ۴'م ۵۵۵ مطبوعہ دارالاشاعت کراچی) بندوتی کے شکار کو حلال قرار دینے والے علماء کے دلا کل

علامد ابوالبركات احد بن درور بالكي لكية بن.

بندوق کی گولی ہے کیے ہوئے شکار کو کھایا جائے گا' کیونکہ وہ ہتھیاروں سے زیادہ قوی ہے۔ جیساکہ بعض ننسلاء نے اس پ فتو کی دیا ہے اور بعض نے اس پر اعتاد کیا ہے۔ (شرح الصغیر علی اقرب السائک مطبوعہ دار العطارف' معرے مہماء) عالمہ مدال میں الکے معتاد معدد مسلمہ تعدد

علامد صاوى ماكلى متوفى ١٢٢٣ ما الله اللهمة إن:

ظامہ ہے کہ بندوق کی گوئی ہے شکار کے متعلق حقد بین کی تسانیف بیں کوئی تصریح نہیں ہے ہی و نکہ بارودی بنروق کی ایک آئیوں صدی ہجری کے وسط بیں ہوئی ہے اور متا فرین کا اس میں انسلاف ہے۔ بعض علماو نے فلیل کی (مٹی کی خٹک) گوئی پر قیاس کر کے اس کو ناجائز کہا ہے اور بعض علماء نے جائز کہا۔ چنانچ ابو عبد الله وی ابین عاذی اور سید عبد الرحمٰن فای نے اس کو جائز کہا ہے ایک بندوق کے ذریعے فون بہلیا جاتا ہے اور بہت سرعت کے ساتھ شکار کا کام تمام کرویا جاتا ہے ،جس کے سبب سے ذکا ہ مشروع کیا گیا ہے۔ اصافیہ انسلوی علی الشرع الصغیر معمل

بندوق کے شکار کے متعلق مصنف کی تحقیق اور بحث و نظر

قرآن مجید اطادیث محیحہ اور نقهاء احناف کے قوامہ کی روشنی میں مصنف کی تحقیق یہ ہے کہ بندوق سے مارا ہوا شکار حلال ہے اور اس کا کھانا جائز ہے۔ قرآن مجید نے شکار کی حلت کا بدار شکار کو زخمی کرنا قرار دیا ہے۔ ابلنہ تعالی کاار شاد ہے: حد موریت میں موا

قُلُ أَحِلَ لَكُمُ الطَّيِبِ وَمَا عَلَيْهُ مِن مِن اللهِ عَلَيْهُ مِن اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى مِن الْحَوَارِحَ مُنْكِيِّ مِن الله الله هنه) الدوج مَن فرخي كرف والع جانور مروحالي بن اورجوم فرخي كرف والع جانور مروحالي بن ا

الجوارح جارت کی جمع ہے اور جارت زخمی کرنے والے جانور کو کہتے ہیں اور شکاری جانور کا کیا ہوا شکار اس وقت حال ہو آئے۔ جب وہ شکار کو کھانے کا تھم دیا ہے اور جب مشتق پر تھم انگا جائے جب وہ شکار کو کھانے کا تھم دیا ہے اور جب مشتق پر تھم لگا جائے قرمشتق کا کافذ اشت تھا تی اس تھم کی علیف ہو تا ہے 'اس لیے شکار کے طابل ہونے کی علی اس کو زخمی کرتا ہے اور بندوق کی کو ایس کو زخمی کرتا ہے اور بندوق کی گا اس کے چھروں سے بھی چو فکہ شکار زخمی ہوتا ہے 'اس لیے آیت کی تھر سے کے مطابق بندوق سے مارا ہوا شکار علان ہے اور یہ موقوذ دو ہو قود دو ہوتا ہے جو چوٹ سے مرے 'اس کو زخم آئے اور نداس سے خون ہے۔

اطوعت محجد کی روشن علی بھی بعدول ہے مارا ہوا شکار طامل ہے۔ انام مسلم ، معزت عدی بن طاتم برائن ہے روایت کستے ہیں ارسول الله برائل نے ارشاء فرایا:

جب تم شکار پر معراض مینکواور معراض شکاریں نفوذ کر بائے اور می کو کھالواور آگر شکار معراض کے عرض سے مرے تواس کو مست کھاؤ۔

اذا رميت بالمعراض فحزق فكله وادا اصابهبعرضه فلاتاكله

(مع ملم عوص ١٥٠٥ملور كراجي ١٥٤٠١٥)

اور بندون کی کولی اور چمرے بھی شکار میں نفوذ کر جاتے ہیں اس لیے بندون سے مارا ہوا شکار جائز ہے۔ حافظ ابن جم عسقلانی کلیتے ہیں:

أكريد كماجك كريد لفظ معدري ("ر" كماته) بني تواس كامعنى ب جانور مي موراح كريا

(في الباري عه اص ۱۹۰ طبع لا مور)

خلاصہ بیہ ہے کہ یہ لفظ "ز" کے ماتھ ہو تو اس کا معنی ہے نفوذ کرنالور بندون کی کول شکار میں نفوذ کر جاتی ہے اور آگر بیہ لفظ (ر) کے ماتھ ہو تو اس کا معنی ہے سوراخ کرنالور پھاڑنالور بندون کی کولی شکار کو پھاڑ دیتی ہے اور اس میں سوراخ کردجی ہے۔ لفذالس مدیث کے مطابق ہر نقذ مریر بندون ہے مارا ہوا شکار حلال ہے۔

ای طرح ایک اور حدیث بی ہے جس آلہ ہے بھی جانور کا خون بریہ جائے کا وہ جائز ہے اور ذبیحہ اور شکار حلال ہے۔ امام بخاری روایت کرتے ہیں:

صفرت رافع بن فدت بڑا ہے ہیں کرتے ہیں کہ بی نے عرض کیا یارسول اللہ اکل ہم دشمن سے مقابلہ کریں گے اور جارے ہاں چرکا جارے ہیں ہوت نہ مرجائے) جس چرکا جارے ہاں چھریال نمیں ہیں۔ آپ نے فربلیا جلدی کرف یا فربلیا اس کو جلدی ذرئے کرنا(آاک وہ طبعی موت نہ مرجائے) جس چرکا خون مبلیا جائے اور اس کے اور اس کی اور اس کی جارے اس کو کھالو محروانت اور بڑی نہ ہوں۔ دانت کی وجہ یہ ہے کہ وہ بڑی ہے اور ناخن حجمت وال کی چمری ہے۔ (اس فردو جس) ہم کو بل نمیست جس بگریاں اور اونٹ طے ان جس سے ایک اونٹ بھال اکلا ایک حجمت اس کو جرمارا اور افقہ نے اس کو جرمارا اور اونٹ ہوروک ویا۔ رسول اللہ بھی ہے فرمایا ان اونٹوں جس سے بعض اونٹ و مولی ویا۔ رسول اللہ بھی جرمان اور اونٹ میں سے بعض اونٹ و حش جانوروں کی طرح ہیں 'جب ان جس سے کوئی تم پر عالب آ جائے تو اس طرح کیا کہ "۔

(میج بخاری یج ۲ مل ۸۲۸ مطبور کراچی)

يزالم عارى روايت كرية ين

حضرت رافع بن فدت جوار بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ ماہور نے فرلمادانت اور نافن کے سواجو چر بھی فون ہمادے' اس (کے مارے ہوئے) کو کھالو۔ (منجے بخاری ج ۲ م ۸۲۸ مطبور کراچی)

بندوق کی گوئی ہائن اور بڑی نمیں ہے اور جانور کاخون ممادی ہے۔ انداواس مدیث کے مطابق اس کا بارا ہوا شکار طال ہے اور اس کا کھانا جائز ہے۔ بندوق ہے بارے ہوئے شکار کے طابل ہونے پرید اشکال ہو سکتا ہے کہ مدیث میں ہے جب جانور احسراض "کی دھارے مرے تو اس کو کھالو اور جب وہ معراض کے عرض ہے مرے تو وہ و تیذ ہے 'اس کو مت کھاؤ۔

المعج معلم عنه من ١٣٥٥ مطبوعه كراجي)

بعض علاء یہ کہتے ہیں کہ بندوق کی کولی اور چمروں میں چو تک وحار نسی ہوتی اس لیے بندوق سے مارا ہوا جانور و تیذ ہے

هیان القر ان

اور طال نہیں ہے۔ لیکن یہ استدائل میج نہیں ہے۔ الم بخاری نے معرت ابن عباس رضی اللہ فخماے موتودہ کی یہ تنہر اقل کی ہے موتودہ وہ جانور ہے جس کو لکڑیوں کی ضرب ہے اور کہا اک کیا جائے۔ (میج بخاری ج ۲ می ۱۹۳۳ مطبوعہ کراچی) کورجو جانور معراض کے عرض ہے مارا جائے وہ و تیذ ہے۔ اس کی شرح میں مافظ ابن جر عسقال الی کھتے ہیں ۔ کیونکہ اس صورت میں وہ معراض بھاری لکڑی 'باتر اور بھاری جڑے تھم میں ہے۔

(فق البادي مع به اس ١٠٠ معلمومه الا جور)

خلاصہ یہ ہے کہ موقوزہ وہ جانور ہے جس کو کسی بھاری اور وزنی چزی ضرب ہے مار کر ہلاک کیا جائے اور بندوق کی کوئی یا چھرے بھاری اور وزنی نہیں ہوتے 'اس لیے ان سے مارا ہوا جانور موقوزہ نہیں۔ بندوق کی کوئی تو کدار ہوتی ہے 'اس لیے اس یس کوئی اشکال نہیں ہے۔ البستة بندوق کے چھوں میں اوک نہیں ہوتی لیکن چو تک وہ کوشت کو بھاڑتے ہیں اور خون بمائے میں 'اس لیے وہ وصار والی چڑے تھم میں ہیں۔ اس لیے بندوق کی گوئی یا چھوں سے مارا ہوا شکار طال ہے اور اس کا کھانا جائز

یہ فوظ رہے کہ بعض محابہ اور فقہاہ تاہیں فلیل کی کولے عارے ہوئے شکار کو بھی جائز کور طال کہتے ہیں۔ جبکہ فلیل کی کول سے جانور کے زقم آنا ہے نہ فون بہتا ہے اور جارے زدیک ہیں کے وقیز ہوتے میں کوئی شبہ نہیں ہے۔ اس کے باوجود جب فلیل کی کول سے مارے ہوئے شکار کی حرمت متنق علیہ نہیں ہے تو بندوق کی کوئی یا چھموں سے مارے ہوئے شکار کو حرام کمناکس طرح میں ہوسکتا ہے؟

المام عبد الرزاق بن يهام متوتى العدروايت كرية بين:

ابن میب کتے ہیں کہ جس وحثی جانور کو تم نے پھر علیل کی کوئی ایترے مارا اس کو کھالو۔

ابن مسیب بیان کرتے ہیں کہ معنزت عمار بن یا سرنے کما جب تم پھریا غلیل کی کولی مارو اور بسم انتہ پڑھ لوتو پھر کھالو۔ ابن عیدند کہتے ہیں کہ ابن الی لیل کے بھائل نے جمدے بیان کیا کہ جس نے فلیل کے ساتھ ایک پرندہ یا شکار مارا 'پھر جس نے عبد اثر حمٰن بن ابی لیل سے اس کے متعلق سوال کیا اہنوں نے جمعے اس کو کھلنے کا تھم دیا۔

این طاق این والدے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے معراض کے شارے متعلق یہ کمذ

جب معراض شکار می نفوذ کر جلے تو پھراس کے کھلنے میں کوئی حرج نہیں ہے اگر تم نے ایسا تیر ماراجس میں اوبا ایا وحار) نہیں تفااور شکار کر محیاتو اس کو کھانو۔ رمعنف عبد الرزاق جے میں مدے مدے میاری میاری ہیں ہے)

ان آثارے یہ داشع ہوگیا کہ بعض سحابہ نور نقباہ تاہیں غلیل کی محل اور بغیرلوپ کے تیم سے مارے ہوئے شکار کو حال اور جائز کتے تھے۔ اور اس سے یہ معلوم ہوا کہ غلیل کی محل اور بغیره حار کے تیم سے اور اس سے یہ معلوم ہوا کہ غلیل کی محل اور بغیره حار کے تیم سے اور بھوٹ شکار کی حرمت بھی تعلق اور اتفاق نسم ہے۔ اور بھوٹ کی کول سے مارے ہوئے شکار کو بھی آگر چہ بعض متا ترین فقیاء نے موقوزہ قرار دے کہ حرام کما ہے اس سے ان کی اجتمادی خطا ہے۔ حقیق ہے ہے کہ بندوت کی کول سے مارا ہوا شکار قرآن جید اور اصاویت محمو کی روشن میں طال اور طبیب ہے۔

قرآن جیداور اماویت سے بندوق سے مارے ہوئے شکار کا بھم واضح کرنے کے بعد اب ہم فقهاء احناف نے اصول اور قواعد کی روشنی میں اس منکلہ کو واضح کرنا چاہتے ہیں:

هم الاتمد في من احد سرخي حقى متونى عدم مد لكن بين

ذکاۃ (فنے) کامنی ہے قامد اور نجس خون کو بملائور اس کی دو تشمیں ہیں۔ نے انتھاری اور فئے اضطراری۔ فئے افتھاری ہے ہے کہ قدرت اور افتھار کے وقت حیوان کے مطلح پر چمری پھیرا اور جب کرون پر چمری پھیرا ممکن نہ ہو تو جانور کے جم کے کسی حصہ پر بھی دھم ڈال دعا فئے اضطراری ہے کہ یک اضان اپنی قدرت کے انتجار ہے ملات ہو تاہے۔ سوجس صورت ہیں وہ حیوان کے مطلح پر چمری پھیر سکا ہو او اس کے مطلع پر چھری پھیرے بغیر ذکاۃ حاصل نہیں ہوگی اور جہاں اس پر قدرت نہ ہوا دہاں جانور کے جسم ہیں کہیں پر بھی ذفح ڈالتا اس ذکاۃ کے قائم مقام ہے۔ المبسوط عمام مطبوعہ وروت)

لا منی اور پھرے مارے ہوئے شکار کو ای لیے ناجائز کما کیا ہے کہ علو تالا تھی اور پھرے اس وقت مارا جاتا ہے جب جانور
تریب ہو۔ اور جب جانور قریب ہوتو اس کے گلے پر چھری چھر کر بڑے کیا جا سکتا ہے۔ اس لیے یمال ذرح افقیاری ہے 'اضطراری شیس ہے اور جب جانور دور ہو اور اس کو پکڑ کر اس کے گلے پر چھری چھریا قدرت میں نہ ہو شانا کی ور فت پر بیشا ہویا اثر رہا ہو
یا جماک رہا ہو اور برندوق سے فائر کرکے این جانوروں کو شکار کر ایا جلے اور کولی یا چھرے گئے سے وہ جانور زخمی ہو جا کمی اور ان
کے جسم سے خوان بھر جانے تو ان کا زخمی ہوتا اور خون بستا و کا قا اضطراری ہے۔ اور فقراء کے اس بیان کروہ تاہدہ کے مطابق حال ہے اور اس کا کھانا جائز ہے۔

نيز علامه مرخى حنى متونى ١٨٠ مهد لكيد بن

علامہ سرخی کی اس عہادت کا ظامہ ہے ہے کہ مو قوزہ وہ جائور ہے جو کسی بھاری اور وزئی ہے ہے ۔ نوٹ جائے (ایسی اس کی بڑی ٹوٹ جائے) اس کے جم میں زخم آئے اور نے خون سے اور اگر کوئی آلہ جائور کے جم کو بھاڑ دے اور اس کا خون بمائے تو ہو طال ہے اور بندو آ سے ارا ہوا شکار ایسا نہیں ہوتا کہ اس میں زخم آسٹنہ خون سے اس لیے وہ مو قوزہ نہیں ہے ' بلکہ بندو آ کی گولی اس کے جم کو بھاڑ دیتی ہے۔ اس کے جم میں سوراخ ہو جاتا ہے۔ بمااو قلت گولی آر پار ہو جاتی ہے ' اس کے جم میں زخم آ بات کے جم میں زخم آ بات کے جم میں زخم آ بات کے جم میں اور خون بہتا ضوری نہیں ہے۔ بعیدا کہ کتے کے زخم آ بات اور خون بہتا ضوری نہیں ہے۔ بعیدا کہ کتے کے مارے اور خون بہتا ہو اور اس کا کھاٹا مارے ہو گا ہوا شکار سے جم میں بمالو قلت سارا خون نہیں بنا اس کے بندو آ سے ارا ہوا شکار طال اور طیب ہاور اس کا کھاٹا جائز ہے۔

الحدث على احساندة قرآن مجيد العلويث محيو اور فقعاء املام كى تقريحات بيه واضح بوكياكه بندوق ب ارابوا الكار على الحدث على احساندة قرآن مجيد العلوية محيو اور تحقيق اس ليے كى ہے كه اس ذلات مى بعض الل علم يہ كئے مى كه بندوق ب علاء اس مسئلہ مى ارا بوا شكار موقوزہ بونے كى بناء بر حرام ہے۔ خام ہے كہ ان علاء نے نيك نجى سے يہ فتوتى ديا ہے انكون يہ علاء اس مسئلہ مى ارا بوا شكار اور كيرائى اور كيرائى من فيس كے اور ان كو اس مسئلہ مى اجتمادى خطاء الاتى بوئى۔ آئ كل بندوق سے شكار عام بوكيا ہے اور كيرائى اور كيرائى من فيس كے اور ان كو اس مسئلہ مى اجتمادى خطاء الاتى بوئى۔ آئ كل بندوق سے شكار عام بوكيا ہے اور كيرائى اور اگر كوئى يا جمود كئے سے جانور مرجائے قواس كو اى فتوتى كى بناء بر مردار اور حرام قرار دیا جانا

ہے۔ جبکہ قرآن جید افادیث اور فقهاوا مادم کی تصریحات کے مطابق یہ حال اور طبیب ہے اور اجتمادی مسائل میں میراز اس ہے کہ امت مسلم کے لیے آسان اور سل امکام بیان کیے جائی اور قرآن جید اطلاعث اور فتساء اسلام کے اصول اور قوامد ے امت مسلمہ کے لیے زیادہ سے اور اسانی کو حاصل کیا جائے رسول اللہ جھید کاار شاوے آسانی کرو اور اوگوں کو مشکل میں نہ ڈالو" شرح سے مسلم میں میرا می اسلوب رہاہے کہ اجتنادی مسائل میں قرآن سنت اور فقهاء اسلام کے قواعد میں مسلمانوں کے عمل کے لیے جھے جمل بھی کوئی بسر اور اسانی کی دلیل اور سبیل لمی میں نے اس کو اعتیار کر ایا اور امت ک د شواری اور حمر کی راہ کو ترک کر دیا مور میں نے جب بھی کسی مسئلہ کی تحقیق کے لیے تلم اٹھلیا تو قرآن جمید سنت اور فقهاء اسلام کی تقریحات کو مقدم رکھاہے اور مشکل پند اور فقهاء مرکے اقوال کو ترک کردیا۔

بهر حال اجل نے دیکر مسائل کی طرح اس منلہ کو نیمی نیک نینی اور لگیت ہے لکھا ہے۔ اگریہ حق اور صواب ہے تو الله تعالى اوراس كے رسول ماليو كى جانب سے باور اگري الله اور باطل ب توب ميرے مطالعه كانتص اور ميرى فيم كى كى - الداوراس كارسول است يرى بي - و آخر دعواما ان الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على محمد سيد المرسلين خاتم السبيين وعلى اله وأصحابه وأرواجه و

دريائهواولياءامتهوعلماءملتهاممعين

الله تعالى كاارشادى: آج تهارى كى پاك جن ملال كردى كئي ادر الى كاب كاذبير تهارى كي ماال ب اور تمهار اذبیر ان کے لیے طال ہے اور آزاد پاک دامن مسلمان مور تیں نور تم سے پہلے ال کتاب کی آزاد پاک دامن مور تیں (بھی تنهارے لیے حال جیں) جب تم ان کے مران کو اوا کر دوا ور آنجانیکہ تم ان کو لکاح کی قید میں لاتے والے ہوا نہ اعلانیہ بد کاری کرتے والے اور نہ تخفید طریقتہ سے آشنا بنانے والے اور جس نے ایمان (الانے کے بور) کفر کیا او ہے شک اس کاعمل ضائع ہوگیااوروہ آخرت می فقسان انملے والوں میں ہے ہے۔ الفائدہ:۵)

جن جانوروں کو قرآن اور مدے میں حرام کیا گیاہے 'ہم ان کا یمال تنعیل ہے ذکر کر رہے ہیں۔ اور ان کے مامواجانور

ملال بير،

قرآن اور مدیث میں بیان کردہ حرام جانور

الله تعالى نے قرآن مجيد من خصوصيت كے ساتھ خنوار كو حرام فرلا ہے اور جو تكد بنو اسرائل كے ايك كروه كو الله تعالی نے مع کر کے بندر بنادیا تھا اس سے اثارة معلوم ہواکہ بندر بھی حرام ہے۔ اللہ تعالی کاار ثال ب مَنْ لَعْمَهُ اللَّهُ وَعَنِينَ عَلَيْهِ وَحَمَلَ مِنْهُمُ

وولوگ جن مرافتہ لے نعنت کی اور ان پر خضب فرمایا اور الِّفَرَدَةُوالْخَسَازِيْرَ (المائده)) النامى سے بحض كو بند راور بعض كو عصنز يسر بناديا۔

ر سول الله منظیر نے ایک قاعد دبیان فرمادیا ہے کہ جو در ندے کیلیوں (نوک دار دانتوں) سے بھاڑ کر کھاتے ہیں جمعے شیر اور بھیڑیا وغیرہ اور جو پر ندے اپنے نافتول ہے شکار کرکے کھلتے ہیں جیسے باز اور شکرہ وغیرہ 'یہ سب حرام ہیں۔

الم مسلم بن تبلن قصيرى متوفى ١٠٠٥ روايت كرت ين حطرت ابن مباس دسى الله متماييان كرت بي كه بي يهيد نے ہر کیلیوں والے در عدے اور ہرناختوں (ے شکار کرنے)والے پر ندے کو کھلتے ہے منع فرمایا ہے۔

(منج مسلم ؛ جه " وقم الحديث: ١٩٣٣ منح البحاري علا وقم الحديث: ٥٥٣ سنن وَرْي "جه وقم الحديث: ١٧٠٨ اسنن أبوداؤد " ج ٢ وقم الحريث: ٣٨٠٣ سنن نسائل ع٤٠ وقم المصيف: ٣٣٣٤ موطالهم بلك "١٥٥٥ سنن كبرى لليمتى" ج٥ من ١٩٥٥ مصنف عبدالرزاق مديد المعم الكبير عهور قم المعت شد ١٦٦-١٥٥ من الد على رقم المديث ومديدا) في الد عد شاكر لا تعاب كداس معت كي مند مجع ب- (مند الد علوم المعارة بالمعتداله المعام المعلوم وادالهدت كابره ١١١١ه)

پیاڑئے والے درعوں سے حملہ آور جنگی جانور مراویں کفائل مدے سے بائقی کو مزی اور بھو بھی حرام ہیں۔ نیز

ہائتی کی کیلیاں بھی ہوتی ہیں۔ رسول اللہ بڑھی سے اس برتن کو دھونے کا تھم دیاہے ،جس میں کامنہ وال دے اور اس کی دجہ
یہ ہے کہ اس کا احلب جس ہے۔ اور احاب کوشت سے پیدا ہو تا ہے اس کے اس کا کوشت بھی نجس ہوا اور ہر نجس حرام ہوتا
ہے۔ اس سے واضح ہواکہ کے کا کھانا بھی حرام ہے۔

المم محدين اساعل عفاري متولى الاعبد روايت كرت يون

معرت ابو عربرہ جائے۔ بیان کرتے ہیں کہ نبی جھیز نے فرملا جب تم میں ہے کمی فض کے برتن میں کتا مند ڈال دے تو اس کو سات مرتبہ و مودک

" (مج البحاري عامر قم المدعد الاعام مج مسلم " جامر قم المدعد ۱۹۰ سنن ايوداؤد" جامر قم المدعد الا منن تروي " جامر قم المدعد ۱۹ سنن كبرى لليمنى " جام ص ۱۲۰ نديم "مستد احر" جامر قم المدعد ۱۸۳۳)

اور میرشارنے لکھاہے 'یہ مدیث می ہے۔ مطبور دارالی ید الفاحرد ۱۱ الله الله المامد) رسول اللہ علید سے کئے کی بھے کو حرام فرایا ہے اس سے بھی داشتے ہواکہ کما ملال نسی ہے۔ المام میرین اسامیل بخاری منوفی ۱۵ مدے روایت کرتے ہیں:

حضرت ابومسعود انساری دونی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ مجھیم نے کتے کی قیت فادشہ کی اجرت اور کابن کی شرعی ے منع فرملیا۔

ا المحيح البخاري من ته من رقم المحت عند ١٩٣٧ من من من من من المحت ١٥٧٨ من ابوداؤد من 17 رقم الحديث ١٣٣٨ من تذي من من رقم المحت و١٣٠٨ من نسائل من من أم المحت ٢٠٠٠ من ابن ماجه من أرقم المحت ١٣٥٨) فيزالم احرين شعيب نسائل من في ١٠٠٣ من دوايت كرتے بين:

حضرت ابو ہریرہ جھٹے۔ بیان کرے جی کے رسول اللہ میں کے فرایا کئے کی قیت مکابن کی شیر ہی اور فاحشہ کی اجرت طاال نمیں ہے۔ (سنن نمائل کے 2 کو قم الدے یہ میں سنن ابوداؤ و کی اور قم الدیث میں سے۔ (سنن نمائل کے 2 کو قم الدیث میں

رسول الله علی بات میان کے کو قتل کرنے کا تھم رہا اور شکاری کتے "کھیوں اور مویشیوں کی حفاظت کے کوں کے سوا اور مسی کتے کو رکھنے کی اجازت نمیں دی 'اگر کتے کو کھانا طال ہو آتو مطلقاً کتے کو رکھنے کی اجازت ہوتی۔

حضرت مبداللہ بن مغنی بویٹے بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بہجیرے فرمایا آگر کے اللہ کی محلوقات بیں ہے ایک مخلوق نہ ہوتے تو بیں ان (سب) کو قتل کرنے کا محم ریتا۔ اپس تم ان بی ہے کانے سیاہ کئے کو قتل کرود اور جن نوگوں نے کھیت شکار اور مویشیوں کے بغیر کنار کھا این کے اجر بی ہے جرووز ایک قیماط کم ہو تارہ گا۔

(ستن نسائل بی ارقم الحدیث: ۱۳۷۹ سنن رَدَی بیس رُقر الحدیث: ۱۳۹۰ می مسلم بیس رقم الحدیث: ۱۵۵۳ سنن ایوداؤد کی ۲ رقم الحدیث: ۲۸۳۵ سنن این باند کی ۲۲ رقم الحدیث: ۱۳۳۵ موطاللم بالک ۱۸۰۸ مند این ۲۲ رقم الحدیث: ۱۵۳۸ می الحقادی کی ۲۲ رقم الحدیث: ۱۳۸۹ می الحقادی کی البخادی کی در آن الحدیث در ۱۳۸۸ کی البخادی کی البخادی کی البخادی کی البخادی کی البخادی کارون کی کارون کی در البخادی کی البخادی کی البخادی کی در آن الحدیث در ۱۳۸۵ کی در البخادی کارون کی کارون کی در کارون کی در کارون کی در کارون کی کارون کی در کارون کی در کارون کی کارون کارون کی کارون کارون کی کارون کی کارون کی کارون کارون کی کارون کی کارون کی کارون کارون کی کارون کارون کی کارون کارون کارون کی کارون کی کارون کارون

وسول الله ما الله على المراكب جس مرس كما موس من فرشة واقل نيس موت أكر كة كا كمانا مال مو ياتو فرشة

مُبِيَانُ اللَّرِ أَنْ

اسے فرے نہ کہتے۔

الم مسلم بن تجلي قفيدى متوفى الماء روايت كرت بن.

المح مسلم " جه" رقم المدعث: ١٠٠٥ سنن الإداؤد" جه" وقم المدعث: عنه الم سنن تروى " جه" وقم المدعث: ٢٨١٥ سرد احر"

ج ٣٠ رقم المديث ١٠١١ من كبرى لليمتى عد ١٠١٠ قديم)

مہارت النص كے ماتھ آپ نے كا كھانے كو جرام فيل فريا! فيكن ان اطاب ب والت النص كے ماتھ كا كھانے كى حرمت ثابت ہے۔ بعض علاء نے لكھائے كہ كل كھانے كى حرمت مديث سے ثابت نسي ہے اس ليے ہم نے اس منا ميں اس قدر تنصيل كى ہے۔ نبى باتھ ہے نے ہاتھ كو حول كے كھانے كو بھى جرام فراديا۔

الم محدين اساعل بخاري متوفي ٢٥١ه روايت كرت بين

حضرت على بن الى طالب ويني بيان كرتے بين كدنى بين ين فيار في بنك فيبر كدن مورتول سے حدد كرنے كو اور بالتو كد حول كے كھلنے كو حرام فرماديا (بير حدث حضرت جابر اور حضرت مقدام بن محدى كرب رضى الله عنماسے ہى مردى ہے) (مي البحارى بن و تم الله عدد ١٩٢٦ مي مسلم عن ارقم الله عدد ١٠٠٥ من ابوداؤد " برا رقم الله عدد ١٠٨٠٨ من دار تعلى ا جرار قم الله عدد ٢٠٢٤ ١ من كيري الليمتى البوع و ايسار قم الله عدد ١٨٨٨)

الم محرين اساعيل يخاري متولى الاعد دوايت كرتين

حضرت عائشہ صدیقتہ رمنی اللہ عشامیان کرتی ہیں کہ نی جھیز نے فرملانیا نج (جانور) فاس ہیں بجن کو حرم ہیں ہمی گل کر ریا جائے گلہ چوا کچھو چیل محوالور باؤلا کل۔ (بعض روایات میں کچھو کی جگہ سانپ کاذکرہے)

(من الحلال عن من المحدث ١٩٠٥ من من من من المحدث ١٩٨٠ من المن المداور المداور

الم محد بن يزيد أبن ماجه من في سك عدد روايت كرت بن. حضرت ابن عمر رضى الله عنما بيان كرت بن كه كواكون مخض كملت كالأحلانك رسول الله من بير في اس كو فاس قرمايا

غيان القر أن

جلدموم

ہے۔ بد خداوہ پاک جانوروں میں سے قسی ہے۔ (سنن این ماجہ ع۲' رقم اللہ عدد ۱۳۷۸) نی مزیر نے چھکل کو بھی قامق فرمایا اور اس کو قتل کرنے کا تھم دیا ہے۔ اس ہے تابت ہو آ ہے کہ چھکل کو بھی کھانا ترام

الم محرين اساعيل عقاري حوفي ١٥١ مدروايت كري إن

حضرت عائشہ صدیقتہ رضی افتہ عشابیان کرتی ہیں کہ نبی عظیم سے چھکی کو ضویست قرملیا۔ ام شریک رضی اللہ عشا میان کرتی ہیں کہ نبی چھیم سے چھکیوں کو گل کرنے کا تھم دیا۔

(مي الواري عوارقم الديث:١٠٠٧-١٣٠٠ مي مسلم جوار قم الديث:١٣٣٩)

الم احدين عبل حولي المعدد دوايت كرت بين:

ابوالا موص بحقی بیان کرتے ہیں کہ ایک ون حقرت این مسود خطب دے رہے تھے۔ ای اٹناوی وہ اور رہ ایک مائپ گزر رہا تھا معزت این مسود نے اپنا خطبہ منقطع کیا اور اس کو لا تھی ہے ماد کر قتل کر دیا۔ پھر کما میں نے رسول اللہ عظیر کو یہ فرماتے ہوئے سناہے جس تھی نے کسی سائپ کو قتل کیا اس نے کویا اس مشرک کو قتل کیا جس کا فون مہاح تھا۔ اور اور شاکر نے لکھا ہے کہ اس مدیدہ کی مند میں ہے۔

(منداح بشرح احد شار مع ۱۰ قم الحديث: ۲۹۹۵ مطور ۱۳۱۲ مرد ۱۳۱۲ م)

ان احادیث ہے معلوم ہواکہ چوہا سانب چیکل اور کھو حرام ہیں۔ فضاء نے بن پر قیاس کر کے باتی حشرات الذر ض کو بھی

حرام قرار دیا ہے۔ نیز قر آن جیدی ہے:

ادروہ ان کے لیے پاک اور مرفوب چیزد ن کو طال کرتے میں اور ٹلیاک اور نفرت انگیز چیزد ن کو ان پر حزام کرتے ہیں۔

و يُحِلُ لَهُم الطَّيْبَاتِ وَ يُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ النَّالِيمِةُ وَ يُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ النَّالِيمِةُ الْمُحَالِقِينَ (الاعراف:20)

اور طبیعت سلیمہ حشرات الاوش سے نفرت کرتی ہے اور کمن کھائی ہے۔ اس لیے تمام حشرات الارض حرام ہیں۔ امام ابو بکرا حدین حسین بیستی حدتی ۵۸ مد لکھتے ہیں:

ہم نے نی بڑی سے وہ احلامت روایت کی ہیں جو سانب اور کھو کی تحریم پر دلانت کرتی ہیں۔ای طرح جو جانور ان کے عظم بس میں اور ان کے عظم بس ہیں اجن کو عرب خبیث قرار دیتے ہیں اور ان کو بلا اضطرار نسی کھاتے۔

(النسن الكبريل عجمه من ١٦١ ألجديده مطبوعدا والفكو "بيردت ١٦١١ماه)

نيزني ما الي التي التي التوام فرالياب اور كوند مشرات الارض على من سيب الم ابوداؤد سليمان بن اشعث مجمعة في متوفى هدامه ودايت كرتم بين.

صرت عبدالر من بن شل دونور بیان کرتے ہیں کہ وسول اللہ منظیر نے کوہ کاکوشت کھلنے ہے منع فرملا ہے۔ وسند مارا الر من بن شکل دونور بیان کرتے ہیں کہ وسول اللہ منظیر نے کوہ کاکوشت کھلنے ہے منع فرملا ہے۔

(سنن الإوادُورُ ج ۴ رقم الحديث: ٢٠٤١ ٢ مطبوعه وار الكتب العلمية البروت ١٢١٧هـ) علام المعالم المعالم على حالم على المعالم على المعالم على المعالم على المعالم على المعالم على المعالم المعالم

يو ' كيوالور بر بي حشرات الارش بن سے ين اس في ده بھي حرام ين الم شافعي بواور كوه كو مطال كتے ين ابي مائل في كو حرام فرمايا ہے۔

الم ابوداؤد سليمان بن اشعث متوفى هد جد روايت كرت بن:

حضرت خالد بن وليد بوين مان كرت بيل كر رسول الله بواليد في كو دول الحرول اور بالو كد مول ك كوشت كو كمان

طبيان القر آڻ

ے منع فرمایا ہے اور حیوۃ نے یہ اضاف کیا ہر کچلیوں والے در ندے سے منع فرمایا ہے۔

(سنن ابودادُ وعج ۴ و قم الحديث: ٥٩٠ ٣ معلود ربيروت)

نی مالی نے اومری مجیشے اور بھوے متعلق خصوصیت کے ساتھ مالیدی کا انتہار فرایا۔

الم الوعبدالله محدين يزيد ابن اجه متوفى الاعلام روايت كرتي بن

حعرت فزیمہ بن بڑے جائیے۔ ووایت کرتے ہیں کہ میں نے عرض کیا گیار سول اللہ اعمی آپ سے جنگلی جانوروں کے متعلق وچے کے لیے آیا ہوں 'آپ اوموری کے متعلق کیا فرماتے ہیں؟ آپ نے فرمایا اوموری کو کون کھائے گا؟ میں نے پوچھایار سول الله الب بھینے کے متعلق کیا فرائے میں؟ آپ نے فرالا جس می کوئی خرور کی مد بھینے کو کھائے گا؟

(سنن ابن لمند' ج۴ وقم المدعث ۱۳۵۰ ۴۳۰ سنن رَدَى 'ج۴ وقم المدعث ١٨٠١ سنن كبرئ الميمقي 'ج١١٠ وقم البرعث ١٩٩٣) مخصراالمديده)

الم ابر ميني همين ميني ترزي متوني اعله روايت كرتم ين

حضرت فريمه بن 20 يولي. ووايت كرت بين كه على في وسول الله يتجيد سيدي كمان كي متعلق موال كيا- آب في فر الا كياكوني محض يو كلا على من عرض في بعين على حفاق سوال كيد آب في فرالا كيابس مخص عن كوئي خراووه بعيزا كمائ كا؟ (منن رَدَى عَمَ وَمُ الحدث: ١٩٤١ من اين اب عَمَ وَمُ الحديث: ١٣٣٧)

اس مدعث کی مند ضعیف ہے۔اماعل بن مسلم ربعض محد ٹین نے جرح کی ہے الیکن کمی مدعث سے مجتزد کا استدالال

كرما بحي اس كي تقويت كاسب وو الب

ظامديے كى كىليوں اور بانتوں سے بھاڑتے ورئے والے ورئدے اور يرئے مجراور پائو كدھ الكاور خسواور مانب ' بچو ' بجو اورد يكر حشرات الارض كو كمانا قر آن اور مدے سے حرام ب-

سمندری جانوروں کے متعلق تنسیل یہ ہے کہ اہم شافعی اور اہم مالک کے نزدیک تمام مردار سمندری جانور مانال ہیں ' خواد فبط عرب اول یا شکار ہے۔ امام احمد کے زریک جو سمندری جانور فنکی میں رہے ہیں 'وہ بغیروزع کے طال نمیں جیسے کھوا اور جن سمتدری چانوروں میں بہتے والا خون شیں ہے۔ وہ بغیرنے کے حال بیں اور جن میں بہتے والا خون ہو 'ان کو ذیج كرنا ضروري بيائم الله الله كادلل بيا المعاب

أيحل لكثم صيد البحيرة طعامه متناعا تمارے اور مسافروں کے قائمہ کے لیے سمندر کاشکار اور

كُكُمُ وَلِلسَّيَّارُوْ(المائدونا؟) اس كاطعام طال كرديا كياب-

فقهاء احتاف کے نزدیک اس سے مراد سمندر کاشکار کرتا ہے اور حرام جانوروں کا بھی دیگر فاکدول کے لیے شکار کرتا جائز ہے۔اس سے مراد شکار کھلائیں ہے اور طعام سے مراو چھل ہے۔ ایک طائد اس مدیث نے بھی استدال کرتے ہیں۔ الم الوصيلي محمان عيلى ترفدي متوفى الا المد روايت كرت يل:

حضرت ابو مرورہ جوہوں بیان کرتے ہیں کہ ایک مخص نے سوال کیا گیار سول اللہ اہم سمندر میں سفر کرتے ہیں اور اہارے پاس پانی تھوڑا سامو تاہے اگر ہم اس پانی سے وضو کریں تو ہم بیاسے روجا کیں گے۔ کیاہم سمند و کے پانی سے وضو کر لیا کریں؟ رسول الله منجم نے فرمایا سمندر کایانی پاک کرنے والدے اور اس کامردار طال ہے۔ (نقماء احتاف اس مردار کو چھل پر محمول (J.Z.)

(سنن ترندي على وقم المدينة ١٩ مسنن الإداؤو على وقم المدينة « ٨٥ سنن نسائل عنه وقم الدينة « ٥٠ سنن ابن ماجه عن وقم اله من ١٨٦٠ الموطاء و قم الحديث: ٣٣ من احد عه و قم الحديث ١٣٠ و قم الحديث ١٣٠٤ المستورك على ١٣٠٠)

نتهاه احتاف اس مدعث بس بحي مردار كو محلي ير محمول كرت بي اوراس ير قريد بيه مديث ب

الم أبو عبد الله محمد تن يزيد أبن ماجه منوفي سما عدد روايت كرتي بين:

حضرت عبدالله بن عمرومنی الله عنمایان كرتے بيل كه رسول الله علي نے فرمایا جارے ليے دو مردار طال كے كئے بيل ا م اور نذي - (ستن ابن ماجه " ج ۴ رقم الهريث: ۱۳۴۸ مند احد " ج ۴ رقم الهريث: ۱۵۵۷ مند احد " ج ۴ رقم الهريث: ۱۵۵۷

الم ابو منیف کے زندیک چھل کے سواتمام سمندری جانور حرام ہیں۔ وہ قرماتے ہیں کہ چھلی کے سواتمام سمندری جانور خبيث بي الين فيرم في بي اور قر آن جدي ي

ويتحرم عَلَيهم التحب آيث (الاعراف ١٥٨) اور نایاک اور نفرت انگیز چیزوں کوان پر حرام کرتے ہیں۔

جو چھل طبعی موت سے مرکر سطح آب پر آ جائے اتر اللائ کے نزدیک وہ بھی طال ہے اور الم ابو صنیفہ کے نزدیک وہ حرام ب الم الوصية وحمد الله كى دليل يه صف ب

الم ابوداؤر سليمان بن اشعث متونى ١٥٥ مد روايت كرح يرب

معرت جابر بن عبدالله معتد بان كرتے بيل كه رسول الله معليد نے فرمايا جس جزكو سمندر بهينك دے يا جس سے مندر کاپانی ہٹ جائے اس کو کھالو اور جو پانی ہیں مرکزادیر آ جائے سوتم اس کو نہ کھاؤ۔

(ستن ابوداؤ د ع ع و قم الحديث: ٣٨١٥ "سنن ابن ماجه ع ع ار قم الحديث: ٣٢٣٧)

محد تمین نے کماہے اس مدیث کی مند جس کی بن سلیم الطائفی ہے الور بیر ضعیف راوی ہے۔ لیکن ایام بہتی نے اس کو ويكر متعدد أساتير ك ساتھ بھى روايت كيا ہے۔ (سن كرئ جسام سام ١٠٠٠ الديده) علاده أزي جب طت اور حرمت ميں تعارض او تو حرمت کو ترجی دی جاتی ہے۔ الذا حلت کی روایات پر یہ صدید رائے ہے۔

خنگی اور سمندری حرام جانورول کی مید تنعمیل ہے ان کے علاوہ باتی تمام جانور حلال ہیں۔ بشر ملیک ان کو اللہ کے نام پر ذیج کیاجائے۔اس کی تغمیل (المائدہ ۱۳) پیں گزر چکی ہے۔

الله تعالى كاار شاوع: اور الل كتاب كالحدام تهاد على علال باور تهارا خدام ان كے ليے حال ب-

اہل کماب کی تعریف اور ان کے ذہیجہ کی محقیق

جمهور نقهاء اسلام کے نزدیک اس آیت جی طعام سے مراو ذبیر ہے۔ غلہ ' کھل اور میوہ جات و فیرہ مراد نسیں جی ' کے نکہ ذیجہ وہ ہے جس کے طبام ہوتے میں انسان کاوطل ہے۔ باتی کھلنے پینے کی چزیں تمام اوگوں کے لیے مباح ہیں۔ اس لیے ان کی الل كتاب كے ماتھ تخصيص كى كوئى وجہ نہيں ہے۔ منقرب ہم بعض آثار نقل كريں مے جن ہے يہ واضح ہو جائے گاكہ يهاں طعام ہے مراو ذبائع ہیں۔

الل كتب سے مراديبود اور نصاري بين جن كے انبياء عليم السلام ير الله تعالى في ورات اور انجيل كونازل فرمايا۔ كيونك زمانہ نزول قرآن میں یمودی معرت عزمر کو اور عبسائی معرت میسیٰ کو خدا مائے تھے 'اس کے باوجود اللہ توالی نے ان دونوں کو الل كتاب فرمايا:

و قَالَتِ الْيَهُودُ عُرَيْرُوابِنُ اللَّهِ وَقَالَتِ . اور میودی کماک عزم الله کابیا ہے اور نصاری کے کماکہ النَّصُورَى الْسَيِيعَ ابْنَ اللَّهِ (التوبه: ٣٠) -4121218 الم ابر جعفر فحدين يروطرى متونى ١٠٩٥ ائى سند كما تد موايت كست ين ابن شاب سے نصاری عرب کے ذبیر کے متعلق سوال کیا گیا تو انہوں نے کما این کاذبیر کملیا جائے گا کیو تک وا دین میں ال كتب ين اور نزع ك والت الله كانهم لينة ين-(جامع البيان على من اسه مطور عاد الفكر أورت الاسعد) حضرت على بريش في المناري بو تخلب كذبير ك متعلق قرالية "و، منال نعيم ب"-عبيده ويان كرتے بيں كه حضرت على جريش نے فرمايا فعمارى بنو تغلب كے ذبحہ كوند كھاؤ كو تكدوه شراب پنے كے سوا فعرانيت كاور مى يزر عمل ديس كرت (باس البيان عام معدامطور ووق عامد) لکین اکثر فقهاد تابعین مثلاحس بعری عکرمه مخلوه "سعیدین المسیب" هعبی اور این شالب و فیرونساری بنو تغلب کے

ذیجہ کو کھانے اور ان کی موروں ے فکاح کراچی کوئی حرج نسی مصفے تھے۔(جامع البیان عامی اس طبع بیوت) ابن زید سے سوال کیا گیاکہ عیسائیوں نے ہم اللہ چور کر جائور کو کر جائے لیے نے کیا۔ آیا اس کا کھانا جائز ہے یا نسیں؟ الهول في كما الله تعالى في المرع في على تلب ك طعام كوطال كياب لور اس يس سع كمى ييزكو متلى نبس كيا (جامع البيان علام معااطيع بيروت)

علامه ميد محراش ابن علدين شاي متونى من معد للمع بين

علامہ زیلی نے کیا ہے کہ جو مخض آ سانی دین کاستقد ہو اور اس کے پاس کیا ہو ایسے معرت ایراہیم علیہ السلام کے محائف اصرت شبث کے احترت واؤد کی زادر ہوا وہ اہل کیک جس سے ہور ان کے ذیعے کو کھانا جائز ہے۔ ستمنى مي ذكور ب كدان ك وزير ك حال موت يس ية تدب كدوه مي كالوبيت كا مقيده تدركة مول اوراي کے موافق عن الاسلام کی مبسوط میں نہ کور ہے کہ اگر وہ مسیح کی الوہیت یا عزیر کی الوہیت کا مقید ، رکھیں تو واجب ہے کہ ان کا انجہ ند کھلا جائے اور ندان کی مور توں سے نکاح کیا جائے۔ آیک قول ہے ہے کہ اس پر نوی ہے لیکن دلیل کے اعتبار ہے ان کا ذبیر کھنااور ان کی مور توں ہے نکاح کرنا جائز ہے۔ البحر الر اکن میں پڑکور ہے کہ ند مہب ہے کہ ان کا ذبیرہ نور ان کی مور توں ے نکاح کرا مطابق جائز ہے۔ کیو تکہ حمس الائمہ مرضی نے معموط علی ذکر کیاہے کہ نعرانی کا ذبیعہ مطابقاً طال ہے وا ووہ تین میں کے تیرے کا قول کریں یا نمیں میونکہ قرآن مجیدئے ان کے بلسام کھانے اور ان کی مورتوں سے نکاح کرنے کی مطلقاً ا مبازت دی ہے۔ علامہ این عام نے بھی اس قول کو رائع قرار دیا ہے اور سی دلیل کا نصف ہے۔ کید کلہ اہل کالب پر مشرکین کا

اطلاق نس كياجا آ اور مشرك اس كو كت بي جو فيرافله كى عبادت كسد اور كمى في كى الناع كار فى شراو-(د د الحار على ٢٨٩ مطوعه د ار أحيا والتراث العربي أجرد ت ٢٠٩١هـ)

نیز علامداین جام نے نکھاہے کہ لوٹی میرہ کے بلا ضرورت بن کاذبیحہ کھلئے 'نہ ان کی مور توں ہے نکل کرے۔ (د د المحاد الج ۵ من ۱۸۸ مطبوعه بيرد ت ٢٠٠٧هـ)

اگر کوئی مخص کسی عیمانی سے فت سے سے کہ وہ مسج کا پام لے کرفٹ کر رہاہے "قواس کا ذبحہ کمانا جائز نہیں ہے" اور اگروہ اللہ كايام لے كرون كر ك اور اس سے ارادہ مع كاكرے و فقماء نے كما ب كر اس كاذبير كھاليا جائے كا- إلى ااكروه صرامتًا کے اللہ کے ہم سے جو تمن میں کا تیسرا ہے او پر اس کا ذیجہ کمانا جائز نسیں ہے۔ (ہندیہ) اور اس سے یہ معلوم ہوا کہ

جيان القر ان

جب عيمالى ذع كرك في آئة واس كاذبير كهاليا جائة كاند (معليه) جيماك اس في صرف الله كانام ليكر ملائة ذع كيا و-(دوالعتار عهام ١٨٨ مطبوعه واراحيا والتراث العربي اليروت ٢٠٠١مه)

علامد فيرين على بن محر صلفي متوتى ١٩٠٨ المد لكية بن:

فیرالل کتاب کاذبیحہ جائز نمیں ہے۔ خواہ وہ بت پرست ہو مجوی ہو ' مرتہ ہو ' جن ہویا جری ہو۔ آگر یمودی یا عیسانی ' مجوی ہو جائے تو اس کاذبیحہ جائز نمیں ہو گالور آگر جموی میںودی یا عیسائی ہو تو اس کاذبیحہ جائز ہو جائے گا۔

(وو مخاوم م دوالحتار "ج ۵ م ۱۸۹ مطبوعه بيروست " ۵ ۱۳۰ م)

اہل کتاب مردوں سے مسلمان عور توں کے نکاح ناجائز ہونے کی وجہ

الله تعالی نے وزید کے بیان میں جانبین سے تھم قربانی کہ اہل کہ اور تمہار نہید تمہارے لیے طال ہے اور تمہارا وزید ان کے اور تمہار نہید ان کے طال ہے اور تکاح کے متعلق قربانا اور اہل کہ کی حور تی تمہارے لیے طال ہیں کہاں یہ نمیں فربانا کہ اور تمہاری حور تی ان کے لیے طال ہیں۔ سو نکاح میں صرف ایک جانب سے طلت ہے اور وجہ فرق کا ہر ہے کو تکہ مسلمانوں اور اہل کہ بی دونوں جانب سے جواز کہ اور اور اہل کہ بی دونوں جانب سے جواز ہو گااور مسلمان حور توں کا اور اسلمان حور ت پر کافر مرد کا غلبہ ہو آبادر مسلمان حور توں کا الل کی سے نکاح جائز ہو آبادر موجر یوی پر حاکم ہو آب تو مسلمان حور ت پر کافر مرد کا غلبہ ہو آبادر میں مراح اللہ تو اللہ کا ارشاد ہے:

وَ لَنْ يَحْمَعُلَ اللَّهُ لِللَّكَامِرِيْنَ عَلَى اورالله كافرول كَـلَّ سلمانون كومظوب كرف كاكوتى اورالله كافرون كـلَّ سلمانون كومظوب كرف كاكوتى المعرفين الله النسساء ١٣١٤) : واستريم كرنس بنائك كالـ

و میر کفار کے برعش اہل کتاب کے ذبیحہ کے حلال ہونے کی وجہ

دیگر کفار کے برتھس صرف الل کاب کے ذبیعہ کو اسلام بیں طال کیا گیاہے۔ اس تخصیص کی وجہ یہ ہے کہ اسلام اور الل کاب کے دین بیں متعدو امور مشترک بین ہیں وونوں آسانی فرجب ہیں۔ افلہ تعدانی فرشت انجیاء علیم انسلام آسانی کابیں اقیامت مرنے کے بعد الحسن اور حرمت بی این کابیں آسانی مرنے کے بعد الحسن اور حرمت بی این قیامت مرنے کے بعد الحسن اور حرمت بی این میں کی امور مشترک ہیں۔ اسلام بیں موار جانور جس کا گلا گھوٹا گیا ہو ، جس کو در نے سے بھاڑا ہو ، جو بنوں کے لیے ذرع کیا گیا اور دونوں اور دونوں کی جے جو جانور فود بخود مرکیا ہو اور خون اور دھنوں کی جے جو جانور فود بخود مرکیا ہو اور جس کو در ندر کی حرمت بنیان کی ہے۔ جو جانور فود بخود مرکیا ہو اور حرک کو در ندر کی طرحت بنیان کی ہے۔ جو جانور فود بخود مرکیا ہو اور جس کو در ندول سے بھاڑا ہو این کی ترمی ہوئی کاب مقدس (یا کیل) جس کی حالی بھی کھی ان کی حرمت بنیان کی ہے۔ جو جانور فود بخود مرکیا ہو اور جس کو در ندول سے بھاڑا ہو این کی تربی آور کام جس لاؤ ' پر اسے تم کی حالی بھی نے مکال

(راناهد نامه احباد الباء) آيت ٢٣ مطبوعه باكن وماكن الابور)

اور سور کو کیونک اس کے پاؤں انگ اور چرے ہوئے ہیں ' پروہ جنگل نسیں کر آا وہ بھی تسارے نے عالی ہے ' تم ان کا کوشت نہ کھنٹ (پرانا عمد نامہ 'احباد' باب و' آیت اسے 'مطبوعہ یا کئل سوسائی' فاہور)

مر فیر توموں میں ہے جو ایمان لائے 'ان کی بابت ہم نے یہ فیصلہ کرکے لکھا تھاکہ وہ صرف بتوں کی قربانی کے گوشت سے اور لہواور گلا محوشے ہوئے جانوروں اور حرام کاری ہے اپنے آپ کو بچائے رکھی۔

(الامريام ومولون كا علل يإب: ٢١ أعده ١٠ مطوع با كل موساكل الامور)

اہل کماب عور توں ہے مسلمان مردوں کے نکاح طلال ہونے کی وجہ اس تخصیص کی بھی ہے وجہ ہے کہ اسلام اور اہل کتاب کے دمین میں بنیادی امور مشترک ہیں۔ اللہ تعالی کو' فرشتوں کو' آسائی تابوں کو انبیاء علیم السلام کو مرفے کے بعد اٹھنے کو ایزاد سزاکو اور جنت وووزخ کویے سب لمنے ہیں۔اس کے عظاوہ جن رشتوں سے اسلام میں لکاح ترام ہے احل کیاب کے زویک بھی ان سے نکاح ترام ہے۔ موجودہ چھی ہوئی کیاب مقدس ہیں لکھا ہوا ہے:

ق افی ال کے بدن کو جو جرب باپ کا بدن ہے " ب یده نہ کرنا کو تک وہ تین مال ہے "ق اس کے بدن کو بے یده نہ کرنا کو ق اپنی بال کے بدن کو جا ہے وہ تھرے باپ کا بدن ہے وہ آئی میں کے بدن کو جا ہے وہ تھرے باپ کا بدن ہے وہ آئی میں کو بیا ہوں گو ہے یہ وہ تھرے باپ کا بدن کو جا ہوں گو ہوا ہوں گو ہوں ہوا ہوں گو ہوں کو بیا ہوں گو ہوں کو بیا ہوں گو گو گو کہ ان کا بدن کو جا بردہ نہ کرنا کو تکہ ان کا بدن کو جا بردہ کرنا کو تکہ ان کا بدن کو جا بردہ کرنا کو تھے بردہ نہ کرنا کو تکہ دہ تھرے بال کے بدن کو جا بردہ کرنا گو تکہ ان کا بدن کو جا بردہ کرنا کی تھر ہوں گو جا بردہ نہ کرنا گو تا ہوں گو ہوں گو ہوں گو جا بردہ کرنا گو تھر کہ ہوں گو جا بردہ نہ کرنا گو تھر دہ تھر کہ ہوں گو جا بردہ نہ کرنا گو تھر کہ ہوں گو جا بردہ نہ کہ ہونا کا بیا کہ ہونا کا بیا کہ ہونا کا بیا کہ ہونا کا بیان ہو تھر کہ ہونا کہ ہونا کا بیان ہونا ہوں تھر کہ ہونا کہ ہونا کہ ہونا کو جا بردہ نہ کرنا گو رہ ہوں گو ہوں گ

(يراناهمد بامه مح حبار مياس: ١٨ مح ايت ١١- ٢ مطبوعه باكيل موساكن الاجور)

آزادادر پاک دامن عور تول کی تخصیص کی دجه

اس آےت میں اللہ تعالیٰ نے قربایا ہے اور آزاد پاک وائس مسلمان مور تبی اور تم سے پہلے اہل کتاب کی آزاد پاک وائس مور تبی (بھی تمادے لیے طال میں)

نیز اللہ تعالی فے فریا ہے در آنحانیک تم ان کو نکاح کی قیدیں لائے والے ہوا نہ اعلانیہ بدکاری کرنے والے اور نہ نفیہ طریقہ سے آشا بنائے والے بور جس نے ایمان (لانب انکار کیا تو بے شک اس کا عمل ضائع ہو کیا اور وہ آخرت میں فقصان افھائے والوں میں سے سب (المائدة ۵)

اس کامنی ہے کہ تمارے کے مطان آزاد موروں سے فکاح طال کیا گیاہے جبکہ تم آزاد موروں سے فکاح کرکے اپنی آپ کو زفا سے بچاؤ 'نہ ظاہرا بدکاری کرد اور نہ خفیہ طرفقہ سے بدکاری کرد لین مجے اور قانونی طرفقہ سے خواہش خس پرری کرد کو دو اعلانے اور خفیہ طرفقہ سے بدکاری کرد کی اگر کمی محض نے ان ادکام شرعہ کی جائز سمجہ کر فاللہ ت کی توود کا فرہ و جائے گا۔ دنیا بی اس کے قبل ضائع ہو جا کی گے اور آخرت میں دو عذاب کا مستحق شرعہ کی جائز سمجہ کر فاللہ ت کی توود کا فرہ و جائے گا۔ دنیا بی اس کے قبل ضائع ہو جا کی گے اور آخرت میں دو عذاب کا مستحق ہوگا ہی آئے کہ دیا ہے گا مائل ضائع ہو جا کی گے کہ درخاوے تمام اعمال ضائع ہو

شكر ادا كد ٥ آیت وضوعی سابقه آیات سے مناسبت انان کے میں نقافے دد چروں میں مصروں۔ کملے یے کی چری اور عمل اندوائ۔ اس سے پہلی آغوں میں اللہ تعالی نے بنا تھاکہ کمنے پینے کی چزوں بی اس کے لیے کیا چیک طاف بیں اور کیا چیس جوام بیں اور جنسی خوابہ سول کی محیل کے نے کون ی عود تی اس کے لیے طال ہیں اور کون ی عور تی عرام ہیں۔اور اس آیت علی یہ متایا کہ ان تعمول پر حراوا

نے کے لیے اس پر اللہ تعلق کی عبادات قرض ہیں اور ان عبادات میں سب سے بھی قمازے اور تماذ کی شرط طعادت ہے اور

طمارت مسل اوروضوے عاصل ہوتی ہے اور آگر پائی نہ ل سکے قوطمارت تھم سے عاصل ہوتی ہے۔ اس لیے اس آیت میں وضو اعسل اور تھم کابیان قربلا ہے۔

الم ابوصيني جمين ميني ترفري متوفي 24 المدروايت كرتي إل

حضرت ابن محروض الله منما بيان كرتے بيں كه ني جي يا كے فرمايا كه بغير طمارت كے نماذ قبول نسي بوتى اور خيانت كے مال (مال حرام) سے معدقہ قبول نسي بوتك بير مديث اسمح الاسائيد ہے۔

(سنن تزندی؛ دقم الحدعث: المح مسلم" دقم الحديث: ۱۳۷۰ سنن ابن ماجه" دقم الحديث: ۱۳۷۷ مستد ابو " جا" دقم الحديث: ۱۳۷۰ سنن کبری للیمتی، چههم ۱۳۷۵ سنو الحدیث الحدیث میری المناعثی، چههمی ۱۹۱۹

نيزالم احمين خبل موني احده روايت كرت ين

معرت جارین عبدالله رمنی الله عنماردایت كرتے بين كه رسول الله علي سن فرمايا جنت كى بالى نماز ب اور نمازكى بالى طمارت ب

علامداج محرشاكر متوفى عدم العدف كمااس مدعث كي مد حسن ب-

(منداحر مختيل احد شاكر على الرقم الحديث ١٣٥٠، مطبوعه القاجره)

آيت د ضو كاشان نزول

المم محدين اسماعيل بخارى متوفى ٥١ مده روايت كرت ين

حضرت عائشہ صدیقہ رمنی اللہ عنما بیان کرتی ہیں کہ مقام بیداہ میں میرا بار کر کیا اس وقت ہم مدید منورہ میں داخل ہو
دے تھے۔ نبی ہی بی ہے او ختی کو بھایا اور او ختی ہے اتر گئے 'آپ نے میری گود میں سرر کھااور سوگئے۔ حضرت ابو بر آئے اور
انہوں نے ذور سے بھے گھونے مارے اور کھا تم نے تمام لوگوں کو بار کی وجہ سے ٹھمرا دیا ہے۔ رسول اللہ باتین کے آرام میں
عفل پڑنے سے بھے موت کی طرح لگ رہاتھا' ملا تکہ حضرت ابو برنے بھے بخت تکیف پنچائی تھی 'پر لی برار ہوئے'
اس وقت میں ہو بکی تھی 'بانی کو خلاش کیا کیا تو بانی نہیں ملا' اس وقت سے آیت نازل ہوئی 'آبا بھا اللہ بین احسوا اوا قسمندم
الی وقت میں ہو بکی تھی 'بانی کو خلاش کیا کیا تو بانی نہیں ملا' اس وقت سے آیت نازل ہوئی 'آبا بھا اللہ بین احسوا اوا قسمندم
الی المصلوۃ '' الا یہ (المسائدہ نہ) حضرت اسیدین حضرت کمااے آل ہو کمااللہ نے توگوں کے لیے تم میں برکت رکی

(مح البطاري "ج٥" رقم الحديث: ٨٠٣٩ مطيوعه وار الفكر "بيروت)

اس آیت میں دخواور تیم دونوں کاذکر ہے۔ تیم کاذکر سور ق انساء میں بھی ہے اور اس آیت میں بھی ہے۔ اس میں اختلاف ہے کہ حضرت عائشہ رضی افتد صنعاکے بار مم ہونے کے موقع پر سور ق انساء کی آیت تازل ہوئی بھی یا سور ق الما کدہ کی ذری تخصرت عائشہ رضی افتد صنعاکے بار مم ہونے کے موقع پر سور ق الما کدہ کی آیت نازل ہوئی تھی۔ امام بخاری کی اس روایت سے بھی میں ظاہر ہوتا ہے۔

الم بخارى سف مدعث ٢٢٣٩ على عفرت عائشه صديقة رضى الله عنهائ روايت كياب كرالله في حيم كى آيت نازل كر دى اوراس آيت كى تعين نبيس كى اور فدكور العدر روايت عن تصريح كردى كديد سورة المائده كى آيت ب-

(في الباري عن اص ٢٣٧ ، مطبور لايور عيرة القاري عيم عن من مطبور مصر)

حافظ ابوعمرو يوسط بن عبدالله بن عبدالبرمالكي متوفى ميهمه كليج بن معرت عائشه رمني الله عنما كابيه سفر غزوه مو يسبع

میں اوا تھا'جو بنو مصطل بن فراعد کے ظاف تھا'یہ واقعہ چہ جری کا ہے۔ ایک قول یہ ہے کہ یہ پانچ جری کاواقعہ ہے۔ (الاحتد کار 'ج موسی مسلومہ موست الرسالہ 'جروت ۱۳۱۳ء)

آیت وضو کے نزول سے پہلے فرمنیت وضو کابیان

اس جگر آیک بحث سے سے کر آبت وضو تو پانچ یا چھ جری میں نازل ہوئی اور اماز ابتداء وی کے ساتھ مکہ میں فرض ہو گئ تھی اقوابتداء میں نماز وضو کے ساتھ پڑھی جاتی تھی یا بلاوضو ؟

مافظ ابن عبد البرماكل حول سيسمد لكية إن

دسرت عائشہ رضی اللہ عندا لے جو قربا ہے: "مجراللہ نے تھم کی آ عت نائل کردی "اس سے مراده آ عت وضو ہے جو سورة الما کده يس ہے۔ يا وہ آيت ہے جو سورة النساء يس ہے۔ ان وہ آجوں کے سوالور کی آيت يس تھم کاؤکر نسيں ہے اور يہ داؤوں منی سورت يحل فرض نسي بواقعلہ ہی جس طرح مستفين سرت داؤوں منی سورت تي جي اور حمل بنايت بي محمر من بي محمد من الما فرض بول ہے اور قسل جنايت بي مكر جن فرض بوا ہے اور يہ كہ آپ کے نزد يك يہ امر محمق ہے کہ لي بناور يہ کہ جی الما فرض بول ہے اور قسل جنايت بي مكر جن فرض بوا ہے اور يہ كہ آپ لے خرف بول ہے اور قسل جنايت بي مكر جن فرض بوا ہے اور سے كہ آپ المحمد من اور يہ وہ امر ہے کہ اس سے كوئى عالم بي جوالف نسيں ہے اور سواسے بعث وحرم كے اس كى كوئى جا بي منافست نميں کرے گھرالاستذ كاور جن مناه مطرح موست الر مالہ اجدت معمدی

علامه بدر الدين محود بن احمد بيتى حنى متونى ١٥٥٥ والعيدين:

علامد سفاتی نے اس مسلم پر طویل بحث کی ہے۔ جس کا ظامہ یہ ہے کہ وضو کرنا ان پر لازم تھا اور تیم کی آیت سورة الما کدہ ش ہے اور سورة الشماہ بیں ہے اور یہ دونوں من سورتی ہیں اور اس سے پسلے کوئی نماز بغیروضو کے سروع نہیں تھی۔
الما کدہ ش ہے اور سورة الشماء بی ہو دونو کا ذکر نہیں کیا کی تکہ تھم کا تھم وضو کے تھم کی فرع ہے۔ ایک قول یہ ہے کہ پسلے اس نیے جب کہ اس نے بادہ کا دہ حصد نازل ہواجس بی وضو کا ذکر ہے اور پر اس آیت کا دہ سراحمہ نازل ہواجس بی تھم کا ذکر ہے۔ پر اس آیت کا دہ سراحمہ نازل ہواجس بی تھم کا ذکر ہے۔ پر اس آیت کا دہ سراحمہ نازل ہواجس بی تھم کا ذکر ہے۔ پر اس ایک نازل ہوا ہوں کہ اس کے تعبیر کیا کہ اس موقع پر بی مقدود تھا (علامہ بینی فرائے ہیں) می کتا ہوں آگر یہ اوا اور صورت عائزہ نے بی اس کے تعبیر کیا کہ اس موقع پر بی مقدود تھا (علامہ بینی فرائے ہیں) می کتا ہوں آگر یہ اور سورا دا قدمت مالی المصلوة فاغسلوا و حود کہ وابدیہ کے الایہ (السالنہ و:۱) تو ان تم المات میں اسسوا ادا قدمت مالی المصلوة فاغسلوا و حود کہ وابدیہ کے الایہ (السالنہ و:۱) تو ان تم المات میں شرکے۔ الایہ (السالنہ و:۱) تو ان تم المات میں شرکے۔ الایہ (السالنہ و:۱) تو ان تم المات میں شرکے۔ الایہ (السالنہ و:۱) تو ان تم المات میں شرکے۔ الایہ (السالنہ و:۱) تو ان تم المات میں شرکے۔ الایہ (السالنہ و:۱) تو ان تم المات میں شرکے۔ الایہ (السالنہ و:۱) تو ان تم المات میں شرکے۔ الایہ (السالنہ و:۱) تو ان تم المات میں شرکے۔ الایہ (السالنہ و:۱) تو ان تم المات میں شرکے۔ الایہ (المالنہ و المالیہ و ال

اس مبارت کا ماصل ہے ہے کہ وضو کا تھم پہلے سنت سے تابع تعااور یہ آےت بود میں ازل ہو لی ہے۔ علامہ محدین علی بن محد صکفی حنی حوثی ٨٨٠ ملد لکھتے ہیں:

آیت و ضواجه ای آی و ضام ایل میرت کااس بر اجماع به که و ضواور حسل که می نماز کے ساتھ فرض ہو مجنے تنے اور تی باللہ بنے بیجاد نے بہتے ہوئے ہے۔ اور تی باللہ بنے بیجاد نہیں پر می ایک جم ہے کہا شریعت میں بھی وضو فرض تھا کیو تک نی جہر نے فرایا ہے میرا وضو ہے اور اصول افتہ میں ہے مقرر ہے کہ جب اللہ اور اس کا دسول افتہ انکار کے کوئی تصد میرا وضو ہے اور اس کا حول افتہ انکار کے کوئی تصد بیان کریں اور اس کا حق طاہر نہ ہو او وہ جی اعاد کی شریعت ہے اور اس آیت کے فرول کا بدقائدہ ہے کہ جو تھے پہلے جابت ہوچا کا مقرر اور البت کیا جاست کے الدر الفتار مع دوالوں میں معدم معلور دارانیاء افرات العمل میروت کے معدم الدر الفتار مع دوالوں میں معدم معلور دارانیاء افرات العمل میروت کے معدم الدر الفتار مع دوالوں مقرر اور البت کیا جاست کیا جاست کے الدر الفتار مع دوالوں میں معدم معلور دارانیاء افرات العمل میروت کے معدم الدر الفتار مع دوالوں مقرر اور البت کیا جاست کیا جاست کے الدر الفتار مع دوالوں کا مقرر اور البت کیا جاست کی جاست کیا جاست کی جاست کیا جاست کی جاست کی جاست کی جاست کی جاست کیا جاست کیا جاست کی جاست کیا جاست کی جاست کی

شرائع سمائفتہ اور کی دور میں فرمنیت و ضو کے متعلق احادیث الم علی بن عمردار تعنی متونی ۱۳۸۵ روایت کرتے ہیں:

حضرت ابن عمرومنی اللہ عنما بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ منظیم نے پانی منگوایا اور ایک ایک مرتبہ اعضاء وضو کو وصویا' پھر فرمایا: میہ وضو کا وہ طریقہ ہے جس کے بغیر اللہ تعالی نماز کو قبول نہیں کر آلہ آپ نے پھرپانی منگوایا اور دو دو مرتبہ اصضاء وضو کو دصویا' پھر فرمایا: جس نے اس طرح وضو کیا' ہس کے لیے دگنا اجر ہے۔ آپ نے تھوڑی دیر کے بعد پانی منگوایا اور اس سے اصضاء وضو کو تین تین بار دھویا اور فرمایا سے میرا وضو ہے اور بھی سے پہلے انہیاء کا وضو ہے۔

(سنن داد تفنی کیا وقم الدیشد ۲۵۷٬۲۵۷٬۲۵۵٬۲۵۳٬۳۵۳ سن این باید و قم الحدیث ۱۳۲۰ المیم الاوسلا و قم الدیث: ۳۲۷۳٬ سنن مجری للیصفی بیامس ۸۸)

اہم دار تعنیٰ نے اس مدیث کو متعدد اسائید کے ساتھ روایت کیا ہے ' برچند کہ اس مدیث کی اسائید ضعیف ہیں لیکن تعدد اسائید کی وجہ سے وہ حس افتح و ہے۔

ای مدیث بیل به تفریح به انبیاء سابقین کی شریعت بی بھی د ضو مشروع تعلد الم احمد بن منبل متونی احدید دوایت کرتے ہیں:

حضرت ابو جرید بی فرد بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ علی ہے فرلما کہ حضرت ابرائیم نے صرف تین (ظاہری اور صوری) جوٹ بول نے بہائیں باطل فداؤں کی طرف بلایا گیا تو انہوں نے کہا اسی سقیم میں باد بوں اور انہوں نے کہا" معلد کسیر ہم ھذا ان کے اس بڑے نے یہ کام کیا ہے" اور انہوں نے (حضرت) مارہ کے متعلق کمایہ میری بمن ہے 'حضرت ابرائیم ایک بہتی میں مجے جس میں ایک جابر بؤ ثلہ تھا اس کو بتایا گیا کہ آج رات ابرائیم (علیہ السلام) سب سے حسین حورت کے ماتھ اس فرمیں واقل ہوئے ہیں 'اس باو ثلہ نے ان کے پاس اپنا برکارہ بھیجااور مج جہا تمہارے ماتھ کون ہے؟ حضرت ابرائیم نے کہا 'مید میری بس ہے۔ اس نے کہا اس کو بھیج دو۔ آپ نے ان کو اس کے ساتھ دواتہ کیا اور فرمایا: میری بات کو جمنونا نہیں '

استد احد اجه مع موجه مع الديم على الديم على الديم على مناكر في كما بك ال مدعث كي سد مي به مع علاى المي مسم

سنن ابوداؤد' سنن ترفری' اور سند ابو بعلی بی بی به مدیث انتشار سے مردی ہے)۔ سند احد بتخیل احد شاکر' جه' رقم الدیث: ۱۹۲۳ مطبوعہ وارائدے نا ابرد ۱۹۲۱ می)

اس مدیث میں یہ تصریح ہے کہ معنرت ابراہیم علیہ السلام کی شریعت میں بھی وضو فرض تھا کیونکہ معنرت مارہ نے وضو کرکے نماز پڑھی تھی۔

المام محمرين أماميل بخاري متوفي ٢٥١ه روايت كرية بين:

حضرت ابو جریرہ جویش بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بچھ نے فرلیا کہ بنو اسرائیل جن ایک شخص تھاجس کو جریج کہاجا یا تھا وہ نماز پڑھ رہا تھا اس کی مان نے آگر اس کو بلایا وہ اس کے بلانے پر نسیں گیااور کھا کیا نماز کی حالت جس جن اس کو جو اب دول ؟ اس کی مان آئی اور اس نے کھا اے اللہ ! اس پر اس وقت تک موت طازی نہ کرنا جب تک ہے بد کار حورتوں کو نہ دیکھ لے ۔ جریج اپنے گرجا جس عملوت کرتا تھا ایک حورت نے کھا جس جریج کو فقتہ جس ڈائوں گی اس حورت نے اس کو گناو کی دخوت دی جریج اپنے گرجا جس کے بدا ہو گیا اس نے دخوت دی جریج کا تکار کیا۔ اس نے ایک چواہے ہے اپنی خواہش ہوری کرئی اس حورت کے باس چر پر ابھا ہو گیا اس نے لوگوں سے کہا ہو ہے گا اور اس کو گرجا ہے تکل دیااور اس کو براکھا جریج کے وضو کیا اور نماز پڑھی۔ پر اس نوز انکہ بجرے کہا اس نے کہا ہم خیارا اس کے کہا تھی جاری کر جاسونے کا بناویں اس نے کہا تھی صرف مٹی کای بنادو۔

ا مسیح بناری 'ج۳' رقم الدیث ۴۳۸۶ مطبوعه داد الفکو 'بیروت) اس مدیث بیس بیر تصریح ہے کہ بنو اسرائیل کی شریعت بیس بھی وضو فرض تھا کیونکہ جر پیج نے وضو کر کے ٹماز پڑھی -

الم حبد المالك بن بشام متوفى ميدو روايت كرتے بين

امام ابن اسحاق نے کما بھے بعض اہل علم نے یہ مدیث بیان کی کہ جب رسول اللہ باتھ ہے بھار فرض ہوئی تو آپ کے پاس جبرائیل آئے وہ اس دقت مکہ کی بلند وادی پر تھے۔ انہوں نے وادی پر اپنی ایزی ماری تو اس سے آیک چشمہ پھوٹ پڑا پھر جبرائیل آئے وہ اس دقت مکہ کی بلند وادی پر تھے۔ انہوں نے وادی پر اپنی ایزی ماری تو اس سے آیک چشمہ پھوٹ پڑا کہ جبرائیل علیہ السلام نے محرے دخو کرتے ہیں؟ پھر نی بھیرہ اس طرح دخو کیا جس طرح جبرائیل علیہ السلام نے محرے بو کرنماز پر جائی اور نی بھیرہ نے اسلام نے محرے ہو کرنماز پر جائی اور نی بھیرہ نے ان کے ساتھ نماز پر جی کہر جبرائیل علیہ السلام نے وضو کیا جب کے دھڑے نے ان کے ساتھ نماز پر جی کہر جبرائیل علیہ السلام نوٹ کے اور نی بھیرہ محرے خدرے برائیل علیہ السلام نے وکھا ہوائی خدیجہ کو وضو کر کے دکھایا تھا تھر محرے بی جس طرح آپ کو محرے جبرائیل علیہ السلام نے وکھایا تھا تھر محرے خدرے بی اس محرے دکھایا تھا تھرے کو دخورے بی اس محرے دوخو کیا تھا۔ پھر مسول اللہ میں جبرائیل علیہ السلام نے وکھایا تھا تھر محرے خدرے بی اس محرے دوخو کیا تھا۔ پھر مسول اللہ میں موجود کی مارے دھائی جس محرے دھول اللہ میں محرے دوخو کیا تھا۔ پھر مسول اللہ میں محرے دیو کہ ایک جدیدے اس میں موجود کی میں محرے دھول کی مدیدے اس محد دوخو کی تھا ہے اور یہ کامات کہ ایک جدیدے ادکام شرعہ کی امل علامہ سمھیلی مودی الکام شرعہ کی مدید کی مدیدے اس محد کی امل علامہ سمھیلی مودی ادکام شرعہ کی اس مدیدے کی امل

علامہ سہیلی متوتی ۱۸۵ھ نے اس صدیث کی سند کو مقلوع لکھا ہے اور یہ لکھاہے کہ ایسی صدیث ادکام شریبہ کی اصل بنے کی ملاحیت نہیں رکھتی کیکن ان کے استاذ قاشی ابو بکر تھر بن العملی متوتی ۱۳۴۸ھ نے اس مدیث کی توثیق کی ہے۔ وہ لکھتے ہیں یہ صدیث مسلم میں کہ ان کے استاذ قاشی ابو بکر تھر بن العمل میں کے اس مدیث کو اس لیے ترک کردیا کہ ان کو ہیں یہ مدیث میں تھی اور محلبہ اور علاء اس مدیث سے تعافل کرتے تھے ،جس کی ان کو ضرورت نہیں ہوتی تھی۔

اس کی ضرورت نہیں تھی اور محلبہ اور علاء اس مدیث سے تعافل کرتے تھے ،جس کی ان کو ضرورت نہیں ہوتی تھی۔

(احكام القرّ أن ع ٢ مم ٨ ٢٠ - ١ مع مطيوم وار الكتب العلميد مبروت)

آئم علامہ عبدالر من عبداللہ مسلم متوتی المن مدانی المن الله الله علی کا سندے دوایت کیا ہے۔
حضرت زید بن عادی دولی الله علی کرتے ہیں کہ جب وسول الله عجید پر پہل دی نازل ہوئی تو آپ کے ہاں معرت
جبرا کمل علیہ السلام آئے اور آپ کو وضو سکھلیا اور جب وضو سے قارغ ہوئے تو جلو میں پانی لے کرائی شرم کا پر چمزکا اس
حدے کی بناء پر وضو مکہ میں فرض ہوا اور اس کی خلات مرت میں ہوئی۔

(الروش النائف اج امم ۱۶۳۰/۱۹۳ مطبوعه مكتبه فاروتيه المكان)

وضوكے اجرو تواب كے متعلق احادیث

المام محدين اساعل عفاري متوفي ٢٥١ه وروايت كرتي بين

معرت او ہریوہ رہنی میان کرتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ معلی کویہ فرماتے ہوئے ساکہ میری امت کو قیامت کے دن عرصح معدل (جس کا مند اور ہاتھ ہیر سفید ہوں) کہ کر نکارا جائے گا اس کا سب وضو کے آجار ہیں۔ سوتم میں ہے جو محض اپنی سفیدی زیادہ کرنا جاہتا ہو (دہ اصفادو ضو کو سفررہ صدے زیادہ دھوکرہ اپنی سفیدی کو زیادہ کر لے۔

(مح بخاری عن رقم الديث: ١٣١ مح مسلم عن رقم الديث: ٢٣٧ سني ابوداؤد عن رقم الديث: ٢٣٣٧ سني نسائي عن رقم الديث من سنن ابن ماجه عن وقم الديث: ٢٨٣)

المم الوصيل عمين عين موقى اعلام روايت كرتم ين

حضرت أبو ہریرہ جوہنی میان کرتے ہیں کہ رسول اللہ عظیم نے فرمایا جب بندہ مسلم (یا مومن) وضو کرتا ہے تو وہ جب چرے کو دھو تاہے تو پانی کے قطروں کے ساتھ اس کے چرے سے جروہ گناہ وحل جاتا ہے جو اس نے آ کھوں سے کیا تھا'اور جب وہ إلحوں کو دھو تاہے تو پانی کے قطروں کے ساتھ اس کا جروہ گناہ دحل جاتا ہے جو اس نے ہاتھوں سے کیا تھا حتی کہ وہ گناہوں سے صاف ہو جاتا ہے۔

(سنن تزندی می ادی این از قم الحدیث: ۴ میچ مسلم ج) وقم الحدیث: ۴۴۳ اللوطا وقم الحدیث: ۴۳۳ سنن دادی این ارقم الحدیث: ۱۸۳ مسند احد ' چ ۳ وقم الحدیث: ۸۰۲۱ سنن کبری للیمنی " ج) م ۸۸ میچ این تزیر " بچا وقم الحدیث: ۳)

المم عيدالله عمرين يزيد ابن ماجد متوفى عدد دواعت كرية ين

حضرت عبدالله بن محروض الله عنماميان كرتے ہيں كه وسول الله بيجيد في قرباديم بين سے جو محض المجى طرح وضو كر كے معجد عن جائے اور اس كامسجد عن جانا صرف فماز كے ليے ہوتو اس كے برقدم سے الله اس كاا يك درجه بائد كرتا ہے اور اس كا ايك محملة مثاريتا ہے " حق كه وہ معجد عن داخل ہوجا تا ہے۔

(سنن ابن ماجه "ج"ا وتم الحديث:٢٨١ مطبوعه داد الفكو "بيروت ١٣١٥" هـ)

الم الديميلي همان ميلي ترقدي متوفى هداوت كرتم إلى:
حضرت عمرين العفطات والتي بيان كرتم إلى كر رسول الله والمالية من فرايا بس فض في المجيل طرح وضوكيا كركية السهد ان الاالله وحده الاشريكة له واشهد ان محمدا عبده ورسوله اللهم احملسي من المتعطهرين "اس كم لي جنت كي المحول وروازم كول وي جاتم إلى دو

جس دروازے سے جاہے 'جندی میں داخل ہو جائے۔

(سنن ترفدي عن رقم المدعث عصم علم عن أرقم المدعث ١٦٠٠ سنن الإداؤة عن رقم المدعث ١٧٨ سنن ابن بابد عن رقم

غيان القر أن

الحريث: ١٤٠٠ من احراج المراقم الحريث: ١١٣١١)

الم ابو بكرعبدالله بن محرين الي شيد متوفى ١٥ وهد روايت كرت مين:

ابو مثل بیان کرتے ہیں کہ میں سلمان کے ساتھ تھا' انسوں نے ایک در دست کی مخل شاخ کو پکڑ کر ہلایا اور کما' میں نے رسول انٹد بڑنچ کو میہ فرماتے ہوئے سا ہے 'جس محض نے انچھی طرح وضو کیا تو اس کے گذاہ اس طرح جمز جاتے ہیں جس طرح در دست کے ہے جمٹرتے ہیں۔(المصنف' ج) 'ص۸۔ کا مطبور اوار قافز آن اگراجی '۱۰ سامہ)

عافظ ابو محرب سف بن عبدالله بن عبدالبراكي متونى سه سمع كليت بين:

منام بن عبداللہ بن عراکہ اور اس نے وواے کرتے ہیں کہ ان سے ایک محض نے بیان کیا کہ اس نے خواب میں ویکھا کہ ہم کہ لوگوں کو صلب سک لیے جمع کیا گیا ہم المبام کو باہا گیا۔ ہم نی کے ساتھ اس کی امت تھی اور آس نے ویکھا کہ ہم نی کے ساتھ اور آس نے ویکھا کہ ہم ساتھ دو اور ہیں جو ان کے ورمیان ہی رہے ہیں اور ان کی امت میں ہے جو ان کے وجمع والے کے آیک اور انھا ہم اس کے موجم کے باتوں اور آپ کے ہورے چرے پر اور آھا ہو ہم کہ خور کے بالایا گیا۔ آپ کے مورکے باتوں اور آپ کے ہورے چرے پر اور آھا ہو ہم کہ انہا ہو ہم المبام کے لیے اور آپ کے نظر آ رہا تھا اور آپ کی امت میں ہے آپ کے موجم کہ انہا ہو ہم المبام کے لیے اور تھے۔ کوب بیان کرتے ہیں کہ ان کے خیال میں یہ خواب نی ہم المبام کے لیے اور تھے کہ اس کا علم میں کہ ان کا انہوں کے اس کو بیان کی اور تھے کہ اس کا علم کرے ہوا آو اس نے بیال کہ انہوں کے اس محل تھا ہم المبار کے ایک اور تھی کو بیان کی اور انڈ کی وہم کی اور آپ کی امت کی صفت ہے اور انڈ کی کہ ان ان دات کی تھی اور آپ کی امت کی صفت ہے اور انڈ کی سے اور ان مورے کی سند ہے اور انڈ کی سند ہے ایک تمام اسٹی وضو کرتی تھی اور آپ کی امت کی صفت ہے اور ان مورے کی سند ہی ایک تمام اسٹی وضو کرتی تھی اور بی بیان کی ہے اور ایک قول ہو ہے کہ تمام اسٹی وضو کرتی تھی اور بی بیان کی ہے اور ایک قول ہو ہے کہ تمام اسٹی وضو کرتی تھی اور بیا بی بیان کی ہے اور ایک قول ہو ہے کہ تمام اسٹی وضو کرتی تھی اور بی بین میں مدہ مدہ معرب مورد موست الر میل میں مورد موست الر میل مورد موست الر میں مورد موست الر میل میں مورد موست الر میال میں مورد موست الر میال مورد کی مورد کی مورد کی مورد مورد کی مورد مورد کی کی مورد ک

ایک وضوے کی نمازیں پڑھنے کاجواز

اس آنت کامعن میر ہے کہ جب تم نماز پڑھنے کا تصد کردادر اس دقت تم بے وضو ہو تو تم پر دضو کرنا فرض ہے 'اور جب کوئی فض باوضو ہو تو اس پر نماز پڑھنے کے لیے دوبارد دخمو کرناواجب نسیں ہے ' دواکیک دخو ہے کئی تمازیں پڑھ سکا ہے۔البند ۱ ہر نماز کے لیے نیاوضو کرنامتھ کے گئے۔

الم محدين اساعيل بخاري متوفى ٢٥١ه روايت كرتيم.

معرت انس بھاڑے بیان کرتے ہیں کہ نی جہر ہر نماز کے وقت وضو کرتے تھے۔ راوی نے پر چما آپ کیا کرتے تھے صفرت انس نے کما' ہم ہی ہے کمی ایک مخص کے لیے وضو کانی ہو آتھا جب تک کہ دو ہے وضونہ ہو۔

(می البراری این اور می البراری این اور البرای الب

ے کی تمازیں بڑھے تھے۔

الم مسلم بن تجليج قشيدى متونى المهد روايت كرية بين:

حضرت بمیدہ دوینی بیان کرتے ہیں کہ نبی چینے نے فتح کمہ کے دن کئی نمازی ایک د ضوکے ساتھ پڑھیں اور موزوں پر مسح کیا۔ حضرت عمر نے کما' آج آپ نے ایک ایساکام کیا ہے جو آپ (پہلے) نمیں کرتے تھے' آپ نے فرالیا بیں نے عمر اکیا ہے۔ (مسمح مسلم "ج ا' رقم الحدیث : ۱۲۷)

الم ابوليسلي عمرين ليسلى ترزي متوفى اعله روايت كرتين

حضرت بریدہ برای کرتے ہیں کہ نبی ہوتین ہر نماز کے لیے وضو کرتے تھے 'جس مال فتح کے ہوا' آپ نے کی نمازیں ایک وضوے پڑھیں۔ حضرت عمر نے کہا آپ نے ایسا کام کیا ہے جو آپ پہلے نسمی کرتے تھے۔ آپ نے قربایا "جس نے عمر آکیا ہے"۔ (سنن ترزی 'جا'ر آم الحدے شدالا' مطبوعہ ہار اللاکو 'جیزدت)

اس سے پہلے سی البحاری (رقم الحدیث: ۱۵) کے دواندے گزر چکا ہے کہ نبی پڑھینے نے فردہ فیبر کے سال بھی دو نمازیں ایک وضوے بڑھی ایں۔

ان احادث ہے میہ واضح ہو گیا کہ ہر نماز کے لیے نیاو ضو کرنا ضروری قبیں ہے ' ملکہ جو مختص ہے وضو ہو اور وہ نماز پڑھنے کا ارادہ کرے 'اس کے لیے وضو کرنا ضروری ہے۔'

وضوكے متغق عليه فرائض

وضو کے قرائض میں ہے ہورے چرے کو دھونا قرض ہے۔ سرکے بل جمال ہے اسمئے شروع ہوتے ہیں وہاں ہے ٹھو ڈی

کے ٹیلے حصہ بحک چرو کی اسبائی ہے اور دو کانوں کا در سیائی حصہ چو ڈائی ہے۔ جس آدی کی چیدری داڑھی ہو 'اس پر بالوں کو اور
بالوں کے بیچے کھال کو دھونا ضروری ہے اور جس کی تھنی داڑھی ہو' وہ صرف ہالوں میں خلال کرے 'داڑھی کو دھونا اس پر واجب
تمیں ہے۔ کلی کرنا اور ناک میں پائی ڈالٹا سنت ہے 'اس کی تفصیل انٹیاء اللہ ہم فنقریب بیان کریں گے۔

وضوض باتھوں کا دحونا بھی فرض ہے 'انگیوں کے مردن سے لے کر کمنیوں تک باتھ میں اور کمنیاں بھی باتھوں میں

مرتح مسح كى مقداريس ندابب ائمه

وضوی تیرا فرض سر کامسے کرنا ہے مسے کی مقدار میں اختلاف ہے۔ اہم شافعی نے کمامسے کی اتن مقدار ہے جس ہے کم سے کم مقدار پر مسے کااطلاق آ تھے۔

علامد ابوالحس على بن محد اوردى شافعي متوفى من مهد لكست من

الم شافتی کافرہ سید ہے کہ کم از کم تمن بالوں یا ان ہے ذاکر پر مسے کیا جائے اور مقد اور فرض ہے۔ کو ذکہ "واست و ا یہ وسسکہ " میں باکامعنی تبعیض ہے اور آیت کامعنی ہے اپ مرکے بعض حصد پر مسے کرو۔ اور مدیث میں اس کی دلیل میہ ہے کہ ابن سرین نے معرت مغیوہ بن شعبہ برجیز ہے ووایت کیا ہے کہ نبی برجیل پر بیٹائی پر ایا مرکے اسکے حصد پر مسے

کیا۔ (سی مسلم اور الحدیث السلس معد و و الحدیث الکاب ۱۹۸۸ اور ابو معنی نے معرت انس بن مالک براتن سے روایت کیا
ہے کہ دسول الله برجیز وضو کر دے نتے اور آپ کے مربر قطری عمامہ تھا آپ نے اپنا ہاتھ عمامہ کے نیچ داخل کیا اور مرکے
اکے مصد بر مسے کیا اور عمامہ کو نعمی کولا۔ (سنن ابوداؤو ارتم الحدیث یہ اس کری الکیمتی جن میں) البتدا الم شافعی کے

تبيان القر ان

زدیک پورے سر کامسے کرنامتی ہے کو تک عفرت عبداللہ بن زید اور عفرت مقدام بن معدی کرب رضی اللہ عنما ہے روایت ہے کہ نبی چیج نے پورے سر کامسے کیا تھا۔

(الحادي الكير عام ١٣١٠ عام مطبوعه هاو الفكو مودت ١٣١٣هم)

الم شافعی کی اس دلیل پر دو وجہ ہے نقض ہے۔ ایک تو یہ کہ بام کا متنق طیہ معنی الصاتی ہے۔ تبعیق تعیں ہے۔ دو سرایہ کہ اگر تنین بانوں پر مسے کرنا فرض ہوتا کتے نبی شخص بیان جواز کے لیے بھی تو صرف تنین بانوں پر مسے کرتے یا پھراس مقدار کا صرامتًا بیان فرماتے۔

امام مالک کے نزدیک نہورے مرکامی کرنا قرض ہے۔ علامہ ابو بکر جرین عبداللہ ابن العربی متوفی ۱۹۳۳ء کیسے ہیں۔ چرواس عضو کا نام ہے جس پر آنکھیں ' ناک اور منہ ہے۔ ای طرح سراس عضو کا نام جس پر بال ہیں ' موجس طرح چرو وہونے کامعنی ہے ہے اس تمام عضو کو دھویا جائے جس پر آنکھیں ' ناک اور منہ ہے۔ اسی طرح مرید مسے کرنے کامعنی ہے کہ اس کے تمام بالوں پر مسے کیا جائے۔ امام مالک ہے کسی نے پوچھاک آگر کوئی شخص وضو کرے اور مرکے بعض حصہ پر مسے کرے اور بعض کو ترک کردے تو آیا ہے مسیح ہے ؟ امام مالک نے جواب ویا 'آگر کوئی شخص وضو کرے اور چرے کے بعض حصہ کو دھوئے اور

علامد ابن العربي في المام مالك ك موقف ير حسب ذيل احادث س استدال كياب:

حضرت مراللہ بن زید رہیں بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ جیمیز نے اپنے ہاتھوں ہے اپنے سر کا مسم کیا۔ آپ اپنے ہاتھوں کے اپنے سر کا مسم کیا۔ آپ اپنے ہاتھوں کو سرکے اپنے اللہ جیمی ہاتھوں کو سرکے اپنے جے تک لائے۔ جہاں ہے آپ اپنے اپنے اپنے اپنے کہ کا کہ اور پھر گذی ہے سرکے ایکے جے تک لائے۔ جہاں ہے آپ نے ابتداء کی تھی۔

(منج البخارى "رقم الحديث. ١٨٥ منج مسلم" رقم الحديث ٢٣٥ سن ابوداؤد ١٨٥ سن ترزى "رقم الحديث: ١٣٧ سنن ابن ماه. "رقم الحديث: ١٣٣٣ سنتر احير " جه من ١٩٨٠ سنن كبرى لليمتى " جا "م ١٥ "كتب المعرف جه "ص ١٢٧)

حضرت مقدام بن معدی کرب براثی بیان کرتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ بھی ہو کو وضو کرتے ہوئے دیکھاجب آپ سر کے مسم پر پہنچ تو آپ نے سرکے اسکے حصد پر دونوں ہتھیلیاں رکھی' پھر آپ ان ہتھیلیوں سے مسم کرستے ہوئے ان کو گدی تک لائے' پھران سے مسم کرتے ہوئے ان کو واپس اس جگہ لے تھے جمال سے ابتداء کی تھی۔

(سنن الوداؤد ار قم الحديث: ١٢٣-١٢٣ سنن كبرئ للجميتي عج٥٩)

علامہ ابن قدامہ منبلی متونی - ۱۳ دیے لکھا ہے کہ سرکے مسم کے متعلق آیام احمد کے تین تول ہیں۔ (۱) پورے سرکامسم فرض ہے (۱۲) پیشانی کے برابر بینی جو تعلق سرکامسم فرض ہے (۱۳) سرکے آکٹر دھیہ کامسم کرنا فرض ہے۔

(النتي عن معدم ١٠٥٨ مطبوعه داد الفكر عيروت ١٣٠٥ه)

پورے سر کامسے کرتے یا اکثر حصہ کامسے کرنے کا قول اس لیے شیجے نسیں ہے کہ نبی بڑھیں نے سرر پیٹانی کی مقدار کے برابر بھی مسے کیا ہے۔ برابر بھی مسے کی دوروں سے گزر چکا ہے۔

الم ابر حنیفہ کے نزدیک چوتھائی مر کا مسح کرنا فرض ہے اور بعض مشائخ احتاف کے نزدیک تین انگلیوں کی مقدار مسح کرنا ں ہے۔

علامه على بن ال يكر الرضائي الحنفي المتونى مهون الكية بن:

پیٹائی کی مقدار چوتھائی سر کا مسے کرنا فرض ہے "کیونکہ حضرت مغیورین شعبہ روپٹی بیان کرتے ہیں کہ نبی ہوئی لوگوں کے
کو ڈا ڈالنے کی جگہ پر آئے ' پھر پیٹاپ کیااور چیٹائی کی مقدار (پر) مسے کیااور موذوں پر مسے کیااور قرآن مجید بیل مسے کی مقدار
مجمل ہے اور یہ مدے ہی کامیان ہے اور یہ مدیث امام شافعی کے خلاف دلیل ہے 'جو تجن ہاوں کی مقدار کا قول کرتے ہیں اور
امام مالک پر بھی ججت ہے جو ہورے مرکے مسے کو فرض کتے ہیں۔ بعض روایات میں ہے کہ جمارے بعض امحاب نے ہاتھ کی
تین انگیوں کی مقدار مسے کرنے کو فرض کیا ہے تکہ مسے کرنے کا آلہ ہاتھ ہے اور اس کی اکثر مقدار تین انگیاں ہیں۔

(حداب اولين من عاءمطبوعه شركت طبيه المان)

سرر مسح کرنا فرض تعلی ہے اور اس کی مقدار فرض کلنی ہے بخرض قطعی میں اختلاف یا اس کا انکار جائز: نسیں ہے اور فرض کلنی میں جہند دلا کل سے اختلاف کر سکتا ہے 'ای طرح رنز النسنل کی حرمت بھی نلنی ہے اور اس کی حرمت کی علت میں مجمی جہندین کا اختلاف ہے۔

بيرول كي وحوت يرولاكل

الم محدين ايما على علاى متوفى ١٥٧ه والعت كرت ين

حضرت محداللہ بن ممور منی اللہ مضمامیان کرتے ہیں کر ایک سفر می ہے ہے ہم سے بیٹیے رہ گئے۔ اہر آپ ہم سے آ فے ور انحالیک ہم نے مصری نمازی در کردی تھی 'سوہم دضو کرنے لگے اور پیروں پر مسح کرنے بیگے 'تو آپ نے بواز بلندوریا ٹین بار قرمایا: ایر بول کے لیے ایک کاعذاب ہو۔

یہ صدیث معرب ابو ہریرہ رہیں۔ ہے بھی موی ہے۔ اس کامعنی یہ ہے کہ جن ایر یوں کو دھویا نہ کیا ہو' ان کو آگ کا زامہ ہو۔۔

(می ابواری کی آن رقم الحدیث ۱۳۵۰-۱۳۵۰ می مسلم کی ارقم الحدیث ۱۳۳۰-۱۳۳۹ سنن رزی کی رقم الدیث: ۲۳۱ سنن ابوداؤد کی وقم الحدیث: ۱۳۵۰ سنن نسائل کی وقم الحدیث: ۱۳ سنن این باجد کی وقم الحدیث: ۱۳۵۰ می این وقم الحدیث: ۱۳۵۵) ایام ابوجه خرجی من جربر طبری متوفی ۱۳۳۰ این سند کے ساتھ دوایت کرتے ہیں:

مغیرہ بن حنین بیان کرتے ہیں کہ نی میچیز نے دیکھاایک فض وضو کر رہاتھااور دوائے بیروں کو دعو رہاتھا' آپ نے فرمایا مجھے اس کا تھم دیا کیا ہے۔ حارث بیان کرتے ہیں کہ معرت علی نے فرمایا اپنے بیروں کو مخنوں تک دعوؤ۔

ابوقلابہ بیان کرتے ہیں کہ حضرت عمر بن الخطاب رہین ہے۔ ایک فیض کو دیکھا جس نے اپنے پیریس نائن جتنی جگہ کو وحولے سے چھوڑ دیا تھا' آپ نے اس کو تھم دیا کہ وہ اپنے وضو اور نماز کو دہرائے۔

(جامع البيان على ١٤١ مس ١٤١ مطبوم دار الفكو كيروت ١٣١٥ ٥)

بیروں کے دھونے پر علماء شیعہ کے اعتراضات کے جوابات

شید کالی اعتراض برے کہ اس آبت کی دو قرائی ہیں۔ نسب کی قرات (ارحلکم) ہے دھونا تابت ہو آب اور حرکی قرائت (ارجکم) ہے مع عبت ہو آب کو تکہ اس صورت میں اس کا صلف ہڑدسکم پر ہوگا۔ اس اعتراض کے گی دواب ہیں۔ پہلا ہواپ برے کہ حرکی تقدیر پر بھی ارحلکم کا صلف اید یکم پرہ اور اس پر جواد کی وج ہے ہو ہے۔ اس کی نظیریہ ایت ہے:

إِنِّقَ آخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمُ اللَّهُم

م بے ٹک میں تم پر در دناک عذاب کے دن کا ٹوف رکھا

مود: ۲۱) اول-

اس آیت می الیم عذاب کی صفت اس اخبارے اس رفس (زیر) ہوئی ہاہیے تھی الیکن چونکہ اس کے بوار میں ہوم پر جرب اس لیے اس کو بھی جردی گئے۔ اس کو جرجوار کتے بین۔ اس طرح ارحلکم کا مطف وجو حکم اور اید یہ کم پر جے۔ اس وجہ نے اس پر فصب ہوئی جا ہے تھی الیکن اس کے بوار میں ہرہ وسسکم جو تکہ مجرور ہے اس لیے اس کو بھی جردی گئی۔ افذا یہ جرجوار ہے۔

دو سراجواب یہ ہے کہ ارجلکم کا عطف ہرءوسکم یہ ہے اور اس سے پہلے وامسحوا مقدر ہے ایکن و
امسحوا ہرءوسکم علی مسے کامنی حققی مراد ہے۔ یعنی گیا ہاتھ پھیرنااور وامسحوا بارجلکم علی مسے کا بجازی
معنی مراد ہے ایعنی دھول الل عرب کتے ہیں مسح السطر الارص بارش نے زعن کو دھو ڈالا۔ سومسے مجازا دھونے کے
معنی علی مستعلی ہے اور یمال می مراد ہے۔ معلوف علی حقیقت اور معلوف علی مجاز مراویو سکتا ہے۔ قرآن جدمی
اس کی نظیرے آبت ہے:

بَايْهُا اللَّهِ مِنْ الْمَدُوالْا تَقْرَبُوا الْقَبِلُوةَ وَالْمُدُمُّ اللَّهِ الْمُعَلِّوْةَ وَالْمُدُمُّ اللَّا سُكّارَى حَتَى تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَلا جُعَبُلِلاً عَلَيْهِ اللَّهِ مُنْ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ اللَّهُ اللّ

اے ایمان والوا فیے کی حالت میں نماز کے قریب نہ جاؤ' حق کہ تم یہ تصف لکو کہ تم کیا کہ دے ہواور نہ جنابت کی حالت میں مید کے قریب جاؤ' حق کہ تم حسل کر لو' الل یہ کہ تم لے (میدی مرف) د مند عور کرناہو۔

اس ایت میں ولاحسب کا صف لا تضربوا الصلوة بها اور اس بیلے بی لا تضربوا الصلوة تقدرہ المسلوة تقدرہ المسلوة تقدر م کین معلوف طید میں اصلوة کا معنی حقیقاً مراو بے لین آراز مور معلوف میں اصلوة کا معنی مجازا مراوے الینی مجداور محل صلوة ساک طرح آبت وضو میں وامست مواہر و وسکم میں مسح کا حقیقی معنی مراوب اور وامست واب ارجدلکم میں مسح کا مجازی معنی مراوب ایعنی دھویا۔ مجازی معنی مراوب ایعنی دھویا۔

تیرا جواب یہ ہے کہ ارحلکہ اور ارحلکہ دو حوار قراق ہیں اور جی طرح قرآن مجید کی آیات میں باہم
تعارض نہیں ہے ای طرح قرآن مجید کی قرائے ہیں بھی باہم تعادض نہیں ہے اور ارحلکہ کا معن ہے بیرون کا دھو نااور
ارحلکہ کا معنی ہے ویوں پر مس کرنا ای لیے ارحلکہ کی قرائے اس طل پر محول ہے جب وضو کرنے والے نے
موزے نہ پہنے ہوں اور ارحلکہ کی قرائے اس طل پر محول ہے جب اس نے موزے ہوں۔ لینی جب موزے
پنے اول آق میروں پر مس کرنو اور جب موزے نہ پہنے ہوں تو بیروں کو دھو لو۔ اس طرح ان دونوں قرائوں میں کوئی تعارض نہیں

علاء شیعہ نے کماکہ قاعدہ یہ ہے کہ وضوی ان اعضاء کو دھویا جاتاہے جن پر تیم میں مسح کیا جاتا ہے اور جن اعضاء کو قیم میں ترک کردیا جاتا ہے 'ان پروضو میں مسح کیا جاتا ہے۔ اگر وضوی پیروں کو دھونے کا تھم ہوتا تو تیم میں پیروں پر مسح کیا جاتا'اور جبکہ تیم میں پیروں کو ترک کردیا جاتا ہے تو معلوم ہواکہ وضوی پیروں کا تھم مسح کرتا ہے نہ کہ وحونا۔

وضوك مختلف فيه فرائض

المام شافعی رحمہ اللہ کے نزدیک وضوے پہلے وضو کی تیت کرنا بھی قرض ہے۔ علامہ ابوالحن علی بن محمہ اوروی شافعی متوتی من محمد لکھتے ہیں:

حسل اور وضوے ای وقت تک طمارت عاصل نمیں ہوگی جب تک کہ نیت نہ کرے "کیونکہ رسول اللہ میں ہیں نے فرمایا ہے: اعمال کا بدار صرف نیت پر ہے اصحح البحاری وقم الحدیث ا) نیز تھم بغیر نیت کے جائز نمیں ہے 'اور یہ دوتوں طمار تیں ہیں تو دولوں کا تھم مختلف کیے ہوگا۔ امام الک اور امام احمد کے نزد یک نیت طمارت کی شرط ہے۔

امتى ابن قدامد كا من ٨٥ الحادي الكبير كما من ١٠٠ مطبوعه داد الفكو البيروت المامانية)

المالی کادار و دار صرف نیت پر ہے۔ اس مدیث کا یہ معنی نمیں ہے کہ تمام المال کی صحت کا دار نیت پر ہے۔ ورنہ لازم آئے گاکہ زع 'شراء ' نکاح ' طلاق ' رد اور تبول کوئی چیز بھی نیت کے بغیر ضحے نہ ہو۔ اس لیے اس مدعث کامعتی یہ ہے کہ تمام اقبال کا ثواب نیت پر موقوف ہے۔ اندا اگر طمارت کے تصد کے بغیر کوئی محض یادش میں نمالیاتو اس کا حسل اور وضو صحے ہوگا اور اس سے نماز صحے ہوگی 'آگر چہ طمارت کا ثواب اس کی نیت سے لیے گا۔

علامه موفق الدين عبدالله بن احمد بن قدامه صبلي لكعة بين:

للم احمد بن صبی براتی کا ظاہر فرہب یہ ہے کہ وضو میں ہم افلہ پڑھنا سات ہے۔ اور دو مراقول یہ ہے کہ وضوء 'حسل اور جمع مب میں پہلے ہم اللہ پڑھنا ہوں ہے کہ کہ اہم ابوداؤد نے روایت کیا ہے حضرت ابو ہر بروہ بروٹی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ تاہیج نے فرملیا جو محض وضو نہ کرے اس کی تماز نہیں ہوگی اور جو محض ہم اللہ نہ پڑھے 'اس کا وضو نہیں ہوگا۔ (سنن ابوداؤد 'جا 'و قم الحدے شام احمد شام متونی کے ساتھ نے کہا (سنن ابوداؤد 'جا 'وقم الحدے شام احمد شام متونی کے ساتھ نے کہا ہے۔ اور بلق طمار توں کی طرح اس میں بھی ہم اللہ پڑھنا میں میں میں ہم اللہ پڑھنا میں میں بھی ہم اللہ پڑھنا میں میں بھی ہم اللہ پڑھنا میں میں بھی ہم اللہ پڑھنا میں ہمی ہم اللہ پڑھنا ہوں کی انداز میں ہمی ہم اللہ پڑھوں کی نماز مسجد کے سوا میں ہوتی اور دو مری دوایت اس مدیث کے ظاہر معتی پر محمول ہے 'بیسے آپ نے فرمایا میچ کے بڑوی کی نماز مسجد کے طاور دو مری دوایت اس مدیث کے ظاہر معتی پر محمول ہے۔ اگر اس نے عمد آب ماللہ کو ترک کیا تو وضو نہیں جو گاور میں بوتی اور دو مری دوایت اس مدیث کے ظاہر معتی پر محمول ہے۔ اگر اس نے عمد آب ماللہ کو ترک کیا تو وضو نہیں جو گاور میں بوتی اور دو مری دوایت اس مدیث کے ظاہر معتی پر محمول ہے۔ اگر اس نے عمد آب ماللہ کو ترک کیا تو وضو نہیں جو گاور

أكر بعول كياتو وضوجو جلت كا- (المنني على المعنى معدد عدد مطبور داوالفكو يروت ٥٠٠١٠٠)

الم شافعی کے زدیک اعصاء وضویں وہ تر تیب بھی فرض ہے جو قر آن مجید میں ندکور ہے الینی پہلے چروہ موتے 'پھر ہاتھ' پھر سر کا مسح کرے اور پھر پیرول کو دھوئے۔

ابوالحس على بن محمد اور دى شافعي متوفى ٥٠ مهمة لكهيته بين:

عاری دلیل اس آیت میں ہے کو تک اللہ تعالی نے فرایا ہے "صاعب الواو حدود کے وابد یہ کے " (الایہ) اور "فا" محتیب اور آخیر کا نقاضا کرتی ہے۔ امام احمد کا بھی می موقف ہے۔ والحادی الکیم کی امل

انام ابوطنیفہ رحمہ اللہ اور انام الک رحمہ اللہ کے زویک وضوی ترتیب قرض نمیں ہے کو تکہ ان کے درمیان حرف واؤکے ساتھ عطف کیا گیا ہے اور داؤ مطلقاً جمع کے لیے آتی ہے۔ نیز حضرت علی بن ابی طالب رہائیں۔ نے قرائیا: جمعے اس کی کوئی پرداؤ نمیں ہے کہ جس خواو کسی عضو کے ساتھ وضو کی ابتداہ کروں۔ (سنن کبری ' المنصفی ابن اس میں می نیز حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عند عنداللہ بن عمر رضی اللہ عند اللہ عنداللہ عنداللہ

المام مالک کے نزدیک موالات فرض ہے ' یعنی ایک عضو کے فور ابعد دو سرے عضو کو دھونا بشر طیکہ اس کو یاد رہے۔ طامہ احمد بن رشد مالکی قرطبی اندنسی متوفی ۱۹۵۵ء لکھتے ہیں:

امام مالک کے نزدیک موالات فرض ہے 'بشرطیکہ اس کو یاد ہو اور کوئی عذر نہ ہو اور امام شافع 'امام ابو حنیفہ اور امام احمد کے نزدیک موالات فرض نسیں ہے۔ امام مالک کا استدالال اس آجت میں لفظ "فا" ہے ہے۔ کو تک "فا" تر تیب علی الفور کے ساتی ہو اور ان سے آئی ہے اور ان سے آئی ہے اور ان سے آئی ہے اور ان استدالال لفظ "واق" ہے ہے 'کیو تک "واؤ" مطلقاً جمع کے لیے آئی ہے اور ان اصفاء کے در میان "واؤ" کے ساتھ عطف کیا گیا ہے۔ دو سری دلیل ہے صدیث ہے 'امام محمد بن اسائیل بخاری متوفی ۱۳۵۷ھ روایت کرتے ہیں:

معرت میموند رمنی اللہ عنها بیان کرتی ہیں کہ نبی ہو چیر نے اس طرح وضو کیا جس طرح نماز کے لیے وضو کرتے ہیں مگر پیروں کو نہیں دھویا' آپ نے استخباء کیا اور جو ٹاکوار چیز گلی نقی 'اس کو صاف کیا' پھر تمام جسم پر پانی ڈاللہ اس کے بعد ایک طرف ہو کراپنے ویروں کو دھویا' یہ آپ کا حسل جنابت تھا۔ (میج البخاری' جا'ر تم الحدث دہ ۲۳ مطبوعہ دار الکتب العلمیہ' ویروت)

اس مدیث میں یہ تصریح ہے کہ آپ نے بیروں کے دھونے کو باتی اصنعاءے مو فر کر دیا 'اس ہے واضح ہو کیا کہ وضو میں موالات قرض تبیں ہے'۔'

وضوكي تنتين

پانی کے برش میں ہاتھ والے ہے پہلے تمن بار ہاتھ دھو لینے جاہئیں۔ امام محمدین اسامیل بخاری متوفی ۲۵۱م مردایت کرتے ہیں:

حضرت ابو ہر روہ یوہ ہیں کہ رسول اللہ ہی ہیں ہے۔ فرمایا جب تم میں سے کوئی فخص نیند سے بیدار ہو تو پانی کے برتن بیل ہاتھ ڈالے سے پہلے اپنے ہاتھ کو دھو لے "کیونکہ تم میں سے کوئی فخص نہیں جانتا کہ اس کے ہاتھ نے رات کمال میں ہے؟ مسلم کی روایت میں تین دفعہ ہاتھ دھونے کا ذکر ہے۔ اس طرح سنن ترخدی اور سنن ابوداؤد وغیرہ میں ہے۔ میں تاریک ہاتھ دھونے کا ذکر ہے۔ اس طرح سنن ترخدی اور سنن ابوداؤد وغیرہ میں ہے۔

(می البخاری و قم الحدیث: ۱۲ می مسلم ۱۷۷ سنی ای وازد ۱۲۳ سنی ترزی ۱۲۴ سنی این باجه ۱۲۰ سنن وار تعنی ۱۲ سند احدی ۲٬۰ می ۷ ۱۲۰٬ ۲۸۵٬ ۲۸۳٬ ۲۸۵٬ ۱۲۵ منع تدیم)

وموے پہلے بم اللہ يامن جا ہے۔الم ابوداؤد بحسمانی متوفی هد دوايت كرتے ہيں:

حضرت ابو جریرہ روینے بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ مجھیزے فرالیا جس عض کا دضونہ ہو 'اس کی نماز نہیں ہے اور جو

بهم انتدنه پڑھے ہمس کلوشو شیں ہے۔ استن اندوائی کی قرالہ میں داواستی اور

(سنن ابوداؤد و رقم الحديث: ١٠ اسنن ابن اجد و قم الحديث: ٣٩٩ مسنن دار تلني و قم الحديث: ٣٢٠ المستدرك ع اص ١٣١١) الم ابوالقاسم سليمان بن احمر طبراني متوتي ١٠ مهد مدايت كرتي بين:

مسواك كمنى چاہيے كرى كى معروف مساك ند مو تو انكى سے يا برش سے دانت صاف كرتے ہے ہى سنت ادا موجاتى

الم محدين اساميل عفاري متول ١٥١ه مدارت كرية من

حفرت مذاف بوافر بيان كرت ين كرجب في منهد رات كوافي ومواك كريد

(میح البحادی و قم الحدث ۳۲۵ میم مسلم و قم الحدیث: ۲۵۹ سنن ایوداؤد و قم الحدث ۵۵ سنن این ماید و قم الحدث: ۲۸۱ م سنن دادی و قم الحدیث: ۱۸۸۶)

معرت ابو ہریرہ جانئے۔ بیان کرتے ہیں کہ نبی جی ہے فریل آگر بھے اپلی است پر دشوار نہ ہو یا تو انسیں ہر نماز کے دت مواک کرنے کا تھم ن نے ۔

(منج البخاري و قم الحديث ١٨٨٤ مسلم و قم الحديث: ٢٥٢ منن البوداؤد و قم الحديث الله من ترزي وقم الحديث ١٢٢ منن ابن بانيه و قم الحديث ١٨٨٤ منن داري و قم الحديث ١٨٨٤ مند احر "ج٢ م ١٨١٥ طبح قديم)

بصن روایات مل بروضو کے وقت مواک کا عظم دینے کاؤکر ہے المام بخاری نے علیقا روایت کیا ہے:

صفرت ابو ہررہ وہنے بیان کرتے ہیں کہ نبی میں ہے فرایا: اگر جھے اپنی است پر دشوار نہ ہو یا تو انسی ہروضو کے وقت مسواک کرنے کا تھم دینا۔

جُيانَ القر أنْ

معرت عائشہ معدیقہ رمنی اللہ عنما زوجہ رسول اللہ علی وال کرتی ہیں کہ رسول اللہ علی نے فرمایا مسواک کے ساتھ نماز کی نعنیات بغیر مسواک کے ساتھ نماز پر ستر درجہ زیادہ ہے۔

اعلامداحد شاکر متوفی عدم سلام ف کماس مده شکی شد سمی بد مستداحد ، محقق احد شاکر عدا رقم الده ف: ۱۳۱۸ می این فزید " جا " س اع" یرقم عراد عاکم نے کمایہ مدهد مسلم کی شرط کے مطابق می بے اور ذاہی نے اس کی موافقت کی۔ المستدرک " جا ا ص ۱۳۷۱)

معرت عائشہ صدیقہ رمنی اللہ عندانے بیان کیا کہ جو نماز مسواک کے ماتھ پڑھی گئی ہو 'اس کو نبی جیجیز اس نماز پر ستر ورجہ فعیلت دینے تھے جو مسواک کے ماتھ نہ پڑھی گئی ہو۔

استد ابوسلی ج۸ ارقم الحدیث ۱۹۵ مر مطبور وارافدامون ایدت استد البواد اجام ۱۹۳۴ برقم ۱۹۵ سنن کری ج ۱ م ۱۳۸) سخلی کرنا کاک جس پانی والنااور بورے سرکامسح کرناست ہے۔

عمرہ بن ابی حسن نے صفرت عبد اللہ بن زید جائے۔ سے بی جین کے وضو کے متعلق سوال کیا؟ انہوں نے پانی کا ایک بر تن م منگوا یا اور انہیں نی مائی کی طرح وضو کر کے و کھایا۔ انہوں نے اس برتن سے پانی انڈیل کر نیمن مرتبہ ہاتھ وحوے ' مجربرتن میں ہاتھ ڈال کر تین مرتبہ کلی کی اور تین مرتبہ خاک میں پانی ڈالن ' مجرہا تھے ہے بانی سے کر تین مرتبہ چرود حویا ہجرا ہے ہاتھوں کو کمنیوں سست دو مرتبہ وحویا ' مجربرتن میں ہاتھ ڈال کر سرکا سے کیا۔ ایک مرتبہ ہاتھوں کو سرکے اسکے مصد سے چھلے صد تک اور آیک مرتبہ بہتھلے مصد تک اور آیک مرتبہ بہتھلے مصد تک مجربا۔ ہجرائے دونوں ہیروں کو مختوں سمیت وحویا۔

(منج البحاري) وقم المدعد: ۱۸۷ منج مسلم ورقم المدعد: ۱۳۵ سنن ايوداؤد) وقم المدعد: ۱۹۹-۱۹۸ سنن ترزی وقم المدعد: ۲۸-۳۲ سنن اين باجه وقم المدعث: ۴۵۵ سنن داري و قم الحديث: ۱۹۸۸

كانون كالمسح كرناسنت ٢٠١٨م ابوعبدالله محدين يزيد ابن ماجه متوفى ٢١٣هه روايت كرتے بين:

حضرت ابن عماس رمنی اللہ عنما بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ چھیج نے اپنے کانوں کا مسح کیا کانوں کے اندر اپنی انگلیاں (سہابہ) ڈالیس او د کانوں کی پشت پر اسپنے انگو ٹھے رکھے اور کانوں کے طاہر اور باطن پر مسح کیا۔

(منن ابن ماجه و قم الحديث: ٣١٩ مح البغاري و قم الحديث: ٣١٠ منن نسائل و قم الحديث. ١٠١)

وا زمى بى خلال كريامت ب

الم ابوليسيل همين عيني ترفري متوفى عدم روايت كريد من

معرت عملن بن مفان برین رئے بین کرتے ہیں کر نی بھی وار عمی می خاال کرتے تھے۔ یہ مدے مسل می ہے۔ (سنن ترفدی او قم الحدیث: ۳۱ المستدر ک، ج ۱م ۱۵۰ ما ۱۵۰ المستدر ک، ج ۱م ۱۵۰ ۱۳۹۱)

الم ابوليسي محدين عيلى ترزى متونى ٥٥ مد دوايت كرست ين

حضرت ابن عباس رضی الله عنما بیان کرتے میں کہ رسول الله جیجیو نے فرمایا جب تم وضو کرو تو اپنے ہاتھوں اور پیروں کی انگلیوں میں خلال کرو۔ بیہ حدیث حسن غریب ہے۔ (سنن ترندی وقم الجریث: ۳۹ سنن این ماجہ وقم الحدیث: ۲۹) جرمضو کو تمن تیمن بار وحونا سنت ہے۔

امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث متونی ۱۷۵ مد روایت کرتے ہیں۔

عموین شعیب است والدے اور وہ است دوات کرتے ہیں کہ ایک فض نے ہی ہے۔ کی مراج ہی ماضرہو کر چھا یاد سول اللہ اوضو کس طرح ہو تا ہے؟ آپ نے ایک برتن میں پائی منگوایا اور اپنے ہاتھوں کو تین بار دھویا' پھر اپنے چھرے کو تین بار دھویا' پھر اپنے کا تیوں کو تین باو دھویا' پھر اپنے سرکا میں کیالور اپنی دو (سبابہ) الکیوں کو اپنے کانوں میں داخل کیا اور اپنے انگوفوں ہے کانوں میں داخل کیا اور اپنے انگوفوں ہے کانوں کی پہنے مرکا کی باور انگیوں ہے بھن کے باطن پر مسے کیا' پھر اپنے دونوں ہیوں کو تین تین بار دھویا' پھر قربایا اس طرح دضو ہو تا ہے جس نے اس پر زیادتی کی ایک کی اس نے پر اکام کیااور ظلم کیا۔

(ستن البرواؤو ورقم المريث: ١٣٥)

اس مدے کامنی ہے کہ جس نے تین بار وحونے کو طمارت کے لیے ناکانی جان کر زیادتی کی اس نے ظلم کیا۔ ور نہ اگر مزید منائل کے تصدی یا فعنڈک عاصل کرنے کے لیے تین بار وحویا تو وہ مباح ہے۔ اور یا جس نے تین بار وحویے کو طمارت کے لیے زائد جان کر کی کی اس نے ظلم کیا ور نہ ایک یا دوبار وحویا بھی آپ سے طبحت ہے۔ وضو کے مستحمات

وضوجی نیت کرنا علامہ ابوالحس احد قدوری متونی ۱۳۹۸ کے نزدیک مستحب ہور علامہ الرخینانی المتونی مہدد حنی کے نزدیک سنت ہے۔ کیفکہ وضو کرنا عمادت ہے اور ہر عمادت میں ثواب کی شرط اخلاص ہے اور اخلاص کامعنی نیت ہے۔ قرآن مجد میں ہے:

رِ عَمَّا أُورُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ وَمَّا أُورُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ اللَّذِيْنَ (البِينه: ٥٠)

اور ان کو یک تھم دیا کیا ہے کہ وہ اللہ کی مبادت کریں در جمانیکہ وہ صرف ای کے لیے اظامی سے اطاعت کرنے

والحير

الم محرين اساميل عفاري متوفى ١٥٩هـ روايت كرتے ميں

حضرت عمرین العقطاب دینی نے منبر رکہ بھی نے رسول اللہ چھیز کویہ فرمائے ہوئے سنا ہے کہ اعمال کا مدار صرف نیات پر ہے ' ہر مختص کے لیے وی صلہ ہے جس کی اس نے نیت کی ہے۔ سوجس مختص کی اجرت دنیا کی طرف ہو 'جس کو دوبائے یا کمی عودت کی طرف ہو جس سے وہ نکاح کرے تو اس کی اجرت اس کی طرف (محسوب ہوگی) جس کی طرف اس نے نیت کی

المنج البخاري وقم الحديث: المنج مسلم وقم الحديث: ١٩٠٧ سنن الإداؤد ارقم الحديث: ١٢٧ سنن ترزي وقم الحديث: ١٩٧٧ سنن نسائل وقم الحديث: ٢٥٠ سنن ابن ماجه ارقم الحديث: ١٣٣٧ مند احمه الحريث في ١٤٠٣ من ١٢٥٠ طبح قديم)

وضوکواس ترتیب کرناجس ترتیب قرآن مجید می اعضاء کودھونے کا تھم ہے کی متحب ہے۔ اس کی دلیل قرآن مجید میں اس ترتیب کا نہ کور ہوتا ہے اور بکٹرت احادیث میں رسول اللہ مجید کااس ترتیب سے دضو کرنا تکھا ہے۔ علامہ تعددی کے نزدیک مید مستحب ہے اور علامہ المرفینانی کے نزدیک سنت ہے۔

وائی عفو کویائی عضوے پہلے دھونامتھ ہے۔ اہم محدین اساعیل بخاری متونی ۲۵۷ھ روایت کرتے ہیں: حضرت عائشہ رضی اللہ عنما بیان کرتی ہیں کہ وسول اللہ چھپز کو ہر کام میں دائیں طرف ہے ابتدا کرنا پیند تھا 'حتی کہ ہوتی پہننے میں ''نظمی کرنے میں' وضو کرنے میں اور تمام کاموں میں۔

(ميح البلاري وقم الحديث: ١٨٨ ميح مسلم وقم المديث ١٨٨ سنن الوداؤد وقم المديث ١٠٥٠ سنن وزري وقم الديث ١٠٨٠

سنن نسائی 'رقم الحدیث: ۱۳ مستد احد 'ع ۱۰ رقم الحدیث: ۲۵۸۲۱ مطبوعد داد الفکو ۱۳۳۸ه) وضو کے آواب

علامه كمال الدين محرين عبد الواحد مكتدرى حنى متوفى ١٨٥ كليع بين وضو ك حسب ويل آواب بين (ا) امراف کو ترک کرنا (۱) بهت کمپانی لینے کو ترک کرنا (۱۳) اس کیڑے سے اعضاد ضو کونہ ہو تجھاجن سے استخاکی جگہ کو یو نجما ہو (۳) لوگوں سے یا تھی نہ کرنا (۵) بلا ضرورت وضوی لوگوں سے مدونہ لینگ ویری نے کہائی بی کوئی حرج نسین کیونکہ اصاب محید ہیں ہے کہ حطرت انس معظرت ابن مسعود معظرت ابن عباس اور حضرت مغیمہ بن شعبہ رمنی اللہ عشم نی عظیر کووضو کراتے تھے۔ (۲) وضو کے لیے خود پائی لانا (۷) استفاء کے وقت اس انکوشی کو اتار لیناجس پر اللہ تعالی یا رسول الله منظی کانام مور (٨) وتت سے پہلے وضو کی تیاری کرنا (١) برعضود حوسے وقت کلد شاوت پر منا (١٠) قبلد رد مو کر وضوكرنا (۱۱) انكوشى كے فيے سے بالى كزارنا (۱۱) چرے ير بالى سے جيكے ند مارنا (۱۱۱) جن اعضاء كو وهو يان ير باتھ بجيرے (١١) المينان سے وشوك (١١) ل ل كردمون خصوصاً مرديوں من (١١) چرے إلىون اور عرول كو مقرده مدود ے زیادہ وجونا کا کہ قیامت کے دن زیادہ اعدامعناسفید ہوں (سا) وضو کے بعد یہ بڑھنا سب حاسک اللهم اشهدان لااله الاالله واشهدان محمدا عبده ورسوله اللهم اجعلني من التوابيس" (الح) (۱۸) قبلہ رو کمزے ہو کروشو کا پانی بیند ایک قول یہ ہے کہ اگر جاہے تو بینے کردای طرح آب زمزم قبلہ رو کمزے ہو کر بینا متحب بهد كوتك قرآن مجيد على به ومن يعظم شعائر الله فامها من تقوى القلوب" (الحديد ٢٢٠) "اور جو الله كي نشائيول كي نفظيم بجالاياتويه ولول كے تقوى سے "علام شاي نے لكما بيد متحب نبيس مباح ہے۔ افضل ان پانوں کو بینو کر پہاہے۔ لیکن شاید انہوں بنے اس آیت پر خور نہیں کیا۔ سعیدی مفترلہ) (۱۹) وضو کے بعد دور کعت نماز سنت الوضوية عنا (٢٠) اليخ كيرول كووشوك قطرول ن بجانا (٢١) بائي بالترب ناك صاف كرنا-(٢٢) وضوك ياني من تد تھو کنا (۱۲۳) تین دلسے زیادہ تدومونا (۲۴) وحوب یس کرم شده پانی سے وضوند کال

(فخ القديم "ج امس ٢٠ وار الكتب العلميه " مروت ١٥١٥ ما ما

وضونؤ زئے والے امور

سبدلین مین ایک مخرج اور پچیلے مخرج ہے جو چیز نکلے مثلا ہول اور براز اس سے وضو ٹوٹ جا کا ہے۔ قرآن مجید کی زیر تنمیر آیت میں وضو ٹوشجے کے اسباب میں میان فرمایا ہے:

او حَمَاءَ أَحَدُ يَنْ مُكُمْ مِنَ الْفَالْهِ وَالْمَالَدُهِ ١٠) إِلَمْ عِن مِهُ وَلَى تَعْناهِ عادت رَكَ آءَ۔ جممے فون الهیپ نظے است بحر كرقے آئے تواس ہے وضو ٹوٹ جاتا ہے۔

الم محرين اساعيل عاري متونى ١٥١مه روايت كرت ين

حضرت عائشہ صدیقتہ رسنی اللہ عنما میان کرتی ہیں حضرت فاطمہ بنت الی حیش رسنی اللہ عنمانے نبی ہو ہیں۔ کی فد مت بی حاضر ہو کر عرض کیا یارسول اللہ ایس ایس عورت ہوں جس کو مسلسل حیض آتا رہتا ہے اور جس بالکل پاک نمیں ہوتی۔ کیا می نماز چھوڑ دول؟ رسول اللہ بوجینے نے فرایا نمیں انسی ایہ صرف رگ (ے خون ٹکا ہے 'رحم سے نمیں ٹکلاً) ہے۔ سوجب حمیس حیض آئے تو نماز چھوڑ دو اور جب حیض فتم ہو جائے تو تم خون و مولو اور نماز پر حور پھر برنماز کے لیے ایک بار وضو کرلو' حی کہ دو مری نماذ کا وقت آجائے۔ (منج البخارى وقم المدعث: ١٢٨ منج مسلم وقم المدعث: ١٣٣٠ سنن اليوداؤد وقم المديد ١٩٥٤- ١٩٩٠ سنن ترزى وقم المدعث: ١٤٥ سنن ابن ماجه وقم المحمث: ١٣٣ الموطاء وقم المدعث ١٣٥ مستد احراجه وقم المدعث ١٥٦٤٩ منج هاو الفكو ٢ ١٥١١ه ج١٠ مع مساوح المراجع المرافع قديم)

اس مدیث میں رگ سے نظنے والے فون کو وضو توشنے کی علمت فرملا۔ سوجمال بھی یہ علت پائی جائیگ وضو ٹوٹ جائیگا۔ ایام علی بن عمردار تغنی متوفی ۸۵ جمعہ روایت کرتے ہیں:

حضرت تنیم داری برجی بیان کرتے ہیں کہ نبی ہوتھ نے فرمایا ہر بہنے والے خون سے وضو (لازم) ہے۔ اس صدیث کی سند منقطع ہے "کیونکہ عمرین عبدالعزیز کا تنیم داری سے سلط نمیں ہے اور اس کی سند ہیں یزید بن خالد اور بزیر بمن محد ضعیف ہیں۔(سنن دار تعنی' جا' رقم الحدے شادے "مطبوعہ دار الکتب اصلیہ اوروت)

ر المام دار تعنی نے اس مدے کو دو مختلف سند دل کے ساتھ حضرت ابو ہریرہ جہنے ہے روایت کیا ہے۔ نبی مٹائیور نے فرمایا خون کے ایک قطرہ یا دو قطرون ہے وضو نہیں ہے ' سوااسکے کہ بہنے والاخون نکلے۔ (سنن دار تعنی' رقم الحریث: ۵۷۳-۵۷۳)

الم دار تبلنی نے ان دونول سندول کو بھی ضعیف کما ہے ، لیکن تعدد اسانید سے حدیث حسن لغیر ، ہو جاتی ہے اور دہ لا کُلِّ استدلال ہوتی ہے۔ ابن جر سے اللہ جوجی سے روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ میجیج سے فرمایا، جس محض نے منہ ہمر کرسے کی یااس کی تکمیر پھوٹ گئی وہ دالی لوٹے اور وضو کرے اور الی نماز ہوری کرے۔

(سنن وار تعنی ارقم الحدیث: ۵۵۸ سنن این بابد ۱۳۲۱ سنن کری اللیمتی تا ام ۱۵۳ کال این دری تا ام ۱۹۳)

ایام دار تعنی نے اس مدیث کو حضرت عائشہ رسنی اللہ عنما ہے تمن سندوں کے ساتھ روایت کیا ہے۔ (رقم الحدیث ۵۵۹ ماتھ ۱۵۳۵) بیز ایام دار تعنی نے اس مدیث کو این برتج سک والد ہے روایت کیا ہے۔ (رقم الحدیث ۱۹۳۵) دو سندوں کے ساتھ مضرت علی جہارت کیا ہے۔ (رقم الحدیث ۱۹۲۵) دو سندوں کے ساتھ مضرت علی جہارت کیا ہے۔ (رقم الحدیث کیا ہے۔ (رقم الحدیث ۱۹۵۰ میں ۱۹۵۰ میل ۱۹۵۰ میں ۱۹۵۰

جرچند کہ اس مدعث کی اسائیر ضعف ہیں کیکن تعدد اسائید کی وجہ سے بیہ مدعث حسن تغیرہ ہے اور لا اُق استدلال ہے۔اہام شافعی کے نزدیک نے کرنے سے اور فیر مخرجین سے خون نگلنے ہے وضو نمیں ٹوٹا۔(الحادی الکبیراج) میں ہوہوں) اہم شافعی کا استدلال اس مدعث ہے ہے۔اہام ترزی متوفی 24 جمد رواعت کرتے ہیں:

حضرت ابو ہریرہ بریٹی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ چھپیز نے فرملیا وضو صرف پاد نکلنے سے یا ہوا خارج ہونے سے لازم ہے۔

(سنن ترفدی و قم الحدیث: ۲۰ سنن این بانب و کر قم الحدیث: ۱۵۵ میر احد ٔ ۳۰ و قم الحدیث: ۹۳۲۳ خاد الفکو ' سنن کبری' ملیمتی ٔ چام م ۱۵۷)

ای صدیث سے استدلال درست نہیں ہے ورنہ لازم آئے گاکہ بول و براز نگنے سے خیز ہے اور ہماع ہے ہی وضونہ اولے۔ بہب کہ شوافع کے زدیک عورت کو چھونے سے بھی وضو ٹوٹ جا آئے اور اس صدیف میں ان میں سے کمی کا بھی ذکر سیسے۔ اس کے اس میں سے کمی کا بھی ذکر سیسے۔ اس کے اس سے اس کے اس سے میں آٹاکہ ان سے میں ہوئے۔ اس کے اس سے وضو نہیں ٹوٹا۔ دھزت ابو جربی ہے کہ میں میں شوٹا۔ دھزت ابو جربی ہے کہ میں شوٹا ہے جس کو ہوا خارج ہوئے کا شک ہو آر بہاتھا اس کے انہوں سے کہ کا جب تک آواز نہ نکلے ایا بور تر کے انہوں سے کہ اواز نہ نکلے الیا بورتہ آئے اوضو نہیں ٹوٹے گا۔

الم شافعی نے اس مدعث منت مجمی استدالل کیا ہے۔ الم ابود اؤد متوقی هدا علم روایت کرتے ہیں: معرت جار براین این کرتے ہیں کہ رسول اللہ بیجیوں کے ساتھ فرزوا ڈاٹ الر قاع میں گئے ایک مخص نے کسی مشرک

کی بیوی کو قُل کردیا اس مثرک نے تم کھائی میں اس وقت تک ان کا بیٹھا کر نار ہوں گاجب تک کہ اسحاب اور استیاب ایس کے کسی کا فون نہ ہما دون ۔ وہ نی بیٹیور کا دیٹھا کر نار ہا حتی کہ نی بیٹیور نے ایک جگہ قیام قربان آپ نے قربان ہمارا ہمرہ کون وے گا؟ ایک جماجر اور ایک افسار نے اپنے آپ کو بیش کیا۔ آپ نے فربانی آم دونوں گھائی کے مند پر کھڑے دہتا جب وہ دونوں گھائی کے مند پر کھڑے دہتا جب وہ دونوں گھائی کے مند پر پہنچ قو مماجر لیٹ کیا اور افساری کھڑے ہو کر نماز پر متار ہا۔ اس مشرک نے اس افساری کو ویکھا تو سمجھ لیا کہ سمل اور نگا آور تین جر بارے وہ افساری کا می طرح نماز میں مسلمانوں کی حفاظت کر دہا ہے اس نے اپنا تیز نکال کر کمان میں رکھا اور نگا آور تین جر بارے وہ افساری اس طرح نماز میں مرکوع اور جود کر آر بانے حق کے مساجر بیدار ہوگا۔ جب اس مشرک کو ایز ان وہ اواک چو کئے ہوں قودہ ہماگ کیا جب مماجر نے افساری کے جم سے خون برتا ہوا و کھا تو کہا جمان اللہ اجب حسیس پہلا تیر نگا تو تم نے جمعے کیں نمیں دگایا؟ افساری

نے کما میں قرآن مجید کی جس سورت کو پڑھ رہاتھا جس نے اس کو منقطع کرنا پیند نسیں کیا۔ (سنن ابوداؤد "رقم الدے ہود ۱۹۸۸ سند احمد " جس" مل ۱۳۴۳-۱۳۴۳ طبع تذہبر "سنن کبریل فلیصتی" جا 'من ۱۳۴۰ مسجع ابن فزیر۔ "رقم الدیمٹ ۱۳۴۱ سنن دار تلفی' رقم الحدیث ۱۸۵۸ المستد رک ' جا 'من ۱۵۵۸)

الم شافتی رحمہ اللہ کا اس مدعث ہے استدائل اس وقت منج ہو تا جب نی چھپے کے سامنے یہ واقعہ بیان کیا جا تا اور آپ اس نماذ کو دہرائے کا تھم نہ دیئے۔ ٹانیا: طافظ منذری نے قلعا ہے کہ جب کہ تیر لگ کر بہنے والا خون اس انساری کے بدن اس کی کھال اور اس کے کپڑوں پر بھی یقینانگا ہو گالور اہام شافع کے زریک اس صورت جس نماز مجمح نہیں ہو تی خواد خون تھوڑا ہی ہو'اور اگر یہ کما جائے کہ خون کی دھار اس طرح ہی تھی کہ اس کے کپڑوں اور بدن پر خون نہیں لگاتو یہ بہت تنجب خزیات اور بہت بوید احمال ہے۔(مخضر سنن ابوداؤر اس جو اس میں ہیں)

علامہ اور دی شافع نے بھن آثار محلبہ ہے بھی استدلال کیا ہے۔ لیکن دوسب ضعیف ہیں۔ اگر کمی عمض کو لیٹے ہوئے نیند آ جائے یا کمی چیزے اس طرح ٹیک لگائے ہوئے نیند آ جائے کہ اگر اس چیز کو ہٹایا جائے لوّ دوگر جائے 'قواس کارضو ٹوٹ جائے گ

الم الوصيلي همان عين ترفري متونى العدرواية كرية إلى:

حضرت ابن عماس رضی اللہ عضابیان کرتے ہیں کہ نبی جھی سجدہ میں سوئے ہوئے تھے می کہ اپ نے خوائے لیے انجر آپ نے کھڑے ہو کر نماذ ہوری کی۔ میں نے عرض کیا کارسول اللہ ! آپ تو سونچے تھے۔ آپ نے فرمایا وضواس مخض پر دابب ہو آہے 'جولیٹ کر سوئے کیو تکہ جب افران لیٹ جا آپ تو اس کے اصماب ڈھلے ہو جاتے ہیں۔

المنتن ترقد كي "رقم الحديث عدي "سنن الوواؤو"رقم الحديث: ٢٠٢ منن كبري "جامع ١٢١ مند احر عجام ٢٥٦ وهج تديم إ

معرت انس بن الك بولن مان كرت إلى كر رسول الله منظير كرام علب موت تن المركز عدد كر نماز برعة تعداور وضو نيس كرت تند

معترت مذیفہ بن بمان برہنی بیان کرتے ہیں کہ میں مدید کی مجد میں بیٹھا ہوا تیز سے بل رہا تھا کہ اچا تک کسی نے پہلے سے بھے کود میں بحرایا میں نے ویکھا تو وہ نی جھے میں تھے میں نے عرض کیا ایار سول اللہ اکیا جھے پر وضو واجب ہوگیا؟ آپ نے فريلانسي عب تك تم إنها بهلوزين يرند ركمو- (من كبري عن من مل كال ابن عدى اج ١٠ ص٥٥)

المام بہتی نے کماہے کہ اس مدیث کی سند ضعیف ہے الکین جو تک سے مدیث متعدد اسائید سے مردی ہے اس لیے یہ حسن تغیرہ ہے اور استدانال کی مملاحیت رکھتی ہے۔

اہم دار تعنی نے روایت کیا ہے کہ حضرت معاویہ بن ابی سغیان بریش بیان کرتے ہیں کہ نبی بڑی ہے فرمایا آنقد نگانے سے وضو ٹوٹ جا آئے۔ آگے مرین کی رسی جب آگے سوجا آئے ہو جاتی ہے۔ اہم طرانی کی روایت ہیں یہ اضافہ ہے سوجو مخض سوجائے دہ وضو کرے۔

(سنن دار تعنی و قرقم المدعند ۱۹۸۵ المعم الکبیر علی و قم المدعند ۱۹۷۵ مند احمد علی ۱۳۳۴ و قم ۱۳۳۴ و قم ۱۳۳۱ و قم المدعند ۱۳۵۳ سنن داری علی و قم الدعند ۱۳۷۷ سنن این ماجه و قم المدعند ۱۳۷۳ سنن کبری علی مها سنن ابوداؤد و قم ا الدعند: ۱۳۰۳ بجمع الزوائد علی می ۱۳۴۴ المجامع الصغیر علی و قم المدعند ۱۳۵۵ المجامع الکبیر علی و قم المدعند: ۱۳۵۳ می ۱۳۵۲ المجامع الصغیر علی و آور الدعند ۱۳۵۵ المجامع الکبیر علی و المدعند ۱۳۵۳ و آور المدعند ۱۳۵۳ و آور المدعند ۱۳۵۵ المجامع الکبیر می المدعند ۱۳۵۳ و آور المدعند ۱۳۸۳ و آور المدعند ۱۳۵۳ و آور المدعند ۱۳۸۳ و آور المدعند ۱۳۸ و آور المدعند ۱۳۸۳ و آور المدعند ۱۳۸ و آور المدعند ۱۳۸ و آور ا

اس حدیث کی سند جس ابو بکرین عبداللہ بن ائی حریم ضعف داوی ہے اور بقیہ بن ابولید مدلس ہے۔ ایم ابن حبان لے اس کی توثیق کی ہے۔ حافظ المیشی اور حافظ سیوطی نے اس حدیث کو ضعیف قرار دیا ہے استہم میہ حدیث دیگر احادیث صحیحہ اور حسنہ کی موبد ہے۔

نمازیں قتمہ لگانے سے بھی دخوٹوٹ جاتا ہے۔ قیاس کا تقاضایہ ہے کہ وضونہ ٹوٹے کی تکہ بدن سے کوئی نجاست نہیں نگل کین حدیث بیں یہ تقریح ہے کہ اس سے وضو ٹوٹ جاتا ہے۔ اس لیے الم ابو حذیفہ رحمہ اللہ قیاس پر حدیث کو مقدم رکھتے ہیں۔ ہرچند کہ اس صدیث کی مند ضعیف ہے۔

المم على بن عروار تعنى متوفى ١٨٥٥ مروايت كرتے بين:

بلیج بن اسمامہ اپنے والد بروز سے روایت کرتے ہیں ایک نازنا فخص آیا اور ایک گڑھے میں کر کمیا ہم اس ہے بنس پڑے ارسول اللہ بیجین نے ہم کو پورا وضو دوبارہ کرنے کا تھم دیا اور نماز کو شروع ہے د ہرانے کا تھم دیا۔ اسٹن دار تھتی کی اور تم الحدیث ۱۹۹۰)

اس مدعث کی سفد میں حسن بن دعار متروک ہے۔ (برزان الاعترال جو اس ۱۹۳۹)

الم شافعی اور الم احمد کے نزدیک جب مروعورت کیا عورت مرد کے برن کو بلا تجاب چھوے تو وضو ٹوٹ جاتا ہے۔ ان

کی دلیل سے ہے کہ ذرح تخیر آبت میں "اولسنم السساء علم تعجدوا ماء فسیم مواصعبدا طبب"

(السائد ۱۹۰۹) وہ اس آبت میں نس کا معلی چھوٹا کرتے ہیں ایعنی یا تم نے عور توں کو مس کیا ہو اپس تم یائی کو زیار تو تیم کرو۔
الم مالک اور ایم ابوطیفہ کے نزدیک اس آبت می اس جماع ہے کنایہ ہے ایعنی جماع اور میا شرت سے وضو ٹوٹا ہے مرف چھوٹے ہے وضو تھیں ٹوٹا۔

حضرت ابن عباس رمنی الله عنمائے قربایا قرآن مجید میں لمس مس کے الفاظ جماع سے کنایہ ہیں۔ (الجامع لا مکام القرآن 'ج ۴ مس ۲۲ مطبور داد الفکو 'بیروت ۱۳۱۵) ہے)

الم محدین اسائیل بخاری متوفی ۲۵۲ ہوروایت کرتے ہیں: نبی میٹی کی نوجہ حضرت عائشہ رمنی اللہ عنها روایت کرتی ہیں: کہ میں رسول اللہ میٹی کے مانے سو رہی تھی اور میرے دونوں پیر آپ کے مانے تھے۔ جب آپ مجدو میں جاتے تو آپ میرے بیروں کو ہاتھ نگاتے میں اپنے پیر کھینج کیتی 'جب

غيان القر أن

الم ابوعبد الرحمٰن بن شعيب نسائل متوفى ١٠٠٠ هـ روايت كرتے بين.

حضرت عائشہ رمنی اللہ عنما بیان کرتی ہیں کہ نبی توجید اٹی کسی زوجہ کو بوسہ دیے 'مجر نماز پڑھتے اور وضو نہیں کرتے تھے۔امام نسائی نے کما ہے کہ اس باب میں بیر سب سے حسن صدیث ہے۔اگر چہ بیر صدیث مرسل ہے۔

(امام مالك اور امام ابوطنيف ك نزديك مدعث مرسل مقبول موتى ب)

(سنن نسالً) 'ج)' رقم الحديث • سما' سنن الإداؤر' جا' رقم الحديث • ١٨٨ عمل ١٨٨ سنن ترذي ' رقم الديث ١٨٦ سنن ابن ماجه' وقم الحديث: ١٠٨ مند احمر' ج ١٠ رقم الحديث: ٢٥٨٢٣ مطبور خاوالفكو)

علامدا میر شاکر متوتی ۷۷ سامد نے لکھا ہے کہ اس مسئلہ میں محلیہ کرام ' نقباہ تابعین اور ائمہ مجتدین کا خیلاف ہے ' اور مجے یہ ہے کہ مورت کو چھونے ہے وضو نمیں ٹونل

ایام ابو صنیفہ رحمہ اللہ کے نزدیک مس ذکر (شرم گاہ کو چمونا) ہے وضو نمیں ٹوٹنا 'ایام شافع کے نزدیک اس ہے وضو ٹوٹ جاتا ہے۔ ایام بالک کامشہور تدمیب بھی بھی ہے 'اور ایام احمد کے اس میں دو قول میں (المفنی 'لابن تدامہ' ج' مسالا) ایام ابو صنیفہ کی دلیل سے صدیث ہے۔

الم الوعيني هم بن عيني ترزي متونى اعله روايت كرة بن

طلق بن علی این علی این والد بوایش سے روایت کرتے ہیں کہ نبی ہیں ہے قرمایا" وہ تمسادے جسم کاایک عضوی تو ہے"۔ (سنن ترنری کی آن رقم الحدیث: ۸۵ سنن ابوداؤد ' بہا ' رقم الحدیث: ۱۸۶ سنن ابن بابد ' رقم الحدیث: ۱۸۳ سند اجر ' ج۵ ' رقم الحدیث: ۱۳۳۹ مصنف ابن الی شید ' بچا ' ص ۱۳۵ مصنف عبد الرزاق ' رقم الحدیث: ۱۳۲۹)

اس مدیث کی سند قوی ہے۔ امام شافعی کااستدلال درج زیل مدیث ہے ہے:

بسرہ بنت معوان بیان کرتی ہیں کہ نبی ہے ہیں ہے فرملیا جس مخص نے اپنے ذکر (شرم مکا) کو چھوا' وہ وضو کیے بغیر نماز نہ پڑھے۔(سنن ترزی علائ قم الحدیث: ۸۳ سنن ابوداؤو' رقم الحدیث: ۱۸۵ سنن ابن ماجہ' رقم الحدیث: ۵۱ اس مدیث کی سند سمج ہے) اہم ابو جعفرا محدین محد محفلوی سنونی ابوسامہ نے اس کے خلاف بکٹرت آٹار روایت کیے ہیں۔

حضرت این عمال رمنی اللہ مختمافر ماتے ہیں کہ جمعے اس کی کوئی پر داہ نمیں کہ ہیں ذکر کو چھوؤں یا کان کو چھوؤں۔ حضرت علی جوہز فرماتے ہیں کہ جمعے اس کی کوئی پر داہ نمیں کہ میں ذکر کو چھوؤں یا ناک کو چھوؤں۔ حضرت ممارین یا سرنے قرمایا سے میری یا تسماری ناک کی طرح عصوبے اور تمہمارے چھونے کے لیے اور اعضا بھی ہیں۔

رے مارین و سرے مربی سے مربی سے میرون میں اس کی سرے سویے بور سمارے مانوے ہے اور احضادی ا حضرت حذیقہ نے فرمایا مجھے کوئی پرواہ نہیں کہ جس اس کو چھوؤں یا ناک کو چھوؤں۔

(شرح معانى الآثار على المس عام مطبوعه جنباتى إكتان)

اس مسئلہ میں دونوں جانب احادیث اور آثار میں اور قیاس میج کا نقاضا سے سے کہ می ذکر سے وضو واجب نہیں ہو لک

کیونکدارالاً توبیرونگراصفاء کی طرح ایک عضوب جس طرح دیگراصفاء کوچموسفے سے دخووایب نسی ہو آاس کوچمونے سے بھی وضو واجب نہیں ہو یک ٹانیاً: اس لیے کہ خون ' بیپ اور بول ' براز کو چھونے ہے وضو نہیں ٹوٹنا 'جو نجس العین ہیں توجو عضو نی تغیر طاہرے اس کو چھوسے سے وضو کیے تو فے گا؟

ہم کی شرط ' طریقتہ اور دیجراحکام

علامد ابوالحسن على بن اني يكر المرضية الى المتوفى معصد لكية بيدة

جو مخص سفرکے دوران پانی نہ پائے 'یا وہ مخض شرے باہر ہواور شراس ہے ایک میل (انگریزی ڈیزھ میل) یا اس ہے زیارہ فاصلے پر ہوتو وہ یاک مٹی سے تھم کرے۔ کو تکہ اللہ تعلق نے قرمایا ہے "فلم تحدوا ماء فنیسموا صعبدا طببا" (السائده ١٠) پن تم يائي كونه ياؤ تو تم ياك ملى ے محم كو" - معرت أيوذر برين بيان كرتے بي كر رسول الله ميريد فرمايان إك منى مسلمان كوياك كرت والى ب-خواه اس كودس سال تك يالى ند الح سوجب اس كوياني ل جائ توده اس انی کمل ترکرے اپنی وضو کرے ایہ اس کے لیے بہتر ہے۔ محدود کی روایت میں ہے کہ پاک مٹی مسلمان کاوضو ہے۔ (سنن ترزي" وقم الحديث: ٣٣ سنن ابوداؤو" وقم الحديث ١٣٠٠ سنن قسائل" وقم الحديث: ٣١٦ سنن دار تعني" يها و قم الحديث. ١١١٠

سند الداجه ارقم الحديث: ١٢١٣ المستدرك اجام عداستن كيري عاص ١٢٠٠)

ایک (شرعی) میل کا اختیار اس لیے کیا ہے کہ ایک ممل کی مسافت ہے وضو کے لیے شری جانے ہے ضرر ہوگا' اختبار ممانت کا ہے استحل وقت یا نماز لوت ہوئے کے خوف کا اعتبار نسیں ہے "کیو تک یہ تنتھیراس کی طرف ہے ہور آگر اس کو یائی دستیاب ہو لیکن وہ بیار ہواور اس کو بیہ خدشہ ہو کہ اگر اس نے پانی استعمال کیاتو اس کا مرض بزرہ جائے گا' تو وہ تیمم کرے۔ اگر جنی کویے فدشہ ہو کہ آگر اس سے هسل کیاتووہ سردی سے مرجائے گا بنار موجائے گا تو وہ تھم کرے ، فواہ وہ شرجی ہو۔

حفزت عمد بن العاص رمنی اللہ عند ایک مردی کی رات میں جنبی ہو محصہ انہوں نے تیم کیااور یہ تابت بڑھی و لا تقتلوا انفسكم ان الله كان بكم رحيما (النساء: ٢٩) تم الى جاؤل كو قل تدكو مب ثك الله تم ير مران ے" پر انہوں نے اس کانی میں ہے ذکر کیا تو آپ نے ان کو طامت تیس کی۔ (می عاری اللب اہم البدے)

تم كا طريقه يد ب ك باك منى ير دو بار باته مار الك بار باتمون كواسية چرك ير لم اور دو مرى بار كمنيول مسيت باتمون رفع 'باتمون سے منی کو جمازے 'آک چرو فراب نہ ہو۔

الم او صفر اور الم الديك زين كى بنس م بريزك سات محمرا بازب مثلاً عن ريت الجروع ااور بڑ آل (ایک محم کی زرد اور زبر لی دهات)و فیرو سے۔ مجم براس چیزے ٹوٹ جا تاہے اجس سے و فو ٹوٹا ہے۔ نیز جب انسان کو پانی ال جائے اور وہ اس کے استعمال پر تلور ہوتو اس ہے جس تھم ٹوٹ جاتا ہے۔ جسم سے فرائض اور نوافل سب پھے برا مسکا ے اگر نماز جنازہ یا عمید کی نماز کے نوت ہونے کا تنظرہ مو توشری باعدر بھی تیم کرنا جا ترہے۔

(بدائية اولين من ١٥٠-٩٩ مغمل مطيور فركت مليد عمان)

يم ے متعلق و يكر مباحث بم نے داخراو ١٩٣٠ عن بيان كردي بيں۔ وہل مطاحد قرائم

ادرتم پر جر اشر کی منسے ہے اس کر یاد کرو، اور اس معدو میان کو براس نے بنتی کے ساتھ

بُيانالقر أن



جكدسوم

الله تعالی کاارشاوہ: کورتم پر جواللہ کی فعت ہیں کو یاد کرداور اس جدد پیان کو جواس نے پھٹی کے ساتھ تم سے نیا ہے۔ جب تم نے کماہم نے سااور اطاعت کی اور اللہ سے ڈرتے رہو بے ٹیک اللہ دلوں کی باتوں کو جانے والا ہے۔ (الما کہ دے)

الله کی نعمت اور اس کے عمد و میثاق کامعنی

اس آبت کامعنی ہے کہ اے مسلمانوا اللہ کی اس نعت کو یاد کر جو اس نے تم کو عطافر ہائی ہے کہ اس نے تم کو اسلام کی ہدایت دی اور اس عمد کو یاد کر وجو اس نے تم سے لیا تھا۔ جب تم نے رسول اللہ بیجیں سے اس بلت پر بیعت کی تھی کہ تمہیں خوشی ہو یا رہی معمولات ہو یا جنگی 'ہر صل جس تم اللہ کے ادکام من کر قبول کرو گے اور اس کی اطاعت کر ہے اور تم نے یہ کما تھا کہ آپ ہمیں جس چیز کا تھم دیں گے ہم اس کو بجالا نمی گے اور جس کام سے منع کریں گے اس سے باز رہیں گے اور تم پر یہ بھی اللہ کا انجام تھا کہ تم نے عمد کیا سو اے مسلمانوا تم اپنے اس عمد کو پورا کرو آپ کہ اللہ تعالی تمہیں آ فرت میں وائی نعیس عطافر ہائے۔

تم اس معد کو تو ژخے یا بورانہ کرنے کے معالمہ میں اللہ سے ڈرو ایسانہ کرنا کہ زبان سے اطاعت کا قرار کرو اور دل می اس کے خلاف ہو اور اپنے ظاہراور باطن میں اس عمد کی خلاف ور زی کرنے سے اللہ سے ڈرو کیے تکہ اللہ تعالی تمہارے دوں کی باتوں کو جائے والا ہے۔ '

اس ایت میں اللہ تعالی نے کمی معین نوت کا ذکر نہیں قربایا کیکہ جنس نوت کا ذکر قربایا ہے اس ایت ہے مقدودیہ ہے کہ تم اللہ کی ان نوتوں پر فور کرد جو اس نے تم کو عطا قربائی ہیں۔ اللہ نے بیندوں کو جو نوتیں دی ہیں ان کا شار کون کر سکتا ہے۔
اس نے حیات عطا فربائی محت دی مسل اور ہدایت دی۔ آفتوں اور مصیبتوں سے محفوظ رکھا اور دنیا ہی بہت اچھائیاں عطا فربا کی افرائی محت دی اللہ کی اور اس کی اطاعت کریں۔ اس آیت میں فربایا فربا کی این نوتوں کو فور کریں اس کا شکر بجالا کی اور اس کی اطاعت کریں۔ اس آیت میں فربایا ہے تم ان نوتوں کو یاد کردا در یاد کرنا بھولنے کی فرع ہے ایعنی انسان اللہ تعالی کی نوتوں کو بھول جاتا ہے۔ دنیا کی دیمینوں میں اور نسب کوئی فعت چلی جاتی ہے اور جس کوئی فعت چلی جاتی ہے اور جس کوئی فعت چلی جاتو بھراس لوت کو یاد کرتا ہے اور جس کوئی فعت چلی جاتی ہے کہ دو فعت کی حالت میں اپنے مصم کو یاد رکھے۔

اللہ تعالیٰ کی اطاعت کی طرف متوجہ کرنے کا ایک سب اللہ تعالیٰ کا دی ہو کی لعمیں ہیں اور اس کی طرف متنہ کرنے کا دو سراسب اللہ تعالیٰ ہے کیا ہوا حدو میشن ہے۔ اس میشان کی آیک تغییروہ ہے جس کو ہم اور بیان کر بچے ہیں کہ مسلمانوں نے دسول اللہ سیجھی ہے ہوئے۔ آپ کی اطاعت کرنے کا وعدہ کیا تعلد اس کی دو سری تغییر ہے کہ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنمانے قربایا اللہ عنمانے قربایا الله عنمانے قربایا الله عنمانے قربایا الله عنمانے قربایا الله عنمانے میں اور قرات میں سید نامجہ سید اور میشان لیا کہ وہ تو رات پر ایمان لائے کا الله عنمانے میں اور تو رات میں سید نامجہ سیمیان مراد سیمین اللہ کی بیاری تغییرہ ہے کہ جسب اللہ تعالی نے تمام روحوں کو حضرت آدم کی بیٹ سے انگان تو ان سے اپنی ربوبیت کا عمد لیا اور چو تھی تغییرہ ہے کہ اللہ تعالی نے اپنی توجید اور شریعت پر جو متنی دلائل اور شری براہیں قائم کی ہیں 'حمد اور میشان سے وہ دلائل اور براہیں حماد ہیں۔

الله تعلل كالرشادي: اے ايمان وانوالله كے ليے (حق ير) مضبوطى سے قائم رہے والے ہو جاؤا در آنحاليكه تم انساف كے مائد كوائى دينے والے ہو۔ (المائمديم)

صحیح ادر تحی شهادت کی اہمیت

یہ آیت میں مابقہ آیت سے مصل ہے اور اس سے مراد مجی اللہ تعالی کی اطاعت پر برانکین کرتا ہے۔ اس آیت میں دو الم میں (حق پر) مضبوطی ہے تائم رہنا اور انساف کے ساتھ کوائی دینا اور اللہ تعالی کے تمام احکام کا خلامہ بھی دو چیزیں ہیں۔ الله كى تفظيم أور بندول ير شفقت كوحقوق الله اور حقوق العباد كے ساتھ تعبيركرتے بين اور حق ير سنبوطى كے ساتھ قائم رہنا اس كا تعلق الله كى تعظيم كى ماتھ ہے اور انساف كے ساتھ كواي دينااس كا تعلق بندوں پر شفقت كے ساتھ ہے اور اس كامعنى يہ ہے کہ اسینہ قرابت داروں اور ووستوں کی محبت کی وجہ سے شمادت دینے میں کو تاتی یا کمی ند کرو اور اسینے نمالغوں اور وشمنوں ے بغض کی وجہ سے شمادت میں کوئی رو و بدل نہ کرو' صرف انصاف کی رو سے شمادت رو' خواہ اس سے تممارے دوستوں کو نقصان بنج یا تمهارے وشمنوں کو فائدہ بنج ایمرائڈ تعالی نے فرہایائمی قوم کی عداوت تنہیں ، انصافی پر نہ اجمارے۔ اس آیت کی دو تغییریں کی گئی ہیں۔ایک تغییر عام ہے اس کامعیٰ یہ ہے کہ کمی قوم کے ساتھ بغض تہیں اس کے ساتھ ب انصافی کرنے پر نہ ابھارے کیا میں طور کہ تم مدے تجاوز کرو ملکہ تم ان کے ساتھ انصاف کرو مؤاوانسوں نے تمسارے ساتھ برائی کی ہو اور ان کے ساتھ نیکی اور امچھائی کے ساتھ بیش آؤ خواہ انسوں نے تمہارے ساتھ بدی اور برائی کی ہو 'اور محلوق میں ے ہرایک کے ماتھ عدر اور انساف کو اور کمی کے ماتھ علم اور زیاد آل نہ کو اور اس آیت کی دومری تغیریہ ہے کہ ب آیت کفار کمہ کے ماتھ مخصوص ہے کو تک انہوں نے مسلمانوں کو چھ جری بی معجد حرام بی واقل ہوتے اور عمرہ کرنے ہے روك ديا تما اور حديب سے آئے سي جانے ديا تما- سواس وجد سے تم ان پر ظلم اور زيادتي نه كرنا- اكريد اعتراض كياجائےك مسلمانوں کو کفار پر تعلم اور زیادتی کرنے ہے منع کیا گیاہے اصلانک مسلمانوں کو یہ تھم دیا گیاہے کہ وہ مشرکوں کو جمال یا تھی اتنی كروي اور ميدان جنگ مي سنة والے بچوں اور عورتوں كو كر فقار كرليں اور ان كے اموال لوت ليس تو پيراور ظلم اور زيادتي كيے ہوگى؟ اس كاجواب يہ ہے كہ ظلم يہ ہے كہ جب وہ اسلام لائس تو ان كااسلام قبول ند كيا جائے ان كے بجوں كو تحلّ كيا جائے' برون کامثلہ کیاجائے' اور ان ہے کیے ہوئے معنبروں کو تو ژویا جائے۔اس کے بعد فرمایا، تم مدل کرتے رہو' وہ فوف فدا کے زیارہ قریب ہے۔

مدل تفویٰ کے زیادہ قریب ہے۔ اس کی بھی دو تغییری ہیں۔ تفویٰ کے سخی ہیں خوف فدا کی دجہ ہے گناہوں سے اجتناب کرنا اور جو مخص مدل کرتا ہے وہ گناہوں سے اجتناب کے زیادہ قریب ہوتا ہے اور دو مری تغییر یہ ہے کہ جو مخص مدل کرتا ہے اور دو مری تغییر یہ ہے کہ جو مخص مدل کرتا ہے اور عذاب افروی سے نیجنے کے زیادہ قریب ہوتا ہے۔

اس آیت میں اس پر قور کرتا جا ہے کہ اللہ تعالی نے کفار کے ساتھ بھی عدل کرنے کا بھم دیا ہے ' علا فکہ وہ اللہ کہ و گئہ
ہیں اور جب اللہ کے دشمنوں کے ساتھ عدل کرتا واجب ہے تو اللہ کے دوستوں کے ساتھ عدل کرتا کس قدر زیادہ مطلوب ہو گئہ
اس کے بعد فرایا۔ اور اللہ ہے ڈرتے رہو' ہے شک اللہ تمسارے کاموں کی بہت فہرر کھنے والا ہے والمائے دہ اللہ اللہ ہد، ۸)
یعنی اللہ ہر چیز کا جائے والا ہے اور وہ تمسارے کاموں سے بافہرہ ' سواگر تم نے کسی کے طلاف جموثی گوائی دی یا کسی کے
حق میں جموثی گوائی دی اور ہے افسانی کی ' تو وہ اللہ سے مختی نہیں ہے۔ پھر صحح اور کچی گوائی پر اجر و ثواب کی بشارت دی اور
جموئی گوائی پر عذاب کی دعید سائی اور فرملیا جو لوگ ایمان لاے اور نیک عمل کیے ' ان سے اللہ نے سفرے اور اجر منظیم کا وعدہ
کیا ہے۔ (المائدہ: ۹) اور جن لوگوں نے کفر کیا اور بھاری آنتوں کو جمعانیا ' وہ لوگ دوز فی ہیں۔

(16:02 Lift)

نا الل كوسنديالانسنس دين كاعدم جواز اور بحث و نظر منتي محرشنج ديويندي منوني الاسلام للصنح بين:

آخر می ایک اور اہم بلت ہی یماں جانا ضروری ہے۔ وہ یہ کہ افظ شاوت اور گوان کا ہو مغموم آج کل عرف ہیں مشہور او گیا ہے وہ تو صرف مقدمات و قصومات میں کسی حاکم کے سامنے گوائی دینے کے لیے مخصوص سمجھاجا آہے۔ گر قرآن و سنت کی اصطفاح میں افظ شاوت اس سے زیادہ و سمج مغموم رکھتا ہے۔ حظامی بیار کو ڈاکٹری سرشیکیٹ دینا کہ یہ ڈیوٹی اواکرنے کے قابل نہیں اور ہموٹی شاوت ہو گرگناہ میں یا توکری کر سے خلاف کھا گیا تو وہ جموٹی شاوت ہو کر گناہ کی جادو کر گناہ کے خلاف کھا گیا تو وہ جموٹی شاوت ہو کر گناہ کی دواور کی ا

ای طرح احتمانات میں طلباء کے برجوں پر نبرنگا بھی ایک شادت ہے۔ اگر جان یو جد کریا ہے پردائی سے نبروں میں کی بیشی کردی تو دہ بھی جموٹی شاوت ہے اور حزام اور سخت گزاد ہے۔

(معارف القرآن مج ١٠٥٥ مل ١٥٠٥ مطبور ادارة المعادف اكراجي)

جارے زندیک آگر کوئی ڈاکٹر کسی صحت مند مخض کو کسی تعلق کی بنا پریار شوت کے کر بیاری کا سر شیکیٹ دے دیتا ہے تو اس کے سریر ایک محملہ تو رشوت لینے کا ہے اور اپنے منصب سے نامائز فائدہ اٹھائے کا گناہ ہے۔ اور دو سرا گناہ اس کا جموث ہے اور جموث گناہ کبیرہ ہے۔ اللہ تعلق نے جموٹوں پر لعنت فرائی ہے:

اکر وہ جمولوں بی سے او تو بے شک اس بر اللہ کی است

آنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْوالُّ كَانَ مِنَ الْكُومِيُّنَ

(السورام) اد-

اورجموث پر عزاب كى دهيدستائى بيد. وَلَهُمْ عَذَابُ ٱلِيَّمْ بِمَا كَامُوا يَكْيد بُونَ

اور ان کے لیے در دناک عذاب ہے اکو تکہ وہ جموث

(البقرة: ١٠) والتقيد

آگر کوئی محق کی طالب علم کے پرچہ یں دشوت نے کریا سفارشیا تعلق کی بناپر زیادہ نمبرنگا آہے یا دشنی اور بداوت کی
بناپر اس کے نمبر کم لگا آہے تو یہ ظلم ہے جمع تک ظلم کا معنی ہے کسی چیز کو اس کے فیر کل میں رکھنا۔
منامہ میرسید شریف ملی بن محد جر جانی متونی ۱۸۲۱ ہے تھے ہیں:

علم کامعیٰ ہے کمی چیز کو اس کے فیر کل میں رکھنا۔ اور اس کا شرقی معیٰ ہے جن سے باطل کی طرف تولوز کرنا اور اس کو جور کہتے میں اور ایک قول ہیہ ہے کہ فیر کی ملک میں تصرف کرنا تھتم ہے اور حدے تولوز کرنا تھلم ہے۔

(كتأب احتريفات من ١٢ مطور أران النماية على من ١١ المغردات من ١١٥-١١٥)

اور علم می گناہ كبيرہ إلى اللہ تعالى في ظالموں راعنت فرالى ب:

الكُلِّعْنَةُ اللَّهِ عَلَى النَّظْمِلِيمِينَ (هود ١٨٠) منواطَالُون إللَّ كَالعنت ب-

اس کے کمی ڈاکٹر کا صحت مند کو بیاری کا سر فینکیٹ دیایا کسی افسر کا انازی کو ڈرائیو تک لائسنس دیایا کسی فیرائیو کے فلا بیٹر کی میچ بیٹر کا سند ویتایا رشوت نے کر کسی فیر کئی کو توبی شناختی کارڈ بناویتایا کسی بوشور ٹی یا اوار دکی جعلی سند جاری کر دینا اور اس نوع کی تمام جموثی اور جعلی دستاویرات 'جموٹ اور تھلم پر جتی جیں' اور گناہ کمیرہ جیں۔ آہم ان کو جموئی شہادت کے ذیل میں لانا میجے نہیں ہے 'خصوماً مستحن کے نبرلگانے کا معالمہ کسی طور پر شہادت نہیں ہے۔ اس کے نگائے ہوئے نبر شہادت

البيان القر أن

نیں الکہ ایک تم کانیعلہ ہیں 'اگر وہ خلا نمبرنگے گاتویہ اس کی مدائت کے طاف ہو گااور قر ان مجید میں ہے: وَلاَ يَدَّوْرِمَنْ كُنَّمْ شَنَالُ قَدُّمْ عَلَیْ اَنْ لاَنْعَدِ لُوْا مَن قُوم کی مداوت تمیں ہے انسانی پرند ابھادے۔ تم اعد لُوا هُنَوا فَرَبُ لِللَّنَفُّوٰ ی (المدائدہ ۱۸) میں کرتے رہوا وہ خوف فیم اکے زیادہ قریب ہے۔

طالب علم کارچہ بھک کرے جو نہرنگا آہ وہ اس کی قضا اور فیصلہ ہے۔ اس طرح جو افہر گاڑی کف نیس کا سر فیکلیٹ دیتا ہے ' اِ بیٹر کو صحیح قرار دیتا ہے' یہ اس کی افغا اور فیصلہ ہے اور ڈاکٹر جو سر فیکلیٹ دیتا ہے ہے اس کی اہرانہ دائے ہے۔ یہ تمام امور مشابہ بالفضاء ہیں' شاوت نمیں۔ پس شاوت دیتا ہوں جیساکہ ہم عملہ بیب امور مشابہ بالفضاء ہیں' شاوت نمیں۔ پس شاوت دیتا ہوں جیساکہ ہم عملہ بیب کا اور خلاف میان کریں گے۔ اس کے اگر یہ لوگ ملط فیصلہ کریں گے اور خلاف واقع تحریم کریں گے او عدل کے خلاف ہوگا اور ظلم اور جموث ہوگا اور میں آتے۔ اب ہم آپ کے اور جموث ہوگا' اور یہ کام مرزف اعت ہیں اور گنا کریے ہیں۔ مائٹ شاوت کی تعریف ہی تعریف اور ار کان بیان کررہے ہیں۔ مائٹ شاوت کی تعریف ہی تعریف اور ار کان بیان کررہے ہیں۔

ر سماوت کی سربیب علامہ میرسید شریف علی بن محد جر جانل متونی ۱۸۲۹ کے بین قامنی کے سامنے ایک فخض کے دو سرے مخض پر حق کی لفظ شہادت کے ساتھ خبروینا (مثلاً کے جس شہادت دینا ہوں کہ فلاں آدمی کافلاں فخص پر فلاں حق ہے) شریعت میں شہادت ہے۔

(كتاب احريقات من ٥٤ مطبوعه ام ان)

علامہ حیون بن میر دافب اصفرانی متونی ۱۰۵ میں تھے ہیں: شاوت کی دو تشمیں ہیں۔ ایک تم علم نوریقین کے قائم مقام ہے اس میں یہ کمناکانی نسی ہے کہ میں جانتا ہوں بلکہ یہ کمنا ضروری ہے کہ میں گوائی دیتا ہوں۔ دو مری تم وہ ہے جو تم کے قائم مقام ہے اس میں مثانا یہ کے کہ میں اللہ کو گواہ کر تا موں کہ ڈیڈ مِلنے والا ہے۔ (المفردات میں ۱۳۷)

علامه في من محود إير أل حل منوني ١٨عه لكسع إلى:

جب گواہ مسموعات کی جنس سے کوئی بلت سے مثلاً بع اقرار یا عالم کے عظم کو سے ایا بھرات جی ہے کو دیکھے مثلاً کمی کو قبل کرتے ہوئے دیکھے ایا کمی کو خصب کرتے ہوئے دیکھے تو اس کے لیے جائز ہے کہ دہ یہ کوائی دے کہ جس گوائی دیتا موں فلال مخض نے بیچ کی ایا حاکم نے فیصلہ کیا خواہ اس کو گواہ نہ بنایا گیا ہو۔

(ماي مع فق القدير عدام ١٥٥٠ في مرد عد ١٥١٥١ه)

علامہ کمل الدین ابن جام متوفی ۱۸۷ نے لکھا ہے کہ شادت میں لفظ شادت (مثلاً میں شادت دیتا ہوں) کمنا ضروری ہے کیونکہ قرآن مجید میں اس لفظ کے ساتھ شادت دینے کا تھم فر ایا ہے۔

اور تم میں ہے دو نیک محص شادت دیں۔ بب تم آپس میں فرید و فرد شت کروشامد (گواہ) بنا ہو۔ اور تم اپنے مردون میں ہے دوشاہر طلب کرد۔

ادراشك ليكواى قائم كرو

وَ أَشْهِدُوا ذَوَى عَدْلِ مِنْكُمُ الطلاق: ٣) وَ أَشْهِدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمُ (البقرة: ٣٨٢) وَ أَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ مِنَ رِحَالِكُمُ وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ مِنَ رِحَالِكُمُ

وَ أَقِيتُ مُوا النَّبَهَادَةَ لِللهِ (الطالاق: ٢) الم ابوعبدالله ماكم نيثانوري متوفى ٥٠ مه روايت كرتي بين حصرت ابن جباس رمنی اللہ عنمامیان کرتے میں کہ ایک مخص نے تی متجرم سے شاوت کے متعلق سوال کیا۔ آپ نے فرمایا کیاتم سورج کو دیکھ رہے ہو؟اس نے کماہل یا آپ نے فرمایا اس کی مثل ہو تو شماوت دو ورند چمو ژود

(المستدوك مج ٣ م م ١٩١٨ اسنن كبري ج ١٥٠ ص ١٥١)

ان تقریحات سے بید واضح ہو کیا کہ سمی سن ہوئی بات یا سمی و توع پذیر ہوئے والے حادث کی لفظ شادت کے ساتھ خبروسینے کو شاوت کتے ہیں۔ اور ڈاکٹر جو کسی مریض کے متعلق اپنی رائے لکستاہے کیا متنی کسی رچہ پر نمبرانگا آہے اس میں کسی واقعہ یا ماديري خرنميں دي جاتي الك ائي طرف سے ايك رائے دي جاتي ہے يا ايك تھم نگايا جاتا ہے۔ اس ليے ان امور كو شادت كے ذیل میں لانا میج نمیں ہے۔البتہ اگر بدنتی کی وجہ سے میج رائے نہ نکمی جائے یا سیج تھم نہ لگایا جائے تو یہ عدل کے خلاف ہ اور علم ہے 'اور اگر اس نے دانستہ اپنی ٹی الواقع رائے کے خلاف لکھاتو یہ جموث ہے اور سرخال کمناہ کبیرہ ہے۔ نا اہل ھخص کوودٹ دینے کاعدم جواز اور بحث و نظر

مفتى مجر شفع ديويندي متوفى ١٦ ١١٠ المد تكمية بن:

كامياب مون والي فارخ التحميل طلباء كوسنديا سر فيغليث دينااس كي شاوت ب كه وه متعلقه كام كي الجيت و صفاحيت ر کمتاہے۔ اگر وہ فخص واقع میں ایسانسی ہے تو اس سر فیکلیٹ یاسند پر د عظا کرنے والے سب کے سب شمادت کاذبہ کے بحرم او جلت إي

ای طرح ہمبلیوں اور کونسلوں وغیرہ کے انتخاب میں کمی امیدوار کو ووٹ ویٹا بھی ایک شاوت ہے۔ جس میں ووٹ وہندہ کی طرف سے اس کی کوائل ہے کہ ہمارے نزدیک یہ مختص اپنی استعداد اور قابلیت کے اختبار سے بھی اور دیانت و امانت کے اختیار ہے بھی قوی نمائندہ بننے کے قابل ہے۔

اب فور سیجے کہ ہمارے نمائندوں میں کتنے ایسے ہوتے ہیں جن کے حق میں یہ گوائی مجی اور محیح شاہت ہو سکے 'محر ہمارے عوام بن كه انهوں نے اس كو محض بار جيت كا كھيل سجو ركھا ہے۔ اس ليے ووٹ كا حن تجي پييوں کے عوض ميں فرد شت ہويا ہے بہری کمی دباؤ کے تحت استعال کیا جاتا ہے بہمی بلپا کدار دوستوں اور ذکیل وعدوں کے بھرد سد پر اس کو استعمال کیا جاتا ہے۔ اور تواور الکھے پڑھے دیندار مسلمان بھی تا اہل او کوں کو دوث دیتے دفت کھی یہ محسوس منس کرتے کہ ہم یہ جمونی کوای دے کر مستحق لعنت وغذاب بن رہے ہیں۔

نمائندوں کے انتخاب کے لیے ووٹ دینے کی ازروئے قرآن ایک دو سری حیثیت بھی ہے جس کو شفاعت یا سفارش کما جاتا ہے کہ ووٹ ویے والا کویا میر سفارش کرتا ہے فلال امیدوار کو نمائندگی دی جائے۔اس کا تھم قرآن کریم کے الفاظ میں پہلے بيان برجائ ارشاد ب

وَ مَنْ يُتُنْفَعُ شَفَاعَهُ مُتَنَاعَهُ مُسَنَّةً فِكُمُ لِلَّهُ لَصِيْبُ رِبِّنْهَا وُكُنْ يَكَنَّكُمْ ضَفَاعَهُ مَنْيِنَهُ بَنَكُنُ لَهُ رَحَفُلُ يَسِمُهَا -

یعنی جو مخص المجھی اور مجی سفارش کرے گا' توجس کے حق میں سفارش کی ہے اس کے نیک عمل کا حصہ اس کو بھی لیے گا اور جو مخص بری سفارش کر آہے ایعنی کمی تا اہل اور برے منس کو کامیاب بنانے کی سعی کر آئے "اس کو اس کے برے ا تمال كاحمه لح كا_

اس كا بتيجديد ب كريد الميدوار الي كاركردگي كري سالدوور من غلا اور ناجائز كام كرے كا ان سب كاوبال ووث دينة

والله كو بحى ينج كل

ود ف کی آیک تیمری شری حیثیت و کافت کی ہے کہ دوث دینے والداس امیدوار کو اپنی تمائندگی کیلئے وکیل بنا آہے۔ لیکن آگر بد و کالت اسکے کسی فضی حق کے متعلق ہوتی اور اسکا نفع فتعمان صرف اسکی ذات کو پہنچا تو اسکاید خور ذمہ دار ہوتی محریساں ایسا نسیں ہے۔ کیونکہ یہ و کالت ایسے حقیق کے متعلق ہے جن میں اسکے مائتہ پوری قوم شریک ہے۔ اس لیے اگر کسی نا اہل کو اپنی نمائندگی کے لیے ددت دے کر کامیاب بنایا تو پوری قوم کے حقوق کو پائل کرنے کا کاناوجی اسکی کردن پر دہا۔

ظامہ یہ کہ جادا دوٹ تین میشینی رکھنا ہے۔ ایک شادت و مرے شفاعت اور تیبرے حقوق مشترکہ میں و کالت۔
تینوں میشینوں میں جس طرح نیک صالح قابل آدی کو دوٹ دینا موجب ثواب عظیم ہے اور اس کے تمرات اس کو ملنے والے ہیں ا اس طرح تا الل یا غیر متدین محض کو دوٹ دینا جموئی شادت ہی ہے اور بری شفاعت بھی اور پاجائز و کالت بھی اور اس کے تابد کن ثمرات بھی اس کے نامہ اعمال میں لکھے جائیں گے۔

اس لیے ہرمسلمان ووٹر پر فرض ہے کہ ووٹ دینے سے پہلے اس کی پوری تحقیق کرلے کہ جس کو ووٹ دے رہاہے 'وہ کام کی مطاحیت رکھتا ہے اور دیائت دار ہے یا نسیس 'محض فقلت و بے پروائ سے بلاوجہ ان محقیم کناہوں کا مرتکب نہ ہے۔ (معارف الغرق ان جسم میں اے ایک مطبوعہ اوارہ البعارف اکراجی)

جو مخض علم اور عمل کے انتبارے تا اہل ہو'اس کو دون دے اہلات نے بھی باجائز اور گناہ ہے' کین اس کی دوجہ یہ منسلات کے دون کی کے حق بی شاؤت ہے' یا و کالت ہے' یا شافت ہے' اس کا شاؤت نہ ہو با اقو ہماری پہلی تقریر ہے واضح ہو گیا۔ شماؤت بی کی دویت و بینے ہوئے واقعہ کی لفظ شماؤت کے ساتھ خبردی جاتی ہے' اور دووٹ دینے کا معالمہ اس طرح نہیں ہے۔ شفافت اس لیے نہیں ہے کہ شفافت میں کی تیبرے فض کے پاس کی منصب کے لیے سفارش کی جاتی ہے' اور اس تبدرے فضی کے پاس کی منصب کے لیے سفارش کی جاتی ہے' اور اس تبدرے فضی کے افقیار میں بید معالمہ ہو تا ہے کہ خواواس شفافت کو قبول کرے خواور دو کردے' جبکہ دوٹ کی حیثیت اس قبر تبدرے فیض کے افقیار میں بید معالمہ ہو تا ہے کہ خواواس شفافت کو قبول کرے خواور دور کردے' جبکہ دوٹ کی حیثیت اس قبر تبدیرے مقال سے زیادہ ہوں تو دو اسمبلی کا مجبرین جائے گا۔ اس میں کری کے قبول کرنے نہ کو دوٹ والے بی موکل گا۔ اس میں کری کی معزول بھی کر سکتا ہے۔ احدایہ اخبرین میں بھا اور دوٹر کمی احدوار کو دوٹ والے کے بعد اس امرے دوٹ کو کینسل نمیں کرسکا' اور نہ می متحق کے بعد اس امرے دوٹ کو کینسل نمیں کرسکا' اور نہ می متحق ہوٹ کے بعد اس امرے دوٹ کو کینسل نمیں کرسکا' اور نہ می متحق ہو جو اس امرے دوٹ کو کینسل نمیں کرسکا' اور نہ می متحق ہو تھوار کو معزول کر سکتا ہے۔

آگر کوئی عمض کی تعلق یا اللج یا دہاؤ کی دجہ ہے کسی نا الل مخص کو دوٹ ڈال دہاہے و اس عمل کے ناجائز ہونے کی مناف اور سید می وجہ یہ ہے کہ دہ آلیک منصب کے لیے نا اہل محض کو مقرد کرنے کی سعی کردہا ہے۔ اور اسلام میں کسی نا اہل کو منصب دینے سے متع کیا گیا ہے۔

اہم محدین اساعیل بخاری متوفی ۲۵ مدروایت کرتے ہیں:

حفرت ابو ہریرہ بوائن این کرتے ہیں کہ ایک اعرائی نے رسول اللہ وہی سے بوجھا قیامت کب آب گی؟ آپ نے اپنی بات کمل کرکے فرمایا جب افائت صافع ہوگی؟ آپ نے قرمایا بات کمل کرکے فرمایا جب افائت صافع ہوگی؟ آپ نے قرمایا جب کوئی منصب کسی نا اہل کے سرد کردیا جائے و قیامت کا انتظار کرد۔

(صحح البخاري ثناءً رقم الحديث: ٥٩ أسند احر بتحقيق احر شاكر ع ٨٠ وقم الحديث: ١٨٨٣ الجامع السنيرج او قم الخديث ٨٨٨ الجامع الكبيراع اوقم الحديث: ١٨٩٥) جو كى ايے فض كو قوى ياصوبال اسمبل كے ليے دوث ذالا ب جو دي اور ونياوى علوم سے بسره مندنہ ہو اور اس كا بر چلن اور بدكردار ہو تابائل واجع ہو تو دہ اس تمائد كى كے ليے تا الل فض كو تقب كر دہا ہے اور تا اہل كو منصب كے ليے نتخب كرنائس مدعث كے مطابق قيامت آ جائے كے حرادف ہے۔ نيز اس سلسلہ می مزید امادیث ہیں:

حضرت ابن عہاں رمنی اللہ عنما بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ عظیم نے قربا جس فض نے کسی آدی کو کسی جماعت کا امیر بنایا ' ملا تکہ اس بنماعت جس اس سے زیادہ اللہ کا فربال بروار بھرہ تھا ' تو بنانے والے نے اللہ تعالی اور اس کے رسول اور بنماعت مسلمین سے خیانت کی۔ ماکم نے کمااس مدعث کی سند مجے ہے۔

(المت وك عيم من ١٩٠٠ ١٩٠ مطوعه وارالياز الكرالكري)

صفرت این عمال دمنی افتہ عنمامیان کرتے ہیں کہ و سول افتہ بیجھ سے فربایا جس آدی نے کمی مخص کو سلمانوں کا عال عالیا ملا تکہ وہ جاتا تھا کہ اس سے بہتر مخص موجود ہے جو کتب افتہ اور سنت ر سول کا زیادہ جائے والا ہے تو اس آدی نے اللہ تعالی اس سے رسول اور تمام مسلمانوں سے خیانت کی۔ اکٹر العمل علی سماور موسسہ الرسانہ بیوت کے سمادہ

خطرت الدائع و دین پر ند رو الدور بسب نا الل والی دو تو بحردین پر رو بلد (علام الله منظیم کو به قرار ترف سائل الله و تو دین پر ند رو بالد (علام الله منظیم کار کار منظیم کار منظ

کتا کیروہ۔

نیز دب کوئی پد کردار اور فائل و فاجر یا پیڈ ہب فض اسمیلی جی پہنچ گااور اس کو قانون سازی کا افترار لے گا' تو یہ نمکن ہے کہ وہ طاف شرح قانون سازی کا افترار لے گا' تو یہ نمکن ہے کہ وہ طاف شرح قانون بطائے تو آجن بن گے جو سراسر فیر اسلامی جی اور سرام فیر اسلامی جی اور سرام اور سرام اور سرام اور سرام اور سرام اور سرام کی موت کی سزائیس دی جائے کی اور سے مرت کر آس کو موت کی سزائیس دی جائے کی اور سے مرت کر آن کے ظاف ہے۔ جن اوگوں نے ایسے بو اوگوں کو ووٹ دے کر اسمیلی جی پنچایا' یا جنوں نے طلاف شرح قانون سازی کی' وہ بھی پرابر کے مجرم ہیں۔ اس لیے جو نوگ فیرمتدین اور فیرصالح اوگوں کو ووث دے کر اسمیلی جس سرام اور اسمیلی جس سرام اور فیرصالح اوگوں کو ووث دے کر اسمیلی جس سرام اور اسمیلی جس سے دو اور سے دور اسمیلی جس سرام اور اس کے دور اسمیلی جس سے اور اس کے در سول سرام اور مسلمانوں کے ساتھ خیات ہے ۔ اور طاف شرح قانون بنانے کا ذرابیہ ہے۔

طلب منعب كي تحقيق

المارے ملک عمل طریق احتاب کی ہے بہت بیری خالی ہے کہ تو بی یاصوبائی اسمبلی کی نشست کے لیے ہرامیدوار از خور کھڑا او آ ہے ' ملا تک اسلام بیں از خود صدو کی طلب کرنا ممنوع ہے۔ ان مسل میں میں میں اور میں اور

الم مسلم بن تبلن قديدى متولى المدروايت كرت ين.

معرت ابع موی اشعری برایخ بیان کرتے میں کہ میں اور میرے دو عم زار نی بینید کی خدمت میں ماضر ہوئے۔ ایک

غيان القر أن

خض نے کمایارسول اللہ اللہ تے جن چزوں پر آپ کو وافات دی ہے ان میں ہے بعض پر جمیں امیر بنادیں۔۔دو سرے نے بھی ای طرح کملا آپ نے فرایا بھے اا ہم اس عض کو کسی منصب پر امیر نہیں بنا کی گے جو اس کاسوال کرے گا کور نہ اس کوجو اس کی حرص کرے گا۔ اسمج مسلم اج ۴ رقم الحدیث: ۴۳ ساما معلونہ ہاواللہ کو جودت)

طالب منعب كومنعب نه وين على يد خكت ب كه طالب منعب كه ساتد الله كى توثق اور تائد ثال نبي بوتى - بعض اوك كت جي كه منعب كو منعب كو طلب كرنا جائز ب كيونكه معزت يوسف عليه السلام في إ دنتاه سه اپنے ليے حكومت كا حمده طلب كياته و قرآن جيديں ب

حفرت ہے سف نے (فزیز معرے) کمنا' ملک کے ثزائے میرے میرد کر دیجے' میں حقاظت کرنے والا بھی ہوں اور علم بھی رکھتا ہوں۔۔ قَالَ اجْعَلَيْنِي عَلَى الْعَرَآئِينِ الْأَرْضِ إِنِّي حَفِيُّظُ عَلِيْمٌ. (يوسف: ٥٥)

یہ استدلال اس کیے میچ نمیں ہے کہ یہ شریعت سابقہ ہے اور شریعت سابقہ کے جو احکام ہماری شریعت کے خلاف ہوں' وہ ہم پر ججت نہیں ہوسلامہ ہمارے لیے ہیہ تھم ہے کہ وسول اللہ برائیز نے فرمایا بخیران ہم اس فخص کو عال نہیں بنا کیں ہے جو اس کو طلب کرے گااور نہ اس فخص کو عال بنا کم سے جو اس کی حرص کرے گا۔ جیساکہ اس مدیث میں ہے۔

دوسراجواب بیہ کے محضرت بوسف علیہ السلام ہی تھے اور نبی کا تفویل قطعی اور بیٹی ہو آئے 'نبی کو دجی کی آئید عاصل ہوتی ہے 'اور وہ اپنے افسال کے متعلق اللہ کی رضا ہے مطلع رہتے ہیں 'جبہ عام آدی کا تفویل تطعی اور بیٹی نہیں ہو آاور فیر تعلی کو تعلی پر تیاس کرنا درست نہیں ہے۔ تیمرا جواب بیہ ہے کہ معفرت بوسف علیہ السلام کا حمدہ طلب کرنا اللہ تعالی کی امازت سے تھا' جوان کو دجی سے حاصل ہوکی اور عام آدی کے حق میں یہ متصور نہیں ہے۔

بعض لوگ یہ کہتے ہیں کہ جب کوئی منصب کا الل نہ ہو تو جو طفعی الل ہو اس کا محض فد مت کے لیے منصب کو طلب کرفے ضرورت کی بنا پر جائز ہے۔ ہمیں اس قاعدہ کی صحت ہے انکار نہیں ہے 'لیکن جو چیز ضرورت کی بنا پر جائز کی گئی ہو 'اس کو صرف ضرورت کی بنا پر جائز کی گئی ہو 'اس کو صرف ضرورت کی مد تک محدود رکھنا مجھ ہے۔ اس کو عام دواج اور معمول بنالینا مجھ نہیں ہے 'مثلاً جب کوئی طال چیز کھائے کے لیے دستیاب نہ ہو تو ضرورت کی بنا پر شراب اور خسو ہو کی حرصت ساتھ ہو جاتی ہے 'لیکن اگر کوئی فض ضرورت کے حوالے سے عنوا ہد اور شراب کو کھائے ہینے کا عام معمول بنا لے 'تو یہ صحح نہیں ہے۔

موجوده طريقه انتخاب كأغيرا سلاي بونا

پاکتان میں انتخاب کے موقع پر ہر طفقہ انتخاب سے بکٹرت امیدوار از خود کھڑے ہوتے ہیں فور زر کیٹر ٹرج کرکے اپنے
کو انسٹک کرتے ہیں اور خالف امیدوار کی کردار کشی کرتے ہیں اور اس سلطے میں نیبت 'افترا و اور تست کی تمام حدود کو
پھلانگ جاتے ہیں۔ اور یہ طریقہ اسلام میں بائکل ہاجائز ہے 'اور ہرامیدوار کے حتفاق یہ کمناکہ میہ ضرورت کی بناہ پر کھڑا ہوا ہے '
براہتہ باطل ہے۔ کیونکہ ہر طفقہ انتخاب سے بکٹرت امیدوار کھڑے ہوتے ہیں اور ان میں سے ہرایک کے بارے میں یہ کہا صحیح
برایک کے بارے میں یہ کہا صحیح
سیں ہے کہ چونکہ اور کوئی اہل نہیں تھا'اس لیے یہ سب امیدوار کھڑے ہوگے ہیں۔

اميدوارك لي شرائط الميت ته موت ك غلط نائج

ور حقیقت پاکتان کے آئین بی طلب منصب کی اجازت دیاتی فیراملای دفعہ ہے۔ جو امید دار انتخاب کے لیے کوئے۔ ہوتے ہیں' ان تی بیں سے نتخب افراد آئے بیل کروز براعظم' صدر مملکت اور وزراء اعلیٰ کا انتخاب کرتے ہیں اور سی لوگ

<u>خيان القر ان</u>

اسمبنی میں جاکر کمی قانون کے اسمائی یا غیر اسمائی ہونے کا فیصلہ کرتے ہیں۔ ملک کے سربر آوردہ علاء اور وانشوروں پر مشتل اسمائی نظریاتی کو نسل انقاق رائے ہے کسی قانون کے اسمائی یا غیر اسلامی ہونے کا فیصلہ کرتی ہے کیے وہ ہی وہ سے نہیں ہو سکتا جب تک کہ قوی اسمبلی اس کو متھور نہ کرے اور قوی اسمبلی کے ممبروں کے لیے اسلامی علوم یا مروجہ علوم ہی ہے کسی علم کی کوئی شرط نہیں ہے۔ نئی اور قوتی کی ہیم شرائوا رکھی گئی ہیں اور ان کا دیانت داری ہے متعلقہ اسمیدوا روں پر اطلاق مجمی شرائی کوئی شرط نہیں کیا جاتمہ حال ہی ہی صدر مملکت چیف الیکش کشراور بالواسطہ طور پر کہد دہ جس کہ اسمائی جسور یہ پاکستان کا اور بھی دہ کہتے ہیں کہ اپنی کشرور یہ پاکستان کہ اور ہیں کہ دہ جس کہ اسمائی جسور یہ پاکستان کی اسمائی جسور یہ پاکستان کی اسمائی جسور یہ پاکستان کی ہی کوئی شرط ہوئی ہے۔ بس جالات اور ہی کہد دہ جس کہ اسمائی جسور یہ پاکستان کی جس کہ اسمائی جسور یہ پاکستان کی جس کہ اسمائی جسور یہ پاکستان کی جسور یہ کہ ہوئی ہوئی شرط ہوئی ہے۔ بس جالات کے لیے اسمیداروں سے علم اور تجربہ کی کوئی شرط نہر نے بسبل میں بہتی جسل اور نا تجربہ کار هم می دورہ مورہ ہو یا مورت اسمبل میں بہتی جسل اور نا تجربہ کار هم میں مورہ دورہ کی تھوئی شرط ہوئی ہے کہ کار تر بر اسمبل میں بہتی جسل اور نا تجربہ کار ہم میں کوئی شرط ہوئی کار شرط میں ہو یا مورت اسمبل میں بہتی اسمائی یا غیراسلامی ہوئے کار اسمائی ہوئے کا فیصلہ کی سے میں کار اور ایمان والوں کو ایش میں خوکس کیا اور ایش کی خوب کا ارادہ کیا تو ایش کو اور ایمان والوں کو ایش میں ہوگل کا ارادہ کیا تو ایش ہیں تو ایک کار اور کیان والوں کو ایک کیا اور ایک کار اور ایمان والوں کو ایک کیا تو کیا کرتا ہو ہو کیا جس کی کہتوں کو دوک کیا اور ایش سے ڈورتے رہو کور والیان والوں کو ایش می کوئی کرتا کہ ایک کو اور ایمان والوں کو ایش کی کوئی کرتا کیا کہ کار کیا ہوئی کیا کہ کار اسمائی کوئی کیا کہ کار کیا کہ کیا کہ کیا کہ کوئی کی کوئی کی کوئی کر کیا کہ کیا کہ کی کوئی کی ک

امام ابوجعفر محرین جریر متوفی ۱۳۱۰ نے اس آیت کے حسب زل دوشان نزول بیان کیے ہیں۔

یزید بن الی زیاد بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بین ہے حضرت ابر بکر محضرت عمراور حضرت علی رضی اللہ منتم کے ساتھ بو فضیر کے باس ایک دعت کے مطلبہ جیں سے (دو عامری مسلمانوں کو عموہ بن امیہ فحری نے قتل کر دیا تھا۔ آپ یمودیوں نے ان کی دعت مصل کرنے تشریف لے گئے دو عامری مسلمانوں کو عموہ بن امیہ فری نے قتل کر دیا تھا۔ آپ یمودیوں نے ان کی کما بال است ابالقاسم الب آپ کو ایم و جن آپ کے بھر کھاتے میں اور آپ کا مطلوب میا کہتے ہیں 'رسول اللہ بین ایس آپ کو ایم و ایس کا انتظار کرنے گئے۔ آپ کے کھاتے میں اور آپ کا مطلوب میا فتی وہ یمودیوں کا مردار تھا۔ اس کے ایم امیر اس کا انتظار کرنے گئے۔ آپ نے کھاتے میں اور آپ کا مطلوب میا فتی وہ یمودیوں کا مردار تھا۔ اس نے اپندہ قریب ہیں 'اس نے زیادہ قریب تم ان کو گئی وہ یمودیوں کا مردار تھا۔ اس نے اپندہ تقال میں کہتا ہے اس کو ایک بہت برا پائے کہت برا پائے کہت نے اس کو ایک اور اس کا آزادہ کیا تو اللہ کو آپ کی آپ کو وہاں نے ان کر ایک یمودیوں کا ادادہ کیا تو اللہ کہ آپ کو وہاں نے ان کے باتھوں کو دو کہ لیا۔ (جامع البیان 'ج می مصرت کا مامانا نہیں مدار الفکر 'جو ان کی مردن باتھ کی اور دو کیا گئی برویت کا ادادہ کیا تو اللہ کو آپ کی جو ان کی مردن باتھ میں مدادہ مدار الفکر 'جو ان کی محمرت اور سملمان الفکر 'جو ان کی مردن باتھ میں میں مرد میں ہوں کہ بیات کیا ہوں کو دو کہ لیا۔ (جامع البیان 'ج می محمد مدار الفکر 'ج وہ ن کی میودیوں کی مردن کیا گئی جو ہو کی بیاتھ کی بیون کے ان کی مردن کیا گئی ہوں کو دو کہ کیا گئی اور دہ آپ کی جو ہوں کے گئی ہوں کو ان کیا گئی ہوں کو ان کیا گئی کی جو ہوں کی کو بیا کیا گئی کو بیا کیا گئی کو دو کیا گئی کو بیا کیا کیا گئی کو دو آپ کی کو دو آپ کیا گئی کو دو کر کو دو آپ کیا گئی کو دو کیا گئی کو دو آپ کیا گئی کو دو کر کو دو کر کو دو کو دو کر کو د

طبيان القر أن

جلدسوم

پہلویں بیشا ہوا تھا' آپ نے اس کو کوئی سرانسی دی۔ قادہ نے بیان کیا ہے کہ بھٹی دشمن آپ کی تمفلت میں آپ کو گل کرنا عاجے تھے۔انموں نے اس اعرائی کو بھیجا تھا۔ (جامع البيان "ن ٦ سي ١٠ -٣٠٠ مي البواري" وقم الدعث: ١٩١٠ - ٢٩١٠ من الد "ج ٥ وقم الديث: ١٣٣١) علامہ ابن جرم طبری نے لکماہے کہ اس تھے کے احتیار سے پہلی دواست میں بیان کیا ہوا شان نزول راج ہے۔ کیونکہ اس تبت میں سے بیان قرمایا ہے کہ اللہ تعلق نے ایمان والوں سے کافروں کے باتھ کو موک لیا اور پہلی روابہت میں نبی منتقع اور سلمان دونوں سے باتھ روکنے کا ذکرہے اور دوسری رواست میں صرف نی جھی سے باتھ روکنے کا ذکرہے۔ الدميك الشرف بنواسرايل ست يخت اور ال ی بے جم نے ارہ الداد الشريف قرما باليهب من تمبايسه ما يتوجرل ، البتر اكر تم رکمی اور زکڑہ اوا ک اور تم میرے دیولوں ہے اغالی لائے الاتہائےان کاملیم سے ساختہ مدی اور اشد کر ایجا گرمل ویا توش مزور تم سے تمارسے گاہوں کو شا دول گا ، الام م كر حرور ان بنتوں ير وافل كون كا عن سك سيكے سے وريا ہے يو نے اس کے بعد کفری تو وہ بینک میسے داستہ سے محراء ہو گیا ل وجرست ہم سقے الن پرلسنت کی اور ہم سقے ال سکے وتوں کوبہت بخت کردیا ، وہ (انٹرسکے) کام کواس سے مقامات سے بدل فینے ہیں اور حم سکے مانڈ ان کونصیصت کی گئی تھی اس کے بیٹے مصے کوائوں تھے جاہ بالوراپ ان کی خیات

المهائبات ۵: ۲ إست. ۱۲ بالله 1 2921 9 2 1 292 mg ومنهم واعتاعتهم واص ملن پرتے ریں مے ما موا چند وگوں سے ، آپ ان کو معاف کیجے اور درگزد کیے ، واوں سے عمیت کرتا ہے 0 اور بم نے ان وڈل سے بی پختہ م نعاری یں تو ای سے برسید عصر انہوں سے اور منتربب اشد امنیں ان کاموں بدورمیان مداورت اور نغمل کو روز تیامت یک لازم کر دیا اللهُ بِمَا كَانُو ايصَنْعُونَ ٠ Z 2/ 00 / S. 8 2 / S الله تعالی کاارشارے: اور اللہ نے بے تک بنوا سرائنل سے پائنہ حمد لیااور ان میں سے ہمنے ہارہ سروار مقرر کے۔ (اللهاكرو: ١٢) مابقه آيات سے أر تاط

یہ آیت ماہد آھی کے ماتھ تمن وجہوں ہے مرجل ہے:

ا- اس سے پہلے اللہ تعالی مے مسلمانوں سے قربایا تھااور تم پر جو اللہ کی تعت ہے اس کو یاد کرد اور اس عمد و پیان کو جو اس نے پچھی کے ساتنے تم ہے لیا ہے (طمائعہ: ٩) اور اب یہ فربلا ہے کہ اللہ تعالی نے بی اسرائیل ہے بھی پانتہ عمد لیا تما ' لیکن انہوں نے اس مهد کو فراموش کردیا اور ہے رانسی کیا تواہے مسلمانوا تم اس براتی میں یمود کی مثل نہ ہو جاتا۔ کمیں ایسانہ ہو کہ حمد فشکی كى إداش مى تم بھى الله كے قضب اس كى تعنت كامعدائى بن جاؤلور تم ير بھى زلت تور مسكينى ۋال دى جائے۔ ٩- اس عيل الله تعالى في مسلمانون عن فرمايا تعالم يرجو الله كي تعديد اس كوياد كرو عبد أيك قوم في تهماري طرف إلقه بدهائ كاارادوكيا توافق نع مع ان كياتمول كوروك ليا الله عدا اوريم قاس آيت كي تغير من الم ابن جريك حوالے سے بیان کیا تھا۔ یہ آیت یہود کے مختلق ب اجب انہوں نے ٹی پہلیز اور آپ کے بعض امحاب کو مخل کرنے کا ارادہ

كيا تعلد سواى سلسله من الله توافي في يمودكى سزير شرارتين اور خباشتين بيان كيس كه انهول في صرف الله ك ني ك ماخذ الى خالع نيس كى الكدانون في خوالله ك مائد كيه وسة مدويتان والى و والاتحا

٣- اس عند يملي آهن عن الله تعلل في مسلمانون كو تعم ديا تفاكه ود الله ك احكام كي الماعت كري اور اس كي افرياني اور ر سی سے باز رہیں۔ اس آیت میں یہ بتایا ہے کہ یہ ان کے لیے کوئی نیا تھم نسی ہے کیگہ اس سے پہلے اللہ تعالی نے یہود کو بھی

هَيِئَنْ القر أَنْ

ی عم دیا تفاکه دواس کی اطاعت کریں فور سر کئی نہ کریں۔ حل لغات

دیداریا کئزی بی سورائ کو نقب کے بیں۔ بہاڑوں بی جو سر مگ بطی جائے ہیں کو منقبت کتے ہیں ہمی نیک افعان کے افعال ہی منقبت کے بیں ہمی نیک افعال ہی افعال کو بھی منقبت کتے ہیں ہمی محمد جس طرح کنزی یا دیدار بی سوراغ موٹر ہوتا ہے اس طرح نیک آدی کے افعال ہی دو سرے لوگوں بیں آٹیر کرتے ہیں۔ قوم کا رئیس جو قوم کے احوال کی تفیش کرتا ہے اور ان جس موٹر ہوتا ہے اس کو فقیب کہتے ہیں۔ اس کی بتح بیسادے اس آیت بی فرمایا: ہم نے بنوا سرائیل کے بارہ همیاء مقرر کے ہیں لین ان کو بارہ کر واوں بی بات ویا اور ہر گروہ کا ایک مردار مقرر کیا۔ المفردات اس جمید مطبوعہ امرائیل

اس آیت بی فرایا ہے "و عرد تسوه ہم فرون کی تقویم کے ساتھ مدر کا انتواج مدر کا انتواج مدد کرا انتواج میں کوئی ایک فصلت ہو اجس ہے اس کو دنیا یا آخرت بی ضرد پنج انتواج کے ذریعہ اس فصلت کو مناکر اس کی نفرت کی جاتی ہوت کردیا ہے اور انہا و علیم السلام کے لیے جب یہ لفظ استعمال ہوتو اس کا معنی تنظیم کے ساتھ مدد کرتا ہے۔

(المقردات من ۱۳۳۳ مطور امران)

تابیتہ کامنی ہے مخت جار جو کسی حم کی خرکو قبول نہ کرے ان تریف کامن ہے کسی شنے کو اس کی اصل جک ہے بٹاکر دومری چکر دکھ دیا۔

بنوا مرائيل كى عمد فتكنى كابيان

الم أو جعفر عدى جري طرى متونى ١٠١٠ ليست يين

 فَاذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَايِلاً إِنَّاهُهُ لَ آبِ اور آپ الربوونوں ماكي الوووون كري ايم فَاعِدُونَ۔ والسائدو: ١٣٠ يال يُضوالے بي۔

(جائع البيان علام معلى ٢٠١٠ - ٢٠٠٣ مغيوم دار الفكر يروت ١٥١٥ه الوسط على ١٦٦ مطع يروت)

المام الخرالدين محمين عمردازي متوفى ١٠١ه تصحي

حضرت مویٰ علیہ السلام نے ان بارہ نظیبوں ہے یہ عمد لور میثاق لیا تھا کہ وہ جہارہ کے جو بہت بوے بزے جم دیکھ کر آئے تھے 'اس کی بنو اسرائیل کو خبرنہ دیں 'لیکن انہوں نے ان کویہ خبردے دی 'اور می ان کاعمد تو ڈیا تھا۔

(تغيركير عمام ٣٨٢ مطبوعد داد الفكو ابيروت)

علامد ابوالغرج ميد الرحلن بن على بن محدجوزي متوفى عدد مكت ين:

ابرالعاليد من كما الله تعالى في ان سے يد ميثاق ليا تماكدور اس كى اخلاص كے ساتھ عبادت كري اور اس كے علاور كى كى مباوت ند كريں اور مقاتل نے كماان سے يہ عمد ليا تماكدور ورات كے ادكام ير عمل كريں۔

(زادالمسير "ج ٢٠ ص ١٠ ٢٠ مطبوعه كتب اسلامي ميردت ٤٠ ١١٥٥)

الله تعالى كاارشادي: اورالله في فرمايا ب فك من تماد من البته أكر تم في نماز كائم ركمي اور زكون الا كى كورتم ميرك رسولوں ير ايمان لائے اور تم في ان كى تعليم كى ساتھ مددكى اور الله كو اچما قرض ديا تو مي مزور تم سے تمارے كتابوں كو مثادوں كك لايد - (المائدة: ١١)

بعض رسولوں کے انکار کی وجہ ہے نجات نہیں ہوگی 'خواہ نیک عمل کیے ہوں

اللہ تعالیٰ نے قربایا البی تسادے ساتھ ہوں"اس کا سخنے ہیں علم نور قددت ہے تسادے ساتھ ہوں۔ یہ ہی ہو سکتا ہے کہ یہ یارہ نتیبوں سے فطلب ہو 'ایون بی ہو سکتا ہے کہ یہ بنواسرا کیل کے ہر فردے فطلب ہو 'ایون بی تساد اکلام س رہا ہوں اور آگر تم اس محد کو پورا کرد گئے تو جس تم کو اس کی جزاد ہیے پر قاور ہوں اور اگر تم اس محد کو پورا کرد گئے تو جس تم کو اس کی جزاد ہیوں اور اگر تم اس محد کو پورا نہیں کرد گئے تو اس کی سزاد ہے پر قادر ہوں۔ پھر جزاکاذکر فربایا 'جس تم ہے تسادے گناہوں کو مثادوں گااور تم کو جنتوں علی داخل کروں کی سرنا کاذکر فربایا کہ ان کی حمد فشنی کی وجہ ہے ہم نے ان پر تعنت کی اور ہم نے ان کے دلوں کو بہت ہوں رہا۔

اس آے یں نماز قائم کرنے اور زکو ۃ اوا کرنے کو پہلے ذکر کیا اور و سولوں پر ایمان النے کو بعد میں ذکر کیا جبکہ بد ظاہر و سولوں پر ایمان النے کا پہلے اور نماز اور ذکو ۃ کی نوائی کا بعد میں ذکر ہوتا چاہیے تھا۔ اس کا جواب یہ ہے کہ یہود اس کا آزار کرتے ہے کہ نجلت کے لیے نماز پڑ متا اور ذکو ۃ اوا کرنا ضروری ہے اس کے باوجود وہ بعض و سولوں کے انگار پر اصرار کرتے ہے۔ اس لیے ان سے فرمایا کہ تم میرے تمام و سولوں پر ایمان لاؤ ور نہ اس کے بغیر محض نماز پڑھنے اور زکو ۃ اوا کرنے سے اس کے بغیر محض نماز پڑھنے اور زکو ۃ اوا کرنے سے تماری نجات جس بوگی۔

ذکو ۃ اواکرنے کے بعد اللہ کو اچھا قرض دینے کاذکر فربایا ہے "کیونکہ زکو ۃ ہے مراد صد قات واب ہیں اور اللہ کو اچھا قرض دینے ہے مراد نظی صد قات جی۔

الله تعالى كارشاوي: قوم إن كر عد تورف كا وجد ان ير نعت كى اور مرف ان كرول كو بهت من المدورة من المراكم الله من الموركة المراكم والمراكم المراكم المراكم والمراكم والمركم والمراكم والمراكم والمركم والمرك

اس آیت یل یہود کے حد تو دے کا ذکر قربایا ہے ان کے حد تو دے کا دو بعض نبول کی است میں یہ ایک ہے کہ دہ بعض نبول ک کفت کرتے تھے اور دو مری ہے کہ دہ افورات یں ذکور نی جہر کی صفات کو چھیا تے تھے۔

کفت کرتے تھے اور ان کو قتل کرتے تھے اور دو مری ہے کہ دہ افتد نے ان کو اپنی رحمت سے دور کردیا۔ دو مری ہے کہ ان کو افتد نے ان کو اپنی رحمت سے دور کردیا۔ دو مری ہے کہ ان کو مری کے بھر اور خنو ہو بتا دیا اور تمری ہے کہ ان پر برزیہ مقرد کردیا۔ نیز فربایا جم نے ان کے داوں کو خت کردیا۔ اس کا معنی ہے کہ ان کے داوں کو ایما کردیا کہ وہ دلا کی دیکھنے کے باوجود حق کو قبول شمی کریں گے۔

الله تعلق كارشادى: ووالله ك كلام كواس كے مقلات بدل ديت بين (المائدونا)

تورات کی تحریف میں علماء کے نظریات

يهود نے تورات من جو تحريف كى ہے اس كے متعلق كئ اتوال بين:

ا- بیود تورات کی آخوں میں روو بدل کردیتے ہیں اور اپنی طرف سے مبارات بناکر آیات میں شال کردیتے ہیں۔ جیساکہ اس آبت کے ظاہرے معلوم ہو آہے۔ حسب ذیل آبت ہے بھی اس کی آئد ہوتی ہے:

مُويْلُ لِللَّهِ يُسَ يَكُتُبُونَ الْكِنْبَ بِأَيْدِيْهِمُ اللهِ اللهِ

مور تمیرا تول مدے کہ تورات کی جن آیات میں سیدنا تھے۔ چہر کی مفات ہیں ' دوان کو چمپا لیتے تھے۔ (جامع البیان 'ج1' میں ۴۱۲ مطبوعہ ہیرد ت)

واكثرومد وحملي لكسة بين

آری بھی ہے معروف ہے اور یہود و نصاری نے خود اس کا اعتراف کیا ہے کہ جو تورات حضرت موٹی علیہ السلام پر نازں موٹی حلی السلام پر نازں موٹی حلی حق اور یہود و نصاری حفاظت کا انسوں نے تھم ریا تھا ماس کا صرف ایک نسخ تھا۔ اور یہود و نصاری کے مور قبین کا اس پر انقاق ہے کہ جب اہل بابل نے یہود ہوں کو قید کیا اور این میں لوٹ مارکی اس وقت وہ لسخ محم موٹیا اور این کے پاس اس کے علاوہ اور کو کی نشخہ نہیں تھا۔ اور جب اہل بابل نے ان کے حمیک کو جاز دیا تو دواس نسخہ کو محفوظ نہ رکھ سکے۔

اور دہ پانچ سور تیں جو معترت موئی علیہ السلام کی طرف منسوب ہیں ، جن میں معترت موئی کی حیات اور وفات کا ذکر ہے اور یہ کہ ان کے بعد کوئی ان جیسا نہیں ہوگا ، دہ معترت موئی علیہ السلام کی دفات کے کانی عرمہ گزر جانے کے بعد 'بلکہ کئی معدیاں گزر جانے کے بعد لکھی گئی ہیں۔ ان کو مذرا کاہن نے لکھاتھا ، جو ہنوا سرائیل کے قید ہوئے والے ہو ڈھوں میں ہے نج کیا تھا۔ اس طرح تصاری کا س پر اتفاق ہے کہ انجیل بھی معترت عینی علیہ السلام کے کانی زمانہ بعد لکھی گئی تھی۔

(التغيير المنير مج ٢٠٥٥ ١٢ ١٢ مطبوعد داد الفكر كيروت ١١٦١ه)

الدى رائے بيہ كد تورات اور انجيل كليت ماقط الانتبار نبين بيں۔ موجودہ تورات اور انجيل خواہ صفرت موئ اور عين الله على مليما السلام كے بعد كئي موں كين ان بي بسرحال اصل تورات اور انجيل كى بهت آيات موجود بين اور بعد كى بنائى موئى آيات بھى ان بي موجود بين اور بعد كى بنائى موئى آيات بھى ان بي موجود بين كيونك قرآن مجيد كے ان كتابوں كا اختبار كيا ہے اور قرآن مجيد كو ان كامصد تى قرار ديا ہے۔ اور

ان كابوں كے عالمين كو الل كاب فر الما ہے اور المارے نزد كے ان كابوں من ہر طرح سے تحريف كى مئى ہے۔ اصل آيات اكل كر اور اپنى طرف سے آيات الماكران من داخل كى جي اور اصل آيات كى باطل الوطات بحى كى مئى بين اور جو آيات سيد تا محد ما تا ہے كى صفات اور آپ كى آركى بشارت بر مشمل تھى ان كو چمپايا اور نكان بھى كيا ہے۔ حدودكى آيات من حسب فشاء تفر بھى كيا كواور بعض الفاظ كو تو ز مروز كر بھى برحاكيا ہے "آك معنى كھے سے كھى ہو جائے۔ تفر بھى كيا كوار شوے : اور جس كے ماتھ ان كو تھيدت كى تنى سے برے دھد كوانوں نے بھاديا۔ الله تعالى كار شاوے : اور جس كے ماتھ ان كو تھيدت كى تنى تھى اس كے بزے دھد كوانوں نے بھاديا۔

(1 1 × 1/1)

اس آبت کامعنی ہے ہے کہ انہوں نے قورات پر عمل کرناچھوڈ دیافور اللہ تقاتی نے انبیاء کی دساطنت ہے ان ہے جو عمد لیا تقامی وہ جمارے نبی سیدنا محمد چھپر پر ایمان لا کس کے 'اس عمد کو انہوں نے بچر انہیں کیا۔ اس کے بعد فرملیا اور آپ ان کی خیانت پر بیٹر مطلع ہوتے رہیں گے ماسوا چند لوگوں کے۔

الم ابر جعفر فہرین جرم طبری متونی مصحف فے مجابہ سے نعقل کیا ہے۔ اس سے مرادیمود بتو نفیریں 'جنموں نے رسول اللہ مائی اور آپ کے اصحاب کو اس دن قبل کرنے کا ارادہ کیا تھا' جب آپ عامریوں کی دیت دصول کرنے کے لیے تشریف لے سمجے تھے۔ اللہ تعافی نے آپ کو ان کے مرسے آگاہ کر دیا اور آپ وہاں ہے بحفاظت ملامتی کے ماتھ واپس آ مجے۔

(جامع البيان علامي ١١٣ مطبوع عيردت)

اس آے میں فرایا ہے اس اور ان کے اس سے مراد وہ لوگ ہیں جو نبی بڑی ہا کیان کے آئے اور انہوں نے نک عمل کیے ایسے معزت عبد اللہ بن ملام اور ان کے اسحاب آب ان سے خیات کا فوف نہ کریں۔

اس کے بعد فرایا آب ان کو معاف یجی اور در گزر یجے ہے ٹک اللہ نکی کرنے والوں ہے مجت کرتا ہے۔

یمود ہوں کے تیمن گروہ ہو ٹیسٹل می بو النفیر اور مو الو یطلہ کے ماتھ نبی بڑی ہے نیک سلوک کیا۔ بدید میں ہجرت کے بعد آپ نے ان سے مسلح کی اور یہ معلیدہ کیا کہ وہ نہ فود آپ سے جنگ کریں گے اور نہ آپ کے ظاف آپ کے دشنوں کی مدد کریں گے اور وہ نمی بڑی کی اور وہ ممل آزادی کریں گے اور ان کی جانی محفوظ رہیں گی اور وہ ممل آزادی کے ماتھ بدید میں دہیں گئی ہو میں مشاق مین کہ ان آخلہ لیکن کچھ مومہ گزر نے کے بعد میود نے اس معلیدہ کی ظاف ور زی کی اور نبی بڑی ہے کہ ماتھ میں مسلمانوں کے ظاف جنگ میں حصہ لیا۔ اس کے باورو نبی کی اور نبی باوروں کو مرف تجازے جلاد طن کر اکتفاء کیا اور ان کے اس جرم پر ان کو قرار واقعی مزانسی دی۔

یک توں ہے کہ میود ہوں کو معاف کرنے اور ان نے درگزد کرنے کا تھم آیت سیف سے منسوخ ہوگیا۔ وہ آیت می

مَّافُتُلُوا الْمُشْرِ كِيْسَ حَيْثُ وَ مَدْتُموهم وَ وَمَّ مُرْكِين وَقُلَ رُواسِي جَال إِدَا (التوبه: ٥)

الله تعالی کاارشادہ: اور ہم نے ان لوگوں ہے بھی پلنتہ عد لیا جنہوں نے کیا ہم نصاری ہیں تو اس کے بدے جھے کو انہوں نے بعلادیا جس کے ساتھ ان کو نصحت کی گئ تھی تو ہم نے ان کے درمیان عدادت اور بغض کو روز تیامت تک لازم کر ریا۔ (الابیہ) العائدہ ۱۳)

اس آیت کامٹی پرے کہ ہم نے نصاری ہے بھی اس بات کا پختہ عمد لیا تھا کہ وہ رسول اللہ عظیم پر ایمان لا کیں کے اور

غِيانَ القر أنْ

آپ کی چیردی کریں گے اور آپ کی مرد کریں ہے 'لیکن انہوں نے بھی یہود کی طرح اس عمد کو قر ڈریا اور انہوں نے اپنے دین کے ادکام پر عمل نہیں کیا۔ اللہ تعالی نے ان کو اس کی سزایہ وی کہ ان کے دلوں بھی آیک دو سرے کے ظاف عدادت اور بغض کو ڈال دیا' اور دو قیامت تک اس کا نفت بھی برقرار رہیں گے۔ بیسائیوں کے کئی فرقے ہیں جو ایک دو سرے کی تحفیر کرتے ہیں' اور انکے اس کا نفت میں برقرار رہیں گے۔ بیسائیوں کے کئی فرقے ہیں جو ایک دو سرے کی افران کے اس اور آئیک دو سرے پر احت کرتے ہیں' اور عفقریب اللہ تعالی قیامت کے دن ان کو ان کے کام من کی خبردے گا' جو انہوں نے اللہ اور آئیک دو سرے پر افتراء بائد علا افتر تعالی کی طرف جیٹے کو منسوب کیا اور اس کا شریک بنایا اور آ قرت بی ان کو ان کے اس شرک کی سزادے گا۔

استخراج مسائل

ا۔ یمبود نے اللہ سے کیے ہوئے ممد کو تو ژائو اللہ نے ان پر نعنت کے۔ اس سے معلوم ہوا کہ اللہ سے کیے ہوئے ممد کو تو ڑنے کی مزالعنت ہے۔

۲۔ انکام شرعیہ کی تبلغ کے لیے بنواسرا کیل میں بارہ نتیب مقرد کیے گئے۔ اس سے معلوم ہوا کہ خبر واحد ججت ہے۔ ۳۔ بارہ نتیبوں کو جبارہ کے احوال کی تفتیش کے لیے شام بھیا۔ اس سے معلوم ہوا کہ دشمن کے علاقہ میں جاسوس بھیجا

م. م. الله ك سب و سولول ير ايمان لانا مناز يز هنا أذكوة او اكريالور فقل معد قات وينا كنابول كي مغفرت اور وخول جنت كاسب

۵- میرو اور نساری نے اپی کابوں می افتاعی اور معنوی تریف کردی ہے۔

بَالْهُلُ الْكِتْبِ قَلْ جَاءً كُمُ رَسُولُنَا يُبَيِّنَ لَكُمُ كَثِيرًا مِّمًا

اے اہل کاب ؛ مث تمامت باس ماما رول آگ جرتباسے بے مبت س ای چیزی بال کہ

كُنْتُمُّ تُخُفُّونَ مِنَ ٱلْكِتْبِ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرِةٍ قَنْ جَاءَكُمُ

ان کو تم کتب یں سے چہلتے سے اور بہت ی اوں سے در گزر کرتا ہے ، بینک آگی تمارے

ڞٵۺؗٷٷٷػڴڰۺڽۺؙ۞ێۿڔؽؽۑ؋ٳۺۿڡڹٵۺڰ

باس الله ك موات فرر الد روستى كتب و النواس ك وربير سائتى ك راستون إلى ال وروب

رِضُوانَهُ سُبُلِ السَّلْمِ وَيُخْرِجُهُ مُّ مِّنَ الطَّلْمُ تِالَى النَّوْرِ

کر بعلا آ ہے جو اس کی دمنا کی بیری کرتے بی اور اینے اول سے ال کو اندھیروں سے نکال کر دوشی کی مان

بِإِذْنِهُ وَيَهُدِيهِ مُ إِلَى صِمَالِطِ مُسْتَقِيْمِ ﴿ لَقَلَا لَا أَنْ اِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ اللَّهِ مُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ مَا اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ مَا اللَّهُ اللَّلَّا اللَّهُ اللَّا اللَّلَّ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ ا

لا اسب اودان کرمیدے رائے کی طرف جایت دیا ہے 0 بھے ان وگرل نے کو کی

ومنول نے کہا یقنینا کسے این مریم بی اللہ ہے کال اور تمام رفیتے زمین واول كواس كے اراق سے بازدكوسكا سے الشربى الكسب أساؤن ادر زميون و کوان کے دریان یہ وہ چھا جا ہے ہیا گرتا ہے اور اللہ ہر چیز کہ مت اور ہے 0 الله تعلق كاارشاد الهائل المساع تك تماديها ساراد رسل المياء تماريه المراد والماء بان كرياب جن كو تم كاب يل ع يها ت على و بعدى ياتون عدد كرو كرياب (المائديده) اس سے پہلی اجوب علی الله تعالی نے بیان قرافا تھا کہ يمود اور نصار فل فے اللہ تعالى سے كيے ہوئے عرد كو تو دواور ان ير نازل کی ہوئی کتابوں کے احکام پر حمل نمی کیا۔ اس کے بعد اللہ تعلق ان کو پھراسلام کی وجوت دے رہاہے اور یہ فرایا ہے ک المرائي تم كو تساري كماب كي ويوا تين ما كلب يون كو تم جميات عد مال كد دارك في الى بي انهول في من درس بي تعليم مامل لیس ک اس سے بادیودان کا تماری آباب ک باؤں کو بتانان کے مجرات میں سے ہے۔ يهود وجم كى آيت كوچميات في اورجن يهوديون في مري كرت كري بوديدوية ان الكركيا اس كى ياواش بي ان كو ير د بنا ديا كيا اس كو بحي دو چيدارة على الور سيدة على علي المدور كوييان فراويا اور يست ى الحي باتس جن كويسود جميات تے ان کوئی بڑھیے نے نمیں بیان فران می کد ان کے بیان سے وین کی کوئی فرض وابعة نمیں تتی۔ الله تعالى كالرشادين يه تك الكياتها ويمان الله كي طرف بست لور اور وال كاب (الماك ده) رسول الله ويهم كراور موف كر معلق علاء ك تظرات جمود منسرین کاس پر انقال ہے کہ اس میت میں فورے مراوسید تا تھے مجان کی ذات کر ای ہے اور کاب مبلن سے مراو قرآن جيد --الم اوجعفر محدين جرير طبري متوتى مهمد لليع بيرة الله تعالى في الى قورات اور الى الجيل كو علب كرك قراليا: تمار ياس قوراور كاب بين آكل توري مراديدنا کر الله ایل جنول نے حق کو دوش کیا ممام کو مکام کیالور کار کو مثال-ای اور کی دجہ سے آپ وہ باتی بیان فرمادے تے جن كويمودى جميات سف اور كمكب مراوود كمكب برس فان جيون كوبيان قراديا جس من ان كالنقاف تعلد حلاً الله كي توديد' طال اور حرام اور شريعت كابيان اوره كلب قرآن جهدے جس كو علتہ تعالى نے ہارے ني سيدنا محد سينين بريازان جَيانُ القر أن

جس شن دین سے متعلق احکام کو بیان قربائی۔ (جامع البیان من اسم مسلوند خلوالفکو عیدے ۱۳۵۰مد) علامہ ابوالحس علی بن احمر واحدی نمیشا ہوری متوتی ۱۳۸۸ کھنے ہیں:

نورے مراوے مراوے مرای ہے روشن اور ہدایت الین اسلام۔ قدوہ نے کہانی ہے ہی ہیں مراویس۔ می زجاج کا بخار ہے۔ اس نے کہانور میدنا محد بڑی ہیں۔ آپ بیان کرتے ہیں اور کرنب مین سے مراو قرآن مجدے 'جس چزجی اہل کاب اختلاف کرتے ہیں۔ اس میں قرآن مجید قول فیمل بیان کرتا ہے۔ (الوسط عن مراوی مراوی مطبوعہ دار الکتب العظمیہ 'بیروت) مسلوعہ دار الکتب العظمیہ 'بیروت) مسلوعہ ویل مقامیر میں مجل کی تغییر کی گئی ہے۔ قدوہ نے کہا ہے کہ لورے مراد نی بھی ہیں اور دو مرول نے کہا اس سے مراوا ملام ہے اور کرتے میں سے مراو قرآن مجید ہے۔

(الجامع لاحكام القرآن مج من مل مدي مطيوعه بيونت المح القديم عن مهم الدر المنتور مج من مهم القرر الحريم من مهم، ذاد المسير كرج من مولام)

علامد ابوالليث نعربن محد سروتدي حنق منوفي ١٣٤٥ وكليت بين:

نورے مراوے کرای ہے روشنی اور وہ سیدتا ہی ہوں اور قرآن اور نور وہ ہے جس ہے اشیاد ظاہر ہوتی ہیں اور اسلامی حقیقت کو دیکھتی ہیں۔ قرآن کو نور فربایا ہے کیو تکہ وہ داوں میں نور کی طرح داقع ہو آئے کیو تکہ جب قرآن دل میں جاگزین ہو آئے تو اس سے بھیرت حاصل ہوتی ہے۔ اتغیر سمرتدی 'جام مسلامی مطبوعہ دارالباز' کمہ کرمہ' سامھے)
میں جاگزین ہوتا ہے تو اس سے بھیرت حاصل ہوتی ہے۔ اتغیر سمرتدی 'جام مسلامی مطبوعہ دارالباز' کمہ کرمہ' سامھے)
المام افوالدین محدین محردازی متوفی ۱۹۹۷ھ لکھتے ہیں:

اس أيت كي تغيير من كي اقوال إن

ا- نورے مراد سیدنا محد مرابع بیں اور کتاب سے مراد قر آن ہے۔

۲- لورے مراد اسلام ہے اور کیاہے مراد قر آن ہے۔

۳۰ نور اور کتاب دونوں سے مراد قرآن ہے۔ یہ قول منعف ہے ایمونک مطف تغایر کو جاہتا ہے۔ سیدنا محمد منظیم اور اسلام اور قرآن پر لور کااطلاق بالکل ظاہر ہے۔ کیونکہ نور ظاہر اس چیز کو کہتے ہیں جس سے آگھ اشیاء ظاہرہ کااور آک قوت سے کرتی ہے اور نور باطن اس چیز کو کہتے ہیں جس سے بصیرت 'تقائق اور معقولات کاادر اک قوت سے کرتی ہے۔

(تغيركير عسم ٣٨٣ مطبوعه داد الفكو ايروت ١٣٩٨) ٥)

قامنى ابوالخير عبد الله بن مربيناوى شافعي منوفي ١٨٨٠ م لكيدين

نورے مرادیے قرآن جو شک کے اندھیوں کو دور کر آئے اور کیک مین سے مرادیے جس کا اعجاز واضح ہو اور ایک قول یہ ہے کہ نورے مراد سیدنا محمد ہیجیج ہیں۔(علامہ بیناوی کی پہلی تغییر معضوی سے مستقادے مشاف مج اس ۱۱۷) علامہ شماب الدین احمد فتفاحی حنق متونی ۱۹۹ میں اس کی شرح میں لکھتے ہیں:

اس تغیرکے مطابق نور اور کتاب دونوں سے مراد واحد ہے۔ قرآن جید کو نور اس لیے فربایا ہے کہ یہ دایت اور یقین کے طریقوں کو ظاہر فرباتا ہے۔ دو سری تغییر جس کے مطابق نی بڑھیے کو لور فربایا ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ نی بڑھیے اپنے مجزات کے سبب سے ظاہر تھے اور آپ حق کو ظاہر کرنے والے تھے۔ (اور نوروہ ہو آ ہے جو خود ظاہر بواور دو سروں کو ظاہر کردے) کے سبب سے ظاہر تھے اور آپ حق کو ظاہر کرنے والے تھے۔ (اور نوروہ ہو آ ہے جو خود ظاہر بوادرو سروں کو ظاہر کردے)

علامه سيد محود آلوي حنى متوفى ١٥ ياد للمة إلى:

نورے مراو تور مظیم ہے جو تمام انوار کانور ہے اور وہ تی محکد چھیے جیس۔ لکوہ کا می ند بہب ہے اور می زجاج کا محار ہے۔ابوعلی جبائی (معتزلی) نے کمالورے مراد قر آن ہے۔ کیونکہ وہ بدایت اور بھین کے طریقوں کو منکشف کر آے اور طاہر کر آ ہاور زمع خندوی نے ای تغییر را تصار کیا ہے اور اس صورت میں نور پر کتاب مین کے عطف پر یہ اعتراض ہو گاک عطف تغائر کو جابتا ہے اور جب دونوں سے مراو قر آن ہے تو تغاز کس طرح ہوگا؟ اس کاجواب یہ ہے کہ بہاں عنوان کا تغاز کافی ہے۔ معطوف علیہ میں قرآن کو نور سے تبیر کیا ہے اور مطعوف بیں اس کو کتاب سین سے تعبیر کیا ہے اور عنوان کے تغامر کو تغائر بالذات كے قائم مقام كياكيا ہے۔ اور ميرے زوك يد بعيد نسي ہے كہ نور اور كتاب مبين دونوں سے مراد في التي يون اور یهاں بھی صحت عطف کے لیے عنوان کا تغامر کانی ہوگا اور نبی چھپر پر نور اور کاپ مبین دونوں کے اخلاق کی صحت میں کوئی شك نمي ب-- (روح المعاني " براه م على مطبوعه وار احياء الراث العمل ميروت)

لملاعلى بن سلطان محد العارى المنفى المتوفى مهدمه كلية بي:

نی چھی پر اور کا اطلاق کیا گیا کو تک آپ اندھروں سے نور کی طرف ہداے دیے ہیں۔ بعض مضرین نے یہ کماہے ک نور اور کتاب مین دونوں سے مراد قر آن ہے۔ یہ دونوں قرآن کے دمغہ میں اور عطف کے لیے لفظی تعام کانی ہے۔ اس کے مقابلہ میں یہ کما جاسکتا ہے کہ اس سے کیا چیز انع ہے کہ یہ دونوں لفظ نی جیج کی نعت اور صفت ہوں۔ آپ نور مظیم میں ا كيونك الواريس اب كاكال ظهور باور آپ كتاب مبين بين اكيونك آپ اسرار كے جامع بين اور احكام 'احوال اور اخبار كے ملابركرف واسك بير- (شرح الثفاه على هامش شيم الرياض جهام مع مع مطبوم هاد اللكو عبروت)

صدرالافاصل مولاناميد محرفيم الدين مراد آبادي متولى ١٢٠٠هم المعترين سيدعالم ينظيم كونور فرايا كيالكيونك آب اركى كفردور بوكى اور راوحي واضح بوكى-

(فزائن العرفان م ٢٥١ مطبوعه تاج كميني لينذ الراجي)

اکثر مفسرین کامختار بی ہے کہ اس آیت میں سیدنا محمد جہیج پر نور کااطلاق کیا گیا۔ ہے۔ البتہ اس میں اختلاف ہے کہ اس ے مراد نور ہداعت اور نور معنوی ہے یااس سے مراد نور حس ہے۔ جسے جاند اور سورج کانور ہے۔ امام ابن جرمر علامہ سمرتذی حنی و قامنی بیضادی شافعی علامه احمد نفاتی حنی ملاعلی قاری حنی اور علامه سید محمد هیم الدین مراد آبادی کی تغییروں ہے بیہ ظاہر ہو آے کہ آپ اور برایت بیں اور علامہ آلوی اور بعض و کر علام کی عبارات سے معلوم ہو آے کہ آپ اور حس بیں۔ نی ہے نور حی ہونے پر دلائل

علامد الوعبدالله فيرين محرالفاى الماكل الشمير بين الحاج المتوفى عساعه لكمة بن:

الم ابوعبد الرحمٰن الصقلي رحمه الله كالب الدفالات من نقل كياب جس كي عبادت بدب الله عزو جل في كوكي اليي مخلوق پیدائنس کی جواس کواس امت سے زیادہ محبوب ہواور نہ اس امت کے نبی ہے زیادہ کوئی عزت والا پیدا کیا ہے اور ان کے بعد نہوں کا مرتبہ ، مجرمد يقين كااور مجراولياء كرام كالساس كى وجديہ ب كرالله تعالى في معزت آدم عليه السلام كوپيدا كرنے ے دو ہزار سال پہلے سیدنامحہ منتیج کانور پیداکیااور وہ تور مرش کے ستون کے سامنے اللہ کی متبع اور نقذیس کر آرہا ، پھر سیدنامحہ ور سے تورے معرت آدم علیہ الصلوة والسلام کو پیدا کیااور آدم علیہ السلام کے لورے باتی انبیاء علیم السلام کے نور کو پیدا كيك (يمال علامه صفلي كي عبارت ختم مولي) اس كے بعد علامه ابن الحاج لكينتے بين تقييد خطيب ابوالريج نے اپلي كتاب شفاء العدور میں چند مظیم باتیں لکسی میں۔ان میں سے یہ روایت ہے کہ جب اللہ تعالی نے بی بڑین کی ذات مبارکہ کو پد اکرنا جا إ قواللہ سجانہ نے جرائیل علیہ السام کو یہ تھم دیا کہ وہ ذخین پر جائیں اور ذھین کے قلب سے مٹی کے کر آئیں۔ جرائیل علیہ السلام کور جنت کے فرشتہ اور رفتی اعلیٰ کے فرشتے کو در صال اللہ چھیز کی قبر مبادک کی جگہ ہے سفیہ نور انی مٹی لاے " اس کو جنت کی نسوں کے پانی ہے گوند ھاگیا جی کہ وہ سفیہ موتی کی طرح ہوگئی۔ اس مٹی کا نور تھا اور اس کی شعاع تھیم تھی۔ حتیٰ کہ قرشتوں نے اس مٹی کا نور تھا اور اس کی شعاع تھیم تھی۔ حتیٰ کہ قرشتوں نے اس مٹی کے ساتھ عرش کری' آسانوں' ذمینوں' پاڈوں اور سند روں کے گر و طواف کیا اور فرشتوں نے اور تمام تکون نے سیدنا مجھ چھیز اور آپ کی فضیات کو پہان لیا۔ چرجب اللہ تعالیٰ نے دھرت آدم علیہ السلام کو پیدا کیا تو ان کی پیشت میں پر ندوں کی آواذ کی ان داس کی پشت میں و ندوں کی آواذ کی ان داس کی پشت میں پر ندوں کی آواذ کی ان داس کی پشت میں مول اللہ بچھ کے مادہ علیہ السلام نے آئی پشت میں چھیز کی دور کو تھا تھی۔ السلام نے آئی پشت میں چھر کا دور کی تہی ہے ' وہ خاتم واللہ اور میشان پر قائم وہا اور میشان پر قائم ہوں اور ان کو صرف پاکیزہ موروں میں رکھوں گا۔ حضرت آدم نے کہا تھی اور میمان اللہ کی تھے۔ مورے حضور میشان پر قائم ہوں اور ان کو صرف پاکرہ موروں اور پاکرہ موروں میں رکھوں گا۔ حضرت آدم نے کہا تھی اور میمان اللہ کی چھے کو سے اور میمان اللہ کی تھے۔ موروں میں اور ان کو صرف پاکرہ میں اور میمان اللہ کرتے تھے۔ موروں اور پاکرہ تھے۔ موروں اور پاکرہ کو تھوں اور میمان اللہ کرتے تھے۔

علامد ابن الحاج اس كے بعد لكيت بن:

اس دواہت میں ہے کہ سب سے پہلے اللہ تعالی ہے سیدنا تھے جیجا کے قور کو پیدا کیا اور یہ فور اللہ عن و بھی کے ماضے
سورہ کرتا دیا۔ پھرانلہ تعالی ہے اس فور کے چار صے کیے۔ پہلے صد ہے عوش کو پیدا کیا ، دوسرے حصہ ہے قام کو پیدا کیا اور
تیسرے حصہ ہے اور کو پیدا کیا۔ پھر قام ہے فربایا چل لکھ اس نے کہا ہے میرے دید بیں کیا تکھوں؟ فربایا جی قیامت تک بو
پیدا کرنے والا ، دوں 'پھر قلم اور پر چنے لگا اور ہو پکو اللہ تعالی نے فربایا 'وہ لکھ دیا۔ پھرچہ تھا حصہ اللہ تعالی کے سامنے ہی ہو کرنا
دیا۔ اللہ تعالی نے پھراس فور سے چار صے کے۔ پہلے حصہ ہے معل کو پیدا کیا اور آ تکھوں کے فور کو پیدا کیا اور اس کو
دول سے داوں میں دکھا اور تیسرے حصہ ہے سورج اور چاند کے فور کو پیدا کیا اور آ تکھوں کے فور کو پیدا کیا اور چیتے حصہ کو
اللہ تعالی نے عرش کے کر در کھا حق کی آوم علیہ الصلو قا دالسلام کو پیدا کیا اور آن جی دکھوں کے فور سے ہے اور دن کا فور حضور شریع کے فور سے ہے اور دن کا فور حضور شریع کے فور سے ہے اور دن کا فور حضور شریع کے فور سے ہے اور دن کا فور حضور شریع کے فور سے ہے اور دن کا فور سے ہے اور دن کا فور سے ہے اور معرفت کا فور آپ چاپھ کے فور سے ہے اور معرفت کا فور آپ چاپھ کے فور سے ہے اور سورج ' چاند

اس كيور علام ابن الحاج للحة ين:

اس معنی بی بگفرت روآبات بین. جو این پر مطلع ہونا جائے اور ابوالر بیج کی تنب الشفاء کا مطاعد کرے۔ ای وجہ ہے حضرت آدم علیہ اسلام نے ہمادے ہیں ہوتا ہوئا جائے ہیں مطلع ہونا جائے ہیں اور اہام ترزی حضرت آدم علیہ اسلام نے ہمادے ہوئی ہیں ہوتا ہوئی میں ہے۔ کہ اے وہ اجو معنی میرے باپ بیں اور مسور ہے میرے بیٹے بیں اور اہام ترزی نے معظرت ابو بریرہ بروٹی ہوئی۔ سے روایت کیا ہے کہ عمل نے عرض کیا بار مول انتدا ہوتی ہوئی۔ آپ کے لیے نبوت کب ثابت ہوئی؟ فرالی انجی آدم روح اور جسدے ورمیان تھے۔ الد عل 'جائی میں ۲۰۰۳ مطبوعہ هاد الفکو 'بروت)

علامد ميرسيد شريف جرجاني متوفى العدمة لكست بين

عماونے کماپ کے مب سے پہلے اللہ تعالی نے عقل کو پیدا کیا ہے جیسا کہ عمری صدیث میں وارد ہے۔ بعض علاء نے کہا اس صدیث اور دو سمری دو حدیثوں میں مطابقت ہے۔ وہ حدیثیں میہ ہیں۔اللہ نے مب سے پہلے تکم کو پیدا کیا اور اللہ نے مب

ے پہلے میرے نور کو پیدا کیا' اور مطابقت اس طرح ہے کہ معلول اول اس لحاظ ہے کہ صرف اس کی ذات کا بہ حیثیت مہداء تعقل کیاجائے تو وہ عمل ہے اور اس لحاظ ہے کہ وہ باقی موجو دات اور ثفوس علوم کے معدور میں واسطہ ہے تو وہ آلم ہے 'اور اس نحاظ ہے کہ وہ انوار نبوت کے افاضہ علی واسطہ ہے وہ سید الانجیاء (علیہ العملوة والسلام) کا نور ہے۔

(شرح مواقف ع ٢٥٠ مل ١٥٠ مطبوعه امر ان ١٣٢٥ هـ)

علامه بدرالدين محمود بن احمر يمني حنى متوفي ٥٥ ١٨٥ لكمت بس:

آگر یہ اعتراض کیا جائے کہ اہم احمد اور اہم ترزی نے سند سیم کے ساتھ معرت عبادہ بن صاحت روائی ہے مراؤعا روایت کیا ہے کہ سب سے پہلے اللہ تعالی نے قلم کو پیدا کیا ' چراس سے فرمایا ، فکھ اتو اس نے قیامت تک جو پچھ ہونے والا ہے ' اس کو فکھ دیا۔ حسن مطاع اور مجاہد کا یمی محار ہے اور این جرم اور این جوزی کا بھی یمی ندہب ہے اور این جرم نے محرین اسحال سے روایت کیا ہے کہ سب سے پہلے اللہ نے نور اور ظلمت کو پیدا کیا ' پھران کو متاز کیا۔ اور ایک قول یہ ہے کہ سب سے پہلے اللہ نے سیدنا محمد مجھیں کے نور کو پیدا کیا۔ تو ان مخلف روایات میں کس طرح موافقت ہوگی؟ میں کہنا ہوں کہ ان میں موافقت اس طرح ہے کہ ہر چیز کی اولیت اضافی ہے اور ہر چیز اسے بعد والوں کے احتماد سے اول ہے۔

(عدة القاري ع ١٥٠م ١٥٠ مطبوع جروت)

علامد سيد محمود آلوي متوفى من الدو لكيت بن:

نی بڑھے سب کے لیے اس اخبار سے رحمت میں کہ آپ ممکنت پر ان کی صلاحیت کے اخبار سے اللہ کے نیغمان کا واسطري اى دجرے صنور عليم كانور اول الخلو قات بي كو تكر مدعث يس باك جابرا مب يہا الله في تمارك نى كے نور كو يد اكيا- (روح المعالى عدام من ١٠٥٠ مطبور وار احياد الراث العربي الدات)

نيز علامه آلوى حنلي للصنيخ بين

یہ بھی کماجا آپ کے نبی جہر کورو میشیس ہیں۔ایک مشیت ملی ہے جس سے آپ فیض لیتے ہیں اور ایک حیثیت بشری ے جس سے آپ لیف دیے ہیں اور قرآن مجید آپ چھیر کی روح پر نازل کیاجا آپ کی کہ آپ کی روح صفات ملکیہ کے مان متعف ہے جن کی وجہ ہے آپ روح این سے فیق لیتے ہیں۔

(روح المعاني "ج١٤ من ١٢١ مطبوعه وار احياء 'التراث العربي ' جروت)

لواب وحید الزمان (فیرمقلدین کے مشہور عالم) متوفی ۱۳۸۸ کیستے ہیں۔

الله تعالی نے خلق کی ابتداء نور محمدی ہے کی مجرعرش کو پیدا کیا 'پھرپانی کو 'پھروواکو 'پھردوات' تکلم اور اوح کو پیدا کیا 'پھر مقل کو پیدا کیا۔ پس تسانوں' زمینوں اور جو پچھے ان کے درمیان میں ہے 'ان کی پیدائش کا مادہ اوٹی نور محمدی ہے۔ اس کے حاشیہ ين لكماسب

وہ جو صدیث میں دارد ہے کہ سب سے پہلے تکم کو پرداکیا' اور سب سے پہلے عش کو پرداکیا' اس سے مراد اولیت اضافیہ -- (مدية البدى ميان مطبور سالكوث)

جس صدیث میں ہے کہ سب سے پہلے اللہ نے میرے لور کو پیدا کیا ابیض علاء نے کما اس مدیث میں نور سے مراد روح ب- ملاعلى قارى متونى مهمار تكسيد ين

ایک روایت میں ہے کہ اللہ نے سب سے پہلے میرے اور کو پیدا کیااور ایک روایت میں ہے سب سے پہلے میری روح کو

بد اکیا ان دونوں روانوں ہے مراد واحدے ایج کلہ ارداح روطانی ہوتی ہیں۔

(مركة الغاشي على ١٤١ مطبوعه كتيد الدادي مكان ١٩٠٠هـ)

نی چھ کے توریدایت ہونے پر دلاکل

ئى يا النام كانور حسى موسة كے متعلق علاء كے يہ تظریات ميں جن كو ہم نے اختصار كے ساتھ تقل كر دیا ہے۔ البتدا مُعاہر قرآن سے یہ معلوم ہو باہے کہ می چیز انسان اور بشریں ملکن آپ انسان کال اور افضل ابشر ہیں۔اور ہرنی انسان اور جرمو آے اور اللہ تعالی نے کی مجیج کو ہماری جس ے معوث کیاہے اور ای کو ہمارے لیے وجہ احسان قرار دیا ہے۔ اللہ تعالی ارشاد فرما ماہے:

الله تعافی كامسلمانوں يريه احمان ہے كه اس في ان بي ان ي من عدا يك رمول محا

لَفَدُ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِينِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِ مُرَسُولُا مِنْ أَنْفُسِهِم (آل عمران:١٧٣)

یہ کتنی بجیب بات ہوگی کہ اللہ تعالی تو یہ فرمائے کہ ادائم پریہ احسان ہے کہ ہم نے دسول کو تم بین سے جھمااور ہم یہ يس كه نميس رسول مارى جنس بي ان كى حقيقت كه اور ب- رسول الله عليم بي ب مونا عاد يا اس دجہ سے احمان ہے ' آ کہ آپ کے افعال اور آپ کی عباوات عمارے لیے تمونہ اور جست موں ورند اگر آپ کمی اور جنس ے معوث ہوتے تو کوئی کہنے والا کر سکاتھاکہ آپ کے افعال اور آپ کی عبادات ہم پر جبت نمیں ہی کو نک آپ کی حقیقت اور ہے اور بہاری حقیقت اور ہے۔ ہوسکتا ہے کہ آپ یہ افعال اور عمادات کر بکتے ہوں اور ہم نہ کر سکیں ا

ب تك تمار عاس تم يس عاكد مول آئے۔

لَقَدُ جَاءً كُمْ رَسُولٌ قِسُ الْفُرِسكُمُ

ام سال آپ سے پہلے بھی مرف مردوں ی کو د سول بناؤ 一色こうとうからからう

عَبْلَكَ إِلَّا رِحَالًا ثُورِينَ وَ مَا أَرْسُلُنَا (الأنبيباء: ٤)

کفار ہے کہتے بچھے کہ حمی فرشتہ کو رسول کیوں نہیں بتایا؟اللہ تعالی اس کے روض فرما آہے:

اور اگر ایم رسول کو فرشتہ بناتے تو ہم اے مرد ای ک صورت یں) بناتے اور ان م وی شہد ڈال دیے ہو شہدوہ وَلُو مَعَلِيهُ مُلَكًا لَّحَمَلُهُ وَحُلُو وَلَلْسَنَا عَلَبْهِمْ مَا يَلْبِسُونَ ٥ (الانساع: ٥)

(اب) کردے ہیں۔

ان تمام آیات می تصریح ہے کہ ہی جی جر انسان اور مرد ہیں حین آپ افعال ابشر انسان کال اور سب سے اعلی مرد ہیں اور اگر لور سے مراد نور ہدایت لیا جائے تو ان آبتوں میں کوئی تعارض اور تصاد نہیں ہے اور اکثر مفسرین نے نور مدایت عل مرادلیا ہے۔ اور اگر آپ کو جاند اور سورج کی طرح نور حی ملا جائے اور یہ کما جائے کہ آپ کی حقیقت نور حس ب و قرآن مجيد كى ان مرج آيات كو ان اقوال كے آباع كرا لازم آئے كا اور كيا قرآن جيدكى ان نصوص صريحه كے مقابله ص ان اقوال كو عقیدہ کی اساس بنا معج ہوگا؟ یہ مجی کما جاتا ہے کہ جربت اور نورانیت میں کوئی تعناد نہیں ہے " کیو تک معرت جرا کیل معرت مريم كياس بشرى شكل بيس آئے تھے الكين اس ير بھي خور كرنا جا بيے كر كيا فرشتے اور معزت جرائيل جائد اور سورج كي طرح نور حسی میں؟ کیارات کے وقت ہمارے ساتھ محر تکمیر نہیں ہوتے؟ پھر کیاان کے ساتھ ہونے ہے اند میرا دور ہو جاتا ہے؟ کیا جب رات كوني وجيد كياس معرت جرائيل آتے تھ توروشن موجاتي تھي، فرشتے نورے بنائے محتے ميں اللہ عي جانا ہے وہ

جلدسوم

ئېپاڻ(القر آڻ

کس متم کے نورے بنائے گئے؟ لیکن یہ بعرطل مثابرہ سے ثابت ہے کہ وہ جاند اور سوری کی طرح نور حس نیس میں کی تکہ دنیا میں ہر جگہ ' ہرونت فرشتے موجود ہوتے ہیں' اس کے باوجود دنیا میں رات کو اند حرا بھی ہوتا ہے۔

البيته امعتبرروايات سے بيد ثابت ہے كہ اللہ تعالى نے نبى پينج كونور حمى سے بھى وافر حصہ عنايت فرمايا تعل امام ابو بكراھ بن حسين بيستى متونى ٥٨ مور روايت كرتے ہيں:

الم الوليسيل محمين عين ترفري متوفى ١٥ مدروايت كريدين:

حطرت ابن عباس رمنی الله عنمانیان کرتے ہیں کہ رسول الله علی مائے کے دو دائنوں میں جمری (غادع) تھی۔ جب آپ مفتکو قرامے تو آپ کے سامنے کے دائنوں سے تورکی طرح نکانا ہواد کھائی دیتا تھا۔

(المَّاكُل عميه "رقم المدعث ها" المعم الكبير" جه "رقم الدعث ١٣١٨ المعم الادسة " جه" رقم الدعث الديد الله على النبوة المبعم في جها من ٢٤١ مجمع الزوائد "جه" من ٢٤٩ سنن داري "جها رقم الدعث ٥٨٠)

الم عبدالله بن عبد الرحمٰن داري متوفى ١٥٥ه روايت كرتے بين:

حضرت ابن مباس رمنی الله عنما بیان کرتے ہیں کہ ہیں ہے رسول اللہ سے زیادہ کمی عنمی کو کی دیکھا نہ بہاور انہ دوشن چرے والا۔ (سنن داری کی ارقم الحدیث: ۵۱ سسسة الملہ عملی المعالم سیس م ۱۸۸۷)

الم الرعين عمان عيل ترزى متونى الدروايت كرتين.

صغرت جابر بن سموہ رضی اللہ عند ویان کرتے ہیں کہ عن نے رسول اللہ عظیم کو ایک جاندنی رات میں ویکھا۔ میں مجھی آپ کی طرف دیکھا اور مجھی جاند کی طرف۔ بخد الآپ میرے نزدیک جاند سے زیادہ حسین تھے۔

("الأكل عميه" وقم الحديث: ١٠ سنن وارى "جا" وقم الحديث: ٥٥ المتم الكبير" ج٢ وقم الحديث؛ ١٨٧٥ السنة وك جهام ١٨٧٥ حاكم لود ذبي شفاس مديث كو مجح كمات)

المام عبدالله بن عبد الرحمٰن داري متوفي ٢٥٥ مد روايت كرتے ہيں۔

الدعبيره بن محرين محار بن ياسرنے رہے بنت معوز بن مغراه سے كما الارب ليے دسول الله منجير كى صفت بيان يجيئے۔ انهول نے كمالے ميرے بيني اگر تم آپ منجير كوديكھتے تو تم ظلوع بونے والے آفاب كوديكھتے۔ استر الدور الدور قربال من المع والك مستر قربال مستر الدور المشر كرد كرد كے الدور الدور الدور الدور كرد كرد كرد

اسنن داری می از قم الدیده ۱۰ استم الکیم عرب و ۱۳ مقم الکیم معند ۱۹۱۱ ماند المیشی نے کہا ہے کہ اس مدیدے کے د جال کی توثیق کی مملی ہے۔ مجمع الزوائر میر ۱۳۸۰ میں ۱۳۸۰

نی بڑھے کے حسن و جمل اور آپ کی حسی نورانیت سے متعلق ہم نے یہ امادیث تلاش کر کے نقل کی ہیں۔ ان سے

فبهان القر أن

معلوم ہو آے کہ آپ ہیں جاند اور سورج سے زیادہ حسین تھے۔ آپ کاچرہ بہت منور اور روش تھااور آپ کے دائنوں کی جمری جس سے نور کی بائند کوئی چیز تکلتی تھی کی اس کے باوجود یہ آیک حقیقت ہے کہ آپ کا خیر مٹی سے بنایا کیا تھا اور آپ انسان اور بشر تھے کی آپ کا خیر مٹی سے بنایا کیا تھا اور آپ انسان اور بشر تھے کی آپ انسان کال اور سید البشر ہیں۔

الم احد رضا قاوري حوفي ١٠٠٠ عدد كلية يرية

خطیب نے کتاب المتفق و المفترق میں عبد اللہ بن مسعود برینی سے روابت کی کہ حضور اقد س بڑھ یا سے فرمایا ہر بچہ کے باف بیں اس مٹی کا حصر ہو آئے جس سے وہ بنایا کیا میاں تک کہ اس میں دفن کیا جائے اور میں اور ابو بکر و عرا کیے مٹی سے سے اس میں دفن ہوں کے (فلوی افریقیہ میں ۱۹۹۰ معلوں مدینہ وبلانک کمپنی کراچی)

يزام احدرما قاوري منوفي ويهمه كية ين

اور ہو مطاقاً حضور ہے ہٹریت کی گئی کرے اوہ کا قریب قبال تبعیالی: قبل سبعیاں رہی ھیل کست الابیشرا رسولان(قادی رضویہ علامی) مطبوعہ کمتیہ رضویہ کراچی؛

اور صدر النفاضل مولاناسيد محد نعيم الدين مراد البادى منوفى عاسماد عاب كور بدايت بوع كى تصريح كى ب- ذير بحد ايت كى تغيير يس كليمة إن:

ميد عالم ينظيم كونور فرماياكيا كونك آپ سے ماركى كفردور مولى اور راہ حق واضح مولى -

نظامہ میہ ہے کہ آپ انسان کال اور سید البشر ہیں 'کا نکات میں سب ہے ذیاوہ حسین ہیں۔ آپ نور ہدایت ہیں اور نور حس ہے ہمی آپ کو حقا وافر طاہے۔ جو آپ کو اپنی مثل بشر کتے ہیں ' وہ بد مقیدگی کاشکار ہیں اور جو یہ کتے ہیں کہ آپ کی حقیقت نور حس ہے اور صورت بشرہے یا آپ نہاس بشری میں جلوہ کر ہو ہے اور حقیقت اس سے ماور او ہے 'سوداد کل شرعیہ کی روشنی ہیں اس قول کا برحق ہو تاہم پر واضح نہیں ہو سکا۔

الله تعالیٰ کاارشاوہے: الله اس کے ذریعہ سلامتی کے راستوں پر ان لوگوں کو چلا آے 'جو اس کی رضا کی ہیروی کرتے بیں 'اور اسپے اذن سے ان کو اند جمہوں سے نکال کر روشنی کی طرف لا آئے 'اور ان کو سید ہے راستے کی طرف ہواہت ویتا ہے۔

(الباكرية))

قرآن مجید کے نوائد اور مقاصد

اس آیت کا معنی بہ ہے کہ اللہ تعالی اس کتاب کے ذریعہ ان اوگوں کو ملامتی کے راستہ پر جا آیا ہے جن کا مقصد محض دین کی پیردی کے لیے اللہ کے پہندیدہ دین پر عمل کرتا ہو اور جو بغیر فور و فکر کے صرف اسپندیاب داوا کے طریقہ پر چانا جا ہے ہوں 'وہ اللہ کی رضا کے طالب نہیں ہیں۔

الله عن وجل کی رضا کا معنی کیا ہے؟ اس بیں اشکاف ہے۔ بعض علاء نے کمااللہ کی رضا کا معنی ہے ہے کہ وہ کمی عمل کو قبوں کر لے اور اس کی مدح و شاء قرمائے۔ بعض علاء نے کمااللہ جس کے ایمان کو قبول کرے اور اس کے باطن کو پاکیزہ کرے'وہ اس سے رامنی ہے اور بعض نے کمااللہ جس پر پاراض نہ ہو'وہ اس سے رامنی ہے۔

ملامتی کے راستوں ہے مراد وہ رائے ہیں جو اللہ نے اپنے بندوں کے لیے مشروع کیے ہیں اور جن پر چلنے کی بندوں کو رعوت دی ہے اور جن پر چلنے کی بندوں کو دعوت دی ہے اور جن راستوں کی اس کے رسولوں نے ہیردی کی ہے اور اس کا معدان دین اسلام ہے۔ اللہ اسلام کے سوالوں کے موالوں کمی طریقہ کو تبول نہیں کرے گا۔ نہیں دیت کو نہ میسائیت کو نور نہ جوسیت کو۔ ایک تغیریہ ہے کہ ملامتی کے رستوں سے

مراد سلامتی کے رستوں کا گھرہے اور وہ جنت ہے۔اس تقدیر پر معنی ہے ہو گاکہ اللہ اس کتاب کے ذراید جنت کے راستوں پر ان لوگوں کو چلا آہے جو اس کی رضا کی بیروی کرتے ہیں۔

الله ان کو اندهروں سے نگل کر روشنی کی طرف لا آہے۔ اس کا معنی ہے کہ ان کو کفر کے اندهروں سے نکال کر نور
ائیمان کی طرف لا آہے۔ کفر کے اندهر سے اس لیے قربایا کہ جس طرح انسان اندهر سے جس جران اور پریٹان ہو جا آ ہے 'اس
طرح کافر بھی اپنے کفری جران ہو آ ہے۔ افتہ تعالی نے قربایا ہے 'اوہ اپنے افزن سے اندهروں سے نکال ہے۔ اس کا معنی ہے ب
وہ اپنی تریش سے انہیں کفر کے اندهروں سے ایمان کی دوشتی جس لا آ ہے۔ پھر فربایا: انہیں صراط متنقم کی طرف ہدا ہے تریت اس مراط متنقم سے مرادوین حق ہے کہ دین حق واحد راستہ ہواور اس کی تمام جملت تعنق ہیں۔ اس کے برخواف دین باطل
مراط متنقم سے مرادوین حق ہے کو کلہ دین حق واحد راستہ ہواور اس کی تمام جملت تعنق ہیں۔ اس کے برخواف دین باطل
مراط متنقم سے مرادوین حق ہے کو کہ دین حق واحد راستہ ہوا وہ اس کی تمام جملت تعنق ہیں۔ اس کے برخواف دین باطل

اس آیت میں اللہ تعالی نے قرآن مجید کے تین قائدے بیان قرائے ہیں۔ ایک یہ کہ جو مخص اللہ کی رضاکی ہیروی کرے اس کو قرآن مجید اخروی مذاب ہے سامتی اور نجلت کے راستہ کی جائے۔ دو سرایہ کہ وہ سومنوں کو کفر اور شرک کے اندھیموں سے نکال کر ایجان اور قرحید کی روشنی میں لا آئے اور تیسرایہ کہ وہ دین کے احکام پر عمل کرنے کے لیے صبح اور سیدھے راستہ کی جرائے۔ دیتا ہے۔

حضرت عیلی کے خدا ہونے کارو

اس آعت میں یہ قربایا ہے کہ بیسائی حضرت میسیٰ علیہ انسلام کو خدا مانتے میں اور اس کی تقدیق اس سے ہوتی ہے کہ موجودہ چمپی ہوئی انجیل سے کمانیٹل پر یہ لکھا ہوا ہے انجیل مقدس ایسیٰ امار سے خدادند اور منجی یہوع مسیح کانیا عمد نامہ

اللہ تعالی نے الن کے اس می فاصد کارد کیااور فرملیا ہے ہی ایسانیوں سے یہ کئے کہ حضرت میں اور ان کی مل سے موت کو دور کرنے پر کون ور درک سکا ہے؟ بے ٹک سے موت کو دور کرنے پر کون ورک سکا ہے؟ بے ٹک اللہ تعالی ساری کلوں کو کون ردک سکا ہے؟ بے ٹک اللہ تعالی ساری کلوں کو بلاک کرنے پر فاور ہے۔ کوئی اس کے فیصلہ کو رد کر سکتا ہے 'نہ اس کے تھم کو بال سکتا ہے۔ اس کی سند تعالی ساری کلوں کو بلاک کرنے پر فاور جس کوئی اس کے فیصلہ کو رد کر سکتا ہے 'نہ اس کے تھم کو بال سکتا ہے۔ اس کی مشیت اور اور و کے مقابلہ میں کمی کا ذور حسمی اور جس سمج اپنے نئس سے اور اپنی مال سے بلاکت اور موت کو دور نمیں کر سکتے تو وہ خدا کیے ہو سکتے ہیں؟

اس کے بعد قربایا:

الله بن مالک ہے آ الول اور زمینوں کا اور جو کھ ان کے در میان اس ہے وہ جو جاہتا ہے پیدا کر آ ہے اور الله ہر چزر تلور ہے۔ (المائدہ عن)

اس آیت بیس بتایا ہے کہ اللہ حقیقت بیں وہ ہے جو مالک علی الاطلاق ہو اور اسکاتھرف آسانوں اور زمینوں بیں نافذ ہو
اور آسانوں اور زمینوں کے در میان جو انسان 'جن ' فرشتے اور جس تدر بھی مخلوقات ہیں 'ان سب پر اسکی سلطنت اور حکومت
ہو اور اللہ می اپنی حکمت اور ارادہ سے مخلوق کو عدم سے وجود میں لا آ ہے۔ اس نے انسان کی پیدائش کیلئے مرد اور عورت کے
اختلاط کو ظاہری سبب بتایا 'لیکن اس نے جایاتو مرد اور مورت دونوں کے بغیر معزمت آدم کو پیدا کر دیا اور اس نے جایاتو عورت کے

بغير معترت واكوبداكرديا اوراس في ما إن مورك بغير معترت ميني كويد اكرديا- خلاصه يدك وه بريزر برطم قادرب ، تمالحے ای جارا دمول آگیا جو انتظام دمل کی منت الحرية الله تعالى كاار شاوي: الدى وداهد تسارى في المائم الديك يي اوران كالحوب ين- آب كي براسا كنابول كي دجه من الله حميل عداب كول وسه كاد (الماكديده) یمود کے اس دعویٰ کار د کہ وہ اللہ کے بیٹے اور اس کے محبوب ہیں عمرمدے دوایت ہے کہ معرت ابن مہاس دمنی اللہ مخمالے قرباؤکہ می بالان سکیاس (یمود عس سے) نعمان بن دمناء ' بحرى بن عمواور شاس بن عدى آئے اور آپ سے انتظارى - وسول الله عليد كان سے بلت كى اور ان كواللہ مزوجل كى طرف دعوت دى اوران كوالله كے عزاب ب زرايا۔ انهول نے كمانے تي اتب يمن كيوں زرارے إلى بم اللہ كے بينے اور اس كے محبوب بيں جس طرح ميسائيوں نے كما تھا متب اللہ عزوجل فير آمت نازل قربائي بمرتمهارے كنابول كي وجہ اللہ نہیں عذاب کیوں دے گا؟ اس کامعن ہے ہے کہ اے جموثوا آگر واقعی انیای ہے تو اللہ حمیس عذاب کیوں دے گا؟ کو تک کوئی

غيان القر أن

جلاسوم

فخص اپنے مجبوب کو عذاب نہیں دینا اور تم خود اقرار کرتے ہو کہ اللہ تمہیں عذاب دے گا۔اس کی وجہ یہ ہے کہ میمودیہ کتے تھے کہ جتنے دن انہوں نے مجھڑے کی عبادت کی تھی 'ائے دن ان کو عذاب ہو گا اور یہ دت چالیس دن تھی۔ عالا نکہ باپ اپ بیٹے کو اور کو کی فخص اپنے دوست کو عذاب تمیں دیتا۔ (جائع البیان 'جالا مصرور مناور الفکو ' بردت' ۱۷۴۵ھ)

الله تعالی کا ارشاوہ: اے اہل کتب ہے تک تہارے پاس ادار رسول آگیا ، جو انتظاع رسل کی مدت کے بعد تہارے نے (احکام شرعیہ) بیان کرتا ہے ' تا کہ تم سے نہ کمو کہ تہمارے پاس کوئی بشادت دینے والا اور ڈرانے والا تسیس آیا پس تہمارے پاس بشارت دینے والا اور ڈرانے والا آج کا ہے اور ایند جرچز پر قاور ہے۔ (المائمد، ۱۹)

حضرت ابن عباس رضی الله عنما بیان کرتے ہیں کہ حضرت معلق بن جبل مضرت معدین عبادہ اور حضرت مقید بن وھیب رضی الله عنما بیان کرتے ہیں کہ حضرت معلق میں جس اللہ عنم ہے میں دولوں ہیں۔
اپ کی بعثت سے پہلے تم جم سے آپ کے مبغوث ہونے کا ذکر کیا کرتے تھے اور آپ کی صفات کا ذکر کیا کرتے تھے۔ وھیب بن میں دا اور رافع نے کما جم نے تم سے یہ نمیس کما تھا اور اللہ تعالی نے حضرت موٹی کے بعد کوئی کہلی تازل کی اور نہ کسی رسول کو بشیراور نذریر بنا کر جمیحا تب ان کے ود عمل یہ آب تازل ہوئی۔ (زاو المسیر جسم موٹی کے بعد کوئی کہلی تازل کی اور نہ کسی رسول کو بشیراور نذریر بنا کر جمیحا تب ان کے ود عمل یہ آب تازل ہوئی۔ (زاو المسیر جسم میں اللہ والمشور اج ۲۲می ۱۳۹ الدر المشور اج ۲۲می ۱۳۹ الدر المشور اج ۲۲می ۱۳۹ الدر المشور اسے اسے ماروں میں میں اور اسے معدد

فترت كالفوى أور اصطلاحي معنى

آس آبت من فرمایا ہے کہ اہل کتاب فترت کے بعد تہمارے پاس اعادا رسول آئیا جب کی چیزی حدت اور تیزی ختم

ہو جائے اور اس کا پہلا اثر منقطع ہو جائے تو اس کو فقرت کتے ہیں اور اسطلاح شرع ہیں وو جیوں سکے درمیان اس زمانہ کو
فقرت کتے ہیں جس میں کوئی رسول نہ آیا ہو۔ حضرت نہیٹی علیہ السلام اور سیدنا مجہ جہنے کے درمیان کوئی رسول نہیں آیا اس لیے یہ زمانہ مقترت تھا۔ اس لیے یہ زمانہ مقترت تھا۔ اس لیے یہ زمانہ مقترت تھا۔ اس الے یہ زمانہ مقترت تھا۔ اس الے یہ تہمارے پاس امارارسول آیا۔
اس لیے یہ زمانہ مقترت تھا۔ ای متوفی ۲۵ مدوایت کرتے ہیں:

معنرت ابد ہریرہ برایجہ میان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بھیج نے فرملیا میں معنرت میسی بن مریم کے سب سے زیادہ قریب یول عمام انبیاء علاتی (باب شریک) بمالِک ہیں میرے اور ان کے در میان کوئی نبی ہے

(مي البخاري عمورة الحديث:٣٣٢، مي مسلم عمورة الحديث:٣٣١٥ طبع بيروت)

عافة شاب الدين احد عن على بن جرعسقلاني متوفى عدمه لكمة بين

مسیح البخاری کی اس (قد کور العدد) مدے ہے۔ استدائل کیا گیا ہے کہ حضرت میسی علیہ السلام کے بعد مرف ہمارے نمی باتیج کومبعوث کیا گیا ہے۔ اس کی بیان الوں کی طرف بھیجا کی مبعوث کیا گیا ہے۔ اس کی بیان علیہ السلام کے مشیعین میں سے تھے اور جر جس او فائد مین سنان بھی حضرت میسی علیہ السلام کے بعد نمی شخصہ اس کا جواب ہے کہ میں مدے مسلم کی دورت کے مقابلہ میں بلا ترود ضعیف ہے ایم اس کی تصراب کے ایم اس کی تعرب ہے کہ میں مدیث مسیح بخاری اور مسیح مسلم کی دورت کے مقابلہ میں بلا ترود ضعیف ہے ایم اس کی تعرب کے حضرت میسی علیہ السلام کے بعد مستقل شریعت کے باتھ کوئی نمی مبعوث نمیں ہوا۔

المخ الباري على مع مع مع مطبوع لا عور "الم الله)

علامه عمر بن ظيف وشتاني الي ماكل متونى ١٩٨٨ كليت ين:

علامہ خطائی نے کما ہے کہ سے حدیث ان لوگوں کے قول کے باطل ہونے پر ولائت کرتی ہے اجنوں نے بید کما کہ حضرت میسیٰ علیہ السائم اور ہمارے نبی مرتبیع کے در میان وسل اور انبیاء ہیں اور حدوار سن بھی نبی تیے جو حضرت میسیٰ سے بعد لوگوں کی طرف ہمیں سے اور سے اکثر نصار کی کا قول ہے۔ جس کتا ہوں کہ امام بخاری نے سلمان سے روایت کیا ہے کہ حضرت میسیٰ اور مادے نبی ہے در میان زمانہ فنسرت جو سوسال ہے۔ (اکمال اکمال العلم عمر میں مراب مطبوعہ بیروت ۱۹۷۵ء)

حفرت آدم ہے لے کرسیدنامجر بھی تک کازمانہ

الم ابوجعفر فيرين جرير طبري متونى واسمه روايت كرتي ير.

المان الرقي بين كد معرت ميلي اور سيد نافر ميون كور ميان زمان الزيت جوسوسال ب

(بام البيان "ج٢٠مل ٢٢٨ مطبوء داو الفكر "بردت ١٥١٥ه)

المام الوالقاسم على بن الحسن بن مساكر متوفى الدهد روايت كرت بير.

حضرت ابو امار بواجر ایان کرتے ہیں کہ ایک مخض نے بوجہا یارسول اللہ اکیا حضرت آدم نی تھے؟ فرمایا ہاں اس نے جمہان کے اور حضرت اور این کے جمہان کے اور حضرت اور حضرت ایراہیم کے درمیان کتنا عرصہ ہے؟ فرمایا ہیں صدیاں۔ اس نے بوجہا حضرت اور اور حضرت ایراہیم کے درمیان کتنا عرصہ ہے؟ فرمایا تین سوچند رو۔ درمیان کتنا عرصہ ہے؟ آپ نے فرمایا تین سوچند رو۔ درمیان کتنا عرصہ ہے؟ آپ نے فرمایا تین سوچند رو۔ اسم میں اور میان کتنا عرصہ ہے؟ آپ نے فرمایا دی صدیاں اس نے بوجہا اور مثل کتے ہیں؟ آپ نے فرمایا تین سوچند رو۔ اسم میں اور میں کتنا میں کتنا عرصہ ہے کا میں درمیان کتنا عرصہ ہے کا درمیان کتنا عرصہ ہیں درمیان کتنا عرصہ ہے کا درمیان کتا کا درمیان کتا ہے کہ درمیان کرتے ہے کہ درمیان کتا ہے کہ درمیان کی کتا ہے کہ درمیان کی درمیان کی درمیان کتا ہے کہ درمیان کی درمیان کی درمیان کی درمیان کتا ہے کہ درمیان کا د

حطرت ایرا ایم اور حضرت موی کے در میان دی صدیاں این اور حضرت موی اور میلی کے در میان مترہ صدیاں این۔ (تضیر متیز علامی ۱۳۰۰ مظبوعہ داو الفکو بیردت ۱۳۰۱ مظبوعہ داو الفکو بیردت ۱۳۰۱ م

اس کاخلاصہ بیدے کہ حضرت آدم علیہ السلام سے لے کرمیدنامحہ بجین تک جد بزاد تین سوسال کازمانہ ہے۔

وَإِذْقَالَ مُوسَى لِقَرْمِهِ لِقَوْمِ إِذْكُرُوْ الْعِبَةُ اللهِ عَلَيْكُمُ

اور اد یمے) جب موی نے اپن قم سے کہا اے مری قم تم پرج اللہ نے اس کیا ہے اس کو یاد کرد

ٳۮ۬ۼۜۼڵڕڣؽڰؙۄؙٲۺؚؽٵۜٷڿۼڵڰؙۄ۫ڟۘٷؙڴٵۨٷٳۺڰۄڟٵٛۄؙؽٷؚؾ

جب النوسة تم مي بيول كو بنايا اور تم كو بادشاه بنايا ، اور تم كو ده بكد ديا جو تمام جهاول ي

غِيانُ القر أن

ن@يقرم ا درواڑہ سے الٰ پر وا قل ہو جا دُ جب مراز کمیں بھی اس فرین یک داخل جیں ہول سکے جب مک کروہ اس بران ، مواب اور اب کارب مار 100000000 ادراسے بال کا الک برا تر بائے اور افران وال کے دریال

قَالَ فَإِنَّهَامُحُرَّمَةً عَلَيْهِمُ أَنَّ بِعِينَ سَنَةً عَيْمُونَ فِي

(الندف) فرايا يه (ادفن مقدم) جاليس مال مك ال ير حوام و ب كى ، يه زمن مى بيسكة

الْكِرُضُ فَلَاتَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفُسِقِينَ ﴿

پرل کے ، او ان نازمان وٹوں پر افری = کریں 0

الله تعالی کاارشادے: اور (یادیجے) جب موی نے اپنی قوم ہے کہ اے میری قوم اتم پر جو اللہ نے انعام کیاہے اس کویاد کر دجب اللہ نے تم میں جیوں کو بنایا اور تم کو بادشاہ بنایا اور تم کو دہ پکھ دیا جو تمام جمانوں میں کسی کو نمیں ویا تھا۔ (الما کدن میں آیات سمالیقہ سے مناسب

اس آیت کی مابقہ آیات سے مناسبت اس طرح ہے کہ اس سے پہلے رالمائدہ اور با قااور ہے شک اللہ سنے بنو اسرائیل سے پہلے مد ایا ور ان جس ہوا ہو گران مقرر کیے۔ اس آیت جس بنوا سرائیل سے حد اور میثاق لینے کا ذکر تھا اور اس آیت جس بنوا سرائیل سے حد اور میثاق لینے کا ذکر تھا اور اس آیت جس بنوا سرائیل کی سرکھی کا ذکر قربایا ہے۔ ان کو اس آیت جس اللہ تعنیٰ ہوا اس کے مقابلہ جس بنوا سرائیل کی سرکھی کا ذکر قربایا ہے۔ ان کو اس خلیلین جس داخل ہونے اور جبار نین سے جدا کرنے کا تھم دیا تھا اور نہیت پر والا کل قائم کے تھے اور بیبایا تھا کہ یود در سرک وجہ سے کہ اس سے پہلے رکوع جس سیدنا گھر ہیں جو بدور کے حداد پر دالمات کرتی جس ایک ہے دو اللہ تعالیٰ کی اس کی نبوت کو دمیں مانچے۔ اس بر کوع جس دو مرسے ہے کہ انسوں نے ارض قلسطین جس دافل ہونے اور جبارین کے خلاف لائے ہے۔ انکار کیا۔ ان آنجوں سے نبی میں ہونے مور جبارین کے خلاف لائے ہے۔ انکار کیا۔ ان آنجوں سے نبی میں ہونے اور جبارین کے خلاف لائے ہے۔ انکار کیا۔ ان آنجوں سے نبی میں ہونے اور جبارین کے خلاف لائے ہیں۔ انکار کیا۔ ان آنجوں سے نبی میں ہونے اس کی دسالت کو نبی مائے اور تعنی حب آپ کی دسالت کو نبی مائے ان آتھ ہیں۔ ان انگار کیا۔ ان آنجوں سے نبی میں میں میں میں انسان کی در سالت کو نبی میں میں میں انسان کی در انسان کی خال کر تھے جس سے دل کر فرت نہ ہوں۔ حدی علیہ المیں کی افرائی کر تھے جس سے دل کر فرت نہ ہوں۔ خال کی در انسان کی عالی کر تھی ہی انسان کی جانبیان

اس توجت کا معنی ہے ہے کہ حضرت موٹی علیہ السلام نے اپنی قوم کو یاد دلایا کہ اللہ تعالی نے ان پر کتنی نعتیں انعام قرمائیں' وہ قوم قرعون کی غلامی کرتے تھے'اللہ تعالی نے ان کو فرعون سے نجلت دی ان میں انبیاء کو مبعوث فرمایا' جو دحی ہے ان کے پاس اللہ کے احکام لاتے اور ان کو فیب کی خرس دیتے تھے۔ ہم پہلے بیان کر بچے ہیں کہ نبوت کا معن ہے دحی کے ذریعہ فیب کی خرس میان کرتا۔

> اس آمت میں ایک نوت یہ بیان فرائل ہے 'جب اللہ نے تم میں جمین کو علا۔ علامہ محدود آلوی اس کی تغیر می تکہتے ہیں:

اس آیت می جمیوں سے مرادین صفرت موک مصرت بارون مصرت بوسف اور صفرت بیقوب علیم المام کی تمام اوناد۔ جو ایک قول کے مطابق نے میں اور ایک قول کے مطابق نے سر افراد جن کو حضرت موٹی علیہ الملام نے اپنے رب کے میابت کے لیے چنا تھا این المائب اور مقال نے کمایہ نی تھے۔ اور علامہ اوردی وفیون نے کما ہے کہ اس سے مرادوہ انجیاء بی میقات کے لیے چنا تھا این المائب اور مقال نے کمایہ نی تھے۔ اور علامہ اوردی وفیون نے کما ہے کہ اس سے مرادوہ انجیاء بی بواس کے بعد بنو اسموا کیل میں موٹ کے مجے۔ اور تحقق وقوع کے لیے این کی بیٹ کو ماضی سے تعبیر کردیا گیا۔ ایک قول یہ ہواں کے بعد بنو اسموا کی این کی بیٹ کو ماضی سے تعبیر کردیا گیا۔ ایک قول یہ کہ تم میں بیون کو بنائی اس سے مراد عام ہے۔ فواہ وہ انجیاء مقدم ہوں یا موفر اور کمی است میں است انجیاء میوث نمیں کے سے کہ تم میں بون کو بنائی اس سے مراد عام ہے۔ فواہ وہ انجیاء مقدم ہوں یا موفر اور کمی امت میں است انجیاء میوث نمیں کے

هيان القر أن

محے' جتنے انبیاء بنوا سرائیل میں مبعوث کے محتے ہے۔ (روح المعالیٰ ج۱٬ می۵۰٬ مطبوعہ دار احیاء الزائ العربی بیردت) بنو اسرائیل کے ملوک (بادشاہوں) کا بیان

اس آیت میں ہوا سرائیل پر دو سری نعت بدیبان فرمائی ہے کہ اللہ تعالی نے ان کو طوک (بادشاہ) بنایا۔

علامدابوعبدالله محمين احمد ماكلي قرطبي اس كي تغيير من لكيية بين:

اس آیت کا معنی ہے ہے کہ تم کو ایسانیا ویا کہ تم آپ مطافات کے مالک نے اور تم پر کوئی غالب تمیں تھا جہا اس ہے پہلے تم فرجون کے طوح اور غلام تے اللہ تعالی نے فرجون کو غرق کر کے تم کو اس کی غلای ہے انجات دی۔ حسن بعری اور سدی سفہ اس کی تغلیر میں کہ اے اگر اس عقبار ہے الوک تھے۔ معرت اس کی تغییر میں کہ اے اس اعتبار ہے الوک تھے۔ معرت ابن عباس نے فرانیا جب کی فض کے گھر جس کوئی انسان اس کی اجازت کے بغیروا خل نہ ہو سکے اور ملک (بار شاہ) ہے۔ امام مسلم نے روایت کیا ہے کہ ایک فقط اور مماج بن جس سے نسیس مسلم نے روایت کیا ہے کہ ایک فقط نے معرت عبداللہ بن عمرہ بن العاص ہے ہو چھاکیا ہم تقراء اور مماج بن جس سے نسیس میں اور حداث کیا ہی ایک مقدم ہی ہے۔ فرانی بھراہ چھاکیا ہم تقراء اور مماج بن جس سے نسیس میں اور مجابر نے کہا ہی انہ بھر ہے ہوا کیا تماری رہائش کے لیے گھر ہے ؟ اس نے کہا ہی ان بھر تم بھر تم

نیزاس آیت کے آخر میں فرمایا اور تم کو دہ چکھ دیا جو تمام جمانوں میں کمی کو نسیں دیا تھا۔

مید حضرت موی کااپی قوم سے خطاب ہے۔ ان کو جو پکو دیا 'اس سے مراد من و سلوئی 'پھر سے بانی نکالنااور باول کاان پر
مایہ کرتا ہے۔ ایک قول یہ ہے کہ اس سے ان جی ہہ کشرت انبیاء کا مبعوث ہونا مراد ہے اور اللہ کی طرف سے جو ان کے پاس
نشانیاں آئمی۔ مثلاً سمندر کو چردینا اور ان کے دشمن کو غرق کر دینا وغیرہ 'جو نشانیاں ان کے ماتھ مخصوص تھیں۔ اس سے یہ
لازم نہیں آئا کہ ان کو مید نا محمد بینچیم کی است سے زیادہ نعمین دی گئیں تھیں 'کیونکہ اس آیت کا معنی یہ ہے کہ ان کے زمانہ
میں ان کو مب سے زیادہ لعمین دی گئیں تھیں 'جو اس زمانہ میں اور کسی کو نعمی دی گئیں تھیں۔

. الله تعالی کاارشاوہ: (معترت موی نے کما) اے میری قوم اس ارض مقدسہ میں داخل ہو جاؤجو اللہ نے تہارے لیے لکھ دی ب اور پشت نہ دکھاتا ورند تم نشدان بائے والے ہو جاؤے۔ (الماکدہ ۲۰۱)

ارض مقدسه كامعداق

اس آیت میں اللہ تعالی نے بنو اسرائیل کو ارض مقدمہ میں داخل ہونے کا تھم دیا ہے۔ ارض مقدمہ کے متعالی کی اقوال ہیں۔ مجاہد نے کمااس سے مراد طور اور اس کے اردگرد کی زمین ہے۔ آلدہ سے کمااس سے مراد شام ہے۔ ابن زیدنے کما اس سے مراد اس ہے مراد دمشق مقلطین اور اردن کابعض علاقہ ہے۔

الم ابوجعفر طبری نے کہا ہے کہ ارض مقدر کو عموم اور اطفاق پر دکھنا چاہیے اور اس کو کسی علاقہ کے ساتھ خاص نہیں کرنا چاہیے "کیونکہ بغیر کسی حدیث وارو نہیں ہے۔ کرنا چاہیے "کیونکہ بغیر کسی حدیث وارو نہیں ہے۔ وار اس سلسلہ میں کوئی حدیث وارو نہیں ہے۔ واکٹرو مبد ق حدیث کہا ہے کہ اس سے مراو سروشن فلسطین ہے۔ اس کو مقدس اس لیے فرمایا ہے کہ یہ جگہ شرک ہے پاک ہو جا آئے۔ ہے ایک ویک کہ یہ جگہ انہاں کا مسکن ہے "یاس لیے کہ اس جگہ عبادت کرنے ہے افسان کناہوں ہے پاک ہو جا آئے۔

اس آیت میں یہ فربلا ہے؛ کہ اللہ نے تہمارے لیے یہ زشن لکھ وی ہے۔ اس پریہ اعتراض ہے کہ اس سورت کی آیت ۱۲ جس اللہ تعالی نے قربلا ہے یہ (ارض مقدمہ) چالیس مال تک ان پر حرام رہے گی توجب اللہ تعالی نے یہ سرزمین ان کے لیے لکھ دی تھی تو وہ چالیس مال تک ان پر حرام کیے ہو گئی؟ اس اعتراض کے حسب ذیل جواب ہیں:

١- اس آيت كامعني يه ب كر انجام كاريه مرزين يوامرا كل سك لي الكه وي كل ب-

۱۲ اس آیت میں یہ شمیں قربایا کہ جن یہودیوں کو ارض مقد سے میں داخل ہونے کا تھم دیا تھا ان کے لیے یہ سرزمین لکھ دی محق ہے اور چاہیں سال تک ان ہی نوگوں پر اس میں داخل ہو ناحرام فربایا۔

۳۰ اس آیت جی اگرچہ عموی طور پر بنو اسرائیل کاذکرہے بھراس سے مراد خاص مخص ہیں۔ یوشع اور کالب جو ارض مقدمہ جیں داخل ہو گئے تھے اور باتی بنوا مرائیل جو بزدل کی دجہ ہے اس مرذین میں داخل تمیں ہوئے۔ ان پر چاہیس مال تک اس میں دخول کو حرام قرار دے دیا۔

الله الله المرائيل كے ليے لكينے ہے مراديہ ہے كہ ان پر اس ميں داخل ہونے كو فرض كرديا تھا 'ادر جبوہ داخل نہيں ہوئ تو بطور مزا 'ان پر چاليس مال تك اس ميں د فول كو حزام فرماديا۔

الله تعالَی کاارشاوہ: انہوں نے کمااے موی اس مرزمین میں توبہت بڑے جسموں والے لوگ ہیں اور ہم اس زمین میں اس وقت تک داخل تمیں ہوں گے جب تک کہ وہ اس زمین سے لکل نہ جا کیں 'پھراگر وہ اس سے نکل گئے تو ہم ضور اس میں واخل ہوں مے والما تعدد ۱۲۲)

جبارين كابيان .

اس آیت میں اللہ تعالی نے بید خبرہ ی ہے کہ جب حضرت موئی علیہ السلام نے اپنی قوم کو ارض مقد سد میں داخل ہونے کا عظم دیا تو انسوں نے انکار کر دیا اور اس کی بید وجہ بیان کی اس جگہ جبارین رہے ہیں 'جن سے ہم اڑنے کی طاقت نہیں رکھتے۔ ان کو جبارین اس لیے کمؤ کہ ان کے جہم بہت بوے بوے بھے۔ اصل میں جبار اس مخص کو کہتے ہیں جو اپنے اور دو سروں کے مطاطات کی اصلاح کرنے والا ہو۔ پھراس کے استعمال میں وسعت ہوئی اور ہراس مخص کو جبار کما جانے لگا جو زور اور طاقت سے لئے حاصل کرے 'خواووواس کا جی ہو گا نہ ہو۔

الم ابوجعفر طبری متوفی ١١٥٥ و اي سند كے ساتھ عكرمد سے روايت كرتے إلى:

(جامع البيان 'ج٦٥م ٢٣٥٥-٢٣٥) مطبوعة داو الفكو 'ميروت '١٥٥٥) البيان 'ج٦٥م معبوعة داو الفكو 'ميروت '١٥٥٥) ما البي المحاق بيان كرتے بين كر معترت موى نے ابني قوم ہے قربانا تعالى بهم اس زهن بين داخل بيوں گے لور ان لوگوں بر

عالب ہوں گے۔ پھران جاموموں نے آگر بیان کیا کہ ان جیارین کے بہت بڑے جسے جسم میں اور وہ بہت ذور والے ہیں 'ہم تو ان کی تنظموں بھی ٹڈون کی طرح ہیں ' میر من کر بنو اسموا کیل آہ و بکا کرنے لگے۔ افسوس اہم یماں کیوں آ گئے۔ کاش اہم معری جس رہے اور انسوں نے جبارین کے ساتھ لڑنے ہے صاف انگار کردیا۔

(جامع البيان عجه عم ٢٣٠٩ مطبوعه بيروت ١٣١٥ هـ)

الله تعالى كاار شادى: الله عدد را دوار من عدد آدى سف كاين بالله قطانام زاياتاكم دردازه عدان برداخل بوجاد المرس

مهاد نے بیان کیا ہے یہ دو آدی ہوشع بن نون اور کاب بن ہو تا تھے۔ انہوں نے حضرت موی علیہ السلام سے کیے ہوئے حمد کو نہ واکیا معفرت موی علیہ السلام نے ان بارہ جاسوسوں سے حمد لیا تھاکہ جبادین کا صل حمرف جمعے بتانا تو م کو نہ بتانا تو اس حمد کو ان دو نے ہورا کیا تھا۔ بلق نے نہیں کیا اور قوم کے سائے جبادین کی قیر معمولی جساست کو بیان کر دیا۔ اس دجہ نہ تو م عمد کو ان دو نے ہورا کیا تھا۔ بلق نے نہیں کیا اور قوم کے سائے جبادین کی قیر معمولی جساست کو بیان کر دیا۔ اس دجہ نہ تو م کے سائے بردلی دکھائی اور بھی دو الے تھے۔ انہوں نے قوم کو محضرت موئی پر کالی ایمان لانے والے تھے۔ انہوں نے قوم کو محضرت موئی پر کالی ایمان لانے والے تھے۔ انہوں نے قوم کو محضرت موئی پر کالی ایمان لانے والے تھے۔ انہوں نے قوم کو محضرت موئی کی اطاب تر اور جملہ کر اور دورا آدہ سے داخل ہو جاؤا تم تی کامیاب رہو گے۔

الله تعالیٰ کاار شاوے: انہوں نے کمااے مو کیا ہے ٹک ہم ہر گزیمی بھی اس ذھن میں وافل نسی ہوں گے 'جب تک کہ وواس میں ہیں سو آپ اور آپ کارب جائیں اور دولوں (ان سے) جنگ کریں ہے تک ہم پیس بیٹے رہیں گے۔

(الاعتدام)

ف ف ف ھسب انت و ربک میں بنواسم اسل کے گفراور قسق کی وجوہات

بنواسم اسل کا یہ کمتاکہ جب تک کہ جبادین اس دیمن میں ہیں ہم اس ذیمن میں وافل نہیں ہوں ہے۔ جمادے تکم سے
حیاد الفار کرنا ہے اور اللہ تعدال کی نفرت ہے باہ س ہونا ہے اور انہوں نے جو یہ کماکہ تم لور تسارا رب جاؤاور جا کر لادیہ اللہ
تعدالی کی صفات سے صریح جمالت ہے کی نکہ اللہ تعدالی آنے جائے اور منظی ہونے سے منزہ ہے اور اس کاام سے معلوم
ہوتا ہے کہ وہ مشہد کی طرح اللہ کی جمیت کے قائل تھے۔ حسن بھری نے کمااس وجہ سے ان کایہ قول کفرہ اور اگر ان کے
قول کا یہ مطلب ہو کہ اگر آپ رسول برخی ہیں او اور کی برنست اللہ تعدالی کی نفرت حاصل کرنے کے زیادہ حقدار ہیں۔ اس
قول کا یہ مطلب ہو کہ اگر آپ رسول برخی ہیں او اور کر "ب ہی یہ قول کفرہ ہے۔ کی نکہ انہوں نے معزمت مورکی علیہ السلام
کی دسالت میں شک کیا۔ یہ بھی کما کیا ہے کہ این کے این کے قول میں دب سے عمراد معزت بادون ہیں۔ کو تکہ معزمت مادون معزت مورکی شک نہیں
مورکی سے بڑے تھے "اور معزمت مورکی این کی اطاعت کرتے تھے۔ تبیہ بھی این مے اس قول کے فتی ہونے ہیں کوئی شک نہیں
مورکی سے بڑے تھے "اور معزمت مورکی این کی اطاعت کرتے تھے۔ تبیہ بھی این مے اس قول کے فتی ہونے ہیں کوئی شک نہیں
مورکی سے بڑے تھے "اور معزمت مورکی این کی اطاعت کرتے تھے۔ تبیہ بھی این مے اس قول کے فتی ہونے ہیں کوئی شک نہیں
مورکی سے بڑے تھے "اور معزمت مورکی این کی اطاعت کرتے تھے۔ تبیہ بھی این می اس قول کے فتی ہونے ہیں کوئی شک نہیں
مورکی سے بڑے دور اللہ تعدالی کے اس کی فاش می فرایا ہے۔ یہ بودوں کا اپنے نبی کے ساتھ سلوک تھا اس کی مقابلہ میں
مورد اللہ تعالی کے مورد والی آپ میں میں این کو فاش می فرایا ہے۔ یہ بودوں کا اپنے نبی کے ساتھ سلوک تھا اس کے مقابلہ میں

مسلمانوں کا اپنے ٹی ہیں ہے ساتھ معالمہ دیکھئے۔ امام محرین اسائیل بخاری متوفی ۵۲ مدہ روایت کرتے ہیں:

حضرت عبد الله بن مسعود بولي بيان كرتے بين كه جنگ بدر كه دن حضرت مقداونے كمايار سول الله ابم اس طرح نسير كميس كے بس طرح بنو امرائيل نے حضرت موئ سے كما قلامو آپ اور آپ كارب جائيں اور دونوں (ان سے) جنگ كريں ، ب نبك بم بيس بينے ويں مے ليكن آپ جائے بم آپ كے ساتھ رہیں كے والویا رسول الله باليور كے چرے سے پريشان كابادل

طِيانَ القَرِ أَنْ

جلدسوم

چھٹ کیا۔ (ابن جریز نے روایت کیا ہے کہ حضرت مقداوے س کردو سرے معلیہ بھی ای طرح کئے لگے) (میح البخاری عزائر آئے البریٹ: ۳۲۰۹ سند احد عزار قم الحدیث: ۳۲۹۸ باسم البیان عزام ہوں ۳۲۹۸) اللہ تعالی کا ارشاد ہے: سوی نے کمااے میرے رہائے تک میں صرف اپنے آپ کا اور اپنے بھائی کا الک ہوں تو ہمارے اور فاسق نوگوں کے در میان فیصلہ کردے۔ (المائدہ: ۲۵)

صفرت موی علیہ انسلام نے جو اپنے اور فائل اوگوں کے در میان فیصلہ کی دعائی تھی اس کے وہ محمل ہیں: ۱- چو نکہ وہ حق سے دور چلے گئے تھے اور نافر انی کرکے راہ راست سے ہٹ گئے تھے اور اس وجہ سے ان کو میدان تیہ جی ب بھکنے کی سزاوی محمی تھی۔ اس لیے معمرت موکی علیہ السلام نے دعائی کہ ان کے متعلق فیصلہ کر دیا جائے۔

۲- ان کو بم سے الگ اور حمیز کردیا جائے اور ان کودی جانے دانی سزا کے ساتھ جمیں لائل نہ کیا جائے۔ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے: (اللہ نے) فرایا یہ (ارض مقدسہ) جالیس سال تک ان پر حرام رہے گی ہے زمین میں بھٹکتے

پرس مے موآب ان نافرمان اوگول پر افسوس نہ کریں۔ (الما کدد: ۱۳۹)

ميدان تنييش بنواسرائيل كأبعظنا

الله تعالی فی صفرت موی علیه السلام کی دعا قبول فرانی اور ان بافران میردویوں کو چاہیں سال بحک میدان ہے جی بھنکے کی سزا دی۔ ہید کا انفوی سخن ہے ہیں۔ وہ میدان ہی فرخ کا تعانی انفارہ شرق ممل اور سٹا میں اگریزی ممل کے دودون رات چلت مرا دی۔ ہی خانفوی سخن ہے ہیں۔ گریزی ممل کی اور دن رات چلت در شام کو جارہ ہیں ہینچ جاتے تھے اور شام کو جارہ ہیں ہینچ جاتے تھے اور شام کو جارہ ہیں۔ ایک توں میں میدان کو قطع نہیں کرنے ہے۔ اس میں اختلاف ہے کہ حضرت موکی اور دخترت بارون میلیماناسلام اکے ساتھ تھے یا نہیں۔ ایک توں یہ ہی کہ وہ اکنے ساتھ نہیں تھے "کیو تک میدان ہید میں بوناان کیلئے سزا تھا۔ انہوں نے چاہیں دن چھڑے کی عبادت کی تھی تو ایک دن کے مقابلہ میں ایک ساتھ نہیں ہوناان کیلئے سزا تھا۔ انہوں نے چاہیں دن چھڑے کی عبادت کی تھی تو ایک دن کے ساتھ نہ بوتے اور ایک تول یہ ہو کہ وہ کہ می میان اسلام نے یہ دعائی تھی اسلام ہے ہونائی تھی ساتھ تھے لیکن انہ تعانی ہی کہ بم می اور دن فاحق میں فیصلہ یا میان کردیا تھا بھی حضرت ایرا بیم علیہ السلام پر جارہ کردی گئی تھی۔ اسلام پر جارہ کردی گئی تھی۔ اسلام انہ میں اور دو جہاری ہو تی اور دو جہارین ہو گئی المور کی توسط ان کی اولاد کو ساتھ لے کرار ش مقدسہ میں داخل ہو ہو تک اور دو جہارین ہو گئی ہو تا کہ کی توسط میں کی اولاد کو ساتھ لے کرار ش مقدسہ می داخل ہو ہو تک اور دو جہارین ہے جنگ سے بیار تھے۔ حضرت ہو شع ان کی اولاد کو ساتھ لے کرار ش مقدسہ می داخل ہو سے عمد کو جو را کیا تی اور دو جہارین ہے جنگ سے بیار تھے۔ حضرت ہو شع ان کی اولاد کو ساتھ لے کرار ش مقدسہ می داخل ہو سے عمد کو چو را کیا تھی اور دو جہارین ہو جنگ سے بیار تھے۔ حضرت ہو شع ان کی اولاد کو ساتھ لے کرار ش

الم ابوجعفر محدين جرم طبري متوني ١٠١٥ ورايت كرتے بيل:

حطرت ابن عباس رضی الله عنمائے قربایا ہیں مال سے زیادہ عمر کا جو مخص بھی میدان تیہ میں وافل ہوا'وہ مرکیا۔ حضرت موی اور حضرت بارون بھی تیہ میں فوت ہو گئے۔ پہلے حضرت بارون فوت ہوئے' حضرت ہوشع ان یہودیوں کی اولاد کے ساتھ ارض مقدمہ پر تملہ آور ہوئے'جبارین سے مقابلہ کیالور اس شرکو فتح کر لیا۔

(جامع البيان ٢٠٦٤م ٢٠٠٩ مطبوعه داد الفكر "وردت ١٣١٥ه)

حصرت یوشع کے لیے مورج کو تھرانا علامہ ابوعبداللہ عمرین احمد مالکی قرائی حول ۲۱۸ مداللہ علیت ہیں: الله تعالى في حضرت يوشع بن نون كو نبوت عطاكي اور ان كو جبادين سے جنگ كرف كا تكم ديا۔ اى مقابله ميں سورج كو محمرا ديا كيا عنى كه وہ شرمي داخل ہو كئے اور اى جنگ كابيہ واقعہ بكه ايك شخص كى خيائت كى وجہ سے آگ في ال ننيمت كو نبيس جلايا۔ اس واقعہ كى تفعيل اس مديث ميں ہے۔

الم مسلم بن عباح قشيدى متونى المعد روايت كرت بي:

الشجيم مسلم "ج ٣ أرقم الحديث ٢ جهدا مطبوعه وار الكتب ابعليه "بيروت)

نى وي كاسورج كولوثانا

اس مدیث میں معترت ہوشع بن نون کے لیے غروب سے پہلے سورج کے تھمرانے کاؤکر ہے اور نبی مؤہبیج نے غروب کے بعد سورج کو لوٹاریا تھا۔'

الم ابوالقاسم سليمان بن احمر طبراني متوني ١٠٠٠ مد روايت كرتي بين

حعرت اساء بنت ممیس رمنی الله عنه بیان کرتی ہیں کہ رسول الله یکی طرف و تی کی جاری تقی اور ان کا سر حعرت علی برجین کی طرف و تی کی جاری تقی اور ان کا سر حعرت علی برجین کے نیاز نمیس پڑھی 'حتی کہ سورج غروب ہو کمیا۔ رسول الله برجین نے نیاز نمیس پڑھی 'حتی کہ سورج غروب ہو کمیا۔ رسول الله برجین سے دعائی: اے اللہ اب شک علی تیری اطاعت اور تیم ہے رسول کی اطاعت میں مشغول تھے 'تو ان پر سورج نوٹاوے۔ حضرت اساء نے کہ برمیں کے دیکھیا کہ سورج غروب ہو کمیا تھا اور پھر غروب ہونے بعد دو طلوع ہو کمیا۔

المجم الكبير" ج٣٦ أرقم الدينة و ١٩٠٠ م ١٥٠ - ١٥٠ عن الأكار اللولاي ته أرقم الدينة ١٨٥٠ م ١٢٨ من ١٦٨ مختر تاريخ ومثق ا ع المام ١٣٧٨ سبل الدي و الرشاد "جه م ١٣٥٠ - ٣٣٥ احذ كره من ما شرح مشكل الأثار لللوي "ج٣ أرقم الدينة: ١٠١٨-١٠١٨) امام ابو جعفر طحلوى متوفى ١٣١١ه لكهيت من :

یہ طدیث نبوت کی عظیم علامتوں میں سے ہے۔ کیونک حضرت علی نے رسول اللہ جھید کی وجہ سے اپنے آپ کو پابند

ر کھا۔ اس لیے آپ نے ان کے لیے سورج لوٹانے کی دعا کی۔ اس سے نماز عصر کی اہمیت بھی معلوم ہوتی ہے۔ (شرح مشکل الاکار 'ج ۴' ص ۹۸- ۹۲ مطبوعہ موسسه الرمدانه پروت) حدیث رومش کی سند کی شخص ت

ابن الجوذى في العاب كريد حديث موضوع ب- ابن جميه "ابن القيم" (بين "ابن كيراورابن حزم كى بهى يى رائد منه منه من من الوجور و " حضرت الوجور و " حضرت الوجور و " حضرت الوجور و " حضرت الوجور و " من من من الوالحن فضلى متوفى من الوجور و " تصحيح حديث الوالحن فضلى متوفى من الوجور و كام من كم تمام امانير كوجع كياب اور ايك ر مالد لكماب " تصحيح حديث و دافشه من "اورام مي و من الوجور الكريد من المنسس "اورام مي من الوجور المناب " كشف الملسس عن حديث المنسس "اورام مي من و سف و مشتى شن الكريد من المناب " مربيل الملبس عن حديث ود المنسس "-

علامه منس الدين عجر بن عبد الرحمٰن مقادي متوفى مه وهد لكيت بين:

اس مدیث کے متعلق الم احمد نے کمائی کی کوئی دھی ہے۔ علامہ ابن الجوزی نے ان کی پیردی کرکے اس مدیث کو سیم قرار دیا ہے۔ الم ابن مندہ اور الم ابن موریث کو سیم قرار دیا ہے۔ الم ابن مندہ اور الم ابن مردویہ نے اس کو حضرت ابو ہررہ سے دوایت کیا ہے۔ ای شاہین سنے اس کو حضرت ابو ہررہ سے دوایت کیا ہے۔ ای شاہین سنے اس کو حضرت ابو ہررہ سے دوایت کیا ہے۔ ای طرح نی جائی سن مورج کو دوئیا 'جس دن آپ نے اس قافلہ کے آنے کی خبردی تھی۔ جس کو آپ نے شب معراج مطرح نی جائی سن مورج کو دوئیا 'جس دن آب نے اس قافلہ کے آنے کی خبردی تھی۔ جس کو آپ نے شب معراج دیکھا تھا 'اس دوزون غروب ہو دہا تھا اور ابھی تک قافلہ نس آیا تھا 'تو نی جیج کیلئے ایک ماعت سورج کو روک دیا گیا (الح) دیکھا تھا 'اس دوزون غروب ہو دہا تھا اور ابھی تک قافلہ نس آیا تھا 'تو نی جیج کیلئے ایک ماعت سورج کو روک دیا گیا (الح)

مانظ شباب الدين احمد بن حجر مسقله في متونى ٨٥٢ م لكيمة بن:

البندا قاضی عیاض نے جو یہ نقل کیا ہے کہ ہوم خدق کو بھی نبی ہوتی ہے لیے سورج کو لوٹایا کیا تھا 'حتیٰ کہ آپ نے عصر کی نماز پڑھ لی آگر میہ ٹابت ہو تو پھریہ آپ کے لیے روحش کا تبیراواقعہ ہے۔

(فقح انباری مج ۲۲ من ۲۲۱-۲۲۱ مطبوعه وار تشرا لکتب الاسلامیه "لا بور " ۴۱ ۱۲۰هه)

علامه بدر الدین عنی نے بھی اس مدیث کو صحح قرار دیا ہے اور علامہ ابن جو زی کار د کیا ہے۔

(عوة القاري "ج١٥ مس مع معلوم اداره اللباء المتيرية معر ٨٣ ١١٥ ١١٥)

لما على بن سلطان محرالقارى موفى ميساء لكيع بير.

علامہ ابن الجوزی نے ابن محقدہ کی وجہ ہے اس مدیث کو موضوع لکھاہے ہمجو تکہ وہ رافضی تھااور محابہ کو برا کہنا تھا۔ مانا علی قاری قرائے ہیں کہ محض کمی راوی کے رافعنی یا خارجی ہونے کی وجہ ہے اس کی روایت کے موضوع ہوئے کا بھین کرلیا م مجھے نہیں ہے 'جبکہ وہ اپنے وین کے لحاظ ہے تقہ ہولور خاکبائی وجہ ہے ایام طملوی نے اس مدیث کو روایت کیا ہے اور اصل چیز راوی کی عدالت ہے۔ (شرح التفاوعلی حامش نیم الریاض 'جسم میں مطبوعہ حال الفکو ' بیروت)

علامه شالب الدين احد فعالى متونى ١٩ مله تكيية بين:

خاتم الحفاظ مافظ سيوطی اور علامہ ساوی ہے کہا ہے کہ ابن الجوزی کی کلب الموضوعات کا اکثر حصہ مردود ہے احتیٰ کہ انہوں نے بکڑت اصلات مجد کو بھی موضوعات میں درج کر دیا ہے۔ اہام ابن انسلام نے بھی ای طرف اشارہ کیا ہے اور یہ صدیف سی ہے ہے اور اس کی متعدد اساتیر ہیں 'جو اس کی صحت اور صدیق پر شاہد ہیں 'ادر ان سے پہلے بکڑت اتحد مدے نے اس صدیف کے مسلح قرار دیا ہے۔ مثلاً الم طول 'اہام ابن شاھیں اور اہام ابن مندہ اور انہوں نے اس کو اپنی مند کے ساتھ روایت کیا ہے اور اس کو حسن قرار دیا ہے۔

وصيم الرياض ع ٣٠ ص ١١ مطبوع داد الفكو عيروت)

الم فرانی نے اس مدیث کو کی سدوں کے ماقد روایت کیا ہے۔ ماقد طیعی متونی کے مدونے اکھا ہے الم طرانی نے مجم اوسلا می معرت جارے ہورے کو فحر نے کا تھم رہا تو دوایت کیا ہے کہ رسول اللہ معجود نے سورج کو فحر نے کا تھم رہا تو دوایک ساعت فحر کیا۔ را مجم الدسلا جہ دوایر ایم میں حسن سے مردی ہے الدسلا جہ دوایرائیم میں حسن سے مردی ہے اور واقعہ رادی ہے۔ امام این مبان نے اس کو نقد قرار دیا ہے۔ (ایم نے اس دوایت کو درج کیا ہے)

(المعم الكبير عمر و رقم الديث ١٩٠٠ مجم الزرائد على ١٩٦٠-٢٩٦ مطور رار الكتاب العربي بيروت ١٠٠٠ه)

ملامد اسائيل بن عد عماول منون يعد لكيدير.

للم احمد نے کمااس صدت کی کوئی اصل نہیں اور علامہ این الجوزی نے کمایہ موضوع ہے کین ان کی ذخاہہ اس وجہ عالم این شامین نے دخرت اساء بنت عمیس سے دوایت کیا ہے اور الم این شامین نے دخرت اساء بنت عمیس سے دوایت کیا ہے اور الم این شامین نے دخرت اساء بنت عمیس سے دوایت کیا ہے اور الم این مودویہ نے دخرت اور الم طول کا در قاضی میاض نے این مودویہ نے دخرت اور الم طول کا در قاضی میاض نے اس کو سی تحمد در الم النبوة عمی دوایت کیا ہے۔ الم طول کی سود من نے دو الم جیس کی ان ورایت کیا ہے۔ الم طول کی نے کہ اور ایم جو ڈیا کے الم طول کی جاتے ہوں کی سود من کو نہیں چھو ڈیا کے کہ اور اس کے دو نہوت کی اس حدث کو نہیں چھو ڈیا چاہیے اس کے تم داوی قد جی اور این جو زی لے جو اس کی کا مرادی تف جی این جو دی اس کے تم داوی تف جی اور این جو ذی لے جو اس کی طرف الفال دی کی بات بڑی علامت ہے۔ یہ حدث شعل ہے اور اس کے تم داوی تف جی اور این جو ذی لے جو اس کی طرف الفال دیس کیا جائے گا۔

(كشف الحقاءومزل الالباس عام ٢٢٠ معلومه مكتبه الغزالي ومثل)

ال مدعث ير مزد بحث و حميم بم ف حرة مح ملم جلد خاص عي بيان كردى -

وَاتُلُ عَلَيْهِمُ نَبَا ابْنَي ادْمُ بِالْحِقِ إِذْ قُرْبَاقُرْبَاكَافَتُقُبِلَ

اوراً پ ان ہر اُ وم سکے دوجیوں کی جرحق سمے مائتہ کا وت سمجے ، جب دان) دونوں نے قرا نی پیش کی تر ایک کی اقرانی

هيان القر آن

وی: ی ای زے جیا جی د ہر נפט مداور بخض ک دجہ سے تی ہے کے ساتھ ہو کالملتہ کاردوائی کے سے اور موقع بر موقع آپ کو آزار يخاسف كى تك ودد على الكرية عن الور قورف عد همون على المول في تب اعلى الدي كابو حدد ويثان كيافيا اس كونوز

♣

عَيَانُ الْقُرِ أَنْ

چکے تھے تواللہ تعالی نے میں جی کو تسلی دینے کے لیے اس ہے بہلی آنیوں میں یمودی عمد کلنیوں کو بیان فرایا اک یمود نے اللہ تعالی ہے عمد کرکے اور دیا اور انہوں نے صفرت موئی علیہ السلام ہے عمد کرکے اس کو تو ڈا۔ اب اللہ تعالی ایک اور مثال بیان فرا دہا ہے کہ جس طرح یمود نے صد کی وجہ ہے آپ کی نیوت کو نہیں بانا اور آپ کی مخالفت کی اس طرح آوم کے دو مین میں سے ایک بینے قاتیل نے حمد کی وجہ ہے ان کے دو سرے بیٹے پائیل کو قبل کردیا۔

ایک بیٹے قاتیل کے مال کرنے کی تفصیل تھ میں کے دو سرے بیٹے پائیل کو قبل کردیا۔

المام الوجعفر محدين جرير طبري متونى ١١٥٥ الى سند كے ساتھ روايت كرتے ہيں:

متعین سے مرادوہ اوگ ہیں جو اللہ سے ڈر کر ان فرائش کو اوا کرتے ہیں جن کا اللہ نے ان کو مکلت کیا ہے 'اور جن کاموں سے اللہ نے منع کیا ہے 'ان سے باز رہے ہیں۔

ہاتل نے کما اگر تونے بیجے قل کرنے کے لیے اپنا ہاتھ میری طرف برملیا تو میں تجمعے قبل کرنے کے لیے اپنا ہاتھ تیری طرف برحانے والنا تعیم ہوں۔

علامه الوعبدالله محدين احدماكي قرطبي لكست بن.

حضرت عبدالله بن عمرو اور جمهور مغرین نے کما ہے کہ پائل افائل سے زیادہ طاقتور تے الیکن انہوں نے گناو سے ایچنے کے لیے مقابلہ نہیں کیا۔ انہوں نے کمن موصد سے قبل کرتے ہیں حرج سمجمااور علم سے پر راضی ہو گئے آگہ ان کو آخرت میں جزادی جائے اور حضرت عثمان برونیے۔ نے بھی ای طرح کیا تھا جب کہ کمی انسان کا اپنے نفس کے لیے مدافعت کرتا جائز ہے۔ ایک تول ہو ہے کہ پائیل موسے ہوئے۔ تا جس نے ایک بھاری پھر بار کران کو بلاک کردیا۔

(الجامع لاحكام القرآن اج ٣ من ١٩ مطوعدداد العكو أبيروت)

الله تعالى كارشاد، (إيل في كما) من جابتا بول كه مرااور تيرا كناه تير ين دمد ك (المائدونه)

ہائیل کے اس قول کی توجیسہ کہ میرا اور تیرا گناہ تیرے ذمہ لگے

المام محرين اساعيل يخاري متونى ٢٥١ه روايت كرتي بين:

مو آکہ ہائیل نے سے اوادہ کیا کہ میں خمہارے قبل پر حریص قبیں ہوں۔ ہیں وہ گناہ جو میرے حریص ہونے کی صورت میں بجھے داختی ہو تا' میراار اور ہے کہ وہ بھی تم کو لاحق ہو آکیو کلہ صرف تم میرے قبل پر حریص ہو۔

ام مسلم بن تجاج الشيرى متوفى ١٠١٥ روايت كرتے إلى:

حضرت آبو ہررہ ہوائی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ ہوجے نے فرایا کیا تم جائے ہو کہ مفلس کون ہو تا ہے؟ محابہ نے کہا ایم مفلس دو ہو تا ہے جس کے پاس نہ ہے ہوں اور نہ سلان ہو۔ آپ نے فرایا میری امت میں مفلس دو ہے ہو قیامت کے دن فمازیں 'روزے اور زکو ہ لے کر آئے اور اس نے کسی کو گلل دی ہو 'کسی پر شمت نگائی ہو اور کسی کا مال کھایا ہو اور کسی کا فرن بمایا ہو اور کسی کا مال کھایا ہو اور کسی کا فرن بمایا ہو 'اور کسی کو مارا ہو تو اس کو اس کی نیکیوں میں ہے دیا جائے گا' اور اگر ان کے حقوق ہورے ہونے ہے پہلے اس کی نیکیاں ختم ہو جا کمی تو ان کے جمان کو دونے میں ڈال دیا جائے گا۔

(ميح مسلم "رقم الحديث المسلسل ٢٥٨١ "رقم الحديث الكتاب ٥٩)

اس مدیث کے اختبارے ہائیل کے قول کا مطلب یہ ہو سکتا ہے کہ بب تم جھے گل کرد کے قو تمہاری نیکیاں جھے ل جا کمی گی اور پھر بھی حق ہو رانہ ہوا تو میرے محناہ تم پر ڈال دیئے جا کیں گے 'سوتم میرے اور اپنے محناموں سکے ساتھ اوٹو کے اور دو ڈرخ میں ڈال دیئے جاتو گے۔ نیز قرآن مجید جس ہے

وَلَيْتُ عَبِدُلُنَّ الْفَالَهُمْ وَانْفَالُاتِمَ الْفَالِهِمُ الدوروه ضرورا إلى بعدالها كي كاورا إلى بعول ك

حضرت عبداللہ بن مسعود براہنے بیان کرتے میں کہ نبی جین ہے فرمایا جس محض کو بھی ظلم مقل کیا جائے گا' تو اس کے خون (کے گناہ) کاایک حصہ پہلے ابن آدم پر بوگا' کیونکہ وہ پہلا محض ہے جس نے قتل کوا بجاد کیا۔

ابوالحن بن كيمان سے سوال كياكيا ايك مسلمان به اراوہ كى طرح كر سكائے كه اس كا بھائى گرزگار بو اور دوزخ بن داخل بو جائے۔ انہوں نے كماك ہائتل نے به اراوہ اس وقت كيا تھا جب قائل ان كی طرف قبل كرنے كے ليے ابنا ہاتھ برها چكا تھا۔ پر ان سے سوال كيا كيا ہائتل نے يہ كيے كما ميرے كناہ اور تممادے كناه " جكد انسي ظلم قبل كيا كيا تھا اور انہوں نے كناه نسيس كيا تھا؟ انہوں نے كناه نسيس كيا تھا؟ انہوں نے كناه نسيس كيا تھا؟ انہوں نے اس كاجواب بيدويا كہ ميرے قبل كاكناه اور تممادا وہ كناه جس كى دجہ سے تممادى قربانى قبول نسيس بوئى "تم

ان دولول گناہوں کا بوج اٹھاؤ کے۔دو سراجواب ہے کہ تم محد کو آل کرنے کا گناہ اٹھاؤ کے اور جھ پر زیادتی کرنے کا گناہ اٹھاؤ کے۔دالوالفکو کیونت صاحبہ)

الله تعالیٰ کاارشادہے: تواس نے اپنے ہمائی کے قتل کامنعوبہ بنایا 'سواس کو قتل کر دیا اور وہ نقصان اٹھانے والوں میں میں دیاریں۔۔۔۔

ے ہوگیا(اللهائدد: ۲۰) دوریا سے قال

قائل کے قل کرنے کی کیفیت

الم أبن يري طبري متوفى ١١٥٥ إلى مندك ما تدروايت كرت بين

ابن جری نے نیان کیاکہ جس وقت ایل جمواں چرارے تھے قو قاتل نے ایل کو قتل کردیا۔ قاتیل مجانیا کے پاس کیاور اس کو یہ سمجھ قسیں آسکا کہ وہ اس کو کس طرح قتل کرے۔ اس نے اینل کی گردن مووڑی اور اس کے سرکے باوں کو پکڑ ہیا' تب شیطان آیا' اس نے کسی جانور یا پر عدے کو پکڑا' اس کا سرایک پھڑے رکھا' پھردو سرا پھڑاس کے سربر دے ارا' قائیل دیکھ رہا قما' اس نے بھی اس طرح اینل کو قتل کردیا۔

الم ابن جرم نے کماہے کہ میں ہیں ہے کہ اللہ عزر جل نے بید خردی ہے کہ این آدم نے اسپینے بھائی کو قتل کردیا اور بید خبر حیس دی مکہ اس نے ممس کیفیستہ ہے قتل کیا اور نہ رسول اللہ بیچیز نے اس کیفیت کا بیان فرمایا' سوچمیں اٹنائی بھین رکمنا جا ہے جتنا رسول اللہ بیچیز نے بتلایا ہے۔(جامع البیان 'جزام میں جہ میں مطبوعہ علواللہ کو 'جردت ' 10 میں)

ہر نیک اور بد کام کے ایجاد کرنے والوں کو بعد والوں کے عمل سے حصہ ملار ہتا ہے

ام اس سے پہلے بیان کر بچے میں کے رسول اللہ موجور نے فرملاجس محض کو بھی قال کتی کیاجائے گا تو اس کے خون (کے مناه) کاایک حصہ پہلے این آدم پر مو کا کیو تک وہ پہلا مخص ہے جس نے قبل کو انجاد کیا۔ اس صدیث سے یہ واضح ہو آ ہے کہ جو مخض کمی برائی کاموجد ہو تو قیامت تک ہی برائی کرنے والوں کے گناہ میں اس کابھی حصہ ہوگا'ای طرح شیطان وہ پہلا مخض ہے جس نے اللہ تعالی کی نافر مانی کی۔ حضرت آدم پر حسد کیااور اللہ کے سامنے تکبر کیا اور قیامت تک نافر مانی کرنے والوں اور حسد اور سكم كرف والول كم كتابول من شيطان كالبحي صد موكا اى طرح بو مخص وين من كمى بد مت سيد كو تكاف بي راختیوں نے محلبہ کو پرا کہنے اور مائم کرنے کو ایجاد کیااور اس کو دین میں داخل کر نیااور کار نواب قرار دیا ان کا بھی میں حال ہے نور جس نے اسلام میں تمی اجھے اور پہندیدہ طریقہ کی ابتداء کی او قیامت تک اس نیک کام کرنے والوں کی نیکیوں میں اس کا حصد ہوگا۔ جسے حضرت عمر رویٹی نے و مضان کی تمام راتوں میں پاجماعت تراوی کی ابتداء کی اور اس میں قرآن مجید پر حوالے کا ا متمام كيا- حعرت عنان فني جويز يخ جعد ك دن خطيب ك سائن دى جلة وال اذان بي بيل لوكول كو سنفبه كرا ي كي لي ا یک اور اذان کا اضافہ کیا۔ حضرت عمرین حبد العزیز نے مسجد میں محراب بنانے کی ابتداء کی۔ عجاج بن یوسف نے قرآن مجید پر اعراب مکائے۔ موجہ محفل میلاد کی ابتداء اریل کے باد شاہ ابو سید متفرمتونی - ۱۲۰ ھے کی 'اور ازانوں کے بعد نبی صلی اللہ علیہ د آلہ و ملم پر صلوۃ و ملام پڑھنے کی ابتداء ملاعدہ میں سلطان صلاح الدین ابوالتطفر یوسف بن ابوب کے امرے ہوئی۔ اس ہے يهك ايك يوثله كربهانج رملام يزها جا آخة السيلام على الامام النظاهر-ملطان ابوالتلغرف يرسليله موقوف كرايا لور نبی مرتب پر صلوة وسلام پڑھنے کے طرحتہ کو شروع کرایاں علامہ سلامی علامہ ابن جرکی علامہ علاء الدین مسکنی علامہ مطلوی اور شای نے اس کو بد مت معند قرار دیا۔ یہ تمام نکی کے کام بیں اور جرنکی ایجاد کرنے والوں کو قیامت تک کی جانے وال نيكون اور جريراني ايولوكرف والف كوقيامت تك كى جاف والى يراتيون عن الماليا حمد ملارع كالمعديث عن ب

المام مسلم بن تجلن قصيدى متوفى الالعدود ايت كري يون

حضرت جرین عبدالله جوائد بیان کرتے ہیں کہ وسول الله بین بین کے فرایا جس نے اسلام میں نیک طریقہ ایجاد کیا اور اس کے بعد اس کی ایس کے ایمان کی جس اس کے بعد اس طریقہ پاکھیا 'اس کے لیے بھی اس پر عمل کرتے والوں کی حش اجر تکھاجائے گا اور ان کے اجروں ہیں سے کوئی کی نمیں ہوگی اور اس کے بین اس کے لیے بھی اس پر عمل کیا کیا 'اس کے لیے بھی اس پر عمل کیا گیا 'اس کے لیے بھی اس پر عمل کرنے والوں کی مشین ہوگی۔ عمل کرنے والوں کی مشین ہوگی۔

المنج مسلم "ع" وتم الحديث: ١٦٤٣ ما ١٦٤٠ سنن ابوداؤد" وتم الحديث: ١٩٠٩ سنن تروى وقم الحديث ١٩٨٣ سنن ابن ابد " ع" وقم الحديث: ١٠٤٧ موطاللم بالك وقم الحديث: ١٠٥٠ مند احر" عهد وقم الحديث: ١٥٥٠ عه وقم الحديث: ١٩٥٥ من "تحقيق احر شاكر اسنن دارى "ع" وقم الحديث وحده)

غزالم احمد من منيل متوني ١١١ه دوايت كرت بين

معرت ابوالدرداء وجن بیان کرتے میں کہ وسول اللہ جن کے یہ کویہ ضیعت کی جمعے تم پر جس جز کا سب سے زیادہ فوف ہے اور محمراء کرنے واسلے ائر ہیں۔

استدامی موسام طبع قدیم ورت علام ایر شاکر نے کہ اس مدعث کی مند میج ب مند اور متحقیق اور شاکر عدار قر الحدیث: ۵۸ سند ۲ مطبور وار الحدیث کابرو)

آئی مربرائی کی ابتداء کرنے والے کو بعد کے عمل کرنے والوں کی حق کنا اس وقت ہوگا جب وہ اس گنا ہے قبدنہ
کرے اور اگر دہ اس گناہ سے قبد کرلے قواللہ بخشے والا مربان ہے۔ حضرت آدم علیہ انسلام پر بید اعتراض ضیں ہوگا کہ انہوں نے اللہ تعالیٰ کے منع کرنے کے باوجود انسانوں عی ہے سب سے پہلے اللہ تعالیٰ کی حکم عدولی کی کی قرآن مجید نے فود شاوت دک ہے کہ حضرت آدم علیہ المسانام بحول کے تور شاوت میں ہوگا کہ عرصا" (طربان اللہ اس کے باوجود حضرت آدم علیہ انسلام نے توب کرلی تھی اور بحولے والے اور قوب کرنے والے سے کی نافر بالیٰ کا قصد نہیں بایا اس کے باوجود حضرت آدم علیہ انسلام نے توب کرلی تھی اور بحولے والے اور قوب کرنے والے سے موافظ و نسمی ہو آلہ البتدا حضرت آدم علیہ انسلام سب سے پہلے قب کرنے والے جی اور بعد کے آئیوں کے عمل سے ان کو حصد ما اللہ تا حضرت آدم علیہ انسلام سب سے پہلے قب کرنے والے جی اور بعد کے آئیوں کے عمل سے ان کو حصد ما اللہ عمل سے ان کو حصد ما ا

اس آیت ہے ہے بھی معلوم ہوا کہ حسد بہت علین نفسانی مرض ہے۔اس حسد کی دجہ ہے بھیل نے ہائیل کے ساتھ خونی رشتہ کالحاظ نہیں کیااور اپنے تکے بھائی کو قتل کردیا۔

الله تعالى كاارشاوي: عراف في ايك كوا بحيادونين كريد رباقا اكدودات وكما كدود كم طرح النه بعالى كالله تعالى كالله تعالى كالله تعالى كالله تعلى ك

قائيل كاانجام

الم این جرم طری متولی داست روایت کرتے ہیں:

ضحاک بیان کرتے ہیں کہ حضرت این عباس رضی اللہ عنمانے فرایا قائل ایل کو ایک جراب (چری تعبیلا) ہیں ڈال کر ایک سال تک اپنے کا سے پر اٹھائے بجر آرہا اور اس کی سجھ میں نہیں آ رہا تھا کا اس لائی ہے کس طرح گلو خلاصی حاصل کرے 'حق کہ اللہ تعالی نے ایک کوا بھیجا جو زمین کرید رہا تھا' بھراس نے ذمین میں اس مردہ کو سے کو دفن کر دیا۔ تب اس سے کہا

طِيانُ القر أنْ

جلدموم

علامد ابوعيدالله قرطبي ماكل متوفى ١٧٨ مد لكسة بين

قائل کا پچتانا اس کی قربہ نمیں تھی۔ ایک قول یہ ہے کہ وہ اس پر افسوس کر رہا تھاکہ اس کے وفن کرنے کے طریقہ کو منیں جان سکا تھا اس کے قبل پر بلوم ہو آتو یہ ندامت منیں جان سکا تھا اس کے قبل پر بلوم ہو آتو یہ ندامت قبل سر جاتی وہ اس کے قبل پر بلوم ہو آتو یہ ندامت قبل وہ اتی وہ اس وجہ سے بلوم تھا کہ اس قبل سے اس کو کوئی فائدہ قسمیں ہوا' ماں باپ' بمن اور بھائی ناراض ہوئے اور مقدود مامل نہ ہوا' یا اس وجہ سے کہ ایک مثل تک بھائی کی لاش و فرن نہ ہو سکی۔

روایت ہے کہ حضرت آوم اور حوام بائل کی قبرر مکے اور کی دن تک روتے رہے 'چرقائل ایک بہاڑ کی چوٹی پر کیا 'وہاں ایک بٹل نے اس کو سینکو ہار کر بچے گراویا اور وہ مرکیا۔ ایک روائت یہ ہے کہ حضرت آوم علیہ السائم نے اس کے خلاف دعاکی' اورہ زمین میں دھنس محیال ایک قول یہ ہے کہ وہ بائل کو قتل کرنے کے بعد جنگلوں میں چلا کیا 'وہ کمی جانور کو بائندی ہے زمین پر گرا دیتا اور اس کے مرنے کے بعد اس کو کھالیتا' چوٹ کھانے ہے مرا ہوا جانور اس دن سے حرام کردیا کیا۔

تعرب ابن عباس نے فرمایا بنو آدم میں ے سب ملے جتم میں جائے والا قائل ہے۔اس ظاہر آبت سے یہ معلوم بو آئے کہ بنو آدم میں بو مخص سب سے پہلے فوت ہوا وہ اپنیل تھا۔ای وجہ سے قائل اس کے دفن کرتے کے طریقہ کو نہیں جان سکا۔

(الجامع لا حكام القرآن عج من عده مطبوعه داد الفكو عبردت 100 ماه)

ان آیات ے معلوم ہواکہ حد سب ہیں قرالی اور بہت یوا جرم ہے۔ قائل نے اس حدی آگ کی وجہ ہے اپنے بھل ایما کو قل کرویا۔ (آیت ۲۹۹) یس ہے اپنی نے قائل ہے کہ اور تو جہندوں سے ہو جائے اور یہ ظائموں کی سزا ہے اس سے معلوم ہواکہ قائل معذب ہوگا۔ لیکن سمجے یہ یہ خالم تھا کافر نہیں تھا۔ آئے ۲۵ میں ایما نے قائل کو آئی سے معلوم ہواکہ قائل معذب ہوگا۔ لیکن سمجے یہ وہ اللہ سے کہ وہ اللہ سے اور نے والے بیں مانی یہ کہ قبل کرنے ہے پہلے اور قبل کرنے ہے باز رہنے کے تین محرکات بیان کے اول یہ کہ وہ اللہ سے اور وہ دو زخ کا سزاوار ہو اور عالمت یہ کہ وہ قلم کرنا نہیں جا ہے۔ سوجو محض ہی کی گناہ ہے اور بار میا ہے۔ سوجو محض ہی کی گناہ ہے اور بار میا ہے۔ اور قبل کی سرااور ارتاب قلم ہے بجا۔

مِن اَجُلِ ذَٰلِكَ اَكُتُنَاعَلَى بَنِي إِسُرَاءِيْلَ اَنَّهُ مَنَ اللهِ مِن اَجُلِ اَنَّهُ مَنَ اللهِ مِن اللهِ اللهُ ال

قَتُلَ النَّاسَ جَمِيعًا وُمَنَ احْيَاهَا فَكَأَنَّمَا آخْيَا النَّاسَ

کر ۔ تن کی اوجی ہے کی شن کر ہے ہے ایا و گریا ای نے تا ان اوں کو

غيان القر أن علد وم

ان وگرن کے جنوں سے نماز سو جان کوگر امتر بهبت میخشهٔ دالا سبب رم فرفت والایک الله تعالى كاار شادي: اى دج مي من يوامرايك ير الدواك يس فيس في الغيربان كريد كوالغيروان میں قساد پھیلانے کے من فض کو علی کیا او کو یا اس نے جام انسان کو کل کیا اور جس نے می فض کو مرف سے بھالیا و کویا اس من تمام انسانون كو بحاليا _ (الماعمد ١٠٠٠) آ یات سابغنہ سے مناسبت اس آعت پر سروال ہو آے کہ قائل اور بائل کے تعدیمی اور بنو امرا کیل پر قصاص کے وجوب یم کیا مناسبت ہے؟ اس كا يواب يد ب كر قائل اور إيل ك قصد يد معلوم بواك كل ك قتل عن الله تعالى ك شديد افرال اور اس كى نارانسكى بديزاس تعد عد معلوم بواك قل كرا والادوزي بالتعمل الحداد والاب اور ويجتان والاب أوج كلد قَلْ كرنان فرايوں كاسب ب اس في الله تعلق في امراكل م كل من تعالى (بدل فين) كو واجب كردوا " اكر اوك قل کرنے ہے باز رہیں۔ بهیان القر آن جلدسوم

۲۲

اس آیت پردو مراسوال یہ ہو آے کہ بنوا مراکش ہے کہا امتوں پر جی قل کرنا ترام تھااور ان پر قصاص واجب تھا۔ پر اس آیت میں بنوا مراکش کا خصوصیت ہے کیل ذکر کیا گیاہے؟ اس کا بواب یہ ہے کہ پہلی امتوں میں ان کے انبیاء علیم الملام زبان وجوب قصاص کا ذکر فرمائے ہے اور بنوا اس اکیل میں سب ہے پہلے اس حکم کو کرکب میں بازل کیا گیا۔ دو مری وجہ یہ ہے کہ قاتل نے باکل کو حدد کی دجہ ہے قبل کیا تھا اور بنوا مراکش میں جی حدد بہت زیادہ تھا اور انہوں نے بہتر قبل حدد کی بناہ پر کے تھا۔ انہوں نے دہتر قبل حدد کی بناہ پر کے تھا۔ انہوں نے حدد کی دجہ ہے مید ماجھ رہیں کی نیوے کا افکار کیا اور وو مرجہ آپ کو قبل کرنے کی ماذش کی۔ ایک مرجہ برند میں دجہ آپ ہو قبل کرنے کی ماذش کی۔ ایک مرجہ برند انہا ہے میں دجہ ایک میں دب آپ ہو قبل ایک مسلمان کی دب وصول کرنے کے سلماند میں گئے تھے اور دو مری مرجہ خبر میں دب ایک سرا کی میں میں بب بدورجہ اتم موجود تھا جن کہ انہوں نے متورد انبیاء علیم المنام کو بھی قبل کرنے ہے دریخ نہیں کیا۔

ایک انسان کو قبل کرناتمام انسانوں کے قبل کے برایر کس طرح ہوگا؟

اس آیت یل یہ فرمایا ہے کہ جس نے بغیر قصاص یا بغیر ذہین ہیں قساد کے قبل کیا اس کی دجہ یہ ہے کہ قبل کرنے کی گئی
د جو المت ہوتی ہیں۔ ایک وجہ تصاص ہے اور مری دجہ کسی کافر کا مسلمان سے بٹک کرنا ہے اسمیری دجہ ارتواد ہے اچو تھی وجہ شادی شدہ کا زنا کرنا ہے اور پانچویں دجہ بھنی شادی شدہ کا زنا کرنا ہے اور پانچویں دجہ بھنی شادی شدہ کا اس آیت میں صراحتا زکر ہے اور پانچویں دجہ بھنی ذاکہ ڈالنا ہے۔ پہلی دجہ کا اس آیت میں صراحتا زکر ہے اور پانچویں دجہ بھنی ذاکہ ڈالنا ہے۔ پہلی دجہ کا اس آیت میں قساد پھیلانے کے ضمن میں آ
دُناکہ کا اس آیت کے بعد والے حصہ میں تضمیلی بیان آ رہا ہے۔ باتی مائدہ تھی وجو ہات ذمین میں قساد پھیلانے کے ضمن میں آ
کئیں۔ اس لیے فرمایا جس نے بغیر تصاص یا بغیر زمین میں فساد پھیلانے کے قبل کیا تو گویا اس نے تمام افسانوں کو قبل کریا تھا میں اس آیت پر میہ سوال ہے کہ ایک افسان کو قبل کرنا تمام افسانوں کو قبل کرنا تھا میں کرنا تمام افسانوں کو قبل کرنا تمام کرنا تمام کرنا تمام کرنا تھا میں کرنا تمام کرنا تھا میں کرنا تمام کرنا تمام کرنا تمام کرنا تھا میں کرنا تمام کرنا تمام

س ایک انسان کے قبل کو تمام انسانوں کے قبل کے ساتھ تشبید دی گئی ہے۔

تما'یا دریا میں ڈوپ رہاتھا'یا بھوک سے مرز ہاتھا'یا شدید مردی میں تلفم کر مرنے والا تھااور کسی افسان نے اس کو اس معیبت سے نکال کراس کی جان پچالی' تو اللہ کے نزدیک اس کی ہے نیکی اتن مظیم ہے جسے کسی مخص نے تمام افسانوں کو موت کے چنگل ہے آزاد کرالیا ہو۔

الله تعالى كاار شاوے: "اور جو اوك الله اور اس كے رسول ہے جنگ كرتے ميں اور ذهن ميں واكو الے بين ان كى بحل كرتے ميں اور دهن ميں واكو الله بين ان كى بحل مرا ہے كہ ان كو چن چن كر قتل كيا جائے يا ان كو سول دى جائے يا ان كے باتھ ايك جانب ہے اور چيردو مرى جانب ہے كات ديئے جائمي يا ان كو (اپنے وطن كى) زهن ہے انكل ديا جائے" كات ديئے جائمي يا ان كو (اپنے وطن كى) زهن ہے انكل ديا جائے"

الم مسلم بن حجاج قشيد ي متول ١٠٠١ مد روايت كري من

حفرت انس بن الک بھیز بیان کرتے ہیں کہ عرینہ کے کچھ لوگ رسول اللہ بھیج کے پاس میند آئے انہیں وہاں کی آب وہوا موافق نہیں آئی رسول اللہ بھیج نے ان سے قربایا آگر تم جاہوتو صدقہ کی او تشخیرں کی جا گاہ جی جاؤ اور ان کا دودھ اور چیشاب ہو انہوں نے ای طرح کیا اور تند رست ہو گئے۔ پھر انہوں نے او تول کے چروابوں پر حملہ کیا اور ان کو قتل کر دیا اور دین اسلام سے مرقہ ہو گئے اور رسول اللہ بھیج کے اون لے کر بھاگ گئے 'ٹی پھیج بھی ہو آب نے ان کے اور دین اسلام سے مرقہ ہو گئے اور رسول اللہ بھیج کے اور دین اسلام سے مرقہ ہو گئے اور رسول اللہ بھیج کے اون لے کو بھاگ گئے 'ٹی پھیج بھی ہو آب نے ان کے اور دین اسلام سے مرقب ہو گئے کر لایا گیا۔ آپ نے این کے باتھوں اور بیروں کو گؤا دیا اور ان کی آ تھوں جس کرم ممالئیاں تھاقب جس اور ان کو جسمیا 'ان کو پیج کر لایا گیا۔ آپ نے گئی وہ مرکئے۔

المحيح مسلم" رقم الحديث: اسمام مسجح البخاري" رقم الديث المصام من ترزي " رقم الحديث: ١٢ سنن ابوداؤد" رقم الحديث: ١٣٩٧، سنن نسائي " رقم الحديث: ٣٠١٣) سنن ابن ماجه " رقم الحديث ٢٥٧٨ مند احمد " ج٣ " رقم الحديث: ١٩٣٠ ١٠٠)

امام رازی شافعی نے ای آبت کی تغییر میں جار قول ذکر کے ہیں۔ پہلا قول ہے کہ یہ آبت عد انسین کے بارے میں بازل ہوئی۔ دو سرا قول ہے ہے کہ بیر ابو برزہ اسلمی کی قوم کے متعلق بازل ہوئی ہے۔ اس کار سول انڈ بیجیج ہے معلم ہ تھا 'لوگوں نے ان کو قل کر دیا اور ان کالل لوٹ لیا۔ تیسرا قول ہے ہے کہ بیہ آبت ہو اسرا کیل کے قا کموں اور مضعوں کے بارے میں بازل ہوئی ہے 'اور چوتھا قول ہے کہ بیہ آبت مسلمان ڈاکوؤں کے بارے میں بازل ہوئی ہے 'اور اکثر فقرائے اسلام کا بمی نظریہ ہے اور اس کے جوت میں حسب ذیل دلائل ہی نظریہ ہے اور اس کے جوت میں حسب ذیل دلائل ہی ۔

(الله) مرتد کو قبل کرنا زین بین فساد کرنے اور اللہ اور رسول سے جنگ کرنے پر سوقوف نمیں ہے 'جبکہ اس آیت کا نقاضا یہ ہے کہ جو مخص اللہ اور رسول سے جنگ کرے اور زبین میں فساد کرے 'اس کو قبل کیا جائے گا۔ دری میں ترک اللہ اور الذین کا محد اور زبین میں فساد کرے اس کو قبل کیا جائے گا۔

(ب) مرتد کے پاتھ اور پاؤں کا محے اور اس کو شریدر کرنے پر اقتصار کرنا کانی نہیں ہے ' جبکہ اس آیت کی روہے یہ جائز ۔۔

(ن) مرتد کو سولی پر چر مطامشروع نمیں ہے 'اس ہے معلوم ہواکہ یہ آبت مرقد کے ماتھ خاص نمیں ہے۔
(د) اس آبت کا تقاضایہ ہے کہ جو لوگ بھی اللہ اور اس کے رسول ہے جنگ کرتے ہوں اور زیمن میں فساد کرتے ہوں 'ان
کو یہ سزا کمی وی جا کمی۔ خواہ وہ لوگ کا فر ہوں یا مسلمان ' زیادہ سے کما جا سکتا ہے کہ یہ آبت کھار کے بارے میں نازل
ہوئی ہے ' لیکن اہل علم ہے مختی نمیں کہ اختیار عموم الفاظ کا ہو تاہے ' خصوصیت مورد کا نمیں ہوتا۔

(تغير كير عمام ١٣٩٧ مطبوعه داد الفكو أبيروت ١٣٩٨ هـ)

۳۲

حرابه (ۋاكە) كالغوى معنى

علامہ زبیدی لکھتے ہیں 'حرب کا معنی ہے جگف ملے کی ضد 'اور حرب کا معنی ہے کسی انسان کا سار امال اوٹ لیما اور اس کو بالکل جمی دست چھو فردھا۔

(كاج العروس اجس اس ١٩٩١)

ڈاکہ کی اصطلاحی تعری<u>ف</u>

۔ ڈاکٹروپر زمیلی لکھتے ہیں 'بافیوں اور محار بین (ڈاکوئر) میں فرق یہ ہے کہ بافی نمی تکویل سے حکومت کے خلاف جنگ کرتے ہیں اور ڈاکو بغیر کمی تکویل کے قتل اور غارت کری کرتے ہیں۔

نقداء احدیف نے جابہ (زاکر) کی تعریف کو سرقہ (چوری) کی تعریف کے ساتھ لائن کردیا ہے۔ کیو تک ڈاکہ برای چوری ہے' محریہ مطاقاً چوری نمیں ہے' کیو تک خفیہ طریقہ ہے کسی چیز کو لیما چوری کملا آئے۔ چور ' محافظ 'امام یا مالک ہے چسپ کر کوئی چیز لیما ہے اور ڈاکو اعلانیہ مار وحا ڈکر کے نوفا ہے 'اس لیے ڈاکہ کا ضرو چوری ہے ذیادہ ہے۔ یی وجہ ہے کہ ڈاکہ کی سزائمی چوری سے زیادہ رکھی مجی ہے۔

ڈاکو (قاطع اللریق یا محارب) ہروہ مسلمان یا ذی مخص ہے جس کی جان ڈاکہ ڈالنے ہے پہلے محفوظ اور ہامون ہو اور ثنتماء کا اس پر انتاق ہے کہ جس مخص نے قتل کیا اور بالی او تا اس پر حد قائم کرنا واجب ہے اور ولی متعقل کے معاف کر دسینے اور لوٹا ہوا بال واپس کر دسینے ہے اس کی حد ماقلہ نہیں ہوگی اور ڈاکہ جراس فنل کو کہتے ہیں اجس جس اس طریقہ ہے مال کو لوٹا جائے کہ عاد تا اس بال کو بچانا مشکل ہو۔ (الفقہ الاسلامی واوالہ منتقل ہو اس ۱۹۸۸)

واكه كا ركن

ملک العلماء علامہ کامانی حتلی تھتے ہیں کہ ڈاکہ کا رکن بیہ ہے کہ کوئی فض غلبہ سے مسافروں کامال نوٹے کے لیے اس طرح نظے کہ مسافروں کااس راستہ پر سفر کرنا مشکل ہو جائے۔ خواہ ڈاکہ ڈالنے والا ایک فرد ہو یا جماعت 'جبکہ ڈاکو کے پاس ڈاکہ ڈالنے کی قوت ہو' خواہ اس کے پاس جتھیار ہوں یالا تھی یا اینٹ یا پھر ہوں 'کونکہ ان بس سے ہر چیز کے ساتھ ڈاکہ ڈاما جا سکتا ہے'خواہ سب حملہ کریں یا بعض حملہ کریں اور بعض معلون ہوں۔

اس سے معلوم ہوگیا کہ ڈاکو اس فردیا گروہ کو کتے ہیں جس کے پاس ایسی قوت ہو جس کا مقابلہ کرنا مسافروں کے لیے مشکل ہو اور وہ اپنی قوت ہو جس کا مقابلہ کرنا مسافروں کے لیے مشکل ہو اور وہ اپنی قوت سے مسافروں کا مال لوشنے کا قصد کریں۔ (بدائع الصنائع ' بینے اس ۱۹۰۵ ڈاکہ کی شرائط

كك العلماء علامه كاساني حنى في أكد كي حسب ذيل شرائط بيان كي جي:

١٠ وَأَلَدُ وَاللَّهِ وَالمَاقَلُ اور بالغ مو- أكروه يجديا مجنون ب تواس عدماتها موجات كي-

۱۰۰ واکو موہو اگر عورت نے واکہ والا ہے تو اس پر معر نہیں ہے انکین الم طولوی کے زدیک اس میں عورت اور مرد برابر میں اور دونوں پر مد ہوگی۔ روایت مشہورہ کی وجہ یہ ہے کہ غلبہ سے مال او نتاعاد تا عور توں سے متعبور نہیں ہے اور الم طحاد ک کی دلیل یہ ہے کہ جس طرح باتی مدود میں مردوں کی تخصیص نہیں ہے اعور توں پر بھی مد جاری ہوتی ہے۔ اس طرح واک میں میں مردوں کی تخصیص نہیں ہوگی۔

۳- جن بر ڈاکہ ڈالا ہے ' وہ مسلمان یا ذی ہوں 'اگر ان فیرمسلموں پر ڈاکہ ڈالا ہے جو پاسپورٹ کے ذریعہ وارالاساؤم میں

آئے اول او ڈاکوول پر مدنسی ب (بلکہ تعزیر ب)

ا- جن ير ذاك والاستهده والكودل كم عرم تد اول-

۵۔ جس چیز پر ڈاک ڈالا کیا ہے وہ قیت والا الی ہو اور محفوظ ہو اس میں کمی اور کاحق نہ ہو 'نہ اس میں لینے کی کوئی آبویل ہو
اور نہ آبویل کاکوئی شہر ہو 'نہ اس میں ڈاکو کی طلبت ہونہ طلبت کی آبویل یا شید ہو اور وہ مل دس در ہم کی بالیت سے کم نہ ہو (ایسیٰ
۱۶۲۴ تولہ جاندی ہوجو ۱۳۲۸ کرام جاندی کے برابر ہے) اگر متعدد ڈاکو ہوں تو ہر ڈاکو کے حصہ دس در ہم کی بالیت کابل ہو اور ہر
ڈاکو کے حصہ میں انکابل نہ آئے تو حد واجب دس ہوگ۔

۱۰ جس جگہ زاک ڈالا گیا ہے 'وہ جگہ دارالاسلام ہو'اگر دارالحرب میں ڈاکہ ڈالا ہے تو صد داجب نہیں ہوگ۔ کیونک مدکو حاکم اسلام جاری کر آہے اور دارالحرب حاکم اسلام کی دلائت اور تصرف میں نہیں ہے۔ اس لیے وہ دارالحرب میں مد جاری کرنے پر قاور نہیں ہے۔ (علامہ کامانی نے جو وجہ بیان کی ہے 'اس سے صاف کا ہر ہو آئے کہ مسلمانوں کے لیے یہ جائز نہیں ہے کہ وہ دارالحرب می جاکرڈاکہ ڈٹی اور اوٹ مار کریں اور یہ کہ ناجائز طریق ہے کھار کا مل ایرا بسر صال گرناوہ نوادان کا مل سود کے ذریعہ لیں یا تمار کے یار شوعت کے۔ (معیدی شفرانہ)

جس جگہ ڈاکہ ڈالا کیا ہے' وہ جگہ شرنہ ہو۔ اگر کمی نے شرجی ڈاک ڈالا ہے آئی پر صدواجب نہیں ہوگی۔ خواہ دن شی ڈاکہ ڈالا ہو یا ہفیہ بتھیاروں کے ذرایہ ڈاک ڈالا ہو یا ہفیہ بتھیاروں کے' یہ استمسان ہے اور سی امام ابو ضیفہ اور امام ابو ضیفہ اور امام ابو ہو سف کا قول ہے۔ آیاس کی امام ابو ہو سف کا قول ہے۔ آیاس کی امام ابو ہو سف کا قول ہے۔ آیاس کی دجہ یہ ہے کہ حدواجب ہوگی۔ خواہ شرجی ڈاک ڈالا ہو اور استحمان دجہ یہ ہے کہ حدواجب ہوئے کا سب ڈاک ہے اور جب ڈاک ٹابت ہوگیاتو حدواجب ہوگی۔ خواہ شرجی ڈاک ڈالا ہو اور استحمان کی دجہ یہ ہے کہ قطع اطریق (ڈاکہ) سفرجی می متحقق ہو سکتا ہے۔ شہرجی داستے منتقطع نہیں ہوتے کیو کہ اگر شہرجی ڈاک پڑے تواس ہے کہ امام ابو صنیفہ نے غیر شہر کی قید اپنے زمانہ کے اعتباد ہے دگائی ہے۔ شہرے دائو دس کی اور اپ کی کے دائم اور سے سملے دہے ہے 'اس لے ڈاکو دُس کو شہرجی ڈاکہ ڈاکنے کی قددت نہیں تھی اور اپ کی دکہ اس زمانہ جس ڈاکہ ڈاکے نے مدواجب ہوگی۔

۸۔ جس مجکہ ڈاک ڈالا ہے اس مجکہ اور شرکے در میان مسافت سنر ہو (یعنی اُکٹید میل چو سو چالیس مُن ہے اہم ابو متیغہ اور امام محرکے قول پر شرط ہے۔ امام ابو یوسٹ کے نزدیک ہے شرط عمیں ہے۔

واکہ کے جرم کی تعصیل

ڈاکو کی سزاؤں میں ائمہ کا اختلاف ہے۔ آیا یہ سزائمی جرم کی توعیت کے اعتباد سے مختلف میں یا یہ قامنی کی صوابہ یہ پ موقوف میں 'ڈاکو کے جرم کے اختلاف کی تنسیل حسب ذہل ہے:

١٠ صرف لوكون يا سافرون كوؤرانا وردهمكا المي كو قتل كرنائد مل لوثلا

٢- مرف بل لوغله ٣- مرف قل كرنامه ١٠ مل لوغااور قل كرنام

ان میں سے ہر جرم کی ائمہ کے زدیک ایک الگ مزاہے۔ اہم مالک کا نظریہ یہ ہے کہ اگر ڈاکونے قبل نہیں کیا ہے تو قاضی عمل اور بھانسی کی مزامی سے کوئی بھی مزااہے اجتمادے دے سکتاہے۔ اس کی مزاقتی ہمی ہو سکتی ہے اور قبل اور بھانسی بھی ہو سکتی ہے۔ ان مزاوی میں قاضی کو اختیاد ہے اور باقی مزاوی میں اس کو اختیاد نہیں ہے۔ اور فیرمقلدین کا یہ نظریہ ہے کہ ڈاکو کا جو بھی جرم ہو 'قرآن مجید کی بیان کروہ مزاوی میں سے قاضی اسے اجتمادے کوئی بھی مزادے سکتے۔ نداہب اربعہ کی روشنی میں ڈاکو کے صرف ڈرانے کی سزا

بیب ڈاکو صرف ڈرائے اور دھمکاے ' نہ مال اوٹے اور نہ قل کریے تو امام احمد دغیرہ کے نزدیک اس کی سزاشرید ر کرتا ہے' کیونک اللہ تعالی فرما آئے ہاویہ بینے وامس الارض "یاان کوشرید ر کردیا جائے"

علامہ موفی الدین ابن قدامہ طبلی قلعے ہیں جب واکو راستہ جی وُرا کی اور دھمکا کیں 'نہ فل کریں اور نہ ہال ہو ٹی توان کو زشن سے نکال دیا جائے گا کیو تک اللہ قدائی فرما تا ہے او بسفوا من الارض (اکدہ ۱۳۳) اس طاحت میں جاا وطن کرنا محترت ابن عباس سے مودی ہے اور اللہ کا اللہ وار عطاء شراسان کا قول ہے اور زشن سے نکالئے کا معنی ہے کہ ان کو قام شہوں اور قصبوں سے نکال دیا جائے اور ان کے لیے کمی شمر میں دہنے کا ٹھکانانہ ہو۔ اس طرح کی تغییر حسن اور زبری سے مردی ہے اور حضرت ابن عباس سے یہ روایت ہے کہ اس کو آئی گو شہر در کیا جاتا ہے۔ اور حضرت ابن عباس سے یہ روایت ہے کہ اس کو آئی کہ شہر میں اس کو جیمیا جائے 'اس عبل کا آئی سے کہ جس شمر میں اس کو جیمیا جائے 'اس عبل اس کو قید کر دیا جائے' اس طرح زائی کے متعلق ان کا قول ہے۔ امام ابو طبقہ نے فرایا اس کو ذھن سے نکالئے کا مطلب ہے کہ اس کو قید کر لیا جائے' کہ وہ دو قیا ہے کہ ان کو قید کر ایا جائے' کہ متعلق ان کا قول ہے۔ اور ایک قول ہے۔ کو تکہ اضول نے کہا کہ اس مورت میں ایم اس کو تعزیر لگا تے اور اگر کی رائے وال کو گور کر نام والوں کو مقدرت ابن عباس سے ایک دوایت ہے۔ ابن شرح کے کہا ڈاکوؤں کو ان کے شہر کے علاوہ کی اور شرعی جمیمی گو وہ شرعی تید کر دے۔ یہ قول امام مالک سے قول کی مقل ہے اور یہ زبادہ محترب کی تکہ آگر ان کو کمی اور شرعی جمیمی گو وہ شرعی تید کر دے۔ یہ قول امام مالک سے قول کی مقل ہے اور یہ زبادہ محترب کی تکہ آگر ان کو کمی اور شرعی جمیمی گو وہ دراں جاکر ڈاک ڈائی گرائی گوری کی اور شرعی جمیمی گور وہ دراں جاکر ڈاک ڈائی گرائی گوری کی اور شرعی جمیمی گور وہ دراں جاکر ڈاک ڈائی گرائی گرائی گوری کو اور اور کی مقبل ہے۔ اس لیے ان کو قید کر خاب ہے۔

نیز علامہ موفق الدین ابن قدامہ منبلی لگھتے ہیں "ہماری دلیل طاہر آیت ہے کو نکہ کنی کامعنی نکالنا وور کرنااور بھگانا ہے اور قیر کامعنی روکنا ہے۔ اگر ان کو کمی فیر معین جگہ کی طرف نکل دیا جائے تو اس کی دلیل "او یسعوا میں الارض " (المائدہ اس) ہے "کیونکہ اس آیت کامعنی ہے کہ ان کو تمام زمینوں سے نکال دیا جائے 'باتی ہمارے امتحاب نے یہ نمیں لکھا کہ اسے کمتنی مدت کے لیے شہر در کرنا جاہیے جس میں اس کی تو یہ ظاہر ہو جائے اور اس کا جال جہاں تھی اس کی تو یہ ظاہر ہو جائے اور اس کا جال جہاں تھیک بوجائے اور اس

(المغني مع الشرح الكبير عن وامس ٢٠٥٨- ٢٠٠)

علامہ ابو بحررازی بصاص حتی اس مسئلہ پر بحث کرتے ہوئے لکھتے ہیں وَ بین سے نکالنے کی تین صور تیں ہیں۔ ایک بید کہ ڈاکو مخام زمینوں اسے نکال دیا جائے۔

دوسرى يدكد جس شري اس في ذاكد ذالا مو و إلى س فكل ديا جائد تيسرى مورت يد ب كداس كودار الاسلام س فكل ديا جائد

پہلی صورت مراولینائی لیے سیح نہیں ہے کہ قمام ذمینوں ہے نکل دینائی صورت میں متعور ہو سکتاہے جب اس کو قل کر دیا جائے اور قل کرنے کا ذکر اس آبت میں پہلے آپا کہ ہے۔ دو سری صورت اس لیے سیح نہیں ہے کہ آگر ڈاکو کو دو سرے شمر کی طرف نکائیں سے تو وہ وہ اس جا کر ڈاک ڈاٹ کا کو دلوگوں کو ضرد بنتیائے گا کو در تیمری صورت اس لیے سیح نہیں ہے کہ مسلمانوں کو دارائحرب میں جبیجتا سیح نہیں ہے۔ لی شاہدت ہواکہ یمان نفی من الار من کامعتی ہے کہ اس کو قمام ذمینوں سے نکال کراس ذمین میں دکھا جائے جس میں اس کو قمام ذمینوں سے نکال کراس ذمین میں دکھا جائے جس میں اس کو قدر کیا جائے جس پر اس کا فسلو کر یا متعور نہ ہو۔ دادکام القرآن 'ج مام میں ہوں)

مش الائمه سرخی حتی تلعے ہیں کہ جب ڈاکو صرف راستہ ہیں ڈرائیں اور دھمکائیں نہ گل کریں اور نہ مال اوشی قوان کو تقریر نگلے کے بعد اس وقت تک قید ہیں رکھا جائے گا جب تک کہ وہ توج نہ کرلیں اور انڈ کے قول "او بند غوا من الارض " ہے بھی ہی مراو ہے یعنی ان کو قید کرلیا جائے۔ اس کو ہم پہلے بیان کر بچکے ہیں۔ (علامہ سرخی نے پہلے یہ بیان کیا ہے کہ جس فض نے قبل کرنا ہائی ہیر کانا انتہائی ہے کہ جس فض نے قبل کرنا ہائی ہیر کانا انتہائی سے کہ جس فض نے قبل کرنا ہائی مرف ڈرایا اور وحمکایا یا اس نے معصیت کا ارادہ کیا اور قبل کرنا ہائی ہیر کانا انتہائی سرائیں تیں اور جس فض نے سعصیت کا صرف ارادہ کیا ہوائی کو یہ سزائیں تیں دی جائیں گی جس فرج پر ری ہیں چور ی کا صرف ارادہ کرنا ہائی ہیں گا جائی ہیں گا جس کا مرف ارادہ کرنا کی وجہ ہے اس کے ہائی ہی مرف ڈرانے کی وجہ ہے اس کے ہائی ہیر نمیں کا این کی جائی ہی مرف ڈرانے کی وجہ ہے اس کے ہائی ہیر نمیں کا این کی مرف ڈرانے کی وجہ ہے اس کے ہائی ہی شرف ہو اس کی جائی ہیں گا دیا گا کہ ان کو ہم جگہ ہے بھگا دیا گا۔ اس کو ہم جگہ ہے بھگا دیا جس کی شربیت میں نظیرے اور جس چیز کی شربیت میں نظیرے اور جس چیز کی شربیت میں نظیر ہو اس پر عمل کرنا اس کی ہر نبست بہتر جس کی شربیت میں نظیرے ہائی ہو ایس کہ جس کی شربیت میں نظیرے ہائی ہو اس پر عمل کرنا اس کی ہر نبست بہتر ہو جس کی شربیت میں نظیرے ہائی ہو اس پر عمل کرنا اس کی ہر نبست بہتر ہو جس کی شربیت میں نظیر نہ ہو۔ الب ہو المی ہو المیں کی شربیت میں نظیرت بھی نظیر نے ہائی ہو اس کرنا ہی کرنے ہائی کرنا ہی شربیت کی شربیت میں نظیرت بھی نظیر نہ ہو۔ المیں میں میں کہ شربیت میں نظیرت ہو ۔ المیں کا اس کی میں میں کا میں کیا گا کہ اس کرنا ہی کہ کا میں کا میں کا میں کی شربیت میں نظیر کیا ہی کا میں کا میں کی شربیت میں نظیر کیا ہیں کی شربیت میں نظیر کی شربیت میں نظیر کی شربیت کی شربیت میں نظیر کیا گیا کہ کا میں کی شربیت کی شربیت کی شربیت میں نظیر کی شربیت کی شربیت کی شربیت کی کرنا ہی کی شربیت کی سربیت کی شربیت کی شربیت کی سربیت کی کرنا کی کرنا کی کرنا ہی کی سربیت کی سربیت کی کرنا ہی کی کرنا

يراب اربعه كى روشنى مين ۋاكوك صرف مال لوشع كى مزا

اگر ڈاکو نے صرف مال لوج ہو اور قبل نہ کیا ہو تو اہم ابو سنید "اہم شافعی اور اہام مالک کے زویک ڈاکو کا ہاتھ اور ایک ہیر سلے جانب سے کاٹ دیا جائے گا۔ اس کا ایک ہاتھ اور اللہ ہیر سلے جانب سے کاٹ دیا جائے گا۔ اس کا ہاتھ اور اللہ ہیر اقدر کیا جائے گا اور اگر اس کا ہاتھ کا ہوا تھ کا ہوا تھ تو اب اس کا ہاتھ اور ایم ہاتھ کا جائے گا اس کو تعزیر اقدر کیا جائے گا اور اگر اس کا پہلے ایک ہاتھ کا ہوا تھ تو اب صرف ہیر گانا جائے گا۔ اس کو تعزیر اقدر کیا جائے گا۔ یہ تھم اہم ابو صنیفہ اور اہم الحد کے زویک ہے صرف ہیر گانا جائے گا۔ یہ تھم اہم ابو صنیفہ اور اہم الحد کے زویک ہوا اور اہم مالک کے زویک ہوا تھا تو اب مورت میں اہم کو افتریار ہے کہ وہ ڈاکو کو قبل کروے یا سولی دے۔ یا مخالف جانب سے اس کے ہاتھ اور اہم مالک کے زود یک اس کے ہاتھ اور اہم مالک دے زود یک اس کے ہاتھ اور اہم مالک دے۔ البتہ اس صورت میں اس کو شرور کرنے یا تید کرنے کا افتریار نہیں ہے۔

الم شافعي كے زريك بھي دوباره ذاك ذاك إلى يراس كے بقيه بائد اور بير كو كان ويا جائے كا

قاضی ابن رشد ماکلی لکھتے ہیں کہ جب ڈاکو مال نوٹے اور عمل نہ کرے تو امام کو اے قید یا شرید رکرنے کا اعتبار نسیں ہے۔ البتہ ڈاس کو یہ اعتبار ہے کہ دواس کو قتل کرے یا سول دے یا مخالف جانب ہے اس کے ہاتھ اور پیر کاٹ دے۔ ماری سمجن سراکل لکھتے ہیں کے اللہ اس سے سر ان کے ایس ان کے ایس کے باتھ اور پیر کاٹ دے۔

علامہ محنون ماکلی لکھتے ہیں کہ امام ابن قاسم نے کما ہے کہ امام مالک نے فرمایا کہ جس ڈاکو کا ایک ہاتھ اور پیر کا ناجا چکا ہے'' اور وہ وہ ہارہ ڈاکہ ڈاسلے تو امام کو افتریار ہے کہ وہ اس کارو سرا ہاتھ اور پیر بھی کاٹ دے۔(برایہ البتد 'ج ۴ مس

ملک العلماء علامہ کاسانی حتی لکھتے ہیں "جس ڈاکو نے مل لیا ہو اور حمل نہ کیا ہو اس کا ہاتھ اور پیر خالف جانب سے کاٺ ریا جائے گا"۔ (یدائع الصنائع عند مس منہ)

علامہ کی بن شرف نووی شافعی لکھتے ہیں "اگر ڈاکو نے چوری کے نسلب کے مطابق مل لیا ہو تو اس کارایاں ہاتھ اور بلیاں پیر کاٹ دیا جائے گااور اگر وہ دوبارہ ڈاک ڈالے تو اس کا پایاں ہاتھ اور دایاں پیر کلٹ دیا جائے گااور اگر نصاب سے کم مال لیا تو اس کے ہاتھ اور پیر کو نسیں کانا جائے گا"۔(رونمۃ الطیابیون 'ج ۱۰ میدہ)

نداہب اربعہ کی روشنی میں ڈاکو کے قتل کرنے اور مال لوشنے کی مزا

ملک العلماء علامہ کلمانی حنی لکھتے ہیں جس ڈاکو نے مل لوٹااور قبل کیا'اس کے متعلق ایام ابو مغیفہ جہیز فرماتے ہیں ایام کو اختیار ہے اگر دہ جاہے قواس کا باتھ اور پیر کلٹ دے 'مجراس کو قبل کردے یا سولی دے دے اور اگر جاہے تواس کا باتھ اور ہیر نہ کانے اور اس کو قبل کرے یا سولی دے دے۔ اور ایک قول ہے ہے کہ وہ قبلتے اور قبل کو اس طرح جمع کرے کہ وہ اس کا باتھ اور

بير كلث دے " بحراس جكد كوداغ ندلكائے يونى چيو ژوست احتى كدوه مرجائے ابدائع اصنائع اجدام ١٩٣٠ علامه ابوالحن مرفینانی حنی لکھتے ہیں کہ امام محد نے یہ کماہے کہ ذاکو کو قتل کیا جائے یا سول دی جائے اور اس کا ہاتھ اور ہیر

الميس كانا جائے كالى كى كلديد ايك جرم ب اس سے دو مديں واجب اسي موں كى - نيز الل سے كم مزا تحل مي داخل مو جاتى ب جيماك مد سرق مدرجم يس داخل موجاتي ب- (مثلاً كى في جورى بحى كى موفور زنابحى كياموتواس كو صرف رجم كياجائ كا اور اس کا ہاتھ شیں کا جائے گا---- سعیدی غفرار) اہم ابو ضیغہ اور اہم ابو بوسف کی دلیل سے ہے کہ ہاتھ اور پیر کا تنااور محل کرنا ایک سزاے اور چو تک واک کا جرم زیادہ ہے اس کے اس کی سزائمی زیادہ ہے کیونکہ جو واکو تو کو ل کر آہے اور ان کابل اونا ہے وہ اس میں ظل وال ہے۔ میں وجہ ہے کہ واک میں باتھ اور پیردولوں کاٹنا ایک مدے جبکہ چوری میں دولوں کو کاٹنادو سزائي جي اور المام محدة جو مدرجم اور مدسرق كي مثل دي ب وبال دو مدول كو ايك دو مرع بن داخل كياكيا ب اور يمال ايك مد مى بحث و رى ب- الم ابويوسف ، ايك روايت يه ب كد سولي من اختيار نسي ب اس كو ترك ندكيا ملے کو نک اس کی قرآن مجیدیں تفریح ہے اور مقعودیہ ہے کہ اس سزاکو شرت دی جائے " اک دو مرے مبرت مجزیں اور ام او منینہ کی جانب سے جواب یہ ہے کہ اصل شہت تل سے حاصل مو جاتی ہے اور سولی پر چ ملتے میں مباعث ہے المذااس عل القيار وإجائ كد إدار اولين اص اسهن)

علامہ معنون مالکی کلیتے ہیں میں نے امام ابن قاسم مالکی ہے ہو چمااکر ڈاکو محل کرے اور مل لے مؤکیا اس کا پاتھ اور بیر کانا جائے گا'اور اس کو قتل کیا جائے گا' یا اس کو صرف تحل کیا جائے گا' اور اس کا اِتحد اور پر تسیس کانا جائے گا؟ اس می اہم مالک کاکیا تول ہے؟ الم ابن قاسم نے قربایاس کو برصورت میں قتل کیا جائے گا۔ (خواہ قامنی کی رائے میں اس کا باتھ اور پر کاٹنا ضروری ہو

يانه عو)-(الدونة الكبرى عيه ص ٢٠١٩)

علامد يكيٰ بن شرف نودى شافعي لكيج بين أكر واكونے قل كيااور مل لياقواس كو قبل كياجائے كااور اس كوسول دى جائے گی'اور بیراس وقت ہے جب بل نسلب کے برابر ہواور غرب س ہے۔ابن سلہ کا قول یہ ہے کہ اس کا ہاتھ اور پیر کا ثا جائے گا' اور کئی کیا جائے اور اس کو سول دی جائے گی اور صاحب تقریب نے کماکہ اس کا ہاتھ اور پیر کانا جائے گااور قتل کیا جائے گااور سولى نهيروى جائي كروف الطالبين عواص عدا-101)

علامہ ابوالقاسم فرتی منبلی لکھتے ہیں "جس ڈاکونے قل کیالور مل لیا" اس کو عمل کیا جائے گلہ خواہ صاحب مل معاف کر دے اور اس کو سولی دی جائے گی حتی کد اس کی شہرت ہو جائے اور اس کی لاش ڈاکوؤں کے حوالے کردی جائے گی۔

(المقنع مع المغني والشرح مع ١٠٠ م ٢٩٩)

الله تعالى كاار شاوي: "يه ان كے ليے ونامي رسوائي ب اور آخرت ميں ان كے ليے برا عذاب ب اموا ان نوكوں كے جنبوں نے تمهارے ان ير قابر پانے سے پہلے توبر كرلى موجان اوك الله بهت بخشے والداور بهت رحم فرمانے والد ب" (الماكرة الإحاد ١١٠)

حدود کے کفارہ ہونے میں نقهاء احناف اور نقهاء ما لکیہ کا نظریہ

اس آیت میں یہ تصریح ہے کہ ونیا میں سزایانے کے بعد بھی مجرموں کو آخرت میں عذاب مظیم ہوگا'البتہ ابولوگ تو یہ کر لیں گے ان کو آخرت میں عذاب نمیں ہو گا۔ نقہاء احتاف نے ای آیت کے پیش نظریہ کما ہے کہ صدود بغیر توبہ کے کفارہ نمیں ہوتی اور صدیث میں جو ہے کہ صدود کفارہ ہوتی ہیں 'وہ توبہ کے ساتھ مقید ہے ' آ کہ قرآن مجید اور صدیث شریف میں موافقت

-4-1

علامہ ابو بحر بصاص حنی متوتی مصد نے لکھا ہے کہ فقہاہ احتاف کے نزدیک مطلقاً حدود کفارہ نہیں ہوتیں ہی آگر مسلمان جمرم اجراء حد سے پہلے توبہ کر لے تو بجر حد اس کے لیے اخروی عذاب سے کفارہ ہو جاتی ہے اور اگر اس نے اجراء حد سے پہلے توبہ نہیں کی تو وہ عذاب اخروی کامسختی ہوگا۔ (احکام القرآن ج ۲ اص ۱۳۵ مطبور الاہور) علامہ قرطی ماکی متوتی ۱۹۷۸ ہے نے لکھا ہے کہ امام الک کا بھی ہی خرب ہے۔

(الجامع لاحكام الخرآن ع ٣٠٠٥ م ١٠٠١ مطبوعه داد الفكو أبيروت)

صدود کے کفارہ ہونے میں فقهاء شافعیہ کا نظریہ اور احتاف کاجواب علمہ یکی بن شرف نودی شافعی حونی ایجادہ لکھتے ہیں:

جس مخص نے محمی مناه کا او تکاب کیا ' پھر اس پر صد انگادی منی تو وہ صد اس کے مناه کا کفارہ ہو جاتی ہے۔

(شرح مسلم اج ۱ من ۲ مسلور كراجي)

الم شافعی کا ستوال اس مدیث ہے۔ ایم محدین اسائیل بھاری متوفی ان اور دو ایت کرتے ہیں:
صفرت عبادہ بن صاحت بوٹن بدری محانی ہیں اور دو شب مقب کے تقباہ جی ہے وہ بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ علی ایک دمجابہ کی ایک جماعت بیٹنی ہوئی تھی۔ آپ نے فرایا تم بھے ہے (ان امور پر) بیعت کرد کہ تم اللہ کے مائیہ کسی کو شرک نمیں کو گئے اور نہ تم چوری کرد گئے اور نہ تم زنا کرد گے اور نہ تم افراد کو فل کرد گئے اور نہ تم کسی بہ قصور پر بستان بائد مو کے اور نہ تم خوری کرد گئے اور نہ تم کسی بہ قصور پر بستان بائد مو کے اور نہ تم خوری کرد گئے۔ مو تم جی ہے جو مخص اس مد کو پورا کرے گااس کا اجراللہ کے ذمہ (کرم بستان بائد مو کے اور نہ کسی خوالی کرد گئے۔ مو تم جی ہے جو مخص اس مد کو پورا کرے گئااس کا جراللہ کے ذمہ (کرم بستان بائد مو جسم کے اور جس کے اور جس کے اور جس کے اور جس کر ایا اور اس کو دنیا جس اس کی مزامل گئی تو وہ مزااس کا کفارہ ہے "اور جس کے ان جسم کو ان ایم کر لیا 'اور اس کو دنیا جس اس کی مزامل گئی تو وہ مزااس کا کفارہ ہے "اور جس کے ان جسم کو گن (ممنوع) کام کر لیا 'اور اس کو دنیا جس اس کی مزامل گئی تو وہ مزااس کا کفارہ ہے "اور جس کے ان جسم کو گن (ممنوع) کام کر لیا 'کردور کھاتو وہ اللہ کی طرف مفوض ہے۔ اگر وہ جائے تو اس کو مغالب تو اس کی مزامل میں کو مغالب تو اس کی مزامل میں تو تا کر وہ جائے تو اس کو مغالب تو اس کو مغالب مور کی اور تسم کی اور تر اس کو مغالب کی طرف مفوض ہے۔ اگر وہ جائے تو اس کو مغالب تو اس کو مغالب مور کی اس کر بی تو تا کر اس کو دو جائے تو اس کو مغالب تو اس کو مغالب مور کی اس کر بی تا کر گ

(صحیح البخاری و قم الحدیث: ۱۸ میمیمی مسلم و قم الحدیث: ۱۸ ۵ ۳۲۸۱ سنن ترزی و قم الحدیث: ۱۳۳۳ سنن زیالی و قم الحدیث: ۱۵۲۳ سنن این ماجه و قم الحدیث: ۱۳۳۳ سند احمد عیمه و قم الحدیث: ۱۳۷۵ سند حمیدی و قم الحدیث: ۳۸۷ سنن داری و

ج٢٠ رقم المعند ١٣٠١)

مانلا شماب الدین احمد بن علی بن جمر عسقل فی شافعی متوفی عدیده قلعتے ہیں: اس حدیث سے میہ مستقلا ہو آ ہے کہ حد قائم کرنا مجرم کے گناہ کا کفارہ ہے۔ خواہ اس نے تو بہند کی ہو۔ (افع الباری مجامع المعام مطبوعہ لا ہور)

علامہ عمادالدین منعورین الحن الرقی افکازروٹی الشافعی المتونی ۱۸ میں لکھتے ہیں:
اگر یہ اختراض کیاجائے کہ اہم نووی نے اپنے فقوی اور شرح میجے مسلم میں یہ فکھا ہے کہ جب کوئی فخص قصاص میں قتل کردیا جائے تو اس سے افزوی عذاب ماقط ہو جاتا ہے۔ تو اس خخص کے دیا میں رسوائی اور آفزت میں عذاب محقیم کس طرح ہوگا؟ تو ہم ہیں گے کہ ڈاکو جب قصاص میں قتل کردیا جائے تو اس سے قتل کا گناہ ماقط ہو جاتا ہے اور مسلمانوں کی جماعت کو ضرر پنچتا ہے 'سواس کو جماعت کو ضرر پنچتا ہے 'سواس کو جماعت کو ضرر پنچتا ہے 'سواس کو جماعت کو فردانے 'و حمکانے کا گناہ اس کے ذمہ باتی رہتا ہے۔ کو تک اس سے مسلمانوں کی جماعت کو ضرر پنچتا ہے 'سواس کو ڈرانے کی وجہ سے آفرت میں عذاب محقیم ہوگا کا ورب مزا ہر ڈاکو کے لیے عام ہے۔ لیکن یہ امر حدیث مسلم کے خلاف ہے 'جس

طِيان القر آن

یں بڑی بڑی ہے فرایا جس نے کسی جرم کاار تکاب کیااور اس کو اس جرم کی سزادے دی گئی تو اس کے لیے ہ فرت ہیں ہے سزا
کفارہ او جائے گئی گیونکہ اس سے یہ معلوم ہو تا ہے کہ آگر ڈاکو نے فقظ ڈرایا و حمکایااور اس کو سزا کے طور پر جلاوطن کردیا گیا تو
اس کو آفرت ہی عذاب نمیں ہوگا لیکن آیت اس پر دالات کرتی ہے کہ اس کو آفرت ہی عذاب ہوگا اور اس مدے کی توجیہ
میں یہ کما جا سکتا ہے کہ سزا لینے سے وہ عذاب ساقط ہو جائے گاجس کا تعلق اللہ کے حق سے سب اور ہندہ کا حق باتی رہے گااور
اس کی آفرت میں سزا ہوگی کیونکہ جس ڈاکو نے لوگوں کو ڈرایا و حمکایا اس نے اللہ کی تھم عدول بھی کی اور بندوں کو بھی تقصان
میں عذاب ہوگا۔ (حافیۃ الکازرونی خل البیضاوی میں موسل میں مولی موسل موسل میں ہوگی۔ سواس بنا پر آخرت
میں عذاب ہوگا۔ (حافیۃ الکازرونی خل البیضاوی میں موسل میں موسل میں جو اس بنا پر آخرت

علامہ کازرونی نے نمایت عمدہ توجیر کی ہے "لیکن فضاء شافعیہ کا زبب یہ ہے کہ حد جاری ہونے کے بعد مطلقاً عذاب نمیں ہوگا جیسا کہ ہم علامہ نووی اور علامہ عسقال ہے نقل کر پیکے ہیں۔

علامه زين الدين ابن تجيم معرى حنى متوفى ١٥٥٠ الم شافلى ير رد كرت موسة لكسة بين:

علاہ کا اس میں اختلاف ہے کہ صد جاری ہونے کے بعد توب کے بغیر آیا کوئی ہمنس کنا ہے پاک ہو جا آ ہے یا نہیں؟ ہارے علاہ کا فد ہم ہے ہے کہ گناہوں سے پاک کرنا مد کے انگام میں ہے نہیں جب ایک محض پر مد قائم کی گئی اور اس نے توبہ نہیں کی 'قر ہماوے نزدیک اس سے وہ گناہ ساتھ نہیں ہوگا۔ ہمارے علاء نے قرآن مجید میں قطاع الفر بی آئے ہی آئے۔ پر عمل کیا ہے 'کو فکہ الله تعالی نے قرایا دلک لے مدا سے مطلب الاالمدیس ناہوا یہ ان (ڈاکوئل) کے لیے ونیا کی رسوائی ہے اور آخرت میں ان کے لیے عذاب مظیم ہے 'کاسواان نوگوں کے جنہوں نے توبہ کرئی الله نفل نے آخرت کے عذاب کو توبہ سے ماتھ نہیں ہوتی۔ اور وہ جو بخاری کی روایت میں ہے کہ جس محض نے ان میں ہوتی۔ اس لیے یہ استثناء عذاب آئے تحت می کی طرف راجع ہے 'اور وہ جو بخاری کی روایت میں ہے کہ جس محض نے ان میں ہوتی کی گناہ وہ ہے 'تو اس مورت پر محول کرناواجب ہے 'جب اس گناہ کیا اور اس کو ونیا میں مزادے وی گئی تو وہ اس کا کافادہ ہے ''تو اس مورت پر محول کرناواجب ' بہت اس کے مزاک کو وقت توبہ کرئی ہو 'کو کہ مورت پر محول کرناواجب ' بہت اس کے موائی کرناواجب ' بہت کرناواجب ' بہت اس کے موائی کرناواجب ' بہت کرناواجب ' بہت اس کے موائی کرناواجب ' بہت کرناواجب ' بہت کرناواجب ' بہت کرناواجب ' بہت کہ کرناواجب ' بہت کرناواجب کرناواجب کرناواجب ' بہت کرناواجب ک

(البحرالرائق ج٥ مى ١٠-٢ معلومه ملي عليه المعر ١١٣١١ه)

حدود کے کفارہ ہونے میں فقهاء حنبلیہ کا نظریہ

علامه ابوالغرج عبد الرحن بن على القرشي الجوزي الحنيل المتوفى ١٥٥٠ لكيمة بين

مسلمان ڈاکوؤں کی مزامی اختلاف ہے۔ ہمارے اسماب کا ندہب یہ ہے کہ توبہ کرنے ہے اللہ کی مدود ساتط ہو جاتی ہیں مثلاً قبل کرنا سولی دینا ہو جاتی ہوں گئی انسان کے حقوق توبہ ہے ساتط مثلاً قبل کرنا سولی دینا ہوتھ ہیر کائنا اور شریدر کرنا۔ توبہ کے بعد یہ مدود ماقذ نہیں ہوں گی اکین انسان کے حقوق توبہ ہے ساتط نہیں ہوں گے مثلاً مثل اوٹا ہے تو واپس لیا جائے گا اور کمی کو زخمی کیا ہے تو اس کو بھی زخمی کیا جائے گا اور کمی ام شافعی کا تول ہے۔

(زاد المسيرج ٢٠٠٥ مع ٢٠٠٠ مطبويه كمتب اسلامي بيروت ٤٠٠١٥ ما

علامه ماور دی شافعی متوفی ۵۰ مهد نے بھی الم شافعی کامی ند مب بیان کیا ہے۔

(النكت والعيون ج٢٠ ص ٣٠ مطبوعه دار الكتب العلميد بيروت)

علامه موفق الدين عبدالله بن احربن قدامه منبلي متوفى • ١٠ ه الكفت بين:

اگر ڈاکوؤں نے پکڑے جانے سے پہلے تو۔ کرئی تو ان ہے اللہ کی صدود ساتھ جو جا کیں گی لیکن اگر انہوں نے کسی کو حمل کیا

ب یازخی کیا ہے یا مال اوٹا ہے توان سے برلد لیاجائے گا' ماسواس کے کہ صاحب حق اس کو معاف کروے۔

اس مئلہ میں تھی کا اختلاف نمیں ہے۔ اہم مالک اہم شافعی امحاب رائے (نقهاء احناف) اور ابوثور کا بھی میں زہب ہے اس دجہ سے ڈاکووں سے حتی قتل سول اچھ بیر کاشے اور شریدر کرنے کی مد ساتھ ہو جائے گی اور ان رقتل کرنے ' ذخی كرف اور مال اوف كابدله ليا جائ كااور أكر انهول في كاف عاف كر بعد توب ك به وان ب كوئى مد ماقط نهي وكى كيونك الله تعالى تے قربايا ہے ماسوا ان لوكوں كے جنهوں فے تممارے ان كو كاڑتے سے يسلے توبدكر ل- المائدہ: ٣٠١) سو كاڑے جائے والول پر اللہ تعالی نے مدواجب کردی۔

(المنتي جهم ١٢٩ مطبوعه داو الفكو بيروت ٥٠١١٠٥)

صدود کے کفارہ ہونے کے متعلق دو صدیثوں میں تطبیق

ہم اس ہے پہلے کتب محاح کے حوالے ہے حضرت عبادہ بن الصاحت جوہٹی کی مید روایت بیان کر پہلے ہیں کہ جب بحرم پر مدلکاری جائے ' تو دواس کے جرم کا کفارہ ہو جاتی ہے ' سیکن ایک روایت اس کے خلاف ہے۔

الم ابوعيدالله محرين مبدالله حاكم نيشايوري متونى ٥٠ مهد روايت كرتي بين:

حطرت ابو جريره جائي مان كرتے يس كدرسول الله علي اخرالي من (ازخود) تسي جانا كد تع ني تھ يا نسين اور مين از خود شیں جاتا کہ ذوالقریمن ٹی تھے یا نہیں اور میں از خود نہیں جاتا کہ صدود ان کے اصحاب کے لیے کفارہ ہیں یا نہیں۔ یہ حدیث الم بخاری اور الم مسلم کی شرط کے مطابق معے ہے اور جھے اس کی حمی علمت (ضعف) کا پاکسیں اور الم بخاری اور المام مسلم نے اس کوروایت تیس کیا۔(الم والی فالم مائم کی موافقت کی ہے)

(السندرك ج ام ١٣٧ مطبوعه دار الباز " كمه كرمه "سنن كبرى لليمتي "ج ٨ من ٣٢٩ كمان)

اس تعارض کا ایک جواب بر ہے کہ معرت عمادہ بن الصامت کی مدعث معرت ابو مررہ کی مدعث سے زیادہ سمج ہے ا اس کے ان میں کوئی تخار من جیں ہے۔ دو سراجواب یہ ہے کہ حضرت ابد بربرہ کی روایت جس میں ند کور ہے ، جھے پانسیں صدور کفارہ ہیں یا نسیں۔ یہ پہلے کا واقعہ ہے۔ کو تک معرت ہو ہریرہ سات ہجری میں تھے خیبر کے وقت اسلام لائے تھے 'اور معزت عبارہ بن الصامت کی حدیث جس میں زرکورہ ہے حدود کفارہ ہوتی ہیں 'یہ بعد کا واقعہ ہے 'کیونکہ یہ بیعت فتح مکہ کے بعد ل مئی تھی۔ کیونکہ امام مسلم نے اس کے بعد دو سری مدیث (رقم الحدیث: ۱۵۳۸۸)جو ذکر کی ہے اس میں ہے کہ رسول اللہ جھیر نے يم رودون كي آيت عاوت كي "ان لايسوكس بالله شيف" (المتحد ١١٠) اور مجم طراني من تقريح مي رسول الله الله نے ہم سے اس طرح بیت لی جس طرح فقے کمہ کے موقع پر بیت لی تھی۔ اس سے واضح ہو کیا کہ معرت ابو ہر رہ کی مدیث مقدم ہے اور معزت عبادہ بن الصامت کی مدیث مو تر ہے۔ نیزا تمبراجواب یہ ہے کہ معزت عبادہ ہے جب مقبد اولی کے موقع پر آپ نے بیعت لی تھی اس وقت تو صدود ٹازل بی تنمیں ہوئی تھیں۔اس لیے آپ کاید فرماناجس پر صد جاری ہو گئی وہ اس كاكفاره ب اس موقع كانسيس موسكك لا كالداية فتح كمد كے بعد كاواقعه ب بب آپ نے ووسرى مرتبه بيعت لي تقي-خلاصہ یہ ہے کہ حضرت ابو ہربرہ کی روایت جس میں نہ کور ہے جھے پتا نہیں صدود کفارہ میں یا نہیں؟ پہلے کا واقعہ ہے اور بعد میں آب كوالله في علم عطا قرماديا أور آب في قربايا مدود كفاره ين العني بشرط توبه)

اشرسے ورد اور اس کی بارگاہ می (جانت) وسلے "لاش کرد ، سے مخاسف سے سینے وہ وال چیزول کو فدرس مسے دیل کھود افدین ال تولیس کیا جائے کا اور ال سے ا الد وہ ایں سے نہیں حل عیں ہے ن ادر این اسلام کرنی تو میک اخراس کی تور برل فراستے ، التوميهات بخطفة والله بصعدتم فريك والله بص والسد تخاطب ي آيسة فهيس جانا كريانا بشر تمام أمما في الارزمييزل كا اللربى كاسبته وہ ہے جاہے خراب دیاسے الدیجے جا۔ غيان القر أن

ڰؙڵؚٞۺؙؽٙ؞ۭػؘڔؽؙڒۘ۞

04 000 1

المثر تعالی کاارشادہ: "اے اعلیٰ والواللہ ہے ڈرواور اس کی بار کام می (تجات کا)وسیلہ علاق کرو"۔(الح))
(انما ترہ: ۵۳)

آیات سابقہ سے مناسبت

اس سے پہلے متعدد آبات میں اللہ تعالی نے بیود کی سرکٹی اور عناد اور اللہ کی نافر باتی کرنے پر ان کی جسارت اور دیدہ دلیری کو بیان فربایا تھا۔ اللہ کے اطاعت اور عبادت کرنے ہے ان کے بعد اور دوری کا ذکر فربایا تھا۔ اللہ کے قرب کا وسیلہ اور ذریعہ اس کے فوق سے گناہوں کا قرب کا تاور عبادات کا بھالانا ہے مسلمانوں کو مسلمانوں

دومری وجہ میرے کہ اس سے پہلے ذکر فرایا تھا کہ یمود کتے تھے کہ ہم اللہ کے بیٹے اور اس کے محبوب ہیں اور اپنے باپ وادا کے اعمال پر فخر کرتے تھے۔ اللہ تعالی نے مسلمانوں کو ہتایا کہ حمیس اپنے اکابر اور اسلاف پر فخر کرنے کے بجائے نیک اعمال میں کو شش کرتی جا ہے۔ اور عباوات کے ذریعہ اس کے قریب اور نجات کے وسیلہ کو علاش کرنا جا ہے۔

تیری وجدید بے کہ اس سے مصل آیت میں اللہ تعالی نے توب کا ذکر فربایا تھا اور فربایا توافک اللہ بہت بخشے والا اور برا مہان ہے اور اس آیت میں اللہ تعالی نے یہ رہنمائی فربائی ہے کہ قبولیت توب کے لیے اس کی بار کاہ میں وسیلہ حلاش کرو۔ وسیلہ بد معنی ڈر ابعیہ تقریب

علامد حسين بن محدر اخب اسلمال متوفى مهدم اللية بي

کی چیزی طرف رخمت سے پنجاد سیلہ ہے اور انڈی طرف وسیلہ کی حقیقت یہ ہے کہ علم اور عباوت کے ساتھ اسکے راستہ کی رعایت کرنا اور شریعت پر عمل کرنااور انڈ کاوسیلہ انڈد کا قرب ہے۔(المفروات میں ۱۳۵۳-۱۳۵۰) مطبوعہ ام ان ۱۳۷۴ء) علامہ ابن افیر جزری محولی ۱۴۰۷ مدلکھتے ہیں:

جس چےزے می شے تک رسائی ماصل کی جائے اور اس کا قرب ماصل کیا جائے وو وسیل ہے۔

(تمايه عنه ۵ ممل ۱۸۵ معلموعد امر ان ۱۳۲۳ ه.)

علامد محد بن حرم بن منظور افريق متوفى المده لكية بن:

الم افت علامہ جو ہری نے کما ہے کہ جس جڑے فیر کا تقرب حاصل کیاجائے وہ وسیلہ ہے۔

(محاجة بري عه من ١٨٥٠ سان العرب علام ١٥٠٥ - ٢٢٠ مطيوم ايران ٥٠٠١٥)

انبياء عليم السلام اور اولياء كرام كے وسلمے وعاكاجواز

الم محرين فريزري متوفى ١٨٣٠ أداب وعاض لكست بين:

الله تعالى كى بار كاه من انبياء عليم السلام اور صافعين كاوسيله بيش كري-

(من حمين معه تمنته الذاكرين عمل ١٣٥٠ مطبوعه معلى مصلي البابي واولاده معر ٥٠٠ ١١٥٥)

من ابوالعباس تق الدين احمد بن تعيد متونى ١٩٥٨ مد تليمة بين:

ہم یہ کتے ہیں کہ جب اللہ تعالی ہے وعاکر نے والا یہ کتا ہے کہ میں تھے سے فلاں کے حق اور فلال فرشتے اور انہاء اور
صافحین و فیرهم کے حق میں سوال کرتا ہوں یا فلال کی حرمت اور قلال کی وجاہت کے وسیلہ سے سوال کرتا ہوں تو اس دعا کا نقاشا
یہ ہے کہ اللہ کے نزدیک ان مقربین کی وجاہت ہو اور یہ وعاصح ہے 'کیونکہ اللہ تعالی کے نزدیک ان مقربین کی وجاہت اور
حرمت ہے جس کا نقاضا یہ ہے کہ اللہ تعالی ان کے درجات بلند کرے اور ان کی قدر افزائی کرے اور جب یہ شفاعت کریں تو ان
کی شفاعت آبول کرے سال محل اللہ اللہ تعالی سجانہ نے فربایا ہے کہ اللہ تعالی اجازت کے بغیر کون اس سے شفاعت کر سکا ہے۔
کی شفاعت آبول کرے سالہ کہ اللہ تعالی سجانہ نے فربایا ہے کہ اللہ تعالی اجازت کے بغیر کون اس سے شفاعت کر سکا ہے۔

(فاد بن ابن جمیہ 'جا 'ص ان 'مار ندین عبد اسرین)

ي من على بن محد شو كانى متونى من علم كليد بين:

یہ بھی مکن ہے کہ اللہ تعالی پر سائلین کے موق ہے مرادیہ ہو اجیسا کہ اللہ تعالی نے ان ہے یہ دعدہ فربایا ہے اجمد ہے دعا کرویس تسماری دعاکو قبول کروں گا۔ (تحفتہ الذاکرین اس اللہ مطبوعہ معرامہ جدید) الم ابوطاتم محمدین حبان متوفی ۱۳۵۳ء اپنی سند کے ساتھ روایت کرتے ہیں:

حطرت ام المومنین عائشہ صدیقہ رضی آللہ عنما بیان کرتی ہیں کہ رسول اللہ مجید نے فرمایا چھ (تتم کے) آدمیوں پر میں نے لعنت کی ہے 'اور انن پر اللہ نے لعنت کی ہے اور ہرنی کی دعا تبول کی جائے گی۔ (الحدیث)

ا می این دبان میں اس کی کوئی علت نمیں ہے۔ اور میرے علم میں اس کی کوئی علت نمیں ہے اور میرے علم میں اس کی کوئی علت نمیں ہے اور ذہری نے اس کو پر قرار رکھا۔ المستدرک علی میں میں اس کی برقرار دکھا۔ المستدرک علی میں میں اس کو پر قرار درکھا۔ المستدرک علی میں میں میں المباد المباد

ال مع مدعث مل يد تقرع ب كر برني متبل الدعوات ب-

الله تعالى كى بارگاه مي انجياء عليم السلام كى دجابت ان كى حرمت اور ان كے حق سے مراديہ ہے كه الله تعالى نے انجياء عليم السلام كو الحق بارگاه ميں انجياء عليم السلام كو الحق بارگاه ميں ہے عزت عطا فرمائى ہے كہ وہ ان كے سوال اور ان كى دعاكو مسترد نسي فرما آ مرچند كه وہ اس پر قادر ہے كہ وہ ان كى دعاكو مسترد فرمادے "كين الياكران كو دى ہوئى عزت اور وجابت كے خلاف ہے۔ ان كا الله پر حق ہے اس كا يہ معنى نسي ہے كہ جسے اجركا آجر پر حق ہو آئے "بكر الله تعالى نے اپنے كرم ہے ان كى دعاكو قبول كرنے كاجو ديم وفرما يا ہے اس كا وعدہ كى جست ہے ان كا حق ہو ان كى دعاكو تبول كرنے كاجو ديم وفرما يا ہے اس وعدہ كى جست ہے ان كا حق ہو كى استحقاق نسي ہے " يا حق ہمتی وجاهت اور حربت ہے "استحقاق كے معنى ميں نسي

اس برایک دلیل ند کور الصدر مدیث ہے اور دو سری دلیل به مدیث ہے:

اہم بخاری نے روایت کیا ہے کہ جب بندہ فرائن اواکر کے نوافل کو بیٹ پڑھتا ہے توالقہ اس کو اپنا محبوب بنالیتا ہے اور جب وہ اس کو اپنا محبوب بنالیتا ہے تو اللہ اس کے کان ہو جاتا ہے جس سے وہ شتاہے اس کی آنجمیں ہو جاتا ہے جن سے وہ ریکت ہے 'اور اس کے ہاتھ ہو جاتا ہے جن سے وہ پکڑتا ہے اور اس کے ہیر ہو جاتا ہے جن سے وہ چاتا ہے اگر وہ جھے سے سوال کرے تو جس اس کو ضرور عطا کروں گا اور آگر وہ جھے ہے بناہ طلب کرے تو جس ضرور اس کو اچی بناہ جس کول گا۔ (الحد میٹ) موال کرے تو جس اس کو ضرور عطا کروں گا اور آگر وہ جھے ہیں تا میں میں مزور اس کو اچی بناہ جس کول گا۔ (الحد میٹ ا اتر شاكرا وقم الحديث: ٢٩٠١ مند ايوسل ٤٠٨٤ مع اين حبان وقم الهن شدك ٢٠٠٠ مع الزوائد عن ٢٠١٠ العالب العالب العالب ص ١٠٠٠)

اس صدیت بین بید تقریح بے کہ اللہ تعالی نے اپنے ہردلی اور نبی سے یہ وعدہ فربایا ہے کہ وہ ان کی دعاضرور قبول فرمائے گا' اور ان کی دعارد نہیں فرملنے گا اور ان کا اللہ پر نبی حق ہے' اور نبی ان کی اللہ کی بارگاہ میں وجاہت اور حرمت ہے۔ اس لیے انبیاء اور اولیاء کے وسیلہ سے دعا کرنا' یا ان سے دعا کرنے کی در خواست کرنا صحح ہے' اور اب ہم اس سلسلہ میں اصادیف چیش کرس کے۔

انبیاء علیهم السلام ادر اولیاء کرام کے وسیلہ سے دعاکے متعلق احادیث ام محرین اساعیل بخاری متونی ۲۵۱ مدروایت کرتے ہیں:

حفرت انس بروز بیان کرتے ہیں کہ جب لوگ قط می جلا ہوتے تو حفرت عمر بن العقطاب بروز حفرت عباس بن عبار شکی دعائیا عبد المعلب بروز کے دسلہ سے بارش کی دعا کرتے اور یہ عرض کرتے اسے اللہ اندا ہم اسینے نبی بڑی ہے دسلہ سے بارش کی دعائیا کرتے تھے ' قو' تو ہم پر بارش برسا یا تھا (اب) ہم اپنے نبی کے عم (محترم) کو تیری طرف دسلہ چیش کرتے ہیں ' قو' تو ہم پر ہارش نازل فرملہ حضرت انس نے کما پھر لوگوں پر بارش ہوتی۔

(صحح البخاري من المرعث: ما المسلوم وارالكتب العلمية جودت المسلوم الكبير جا وقم الحديث: ١٨٠٠ كآب الدعاء للعلبواني وقم الحديث ١٤٥٠ شرح الدير للبغوي عن وقر المعصف ١٥٠٠)

المام احمد بن مغيل متوفى الماعد روايت كرت بن

حضرت على بن صنيف جهين بيان كرتے بيل كه ايك باينا عمل في جين كياں آيا اس في بي بين ہے اس اور اگر تم جابوتو من اس آيا الله الله بين الله الله بين الله الله بين الله الله بين الله الله الله بين الله بين

شیخ این تعید الفاظ بین کیانی علامہ نووی اور اہم محد جزری وغیرهم نے اہم ترندی کے حوالے سے اس مدیث کو ذکر کیا ہے اور اس بیں یا محد کے الفاظ بین کیکن ہمیں جو ترندی کے پاکستانی اور بیروت کے تسنے وستیاب بین ان جی یا محر کے الفاظ نہیں یں۔ سنن ترفری کے علادہ ہم نے باتی جن کتب حدیث کے حوالے دیے ہیں اس میں یا محد کے الفاظ ہیں۔ اہام ابو عبداللہ محدین بزید ابن باجہ متوتی سائے مدوایت کرتے ہیں:

حسرت ابوسعید فدری جونی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بچھیج نے قربایا ہو محض اپنے گھرے نماز پڑھنے کے لیے نکلا اور اس نے بید دعاکی اے اللہ اتحد پر ساتھیں کا جو حق ہے ہیں اس کے وسیلہ ہے سوائل کر آبوں اور میرے اس (نماز کے لیے) جانے کا جو حق ہے اس کے وسیلہ ہے سوائل کر آبوں اور بغیرہ کھانے اور سانے کے (محض) جانے کا جو حق ہے اس کے وسیلہ ہے سوائل کر آبوں کی تک اور انزائے اور انزائے اور بغیرہ کھانے اور سانے کے (محض) تھی کے ور اور تیری رضائی طلب میں نکلا ہوں اسویل تھے ہے یہ سوائل کر آبوں کہ قو جنم ہے جھے اپنی پناہ میں رکھنا اور میرسے گناہوں کو بخش دینا اور بلا شبہ تیرے سواکوئی گناہوں کو جنس بخشے گا۔ (سوجو محض یہ دعاکرے گا) اللہ تعالی اس کی طرف متوجہ ہو گااور ستر بڑار فرشتے اس کے استفار کریں ہے۔

اسن این ماجه می اگر مین در می مین می الدم والله لکن النی النی دخم الحدیث ۸۵ التر فیب والترجیب می ۴۲ م ۴۵۳ می ج تزیمه می ۴۵۸ ۴۵۸ علامه احد شاکر نے لکھا ہے کہ اس مدیث کی سند حسن ہے۔ مند احد میں ۱۶ رقم الحدیث ۱۳۹۸) الم احمدین طبیل متوتی ۱۳۴۵ ووایت کرتے ہیں:

عبد الرحمٰن بن برید روایت کرتے ہیں کہ (سیدنا) محد مجھیزے کے اصحاب کو خوب علم تفاکہ حضرت عبداللہ بن مسعود برائزر ان میں سب سے زیادہ قریب اللہ مزوجل کی طرف وسیلہ تھے۔

(سند احد عن من ٥٠٠ و داوالفكو عدد عن طبع قديم علامه احد شاكر موفى ١٥٥ معد في كما اس مدعث كي مند سمح ب مند احد علا ارقم الحديث: ٢٣٠ طبع قابره)

وسيله بدمعني ورجه جنت

علامد ابن اثير جرري متونى ١٠٠ و لكيمة بن

وسیلہ کا ایک معنی بنت کے درجات میں ہے آیک (مخصوص) درجہ ہے جیساکہ حدیث میں ہے۔ (نمایہ اج ۵ م ۱۸۵) امام مسلم بن مجاج قشید می متوفی ۱۲ میں روایت کرتے ہیں:

حضرت عمدافقہ بن عمد بن انعاص رضی اللہ عنما بیان کرتے ہیں کہ عیں سے دسول اللہ بھی کو یہ فرماتے ہوئے ساہ کر بہت م جب تم موذن (کی اذان) کو سنو تو اس کے کلمات کی مشل کمو ' پھر جمعے پر درود پڑھو ' کیو تکہ جس عمض نے ایک مرتبہ جمعے پر ورود پڑھا ' اللہ اس پر دس رخمین بھیج گا۔ پھر میرے لیے وسیلہ کا سوال کر ایک تکہ وسیلہ جنت میں ایک ایسادر جہ ہے جو اللہ کے بندوں می سے صرف ایک بیارہ کو حاصل ہوگا اور جمعے امرید ہے کہ وہ بیاد میں ہوں۔ سوجس فض نے میرے لیے وسیلہ کا سوال کیا 'اس

(مي مسلم ارقم الهرعة: (١٩٨٣) ١٨٠٨ سنى ايوداؤد انها ارقم الهرعة: ١٩٣٥ سنى ترزى ارقم الهرعة: ١٩٣٠ سمي البخارى اجها الهرعة: ١٩٣٠ سنى أرقم الهرعة: ١٩٣٠ سنى أرقم الهرعة: ١٩٣٠ من كبري لليمتى المراقم الهرعة: ١٩٣٨ ١٨٨٨ ١٨٨٨ سنى كبري لليمتى المراقم الهرعة: ١٩٣٨ ١٨٨٨ ١٨٨٨ سنى كبري لليمتى المراقم الهرعة: ١٩٨٨ ١٨٨٨ ١٨٨٨ من كبري لليمتى المراقم الهرعة المراقم الهرعة المراقم الهرعة المراقم الهرعة المراقم ا

المام ابوالقاسم سليمان بن احمد طبراني متوفي ١٠٠٠ مد روايت كرتے جيل:

حضرت ابوالدوداء بوینی بیان کرتے بیل که رسول الله عظیم جب انوان سنتے تو دعاکرتے اسے الله ان و علا اور اس کے بتیج بین کی کری ہونے دائی ماز کے رب ایخ بندے اور اپنے رسول مجھ (بینیج) پر رحمت نازل فرما اور قیامت کے دان جس کی بینی کھڑی ہونے دائل فرما اور قیامت کے دان جس آپ کی شفاعت میں (داخل) کردے "۔ (المجم اللوسلا جس کہ المعین ہے۔ المعادف الریاض کے جماعہ) مافظ البیٹی کھتے ہیں اس مدیث کی شد میں صدقہ بن عبداللہ المعین ہے۔ الم احمد الم منظم وقیرہ نے اس کو ضعیف کما ہے اور دحیم اور ابوحاتم اور احمد بن صافح معمدی نے اس کی توثیق کی ہے۔

(مجمع الزوائد "ج الم ساساس مطبوعه وار الكتاب العربي "بيروت)

مافظ جمل الدين يوسف مزى متونى مومده لكعيدين:

صدقد بن عبدانند الممين كى دوايات المام ترفى المام تسائل اور الما ابن ماجد في استدلال كياب مرجند كه المام احد اور شيخين في اس كو نقد كمل عبدالرحن بن ابرابيم في كما اور شيخين في اس كو نقد كمل عبدالرحن بن ابرابيم في كما عمد قد بمارت شيوخ بين اور ان كى دوايت عي كوئى حن نمين بها احد بين صائح معرى في كما اس كى دوايت صح اور متبول بها و حيم في كما أكر چه به قدريه كى طرف اكل تقا كين دوايت عن صادق تعلد وليد بن مسلم في كما يه ١٩٦٥ عن فوت او كيا تقلد (تروي الكران عن المحد عن فوت المواد الكران عن المران عن المران عن المران عن المران المائة الله المران المائة الله عن المران تقد المران عن المران عن المران المائة الله عن المران المائة الله عن المران المائة الله عن المران المائة الله المران المائة المائ

الم ابوالقاسم سليمان بن احمد طبراني متوني ويسور وايت كرتے بن

حضرت این مباس رمنی اللہ عظما بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ جیجے نے فربایا جس عظم نے ازان س کرید دعا کی "اشعد ان لااللہ الااللہ وحدہ لاشریک له وال محسدا عبدہ ورسولہ"ا الله الاالله وحدہ لاشریک له وال محسدا عبدہ ورسولہ"ا الله الااللہ وحدہ لاشریک له وال محسدا عبدہ ورسولہ"ا الله الااللہ الااللہ الااللہ وحدہ لاشریک له وال محسدا عبدہ ورسولہ"ا الله الااللہ الله الااللہ وحدہ لاشریک لے شفاعت میں اللہ تخصوص ہے اور قیامت کے دن ہم کو آپ کی شفاعت میں داخل کردے موجہ محض ید دعا کرے گائی کے شفاعت واجب ہو جائے گی۔

(المجمّ الكبير عن الرقم الحديث ١٢٥٥٣ الجاس الكبيرج عن قم الحديث: ٢٢١١٨ مرة القارى ع ٥٠ من ١٢١١)

حافظ الهیتمی متوفی ۷۰۸ مده لکھتے ہیں اس مدیث کی سند میں اسمال بن عبداللہ بن کیمان ہے۔ حاکم اور ابن حبان نے اس کو ضعیف قرار دیا ہے۔ اس کے باتی تمام راوی نقتہ ہیں۔ (مجمع الزوائدج) مسموس ۱۳۳۳ مطبور وارالکاب العربی میروت موسور

مافظ جمال الدین ابو المجلع بوسف مزی متوفی ۱۳۱۱ء فے متحدد ائد مدے کے حوالوں سے الحق بن عبداللہ کا ضعف نقل کیائے جمال الدین ابو المحق بن عبداللہ کی صرف ایک صدے متاجہ ورج کی ہے اور المم ابن اور المم ابن البدية الى سنت متاجہ ورج کی ہے اور المم ابن البدية الى سنن عمران عمران من عبداللہ بن عبداللہ بن کیدان ۱۳ معد عمر فوت ہوا تھا۔

(تنذيب الكمال على ١٢- ٥٤ ميزان الاعتدال على ١٣٦٦ تناب الجرح والتعريل عواص ٢٢٨)

. ہم چند کہ بیہ حدیث شعیف ہے 'لیکن نضائل اٹلال میں حدیث شعیف کا عنبار کیا جا آ ہے۔ وعائے از ان کے بعض ویکر کلمات کی تحقیق

اس بحث كافيريس بم أيك اور مدعث بيان كرنا جائي بس بس بس المك لا تمال المسهداد" كاذكرب المام ابو بكراحم بن حسين بيهتي متوفى ٥٨ مه روايت كرتيب:

طِيبارُ القر اَنُ

بڑھیے کو جنت میں وہ مقام عطا قرباجو آپ کے لیے تخصوص ہے اور آپ کو فضیلت عطا قربالور آپ کو اس مقام محدود پر فائز کر جس کا تو سنے دعوہ کیا ہے۔ جس کا تو سنے دعوہ کیا ہے جس کا تو سنے میں میں میاش سے دوایت کیا ہے۔ (سنن کبری جا میں مسمور فشر تاریز)

اس دعاش الموسيلة أور الفضيلة كالعرو الدرحة الرفيعة كاليى ذكر كا ما آب اس كى اصلى مديث

ر المام عبد الرزاق بن جام متوفی الله دروایت کرتے ہیں:

ایوب اور جار جعنی بیان کرتے ہیں کہ جس محض نے اقامت کے وقت کو اسے اللہ اس وعوت بامہ اور اس کے بعد کھڑی ہونے والی نماز کے رب سیدنا محمد جھیر کو جنت میں دو مقام عطا قربا جو آپ کے مماتھ تخصوص ہے اور آپ کے در جات بلند فرما "قراس کے حق میں نی ماتھیں کی شفاعت واجب ہو جائے گی۔

(المعنت مج المح ١٦ ميا ١٦ ميا مطبوعه كتب اسلامي ميروت ١٠٩٠) ٥)

وسيله به معنی مرشد كال

المان اعمال صالحه والعن كى اوائيكى اتباع سنت اور محرمات اور محروبات سے بچا يہ سب چنرس اللہ تعالى تلك تائيخ اور
اس كا قرب عاصل كرنے كا ذريعہ اور وسيلہ بيں اور جس مو صالح اور مرشد كال كے باتھ پر بيعت كركے ايك مسلمان كنابوں
سے نيخے اور نيك كام كرنے كا عمد كر آئے وجو اس كو مسلسل نيكى كى تلقين كر آئے اور اس كى روطانى تربيت كر آئے اس بينے
کے وسيلہ اور قرب البى سكے ذريعہ بيس كس كوشيہ ہو سكتا ہے۔ شاہ ولى الله دولوى قول جيل بيس كسمة بيس كه اس آيت بيس وسيلہ
سے مراو بيعت مرشد ہے۔ اور فيخ اساميل ويلوى متونى اسم عليد كسمة بين،

الل سلوک اس آیت کو راہ حقیقت کے سلوک کی طرف اشارہ کردائے ہیں اور مرشد کو دسلہ سیجھتے ہیں۔ اس بناہ پر حقیقی کامیابی اور مجاہدہ سے پہلے مرشد کو تلاش کرنا ضروری ہے اور اللہ تعالی نے سائکان حقیقت کے لیے مہی قائدہ مقرر کیا ہے ' اس لیے مرشد کی رہنمائی کے بغیراس راہ کا لمناشاؤ دیاد رہے۔(مراہ متنقیم 'افاری)' میں میں مطبور مکتبہ سنفیہ 'لاہور)

اسلام میں زیعت کا تصور ' شیخ طریقت کی شرائلا' بیعت برکت' بیعت اراوت' تهدیلی بیعت'اور تجدید بیعت کا تھم آکیا ہر مخص پر بیعت ہونا فرض ہے' ان تمام منوانات پر ہم نے شرح صحیح مسلم جلد رائع کے اخیر میں تنصیل سے بحث کی ہے۔ جو حضرات ان مماحت دلچیں رکھتے ہوں' وہ اس کا منرور مطاحد فرمائیں۔

الله تعالی کا ارشاد ہے: ب ٹک جن لوگوں نے کفر کیا 'اگر ان کے بعنہ جس روئے زجن کی تمام چیزیں ہوں اور اتن اور بھی ہوں آ کہ قیامت کے دن عذاب سے نجات کے لیے دہ ان چیزوں کو قدید جس دے دیں 'تو وہ (قدید) ان ہے تیول نہیں کیا جائے گا اور ان کے لیے نمایت ور دناک عذاب ہے۔ (المائدید)

آیا اللہ نے کا قرکے کفر کا ارادہ کیا تھایا اس کے ایمان کا؟

الله عن وجل في بتایا ہے كہ جن يموديوں في الله كى ربوبيت كا انكار كيا اور چيزے كى عبادت كى اور جن مشركوں في بول الله عن مركى عنداب سے نيخ كے ليے أكر تمام روئے ذين بول الله الله كا عنداب سے نيخ كے ليے أكر تمام روئے ذين كے براير فديد بھى دے ديں تب بحى ان سے تيول نسي كيا جائے گا بكد الله تعالى ان كو دائما ورو ديے والے عذاب جى جلا كے براير فديد بھى دے ديں تب بحى ان سے تيول نسي كيا جائے گا بكد الله تعالى ان كو دائما ورو ديے والے عذاب جى جلا كى براير فديد دن عذاب بو گااور اى طرح بت يرست كرے كا اس آيت على ان يموديوں كارو فرمايا ہے 'جنوں نے كما قائ بم كو صرف چندون عذاب بو گااور اى طرح بت يرست

طبيان القر أن

کافروں کو عذاب کی وعید ستائی ہے گر تم یہ نہ سمجھ ایٹاکہ تم اپنے آباء واجد او کے وسیلہ سے دوزخ کے وائمی درد دینے والے عذاب سے نیج جاؤ کے۔

المام محدين اساعيل بخاري متوني ٢٥١ه وروايت كرتي بين

معفرت انس بن الله برین بیان کرتے میں کہ نمی جین کے فرایا قیامت کے دن کافرے کما جائے گا' یہ بتاآکر تیم ہاں روست ذیمن بھنا سونا ہو توکیا تو اس کو فدیہ میں دے دے گا؟ وہ کے گا' ہاں ایمراس سے کما جائے گا(دنیا میں) تھے سے اس کی بہ نسبت بست آسان سوال کیا کیا تھا۔ (میمح البحادی' رقم الحدیث دم معمد مسمح مسلم 'متافقین' معد' (۲۸۰۵) ۱۹۵۰)

عافظ احمد بن على بن حجر عسقا اني متونى ١٥٥٠ لكية بين

انی عمران کی روایت میں ہے 'انڈ فرائے گاجس وقت تو آدم کی پشت میں تھا' میں نے تھے ہے اس کی بہ نبعت آسان چیز کا سوال کیا تھا' یہ کہ تو میرے ساتھ شرک نہ کرنا 'محرتو شرک کے بغیر نبیں بانا اور عابت کی روایت میں ہے 'ہم نے تھے ہے اس کی یہ نسبت کم چیز کا سوال کیا تھا۔ پس تو نے نبیس کیا' چراس کو دوڑ تے میں ڈالنے کا تھم دیا جائے گا۔ قاضی عمیاض نے کمااس مدیدے میں اس آیت کی طرف اشارہ ہے:

> وَإِذْ آخَذُ رُبُّكُ مِنْ آبِنَى الدَّمَ مِنْ طُهُورِهِمُ دُّرِيَّنَهُمْ وَآنَهُ لِللَّهُ عَلَى آلْمُسِيهِمْ السَّتُ بِرَبِّكُمُ قَالُوا بَلنَى شَهِدُنَا آنُ نَعُولُوا يَوْمَ الْفَيْمَةُ وَإِنَّا كُنَّاعَلُ هُذَا عَيِلِيْنَ.

اور بادیجے جب آپ کے رب نے بنو آدم کی پشوں ہے ان کی اولاد کو نکالا اور ان کے اوپر انہیں گواہ بنایا المبیاجی تنہار ا رب نہیں؟ انہوں نے کہا کوں نہیں؟ ہم نے گوای دی ا آگہ تم تیامت کے دن ہے نہ کموکہ ہم اس ہے بے خبر تھے۔

(الأعراف: ١٤١١)

یہ وہ عمد ہے جو اللہ تعالی نے دھڑے آوم علیہ السلام کی پشت میں ان کی اولاد ہے لیا تھا۔ جس فے بود میں آکر دیا می اس عمد کو پوراکیا وہ مو ممن ہے اور جس نے اس عمد کو پورائیس کیا وہ کافر ہے۔ سواس حدث کا معنی یہ ہے کہ میں نے تم ہے یہ ارادہ کیا تھاکہ میں جب تم کو دنیا میں فکاوں گاؤ تم اس عمد کو پوراکرنا الیکن تم نے اس کا اُٹالا کرکے شرک کیا اور یہ بھی ہو سکتا ہے کہ ارادہ سے مراد طلب ہو۔ یعنی میں نے تم کو ایمان لانے کا تھم دیا تھا اور تم ایمان نہیں لائے جمید کہ اس کا نامت میں دبی ہو تا ہے جس کا اللہ سجانہ و تعالی ارادہ فرما تا ہے۔ معزلہ نے اس پر یہ اعتراض کیا ہے کہ یہ کیے ہو سکتا ہے کہ اللہ تعالی اس چیز کا محم دے جس کا وہ ارادہ نہ کرے ؟ اس کا جو اب یہ ہے کہ یہ محل نہیں ہے۔ علامہ ماز ری نے کہا ہے کہ اٹل سنت کا نہ ہب ہے ہے کہ اللہ تعالی مومن کے ایمان کو مقدر کر تاتو وہ ایمان نے تہ اس کے بر طابف معزلہ کا نہ بہ یہ ہے کہ اللہ تعالی نے سب

ان کی دلیل میہ ہے کہ تخر شراور برائی ہے اور کفر کا اراوہ بھی شراور برائی ہے اور اللہ تعالی شراور برائی ہے مزہ ہے۔ اس
لیے میں مجھے نمیں ہے کہ وہ کسی کے کفر کا اراوہ کرے۔ اہل سنت نے اس کا یہ جو اب ویا ہے کہ تللوق کے حق میں شر کا اراوہ کرنا شر
ہے۔ فالق کے حق میں شر کا اراوہ کرنا شرنمیں ہے 'کیو تکہ اللہ تعالی مالک مطلق ہے 'وہ جس طرح جابتا ہے 'اپنی ملک میں تصرف
کرتا ہے 'محلوق کے لیے شر کا اراوہ کرنا اس لیے شرے کہ اللہ تعالی نے کلوق کو اس سے منع کیا ہے اور اللہ سجانہ و تعالی کے اور کوئی صائم نمیں ہے جو اس کو امر کرے۔ اس لیے محلوق کے اراوہ پر اللہ کے اراوہ کو تیاس کرنا سمجے نمیں ہے۔ نیزا کلوق جب کسی

چے کا ارادہ کرے اور وہ نہ او توبیہ گلوق کے ضعف اور اس کے بجزی دیدہ ہوتا ہے اور اللہ تعلقی ضعف اور بجزے پاک ہے۔ اس لیے بیہ نہیں ہو سکتا کہ اللہ کافر کے ایمان کا ارادہ کرے اور وہ ایمان نہ لائے۔ اس پر بیہ اعتراض کیا گیا ہے کہ قرآن مجید میں ہے:

ولایر مسی لیمیساد والسکفنر (الزمرنه) اوروه این برول کرار امنی نیس بوتا۔
توجب اللہ کفرے دامنی نیس ہے قودہ کافرک کفر کاارادہ کیے کر آئے ؟اس کاجواب بیہ کہ ادادہ اور چزہ اور دمنا اور چزہ اور دمنا اور چزہ اور دمنا کامی ہے دمنا کامی ہے اور دمنا فاس ہے دمنا کامی ہے فرا دو کا در فرا مناس ہے دمنا کامی ہے فرکا دادہ کرنا جس کر کا دادہ کرنا ہی کہ دادادہ کرنا جس کر کا دادہ کرنا ہی کہ دادادہ کرنا ہی کہ دادہ کرنا ہی کہ دادہ کرنا ہی کہ دو کرنے کامی ہے شرکا دادہ کرنا۔

(هخ الباري على المع الموسوم المعلوم وار فشرا فكتب الاسلاميه الا مور المسامة)

مافظ ابن مجر عسقلانی نے اہل سنت و جماعت کا جو قد مب نقل کیا ہے اس کے والا کل حسب ویل امادے ہیں: الم ابوماتم محمدین حبان انستی المتونی معد سوروایت کرتے ہیں:

حطرت عبدالرحمن بن قاده السلمى ويني بيان كرتے بين كه على في رسول الله على كويد فرماتے موسة سناہ كه الله في آدم كو بدو أكيا كران كى بيشت سے أيك تلوق كو نكالا۔ پر فرمایا بيد جنت على بين اور جھے كوئى پرواه تبين اور بيد دوزخ عن بين اور جھے كوئى پرواه تبين اور بيد دوزخ عن بين اور جھے كوئى پرداه تبين اور بيد دوزخ عن بين اور جھے كوئى پرداه تبين الله ايك فوض نے كما يارسول الله الكرائم كن بر عمل كري؟ آپ نے فرمایا تقدیر بر۔

(می کی این حبان 'جام' و قم الحدیث: ۱۳۳۸ المستدوک ' جا ' ص۱۳ میڈ ہو ' جام' ص۱۸۰ طبع قدیم' علامہ البیٹی نے کما اس مدیث کے داوی اُقتہ ہیں۔ چھے الزوائد 'جے کے مراہما)

الم ابوعيني عمن عيني تروى متونى الاحددوايت كرتين

حضرت مرین العفطاب ویشی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بیجیا ہے اس آیت کے متعلق ہو جہا کیا اور یاد کیج جب

ایک دب نے بنو آدم کی پشت پر اپنادایاں ہاتھ بیجرا اور اس سے اوالد کو نکالہ بیم فربایا بیمی نے ان لوگوں کو جند کے لیے پر آکیا ہے اور
پر اکیا ' بیمران کی پشت پر اپنادایاں ہاتھ بیجرا اور اس سے اوالد کو نکالہ بیم فربایا جس نے ان لوگوں کو دور نے کے لیے
بید اکیا ہے اور سے دور بیر دور بیمران کی پشت پر ہاتھ بیجرا اور اس سے اوالد کو نکال ' بیمر فربایا جس نے ان لوگوں کو دور نے کے لیے
پر اکیا ہے اور سے دور بیر دور بیروں کے عمل کریں گے۔ ایک فوض نے کمایار سول اللہ ایمر عمل کس لیے کریں ؟ تو رسول اللہ جیجیا نے
پر اکیا ہے اور سے دور بیروں کے عمل کریں گے۔ ایک فوض نے کمایار سول اللہ ایمر عمل کس لیے کریں ؟ تو رسول اللہ جیجیا نے
فربایا جب اللہ کی بیرو کو جند کے پر اگر آ ہے تو اس سے جنتیوں کے عمل کرا آ ہے ' حتی کہ وہ اہل جند کے اعمال کر آ ہوا
عربا ہے۔ یس اللہ اس کو جند جس داخل کر آ ہوا م آ ہے۔ یس اللہ اس کو دور نے جس داخل کر دیا ہے۔ امام تر تری نے کمایہ
عدی خس ہے۔

اسنن تذی و قم الدے شده ۱۳۰۱ سن ایوداؤد و قم الدے شده ۱۳۵۰ سن کبری افتدائی جه و قم الدے شده ۱۳۱۱ موطا الم بالک وقم الدے شده ۱۳۳۱ مند الد و بیان وقم الدے شده ۱۳۱۱ می این حیان وقم الدے شده ۱۳۲۷ المستودک بی م ۱۳۷۴ ج۴ م ۱۳۲۳ ج۴ م ۱۳۲۵ کلم و نبی شد تیون مدینون می ماکم کی موافقت کی ہے)

الم ابد عبداللہ عمرین بزید ابن ماجہ متوفی سے عدد روایت کرتے ہیں: ابن ویملی بیان کرتے ہیں کہ میرے دل میں تقذیر کے متعلق ایک ٹک پید اجوالور مجھے یہ خدشہ ہوا کہ کہیں اس سے میرا

دین فاسد نہ ہو جائے اور ایمان نہ جا آرہے۔ پس می معرت الی بن کعب جوجی کے پس کیا اور میں نے عرض کیااے ابوالمنذرا اس نقتریر کے متعلق میرے دل میں ایک شک پیدا ہوا ہے اور جھے فدشہ ہوا ہے کہ اس سے میرادین اور ایمان قامد ند ہو جائے۔ آپ میری تملی کے لیے کوئی مدیث بیان کیجئے۔ شاید اللہ اس سے مجھے نفع پہنچائے۔ معرت الی بن کعب جائن کا اگر الله تعالى تمام آسان والول اور تمام زين والول كوعذاب دے تو وہ ان كو عذاب دے كا اور وہ ان پر ظلم كرنے والا نهيں ہوگا۔ (كوكدودان سب كالماك باورسباس كى مملوك بين)اور اكرودان بردهم قرائة واس كى رحمت ان كا اعلى عابر ے اور اگر تمهارے پاس احد بهاڑ جتنا سونا اوجس کو تم اللہ کی راوجس خرج کرد تو وہ تم سے اس وقت تک قبول نسیس کیاجائے گا جب تک کہ تم نقدر پر ایمان نہ لاؤ۔ پس تم یہ بھین رکمو کہ تم کوجو معیبت پہنی ہے اور تم سے ملتے والی نہیں تقی اورجو معیبت تم ہے نل میں ہے وہ تم کو چینچے والی نسیں تھی اور اگر تم اس کے علاوہ سمی دو سرے مقید و پر سرمیجے تو دوزخ میں داخل ہو سے اور تم پر کوئی احتراض میں ہے ، تم جاکر حصرت حبداللہ بن مسود بہتن سے پوچے او میں اے معرت عبداللہ بن مسعود سے سوال کیا؟ تو انہوں نے بھی معرت الی بن کعب کی طرح جواب رہا اور قرالیا۔ تم پر کوئی اختراض نمیں ہے اتم جاکر معرت مذاف ے سوال کرد۔ جس نے معرت مذیفہ سے سوال کیا؟ تو انہوں نے بھی ان دونوں کی طرح بواب دیا اور کما؛ اب تم جاکر معرت زید بن ثابت معرف سے سوال کو یس فے صرت زیر بن جبت ہے سوال کیا؟ تو انہوں نے کما یس لے رسول اللہ علیم کو ب فراتے ہوئے سامیے اگر اللہ تعالی تمام اسالوں والوں اور تمام زمینوں والوں کو عذاب دے تو وہ عذاب دے گا اور وہ ان پ علم كرنے والا نسيں ہو كاور أكر دور تم فرملے تو اس كى رحمت ان كے ائدل سے بھتر ہے 'اور أكر تمهار سے پاس احد بها ز جنتا سونا ہوجس کو تم اللہ کی راہ یں قریج کردو او وہ اس وقت تف تم سے قبول نمیں کیاجائے گا جب تک کہ تم برنقد بر پر ایمان نہ لاؤ اور یہ بھین ند و کھو کہ جو معیبت تم کو پہنی ہے وہ تم ہے شلنے والی نیس تھی اور جو معیبت تم سے علی من ہے وہ تم کو وینے وال نسیں سمنی اور اگر تم اس کے سوا کسی اور مقیدہ پر مرکئے تو تم دوزخ میں داخل او کے۔

(سنن این ماجه عن رقم الحدیث: اید اسن ایوداؤد عن ارقم الحدیث ۱۳۹۹ مید اجر عدار قم الحدیث: ۱۳۹۷ طبع داد الفکو ایروت علامه احد شاکر احوتی ۱۳۷۷ مید کی اس مدیث کی شد مج ب اس که تمام رجل کی توشق کی مخی ب مند احد استمتیل احد شاکر به ۱۲ رقم الحدیث ۱۳۵۳ ۱۳۵۳ مع دار الحدیث کامرو ۱۳۳۱ه

ظامہ بحث ہے کہ کافر کا کفراور مومن کا ایمان اللہ کے ارادہ ہے ہو اس پر کوئی اعتراض نہیں ہے کہ کہ سب
اسے منوک ہیں۔ اس نے جس کو جنت کے لیے پیدا کیا اس کے لیے جنت کے المال آسان کردیے اور جس کو دوز تے کے لیے
پیدا کیا اس کے لیے دوز تے کے اتمال آسان کردیے۔ اللہ کا بے حدو حساب شکر ہے کہ اس نے ہم کو ایمان اور اقمال منافہ ہے
نوازا۔ اے اللہ اہمارا خاتمہ بھی ایمان اور اتمال منافہ پر کرنا اور اس حقیدہ پر ہمارا حشر کرنا ہم دوز شے ہے اور دوز نیوں کے اتمال
ہے تیمی بنادی آتے ہیں۔

منظمین نے اس کی توجیہ میں ہیں کہاہے کہ چو تکہ کافر کفر کا ارادہ کرتا ہے تو اللہ تعالی نے اس میں کفر کو پیدا کر دیا اور موس نے ایمان کا ارادہ کرتا ہے اللہ تعالیٰ کے جرافران کو خراور شر کا اعتیار دیا جو خرکا ارادہ کرتا ہے 'اس میں ایمان کو پیدا کر دیا ہے ہرافران کو خراور شر کا اعتیار دیا جو خرکا ارادہ کرتا ہے 'اس میں شرکو پیدا کر دیتا ہے ' بندہ کے ارادہ کو کسب کہتے ہیں۔ کسب کا تعلی اللہ تعالی اللہ تعالی ہے ہور افران کو جزائد رس میں شرکو پیدا کر دیتا ہے ' بندہ کے ارادہ کو کسب کہتے ہیں۔ کسب کا تعلی اللہ تعالی ہے 'اور اگر ہور کا دیا ہے 'اور اگر ہور کا دیا ہے کہ اور اگر ہور ایمان کو جزائد رس کے کسب اور ارادہ کا دیا ہو کہ جو اور دیا جی افران کی ہوئیت کے لیے انہیاء اور رسل کو بھیجا اور بھی افران کی ہوئیت کے لیے انہیاء اور رسل کو بھیجا اور

آسانی کنابوں کو نازل کرنااور آخرے میں جزاءاور سزا کانظام قائم کرنا سب بے معنی اور خلاف حکمت ہو گا۔ ائله تعافی کا ارشادے: چوری کرنے والے مرد اور چوری کرنے والی مورت کے (داکیں) ہاتھ کو کاف دو سے ان کے

کے ہوے کی مزاے اور اللہ کی طرف ے عبرت ناک تعزیر ہے اور اللہ بہت خالب اور زمایت عکمت والا ہے (المائدہ: ١٠٩)

آیات مابقہ ہے مناسبت

اس ہے پہلے اللہ تعالی نے بتلایا تھاکہ ڈاکو کے ہاتھ اور پیر کاٹ دیئے جائیں اور اس آیت میں جو رکے بھی ہاتھ کالشے کا تھم دیا ہے اور صدیث میں ہے کہ دو سری چوری پر اس کا ہیر کاف دیا جائے گا۔ حضرت علی بن الی طالب نے قرمایا دہب کسی شخص نے چوری کی تواس کادایاں ہاتھ کان ویا جائے گااور آگر ددبارہ چوری کی تواس کابایاں پیر کان ویا جائے گا۔

(كمَّابِ الأَوْارِ لَمِن بن الحن الشهباني مس ١٣٨)

دو سرى وجد يد ي كد اس سے يسلے الله تعالى ف انسان كى جان كى ايميت بيان كى تقى كد ايك انسان كو كل كرنا الله ك نزدیک گویا تمام انسانوں کو قتل کرتا ہے۔ پھر فرمایا کہ اگر می انسان ڈاکہ ڈالے تو اس کو قتل کر دیا جائے تک اور یساں فرمایا کہ اگر انسان جوري كرے تواس كا إلى كات دياجا كا-

سرقه كالغوى معني

علامه جمال الدين ابن منظور افريق متوني ١٧ه ليست من

الل عرب چوراس مخص کو کہتے ہیں جو کسی محفوظ جگہ میں چھپ کرجائے اور مل فیرلے کرچا؛ جائے۔ آگر وہ چھپ کر لینے کے بجائے تھلم کھلالے تو وہ اچکااور لٹیرا (منسلس اور مستبہا) ہے اور اگر زیردی چینے تو مامپ ہے۔ (اسان العرب عن ١٠٠ ص ١٥٦ مطيور خشرادب الحوزه مقم الران ٥٠ ١١١٥)

سرقه كااصطلاحي معني

علامه كمال الدين محد بن عبدانواحد بن جهام حنى متونى ١٨١٨ تكمية بين:

عاقل بالنع تمسى اليي محفوظ مجك ہے مس كے دس درجم (يا اس ہے زيادہ) يا اتنى ماليت كى كوئى چيز چمپ كر بغير تمسى شبد اور تأویل کے اٹھالے ،جس جگہ کی حفاظت کا انتظام کیا گیاہو "در آنجا لیک دو چیز جلدی فراب ہونے والی نہ ہو تو دہ سرقہ (چوری) ہے۔ (هخ القديم 'ج ۵ م ۴ ۳ منبوي دار الكتب العلميه 'بيروت ۱۵۱۸ اهدا

شان نزول

الم ابوالحن على بن احمد واحدى متوتى ١٨٣٨ ولكصة بين:

یہ آیت طعمہ بن ایرق کے متعلق ٹازل ہوئی ہے اجس نے زرہ کی چوری کی تھی۔ اس کی تنعیل ہم التساہ: ۱۰۵ میں بیان کر

ع ين- (اسباب النزول ص ١١٥ مطبور وار الكتب اسلب الدوت) جالمیت اور اسلام میں جن کے ہاتھ کانے کئے

علامه ابوعبد الله محدين احد اللي قرطبي متولى ١٩١٨ م لكست بن

زمانہ جالیت میں بھی چور کا اِنتہ کلٹ ویا جا آتھا' زمانہ جالمیت میں جس کاسب سے پہلے ہاتھ کا تھم دیا کیا'وہ وليد بن مغيره تما عجرالله تعالى في اسلام يس مجى باتد كالفي كالحكم ديا- اسلام على جس جود كاسب سے يسلے مردوں ميں رسول الله عليجيد نے ہاتھ کاٹا' وہ خیار بن عدی بن نو خل بن عبد مناف تھے کور مورتوں میں جس جور کے سب سے پہلے ہتھ کانے گئے' وہ مرہ بنت

خبيان القر ان

مغیان بن عبدالاسد تھی۔ ان کا تعلق بنو مخزوم ہے تھا۔ معرت ابو بکرنے ایک فخص کا ہاتھ کا تاجس نے ہارج ایا تھا۔ معرت مر نے عبدالرحمٰن بن سمرہ کے بعدائی کا ہاتھ کا تا تھا اس واقعات میں کسی کا اختلاف نسیں ہے۔

(الجامع لاحكام القرآن عسم ١١١ مطبوع دار الفكو ميروت ١١٥٥ه)

چور کا ہاتھ کا شنے کی عکمت

اند تعالی کا بڑا فقتل اور احسان ہے کہ اس نے چور کا ہاتھ کا بنے کی مد مقرد فرہا کر مسلمانوں کے اموال کو محفوظ کر دیا اور اگر کوئی فخض اچک کرکوئی چیز نے جائے یا اوٹ کر لے جائے یا فصب کرے 'تو اس پر مد مقرد نسس (ہرچند کہ اس میں تعزیر ہے) کیونکہ مید بیرائم چوری کی بد نسبت معمولی ہیں اور ان کے خلاف موجو قائم کیے جائے ہیں اور محابوں کے ذریعہ عدالت ہے اپنا حق آسانی ہے وصول کیا جا سکتا ہے۔ اس کے برخلاف چور چھپ کر مل نے جاتا ہے ' اندا اس پر محوای قائم کرنا مشکل ہے ' اندا اس کر محوای قائم کرنا مشکل ہے ' ان سے اس کی سزا سخت رکھی ' تا کہ اس سزا کو دیکھی کر دو سرے لوگ جبرت پکڑیں اور چوری کرنے ہے باذر ہیں اور مسلمانوں کے اموال محفوظ رہ سجیں۔

و مری بحث یہ ہے کہ زناکی سزامی جرم تو صرف آیک جزنے کیا ہے اور کو ڈوں یار جم کی شکل میں سزا پورے جسم کو ملتی ہے اس کی کیاد جہ ہے ؟اس کا جواب یہ ہے کہ زناکرنے ہے پوراجسم لذت حاصل کرتا ہے 'اس لیے پورے جسم کو سزاوی جاتی

وقيت حديث ير دليل

اس آیت میں گئا جائے گا بلد ایک معین مقدار کی چوری پر ہاتھ کا جائے گااور اس آیت میں اس مقدار کابیان نہیں ہے۔

جزانے پر ہاتھ نہیں کا ناجائے گا بلد ایک معین مقدار کی چوری پر ہاتھ کا ناجائے گااور اس آیت میں اس مقدار کابیان نہیں ہے۔

ٹانیا اس آیت میں ہاتھ کا شخے کا تھم دیا ہے اور ہاتھ کا اطلاق انگیوں پر 'جسلی پر 'پہنچ تک گلائی کے وسط تک اکمنی تک اور ہازو

تک 'پر ہاتھ کا اطلاق ہو آہے۔ ٹال اس آیت میں یہ بیان نہیں ہے کہ ہاتھ کا شخے کا تھم امت کے عام افراد کو دیا گیا ہے 'یا یہ تھم

صرف مسلمان جائم کے لیے ہے۔ ان تمام امور کابیان ہی پڑتیر کی سنت اور احادیث میں ہے 'اس سے معلوم ہواکہ احادیث کے

بغیر قرآن مجد کے معنی کو سمجھنا اور اس کے تھم پر عمل کرنا ممکن نہیں ہے۔

حد سمرقہ کے قصاب میں امام شمافعی کا نظریہ

امام ابوعبد اللہ محدین اور ایس شافعی متوفی ہو جھ تھے ہیں:

جب چور کمی چیز کو چرائے تو اس چیز کی قیت کااس دن سے لحاظ کیا جائے گا جس دن اس نے چور کی کی تھی۔ اگر اس کی قیت جو تعالی دینار کو پینچ کمی تو اس کا اِنقہ کلٹ دیا جائے گا در نہ اس کا اِنقر قسیس کانا جائے گا۔

(المام عام مع ١١٠٥ مطبوع دار الفكو أبيروت ١٣٠١ه)

الم شافعی کا ستدلال اس مدیث سے ہے۔ الم عمرین اسائیل بخاری متوفی ۵۱ مدر دایت کرتے ہیں: معرت عائشہ صدیقہ رمنی افقہ عنها بیان کرتی ہیں کہ نمی ہی ہے ہے فرالیا: جو تعالی دینادیا اس سے زیادہ یس ہتھ کان دیا کل

(من البحادی کے البحادی کے اوقم الحدے شدہ ۱۳۳۸ منے مسلم معدد ۱ (۱۳۸۳) ۱۳۳۸ منی ایوداؤد اوقم الحدیث ۱۳۳۸ منی زبانی جرہ وقم الحدیث ۱۳۹۳ میں احد کے ان قم الحدیث ۱۳۳۳ منی کبری للیمتی کی مسم ۲۵۳ موطا الم بالک اوقم الحدیث: ۱۵۵۵ معنف این الی شید کی می ۲۵۰ منی این مبلن کی این مبلن کی الحدیث: ۱۳۳۳ مند جیدی اوقم الحدیث ۱۵۵ مند الثانی کی ۲۴ وقم الحدیث: ۱۸۳ خرج الحدیث للینوی اوقم الحدیث ۱۳۵۹

وا منے رہے کہ چو تھائی دینار تمن درہم کے مساوی ہے۔ اہم اجمدین منبل متوفی ام جد روایت کرتے ہیں: حضرت عائشہ معدافتہ رمنی اللہ عنما بیان کرتی ہیں کہ رسول اللہ بڑھیج ہے فرمایا چو تھائی دینار ہیں ہاتھ کاٹواور اس ہے کم میں نہ کاٹو 'اور ان دنول میں چو تھائی دینار عمن درہم کے برابر تھا اور دینار بارودرہم کا تھا اور آگر چوری چو تھائی درہم ہے کم ہوتی '

توجراس كالمح كالشع كاند كمتى-

(علامه احر شاکرنے کمان مدیث کی شد مجے ہے استداحہ " تحقیق احد شاکر اج کا ارتم الدیث:۲۳۹۹-۲۳۹۹ ملع تاہرہ) حد سرقہ کے نصاب میں امام مالک کا تظریبہ

الم مون بن معيد التوفي اللي متولى ١٥١ه العيدين

من سلا الم مالک سے بوجہا بہ بتائے کہ اگر کوئی فض آج تین درہم کی چدری کرے اور وہ چوتھائی دینار کے برابر آج نہ مول کی مکدرینار کی آئی بیان کی اس کا باتھ کا بند کی جو رک میں باتھ کا دیا ہوئے گا جبکہ اس نے اس دن تین درہم کی چوری میں باتھ کا اور معفرت میں جو بی باتھ کا اس دیا۔

(الدون الكبري ع٠١٦) من ٢٦٥ مليور مليد المعادة امعر ١٣٢٠ه)

الم الك ل دلل ير معتدي:

الم الك بن انس المبي متونى الماء روايت كرتي من

صفرت عبداللہ بن مررمنی اللہ عنمامیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ منظیر نے ایک ڈھال کی چوری میں ہاتھ کان دیا جس کی قیمت تین در ہم تھی۔

(الموطالام بالك وقم المحدث 120 من الثافعي على وقم المديث الما مج البخاري عدارة ما الحدث 140 مج مسلم عودود الموطالام بالك وقواؤد وقم المحدث 1200 من الثاني المحدث 1200 من البود المود المو

عد سرقد کے نصاب میں اہام احد بن طنبل کا نظریہ علامہ مونی الدین عبداللہ بن احمدین قدامہ منبلی حونی ۱۳۰ م کلمے ہیں۔

الم احمد سے نسلب سرقہ میں مخلف روایات ہیں۔ ابواسخات جو زجانی سے رائع طلاقی دیناریا تین جاندی کے درہموں کی . روایت ہے ' باجو این کی بایت ہو۔ ایام بالک اور اسحاق کا بھی کئی قبل ہے اور انثر م سے یہ روایت ہے کر آگر سوئے چاندی کے علاوہ کی چیزی چوری کی ہے توجہ تھائی دیناریا تین درہم کی بایت نسلب ہے ' اور این عمل سے کم تر بایت کو نسلب بانا جائے گا'
ایٹ اور ابو تورے بھی کئی مموی ہے۔

معرت عائشہ رضی اللہ عندا نے فربلا صرف چو تھائی ریاریا اس سے ذیادہ کی چوری پر ہاتھ کانا جائے گا معرت ہم المعرت عثمان اور معرست علی رضی اللہ عندان اور معرست علی رضی اللہ عندان اور معرست علی رضی اللہ عندان اور معرف اللہ عندان اللہ عندان اللہ عندان اللہ عندان اللہ عندان عندان علی اللہ عندان عندان

علامہ این قدامہ منبلی تھے ہیں: ہاری دلیل یہ ہے کہ حضرت این حرد منی اللہ عنماییان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بھی الے اس دھل کی چوری ہیں ہاتھ کلٹ دیا جس کی لیت تین ورہم تھی۔ اسمی بھلری و سمی مسلم بطامہ این عبد البرنے کمایہ صدیف اس باب ہیں سمی ترین صدیث ہے اور اس میں الل علم کاکوئی اختلاف نہیں ہے اور قام ابو طبیعہ کی ہو پہلی صدیف (جس می ایک وسالہ بیاری میں ایک وسالہ بیاری میں ایک وسالہ بیاری میں ایک وسالہ بیاری دیا ہے کہ جس باتھ کانا جائز نہیں اس پر دادات نہیں کرتی کہ دس درہم سے کم میں باتھ کانا جائز نہیں اس پر دادات نہیں کرتی کہ دس درہم سے کم میں باتھ کانا جائز نہیں اس پر دادات نہیں کرتی کہ دس درہم سے کم میں باتھ کانا جائز نہیں اس پر دادات نہیں کرتی کہ دس درہم سے کم میں باتھ کانا جائز نہیں اس پر دادات نہیں کرتی کہ دس درہم سے کم میں باتھ کانا جائز نہیں اس پر دادات نہیں کرتی کہ دس درہم سے کم میں باتھ کانا جائز نہیں اس پر دادات نہیں کرتی کہ دس درہم سے کم میں باتھ کانا جائز نہیں اس کو تھی د در ہم کی چوری پر ہاتھ کانتے ہیں 'واوس در ہم کی چوری پر بھی ہاتھ کانتے ہیں۔

(المغنّ ع، من ٩٠- ٩٠ مطبوعه داو الفكو كيرت ١٣٠٥ه)

ِسرقہ کے نصاب میں امام ابو حنیفہ کا تظریبہ اور ائمہ ثلاثہ کے جوابات

عمس الائمه محمد بن احمد سرخي حنى منوفي ١٨٣ مه و لكيمة بين

حضرت عبدالله بن محررضي الله عنما روايت كرتے بين كه رسول الله يجين كے فرمانا دُهال كي قيمت كے ماسوا ميں ہاتھ نسیں کانا جائے 'اور ان دنوں اس کی قیت وس درہم کے برابر تھی محور اس میں بیدولیل ہے کہ چور کا پاتھ کا بیٹے کے لیے سرقہ میں نصلب معترہے۔

پرنساب کی مقدار میں اختلاف ہے۔ ہمارے علاء رحم اللہ نے کمایہ نصاب دی درہم یا ایک دینار ہے۔ الم ثانعی نے كماچو تعالى وينار ب- المام مالك نے كما تين ورجم ب- حضرت او جريه اور حضرت او سعيد خدرى في كما جاليس ورجم ب-انام شافعی نے اس مدیث سے استدالل کیا ہے۔ از زحری از عودہ از معرت عائشہ ومنی اللہ عنها دوایت ہے ، نبی مجرب نے قرایا چوتھائی درہم یا اس سے زیادہ میں الم کانا جائے گالور اس لیے کہ ان کا انقاق ہے کہ رسول اللہ بڑجور کے جمد میں صرف و حال كى قيت من إلى كاناجا أنفا اور دُهال كى قيت من اختلاف ب اور اختلاف ك وقت اس كى كم يه كم قيت كااعتبار كياجا كا اور كم سے كم قيست جو معقول ہے وہ تين درجم ب-اس نے الم مالك نے مرقد كانساب تين درجم قرار ديا ہے اورسول الله عظیم سے عمد میں دینار کی قیمت بار دور ہم تھی او تین در ہم چو تھائی دینار ہو گئے اور مارے علاء نے اس مدیث ہے استدلال کیا

از عمروین شعیب از والد خود از جد خود روایت ب که رسول الله مجیم نے قرمایا ایک دیناریا وس درہم سے کم میں پاتھ نیں کانا جائے گااور حضرت این مسعود جائے۔ ہے موقوفات اور مرفوعات مروی ہے کہ ایک دیناریا دس درہم ہے کم میں ہاتھ نہیں کانا جاسة كالساس طرح حفرت على بوافي سے بحى مودى ب اور حديث مشور مى ب كدوى ور ايم سے كم من مد نبي ب اور وس درہم سے کم میں ہاتھ نسیں کانا جائے گا۔ اور ایمن بن ابی ایمن معفرت ابن عماس اور صفرت ابن عمر رضی اللہ عنهم سے مردی ہے کہ رسول اللہ موجید کے حمد میں جس ڈھال کی چوری میں اتنے کاٹا کیا تھا ، وو دس در ہم کی تھی اور ان محابہ کرام کے قول کی طرف رجوع کرنا زیادہ لا تق ہے۔ کیو تک وہ مجلیدین جس سے تھا اور ہتسیاروں کی قیمت اور لوگوں کی برنست زیادہ جاننے والے تھا اور یہ کمنا درست نمیں ہے کہ وصل کی اس قیت کا اعتبار کرنا جاہیے جو کم سے کم ہو اکونکہ چوری شدہ مل کی کم تیت اس کے لکائی جاتی ہے ' یا کہ حد کو ساتھ کیا جا سکے اور یہاں حد کو ساتھ کرنانس ونت سخفن ہو گاجب و ملل کی قیت زیادہ ے زیادہ لگائی جائے

اور روایت ہے کہ حضرت عرب بین کے پاس ایک چور کو لایا گیا جس نے گیڑا چرایا تھا۔ صفرت عمرف اس کا باتھ کاشنے کا تھم دیا۔ حضرت عثین بڑینے نے کمااس کی چوری دس درہم کے مساوی نہیں ہے 'پھراس کپڑے کی قیمت معلوم کی گئی تواس کی تیت آٹھ درہم ڈالی کئی تو اس مخص سے مد ساتھ کردی گئے۔ یہ روایت اس پر دلالت کرتی ہے کہ نصلب سرقہ کا دس درہم ہونا محاب کے درمیان معروف اور مشہور تھا۔ نیز انساب مد کو نساب مرر قیاس کیاگیاہ اوریہ امر تابت ہوچکا ہے کہ او کم مر وس درہم ہے اور فکاح اور ہاتھ کائے دونوں میں ایک عضور تصرف کیاجاتا ہے ؟جو شریعت میں تصرف کرنے سے محفوظ اور مامون ہے۔ اس کیے اس تعرف کا انتحقاق مال کثیر کے بغیر نہیں ہو نا چاہیے دھرت عائشہ رضی اللہ عنما ہے جو تھائی دینار کی فو صب موں ہے اس میں بہت ذیادہ اضطراب ہے اور اکثر محد شین کا اس پر انقاق ہے کہ یہ صرف دھرت عائشہ رضی اللہ عنما کا قول ہے 'رسول اللہ انتخاج کا رشاد نہیں ہے 'اور حضرت عائشہ رضی اللہ عنما کا مشہور قول ہیہ ہے کہ کسی معمولی چڑے ہو ض باتنہ نہیں کا جاتا تھا۔ اللہ عنما کا مشہور قول ہیہ ہے کہ کسی معمولی چڑے ہو ض باتنہ نہیں گا جاتا تھا۔ اگر معمرت عائشہ جو بین ہی تھائی دینار کی صریح مدیث ہوتی قودہ یہ مہم جواب نہ دینیں۔ پھر یہ می احتمال ہے کہ ابتداء میں چو تھائی دینار کی چری ہی اور میں دس درہم کو نصاب مرقد مقرر کرکے جو تھائی دینار کے تھم کو منسوخ کردیا' میں چھائی دینار کے تھا کو منسوخ کردیا' اس کو بھالوہ ہے 'اک بات کو منسوخ کرتے ہیں' یاس کو بھالوہ ہے 'اک بات تھم' منسوخ تھم ہے خفیف اور آسمان ہو۔ اللہ تعالی نے فرایا ہے: ہم جس آبت کو منسوخ کرتے ہیں' یاس کو بھالوہ ہیں قواس ہے بھریاس کی مثل نے آتے ہیں۔ (المسوط جا میں ۱۳۵۸ ساملوء مطبوعہ دار المعرف ایرانس کے جبوت میں احاد ہے۔ اس میں احتمال میں احتمال ہے دورا المعرف دار المعرف ایرانس کے جبوت میں احاد ہے۔ اللہ عنمال میں احتمال میں احتمال ہے دورا المعرف دار المعرف اورانس کے جبوت میں احتمال ہا دیں۔

علامہ سرخی کی اس مفصل عبارت میں ائمہ اللہ کے دلائل کا جواب آگیا ہے ' تاہم علامہ سرخی نے جن احادیث سے استدلال کیا ہے 'ہم ان کی تخریج اور نہ ہب احتاف کی تائمہ میں مزید اصادیث بیان کردہے ہیں۔

امام ابو عبد الرحمٰن احمد بن شعيب نسائي متوفي ١٠٠٠ مد دوايت كرتے بين:

ایمن بیان کرتے ہیں کہ نمی چھیز نے صرف دوسال کی قیت میں پاتھ کاٹا ہے اور اس دن دسال کی قیت ایک دینار تھی۔ اہام نسائی نے اس مدیث کو چھ مختلف سندوں ہے روایت کیا ہے۔ پارون بن عبداللہ کی روایت میں ہے اس کی قیت ایک دینار یا دس درہم تھی۔

الم نبائل في مطرت ابن عماس رمنى الله عنها عدوايت كياب اكر ذهال كى قيمت اس دن وس درجم تقى ...

(سنن نسائل بيه من رقم الحدث: ٣٩٦١ ١٩٩٥ سنن البوداؤد وقم الحديث ٢٣٨٤ به حديث عطاس مرسلة بهى روايت كى ب- رقم الحديث الحسنة ورك جه من موحه ٢٠٤٥ ما أور ذابي لي موافقت كى المام بيهتي في متعدد المامية الحديث المامية في المحمد الم

انام نسائی از عمرہ بن شعیب از والد خود از جد خود روایت کرتے ہیں' ڈھال کی قبت رسول اللہ عظیم کے عمد ہیں دس ورہم ختی۔(سنن نسائل'ج۸'رقم الحدیث:اے۴۴' سنن دار تعنی' ج۳'رقم الحدیث:۳۸۸-۳۳۸۸) مدر میں سختانی تنافی شدہ السامات میں اور تعنی' ج۳'رقم الحدیث:۴۳۸۸ ۱۳۳۸۸)

الم احرين منبل متونى الاله دوايت كري إلى

از عمروین شعیب از والدخود از جدخود ارسول الله برانی نے فرمایا دی در ہم سے کم میں قطع پر (پاتھ کاٹنا) نہیں ہے۔ (علامہ احمد شاکر استونی عدم میں نے کہا اس مدیث کی سند مسج ہے۔ مند احمد متحقیق احمد شاکر " بیا ارقم الحدیث: ۱۹۰۰ سنن دِار تعلنی اج ۱۰ رقم الحدیث: ۱۶۰ ۱۹۰۰ میں ۱۶۰ میں ۱۳۷۲)

الم عبد الرزاق بن حام منعانی متونی الله روایت کرتے ہیں:

قائم بن عبدالرحمٰ بیان کرتے ہیں کہ حضرت عمرین العقطاب جہنے کیاں ایک مض کو لایا کیا جس نے کیڑا چرا یہ تھا۔ آپ نے حضرت عملیٰ جہنے ہے فرملا: اس کی قیمت نگاؤ۔ حضرت عمان نے اس کی آٹھ درہم قیمت لگائی او آپ نے اس کا اِتھ نہیں کانا۔ (العند اور میں ۱۳۳۴ میں ایل شید ایجہ اور ایس سنن کیری اللیمتی ایجہ اس میں صرت على على ما الله مال كست ين ك الكسوعاديادى در بم عدم من إلى الي كابات كا

(معنف ميد الرزاق ع٠١٠ ص ١٣٣٣)

حضرت این مسعود بریش بیان کرتے بین کر ایک و تاریا و س در جم سے کم عمل القد نیس کانا جائے گا۔ در مستف عبد الرزاق میں موسوم مستف این الی شید است میں مدیر ماسن کری تلیمتی کی در میں موسوم کرا الاکار لاام میرا میں سامان دار تعلیٰ جس کرتم الحدے در موسوم میں است

الم محمين حسن شيباني متونى ١٨٩ه روايت كرية بين:

ایرائمیم نعی نے کماک ڈھال ہے کم قبت میں جور کا اِنتر نہیں کا جائے گانور اس وقت ڈھال کی قبت دی درجم تھی اور اس سے کم میں اِنتر نہیں کا جائے گا۔

(كالب الأفار مع عدا مطويد ادارة القرآن كراجي عدماه)

این میب بیان کرتے ہیں کہ لی چھیز نے فرایا کہ جب چور اس قدر (ال کی)چوری کرے جو دُمل کی قیت کو پہنچ جائے جائے اس کا باتھ کا کاور اس وقت و مال کی قیت وس در ہم تھی۔

(معتف عيد الرزال اج ١٠ اص ٢٣٣ مطبور كتب اسلاي كيوت ١٩٠٠ه)

خلاصہ یہ ہے کہ انکہ علاقہ تین درہم یا چوتھائی دینار کو ہاتھ کا نے کا نصاب قرار دیے ہیں اور اہم ابو حقیقہ اور ان کے اصحاب دس درہم یا ایک دینار کو نصاب قرار دیے ہیں۔ دس درہم دو اعتفاریہ چے دویا تج (۵ ۱۳۵۵) قولہ اور تیس اعتفاریہ چو ایک آفید رسم استاری کے برابر ہے۔ اور تین درہم مقراحشاریہ سات آفید سات یا تج (۵ ۱۸۵۵ ۱۹۵۵) قولہ اور قو اعتفاریہ ایک آفید یا تی جا تھ یا تی جا تا ہے۔ کا تا جا گھ یا در احتماری کرام جاندی کے برابر ہے۔ کون سایا تی کی سے کا تا جا گئے ہے۔

چور کاولیاں باتھ کا جائے گا کو تکہ اہم بیش نے ابراہیم تھی سے دواہت کیا ہے۔ اداری قرائت میں ہے "خافط موا ایسم اسیسما" چوری کرنے والے موداور چوری کرنے والی کورت کے وائس باتھ کو کلٹ دو۔

اسنن كيري لليصتى "ج ٨ م ١٠ م ١٠ مطوير نشرالسنه " ممان)

والال إلح بنج عد كالا جلاء كد

الم وار ملني حوقي ٨٥ عد روايت كرت ير

از حمودین شعیب از والد خود از جد خود محصوت مغوان بن امید بن خلف مهیر می سوئے بوئے ہے ان کے سمالے ان کے کہا ہے ان کے کہا دو اس چور کو پکڑ کرنی میں کے کہا ہے ان کے اس نے چوری کا آزار کر ایا۔

ایک کیڑے ہے ایک چور آئروں کیڑے لے گیا وہ اس چور کو پکڑ کرنی میں کے پاس لے آئے اس نے چوری کا آزار کر ایا۔

ایک میں کا ایک ہے کہ کہ کہ کا حم روا۔ حضرت مغوان نے کھا یاد سول اللہ اکیا حمیب کے ایک فیض کا میرے کہروں کے موض اللہ میں کا جانے کا دسول اللہ میں ہے کہ کہا یاد سول اللہ ایک ہوئے کہ دسول اللہ میں ہے کہ کہا ہے کہ اور کا ایک ایم رواد جہوں وہ اس کی بیٹے گیا کہ اس کو معافی نہ جب بھی جانے کی دسوف کیاتو اللہ اس کو معافی نہ جب بھی جانے کہ اس کو معافی نہ کہ بھی گیا کہراس کو معافی نہ کہا ہے۔

کرے کہرا آپ نے تھم دیا کہ بہنے (بیشل اور کا ان کا جو ڈراے اس کا باتھ کان دیا جائے۔

(سنن دار تعنی عسم الرعث: ٣٠٣٠ مطبوعه دار الکتب الطب كردت ١٢١٤ هـ)

الم الويراه من حين يمل حول ١٥٠٥ مدروايت كرتي إن

عدی بیان کرتے ہیں کہ نبی ہوچیں نے چور کا ہاتھ جھٹلی کے جو ژے کلٹ دیا۔ معرت عبداللہ بن عمو دیڑے بیان کرتے ہیں کہ نبی چھپر لے ایک چور کا ہاتھ جھٹلی کے جو ژے کلٹ دیا۔ عمرہ بن رہنار بیان کرتے ہیں کہ معترت عمر دویڑے چور کا ہاتھ جھٹلی کے جو ڑے کلٹ دیتے تھے۔

(سنن كيري ع ٨ م م ا ٤ ٢ مطبوع نشرالسته علمان)

جن صورتوں میں چور کا ہاتھ نہیں کا تا جا آ

فلونى عالىكىرى يس إلته كاشع كى حسب زيل شرائط بيان كى مى بين:

۱- ہو چیز دارالاسلام میں مباح یا ضیس اور حقیرہ واس کے چرائے پر ہاتھ نسیں کانا جائے گا۔ جیسے افراد، کنزی کماس پھوس' سرکنڈا' چھلی' بڑتل اور چوناو فیرو۔(پرایہ کانی اور اختیار)

٢- سونا عاندي أكر مني يا پتري تكويد مواور اس كويس شكل من جرايا جائة تواس پر مد سرقه نبي ب- إنابرالروايد)

٣- او چيز جلد فراب مو جاتي ہے ايسے دوره الوشت اور بازه پيل اين کے چرانے پر حد نسيں ہے۔ (بدايہ)

الراج الراج الراج الراج محيت على الموال كرات محيت الراج الواج)

٥٠ قط كاليام بمن طعام كى چورى برخد نهي ب- خواه طعام جلد خراب ہوئے والا ہويانہ ہو ' تفاظت بين ركھا كيا ہويانہ ہو' اور قط كاسال نہ ہوليكن جس طعام كوچ ايا ہے وہ جلد خراب ہوئے والا ہے' بجر بھى حد نهيں ہے اور اگر طعام جلد خراب ہوئے والانہ ہو'ليكن فير محقوظ ہو' بجر بھى حد نہيں ہے۔(زخيرہ)

١٠ مشي كي ديمي كي چوري من حد شيس ب- التيمين

٥٠ در دست كوباغ سے ير سميت حالے بر صد نسي ب- السراج الواج

٨- باختى كون يزينانى ندمى مدنس ب بشرطيك اس عدكى يزينانى ندمى موا الميناح

٠٠ شيشه کي جوري مي مد تهي عيه-(الخ القدي)

۱۰ جن جانوروں کاشکار کیاجا آہے ان کے چرانے پر صد تمیں ہے مخواہدہ وحش ہوں یا غیروحش میری ہوں یا بحری۔ (تآر فانیہ)

ا - مندی سروں کا آنہ پھوں کماس پانی معمل اور جاوروں کی کھاوں کے چرانے میں مد نمیں۔الانیا کہ کھال سے مصلی اکوئی اور چیز بنائی می مو۔(مرکبیر)

٣- فر منواو الله يرزون وحشى جانورون كي مين مرفى الخاور كورك يرات من مدنس ب- اتراش)

١١٠ طنبور وف مزار اور باتي كان بيال كانت كي حراف من مد دسي ب- المراج الواج)

١٣- طبل اور بميد أكر لوولعب كي يول اوان كي جرائع مد دس ب اور أكر جداد كالمبل ب واس من اختلاف

۵۱- خیراور رونی کے چاتے میں صد شیں ہے۔ والسراج الواج

١٦- شفرنج اورچ سرخواد سونے كى تى بوكى بول ان كے چرالے على مد نسي ب- (ميد)

ا- مصحف (قرآن محمد) كيداك يراف من مدنسي ب- الراج الواج)

١٨- فقه انحوالفت اور شعر وادب كى كربول كے جرائے من بھى مدنس ب- (الراج الواج)

```
١٩- تيرك چرافي مدنس ب-(دغرو)
```

۱۰۰ سونے یا جائدی کی صلیب یابت کے چرانے میں مد شمی ہے۔ البت اسونے اور جائدی کے جن سکوں پر تصوریں موں ان پر مدے۔(مرابی)

١٦٠ يدى عمريا مجدوار غلام كي جرائية من مد شين ب-(بزفائق)

۶۲۰ جس مخض نے اپنے مقروض ہے دس درہم فیرموجل قرض لیما ہو اور وہ اس سے اتنی بالیت کی چیز چرا لے تو حد نسیں ہے اور اگر قرض موجل ہو تو قیاس کا مقاضا ہے کہ حد ہو اور استحسان کا قلصا ہے کہ حد نسیں ہے۔ دالسراج الوہاج)

-11- أكر غالغ بين ك مقوض ك مل سے جورى كى تو مد نسي ب- اميدا)

۲۳- آگر جائدی کے برتن میں جیزیا جلد خراب ہونے وائل کوئی چز (مثلاً دورہ) تھی اس کوچ الیاتو مد نسی ہے۔

-10 جس يرتن من فراشراب متى اس كوچ الياتواس من مد نسي -- (ميد)

١٧٠- أكر قيرے ورجم عداد إكفن كے علاوہ كوئى اور يزج ائى تواس ير حد نسي ب- إلمراج الوباج)

٢٠- كفن يالي مدنس ب- (كان)

١٨- ال تنيت إسلمانول كے بيت الل عددى كرتے ير مدنس ب-(نايه)

۱۲۹ جس چیز پر ایک بار صد لگ چکی ہو'اس کو دوبارہ چرانے پر صد قبیں ہے۔ (شرح اللحادی مظمیریہ)

٠٣٠ حلى متامن كال عدوى كرني ود نيس ب-إسوا)

علامداين المم حنى لكية بن

الله معجد كاملكن مثلا چنائيل اور قديل چرانے پر حد نسي --

١٣٠- كعبرسك يروول كويراسة ي وو فيس سيد

٣٣٠ جن كاغذول ير يجمد لكعابوا يا جميا بوابوان كے چرانے پر حد نسي ب

١٦٠ أكرتمي فض فالات من خيانت كي تواس ير حد نسي --

٠٠٥ الير اورانك و مدنس --

٣١٠ اگر کوئي فخص ايخ شريك كال عددي كري واي رحد تمين --

٣٤- ال باب أولاديا ويكر محارم ك ال عديد ري برصد نيس ب-

۲۸- اگر عرم كر مرح كى اور كالى چالاتواس مدنس ب-

اماء اگر زوجین میں سے کی ایک نے دو سرے کال چرایاتو اس پر صد شمیں ہے۔

٠٣٠ علام بالوعدى نے اپنے الک كالال چرايا يا لوندى نے اپنى الك كے خلوند كابال چرايا تو اس پر حد شيس ہے۔

ا٠٠ أكر مالك في المناح مكاتب كالمل جرايا تواس پر حد نسي ب-

٣٢- حمام ياجس محرين جانے كاازن مام ہو "اس ميں چورى كرنے پر مد شميں ہے۔

ا فأوي ما تكيري عن عن مل 121-221 مغصا مطبوط معبد أميري أكبري بولات معمر ١١٠١ه)

الله تعالى كالرشادي: (ائ فاطب اليات في عناك من الله منام أسانون اور زمينون كاطك الله بي كاب وو

الماكدون على عذاب ديتا إور في على بخش ديتات اور الله بريزر قادر ب- (الماكدون)

<u>ل</u>م

اس سے پہلے اللہ تعالی نے فرایا تھا کہ آگر چور نے توبدنہ کی اور وہ مجانا کیاتواس پر حد مجی جاری ہوگی اور تخرت اس عذاب بھی ہو گااور آگر اس نے تو یہ کرلی اور اپنی اصلاح کرلی قافتہ آخرت کی سزامتاف قرادے گا۔ اس آیت میں یہ فرایا ہے ال کے بے دیا ی دران ہے وے) جمونی ایم بہت زیادہ سنتے یں ادر حوام بہت زیادہ 炒

بلدسوم

غيبان القر أن

) جَاءُرُكُ فَاحَكُمُ بِينْهُمُ الرَّاعِرِضُ عَنْهُم ماتے ہیں ، مواگر وہ آپ کے ہاں آئی (آو آپ کوافتیادہ، خادال کے درمیان تیملد کرمیں خرادال سے امرائزا الا اگر آپ ان سے امواح کریں سے تورآ ہے کہ بھی گفتان ہیں پہنا عمد کا وراگر آپ نیعل کری آ ان کے درمیاں العاقب سے فعل کریں ، چھک انٹر العامت کرنے داول سے مجست کراہے 0اوروہ آمید میص معن بنایس کے مالال کدائی کے پاس قدات ہے جس یں اللہ کا تع ہے ، پھر اس کے باوجود دہ

ہدران کرتے ہی اور وہ ایالی و نے والے جی ای 0

الله تعلقي كاار شاوي: اب دسول الب كود اوك في ودير كري و كفرش يوى كم ماقد مركرم إلى المائد دام) اس سے پہلی اعلیٰ میں افتہ تعالی سے واکد اور چوری سے مسلی انام شرمید ارشاد قرائے اللہ تعالی کو ملم تعاکد كالفين مت كرم جو فى ك مائد كركا المهاد كري ك والله تعالى ف آب كومبرى يجين ك-اس ايت كاستى يد ب كداب كفريس ان کی مرکرمیوں کی بداونہ کریں اون میں سے بعض منافقین ہیں جو کفار کے ساتھ دوستی دیکتے ہیں۔ اور مسلمانوں کے طااف مازھیں کرتے ہیں اکنیائی کو تعید دوی۔ اللہ مزویل ہے سکرلے کا ب الودان کے کرو قریب کے طلاف اب کی مدد فراست كلداى طرح آپ يمودكى ريشد دوانول كى بحى ظرفد فرمائحى ميد دونول فراق يمودك احبار اور روبان سے وين اسلام ك متعلق جموني إلى بهت يختر بي أب كي نيوت عن شِهات الورق رات على ترف يرمشمل إلى خوب سفتر بين اور ان كو تول كرتے يس-اس كى دومرى الكيري ب كر بويدوى آب كيان شي التيدان كوبان الى اب ير جموت بارات ك کے یہ آپ کی باتی سنتے ہیں ایک ہو بھی کے سے سنس اس می تغیر اور تبدل کرے اور اسے باس سے جموت الما کر بدویوں کو بعوائس

قرآن جیدش، دو جگر آپ کو بدایدها الرسول کے ماتھ قطاب فریا ہے۔ ایک ہے جگر ہے (المائدہ: ۳۱) اور دو مری آیت بہ ہے بنا بھا الرسول بلغ ما انزل السک (الما تعداے) ان کے ماور اللّی برجکہ آپ کو بنا بھا النبی کے ماتھ خطلب فرما إس-اس معلوم بو آب كريه محصمتهم الثان آيت--

الله تعلق كاار الدي: (الله ك) كام كوس كى جكول عدل دية إلى اله كته إلى كه اكر تهيس يه (عم) ديا جائ واس كوبان اواود أكريه الحمان وإجلة واست اعتباب كروالما عدام

طِيئانِ القر ان

يهود كالتورات من لفنلي اور معنوي تحريف كرنا

یود تورات پی افظی تریف بھی کرتے ہے اور معنوی بھی۔ افظی تریف یہ کی کو کری افظ کو در میان ہے چمو ژدیئے ہے اور معنوی بھی۔ افظ کو دو مریان ہے چمو ژدیئے ہے ۔ یا اس افظ کو دو مریک افظ کو دو مریک افظ کو دو مریک افظ کو دو مریک اور سے افظ ہے بدل دیے تھے 'یا اس افظ کو زبان مرد ژکر اس طرح پڑھتے تھے کہ اس کامعنی بدل جا آتا ہا اور معنوی تریف یہ تھی کہ مناب ہے جمی جاتی تو معنوی تریف یہ تھی کہ اس کی مفات ہے جمی جاتی تو دجل کی مفات پڑھ کو رستاد ہے۔

(פושולעוטיבויתודה)

نی چیچ کایمودی زانیوں کو رجم کرانا الدمسلم میں جارہ میں مدفر میں

الم مسلم بن على المسدى موفى المدروايت كرت بين

حضرت مدافلہ بن مرد منی اللہ صما بیان کرتے ہیں کہ دسول اللہ بھی کے ہیں آیک یہودی مودور مورت کو الا کیا جنوں نے زناکیا تھا۔ دسول اللہ بھی یہود کیا کہ تشریف لے گئے 'آپ نے فرالا 'جو مخص زناکر اس کے متعلق تمبار کے خزدیک تورات میں کیا تھم ہے؟ انہوں نے کہا ہم ان کا منہ کالا کرکے ان کو سواری پر شماتے ہیں اور دونوں کے چرب مخالف مزدیک تورات میں کہا تھم ہے؟ انہوں نے کہا ہم ان کا منہ کالا کرتم ہے ہو تو تورات الا 'ور قورات لے کر آئے اور اس کو چرب مخالف مائٹ میں کرتے ہیں 'چران کا چکر لگا با آئے ۔ آپ نے فرالا اگر تم ہے ہو تو تورات الا 'ور اس کے آگے اور یکھے سے پر صاحب صفرت اور جب رجم کی آئے ہور یکھے سے پر صاحب صفرت میدافلہ بن کہا آپ اس سے فرائم کی کہ اینا ہو اٹھائے 'جب اس نے میا تھی تو اس کے آئے اور اس کے آئے اور اس کے آئے اور اس کے ایک مائے بیٹھ ہوئے جے۔ انہوں نے کہا آپ اس سے فرائم کی کہ اینا ہو تھے 'جب اس نے ہو انہوں کے کا میں مدود ۱۲ (۱۲۹۱) '۲۵۵) ایک مسلم سے اس مدود ۱۲ (۱۲۹۱) کی دورت میں مائٹہ میں میں دورت کی دوایت کیا ہے۔

ا مح مسلم المعدد على مدود على مدود على المعدد المع

نيزالم مسلم بن جن قله وي حول على دوايت كسترين

معرت براوین عازب وہی بیان کرتے ہیں کہ نی جھی کے پاسے آیک یمودی گزارا میا جس کامند کلا تھانور اس کو کو شہرت کا گائی ہوری گزارا میا جس کامند کلا تھانور اس کو فرے نگائے تھے۔ نی بڑھی نے ان کو بلایا لور قربلانتم اپنی کلب میں ذاتی کی مدای طرح پاتے ہو جانہوں نے کہا ہی ان کے علقہ میں ہے ایک محص کو بلایا لور قربلانی تم کو اس ذات کی حم دیتا ہوں جس نے معرت موی پر تورات کو

عال كيا- كياتم افي كتاب من زاني ك مداى طرح يات موجاس في كمانهي اور أكر آب جهيد منم زوية توم آب كواس ى خرند دينا ايم اس مدكور جم يات بين الكين جاري معزز لوكون بن زنا بكرت بوف لك سوجب بم كمي معزز آدى كو يكزت تو اس کوچھو ڈویے مورجب ہم تمی معمولی آدی کو پکڑتے تواس پر صد قائم کردیے۔ ہم نے سوچاک چلو ہم ایس سزار انفاق کرلیں جس كو بم معزد اور فيرمعزد دونوں ير لاكوكر سكيں او يكر بم في رجم (الكساد كرتے) كى جك مند كال كرتے اور كو الد لكانے كو مقرر كرديا- مورسول الله علي ات فرمايا اس الله اجن بهاده محص مون جس في تيرا اس عم كوزنده كياجس كولوكون في مناديا تنا کھر آپ کے تھم ے اس کو رجم کیا گیا۔ تب اللہ تعالی نے یہ آیت نازل فرمائی (اللہ کے) کلام کو اس کی جگوں ہے بدل دیے يں وہ كتے يى كر أكر تم كوير (عم) ريا جائے قواس كو مان لوفور أكريد (عم) ندريا جائے "قواس سے اجتناب كرد-(المائد مس) (لین) وہ کہتے ہیں کہ (سیدنا) کھ بڑی سے پاس جاؤ 'اگر وہ تم کو صنہ کلا کرنے اور کو ژے نگانے کا حکم دیں تو اس کو تبول کر او اور اگر م كورج كرنے كا عكم ديں تواس سے اجتناب كرو۔ مواللہ تعلق لے يہ آيت نازل كى۔ جو الله كے نازل كيے ہوئے كے موافق تھم نہ ديس مودى لوگ كافر ہيں۔ المائدد ١٠١٧) جواللہ كے نازل كے ہوئے كے موافق عمم نہ ديں مودى لوگ فالم يس-(الماعددهم) اورجواللہ کے نازل کیے ہوئے کے موافق محم نددیں مودی اوگ فاس میں۔ (المائدون مر)

یہ تمام کافروں کے متعلق ہیں۔

(معج مسلم "مدود ۲۸ (۵۰۰) "- ۱۳۴۷ اسنن ابوداؤدار قم المديث ۱۳۴۸ موسر ۲۸ ۱۳۳۸ ستن ابن ماجه ۲۵۵۸) الله تعالى كاارشادى، اور (ا عناطب) سے الله فند مي دائنا جائے اور مركز اس كے ليے اللہ كے مقابلہ ميس سي جِيرُ كَا بِالْكَ لَهِي جَو كُلُهِ (المائدة ١٣)

يهوديوں كے ايمان نہ لانے ير نبي سي كو تسلى دينا

جس كو الله فتند مي ذالنا جاب اس كامعنى ب جس كو الله ونيا مي مراه اور رسواكرنا جاب اور آ فرت مي عذاب دينا جاہے اتواے فکا سب اتواللہ تعالی کے محراہ کرنے اور اس کے عذاب کو اس فخص سے دور کرنے کی خافت نہیں ر کھتا۔ یہاں پر ب اعتراض نه کیاجائے کہ جب اللہ نے بندہ کو محراہ کردیا تو پھراس کو دنیا میں ملامت کیوں کی جاتی ہے؟ اور آخرے میں اس کو عذاب کوں دیا جا آہے؟ اس کا جواب یہ ہے کہ برار جب کوئی ایسا برا جرم کرلیتا ہے جس کی اللہ کے نزدیک معانی تمیں ہے ' تو وہ اس کے دل پر ممرای کی مرنگادیتا ہے۔ اب کوئی خواہ کتنی کو شش کیوں ند کرے اور اس کو راہ پر جس لا سکا۔

مثلاً الله تعالی ہے کسی معجزہ کو طلب کرے اور معجزہ دیکھنے کے بعد مجرائیلن نہ لائے 'یا نبی متنظم کی ابانت اور ممتاخی کرے' تو پھر دنیا میں مرای اور رسوائی اور آفرت کا عذاب اس کا مقدر ہو جاتا ہے۔ اللہ تعلق نے فرمایا: دعیا میں ان کے لیے رسوائی ہے ' یعنی ان پر جزیہ مسلط کیا جائے گا اور وہ مسلمانوں سے خوف زوہ رہیں گے۔ نیز قرمایا اور آخرت میں ان کے لیے برا عذاب ب یعن دا دوزخ جی اید بید بید روس کے۔اس آیت جی نی چھی کو تعلی دی گئے ہے کہ یمود ہوں اور منافقوں کے ایمان نہ الانے اور اظام ے اطاعت نہ کرنے پر آپ مغموم نہ یوں اور آپ یہ خیال نہ کریں کہ آپ کی تبلیغ اور پیغام رسانی می کوئی کی ہے جو یہ ایمان تمیں لا دہے اور اخلاص سے اطاعت تمیں کر دہے " آپ کی تبلیغ کال ہے اور آپ کی پیغام رسانی تعمل ہے۔ درامسل ان كى تيم ابائوں اور مث و حرموں كى وجد سے اللہ نے ان كے ولوں ير مراكاوى ہے اور اللہ نے ان كواس قابل شيس جاناكد ان کو آپ کے مخلصے اور اطاعت گزاروں میں شال کرے۔ یہ سمجھ رہے ہیں کرید آپ پر ایمان نمیں لارہے 'اور آپ کو منصب

نبوت کاالل نمیں مجھتے اور واقعہ سے کہ اللہ نے ان کو آپ کی غلامی اور آپ پر ایمان لانے کے لائق نمیں جاتا۔ الله تعالى كاارشاد بيد جمول باتم به زياده شقين اور حرام به زياده كملت بي (الماكدون) سيحت كامعني اوراس كاح

یہ جمولی باتیں بہت زیادہ سنتے ہیں اس کو تا کید کے لیے دوبارہ ذکر فرملیا ہے۔اس کے بعد فرملیا وہ سے ست بہت زیادہ كماتے بير- افت مي سحت كامعي علاك كرنا ہے۔ قرآن مجيد ميں ہے:

مویٰ نے ان ہے کہا: تم پر افسویں ہے جموٹ بول کرانڈ پر

فَالَ لَهُمْ مُوسِي وَيُلَكُمُ لَا نَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ

. بهتان ندباند هو م کروه حمیس عزاب سے بلاک کروے۔

كَدِبًافَيْتُ حِنْكُمْ بِعَذَابِ (طهه) اور سحت کاستی کی چزکو جڑے اکھاڑ تا ہو آہے۔ وب مرموع نے دالے بکے متعلق کہتے ہیں اسست اس نے بل يز ب المازدية مل حرام كو بحى سحت كت ين اكيوكد وه عبادات كويز ب المازويا ب اور الماميت كرويا ب. حضرت ابن مسعود جانز سنے قربایا سب تر شوت ہے۔ حضرت عمر بن المخطاب جونز نے قربایا حاکم کو رشوت دیما سب

الم احدين على ان عنى حمي متونى عدمه روايت كرسته بن:

مردق بیان کرتے ہیں کہ میں حضرت ابن مسعود برانے کے پاس بیٹنا ہوا تھا ایک مخص نے ان سے پوچھا سے سے بہتے كت ين؟ انهول في كما فيعلد كرن عن د شوت لين فرلما يه كفرب- يحريه آعت يزهى وسى لم يحسكم بسما امول الله ضاولت ك هم الكافرون (المائدة ٣٣) إورجوالله كانل كي موسة كم مواقع عمم نه كرس وه كافريس-

(مند ابو بعلی عنه وقم الدین: ۱۷۳۷۱ انتهم الکبیر عنه وقم الدین: معه ماند البیمی نے کماس کی مند میج ہے الجمع الزوائد ا ج٧٠ ص ٢٠٠ المطالب العاليه اج٢٠ رقم الحديث: ١٣٥٥ سن كبري لليمتى ع ١٠٠ ص ١٠٠١)

الم محدين جرير طبري متوفى اسام الي سند ك سات روايت كرت بين

مسروتی بیان کرتے ہیں کہ جس نے حضرت عبداللہ بن مسعود جائی سے سمعت کے متعلق ہو جماانہوں نے فرمایا ایک گفس کی ہے اپنی ماہت طلب کرے وہ اس کی ماہت ہوری کرے 'چروہ اس کو بدیہ وے جس کو وہ تبول کرئے۔ حضرت ابو ہرمیرہ بزینے۔ نے فرمایا زانے کی اجرت سحت ہے' زکی جفتی کی اجرت سحت ہے' نصد گلوانے (رگ كانع) والے كى اجرت سحت باور كنے كى قيت سحت ب

نصد لکوائے (رگ کائے) کی اجرت جائز ہے کیونکہ رسول اللہ بڑچ نے نصد لکواکر اجرت دی ہے اس لیے صدیث کا یہ جز منسوغ ہے۔اام مسلم حضرت ابن عباس رمنی اللہ عنماے روایت کرتے ہیں کہ بنوبیاف کے ایک قلام نے نبی جین کو فصد لكائل اور ني وينجير في اس غلام كواجرت دى كوراس كه مالك سے اس كے فرائ يس كى كرنے كى مفارش كى۔ اگر يہ اجرت سحت (حرام) موتی او آپ عطان کرتے۔

(ميح مسلم " ٢٠٠١) ١٠٠٠ من أوواؤد" رقم الحريث: ٢٢٢٠ مند احرج من رقم الحريث وما ١٠٠٨ ١٠٠٠ معلوم دار الحديث قاہرہ 'نیز الم ، خاری نے حضرت ابن عباس سے روایت کیا کہ نبی ہیتی بنے نصد لکوائی۔ جہام کو اجرت دی اور ناک میں روا ڈال۔ میح بخاري وقم الحديث: ١٥٧٨-٢٧٤٨ سنن ابن ماجه " جها" وقم الحديث: ٣١٣ سنن كيري طنسائل وقم الحديث: ٥٨٨ منذ احر " جها" وقم الحرث: ٣٠١٠ مطبوع هاو الفكو كيوت)

مسلم بن مسبح بیان کرتے ہیں کہ سروق نے کمی مخص کی کمی کام میں شفاحت کی 'اس مخص نے بریہ ہی انہیں باندی وش كى أو مسروق بعد عن فضيناك موئ اور كدا اكر جي معلوم مو ماكد تم ايماكد كر وش تمهاد كام يس مفارش فدكر ما اور آئدہ کی کام میں تماری سفارش نمیں کول گا۔ میں نے مطرت این مسعود جائے ہے یہ سنا ہے کہ جو مخص کسی کا حق دلائے کے لیے سفارش کرے ایکس سے علم دور کرنے کے نیے سفارش کرے پھراس کو بدید دیا جائے جس کووہ قبول کر لے تو يد سحت إلى الماكية الداو عبد الرحن الم قويد محقة تف كر فيعلد كردن بريك لياسحت إلى الم فرايا: قعله كرن ياينا كغربهد

حضرت على بن الى طالب وينيد فرات بين ارك كافته واليل كا جرت وانيه كى اجرت كت كى قيمت والد فيصله كرانية ک اجرت مجوی کی ملحائی مزکی جھتی کی اجرت محم میں رشوت مراب کی قیت اور مردار کی قیت سے ت ہے۔

معرت میداللہ بن مروشی اللہ متمامیان کرتے ہیں کہ وسول اللہ ماللے سے قربایا بروہ کوشت جس کو سبعیت (مل حرام) نے برملا ہو اس کے ماتھ دوزخ کی آگ زیادہ لاکن ہے۔ آپ سے ہے چھاکیا: یار سول اللہ اسعت کیا چزہے؟ آپ نے فرالما عم ين رشوت ويط- (مامع البيان ؟ ١٦ مي ٢٢٥-٢٢٥ مطبور داد الفكر " يروت " ١٥١٥ه)

ر شوت کی اقتسام اور اس کا شرعی علم

علامد حسن بن منعود اوزوندي (العروف به قاشي خال) منوفي ٩٢ ٥ م للبيخ بين:

ر شوت كى حسب زيل وار فتمين ين:

ا- منعب تضاكو عاصل كرف كے ليے رشوت دينا اس رشوت كا ليكانور دينا دونوں حرام إلى-

ا- كوئى عنص الي حق من فيصله كرالے كے ليے قامنى كورشوت دے كيد رشوت جانبين سے حرام ب فواورو فيصله حق اور انساف رجی مویاند مو کیو تک فیملد کریا قامنی کی دسدواری ہے اور اس بر فرض ہے۔ (ای طرح کسی افسر کو اپنا کام کرانے ك ليه رشوت وعالمية بهى جانبين عند حرام ب ميو كله ود كام اس افسركى ويولى ب- (سعيدى مفرله)

٣٠ اچي جان اور مل كو علم اور ضرو سے بچانے كے ليے دشوت دينا ير دشوت صرف لينے والے ير حرام ب ويندوالے ير حرام نسی ہے اس طرح است ال كو عاصل كرنے كے ليے بحى ر شوت دينا جائز ہے اور ليراح وام ہے۔

٣٠ كى مخص كواس كے رشوت دى كه دواس كو ياد شاديا حاكم تك پنجادے تواس د شوت كارينا جائز ہے 'اور ليما حرام ہے۔ (الوي قامني خال على هامش الهنديه مع اص المهم الله الله الله الله الله على المداية على المداية المعلى المداية المداية المعلى المداية المداية المعلى المداية المعلى المداية المعلى المداية المعلى المداية ا שיים שרושר נפולכת ישיים דירואן ולקוט ישנים דרון

الم الو براحمين حسين بيلق متونى ٥٨ مه روايت كيت بين

معرت عبدالله بن محرر منى الله عنما بيان كرت بين كه رسول الله عظير في رشوت دين والي اور رشوت لين والي لعنت قرمائی ہے۔ (سنن کبری ج ۱۰ می ۱۳۹ سند احر ج ۴ رقم الحدیث: ۹۰۲۳)

وصب بن منبد میان کرتے ہیں کہ جس کام میں رشوت دینے والا گنگار ہو آے کیدوہ نسیں ہے جو اپنی جان اور مال سے ظلم اور ضرر دور کرنے کے لیے دی جائے و شوت وہ چزے جس عن وشوت دینے والانس وقت کنگار ہو آے جب تم اس چزے لے روء دوجس پر تمارا حق نمیں ہے۔ اسن کبری ج ۱می ۱۰ مادر تراف تراف کان

الله تعالى كاار شاوي: أكروه آب كياس آئي (تو آب كو القيار ب) خواه ان كه در ميان فيعلد كردي خواه ان

ے اعراض فرمائیں اور اگر آپ ان ہے اعراض کریں گے توبہ آپ کو ہرگز کوئی نفسان نہیں پہنچا عیں گے 'اور اگر آپ فیصلہ کریں توان کے در میان انصف سے فیصلہ کریں 'بے شک اللہ انصاف کرنے والوں ہے محبت کر آ ہے۔(المائدون ۱۳) اہل ذمہ کے در میان فیصلہ کرنے کے متعلق ائمہ اربعہ کا نظریہ

علامد ابوعبدالله محدين احد ماكلي قرطبي متوفى ١٧٨ مد لكصة بير

جن کے متعلق اللہ تعالی نے بی جیجیز کو فیصلہ کرنے یا نہ کرنے کا اختیار دیا ہے ' یہ مدینہ کے وہ یمبود تھے جن ہے ہی جیجیز نے مدینہ میں تشریف لانے کے بعد معلم و کیا تھا' یہ اہل ذمہ جس تھے اور جب کتار اہل ذمہ نہ ہوں تو ان کے در میان فیصلہ کرنا ہم یرواجب جس ہے۔

عربان عبدالعزر اور محی نے یہ کما ہے کہ ذیر بحث آیت دو سری آیت ہے منسوخ ہو گئے ہو ایت یہ ہے: وَآنِ احْدَدُمْ بَيْسَهُمْ بِسَنَا اَسْرَلَ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الله علی اور آپ ان کے درمیان اللہ کے نازل کے ہوئے

(السالده: ٣٩) .. (قرآن) كما الله يعلمك

الم زہری نے کہا ہے "اس پر عمل ہو تارہ کہ اہل گلب کو ان کے حقوق اور وراث کے مطلات میں ان کے دین امکام
کی طرف لوٹایا جائے گا۔ ہل اگر وہ اللہ کے تھم ہے ہم ایش کریں تو انہیں افلہ کے تھم کی طرف لوٹایا جائے گا۔ علامہ سمرقتری
نے کہا یہ قول اہم ابو صغیعے کے قول کے مطابق ہے "کہ جب تک وہ دہارے فیصلہ پر راضی نہ ہوں "ان کے در میان فیصلہ نہیں کیا
جائے گا اور اہم نماس نے النائخ والمنسوخ میں زیر تقریر آیت کے متعلق کما ہے کہ یہ (الل کدو، ۱۳۹) ہے مفسوح ہے "کیو تکہ یہ آیت
اس وقت نازل ہوئی تھی جب نمی بڑی ابترائ مرید میں آئے ہے۔ اس وقت عربہ میں یہودی بہت زیادہ تھے اور اس وقت کے
طالت کے لیمی مناسب تھا کہ انہیں ان کے امکام کی طرف لوٹا دیا جائے "اور جب اسلام قوی ہوگیا تو اللہ عن و جال نے یہ آیت
نازل کی اور آپ ان کے درمیان اللہ کے نازل کے ہوئے (قر آن) کے مطابق فیصلہ کیجئے مصرت ابن مجاب 'تجابہ ' تکرمہ ' زہری '

عربن عبدالعزر اور سدى كاكى قول ب اوركى فام شاخى كاصحح قول ب كو كله الله تعالى فرايا ب: حَشَى يُعْطِلُوا الْمُوسِرِيمَةُ عَلَّى بَنَدٍ وَهُمْ صَاغِرُونَ حَيْ كه وه النه إلا من الله وي ور آنما فيكه وه ذليل (المسائدة: ٢١) مول.

ان کے ذیل ہونے کا معنی ہے ہے کہ ان پر مسلمانوں کے منام جاری کے جا کیں اور ان کو ان کے احکام کی طرف نہ لوٹایا جائے 'اور جب ہے واجب ہے تو زیر تغییر آبت کا منسوخ ہوٹا واجب ہوا۔ اہم ابو صنیفہ 'اہم ابو ہوسف اور اہم محر کا بھی ہی تو سے۔ اس میں ان کا کوئی اختلاف نمیں ہے کہ جب اہل کتاب اہم کے سامنے اپنا مقد مہ فیش کریں 'تو اہم کے لیے اس کا فیصلہ کرنے ہوئے ہے اس کا فیصلہ کرنے جائز نمیں ہے۔ البتدا اہم ابوضیفہ سے قرائے میں کہ جب عورت اور اس کا فاوند آ کے تو اہم ان کے در میان عدل سے فیصلہ کرے اور آگر صرف مورت آگے اور اس کا فلوند راضی نہ ہو تو فیصلہ نہ کرے۔

(الجامع لا حكام المقرآن "ج ٣ من ١٣١٠ ١٣١ مطبوعه داد الفكو " يردت ١٣١٥ مه)

قامنى عبدالله بن عربيناوى شافعي متوفى ١٨٥ م لكست بين

جب قاضی کے پاس اہل کتاب (ائی) مقدمہ دائز کریں توہی پر قیملہ کرناواجب ہے یااس کو فیملہ کرنے یانہ کرنے کا اعتیار ہے۔ اہام شافعی کا ایک قول ہے ہے کہ اس کو افتیار ہے اور زیادہ سمجے ہے ہے کہ اس پر فیملہ کرناواجب ہے کہ جم نے جزیہ لے کران سے علم کو دور کرنے کا انتزام کیا ہے اور یہ آیت اہل ذمہ کے متعلق نہیں ہے۔

(انوار التمويل مع ماشيته الكازروني مع ٢٠٠١م ١٣٢١ مطبوعه دار الفكو أبيروت ١٣١٧ه)

علامد ابرانفرج عبد الرحمن بن على بن محرجوزى منبل موتى عدد لكست بن:

الم احدین منبل نے کما میح یہ ہے کہ یہ آے مور والمائدوں سے منسوخ ہے اور اب حاکم پر اوزم ہے کہ جب اس کے پاس کے پاس کے اس کے درمیان قبطہ کرے۔ حضرت ابن عباس عطاء 'مجام 'مخرمہ اور مدی کائی قول ہے۔ پاس افل ذمہ مقدمہ لا کمی 'تو وہ ان کے درمیان قبطہ کرے۔ حضرت ابن عباس عطاء 'مجام کرمہ اور مدی کائی قول ہے۔ (زاد الممیر 'ج ۲'م سالا "مطبور کمتب اسلای 'بیروت 'ے ۱۳۰۰ھ)

علامد ابو بمراحد بن على رازى بصاص حنى متوفى ١٠١٠ عد ككفة بين:

زر بحث آیت فان حداء و کشد عاصف سبب و اعرض عسب الدائد ، ۱۳۲ سے ظاہرے که الل ذمد کے درمیان فیمل کرنے یا نہ کرنے کا حاکم کو اختیار ہے کین یہ اختیار اس کے بعد نازل ہوئے والی آیت و ال احکم ببسب مرمیان فیمل کرنے یا نہ کرنے کا حاکم کو اختیار ہے گئن یہ اختیار کے مفوخ ہوئے یہ یہ آعت بھی دلالت کرتی ہے:
بدما اندل الله (الما کدونه ۳۷) سے مفوخ ہوگیا۔ نیزا اختیار کے مفوخ ہوئے یہ یہ آعت بھی دلالت کرتی ہے:

سوجس نے اہل زمد کے ور میان فیملہ نہیں کیا وہ اس وحید کامصداق ہو گیا۔

ید بھی احمال ہے کہ پہلے ہے آئے تا نال ہوئی ضان جاء و کٹ صاحب سب میسم او اعرض عند میسم (المائدہ: ۳۲) اس دقت یمود یون کو ذی نہیں قرار دیا تھا اور نہ ان پر جزید فرض کیا گیا تھا اور جب اللہ تعالی نے ان ہے جزید لینے فا علم دیا اور ان پر اسلام کے احکام جاری کیے ' تو پھران کے در میان اللہ تعالی کے نازل کردد احکام کے مطابق فیصلہ کرنے کا تھم دیا۔

(الكام القرآن عمام معيور سيل اكدي الايور ممااه)

خلاصہ یہ ہے کہ اتمد اربد کے نزدیک زیر بحث آیت (المائدہ ۱۳۹)المائدہ، ۱۹۹ سے منسوخ ہو گئے ہے اور ابتداء اسلام جس

عِيانِ القر أن

ما کم کو یہ افتیار تھا کہ جب اہل کتاب آپتا مقدمہ پیش کریں تو وہ ان کے در میان فیصلہ کرے یا نہ کرے 'لیکن اب یہ افتیار منسوخ کر دیا کیا اور اب حاکم پر ان کے در میان فیصلہ کرنا واجب ہے۔ لیکن ان کے عالمی 'کاروباری اور فی معالمات میں مسلمان حاکم مرافظت نمیں کرے گا 'اور وہ ان معالمات میں اپنے فیصب کے مطابق اپنے علماء سے فیصلہ کرا کمیں گے۔ انبیتہ آاکر وہ کھلے عام اپنے کانم کریں جس سے ملک کے امن اور ملامتی کو خطرہ لاحق ہو'یا ہے دیائی اور بدچانی کو فروغ ہو 'تو پھر مسلمان حاکم ان کو اس سے دوک دے گا 'اور جب وہ از خود اپنا کوئی مقدمہ مسلمان حاکم کے سامنے پیش کریں' تو اس پر ان کے در میان عدل سے فیصلہ کرنا واجب ہے۔

الله تعالی کاارشادہ: اور وہ آپ کو کیے مصف بنا کم سے ملائکہ ان کے پاس تورات ہے جس میں اللہ کا تھم ہے مجراس کے باد دور وہ روگر دانی کرتے میں اور وہ ایمان لانے والے تسین ہیں۔ (المائدونہ سم)

موجوده تورات من آيت رجم

اس آیت جمی اللہ تعالی نے یہ خبردی ہے کہ ذنا کرتے والوں کے لیے رجم (سنگسار) کرتے کا تھم تورات جی موجود ہاور اس سے پہلے ہم سمج مسلم مدعث فبر (۱۲۹۹) ہے ۱۳۳ کے تواقے ہیان کر بچے جی کہ جب جی باجیر کیاں یہودی دو ڈائیوں امرد اور حورت) کا مقدمہ لے کر آئے تو نی باجیر نے فرایا تورات کو پر صنا شروع کیا تواس لے رجم کی آجت پر اپنا ہاتھ دکھ دیا۔ حضرت عبداللہ بن سلام نے رسول اللہ بججیر سے عرض کیا اس سے فرائی سے اپنا ہاتھ بنا ہاتھ مائے اور اب سے اس موقد پر یہ آیت نازل ہوئی اور اب سے ۱۳ مال گزر گئے اس عرصہ جی بنات ہوات کی گئیں ایکن سے قرآن کا مجرد ہے کہ تورات جی ہے جب سے عرض کیا تار علی موجود ہے۔

پر آگریہ بات کی ہوکہ لڑکی میں کنوارے پن کے نشان تھی پائے گئے تو وہ اس لڑکی کو اس کے باپ کے گھر کے دروازہ پر نکال لا کیں 'اور اس کے شرکے لوگ اے سنگار کریں کہ وہ مرجائے 'کیونکہ اس نے اسرائیل کے درمیان شرارت کی اس فیاب کے گھریں فاحشہ بن کیا۔ یوں تو الی برائی کو اپند درمیان ہے درمیان ہے درمیان سے دفع کرنا 'اگر کوئی مرد کسی شو ہروائی فورت سے زناکرتے پان جا سے اپنی وہ مرد بھی جس نے اس فورت سے صحبت کی اور وہ مورت بھی۔ یوں تو اسرائیل میں سے اس مورت سے صحبت کی اور وہ مورت بھی۔ یوں تو اسرائیل میں سے الی برائی دفع کرنے۔

آگر کوئی کواری لڑی کمی مخص سے مضوب ہوگئی ہواور کوئی دو مرااے شریعی پاکراس سے معیت کرے قرتم ان دونوں کو اس شرکے بھا تک پر نکال لاتا اور ان کو تم سنگسار کردیناکہ وہ مرجا کیں اڑکی کو اس لیے کہ دہ شریعی ہوتے ہوئے نہ چلائی اور مرد کو اس لیے کہ اس نے اپنے ہمسانیہ کی بیوی کو بے حرمت کیا ہوں قوالی برائی کو اپنے در میان سے دفع کریا۔

(كباب مقدى (ح اناهمد نامر) استثناء "باب ٢٠- آيت ٢٠-٢١" آيت ١٨٥ معلوم باكل سوساكل الاور)

الَّذِينَ ٱسۡلَمُوالِلَّذِينَ هَادُوْاوَالرَّبَّانِيُّونَ وَالْاَحْبَارُبِمَّا

اس سے مطابات میروکا فیصلہ کرتے وسے ، اور ان ولیے اور طمام (فیصلہ کرتے دسے) کیوں کہ ان سے

لران محي عني و الدوه الله ير محواه سنت ، أورج الترسك كازل ا درمیری آیترل کے بدلای متوڈی تیمنت نہ لو ، ے برے دا حکام اے موافق فیصلہ دکریں کو وہی وگ ا درہم نے الن پر تورات مان ، الد آنک کا بدل برل کان اور دائمت کا بدله دائت ہے ، تر بس نے توق سے بدار دیا تر دہ اس رکے گاہ) کا گنارہ ہے ، اور ج انتر کے نازل کے ہرے (اسلام) کے موافق جمعے و کری ہو دی وگ عام یں 0 الله تعالى كارشاوب: ب شكب م فرات كو نازل كياجس من بدايت اور لور ب- (الماكد: ٣١٠) شرائع سابغته كاجم يرججت بونا اس آیت یں بدایت سے مراد احکام شرعیہ میں اور اور سے مراد اصول اور مقائد ہیں۔ دو مرا قول یہ ہے کہ بدایت سے مرادوین حق کی طرف و ہنمائی ہے اور نورے مرادان احکام کو کھول کرمیان کرتاہے جو ان پر اخلی تھے۔ تیمرا تول بدہ کہدا بت ے مراد وہ مساکل ہیں جن کو وہ فی موجعے سے بوچے تے اور فورے مراد اس بلت کابیان ہے کہ فی بھیر برحق فی ہیں۔اس آےت میں یہ دلیل ہے کہ ہم سے پہلی شریعت ہمی ہم پراازم ہے " کو فتیکہ اس کامفور فی ہوناہم کو معلوم ہو جائے "کو تک اللہ تعالی نے فرمایا ہے اور ات میں بداعت اور فور ہے اگر ورات کے احکام جمت ند موں تو وہ بداعت اور فور شمیں رہے گی۔ اس آیت می اللہ تعلق لے بیا بتایا ہے کہ زانوں کا جو مقدمہ لے کریہ مارے نی بھیر کے پاس آئے ہیں انبیاء مانقین جو الله تعالى ك معلى اور قراتبروار ين واي مقدات كاتورات ك مطابق نيط كرت رب بي اور اولياء اور علاء بي اس ك جَهَانُ القَر أَنْ

مطابی نیم کرتے رہ ہیں اور اس ہے مراویہ ہے کہ اعادے نی سیدنا تھے بچھیے نے ان زائیوں کے متعلق ہو رہم کا فیصلہ کیا

ہو اور ہی تورات کے مطابق ہے اور ان علماء ہے قورات کی حفاظت کرائی گئی ہے اور یہ علماء اس کی شاوت دیے تے کہ نہیں سے جو یہود ہوں کے مقدمات بی قورات کے مطابق فیصلہ کیا ہے 'وہ سجے ہے۔ معرت ابن عباس رخی اللہ مختمانے اس کی تغییر علی متعلق شاوت دیے تھے کہ آب اللہ کے برح نی ہیں 'آپ پر اللہ کی طرف سے کلام عازل ہوا ہے 'اور یمود ہوں کے اس مقدمہ میں آپ نے جو قیصلہ کیا ہے 'وہ مجھے ہور قورات کے مطابق ہے۔ اس کے بعد اللہ تعلق نے یمود کے علماء اور وابہوں ہے قربایا سوتم انوگوں ہے نہ ڈرو 'جھے ہے ڈرواور میری آخوں کے براہ میں تھو ڈی بعد اللہ تعلق نے اللہ کی صورہ کو عائمة نہ کیا اور امیروں کے براہ میں تھو ڈی گئیت نہ کو اگر تم نے اللہ کی صورہ کو عائمة نہ کیا اور امیروں کے نزرانوں کو اللہ کی صورہ کو عائمة نہ کیا اور امیروں کے نزرانوں کو اللہ کی صورہ کو عائمة نہ کیا اور امیروں کے نزرانوں کو اللہ کی صورہ کو عائمة نہ کیا اور اس کے اس تھے میں قورات کی اور اس کیا تو بھر آخرت میں تم کو بہت ہو اٹاک اور داگی عزاب ہوگا۔ اس آجے کہ اس صور کے بیان کیا تو بھر آخرت میں تم کو بہت ہو اٹاک اور داگی عزاب ہوگا۔ اس آجے کہ اس حصر سے بھی یہ داخل کی اور داگی کی تورات کی تورات کی تورات کی تورات کی تورات کی تورات کے جو ادکام تر آن اور مدے میں بغیرانکار کے بیان کیا تھی ہو کے اورک کا فریس سے داخل کی سورہ کی تاز کی جو تیاں کے گئی ہیں 'ورک کا گئی تار سے جو تارک کو بھر تارک کی بیان کیا تو اور جو اللہ کے عائل کے ہو کے (احکام) کے موافق فیصلہ نہ کریں 'مودی اوگ کا فر شارک کیا کہ موری کی گئی تورک کا فرات کی مورہ کی تارک کے بیان کیا تورک کا فرات کی خواصلہ کی اس کی مورہ کو کیا تورک کا فرات کی دورہ کو کا فرات کی کا فرات کی تورک کی تورک کی دورہ کی تورک کی کر مورہ کی کا فرات کی دورہ کی کی تورک کی کا فرات کی کر تورک کی دورہ کی کر تورک کر تورک کی کر تورک کر تورک کی کر تورک کی کر تورک کی کر تورک کی کر تورک کر تورک کر

(Mr. (Lill)

قرآن کے مطابق فیصلہ نہ کرنے کا تغربونا

(البائرينية)

اور ان آجول کامنموم عام ہے "کیونک قرآن مجیدے موافق فیصلہ نہ کرناظم اور فسق ہے 'خواہ فیصلہ نہ کرنے والا مسلمان مویا بہودی مویا عیسائی۔

اس آیت میں اللہ تعالی نے حکام پر تمن یا تیں فرض کی ہیں:

ا- فيمله كرف يس الى نغسانى خوايشات كى الباع تدكري بكد الله ك عازل كي موعة عم عد مطابق فيعله كري-

٢- فيعلم كرية عن لوكون سے ندوري الله سے وري-

۲- الله کی جنوں کے بدلہ میں تعوزی قیت نہ لیں۔

اس کامعنی ہے ہے کہ رشوت یا نذوانہ لے کرعدل کو ترک کر کے بے انسانی سے فیملہ نہ کریں اس سلمہ میں ہے صدے فیش نظرد کمنی جاہیے:

الم احرين على التعميمي متوفى ٥٠٠٥ مدوايت كرت بيل:

صفرت ابوسعید خدری براین بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بین نے قربایا تم بیں ہے کمی مخص کو نوگوں کا فوف جن کوئی یا عظیم نفیحت کرنے ہے بازنہ رکھے مدہب اے اسکاعلم ہو جمیع تک ہے فوف ند موت کو نزدیک کرسکتا ہے نہ رزق کودور کرسکتا ہے۔ (مند ابو بعلی 'ج'' رقم الحدث: ۱۳۱۱ المجم الاوسلا 'ج'و' رقم الحدیث: ۲۸۲۵ الاطاب العالیہ ۲۳۵۳ وافق البیثی نے کہا ہے 'کہ اس مدیث کی شد سمجے ہے۔ جمع الزوائد 'جے اس سائ ۱۳۷۲)

الله تعالی کاارشاد ہے: اور ہم نے ان پر تورات میں یہ قرض کیاتھا کہ جان کا بدلہ جان اور آگھ کا بدلہ آگھ اور جاک کا بدلہ ناک اور کان کا بدلہ کان اور دانت کا بدلہ وانت اور زخموں میں بدلہ ہے" (افرائدہ: ۴۵)

تصاص کے علم کاشان نزول

المم ابوجعم محدين جرير طبري متوفى ماسمه روايت كرت ين

ابن جری بیان کرتے ہیں جب بوقو مطلب نے ہوائی کیا جی وہ کو کہ جہا ہے۔ ان کے درمیان اور ہارے بھائی بو تغییر کے درمیان فیصلہ کردیاتی اور ہارے بھائی بو تغییر کے درمیان فیصلہ کردیاتی ہے۔ اگر بنو تغییر ہی جہا ہے افضل ایر آ اور عزت دار سمجھتے تھے۔ اگر بنو تغییر ہے کوئی مخص جو قو مطلبہ کے کسی قوم کو قبل کردیا تو وہ اے آد می دعت دیتے تھے اور اگر ان کے کسی قرد کو بنوقی مطلبہ کا کوئی مخص جو گل کردیا تو اس سے بچوری دعت لیے تھے۔ نی جہاج کے قرایا قو مطلب کا فون تغییری کے دار انہ ہے ہے دی کر بنو تغییر کے قرایا قو مطلب کا فون تغیری کے دار انہ ہی مودود کو جاری کریں گفشپ ناک ہوگئ اور انہوں نے کہا بم رجم کے معالمہ جس آپ کی اطاحت نمیں کریں گے اور انہ ہوئی تی مودود کو جاری کریں گا فی اور جم نے اس دات ہے آئے معالم ہوئی کیا تم جالیت کے تھم کو طلب کر دہے ہو؟ (المائدہ: میں) اور یہ آیت بازل ہوئی کیا تم جالیت کے تھم کو طلب کر دہے ہو؟ (المائدہ: میں) اور یہ آیت بازل ہوئی اور جم نے ان پر قورات پی ہے فرش کیا تھا کہ جان کا جل کی اور جم نے ان پر قورات پی ہے جن پر بہا جسے کی اطاحت انہ کی کو طلب کر دے ہو جارا المائدہ: میں) اور یہ آئے کی دوران کی کا جار کی آئے کہ دوران کی دوران کی دوران کی دوران کی دوران کی دوران کی کا جارات کی دوران کے دوران کی دوران ک

ذی کے بدلے مسلمان کو قبل کرنے میں زاہب نقهاء

اس آیت میں اللہ تعالی نے مطلقاً فرایا ہے کہ جان کا برا جان ہے اور اس میں مسلمان یا کافر کی تیر نہیں انگائی۔ اس لیے الم اعظم ابو صنیفہ رحمہ اللہ فرماتے ہیں مسلمان کو قتل کر دیا جائے گام اعظم ابو صنیفہ رحمہ اللہ فرماتے ہیں مسلمان کو قتل کر دیا جائے گا جیسا کہ اس آیت کے عموم اور اطلاق سے واضح ہوتا ہے اور قام مالک امام شافعی اور قام احدار عمم اللہ بی کر ذی کا فرکے بدلہ میں مسلمان کو قتل نہیں کیا جائے گا۔ ان کا استدازال اس صدیت ہے:

المم محرين اسائيل عاري متونى ٢٥١ه روايت كرتي بين

ابو بھیفہ بیان کرتے ہیں کہ میں نے حضرت علی جوڑے سے پوچھاکیا آپ کے پاس ایس کوئی چڑہ جو قرآن میں نہ ہو؟ حضرت علی نے فرمایا اس ذات کی تئم جس نے دانے کو چرااور روح کو پیدا کیا کہارے پاس قرآن کے سوااور کوئی چڑ نہیں ہے' ماسوالی فیم کے جو قرآن کو سیجھنے کے لیے دی گئی ہے' اور ماسوالی کے جو اس محیفہ میں ہے۔ میں نے پوچھالی محیفہ میں کیا ہے؟ فرمایا وہ تداور قیدیوں کو چھڑانے کے احکام اور یہ تھم کہ مسلمان کو کافر کے بدلہ میں قبل نہیں کیا جائے گا۔

(من المعادى كا ارقم المعت: ۱۱ ج۳ وقم المعتد ۲۰۰۲ ج۴ وقم المعتد ۱۳۱۲ سنن ترزى ج۳ وقم المعتد ۱۳۱۵ من المعتد ۱۳۱۵ سنن فرائى وقم المععث: ۱۹۵۸ ۴ سنن أيل باجر " ۳۲ وقم المعتث: ۱۳۵۸ منو اتر " ج۴ وقم المعتد ۱۹۲۰ ۱۹۹۰)

الم امتكم اس صعت كايد جواب ديت بيس كه اس صعت ميس كافر سه مراد كافر حرلي بي مين كافر حرلي كيدل مي

بيان القر أن

سلمان کو قتل نہیں کیاجائے گا' تا کہ قرآن مجیداور مدیث یں تعارض نہ ہو اور قرآن کے عموم کو مقید کرنے کے بجائے مدیث كو مقيد كرك قرآن مجيد ك ملاح كرناصول ك مطابق ب- الام اعظم كى تأتيم صب ول احادث إن المام على بن عمروار تطني متوفى ٨٥ مهد روايت كرت إن:

حضرت ابن عمر رضی الله عنما بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ عظیم نے ایک مسلمان کو ایک معلمہ (جس کافرے معلمہ وہوا مد) کے برنہ میں قبل کردیا اور فرملیا جو لوگ اپنے معلمہ و کو ہور اکرتے ہیں میں ان میں سب سے بڑھ کر کریم ہوں۔

(سنن دار تلنی مج ۳٬ رقم الدیث:۳۲۳۲ سنن کبری تشیمتی مج ۸٬ مس ۳۰)

عبد الرحمٰن بن البليماني بيان كرتے ہيں كہ ہى ہي ہي كاس مسلمان ہے قصاص لياجس نے ايك يبودي كو تل كرديا تھا۔ رمادی نے کما مسلمان سے دی کافصاص اواور فرمایا:جو لوگ اسے حد کو بع راکری میں ان میں سب سے زیادہ کریم جو س (سنن دار تعنی ج ۳ و تم الدیث: ۳۴۳۳)

عبدائر حمٰن بن البلیمانی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ جیجیز نے ایک ذمی کے بدلہ بٹی اہل قبیلہ کے ایک مخض کو قتل کر دیا اور قربایا جو لوگ اسے حمد کو ہو را کرتے میں اس ان میں سب سے زیادہ کرم ہوں۔

اسنن دار تلنی مج ۳ رقم الدیث:۳۴۳۴)

ہر چند کہ ان احادیث کی اسانید ضعیف ہیں 'لیکن تعدد اسانید کی دجہ ہے یہ احادیث حسن تغیرہ ہیں اور لا تق استدامال ہیں جبكه المام المنكم ابو منيفه رحمه الله كااصل استدالل قرآن مجيد سے اور به اطورت مائد كے مرتب ميں ہيں۔ تورات میں قرآن مجید کی میدانت

قرآن مجید نے تورات کے حوالے ہے بیان کیا ہے کہ جان کابدار جان ہے۔ (الخ) بیر آیات اب بھی تورات میں موجود ہیں: اور جو کوئی کسی آدی کو مار ڈالے وہ ضرور جان سے مارا جائے 'اور آگر کوئی محض اینے بمسلیہ کو عیب وار منادے تو جیسااس نے کیا ا ویهائی اس سے کیا جائے۔ لیعتی عضو تو زنے کے بدلہ میں عضو تو زناہو اور آگھ کے بدلہ آگھ اور دانت کے بدلہ وانت 'جیسا حیب اس نے دو سرسے آدی میں پردا کردیا ہے اوسائ اس میں بھی کردیا جائے۔

(يرانا عمد نامه الربار "باب ۲۴ أيت ۲۱-۲۰-۱۸ التاب مقد س المن ۱۱۸ مطبوعه الدور)

اور تخد كو ذراترس ند آئة جان كابدلد جان "آنكو كابدله "كو"دانت كابدلد دانت" باند كابدله باند اور باؤس كابدله پاؤس جو- (برأنا حمد نامه "استثناء" باب ١٩" آيت الا "كناب مقدس من هن المراه مطبوء الا بور)

سینکندں سل گزر گئے 'قورات میں بہت زیادہ تریفات کی گئی ہیں۔اس کے بلوجود قرآن مجید نے قورات کی جس آیت کا حوالہ دیا ہے' وہ آج بھی تورات میں ای طرح موجود ہے' اور یہ قر آن مجید کے صادق اور پر حق ہونے کی بہت تو کی دلیل ہے' حالا نک یمودی اس آیت کو تو دات سے نکل کتے تھے اور پھر مسلمانوں ہے کہتے کہ قر آن نے پید کہاہے کہ تو رات میں یہ تھم ہے ' حالا تکہ تو رات میں ہیں تھم نہیں ہے "لیکن وہ ایسانہ کر پیکے" اور اللہ تعالیٰ نے مخالفین سکے ہاتھوں ہے اس آیت کی حفاظت کرائی جو قرآن جيد کي مصدتي ہے۔

اعضاء کے قصاص کی کیفیت میں نداہب اربعہ

علامد ابو بكرا حد بن على دازي بصاص حنى متونى ١٥٠ مه الكفية بس:

آ تھے کا بدل آ تھے ہے 'جارے نزدیک اس کا یہ معنی ہے کہ ایک آ تھے پرٹی باندھ دی جائے اور شیشہ گرم کر کے دو سری آ تھے

ئ**ېيان القر ان**

ر رکھ دیا جائے عن کہ اس کی روشنی جلی جائے۔ کیو تکہ جس مخص نے کمی کی آگھ ٹکال ہے اس کی آگھ اور جس کی آگھ ٹکالی منی ہے "اس کی آ کھ دونوں یالکل مساوی نہیں ہیں "اس لیے آگر جنی علیہ کی آ کھ کے بدلد میں جانی کی آ کھ نکال دی جائے ' تو ہورا برار نسیں ہوگا اور قاس کا نقاضا ہورا نسیں حو گا۔ کو تک قصاص کا معنى ہے كسى شے كى مثل لينك اى طرح يورى تاك ين بى قصاص متعور نیس ہے کو تکہ بڑی میں قصاص نیس ہو آل الدندا آگر ناک کا صرف زم حصد کاناہے تو اس میں قصاص لیا جائے كدام الإيسف في كمام محد أكر فاك يز م كان دى كى ب قاس من تصاص ليا جائ كداى طرح الد تفاسل اور زبان م بھی تصاص لیا جائے کا اور اہم محرے کما ہے کہ آگر کمی مخض نے کمی کی ناک زبان یا آلد کو جڑے کاف دیا ہے تواس میں قصاص نہیں لیا جائے گا۔ (کیونک یہ اصفاء دوسرے اعضاء کی مثل اور مساوی نہیں ہوتے) اگر کان کلٹ دیا جائے تو اس میں تساس لیا جائے گا۔ ای طرح دانت بی بھی تعاص لیا جائے گالور دانت کے علادہ اور کمی بڑی میں تصاص نہیں لیا جائے گا۔ (احكام القرآن عوم وووج مطبوعه ميل اكثري لا بور الموساه)

قامني عبدالله بن مربيناوي شافعي متوني ١٨٥٥ م لكيت بن

آ كى كى بدلى آكى كى بدلىد ناك كان كى بدلى كان اور دانت كى بدلى دانت كو نكل ديا جائ كا

(انوارالتنزيل مع افكازروني عن مه ٣٢٩ مطبور داو الفكر ابيروت ١٦١١ماه)

علامه عبدالله بن قدامه مقدى منيلى متونى و الد كلمة بن:

الم احدين عنبل ك زديك بحى ان اعدادش قصاص لياجات كك

(الكالى فقد الامام احد "ج مع مع ملاح مطبوعه وار الكتب الطبيه مهامات)

علامہ قرطبی اکل متوفی ۱۷۸ مدے لکھا ہے کہ ان اعضاء کے تصاص میں ظاہر قرآن پر عمل کرنا اولی ہے۔

(الجامع لا مكام التركان " يوفاص مى ١٠١١ مطبوعدة إللكو "بيروت ١٠١٤ هـ)

بدلدند لينے كى نسيلت

الله تعالى كاارشادے: وجس نے فوش سے بدارواتوں اس (ك كناه) كاكفارو ب-(المائدون) اس آیت کی ایک تغییریہ ہے کہ اگر جنابہ (جرم) کرنے والے نے تائب ہو کر خود کو خوشی کے ساتھ مدے لیے پیش کر ویا تراس کاید عمل اس کے محتلہ کا کفارہ ہو جائے گا۔ اہم مسلم حصرت مباوہ بن الصامت براین سے روایت کرتے ہیں کہ رسول الله عليد عيم عدديد مداليا مم الله ك ماته كى و شرك ندكرين بورى ندكرين او كرين اوركى كو ماحل قل ندكرين-جس نے یہ حمد پوراکیا اس کا براللہ کے زمد اکرم) پر ہے اور جس نے ان سے کوئی کام کیااور اس پر حد جاری ہوئی توبید اس ك كناد كاكفاره ب- (مح مسلم مدودام مح عفاري مديدم) اور دوسرى تغيريه بكد أكر بدلد لين والي في جنايت (جرم) كرف والے كومعاف كرديا اور اس سه بدل نه لياتواس كابير عمل اس كے كنابوں كا كفاره او جائے كا

> قرآن جيدش اس كى تائيد على المت عيد فَمَنْ عَمَّا وَآصَلَتُ فَأَجُرُهُ عَلَى اللَّهِ

موجس نے معاف کر دیا اور اصلاح کی اس کا جر اللہ کے

(الشورى: ۴۰)

اوراس کی تائید جس حسب دیل امادیث جین الم ابوعيني محدين عيني ترفدي متوني الاعدروايت كرية بين:

ومداكرم)ي--

ابوالسفر بیان کرتے ہیں کہ قریش کے آیک فضی نے افسانو کے آیک فضی کاوانت قر ڈریا افساری نے حضرت معلویہ یہ بہتر ہیں۔

جائیوں کے پاس مقدمہ فیش کیا حضرت معلویہ نے اس ہے کہا ہم جمیس راضی کریں گے۔ اس قریش نے حضرت معلویہ یہ بہت منت عابات کی کہ اس ہے بدلہ نہ لیا چائے محضرت معلویہ نے اس افساری کو بہت مجملیا کی ناس کو بدلہ نہ لینے پر داخی نہ کر سکے۔ پھر حضرت معلویہ نے اس ہے کہا ہے ہوئے نہ کر سکے۔ پھر حضرت معلویہ نے اس ہے کہا تھی اس ہے بدلہ لے اور اس مجلس میں حضرت ابوالدوداء جہائی بھی بیٹے ہوئے تھے۔ انہوں نے کہا میں نے دسول اللہ بھی ہے ایک صدیت می ہے ،جس کو میں نے اپنے کانوں سے فود سنا اور میرے ول نے یاد رکھلہ آپ نے فرایا: جس فیض کو جم میں کوئی تکلیف پہنچ اور وہ اس کو صدقہ کردے تو اللہ اس کافایک ورجہ بائد کرتا ہے اور اس کا ایک گناہ مٹا رہتا ہے۔ انصاری نے وجھا کیا آپ نے دسول اللہ بھی ہے خود یہ حدیث می ہے۔ حضرت ابوالدوداء نے کہا میں سے فود یہ حدیث می ہے۔ حضرت ابوالدوداء نے کہا میں اس کابدلہ چھو ڈری بول۔

ابوالدوداء نے کہا ہم حمیس مجمی محروم نہیں کریں گے پھراس کو بال دیے انصاری نے کہا جس اس کابدلہ چھو ڈری بول۔ معلم دیا۔

(سنن ترزی می ۳۰ دقم الحدیث: ۱۳۵۸ سنن این ماجه و دقم الحدیث: ۱۳۷۳ سند اور می ۱۰ دقع الحدیث: ۱۳۷۳ سنن کبری للیمتی می ۵۵ میام البیان میزی می ۱۳۵۳)

نيزالم احمد بن حنبل متوني اس مدوايت كرتي بين

حضرت عبادہ بن الصامت روز بیان کرتے ہیں کہ عی نے رسول اللہ عظیم کویے فرماتے ہوئے سناہے جس مخض کے جم می کوئی زخم کے اور دہ اس کو صدقہ کردے تو اللہ اس صدقہ کے برابر اس کے گناد مناوے گا۔ جم میں کوئی زخم کے اور دہ اس کو صدقہ کردے تو اللہ تعلق اس صدقہ کے برابر اس کے گناد مناوے گا۔ (علامہ اس شاکرنے کما اس مدے کی مند سمج ہے 'مند احر ' ' تحقیق اس شاکر' جالا' رقم الحدے شدہ ۲۲۲۹۰۰ مطبور وار الحدے ' قاہرہ)

وَقَفَيْنَاعَلَى اكَارِهِمُ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَهُمُ صُرِّقًالِهَا بَيْنَ

اور ہم نے ال ابیوں) کے بعد مینی بن مریم کو بھیا ہو اس قرات کی تعدیق کرنے والے تے

يَكَيْهِ مِنَ التَّوْلِ فِي وَأَتَيْنَاهُ الْإِنْجِيلَ فِيهِ هُنَّى وَنُورُ لا وَ الْمُنْ الْتُولِ الْحَالَ فِيهِ هُنَّى وَنُورُ لا وَ الْمُنْ الْمُنْ التَّوْلِ الْحَالَ فِيهِ هُنَّى وَنُورُ لا وَ الْمُنْ اللَّهُ الْمُنْ الْمُنْ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ الْمُنْ الْمُنْ اللَّهُ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ اللّ

ج ان کے ماسے متی ، اور م نے ان کو اجمیل مطافران جی مرایت اور وراتا ، اور وہ

مُصَرِّقًا لِمَابِينَ يَدُيُهِ مِنَ التَّوْلِي لَوْ وَهُدًى وَمُوعِظَةً

اس قرات کی تصدیق کرتے والی سی جوان کے سامنے علی ، اور وور اجمل) متبین کے لیے برایت اور

لِلْمُتَّقِينَ ﴿ وَلَيْحُكُمُ إِفُلُ الْإِنْجِيْلِ إِنِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ ﴿ وَلَيْحُكُمُ اللَّهُ فِيهُ إِلَّهُ فِي لَهُ إِنَّهُ اللَّهُ فِيهُ ﴿ وَلَيْحُكُمُ اللَّهُ فِيهُ وَلَيْ وَلَيْحُ اللَّهُ فِي إِلَّهُ فِي إِنْهِ اللَّهُ فِي اللَّهُ فِيهُ وَلِي اللَّهُ وَلَيْكُولُ اللَّهُ فِي اللَّهُ فَالَّهُ فِي اللَّهُ فِي اللَّهُ فِي اللَّهُ فِي اللَّهُ فَلْ اللَّهُ فِي إِنْهُ اللَّهُ اللَّهُ فِي إِنْهُ إِلَّهُ اللَّهُ فِي اللّهُ فِي اللَّهُ فِي اللَّهُ فِي اللَّهُ فِي اللَّهُ فِي اللَّهُ فِي اللَّهُ فِي إِلَّهُ اللَّهُ فِي اللَّهُ فَاللَّهُ فِي اللَّهُ فِي اللَّهُ اللَّهُ فَاللَّهُ فَاللَّهُ فِي اللَّهُ فِي اللَّهُ فَاللَّهُ فَا اللَّهُ فَاللَّهُ فِي اللَّهُ اللَّهُ فَاللَّهُ فَاللَّهُ فَاللَّهُ فَاللَّهُ فِي اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ فَاللَّهُ فَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ فَاللَّاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ فَاللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ اللللَّا اللَّلَّ اللللَّلْمُ الللللَّالْمُلْعُلِّ الللَّهُ الللَّهُ ا

تعبت می 0 ادر ایل ایمل ای کے مطابق نیمو کریں جو اخرے ای می نازل کیا ہے ، ادر

مَنُ لَمْ يَخْكُمْ بِمَا اَنْزَلَ اللهُ فَأُولِلِكَ هُوَ الْفِسِ قُونَ ®وَ

جوال الشرك تازل كے بوئے كرمايان ليمدر كري مو وي وك فائل اي 0 اور

هيان القر آڻ

جلدسوم

يا ده جا بليت كا يم طلب كرت بي ه

غيان القر أن

ڵؚڡؘۜۅٛ*ؙ*ۿۭؿؙۅٛۊؚڹؙۅؙؽ

0 4 50 2 8 8 .

اُنلد تعالی کاارشادہ: اور ہم نے ان (نبون) کے بعد میلی بن مریم کو بھیجاجو اس تورات کی تقدیق کرنے والے تھے ہو ان کے سامنے تقی اور ہم نے ان کو انجیل مطافر ہائی جس جس جارت اور توا اور وہ اس تورات کی تقدیق کرنے والی تھی جو اس کے سامنے تھی اور وہ (انجیل) ستھین کے لیے جرارت اور نفیجت تھی۔ (افرا کدو: ۱۳۹)

آیات ممالیقہ سے اور تا اط

اس سے پہنے اللہ تعافی نے یہود کے دو تھم کے اعراض بیان فرائے تھے۔ ایک یہ کہ انہوں نے زناکی مدیس تحریف کردی اور بو گھردہ حرج بیں جما ہوسے اور اس معالمہ بیل ہیں ہو ہیں کو حاکم بیایا۔ دو سرایہ کہ انہوں نے قصاص کے تھم بیس تحریف کردی اور بنو اللہ معالمہ بیس ہی ہو ہیں گا۔ دو سرایہ کہ انہوں نے قصاص کے تھم بیس تحریف کردی اور بنو اللہ معالمہ کے خون کی آدھی دے مقرد کی۔ اب اللہ تعافی ان کے تیمرے اعراض کو بیان قرار یا ہے۔ اللہ تعافی نے بنوا سرائیل کے بنوا سرائیل کے بورا سرائیل نے قورات کے جن ادکام پر عمل کرنا کے بعد مبعوث کے کے تھے۔ صفرت میسی قورات کے معدیق جے کہ یکہ بنوا سرائیل نے قورات کے جن ادکام پر عمل کرنا ہم کہ و زندہ کیا۔ یہ حقیق تصدیق ہے اور انجیل نے بنوقرات کی تقدریق کے اس کا معنی یہ ہمواز دیا تھی ہے کہ انجیل کے بنوا انسان کی طرف پر آب کی تار انسان کی طرف پر آب کی استفین کے لیے جا ایت اور اس کے بنوا انسان کی طرف پر آب ہو اللہ کی عارات کی قور اس کے بنوا کی معراد دہ لوگ ہیں جو اللہ کی عارات کی قور اس کے بنوا کی معرود دہ لوگ ہیں جو اللہ سے اللہ کی عارات کی قور اس کے بنوا کی معرود دہ لوگ ہیں جو اللہ سے اور اس کے بنوا کی میں جو اللہ تعالی کی عارات کی قور اس کے بنوا کی معرود دہ لوگ ہیں جو اللہ سے اللہ اور اس کاموں سے اجتزاب کرتے ہیں جو اللہ تعالی کی عارات کی قور اس کے بنوا ہی معرود دہ لوگ ہیں جو اللہ سے اور اللہ کی عارات کی قور اس کے بنوا کی مورد ہیں۔

۔ اللہ تعافی کاار شاد ہے: اور اہل الجیل اس کے مطابق فیصلہ کریں جو اللہ نے اس میں مازل کیا ہے 'اور جو لوگ اللہ ک مازل کیے ہوئے کے مطابق فیصلہ نہ کریں 'سودی لوگ فاسق میں۔ المائدہ نہ س

زول قرآن کے بعد انجیل پر عمل کے عکم کی توجیہ

روس مربی سے بھر ہیں۔ اور ہیں۔ اگر یہ امتراض کیا جائے کہ قطانی اس وقت ان کو یہ تھم رہا تھا کہ وہ ان ادکام پر عمل کریں جو انجیل عی نہ کو و جیں۔ اگر یہ امتراض کیا جائے کہ قرآن مجید کے نزول کے بود انجیل پر عمل کرنے کے تھم کی کیا توجیہ ہوگی؟ اس کے چند جو ایات ہیں۔ اول: یہ کہ افجیل علی مید ناتھ مرجیح کی فیوت پر جو داد تل موجود جیں اہل افجیل کو جانسے کہ ان داد کل کے مطابق آپ پر ایجان ہے آئی میں مدوم اجواب یہ ہے کہ الل انجیل ان ادعام پر عمل کریں جن کو قرآن نے مشوخ نہیں کیا۔ تیمرا جواب یہ ہے کہ الل انجیل ان ادعام پر عمل کرنے ہے مراویہ ہے کہ انجیل ان ادعام پر عمل کریں جس طرح یمود نے قرات میں جواب یہ ہے کہ انجیل کے انجام پر عمل کرنے ہوئے ہوئے گا ان انجاب اللہ توانی کے عادرہ کو گا دین مقبول نہیں ہے۔ تحریف کردی ہے مطابق تازل کیا تھا اور نزول قرآن کے بعد قرآن مجمد کے علادہ کی آسانی کا رشاد ہے ۔ اور اس کرم ان ایم نے آپ پر یہ کاب تن کے ماتھ نازل کی ہے اور اس کے ماتھ ہو گا کہ ہوئے اور اس کی ماتھ ہوئی کارشاد ہے ۔ اور اس کی ماتھ ہوئی کارشاد ہوئی کی تھوئی کارشاد ہوئی کرنے والی ہے اور اس کی محافظ ہے۔ تو آپ اللہ کے نازل کی ہوئی کار کام کے موافق ان کے اور اس کی ماتھ ہوئی کارشاد ہوئی کی تو میان کی کونظ ہے۔ تو آپ اللہ کی نازل کے جو سے (ادکام) کے موافق ان کی کونظ ہے۔ تو آپ اللہ کی نازل کے جو سے (ادکام) کے موافق ان کے

در میان قیملہ مجنے اور آب کیاں جو حق آیا ہے میں ہے اعراض کرکے ان کی خواہشات کی چیروی نہ کریں۔(المائدون٥١)

غيان القر أن

قرآن مجيد كاسابقه آساني كمابول كامحافظ مونا

اس آن میں قرآن مجید کو سابقہ کتب ساویہ کا محافظ اور محکمبان فربایا ہے۔ اس کی دجہ یہ ہے کہ تورات 'زبور اور انجیل میں کی بیٹی اور تحریف ہوتی ری۔ اس لیے ان ترایوں کا آسانی اور الہامی تراب ہو نامشکوک ہوگیا۔ اس لیے سمی ایسی معظم دلیل کی ضرورت تھی 'جس سے ان کا آسانی تراب ہونا تابت ہو سکے۔ اللہ تعالیٰ نے قرآن مجید کو نازل قربایا اور یہ دعویٰ کیاکہ اس میں کی نہیں ہو سکتی ہ

إِنَّانَحُونَ مَّرَّ لِلَّالَةِ كُرُولْنَّالَة لَحْمِ ظُلُونَ ٥ جَنْكَ مَ فَي قَرْآن عَالَ كِالور بم ي اس ك

(المحمرة ٥) حافت كرة والحي

نيزا قرآن جيد في وحوى كياكداس بس كى جيز كالضاف شيس كياجا سكل فرمايا:

لَا يَهُ أَنِيْهُ وَالْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَبُووَلَا مِنْ حَلَفِهِ السِي الله الله الله الله عنه الله عنه ال (خم السحده: ٣٧) يجها

تیزاللہ تعالی نے چیلنج فرمایا کہ کوئی فض قرآن مجیدی داس کی سی ایک سورت کی مثل نمیں لاسکا

وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَبِّ مِنْ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللهُ الل

چودہ صدیاں گزر چی ہیں اور ون ہدون علم و فن میں ترقی ہو رہ ہور اسلام کے قالف ہی بہت زیادہ ہیں اگر اسکا تک کوئی مثل لاسکا۔ اس لیے ہردور میں تک کوئی مثل لاسکا۔ اس لیے ہردور میں قرآن مجید میں کئی گلہ کی زیادتی بتاسکا نہ کی اور نہ اس کی کسی سورت کی کوئی مثل لاسکا۔ اس لیے ہردور میں قرآن مجید کا کلام اللہ ہونا عابت اور مسلم رہا اور جو تکہ قرآن مجید نے قورات انجیل اور زیور کو آسائی کتابیں قرار دیا ہے اس لیے ان کا دیوو بھی عابد اس طرح کا ہر ہو گیا کہ قرآن مجید سابقہ آسائی کتابوں کا مصدق اور محافظ ہے ایکو تک آگر قرآن مجید نہ ہو تاق محض ان کتابوں ہے قوان کا آسائی کتابیں ہونا کتابی ہونا کہ کہ ہودور میں ان میں تغیر اور تبدل ہوتی آرہا ہے '

اس سے پہلے فریا تھا اگر وہ آپ کے ہاں آئی (آ آپ کو اعتیاد ہے کہ) آپ ان کے درمیان فیصلہ کریں یا ان سے امراض کریں۔(المائدہ: ۴۳) اور اس آیت میں فربلیا ہے آو آپ اللہ کے نازل کیے ہوئے (ادکام) کے موافق ان کے درمیان فیصلہ کی ۔ المائدہ: ۲۷) اس آیت سے پہلی آیت مفسوخ ہو گئے ہا کہلی آیت جزید کا تھم نازل ہونے سے پہلے کی ہے اور دو مرک آیت جزید کا تھم نازل ہونے سے پہلے کی ہے اور دو مرک آیت جزید کا تھم نازل ہونے کے بعد کی ہے۔ یا پہلی آیت ان اہل کا ب کے متعلق ہے جن سے ابتداء اجرت میں مابقہ پر اتھا اور دو مرک آیت ال ذمد کے متعلق ہے جن سے ابتداء اجرت میں مابقہ پر اتھا اور دو مرک آیت ال ذمد کے متعلق ہے۔

الله تعالی کارشادہ: ہم نے تم میں ہرایک کے لیا الگ شریعت اور واضح راہ عمل منائی ہاور آگر اللہ چاہتاتہ تم ب کوایک امت بنادیا اسکن کے ایک الگ الگ الگ الک الک ایک مدے سوتم ایک و مرے ہو کر نیکیاں کو ایک احت بنادیا اسکن اللہ کا مدید سے سوتم ایک دو مرے ہو کہ تیاں کو ایک اللہ کا اللہ

اس آیت میں منساج سے مراد دین ہے اور دین سے مراد وہ عقائد اور اصول میں جو تمام انبیاء علیم الساام میں مشترک

رے۔مثلاً توحید الله تعلق کی صفات انیوت آسانی کماوں فرشتوں مرنے کے بعد اشتے اور برااور مزارِ ایمان لانا اور جو ادکام مب میں مشترک رہے مثلاً قمل مجموث اور زنا کا حرام ہو یا اور شریعت سے مراو ہر ہی کے بیان کیے ہوئے میاوات اور معالمات کے مخصوص طریقے ہیں۔

بعض علاو نے یہ کہا ہے ' شرائع سابقہ ہم پر جمت نہیں ہیں اور انہوں نے اس آیت ہے استدانال کیا ہے کہ ہم نی کی الگ الگ شریعت ہوتی ہے۔ اگر سابقہ شریعت ہم پر جمت ہو تو پھر ہمارے نی کی الگ شریعت کیے ہوگی ؟ اس کا ہوا ہ یہ ہے کہ اللہ تعالی اور اس کے رسول بھی ہے ہے مابقہ شرائع کے جو احکام بھیرا لکار کے ہم سے بیان فرائے ' دود راصل ہماری ہی شریعت ہیں ' کے فکہ ان کو ہمارے نی بھی نے بیان فرائیا ہے۔ ہم این احکام پر اس لیے محل نہیں کرتے کہ وہ بھیلی شریعتوں کے احکام ہیں ' بلکہ ہم ان پر اس لیے محل کرتے ہیں کہ ان کو ہمارے نی بھی ہے لیان فرایا ہے۔ مثل تج کے اکثر ویشترا ممل حضرت ابراہیم طلیل اللہ طبیہ المعام قد والسلام کی یادگار ہیں ' قربانی کرنا حضرت ابراہیم علیہ السلام کی سنت ہے ' اس طرح وضو جس کلی کرہ' ماک ہی پالی ڈالنا اور طمارت کی دیگر دس سنتیں ہی حضرت ابراہیم علیہ السلام کی سنت ہیں' رجم اور قصاص کے احکام تو رات میں ہی تھے اور شروع میں نی بھی ہے فرقاں مجود اور اصاویت محمود جس بیان کے محمد ہیں' رجم کو روا اور ہم ان تمام احکام پر اس لیے ملی کرتے ہیں کہ یہ قرآن مجد اور اصاویت محمود جس بیان کے محمد ہیں۔

شان نزول

الم أبو محد عبد الملك بن بشام منوني مهيد لكمة بن

ابن اسحاقی بیان کرتے ہیں کہ کعب بن اسد "ابن صلوبا" عبدائلہ بن صوریا اور شاس بن قیس نے ایک دو سمرے ہے کہ باچلو (سیدنا) محد میجان کے پاس جا کی۔ شاہدا ہم ان کو این کے دین سے ور غلالے میں کامیاب ہوں۔ کیو نکہ وہ بشریں "وہ مجے اور آپ سے کہ ایا محد (صلی اللہ علی و سلم) آپ جانتے ہیں کہ ہم میود سکہ معزز علاہ اور سروار ہیں اور اگر ہم آپ کی بیروی کریں ہے تو مقدمہ میں حاکم بنا کیں گے۔ اور عاری مخالف نہیں کریں ہے ' جارا اپنی قوم کے بعض لوگوں سے جھڑا ہے 'ہم آپ کو اس مقدمہ میں حاکم بنا کیں گے۔ آپ جارے جی میں اور ان کے خلاف قیصلہ کردیں "تو پھریم آپ پر ایمان لے آکم مے اور آپ کی تقمدیق کریں گے ' دسول اللہ جھیزے نے ان کی اس بات کو ملنے سے انکار کرویا۔ اس موقع پر سے آئیش نازل ہو کیں۔

(الماكرور•٥-٥٩)

(السيرة النيوية على ١٨٠-١٥٩) وار احياء الراث العربي بيوت على البيان ١٦٠ من ١٥٠ هاو الفكو بيروت الباب النزول للواحدي من ٢٠٠٠ وار الكتب العليه بيروت)

الله تعالی ان کو دنیا ی جزیر ، ملاوطن کرنے اور قبل کرنے کی مزارعا چاہتا ہے اور آخرت یں ان کے لیے بہت براعذ اب

الله تعالیٰ کاار شاوے: کیاوہ جالمیت کا تھم طلب کرتے ہیں اور یقین رکھنے والوں کے لیے اللہ سے بھڑاور کس کا تھم

طبيان القر ان

موسكاب؟ (الماكدد ٥٠)

اس آبت کامعنی ہے کہ ہر یہود جنوں نے اپ مقدمہ میں آپ کو حاکم بنایا اور آپ نے ان کے ورمیان عدل سے فیصلہ کردیا' پھر ہد آپ کے فیصلہ سے راضی نہیں ہوئے 'قرکیا ہے جائیت کا فیصلہ چاہتے تھے ' بینی بت پر ستوں اور مشرکوں کا فیصلہ چاہتے تھے۔ حالا نکہ ان کے پاس اللہ کی کرک موجود ہے اور اس میں وی فیصلہ نہ کور ہے جو آپ نے ان کے در میان کیا تھا' اور بی حق ہے اور اس کے خلاف کوئی اور قیصل کرنا جائز نہیں ہے۔ پھرائٹہ تعالی نے ان یہودیوں سے فرمایا: جو مختص اللہ کی وحدا نہت کا اقرار کرتا ہواور اس کی روزیت پر بھین رکھا ہو' اس کے زدیک اللہ کے تحکم اور اس کے فیصلہ سے بہتر اور کس کا فیصلہ ہو سکتا ہے؟

يَاكِيُّهَا الَّذِينَ امَنُوالَاتَتَخِنُ واللَّهُودَ وَالتَّصٰ اولِياءَ

اے ایان والو! یجود اور نصاری کر دوست نه بناؤ ، وہ ایک دوس

بعضه وأولياء بعض ومن يتوله ومنكم فاتك ونه

کے دوست ہیں ، تم یں سے ہوان کو دوست بنائے گا دوال ہی ہی سے واتار) ہو گا ،

اِتَاللّٰهُ لَا يُهْدِى الْقَوْمَ الْطَلِمِينَ ®فَتَرَى الْذِينَ فِي

ب تک افد عام والی کو مرایت ہیں دیا ٥ اور وظیر مے کر جی والی ک دوں

قُلُورِمُ مُّرَضُ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَى إَنَ

ين افعاق کي يماري ہے ده الل کو وف ۽ کھے ہوئے دوري کے بيس ۽ فدت ہے کہ بم يہ کون گرون

تُصِيْبَنَادَآبِرَةٌ فَعَسَى اللهُ أَنْ يَأْلِي بِالْفَتْحِ أَوْ آمْرِ هِنْ

ر آ جائے کی ترب ب کر اند نی نے کے آئے یا این دات ہے د نی کی کن

عِتْدِ لا فَيُصَبِحُوا عَلَى مَا أَسَرُّوا فِي ٱنْفَسِهِمُ وَنْدِ مِينَ ﴿ وَالْمِينَ ﴿ وَالْمَا الْمَا الْمَا

ملامت تو انہوں سے ہو کہ لیے داوں یں چھیا یا ہے وہ اس پر بھٹا نے واسے ہو جائیں و الا

يَقُولُ الَّذِينَ امْنُوَ الْفَؤُلِاءِ الَّذِينَ اقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْلًا

ایان دلے یکس کرکیا یردی یں جنرل نے اللہ کی کی تیس کی کر یہ کیا تنا کہ بے تک ہم مزدر

ٱيْمَانِهِمُ اِنْهُمُ لَمُعَكُمُ حَبِطَتُ اَعْمَالُهُمُ فَأَصِّعُوْ الْحَسِرِيْنَ

نبالے مائڈ یں ، ال کے سب الل طائع ہو گئے اور وہ نقصان اٹنانے والے ہو سگنے 0

هِيانُ القر أَنْ

فلدسوم

وفف لازمر وقت غمران وقت محرل عبدالبصر

ع كا ود أن على بعد الله عود كالمسيد فلك الله طالم أوكول كويد الدوات والمن وجال مو أب ويمس كرك ا جائے۔ پس قریب ہے کہ اللہ فی لے اسے یا چی طرف ۔ (فی کی) کوئی علامت قوانموں نے جو بھو اپنے داوں میں جمیایا ہے وداس پر پچھانے والے ہو جا کیں۔ اور ایمان والے بر کمیں کہ جنوں نے اللہ کی تنمیں کھا کرید کما تھا کہ ب شک ہم ضرور تهارے ساتھ بیں ان کے سب عمل ضائع ہو محے اور وہ محتصلی افعالے والے ہو محق الما کد وسے دی شان نزول الم او عر عبد اللك بن بشام مول ١١٠ه ماني مد كم مان مدايت كرت بي وليدين مباده بن الصامت في بيان كياك جب مو ينتاع في مرسل الله على عديدك كي قو ميدالله بن الي ابن سلوا

يبيان القر أن

جلدسوم

نے بنو قینقاع کاساتھ دیا اور ان کی حابیت میں کوا ہوا۔ معرت مبلوہ بن انسامت رسول افلہ مجھے کے ہاں گئے اور وہ بھی بنو وف بے ان لوگوں میں سے تھے جنہوں نے عبداللہ من انی کی طرف ان کی صابت کرنے کا ملف اٹھایا ہوا تھا۔ انہوں نے اس ملف کو آزدیا اور اللہ مزوجل اور رسول اللہ علین کی خاطران کے ملف سے بری ہو سے۔ انہوں نے کمایارسول اللہ ایس اللہ اس کے رسول اور مومنوں سے دوستی رکھتا ہوں اور ان کافروں کے طف اور ان کی دوستی سے بری ہو آ ہوں۔ سو حضرت عبادہ بن الصامت اور عبدالله بن الي كے متعلق سورة الماكده ١٥٠٠ كى يہ آيات نازل بو كي -

(السيرة التبوية "ع"م ٢٥٥ مطبور واراحياء الراث العمل" بيوت مامع البيان "١٦ مس ١٥٣ مطبور داو الفكو "اسباب نزول

القرآن الواحدي مع المعدي مطبوعه واد الكتب العلي عدي کفار کے ساتھ دوئی کی ممانعت میں قرآن مجید کی آیات

ان آغول می الله تعالی مع ور ير مسلمانول كو كفار كے ساتھ دوسى ركھے سے منع فرماديا ہے اور حسب زيل آغول

مر بی اس روکل ب

وَلَا تُرْكُنُوْا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَدَمَدُ كُمُ النِّثَارُ (مود:١٣)

لَا يَشْجِذِ الْمُوْمِنُونَ الْكَامِرِيْسَ أَوْلِيَا أَيْرِينَ دُونِ الْمُورِيثِينَ (العمران، ١٨)

لاتَتَكِيدُ وابطالَة يُرْدُونِكُمُ (آل عمران،١٥) يَايَهُمَا الَّذِيْنَ أَمَنُوا لَا تَشْجِيدُوا عَدُوْنَ وَ عَدُوَّكُمْ ٱزْلِبَاءُ تُلْقُرُنَ البَّهِمْ بِالْمُودَةِ وَقَدْ كَفَرُوابِمَا حَالًا كُمْ يِنَ الْحَقِي (الممتحنه) لاَ تَبِعِدُ قُومًا كُولُونُ وَاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْأَنِيرِ يُوَاكُونَ مِنْ حَلَا اللَّهَ وَرَسُولُهُ وَ لَوْ كَانُوا

البائه منم اوالسائة منم اور موانهم اوعن يرتهم

ڪالم لوگول سے ميل جول نه رڪوورنه حميس بھي دو زخ

الحان والے مومنوں کے سواکا فرون کو دوست نہ بنائیں۔

اہے موادو مرون کواپنار ازوار نہ ہناؤ۔

ا المان والوامير اور الية دشمنون كوروست شربناز تم الميں دوستی کے بيتام جيج ہو' طالا کلہ انہوں نے اس من کا الكاركيات وتمارياس أياب-

جو الله ير اور قيامت ك دن ير ايان ركح بي " آب اقتم اللہ اور اس کے رسول سے مداوت رکھے والوں کے ساتھ مبت كرنے والان ياكي مع " فوادودان كياب يول إ یے کان کے ہمال بوں یا قرمی رشتہ دار۔

کفار کے ساتھ دوستی کی ممانعت میں احادیث اور آثار الم مسلم بن عبان العبوى حول المعد دوايت كرتم إل

حضرت ابو جريره بعطي ميان كرت بي ك رسول الله على الع فراي يهود اور نصاري كوابتداد مام تدكرو جب تم ان يس ے کی سے راست میں طوتواہے تھ واستے ملے میں مجور کرو۔

(محج مسلم السلام على (١٣١٤) ١٥٥٥ منون ترزي على وقم المدعند ١٠٠٨ مح ابن حيان ٥٠٠ مند احراج مور تم الحديث: اللاك مصنف ميد الرواق" و فم المدعث ١٩٣٥ الاوب المغروا و قم المدعث الاسنن كيري لليصتى علام مهدي

الم او على عدى على ترزى متونى الدوامة كست ال

معرت ابوسعید بریشی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بھی سے فرالا مومن کے سوائمی کو ماتھی ندیاؤ اور متنی کے علاوہ

خيان القر أن

اور کوئی تمهار ا کھانانہ کھائے

(منن تذی جه و آم العدید ۱۳۴۳ من ایوداود جه و اگر العدید ۱۳۸۳ مند اید جه و آم العدید ۱۳۳۳ شعب الایمان و قم العدید ۱۳۸۲)

الم ابويكراحد بن حيين يمنى حوقى ٥٨ مد روايت كرتے إلى:

حضرت جرین عبداللہ میلی بروز بیان کرتے ہیں کہ وسول اللہ بڑھی نے فرایا ہو مخص مشرکین کے ماتھ فمبرا اس کی ومدداری ضمی ہے۔ (شعب الانمان ع) وقم الحدت وساعات واد الکتب العلمیہ وجوت ۱۹۳۱ء)

منزت انس بن مالک برید بیان کرتے ہیں کہ رسول افتہ بیجان کے فرماناتم اپنی انگوشیوں میں عملی کو گئش نہ کرو' اور مشرکین کی آگ سے روشنی حاصل نہ کرو۔ حضرت انس نے اس کی تغییر میں فرمایا لینی تم اپنی انگوشیوں میں مجر نہ لکھواؤ اور اپنے معاملات میں مشرکین سے مشورہ نہ کرو۔ (شعب الانمان' نے کہ رقم الدے شدہ کے اس)

میاش اشعری میان کرتے ہیں کہ حضرت اور موئی اشعری کے پاس ایک ضرائی کاتب تھا۔ حضرت عمر بوری اس کی کتابت سے بہت ڈوش ہوئے۔ حضرت اور موئی کے کہاوہ نعرانی ہے تو حضرت اور موٹی نے کہا حضرت عمر نے جھے (انااور میری دان پر ضرب لگائی اور قرایل اس کو فکال دو اور یہ آیت پڑھی اے ایمان والوۃ اسٹے اور میرے دخمن کو دوست نہ بناؤ۔ (المتحد :۱) اور یہ ایت بڑھی:

اے ایمان والوا یمود اور نصاری کو دوست ندیناؤا دہ ایک دوسرے کے دوست ہیں اتم بی سے جو ان کو دوست بنائے گاا وہ ان بی بی سے شار ہوگا ہے شک اللہ خالم لوگوں کو ہدایت تمیں دیتا۔ (المائدہ 40)

حصرت اوموی کے کہا ہے فدا میں اس سے دوئی تہیں رکھا ہے صرف کابت کریا ہے۔ صرت عرف فرایا کیا تہیں مسلمانوں میں کو کی کاتب نعی ملا تھا؟ بب اللہ نے ان کو دور کردیا ہے تو تم ان کو قریب نہ کروا اور جب اللہ نے ان کو فائن قرار دیا ہے تو تم ان کو اعن نہ بناؤ کو دیب اللہ نے ان کو فائن قرار دیا ہے تو تم ان کو اعن نہ بناؤ کاور جب اللہ نے ان کو ذلیل کیا ہے تو تم ان کو عزت مت دد۔ سنن کبری کی آداب القستاء میں ہم نے اس مدید کو تعصیل سے بیان کیا ہے۔ الاندان عدار تم مهدمین

اج سلمہ بیان کرتے ہیں کے حضرت جرین الحظاب برجی نے قربان الفتہ کے دشمنوں یمود اور نصاری سے ان کی حمید اور ان سے اجتماع کے دنوں میں ان سے اجتماع کو آکے تک ان پر اللہ کا فضب نازل ہوتا ہے ' جھے خدشہ ہے کہ تم پر بھی وہ فضب نہ آ جائے 'اور ان کو اسپنے را آن ہاؤہ ورند تم بھی ان کے اخلاق اختیار کر او کے۔ (شعب الایکان 'جے 'رقم الحریث عمد اللہ علام میں اختیار کر او کے۔ (شعب الایکان 'جے 'رقم الحریث عمد اللہ بن جمود من اختاص رضی اللہ حضمانے قربایا جس محض نے جمیوں کے ملک جس تشود تمایا کی 'اور ان کے نو روز کور مرمان کو متلیا اور ان کی مشامت اختیار کی اور اس طرح تہ پر مرکیاتو وہ قیامت کے دن اس طرح افعایا جائے گا۔

(شعب الاعال " ع"ر قم الحديث: ١٩٣٨)

الم ابو مینی تھے من مینی ترزی متونی اے عد رواہد کرتے ہیں:
حضرت جربی می موافقہ دوجہ بیان کرتے ہیں کہ وسول افقہ رچھ نے شعم کی طرف ایک افتکر بھیجا وہاں کے لوگوں نے
مجدال شن بتاہ لینی شروع کردی۔ فتکر نے ان کو جلدی جلدی قتل کرنا شروع کردیا جب نی پچھ تک یہ خبر پچھی تو آپ نے ان
کے لیے آدھی دے کا تکم فرایا اور فرایا میں می مسلمان سے بری ہوں جو مشرکین کے درمیان دے اسمابہ نے پوچھایار سول اللہ ا

بينان القر أن

معرت سمرة بن بندب بوینی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بیج برے فرمایا مشرکین کے ساتھ سکونت نہ کرو' نہ ان کے ساتھ بھونت نہ کرو' نہ ان کے ساتھ بھے ہو' وہ ان کی مثل ہے۔

الله تعالى كارشاد ، تم يس بوان كودست علية كا ووان ي يس ما ار موكا (الماكدونان)

اس آیت میں میود و نسازی ہے دور اور الگ رہنے پر تشدید کی گئی ہے اور اللہ اور اس کے رسول جنہیں کے منع کرنے کے ہو اور الگ رہنے پر تشدید کی گئی ہے اور اس کے رسول ہوتی کی خالفت کرے گئے ہوا کافروں کے ہاوجود جو مختص کافروں ہے دوستی رکھے گا وہ کافروں کی طرح اللہ اور اس کے رسول ہوتی کی خالفت کرے گئے ہوا کافروں کے کی طرح اس سے عداوت رکھنا بھی واجب ہے اور وہ بھی دونے کا مستحق ہوگا جو کافروں کے استحق ہوگا ہوں کافروں کے استحق ہوگا ہوں کافروں کے مستحق ہیں اور وہ کافروں کے استحق ہوگا ہوں کے مستحق ہیں اور وہ کافروں کے استحق ہوگا ہوں کے گاور یاس لیے کہ کافروں اور یہودو فساری ہے دوئی رکھنے والے منافق تھے اور ان کا ثار بھی کافروں ہیں ہو تا ہیں۔

الله تعالى كاار شادى : جن كے داول ي (نفل كى) يارى ب و ان كى طرف يہ كتے ہوئے دو رس مے ہميں يہ خد شب كة ہوئے دو رس مے ہميں يہ خد شب كہ ہم يركوكى كروش ند أجائے۔(المائدہ: عن)

منافق یہ کہتے تھے کہ نبی ہے کہا تھ دینے کا دجہ ہے کیں ان پر قطانہ طاری ہو جائے۔ اور کیس حالات بدل مجے اور میں عالات بدل مجے اور میں مالات بدل مجے اور یہ یہ دیا ہے۔ اور اسیدہ) تھے۔ بڑچی کی حکومت نہ رہی تو ہم کیس کے نہیں دہیں گے۔ حضرت عبادہ ہن صامت ہو چی نے نبی مالی ہے اور میں گئے۔ حضرت عبادہ اور دسول کی خاطراس عمد کو میں تو اور میں اند اور دسول کی خاطراس عمد کو تر کا اور تا ہوں میں تو اور کی حاصر کیا ہوں تو دستوں سے کیے ہوئے حمد کو نہیں تو اسکیل

انلہ تعالی رسول اللہ عظام فرادے۔ حضوت این عبال رضی اللہ حسمانوں کو غلبہ عطا فرمائے۔ یا رسول اللہ منظم منافقوں کی ساؤشوں سے مطلع فرادے۔ حضوت این عباس رضی اللہ حسمانے فرمایا ہے یہ تھی کہ بنو تل یطلہ کے جوانوں کو قمل کیا اور ان کے بچوں کو قید کر لیا کیا اور بنو نضیر کو جلا وطن کر دیا گیا۔ ایک قول بیہ ہے کہ مشرکین کے شہوں پر اللہ تعالی نے مسلمانوں کہ فتح عطا فرائی اور ہے کی علامت سے عراد یہ ہے کہ اہل کماب پر جزیہ مقرد کیا گیا۔ ایک قول بیہ ہے کہ منافقوں کی مسلمانوں کہ فتح عطا فرائی اور ہے کا علامت سے عراد یہ ہے کہ اہل کماب پر جزیہ مقرد کیا گیا۔ ایک قول بیہ ہے کہ ممانوں کی فصل بحت مازشوں سے مطلع کیا گیا ان کے نام بتائے گئے اور ان کو قمل کرنے کا تھم دیا گیا۔ ایک قول بیہ ہے کہ مسلمانوں کی فصل بحت انہی بودئی تھی اور مال غیمت کی کڑت سے وہ خوش حال ہو گئے اور جب متافقوں نے مسلمانوں کا غلبہ 'خوش حال اور ان پر اللہ انہیں موت کے وقت عذاب دکھایا

جُيانُ القر أنّ

مميا۔

الله تعالی کاار شادے: اور ایمان والے یہ کمیں کہ کیا یہ وہی ہیں جنوں نے اللہ کی قتمیں کھا کریہ کما تھا کہ بے شک ہم ضرور تہمارے ما تھ ہیں ان کے سب عمل ضائع ہو سے اور وہ نقصان اٹھائے والے ہو گئے۔ (الما کدو سود)

جب الله تعالی نے مسلمانوں کو یمودیوں پر غلبہ عطا فرمایا اور یمودیوں کو تحقی کرنے اور جاا وطن کرنے کا تھم دیا گیا تو مسلمانوں نے یمودیوں کو جھڑکتے ہوئے متافقین کی طرف اشارہ کرتے ہوئے کما کہ کیا ہی وہ لوگ ہیں جنہوں نے تہمارے لیے بعد تشمیل کھنگی تھیں کہ وہ میرے ہوئے کما ہی وہ نوگ بیٹ تشمیل کھا کہ جو میں مان تھیں کھا کہ جم تماری مدد کریں ہے ہیا مسلمانوں نے آیک دو مرے ہے کما ہی وہ نوگ ہیں جنہوں نے اللہ تعالی نے نماتی کا پر وہ جاک ہیں جنہوں نے اللہ تعالی نے نماتی کا پر وہ جاک ہیں جنہوں نے اللہ تعالی نماتی کا پر وہ جاک کی دو جاک ہیں جنہوں کے اللہ تعالی نماتی کا پر وہ جاک کر دیا اور میں اللہ تعالی کے تک اور جلاوطن کے موران کا کوئی ممارانہ دہا اور یمودیوں کے تک اور جلاوطن موران کے موران کے ممانی دوئی دی کے اور دیا ہی یمودیوں کے تک اور جلاوطن موران کے موران کے ممانی دوئی دی کہتے ہے انہیں کوئی فاکدہ حاصل نمیں ہوا۔

الله تعالى كاار شاوع: اے ايمان والوائم على ہے جو فض اپ دين ہے مرتد ہوجائے گا او عقرب الله ايمى قوم كو لے آئے گا جس سے الله محبث كرے گااور وہ الله ہے محبت كرے گى وہ مومنوں پر نرم ہوں كے اور كافروں پر خبت ہوں كے ا وہ الله كى راہ عنى جماد كريں محے اور كمى ملامت كرنے والے كى ملامت سے ضيں ڈريں مح كيد الله كاففنل ہے وہ جے جاہے عطا فرما آ ہے اور الله بيزى وسعت والا جست علم والا ہے۔ (المائدہ عند)

مدرسالت اوربعدے مرتبین کابیان

اس سے پہلے اللہ تعالی نے فربایا تھا جو کافروں کے ساتھ دوستی رکھے گا'اس کاان ہی جس ثمار ہو گااور اس آبہت میں صرامتا ا فرمادیا' جو هخص دین اسلام سے مرتد ہو جائے گا'اس سے اللہ کو کوئی نقصان نہیں ہو گا۔ نبی ہزاریا کے حمد جس بھی پچھ لوگ مرتد ہوئے اور پچھ آپ کے بعد مرتد ہوئے۔علامہ فرصف میں نے ان کو تفصیل کے ساتھ بیان کیا ہے۔

علامه جار الله محمودين عمر وُمعاشدى متوني ١٨٥٨ لكن بين:

مرتدین کے کیارہ فرقے تھے کئی رسول اللہ واللے کے عدی تھے۔

ایک فرقہ بنو منٹے تھا ان کار کیس ذوافھار تھا اور کی اسود عنی تھا۔ یہ افض کائن تھا اس نے یمن میں نبوت کا دھوئی کیا اور ان شہوں پر ظلبہ پالیا اس نے رسول اللہ بچھ کے بعض عاملوں کو تکال دیا۔ رسول اللہ بڑھ کے حضرت معاذین جبل براٹھ اور این شہوں پر ظلبہ پالیا اس نے دسول اللہ بھی اس کو تھال دیا۔ رسول اللہ بڑھ اس کو قتل کر براٹھ اس کو بھاک کرا دیا انہوں نے اس کو قتل کر دیا۔ جس دات و مول اللہ بھی ہے اس کے قتل کی جبر مسلمانوں کو دے دی تھی جس سے مسلمان خوش دیا۔ جس دات و مول سے اس کی خبر دیج الاول کے آخر بھی ہوئے گئی ہی جس سے الاول کے آخر بھی میٹنی منٹی۔ پہلے کئی ہی جس سے اس کی خبر دیج الاول کے آخر بھی میٹنی منٹی۔

دو سرا فرتہ بنو حنیفہ ہے۔ یہ مسیل کی قوم تھی اس نے نبوت کا دعویٰ کیا اور رسول اللہ بھتا ہے کی طرف کھنوب لکھا "از
مسیلی رسول اللہ برائے تھے رسول اللہ 'بعد ازیں یہ کمنا ہے کہ یہ ذیمن آدھی آپ کی ہے اور آدھی میری ہے "۔ رسول اللہ
مائیل نے اس کا جواب دیا "از تھر رسول اللہ برائے مسیلہ کذاب 'بعد ازیں یہ کمنا ہے کہ تمام ذیمن اللہ کی مکلیت ہے 'ووا پنے
بیکدوں میں ہے جس کو چاہتا ہے 'اس کا وارث بنا آئے ہے 'اور نیک انجام منتقین کے لیے ہے "۔ معرت ابو کر زائی نے مسلمانوں
کے ماتھ اس ہے جنگ کی اور یہ حضرت حمزہ جوانی بی قاتی صفرت و حتی کے ہاتھوں قتی ہوا۔ حضرت و حشی کے تھے میں نے

ائی جاہات کے زمانہ میں سب نیک محض کو قتل کیا اور اپنے اسلام کے زمانہ میں سب بدر افض کو قتل کیا۔

تیرا فرقہ بنواسد تھا ہے جلیہ بن خواد کی قوم تھی اس فیض نے بھی نبوت کا دعویٰ کیا تھا رسول اللہ جھیز لے اس سے

بنگ کے لیے صفرت فالدین ولید کو بھیما ہے فکست کھائے کے بعد شام بھاگ گیا کی مسلمان ہو گیا اور اس نے نیک عمل کے معفرت ابو بکر دیا تھ ہے میں مرتدین کے سات فرقے تھے۔ (ا) جیسٹہ بن صی کی قوم فوارد (۱) قروبین قد میں مرتدین کے سات فرقے تھے۔ (ا) جیسٹہ بن صی کی قوم فوارد (۱) قروبین قد میں ورت مفسلان (۱۳) فیاد ہیں میدیائیل کی قوم بنو سلیم (۱۳) فیاک ہی تو بوری کی قوم بنو براوی کیا اور مسیلر کذاب سے نکاح کیا اور اس کی قوم جمیم کے بہنس اوگ ۔ (۱) اشعف بن قیس کی قوم کئی جہنس اوگ ۔ (۱) اشعف بن قیس کی قوم کئی جس کے نبین او گست کی خورت ابور کی والے کی اور دیا گیا ہے جبنس او گست کی خورت ابور کی ہوئی کی اس کو مرتب ہوئی کی ہوئی کی خورت ابور کی محمد بھی ایک فیص مرتد ہوا تھا ہے جد کی چار دیا اس فیض کا بریز کیا اس کو فرق کی خورت کی خورت تھرے فران کا گیا ہے جد کی گیا اب کی خورت کی خورت تھرے فران بنا دیا اور دیا اسلام سے مرتد ہو کر روم کے شہوں کی طرف فل گیا جد کی چار در ایک فیض کا بریز کیا اس کے تھی گیا در ایک فیض کی خورت تھرے فران کا گیا ہے جب کی اور دوم جاکر مرتد ہوگیا اس کے تھی گیا در دوم کی دوم کی کھرت کی خورت کی کھرت کی صفرت مرنے فرانیا اب تبدارے تھی گیا اس کے تھی گیا در دوم جاکر مرتد ہی گیا تھیں۔ کی جد کر بھی گیا۔

وا كلاف عاص ١٦٠١ ما ١٦٠ مطوع فترابط قد "ار ان ١١١١١ه)

الله كى محبوب قوم كے معدال من متعدد اقوال

اس آبت کے معدالی کے متعلق کی اقوال ہیں۔ ایک قول میہ ہے کہ اس آبت کے معدالی معزمت ابو یکر اور ان کے امیاب ہیں۔

الم الدجعفر في بن جري طبري متوفى ١١٠٥ تصف بين

می بڑھی کومل کے بعد الل مدند الل مکہ اور الل جون کے مواجام عرب اسلام سے عرقہ ہو گئے۔ انہوں نے کہا ہم
نماز پر حیس کے اور زکوۃ نہیں دیں گے۔ حضرت ابو بکر نے قربا فداکی حم ابو یک اللہ اور اس کے رسول نے فرض کیا ہے 'اگر
اس علی سے یہ ایک وی جی نہ دیں تو یمی اون سے بنگ کوں گا۔ پھر صفرت ابو بکر نے مسلمانوں کی ایک جماعت کے ساتھ ان
سے قال کیا محق کہ انہوں نے ذکوۃ دیے کا اقرار کرلیا۔

(جائع الميان 12° ص ٢٨٣-٣٨٣ مطبوع داد الفكو "بيردت ١٣١٥)

ود سرا قول سے کہ اس آیت کامصداق معرب او موی اشعری برید کی جماعت ہے۔

عیاض اشعری بیان کرتے میں کہ جب یہ آیت نازل ہوئی تو رسول اللہ میں ہے صفرت اور موئی اشعری جوہیے کی طرف اشارہ کرکے فرمایا: وہ قوم یہ بیرے (جائے البیان ' ۱۲۲م ۲۵۰ المستدرک ' ج۲مس ۱۳۳۳)

تيرا قال يب كداس آيت كامداق ال يمن إلى-

محدین کعب قرقی میان کرتے ہیں کہ عمرین حید العون نے ان کے پاس آیک پیام بھیجا وہ ان دنوں مدید کے امیر تھے ان سے اس آیت کا مصد اللہ دریافت کیا۔ انہوں نے کمااس سے مراد اہل کین ہیں۔ عمرین حید العورز نے کماکاش ایس اس قوم سے ہو تک (مائع البیان ' ۱۲۲'می ۱۸۲ مطبوعہ میں وہ ۔

الم ابن جرر في المعرى كا ترقيع دى ہے كه اس مند مراد الل كان بيل اور ود معرت او موى المعرى كى قوم بيل۔ كو نكه اس كے متعلق نما عظام كى مدعث موجود ہے۔ اور الم دازى في دانا كل سے بير البات كيا ہے كہ اس سے مراد معرت ابو كر دولتى اور ان كے امحاب بيل۔

حضرت أبو بمركى خلافت يردلاكل

روانن اور شیعہ بید کئے ہیں کہ جن اوگوں نے معزت او کری خلافت اور امامت کا قرار کیا ،و مب کافر اور مرتد ہیں کے کہ انہوں نے معزمت علی علیہ السلام کی امامت کی نص مرسے کا انگار کیا۔ ہم کتے ہیں کہ آگر بالفرض بیاب می ہو تو لازم تھا کہ افتد تعالیٰ اپنی ایک محدب توم کو لا تا ہو این سب سے جماو کرتی اور ان کو صفرت علی کی امامت اور خلافت مائے پر مجبور کرد ہی افتد تعالیٰ اپنی ایک محدب توم کو لا تا ہو این سب سے جماو کرتی اور شیعہ کا مزموم خامد ہے۔

انیا: ہم ہے کتے ہیں کہ ہے آیت حضرت ابو بکر بریٹی کے حق می نازل ہوئی ہے کیو تکہ یہ آیت ان کے ماتھ خاص ہے جنہوں نے مرتدین کے ماتھ خاص ہے جنہوں نے مرتدین کے ماتھ میں مرتدین کے ماتھ میں ہے بہلے حضرت ابو بکر بہنوں نے مرتدین کے ماتھ میں ہے بہلے حضرت ابو بکر اسے کے مرتبی کے اس آیت کا صدائی قرار دیا مجھے نسی ہے۔ اولاً: اس لیے کہ آپ کے حدد میں مرتدین کے ماتھ بنگ کا ان ایس کے حدد میں مرتدین کے ماتھ بنگ کا اور در مول اللہ میں آیا۔ ان این اس لیے کہ اللہ تعالی نے فرایا مقریب اللہ اللی قوم کو لیے آئے گا اس سے معلوم ہواکہ ماتھ بنگ کا واقعہ بنا اللہ تاہم کے اللہ تعالی نے فرایا مقریب اللہ اللی قوم کو لیے آئے گا اس سے معلوم ہواکہ

وه قوم اس وخت موجود حميل تحي-

اور آگرید مان مجی لیا جائے کہ حضرت علی نے بھی مرحدین کے ماتھ بھک کی تقی تب بھی حضرت او بھر بھائے ۔ نے بو مرحدین کے ساتھ بھک کی تھی اور افتشل تھی اور اسلام میں مدور رس متر کی حال تھی ہم کے تک حضرت او بھر کی جگ اور افتشل تھی اور اسلام میں مدور دس متر کی کی حال تھی ہم کے تک حضرت او بھر بھر بھگ اور اسلام کے سے تھے ہے کہ جب رسول بھٹ اسلام کے اس اور حضرت کی جائے تھی۔ کے تک بید اسموال محرد اور اسلام میں بھر اسلام کی اور حضرت اور دکو ہ کے محروں کے طاق حضرت او بھر صدائی بھر ہوئے کے موار اللہ مرحد اور اسلام میں بھر اسلام کی اسلام کی اور حضرت اور بھر کی جدد جد کے تیجہ جس اسلام کو استقامت کی اور شرق و خروب جس اسلام میں اور اللہ محرول دنیا کے حکم اور محروت اور بھر کی جدد جدد کے تیجہ جس اسلام کو استقامت کی اور شرق و خروب جس اسلام میں اور اللہ محرول دنیا کے حکم اور محروب جس اسلام میں اور اللہ محرول دنیا کے حکم اور معلوب ہور اسلام کے طاوہ باتی اور اللہ میں اسلام میں اور اللہ کے جائے بھے

فبيان القر أن

کے اور افراب اسلام بوری آب و بہت جمکانے نگائور صرت علی جوئی کی خلافت کے وقت تک اسلام بوری دنیا میں ایک غالب دین کی حیثیت سے متعارف ہوجا تھا۔ اس سے داختے ہوگیا کہ حضرت ابو بکر جوئی کی مرتدین کے ساتھ جو جنگیں ہو کیں 'وہ صرف اسلام کی نفرت اور اس کی فشرو اشاعت کے لیے ہو کیں۔ اس کے بر عکس معرت علی کی جو جنگیں ہو کیں 'ان کی خلافت کے منگرین کے ساتھ تھیں۔ اگر ہنول شیعہ ان کو باخر ض مرتد مان بھی لیا جائے 'تب بھی حضرت ابو بکر کی جنگیں ان سے بسر حال ، فضل اور اعلیٰ تھیں۔

اس آےت میں حضرت اور بحرک المت پر بیدولیل مجی ہے کہ مرتدین کے ساتھ جنگ کرنے والی قوم کے متعلق اللہ تعالیٰ نے فرالیا جس سے اللہ محبت کرے گااور وہ اللہ سے محبت کرے گی اس سے معلوم ہوا کہ حضرت ابو بکر بری بڑے اللہ کے محب اور اللہ کے محبوب میں اور جو اللہ کامحب اور محبوب ہو نوی خلافت کا زیادہ مستخت ہے۔

ایزائس کے بعد اللہ تعالی نے اس توم کی صفت یہ ذکر کی کہ وہ مومنوں پر زم ہوں کے اور کافروں پر سخت ہوں مے اور بوری امت بی سب سے زیادہ مومنوں پر نرم اور کافروں پر سخت عشرت ابز بکر دونتے، بیں۔

الم ابو يميلي محدين ميني ترفدي متولى المعامد روايت كرتے إلى:

حضرت انس بن مالک بریش بیان کرتے ہیں کہ دسول اللہ میں ہے فرمایا میری امت میں امت پر سب سے زیادہ رقم کرتے والے اور اللہ کا تھم بافذ کرنے ہیں سب سے زیادہ سخت ابو بکر ہیں الحدیث سے صدیث حسن سمجے ہے۔

اور کماتم آیک مخص کو اس لیے قل کر رہے ہوکہ اس نے کما کہ جیرا رہ اللہ ہے۔ (عافر: ۱۲۸) می ابواری 'ج ان رقم الدے:
۱۲۵۵) اور مسلمانوں کے ساتھ رحمت کی واضح مثال ہے ہے کہ صفرت ابو بکر نے سات ایسے غلاموں اور باتد بوں کو ترید کر آزاد کیا
جن کو اسلام لانے کیا پادائی میں مکہ میں سخت عذاب ریا جا آتھا۔ ان کے نام ہے جین: صفرت بالل 'صفرت عامر بن فحیر و' صفرت بالل 'صفرت عامر بن فحیر و' صفرت ندیو ' صفرت نمدید اور ان کی بنی 'بنو مول کی باتدی اور ام صبحس ۔ (الاسلیہ 'ج ۲ می ۱۳۲۲) اور جب معفرت ابو بکر جو فیز نظیفہ فیل میں میں میں میں میں میں میں اور صحابہ کرام کے منع کرتے کے باوجود شام کی ہوئے والدوں نے بحت جرات اور دلیری کے ساتھ تمام مرتدین سے جنگ کی اور صحابہ کرام کے منع کرتے کے باوجود شام کی

طرف فتكرودان كيك

الله تعالى نے اس قوم كى صفت من فرمايا: وہ الله كى داہ من جماد كريں كے دور كمى ملامت كرنے والے كى ملامت ، نيس دُريں كے - جرج عد كر دوسرے خلفاء اور ائمہ نے بھى جہاد كياہے "كين رسول الله عليد كروصال كے بعد جس نے سب

پہلے جماد کیا' وہ صفرت ابو بکرتھے کور صفرت ابو بکر جوشنے نے اس وقت جماد کیا' جب ملک کے اندر مانھین ذکو ہ اور مرتدین کے فقتے كمرت بو كي تع أور اس وقت ملك ، بابر فوج بيني كى سب في خالفت كى تقى الكين معزت ابو بكرف كما ثمام ك خلاف توج کشی کارسول الله معظیم نے عظم دیا تھا اور میں کمی مانت میں بھی اس تھم کو مو تر نہیں کروں گا۔ الله تعالى كاار شادع: يد الله كالفنل ب ود المعدد ١٥٠ م

حفرت ابو بربین کے فضائل

یہ آیت بھی صفرت ابو بکر مرائی کے مال کے متاسب ہے مکے تکد اللہ تعالی نے سورہ فور کی آیت میں بھی مطرت ابو بکر بریش کو صاحب فعنل فرمایا ہے۔ کیونک مسلم جیشی صفرت او بر روشی کے خالد زاد بھائی تھے ' یہ بادار مراجر تھے اور بدری سحانی تے اور معرب ابو بکران کی مل اولو کیا کرتے تھے ' لیکن انہوں نے بھی معرب ام المومنین عائشہ معدیقہ و منی اللہ عنمار تمت لكك والول كى موافقت كى جس سے معرت ابو كركو بهت رہے ہوا۔ جب اللہ تعالی نے معرت ام المومنين كى يراحت بيان كردى " لو معرت ابر بر مرود يد ممال كدوه اعده معلى بالداد مي كري كداس موقع يريد اعت ازل مولى:

اور تم من سے صاحب فنن اور صاحب و سعت بہ حم نہ کمائمی کدوه رشته دارون مسکینون اور الله کی راه میں اجرت كرتے والوں كو يكے نيس ديں مے اور ان كو جاہمے كه وہ معاف کرویں اور ور گزر کریں۔ کیاتم بدیند فیس کرتے ک الشرحيس بنش دے اور اللہ بحث يخشف والا اب مدرحم فرمانے

وَلاَ يَا أَمْلِ أُولُوا الْفَصْلِ مِسْكُمْ وَالسَّعَوْآنُ يُحُونُوْا أُولِي الْقُرْبِلِي وَ الْمُسَاكِيْنَ وَ المُهُ عِيرِيْنَ فِي سَيِيلِ اللَّهِ وَ لَيَعَفُوا وَ ليصفحواالاتحيثونان يعمرالله لكثروالله عَمْورُ كَرِجِيْمُ (السور: ۲۲)

جب رسول الله برا بي إيت يرحى تو صرت ابو برصديق جائي في الماع تك ميرى آرزد بك الله مجمع بخش دے اور میں مسلم کے ماتھ جو حس سلوک کر یا تھا اس کو بھی موقوف نسیں کروں گا۔

حضرت بالل والي اميد بن خلف ك فلام ته و صرت بالل كاسلام قبول كرا كى وجد ان كوبست ايزاكس موي) تھا ان کو گرم ذہن پر ڈال کران کے اوپر ہماری پھرو کھ دیتا تھا۔ معرت ابو بکرنے اسے بن خان کو اس تھلم وستم ہے منع کیا اس ا كماأكر تم كوبس كى تكليف چكوار تكتي بي تواس كو فريد لو- حضرت ابو يكرات اسير بن خف سے ايك كرال قيت پر معفرت بلل کو عربدا اور آزاد کردیا اتن بدی قیت پر حضرت بلل کو خربدئے ہے مشرکین کو جرت ہوئی اور انہوں نے کہا ضرور بلال کا ابد بكرير كوكى احسان موكا-اس كابداء آرت كرا الى برح الى بعارى قيت يربلال كو خريدا ب الله تعالى في اس طعن ك

جواب من معرت او مرك حق من يه آيت ازل فراني:

وَ سَيْحَنَّمُهَا الْآنَعْكِي ﴿ الَّذِي يُؤْتِي مَاكِهُ يَنْرَكُنَّي أُو مَالِا حَدِيمِنْكُ وَمِنْ يُسْمَةٍ تُعُولُون الآابينة أَوْجُورُ رَبُوالْأَعُلَى ٥ وَلَسَوْفَ بَرُضَى (الليل.١٩٠١)

اورجوسب ناوه مقل ہے دواس (آگ) سے دور رکما بائ كا جو إكرو موسف كسليد اينا ال فرج كر اب اوراس ير كى كاكوئى احسان جيس ب جس كايداد ديا جائدوه مرف ایندربائلی کارضابولی کے لیے (مال ترج کرتاہے) اورود خردو مخريب واضي او كا

اس آےت جی اللہ تعالی نے یہ بتادیا محد اے مشرکوا بلال کے احسان کی بلت کرتے ہو ابو بحریر اس کا تلاہ جس ممی کا کوئی

د نیلوی احمان نمیں ہے جس کا بدلہ دیا جائے ہیں نے صرف اسپے رب اعلی کو راضی کرنے کے لیے بال کو خرید کر آزاد کیا ہے' اور الله منتهباس كوراش كردا ك

معرت او يكر يولي كو الله تعلى في بيد امراز والرام اليد فعل مد معاليات اسى طرح في على في يعل ويني كوانعلات بي نوازاب-

الم محدين الماكل عفاري موليه ٥١ مد دوايت كرسة ين:

معرت اوسعید خدوی بینی بیان کرتے ہیں کہ نی مجل منبرر تشریف فرماتھ۔ آپ نے فرمایا اللہ نے اسپندا کی بندہ کو ونیا کی ترو مازگ میں جودہ چاہے اسے دسیت کااور آفرت میں اس کے ہاس جو اجر ہے اسے دسینے کا اقتیار دیا اس بندہ اللہ كياس جلت كو اختياد كرايا- يدس كر حفرت الويكردوف كل اور كف كك اعلى ما كي اور عارب باب آب يدا مو جاكي- جميل ان ير تنجب اوا الور لوكول في كمااس إر رج كود يكمو "وسول الله منظيد اليدايد بنده ك متعلق خرد د رب یں جس کو اللہ القیار دیا ہے کہ وہ دنیا کی ترو بازگی اللہ کیاس اجائے اور یہ کمہ رہے ہیں کہ اب پر امارے باب اور وارى اكي فدا يوجاكي اور دراصل بيد احتيار رسول الله علي كوديا كافنا اور اس بلعد كوجم بن سعب سعد تياده جائد والے حضرت بو بحرتے اور وسول اللہ علی نے قربالا اپن رفاقت فور اسند بال کے دراید میرے ساتھ سب سے زیادہ حس سلوك كرا والع الويكرين اور عن الى امت عن المركمي كو طليل عا مَا توجو يكركو طليل عا مَا الكين ال ك ما تد املام ك فلت (دوسی) ہے مسم (ایوی) عل ابو بکری کوئی کے سوالور کوئی کھڑی باتی نہ رکھی جلے۔

(کی ابلای نج م و قر المدیمه ۱۳۹۳ کی سلم از قم المدیمه ۱۳۲۸ سنی زندی نجه د قر المدیمه ۱۳۸۸ کی این میان ا عَنَاءُ ثُمَّ الْمُعَدِّدُهِمِ)

الم او مين همن مين ترفري حول اعدرواعت كرتي ون

صرت ابد ہر رہ بھان کرتے ہیں کہ وسول اللہ عظیم سے قربایا جس النص سے بھی مارے ساتھ کوئی تکی کی ہم نے اس كابرند وے ديا اله الو كرك كو كار انهول في الدے مائد ايك الى نكل كى سے جس كابرند البي الله قيامت كے ون وے گانور کسی مخص کے مل نے جھے ہرگزوں نطح نسیں پنجالا جو ابو بکر کے مل نے نظم پنچالا اور اگر میں کسی کو خلیل ما آنو ابو بکر کو فلیل بنا آنور سنوا تمهارے وقیرانلہ کے علیل ہیں۔ اس سند کے ماتھ یہ صدیف حس فریب ہے۔

(سنن ترزي ع ۵ و قم الحديث: ۳۶۸۱ سنن أبن اجه عن آ و قم الحديث: ۹۴)

الم ابر ماتم مجرين حبان البستى المتوني من من مد روايت كرت بن

حفرت او بريد والخور ميان كست ين ك رسول الله ويجيد في فرما بو فض ايك اوع ك دد جي الله ك راه من ترج كب اس كوجنت على بلايا جلت كالدائد كريوسان فيرب سوجو نمازى موكاناس كوبلب العملوة عد بلايا جلت كاورجو علم اوكاس كوباب الملاس بالماجات كالورج صدقه وسيت والا اوكاس كوباب الصدقدس بالماجات كالورج روزه واراوكا اس كوياب الريان سے بايا جائے كا۔ حضرت ابو بكرنے كما إرسول الله اكب ير ميرے مال باب فدا موں كيا كوئى ابيا فض موكا جس كوان تمام وروازوں سے بلایا جائے گا؟ رسول الله منظور في فرمایا بال اور جھے امید ب كر تم ان اوكول ش سے ہو۔ ا كاتن قبال عدار قم الدعث ١٨٧٠ كاسلم "زو ١٨٥٠ (١٠٩١) عن شال ع"ر قم الدعث ١٢٢٤) عفرت ابن عماس رسى الله منما بيان كرت بي كد رسول الله على في فرما بند عن ايك ابيا عض وافل موكاجس

کے متعلق جنت کے ہر کھروالے اور ہر مالا خانہ والے 'یہ کسی گام حبا مرحبا الدے پاس آئی۔ معرت ابو بکرنے کما یار سول اللہ ااس محض کو اس دن کوئی نقصان تعیں ہو گا آپ نے فرمایا ہاں اے ابو بکروہ محض تم ہو گے۔

ا مج ابن حبان عن محادث من المعدد عدد عدد من المعم الكبير على و تم المعدد عدد المعم اللوسط عن أرقم المعدد عدد المعم الله المبتى في المعدد عدد المعم الله المعرب الم

سعاہے ال مدے کے دانوں مع مدعظ کے داوی ہیں سواجم یوں جی مرسای کے توروہ ہی اللہ ہیں۔ بع الروائد جہا میں اسم) حضرت ابو بر مدیق وہیں کے فضائل کے حفاق ہم نے شرح مسلم 'جلد ساوی (۱) ہیں بہت تنسیل ہے والا کل بیان کے ہیں'الل علم اور ارباب ذوتی کو اس کا معالد کرنا جاہیے۔

خفرت ابو بكرك نضائل من موضوع احاديث

عفرت ابو بكر مدين بريني كے فضائل من بعض علاء نے موشوع اور بدامل اماديد كو بھى درج كرديا ہے۔ اى قبيل سے الم رازى نے اس آیت كى تغیر مى بداماديث ذكر كى بن:

رسول الله علي الله تعلى تمام لوكون كے ليے عام على فرمائ كالور ابر كركے ليے خاص على فرمائ كا اور اب

(تغیرکیر *ج۳ می ۱۹۸ مطبوعه داد الفکو * حروت ۱۳۹۸ هـ)

ملاعلى بن سلطان عو العارى المتونى مهداه كليع بين

جو جلل فرد کو منت کی طرف منسوب کرتے ہیں 'انسوں نے معرت ابر کر برجین کی فضیلت میں ہیر مدیثیں وضع کرنی ہیں ' الله آیامت کے دن نوگوں کے لیے عام حجی قربائے گااور ابر کرکے لیے خاص حجی فربائے گالور مدیث ہو یکھ اللہ نے میرے مید میں ڈالا ہے ' وہ سب میں نے ابر کرکے مینہ میں ڈال دیا اور مدیث "رسول الله مجین کو جب جنت کا شوق ہو آ او وہ ابو کرکے مفید یاول کو بوسے دیتے اور مدیث سمی اور ابو کرگھڑ دو ڈے دو گھو ڈوں کی طرح میں " (یہ ضرب المثل ہے 'اس کا معنی ہے دونوں مسلوی ہیں اور مدیث "جب اللہ نے دوس کو بدر کیا تو ابو کرکی دوح کو بدر کیا"

(موضوعات كيريس ١٠١مملوي مطيع بيباكي ويل)

الله تعلق كالرشاوي: تهارا دوست مرف الله باوراس كارسول به اورا بيان والي بي جو نماز قائم كرتي بي اور زكوة اداكرتي بي كوروه الله كرمائ (عابزي سے) تك والے بير-(الما كدون) آیت ند کوره کے شان نزول میں متعدد اقوال ام او عد مداللک بن مشام متوفی معدد کھتے ہیں۔

الم ابوالحن على بن احمدواحدى منوفى ٨١٠ كلية ين:

حضرت جارین عمد الله برائد و بین کرتے ہیں کہ حضرت عبد اللہ بن ملام بوبائد ہی ہیجین کی خدمت میں حاضرہوئے اور
کما پارسول الله اقر مطلعہ اور تشیر نے بمیں چھوڑ و فالور ہم ہے الگ ہو گئے اور انہوں نے تسم کھنٹی ہے کہ وہ اہارے ساتھ نہیں
بیٹا کریں گے اور ہم آپ کے اسحاب کے ساتھ مجلس کی استطاعت نہیں رکھے ہی تکہ کئی ان کے گھرہم ہے دور ہیں۔ اس موقع پر
بیٹا کریں گئے اور ہم آپ کے اسحاب کے ساتھ مجلس کی استطاعت نہیں رکھے ہی تکہ ان کے گھرہم سے دور ہیں۔ اس موقع پر
بیٹا کریں گئے اور ان کی تحداد اور میں۔ اس کا رسول ہے اور انہان والے ہیں جب رسول اللہ میں ہی ہے ان پر بیا آیت
مادو سے کی تو انہوں نے کہا ہم اللہ ماس کے رسول اور مسلمانوں کو دوست مطلق پر راضی ہو گئے۔

(اسهاب نزول الترآن من ۲۰۱ مطبوعه دار الكتب اعلميه ميردت)

يزام واحدى لكيدين

حضرت عبداللہ بن ملام اپنی قوم کی ایک جماعت کے ماقت است جو اسی دوران ایمان لائی شی۔ انہوں نے کما یار سول اللہ اعارے گردور ہیں اور عادی کوئی مجلس اور بات کرنے کی جگہ شمیں ہے اور عادی قوم جب بددیکے گی کہ بم اللہ اور اس کے دسول پر ایمان لا تھے جیں اور این کی تصدیق کر بھے جیں 'قوہ ہم کو چھو ڈدیں کے اور عارے مائتہ نشست ' برخواست ' شادی عاد اور کھانے پینے کو ترک کرنے کی شم کھائیں کے اور بد ہم پر بہت دشوار ہوگا' قو نی جہنوں نے ان پر بد آیت پر حمی تمہارا دوست صرف اللہ ہے ' اس کا دسول ہے اور ایمان والے جیں پھر بی جرجی شریف لے گئے۔ وہاں مسلمان قیام اور دکھی تھے۔ آپ نے ایک سائل کو دیکہ کر پر چھاکیا کی نے تم کو بھی دیا ہے ' اس نے کما ہی اس نے کما ہی انگو شی۔ آپ مے لیچ جو انگو شی کس نے۔ آپ نے ایک سائل کو دیکہ کر پر چھاکیا گئی نے کو بھی بی طرف اشارہ کر کے کما' یہ جو نماز پڑھ دے جیں۔ کے لیچ چھاتم کو دہ انگو شی کس نے دی ہے ؟ اس نے کما نہ اور ایمان والوں کو دوست بنا ہے تو تھی دی ہے آپ نے کہا تو تی دی ہو تھی دی ہے تو تی گئی اور جو اللہ اور ایمان والوں کو دوست بنا ہے تو تی اگر تھی دی ہے تو تی اند کی جماعت می عالب ہے۔

(المائده ١٥٥ امباب زول القرآن مع ٢٠١ مامع البيان 'جز٦ مع ٢٠١)

المام فمرانی نے ساکل کو معرت علی کی انگوشی دینے کاواقعہ معرت عمار بن یاسرے روایت کیا ہے۔

(المعجم الادمل عن أرقم الحديث: ١٣٢٨)

حضرت علی کے مستحق خلافت ہونے پر علماء شیعہ کی دلیل

مجع طوی متونی ۱۰ معدے اس آیت ہے یہ استدال کیا ہے کہ حضرت علی جراتی ، عی رسول اللہ ماجید کے بعد خلافت اور

المت کے مستحق بھے کی نکہ اس آب بھی فرملا ہے تمہاراولی اللہ ہے اس کا رسول ہے اور موسین بیں اور موسین ہے مراو
اس آب بھی حضرت علی جہنے۔ ہیں کی تکہ بمال موسین کی ہے صفت بیان کی ہے کہ وہ نماز پڑھتے ہیں اور طات رکوع بھی ذکو آ
دیتے ہیں اور نہ کو رائصدر شان نزول کے مطابق حضرت علی بی اس آب کے صداق ہیں کیونکہ آپ بی نے صات رکوع میں
ساکل کو سونے کی انگوشی دی تھی۔ فیذا حضرت علی جہنے۔ مسلمانوں کے دلی ہوئے اور دلی کا سختی اوٹی اور احق ہے۔ سو صفرت
علی جہنے، مسلمانوں پر متصرف اور ان کے حاکم ہوئے اور کی خلافت اور امامت کا معنی ہے۔ فیذا اس آب ہے جابت ہوگیا کہ
حضرت علی جہنے، مسلمانوں کے دلی ہوئی ان کے امام اور خلیفہ ہیں۔

(التيان في تغير الترآن عسم ٥٥٨ مطوعه واراحياه التراث العربي ورت)

علاء شيعه كي دليل كاجواب

معظم طوی کابیراستدلال کی دجوہ سے باطل ہے۔

ا- ولى كامعنى اولى اور احق تهين بيه كلدول كامعنى محب اور ناصرب المعنى عبد اور ناصرب على علامه ميد الدين محمر من ليتنوب فيوز آبادى متوفى علامه لليم بين ا

ولى جب اسم بوتواس كامعنى محب مديق (دوست) اور نصيرب اور مصدر بوتواس كامعنى امارة اور سلطان سبب (القاموس الحيط عن ١٥٨٣ وار احيا والتراث العربي بيردت ١٣١٣) هـ)

۲- اس آیت میں ولی محب ورست اور مددگاری کے معنی میں ہے میں تکد اس سے پہلی جمید میں فرمایا تھا اے ایمان والوا یمود اور نصاری کو اولیاء نہ بناؤ بینی ان کو دوست نہ بناؤ۔ سواس آیت میں فرمایا تسارا ولی مینی دوست اللہ ہے۔ اس کارسول ہے اور موسنین ایں۔

سو آکر آس آیت یل دلی کاسفن اولی بالداست ہو اور موسفن سے مراد صفرت علی ہوں تو یہ لازم آ کے گا کہ جس وقت یہ آکر آس آیت یل دلازم آ کے گا کہ جس وقت یہ آئے۔ ایک ہوئی تھی اس وقت تو رسول اللہ بھی ہوں جم مالا تکہ اس وقت تو رسول اللہ بھی ہوں جم مالا تکہ اس وقت تو رسول اللہ بھی مسلمانوں میں موجود نور تشریف قرباتے لور آپ کے ہوتے ہوئے کسی اور کا ایامت اور حکومت کے زیادہ لاکتی اور حقد ار ہونا تعلیماً باطل اور مردود ہے۔

۳- آگرید آبت صفرت علی کی المحت کے حقد ار ہونے پر دلالت کرتی قو صفرت علی جوہنے، ضرور کمی نہ کمی محفل میں اس آبت سے استدلال کرتے ملائکہ آپ نے بھی بھی اس آبت سے اپنی المحت پر استدلال نمیں کیا۔ آپ نے شور بی کے دن مدیث فدر اور آبت مبالمہ ہے اپنے فضائل پر استدلال کیا میکن اس آبت کو آپ نے بھی پیش نمیں کیا۔

کے طوی اور دیگر علاء شیعہ کا استدلال اس پر موتوف ہے کہ اس آے یہ مومنین سے مراد صفرت علی ہوں۔ ہرچند کہ تشکیر اجمع کا دامد پر اطلاق جائز ہے 'کین یہ مجاز ہے 'کور بلا ضرورت شرح کی آیت کو بجاز پر محمول کرنادرست نہیں ہے۔
 ان نیزا یہ استدلال اس پر موتوف ہے کہ حضرت علی برجینے نماز کی طائت میں سائل کی طرف حتوجہ ہوں اور صالت رکوع میں سونے کی انکو تھی سائل کو دینے کی نیت ہے گرائیں اور نماز میں نماز کے علاوہ کوئی اور عمل کریں۔ صالانکہ حضرت علی جائے۔
 میں سونے کی انکو تھی سائل کو دینے کی نیت ہے گرائیں اور نماز میں نماز کے علاوہ کوئی اور عمل کریں۔ صالانکہ حضرت علی جائے۔
 جس طرح انتقال اور استفراق اور خضوع و خشوع کے ساتھ نماز پڑھتے تھے 'یہ کمانی اس کے سراسر ظلاف ہے۔

ے۔ عمد رسالت میں حضرت علی بروہیز بہت ملک وست منے بعض او قات آپ اپنے حصد کی رونی ساکل کو دے کر خود بھوکے رات گزارتے تصدایے مخص کے متعلق یہ فرض کرنا کہ وہ صاحب زکو ہ تھے اور ان کے ہاس سونے کی انگر تھی تھی۔ یہ بد بدر مطوم ہو آے ایک اس دوایت کے ماقد الانتہار عوے کے لیے می کانی ہے۔

٠٠ ني علي ك مدول ير مونا وام كروا تفاقود مودة الكه افكام سه حفاق ؟ قرى مورت ب- ال في حفرت على بوي كامون في معنوا بي من المحد الله والمعدك فير محرود قير والمعدكر آب

الدے زوریک اس آیت می واکسون است کامل معنی عن ضعی ہے اس کامن ہے تھے والے الین ایمان والے ماز قائم کرتے میں اور وولا اللہ کے مالے دعالا ک سے ایکن والے میں۔

الله تعالى كا ارشادسية : الورجو الله الوراس مك وسول الورائيلان والول كودوست ماسة وب لك الله ك بماحت ي

لَايُهَاالَّذِينَ المَنْوَالِاتَتَجْفُوا الَّذِينَ التَّحَلُوا وَيُنْكُوهُنُوا

اے ایان والو! بن فرکل کر ہے جہا کا علی دی کئے تیس ال کی اللہ کا زوں کے بہوں نے

وَلَوبُامِنَ الَّذِينَ أُوتِوا الْكِتُبُ مِنْ تَبْلِكُمُ وَالْكُفَّارَاوُلِيَا عُ

تبلاے دین کو مینی اور کیل بنا رکھا ہے ، ووست و بناؤ ، اور

واتْقُواللهُ إِنْ كُنْتُومْ مُؤْمِنِينَ @وَإِذَا كَادَيْتُو إِلَى الصَّلُورَةِ

اخرے درتے ہوں اگر میں م الد جب تم لائے کے تدا کرتے ہو

اتَّخَارُهَا هُنَّاوًا وَلِعِبًا ﴿ ذِلِكَ بِأَنَّهُمْ خُومُ لِا يَعْقِلُونَ ﴿

ده ای گرزان ادر کمیل بنا بیت یل و ای کی دیرے ہے کہ یوک میں سے کام جی ہے 0

قُلْ يَا مُلَ الْكِتْبِ هَلْ تَنْقِمُونَ مِثَا إِلَّا إِلَّا الْمُعَالِلَا اللَّهِ وَ

آپ کے کف ایل لاب تم کا موت ے تا گال لگا ہے کہ ہم اشر کی ایال لاسل اور

مَا أَنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أَنْزِلَ مِنْ قَبُلُ وَآنَ ٱلْثَرَكُونِ هَوَنَ[©]

الريجارى ون الرابر الداى يجيد عنل كا الديك تريس الزول فائل بى

غيبان القر أن

بلاسوم

الكيس آكوبالال الشرك تزديك كل ولال كل مزا الله من جي جرق ب بن يرالله بُهُ وَجعل مِنْهُ مُ الْمِقْ دُكَّا وَ الْحَنَّا ذِبِّ نے نعنت کی اور ان پر خشب و بایا ۔ اور ان یک ستہ بعثی کو بندر اور بعض کر خزیے بنا دیا اور منہوں سے شیطان کی میاوٹ کی اس کا تشکای پر قریق سہت الا یا بہت راست سے بھے پر الدجب ده انتها كالمعالى قريمة إلى ج إيال السيد عالى كر عالى المركم الدوائل مفقاد کوری بیکما تو ناری بیست ، اورا شروب بات به ده پیات سے ٥ الله تعالى كاار شاوي: اسدايمان والواجن لوكول كو قريب يسفي كايس دى كى هيس ان كو اور كافرول كوجنول ف تمادے دین کو بنی اور کمیل بنا دِ کھاسیہ دوسیت شہداؤر اللہ ست از کے ماد اگر تم مومن ہو۔ (الما کرن عاد) مناسبت أورشان نزول اسے پہلی اعلی علی علے منافی سے یہودور تساری کودوست بالے سے مع قبلا تعادی بیاتی علی ہے ایمت مال قبال ے اور اس می ور بے قبلانے کے کافروں کو کی دوست دعا۔ الم او عر عد الكسان بشام منولي سواد عيد يود وقام ان ليدي الكيرت لود مهدين الخادث دولون في اسلام كايركيا لود دواصل به دولول معلى تن الوريسة سنه مسلمان ان سے خبت و مجت میں او اول سے ان دولوں اسکر مسلم ہو گئے الل البائی اسے العان والوا ان او کول کو دوست نہ باؤ جنول نے تمادے دین کو ہی اور کھیل بنار کھاہے۔الابد (المعرة النيوب " ج ويمل ١٨٨ كيام الهيان " يزه يمل ١٩ ٣ المهاب يزول القرآن يمل ١٠٠١) يمودونسارى اوربت يرستون معطق قرآن مجيدى اصطلاح اس آیت پی کفارے مواد مشرکین ہیں " برجاء کہ بہود و فسادی اور بعث پرست سب کافر ہیں لیکن قرآن جمد کی اصطلاح ے کہ وہ پرود ونساری پر الل کاک کا اطفاق کر آہے اور بعد پر ستوں پر کھتر اور مشرکین کا اطفاق کر آ ہے۔ معزت ابن میاس رمنى الله انماست موى ب ك جب مسلمان مجه كسلة إيود تورمثركين أن كازاق الاست عوى ب مسلمان اوان دية و وہ کتے یہ اس طرح جا رہے ہیں چے القے والے جاتے ہیں۔ اس لے اللہ تعلق نے الل کاب اور مشرکین کو دوست مانے عِيانَ القر أن جلاسوم

ہے ملاوں کو مع فرادیا۔

ملك اورجنل معاملات من كفارے فدمت كينے من تراب

الم مسلم بن تجاج قديدي متونى والهدروايت كرتي بين:

معفرت عائشہ صدیقتہ وضی اللہ عنما بیان کرتی ہیں کہ وسول اللہ بیج بدر کی طرف کے 'جب آپ ترة الوبرد (مدید ہے چار میل ایک جگہ) پنچ تو آپ کو ایک فضی طا'جس کی جرات اور بہاوری کابحت جریا تھا۔ وسول اللہ بیج ہے اسمال اس کو کے کربحت فوش ہوئے 'اس نے وسول اللہ بیج ہے کہا ہی اس لیے آیا ہوں کہ آپ کی اجباع کروں اور بال نخیمت حاصل کروں۔ وسول اللہ بیج ہے کہا ہوں اس کے وسول پر ایجان لاتے ہو؟ اس نے کہا جس سے فربایا وائیں کو الله واس نے وبایا یا' حق کہ جب ہم ایک ور قت کے ہی بہتے تو اس نے ہرائی بیشکش کی۔ وسول بوائد بیج ہوں کو وہ چلا گیا' حتی کہ جب ہم ایک ور قت کے ہی بہتے تو اس نے ہرائی بیشکش کی۔ وسول اللہ بیج ہوا سے ایک وہ چلا گیا' حتی کہ جب ہم ایک ور قت کے ہی بہتے تو اس نے ہرائی بیشکش کی۔ وسول اللہ بیج ہو اس نے ہرائی وہ جاتی گیا۔ کہا تی وہ چان گیا' ہو میں اللہ بیج ہو اس نے ہر وہ گئی کی۔ وہ اس نے فربایا تم اللہ بیج ہو اس نے فربایا تب وسول اللہ بیج ہو نے فربایا جاو۔

" (صحيح مسلم" الجملة من "(١٨١٤) ١٣٧٩ سن (1 ك " جس" وقم الحدث ١٥٥٠ سن الإداؤد" وقم الحديث ٢٧٣١ سن ابن ياجه ارقم الحديث ٢٨٣٣ سنن داوي " جس" وقم الحديث ٢٣٩١ من الير" جه" وقم الحديث ٢٥٢٣ طبع ما والفكو " من الير " متخبق اليرشاك جها" وقم الحديث ١٤٣٣ منع داوالحديث قابره)

علامه يخي بن شرف لودي شافعي متونى الاحاليد للعيدين

الم شاقی اوردد مرے فلماون کما ہے اگر مسلمانوں کے متعلق کافری دائے اجھی ہو اور اس کی مدد کی ضرورت ہو تو اس سے مدل جائے ورند اس سے مدافعا کموہ ہے اور یہ حدیث اس صورت پر محول ہے اور جب مسلمانوں کی اجازت سے کافر سے فدمت کی جائے آوا ہے کو معلوف دے دیا جائے اور اس کا جمد نہ نگالا جائے۔ ایام مالک ایام شافی ایام ابو صنید اور جبور کا کی مسلک ہے۔

الله تعالی کا اُرشادے: اور جب تم نماز کے لیے ندا کرتے ہو تو وہ اس کو ندال اور کمیل بنا لیتے ہیں اس کی وجہ رہ ہ کہ یہ نوگ متل سے کام نبھی لیت (طائدہ ۸۵) مناسبت اور شان نزول

اس سے پہلے عموی طور پر بید بیان کیا گیا تھا کہ کفار دمین اسلام کا نداق اڑاتے ہیں اور اس آیت میں دمین اسلام کے ایک خاص شعار اذان کے متعلق ان کاستہز او بیان فرایا ہے۔

الم ابوالحسن على بن احمد واحدى حتوفي ١٨٠٠ه عان كرتي بين:

کفار نے جب اذان کو ساتھ انہوں نے رسول اللہ جھیج اور مسلمانوں سے حدد کیا انہوں نے رسول اللہ بہ جہر کے اس سے پہلی کے پاس جاکر کماا ہے تھے آ (سلمی اللہ طلک و سلم) آپ ہے دین جس ایک تی چڑ لکائی ہے 'جس کا ذکر جم نے اس سے پہلی امتوں جس نہیں سنا۔ اگر آپ نبوت کا دعویٰ کرتے جی تو آپ نے اس اذان کو ایجاد کر کے انہیاء سابقین کے طریقہ کی محالات کی ہے ' اور اگر اس دین جس کوئی خیر جوتی تو آپ سے پہلے نبوں اور رسولوں کا طریقہ ہی ہمتر تھا' جس طرح کا تھا ہے اس طرح باللہ تعالی نے ہیں تو آپ ہے کہا تدریری آواز ہے آب اللہ تعالی نے ہیں آپ نے اس طرح جالے کو اپنا شعار بھائیا ہے ' یہ کس قدر بری آواز ہے آب اللہ تعالی نے ہیں آب نے اس طرح جالے کو اپنا شعار بھائیا ہے ' یہ کس قدر بری آواز ہے آب اللہ تعالی نے ہیں آب نے اللہ تعالی کے دیا تا نہائی کے دیا کی اور دورج ذیل آب تا تان کی اور دورج ذیل آب تا تان کی :

اور اس سے اچھی بات اور کس کی ہو سکتی ہے جو اللہ کی طرف بلائے اور نیک کام کرے اور کے کہ ب شک جس وَمَنَّ آخُسَنُ غُولًا مِنْ قَلُ اللَّهِ وَعَلَالِكَ اللَّهِ وَعَيلًا صَالِحُا وَقَالَ إِنَّينُ مِنَ الْمُسْلِعِبُنَ ٥ مَالِحُا وَقَالَ إِنَّينُ مِنَ الْمُسْلِعِبُنَ٥

(حيم السيجادة: ٣٢)

فرما نیرد ار دل میں ہے ہوں۔ (اسباب نزول القر آن میں ۲۰۹۳ مطبوعہ دار الکتب انعلمیہ ' بیرد ت)

ابتداءاذان كى كيفيت

اس آیت بیں ازان کاذکر فرمایا ہے اس لیے ہم ازان کی آبتداء 'ازان کے کلیات 'ازان اور اقامت کے کلیات' ازان کا جواب اور ازان کے بعد دعااور ازان کی فغیلت کے متعلق اختمار کے ماتھ بیان کریں گے۔ فسقول و بالله الشو فیسق و به الاستعمامة بلیق۔

کمدین اذان مشروع نہیں ہوئی تھی اس وقت نماذ کے لیے یوں نداء کرتے ہتے "العسلوة حاصعة"۔ جب ہی مائی نے جب ہی ماؤوں کے لیے تزان کا تھم دیا گیا اور نماز جنازہ نماز عیراء ر نماز میراء میران وفیرہ کے لیے "العسلوة حاصعة" ہے نواکا طریقہ پر قرار دیا۔ معرات عبدالله بن دیداور معرات عربی العنطاب ر منی الله منمانے فواب میں فرشتے ہے اذان کے کلمات سے اور اس سے پہلے ہی موجیج نے شب معراج کے موقع پر فرشیج سے اذان کے کلمات سے اور اس سے پہلے ہی موجیج سے شب

مافع احدين على بن حجر عسقل أن متوفى مهدر لكست بين:

الم طرانی نے بھم اوسلامی روایت کیا ہے کہ حضرت ابو بحر جہیز نے بھی ازان کا خواب دیکھا تھا الور ایام فرالی نے وسیا میں لکھا ہے کہ ذمی ہے زیادہ صحابہ نے ازان کا خواب دیکھا تھا اور علامہ جیلی نے شرح التنبید میں لکھا ہے کہ چورہ صحابہ نے ازان کا خواب دیکھا تھا کین حافظ ابن صلاح اور علامہ نودی نے اس کا انکار کیا ہے۔ تابت صرف معفرت عبداللہ بن زید کے لیے ہے اور بعض روایات میں معفرت عمر جرجی کا بھی ذکر ہے۔ (فتح الباری عند) مطبوعہ لاہور اید تعلید) ایام سلیمان بن احمد طرائی متونی موساحہ روایت کرتے ہیں۔

حضرت عبدالله بن عمر رضى الله عنما بيان كرتے إلى كر بهب رسول الله منظيم كو رات من آسان كى طرف لے مايا كي تو آپ كى طرف اذان كى تعليم دى۔ آپ كى طرف اذان كى تعليم دى۔

(المغم الاوسط عن الرقم الحدث ١٠٣٣ مانة البيثى في الكما بكر التكي شد من ايك راوي طل بن زيد وضع كي طرف منسوب ب) المام احمر بن عمود بزار متوفى ١٧٩٠ والحي شد كے ساتھ روايت كرتے ہيں.

حضرت بحرا کیل آپ کے پاس ایک جانور کے کر آئے جس کو یراق کتے تھے 'جب آپ اس پر سوار ہونے لگے تو وہ کو دشوار محضرت بجرا کیل آپ کے پاس ایک جانور لے کر آئے جس کو یراق کتے تھے 'جب آپ اس پر سوار ہونے گئے تو وہ کو دشوار ہوئے 'وا۔ جرا کیل نے کہا پر سکون رہو ' بخر السیدنا) محد شہر ہے دیاوہ معزز فخص بھی تم پر سوار نہیں ہوا آپ اس پر سوار ہوئے ' حتی کہ آپ رحمان جادک و تعلق کے تاب تک پہنچ 'ای دوران تجلب سے ایک فرشتہ نکاا۔ رسول اللہ بہتر نے فرایا اے جرا کیل اید کون ہے؟ جرا کیل نے کہا س ذات کی تم جس نے بھے جن کے ساتھ مبعوث کیا ہے 'جس می تحقق میں سب سے جرا کیل اید کون ہے؟ جرا کیل نے کہا اس ذات کی تم جس نے بھے جن کے ساتھ مبعوث کیا ہے 'جس محقق میں سب سے مقرب ہوں ' کین شرید ہو کہا اللہ اک سرا قر تحل کی اوٹ سے پیدا ہوا ہوں ' میں نے اس فرشتہ کو اس سے پہلے قسی دیکھا کی فرشتہ نے کہا "اللہ اک سرا قر تحل کی اوٹ سے آواز آئی میرے بندہ نے کہا میں اگر ہوں ' میں اگر ہوں۔ پھر فرشتہ نے کہا لاالمہ الا

الملہ تو تجاب کی اوٹ ہے آواز آئی میرے بندہ نے کا کہ میرے سواکوئی عبادت کا مستحق نہیں۔ (الھے ہے) اکشف الاستار عن زوائد ابر ار 'جا' ص ۱۷ کا البٹی نے کمااس کی سند جس ایک راوی زیاد بن المنذ دے 'اس کے ضعیف جونے پر انغاق ہے 'جمع الزوائد' جامع ۱۳۴)

الم ابوداؤوسليمان بن اشعث بحسماني متونى ٥٥ مد روايت كرت مين

استن ايودادُ واح الرقم الحديث : ٨٨ ٣ معملوندوار الكتب العلميد الدين ١١٦١٥) ٥)

الم محرين الماميل بخاري متونى ان مدروايت كرت من

حضرت ہیں عمر منی افقہ عنما بیان کرتے ہیں کہ جب مسلمان دینہ جس آئے تو وہ نماز کے او قالت جس جس ہوتے تھے اور ان کو ندائنس کی جاتی تھی۔ ایک ون انسوں نے اس سلسلہ جس مشورہ کیا بینض نے کسافسارٹی کی طرح ہاتو س بناؤ۔ بعض نے کسا یمبود کے بگل کی طرح بگل بناؤ۔ حضرت عمر ہوائنے نے کساتم ایک آدی کو کیوں نہیں جیسے جو نماز کی نداکرے تو وسول اللہ میں تیج ہو نمازکی نداکرے تو وسول اللہ میں تیج ہو نمازکی نداکرے ہو کرنمازکی نداکرہ۔

(مح البحاري ع) وقم المدعد مهم مح مسلم الوان! (۱۳۲۷) ۱۸۳ من زوی ع) وقم المدعث: ۱۸۰ سنن نسائل ع ۴ وقم الحديث: ۱۳۵ مند المر "ع" وقم الحديث ۱۳۷۵ مطبور هاد اللكو "بيوت) كلمات اذان عمل قراجب الممد

الم الوطنيف اور الم احدر عمااللہ كے تزديك اذان على بندره كلمات بين اور ان على ترجيج تعيل ہے۔ اور الم مالك اور الم شافعي رسمااللہ كے نزديك اذان على ترجيج ہے الين دو مرتبہ شاد تين كو بست آواز سے كما جائے اور دو مرتبہ شاد تين كو بلند آواز سے كماجائے جيماك معترت او محددرہ بريني كي دوايت على ہے۔

(المقني "جامس ٢٣٣ مطيور داو الفكو "بدالت البتيد" جامس ٢٦ مطيور داو الفكو)

الم ابو منیفہ اور الم احد و محماللہ کا احداثل اس ہے کہ صورت عبداللہ بن ذید جہر ہے نواب یل فرشتے ہے۔ ازان کے جو کلمات سے تھے ان میں ترجیح نہیں تھی۔ انہوں نے می کلمات صورت بلال برائر کو متاہے اور انہوں نے ان ی

كلنت كے ساتھ اوان دى۔

الم الوواؤد سليمان بن اشعث بحسول متونى هدامه روايت كري ين

حضرت عبداللہ بن زید ہولئے بیان کرتے ہیں کہ جب رسول اللہ بھیجیز نے ناتوس بجائے کا تھم دیا' تا کہ لوگوں کو نماز ک لیے جمع کیا جائے' ہیں ای سوچ بچار میں سوگیا۔ میں نے خواب میں دیکھا کہ ایک آدی ناتوس اٹھائے ہوئے جار ہاتھا۔ میں نے کما اسے اللہ کے بٹرےاکیا تم ناتوس فردشت کرد گے؟ اس نے ہوچھا تم اس کا کیا کرد گے؟ میں نے کما ہم لوگوں کو نماز کے لیے جمع کریں گے۔ اس نے کماکیا میں تم کو اس سے انچی چیزنہ بتاؤں؟ میں نے کماکیوں نمیں؟

(سنن ابرداؤد" جما" رقم المصده ۱۹۹۹ سنن داوی " جما" و قم المدید ۱۹۸۷ سنن ابن بابد " جما" رقم المدید ۱۹۹۷ معتف م میدالرزاق" جما" و قم المدید ۱۳۷۷ معتف ابن الی بثید " جما" ۱۹۳۹ سند اجد "تحقیق اجد شاکر" جمها" رقم المدید ۱۹۳۳ طبع داد المدیث قابرد "مستد اجد " جما" می ۱۳۳۳ طبع قدیم " مجمح ابن تزیید " جما" رقم المدید دار اسنن کبری المنیمتی " جما" می ۱۳۹۳ البیر ۲ النبوید لابن بشام " جما" می ۱۳۳۳ طبع داد احیاء الزائ العربی "سنن داد تفنی" جما" رقم المدید ۱۳۴۰ مطبوید داد الکتب العلمید " مجمح ابن حبان " جما" دقم المدید ۱۸ مطبوید موست افر ملک " بیوت " ۱۳۳۷ می

حضرت ابو محذوره کی روایت کامحمل

حضرت ابر محدوده کی دوایت بھی جو ترجیج کازکرہ اس کی دجہ یہ بے کہ حضرت ابو محدوده اسلام لانے ہے پہلے اپ و کسی می لڑکول کے ساتھ مسلمانوں کی افزان کی لفق ایکر رہے ہے۔ ہی بڑی ہے حضن ہوائیں پر انہیں دکھ لیا۔ آپ نے ان کو بلایا اور ان سے فربایا اذان پڑھو۔ انہوں نے اذان پڑھی اور اشبہد ان لاالمه الاالمله اور اشبهد ان محدود مسلول المله کو آبستہ آبستہ پڑھا۔ آپ نے ان شاد تمن کو دوبارہ ندور ہے بڑھنے کا محم دیا تو انہوں نے دوبارہ ندور ہے بڑھا اور آپ کے اذان دلوائے کی برحت کا می دیا تو انہوں ندور ہے بڑھا دور آپ کے اذان دلوائے کی برحت سے یہ مسلمان ہوگئ تو شاد تمن کو پہلے دوبار آبستہ اور پھردوبار زور سے پڑھنے کا یہ فاص واقعہ ہو انہوں ہے۔ ان محد کا میں مدیث بھردی ہو ان مدیث بھردی کا میں مدیث بھرت کی میں ہوئے۔ ان مدیث بھرت کی مدید کی مدید کی مدید کی میں ہوئے۔ ان مدید کی مدید ک

الم ابو ماتم محد بن حبان البستى المتونى عن سهد روايت كرتے بين:

معرت ابر محدورہ بروال اللہ علی کہ ہم بعض ماتھوں کے ماتھ حین کے واستہ میں تھے 'جب رسول اللہ بروال ا

كى آواز سى ايم رأست ايب طرف بث كے اور جم في اذان كا غراق الله في بلند آواز سے اذان كى نقل الرنى شموع كردى- رسول الله موجيد في قراياجس كى آوازين من دبابول عم مى الله كونى شخص اس كوبيجاناب؟ يمرجم كوبلاياكي اور رسول الله ويجير كم ملت الله عيل كروياكيا رسول الله ويجير في فراياب آواز تم من سه كس كي تقي اب في ميري طرف اشارہ کیا۔ آپ نے باقی ترکوں کو بھیج دیا اور بھے روک لیا۔ اس وقت بھے رسول الله مرجی کے علم دینے سے زیادہ کوئی چیز تابیند نس تح- آپ نے بچے ازان دیے کا حکم دیا اور خود مجے ازان کے کلمات بتائے۔ اور فرالیا کو الله اکسر المله اکسر المله اكبرالله اكبر اشهد ال لااله الاالله اشهدال لااله الاالله اشهدان محيدا رسول الله اشهد ان محميدا رسول الله آپ نے قرابادوبارہ پر حواور اپن آواذ بلتد كرد آپ نے قرابا اشهد ان لاال الا الله 'اشهدان لااله الاالله 'اشهدان محمدا رسول الله 'اشهدان محمدا رسول الله 'حي على الصلوة 'حي على الصلوة 'حي على الملاح' حي على الملاح' الله اكبر الله اكبر 'لا المه الاالمله - جب آب جمع ازان برحوالے ، فارخ ہو گئے تو آپ نے جمعے بلایا اور جمعے ایک تقبلی دی جس میں جاندی تھی' اور آپ نے دعا کی' اے اللہ ؟ اس میں برکت دے اور اس بر برکت دے۔ میں نے کمایار سول اللہ الجھے اذان دینے کا عظم د بيئ - آپ نے فريلا على نے تميس محم ديديا - ميرے دل على بتنى آكى البنديدى حى دوس آكى مبت سے بدل كى - ير عى وسول الله على على على على على على اسد كياس كيد اور على وسول الله على كر عم عد محمد اذان دين لكا (من حبان مجان عم من قم الحديث: «١٨٥ سنن الإداؤه عن أرقم الحديث: ١٠٠٠ سنن نسالي عم وقم الحديث: ١٠٠٠ سنن ابن ماجه ج" رقم الحديث: ٨٠٠ معنف عبد الرزال" ج" رقم الحديث ١٤٧١ مند احد" ج" الهوم" طبع قديم" سنن كبري لليعني "ج" ص ۱۳۹۰ منن دار تعنی کا رقم الدیث: ۸۹۰ مند الثانی اص ۱۳۰۰ مطبور دار الکتب العلیه ایردت ۱۳۰۰ ۱۳۰۰) کلمات ا قامت میں نداہب ائمہ ،

ظمات اقامت میں قرابیب اثمیہ ، انام الک اور اہام شافعی کے نزد یک اقامت میں اللہ اکبر دود فعد اور باتی کلمات ایک ایک مرتبہ پڑھے جاتے ہیں اور اہام ابو صنیقہ اور اہام احمد کے نزد یک اللہ اکبر اللہ اکبر ' جار جار وقعہ اور باتی کلمات دو دو مرتبہ اور ' آخر میں لاانہ الا اللہ ایک مرتبہ پڑھاجا تا ہے۔(السنی' جن'میں میں ' بدایت الجند ' جن'می۔ ۸)

الم الك اور الم شافي كي دليل يه مدعث ب

الم الوعيثي فين عيني ترزي متوفى ١٥ معد روايت كرت بين

حضرت انس بن مالک می بینی بیان کرتے ہیں کہ حضرت بلال میں بینی کو عظم دیا کیا کہ ازان کے کلمات دو دو مرتبہ پر حیس اور اقامت کے کلمات ایک ایک مرتبہ پر حیس۔

(سنن ترفری من رقم الدیث: ۱۳۰ من البوادی من البوادی من الدیث: ۱۳۳ منج مسلم او قم الدیث: ۱۳۷۸ ۱۳۵۸ سنن البوداؤو م و قم الحدیث: ۱۳۸۵ سنن نسانی منه و قم الدیث ۱۳۷۰ سنن این این اید من از قم الدیث: ۱۳۹۱) امام ابو منیفه اور امام احمد بن منبل و مجمعالیندگی دلیل بیر مدیث ہے:

الم الوصيل محدن عين روى مولى الدالد دوايت كرت بن

حفرت عبدالله بن ذيد جي بيان كرح بيل كر رسول الله من كاذان اور اقامت من دو دو كل تقد

(سنن ترفدي على و فم المدعث: عهد سنن وار تلفي على أرقم الدعث: ٩٢٥ سنن كبري لليعمتي على م ١٩٢٠ اس مدعث ك

رادي نقد ين)

نيزا حطرت ابو محذوره بريخ بيان كرتم بي كررسول الله بين كان كوازان كانيس كلمات اورا قامت كم مروكات كي تعليم وي أنهول بقا قامت كي كلمات الله طرح بيان كيدا لله اكبرالله اكبرالله اكبرالله اكبرالله اكبرالله اكبرالله الكبرالله الكبراالله المبرالله الكبراالله المبدان المبدان المبدان المبدان محمد ارسول الله الشهدان محمد ارسول الله محمد على المعلوة كري على المعلوة كري على المبداة كريرالله اكبرالله اكبرالله الاالمه الاالمه المبارة كريرالله المبارة كريرالله الكبرالله الاالمه المبارة المبارة

(منح ابن حبان عمر ارقم الديث: ١٦٨ من ابودادو الحائم الديث: ١٩٨٠ منن ترزي كرائم الديث: ١٩٣ مند احد الحراج ٢٠٠٠ عمر ١٠٠٨ جها من ١٠٠١ علي قديم منن نسال المرح ١ رقم الحديث: ١٣٩ منح ابن تزييه كرا رقم الحديث: ١١٥ من داري الجرا رقم الحديث: ١٩٢١-١٩٨ منن كراني للبيعتي جهام مهمه)

> اس مدیث میں الم ابوطنید اور الم احرے موقف ک واضح دلی ہے۔ اوان کا جواب

> > المام ابو حاتم محدين حبان بستى حوفى ١٥٥ مد روايت كرية إن

حضرت عمر والخربي بيان كرتم بين وسول الله مرتبع في فرلما به سودان كم "الله اكسر" الله اكسر" اورتم بن على على الله اكبر" مجروه كم "اشهد ان لااله الااله الاستحدا وسول الله " مجروه كم "حى على المصلوه " قرير كم "لاحول و لا قوة الابالله " مجروه كم " حى على المفلاح " قوير كم "لاحول و لا قوة الابالله " قرير الله الااله الاالله " قرير الله الااله الاالله " قرير الله الاالله " قرير الله الاالله " قرير الله الاالله " قرير بنت يمي واقل موجا على الله الكبر " الله الاالله " قرير بنت يمي واقل موجا على الله الاالله " قرير بنت يمي واقل موجا على الله الاالله " قرير بنت يمي واقل موجا على الله الااله الاالله " قرير بنت يمي واقل موجا على الله الااله الاالله " قرير بنت يمي واقل موجا على الله الااله الاالله " قرير بنت يمي واقل موجا على الله الااله الاالله " قرير بنت يمي واقل موجا على الله الااله الاالله " قرير بنت يمي واقل موجا على الله الاالية المي الميانية الميانية الله الااله الاالله " قرير بنت يمي واقل موجا على الله الااله الاالله " قرير بنت يمي واقل موجا على الله الااله الااله الاالله " قرير بنت يمي واقل موجا على الله الااله الااله الاالله الااله الله المالة المالة الكبر الوله الااله الااله الااله الااله الااله الااله الاله الاله الاله الاله الاله الاله الاله الماله الم

(منح ابن ميان اجس وقم المديث: ١٩٨٥ منج مسلم اذان ١٢ (١٣٥٥) ١٢٠ من ايوداؤو وقم الديث: ١٥٠ من نسائل اج١ وقم الديث المائل اج١ وقم الحديث ١٤٠ وقم الحديث المائل وقم الحديث ١٥٠ من المديث المديد المديد ١٥٠ والميلا المنسائل وقم الحديث ١٥٠ من ١٥٠ وقم الحديث المديد الم

وعابعد الاذان

الم محرين اساعل بخارى متوفى ٢٥١ه ردايت كرتي ين

حضرت جابرين عبدالله رضى الله عنمايان كرتے بين كـ رسول الله جيبر فرمايا جس محض فاذان فف ك بعديد عالى:

اللهم رب هده الدعوة التامة والصلاة القائمة آت محمد الوسيّلة والمصيلة و ابعثه مقامام حمود إلدى وعدته

اے اللہ اس کال مداء اور اس کے بعد کھڑی ہو لے والی فاز کے رب اسد تا محد مرتبع کو جنت بی بلند مقام اور فائز فرماجس کاتو فنیلٹ عطافر مااور آپ کو اس مقام محمود پر فائز فرماجس کاتو سے وعد و فرمایا ہے۔

نوّاس فخص پر میری شفانسته واجب بو جلت گید. (مجع انبخاری' جها رقم الحدیث: ۱۳ مسجح مسلم ' اذان '۱۱' (۸۳۷(۳۸۳ منن ترزی مجا کرقم الحدیث: ۳۴ سنن ابوداؤد ' جها رقم المحديث الا من أمال على من المحدث بريما من ابن اب على المحدد المحدث المحدث المراح المحدد المعلى المحدد المعلى المعدد الم

الم الوالقاسم سليمان بن احمر طراني حوفي مدسور روايت كرتي بين:

حضرت ابوالدوداء برہیجہ بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ منتیج جب اذان نئے تو دعا کرتے اے اللہ 11س نداہ کال اور اس کے بعد قائم ہونے والی نماذ کے رب 'اپنے بندہ اور اپنے رسول محمد بیجیج پر رحمت نازل فرمااور قیامت کے دن ہمیں آپ کی شفاعت میں (داخل) کردے۔(رسول اللہ بیجیج کابیہ دعا فر الماحادی تعلیم کے لیے ہے۔سعیدی فعفراد)

المعمالاوسائح مورقم الحديث ١١٤٥ مجع الزوائد عواص ١٣٣٣)

دهرت أبن عمال رمنى الله عنما بيان كرتے بيل كر رسول الله يجين فرمايا بس هخص في اؤان بن كريد دعاكى الشهد ان لااله الاالله وحده لاشريك له و ان محمدا عبده و رسوله "اے الله الاالله وحده لاشريك له و ان محمدا عبده و رسوله "اے الله الاالله وحده لاشريك له و ان محمدا عبده و رسوله "اے الله الاالله وحده لاشريك له و ان محمدا عبده و رسوله "اور قيامت كون بم كو آپ كى شفاعت مي اور آپ كواس مقام بر و ان بم كو آپ كى شفاعت مي (داخل) كردب موجو فضى بيد دعاكرے كانس كے ليے شفاعت واجب بوجائے كى۔

(المعم الكبيرة ١٣ أقم الحديث ١٥٥٣ ؛ في الزوائد جن ١٣٣٠ الجام الكبيرة عن أقم المديث ١٣١٠ م ة القارى ج ٢٥٥٥) اذ ان كي فعنيلت من احاديث

الم محدين استأكيل عظاري متوفي ٢٥١هـ روايت كرية بين:

جعرت مبدالرحمٰن بن انی معصد بیان کرتے ہیں کہ ان سے حضرت ابو سعید فدری وہیز کے فرمایا میں حبیس دیکھا ہوں کر تم بحریوں اور جنگل سے محبت کرتے ہو " ہیں جب تم اپنی بحریوں یا جنگل میں ہو تو نماز کے لیے لؤان دیا کرو' اور یہ آواز بلند لؤان کمنا کیو تکہ موذن کی آواز کو جو بھی جن یا انسان سنتا ہے 'لور جو چیز بھی سنتی ہے 'وہ قیامت کے دن ہیں کے جن میں گواہی دے گی۔ حضرت ابو سعید نے کما میں نے یہ مدعث رسول اللہ مزیج ہے سن ہے۔

(مح البحاري عن المحديث المعديد المعلى من منائل عن وقم المعديد ١٣٣ سن ابن البد عن ارتم المديث ١٥٦٠ موطالام بالك وتم المعديث المحال مند البر "ج" من ١٣٥٣ مند حيدي "جا ارتم المعديد الد معنف عبد الرزاق "جا" وتم المعديد ١٨٦٥ مج ابن فريمه "بنا وقم المعديث المعنى كمر في طبحتي "جا موري عن المراح المعديد المعاد المعديد المرافق المعاد ١٨٦٥ مج ابن

الم مسلم بن حجان فنسدى متونى المعدروايت كرتين

حضرت جار جائز بیان کرتے ہیں کہ شیطان جب ازان کی آواز سنتا ہے تو روحاء والیک مقام اپر بھاگ جا آ ہے۔ راوی نے بع جماک روحاء کتنی دورہے؟ تو صحرت جار نے کما دو مدید سے چھیں سل ہے۔

(میچ مسلم ' مسلانا ' ها' (۱۳۸۸) ۱۳۸۰ میچ این قزیر ' چا'ر قم تلع عد ۱۳۳۰ مید ایر ' چ۳ می ۴۳۳۰ شرح الدز ' چ۳ و قم الحصی شد: ۱۳۱۵ میچ این میکن ' چ۳ از قم الحدیث: ۱۳۷۳ سنن کیرنی تلیمتی ' چا' می ۱۳۳۷)

حفرت ابو ہریرہ بیٹن بیان کرتے ہیں کہ ای والا نے فرمل شیطان جب نماز کی عدا شاہ و زورے باولگا آے ایک

اذان کی آوازندس سے اور جب موذن خاموش ہو جا آے تو پروایس آ کروسوسہ والا ہے۔

" المج مسلم السلوة " ۱۱ (۱۱۸ / ۱۸۳ / ۱۸۳ می این حبان " جا" رقم الحدیث: ۱۲۳ مید امر " جا" مل ۱۲۳ می قدیم المج این قزید "

جا وقم المعدد ١٩٧٠ سنى كبري لليمتى كا ص ١٩٢٠ شمة الدن ٢٠٠ وقم المعدد ١١٣٠)

الله تعالی کااوشاوی : آپ کے که اے اہل کتب تم کو مرف یہ اگوار نگاہے کہ ہم اللہ پر ایمان لاے اور اس پر جو بماری طرف اور اس پر جو بماری طرف اور اس پر جو بملے بازل ہوا اور ہے تک تم بس سے اکثر لوگ قاس بیں۔(المائدو:۵۸)

مناسبت اور شان نزول

اس سے پہلی آیت میں یہ فرلما تھاکہ اہل کلب نے دین اسلام کو بنسی فران بنالیا ہے اور اب اس آیت میں بنایا ہے کہ انسول نے دین اسلام کو عزت اور احرام سے جو تبول نمیں کیا اس کی کیا دجہ ؟

الم الو الد عيد الملك بن بشام متوفى معمد لكين بيل:

اہم ابن اسماق نے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ بچیر کے پاس میرویوں کی آیک بھادت آئی 'جس میں اویا سربن افعلی' بالخ بن انی باف عازر و فیر حم بھے۔ انہوں نے آپ سے بوجھاکہ آپ رسولوں میں سے کس کس پر ایمان لاے ہیں؟ آپ نے فرایا ہم اللہ پر ایمان لاے اور اس پر جو ہماری طرف بازل کیا گیا اور جو معترت ابراہیم محصرت موسی اور اس کے در میان فرق نہیں کرتے اور ہم اللہ کے لیے سر شلیم فم کرنے والے ہیں 'جب آپ نے معترت جسی این حریم کا ذکر کیا تو انہوں نے آپ کی نیوت کا انگار کر دیا اور کما ہم میسی این حریم پر ایمان فیس لاتے اور نہ اس محصر پر جو ان پر ایمان فیس لاتے اور نہ اس محصر پر جو ان پر ایمان فیس لاتے اور نہ اس

آب كئے اے الل كركيا تم كو صرف يہ عكوار نكا ہے كہ بم اللہ ير اعلن لائے۔(الآي)

(الميرة النبويه مع الم مع ١٨٠ عام الهيان على ١٨٠ مع ١٩٠٠ اسهاب زول القرآن اص ١٠٠٣)

یمود کابیض تیول پر ایمان لانا اور بعض پر ایمان نہ لانا تفطأ باطل ہے "کیونکہ مغزو کی دلالت کی وجہ سے نبی پر ایمان لایا جا آ ہے اور جب یمود مغزو کی دلالت کی وجہ سے معترت موٹی علیہ السلام پر ایمان لائے تو بھر مغزو کی دلالت کی وجہ سے معترت میں کی طید السلام پر کیل ایمان جس لاست؟ جبکہ آپ نے بھوت حسی اور معنوی معنوی

آیت فرکورہ کی ترکیب پر شہمات کے جوابات

الله تعالى كاارشادے: اور ب شك تم من اكثرادك فاس من

اس پر یہ اعتراض ہے کہ یمود تو تمام کفاد لور فساق میں 'یمال اکثر کو فاس کیوں فرمایا ہے؟ اس کا جواب یہ ہے کہ اکثریمود
دنیا کی عزت اور روپ ہیے کے لائج میں حق کو چھیاتے تھے۔ اس لیے فرمایا تم میں ہے اکثر لوگ فاسق میں الڈاا تم اپنے دین کے
اختیاد ہے بھی نیک فیمس ہو' فاسق اور یہ کار ہو۔ کیو تک کافر اور یہ متی بھی بعض او قلت اپنے دین کے اختیار ہے سچا اور دیا ت دار
موٹ اپنے 'جبکہ تم اپنے دین کے اختیاد ہے بھی جھوٹے لور فائن ہو اور طاہر ہے کہ سب یمودی اس طرح نہیں تھے۔ اس لیے
فرمایا: تم میں ہے اکثر لوگ فائق ہیں۔ وو مرک وجہ یہ ہے کہ اعض یمودی ایمان کے آئے تھے۔ اگر یہ فرمایا جا آ کہ کل یمودی
فائق ہیں تو ہو سکتا ہے کہ کوئی قص ان کے متعاق بھی فسق کار بھی کر آ

دوسراسوال یہ ہے کہ اور بے شک تم میں ہے اکثر لوگ قاسق میں اس کا صلف اس جملہ پر ہے ہم اللہ پر ایمان لائے اور اب اس کامعن اس طرح ہوگا تم کو صرف یہ ناکوار لگے کہ تم جی ہے اکٹرلوگ قاس میں جبکہ یمودیوں کے زویک ان کافش الوار نیس تما؟ اس كاجواب يه ب كه تم من س اكثرلوك فائل بين-يدان س تعريضة خطاب ب اور اس كامعنى يد ب كه بم مسلمان فاس نسي بين بكك فيك اور صالح بين اور مسلمانون كالنك اور صالح بوناان كو اكوار مزر ما تعاد و سراجواب يد ي ك یماں اعتقاد کا نفظ محذوف ہے ایعنی تم کو اپنے فت کا اعتقاد ناکوار گزر آہے۔ تیمراجواب یہ ہے کہ یمال سبب کالفظ محذوف ہے ینی تم کو ہمار اللہ پر ایمان لاناس کے ناگوار گزر آے کہ تم میں ہے اکٹر لوگ فائل ہیں۔

الله تعالی کاار شادے: آپ کئے کہ کیامی تم کو بتاؤں کہ اللہ کے زویک کن نوگوں کی سزااس ہے بھی بدتر ہے 'جن ر الله نفت كي اوران ير فضب فرايا وران من سے بعض كوبرندر اور بعض كو بعنز يو بناديا اور جنوں نے شيطان كى عبادت

کی ان کا نعطانا برترین ہے اور یہ سیدھے رائے سے بھٹے ہوئے ہیں۔(المائد د ۲۰۰۰

میں دو کو علم تعاکد ان کے اسلاف میں ایسے لوگ میں جن پر اللہ کا تحضب نازل ہوا اور ان پر اللہ نے لعنت کی۔ میں د میں ہے جنبوں نے ممانعت کے باوجود ہفتہ کے دن شکار کرے اللہ تعالی کی نافرمانی کی تھی ان کو بند رینادیا کیااور جن میسائےوں نے مائدہ (دسترخوان) کے معالمہ میں نافرمانی کی متنی ان کو خسو ہو بنا دیا کمیا۔ ایک قول یہ ہے کہ ہفتہ کے دن جن میود ہوں نے نافرمانی کی تھی ان میں سے جوالوں کو بندر بنا دیا کیا اور ہو ڈھوں کو خنو ہو بنادیا گیا۔ موجودہ بندر آور خنو ہو ان کی نسل ہے نمیس ہیں۔ سلح مسلم میں حضرت ابن مسعود جویش ہے مروی ہے کہ رسول الله میں ہیں سے بندروں اور خنو ہو وں کے متعلق سوال کیا کیا ا کیا ہے وی میں جن کو اللہ تعالی نے مسے کر دیا تھا؟ آپ نے فرمایا اللہ تعالی نے کسی قوم کو ہلاک کرے یا مسے کر ہے پھراس کی نسل نمیں چلائی۔بندر اور خسورو اس سے سلے بھی ہوتے تھے۔

المج مسلم وقدر ٢٠١٠ ١١١١ ١١١١١ منداح بتحقيق احد شاكر علارة الحصية ٥٠٠ منداحد اجام ١٠٩٠ طبع قديم الله تعلق كاارشاد ب: اوروه بب آپ كياس آتے بي توكتے بين بم ايمان لائے ملائك وه آپ كياس كغرك ساتھ واخل ہوئے تھے اور کفر(ئی) کے ساتھ خارج ہوئے اور اللہ خوب جائے والا ہے جے وہ چمپائے تھے۔ (الرا کدو: ١٧)

اس ہے پہلے اللہ تعلق نے فرملیا تفاکہ میںووی سے وین اسلام کو بنسی اور کمیل بہتالیا تصاور وہ اوّان کا نہ الّ اڑاتے تھے۔ پھر الله تعالى نے فرمایا ان كو مسلمانوں كا ايمان اور تقوى جاكوار معلوم ہو تا ہے۔ الله تعالى نے فرمایا ان كو ان كے كرتونوں كى جو سرا آ فرت میں کے گی 'وہ ان کو اس ہے زیادہ چکوار ہو کی اور اب اس آیت میں دین اسلام کے صدق اور برحق ہونے کی ایک اور دلیل بیان فرائی که جو چی وه ایند داول می جمیات تے اس کواللہ تعالی نے ظاہر فرادیا۔

امام ابوجعفر طیری متوفی ۱۳۱۰ نے بیان کیا ہے کہ بعض یمودی نی میجید کے پاس آکرید بیان کرتے کہ وہ موسن میں اور اسلام کے تمام احکام پر رامنی ہیں۔ طلا تکہ وہ اپنے گغراور ممرای پر ڈیٹے ہے۔ اور اس کافرانہ عقیدہ پرنی مرتب کی فد مت ص آتے اور ای گفریہ عقید ویر و خصت ہوئے۔ (جامع البیان 'جزد' م ۱۳۰۰ مطبوعہ خاو الفکو 'جروت' ۱۳۵۵ه)

اس آیت کامعنی یہ ہے کہ ایک لیچھ کے لیے بھی ان کے ول جس ایمان واخل شیں ہوا' دو کفر کے جس حال میں آپ کے پاس آئے تھے' ای مال میں لوٹ گئے۔ کیونکہ ان کے دل سخت تھے اور ان کابیہ قول کہ ہم آیمان لائے ' بالکل خلاف واقع اور جموث ہے اور اس جموث ہے ان کی غرض ہے تھی کہ مسلمانوں کے ساتھ کرو فریب کرنے کی بہت کو مشش اور جدو جدد کریں ' كيونك وومسلمانول سندبهت بغض اور عداوت ركح يخصه

الندے دیے رہے تو ہم ان کے حن برل کو مزور من وسیط اور یم ان کونسزل کی جنول یں مزور

غیان القر آڻ

التَّعِيْمِ@ وَلَوْاتَهُمُ اَتَامُوا التَّوْرُكَ وَالْإِنجِيلَ وَقَا الْوَلِي

كست 0 اوراك ورات اور اليل كر عام د ك الداك كر و قام د ك ي ال كر ون

إِلَيْهِمُ وَنَ تَا بِهِهُ لَاكَالُوا مِنَ ذَوْتِهِمُ وَمِنَ تَحْتِ ارْجُلِهِمْ

ان کے دب کی جانب سے اڑل کیا گیا ہے تر ان کے ادر سے می ان پروزق برت اور زمی می ان کے لیے رزق

مِنْهُ وَ أُمَّهُ مُّ مُنْ مُنْ اللَّهُ وَكُثِيرُمِنْهُ وَسَأَءَ مَا يَعْمَلُونَ ﴿

این ان ی سے اور الا یادروی یا اور ان ی سے دیارہ رو وک یں جربے کا کرنے یں 0

الله تعلق كالرشاوي: آب ان بن س نواده تر لوكول كود يكيس كدود كناه مركش اور حرام خورى بن تيزى سے برھتے ہيں۔ يہ بہت برى حركتي كروب ہيں۔ (المائد و ۱۳)

اس آیت میں یہ بتایا ہے کہ بیودی ہر هم کے گناہ ہے دھڑک کرتے ہیں اور وہ کمی هم کے گناہ میں ججک محسوس نہیں کرتے۔ خواہ وہ گناہ کفری کیوں نہ ہو۔ بعض مضرین نے کہاہے کہ اس آیت میں اثم سے مراد کفرہے اور عدوان کے سنی اللہ تعالی کی مقرد کی ہوئی مدے آگے بوصنا ہے۔

الله من بروبوں کا ذکر کیا گیا ہے اور اس کا من ہوتا ہے اور اس کا من ہے کہ جن یمودیوں کا ذکر کیا گیا ہے اور اللہ تعلق کے احکام کی مخاطب کرنے اور مثان و حرام میں اس کی مدود سے تیلوز کرنے اور رشوت نے کر جموٹے نیسلے کرنے میں مت تیزی سے روال دوئل ہیں اور جو چکہ ہے کر رہے ہیں "وہ سراس افل کام ہیں۔۔

الله تعالی کاار شادے: ان کے راہب اور پاؤری انسی مناه کی بات سے اور حرام کماتے سے کوں نہیں رو کتا ہے جو

کھ کردہ ہیں میں میں کام ہیں۔(المائد: ۱۳) نیکی کا عکم نہ دینے اور برائی ہے نہ روکنے کی زمت

گناہ کی بات کئے ہے مراو بھوٹ بولتا ہے۔ وہ ایمان تعی الاسے تھے اور رسول افلہ بھی ہے کئے تھے ہم ایمان الاسے ہیں اور ہے جموث ہے اور قورات میں جموث ہوئے ہے۔ مع قربایا ہے۔ ای طرح وہ رشوت لے کر جموٹے بیما کرتے تھے اور اس ہے بھی قورات میں مع کیا گیاہے اور ان کے علاواس ہے بھی مع نمی کرتے تھے اور گناہ کر سے گا کہ نہیت گناہ ہے مع نہ کرنا اس ہے اور گناہ کر آئے اور گناہ ہے مع نہ کرنا محق گناہ ہے اس کے گناہ کر آئے اور گناہ ہے معے نہ کرنا محق گناہ ہے اس کے گناہ کر آئے اور گناہ ہے وہ ان کو گناہ ول سے نمیں دور ہے اس کے اس کی توان اور گناہ ول سے نمیں دور ہے اس کے اس کی تیان اور گناہ ول سے نمیں دور ہے تھے۔

حسن المرئ نے کما کے کہ رہانہوں سے مراو بیرائیوں کے علاویں اور احباد سے مراویرو کے علاویں اور آیک آول یہ کے کہ دو اول انتظام سے مراویروں کے مراویروں کے حفاق ہیں۔ آیک افقا سے مراویروں کے درویش ہیں اور دو مرت ایک افقا سے مراویروں کے علاوی سے معامد این ہودی نے نقل کیا ہے کہ حضرت این عباس رضی اولتہ خشمائے فرایا علاوی جیرے کے باب میں یہ میں سے خت آیت ہے۔ خماک نے کماک قرآن جمید کی جس سے زیادہ خوف بردا ہو آ

غيان القر أن

بلدسوم

ے ووی آیت ہے۔ کو تکہ جو فض نکی کا عم دیے اور برائی ہے دوکتے میں سستی اور کو آئی کے اس کو اور برے کام کرنے والے فخص دونوں کی زمت کو اس آیت میں افتہ تعالی نے جمع فرمادیا ہے۔ (زادالمبر اج مامی میں میں) نیکی کا تھم نہ وسینے اور برائی ہے نہ رو کئے پر و عید کی احادیث اہم ابوالقاسم سلیمان بن احر فیرانی متوتی ۱۰ میرو روایت کرتے ہیں:

حصرت جار برہ بنی بیان کرتے ہیں کہ رسول افتہ بڑھی نے فربال اللہ نے ایک فرشتہ کی طرف وی کی کہ فلاں نظال استی والوں پر ان کی بستی کو الب دو۔ اس نے کما اس بستی میں ایک برندہ ہے جس نے ایک فی تیری نافر بانی نہیں گی۔ اللہ نے فربالا اس کی بستی کو اس محض پر اور بستی والوں پر الب دو کیو تکہ میری وجہ ہے اس محض کا چروا یک دن بھی فصرے حضر نہیں ہوا۔ اس مدے کے دور اویوں کی جمعیت کی گئے ہے۔ ایس المبارک اور ابو حاتم نے ان کی توثیق کی ہے۔

(عجع الزواك عديم مع ٢٠ معم للاوسلاج ٨٠ وقم الدين عدد ٢٥ مطيور كتيد المعادف وياش ١٥٥٥ م)

الم الوصيلي عمان عيني ترزى متونى اعدروايت كرتم ين

حفرت الو بكر صدفق بروني في المن المراق المراق في يراق المراق الم

صرت مذیقہ بن کان برطی وان کرتے ہیں کہ نبی عظیر نے فرایا اس ذات کی شم جس کے بعنہ و قدرت میں میری جان ہے 'تم ضرور نیکی کا تھم دیتے رہنا اور برائی ہے روکتے مہنا' ورنہ منتریب اللہ تم پر عذاب بھیج دے گا' پھر تم دعا کرو کے تو تساری دعا قبول نہیں ہوگی' یہ مدیث حسن ہے۔

(سنن ترزی عوار الم علی ۱۳۵۱ سنن اید داؤد اج ۱۳ دقم الدید ۱۳۳۸ سنن این اجه عوار قم الدید ۱۳۰۵ می ۱۳۰۰ می ۱۳۰۰ م حضرت ظارق بن شاب برخید بیان کرتے بین که جن نے رسول الله طخیر کویے فرماتے ہوئے متاہ کہ تم میں ہے جو هخص کمی برائی کو دیکھے تو وہ اس کو این ہاتھ سے برل دے اور جو اس کی طاقت نہ دکھے تو زبان ہے بدلے اور جو اس کی طاقت نہ درکھے وہ اس کو دل سے بدلے اور یہ سب سے کنود رائیان ہے۔

(مج مسلم انجان اله من اله (۴۹) عدا سن اله واؤد اجها سن حده اسن تری اجها رقم الهرید دارا اسن نسالی ارقم الهری دارا اسن نسالی از آم الهری دارا الهری اله الهری اله الهری الهر

هيئان الكر أن

چھوڑ دیا تو سب ڈوب کر ہلاک ہو جا کی مے اور اگر ان کے ہاتھوں کو سوراٹ کرنے سے روک لیا تو وہ بھی نجات پایس کے اور علی منزل والے بھی۔

ا منج البخاری عنه از قم المصنعة ۱۳۵۷٬۲۳۹۳ سنن ترکی عنه رقم المدعند ۱۸۸۰٬۳۶۰ مند احد ' بخه' رقم المدعند ۱۸۳۸۱ منج داد الفکو ' ج۴ م ۲۷۰٬۲۷۳٬۴۷۰٬ منج قدیم 'سنن کیری المنحقی' ج۴ م ۴۸۸٬۴۸۱)

معرت جریر براین بیان کرتے ہیں کہ عل نے رسول اللہ برائی کو یہ فرماتے ہوئے ستاہے کہ جس توم میں گناہوں کے کام کے جارہے ہوں اور وہ ان گناہوں کو مطالے کی قدرت رکھتے ہوں اور پھرنہ مٹا کی تو اللہ ان کو مرنے سے پہلے عذاب میں جالا کردے گا۔ اس مدیث کے تمام راوی نُقہ میں اور اس کی سند حس ہے۔

(محمح این حبلن کیا در قم الحدیث ۱۳۰۰ سنن ایوداود کیم و آم الحدیث ۱۳۳۹ سنن این ماجه کیم و قم الحدیث ۱۳۰۹ سند احر ج۲ من ۱۳۳۹ سم ۱۳۳۱ قدیم الکیم الکیم للفتر الل ج۲ در قم الحدیث ۱۳۳۸ ۱۳۸۳)

ا یک روایت بی ہے جس قوم میں گناد کیے جائیں دو قوم زیادہ اور عالب ہو پھر بھی مدامنت کرے اور طانوش رہے اور برائی کو بدلنے کی کو شش نے کرے او پھران سب بر عذاب آئے گا۔

(المعم الكيم الكير أن م الحديث ١٣٨٥-٢٢٨١-١٣٨٥ من الحد الجماس ١٣٥٠-١٣٩٠ المع من كبرى لليمتى اج ١٠ ج ١١) معرت الوسعيد خدرى بوالخر بيان كرتے بي كر في منظيم في الله الله عنديد بيا جماديد بي كد ظالم باد ثالا كر مائے انساف كى بات بيان كى جائے۔ يہ معت حس غرب ب

(منن ترقدی جه من وقم الحدیث: ۱۷۸۱ سن ابوداؤد جه من الحدیث: ۱۳۳۳ سنی این ماید به ۲۴ وقم الحدیث: ۱۳۳۱ مند البراار اوقم الحدیث: ۱۳۳۳ بچه الزوائد کچه اص ۲۷۷)

المام البوداؤد سليمان بن اشعث متوفى الدجه روايت كرتے بين:

صفرت عبداللہ بن مسعود براتی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ برجین نے فریا بنوامرا کیل ہی سب سے پہلی فرانی یہ واقع ہوئی کہ ایک فضی دو مرے فضی دو مرے فضی اللہ سے فار اور جو گام تو کر رہا ہے اس کو چھو ڑو ہے اس کو تک کے جائز فیل ہے۔ گرجب دو مرے دن اس سے طلاقات کرتا تو اس کاوہ کام اس کو اس کے ماتھ کھانے پینے اور المحنے بیٹنے سے مع نہ کرتا جب انہوں نے اس طرح کیاتو اللہ تعالی نے ان کے دل ایک بیسے کر دیئے۔ ہر اللہ تعالی نے فور المحنے بیٹنے سے مع نہ کرتا جب انہوں نے اس طرح کیاتو اللہ تعالی نے ان کے دل ایک بیسے کر دیئے۔ ہر اللہ تعالی نے فور المحنی بین مربع کی زبان سے احدت کی گئی کیو تکہ انہوں نے نافر اللی کے دو کرتے تھے اور دو کھی وہ کرتے تھے اور دو کھی دو کرتے تھے اور دو کھی دو کہ تا تھوں کو کھی دو کہ انہوں کے در براگا ور در اللہ کا دو مور کے انہوں کو خرور میں ایکھ ااتم ضرور نظم کرتے دانے در اللہ کا دور دو کھی کہ کہ کہ کہ کہ کہ خرور کرتا ورنہ اللہ تمارے دل بھی ایک بیسے ضرور نظم کرتے دانے کہ این طرح لعنت کرے گئی ایک بیسے ضرور نظم کرتے دانے دان کر این کہ دور کرتا ورنہ اللہ تمارے دل بھی ایک بیسے صور نظم کرتے دانے دانے کہ بیسے کردے گائی ہی طرح لعنت کرے گئی این راحت کی تھی۔

اسنن ابودالاد على وقع الحدث ٢٠٠١ من المعاملة ١٠٠١ الم ترفرى في كماية حديث حن فريب من سنن ترزى على المديث المديث المديث المدينة على المدينة المدينة المراج ا

مناسبت اورشان نزول

اس سے پہلے اللہ تعالی نے یہود کی برائیاں اور ان کے گناد ذکر فرمائے تھے کہ وہ گناد اور مرکشی میں تیزی سے دو ڈتے ہیں'
حرام کھنتے ہیں اور طال اور حرام کی تمیز کے بغیربال عاصل کر کے جمع کرتے ہیں۔ اس آیت میں ان کی سب سے بڑی برائی اور
سب سے بڑا کفر بیان کیا کہ انہوں نے اللہ عزوج ل کی طرف بخل کو منسوب کیا' اور سے ایک جرات ہے جس کا ارتکاب کوئی
صاحب عمل نمیں کر سکتا' ہم اس تول سے اللہ کی بناد میں آتے ہیں 'اکاٹہ تعالی انسی نسبت سے پاک 'باند اور برتز ہے۔
ماحب عمل نمیں کر سکتا' ہم اس تول سے اللہ کی بناد میں آتے ہیں 'اکاٹہ تعالی انسی نسبت سے پاک 'باند اور برتز ہے۔
ایام ابوالقاسم سلیمان ہیں احمد طبرائی' متوفی مہسمید روایت کرتے ہیں:

معرت این میای رضی الله عنمایان کرتے ہیں کہ یہود ی ہے آیک عض نہاش بن قیس تعلیابی نے کما آپ کارب بخش ہوئے ہیں۔ بخیل ہے کما آپ کارب بخش میں کرتے تب الله عزوجل نے بیر آیت نازل فربائی اور یہود نے کمااللہ کے باتھ برجے ہوئے ہیں۔

(المجم الكييراج ١٢٠ وقم الحديث: ١٢٠٥ منبوعه واراحياء التراث العربي اليروت)

ہر چند کے کمی ایک یمودی نے یہ خبیث قول کما تھا الیکن چو تک باتی یمود میں ہے کمی نے اس قول سے برات کا اظہار نسی کیااور اس کارد کمیں کیا اس لیے پوری قوم یمود کی طرف اس قول کی نسبت فربائی۔

الم ابن جریر نے تکھاہے کہ عرمہ نے کماہے کہ یہ آیت تنماس میودی کے متعلق نازل ہوئی ہے۔

(جائع البيان 12 من ٢٠٥٥ ما مطيور دار الفكو "بيوت ١٥١٥ م)

ایک قول بیہ ہے کہ جب بیود نے دیکھاکہ نہیں تاہیں اور آپ کے اصحاب کے پاس دنیادی بل نمیں ہے اور اکثر مسلمان فقر اور فاقہ میں جلامیں اور انہوں نے یہ آبت کی:

كولى عدوالله كواجما قرض: --

مَنْ ذَا الْهِي يُقْيِرِمُ اللَّهُ فَرُمًّا حَسَا

(الحديد ۱۱)

توانبوں نے کماکہ (سیدنا) محمد میں کا خدا فقیر ہے اور بسالو قات کما بخیل ہے اور اللہ تعالی نے جو فرمایا ہے کہ بہود نے کما اللہ کے ہاتھ بندھے ہوئے ہیں۔ اس کا بھی معنی ہے "کیونکہ جو محنص خرج نہ کرے اس کے متعلق کما جاتا ہے اس کے ہاتھ بندھے ہوئے ہیں۔ قرآن مجید جن ہے:

وَلاَ تَنْجُمُ ملْ يَدُكُ مَغُلُولُةً إلى عُنُنفِكَ اورد ركوانا إلا الى المناواد

(Ptim(1):17)

ان کاب مقصد نمیں تھا کہ اللہ کا اللہ بندها ہوا ہے۔ لین ان کامتعمدیہ تھا کہ اللہ تعظیٰ نے ان پر رزق کے ذرائع بند کر دیے ہیں اللہ تعلیٰ نے ان کے اس افتراء کارد کرتے ہوئے فران کے التھ بندھے ہوئے ہیں۔ اس کی ایک تغییریہ کی گئی ہے کہ اس آجہ بندھ دیے ہا کیں۔ ان کے اس تول ہے کہ اس آجہ باندھ دیے ہا کیں۔ ان کے اس تول ہے کہ اس آجہ باندھ دیے ہا کیں۔ ان کے اس تول کی وجہ سے ان پر لعنت کی گئی اللہ تعلیٰ نے ان کو اپنی رحمت سے دور کردیا دہ اس بھی کو جہ ہے ہر فیرے کورم ہیں۔ ان سے کی کو فیر ماصل نہیں ہو سکتی اور وہ اللہ کی گئرت میں سب سے زیادہ بخیل ہیں۔ غل کامنی طوق بھی ہے اسواس کا یہ

سن ہے كدونيا عن ان ير قيدو بند كاطوق والى وياكيا كور ؟ فرت عن ان ير جنم عن طوق والى ويا جائے كا۔ يدالله (الله كالماتم) كامعتى

الكيول سه الحريني تك ك علموكويد كتين الكركده تك ك عفوكو بحي يد (إلقد) كما جا آب اور مجازايد كا اطلاق فعت پر بھی ہو باہے۔ کتے ہیں کہ فلاں کا جمع پر ہاتھ ہے معنی اس کا احسان اور تعت ہے اور عطا کرنے اور خرج کرنے پر مجى ير كا طلاق مو ياب كي كت بي كان كا بافير بحد كشاوه ب اور يد كا اطلاق قدرت ير بحى مو ياب قر آن جيد بي ب اولى الابعدى والابعسار (من ٣٥) وه قدرت واليا أور بعيرت والياجين-انون في جو كما تفاكر الله كما تقد بنرج ہوے ہیں اس سے ان کی مرادید تھی کہ اللہ نے ان پر عطا کرتے اور اڑج کرتے کے دروازے بند کیے ہوئے ہیں اور ان کورزق دس ریا۔ان کاب تول اک سے کنام تھا۔ اللہ تعالى نے قربلا خود ان كے بات بند سے موت بيں الين وہ تكل اور كار خيرے روك موے میں اور وہ کا خلت میں سب سے زیادہ تخیل میں۔اللہ تعلق نے فرطا باکداس کے دونوں ہاتھ کشادہ میں المنی اللہ تعالی بست مطافراً آے او بہت جواد اور فیاش ہے۔ اللہ تعالی نے دونوں ہاتھوں کاذکر قربایا میو کد دونوں ہاتھوں سے خرج کرتابہت زیادہ اللوت پر داالت كريا ہے اتمام چروں كے فرائے اور برحم كى تعتيں اس كے پاس بيں اور وہ اپني تمام حكوق كو عطا فرمار ہا ہے۔

> وَالْكُمْ فِينَ كُلِ مَا سَالْنَمُوهُ وَإِنْ تَعَدُّوا يعمسك اللولاتك فسرها إزا الإنسان لكللوا تُحَمَّارُ (ابراهیم:۳۳)

وَٱسْبَعَ مُلَيْكُمْ يَعَمَا ظَامِرُهُ وَبَاطِلَةً

اور اس نے تم کو تمیاری جرسوال کی جو تی چیز مطافر مائی اور اگر تم اللہ کی تعتیں ٹار کرو ہوان کو ٹارنہ کر سکو سے ^مے ٹاک انسان يواظالم عاشراب-

اور اس فے اپنی کا ہری اور باطنی تعتیس تم پر بوری کر

(لقمان: ۲۰) -12)

الم محرين اساميل بخاري موني ٥٦ مد روايت كرت بين

حفرت ابو جريره بن فيد مان كرت ين كد رسول الله ويي في قرايا الله مزوجل ارشاد فراتاب وي كروي كروي من تم ير قرج كون كاور قرالا الله ك دولوں باتھ بحرے موت ين وات اور دن بن بيش قرج كرنے ہے اس كے قرائے بن كى نسي موتی اور فرالیا یہ بناؤ جب سے اللہ نے آسان اور زمن کو پیدا کیا ہے وہ فرج کر رہاہے اور اس سے اس کے فرائے میں کوئی کی حسی ہوئی اور اس کا مرش پانی پر ہے اور اس کے اِتھ جس میزان ہے جس کووہ پست کرتاہے اور بلند کرتا ہے۔ اہم ترتدی نے کما يه صعفاس اعت كي تغيرب

(محج البخاري " يه ۵ ارقم الحديث مهم " مسلم" وكوة ٢٠٥ (١٩٩٠) ١٠٠١ سنن ترزي " يه " وقم الحديث ٢٠٥١ ، سنن ابن باب جَا وَتُمُ الْحَصَفَةِ عِلَا لَمُ عَلَى مَهِا وَتُمَ الْحَصَدُهُ 20 مَدُ الرُّ جَا مُن من ١٤٠٠ من ١٤٠٠ من الر المرعث: ١٠٥٠٥ كما وبلو الفكو الاسماء والسفات لليمتي اص ١٣٦٨ مطبور وار احياء الزاث السرلي ويرد)

اور الله تعالى نے بعض لوگوں كوجوروق كم مطاكيا ہے يا ان پر على كى ہے تو دد اس كى تحست كے مطابق ہے اور وہ سب كا الك على الاطلال ب حس كويعنا عابتا ب عطاكر الب قرآن مجيدي ب:

اور اگر اللہ اپنے مب بنروں کے لیے رزن کشارہ کر دیتاتہ

و لوبسط الله الرزي لِعِبَادِهِ كَبَغُوا فِي رض وَكْ كِنْ يُسَولُ مِفْكَرِدَ مَا يَسَلَا وَاللَّهُ بِعِسَادِهِ ووفرور زين من مركن كرت الكن ووايراز على ماال

جَيَانِ القر أن

توريم مع (الشورى:٢٤)

جناع ابتائي رزق الأرآب- بالكودائ بندول خوب والفياب اورائي بمت ويمين والاب-

اللہ جس کے لیے جاہتاہ ار تق کشادہ کر آے اور اجس

الله يبسط الرزق لمن يكساء ويغور

(الرعد: عع كيانات) كالرويات.

قران جيد ك جن آيات عن الله تعالى كے ليے إلى ورب اور بندلي وقيمو كاذكركياكياہے وقد محمد ان آيات سے الله تعالى كے ليے محيت جبت كر اتفاد اس فرقد كا باطل مونا بائكل واضح بي كو كد جم اين تركب على است ايز او كا عماج مو آ ہادر اللاح خدا نمیں او سکک نیزا ہر جم منائل ہو آ ہو ہر منائل طوث ہو آ ہو اور ماوث خدا نمیں ہو سکا۔ نیزا ہر جم یا محرك بوگایا ساكن بوگانور تركت و سكون در نول حادث بین لور حادث قد النین بو سكنگ

خلاصہ بیہ ہے کہ اللہ تعالی اعضاء اور جسم ہونے سے پاک اور حزوب۔ پھر اللہ تعالی کے لیے جو یرو خیرہ کا طلاق کیا گیا ہے اس من الل اسلام ك حسب ولي ترابب يي-

علام سعد الدين مسعودين عمر تغتاز اني متوفى سهويد لكيت بن

شريعت على جن امور كاذكر ب مثلاً استواء ايد اوجه (جرها يمن (آنكمه) وغيرو بن على حل يد مازات نور تمثيلات ہیں۔ مینی جن امور کا ظاہر شرع میں ذکر ہے اور ان کو حقیق مطانی پر محمول کرنا کال ہے۔ مثلاً اللہ تعالیٰ نے فرمایا ٱلرَّحْمَانُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوْى (طه: ۵)

و من نے موش راستواء فرمایا۔

ان ك إتمون يرافد كا إتد ب-

مجے اس کو محدہ کرتے ہے کس تے دو کاجس کو میں تے

المين إتول عدال-

(س: ۵۵)

وَ يَسِفَى وَجَهُ رَبِّكُ (الرحمن: ٢٤)

يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْلِيْهِمُ (الفتح: ١٠)

مَا مُنْعَكُ أَنَّ تُسُجَّدُ لِمَا خَلَفُتُ بِيَدَى

اور پائی ہے آپ کے دب الجروب اً كه يمرى آ كله كرماض آپ كى دورش كى جائے۔ وَ لِنُصْبَعَ عَلَى عَبِيقٌ (طه:٢٩) من ابوالحن اشعری نے کما ہے کہ یہ تمام امور اللہ تعالی کی صفت زائدہ ہیں اور جمهور کے نزدیک بد تمام اطلاق مجازی جيا-استواء سے مراد غلبہ ے ياس سے مراو اللہ تعالى كى معمت كى حيل اور تصوير ب اور يدسے مراو قدرت ب اور وج

(چرو) ے مراد زات اور وجود ہے اور میں (آ کھ) ے مراد ہمر ہاور شخ اشعری کا ایک قول بھی جمیور کے موافق ہے۔

اكريد اعتراض كياجك كرتام جزي الله تعالى كاقدت على بي مجرحات وم عليد السلام كا متعلق فصوميت ے کوں فرمایا کہ میں نے ان کو اپنے اتھوں سے بنایا ہے؟ اس کاجواب سے کہ توم علیہ السلام کے شرف اور مرتبہ کو ظاہر كرنے كے ليے تصوصيت سے فرمليا: كديمي نے أن كو اپنے إتمول سے منایا اجس طرح بيت الله يمي بيت كي اضافت ہمي تشريف اور تحريم كے ليے ب ياوبان ير كمل قدرت كانظمار مراوب- نيز علاء بيان نے يكى كماب كد استوام ب مجاز اغلب اور يد اور يمين سے مجاز الدرت اور عين سے مجاز ابھر مراوليما اللہ تعالى كى طرف تحبيم اور تشيد كے وہم كى نفي كرنے كے ليے ب ورند ان الفاظ ے وہ معالی مقلبہ مراد میں جو ان کے مقابلہ میں صور صب میں موستے ہیں۔

(شرح القاصد عن ٥٠ م ١٤٣٠٩٤ مطبوعه منشود ات الرمني 'ام ان ١٠٠٩ه)

علامه ميرسيد شريف على بن محر جرجاني متونى اعدر لكيت بي:

غيان انقر آن

منے ابوالحن اشعری کا ایک قول یہ ہے کہ ان امور کا ظاہری معنی مراد نہیں ہے "کیو تکہ وہ انڈ کے حق میں محل ہے۔ اس کے ان سے مراد انڈ کی صفات ڈاکدہ ہیں اور بمیں ان کی کند معلوم نہیں ہے اور دو سرا قول یہ ہے کہ اطلاقات مجازی ہیں۔ (شرح المواقف میں ۱۱۰-۱۱۱ میلیفسا مطبوعہ منشور است الرضی ایران)

المام تخرالدين محمرين ضياء الدين عمردازي متوفي ١٠٧ه لكيت بين

افلہ تعالیٰ کے لیے قرآن جید عی جوید کالفظ آیا ہے اس کے متعلق جمہور مسلمین کے دوقوں ہیں۔ ایک قول یہ ہے کہ قرآن جید بین آللہ تعالیٰ کے لیے یہ کالفظ آیا ہے۔ ہمارا اس پر ایمان ہے کہ اللہ کا اور جم اور جسمانی اعتماہ کال ہیں ' سو اہار اس پر بھی ایمان ہے اور اس کی حقیقت اور سمند ہم کو معلوم نہیں ہے ' سلف صالحین کا بی حقیدہ قلہ دو سرا قول متعلین کا ہے ' دہ کہتے ہیں کہ یہ کہ موانی معانی ہیں۔ ایک معانی معلی ہیں۔ ایک معنی ہے معلوم نہیں ہے ' سلف صالحین کا بی حقیدہ قلہ دو سرا قول متعلین کا ہے ' دہ کہتے ہیں کہ یہ ہی موانی موانی ہو ہے۔ اس کا دو سرا معنی ہے نصت تیسرا معنی ہے قوت ' جو تو سعی ہیں۔ اس کہ معنی ہے ملک ' جیسے قرآن جید بیں ہے اللہ ی سیلہ ہے۔ اس کا دو سرا معنی ہے نصوصی تو ہو اس کی اس معنی ہے اللہ کیا ہے جس کی طلب میں نکاح کی گرہ ہے۔ پانچاں ' منی ہے خصوصی تو ہو اور وہ ہے ہو اس کی دائے ہیں۔ اس بحث میں ایک اور وہ ہے اور وہ ہے جو اس کی ذات کے ساتھ بی ایک اور وہ ہے ہو اس کی ذات کے ساتھ بی ایک صفت ہے جو اس کی ذات کے ساتھ بی ایک ایک صفت ہے جو اس کی ذات کے ساتھ بی ایک ایک صفت ہے جو اس کی ذات کے ساتھ بی ایک ایک صفت ہے جو اس کی ذات کے ساتھ بیر اکر ایک صفت ہے جو اس کی ذات کے ساتھ بیر اکر ایک صفت ہے جو قد درت کے علاوہ ہے۔ اس کی شان سے کسی چیز کو خصوصیت کے ساتھ پیدا کرنا ہے اور اکثر علماء کے یہ کا افتا استمال ہو قواس سے قد درت اور نصت مراد ہوتی ہے۔

(تغير بمير عبي مع ١٠٥٠ ملحما- مطبوعه داد الفكو عيروت طبع تديم)

الله تعالى كالرشادي: اور آب رجو كام آب كرب كى طرف عنازل كياكياب ووان من سے زيادہ تراوكوں كى خرادر مركتى كو زيادہ كرد اور آب رہائے ان كے درميان قيامت تك كے اليے بداوت اور بغض كو زال ديا ہے وہ جب بحل الزائى كى جگ بحركاتے جي الله اسے بجماد باہے وہ ذمن من فساد بھيلاتے كى تك ودوكر رہے جي اور الله فساد بھيلات والوں كو بهتد دسي كر تادالمائدہ وہ ا

ان آیت کا تعلق علماء یمود ہے ہے کو نکہ ان کاموقف الماد اور باطل تعلد اس لیے اس کے رویس قرآن مجید کی آیات بازل ہو کس اور ہر آیت کے بازل ہونے کے بود علماء یمود اس کا انکار کردیتے او یوں قرآن مجید کے بازل ہوتے ہے ان کے کفر اور مرکش میں زیادتی ہوتی رہی۔

پھر قربایا کہ بیود جب بھی جنگ کی عمل کو بھڑ کاتے ہیں 'افتد اس کو بڑھادیتا ہے۔ جب انہوں نے فساد بھیلایا اور قررات کی خالفت کی 'قرافتہ نے ان کے اور بخت فعر کو بھیج دیا 'انہوں نے پھر فساد کیا' قوان پر پھارس دوی کو بھیج دیا۔ انہوں نے پھر فساد مھیلایا' قرافتہ تعالی نے ان پر بچوس کو بھیج دیا۔ انہوں نے پھر فساد پھیلایا توافتہ تعالی نے ان پر مسلمانوں کو بھیج دیا۔ قادہ نے کماجس دفت اللہ تعلق نے نبی ہیجیز کو مبعوث کیاتو یہ بھوس کے ہاتھوں ڈکیل ہو رہے تھے۔ اس کے بعد فرمایا سے ذبین میں فساد پھیلا دہے ہیں۔ اس سے مراد یہ ہے کہ وہ اسلام کو منانے کی کوشش کر دہے ہیں اور سیہ زنبن میں مب سے پڑا فساد ہے۔

الله تعالی کا ارشاد ہے: اور اگر ایل کی ایمان کے آتے اور اللہ ہے وُرتے رہے تو ہم ان کے گناہوں کو ضرور منا ویے اور ہم ان کو نعمتوں کی جنتوں میں ضرور واخل کرتے۔ (الما کدونا)

اس آبت کامعنی ہے کہ آگر اہل کتاب اللہ اور اس کے رسول الینی سیدنا ہیں ہیجیج پر ایجان لے آتے اور اللہ اور اس کے
رسول کا انکار کرنے اور گناہ کرنے اور سرکشی کرنے ہے اللہ ہے ڈرتے الینی اللہ کی کتاب میں افغظی اور معنوی تحریف نہ کرتے ا رشوت کے کر حرام مثل نہ کھاتے تو ہم نہ صرف ہے کہ ان کے گناہوں کو مٹادیتے ' بلکہ ان کو جنت کی نعمتوں میں داخل کردیتے۔
اس ہے پہلی آبتوں میں اللہ تعالی نے یمود کی تر افی اور ان کے مرض کاذکر کیا تھا' اور اس آبت میں اس کے تدارک اور علاج کا
ذکر فرمایا ہے۔

انند تعالیٰ کاار شاوے: اور اگریہ لوگ تورات اور انجیل کو قائم رکھتے اور اس کو (قائم رکھتے) ہو ان کی طرف ان کے ر رب کی جانب سے نازل کیا گیا ہے ' تو ان کے اوپر سے بھی ان پر رزق پر ستا اور زھن سے بھی ان کے لیے رزق ابلال ان می سے پہلے ہوئی ہو یہ ہو کہ موگھ ہوگھ ہوگا ہوں۔ کام کر دہ جی (المائدہ دوی پر جیں 'اور ان میں سے زیادہ تر وہ جیں جو برے کام کر دہ جی (المائدہ دوی پر جیں 'اور ان میں سے زیادہ تر وہ جیں جو برے کام کر دہ جی (المائدہ دوی پر جیں 'اور ان میں سے زیادہ تر وہ جی جو برے کام کر دہ جی (المائدہ دوی پر جیں 'اور ان میں سے زیادہ تر وہ جی جو برے کام کر دہ جی (المائدہ ان میں سے دیا دوجی ہو برے کام کر دے جی (المائدہ ان میں سے دیا دوجی ہو برے جی المائدہ کی سے دور کی میں المائدہ کی بھو کی بھو کی بھوں کی دو جی بر جی کام کر دے جی دور کی بھو کر دی ہو بھوں کی بھو کر دی بھوں کی بھوں کا بھوں کی بھوں کر بھوں کی بھور کی بھوں کی بھوں

گناہوں کو ترک کرنے اور نیکیاں کرنے سے رزق میں وسعت اور فراخی

اس سے پہل آیت بیل ہے فرایا تھا کہ اگر افل کنب اللہ اور رسول پر ایمان لے آئیں اور کفراور سر کھی بیں اللہ سے درتے رہیں 'تو دہ اخروی عذاب سے محفوظ رہیں گے 'اور آخرت ہیں جنت کی نعتوں کو عاصل کریں گے اور اس آیت میں یہ فرمایا ہے کہ اگر یہ تورات اور انجیل کو قائم رکھیں گے توانلہ تعالی ان کی دنیا کو بھی جنت بنادے گا۔

تورات اور الجيل كو قائم كسف مراديب كد.

ا۔ وہ تورات اور انجیل میں اللہ تعالی ہے کیے ہوئے عمد کو پورا کریں اور ان میں یہ عمد بھی ہے کہ وہ سیدنا محمد ما ایمان الا نمیں مے اور تورات اور انجیل میں آپ کی نیوت پرجو والا کل بیں اور آپ کی جو علامات نہ کور بیں ان کو ظاہر کریں ہے۔ ۲- تورات اور انجیل کے احکام پر عمل کریں مے اور اس میں نہ کور صدود کو ہلانہ کریں مے۔

۳۰ اس کا کی معنی یہ بھی ہے کہ اگر وہ ظمور اسلام ہے پہلے تورات اور انجیل کی شریعت کو قائم ریکھتے اور اس کے انکام پر عمل کرتے تو اللہ تعافی سے منسب ہے محفوظ رہجے ' لیکن انہوں نے تورات کے انکام پر عمل نہیں کیااور انجیل کا انکار کیا اس لیے ان پر معافی تنگی اور رزق میں کی اور ونیا میں رسوائی اور خواری مسلط کردی عمل۔

اس آیت میں فرملیا ہے اور اس کو (قائم رکھتے) جو ان کی طرف ان کے رب کی جانب سے نازل کیا گیا ہے۔ اس کی تغییر میں گئی قول ہیں۔ آیک قول ہیں ہے کہ اس سے مراو قرآن مجید ہے و دسرا قول ہیں ہے مراد باتی انبیاء پر نازل کیے ہوئے مسئل مشخط مسلم معینے ہیں مشافا حضرت مبعیلہ معضرت مبقوق اور مصرت وانیال کے محافف۔

نیز فرمایا توب اپنے اوپر سے بھی کھلتے اور اپنے بیروں کے بنچ سے بھی کھاتے 'اس کی وجہ سے کہ جب یہوو نے سرد تا محمد طریق کی محکذیب پر اصرار کیاتو ان پر قبط اور محلی مسلط کر دی مگی احتی کہ انہوں نے کھااللہ کے ہاتھ بند معے ہوئے ہیں۔ اللہ تعالی نے فرایا اگر سے مفر کو چھو ژویں تو ان کے طالت بدل جائیں کے اور ان کی سحی خوش طال سے اور قبط غلہ کی فراوانی سے بدل

ٹییان القر اُن

جائے گا۔ اور سے جو فرملیا: توب اینے اوپر سے بھی کھلتے اور اپنے بیوال کے لیج ہے بھی کھلتے 'اس کی کئی تغیری ایس-ا- اسے مراد غذائی اجاس کی پداوار می مباخد اور وسعت ہے

٣- اور ے کھانے سے مراد ہے بار شوں کا ہو ٹالور بیروں کے نیچ سے کھانے سے مراد ہے ذیمن کافلہ اگانا

اور نے کھلتے ہے مراوے ور ختوں کا پھلوں سے لدجانا اور ویروں کے بنچ سے کھلنے سے مراوے کمیتوں کالملمانا

ام- اور سے مرادور فتوں سے محل الر مااور یے سے مرادے دھن پریزے ہوئے چھوں کو چنا

ظامد یہ ہے کہ خوف خدا سے گناہوں کو ترک کرلے اور عبادات اور نیکیوں کے کرنے سے آسان سے بھی رزق برستا

ب اور زمن بھی سونا اکلتی ہے۔اس کی آئند اور نظیر میں حسب زیل آیات ہیں:

وَ لَوْ أَنَّ آهُلَ الْعَرِي أُمِّيوا وَ اتَّفَيُوا لَعَنْحُمَا ادرأكر بسيون والعالي لا تقاور ورق حرج و ہم ضروران پر آسان اور زمن سے بر کش کول دیتے۔

عَلَيْهِم بَرَّكُتِ مِنْ السُّمَّاءِ وَالأَرْضِ

اكروه سيد عى راه ير قائم رج توجم السي مروركير بانى ے براب فرائے۔

(الأعراف: ١٢) وَاذَكُواسُنَفَامُواعَلَى الطَّرِيْفَةِ لِآسُفَينُهُمْ مَّاأَءُغُدُفًا (الحن))

و من الله عدارے كانداس كيا نبات كاراه بيداكر دے گاور اسکوویاں ہے روزی دے گاجمال اسکا کمان بھی نہ مو گاور جواللہ پر بحرومہ کرے تووہ اے کانی ہے۔ اكرتم هو كروك وي مرور م كوز ياددون كا-

وَمَنْ يَكُينِ اللَّهُ يَحْمَلُ لَهُ مَنْ حَرَّجًا ٥ وَيُرْرُفُّهُ مِنْ حَمِثُ لَا يَحْتَرِثُ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّو فَهُوحَسِبُهُ (الطلاق:٣)

لانْ ضَكَرُنُمُ لَا يُدَنَّكُمُ (ابراهيم) اس کے بعد فرمایا: ان اس سے محمد لوگ وہ میں جو میانہ روی پر ہیں۔ ان نے مراد وہ لوگ میں جو اہل کتاب میں سے سلیم الفطرت تے اور انہوں نے اسلام قبول کر لیا میسے میود ہوں میں سے معرت عبداللہ بن ملام اور عیسائیوں میں سے نجاشی اور یا كنارش سے وہ لوگ مراويں جو معتدل تھے اور انہوں نے جلد يا يدي اسلام قول كرايا-

اس آعت کے آثر میں فرمایا: اور ان میں سے زیادہ تروہ میں جو بھے کام کردہے میں اور سے وی لوگ میں جن کی قدمت ں سے پہلی آخوں میں کی گئے ہے 'جو تورات اور انجیل میں تریف کرتے تھے۔ حق کو جمیاتے تے اور حرام کھاتے تھے۔

اے دول : ج آپ ہر آپ مے رب کی طرف سے تازل کیا گیا ہے اس کر مینیا دیکے اور اگر (الفرض)

لَفَتَ رِسَالَتُهُ وَاللَّهُ يَعْمِمُكُ مِنَ النَّاسِ

اب سے ایا نرکیا تو کپ نے لیے رب کا بینام بیں بہایا والدا شراب کر وگوں دے شری سے مفوظ رکھے گا ،

آب مجے کرنے ایل کاب ا بیک اند کافرول کی قام کو برایت منیس دتا

خبیان القر آن

125 ار قرل فرال بعرى الن ير سع ببت لك المدال على الدالسال كما عمل كوفوب و يكف والا ب 0 غيان القر كن

ألماتيان ٥: ٢٤-ہر سے بہوں نے کہا بہتیا میں ای مربع کا اند ہے . بی امرایل ؛ الله کی جادب مروح میرا اور تمارا دب سے ، بیگ جی سے تتوقفا حرع الله عليه الجنة وماوله التائ

مرام کر دی ہے اور اس کا شکانا دوڑے ہے ا رسکے مائٹ طرک کیا تو اندسٹ ای پر جنت

الديالوں كا كى مدلار جي ہے 0

الله تعالى كاار شاويه: الدرسول اجواب يراب ك رب كى طرف يد ان كياكياب اس كويا فياديك اور أكر (المرض) آب نے ایسانہ کیاتو آب ے اپ اس کا پیام میں کا جانا اور اللہ آپ کو اور اے شراے محفوظ رکھے گا سے لک الله كافرول كي قوم كويد اعت تيس ريا- (الما كويد عد)

ایک آیت کی مہلغ نہ کرنے سے مطلع تبلغ رسالت کی تفی س طرح ورست ہے؟

اس سے پہلی آبوں میں پرودو نسادی کے تھیت معالد اور ان کے باطل اتوال وین میں ان کی تحریفات اور ان کی بدا مالهان بیان کی می جنیں۔اس طرح مشرکوں کی فراہوں کو بھی بیان کیا کیا تھا اور مشرکوں کے متعلق آیات نازل ہو کس خسی۔ اب آپ ے فرایا ہے کہ آپ کے اور ہو چک ہی آپ کے رس کی طرف سے تازل کیا گیا ہے او سے کو پنچاو ہے اور اس تبلغ جی میود و نساری اور مشرکول اور کافرون کی خانفت کی مطاقتا پرواند شیخت افتد آپ کوان کے شرے محفوظ رہے گا اور آکر ب قرش عل آپ نے آیا نہ کیااور می آیت کو بھی نہ پھیا تو آپ نے کار رسالت انجام میں دیااور آپ اے اسپند رب کا پیام نسيس پنولا۔

اس آيت ۾ يدا اعتراض كياكيا يو كداكر اي ايت كامين يديو أكر الي الديندب كانتها مين يانيا وال تاريخ رب كابينام نسي بهجايا قرب كلام غير مفيد ب-كونك شرط فود يراوش تفازيو أب اوريهل تفار نسي ب اور أكراس آيت كا معنى يرب أكراب في ايك أيت بهي تعمي بعيل لوالب السائد وب كاينام بالكل نسي بهيلاتويد كلام مغيرب اليكن واقع ك ظلاف ب يميونك أيك آمت ك نه يخط ف اس أيك تبيت ك يا توال في بوقي جاسي الى تمام آيات جو يا توالى جا چى يى ان كى ننى كيے مي بوكى؟اس كابولب يہ ب كد منى يى ب كد اگر آب نے بافرش ايك آيت كو بحى نبيس بهنوالات آپ نے اپنے رب کا پیغام بالکل نمیں بیٹیلا۔ کو تک ایک آیت کو میسی نہ پیٹھانے سے بالی آنام آیات کا بیٹھانا ضائع اور غیر معتربو جلة كا يا يسي كوئى منس قرآن جيد كي ايك تعدم ايمان تداها قداس كا باتى تام قرآن ير ايمان الماضائع موكما يا يس كوئى مخص نماز كاليك وكن اداند كريد اور باتي تمام اركان أواكري فواس كى غماز ضائع بوكى كونكه جب كمي أيك آيت كوچميايا جائ

كاتودعوت اسلام ع جو غرض اور مقصود في وه فوت وو جلك كالس كى تظيرية آيت ب

جس نے اپنیر قصاص کے یا بغیر زمین میں فساد کے کسی کو (ناحق) تق کیاتہ کو یااس نے مب لوگوں کو تقل کر دیا۔ مَنْ قَنَلَ نَفْسًا إِيغَيْرِ نَفْسٍ ٱوْ فَسَادٍ فِي ٱلْأَرْصِ مَكَّالَمَاقَنَلَ النَّاسَ حَمِيبُعًا

(السائدة: ۲۲)

کیونکہ جس طرح ایک فض کو باحق قبل کرنا اللہ کے تھم کی خلاف ور زی ہے اسی طرح سب لوگوں کو باحق قبل کرنا ہمی اللہ کی بافریائی ہے اور جو ایک فخص کے قبل باحق پر جرأت کر سکتا ہے اگر اس کے بس بیں ہو تو وہ سب لوگوں کے قبل باحق پر مجل جس بر آت کر سکتا ہے۔ اس طرح جو بالفرض ایک آیت کے جمہانے پر جرأت کر سکتا ہے۔ اس طرح جو بالفرض ایک آیت کے جمہانے پر جرأت کر سکتا ہے۔ اس لیے فرمایا: اگر آپ نے بالفرض ایک آیت کو بھی چمپایا تو آپ نے کار ر سالت بالکل انجام نہیں دیا۔ جرات کر سکتا ہے۔ اس لیے فرمایا: اگر آپ نے بالفرض ایک آیت کو بھی چمپایا تو آپ نے کار ر سالت بالکل انجام نہیں دیا۔ امام ابر جعفر فورین جربر طبری متوفی مامور روایت کرتے ہیں:

حضرت ابن مباس رضی الله عنما بیان کرتے ہیں اس آیت کا سعن ہے آپ پر آپ کے رب کی جائب ہے جو پکر نازل ہوا ہے اگر (بالفرض) آپ نے اس میں ہے آیک آیت بھی چھپال تو آپ نے اللہ کے پینام کو نہیں پنچلا

(جائع البيان ٢٦٠م ٣١٣ مطبوعه داد اللكو "بيردت ١٣١٥ ه)

تبلیغ رسالت اور لوگوں کے شرے آپ کو محفوظ رکھنے کے متعلق اعادیث اہم مسلم بن تجاج قشیدی متونی چوہ روایت کرتے ہیں۔

مسروق بیان کرتے ہیں کہ میں معزت سیدہ عائشہ رضی اللہ عنها کی خدمت میں سادے سے جیٹا ہوا تھا۔ آپ نے فرمایا اے ابوعائشہ اجس مخص نے تین باتوں میں سے ایک بات بھی کی اس نے اللہ پر بہت برا جموث باند صل میں نے بوجمادہ کون ى باتمل بين؟ فرايا: جس في يه كماك سيدنا محد ويجيز في اين رب كوديكما باس في الله مر بهت برا جموت بالدها عن سارے سے بینا ہوا تھا۔ میں سنبھل کر بینہ کیا۔ میں نے کمااے ام الوسنین الجھے مسلت دیں اور جلدی نہ کریں جمیااللہ عزو عل نے یہ نمیں فرمایا؟ اور بے شک انہوں نے اے روش کنارے پر دیکما (افکوم: ٣٣) اور فرمایا اور بے شک انہوں نے اے ضرور دو سری بار دیکھا (النجم: ۱۳) معفرت عائشہ لے فرایا اس امت میں میں سب سے پہلی ہوں جس سے ان جنوں کے متعلق جرائیل کو صرف دوبار دیکھا ہے۔ آپ نے جرائیل کو آسان سے اتر تے ہوئے دیکھا ان کی مقیم خلقت (بناوٹ اور جمامت) ے تمام آسان اور زمین کو بھر لیا تھا۔ پھر حصرت عائشہ نے فرمایا کیا تم نے اللہ عزوجل کار قول نمیں سنا آ تکسیس اللہ کااور اک (احاط کرتے ہوئے) نیس کرسکتیں اور وہ آ تھوں کااور اک کرتا ہے اور وی باریکوں کو جائے والداور ظاہرو باطن ہے خروار ہے (الانعام ١٠١٠) اور كياتم نے اللہ عزوجل كايہ تول نميں سنااور كمي بشركے يد لائق نميں كد اللہ اس سے كلام كرے محروحي سے يا پردے کے پیچے سے یا کوئی فرشتہ بھیج دے جو اس کے تھم ہے اس کو دہ پنچادے جو اللہ چاہے دالثور کی:۵۱ اور جو مخض یہ کے کہ رسول الله مرتيب في الله كى كتاب سى مجمع بيماليا ب تواس في الله يربحت براجموت بالدها- الله تعالى فرما آب رسول اجو آپ ر آپ کے رب کی جانب سے نازل کیا گیا ہے اس کو پنچاد شبخت اور اگر (بالفرض) آپ نے ایسانہ کیا تو آپ نے اسپنے رب کا بیغام نمیں پہنچلا (المائعة ١٢٤) اور جس نے یہ کماکہ آپ کل کی بلت کی (از خود) خبردیتے ہیں 'و اس نے اللہ پر بہت برا جموث بالد حد الله قرما آب آب كت كه آسانون اور زمينون عن كوئى يمي (ازخود) غيب كونسي جانيا سوالله كـــرالنمل ١٥٥) (میچ مسلم کال کان که ۲۸۷ (۱۳۷۲) ۱۳۲۲ میچ البوادی که و قم المدید ۲۸۵۵ مش ترزی ی و د قر المدید ۲۸۵۹ سنی کبری النسائی که و ترقم المدید ۱۳۷۷ مید امو کی ۱۰ دقم المدید ۱۳۱۰۹ طبح ملواللکو "مند امر" به م ۱۳۳۱ طبع قدیم کام البیان ۱۳۲۴ م ۱۳۱۱)

الم الوصيلي عمرين عيلي ترزى منوني الامه دواعت كرست يورد

حضرت سعد عائشہ رسی اللہ عنمارواے کرتی ہیں کہ نبی ہی کہ عاقت کی جاتی تھی۔ حتی کہ یہ آے تازل ہوئی اور اللہ آپ کو لوگوں (کے شراے محفوظ رکھے گا (المائدہ: عام) تب وسول اللہ بھی نے خیرے اپنا سریا ہر نکل کر فرمایا: اے لوگوا والی جاؤٹو اللہ میں ماؤٹ بے شک اللہ نے جھے محفوظ کردیا ہے۔ (سنی تری عام المحدیدے معانا اللہ نے جھے محفوظ کردیا ہے۔ (سنی تری عام المحدیدے معانا اللہ نے جام سامین)

الم ابوالعام سليمان بن احد طراني سوني ١٠٠٠ مد روايت كري ين

حضرت ابوسعید فدری جرینی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ جھی کے عم محترم معرت مباس جرینی ان مسلمانوں میں ہے تھے جو رسول اللہ بڑھی کی حاظت کرتے تھے۔ جب یہ آیت نازل ہوئی اور اللہ آپ کو لوگوں (کے شر) سے محفوظ رکھے گاز رسول اللہ بڑھی سے حفاظت کے انتظام کو ترک کردیا۔

(المعيم السغير عام رقم الدين ١٨٠٠) المعيم الاوسة مجه المقالين عند ٢٥٣٣ مافظ البيثى في كمااس مدعث كي سند عن صليه العوفي ايك ضعيف واوى ب- جمع الزوائد مجمع الزوائد عند ٢٠٠٥)

المم محدين اساعل عقاري متوفي ١٥١ه روايت كرت ين

(می ابوادی این عدار قم الحصد ۱۳۱۵ المبر و النبوید لاین بیشام ، جس ۱۳۳۵ الفیقات الکیری کا این معد ، ۲۲ می ۱۲ سیل الحدی دالرشاد ، چ۵ می ۱ ۱ ۱ ۱

اور می اللہ کا رسول ہوں۔ اس نے کمامی آپ سے عمد کرتا ہوں کہ میں آپ سے الروں گا'نہ آپ سے اڑنے والوں کا ماتھ دوں گا۔ بھر رسول اللہ جھیں نے اس کو جلتے دیا' وہ اپنی قوم کے ہاں گیا اور کمامی تممارے ہاں مب سے بمتر محض کے ہا سے آیا ہوں 'بھروہ مسلمان ہو کمیا اور اس کو محاتی ہونے کا شرف حاصل ہوا۔

(انسان العيون عن ٢٠٠٥ مافقة ابن تجر عسقلانى في بحى اس دوايت كوبيان كياب التح البارى عيد عن م ٢٨٥) الم محد بن اساعيل بخارى متوفى ٢٥٦ مد دوايت كرتے بين:

معرت عائشہ رمنی اللہ عنما بیان کرتی ہیں کہ ایک رات نبی ہیں کو نیز قبیں آ ری تھی۔ آپ نے قربایا کاش! میرے اسکاب میں سے کوئی نیک مخص آج رات میری حفاظت کرتا انہا کہ ہم نے ہتھیاروں کی آواز سی۔ آپ نے فرمایا یہ کون ہے؟ کما کیا کیا رسول اللہ اللہ معد اوں اور آپ کی حفاظت کے لیے آیا ہوں۔ پھرنی ہیں سو مجلے حتی کہ ہم نے آپ کے فرانوں کی آواز سی۔

(صح البحاری 'ج" وقم الحدیث: ۲۸۸۵ ج۵ وقم الحدیث: ۲۷۳۳ صح مسلم ' فناکل انعمایه '۴۵ (۱۳۳۱) ۱۳۳۰ منی نز ذی ' ج۵ و وقم الحدیث: ۲۸۷۷ صحح این مبان 'ج۵ و وقم الحدیث: ۱۸۸۳ معنف این الی شید 'ج۳ می ۸۸۰۸۱ میرام و 'جه می ۱۳ ملی قدیم ' مسئو احد 'ج۴ و قم الحدیث: ۲۵۳۷ طبع حاد العکو ' مستد احد دامی شمکا و قم الحدیث: ۲۳۹۵ فغاکل المحابه ملنساتی و قم الحدیث: ۱۳۳۳ المستدرک 'ج۳ می ۱۵ انتقاب نگریخ دستن لاین مساکر 'ج۳ می ۲۰۰۰ کنز العمل 'ج۳ و قم الحدیث: ۲۳۲۳)

علام قرطبی متوفی ۱۲۱۸ و ية اس مدعث كو سمح مسلم ك والے سے نقل كريے كے بعد لكما ہے۔

فیر سی بیں یہ روایت ہے کہ ہم اس مل میں تنے کہ اچا تک ہم نے ہتھیاروں کی آواز سی۔ آپ نے فرایا کون ہے؟ انہوں نے کہا ہم معد اور مذیفہ ہیں۔ آپ کی حفاظت کے لیے آئے ہیں 'پھر آپ ہو گئے 'حتیٰ کہ ہم نے آپ کے فرانوں کی آواز سی اور یہ آیت نازل ہوئی 'پھررسول اللہ ما پھیز نے اپنا سمر خیمہ سے باہر لکالا اور قربایا۔ اے لوگوا واپس جاؤ ' ہے ٹک اللہ نے میری حفاظت کرنی ہے۔ والجامع لادی مافر آن 'جزاد'ص ۱۸۰ مطبور حاواللہ کو 'حاسمے)

علامہ قرطبی نے جس طرح ان دونوں رواغوں کو طادیا ہے ، جھے اس طرح مدیث کی تمی کتاب میں نہیں طا جبکہ میں نے اس مدیث کابہت تنبع کیا ہے ' جیسا کہ نہ کور الصدر حوالہ جات ہے طاہر ہے۔

حضرت على بوبير كي خلافت بلانصل يرعلاء شيعه كااستدلال اور اس كاجواب

مشہور شیعہ عالم شخ ابر جعفر محدین الحن اللوی متونی مہمد اس آیت کے ثمان زول کے متعلق لکھتے ہیں: ابر جعفر اور ابر عبد اللہ علیما انسلام نے کما کہ جب اللہ تعالی نے بی جیجیز کی طرف ہے وہی کی کہ آپ معزت علی جائز، کو غلیفہ بنا کیں 'و نی جیجیز کو یہ خوف تھا کہ یہ معالمہ آپ کے اصحاب کی جماعت پر وشوار ہوگا۔ تب اللہ تعالی نے نبی جیجیز کی

مت برسائے کے لیے یہ آیت نازل کی آگ آپ انڈ کے تھم یر عمل کریں۔

(التبان عسم ٥٨٨ مطور واراحياء الراث العربي عروت)

بر روز جعرات ۱۹ اذوالحبر الد كو جمة الوداع بوابس كے موقع بر غدر فم كے مقام بر في جميز في بائد آوازے فريا تم تمام لوگون بي مسلمالوں كے سب سے زياده لا أن اور مستحق كون ہے؟ محلبہ نے كما اللہ اور اس كارسول سب نيارہ جائے والے بيں۔ رسول اللہ مراجي نے فريا اللہ ميرا مولى ہے اور جم مسلمانوں كامولى ہوں اور جم جم كامولى ہوں على اس كے مولى بيں۔ آپ نے اس جملہ كو تمن جار بار د برایا۔ پر فرمایا اے اللہ ااس سے دوئى ركھ جو على سے دوئى ركھ ، اور اس سے عدادت رکھ جو علی سے عداوت رکھے۔اے اللہ اس سے محبت رکھ جو علی سے محبت رکھے اور اس سے بغض رکھ جو علی سے بغض رکھ۔ پھر آپ لے فرملیا تنام حاضرین بیر بیغام عاشین کو پہنچادیں۔

{ تغیر تمون مجے ہماری اور میے مسلم میں نہیں ہے کو تکہ ان کی شرف کے موافق اس کی روایت نہیں ہے۔ دیگر کتب مدعث میں میں ہے۔ دیگر کتب مدعث میں میں مرف اس قدر ہے کہ جس کا میں موٹی ہوں اس کے علی موٹی ہیں اور بعض میں ہدا افاظ مدعث میں ہد دوایت ہے۔ بعض میں مرف اس قدر ہے کہ جس کا میں موٹی ہوں اس کے علی موٹی ہیں اور بعض میں ہد الفاظ میں ایر اے اشدا اس سے دوستی رکھ جو علی ہے دوستی رکھ اور اس سے عداوت رکھ جو علی سے عداوت رکھ ہو اور اس سے عداوت رکھ جو علی سے عداوت رکھ جو علی ہے عداوت رکھ اور اس کے حوالہ جات حسب ذیل ہیں:

(سنن ترزی ع۵ وقم الحدیث ۱۳۵۳ میل ۱۳۵۳ عی ۱۳۵۰ عی ۱۳۵۰ عی ۱۳۵۰ میل النبالی عدد المورد ۱۳۵۰ میل النبالی عدد المورد ۱۳۵۰ عدد ۱۳۵۰ میل النبالی عدد المورد المورد المورد المورد النبالی این از المورد النبالی این از المورد النبالی این النبالی این النبالی المورد النبالی النبالی

علاء شیعہ سے کتے ہیں کہ اس صدے میں موتی ہمنی اوتی ہے۔ مینی رسول اللہ جینی جس مخص مراولی بالقرف ہیں اس پر معفرت علی اوقی بالقرف ہیں اس پر معفرت علی اوقی بالقرف ہیں اور جو مخص اوتی بالقرف ہو تو ایام معموم ہو تا ہے اور اس کی اطاعت فرض ہوتی ہے۔ اندا معفرت علی اوالی معموم ہیں اور ان کی اطاعت قرض ہے اور جب رسول اللہ جینے سے معفرت علی کو ایام قرار دے دیاتو ان کی معذرت اور بحر معنوں ہیں معفرت اور بحر معنوں ہیں اور ان کی اطاعت قرض ہے اور جب رسول اللہ جینے ہیں معفرت علی کو ایام قرار دے دیاتو ان کی معذرت اور بحر کی ایامت میں معمود میں۔

اس اعتراض كے حسب ديل جوابات ين

ا- لفظ موٹی ولی سے ماخوذ ہے اور اہل تشیخ کا سندلال اس پر موقوف ہے کہ اس مدے میں ولی جمعنی اولی ہے۔ اس لیے ہم پہلے ویکھتے ہیں کہ اس لفظ کے نفت میں کیا معنی ہیں۔ علامہ ذبیدی نے قاموس کے حوالے سے دل کے حسب زیل معنی ذکر کیے ہیں:

(۱) محب (۲) مدلی (دوست) (۳) نسیر (۳) سلطان (۵) مالک (۲) عبد (۵) آزاد کرنے والا (۸) آزاد کیا ہوا (۹) قریب (۱۰) ممکن (۱) شریک (۳) عصب (۱۳) رب (۱۳) متعم (۵۱) آباح (۱۲۱) مسرالی رشته دار (۱۲) بماتجد

(يَاجِ العروس عج ماعص ١٩٩٩-١٩٩٨)

ول کے یہ تہام حقیق معانی ہیں اور ولی کامٹی اولی باتھرف نہیں ہے اس لیے یہاں مولی کے انتظ کو اولی باتھرف پر محمول کرنا میج نہیں ہے۔ نیزا یہ کماجا آئے کہ فلال مختم فلال کامولی ہے 'یہ نہیں کماجا آ کہ فلال محمولی ہے 'یونی اولی ہے۔ ۲۰ بفرض محل اگر یہ مان لیا جائے کہ یہاں مولی بھٹی اولی ہے 'تو اس سے یہ لازم نہیں آ ماکہ یہ اولی بالمامانہ کے معنی میں بو ' بلکہ یہ اولی بالاتباع اور اولی بانقرب کے معنی میں ہے 'میساکہ قرآن مجید میں ہے ان اولی النساس بابر اھیسے للدیس انسموہ (آن عمران: ۱۸۷) ایرائیم ہے اولی بانقرب وہ اوگ ہیں جنسوں نے ان کی چروی کی ہے۔

٣٠- اگريد لفظ اولى بالديد كم منى على بحى مان لياجك تواس مديث كايد معن نيس ب كه جب حضور فيد فرمايا تعاداس وقت حضرت على اولى بالدامة يقع علك اس كا مطلب يد ب كه حضرت على بال كه اعتبار سه اوفى بالدامة بيس اليني جس وقت معنرت على كى خلافت كاموقع ہوگا اس وقت وى اولى بالات موں مے مور خلفاء علائد كان سے پہلے خليف تور امير بوناس مدے كے خلاف نيس ہے۔

استدان کرتے مدیث معرب علی کی خاوات پر نص ہو تی تو معرت علی اس سے معرب ابو بکر کی خلاف کے خلاف اپنی خلافت پر استدان کرتے الیکن معرب علی اور معرب مباس میں ہے میں نے بھی اس مدے سے استدانال نسی کیا۔

 مند ہزار میں ہے حضرت علی نے فرمایا رسول اللہ جیج نے کسی کو خلیفہ نسی ہنایا تو میں کسی کو کیے اپنا خلیفہ بنا سکتا ہوں۔ آگر یہ حدیث حضرت علی کی خلافت پر نص ہوتی تو حضرت علی اس طرح نہ فرمائے۔۔

۱- اس مدیث یم موالی دوست محب اور ناصر کے معنی یم ب میساکد اس مدیث یمی به الفاظ بین اے اللہ اس به دوستی میں بالفاظ بین اے اللہ اس به دوستی دکھ ہو علی ہے دوستی دکھ ہو علی ہے دوستی دکھ ہو اس کے دوست یا محب یا ناصر بول علی اس کے دوست یا محب یا ناصر بول علی اس کے دوست یا محب یا ناصر بول میں اس کے دوست یا محب یا ناصر بول اس کے دوست یا محب یا ناصر بول است یا میں استان میں استان میں اس کے دوست یا محب یا ناصر بول است یا استان کی بیش نظر صرف انھی ہو ابات پر اکتفاء کی اس کے دوست یا میں نظر صرف انھی ہو ابات پر اکتفاء کی اس کے دوست یا میں استان کے بیش نظر صرف انھی ہو ابات پر اکتفاء کی اس استراض کے اور بھی متحدد جو ابلت ہیں "کیکن ہم نے انتظار کے بیش نظر صرف انھی ہو ابات پر اکتفاء کی

بعض صوفیاوے منقول ہے کہ اس آیت سے مرادیہ ہے کہ جو احکام بردوں کی مصلحت سے متعلق ہیں ان کی تہلیج آپ پر ضروری ہے اور جن آیات سے مقصود برندوں کو اطلاع پنچاہا ضروری ہے ان کو برندوں تک پنچاہا ضروری ہے اور جو فیب آپ کے ساتھ مخصوص ہے اور است کی مصلحت کا اس کے ساتھ کوئی تعلق نہیں ہے اس کا است تک پنچاہا ضروری نہیں ہے ، ایک اس سے جھیاتا ضروری نہیں ہے ، ایک کا ان سے چھیاتا ضروری ہے۔ قرآن جمید ہیں ہے :

فَأَوْمَعَلَى اللَّهِ عَشِدِهِ مُنَاأُومُ فِي السحم: ١٠) مودى فرال النه عديد مقدس كوجووى فرائل-

معرت جعفر دوائد نے اس کی تغییر می فربایا ہے۔ اللہ تعالی نے آپ کے قلب پر باا واسلہ ایک واز کی وہی فربائی اور اس راز کو آپ کے سواکوئی نیس جانتا اور اس کا آخرت میں جا جلے گا۔ جب آپ اپی است کی شفاعت فربا کیں گے اور طامہ واسطی نے کہا اللہ نے اپنے عید کرم کی طرف القاء کیا جو افقاء کیا اور اس کو ہائکل شاہر نہیں کیا کیے تک اللہ سجانہ نے اس کو دسول اللہ مائی کے مائے محصوص و کھا ہے اور جس چیز کو آپ کے مائے مخصوص رکھا ہے ، وہ مستود ہے اور جس چیز کے مائے آپ کو خاوت کی طرف میدوث کیا ہے 'وہ ظاہر ہے اور صوفیاء اس کو اسرار الدید اور حقیقت کا ملم کہتے ہیں۔

علام آلوی اس نظریہ سے اختلاف کرتے ہوئے لکھے ہیں کہ صوفیاء نے اس مسئلہ میں بہت طویل کلام کیا ہے الیکن میرے نزدیک تحقیق ہیں کہ موجود ہے۔ میرے نزدیک تحقیق ہیں کہ نی انتخابی کے پاس احکام شرعیہ اور اسرار الید کاجو بھی علم تھا وہ سب قرآن مجید میں موجود ہے۔ اللہ تعالی قرانا ہے:

وَنَرَّلْمَا عَلَيْكَةَ الْكِتَابَ يَبْيَانًا لِّكُلِّ مَنْ فَي عَمَلَ آبِ بِي كَابِ اللَّي عِهِ مِر يَزِكَار وثن بيان (النحل: ١٨) ع- مَافَرَ طَلْمَانِي الْبِكِتَابِ مِنْ شَعْلُ (الانعام ١٣٨٠) مم الكركاب من كي يزكونين جوازا

علامہ مری نے کماکہ قرآن مجید بی تمام اولین اور آخرین کے علوم جمع ہیں اور اس کا حقیقی اصلا اللہ تعالی نے کیا ہے اور
اس کے بعد رسول الله عزیر نے کیا ہے " اسوا ان علوم کے جن کو اللہ سبحانہ نے اپنے ماتھ خاص کر لیا ہے۔ پھر معظم ساوات
صحابہ کرام ان علوم کے وارث ہوئے "مثلاً خلفاء اربعہ اور معزت ابن مسعود اور معزت ابن عباس رمنی اللہ محنم "پھر محابہ کرام
کے بعد آبادین حظام ان علوم کے وارث ہوئے " پھر دفتہ رفتہ مسلمانوں کی اسٹیں اور ان کے درجات کم ہوتے مے اور افاضل
صحابہ اور اخیار آبادین جن علوم کے حال تھے 'بعد کے مسلمان وہ مقام حاصل نہ کر سکھ۔

اور جب یہ طبت ہو گیاکہ تمام علوم اور معارف قرآن مجیدی موجود ہیں او قرآن مجید کی تہنی ان تمام علوم و معارف کی تہلیغ ہے ' زیادہ سے ذیادہ سے کما جا سکتا ہے کہ ہم ہر گئتہ ' ہم ہر راز اور ہم ہر تھم تفصیل کے ماتھ ہم ہم فض کے لیے قرآن مجید کی صرف مبارت سے کا ہم نسمیں ہے اور جو مختص سے گلن کرتا ہے کہ کچھ ایسے امراد میں جو قرآن مجید سے قارح میں اور ان کو صوفیہ سے براہ راست اللہ تعالی سے حاصل کیا ہے ' قریب صرف جموث ہے۔ علامہ فیسطلانی نے کماکہ عالم دین کا اپنی فیم سے قرآن مجید سے امراد اور حکمتوں اور انکام کا انتخراج کرنا جائز ہے 'ہم فیکہ وہ اصول شریعت کے موافق ہوں۔

یں کتا ہوں کہ صوفیاء کا کلام بھی اس اختبارے ہے۔ البت ان کی بعض عبارات ظاہر شریعت کے خالف ہوتی ہیں اور صفرت علی معرت علی جرجی ہے فرملیا ہے لوگوں سے ان کے عرف کے مطابق بات کرد۔ کیا تم یہ چاہے ہوکہ اللہ تعالی اور اس کے رسول مہی کی محکمت کی جائے۔ (میج البھاری میں کے المحدی میں اعادے موتف کے قریب یہ عدیث ہے۔

الم ابن الي حاتم نے الى سند كے ماتھ عشرہ ب دوات كيا ہے كہ جل معزت ابن عباس رمنى اللہ عنما كيا ہم بيفا ہوا اللہ ابن الي حاتم نے الوراس نے كما ہم ب وگ يہ بيان كرتے ہيں كہ آپ كياس كوئى خاص علم ہے جس كورسول اللہ باتھ ہو كون سے بيان تهيں كيا۔ حضرت ابن عباس نے فريا كيا تم نهيں جائے كہ اللہ تعالى نے فريا ہے اے رسول اللہ باتھ كہ اللہ تعالى نے فريا ہے اے رسول اللہ باتھ ہو ہے دوا ہو كہ جو آپ كورسول اللہ باتھ ہو ہے اللہ كيا كيا ہے اس كو پنچاد ہے كہ بندا انه كورسول اللہ باتھ ہو ہے اللہ كورسول اللہ باتھ ہو ہو كہ سوا كيا كيا ہے اس كو پنچاد ہے كہ بندا انه كورسول اللہ باتھ ہو ہو كا فران جميد كے سوا كى خرير كاوارث قيم كيا اور الم بخارى نے ابو جم میں دواجت كيا ہے كہ جس نے معرف على جو ہو كا فران ہي ہو ہو ہو كہ ہو ہو كہ كورسول كو كا فران ہو ہو ہو كہ ہو ہو كہ ہو ہو كہ ہو ہو كہ ہو اس محيفہ جس ہے ہو ہم مسلمان خص كورى من ہو كہ اور ہو اس محيفہ جس ہے ہو ہم مسلمان خص كورى من ہو كا فران ہو كي برا

خلاصہ بیہ کہ صوفیاء کی جو عبارات قرآن وسات کے موافق ہیں 'وہ مقبیل ہیں اور جو عبارات کاب و سنت کے خلاف ہیں 'وہ مردد ہیں 'اور بیہ ہو سکتا ہے کہ اللہ تعالی اپنے خاص بڑوں کو کاب و سنت ہے ایسے اسرار اور ادکام مستبط کرنے کی قم عطا فرمائے جو ان سے پہلے مغمرین 'فقعاء اور جمتدین نے مستبط نہ کیے ہوں 'اور جب آیات اور اطوب سے انجہ اربد کے اجتماد اور استبلط کو مان لیا گیا ہے 'والا نکہ وہ ایک ہو مرسے کے فکاف ہیں تو ہود کے علاء کے لیے یہ کیوں جائز نہیں ہے ؟کہ وہ کہ اور استبلط کو مان لیا گیا ہے 'والا نکہ وہ ایک ہو مرسے کے فکاف ہیں تو ہود کے علاء کے بول البتدا یہ ضروری ہے کہ یہ استخراج اور سات سے ایسے مسائل اور محکمی مستبط کریں 'جو انکہ اربد نے نہ مستبط کے ہوں۔ البتدا یہ ضروری ہے کہ یہ استخراج اجراج احراج اس البتدا ہے مراح کے بیاد کے علم کی تفرن مستبط کے علم کی تفرن مستبیل

علامہ مید محبود آلوی کے اس کلام کی متانت اور فقاہت میں جمیں کلام نمیں ہے الیکن ولا کل محبر کی روشن میں بعض مختفین کا یہ نظریہ ہے کہ نجی مزجور کی متانت اور فقاہت میں جمیں کا منطق کے ایس مقابل ہے اور تمام علوم کی تبلیغ آپ پر واجب نمیں تھی۔ بعض علوم ایسے تھے 'جو آپ نے میں خلوم ایسے تھے 'جو آپ نے میں متلائے ' بلکہ جو اس کے اہل تھے 'ان کو بتلاد ہے اور بعض علوم ایسے تھے 'جو آپ نے میں کو نہیں بتلائے ' وہ صرف آپ کی ذات مقدمہ کے ماتھ مختل تھے اور یا آپ کے علوم کی تین النہیں ہیں:

فيخ عبد الحق محدث داوي متوني عن مده لكست ين

رسول الله علی بے فرانیا بھو سے میرے پروردگار نے کوئی چیز ہو تھی جس کا بھواب میں نمیں دے سکا تب الله تعالی نے جھے
اپنا دست قدرت میرے دو کند عوں کے در میان رکھا جس کی استذک میں نے اپنے میند میں محسوس کی کارافتہ تعالی نے جھے
اولین اور " فرین کا علم مطافرہا وار جھے کی اقسام کا علم عطافرہا نے ایک علم کی وہ حسم تھی جس کے حصلتی جھے ہے حرد ایا ہی میں
کسی کو اس پر مطلع نمیں کروں گااور میرے علاوہ اور کوئی محفی اس کو برداشت کرنے کی طاقت نمیں رکھتا۔ وہ سمری علم کی وہ حسم
تھی جس کو خاہر کرنے یا بچ شیدہ رکھنے کا جھیے اختیار عطافرہا اور تیبری علم کی وہ حسم تھی جس کے متعلق جھے تھم دیا کہ میں امت
کے مرفاص و عام کو اس کی تبلیغ کروں۔ (بدائرین النبوت اج اس معامل مطبور کہتے اور پر رضوبہ " سکم اے مساحی)
سے مرفاص و عام کو اس کی تبلیغ کروں۔ (بدائرین النبوت اج اس معامل مطبور کہتے اور پر رضوبہ " سکم اے مساحی سے مشاب ہے تھی۔

وہ علم جس کو تمام امت تک پہنچاہ آپ پر فرض ہے جن علوم کی امت کے ہر خاص وعام کو تبلغ واجب ان کا تعلق ادکام شرعیہ سے ہے اور زریجٹ آ من میں آپ کو

ان می کی تبلیغ کا تھم دیا گیا ہے۔ آپ کے قرآن مجید کی تمام آیات کو پہنچایا اور احادیث میں ان کی وضاحت فرمائی۔ زیر بحث آیت کی تغییر میں بہت سے مضرین نے یہ کماہ میں آب اس آیت میں آپ کو احکام شرعیہ کی تبلیغ کا تھم دیا ہے۔

قامنى عبدالله بن عمرييناوى متونى ١٨٥٥ ماس آيت كي تغيير من لكمة بن

اس آیت کا ظاہر منی ہے کہ ہرجو چیز نازل ہوئی اس کی تبلغ داجب ہے اور شاید اس سے مرادیہ ہے کہ جس چیز کے ساتھ بندول کی مصلحیں متعلق ہوں اس کی تبلغ داجب ہے اور اس کے نازل کرنے سے مقصود ان کو مطلح کرنا ہو اس کی تبلغ داجب ہے اور اس کے نازل کرنے سے مقصود ان کو مطلح کرنا ہو اس کی تبلغ داجس مسلور داو اللکو کی درت) امرار الدید کا افتاد کرنا حرام ہے۔ الوار الدینول الکازرونی جامی مسلور داو اللکو کی درت)

علامه شلب الدين احد نفاجي منوفي ١٩ مد اس كي شرح من لكية ين:

بعض علاء نے کما ہے کہ اس آیت کے تھم کا تعلق دین اور بندول کی مصلحوں کے ماتھ ہے 'اور آپ کو انہیں مطلع کرنے کا تھم دیا گیا ہے 'اور جو امرار ٹبی چھچ کے ماتھ خاص ہیں اون کا یہ تھم نہیں ہے۔ جیساکہ المام بخاری نے معرت ابو ہریوہ سے روایت کیا ہے کہ میں نے رسول اللہ چھچ سے وو تھم کے علوم محفوظ کیے۔ ایک علم کو ق میں نے لوگوں میں پھیلا دیا اور اگر دو سرے علم کو بی پھیلاؤں تو یہ تر تر و کلٹ دیا جائے گا۔ (میح البولدی جن رقم الدے ہے: ۳۰) اور یہ علم الحقیقت اور عکمت ہے جس سے سکوت کیا گیاہے۔ مصنف (علامہ بینداوی) نے بھی اپنے قول بین ای طرف اشار و کیا ہے۔

(مناية الناملي على موجود المعلى مطبوعه وارصادر البروت)

ملامد ابوالسعود محدین محد عمادی حنی متوفی ۱۹۸۳ اس آیت کی تغییر می لکھتے ہیں: آپ پر جس قدر بھی احکام نازل کے محتے ہیں ان کو پنچا دیجے کو تک جن امور کا تعلق احکام سے بالکل نمیں ہے جیسے امرار مخیدان کی لوگوں کو تبلیج کرنا مقعمود نمیں ہے۔

(تغيراني العود على حامش الكبير "ج م" ص 2" مطبوعه داد الفكو "بيروت " ١٣٩٨ ه)

علامد سليمان بن عمر المحل متونى موسعد اس آيت كي تغير على لكيت بن:

ہو امور احکام سے حفلق میں ان کو پنچاد بجئے۔ کیونکہ جو اسرار آپ کے ساتھ خاص کر دیے مجے میں ان کی تبلیغ کرتا آپ کے لیے جائز قسم ہے۔(ماثیة الحمل طی الجلالین میں میں معلور قدی کتب خانہ کراہی)

وہ علم جس کی تبلیغ میں آپ کو انقیار ہے

علامه طامرين عاشور متوفى ٨٠ ١٠٠٠ أن أيت كي تغيري كليت بن

ا صحح البخاري و قم الديث: ٥٨٥٥ التوريو التوريخ سادس مي ٢٦٠)

جن علوم کے متعلق رسول اللہ عظیم کو اختیار دیا گیا تھا کہ جس کو جاہیں مطلع فرما کیں اور جس کو جاہیں نہ مطلع فرما کیں ا ان بیں ہے بعض کاذکر احلوم سے حوالہ سے علامہ ابن عاشور کی تحریر جس آئیا ہے اور اس سلسلہ جس ایک حدیث یہ ہے: امام محدین اساعمل بخاری متونی ۴۵۲ میں روایت کرتے ہیں:

حفرت الني بن مالك جيج بيان كرتي بي كرايك سواري ير حفرت معلق جي رسول الله مجيد كي يحيد بينم موع

تھے۔ آپ نے فرمایا اے معاذین جبل انہوں نے کمالیک یارسول الله ای کوائی دے اللہ تمن بار ہوا) آپ نے فرمایا ہو مخص بھی صدق دل سے لاالمه الاالمله محصد رسول الله کی کوائی دے الله اس کو دوئر نے پر ترام کردے گا۔ معرت معاذی کمایارسول الله کی بارسول الله کی کوائی دے الله اس کو دوئر کے کہ معرت معاذی کمایارسول الله اکی ای کو کھی کرلیں ہے۔ پھر معاذی کمایارسول الله اکی ای کی کھی کرلیں ہے۔ پھر معرت معاذید الله بارسول الله ایک کو وقت گناوے نی نے کے لیے (آگ کے علم کا چھیانالازم نہ آئے) یہ معدے بیان کردی۔

(المح الفاري عارتم الدعث: IFA)

حطرت الس براین براین کرتے ہیں کہ جھے بتایا کیا کہ ہی جی اف صحرت معلق براین ہے فرمایا جس محض نے اللہ ہے اس مال میں ملاقات کی کہ اس نے اللہ کے ماتھ بالکل شرک نہ کیا ہو ، وہ بنت می واخل ہو جائے گا۔ حضرت معلق نے پوچھا میں لوگوں کو یہ خوش خبری نہ سنادوں؟ آپ نے فرمایا نہیں ایجھے خود شہ ہے کہ پھرلوگ ای پر تحمید کرایس کے۔

(مح البخاري على المريث:١٢٩)

اور جب نی نے اپنی کی یوی ہے ایک دانی بات فرمائی
پر جب انموں نے اس دانی اور کا اکسی ہے اور کر دیا اور اللہ نے
نی پر اس کا اظمار فرما دیا تو نی نے انہیں پکو جمادیا اور پکو
مالے ہے اعراض فرمایا ۔ پر جب نی نے انہیں اس کی فہردی اور دیا یا ہے فرمایا ہے کہ دی کی کس نے فرمایا ہے کہ دی کہ فرمایا ہے کہ دی کے دالے نے فرمایا ہے کہ دی کے دالے کے فرمایا ہے کہ دی کے دی کے دی کے دیا ہے کہ دی کے دالے کے فرمایا ہے کہ دی کے دیا ہے کہ دی کے دیا ہے کہ دی کے دی کے دیا ہے کہ دی کے دی کے دیا ہے کہ دی کے دی کے دی کے دیا ہے کہ دی کے دیا ہے کہ دی کے د

قرآن مجير من محماس ملماري الله القيرم: وَإِذْ اَسَرَّالَيْ مِنْ الله الله عَلَى الْوَاجِهِ حَدِينًا فَلَمَّ البَّالَةُ مِنَّالَةُ مِنْ الله عَلَيْ وَالله عَلَيْهِ مَا لَتُ مَنْ وَاعْرُضَ عَنْ العَيْمِ فَلَا مَا لَكُ الله عَلَيْهِ فَالَتْ مَنْ الْنَاكَ عُدْ افَالَ لَجَارِي الْعَلِيْمُ الْحَيلِيْمُ الْحَيلِيْمُ

(الشحريم. ٣)

علامه سيد محود آلوى متوتى مع علم اس آيت كي تغير من لكية بن:

الم ابن مرددیہ نے حضرت ابن عباس دخی افتد عنماے اور الم ابن الی عاتم نے مجاہدے روایت کیا ہے کہ کی ساتھ با نے حضرت صف دخی افتہ عنماے یہ راز بیان کیا کہ آپ نے اپنے اور حضرت بارید کو حزام کرلیا ہے۔ (بعض روایات میں شرد کے حزام کرنے کا ذکر ہے۔ اس سے مراد شرقی حزام نہیں ہے ' بلکہ حتم کھانا مراد ہے) اور یہ فربایا کہ آپ کے بعد حضرت ابو بکراور حضرت محرد منی افتہ عنما فلیفہ ہوں ہے۔ حضرت حقد نے یہ راز حضرت عائشہ کو بتاریا ' تب نی بڑھی نے حضرت صف سے فربایا کہ تم نے مارید کے حزام کرنے کو افشاء کر دیا ہے اور حضرت ابو بکر اور حضرت عمرد منی افتہ عنما کی فلافت کے راز کو افشاء کر سے سے آپ نے اعراض فربایا' ما کہ وہ مزید شرمندہ نہ ہوں اور ایام ابو قیم اور ایام ابن مردویہ نے حضرت علی کرم اللہ تعالی وجہ اور حضرت ابن عباس رمنی اللہ عنما ہے روایت کیا ہے کہ نی بڑھی نے فربایا تممارے والد اور عائشہ کے والد میرے بحد فلیفہ ہوں کے "موتم یہ واز کمی کو بتائے ہے اجتماب کریا۔

ار وح المعانی است میں المحالی المحرار احیا والتراث العملی ایروت)

ہم سے باتوالہ والا کل سے سربیان کردیا ہے کہ نبی چین کے علم کی ایک دہ ضم تھی جس کی ہم ظامی و عام پر تبلیغ کرنا آپ پر

فرض تھا سے قرآن مجید کی تمام آیا ہے ہیں اور وہ احلویت ہیں جن کا تعلق ادکام شرعیہ سے ہور آپ کے علم کی دو مری ضم وہ

ہے جس میں آپ کو افقیار تھا کہ آپ جس کو چاہیں ابیان فرما کیں۔ اس پر بھی ہم نے باتوالہ والا کل بیان کردیے ہیں۔ اب ری
تیری ضم ایعنی وہ علم جو آپ کے ماتھ مخصوص ہے اور جس کا انتخاء آپ یو واجب ہے اس کے والا کل حب زیل ہیں۔

طبيان القر أن

ووعلم جس کا خفاء آپ پر واجب ہے

نی بڑتے ہوائٹہ تعالی نے متابعات کاعلم صافر بایا ہے اور عام مسلمانوں کو یہ علم عطانس فربایا۔ فقداء احتاف کا یک ند بب ہے اور ملف صافحین کا بھی میں ند بہب تھا کہ آیات متابعات کاعلم اللہ تعالی نے اپنے ماتھ خاص کر لیا ہے ایعنی رسول اللہ مرتبیج کے موااور ممی کو نہیں عطافر بایا۔

لماجيون مثلب كي تعريف عن كلية إلى:

منظہ اس جن کا اسم ہے جس کی معرفت کی امید منقطع ہو اور اس کے ظاہر ہونے کی اصلاً امید نہ ہو۔ وہ عابت فعا بس ہو آ ہے 'اور محکم کی ضد ہے جو عابت ظہور میں ہو آ ہے اور اس کا عظم ہے ہے کہ یہ اعتقاد رکھا جائے کہ اس افظ ہے جو مراو ہے 'وہ حق ہے۔ اگر چہ ہم کو قیامت کے بعد اس کی مراوان شاء حق ہے۔ اگر چہ ہم کو قیامت کے بعد اس کی مراوان شاء اللہ ہر فضی پر منکشف ہو جائے گی اور یہ عظم امت کے حق میں ہے اعتقاد ہے کہ آپ کو لفظ منتا ہہ کی مراد قطام معلوم ہو' ورف آپ ہے اس کے ماتھ فطاب کا اللہ علی اللہ و جائے گا اور یہ ایسان کا جس کے ماتھ فطاب کیا تھا تھا ہو ہائے گا اور یہ ایسان کا جسے لفظ معمل کے ماتھ فطاب کی جائے اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ علی مراد قطاب کی جائے فیاں کے ماتھ فطاب کیا جائے کہ اللہ کہا گی مراد آپ کہا گی مراق حبثی میں تعتقو کی جائے۔ (فور الا او اور معمل کے ماتھ فطاب کیا

علامد سيد محود آلوي متوتى ١٠ ١١٠ كيد ين.

اور سے بنت جائز ہے کہ اللہ تعالی نے اپنے صبیب علیہ السلوۃ والملام کو وقت و توع قیامت کی کال اطلاع دی ہو تمر اس طریقہ سے نمیں کہ آپ اللہ کے علم کی دکایت کریں۔ ہائ تکر اللہ سمانہ نے کمی حکمت کی وجہ سے آپ پر اس علم کا افغاء واجب کردیا ہے اور سے علم آپ میجانے کے خواص میں ہے ہے الیکن میرے نزدیک اس پر کوئی قطبی دلیل نمیں ہے۔

(روح المعاني على ١١٣ م ١١٣ مطبوعه دارا حياء الزاث العربي ورت)

مافظ شاب الدين احدين على بن جر وسقلياني متوفى مدهد للعدين:

بعض علاد نے بیان کیا ہے کہ قرآن مجید کی تمی آےت میں یہ دلیل تنبی ہے کہ اللہ تعالی نے نبی میں ہو روح کی حقیقت پر مطلع نسیں فرمایا ' الکدید جائز ہے کہ آپ کو روح کی حقیقت پر مطلع فرمایا ہو اور آپ کو لوگوں کو اطلاع دینے کا تھم نہ دیا ہو 'اور عظم قیامت کے متعلق بھی انہوں نے اس طرح کما ہے۔

(مخ انباری عجم من ۳۰۳ مطبوعه وار نشرا فکتب الاسلامیه الا بور ۱۳۰۱ه)

علامد جلال الدين سيوطي حوتي المد لكية بن:

بعض علاہ نے میہ بیان کیا ہے کہ ٹی بھی کو امور فسہ (قیامت اورش ہوئے الل کے پیٹ کل کیا ہوگا اور کون کمال مرے گا) کاعلم دیا گیاہے اور دفت وقوع قیامت اور روح کاعلم بھی دیا گیاہے الیکن آپ کو ان کے مخفی رکھنے کا تھم دیا گیاہے۔ (فصائص کیم کل علم میں ۱۲ مطبع معمر شرح العدد در 'ص ۱۲ مطبوعہ وار الکتب العلمیہ 'بیروست)

علامدا مرقسطلاني متولى الم الكف يرد

بعض علاء نے بیان فرمایا ہے کہ قرآن کی آست میں اس پر کوئی دکیل نیس ہے کہ اللہ تعالی نے اپنے نی کو حقیقت دو آپ مطلع نہیں فرمایا ' یک جائز ہے کہ آپ کو روح کی حقیقت پر مطلع فرمایا ہو اور دو سروں کو بتلائے کا تھم نہ دیا ہو اور علاء نے تیاست مطلع نہیں فرمایا ' یک متعلق بھی ای طرح فرمایا ہے۔ (المواہب اللہ نبہ معالار قال ' جا ' میں ہے) ای طرح فرمایا ہے۔ (المواہب اللہ نبہ معالار قال ' جا ' میں ہے) ایک خواب بیان کیا۔ حضرت ابو بر

جَپاڻ القر اَڻ

نے عرض کیا' یارسول افتدا آپ جی اس خواب کی تعبیر کی اجازت دیں 'چرحطرت او بکر نے اس خواب کی تعبیر میان کی' بعد از اس عرض کیا' آپ فرطی کیا' آپ فرطی کیا' آپ فرطی کیا' آپ فرطی کیا ایرسول اللہ آف فرطی کیا گارسول اللہ آف فرطی کیا گارسول اللہ آف فرطی کی کے میں میں ایک کیا خطا کی ہے' آپ نے فرطیا ہم ندود۔

(مجع البحاري ع ٨٠ رقم الحديث:١٠٠١ مخترا)

مانظ ابن جر عسقلانی اس مدعث کی شرح می لکھتے ہیں:

خواب كى تعير فيب كاعلم باس لي جائز تفاكر آب أس فيب كوائ مائد فاس ركع اور دو مرول مع فنى ركعة

(هج الباري على المعلم المعلم مطيوعه وار فشر الكتب الاسلامية 'لا اور '١٠١١هـ)

ہم نے تنسیل سے دلائل کے ساتھ ہا والہ بیان کردیا ہے کہ نی جھی کے علم کی تمین تشمیل تھے۔ ایک وظم جس کی تام است کو تبلیخ کرنا آپ پر قرض تھا۔ یہ تمام قرآن کرم ہے اور وہ اصلات ہیں جن کا تعلق قرآن مجید کی تنصیل ہور بیان سے کا اور وہ سرا وہ علم جس کا جن اور وہ سرا وہ علم جس کا ہور وہ سرا وہ علم جس کا اور وہ سرا وہ علم جس کا اور وہ سرا وہ علم جس کا اور وہ سرا وہ علم جس کا افتاء آپ پر واجب ہے۔ جسے آبات قشام ملت انتقار کو افتاء قرع قیام سے اور وہ ما اور یہ وہ اسرار ہیں جن کا علم اور تقالی کے ساتھ خاص ہے اور اس نے صرف اپنے جب آگر مرف اپنے کو ان پر مطلع فر بایا ہے۔

الله تعالى كاار شاوے: آپ كئے كه اے الل كتب تم (دين يرق كى) كى جزير نسي مورجب كل كه تم تورات الله تعالى كاار شاوے اس كو يو تمارے دب كل اللہ تا الله تعالى كار شائم نه كو اور اس كو يو تمارے دب كى جانب سے تمارى طرف نازل كياكيا ہے۔ اور ان جي سے بعث سے اوكوں

کے کفرادر مرکشی کو دہ ضرور زیادہ کردے گاجو آپ کے رب کی جانب سے آپ کی طرف عزل کیا گیاہے مو آپ کافروں کی قوم

يرافسوس ندكري- (المائده ١٨)

شان نزول

الم ميداللك بن بشام متوفى سومد لكيدين

(البحرة النبوية كرح مع الما-١٨٠٠ بامع البيان وجراد مع ١٨١٨-١١٨)

يهود ونصاري كے كسى عمل كالائق شارنہ مونا

الل كتب سے مراديود اور نساري بيں 'يوواس ليے بيں كدان كو تھم ديا كيا تھاكد وہ تورات كے ان ادكام بر عمل كريں جن كو منسوخ نبيس كيا كيا اور سيدنا تھ بيتا ہے ليا ہوت كا انجل پر انجان الائم اور آپ كى بعثت كے بور قرآن كريم پر انجان الائم اور آپ كى بعثت كے بور قرآن كريم پر انجان الائم و تورات اور انجيل دونوں كا كافظ ہے اور قرآن جيد كے احكام پر عمل كريں 'ليكن انہوں تے ايسانيس كيا 'اور نساري اس

طِيانُ القر أَنَّ

لیے مرادیس کہ انہوں نے انجیل کی ان بٹارتوں سے اعراض کیاجو صفرت میٹی علیہ انسلام نے اعارے نی سیدنا محد سی ایس کے متعلق دی تھیں۔

تم کی چنے نہیں ہوئی کامنی ہے کہ تم دین یہ حق کی کئی چنے حال نہیں ہو۔ تم میں تقویٰ ہے 'نہ دیانت ہے 'نہ بداے ہے اور تم پر بو کہ بنال کی گئی تھی 'تم اس کی کئی چی کر قائم نہیں ہو 'جب تک کہ تم تورات اور انجیل کے اصل انکام پر عمل نہ کدواور قرآن مجد پر ایمان الا کراس کے انکام پر عمل نہ کدواس دقت تک تم میں دین داری اور ہدایت کا ایک شہر ہمی نہیں ہوگا اور اس سے مقصود ہنے ہے کہ اللہ تعالی کے نزدیک تمارا کوئی عمل تکل ذکر اور لا کئی شار نہیں ہے 'اور دین داری اور مساحب کہ بونے کے تمارے تمام دعلوی جموٹے اور باطل میں 'خواہ تم دنیا میں الل کہ کملاتے رہو' نیکن آخرے میں مساحب کہ بونے کے تمارے تمام دعلوی جموٹے اور باطل میں 'خواہ تم دنیا میں الل کہ کملاتے رہو' نیکن آخرے میں شماداکوئی عمل منبول نہیں ہے۔

زول قرآن سے ان کے كفراور سركشي كااور زيادہ بونا

نیزید فرملیاک قرآن مجید کانزول ان کے کفراور سرکٹی کو اور زیادہ کرے گا کو کل قرآن مجید نے ان کی شریعت کو منسوخ کر
دیا ہے 'اور ان کی بر حقید گیں کو یافل کیا ہے اور ان کو کافر قرار دیا ہے۔ اس لیے بیہ قرآن مجید سے حمد اور مبنض رکھتے ہیں اور
جول جول جول قرآن مجید کی آیات تاذل ہو تی ہیں 'ان کے حمد اور بغض میں اضافہ ہو تاہے اور بیہ زیادہ شد و مدے قرآن مجید کا انگار
کرمنے ہیں۔ نیزا بید میدنا محد ہیں کی نیوت کا انگار کرتے ہیں اور قرآن مجید کی ہر آیت آپ کی نیوت کی دلیل ہے اور اسلام کے
دین مستقیم ہونے پر برحمان ہے۔ اس لیے جب بھی کوئی آیت نازل ہوتی ہے ' یہ اس کا انگار کرتے ہیں اور ان کا کفراور زیادہ ہو
جاتا ہے۔ نیزا کتنے بی تاریخی تھا کی انہوں نے خلا بیان کے تھے ' جن کی قرآن مجید نے کاذیب کروی' اس لیے بیہ قرآن مجید کے
خات اور زیادہ سرکھی کرتے ہیں۔

نی مڑکے پرچ تک وحمت عالب تھی' اس لیے ان کے گفراور سرکٹی ہے آپ کو رنج اور اقسوس ہو آ تھا۔ اللہ تعالیٰ نے فرایا فرمایا آپ کافروں کی (اس) قوم پر افسوس نہ کریں کیو تک سرکٹی ان کی سرشت بن چکی ہے' یہ لوگ راہ واست پر آنے والے نہیں ہیں' کلذا آپ ان کے انجام بدیر افسوس نہ کریں۔

الله تعالیٰ کا ارشادے: بے فک ایمان کے رقی اور یہودی مائین اور نساری جو بھی اللہ اور قیامت پر (میمج) ایمان ایا اور اس نے نیک عمل کیے 'قرند ان پر خوف ہو گااور نہ وہ عمکین ہوں گے۔ (المائدونہ) الصار منون کے رفعی حالت میں ہونے کی توجید

اس آیت می اصاری حالت رفع می ب اور نوی قاعده کا انتہار ساس کو حالت فعید می الصابین ہوتا چاہے تعاداس کا ایک جو اس ایک خردلالت چاہیے تعاداس کا ایک جو اب بیر ب کہ الصاری نون میتدا م ب اور اس کی فیرمقد د ب کدالک جس پر ان کی فیردلالت کرتی ہوا دالی میں استوار الذیس المادوا و النصاری من آ میں بالله و البوم الاحرو عمل صالحافلا خوف علیهم ولاهم یحربون و الصابئون کدالک .

دو سراجواب یہ ہے کہ "ان" فعل کی مشاہمت کی وجہ ہے عمل کرتا ہے 'اس لیے عال ضعیف ہے۔ آگر معطوف علیہ بیں اس کاعمل تھا ہر ہو (نیٹی ظاہر آاسم پر نسب ہو) تو معطوف بیں بھی اس کے عمل کا ناہر ہونا ضروری ہے اور آگر معطوف علیہ بیں اس کے اسم پر ظاہر آفصب نہ ہو' جیساکہ اس آیت جی ہے تو پھر معطوف میں بھی نصب کاعمل ضروری نہیں ہے 'اور اس کے اسم پر ابتداء کی وجہ سے دفع بھی جائز ہے' جیساکہ اس آیت جی ہے۔

كيا صرف نيك عمل كرنے سے يهوديوں اور عيسائيوں كى نجات ہو جائے گا!

اس تبت پر دو سرااعتراض یہ ہے کہ مبتداء اور خرجی تغایر ہو تاہے اور اس آبت جی ایبانسی ہے کیونکہ اس آبت کا حاصل معنی ہیہ ہو گئے۔ اور اس آبت جی ایسان ایا اس کو خوف اور نم نسیں ہو گا؟ اس کا حاصل معنی ہیہ ہو گئے۔ اور آخر تب رائیان انایا اس کو خوف اور نم نسیں ہو گا؟ اس کا جواب یہ ہے کہ یہ آبت ان کے متعلق فرمایا جو بھی محض جواب ہیہ ہے کہ یہ آبت ان کے متعلق فرمایا جو بھی محض ذبان سے ایمان الایا ہو ایمان الایا ہو ایمان الایا ہو اور نم نسیں ہو گلہ دو سراجواب یہ ہے کہ جو اب ایمان الایا ہے آبر دو ایک اور بر قراد رہا مرتب ہوا اور اس کا ایمان پری خاتمہ ہوا کواس کو خوف اور خم نسیں ہوگا۔

اس آعت پر تیسرااعتراض بیہ کے اس آعت کے اعتبادے نجات کے لیے اسلام لاٹا ضروری نیس ہے اکیو تکہ اس آجت میں فرمایا ہے کہ یہودی نفرانی اور متارہ پر مت جو بھی اللہ اور آخرت پر ایمان لایا اور اس نے نیک عمل کیے اس کو کوئی خون اور غر نسیں ہوگا؟ اس کا بواب بیر ہے کہ ایمان لانے سے مراد ہے ہے کہ سمجے ایمان لا تھیں اور بیسودی جو عزیر کو خدا ماتے ہیں اور بیسائی 'جو حضرت عینی کو خدا ماتے ہیں' اور صابئین جو ستاروں کی پر ستی کرتے ہیں اس کا ایمان سمجے نہیں ہے 'ان کا ایمان اس بیسائی 'جو حضرت عینی کو خدا ماتے ہیں' اور صابئین جو ستاروں کی پر ستی کرتے ہیں اس کا ایمان سمجے نہیں ہے 'ان کا ایمان اس وقت سمجے ہوگا جب وہ آئی بدعقید گیوں سے آئی ہو کر اسلام میں واضل ہو جا کیں۔ ہم نے اس آئے ہے کا ترجمہ اس طرح کیا ہے کہ بیدونوں اعتباض ترجمہ سے بی دور ہوجاتے ہیں۔ آئی دو سرے اعتباض کے جواب کی مزید وضافت کے لیے ابتر ہو' ہو' کی تغییر بھی طاحظہ قرالیں۔

الله تعالى كاارشاوى: ب شك بم في بنواسراكيل سى يخته محد ليا اور ان كى طرف رسول بيهيد بب بمى ان ك پاس كوئى رسول ايساتهم ك كر آيا جو ان كى نفسانى خوابشوں كے خلاف تھا" تو انسول في (رسوس كے) ايك كروہ كو جمثا إلور ايك كروہ كو تمثل كرويا - (المائدود ٥٠)

اس آیت سے مقصود سے ہتاتا ہے کہ ہنوا سرا کیل اپنی سرکشی اور بٹ دھری کی وجہ سے اللہ سے کیے ہوئے پڑت عمد کو پورا نیم کرتے 'انہوں نے اللہ تعالی سے عمد کیا تھا کہ وہ اللہ کے تمام اٹھام کو سن کر قبول کریں گے 'اور ان تمام ادکام پر عمل کریں کے 'لیکن انہوں نے ان پڑت عبود کو تو ژدیا اور اپنی آراء اور خوابشوں کو ادکام شرعیہ پر مقدم کیا۔ شریعت کاجو تھم ان کی رائے اور خوابش کے موافق ہو آ 'اس پر عمل کرتے اور جو اس کے ظاف ہو آ 'اس کو رد کر دیجے۔ انہوں نے معرت زکریا اور کیئ طیما اسلام اور کی انبیاء علیم السلام کو قبل کیا' اور انہوں نے معنرت عینی علیہ السلام کو بھی قبل کرنے کا منصوبہ بتایا تھا' لیکن اللہ تعالیٰ نے ان کو ذیرہ آسمانے الفالیا۔

الله تعالى كاارشادي: اور انهول في يملن كياك ان كو (اس كي) كوئى مرانس طي اسووه اندها اور بسر ، بعد الله تعالى ك بو كيّ الله في الله في قويد قبول قرمالي عربي ان يم سه مت سه لوك اندها اور بسر ، بو كيّ اور الله ان كه اعل كو خوب و يجين والا ب- (الماكدون)

فننه کے معنی 🖫

فننہ کے کی مطلّ جیں۔ فقصانات اور مصائب کو بھی فننہ کتے ہیں اور اللہ قبالی بدا تدائیوں کی جو مزادیتا ہے اس کو بھی فننہ کتے ہیں۔ گئتے ہیں اور اس آیت ہیں معنی مراوی اور اللہ کے نیک بندوں کو جس آزمائش ہیں ڈالاجا آئے اس کو بھی فننہ کہتے ہیں۔ اس فننہ کی وجہ سے نیک لوگوں کے درجات بلند ہوتے ہیں۔ قرآن مجید نے باروت اور ماروت کو بھی فننہ قربایا ہے "کیونکہ ان کی وجہ سے لوگ آزمائش ہیں جنال ہو گئے تھے اور نیما ہوتیج سے دجال کو فننہ قربایا ہے۔

اس آیت کامعنی یہ ہے کہ بنواسرائیل کا گملن یہ تھاکہ انہوں نے انہیاء علیم السلام کے ساتھ ہو ناروا سلوک کیا ہے اس کی دنیا جس ان کو کوئی سزانمیں لے گی اور اس وجہ ہے ان پر مصائب طاری نہیں ہوں کے اور وہ سمجھتے تھے کہ آخرے جس بھی ان کو عذاب ہے نجات ہو جائے گی کیونکہ وہ اللہ کے بیٹے اور محبوب ہیں اور اگر ان کو عذاب ہوا تو صرف چند دن عذاب ہوگا' جتنے دن انہوں نے بچنزے کی پرسٹش کی تھی۔

بنواسرائیل گاہدایت سے دوبار اند صااور بسراہونا

اس آعت میں بنوا مرائیل کے متعلق دو مرتبہ فرملیا ہے کہ وہ آندھے اور بسرے ہو گئے اس کا معنی یہ ہے کہ انہوں نے وکچہ کر ہدایت حاصل کی اس کی بدا تمالیوں کی وجہ سے ان پر قبط مسلط ہو گیا اور ان پر دیا تمیں طار ک کی تمکی انہوں کی وجہ سے ان پر قبط مسلط ہو گیا اور ان پر دیا تمیں طار ک کی تمکی انہوں نے اس سے کوئی تفیحت حاصل نہیں گی۔ پھر ان کے دلوں میں ایک دو سرے کے خلاف صد اور بغض پیدا کر دیا گیا وہ ایک دو سرے کے خلاف لڑتے اور ایک دو سرے کو قتل کرتے "لیکن انہوں نے اس سے بھی کوئی عبرت حاصل نہیں گی۔

بنو اسرائیل ہدائت کو حاصل کرنے ہے دو مرتبہ اندھے اور بسرے ہوئے۔ ایک مرتبہ حضرت زکریا معنزت کی اور حضرت نعین علیہ السلام کے ذمانہ میں 'مجراللہ تعالی نے ان کی توبہ قبول فرمائی 'اور ان میں سے بعض کو ایمان الانے کی توبیق دی۔ ان میں سے بعض کو ایمان الانے کی توبیق دی۔ ان میں سے بھر بہت ہے ذمانہ میں انہوں نے آپ کی نبوت اور رسمالت کا ان میں سے بھر بہت ہے ذمانہ میں انہوں نے آپ کی نبوت اور رسمالت کا انکار کیا اور کم لوگ ایمان لائے 'جیسے حضرت عبداللہ بن ملام برہینے۔

اس تنیت کادوسرا محمل میہ ہے کہ پہلی بار میہ اندھے اور بسرے اس وقت ہوئے بب انہوں نے پھڑے کی پر سنش کی پھر انہوں نے تو یہ کی اور انڈ نے ان کی تو یہ قبول کرلی پھردوبار دیہ اندھے اور بسرے ہو گئے۔ جب انہوں نے سر کشی اور بٹ وھری کی اور یہ کمانکہ ہم اس وقت تک ایمان نہیں لانمیں تے جب تک کہ اللہ تعالی کو تھلم کھلاد کچے نہ لیں۔

اور اس کا تیمرا محمل ہے ہے کہ جب ان کے پاس معترت داؤد اور معترت سلیمان علیماا سلام جیسجے سے توبیہ ہوایت ماصل کرنے ہے اندھے اور بسرے ہو محے 'پھرائٹہ تعالی نے ان کی توبہ قبول کرل اور اس کے بعد پھر یہ اندھے اور بسرے ہو گئے۔

 یے دونوں تاریخی مادی جو بنواسرائل کی برامحالیوں کی پاداش میں رونماہو کے تھے 'ان کی طرف قر آن جید کی حسب ذیل آیات میں اشار و کیا گیا ہے:

> وَ مُعَيْدُونَ فِي الْرُصِ مَرَّنَيْنَ وَ لَنَعْلَقَ عُلُوا لَنْعَيْدُونَ فِي الْرُصِ مَرَّنَيْنَ وَ لَنَعْلَقَ عُلُوا عَيْدُونَ فَيْ الْرُصِ مَرَّنَيْنَ وَ لَيْعَلَقَ عُلُوا عِبَادًا لَٰ الْولِي بَالِينَ ضَوِيْهِ فَحَاسُوا حِلْلَ الْكِرَةَ عَلَيْهِمْ وَالْمَدُونَ عُرِيلًا الْمُؤَلِّ وَحُولَا لَكُمْ الْكِرَةَ عَلَيْهِمْ وَالْمَدُونَ كُمْ بِالْمُوالِ وَبَيْنَ وَ الْكِرَةَ عَلَيْهِمْ وَالْمَدُونَ كُمْ بِالْمُوالِ وَبَيْنَ وَ الْكُرَةَ عَلَيْهِمْ وَالْمَدُونَ كُمْ بِالْمُوالِ وَبَيْنِيلًا وَ الْكُرَةَ عَلَيْهِمْ وَالْمَدُونَ لِيَسْلَوْهُوا وَحُولَا مُنْ الْمُسْتِعِيلًا الْمُحْمِولُوا الْمُسْتِحِدُ كُمّا وَكُولُوا وَحُولَا مَرَّوَ وَ لِيُسْتَنِّرُوا مَا عَلُوا نَشِيمُونَ وَلِي السَّائِمُ وَلَوْ مَرَّوَقًا الْمُحْمِولُولُ مَنْ عَلَوْا نَشِيمُونَ وَلَيْ عَلَيْهِ وَمُولَا عَلَيْهِ الْمُعْلِيلُولُ اللّهِ اللّهِ الْمُعْلِيلُولُ اللّهِ اللّهِ اللّهُ اللّهِ اللّهُ اللّهِ اللّهُ الللللّهُ اللللّهُ ا

بم تے بنوا سرائل کو کتاب میں قطعی طور یہ بناویا تماک تم ضرور زین جی دو عرتبه فساد کرد مے اور تم شرور بست بری سر تحتی کرو کے O تو جب ان میں ہے پہلے وید و کاو تت آپنچا تو ہم نے تم پر اپنے سخت جنگیج بندے مسلط کر دیئے سووہ تمہاری تلاش کے لیے شرول میں مجیل محتے اور یہ ایساوید و تھا ہو ضرور الوراجونا تعال مجريم في ان يرتمهار اغلبه ووبار واوتاديا "اور مال اور جنوب کے ساتھ تمہاری مدو فرمائی اور تمہاری توراو برماوی اگر تم تے لیک کام کے تو تم نے اپن جانوں کے ساتھ بھلائی کا در اگر تم نے برے کام کے واپ ساتھ برائل کی کم جب دو سرے وہرہ کا وقت آ پھیاتو ہم فے دو سرے ظالموں کو تم یر مسلط کردیا " آ کہ دو تسارے چروں کو معمل کر دیں اور مسجد میں داخل ہوں جیسا کہ پہلی بار اس میں داخل موے تھے اور جس چزر ظیریا کی اے تادو بریاد کردیں 0 منظریب تصاد ارب تم بر رحم فرمائے گااور اگر تم نے پھر سر تھی کی تو یم چریز اب ویں کے اور ہم تے دوزخ کو کافروں کے لے تبر فانہ بنادیا ہے۔

ان آیات کی تغییر می بعض علماء نے بیان کیا ہے کہ اللہ تعنل نے نورات میں لکھ دیا تھا کہ بنوا سرا کیل دو ہار شرارت کریں کے۔اس کی سزا میں دشمن ان کے ملک پر غالب ہو جا کیں گے۔ پہلے دیدہ سے مراد بخت نصر کا حملہ ہے جو ولادت مسیح ہے ۵۸۸ سال عمل ہوا' اور دو سمرے ویدہ سے قیملس (لیملوس) روی کا حملہ ہے 'جو ۱۲ء میں ہوا۔ ان دونوں حملوں میں یہود ہوں پر محمل مہاتی آئی اور مقدس بیکل کو بر ہو کر دیا گیا۔

چونکہ میں وہ ہوں نے یہ گمان کیا تھا کہ انہوں نے رسولوں کی جو تکفیب کی ہے اور ان کو تھی کیا ہے 'ان کو اس کی کوئی سزا انہیں سلے گی 'قواللہ نے ان کے اس گمان کا رد کرنے کے لیے فرایا کہ انہوں نے دوبار سرکشی کی اور جرباز اللہ نے ان کو ان کی سرکشی کی سزا دی 'جس سے تمام میں وی ویر ان اور بریاد ہو گئے اور جرسزا کے بعد انہوں نے توبہ کی اور توبہ کے بعد وہ پھر انہوں نے توبہ کی اور توبہ کے بعد وہ پھر انہوں بھرے ہوگئے۔ سواب آگر انہوں نے بھارے رسول سیدنا محد بر بہر کی محد دیں اور آپ کو قتل کرنے کی سمی کی تو بد دنیا اور آخرت میں اللہ تعلق کی سزا سے نہیں گئے کیس سے اور ایساسی ہوا' انہوں نے آپ کی محد دیا ہور وہار آپ کو سے تو باور ایساسی ہوا' انہوں نے آپ کی محد دیا اور وہار آپ کو گئی کی اور دوبار آخرت میں گئی سے اور ایساسی ہوا' انہوں جلاوطن کیا گیا گور دنیا اور آخرت میں ان مردی گئی۔ ان سے کو اللہ نے ان کے شرے محفوظ رکھا اور ان کو قتل کیا گیا اور جلاوطن کیا گیا گور دنیا اور آخرت میں ان مردی گئی۔

القد تعلق كاارشاد ي: بشك وه لوك كافر موصح جنون في كما يقية منع ابن مريم ى الله به ملائك منع في كما

تھا؛ اے بی امرا تیل! اللہ کی عبادت کروجو میرا اور تمہارا رہ ہے ' ہے شک جس نے اللہ کے ساتھ شرک کیا تو اللہ نے اس بے جنت حرام كردى ہے اور اس كا تعكانا ووزخ ہے اور ظالموں كاكوئي مدد كار تسيس ہے اللائدہ: ١٤) عیمائیوں کے عقیدہ تتلبث کارد

بیر آیت ان عیسائیوں کے متعلق نازل ہوئی ہے جو معترت مسیح علیہ اسلام اور ان کی والدہ کو غدا کہتے تھے 'اور امتہ تعالیٰ کو تمن من کا تمیرا قرار دیتے تھے۔

اس سے پہلی تیات میں اللہ تعالی نے یمودیوں کی بدا تمالیوں کابیان قربایا اور ان کے شمات کا ابطال کیا اور اس آیت سے الله تعالى نے نصاريٰ كارد شروع كيات اور حفرت ميح عليه السلام كے متعلق جو ان كاالوميت كاعقيده تھا"اس كو باطل كيا ہے " اور خود حضرت مسيح عليه السلام كے قول سے ان كار دكيا ہے اور يدان مے خلاف مجت قاطعه ہے۔

نساری میں ہے ایک فرقد ایفتوب ہے جس کا یہ مقیدہ ہے کہ مسیح ابن مرم ی اللہ ہے ، وہ کہتے ہیں کہ اللہ تمن اقالیم (اصلوں) ے مرکب ہے۔ باب بیااور روح انقدی۔ باپ اللہ ہے اور بینا سیح ہے اور باپ (اللہ) بینے (سیح) میں طوں کرکے ا بھے ساتھ متحد ہو گیا' اور وہ روح اتقدی بن گیااور ان میں ہے ہرا یک دو سرے کا مین ہے اور الحے اس تول کا ظلامہ یہ ہے کہ مسح بى الله ب والا تكه معرت مينى عليه السلام في بدا موت بى جو كله سب سے يسلے كما وويد تما "من الله كابنده مون"-

المسج نے کیا) ہے ٹک میں انتہ کا بندہ ہوں' اس نے کھے نَبِيُّا ٥ وَ مَعَلَيتي مُبَارَكًا أَيْلَ مَا كُنْتُ وَ كَاسِه ري اور مح أي عادا ٥ اور على جال بحي يول الح يركت والابتايا اورجب تك بن زنده بول مجهد نماز اور زكزة

قَالَ إِنَّ عَسُدُ اللَّوانَّينَ الْكِنَّابُ وَحَعَلَينَ أَوْصَابِي بِالصَّلْوَةِ وَالرَّكُووْمَا دُمُّتُ حَبَّا٥

(مريس: ۳۰-۳۱)

اور اس آیت میں معفرت مسیح کایہ توں نقل فرمایا اے ہوا سرا کیل اللہ کی عمادت کردجو میرادر تسارا رہ ہے ' ب شک جس نے اللہ کے ساتھ شرک کیا 'تواللہ ہے اس پر جنت حرام کردی ہے اور اس کا ٹھکانادوز نے ہے۔

مث وہ وک کافر ہر کتے جہول نے کی وائٹر اخترین میں سے تعمارے ، حالانہ سوا ایک معرد کے

وداحل وران لم ينتهوا عتايقولون

دئی مستق مبادمنت بنبی اور اگروہ اسنے ان اوّال سے یاز نہ آئے تو ان پی سے جن اوّرل نے کغ کج

لعروا ومنهم عداب البيوسا فلا يتوبون إلى اللووي

وہ انتر سے توب کیوں نہیں کرتے اور اس سے نبشن کیون ہم ال كو نمايت دروناك مزاب مزود يهيني كا

وَاللَّهُ عَقُورُ مَا حِيْدُ ﴿ مَا الْمُسِيحُ ابْنُ مَرْبِحَ إِلَّا رَسُولُ *

بمِ تِيَ مالا كُو التُدبيت بِخَشْنَهُ والانبايت مرا لَ بِينَ مِنْ ابْن مرم مرث ابك ديول بِي ، ان سبع ببيلے ببيت

هيان القر ان

ده دروں کیانا کیاتے ہے اور ال ک مال ببت میں ہیں نس طرح وضاحت سے ان کے میے دلائل بان کرنے یں جرو یکھیے وہ کسی اوندمی بایس کریے ہیں آپ کیے ک اللہ کم چیوٹر کر ان کی میا دمت کر ہے ہوج تمہائے سیے کی تقصان اور نفع کے مالک ہیں ہیں ادرات خے والا ہے 0 آپ کیے! اے اہل گآب: تم لینے دہن یں ناحق زیادتی مرواور ان وگوں کی نفسانی فرامیٹوں کی چیردی مذکرہ جر پہنے سے گراہ ہو چکے ایل اور اعفوں سے بہت تریادہ وگوں كر كراه ك اور وه خود را وراست بينك چكه ين 0 الله تعالى كاارشادى: ب شك دولوك كافر موسكة جنون في كما باشد نش من س تيراب مالانك سوائ ایک معرد کے کوئی مستحق مباوت نہیں اور اگر وہ اپنے ان اقوال سے بازند آئے تو ان یس سے جن او کول نے کفر کیا ہے ان کو نمایت در دناک عذاب صرور منع کار (المائدون ۱۵۳) متقدمين اور متا خرين عيسائيون كالظربية تتنبيث اور اس كار و

قديم بيساني يه كيت من كم الله مريم اور ميني تمن فدايس اور قرآن جيد في الحي لوكون كاردكياب-الله تعالى فرما آب:

اور جب اخد فرائے گا اے مین این مریم اکیا تم لے او کوں ہے ہے کما تھا کہ انتہ کے مواجعے اور میری ماں کورو خداینا الواده عرض كري كوياك بالميرك الياس كار تمي ك من الى بات كون جس كالجم حق تس-

وَإِذْ فَالَ اللَّهُ يَهِينُكَى ابْنَ مَرْبَتُمَ وَانْتَ فُلْكَ مِذُونِينَ وَأُمِّنِي اِلْهَبْنِ مِنْ دُوُلُوالِلَّهِ فَالْ سُبُحْمَكُ مَا يَكُونُ لِكُي آنَ اقْبُولُ مَا لَبُسُ لِيُرِحَقّ (المائدة))

اور مناخرین عیسائی یہ کہتے ہیں کہ جو ہرواحد تمن اقائم (املیں) ہیں۔ باپ میٹااور روح القدس موریہ نیوں ایک خدا ہیں جے سورج تین چیزوں پر مشتمل ہے۔ قرص شعاع اور حرارت۔ اور باب سے ان کی مراد ہے ذات اور بیٹے سے مراد ہے گلمہ ' اور روح سے مراد ہے حیات۔ وہ کہتے ہیں کہ کلہ اللہ کا کلام ہے جو حضرت میسی کے جم میں معضلط ہو کیا جسے بانی شراب میں

میان القر کن

مخلوط ہو جاتا ہے' پاپانی دودہ میں مخلوط ہو جاتا ہے' لور این کا زعم ہے کہ بلپ فدا ہے' بیٹا فدا ہے اور روح فدا ہے۔ بیسائیوں کا یہ قول بدمی انبطان ہے' کیونکہ تین ایک نہیں ہو تا اور ایک تین نہیں ہوتا' نور بیسائیوں کے اس قوں ہے زیادہ قاسمداور باطل قول دنیا میں اور کوئی نہیں ہے۔

الله تعالى كاارشاوي: ووالله من قبركول نيم كرت اوراس مع بخش كون نيم طلب كرت مالاتكه الله بهت بخشف والانهايت مهان من والما كد عن)

یہ اللہ تعلق کا انتہائی کرم ہے اور اس کامیے مد فلف اور احمان ہے کہ عیمائیوں کے اس کذب اور النزاء اور ان کے شرک کے باوجود ان کو توبہ اور استنفار کی وعوت وے رہاہے۔

حضرت عیسی علیہ السلام کے خدانہ ہونے پر دلائل

حطرت غینی علیہ انسلام ان رسولوں کی مِنس میں ہے ایک رسول ہیں جو ان ہے پہلے گزر کے ہیں 'جس طرح حضرت فیسیٰی علیہ انسلام نے مجرات ہیں گئے۔ اس طرح ان رسولوں نے بھی مجرات ہیں کے تھے 'اگر حضرت فیسیٰی نے باور زاوا ندھے بھٹا کیے 'کو ڈھیوں کو شفاد کی اور مردوں کو ذندہ کیا' تو معترت مو کی علیہ انسلام نے لا تھی کو ذیرہ کیااور اس کو دوڑ آبواا ژدھا بناویا ' اور سمندر کو چرکر اس میں بارہ راسے بناویے اور لا تھی کو ذیرن پر باراتواس ہے جسٹے الیان کے اور اگر حضرت میسیٰ بغیر مرد کے پیرا ہوئے ہیں تو حضرت آدم علیہ انسلام ممواور مورت دولوں کے بغیر پردا ہوئے' جب دو سرے انبیاء مجرود کھانے سے خدا نہیں ہوئے ہیں؟

اس آیت میں فرمایا ہے کہ حضرت بھیٹی اور ان کی مال دونوں کھاٹا کھاتے تے "اس سے مقعود حضرت بھیٹی اور ان کی ہال کے متعلق بیسائیوں کے اس دعویٰ کو باطل کرتاہے کہ وہ دونوں ضدا ہیں 'اور اس کی حسب زبل وجوہ ہیں:

ا۔ ہروہ مخض جس کی ماں ہو' وہ مادٹ ہو تا ہے' مینی وہ پہلے موجود نسیں تھا' اس کے بعد موجود ہوا اور جس مخض کی ہیے صفیعت ہو'' وہ مخلوق ہے خالق نہیں۔

۲- حضرت میلی اور ان کی مل دونوں کملنا کھاتے تھے اور جو مخص اپنی نشود نما اور بیتا میں کھانے کا مختاج ہو 'وو مخلوق ہے خد ا نبیں ہے۔

۳۰ اگر معترت بھیٹی اور ان کی مال خدا ہوتے تو وہ علق اور ایجاد پر قادر ہوتے اور جب وہ علق اور ایجاد پر قادر ہوتے تو کھانے کے بغیر بھوک کی تکلیف کو مثانے پر قادر ہوتے اور جب وہ ایسانہ کر سکے تو معلوم ہواکہ وہ خدا نہیں ہیں۔ موجودہ بائمل میں معترت عینی علیہ السلام کام را شجمہ نسب لکھا ہوا ہے۔

یہوع مسے این داؤد این ابراهام کانب نامہ: ابراهام ہے اضحاق پر ابوا اور اضحاق ہے بیقوب پر ابوا اور لیتوب ہے یموداو اور اس کے بھائی پر ابوسے (الی قولہ) اور لیقوب ہے بوسف پر ابوا' یہ اس مریم کاشو ہر تھاجس ہے یہ وع بر ابوۓ' جو مسے کھلا آ ہے۔

من سب بشتیں ابراهام ے داؤد تک چوده بشتیں ہو کمی اور داؤدے لے کر گرفار ہو کرباتل جائے تک چودہ بشتیں

اور گرفآرہ و کربائل جانے سے لیکر سے تک چودہ ہشتہ ہو کی۔ (سی کا انجیل باب) آیت عاما اطحامی مطبوعہ لاہور)

اب یسوع کی پیدائش اس طرح ہوئی کہ جب اس کی ہاں مریم کی مطبی یوسف کے ساتھ ہوگی او ان کے انتھے ہوئے سے
پہلے وہ روح القدس کی تدرت سے حالمہ پائی گئی کی اس کے شوہر یوسف نے جو راستیاز تھا اور اسے بدیام کرنا نسیں جاہتا تھا اسے چیکے سے پھو اُدیے کا ارادہ کیا۔ وہ ان باق کو سوج ہی رہا تھا کہ خداد ند کے فرشتہ نے اسے فواب میں دکھائی دے کر کما ا اسے پیکے سے پھو اُدیے کا ارادہ کیا۔ وہ ان باق کو سوج ہی رہا تھا کہ خداد ند کو فرشتہ نے اسے فواب میں دکھائی دے کر کما ا اسے یوسف این داؤدا اپنی بیوی مریم کو اپنے ہاں لے آنے سے نہ ڈر۔ کیو تک جو اس کے بیٹ میں ہے وہ روح القدس کی قدرت سے ہے۔ اس کے بیٹ میں ہے وہ روح القدس کی قدرت سے ہے۔ اس کے بیٹ میں سے نوار تو اس کا ہم بیوع رکھنا کیو تک وہ اس کے بیٹ میں سے نوار دو اس کے بیٹ میں سے نوار دور کیا تھی کو نوار دو اس کے بیٹ میں سے نوار دو اس کو بیٹ ہو اس کے بیٹ میں سے نوار میں کو نوار دو اس کرنا کی کو نوار دو رہ کھوں کو اس کے کہ نوار دو اس کے بیٹ میں میں میں میں کو بی نوار دو اس کو بی میں کو بی کو بی

(متى كى الجيل إب إن تعت ٢٦-١٨ من مغرور لامور)

غور کیجناجی فض کانورا شجرہ نسب موجود ہے جو اپنی مل مریم کے پیید سے پیدا ہوا پیدا ہونے سے پہلے موجود نہیں تھا دوائی پیدائش سے پہلے موجود سارے جہان کا خالق کیسے ہو سکتا ہے؟ اور اس کو خدائی اور استحقاق عبادت کب زیباہے؟ قرآن مجید نے حضرت عینی علیہ السلام سے کھلنے پینے کاڈکر کرکے یہ استدلال کیا ہے کہ اگر وہ خدا ہوئے تو کھائے پینے کے محکاج نہ ہوستے۔ ان کے کھانے پینے کاڈکر موجودہ یا کیل جس بھی ہے۔

دہ یہ باتش کری دہ ہے کہ بیوع آپان کے بچ آ کھڑا ہوا اور ان ہے کہا، تمہاری ملامتی ہو 6 گرانہوں نے گھرا کراور فوف کھا کریے سمجھا کہ کمی روح کو دیکھتے ہیں اس نے ان ہے کہا، تم کیوں گھراتے ہو ؟اور کس واسطے تمہارے ول ہیں شک پریا ہوتے ہیں؟ میرے ہاتھ اور میرے ہاؤں دیکھو کہ جس ہوں 'جھے چھو کر دیکھو کے تکہ روح کے گوشے اور ہڑی نسیں ہوتی 'جیسا مجھ ہیں دیکھتے ہوں اور یہ کہ اس نے انہیں اپنے ہاتھ اور پاؤں دیکھائے 0 جب بارے فوشی کے ان کو بھین نہ آیا اور تجب کرتے ہو آس نے ان سے کما یہاں تمہارے ہاں کے ان کو بھیلی کا گلا دیا 10 اس نے لے کر ان کے روبرو کھایا۔ (او قاکی انجیل 'باب ہو۔ آیے سے سام ان کو ہے 0 انہوں نے اے بھی ہوئی چھلی کا گلا دیا 10 اس نے لے کر ان کے روبرو کھایا۔ (او قاکی انجیل 'باب ہو۔ آیے سے سے میں انہوں)

انجیل کے اس اقتباس میں حضرت میسیٰ علیہ السلام لوگوں کو یقین ولا رہے ہیں کہ وہ گوشت ہوست اور بڑیوں ہے ہے
ہوست انسان ہیں' روح نہیں ہیں اور وہ کھاتے بھی ہیں۔ حضرت میسیٰ علیہ السلام نے یقین ولایا ہے کہ وہ مادی انسان ہیں' روح
نیس اور مادہ سے بحرد نہیں ہیں' تو پھروہ خدا کیو تکر ہو سکتے ہیں؟ نیز البیل میں ہے اور جب میج کو پھر شرکو جارہا تھا' اسے بھوک کی

(معی کا الجیل 'باب الا' آ سے ۱۳۵ مطبور الا 19 ور)

اس آبت ہے معلوم ہواک معفرت میسی علیہ السلام کو بھوک تلق تھی اور وہ کھانے پینے کے محاج ہے اور جو کسی چیز کا بھی مختلج ہوا وہ خدا تعمیں ہو سکتا۔

موجودہ بائیل کے مطاعد سے بھی یہ معلوم ہو آئے کہ حضرت سیج انہاں تھے الل کے پیٹ سے پیدا ہوئے ان کا جم انہاؤں کی طرح کوشت ہوست اور بذہوں سے بنا ہوا تھا۔ ان میں تمام انہائی صفات تھیں 'ونیس بھوک گئی تھی 'وہ کھاتے پینے بھی سے 'سوتے باکتے بھی تھے 'انہیں ور دسے تکلیف بھی ہوتی تھی 'کے تکہ انجیل میں ذکور ہے اور تیمرے پسرکے قریب یہ وع سے بڑی آواز سے چاکر کھا ابلی ابلی ایسا سیسفتنسی لینی اے میرے فدا ااے میرے فدا او نے جھے کوں چھوڑ دیا سے بڑی آواز سے چاکر کھا ابلی ابلی ایسا سیسفتنسی لینی اے میرے فدا ااے میرے فدا او نے جھے کوں چھوڑ دیا (تی باب ۱۲ آ بت ۲۲ میں ۱۳ میں اب ایسا میں کہ متعلق کوئی صاحب عشل انہان یہ کمہ ملک ہے کہ ایما محض فدا ہے 'تمام جمان کا بیداکر نے والا ہے ' با کمل کے حصلی حضرت میسی کو میوویوں نے پھائی پر افکا دیا اور تھی دن تک وہ مردہ رہ 'اسکے بعد جمان کا بیداکر نے والا ہے ' با کمل کے حصلی حضرت میسی کو میوویوں نے پھائی پر افکا دیا اور تھی دن تک وہ مردہ رہ 'اسکے بعد جمان کا بیداکر نے والا ہے ' با کمل کے حصلی حضرت میسی کو میوویوں نے بھائی پر افکا دیا اور تھی دن تک وہ مردہ رہ 'اسکے بعد جمان کا بیداکر نے والا ہے ' با کمل کے حصلی حضورت میسی کو میوویوں نے بھائی پر افکا دیا اور تھی دن جمان کا بیداکر کے والا ہو کہ کہ اس کے حصلی حصلی میں وہ در ب 'والے بھی بھی دی گئی دی ؟ انجیل میں ہے:

جُيانُ القر اُنُ

یاد کرد جب وہ مکیل میں تھا تو ہی نے تم ہے کما تھا ضرور ہے، کہ ابن آدم گنگاروں کے باتھ میں حوالہ کیا جائے اور مصلوب ہواور تمیرے دن جی اٹھے۔(نو قائی انجیل کیب ۲۴ آیت ۸-۷ مصرف

اس اقتبال میں یہ تصریح بھی ہے کہ حضرت عینی طب السلام نے اپنے آپ کو این آدم فرملیا تھا'ند کر این اللہ اسوان کے متعلق الوہیت کاعقیدہ رکھنالور ان کو خدایا خدا کابیا کمناان پر افتراء اور بستان ہے اور اس مغمون کی آیات خود ساخت اور من کمڑت ہیں' جو بعد کے عیسائی مستقین نے وضع کر کے اللہ کے اصل کلام میں طاوی ہیں' یہ بات امھی طرح وہن نشین کرنی چاہیے کہ موجودہ انجیل میں پچھ عبارات تو وہ ہیں جو دراصل اللہ کا کلام ہیں۔ ہم نے سورہ آل عمران کی ابتداء میں ان کی مثالیس دى بين اور قرآن مجيدان بى كامعدق ہے اور دو سرى عبارات وہ بين جو عيسائي مصنفين نے به طور خور لكمي بين-

حضرت مریم کے نبیعاتہ ہونے پر دلا تل

اس آیت میں سے بھی فرمایا ہے اور ان کی مال بہت تھی ہیں ان کو صدیقہ اس لیے فرمایا کہ وہ گناہوں ہے بہت پاک تھیں اور الله كي مباوت كرنے كى بهت جدوجه ركم في تعين اور انهوں نے الله تعالى كى تمام آيات كى تقديق كى۔

من این جزم موروں کی نبوت کے قائل ہیں۔ وہ حضرت سارہ محضرت موئ کی بل اور حضرت میسیٰ کی بال سیدہ مریم کو بيد انتے بي كونك قرآن مجيد مي ان كى طرف وى كرنے كى نسبت كى كئى ہے۔ جمور علاء اسلام كے زويك يدوى بدمعنى المام ب اور تي صرف مرو يوت ين- قرآن مجيدين ب

وَ مَنَا ٱرْسَلْمَنَا مِنْ قَسُلِكَ اللَّهِ حَالًا تَوْجِيجَ البيهم يشراهل الفرى (يوسف ١٠٩٠)

تم لے آپ سے پہلے موائے مردوں کے کسی کور مول بناکر نسی ہیجا' جن کی طرف ہم بستیوں کے رہنے والوں ہے وحی .225

الله تعلل كاارشاد ہے: آپ كئے جمياتم اللہ كو چھوڑ كران كى عبادت كر دے ہو جو تمهادے ليے كمي نفح اور نقصان ك الك تهين بن اور الله عن سب يكه من والاسب يكه جائد والاسب- الماكدوناك)

بھنرت عینی علیہ السلام کی عبادت کزاری ہے ان کے خدانہ ہونے پر استدلال اس آیت میں صرت مسے علیہ السلام کے خدانہ ہونے پر ایک اور دلیل قائم کی ہے اور وہ یہ ہے کہ حضرت میسی علیہ السلام ذاتی طور پر حمی کو نفع اور نقصان نمیں پہنچا سکتے تھے۔ انسوں نے جو پرندے بنا کر اڑائے ' جن مردوں کو زندہ کیا' جن کو ڑھیوں کو شفا دی اور جن ماور زاد اندھوں کو جناکیا کیہ مب کلم انہوں نے اللہ کی دی ہوئی تدرت ہے کیے۔ وہ اٹی ذاتی طانت اور قدرت ہے سمی کو نفع یا نفصان پنجانے ہر قاور نہیں تھے۔ موجودہ بائیل میں بہت جگد لکھا ہوا ہے کہ حضرت میسی علیہ السلام خداے دعاکرتے تنے 'آگر وہ خود خدا نتے اور نفع اور نفصان پنچانے کے مالک تنے توان کو خداے دعاکرنے کی کیا ضرورت تھی؟ بھران باتوں کے کوئی آٹھ روز بعد ایسا ہواکہ وہ پھرس اور بوحنالور بیقوب کو ہمراہ لے کرمپاڑ پر دعاکر نے کیا[،] جب وہ دعاکر

ر ہاتھا تو ایسا ہوا کہ اس کے چرو کی صورت بدل گی اور اس کی ہے شاک سفید براق ہو گئے۔

(لو قاكي النجيل "باب أ" آيت ٢٨-٢٨ من ٦٣ "مطبوعه لا بور)

اور ان دنوں میں ایساہواکہ وہ مہاڑیہ دعاکرنے کو نکلااور خدا ہے دعاکرنے میں ساری رات گزار دی۔

(لوقاكي الجيل "باب" أيت العم ٥٨ مطبوعه لاجور)

پھراپیا ہوا کہ وہ کمی جگہ دعاکر رہاتھا' جب کرچکاتواں کے شاگر دوں میں سے ایک نے اس سے کھا! اے قد او ندا جیسا یو منا

تبيان القر أن

نے اپ شاگر دول کو وعاکر ہے مکھلیا تو بھی جمیں سکھا۔ اس نے ان سے کہا، جب تم دعاکر دنو کو اے باب جیرا نام پاک انا جائے' تیری بادشان آئے' ہماری روز کی روٹی جمیں ہر روز دیا کرن اور ہمارے گناہ معاف کر' کیونکہ ہم بھی اپنے ہر قرضد ار کو معاف کرنے ہیں اور جمیں آزمائش میں نہ لا۔ (اوقاکی انجیل' باب، آیت ۱۰۴ می ۱۵۰ معلومہ لاہور)

حضرت عیلی علیہ السلام کا سازی سازی رات دعائریا ' بہ کشرت دعائریا اور اپنے ہیردوں کو بھی اللہ تعالی سے دعائی تعلیم دینا ' اس کو ظاہر کرتا ہے کہ دوا پی ذات ہے لفع اور نشسان کے مالک نسیں تھے ' اور نہ ان کے پیرو کار ان کو ایسا جائے تھے ' اور نہ ان کو خدا بجھتے تھے۔ حضرت عیلی علیہ السلام خدا کی عبادت کرتے تھے ' اور یہ کتے تھے کہ اس کے سواکس کی عبادت جائز نہیں ' بجر البین اے ایک بہت اور نجے بھاڑ پر لے جمیا اور دنیا کی سب سلطنتیں اور ان کی شان و شوکت اسے دکھائی ' اور اس ہے کہا، اگر تو البین اے ایک بہت اور بحدہ کر مجدہ کر مجدہ کر محدہ کر اور صرف ای کی عبادت کر۔ دوں گا۔ بہوع نے اس سے کماؤاے شیطان اوور ہو ' کیو تکہ لکھا ہے کہ تو خدا و ند اور مورد کو جدہ کراور صرف ای کی عبادت کر۔ (منی کی انجیل ' باب سی تاریت کہ مبادے لاہور)

ولس رسول بيوع مسيح ك متعلق كفية بي:

اس نے اپی بشریت کے دانوں میں زور زور ہے پہار کراور آنسو بمابماکر اس سے دعا کیں اور التجا کی کیں جو اس کو موت سے بچاسکا تھا' اور خدا تری کے سیب ہے اس کی تن کئ 'اور بلوجو و بیٹا ہوئے کے اس نے دکھ اٹھا اٹھا کر قرمائیرواری کی۔

(عبرانوں كے عام يولس رسول كا علا الياس م معالي مطبوعه الا معاليوند الا مور)

اس اقتباس سے واضح ہو تا ہے کہ بوٹس رسول کے نزدیک حضرت عینی طیبہ السلام بھت مہاوت گزار ' قرمانبردار اور رو رو کرانڈ سے دعائم کرنے والے تھے 'اور جو تمام جمان کا فدا ہو 'اور اپنی قدرت سے فقع لور تقصان کا مالک ہو ' وہ کسی کی عبادت اور قرمانبرداری کرنے اور ممی ہے رو رو کر دعائم کرنے سے پاک اور منزہ ہو تا ہے۔

نيزيونس رسول ككيعة بين

الاے فداوند يوع ميے كے فدااور باپ كى حمد مو جو رحتوں كابلي اور برطرح كى تىلى كافدا ہے۔

- (كونتهدون كام يوس و سول كادوم الله إب " آعت " اس ١٦٨ مطبوير ما عود)

اس آیت سے واضح ہو آئے کہ پولس رسول کے نزدیک بیوع سیح خدانہ تھے 'بلکہ بیوع مسیح خود خدا کو مانے واسلے تھے۔ ای کی وہ عماوت کرتے تھے۔ وہ حضرت بیسیٰ کا تھے۔ ای کی وہ عماوت کرتے تھے۔ وہ حضرت بیسیٰ کا بولس رسول کااور ہم سب کا خدا ہے۔ اس کو باپ کرنا اور حضرت میسیٰ کو ان کا بڑنا اور خداوند کرنا 'یہ سب بیسائی علماء کی بعد کی تخریف جیس۔ باپ ہونا اور جہنا رکھنا حکوق کی صفات وی جی اور مرف تخریفات جیں۔ باپ ہونا اور جہنا رکھنا حکوق کی صفات جیں 'اولد عز و جل اس سے بلند و برتر ہے 'ہیں کی صفات وی جی جو مرف اس کے شایان شان جی اور حکوق کے حکون نہیں جی وہ عماوت کا مسبحی ہے 'اس کا کوئی شریک اور مثیل نہیں 'وہ وابس الوجود اور قدیم بالذات ہے۔ اس کی ہرصفت مستقل اور غیرہے مستنی ہے 'اور وہ تمام جمانوں کا پالنے والا ہے۔

الله تعالی کا ارشاد ہے: آپ کئے اے الل کاب تم اپ دین میں احق زیادتی نہ کرہ اور ان نوکوں کی نفسانی خواہشوں کی چیروی نہ کرد جو پہلے ہے کمراہ ہو تھے میں اور انہوں نے بحت زیادہ لوگوں کو ممراہ کیا 'اور وہ خود راہ راست ہے بحتک

ھے ہیں۔(المائدہءے) غلوحق اور غلو باطل کی تعریفیں

الله تعالی نے ملے میود کے باطل عقائد بیان کے اور ان کارد کیا پھرنساری کے باطل عقائد بیان کے اور ان کارد قرمایا۔

اب دونوں فریقوں کو خطاب کرے فرمارہا ہے اے الل کاب آتم اسے دین می غلوند کرد غلودد سم کے ہوتے ہیں۔ ایک تن اور
ایک یا خل سے بلو من بیہ ہے کہ کمی سمجے لور حن چیز کے بیان میں مہات کیا جائے ہیں ہے اس کو موکد کرنا مقدود ہو۔ اور غلو باطل
یہ ہے کہ کمی چیز کی تحقیر میں زیادتی کی جائے ۔ ایک چیز کی تعقیم میں زیادتی کی جائے۔ میرد نے انہیاء علیم السام کی شان میں کی
ک من من کہ ان کی طرف زنا کو مفسوب کیا ان کی محقیم ہی اور ان کو قتل کیا اور عیدائیوں نے انہیاء کی تعظیم میں غلو کیا حق کہ معفرت میں علیہ السلام کو فد الور فد اکارینا کہا۔

افلہ تعالی نے ان کے متعلق قرایا: یہ خود بھی محراد میں اور انسوں نے لوگوں کو بھی محراد کیا اور یہ بہت بیزی محرای ہے۔ اس آیت میں اس زمانہ کے افل کمک کو تفاظب کرکے قرالیا ہے: کہ تم استخانباد اور روہان کی چردی نہ کرو کہ ان کو خوا بناؤالو اور تم کو بھی محراد کردیں ہے کہ یہ بھی ہو سکما ہے کہ میمووست میہ قربلیا ہو کہ تم تزرید کی تعظیم میں غلو نہ کرد کرد ان کو خدا بناؤالو اور عیسائیوں سے فربلیا تم میسی کی تعظیم میں غلوت کرد کرد ان کو خدا بناؤالو۔

لعن الذين من كفي والمن يكي السراء يل على لسان د اؤدد

عِيْسَى ابْنِ مُرْبِيمُ وَلِكَ بِمَاعَصُوا وَكَانُو ايعُتَالُونَ ﴿

. کرل کر ابرں نے نافرانی کی اور وہ صرے تھا وز کرتے ہے .

كَانُوالايَتُنَاهُونَ عَنْ مُنْكِرِفَعُلُوهُ لِبِنْسَ مَاكَانُوايِفُعُلُونَ

وہ ایک دورے کوائی برے کام سے جس دولتے ملے افران فیافنا دو کیا برا کا تنا ہو دہ کرتے نے 0

تُرَى كِيْنِيرُ امِنْهُمْ يَتُولِونَ الَّذِينَ كُفَرُوا لَبِيمُسَ مَا قَدَّامَتُ

کے ال میں سے زیادہ ورکن کر دیکیس کے ج کا فود ال سے وکسٹی دیکے بی ، وہ کمیں بری ہے جراحوں نے اپنی

لَهُمُ انْفُسُهُمُ انْ سِخط اللهُ عَلَيْهِمُ وَفِي الْعِدَابِ هُمُ خِلْدُونَ

اوت کے ہے جی ہے کہ انتدان پر تاماض کا احد وہ دائی عزاب یں رہنے والے ہوں کے 0

وَلَوْ كَانُوايُؤُمِنُونَ بِاللَّهِ وَالنَّبِي وَمَا أَثْرِلَ إِلَيْهِ مَا أَثَّوَلُ اللَّهِ مَا أَتَّوَلُ اللّ

الد اگر دہ اللہ پر ایان فاتے اور اس بی پر اصر اس پرج اس بی ک فرت تازل کی تر کا فردل کو دوست

ٲڎڒؽٵٚۼٷڵڵؚؽؙڰؿؽڒٳڡۭڹ۫ۿؙڂ۫ڣڛڠؙۏؙؽ۞ڵؾ۫ڿؚٮڰؘٲۺڰٵڵٵۺ

ریناتے کی ان یم زیرہ تروک عزمان میں ٥ کی بی والان کوماوں کے ماترین

غيان اللر أن

جلدسوم

لايحبالله ٢ عَنَاوَةٌ لِلَّذِينَ امْنُوا الْيَهُودُوالَّذِينَ اشْرَكُوا وَلَتَجِدَ زیاده وتنی ریحت والا یا می سید وه میود ادر مشرکین می . ادر أب بن وكون حان کا سب سے قربیب دوست بانیں سکے ، یہ وہ لوگ بیں جرکھتے بی کر ہم جیسانی ہیں ، کیوں کران

هُ وُقِسِيْسِينَ وَرُهُبَانًا وَانْهُ وَلَا يَسْتَ

ين بين عالم اور رابب ين 00 121

الله تعالی کاارشادے: ہوا سرائل ہیں ہے جنہوں نے کفر کیا اس رواؤ داور میسٹی بن مریم کی زبان ہے نعنت کی گئی ا كونك انهون ف تافر الى كى اوروه مد س تجاوز كرت عن الماكد ١١١) بلیغ نہ کرنے کی وجہ ہے ہنوا مرائیل پر لعنت کابیان

الم اوجعفر محدين جرم طبري متوفى ١٠٠٥ ورايت كرية بين:

حطرت ابن میاس دمنی الله عنماتے اس آیت کی تغییر می فرایا: بنو اسرائیل پر برزیان میں لعنت کی گئے۔ حضرت موی علیہ اسلام کے معد میں ان پر تورات میں لعنت کی گئی ، حصرت داؤد علیہ السلام کے حمد میں ان پر زبور میں لعنت کی حمی اور سیدنا می مدید کے مدین ان پر قرآن میدی احنت کی تی۔(مائع البیان جرا، ص ۱۳۱)

حضرت عبداللہ بن مسعود رضى الله عند ميان كرتے بين كه رسول الله معيد الله بازوا مرائيل بين عند كوتى عنص جب ا ہے کمی بھائی کو گناہ کرتے ہوئے ریکتا تو اس کو بختی ہے منع کرتا کورود سرے دن جب اس کو گناہ کرتے ہوئے ریکتا تو اس کو منع ند كر آاوراس كے ساتھ مل جل كر رہتااور كھا آ ہجا جب انہوں نے اس طرح كياتو الله تعالى نے ان لوگوں كے دل ايك دو سرے کی طرح کردیئے اور ان کے نبی معترت واؤد اور معترت میٹی بن مریم کی زبانوں ہے ان پر نعنت کی۔ پھر آپ نے فرمایا اس ذات ک حم جس کے بند وقدرت میں میری جان ہا تم ضور نکل کا تھم دیتے رہنا اور برائی سے روکتے رہنا اور ضور برائی کرنے والے کے باتھوں کو پکڑلیت اور اس کو حق پر عمل کرنے کے لیے مجبور کردیتا ورند اللہ تممارے داوں کو ایک دو سرے کی طرح کر دے گادر تم پر بھی ای طرح نعت کرے گاجی طرح ان پر لعنت کی ہے۔

(جامع البيان "جزا" من ٣٢٤-٣٢٤ مند الإيعلى "ج٨"ر قم الحديث ٥٠٢٥ مند احد "جا من ١٦٩ طبع قديم) المائدة علاكي تغييري بم في اس مديث كي زياده حزيج كي اوراس كوسنن ترغدي سنن ايوداؤد منن ابن ماجد اور المعم الادساك والول عديان كياب-

ابن زیداس آیت کی تغییر می بیان کرتے ہیں کہ بنوامرائیل پر انجیل اور زیور میں اعنت کی مئی ہے مول اللہ منظیم نے فرایا ایمان کی چکی محوم ری ہے۔ جس طرف قرآن پھرے 'تم اس طرف پھرجاؤ۔ جن چیزوں کو فرض کرنا تھا اللہ تعالی ان سے فارغ برچاہے۔ بے تک بنوا مرائل میں سے ایک کردہ نیک اوگوں کا تھا دہ نیل کا تھم دیتے تھے اور برائی سے روکتے تھے ان كى قوم نے ان كو يك كر آروں سے چيرويا اور ان كوسولى ير افكاديا۔ ان ش سے يكي لوگ باتى يج جن كو باد شاہوں كے پاس جانے

طيان القر أن

نور ان کی مجالس میں بیٹے بغیر قرار نہیں آیا مجران کے ساتھ کھانے میں شریک ہوئے بغیران کو چین نہیں آیا مجراللہ تعالی نے ان سب کے دل ایک جیسے کردیے اور بیراس آیت کی تغییر ہے۔ بنوا سرائیل میں سے جنہوں نے کفر کیا ان پر واؤ واور میسی بن مریم کی ذبان سے لعنت کی گئے۔ (جامع البیان 'بر۲۰م ۴۷۰)

مافظ عبدالله بن يوسف زياني متونى ١٧٧ عد لكيمة بن:

الم ابو بعلى موصلى في الى مند كے ساتھ عموى بن الحارث ہے روایت كيا ہے كہ ایک فض في حضرت وبدائد بن المسعود رمنى الله عند كو وليمه عن بلايا۔ جب وہ گئے قو وہل لمو (كانے بجائے) كو ساقو حضرت ابن مسعود واليس آ گئے۔ اس في بوجها آپ كيوں واليس آ گئے ان سے رسول الله عليہ كور قرائے ہوئے ساہ جس فض نے كسى قوم كى تعداد عين اصافہ كيا وہ ابن بي عمل ہے ہوگا اور جو فض كمى قوم كے قمل ہے رامنى ہوا وہ اس عمل كے مر بجيس ميں شريك ہو كا۔ اور الم ابن المبارك نے كتاب الزود و الرقائق على روایت كيا ہے كہ حضرت ابوذر فضارى رضى الله عند كو ايك وليمه عن بلايا كيد انہوں نے وہاں (كانے بجائے كى) آواز من تو واليس آ گئے ابن ہے جو جھائيا آپ كيوں نسيں گئے ؟ قربا اس عن من شريك اور جس فض نے كمى جماعت عن اضافه كيا اس كا شار ابن على عن جو گااور جو كسى قمل ہے رامنى ہوا وہ اس عمل عن شريك اور جس فض نے كسى جوا وہ اس عمل عن شريك

إنسب الرابير" جه من م ٢٠٠١-٢٠٠١ التحاف الساوة المستقين "جه" ص ١٥٠٥ مند القرووس للديملي وقم الحديث. ١٩٦٦ المطالب العاليد للعسقاني جن وقم الحديث: ١٠٠٥

طافة زیالی عافظ استلائی اور علامہ زبیدی نے یہ حدث مند ابو یعلی کے حوالے ہے بیان کی ہے الیکن بچھے یہ حدیث مند ابو یعلی کے حوالے ہے بیان کی ہے الیکن بچھے یہ حدیث مند ابو یعلی کے مطبور نسخوں میں لی اور نہ تی بچھے حضرت ابوذر کی روایت الم ابن المبار کی کتاب الزحد میں لی۔ اللہ تعالی کا ارشاد ہے: ووایک دو سرے کو اس برے کام سے نسس ردکتے تھے جو انہوں نے کیا تھا وہ کیدا برا کام تھا جو وہ کرتے تھے جو انہوں نے کیا تھا وہ کیدا برا کام تھا جو وہ کرتے تھے جو انہوں نے کیا تھا ، وہ کیدا برا کام تھا جو وہ کرتے تھے جو انہوں نے کیا تھا ، وہ کیدا برا کام تھا جو وہ کرتے تھے جو انہوں نے کیا تھا ، وہ کیدا برا کام تھا جو وہ کرتے تھے دو انہوں نے کیا تھا ، وہ کیدا برا کام تھا جو

ہوا مراکل خوام کام اور گناہ کرنے والوں کو منع نمیں کرتے تھے اللہ تعالی شم کھاکر فرما تاہے کہ ان کاگناہوں ہے نہ روکنا حرام کاموں کو کرنااور انبیاء علیم انسلام کو قتل کرنابہت پرا کام تھا۔

 حافظ ابن کیرنے کیلیہ سے نقل کیا ہے کہ ان لوگوں سے مراد منافقین ہیں اور اللہ کی ہرافتگی کے متعلق یہ حدیث نقل کی

ہے۔ امام ابن الی حاتم نے اپنی مند کے ساتھ روایت کیا ہے کہ رسول اللہ حلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اے مسلمانوا تم زنا ہے

ہی دہا ہی تھے دنا پر چھ چیزیں حرتب ہوتی ہیں۔ تمین ونیا میں اور تمین آ فرحت میں اونیا ہیں اس فعل سے رونی جلی جاتی ہے۔

نگ دی اور مفلسی آتی ہے اور محرکم ہوتی ہے اور آ فرت میں اس فعل کی دجہ سے رب تعلق ناراض ہوتا ہے اور حساب سخت

ہوتا ہے اور دوزخ بھی وائی عذاب ہوتا ہے (دوام سے مراد اسباطر صد ہے) پھر دسول اللہ رہیم نے اس آبت کو تلاوت کیا۔ امام

ابن مردویہ نے اس حدیث کو دو مندوں کے ساتھ معرت حذیفہ رسی اللہ صد سے روایت کیا ہے اس کی ہر مند ضعیف

ہے۔ النفیران کی تراج اس مدیث کو دو مندوں کے ساتھ معرت حذیفہ رسی اللہ صد سے روایت کیا ہے اس کی ہر مند ضعیف

میں کتا ہوں کہ تعدد اسائید کی وجہ ہے یہ مدیث حس تغیرہ ہے۔

الله تعالی کاارشاد ہے: اور اگر وہ الله پر ایمان لا تے اور اس نی پر اور اس پر جو اس نی کی طرف نازل کیا تمیا تو کافروں کو ووست ند ہناتے ' سیکن ان میں زیادہ تر لوگ نافریان ہیں۔اللمائد ۸۱۸)

اس آیت کی دو تغییری این:

۱- اگرید بمودی الله پر منج ایمان لاتے اور معترت موئی بر اور تورات بر تو کافروں کو دوست نہ بناتے

ج- آگرید يمودي الله پر كال ايمان مات اور سيدنا محد مجيم پر اور قرآن مجيد پر تو كافرول كو دوست نه مات

الله تعالیٰ کاارشاؤے: آپ جن نوگوں کو سب نے زیادہ مسلمانوں کے ساتھ و شنی دیکھے والا پائیں سے وہ میود اور مشرکین ہیں'اور آپ جن نوگوں کو مسلمانوں کا سب سے قریب دوست پائیں سے 'بے وہ لوگ ہیں جو کتے ہیں کہ ہم ہیسائی ہیں' کیو نکہ ان میں بعض عالم اور راہب ہیں اور وہ محکمر تمیں کرتے۔(المائدہ: ۸۲)

نجأتي كااسلام لانا

المام الوجعفر عدين جرير طبري متوفى موسهدائي سند كم ساتد روايت كرت ين:

سعید بن جبید بیان کرتے ہیں کہ نجائی نے نی بڑی کے پاس آیک دفد بھیا نی بڑھی نے ان کے سامنے قرآن مجید پر حاا وہ مسلمان ہو گئے۔ تب اللہ تعالی نے یہ آیت تازل قرائی گردہ دفد نجائی کے پاس کیا اور اس کو فردی قرنجائی بھی مسلمان ہو گئے۔ تب اللہ تعالی نے یہ آیت تازل قرائی گردہ دفد نجائی کے پاس کیا اور اس کو فردی قرنجائی بھی مسلمان مرام مسلمان مرام و رسول اللہ بڑی ہے فرایا تسارا بھائی نجائی قوت ہو گیا۔ اس کی نماز جناز می نور نجائی رکا جنازہ اس دنت مبت بھی تعلد

(جامع البيال ٤٠٠٠ من ٣ مطبوعه هاد الفكو بيروت ١٣١٥ ه)

مسلمانوں کا عبشہ ہجرت کرنا اور کفار مکہ کا ان کو واپس بلائے کی سعی کرنا امام امرین صبل متونی ۱۳۳۸ء روایت کرتے ہیں:

حضرت اسم سلمہ رمنی اللہ عندا (رسول اللہ بڑیج کی زوجہ) بیان کرتی ہیں کہ جب ہم جیشہ ہیں پنچے تو ہمیں نجاشی نے وہاں بناہ دی اہم نے اپنے دین کی حفاظت کی اور اللہ تعالی کی عباوت کی۔ ہم کو تہ کوئی ایڈا دی جاتی تھی 'نہ ہم کوئی تاکوار بات سنتے تھے۔ جب یہ خبر قریش کو پنچی تو انموں نے باہم مشورہ کیا کہ ہمارے متعلق نجاشی کے پاس دو قوی آدی بیسے جا نمیں اور مکہ کی عمرہ چیزوں ہیں ہے خبر قریش کو پنچی تو انموں نے باہم مشورہ کیا کہ ہمارے متعلق نجاشی کے پاس دو قوی آدی بیسے جا نمیں اور مکہ کی عمرہ چیزوں ہیں ہے خبر قریش کو پنچی جا نمیں۔ ان اوگوں کو چیزا پہند تھا تو انموں نے بہت سے چیزے جسے ان کے مرداروں میں ہے جبر شخص کو انہوں نے چیزے اور عمرہ بن انعاص کو یہ جدیئے ہیں ہے جبر شخص کو انہوں نے جبر شخص کو انہوں کے جبر ہے کہ سے جبر شخص کو انہوں نے جبر شخص کو انہوں نے جبر شخص کو انہوں کو یہ جدیئے

دے کر روانہ کیا اور ان ہے کہ اسلمانوں کے متعلق نجائی ہے بات کرنے ہے پہلے تمام مرداروں کو بدینے دے دیئے جائیں۔
وہ حیث بنج سے اور نجائی کے ماتھ ما قات ہے پہلے تمام مرداروں کو بدینے دیئے اور جر مردارے یہ کہا، تعمارے باد شاہ کے ملک میں ہمارے چند علوان لڑکوں نے آگر بناہ ئی ہے ' وہ اپنی قوم کے دین کو چھوڑ بچے جی اور تعمارے دین میں داخل نہیں ہوئے۔ وہ ایک نیاوی نے بی نوای کو جم بچائے جی نے ہو 'اور ہماری قوم نے اپنے معزز لوگوں کو جم بچائے جی اور ہماری قوم نے اپنے معزز لوگوں کو جمیجا ہے ' کہ وہ ان کو والی نے جائیں۔ سوجب ہم باو شاہ ہے اس معاملہ میں بات کریں تو تم بادشاہ کو یہ مشورہ دیناکہ وہ ان کو ہمارے خواسلے کردیں اور باوشاہ ان سے بات نہ کرے۔

کے تک ہماری قوم ان کے کر تو توں ہے اچھی طمیح واقف ہے۔ سرواروں نے کمااچھا پھرانہوں نے نجائی کو ہدیے اور تھے

پٹر کے جن کو اس نے قبول کر لیا۔ پھرانہوں نے کمااے یاوٹھا آپ کے طک میں ہمارے پچو پوان لوگ آگئے ہیں جو اپنی قوم
کے دین کو چھو ڈ چکے ہیں اور آپ کے دین میں واقل نہیں ہوئے۔ وہ ایک نیادین لیکر آئے ہیں جس کو ہم پچائے ہیں نہ آپ اور ہم کو آپ کی طرف ان کی قوم کے معزو لوگوں نے بھیجائے ہو ان کے آباد واجد اوادور رشتہ وار ہیں آپ کہ آپ انہیں واپس بھی کو آپ کی طرف ان کی قوم کے معزو لوگوں نے بھیجائے ہو ان کے آباد واجد اوادور رشتہ وار کوئی بات باپند نہیں تھی کہ بھیج دیں۔ حضرت ام سلمہ نے قربایا عبداللہ بن الی وجھہ اور عمو بن انعاص کو اس سے زیادہ اور کوئی بات باپند نہیں تھی کہ خواتی مسلمانوں کی بات سے اس کے سرواروں نے کماان دو آدمیوں نے پچ کما ہے۔ ان لوگوں کے کروتوں کو ان کی قوم بی بھر طور سے جائی ہے مو آپ ان لوگوں کو ان دو توں کے دوالے کروتیک آپ کہ یہ ان کو آپ کی ان واپس نے جا کیں۔ اور نہیں ان لوگوں کو ان کے حوالے نہیں معزے اس کے معرف ان کی قوم کے پاس واپس نے کما نہیں یا فیدا کی تھم بھی ان لوگوں کو ان کے حوالے نہیں معرف انسی یا فیدا کی تھم بھی ان لوگوں کو ان کے حوالے نہیں دھرے ام سلمہ نے قربایا ہے من کر نمائی ہو میں انسی ہو انسی نے کہا نہیں یا فیدا کی تھم بھی ان لوگوں کو ان کے حوالے نہیں دھرے ام سلمہ نے قربایا ہے من کر نمائی ہو انسی بھو انسی نے کہا نہیں یا فیدا کی تھم بھی ان لوگوں کو ان کے حوالے نہیں

حضرت ام سلمہ نے فربایا یہ سن کر نمائی طفیتاک ہوا اس نے کمانیں افداکی تسم ہیں ان لوگوں کو ان کے حوالے نہیں کوں گا جن لوگوں نے میری بناہ لی ہے اور میرے ملک میں آئے ہیں اور جنہوں نے دو سروں کی بجائے ججے افتیار کیا ہے 'جب تک میں ان ہے سوالات کر کے محتیق نہ کر لوں 'ان کو تم لوگوں کے حوالے نہیں کروں گا۔ اگر دوا ہے ہی نظے میساتم نے کما ہے 'و میں ان کو تسمارے حوالے کر دوں گا اور اگر ایسانہ ہواتو میں ان کی حفاظت کروں گا اور جب تند یہ میری بناہ میں دہیں ہے 'و میں ان کی حفاظت کروں گا اور جب تند یہ میری بناہ میں دہیں کے 'ان سے حسن سلوک کروں گا۔ چراس نے رسول اللہ جنوبی کے اس کے ہوایا۔ جب مسلمان آ می 'او نمائی نے اپنے ملاء کو بھایا اور دواس کے گردانی کاچی کو اللہ کے بلایا اور دواس کے گردانی کاچیں کھول کر بیٹھ گئے۔

حصرت جعفر کا تجاشی کے دربار میں اسلام کاتعارف کرانا

پھر نجائی نے مسلمانوں سے سوال کیا وہ کون سادین ہے جس کی وجہ ہے تم نے اپنی قوم کو چھو ڈریا اور تم اس کی وجہ سے

تہ میرے دین میں واقل ہو ہے اور نہ ان اویان میں ہے اور کسی دین میں واقل ہوئے؟ دھرت ام سلمہ نے فربایا جس محنص نے

ان کو جو اب دیا 'وہ حضرت جعفر بن ابی طالب رضوان اللہ علیہ ہے۔ انہوں نے کما اے باو شافا ہم جالوں کی قوم تھے 'بتوں کی

مباوت کرتے تھے 'مروار کھاجے تھے ' بے دیائی کے کام کرتے تھے ' رشتوں کو تو ڈتے تھے ' پردسیوں سے بدسلو کی کرتے تھے ' ہم میں سے عامادی طرف ایک وسول بھیج دیا۔ جن سکے نسب '
میں سے طاقتور کردر کو کھاجا آتھا' ہم اس مال پر تھے کہ اللہ نے ہم میں سے بی امادی طرف ایک وسول بھیج دیا۔ جن سکے نسب '

من کے صدی 'ان کی آبات وار کی فور ان کی یا کیزگی کو ہم پہلے ہے جانے تھے۔

انہوں نے ہمیں اللہ کی طرف دعوت دی " آگہ ہم اس کو واحد مائیں اور اس کی عباوت کریں اور اس سے پہلے ہم اور امارے باب واوا جن پھروں اور بتوں کی عباوت کرتے تے "اس کو چھوڑ دیں "اور انہوں نے ہمیں بچ ہو لئے "امانت اوا کرنے " مارے باپ واوا جن پھروں اور بتوں کی عباوت کرتے تے "اس کو چھوڑ دیں "اور انہوں نے ہمیں بچ ہو لئے "امانت اوا کرنے اسلوک کرنے "حزام کاموں اور خون دیزیوں سے باز رہنے کا تھم ویا اور ب دیائی کے کاموں " جموث ہو لئے " بیٹیم کا مل کھاتے اور باک وامن مورٹوں کو تھمت لگانے سے منع کیا "اور ہم کو تھم دیا کہ ہم فقط اللہ کی عبادت

کری 'اور اس کے ماتھ کی کو شریک نہ کریں اور ہم کو نماز پڑھٹا ڈکو قالوا کرنے اور روزہ رکھنے کا تھم دیا۔ حضرت ام سلمہ فے فرایا انہوں نے اسلام کے تمام احکام مخواسے۔ سوہم نے اس رسول کی تقدیق کی اور ہم اس پر ایمان نے آئے 'اور وہ اللہ سکے پاس سے ہو احکام السنے تھے 'ہم نے ان پر عمل کیا اور فقط اللہ وصدہ کی عملوت کی اور اس کے ماتھ کمی چزکو شریک نہیں کیا اور جن چزوں کو انہوں نے ماری چزکو شریک نہیں کیا اور جن چزوں کو انہوں نے ماری توم ماری و شمن ہوگئے۔

انہوں نے ہم کو عذاب ہی جاؤ کیا اور ہم کو ہمارے دین ہے چھڑا نے کے لیے آزائش میں جلاکیا گا کہ ہم کو اللہ تعالی کی عبارت ہے چھڑا کر بتوں کی عبارت کی عبارت کے جم اور چران می بد کاریں کو طال کرنے لئیں بین کو ہم پہلے طال ہم کی عبارت ہے جھڑا کر بتوں کی عبارت ہو ہے کہ کہ اور ہمارے دین کے کر کرتے تے۔ سو جب انہوں نے ہم پر قراور ظلم کیا اور ہم پر ہماری معیشت کو تھک کر دیا اور ہمارے اور ہمارے دین کے در میان ماکنی ہوگئے تو ہم آپ کے ملک کی طرف نکل آئے اور ہم پر علم شمین کیا جائے گا۔ حضرت ام سلمہ نے فرایا پر نہائی رفہ ٹی اور ہم نے یہ امید در کھی کہ اے باد شادا آپ کے پاس ہم پر علم شمین کیا جائے گا۔ حضرت ام سلمہ نے فرایا پر نہائی رفیائی نے کہا جھے ساؤ۔ تو حضرت جعفر نے سورہ مربم نے کہا کیا تم کو ایشہ کے کلام کی پکھ آئیں یا ہیں؟ حضرت جعفر نے کہا ہاں انجائی دونے لگا اور اس کی داڑ ھی آنسوؤں ہے بھیگ می اور آپ کی معادف ان کے آنسوؤں ہے تر ہو گئے۔ پھران دونوں مشرکوں سے کہا جاؤا تم بی جاؤا تم

کفار قرایش کامسلمانوں کو نکلوانے کی مہم میں ناکام ہونا

حضرت ام سلمہ نے فرایا جب وہ دونوں نجائی کے دربارے نکل کئے قاعمو بن العاص نے کما بخد اوا میں کل پھراس کے پاس جاؤں گااور اس کے سلسنے انسی چیز پیش کوں گاجس سے ان کی جز کت جائے گی۔ عبداللہ بن رہید نے کماایسانہ کرو 'اگر چہ یہ ادارے مخالف میں 'نیکن جاری ان کے ساتھ رشتہ داریاں ہیں 'اس نے کما میں نجائی کو ضرور ہتاؤں گاکہ یہ لوگ کہتے ہیں کہ عسلی اللہ کے بندے ہیں 'کھراسگلے دن وہ گیا اور نجائی ہے کہذا ہے باد شاہا یہ میسی ابن عربی کے متعلق بہت کہتے ہیں۔

میسی اللہ کے بندے ہیں 'پھراسگلے دن وہ گیا اور نجائی ہے کہذا ہے باد شاہا یہ میسی ابن عربی کے متعلق بہت کہتے ہیں۔

میسی ان کو بلا کر ان سے بوچھے کہ یہ ان کے متعلق کیا گئے میں؟ معرب ام سلمہ نے فرایا پھراؤ شاہ نے ہم کو بلوا یا اور اس میسی آزمائش ہم پر پہلے نہیں آئی تھی 'جب سب لوگ جمع ہو گئے تو باد شاہ نے بوچھاتم لوگ عیسی بن عربی کے متعلق کیا کہتے ہو؟ جب ان کے متعلق میا کیا جا آ ہے؟

حضرت جعفرین انی طالب و منی اللہ عنہ نے کہا ہم ان کے متعلق وی کتے ہیں جو ہمارے نی جہر کہتے ہیں۔ وہ اللہ کے بندے اس کے رسول اور اس کی بیندیدہ روح ہیں اور اس کاوہ کلہ ہیں جو اس نے کو اری پاک واصن مریم کی طرف القاء کیا۔
حضرت ام سلمہ رمنی اللہ عنما نے فرایا پھر نجائتی نے اپنا پاتھ ذھن پر مار الور ایک تکا اٹھایا۔ پھر کہا بھتے ان تھ جہ کہ بیان کیا ہے ،
سیلی بن حریم اس سے ایک شخص نے بھی ذیادہ نہیں ہیں۔ جب نجائی نے بھیلی بن حریم کے متعلق یہ کہا تو اس کے گر و بیٹھے
یہ بین عریم اس سے ایک شخص نے بھی ذیادہ نہیں ہیں۔ جب نجائی نے بھیلی بن حریم کے متعلق یہ کہا تو اس کے گر و بیٹھ
یو سے سرار اور ان نے فیصر سے بھینکار نا شروع کر دیا۔ نجائی نے کہا جریند کہ تم خصر سے بھینکار رہے ہو (اور مسلمانوں سے کہا) تم
میری سردیمن جی مامون ہو ، جو ہفت تم کو گل دے گا اس پر جرمانہ ہوگا۔ جس یہ نہیں چاہتاکہ میرے پاس سونے کا بہاڑ ہو اور
میں اس کے بدرہ جس تم جس سے کی شخص کو آیڈ اپنچاؤں۔ ان لوگوں کے جسے اور تھے ان کو دایس کردو۔ ہم کو ان کی ضرور سے

242 نسيں ہے ' بخد الجب اللہ نے جھے ميرا لمك واپس كياتو بھوے وشوت نہيں لياتو بھي ان ہے كيے وشوت اوں گا؟ معرت ام سلمدے فرلما تو وہ دونوں اعموین العاص اور حیداللہ بن رہیدا نجائی کے پاس سے تاکام اور نامراو ہو کرنونے' ادر ہم نجائی کے ملک میں ایکے گر اور ایکے بروی کی میٹیت ہے رہے۔ ای اٹناد میں نجائی کے ملک بر کسی نے عملہ کیا ہم نے اس کے تغلیہ کے لیے اللہ سے وعالی محل کے وہ کاسیاب ہو کیا اور جم اس کے ملک میں اچھی طرح رہے۔ حتی کہ جم رسول اللہ معيد كياس كمواليس أكت-إعلام الرشاكرة العاب ال مده كل مد مع ب (مند أحد التحقيق الوشاكر علا وقم المعنف: - معما طبع وارالمديث كاجوا مند الر" علا رقم العديد: ١٥١٠ طبع داوالفكو عدية مند احد عاص موجه وطع قديم كليد والنبوي على مع الديد الفرخ الانف عام ١٠٠٠ الروخ الانف عام ١٠٠٠ بجع الزواك ع أنكمول سنة أنورُ ل كربتنا بوار ويكن بي و ده كين بين الديائد وبي الاين الدينة ويس نے کا درجیس کی براک بم استر ہے ایمان نافیس اجدای می برجر بمار ا مندست ال سكاناي ول مك عظري ال كرايس جنتين حن فرايل بن كريد سيع مست دريا بهت بي بن بن بن م الدين على كرف والول ك جزاب 0 اورجن وأل ف كفركا ادر بمیشہ ریں سمجے ،

ماری آیرں کو چٹویا

الله تعالى كاارشاد ب: اورجبوه اس قرآن) كوينة بي جورسول كى طرف انل كياكياتو حق كو برياسة كى دجه

جيان القر أن

ع

آب ان کی آگھوں ہے آنسوؤں کو بہتا ہواد کھتے ہیں وہ کتے ہیں اے حارے رہا ہم ایمان لائے قر ہمیں (حق کی) گوائی دیے والوں کے ساتھ لکھے لئے۔ (الرائد مدیم) شان نزول

الم ابن جربر طبری متوفی میسود نے اپنی سند کے ساتھ روایت کیا ہے کہ یہ آیت نجاشی اور اس کے اسحاب کے متعلق نازل اول ہے۔(چاسع البیان '22'ص، مطبور دار الفکو 'جروت ۱۳۵۵ء) المام عد الرحمٰن میں علی میں ہے الحد نے الحد فیروس کھیت ہیں۔

الم عبد الرحن بن على بن عمر الجوزى المتونى ١٥٥٥ مع المعين بين: معفرت ابن عمياس رضى الله محمال فرلما بب بي يجين ك اصحاب مجاشي ك إس بنيج اور انهوب في قرس كريم بإها

سرت بال کے علاء اور راہموں نے قرآن مجد ساتے حربی جب کی تیجیز کے اسکاب عبامی کے ہاں بہتے اور اسوں نے فر آن جبور
اور ان کے علاء اور راہموں نے قرآن مجد ساق فق کو پہلے نے کی وجہ سے ان کی آنکھوں سے آنسو بہنے گئے اور سعید بن جبور
نے کماکہ نجافی نے اپنے تھی بمترین امحاب و سول اللہ بیجیز کے ہاں بھیجہ آپ نے ان کے سامنے قرآن مجید پڑھا' ان پر
رفت طاری ہوگئی اور وہ رونے گئے 'انسوں نے کما بہ فدا ہم اس کو پہلے نے ہیں اور وہ مسلمان ہو گئے اور نجافی کو جاکر خردی تو وہ مسلمان ہو گئے اور نجافی کو جاکر خردی تو وہ مسلمان ہوگیا تب انٹ تعالی نے یہ آیت نازل فرائی۔

"مسين (حتى كى) كوائى دے والوں كے ساتھ لكھ لے"۔اس كى تفسير عن جار قول مين:

ا- على بن الى طوية كماس ب مرادسدنا مريويد اور آپ كى امت ب-

٢- حضرت ابن عباس رسى الله عنمائے فرلماس ب مراد سيدنا محد جيد يا محاب يس-

- حسن بصری نے کمااس سے مرادوہ لوگ ہیں جو ایمان کی گوائی دیے ہیں۔

۱۰۰ زماج نے کہاس سے مرادانبیاء علیم انسلام اور مومنین ہیں۔ (زادالمسیرج ۱می ۱۰۰ منطور کتب اسلام ایروت کے ۱۲۰ میدو) اللہ تعالی کا ارشاد ہے: اور جمع کیا ہواکہ ہم اولت پر ایمان نہ لا کمی اور اس حق پر جو ہمادے پاس آیا ہے اور جم کیوں نہ یہ خواہش کریں کہ جمارا رہ جمعیں نیک لوگوں کے ماحد شال کرے۔ (المائدہ ۱۲۰۰)

نیک او گوں کی تغییر یمی تمن قول ہیں۔ (۱) حضرت این عماس نے فربایا می سے مراد رسول اللہ جہید کے اسماب ہیں۔
(۲) ابن زید نے کہا اس سے مراد رسول اللہ جہیج اور آپ کے اسماب ہیں۔ (۳) مقاتل نے کہا اس سے مراد مراج میں اولین بیرے (اولین بیرے (ا

الله تعالی کاار شاوی: سوالله نان کوس قول کے صلے میں ان کوائی جنتی مطافرا کی جن کریے ہے دریا ہتے ہیں اللہ تعالی اور کی نیک کرنے والوں کی جزامے 10ور جن لوگوں نے کفر کیا در بھاری آناوں کو جمٹلایا ووروز فی ہیں۔(المائد ۱۸۵۰۸۰)

جن بیسائیوں نے دین حق کو پہچان لیا اللہ تعالی نے اپنے فضل و کرم ہے ان کو ان کے ایمان اور اعمال معالیہ کے معلم می جنتی عطافرہا کی اور جن بیسائیوں اور بیود اور مشرکین نے واضح دلا کی اور مجزات دیکھنے کے بلوجود تکبر اور جث دھری ہے اللہ تعالی کے وجود اس کی وحد انہت اور اس کے انہاء کے معدق کا انکار کیا اللہ تعالی ان کو اپنے مدل کے تقد ہے ہے دونہ نے میں ڈال دے گا۔ اہل منت کا بی تر بہب ہے کہ تواب اللہ کا فضل ہے اور عزاب اللہ کا مدل ہے۔

يَايَّهُا الَّذِينَ امَنُو الاَتُحَرِّمُوا طَيِّبْتِ مَا آحَلَ اللهُ لَكُمْ وَلا

است ایان والو: تم ان لیسندیده پیزول کو حرام قرار نه دو دین کواندست تمایت بے ملال کردیا سے اور

تے والوں کولیسند بیں کرتا ٥ الد القراعة وسيد بوسف علال الميزه رزن اور الترسي ورست ربو سي پر تم ايال قباری سیصمتعدقمول بر تمباری گرفت بنیس فرطنے گا کئین تمباری پخت قمرل بر سوان کا گفارہ وس سکیوں کو درمیانی یے گرواوں کو کھلاتے ہو ، یا ان مسکیزں کو کیڑے دینا یا ایک فلام آزاد کر، ہے ، جوان میں سے کسی چیز برتفادر مزہم تو وہ تین ون کے روزے سکے . یہ تمباری قسمرل کا کفارہ سے جب تم قسم کیاؤ (اور اور این فترل ک مفاظمت کرد ، ای طرح اسد تمارسے سے این آیس بیان فرانا ہے "اک تم مشکر ادا کرد 0 الله تعالی كاارشاد، اے ايمان والواتم ان پنديده چزون كو حام قرار ته دو جن كو الله في تمهارے كے طال كرديا ہے اور مدے نہ برحو مے تک اللہ مدے برجے والوں کو بہتد نہیں کر آ۔ (الما کددے ۸) طال چیزوں سے اجتناب کی ممانعت اس آیت کامعتی ہے ہے کہ اے مسلمانوا جن طال چزوں کی طرف تسارا دل ماکل ہو تاہے ان کی لذت حاصل کرنے ہے اہے آپ کو سے نہ کرو مجس طرح بیسائیوں کے علاء فور راہر ان کھانے بینے کی عمرہ اور لذیذ چڑوں کو اور قور توں کو اپنے اوپر حرام کرلیااور بعض نے اپنے آپ کو گرجوں ہیں مقید کرلیااور بعض سیاحت کرنے تھے۔ سوااے مسلمانوا تم ان کی طرح مد طبیان انقر ان جلدسوم

حديومنا

اس مضمون کی قرآن مجید پی اور بھی آیات ہیں:

آبائیکا الّذِیْنَ اُمَدُّوا کُلُوا مِنَ طَیّبَاتِ
مَارَرَفْنَا کُمُ وَ اَشْکُرُوکَ لِلْهُ إِنْ کُنْتُمْ إِیّاهُ
مَارَرَفْنَا کُمْ وَ اَشْکُرُوکَ لِلْهُ إِنْ کُنْتُمْ إِیّاهُ
مَارَرَفْنَا کُمْ وَ اَشْکُرُوکَ لِلْهِ إِنْ کُنْتُمْ إِیّاهُ
مَارَرَفْنَا کُمْ وَ اَشْکُرُوکَ لِلْهِ إِنْ کُنْتُمْ إِیّاهُ

قُلُ مَنْ حَرَّمَ إِنَّةَ اللَّوالَيْقَ أَعَرَّجَ لِعِبَادِهِ وَ الطَّلِيِّلْيَ مِنَ الرَّقِ (الاعراف:٣١)

آپ کے اگر اللہ کی اس زینت کو کس نے حرام کیا ہے جو اس نے اپنے بقدون کے لیے پیدا کی ہے اور طال چیزوں کو (کس لے حرام کیا ہے ؟)

عیادات اور معاملات میں میاند روی کے متعلق آیات اور احادیث

وَالْكَذِيْسُ إِذَا الشَّفَةُ وَالَهُ يُسْيِرُهُ وَاوَلَهُ بَعْتُرُوّا وَ كَانَ بَيْسَ ذَالِكَ قَوَامُ الاالعرفان ١٤٠

اوروہ اوگ جب فرج کرتے ہیں تونہ فضول فرچی کرتے میں اور نہ منگل سے کام لیتے میں اور ان کا فرچ کر نامیانہ روی سے ہو آہے۔

اور (اے تا طب ا) دشتہ دار دن کو ان کا حق ادا کر دادر مسکینوں اور مسافروں کو اور ہے جا فریج نہ کرد۔ ادر اینا باتھ کر دن ہے بند صابوا نہ رکھ اور نہ اس کو بوری طرح کھول دے کہ جیمارے طامت زدہ 'تھکا پارا۔ وَانِ ذَا الْفُرُهُى حَفَّهُ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ الْفُرُهُى حَفَّهُ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّالِ السَلِمَانِ السَّلِمَانِ السَّلِمَانِينَ السَّلِمَانِ السَّلِمَةِ السَّلِمَانِ السَّلِمَانِ السَّلِمَانِ السَّلِمَ السَّلِمَانِ السَّلِمَانِ السَّلِمَانِ السَّلِمَانِ السَّلِمَانِ السَّلِمَانِ السَّلِمَ السَّلِمَ السَّلِمَانِ السَّلِمَةِ السَّلِمَ السَّلِمَ السَّلِمَ السَّلِمَ السَّلِمَ السَّلِمَ السَّلِمَ السَّلِمَ السَّلِمَ السَّلَمُ السَّلِمَةُ الْمُنْسَلِمَ الْمُسَلِمَ الْمُنْسَلِمَ الْمُنْسَلِمِ السَّلِمَ الْمُنْسَلِمَ السَّلِمَ الْمُنْسَلِمَ الْمُنْسَلِمَ الْمُنْسَلِمَ الْمُنْسَلِمَ السَّلِمَ الْمُنْسَلِمَ السَّلِمَ الْمُنْسَلِمَانِ الْمُنْسَلِمَ السَّلِمَانِينَ الْمُنْسَلِمَانِ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمُ السَّلِمَانِ الْمُنْسَلِمُ السَّلِمَانِ الْمُنْسَلِمُ السَّلِمَانِينَ الْمُنْسَلِمُ السَّلِمَانِ الْمُنْسَلِمُ السَّلِمِينَ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمِ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمِينَ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمِ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمِ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمِ الْمُنْسُلِمُ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمُ الْمُنْسَلِمُ

الم محمين اساعيل عفاري متوفي ٢٥١ه روايت كرتي بي:

حضرت انس بن مالک بولین بیان کرتے ہیں کہ نی بیج کی از دائے کے جروں جی تین فض آے (ان می حضرت علی بین الل طالب اور حضرت عبدالله بین عمرہ بیسی تھے۔ است مبدالر زاق ارتم الدے انہوں نے اس عبادر کی جارت کے متعلق سوال کیا۔ جب انہیں آپ کی عبادر کہ انہاں کے متعلق بنایا گیا آو انہوں نے اس عبادت کو کم سمجمااور کہ انہاں بہ اور کہ ان کیا۔ جب انہیں آپ کی عبادر کہ اور خان بیا زنب کی منفرت کردی گئی ہے۔ (منفرت سے مراد آپ کے درجات کی بالدی ہے او ان جس سے ایک نے کہ ایس قو بیشہ سازی دات نماز پر حوں گااور دو سرے نے کما جس بیشہ دوزہ رکوں گااور کی بالدی ہے او ان جس سے ایک نے کہ ان اللہ مرادی کا اور کمی شادی تعین کروں گا اور تیمرے نے کما جس حورتوں ہے الگ رہوں گا اور بھی شادی تعین کروں گا تو رسول اللہ مرادی تشریف لے آئے۔ آپ نے فرایا تم دولوگ ہو جنون نے اس اس طرح کما ہے۔ سنون بہ خدا جس تم سب سے زیادہ اللہ سے زیادہ متی ہوں اور مو آبی بوں اور کھا آ جا بھی بوں اور نماز بھی پر حتا ہوں اور سو آبی وں اور عورتوں ہے اعراض کیاوہ جس نے طریقہ پر حتا ہوں اور مو آبی

(ميح البحاري على أرقم الحديث: ٦٠٠٥ معنف عبد الرزال على أرقم الحديث ١٠٣٧)

حضرت ابو معمد برافن بیان کرتے ہیں کہ نبی مجید نے حضرت سلمان اور حضرت ابوالدوداء رضی اللہ عنما کو آپس میں بعلی بنایا۔ ایک دن حضرت سلمان مضرت ابوالدوداء سے ملتے محتے تو انہوں نے حضرت اسم الدوداء رضی اللہ عنما کو بھٹے پر انے بعلی بنایا۔ ایک دن حضرت سلمان مضرت ابوالدوداء سے ملتے محتے تو انہوں نے حضرت اسم الدوداء رضی اللہ عنما کو بھٹے پر انے

گڑے ہے ویکھا انہوں نے کما یہ آپ نے اپناکیا طل بنا رکھا ہے؟ انہوں نے کہا آپ کے بھائی ابوالد رواء کو و نیا ہے کوئی وہی سے نہیں ہے۔ جب حضرت ابوالد رواء آئے تو انہوں نے ان کے لیے کھانا تیار کیا حضرت سلمان نے کہا آپ بھی کھائے۔ انہوں نے کہا جس ہے دہیں جو انہوں کے کہا جس کھا کہا تھیں گھا کہ جس سے دہیں کھاؤں گا۔ پھر حضرت فیلا اندو کا میں انہوں کے کہا جس کھا کھڑے دھرت سلمان نے کہا ہو ہا کہ ابوالد رواء نماز کے لیے کھڑے دھرت سلمان نے کہا ہو ہا کہی جب رات کا آخری حصد رو گیاتو حضرت سلمان نے کہا ب گئے 'پھر نماز کے لیے کھڑے ہوئے۔ انہوں نے پھر کہا ہو جا کمی 'جب رات کا آخری حصد رو گیاتو حضرت سلمان نے کہا اب کھڑے ہوں۔ پھر دونوں نے نماز (تبجہ) پڑھی 'پھر حضرت سلمان نے کہا آپ کے دب کا آپ پر حق ہور اور آپ کے ناس کا آپ پر حق ہور کہا ہوگئے اور آپ کے اہل (یوی) کا آپ پر حق ہو کہا جا کہا تھی اور آپ کے اہل (یوی) کا آپ پر حق ہو کہا سلمان نے کہا گائے اور آپ کے اہل وہا کہا آپ نے قربایا سلمان نے کہا گا۔

(سمج البخاری 'ج۲' دقم الحدیث: ۱۹۷۸ سنن ترزی 'ج۳' دقم الحدیث: ۲۳۳۱ سمج این حبان 'ج۲' دقم الحدیث: ۳۲۰ سنن کبری للیمتی 'ج۳' ص۲۷۱)

الم مسلم بن تجلع قشيرى متولى ١٠١٥ روايت كرتے إلى:

حضرت النس بھائی بیان کرتے ہیں کہ نی ہیں ہے کہ اسماب میں سے چند نفوس نے نی ہیں ہیں کا اواج سے خلوت میں آپ کی مہاوت کے متعلق سوال کیا۔ پھر بعض اسماب نے کہا میں مجمعی نکاح نہیں کروں گا اور بعض نے کہا میں گویشت نہیں کھاؤں گا۔ آپ نے اللہ کی حمد و شاہ کرنے کے بعد قربایا فلاں فلان لوگوں کا کیا جال ہے؟ کھاؤں گا۔ آپ نے اللہ کی حمد و شاہ کرنے کے بعد قربایا فلان فلان لوگوں کا کیا جال ہے؟ جو اس اس طرح کہتے ہیں "کین میں نماز بھی پڑھتا ہوں اور سو آ بھی ہوں' روزہ بھی رکھتا ہوں اور کھا آ پیتا بھی ہوں 'اور عور توں ہو اس اس طرح کہتے ہیں "کین میں نماز بھی پڑھتا ہوں اور سو آ بھی اعراض کیا' وہ میرے طریقہ پر نہیں ہے۔ سے ابطور بھیند بدگی) اعراض کیا' وہ میرے طریقہ پر نہیں ہے۔

(مع مسلم " فعاح ۵ * (۱۰ ۱۱) مع جهوم سنن التسائل مج ۲ ، رقم الدعث ١٣١٤)

الم محمين الما محل مخارى متونى ٢٥٧هـ روايت كرية بين:

معفرت سعد بن الى و قاص جوائي بيان كرتے بين كه رسول الله بالى سنة معفرت على بن مطعون برائي كو نكاح نه كران كا اجازت ميں دى اگر آب ان كو اجازت ديے تو ہم ضمى بوجاتے۔

(منج البخاري على أرقم المديث من من منج مسلم " فكل ٢٠ (١٠٠١) ١٠٢٠ من تروي عه " رقم الحديث عه ١٠٠٠ من النسائل علا أرقم المحدث ١٣٢٠ من ابن ياجه كل رقم المحدث ١٨٣٨ مند احر كل من هذا المبع قديم "مصنف عبدالرزاق جه" رقم الحديث: ١٠٣٠٥)

الم احد بن منيل متوفى ١٠١١ مد دوايت كرت بين:

نی بڑتی کی دوجہ حضرت عائشہ رضی اللہ عنمائیان کرتی ہیں کہ خویلہ بنت تھیم جو حضرت عثان بن مطعون کے نکاح میں تھیں ' وہ میرے پاس آئیں۔ رسول اللہ بڑتی نے ان کو بہت اہتر عال ہیں دیکھا' آپ نے بچھے نے فریا اے عائشہا خویلہ کس قدر اہتر عال میں ہے۔ حضرت عائشہ نے کما یار سول اللہ اجس عورت کا خلو تدون کو روزہ رکھتا ہو اور ساری رات نماز پڑھتا ہو' وہ اس خورت کی خورت کی طرح ہے جس کا کوئی خلو تدنہ ہو۔ سواس نے اپنے آپ کو ضائع کرنے کے لیے چھوڑ دیا' بھرر سول اللہ بڑتی ہے حضرت کی طرح ہے جس کا کوئی خلو تدنہ ہو۔ سواس نے اپنے آپ کو ضائع کرنے کے لیے چھوڑ دیا' بھرر سول اللہ بڑتی ہے حضرت ختان بن مطعون کو بلوایا۔ جب مطرح عثان بن مطعون آئے تو آپ نے فرمایا اے ختان اکیا تم میری سنت سے اعراض کرنے والے ہو ؟ انہوں نے کما نہیں! بہ خدایار سول اللہ الکین میں آپ کی سنت کو ظلب کرتا ہوں۔ آپ نے فرمایا میں اعراض کرنے والے ہو ؟ انہوں۔ آپ نے فرمایا میں

سو آبھی ہوں اور نماز بھی پڑھتا ہوں 'روزہ بھی رکھتا ہوں اور کھا آپتا بھی ہون 'اور عور توں سے نکاح بھی کر آبوں۔اے عثان! الله سے ذرو "كيونك تمام الل (يوى) كا بحى تم ير حق ب اور تمار ، ممان كا بھى تم ير حق ب اور تمار ، نفس كابھى تم ير حق ہے۔ سوتم روزہ رکھولور کھاؤ پو بھی اور تماز بھی پر حواور سوؤ بھی۔

(علامد احد شاكر متوني عدس الدين كمانس مديث كي شد مي ب منداس عليه المراس الدين الدين المريث المريث قابره مند احد"ج ١٠ رقم الحديث: ١٧٣٧٨ طبع شاو الفكو "مستد احد"ج" ص ٢٧٨ طبع تديم "سنن ابوداؤد"ج" رقم الحديث: ١٩٣٩ سنن داري" ج" وقم الحديث: ٢١١٩ معنف عبدالرزاق ع" وقم الحديث: ٥٥٣٠٥ مج ابن حبان ج" وقم الحديث: ٩ موارد الطبعالَ ع" وقم الحديث: ١٨٨ سند البزاد "ج"ر قم الحديث: ١٣٥٨-١٣٥٤ اس كي شد صح ہے۔ فيم الزوائد "ج" من ١٠٠٠ طبع قديم المبير المجم الكبير "جه"

رقم الديشيد ١٨٣٨ سند ابويسلي جهائر قم الديث ١٧٣٧)

مند آبو بعلی میں یہ روایت اس طرح ہے حضرت عمان بن مطعون بریش کی پڑتیں ہے لیے تو آپ نے فرمایا اے حثان آکیا تمهارے لیے میری سیرت میں نمونہ تهیں ہے اانموں نے کمایار سول انفدا آپ پر میرے ماں باپ فدا ہوں اس ارشاد کا كياسبب ٢٠ آپ نے فرماياتم رات بر نمازيز هے يو اور دن كو روزه ركھے يو اطلائك تسارے ال (زوجه) كابھي تم يرحق ہے اور تمارے جم کابھی تم رحق ہے 'تم نماز بھی پر حواور سوؤ بھی اور روزہ بھی رکھواور کماؤ ہو بھی۔ حضرت ابو موی اشعری کہتے ہیں کہ پھراس کے بعد ان کی بیوی نبی ہیجیز کی ازواج مغمرات کے پاس اس خرح خوشبو میں بسی بوئی آئیں کہ وہ دنہن ہوں' ازواج نے ان سے ہو چھاکیا ہوا؟ انہوں نے کماوی ہواجس طرح وہ مور تیں ہوتی ہیں جن کی طرف ان کے خلوند رخبت كستي

الور مصنف عبد البرزاق منن داري معيج ابن حبان اور المعجم الكبيريس بدوايت اس طرح ب:

نی مٹر ہے حضرت مٹرکن بن مطعون سے ملے اور آپ نے فرمایا اے مٹران اہم پر رہبائیت فرض نسیس کی ملی میں تمہارے لے میری میرت میں اچھا نمونہ تنیس ہے؟ میں تم سب سے زیادہ اللہ سے ڈرنے والا موں اور تم سب سے زیادہ اس کی صدود کی حفاظت كريني والذبول

المام ابوجعفر محدين جرير طبري متونى ١١٥٥ اين سند كے ساتھ روايت كرتے ہيں۔

ابو قلاب بیان کرتے ہیں کہ نبی منتج کے بعض محلبہ نے یہ ارادہ کیا کہ دتیا کو ترک کردیں اور مورنوں کو چموڑ دیں اور را ہب ہوجا کمیں ' رسول اللہ منتجیز نے ان ہے نار اض ہو کر قربایا تم ہے پہلے لوگ مرف (وین میں) بخی کرنے کی دجہ ہے ہلاک ہوئے تھے۔انہوں نے اپنے اور سختی کی تو اللہ تعالی نے ان کے اور سختی کی ان کے بیچے ک**ھچے** لوگ مشدروں اور گرجوں میں یں۔ اللہ کی عبادت کرد اور اس کے ساتھ کسی کو شریک نہ کردا جج کرد اور عمرہ کرد کم سیدھے رہو تو تمہارے لیے استقامت ہوگی اور ان می او کوں کے متعلق یہ آیت مال ہو گی:

ا ہے ایمان دالواتم ان پیند پیرہ چیزوں کو حرام قرار نہ دو جن کو اللہ نے تمارے کے حلال کر دیا ہے۔ قنادہ بیان کرتے ہیں کہ میہ آیت ان محلیہ کے متعلق نازل ہوئی ہے جنبوں نے ارادہ کیا تھا کہ اجھے کیڑے اہار دہیں' عورتول کوچھوڑ دیں اور زاہرین جائیں 'ان میں حضرت مختان بن مطلعون اور حضرت علی بن ابی طالب رمنی اللہ عنما ہے۔ (جامع الجبيان 'ع '٤٠٤ مُص ١٣ مطبوعه داد الفكر ' بردت ١٣١٥ هـ)

الم ابوداؤد سليمان بن اشعث متولى ١٥٥ اله روايت كرت بن

ھے۔ بابید اپنے والد یا بھا ے ووایت کرتی ہیں کہ وہ وسول اللہ بھی کہاں گئے 'جروائیں جلے آئے۔ پرایک مال کے بعد وویارہ آپ سے ملے گئے 'اس وقت ان کا جم کزوری کی وجہ سے بہت منظیرہ دیکا تھا۔ انہوں نے کہا: یا رسول اللہ اکیا آپ نے نے جھے نہیں بہانا ۔ آپ نے ہے آیا تھا۔ آپ نے بہت منظیرہ بہانا ہے بہت مالے بہت مالے بہت سے ایا تھا۔ آپ نے بہت آپ کے باس سے کیا ہوں' می او چھا آپ کی وجہ سے آپ کے باس سے کیا ہوں' می او چھا آپ کی وجہ سے آپ کے باس سے کیا ہوں' می نے بہت انہوں نے کہا میں جب سے آپ کے باس سے کیا ہوں' می نے بہت وہا آپ کے باس سے کیا ہوں' می نے بہت انہوں نے کہا وہ کہا تھا ہوں ہو کہا اور ہر مہینہ میں آب سے فرایا آپ نے انہوں نے کہا کہا اللہ می ہو ہوں نے کہا زیادہ کریں جو میں اس کی بات سے فرایا ہم اور انہوں نے کہا کہا وہ دو روز سے درکھ اور ہر مہینہ میں آب سے فرایا ہم اور ہر مہینہ میں اور کہا کہا ہماہ دو روز سے درکھ اور انہوں نے کہا کہا تھا وہ کہا تھا وہ کہا ہماہ دو روز سے درکھ اور انہوں نے کہا کہا ہماہ دو رکھ وہو ڈوا 'وم کے مہینہ میں دوزہ درکھ وہو ڈوا 'وم کے مہینہ میں دوزہ درکھ وہو ڈوا ۔ آپ نے تھی انگلے سے خرایا ہم کے مہینہ میں دوزہ درکھ وہو ڈوا ۔ (اس کا مطلب سے سے کہ حرم کے مہینہ میں تھی میں میں میں میں اور کہ اور اس طرح تھی باد کو ' بھی صرف حرم کے مہینہ میں اور تھی میں دوزہ درکھ کہا دور اس طرح تھی باد کو ' بھی صرف حرم کے مہینہ میں او تھی دوزے درکھ کی دوزے درک

(سنن ابوداؤد "ع"رقم المدعث ٢٣٢٨ مطبوعه وارّا لكتب الطبيه "بيروت ١٦١٧؛ هـ)

المام محمدين انها على عفارى متوفى ٥٦١ مدروايت كرية إلى:

حضرت عائشہ رمنی اللہ عنما میان کرتی میں کہ ان کے پاس نی بڑھی تشریف لائے اس وقت ان کے پاس ایک مورت مجھی اولی تھی۔ آپ نے پوچھا میہ کون ہے؟ صفرت عائشہ نے کما میہ قلال مورت ہے اس کی نمازوں کا بڑا چرچا ہے۔ آپ نے فرطا چھوڑو 'ان ممن کرد جو بھٹ کر سکو' بخد الماللہ اس وقت تک نہیں آئی آجب تک تم نہ آئیاؤ' اور اللہ کے نزدیک پہندیدہ ممل وہ ہے جس پر بڑے ویکھی کرے۔

(منح البحاري على رقم الحديث: ٣٣ منح مسلم "مسافرين ٢٣١" (١٨٥) ١٨٠٣ من النسائي " ج٣ وقم الحديث: ١٣٣ ع. وقم الحديث: ٥٠٥٠ سنن أين بابد " ج٣ وقم الحديث: ٨٣٣٣ منذ ابد " جه" وقم الحديث: ٢٣٣٩١ طبح حاد العكو "منذ ابد " جه" ص ان المبح قد يم "موطالهم بالك" وقم الحديث ١٣٠٥)

حضرت انس بن مالک برہتے۔ بیان کرتے ہیں کہ نبی جہر کھر جل داخل ہوئے تو دو ستونوں کے ور میان ایک رسی بندھی ہوئی تھی۔ آپ نے ہو چھاہے دس کیس ہے؟ تو ہتایا ہے زینب کی رسی ہے جب دو (نمازیس) تھک جاتی ہیں تو اس رسی کے سمارے کھڑی ہو جاتی ہیں۔ نبی جھیں نے فرمایا نسیس اس کو کھول دو' تم میں سے کوئی مخص جب تک فوشی ہے نماز پڑھ سکتا ہے' پڑھے اور جب تھک جائے' تو جیٹے جائے۔ امجے ابواری' ج۴ر رقم الیمت: ۱۵۰۰ سنس انسائل' ج۳۰ رقم الیمت: ۱۳۳۲)

الم محدين اساعيل عفاري متوفي ١٥١ مد روايت كرت بن

حفرت ابن عباس رمنی اللہ عنما بیان کرتے ہیں کہ نبی خطبہ دے رہے تھے اچانک آیک محنس کو (وحوب میں)
کھڑے ہوئے دیکھا آپ نے ہوچھا یہ کون ہے؟ محلبہ نے کمایہ ابو اسرائیل ہے۔ اس نے نذر مافی ہو کہ ارہ گا جہنے گا
میں 'ند سلیہ ٹس آئے گا اور نہ کمی ہے بات کرے گا اور روزہ رکھے گا۔ نبی میں ایک فرمایا اس ہے کمو کہ بات کرے 'سایہ میں
آئے اور جہنے اور اینا روزہ ہورا کرے۔

(مع البحادي ين من أم الحديث: ١٠٥٣ سن الإداؤو"ج " رقم الحديث: ١٠٠٠ سن ابن مايد "جار قم الحديث: ١١١٣٠ موطالهم

مالك وقم المعتد ١٩٦٩ مند احد "ج ١١ م ١٨٨ طبع قدي

حضرت حقب بن عامر جہتے بیان کرتے ہیں کہ میری بمن نے نذر مانی تھی کہ وہ پیدل ہل کربیت اللہ جائے گی۔ انہوں نے کماکہ جس نے سوچاکہ جس نی جہاتہ آپ ہے اس کے حقاق فق بی معلوم کروں میں نے آپ ہے ہو جہاتہ آپ نے فرمایا وہ جج کو جائے اور سوار ہو۔ امام ترفری نے اس مدیث کو صفرت انس سے دوایت کیا ہے۔ اس میں ہے نبی جہیں ہے فرمایا اللہ اس کے پیدل جانے مستنتی ہے اس سے کو سوار ہو۔

(میخ انبطاری میج انبطاری میج است. ۱۸۲۱ میج مسلم ایزر ۱۱ (۱۳۳۳) ۱۵۲۳ سنن ترزی جه ۱ رقم الدین ۱۳۰۰ سنن ابوداز و ۲۰ م رقم الحدیث: ۲۲۹۹ سنن انسطالی ج ۷ وقم الحدیث: ۳۸۱۳)

حضرت انس جوہی بیان کرتے ہیں کہ نی جھید نے دیکھا ایک بو رہا فض جو ہل نہیں سکاتھا اے اس کے دو بینے پار کرچا ارب تھے۔ آپ نے بوچھا یہ ہیا کیوں کر دہا ہے؟ محلب نے کہا اس نے پیدل نج کرنے کی نذر مانی تھی۔ آپ نے فرمایا اللہ تعالی اس سے مستنی ہے کہ بیر اپنے نفس کو عذا ب دے اور اس کو سوار ہونے کا تھم دیا۔

(مي البخاري من وقم المديث ١٨٧٥ مي مسلم "غورة" (١٧٧٩) ١٧٧٩ من الإداؤد جه" وقم المديث ١٠٣١ من ترزي جه" وقم المديث ١٥٣٢ من نسائل من وقم المديث ١٨٧٣ ١٨٧٧ مند احر " جه" وقم المديث ١٣٣٨ مند الإيعلى " جه" وقم المديث ١٣٣٣ ١٨٧٣ من احر المريث ١٣٣٨ من الإيمان من الإيمان من المريث ١٣٣٨ من الإيمان من المريث ١٣٣٨ من المريث ١٣٣٨ من المريث المريث ١٣٣٨ من المرين ال

الم احمد بن عليل متوفى الموجد روايت كرت بن

حضرت ابدا کہ روایز بیان کرتے ہیں کہ ہم رسول اللہ روایز کے ماتھ ایک فکر میں گئے ایک فض ایک غار میں کیا ہی ہے اور اس کے میں پینے کے لیے پانی بھی تھا اس فیض کے وال میں بید خیال آیا کہ اگر وہ اس عار میں دہ ہو آئی ہی ہے اور اس کے اور اس کا دی اور میزال بھی ہیں اور وہ ایک اس کے اور میزال بھی ہیں اور کر کوں۔ اگر آپ نے اجازت دے دی وہی اس عار میں دبول گا ور تہ نمیں ربول گا۔ اس کے ایس جا کر اس کا ذکر کروں۔ اگر آپ نے اجازت دے دی وہیں اس عار میں دبول گا ور تہ نمیں ربول گا۔ اس کے آب سے عرض کیا یا ہی افتد ایس کے اور میزال بھی ہیں۔ اور اس وال اور وہا کے کھیڑوں ہے آزاد ہو جاؤں۔ نبی بڑی ہے فرایا میں میودیت اور میران ہی ہیں۔ اور اس والے کا کہی ہیں۔ اور اس والے کا کہی ہیں۔ اور اس والے کا کہی ہیں کہا گا ہے مانے جمہوں کو بہت آمان ہے اور اس والے کی میں کہا گا کہ میں میوٹ کیا گیا میں میں ایک میں کرے ماتھ جمہوئی ایک شام گزار دا وہا وہا ہی باور تم میں ہے کمی ایک میں کا جداد کے لیے مل میں میں کرے اور تم میں ہی کرتے اور تم میں ہی کرتے ہی گا ہی کہ دورت میں میں میں کرنے ہو بائیں کی کرتے ہو گا کہ میں کرتے ہیں گا ہی کرا دیا دیک ہے مل میں میں کرنے ہو بائی کی خوادوں ہی ہو ہے۔

(علامه احد شاكر منوفی بری معد نے كما اس مدید كى شد حس ب مد احر استخیق احد شاكر اجما ارقم الدید: ۱۲۱۹ فیج ذار الحدیث قابرد- مسند احد اج ۵ م ۲۲۱ فیج قدیم الکیر للفرانی جه ارقم الحدیث ۱۲۸۸ اجمع از دائد اید اج ۵ م ۲۵۹)

المم محدين اساميل عفاري متوفى ١٥١ه روايت كرت من

حصرت ابو ہریرہ جوہتی بیان کرتے ہیں کہ نبی ہی ہی گئی نے فرالی بلاثب وین آسان ہے جو شخص اس دین کو مشکل بنانے کی کو شش کرے گا وین اس پر عالب آ جائے گا۔(الحدیث)

(مح البخارى "جاارةم الديث: ٢٩ مطور وار الكتب العليه ابروت موالاه) حصرت الوجرية والمراكب العليه ابروت موالاه م المرت الوجرية والمراكبة بيان كرسة بيل كروسول الله ما يجيد المركبة المراكبة المركبة الم

ك لي دين بيج معد (مع بلوادي ع) رقم العصف ١٢٠ مطبور داد الكتب العليه بيدت ١١٠١٠ مع

اور الله تعالى ارشاد قرما ماسيد

اللہ تمہارے لیے آسانی کاار اوہ قرما آئے ' تم کو مشکل میں ڈالعے کاار اوہ قبیل قرما آ۔ بُرِيدُ اللّهُ بِكُمُ الْبِسْنَرُولَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ (البقره: ۱۸۵)

اسلام معتدل "مهل اور دین فطرت ہے

ان آیات اور احادیث سے یہ واضح ہو آئے کہ اسلام دین فطرت ہے 'وہ توسید اور اعتدال کا تقاضا کر آ ہے اور اس میں افراط اور تعلیم کی اسلام دین فطرت ہے 'وہ توسید اور اعتدال کا تقاضا کر آ ہے اور اس میں افراط اور تغریط ممنوع اور ندموم ہے 'ای طرح اسلام میں سخت نور مشکل میادات مطلوب نہیں ہیں' بلکہ اسلامی احکام میں نری ' ملائمت 'سمولت اور آسائی مرقوب ہے۔ اسلام کاکوئی تھم خلاف فطرت نہیں ہے ' رسول اللہ میں کار شاد کر ای ہے ہم میں رہائیت نہیں ہے۔ اسلام کاکوئی تھم خلاف فطرت نہیں ہے ' رسول اللہ میں کار شاد کر ای ہے ہم میں رہائیت نہیں ہے۔ (اسل المتناهد 'ج۲م میں اور آسائی المتناهد 'ج۲م میں ا

اور آپ نے فرایا اے عثمن اہم پر روبائیت فرض نہیں کی گئے۔ اِمصنف عبدالر زال 'جہ' رقم الحدیث، 20 ۱۰۳ منن ، اری' ع'' رقم الحدیث: ۲۲۷۹) اسلام میں ترک لذائذ' مخت ریاضات اور عبادات شاقہ ممنوع میں 'مصنوعی زاہدوں اور جعلی صوفیوں نے جو خود ساختہ شریعت وضع کرلی ہے اس کا اسلام میں کوئی ثبوت نہیں ہے۔

نیک اور فعنیلت حاصل کرنے کا اصل اور صحیح طریقہ وہ ہے جس پر رسول اللہ موجیج نے عمل کیا اور جو راستہ ہمارے لیے مقرر کیا اور جس طریقہ پر صحابہ کرام گھنزن رہے اور اخیار آبھین نے جس کو اینایا۔

حضرت عماض بن ساریہ بی بین کرتے ہیں کہ ایک دن صبح کی نماز کے بعد رسول اللہ میں ہے ہے کو بہت بلیخ نصیحت کی جس سے ہماری آنکھوں سے آنسو جاری ہو گئے اور ہمارے دل خوف زوہ ہوگئے۔ آپ نے قربایا میں حمیس اللہ سے ڈر نے کی فیصت کر ناہوں اور امیر کا تھم سنے اور اس پر عمل کرنے کی خواہ وہ حبثی غلام ہو کی جگر جو خض تم میں سے زندہ رہے گاوہ بہت اختیافات و کیے گا کو و تم بدعات (بینہ) سے بچتے رہنا کو تک وہ گرای ہیں ہم میں سے جو مخض اس اختیاف کو پائے تو اس پر مماری میں ہم میں سے جو مخض اس اختیاف کو پائے تو اس پر ماری میں ہوں کے دو میری سنت پر عمل کرے اور میں اس اختیاف کو پائے تو اس پر ماری سنت پر عمل کرے اور میں اس اختیاف و اشدین میں سنت پر عمل کرے اور اس کو دا زھوں سے پائر نے ۔ اہم ترزی کے کہا یہ صدیف حسن میں ہے۔

(مغن ترفدي كيم المقم المصعف ۱۳۷۵ مغن الإداؤد " ج ۳ رقم المصصد ۱۳۹۸ مغن اين بايد ' ج: ' رقم المصصد ۲۳ مغن داري ' ج) وقم المحت ۱۵ مند احمد " ج ۳ وقم الحديث ۱۳۵۵)

سنن ترزی کے علاوہ باتی کتب مدیث علی اس طرح ندکور ہے اکم تکہ تم میں سے جو طخص میرے بعد زندہ رہے گاوہ بہت اختلافات دیکھے گا' سوتم پر لازم ہے کہ میری سلت پر عمل کرو 'اور خلفاء راشدین میصد پین کی سنت پر عمل کرواور اس کو داڑھوں سر کوالہ

آیا طال کو خرام کرنا تھم ہے یا نہیں؟

ذیر بحث آیت میں اللہ تعالی نے ارشاد فرمایا ہے اے ایمان والوا تم ان چیزوں کو حرام قرار ند دوجن کو اللہ نے تمہارے کے حلال کردیا ہے 'اور صدے نہ بوحو' ہے شک اللہ صدے برجنے والوں کو پہند نہیں کر تا۔ (المائدہ: ۸۵)

اس آیت میں اللہ تعالی نے طال کو حرام کرنے کے متعلق یہ نہیں فرایا کہ یہ قسم ہے اور نہ اس پر کفارہ لازم کیا ہے۔ اس کے وجہ سے ایم مالک اور ایام شافعی کا یہ فرجہ ہے کہ طال کو حرام کرنا تھم نہیں ہے کاور نہ اس پر کفارہ لازم آتا ہے۔ اس کے

عبيان القر أن

برخلاف الم ابوطیغد اور الم احمد کے نزدیک طال کو حرام کرناتھم ہے اور اس پر کفارہ لازم سم آہے۔ امام مالک کے نزد یک حلال کو حرام کرنافتھم ہے یا نہیں؟ علامہ ابوعبداللہ محمدین احمد مالکی قرطبی متونی ۲۱۸ ہے تھیج ہیں:

جو مخص اپنے تھی پر طعام کو یا مشہوب کو یا چی باندی کو حرام کرتے گا ہے بھی طال چڑکو حرام کرتے وہ اس پر حرام نہیں

ہوگی اور نہ انام مالک کے نزدیک اس پر ان میں ہے کسی چڑکے حرام کرتے کی دجہ ہے کفارہ ہے۔ ہاں اگر وہ باندی کو حرام کر

ہوگی اور نہ انام مالک کے نزدیک اس پر ان میں ہے کسی چڑکے حرام کرتے کی دجہ ہے کفارہ ہے۔ ہاں اگر وہ باندی کو حرام کر

ہوگا تا اور کرتے کی نیت کرے کو ہ اللہ تعالی نے اس کے لیے میاح کردیا ہے کہ وہ اپنی بیوی کو طلاق دے 'خواہ صراحتا' نواہ

منا طلاق و اتح ہو جا کی گی کی نکہ اللہ تعالی نے اس کے لیے میاح کردیا ہے کہ وہ اپنی بیوی کو طلاق دے 'خواہ صراحتا' نواہ

کنا تا اور حرام کرنا کنایات طلاق میں سے ہے کاور الام ابو صنیقہ نے ہے کہا ہے کہ جو شخص کسی چڑکو حرام کرے گا'وہ چڑاس پر حرام

ہوجائے گی اور جبوہ اس چڑکو تعاول کرے گائو اس پر کفارہ لازم آئے گااور یہ آبت ان پر دو کرتی ہے۔

(الجامع لا حكام المتر آن " 77" م ١٩٧ مطبور داد المفكو " بيروست ١٣١٥ هـ)

علامہ قرطبی کا یہ کمنا میج نہیں ہے 'یہ آیت الم ابوضیفہ کے اس وقت ظائف ہوتی جب اس میں یہ نہ کور ہو تا کہ طال کو حرام کرنا ہم نہیں ہے 'یا اس میں کفارہ نہیں ہے 'کفارہ کا ذکر نہ کرنا مرم کفارہ کے ذکر کو کب مستان ہے؟ امام شافعی کے نزدیک طال کو حرام کرنا قسم ہے یا نہیں ا علامہ بجیٰ بن شرف نووی شافعی متونی ایجادہ کیمنے ہیں:

جب کوئی فضی آئی ہوی ہے کے کہ تم جمہ پر حرام ہوتواں میں علاء کا اختلاف ہے 'اہام شافعی کا نہ ہب ہے کہ اگر وہ اس تو فعل سے طفاق کی نیت کرے تو بیہ ظمار کے نیت کرے تو بیہ ظمار ہے 'اور اگر طلاق اور ظمار کے نیت کرے تو بیہ ظمار ہے 'اور اگر طلاق اور ظمار کے بیٹے رہے نیت کرے کہ وہ بعینہ اس پر حرام ہے تو بیہ حتم نسی ہے لیکن اس پر حتم کا کفارہ دینالازم ہے 'اور اگر اس نے بغیر نیت کے بیہ الفاظ کے تو اس میں اہام شافعی کے دو قول جی زیادہ سمجے ہیں ہے کہ اس میں کفارہ حتم لازم ہے اور دو سرا قول ہیں ذیارہ سے کہ یہ کلام لفو ہے اور اس بر کوئی عظم مرتب نسیں ہوتی' یہ امار اند ہب ہے۔

الشج مسلم مع شرد التووي اج ١٩٠٠ من ١٥٠٠ مطبور كمتبد زار مصطفى الباز بكد كرمد الااطاط)

نيز علامه نووي شافعي لکينته بين:

الم مالک الم شافعی اور جمور کامسلک یہ ہے کہ اگر کوئی فخص یہ کے کہ یہ طسام جھے پر حرام ہے ایر پائی ایر کہا اور جمور کامسلک یہ ہے کہ اگر کوئی فخص یہ کے کہ یہ طسام جھے پر حرام میں اخل ہونا یا زید سے بات کرنا اور یہوی اور باندی کے علاوہ باتی چیزوں میں سے کسی بھی چیز کے متعلق یہ بھے پر حرام ہو گا اور نہ وہ چیزاس پر حرام ہوگی اور جب وہ اس چیز کو تعاول کرے گاتو اس پر کوئی کفارہ نہیں ہوگا۔ اس پر کوئی حکم مترتب نہیں ہوگا اور نہ وہ چیزاس پر حرام ہوگی اور جب وہ اس چیز کو تعاول کرے گاتو اس پر کوئی کفارہ نہیں ہوگا۔ اس پر کوئی حکم مترجہ سانوری ہے اس مع شرحہ سانوری کی کارہ نہیں ہوگا۔ اس کے نزو کیک حلال کو حرام کرنا تسم ہے یا نہیں ؟

علامه موفق الدين عبدالله بن احمد بن قدامه صبلي متوفى ويده واللهة بن

اگر کمی فض نے کمااگر میں نے فلان کام کیاتو اٹ نے جو جھے پر طال کیا ہے وہ حرام ہے۔ پھراس نے اس کام کو کرلیا تو اس کو افتیار ہے یاتو جن چیزوں کو اس نے اپنے فنس پر حرام کیا ہے ان کو ترک کردے یا جاہے تو گفارہ وے۔ حضرت ابن مسعود ' حسن بھری' جابر بن زید' قبادہ' اسحاق اور اٹل عراق کا بھی مسلک ہے۔ اور سعید بن جیسو نے کما جس محض نے کما طال جھے پر

هِيانَ القر أنْ

حرام بن میں میں ہے۔ اور وہ اس کا کفارہ دے گا۔ اور حسن نے کہا ہے ہم ب اسوا اس صورت کے کہ وہ اس ہے اپنی ہوی کی طلاق کا ارادہ کرے۔ ایرائیم تھی ہے بھی اس کی حل موی ہے اور ان کا دو مرا قول یہ ہے کہ آگر اس نے طلاق کی نیت کی ہے قو درست ہے دونہ یہ قبل انتو ہے۔ خواک ہے روایت ہے کہ حضرت ابو بکر محرت عرادر حضرت ابن مسعود ہے یہ روایت ہے کہ حوام محم ہم ہم ہے اور طاق سے کہ ایرا محم ہم ہم ہے اور اس کی نیت پر مو قوف ہے۔ امام بالک اور ایام شافعی نے کہا جوام حم نہیں ہے اور اس کی نیت پر مو قوف ہے۔ امام بالک اور ایام شافعی نے کہا جوام حم نہیں ہے اور اس کی خوام کو خوام کو خوام کو خوام کو نے پر اللہ تعالی نے پر کوئی کفارہ خمیں ہے میں کہ حسام کو حرام کرنے پر اللہ تعالی نے با یہ بیا النہ ہم ہے دور اس محم ہے نواز کو حرام کرنے ہو اللہ کو حرام کرنے ہو تھی ہو ت

الم ابوسنید کے زدیک طال کو حرام کرنا تم ہے اور اس پر کفارہ لازم آ باہدان کا استدلال قرآن مجید کی اس آسے سے

اے جی آب (اپ اور) اس جزاد کوں حرام قرار و بے
جی جس کو اللہ نے آپ کے لیے طلال کر دیا ہے؟ آپ اپنی
جو بول کی د ضا دوئی کرتے جی اور اللہ بست بخشے واللہ بو مد
وحم قرائے واللہ ہے ۔ (اے انجان والوا) یے فک اللہ نے
تصادی قدموں کا کھولنا مقرد قرادیا ہے ۔ (یعنی کفار د)

يَّانَهُمَّا النَّيَّيُّ لِمَ نُحَيِّمُ مَّا اَحَلُّ اللَّهُ لَكَ نَبُنَوْشُ مَرُّمَنَاتَ آرُوَاجِكَذَ وَاللَّهُ كَعُورُ رَّجِيْمُ فَدُفَرَضَ اللَّهُ لَكُمُ نَجِلَّةً أَيْمَالِكُمُ رَّجِيْمُ فَدُفَرَضَ اللَّهُ لَكُمُ نَجِلَّةً أَيْمَالِكُمُ (النحريم 14)

ن المراق معده مده من المراق ا

الم سعیدین منعور خراسانی متونی عصد دوایت کرتے ہیں: شحاک بیان کرتے ہیں کہ حضرت صفد ام الموضحن ایک دن اپنے والد کی زیارت کے لیے تئیں اور اس دن حضور کی ان

جيان القر ان

کے گریں ہاری تھی اجب رسول اللہ عظیم کر آئے ہی آپ نے ان کو گری نہیں دیکھا اتب آپ نے اپنی ہاندی حضرت ماریہ تبدیہ کو بانا لیا اور حضرت حضد کے جروی ان ہے اپنی خواہش ہوری کی اور اس صافت میں حضرت حضد آ بہنی اور کئے قلیں ا بارسول افقد آپ میرے گریں اور میری باری میں یہ عمل کر رہے ہیں؟ آپ نے فرایا یہ جھ پر حرام ہے اور تم یہ کسی کو نہ بتانا معضرت حضرت عائشہ کے پاس محکس اور ان کو یہ واقعہ بتایا۔ تب سورہ تحریم کی آیک تا جار آ بیش عازل ہو کیں۔ اللہ تعالی سے ایک تا جار آ بیش عازل ہو کیں۔ اللہ تعالی سے رہوئ کریں۔

(سنن سعیدین منعور میجا از قم الحدیث: ۷۰۱ مامع البیان ۴۸۲ می ۱۳۹۰ منن کبری للیمتی جری می ۳۵۳) امام محدین اسامیل بخاری متوفی ۲۵۷ مد روایت کرتے ہیں:

حضرت ابن عماس دمنی الله عنما بیان کرتے میں کہ حرام کرنا تھم ہے اس کا کفارہ اوا کرے۔ اور حضرت ابن عماس نے

فرمایاکه تمهاری کی دسول افته مزهیج (کی سیرت) پس احجهانمونه ہے۔ (مسیح البخاری کی جوم کو برقم الحدیث: ۱۹۱۱-۵۳۷۱ مسیح مسلم کلاتی ۱۸٬ (۱۳۷۳) ۱۳۹۱۳ مشن این ماج کیج اکر قم الحدیث: ۲۰۷۳) الم مسعید بن منصور تواسانی متوفی ۲۴۴ مدروایت کرتے ہیں:

ہوئٹ بیان کرتے ہیں کہ حس بھری ہے سوال کیا گیا ایک فض نے کما طال جھے پر حرام ہے۔ انہوں نے کما جب تک وہ اس سے اپنی بیوی کی نیت نہ کرے اس یر قتم کا کفارہ ہے۔

اسنن سعید بن منصور 'ج ۱' رقم الحدیث ۱۹۸۵ مطبور وار الکتب الطب پیروت 'سنن کبری ج ۲ مس۱۳۵) مطاع نے کماجب کوئی مخص میہ کے کہ اس پر جرحال حرام ہے توبیہ حتم ہے ' دواس کا کفار دادا کرے۔

(سنن سعيد بن منعود " ج ا" و قم الحديث : ١٦٨٨)

معید بن جبید نے کما جب کوئی مخص یہ کے کہ طلال اس پر حرام ہے تو یہ تشم ہے وہ اس کا کفارہ وے۔ (سٹن سعید بن منصور "ج ا"ر تم الدیث: ۱۲۹۲)

حطرت!بن مسعودیے فربلیا حرام کرنے مسلم ہے۔(سنن سعید بن منسور ' رقم الحدیث: ۱۹۹۳) شخاک بیان کرتے ہیں کہ حضرت ابو بکر 'حضرت عمراور حضرت ابن مسعود رمنی اللہ عشم نے کما حرام مسلم ہے۔ شخاک بیان کرتے ہیں کہ حضرت ابو بکر 'حضرت عمراور حضرت ابن مسعود رمنی اللہ عشم نے کما حرام مسلم ہے۔ (سنن سعید بن منصور ' در آم الحدیث ۱۹۹۵)

ایرایم نعمی نے کماجس مخص نے اپنی بیوی ہے کماؤ جو پر حرام ہے اگر اس نے اس قول ہے تین طلاق کی ثبت کی تو تین طلاقیں بول کی اور ایک طلاق کی نبیت کی تو ایک طلاق ہوگی اور اگر کوئی نبیت نبیس کی توبید کتم ہے جس کاوہ کفارہ دے گلہ (سٹن سٹیدین مُنصور اُنجا 'رقم الحدیث: ۱۹۹۹)

حضرت ابن عبائی نے قربایا حرام سنم ہے۔ (سنن سعید بن منعود 'جا' رقم الحدیث: سمیدا) ابراہیم خلق اور عبیدہ نے کماجس مخض نے اپنی باندی ہے کمالا جمد پر حرام ہے تو یہ تنم ہے جس کارد کفارہ دے گا۔ (سنن سعید بن منعود 'جا' رقم الحدیث :۵۰۵)

مروق بیان کرتے ہیں کہ وسول الله عظیم سے حضرت حفد کیلئے تھم کھائی کہ آپ اپنی باندی سے مقاربت نہیں کریں کے اور قربایا یہ جھد پر حزام ہے " تب آپی تھم کیلئے کفارہ نازل ہوا اور اللہ تعالی نے آپکو یہ تھم دیا کہ آپ کیلئے جو چیزاللہ نے حلال کی ہے آپ اسکو حرام نہ کریں۔ (سنن سعید بن منصور " بنا اور اللہ عند ۸ میداسن کبری الکھتی " جے اس میدان

نبيان القر آن

جلدسوم

(زکور العدر احلیت اور آثار مصنف عبدالرزاق ج۲٬ ص۴۰۹،۳۹۰ مصنف این الی شید کی ص۵۰۰ ۲۰۱۰ سنن کرکل للتصتی کی محم ۱۳۵۰ مین ۳۰۹۰ اور جامع البیان کر ۲۸٬ می ۱۸۸۰ مین بحی ذکور بین اور ان احلویت اور آثار مین اس پر مرزک دلیل ہے کہ حلال کو حرام کرنا تنم ہے لور این پر کفار ولازم ہے)

علامد بدر الدين محمود بن احمد يمنى حنى متوفى ١٥٥٥ مد لكيت ين.

(البناب شمرة العداب على مهم المعلمة المسلفصة المطبوع هاوالفكو اليوت الاعلم في القديم عن م ١٥٣٠٠٥ مطبور وارالكتب انظر اليوت ١٥٣١ه)

یوی سے کما" تو بھے پر حرام ہے"اس میں مفتی بہ قول

اگر کوئی مخص اپن زوی سے کے کہ " تو جھے پر حوام ہے " تو اس کے متعلق الم اعظم کا ند مب میان کرتے ہوئے علامہ مینی حنلی تکھتے ہی:

اگر آس نے اس قول سے طلاق کی نیت کی تو طلاق بائن داقع ہو جائے گی اور اگر تین طلاقوں کی نیت کی تو تین طلاقاین ہوں گی اور اگر دو طلاقوں کی نیت کی توالک طلاق ہو گی اور اگر یکھے نیت نمیں کی توبیہ تسم ہے اور اگر اس نے جموٹ کی نیت کی توبیہ کلام مغوہ ' بید الم ابو مغیفہ اور ان کے اصحاب کاتر جب ہے۔ (عمد قالقاری 'جاامی ۱۳۷۸' سمج مسلم مع شرد النودی 'جہ تمیں کے ۱۰۰س

علامه عرس على بن محمد مسكني حنى متونى ١٠٨٨ مد لكست بن:

ایک فض نے اپی پیوی ہے کہ اور اور اور ایس نے تربم کی نیت کی اکوئی نیت نیس کی تو یہ ایلاء ہے (ایلاء میں اور اور اور ایس کے دایک فض سے تسم کوری کی تو چار باو بعد اس کے دایک فض سے تسم کوری کی تو چار باو بعد اس کی بیوی ہے مقاربت نیس کرے گا۔ اگر اس نے تسم پوری کی تو چار باو بعد اس کی بیوی پر طلاق بائن واقع ہو جائے گی اور اگر تسم تو ڈوی تو اس کو کفارہ تسم دینا ہوگا۔ معیدی غفرار اور اگر اس نے ظمار کی نیت کی تو یہ کلام نفو ہے۔ یہ تھم دیات ہے اور قضاء ہے ایلاء ہے۔ (بین اس کے جموث کی نیت کی تو یہ کلام نفو ہے۔ یہ تھم دیات ہے اور قضاء ہے ایلاء ہے۔ (بین اس کے جموث کی نیت کی اور آگر اس نے یہ ایلاء یہ کھول کیا جائے گا)

(در مخار على روالعتار 'ج ۴ م ۵۵۳ مطبوعه واراحیاء الراث العربی 'بیروت ٬ ۵۵۳ اهر)

علامد سيد محد اين اين عليدين شاي حنى منوفى ١٥٥٣ مداس كي شرح من لكهة بن:

کتاب الایمان میں مذکور ہے کہ ایک مخص نے کما ہر طال بچھ پر حرام ہے توبہ قول کھانے پینے پر محمول ہے اور فتوئی اس پر ہے کہ بغیر نیت کے اس کی بیوی پر طلاق بائنہ پڑجائے گی- ہدایہ میں مذکور ہے کہ عرف کی وجہ ہے یہ قول کھانے بینے پر محمول ہے' اگر اس نے کھلایا پہاتو اس کی قسم ٹوٹ جائے گی' اور بغیر نیت کے اس کا یہ قول اس کی بیوی کو شامل نمیں ہوگا اور اگر وہ نیت کر لے تو پھر یہ ایلاء ہے۔ یہ جو اب فلا ہر الروایہ کے مطابق ہے۔ پھر مشائخ متا فرین کا مختار یہ ہے کہ بغیر نیت کے اس کی بیوی پر طلاق بائنہ پڑجائے گی۔

ظلامہ ہے کہ متن بی جو ذکور ہے کہ اس نے مورت کے جرام ہونے کی نیت کی یا کوئی نیت تہیں کی تو یہ ایلاء ہے اور اگر اس نے جموٹ کی نیت کی تو یہ کلام لتو ہے۔ یہ اس صورت میں ہے جب اس نے باخصوص بیوی ہے کہ ان تُو جھے پر جرام ہے اس کے برظاف جب اس نے باخصوص بیوی ہے کہ ان تُو جھے پر جرام ہے اس کے برظاف جب اس نے عام لفظ بولا مثلا اللہ کا برطال جھے پر جرام ہے تو یہ قول عرف کی بنا پر کھانے پیٹے کے ساتھ خاص ہے اور یہ کلام بیوی کو اس دقت شامل ہو گا جب دواس کلام ہے بیوی کی نیت کرے اور فتوی متا فرین کے قول پر ہے کہ دوعام لفظ ہو لے (مثلاً برطال جمعے پر جرام ہے) یا خاص لفظ ہو لے (مثلاً بیوی کی نیت کرے اور فتوی متا فرین کے قول پر ہے کہ دوعام لفظ ہو لے (مثلاً برطال جمعے پر جرام ہے) یا خاص لفظ ہو لے (مثلاً بیوی ہے کہ نیت کرے اور فتوی متا ہوں کی بیوی پر طلاق بائن پر جائے گی۔ (کو فکہ یہ تیا عرف ہے اوگ طلاق دیے کے لیے یہ کتے ہیں) اس کے بعد علامہ شای نکھتے ہیں:

عالمکیری جس ندکور ہے فتولی اس پر ہے کہ اس کلام ہے بلا نیت طلاق واقع ہو جائے گی، کیونکہ اب اس کلام کا غلبہ استعال ارادہ طلاق جس ہے۔(عالمکیری' ج۴ مساحی مطبوعہ صابعہ امیریہ کبری بولاق معر، ۱۳۴۰ھے)

الم احمد رضا قادری کی بھی کی تحقیق ہے۔ (فالوی رضویہ عند) مسلوم مطبوعہ عن دارالاشاعت فیمل آباد) پاکتان) اللہ تعالی کاارشاد ہے: اور اللہ کے دیئے ہوئے طال پاکیزہ رزق سے کھاؤ اور اللہ سے ڈرتے رہو، جس پر تم اندان رکھنے دالے ہو۔ (الماکرہ: ۸۸)

افضل یہ ہے کہ مجھی نفس کے جائز نقاضوں کو پورا کرے اور مجھی نہ کرے

برچند کداس آیت میں القد کے دیے ہوئے حال رزق ہے کھانے کاؤکر ہے، لیکن اس کامعتی ہے ہے ۔ اللہ کی دی ہوئی تمام نوتوں سے بسرہ اندوز ہو۔ اس میں کھانے پینے کے علاوہ لباس مکان سواری اور ازدواج کی نعتیں شامل میں اور بالخصوص کھانے پینے کی نعمتوں کا اس لیے ذکر فردیا ہے کہ ہے انسان کی اولین اور بنیادی ضرورت ہے۔ کھانے اور نباس میں لذا کذاور مرغوبات کے متعنق بعض علاء کا یہ نظریہ ہے کہ ان کو ترک کرنا اور ان سے اعراض کرنا افعنل ہے، تاکہ انسان نفسانی خواہشدوں

کا غلام نہ بن جلے اور بعض علاء کی رائے ہے ہے کہ جب اللہ نے افسان کو دسمت دی ہو تو اس کو توسع احتیار کرنا چاہیے۔ لذیذ کھلنے عمرہ لباس ویصورت مکان اور اعلی درجہ کی سواریوں سے محتمع ہونا چاہیے اور اللہ کی ان نعموں کا شکر اواکر ارب اور حق داروں کے حقوق کو اواکر مارے " مہم توسط اور اعتدال زیادہ پندیدہ ہے۔ بھی مرغوبات تغسی سے حظ حاصل کرے اور تمجی نئس کے نقاضوں کو ہورانہ کرے گا کہ فقراور خنا کے دونوں مرتبوں کا جامع ہو جائے۔

نی باتین کو محریس جو لی جانا تعاوه آپ کمالیتے تھے۔ بھی کوشت اور منعی جزوں کی طرح عمره اور لذیذ طعام تاول فرمات اور مجى بهت ماده كمانا كمان آب تحك انتون ك تل إسرك ك ماند جوكى رونى كمالية تصريمي آب بموك رست اور پیٹ پر دو دو پھر پاندھ کیتے اور مجمی سیر ہو کر کھلا تناول فریا ہے۔ فرض! آپ کی سیرت طبیبہ میں تنگ وست اور خوش حال اور غنی اور فقيرسب تے ليے نمونہ ہے۔ آپ طعام سے زيادہ مشروبات كااجتمام كرتے تے اور آپ كو فعند ااور جنماياني بهت پند تھا اور آب برمال می خداکی راه می خرج کرتے تھے۔ خرج کم کرتے تھے اور ند فضول خرج کرتے تھے۔ اللہ تعالی ارشاد قرما آ ہے:

رلیسین دوسمة بن سعنه ومن فار عکیو صاحب بیت اوجاید کدودانی دیست کا مابق فرج ررقة مَلْبَدُونَ وسَنّا أَنَّهُ اللَّهُ لا يُكَلِّفُ اللَّهُ ﴿ كَاور جو عُدرت مووه اى من عرج كرے بوالله نے اے دیا ہے۔ اللہ ہر محض کو اس کے مطابق مکلت کر آ ہے

نَفْسَالِلْمَاأَتِهَا (الطلاق)

مناس كوديا ي-

الله تعالی کاارشاد ہے: الله تمهاري بے متعد قسموں پر تمهاري كرفت نيس فرمائے كاليكن تمهاري پخت قسموں پر تهاري كرفت فرمائے كا سوان كا كفاره دس مسكينوں كو درمياني شم كا كھانا كملانا ہے جيساتم اپنے كمروالوں كو كھلاتے ہوا يا ان مسكينول كوكيرك دينايا ايك ظلام آزاد كرناب جوان يل سے محل چزي قلور ته موقو تمن دن كے روزے ركے يہ تهارى قسمول کا کفارہ ہے جب تم ملم کماؤ (اور تو ڈور) اور اپنی قسمول کی حفاظت کرو ای طرح اللہ تمهارے لیے اپنی آیتی بیان قرما تا ے ماک تم شکراواکو-(الماعد M) مناسبت اور شان نزول

الم اي جعفر هيان جري طري عتران واحد رواعت كرت إل:

حضرت این عباین رضی الله مخمایان کرتے میں کہ جب سے آیت نازل ہوئی اے ایمان والواتم ان پہندیدہ چیزوں کو حرام قرار نہ دوجن کو اللہ نے تمہارے کیے حلال کردیا ہے المائدہ: ۸۵) توجن مسلمانوں نے اپنے اوپر مورتوں اور کوشت کو حرام کر لیا تھا انہوں نے کمایار سول اللہ ااب ہماری ان قسموں کا کیا ہو ہم کھا بیکے ہیں تو اللہ تعالی نے یہ آیت نازل قربائی اللہ تمہاری ب متعمد قسمول يركر الت نهيس فرائ كالرالاتي)

(بالع البيان 27 م ١٩-١٨ مغيور داد العكو أبيروت ١٢١٥ ه) خلامہ ہے ہے کہ جن مسلمانوں نے مور تیں ہموشت اور رات کی خیند ترک کرنے کی متمیں کھائی تھیں 'اللہ تعالیٰ ہےٰ۔اس آیت سے ان پر کفارہ لازم کردیا ' بینی وہ متم تو ژمیں اور کفارہ اوا کریں۔ ببين كالغوى اور اصطلاحي معني

يمين كازروك افت تين معنى من (ا) قوت (١) وابنا إلى (١) مم يمين به معني قوت اس آيت هي بيه:

وَلَوْنَكُونَكُولُ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَّاوِيْلِ ٥ لَأَعَدُنَا مِنْهُ بِالْبَيْدِينِ (الحاقه ٢٢٠٠٥)

يمين كامعنى دامنا بالترجى اس دجه سيسب كه اس من زياده قوت موتى بهد يمين به معنى دايان بالقداس آيت من ب اور اگروه (مرتے والا) وائی طرف والوں سے ہو اتواس ے کما مائے گا) تھو پر ملام او (ق) واکس طرف والول ہے

كت ويم ان كوبورى قوت ع مكر فية -

اور اگروہ (رمول) کوئی بھی بات ہم پر بناکر اپنی طراب ہے

وَاشَّاكِنُ كَانَ مِنَ ٱصْحْبِ الْيَعِبُ نِ ٥ فَسَلِمْ لكَدُينُ أَصَّحْبِ الْبَيِينُينِ ٥ (الواقعه: ٩٠٠٩)

يمين كاتيرامعنى شم ب جيماك زر بحث آيت يس باور شم يمين كااطلاق اس ليه يو ما ي كر جب اوك أيك دو سرے کے لیے طف افعاتے تو ایک دو سرے کا ہاتھ پکڑ لیتے۔ نیزا شم کے ذرایدے شم کمانے والدا پنے کام کو قوی اور سوکد

م کمانے کاجواز اور مشروعیت

الله تحال مراع ب الديد الله تعالى في الله تعالى باور في جيد كو بمي مل كما في كالحم دا بالله تعالى ك حم کمانے کی بے چند مثابی ہیں۔

وَ الشَّجْمِ إِذَا هَـوْى (التجمدا) لَا أُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ (البلد:) وَ النَّكُ مُنِي وَ صُبَحْهَا (الشبيس: ۱) وَالصُّحْيَ وَاللَّهُ إِذَا سَعْيِ (الضحي. ١٠٢)

روش ستارے کی متم اجب وہ فروب ہوا۔ یں اس شرک حم قربا آبوں۔ مورج اوراس کی چک کی حم۔ چاشت کی شم ااور رات کی شم اجب وه (نار کی کا) پرده

اور آپ ے پوچے یں کیاواقی وہ (واکی مذاب) برحق

ے؟ آپ كئے ال اميرے ربك حماده ير حق ب اور تم

اور کی جی کوان آیات یں حم کمانے کا حم دیا ہے: وَيَسْنَنْ مِعُوْسَكَ آحَقُ هُمُو مُلَّ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقَوْمَا أَنْتُمْ بِمُعَجِرِيْنَ (يونس:٥٣)

(ایرے دب کو) عالا کرنے والے تیں ہو۔ اور کافروں نے کماہم پر قیامت نیس آئے گی۔ آپ کمئے مير، دب عالم الغيب كي تهم اوه ضرو وتم پر آئكي-كافرول في المية فامد كمان عد كمادوه مرف كيد بركز ميں افعائے جا كي مح ا آب كئے كوں ميں اميرے دب كى

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا لَانَا يَبُكَ السَّاعَةُ فَلُ بَلْيَ وَرَبِّي لَنَا يَسْكُمُ مَالِمِ الْعَبْبِ (سيامً) زَعْمَ الَّذِينَ كَفُرُوا أَنْ لَنْ كُنْ يُجْبَعَنُوا قُلَّ بَلَي وَ رَبِّيُ لَتَبُعَثُنَّ (التعابن:٤)

حتم اتم شرد را نعائے جاؤ کے۔ احادیث من نی جیر کے محم کھانے کاذکر بالم مسلم بن تجائے قشیری متوفی المجد روایت کرتے ہیں: حضرت ابو موی اشعری بریش بیان کرتے ہیں ہم رسول اللہ میجاد کے پاس مے اور آپ سے سواری طلب ک۔ آپ نے فرایا حمیس سوار کرنے کے لیے میرے پاس سواری نسی ہے۔ خدای متم ایس تم کوسوار نسیس کروں گا پھروسول اللہ موجور نے امارى طرف جتكبوم كوبان والے تين اوند يصح الم في كما ہم رسول الله عظيم كي إس سوارى طلب كرنے محك تھے تو

تبيارُ القر أنُ

آپ لے متم کمائی تھی کہ ہم کو سواری نمیں دیں مے 'ہم نے آپ کے پاس جاکر آپ کو اس متم کی خبردی' آپ نے فرمایا عمر جسب بھی کسی چیزی شم کھا آموں پھراس کے غیر کو بمتر مجھتا ہوں تو میں وی کر آبوں جو بمتر ہو آہے۔

. (مج مسلم الليكن * ا (١٩٣٩) ١٩٨٠ مج البحاري عن وقم الحديث ١٣٨٥ عد وقم الحديث وقم الحديث من نسائي عد وقم

المعشد ٢٤٨٠ منداند " ين وقم الحيشد ١٩٥١)

جھوٹ کاخد شہ نہ ہو تو زیادہ قشمیں کھانے کاجواز

فقهاء کے زویک ہرچند کہ حم کمانا مبل ہے لیکن بہ کثرت حم کمانا کردہ ہے کیونکہ اللہ تعالی نے زیادہ حتم کمانے کی زمت كى ب- الله تعالى قرالاب:

اور آپ ممی ایسے محض کی بات ند مانمی جو بہت تشمیر

وَلَانُعِلِعُ كُلِّ حَلَّاتٍ مَّهِينِينِ (الفلم:٠٠)

کھانے والا انتائی ذلل ہے۔

نکین اگر بہ افراط قتمیں نہ کھائی جائیں تو پھر قتم کھانے ہیں کوئی حرج نہیں ہے اور پیر بلا کراہت جائز ہے۔ بعض لوگوں نے یہ کماہ کہ متم کھانا مطلقاً کروہ ہے۔ کو تک قر آن مجید میں ہے وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِأَيْمَانِكُمُ اور الله (ك نام) كوتم الى قىمون كے ليے بماند ند بناؤ -

ماري دليل يد ب كرني منهم من حمل علاق من المحالات الك مديث من كي تتمين موتي من-آپ نے خطبہ کسوف میں فرملااے محری است اللہ کی متم اللہ سے زیادہ اس پر کوئی فیرت دار نہیں ہے کہ اس کا بندہ ز تاكر السياس كى بندى ز تاكر السامت محمالله كى حمماأكر تم وه جزس جان او يوس جانا مول و تم كم بسواور رود زياده-(منج البخاري عجائر قم الحديث: ١٣٠٧- مطبوعه وار الكتب العلميه "بيروت)

آپ نے ترک ونیا کرنے کا ارادہ کرنے والے محلبہ سے فرملیا سنوا خدا کی حم ایس تم سے زیادہ اللہ سے ڈرنے والا ہوں اور تم سته زیاده متلی بول میکن شن روزه بھی رکھتا ہوں اور افظار بھی کر آ ہوں اور شن نماز بھی پڑھتا ہوں اور سو آ بھی ہوں۔

المح البلاري على رقم الحريث: ١٠١٥)

آپ نے ابوطالب سے اس کے مرتے وقت قربلیا سنوا اللہ کی تھم ایس تمہارے لیے اس وقت تک استغفار کر آر ہوں گا جب تک جمع تماری استغفارے منع نہ کیاجائے اسمح ابداری جب رقم الحدد ١١٠١١)

عرمه بیان کرتے ہیں کہ وسول اللہ ما اللہ علی سے فرایا اللہ کی سم اس ضرور قریش سے بنگ کروں گا اللہ کی شم ا میں ضرور قریش سے بنگ کروں گا اللہ کی متم ایس ضرور قریش سے بنگ کروں گا۔ پھر فرمایا ان شاء اللہ۔

(سنن ابو داؤ د "ج ۲" رقم الحديث: ۳۲۸۵)

اس ایک مدے میں نبی رہیں نے تین بار حم کمائی ہے۔

. اور به افراط فتمیں کھاناس نے محروہ ہے کہ اس میں بے قدشہ ہے کہ انسان کمی جموت پر اللہ کی فتم کھالے اور مانعین نے جو آیت پیش کی ہے اس کا جواب ہے ہے کہ اس آیت میں ان کی دلیل نہیں ہے "کیونکہ بوری آیت اس طرح ہے: ولانتحملوااللة عرضة لإبسابكم أن تسرواو

اللہ كے نام كوا في الي قلموں كے ليے بمانہ نہ بناؤجن ہے متعمد نیکی مند اخوتی اور لوگوں کے در میان ملح کرائے ہے باز

نَتَهُ وَاوَتُصُلِحُوا بَيْنَ السَّاسِ (السقرة: ١٣٢)

البيان القر أن

جلدسوم

لین کوئی مخص ہے متم کھائے کہ وہ نیکی نمیں کرے گا' خدا خوٹی نمیں کرے گانور ہوگوں کے در میان ملح نمیں کرائے گا' مراور نیک کاموں سے مد کر بازرے کہ میں تو یہ کام نہ کرنے کی حم کھاچکا ہوں موالیے مخص پر لازم ہے کہ وہ نیکی کر کے متم توڑے اور اپی متم کا کفارہ وے۔ معرت ابو ہررہ بیجر بیان کرتے ہیں کہ نبی بیجید نے فرمایا جس محض نے کسی چیزی متم کھائی مجروہ اس چیزے خلاف کرنے کو بھتر جانے تو وہ اس متم کے خلاف کرے اور اس فتم کا کفارہ دے۔

(مجحملم 'انجان'۱۱'(۱۲۵۰)۱۹۲۳)

في نفسه قسموں كى اقسام

فى نفسد قىمون كى إلى السام بي-واجب مستحب مباح محدواور حرام

واجسب: أكر كمي بي قصور مسلمان كو قتل بالهاكت من بجاناتهم كماني موقوف بوتوتهم كمانادابب-

حفرت سوید بن مسطله بولین بان کرتے میں کہ ہم رسول اللہ مرتبع کے ارادہ سے نظے 'ہمارے برائے مطرت واکل بن جر جائتے بھی تھے' ماتھیوں نے متم کھانے میں ٹاکواری محسوس کی اور میں نے متم کھائی اک یہ میرے بھائی ہیں تو دعمن نے ان کو چمو ژدیا۔ پس ہم رسول اللہ بڑھیر کے پاس پہنچ میں نے ہتایا کہ ساتھیوں نے تشم کھاتے میں ناکواری محسوس کی متمی اور میں نے فتم کھال کہ یہ میرے ہمائی ہیں۔ آپ نے فرایا تم نے بچ کدا سلمان اسلمان کا ہمائی ہے۔

(سنن الإداؤر٬ ج٢٬ رقم الحديث ٢٥٦٦٬ من ابن ماجه٬ ج١٬ رقم الحديث ٢١٩ مسند احمه٬ ج٥٬ رقم الحديث ١٩٧٢، طبع داد الفكو٬

منداد اج م مل 2 اطبع قديما

ستحب: جب دومسلمانوں میں رجش ہو اور ان میں صلح کراناتھ کھائے یر موقوف ہو' یا کسی مسلمان کے دل ہے کینہ کو زاکل کرنا شم کھانے پر موتوف ہو' یا کمی شرکو رفع کرنا شم کھانے پر موتوف ہو' تو ان مور توں میں شم کھانامتحب ہے۔ ای طرح ممی حباوت کے کرنے یا تمی کناد کے زک کرنے یر مسم کھانامسخب ہے۔

مباح: تمنی مباح کام کے کرنے یا اس کو ترک کرنے پر حم کھانا مباح ہے ،جس خبر کے صادق ہونے کا بقین ہو ایا اس کے صدق كاغلبه تكن مواس يرضم كمانا بحي مباح ب-

و مرده: ممى مرده كام ك كرف يرا ياكى متحب كام ك زك ير حم كمالى جائے توبيد حم محده ب- روايت ب ك حضرت مسطح والله معرت عائشه والتفيف إست لكاف والول على شال ينه على تك حفرت الوبكر والله معرت مسطح كو خرج دية تھے۔ جب اللہ تعالی نے معترت عائشہ رمنی اللہ عنما کی اس تست سے برأت بیان کردی تو معرت ابو بکرنے تنم کھائی کہ وہ پہلے جو معترت مسلح كو خرج دے كران كى مدركرتے فتے وہ أب بند كرديں كے۔ تب اللہ تعالى نے يہ آيت نازل فرمائي:

اور تم میں ہے جولوگ صاحب وسعت اور خوش حال ہیں يُحُونُونَا أُولِي الْقُرْبِلِي وَ الْمَسْرِكَيْنَ وَ . دويه هم نه كما كي كدووات رشة دارول اور مكينول اور الله کی راه میں بجرت کرنے والوں کو (پکھے) نسیں دیں گے 'ان کو چاہیے کہ وہ معاف کر دیں اور در گزر کریں۔ کیاتم یہ پہند نہیں کرتے کہ اللہ حمیس بخش دے اور اللہ بہت ب<u>خش</u>ے والا بے

وُلاَيَاتَلِي أُولُوا الْعَصْلِ مِنْكُمُ وَالسَّعَوْانُ الْمُهُ حِيرِيْنَ فِي سَبِينِلِ اللَّهِ وَ لَيَعْفُوا وَ ليصنف حواالاترجيونان يتغورالله تكثموالله عَفُورُ وَحِيْدُ (السور: ۲۲)

اس آیت سے بید معلوم ہواکہ کسی کار خیر کو ترک کرنے کی مسم کھانا پیندیدہ اور کروہ ہے۔

حرام: جموني منم كمانا اور خلاف واقع منم كمانا حرام بدالله تعالى فرا آب:

اور مناقق جان يوجد كرجمو في فتميس كمات بين ١٥ الله في ان کے لیے مخت مذاب تار کرر کھاہے ' بے شک و و(و نیایس) متراكام كرته

وَيَحْلِكُنُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمُ يَعْلَمُونَ ٥ اَعَدُ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا إِنَّهُمْ سَآة مَا كَانُوايَعُمَلُونَ ٥ (المحادله ٣٠٠)

ای طرح معصیت پر اور ترک واجب پر قتم کھانا جام ہے۔ مثلاً کوئی فخص ناجائز کام کرنے کے لیے متنم کھائے تویہ جرام إلى قوالى قرا لاي

بے تک جو نوگ اللہ کے جمد اور اپنی کسموں کے جو ش تموری ی قبت لیتے ہیں ان کے لیے آخرت میں کوئی حصہ منس اور نه الله ان سے قیامت کے دن کلام قربائے گا'اور نہ ان کی طرف نظرد حت قرائے گا اور ندان کو یاک کرے گا إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهُدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمُ ثَمَشًا فَلِيثُلُا أُولَيْكَ لَاحَلَاقَ لَهُمْ فِي الْأَجْرَةِرُ لأبكل مهم الله ولايسطر اليهم بثوم الفيامة وَلَا يُركِينِهِ مُ وَلَهُمُ عَذَابُ آلِينَةً

اوران کے لیے در دناک عزاب ہے۔ ال عمران: ٤٤٤) ایناحق ثابت کرنے کے لیے شم کھانے کے متعلق فقهاء کے نظریات

جب حاکم کے ملئے اپنے حقوق پر شم کھانی ہو تو اس میں فقہاء کے دو قول ہیں۔ ایک قول میہ ہے کہ اپناحق ترک کر دیا جلے اور شم ند کمانی جائے اور یہ اولی ہے اور دو مراقول یہ ہے کہ اپنے حق پر تشم کمانا جائز ہے۔ پہلی رائے کی مائید اس ہے ہوتی ہے کہ حضرت منان اور حضرت مقداد میں اس رقم کے متعلق انتلاف تھا'جو حضرت عثمان سے قرض لی تھی۔ چو نکہ حضرت علن کے پاس کواو نمیں تھے اس لیے معزت عرفے معزت مقداو پر متم فازم ک۔ معزت مقداد نے معزت مثان پر متم اوا وی- صغرت منتان نے متم کھانے کی بجائے ان کے قول کے مطابق رقم لے لی اور خود متم نمیں کھائی۔ اور فرمایا: میں اس ماہتا ك مقداد يركوني معيبت آئ اور وو كے كريد معيبت على كى تم كى وجد سے آئى ہے۔ سودونوں محابہ نے تم ير اپنا حق چموڑے کو رہے دی اور دو سرے قول کی مائید اس سے ہوتی ہے کہ جرین کعب القرقی نے روایت کیا ہے کہ حفرت عمر دیات منبر كمزے تھاور آپ كے إلى بي مساقل آپ نے فريايا كوكواتم كھانے كا وجد سے اپنے حقوق ندم مو زناداس ذات کی متم جس کے قبنہ وقد رہ میں میری جان ہے اب شک میرے ہاتھ میں عصاہے اور عمر بن شبہ نے کتاب تضاۃ البعر ۃ میں الجی سند کے ساتھ شعبی سے روایت کیا ہے کہ حضرت عمراور حضرت ابی رضی الله عنمانے ایک تھجور کے ور شت کے متعلق معرت زید بن ابت کے پاس مقدمہ دائر کیا۔ معرت الی بن کعب کااس در فت پر دعویٰ تھا او معرت مرر اسم کی۔ معرت زید نے کماتم امیر الموسین سے حم کو معتف کردو معترت مرنے قربایا امیر الموسین کو کیوں معاف کیا جائے؟ اگر مجمعے معلوم ہو کہ اس جزر مراحق ہے اور قتم کھلنے سے جھے وہ حق فل جائے گاتو بی ضرور قتم کھاؤں گا ورند بی قتم کو رک کردول گا اور اس ذات کی شم جس کے سواکوئی عبلوت کامستحق نہیں ہے یہ مجور کادر خت میرادر خت ہے اور اس پر الی کاکوئی حق نہیں ہے۔ جب وہ دولوں عد المت سے نکلے تو حضرت محرفے وہ ور خت الی کو بخش دیا۔ ان سے کماکیااے امیر الموشن آ آپ نے متم کمانے ے پہلے الی کو دوخت کیوں نہیں دے ویا حضرت عمر نے کما جھے یہ خوف تفاکہ اگر میں نے فتم نہیں کھائی تو نوگ میرے بعد ا بے حوق پر مم نمیں کھائیں مے اور می طریقہ مقرر ہو جائے گا اور یہ حق پر کی شم ب توجس طرح یہ شم عالم کے علاوہ

غيان القر أن

جلدسوم

دو مردن کے سامنے کھلاجاتز ہے 'وہ حاکم کے سامنے بھی جائز ہے۔ (المغنی'جو، مر ۴۸۸-۲۸۸ مطبوعہ دار الفکو 'بیردت ۵-۱۵۳) تم کھانے کا طریقہ

مم الله تعالى كى ذات يا اس كے اساء من سے كى اسم يا اس كى صفات من سے كى صفت كى كمائى جاتى ہے۔ مثل اس طرح تتم کھائے اس ذات کی قتم جس کے سواکوئی عباوت کا مشتق نمیں ہے 'یا اس ذات کی قتم جس کی بیں عبادت کر تا ہوں۔ نی میں اس طرح من کھاتے تھے اس ذات کی من جری جان جس کے تبغد و قدرت میں ہے۔ اللہ تعالی کے اساء مثلاً یہ ایس الله و حل وجم عالق ارى وزال وبوقيروان اساء كے ساتھ مل كالى جاتى ہوان كى مفات يدين الله كى عقمت الله كاجائل الله كى تدرت الله كاعلم الله كاكلام وغيرو تى جين يول تتم كملة تع "الوصفلب الفلوب" واول ك بلتے والے کی متم۔ (می البحاری وقم الديث: ١٠٥٠ من ابن ماجه وقم الدين، حدد ١٠٠٠) اگر ممي فض نے كما بي الله كو كولوكر ما الول السين الروه حم كانيت كر الاحتمي ورند نسي-غیراللّٰد کی قتم کھانے کی ممانعت کی تحقیق

المام محدين اساعيل بخاري متوفى ٢٥١ه روايت كرتين

حضرت عبدالله بن محرومني الله عنماييان كرية بين كه حضرت عمربن الحطاب دمني الله عنماموارول كي ايك بماعت مين ا پنے باپ کی متم کھارہے تھے تو رسول اللہ عظیم نے ان کو ندا کرکے فرمایا: سنوااللہ حمیس تسارے آباء کی متم کھانے ہے منع فرما آئے۔ سوجس محص نے متم کھانی ہو وہ اللہ کی متم کھائے اور نہ خاموش رہے۔

(می ابھاری می ارقم الحدیث:۸-۱۱ می مسلم الاعان ۳ (۲۱۲۱)۸۱۱)

فيرافذ كالمم س ممانعت كى عكت يدب كد جس كالمم كمائى جائ اس كى تعظيم مقسود موتى ب اور هيتى تعظيم الله مز و جل کے ماتھ خاص ہے اس لیے فیران کی تھم کھاکر اس کو اللہ تعالی کے ساتھ سٹابہ نہیں کیا جائے گا۔ نیزاجس کی تھم کھائی جائے اس کو گواہ بنایا جاتا ہے اور اللہ تعالی کے سوالمی کی بیہ شان نہیں کہ وہ ہروقت ہر چزر گواہ ہو۔ اس لیے اللہ کے سوااور نمی کی حتم کھنتا جائز نہیں ہے۔ معنزت ابن عباس رضی اللہ عنمانے فرمایا آگر میں سو مرتبہ اللہ کی حتم کھاکر اس کو تو ژووں تو ہے اس ے بر ہے کہ عن ایک بار قیراللہ کی مم کماکراس کو بوراکروں۔

أكريه اعتراض كياجائ كه الله تعالى في خود فيرالله كى تتم كمالك ب مثلًا فربايا والطور اللور ١) بما وطور كى تتم اس كا جواب ہے ہے کہ اللہ تعالی کمی تھم کا پائد نہیں ہے۔وہ مالک علی الاطلاق ہے 'جو جاہے کرے 'اس پر کوئی سوال یا اعتراض نہیں ہے اور پہاڑ طور 'ورشت انجیرو فیرو کی متم کھاکراللہ تعلق کے ان چیزوں کی فعنیلت فاہر کی ہے۔ نیزایہ ظاہر کیا ہے کہ یہ چیزیں الله كى داست يركونويس

علامه محدين على بن محر صكفي حنل متوفى ١٠٨٨ه لكمة بين:

کیا اللہ تعالیٰ کے فیری هم کھالا محروہ ہے۔ ایک تول یہ ہے کہ بال ایو تکہ صدیث میں اس کی مماعت ہے اور عام فقهاء نے یہ کماے کہ یہ محدد میں ہے اور اعارے زمانہ علی فقماء نے اس پر فتوی دیا ہے اور صدیث علی مماعت اس پر محول ہے جب اس تعدے غیرانڈ کی متم کھائے کہ اگر متم ہوری نہیں کی تووہ مانٹ ہوگااور اس کا کفارہ اوا کرے گا اور جب یہ تعدید مو تو چرفیرانڈ کی متم کھنا جائز ہے 'جیسے کوئی کے کہ تمادے بلپ کی متم ایا تماری زندگی کی متم ا

(در مخار على هامش ر دالحتار "ج٣ من ٣٩ مملويد دار احياء التراث العربي "بيردت "٢٠٠١هـ)

علامد سيد محراجن ابن علدين شاى حنى ستونى ٥٠ مده لكست بن

ہارے زمانہ میں جو تکہ نوگ اللہ کی حتم کھا کر اس کو پورا کرنے میں تسائل پرتے ہیں اس لیے وگ آئید اور توثیل کے لیے مطالبہ کرتے ہیں کہ تم طائق کی حتم کھاؤ مثلاً اگر میں نے فلاں آرج کو فلاں کام نہ کیا تو میری ہوی کو طائق کو ٹین کے حصول کے لیے طلاق کی حتم کھائی جاتی ہیں حرف حتم نہیں ہو آئا اور بھی حرف حتم کے ساتھ باب یا زندگی کی حتم کھائی جاتی ہوائی ہو گئی ہا کے اس لیے توثیق مطلوب نہیں ہوتی اور نہ اس میں حتم پوری نہ کرنے سے کفارہ لازم آئا ہے۔ جس کی حتم کھائی جاتے صرف اس کے ساتھ تعلق اور عبت کا اظہار مقصود ہو تا ہے کو راگر طلب توثیق کے لیے حرف حتم کے ساتھ فیراللہ کی حتم کھائی جاتے ہوئے تو یہ بالانقاق کروہ ہے کہ کہ اس میں فیراللہ کو تعظیم میں اللہ کے ساتھ مشابہ کرتا ہے۔

(رد الحتار ع ٢٠٠٣م مع ١٠٠٠م مطبوعه دار احياء الراث العربي بيردت ٤٠٠١ه)

يبين نغو كي تعريف

از ہری نے کہا ہے کہ لفو کے کلام عرب ہیں دوستی ہیں۔ ایک معنی ہے قائدہ اور باطل کلام جس سے کوئی عقد نہ کیا جائے۔ دو مرا معنی ہے تحق اور باطل کلام جس سے کوئی عقد نہ کیا جائے۔ دو مرا معنی ہے تحق اور باطل کلام جس سے کوئی عقد نہ کیا جائے۔ دو مرا معنی ہے (لا یسسم عدوں میں ہا لا عدو الا سسما) (مریم: ۱۲) وہ جنت میں کوئی فضول اور گزاد کی بات نہیں سنیں گے بجز ملام کے۔

علامد ابو الحق ابراجيم بن على شرازى شافعي متونى ٥٥ ممد لكست بين:

علامد ابوالوليد محدين احمد بن وشد مائلي قرطبي اندلسي متوفي ٥٥٥ لكصة بين:

انسان کو گمان ہو کہ بیٹی طور پر فلاں واقعہ ہوا اور وہ اس پر شم کھالے غور در حقیقت واقعہ اس کے فلاف ہو تو یہ بمین نفو ہے۔ اس میں نہ کفارہ ہے نہ گناہ ہے۔ (بدایۃ البتید'ج) مسلم ۱۹۹۰ مطبوعہ ہا واللک کو 'بیردت)

علامه موقى الدين عبدالله بن احمد بن قدامه منبلي متوفى ١٧٠ م لكيت بين

ایک مخص اپنے گلن کے مطابق کسی چزر کتم کھائے اور وہ اس کے گلن کے مطابق نہ ہو تو یہ بمین لغو ہے اور اکثر الل علم کے زویک اس میں کفارہ نہیں بہت حضرت ابن عباس حضرت ابو ہریاء احضرت ابو بالک مضرت زرارہ بن اوٹی رضی انتہ عضم کا میں نظریہ ہے۔ حسن بھری منطق الل الل الل ابوضیفہ الم اوزاعی کا بھی می تد جب سے مطامہ ابن عبد البرنے کہ اس پر مسلمانوں کا اجماع ہے۔ الم شافعی کا ایک تول یہ ہے کہ اس میں کفارہ ہے۔ الم احدے بھی ایک میں روایت ہے۔ مسلمانوں کا اجماع ہے۔ الم شافعی کا ایک تول یہ ہے کہ اس میں کفارہ ہے۔ الم احدے بھی ایک میں روایت ہے۔

(المغني عه م ٣٩٣ مطبوعه داد اللكو أبيروت ١٥٠٠٥)

علامہ ابر الحن علی بن ابی بکر مرفینانی حنلی متوفی مہدی ہے ہیں: ایک فخص مانٹی کے کسی واقعہ پر نتم کھائے اور اس کے کمان میں وہ واقعہ اس طرح ہو اور در حقیقت واقعہ اس کے برخلاف ہو تو بیر میمین لفوے اور ہم امید رکھتے ہیں کہ اللہ تعالی اس فخص ہے موافذہ نمیس فرمائے گااور ایک فخص کے متعلق

طِيانَ القر أن

تم کھائے کہ میہ زید ہے اور اس کا نہی گمان ہو اور وہ در حقیقت عمرو ہو تو ہیہ بھی پیمین لغو ہے۔

(مدایه اولین می ۲ ۷ - ۸ - ۲ ۲ مطبوعه مکتبه شرکت طیه مکان)

يمين منعقده كالعريف

مستنتل میں تمسی کام کے کرنے یا نہ کرنے کی شم کھائی جائے تو یہ بیمین منعقدہ ہے۔اس شم کو بورا کرنالازم ہے "کیونکہ الله تعالى في مايا إلى اور الى المون كي حفاظت كرو- (المائدة ١٨٨) اور جب اس متم كوتو زو ياق اس كاكفاره دينالازم بي كونك الله تعالى نے فرمایا ہے لیكن الله تمهاري پخت قلمول پر تمهاري كرفت فرمائے كا۔ سوان كاكفاره دس مسكينوں كو در مياني فتم كاكھانا كُولانا ب- الآيه (المائده: ٨٩) أس فتم مين كفاره بالاتفاق مقرر ہے 'خواہ نمي طاعت پر قتم كھائي ہو يا نمي معصيت پر 'نيكن أكر اس نے کی معصیت پر تشم کھائی ہے تو اس پر لازم ہے کہ وہ معصیت نہ کرے اور اس هم کا کفارہ دے ، جیسا کہ ہم اس سے پہلے (میج مسلم ایمان ۱۱ (۱۹۵۰) ۱۹۳۳) کے حوالے سے بیان کر چکے ہیں۔ امام مالک اور امام ابو منیفہ کے زویک متم تو ڑنے پر کفارہ لازم ب واواس نے عمراحم وری ہوا یا بعول کرایا خطاے اجرے کو تک قرآن مجدے حم ورف ر مطاقة كفاره ادرم كيا ہے اور اس میں عمد اور نسیان کا فرق نسیس کیا۔

(برأية الجدوع الم مزه والرائع السنائع اج ١٥٥ م ١١) ا مام شافعی اور امام احمد نے کما ہے کہ اگر کمی مخص نے نسیان ' خطایا جرہے کشم تو ژدی ' تو اس پر کفارہ نہیں ہے۔ (المذب على ١٢٨ المنتي عبر ١٠٩١)

الم شافع اور الم احركي دليل يه مديث ب:

حضرت ابن عہامی رمنی اللہ حتما بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ علیج یا فرملیا میری است سے خطا کسیان اور جرسے مواخذوا فعاليا كباب - المعجم الدوسل عه رقم الدعث ١٨٣٧٨ مطبور كتب المعادف وياض ١٨٣٧٥) یمین غموس کی تعربیت

مامنی یا صال کے ممنی واقعہ پر عمد اجمعوثی مشم کھائی جائے توبیہ بمین خموس ہے اور اس کے اور تکاب پر جمعوثی مشم کھانے والا عذاب كالمستحل ہو كالے اس مى كفاره نميں ہے اس پر أوب لازم ہے "كيونك جموث كناه كبيره ہے اور كناه كبيره پر قوب لازم ہے۔ نقباء احناف تقهامها كيداور نقهاء منبلد كاليى تدمب سب

(بدائ السنائع عن من ١٥٠٣ الشرح الكبير على هامش الدموتي عن من ١٢٨ المنتي جه من ٣٩٢) حضرت ابوالمام بروش بیان کرتے میں رسول الله مرجم بل خرایا جس محض فے متم کھائی اور دواس می جمو ناتھا آ کہ سمی مسلمان فخص کے بال کو حاصل کرے تو انٹہ اس پر جنت کو حرام کردے گاکور اس کو دو زنج بیں واخل کردے گا۔

(منجع مسلم 'الحان ٢١٨' (١٣٤) ٣٣٦ سنن ابن مايه ' رقم الحديث: ٢٣٢٣ سنن الداري ' رقم الخديث: ٢٥٠٥ منجع ابن حبان ' رقم الحديث د ٨٤٠٥ مند احمر مج٥ من ٢٠٠ سن كبري ج٠٠ م ١٥٩

حضرت عمران بن جمین بریش بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ میں ہے فرمایا جس محض نے جمونی هم کھا کر کوئی فیصلہ كروايا وه اينا تحكاما دوزخ ش مناسل (سنن ايرواؤر ارتم الحديث: ٣٢٣٢ مند احر عم من ١٣٣١م)

المام محدين اساعيل بخاري متوني ٢٥١ه روايت كرتي بين:

حعرت عرد بن العام بورت بيان كرت بين ك في وجيم ف فرايا كناه كبيره يدين الله ك ماته شريك كرنا مل باب كي

افر الى كرنايا فرالى: بسبين غيدوس (جمونى شم) اور شعبه كتة بي آب فرالى كبائريد بين الله ك مائد شرك كرما يمين غوس كرباب كى نافرالى كرنايا فرالى: كمى كو قتل كرنا

(من البخاري " فيه" وقم الحديث: ١٨٠٠ سنن ترزي " وقم الحديث: ٣٠٠٣٠ سنن نسائل" وقم الحديث: ٣٠١٣ منج ابن حبان " رقم منت ١٨٨٠ مند أو " ٢٣٠ ما ١٨٠٠

الم شافتی کے نزدیک بیمن خوس میں کفارہ واجب ہو آئے اور بیمن خوس میں جموٹ کا گناہ کفارہ سے ساقط ہو جا آئے' جیے بیمن منعقدہ میں قسم تو ڈنے کا گناہ کفارہ سے ساقط ہو آئے۔(المدنب جو من ۱۹۸۸) کفارہ قسم کی مشروعیت

کفارہ کالفظ کفرے مشتق ہے ' کفر کامعنی ہے سر اور ڈھائیا۔ سوتھم تو ڑنے کی وجہ ہے جس گناہ کاار تکاب ہو تا ہے کفارہ
اس گناہ کو ڈھانپ لیتا ہے۔ کفارہ کی مشروعیت سورہ کا گدہ کی ذیر تغییر آیت ہے۔ اللہ تعالی فرما آ ہے سوان کا گفارہ وس مسکینوں کو درمیانی تنم کا کھفانا کھفانا کھانا ہے جیساتم اپنے گھروالوں کو کھفاتے ہو'یاان مسکینوں کو کپڑے دیایا ایک قلام آزاد کرناہے جو ان جس سے کسی جزیر تقدر شد ہو تو وہ تھن دن کے روزے درکھے' یہ تمماری قسموں کا گفارہ ہے جب تم تسم کھاؤ (اور تو ڑور) اور ان جس سے کسی جزیر تقدر شد ہو تو وہ تھن دن کے روزے درکھے' یہ تمماری قسموں کا گفارہ ہے جب تم تسم کھاؤ (اور تو ڑور) اور ان جس سے کسی جزیر تقدر شد ہو تو وہ تھن دن کے روزے درکھے' یہ تمماری قسموں کا گفارہ ہے جب تم تسم کھاؤ (اور تو ڑور) اور

حضرت ابو ہریرہ جینے بیان کرتے ہیں کہ نی بیتین نے فرملان جس مخص نے کی کام کے کرنے کی حتم کمائی ، پروہ اس کے طاف کر اس کے طاف کرے اور اس حم کا کفارہ دے۔

(مج مسلم "إيان") (١٩٥٠) ١٩١٣)

كفارة لتم كے احكام من فراہب ائمہ

قرآن مجیدی اس آیت سے معلوم ہو کیا کہ کفارہ متم میں دس مسکینوں کو کھانا کھلانا ہے 'یاان کو کپڑے پہنانا ہے اور یا نظام آزاد کرنا ہے 'اور جو مخص ان میں سے کسی چزیر قلور نہ ہووہ تین دن کے روزے رکھے۔

، فقراء احتف ك تزديك كمانا كملاك سے مراويہ بك وى مكينوں كو كمانا پيش كرديا جائے اور ان كو كمانے كى اجازت وى جائے اس كو اصطلاح من ايادت كتے ہيں۔ اس سے مراوان كو اس كمانے كا الك بيانا نسم ب اور باتى فقراء كے زديك اس طعام كا الك بيانا نسم ب اور باتى فقراء كے زديك اس طعام كا الك بيانا ضرورى ب- كمانے كى مقدار من بھى نقباء كا اختاف ب- امام شافعى امام الك اور امام احمد كے زدريك بر مسكين كو او كلوكندم يا جار كلو كمور يا جو ديج جائي يا ان كى مسكين كو او كلوكندم يا جار كلو كمور يا جو ديج جائي يا ان كى قبت دى جائے۔

آگر ایک مسکین کودس دوز می و شام کھلا کھلایا جائے یادس دن تک ہرروزاس کودو کلو گندم یااس کی قبت دی جائے تو یہ جائز ہے اللہ مسکین آگر ایک مسکین کو ایک دن جس ہے وقت دس آدمیوں کا کھلادے دیا جائے تو یہ جائز نہیں ہے کیو نکہ اللہ تعالی نے دس مسکینوں کی بھوک مثالے کا تھم دیا ہے 'خواہ یہ یک وقت یا دس دنوں میں اور یہ مقدود ہس صورت میں حاصل نہیں ہوگا۔

جن مسکینوں کو کھٹا کھلایا جائے وہ مسلمان ہوں۔ فقہاہ احتاف کے زدیک ذی کو بھی کھٹا کھلایا جا سکتا ہے' اور باتی فقہاء کے زدیک کافر کو قتم کا کفارہ کھلانا جائز نسی ہے۔ بجری کان دیک کافر کو تھم کا کفارہ کھلانا جائز نسی ہے۔

اگر كفاره يس كيڑے دينے جائيں تو فقهاء احتاف كے نزديك بھي ان كا بالك بتانا ضروري ہے " بخلاف كھانا كے ا

كيونك اس معمود بحوك كومثانا إوروه فظ كعلف كاجازت مع بحى مد جاتى ب

الم ابوضیفہ کے زدیک اتنا کرا ہونا چاہیے جس ے عام بدن چھپ جائے اور الم احد کے زدیک جتنی مقدار سے نماز جائز ہو جائے اور الم مافع کے زدیک جتنی مقدار سے نماز جائز ہو جائے اور الم شافع کے زدیک کرے کا اطلاق دو چادروں بائز ہو جائے اور الم شافع کے زدیک کرے کا اطلاق دو چادروں پر ہو تاہے نے مقدار ضردری ہے ورنہ مردوں کو تیم شاوار اور ٹولی دی جائے اور عور توں کو تیم "شاوار اور دویا۔

اس دور میں غلامی کا رواج ختم ہوگیا ہے اس لیے اس کی تفسیل کی ضرورت نسی ہے۔ آئم ضابط یہ ہے کہ ایسا غلام آزاد کیا جائے جو کالی الا اعتباء ہو اور عیب دار نہ ہو۔ انام ابو حفیفہ کے نزدیک وہ غلام عام ہے ' مو من ہویا کافر ' کیونکہ قرآن جید کی اس آئت میں مطلقا فرایا ہے او تصریبر دقے اللا کدہ ۱۸۱۸ اور اس کو سمی قید سے مقید نسی کیا اور انکہ طابع کو نزدیک مسلمان غلام کو آزاد کرنا ضروری ہے ' کیونکہ کفارہ قبل فطاعی قربلا ہے۔ فقہ صور بر دقب موسمہ (انسان جو) انکہ طابق مطلق کو مقید پر محول کرتے ہیں اور انام ابو حفیفہ کا اصول یہ ہے کہ جب مطلق اور مقید دو الگ انگ ادکام می ذکر کے جا کی تو مطلق کو مقید پر محول کرتے ہیں اور انام ابو حفیفہ کا اصول یہ ہے کہ جب مطلق اور مقید دو الگ انگ ادکام می ذکر کے جا کی تو مطلق کو مقید پر محول نہیں کیا جائے گا اور جمال اس کو مقید پر محول نہیں کیا جائے گا اور جمال اس کو مقید پر محول نہیں کیا جائے گا اور جمال اس کو مقید پر محول نہیں کیا جائے گا اور جمال اس کو مقید پر محول نہیں کیا جائے گا اور جمال اس کو مقید پر محول نہیں کیا جائے گا اور جمال اس کو مقید پر محول نہیں کیا جائے گا تو رجمال اس کو مقید پر محول نہیں کیا جائے گا اور جمال اس کو مقید پر محول نہیں کیا جائے گا اور جمال اس کو مقید پر محول نہیں کیا جائے گا اور جمال اس کی حقید پر محول نہیں کیا جائے گا ہو گا ہو گا

اس پر فقماد کا اتفاق ہے کہ آگر متم تو ڈے دالا دی مسکنوں کو کھانا کھلانے یا ان کو کیڑے پہنانے یا غلام آزاد کرنے پر قاور شہاد کو وہ تمین دان کے روزے رکھا شہاری شیں شہاد کو وہ تمین دان کے روزے رکھنا شہاری شیں ہے 'کین آگر اس نے لگا آر تمین وان کے روزے دیکے تو یہ سخب ہے۔ کو تک قرآن جید کی اس آیت می مطابقاً قرایا ہے فصیبام شلا نہ آیا م (المائد مدا) اور ایام اعظم ابو طیفہ اور ایام احم کر نود کے تو ایس آیا تمین روزے رکھنا ضروری ہے۔ کو تک ضرت این مسعود کی قرات میں ہے اکور ایام احم المائد ایسام مسئنا ہمائد کی تو ایس ہے اور ایس ہے اور اس سے قرآن کے کسی تم میں زیادتی ہو گئی خرواحد اور آپ سے روایت کے درجہ میں ہے اور فرواحد جمت ہوتی ہے اور اس سے قرآن کے کسی تکم میں زیادتی ہو گئی خرواحد اور آپ سے روایت کے درجہ میں ہے اور اس کا قرر کی جاتے ہیں ان کاؤگر قرآن میں نہیں ہے اور ان کا آدر کھا جاتے ہیں ان کاؤگر قرآن میں نہیں ہے اور ان کا آدر کھا مرف مدیت سے تابعت ہے۔ سوای طرح اس کا تکم ہے۔

(الكافي في فقد النام احمد من عدم معدمه اللذب عن من مهدمه البدلية البتيد الجامل مده من الروافعاد الجسام معدمه ا هج القدير الجهام مدهد)

اَیا یُنْهُا الّذِیْنَ اَمْنُوا اِنْمَا الْحَمْرُ وَالْمَیْسِرُ وَالْاِنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ لِهِ اللهِ اللهُ ال

غِيانَ القر أن

رالله وعن الصَّالُولَة فَهُلُ أَنْكُمُ اور تماز سے دول دے ، تو کیاتم باز آنے 26 ٥ الد الله كا عم الواور رسول كا عم مافر اور ممتاط رير ، ير اكرتم-کم مدولی کی تو جان او کر ہمارے داول پر تو مرت احکام کو صاف طورسے پہنیا ویتا ہے 0 ابال والے اور ن يُنَ أُمَنُوا وَعِملُوا الصِّلِحْتِ جُنَاحٌ فِيهَاطِعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَا ے عمل کرنے والے جو کھ رہنے) کھائی ملے ہیں اس سے ال پر کوئی باز بری بہیں مرکی برنز لمبیکروہ اللہ سے ڈوٹتے رہے اور ایمان پر برقرار سے اور سک اور سے اے میرانشرے ڈرتے ہے اور برسورایان پر فائم ایت میرا

ے دائے ایمادر اے کا کہتے اے اور انداعے کا کہتے واول کر ایندکر ناہے 0

ائند تعانی کا ارشاد ہے: اے ایمان والو! شراب اور جوا اور بتول کے پاس نصب شدہ پقراور فال کے تیر محض نایاک میں شیطانی کاموں سے ہیں موتم ان سے اجتناب کرو تاکہ تم کامیاب ہو۔ شیطان صرف بدج ابتاہ کہ شراب اور جوئے کے ذر کیے تمهارے ورمیان بغض اور عداوت پیدا کر دے اور حمیس اللہ کی یاد اور تمازے روک دے تو کیاتم باز آئے والے 10 ? (الماكرة: 4--4)

مشكل الفاظ كمعاتى

خر: انگور کا کیاشیرہ ، جو بڑے بڑے سرم کر بدیو دار ہو جائے اور جماگ جمو ژدے تو وہ نشہ آور ہو جا آہے اس کو خمر کہتے ہیں۔ خمر کامعنی ہے ڈھائینا اور نشہ انسان کی عقل کو ڈھانے لیتا ہے۔

ميسر: ہر دہ عقد جس كى روے ہارنے والا جيتئے والے كوايك معين اور پہلے ہے ملے شدہ رقم اوا كرے ، اس كو ميسر کتے ہیں۔ بمیسر پسرے بناہے' اور جو بھے کے ذریعے جینتے والے فریق کو ہارنے والے فریق کی رقم آسانی ہے ل جاتی ہے۔ اس لے اس کومیسر کہتے ہیں۔

ا زلام: تیموں کی جیئت کی چکی پکل لکڑیاں ان ہے زمانہ جا بلیت میں قسمت کا عال اور شکون معلوم کرتے تھے اور خال 326 انصاب: بنوں کے پاس نصب شدہ پھرجن کی عبادت کی جاتی تھی اور بنوں کا تقرب حاصل کرنے کے لیے ان پر جانور ذري كي عات ته- (المفردات جه مه ١٣٨)

رجس: جو چیز حدایا معنا کندی اور ناباک ہو، انسان کی طبیعت اس سے تھن کھلئے یا عقل اس کو برا جانے یا شربیعت نے

اس كونايك قرار ديا عوم

شراب کی تخریم کے متعلق احادیث

المام الوجعفر محرين جرير طبري متوفى ١٣١٠ ووايت كرتے بين:

محمد بن قیس بیان کرتے ہیں کہ جب رسول اللہ مل کیا ہمینہ آئے تو لوگ شراب ہے تھے اور جوا کھیلتے تھے۔ مسلمانوں نے آپ سے اس کے متعلق سوال کیا تو اللہ تعالی نے بیر آیت نازل فرمائی اوگ آپ سے شراب اور جوئے کے متعلق سوال كرتے بيں آپ كينے كر اس من براكناوے اور لوگوں كے ليے (وقتى) فائدے بيں اور ان كاكناوان كے فائدوں ہے زيادہ برا ے- (البقرد. ٢١١) تو يوكوں نے كماس بين جارے ليے رفعت ہے، ہم شراب يكن كے اور جوا تعليس كے اور اللہ تعالى ہے موانی طلب کریں کے وحی کد ایک مخص نے سور آکافرون کی پہلی آیت اس طرح پڑھی "فیل بابیدا ال تحصرون اعسد ما تعبدور- آپ كئے كداے كافروا ميں اس كى عبادت كر آبول جس كى تم عبادت كرتے ہواوران كو ي نبيس چلاكدوه كيا يزه رے ہیں۔ تب اللہ تعالی نے یہ آیت تازل فرائی اے ایمان والوا تم تماز کے قریب مت جاؤ ور آتحالیک تم نشہ میں ہو۔ (النهاه: ٣٣) پير بھي يوگ شراب پينے رہے اور جب تماز كاوقت آ ياتو شراب پينا چھوڑ دينے اور اس وقت نماز پڙھتے جب ؛ نسيس علم ہو آ کئے وہ کیا پڑھ رہے ہیں وہ ای معمول پر بر قرار تھے کہ اللہ تعالیٰ نے یہ آیت تازل فرمادی اے ایمان والو! شراب اورجوا اوریت اور فال کے تیر محض ناپاک ہیں.... کیا تم باز آنے والے ہو، تو مسلمانوں نے کمااے رب ! ہم باز آ گئے۔

{جامع البيان، ٢٦، ص ٢٥، مطبوعه وار الفكر ايروت ١٥١٦ه)

امام مسلم بن مجاج تشيري متوفى المهد روايت كرتے بين: حضرت معد بن الى و قاص من الثير، بيان كرتے بيل كه ميرى وجه سے كئي آيات نازل جوئى بين ايك (لقمال: ١٥) ہے-دد مری (انعال: ۱) ہے۔ (معترت سعد نے ان کی تنعیل بیان کی ہے۔ سعیدی غفرلد) (اور ایک بد آءت ہے اس کی تنعیل بد ہے) میں مهاجرین اور انصار کی ایک جماعت کے پیس میہ انہوں نے کما چلو ہم جہیں کچھ کھلائیں اور شراب پلائیں اور بیہ

شراب کے حرام ہونے سے پہلے کا واقعہ ہے اس ان کے ساتھ باغ میں کیا۔ وہاں ان کے پاس ایک اونٹ کا بھٹا ہوا مرتعا اور ا بک مشک میں شراب تھی۔ میں نے اس میں سے کھلا اور شراب بیء پھران کے درمیان مهاجرین اور انسار کا ذکر چھڑ کیا۔ میں نے کہ مماجرین انسارے زیادہ اجھے ہیں ایک مخص نے اونٹ کے جڑے کی بڑی میری ناک مر ماری جس سے میری ناک

زخی ہو گئی، میں نے جاکر رسول اللہ من اللہ اللہ علی خروی - تب اللہ عزوجل نے میری وجہ سے شراب کے متعلق میر آیت نازل فره نی اے ایمان والوا شراب اور جوا اور بتوں کے پاس نصب شدہ پھراور فال کے تیر محض تایاک ہیں۔ الآبے۔

(صحيح مسلم؛ فضائل العجابه ١٣٣٠ (٨٣٨) ١٦١٢ مند احمر اج ١١ رقم الحديث: ١٥١٤ - ١١٢١ سنن كبري لليعمقي ج ٨٠ ص ٢٨٥) امام محد بن جعفر بن جرم طبري متوفي اساء روايت كرتے بين:

حضرت بريد ومن التيء بيان كرتے بين كه بهم مجلس شراب من بيشے بوے شراب بي رب بتے اس وقت شراب علال متى-ا جانک میں اٹھا اور رسول الله مل تاہیل فدمت میں عاضر ہوا اور آپ کو سلام چیش کیا اس وقت شراب کی تحریم کے متعلق ب قرآن مجیدا احادث متوازہ اور اجماع فقعاء سے خرحرام ہے۔ امام ابو صنیفہ کے زدیک حقیقت بیں خمرا گور کے اس کچ شیرہ کو کہتے ہیں اجو پڑے پڑے سو کر جھاگ چھوڑ دے۔ امام ابو صنیفہ فرماتے ہیں لفت میں خمر کا بھی معنی ہے اور میں حقیقت ہے۔ البتہ! مجازہ ہر نشہ آور مشروب کو خمر کما جاتا ہے۔ احادیث اور آ گار جی جملی ہر نشہ آور مشروب کو خمر کما گیا ہے وہ اطلاق مجازی ہے۔ اس کے بر عکس ائمہ مطابقہ کتے ہیں کہ خمر کا معنی ڈھا نہنا ہے۔ شراب کو خمر اس لیے کتے ہیں کہ وہ عمل کو ڈھانی لی ہے اور ہرنشہ آور مشروب حقیقاً خرہے۔ اب ہم لفت کے جو الوں سے خمر کا معنی بیان کرتے ہیں۔

علامه جمال الدين محرين حرم بن منظور افريقي متوفي الديد لكعة بين:

خمرا تگور سے اس کے شیرہ کو کتے ہیں جو نشہ آورہو ، کیو نکسدہ معنی کوا ھانپ دیائے۔ ابو ھنیفہ دیووری نے کماکہ دانوں سے جو شراب
ہنائی جو تی ہے اس کو خمر کتے ہیں۔ ابن سیدہ نے کما بیرے مگان شربید علامہ دیووری کا تساخ ہے کیو نکہ خمر کی حقیقہ ہنا تگورہیں انہ کہ دو سری
اشیاہ اور عرب نگوروں کو خمر کتے ہیں۔ ابن سیدھ نے کما بیرے مگان شربی گوروں کو خمراس لیے کتے ہیں کہ خمرا مگوروں نے ہمائی جو تی ہو اس اس اس اس اس کے اس کر اور کی میں۔ ابو طبیقہ نے ور اس کو میں ابو طبیقہ نے اس کے اس سے کہ ایس خمرائی ابوں۔ ابو طبیقہ نے ابور میں ابور سے اس کے اس سے کہ کا میں خمر نے ڈر ابادوں۔ ابو طبیقہ نے اس کے اس سے کہ کا انہوں۔ ابور طبیقہ ابورہ ہوں میں میں میں خمر کا طبیعہ کی خمر کو در انجم میں اس نے کہائی خمر کے کہائے خمرائی کیا۔ در اور اس کے اس سے اس کے اس سے کہائے میں خمرائی کیا جو اس کے اس سے کہائے کہائے کہائے میں خمرائی کی خمرائی کی خمرائی کیا جو میں کے کہائے کہائے کہائے کہائی کی خمرائی کیا جو میں اس نے کہائے کہائے کہائے کی خمرائی کیا۔ در کہائے کی کہائے کا کہائے کہائے کہائے کہائے کہ کہائے کو کہائے کہا

(لسان العرب عليه عن ٢٥٥ مطبوع ايران آج العروس ع ١٠٠٣ مليوم مطبع تيريد امعر اقرب الموارد عه عليه ١٠٠٠ مطبوعه ايران) مطبوعه ايران)

علامه ابوالحن على بن إني بكرالرخيناني المنفي المتوني سيعن عد لكية بين:

جمارے زدیک خمر کی تقریف میہ ہے انگور کا کیا پانی جب نشر آور ہوجائے۔ اہل لفت اور اہل علم کے زدیک بھی خمر کا بی معنی معروف ہے۔ بعض لوگوں نے میہ کما ہے کہ ہرنشہ آور چیز کو خمر کہتے ہیں کیونکہ نبی صلی اللہ علیہ و سلم کاار شادے ہرنشہ آور چیز خمرے۔

(سیح مسلم الاشریہ ۱۳۰۹ (۲۰۰۹) ۱۳۵۰ سیح البخاری و قم انگریٹ: ۳۴۲ سنن البوداؤد و قم انگریٹ: ۱۸۳۳ سنن النسائی و قم الحدیث: ۵۵۴۲ سنن النسائی و قم الحدیث: ۵۵۴۲ سنن النسائی و قم الحدیث الحدیث المحدور کے اور رسول اللہ سی النسائی مدیث ہے تم ان دو در فنوں ہے (منائی جاتی ہے یہ فرما کر آپ نے انگور کی تیل اور محبور کے در فتت کی طرف اشارہ فرماا۔

(سيج مسلم الاشرية المين (١٩٨٥) - ٥٠٥ الوواؤرار تم الحديث ١٨٥١ ١٠٠٠ من النسائل وتم الحديث ١٥٥٢- ٥٥٤٢)

ائتمہ طلاق کے نزدیک ہرنشہ آور مشروب مطلقاً حرام ہے ' فوا اس کی مقدار کثیرہویا قلیل 'اور اہام ابو حذیفہ کے نزدیک خمر تو مطلقاً حرام ہے اور خرکے علادیاتی نشہ آور مشروبات جس مقدار میں نشہ آور ہوں 'اس مقدار میں حرام ہیں اور اس سے کم مقدار میں حرام ہیں نہ نجس 'اور ان کا زنا حلال ہے۔اہام ابو حذیفہ کا استدلال ان احادث سے ہے:

الم ابو حبد الرحل احمد بن شعيب نسائل متوفى ١٠٠٠ هدروان ترح بن:

معرت ابن عباس رمنی الله عنمابیان کرتے ہیں کہ فرکو بعینہ حرام کیا گیا ہے وا قلیل ہو یا کیر اور ہرمشاوب میں سے نشہ آور (مقدار) کو حرام کیا گیاہے۔

(ستن النسائل؛ جهرا وقم الحديث: ٥٠١٠-٥٥٥-٥٥٥-٥٥٥٠ سن كبرى جهرا ص ١٩٥٠ كب الأثار اللي يوسف م ٢٢٨٠ مستف ابن الي يشيد عهدا ملاما المتعدد ١٩٥٠ من وار تعنى وار تعنى عهدا وقم الحديث ١٩٥٨ المتعم الكبير للغبر الى جهدا وقم الحديث ١٩٨٠-١٩٨٨. المتعمد ١٩٥٨-١٩٨٨ ما والمدين المتعمد ١٩٨٥-١٩٨٨ من الحديث ١٩٨٥-١٩٨٨ من ١٩٨١ عن وار تعنى الزوائد؛ ج٥٠ من ١٥٠)

جس مشروب کی تیزی ہے نشہ کاخد شہ ہو 'اس میں پانی ملا کر پینے کاجواز

جس مشروب کی کثیر مقدار نشه آور ہو 'اس کی قلیل مقدار کے جائز ہونے پر نقهاء احتاف نے اس سے بھی استدلال کیا ہے کہ جسب نبیذ جس شدت اور صدت ہو اور وہ اس شدت کی عاوپر نشہ آور ہو 'اس نبیذ جس پانی طاکر اس کی شدت کو کم کر کے اور اس کی مدت کو تو ڈکر بینا جائز ہے 'اور ہے ممل خود رسول اللہ جیج اور یہ کثرت محلبہ اور نقهاء تابعین سے جاہت ہے۔ الم محمد بن حسن شیبانی متونی ۱۸۹ معد روایت کرتے ہیں:

ابرائیم تھی بیان کرتے ہیں کہ حضرت عمر دولیز کے پاس ایک فشہ علی دیوش اعرائی لایا کیا محمرت عمر دولیز لیاس سے عذر طلب کیا۔ جب دو اپنی مداوش کی دوجہ سے میکھ نہ بتا سکاتو آپ نے فرمایا اس کو باندہ دو 'جب اس کو ہوش آ جائے تو اس کو در سے لگارہا ' پھر حضرت عمر نے اس اعرائی کے مشکیر دیس سے ہوئے مرشوب کو مشکوایا ' پھر آپ نے اس کو چھاتو دو بہت تیزاور

خت تل نبیذ تھا' آپ نے پانی مگواکراس کی شدت اور صدت کو قو ڈا مجر آپ نے اس کو بیااور اپنے ساتھیوں کو پاایا' ہر آپ نے فرالیا جب اس کی تیزی اور نشر تم پر غالب آجائے قواس کو پانی ہے تو ڈلیا کرد۔ اہم محر فرائے میں' ہارااس پر عمل ہے اور میں اہام ابو منیقہ کاغر ہب ہے۔

(كتاب الأناخ والمام في من ١٨٠-١٨٣ ممثل الأنارلام الي يوسف من ٢٢٦ معنف عبد الرواق ع ٢٠٥ من ٢٢٠٠) الم ابو بكر عبد الله بين محد من الي شيد صنعاني متوفى ٢٣٥ و دوايت كرت بين:

معرت این مماں دمنی اللہ فعمامیان کرتے ہیں کہ نمی جھیج سیل پر آئے اور فرمایا جھے اس سے پانی پلاؤ۔ معرت بہاں برا جہیج ہیں اسے کہا ہم آپ کو وہ چیز نہ پلائیں جس کو ہم اپنے گھر جس تیار کرتے ہیں؟ آپ نے فرمایا نسیں جھ کو وہ چیز پلاؤ جس کو لوگ پیتے ہیں اصفرت مہاں نمیز کا کیک بیالہ لے کر آئے 'آپ نے اس کو چکھا' پھرماتے پر فشکن ڈال کر فرمایا پانی لاؤ' پھر آپ نے اس کو چکھا' پھرماتے پر فشکن ڈال کر فرمایا پانی لاؤ' پھر آپ نے اس کو پھھا' پھرماتے پر فشکن ڈال کر فرمایا پانی لاؤ' پھر آپ نے اس

(مصنف ابن افی شید عید موسود موجید می است است و بدارزات عید این ۱۳۲۰ سنی کیری للیمتی این ۸ مسنف ابن افی شید عید است ۱۳۹۰ مستف و بدارزات عید است ۱۳۹۰ سنی کیرو برای کلی اور آپ محترت ابو مسعود جوجید بیان کرتے بین کر جس دفت نی جیجید کو سو گلما اور پھر ما تھے پر شکن ڈال کر فرمایا میرے پاس زمزم کا دول اللهٔ انگیا آپ نے اس کو سو گلما اور پھر ما تھے پر شکن ڈال کر فرمایا میرے پاس زمزم کا دول للهٔ کیراپ نے اس میں پائی طاکر اس کو فی لیا ایک فض نے بوجیما کیار سول الله اکیار ترام ہے؟ آپ نے فرمایا نسی ۔

(معنف ابن ابی ثیبہ 'ج۸'م ۱۳۰ سن کبری ج۸'م ۳۰ سن نسائی 'ج۸'ر تم الدیث ۱۹۰۱،۵۱ جس مشروب کی کثیر مقد ار نشه آور ہو 'اس کی قلیل مقد ار کے حلال ہوئے پر فقهاءاحناف کے دلائل

عمس الاتمد عجر بن احد سرخي متوني ١٨٣ مد لكية إن:

حعرت این عباس نے فرطا خرکو بعید حرام کیا گیا ہے انواہ عمیل ہویا کیز اور ہر سروب میں سے نشہ آور کو حرام کیا گیا ہو۔ اس مدے شی یہ دلیل ہو کر امید حرام ہے۔ خواہ علی اور چھواروں کے بچھ ہو کیا گیا اور گیرا اور شیست اور محترت این عباس نے قربا الیتی نبیدا ہو گئیل اور کیر کا فرق ہے۔ اس کی قلیل مقدار علی اور جس محتوث این عباس نے قربا ہو علی سے اور وہ کیر مقدار کا آخری محتوث ہے۔ حضرت این عباس نے قربا ہو مطال ہے اور جس محتوث کے بعد نشہ پیدا ہو وہ حرام ہے اور وہ کیر مقدار کا آخری محتوث کی طرح ہے۔ اگر کیر سے میں اللے خوان ہو قوان کے ساتھ نماذ جائز ہے اور اس کی مثال نفتہ کی طرح ہے آگر اضان افی کملائے اپنا اور اپنا اللہ میال پر خرج کون کی طرح ہے۔ اگر کیر سے میں اللہ خوان ہو قوان کے ساتھ نماذ جائز ہے اور اس کی مثال نفتہ کی طرح ہے آگر اضان افی کملائے اپنا اور اپنا اللہ میال پر خرج کمان اور یہ باور اگر اس کو جو تو دو آگر اس کو جو تو دو آگر اس کو جو تو دو سے اس کی مثال ہو تا ہو بائز ہے۔ ای طرح نیذ ہو نے اگر اس کو جو تو دو سے اور اگر اس کو جو تو دو سے اس کی مثال ہو تا ہو نے اور اگر اس کو جو تو دو سے بیان کرنا مقدود ہو سے کہ خرصت کا دار نشر لانے والے جزیر ہے۔ البت افر مراسات اور اللہ کو تو تو اس کے معان کو تو تو تو ہو تو اس کے مقدار جس بینا زیادہ پینے کا خرک ہو تا ہے اس کی تحو دی مقدار جس بینا زیادہ پینے کا خرک ہو تا ہے اس کی تحو دی مقدار بھی جوام ہے اس کے میں کہ خوری مقدار جس بینا زیادہ پینے کا خرک ہو تا ہو جائے اور ایک تمانی باتی رہ ہو تو اس کو مقدار جس بینا زیادہ ہو جس دیے گاڑھا ہو جائے اور ایک تمانی بینا موال ہو اور جب دہ جس دے کا خرا ہو جائے اور ایک تمانی بین بینا موال ہو بول کا دور آگر کو تو تو تو تا ہم اور جب دہ جس دے کا خرا ہو جائے اور ایک تا اور تا ہم اور خوری مقدار جس بینا زیادہ ہو جس دی گاڑھا ہو جائے اور ایک تمانی بین کیا موافید اور ایک اور الم ابور مینے اور الم اور جب دہ جس دور جس دوری تو تا ہو جائے اور دیتر تو تو ایم اور ویک تو تو تو تا ہو جائے اور دیتر تو تو تا ہم اور دیتر تو تو تا ہم اور جب دہ جس دوری تو تا ہم اور جائے اور ایک تو تو تو تو تو تو تا ہم اور جب دہ جس دوری تو تا ہم اور جب دہ جس تو تو تا ہو جائے اور دیتر تو تو تا ہم اور جب دہ جس تو تو تا ہم اور جب دہ جس تو تو تا ہم تا اور جب دہ جس تو تو تا ہم تا ہم تو تو

علامه بدر الدين محمود بن احر يني حوفي ١٥٥٥ من لكست بين

قیاں کا تقاضا یہ ہے کہ نشہ آور چیزی قلیل مقدار حرام نہ ہو کی تکہ اللہ تعالی نے فرکو حرام کرنے کی یہ وجہ بیان کی ہے کہ فر اللہ کے ذکر اور نماز ہے روکتی ہے اور بغض اور عداوت پداکرتی ہے 'اور نشر آور مشروب کو قلیل مقدار میں پینے ہے یہ اوصاف ہدا نہیں ہوتے اور اگر جم ظاہر آیت کا لحاظ کریں تو قلیل مقدار میں بھی فرح ام نسیں ہوئی چاہیے 'لیکن ہم نے فرک قلیل مقدار میں اس قیاس کو چھو ڈ دیا جمی تک مسلمانوں کا اس بر اجماع ہے کہ فر مطابقاً حرام ہے 'فواہ قلیل ہو یا کیڑ۔ البتہ فر کئیل مقدار میں اس قیاس کو چھو ڈ دیا جمی تک مسلمانوں کا اس بر اجماع ہے کہ فر مطابقاً حرام ہے 'فواہ قلیل ہو یا کیڑ۔ البتہ فر کے علاوہ باتی نشہ آورہ شروبات میں ظاہر آیت کا انتہار کیا جائے گا کو تک ان کی قبیل مقدار اللہ کے ذکرے روکتی ہے 'نہ نماز ہے اور نہ بخض وعدادت پداکرتی ہے۔ (البتاہ 'جان می ۱۳۴۳ مطبوعہ دار الفکو 'بیردت' ۱۳۱۱ء)

علامه سيد محد الين ابن عابدين شاي حنى متونى ١٥٣ عد لكية بي:

(روالحتار "ج٥ من ٢٩٢-٢٩٢ سفعصاد موشحا مطيور دارا ديام الراث العرلي ميروت ٢٩٢٠) ١

ا تگریزی دواؤں اور برفیوم کا شرعی حکم مصنف کے نزدیک محقیق یہ ہے کہ اگر کوآ

اللہ ك ذكر سے روكتى ہے اور نہ بغض اور عداوت پرداكرتى ہے۔ سوان دلاكل كا انتبار سے دواؤں يس جو نمايت قليل مقدار يس الكومل موتى ہے وہ حرام نسيں ہے اور يہ اكم دوائي حائل جي اور كى يمارى كے علاج كے يا طاقت عاصل كرنے كے ليے ان ليے ان دواؤں كو پينا جائز اور حلال ہے۔ اى طرح پر فوم عن جو سپرٹ اور الكومل شامل ہوتى ہے وہ بھى ان دلاكل كے اعتبار سے جائز اور باك ، ہے۔

مفتی محمد مظرالله والوی متونی ۸۱ معد انجریزی دواؤل کے متعلق لکھتے ہیں:

(i) اگر امپرٹ قرے تیاد ہوتی ہے عیساکہ سوال میں ظاہر کی گیا ہے تو یہ مطلقا وام ہے اس ہے کمی هم کا انقاع جاز نہیں انہی اور اس کا بذرید ہیں اس کی بھو شراء ہی جاز نہیں اور اس کا بذرید ہیں ہے۔ اور اس کا بدر اس کے دائر اس کے دائر اس کا بدر اس کے دائر اس کا دائر اس کی بھو اس کے دائر اس کی بھو ہو گئے دو بھر سے بھو گئے دو بھر اس کا بھو ہر ہے دو گئے دو بھر سے بھا گئی گئی ہو اس کو بر سے دو گئے دو بھر سے بھا گئی گئی ہو اس کا دور اس کی بھو شراء بھی جازت ہے گئی جازت ہے کہ اس میں دور اس کی بھو شراء بھی جازت ہے گئی جازت ہے دور کی سے بھی ہو گئی ہو اس کے کہ اس میں دور سے دیا گئی ہو اس کے کہ اس میں گئے ہو دور کی سے بھی کہ بھو شراب سے بھی کہ بھو شراب سے بھی معلوم کہ کون می شراب سے بھی کہ بھو شراب سے بھی سے اس کے کہ بھو شراب سے بھی معلوم کہ کون می شراب سے بھی سے کہ بھو شراب سے بھی معلوم کہ کون می شراب سے بھی معلوم کہ کون می شراب سے بھی ہو اس ہے کہ بھو شراب سے بھی سے کہ ہو شراب سے بھی سے دیا ہو میں ہو سے کہ بھو شراب سے بھی ہو کہ ہو شراب سے بھی سے دیا ہو کہ ہو سے کہ بھو شراب سے بھی سے کہ ہو شراب سے بھی کی تھی ہو کہ ہو شراب سے بھی سے کہ ہو شراب سے کہ ہو کہ ہو شراب سے کر ہو شراب سے کہ ہو شراب سے کہ ہو شراب سے کہ ہو

کیونکہ رسول اُللہ وہ ہے قرمایا ہے جب تم میں سے کوئی مخض نماز میں ہو اور وہ اپنی دیر میں ترکت محسوس کرے اور اس کو نید انتخال ہو کہ اس کا وضو ٹوٹ کیا ہے یا نہیں ٹوٹا تو وہ اس وقت تک نماز نہ تو ڑے جب تک کہ آواز نہ سے یا بدیو نہ محسوس کرے۔ اس مدے کو اہام ابوداؤد نے روایت کیا ہے اور فقماء نے کما ہے کہ بقین شک سے زائل نہیں ہو آااور اعمل

اشياء من طنت أور طمارت ب

(٢) جن صور تول على اس كى تع باز ب ان ى صور تول على اس كى خريد بحى باز ب- فظ-

(۳) اگر اسپرٹ علاوہ خمر کے کمی دو سری شراب ہے بنائی گئی' جیساکہ بعض ڈاکٹروں کابیان ہے تو اس کی خرید و فردخت جائز' لیکن مکموہ ہے۔ ملامہ شامی نے کما ہے کہ فیرخمر کی بچے ہرچند کہ صحبے ہے' لیکن مکموہ ہے' جیساکہ غلیہ میں تہ کور ہے۔ کہی اس کابڑک اوائی ہے۔ فقا۔

(۳) جب ادویہ میں اسپرٹ شامل ہے تو جو تھم اسپرٹ کا ہے وی ان ادویات کا بھی ہے۔ پس اگر اسپرٹ یقینا خمرے تیار ہوئی ہے ' تو دیکھا جائے کہ اس سے شفا کا صرف احتال ہی ہے یا عمن عالب 'اگر صرف احتال ہے تو جائز نہیں اور اگر عمن عالب ہو 'تو اگر دو مری جائز دوااس مرض کے لیے پائی جاتی ہے تب بھی تاجائز ہے ' در نہ اختلاف ہے۔ در مختار میں ہے:

حرام دوائے ماتھ عذاج میں اختلاف ہے اور ظاہر ندیب میں یہ ممنوع ہے ' جیساکہ البحرائرا کُن کی کاب الر ضاع میں فرکور ہے۔ لیکن مصنف نے دہاں اور یسال الحادی ہے نقل کیا ہے کہ ایک قول یہ ہے کہ جب حرام دوا ہے شغاء کا ایقین ہواور کی دو مری دواکا علم ند ہو 'قواس کے ماتھ علاج کی رخصت دی جائے گی ' جیساکہ پیاسے کو خمر (شراب) پینے کی رخصت دی جاتی ہے۔ جاتی ہے۔

پس اس صورت میں آگر اس کابلور دوااستعال کیا جائے "و گنجائش ہے الیکن اوٹی می ہے کہ اس ہے بچا جائے اور آگر
اس کی سافت بطریق تعظیر سوائے شراب کے دو سری اشریہ ہے ہے " تب بھی بھڑ تو ہی ہے کہ اس ہے احراز کیا جائے کی تکہ
رسون اللہ بڑچ کا ارشاد ہے کہ جس چڑ جس شک ہو اس کو چھو ڈکر اس کو احتیار کر جس جس شک نہ ہو الکن آگر ذیادہ ضرورت
دیکھی جائے تو اس کے استعمال میں بھی محتجائش ہے۔ لمالا حسلاف و لحد موم المبلوی چانچے علامہ شامی نے احکام افیون
کے بارے جس قرانیا:

خلاصہ یہ ہے کہ جو چیزنشہ آور ہو اس کی کثیر مقدار کو استعلل کرنا تو مطلقاً ترام ہے 'اور تلیل مقدار اگر پہ طور لہو و لعب ہو ' نب بھی ترام ہے اور اگر علاج کے لیے ہو تو پھر حرام نہیں ہے۔

ليكن يه تحم جب ب كه تقيل استعال كيابات ورند لدر مكر بجرا ضطرار ك بطور دوا بحى جائز تميس كسافاله العلماء والشامي مفط والله تعالى اعلم بالمصواب

(حرره محر مظهراف غفرار ولوالديه المام مجده يوري و فل)

نوث: مفتی مظمرالله والوی نے حدیث اور فقد کی صرف عربی عبارات ذکر کی تقیس ہم نے ان عبارات کاار دو ترجمہ ذکر کیا ہے۔ سعید کی غفرلہ (فاوی مظمری من ۴۸۸۰۲۹ مطبوعہ بدینہ وبلٹنگ کمپنی کراچی) شرای نوشتی میں دی کے داران ہے ۔

شراب نوتی پر وعید کی احادیث

المام ابوعيد الرحمٰن احمد بن شعيب النسائل متوفى ١٠٠٠ من روايت كرت بين:

حضرت ابو ہریرہ روہائی میان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بیجیو نے فربلاجس وقت زائی زناکر آئے ،وہ مومن فہیں ہو آانور جس دفت شراب پینے والانحر (شراب) پرتا ہے ' وہ مومن نہیں ہو آانور جس دفت چور چوری کر آہے ' وہ مومن نہیں ہو آانور جس دفت لئیرا لوگون کے ملئے لوٹ مار کر آہے ' وہ مومن نہیں ہو آلہ

(سنن التسائل " ج٣٠ رقم الحديث: ١٠٥٥ ممج البخارى" و تم الحديث: ١٣٥٥ ممج مسلم الاثبان" و قم الحديث: ١٩٠٠، سنن ابن باب." و قم الحديث: ١٩٩١)

حضرت ابو ہرمیہ ویٹی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بڑھیے نے فرمایا جب کوئی مخض فشہ کرے تو اس کو کو ڑے مارو 'پھراگر نشہ کرے تو پھر کو ڈے مارو 'پھراگر فشہ کرے تو پھر کو ڑے مارو کورچو تھی بار فرمایا اس کی گرون اڑا دو۔

حضرت عنین برائی نے فرایا خرے ابتناب کردئی تمام گناہوں کا ممل ہے، تم ہے پہلی امتوں میں ایک فضی عبارت کرار تھائاس پر ایک بدکار عورت فریفت ہوگئی اس نے اپنی بائدی بھیج کراس کو گوائی کے بمانے سے بالیا۔ جب وہ اس کے پاس کیاں پہنچاتو وردازہ بند کردیا اس نے دیکھاوہاں ایک حسین مورت ہے ایک غلام ہے اور ایک شراب کا برتن ہے۔ اس مورث نے کما خدا کی متم ایس نے تم کو اس لیے بالیا ہے کہ تم میری خواہش نفس پوری کردیا

غيان القر ان

اس شراب سے ایک پیالہ یویا اس غلام کو قتل کردو۔اس عابد نے کما بچھے اس شراب سے ایک پیالہ پلا دو' اس نے اس کو ایک بیالہ شراب پلاکی 'اس نے کمااور پلاؤ' مجراس نے اس مورت سے بدکاری کی اور اس غلام کو قتل بھی کردیا۔ سوتم خرے اجتناب کرو "کیونکہ خدا کی صم اواغا شراب تو ٹی کے ساتھ ایمان باتی نہیں رہتا ہے سنی انسائی' ج۸' رقم الحدیث: ۵۶۸۳)

حضرت عبدالله بن عموین العاص رضی الله عنمابیان کرتے ہیں کہ میں نے رسول الله طبیب کو یہ فرماتے ہوئے ساہے' کہ جس فیض نے فرکوریا' چائیس دن تک اس کی توبہ تبول نہیں ہوتی ' پراگر وہ توبہ کرلے تواللہ اس کی توبہ تبول کرلیتا ہے' پھر اگر دوبارہ شراب ہے تواللہ چائیس دن تک اس کی توبہ تبول نہیں کرتا' پھراگر توبہ کرلے تواللہ اس کی توبہ تبول کرلیتا ہے' پھراگر وہ شراب ہے تواللہ پر حق ہے کہ وہ اس کو دوز نبوں کی پیب پلائے۔

(سنن النسائي "ج٨" رقم الحديث: ٨١٨٦ سنن ابن ماجد" رقم الحديث. ٢٠٠٤)

حطرت عبداللہ بن عمرد منی اللہ عنما بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ سیج نے فرمایا جس مخص نے دنیا ہیں شراب لی کہر اس سے توبہ نمیں کی تو وہ آ ترت میں شراب (طمور) سے محروم رہے گا۔

(سنن اقسال اج ۸ مر قم الحديث ١٩٠٥ ميم الحاري وقم الحديث ١٥٥٥ السيح مسلم الاشربه ارقم الحديث ١٦٠٤٠) معرت عبدالله بن عمود مني الله عنما بيان كرتے بين كه نبي تابير نے فريا إحسان بتائے والا جنت ميں واخل نئيں ہوگا نه ماں باپ كانا فريان اور نه وائمي شراب نوش - (سنن انسائي ع ٨ وقم الحديث: ٥٦٨٨)

خمر کی حد کابیان

خمر پینده الله بر جد لگائی جائے گی خواہ وہ ایک تنظرہ تمریخ تور خواہ اس کو نشہ نہ و کیونکہ رسول اللہ بر پہر کا ارشاد ہو فضی خمر پی اس کو کو ڑے بارو اگر جو تقی بار خمر پئے تو محر پئے تو پھر کو ڑے بارو اگر جو تقی بار خمر پئے تو ہم کو ڈرے بارو کا تھم باتی ہے۔ کیونکہ رسوں اللہ اس کو حل کر دو۔ (ترفدی و الاواؤر) البت حل کرنے کا تھم منسوخ ہوگیا ہے اور کو ڈرے بارے کا تھم باتی ہے۔ کیونکہ رسوں اللہ بی جو بالا مسلمان کا خون صرف تین وجہ ہے جائز ہے۔ حل کے بدلہ جس حل کیا جائے یا شادی شدہ ڈانی کو رجم کیا جائے ؟ جو فض مرقہ ہو کر دین بدل نے اور مسلمانوں کی جماعت سے الگ ہو جائے۔ (مسلم) اور جو فض خمرے علاوہ اور کوئی نشہ آور مشروب پئے تو اس پر اس وقت عد داجب ہے جب اس کو نشہ ہو جائے اور خمر کی عد اجماع صحابہ ہے اس کو ڈے مقرر کی تئ

بھنگ اور افیون کا شرعی تھم

علامد سيد محراهن ابن علدين شاي حنى متوفى ١٥٠١ه ليست بن

الحرالا التى كى تماب العلاق على لكما ہے اگر كوئى فض لود لدب كے قصد ہے بھتگ ہے يا انيون كھائے اور اس كى محت بھتگ ہؤف ہو جائے گئ كو نكہ يہ معصيت ہے اور اگر اس نے علاج كى غرض ہے بھنگ في تقوف مو جائے گئ تھى يا انيون كھائى نقى تو اس كى دى بوكى طلاق واقع نيس برگی كو نكہ اب اس كا كھانا اور بينا معصيت نيس ہے۔ فتح القديم بن محتى يا انيون كھائى نقى تو اس كى دى بوكى طلاق واقع نيس برگی كو نكہ اب اس كا كھانا اور بينا معصيت نيس ہے۔ فتح القديم بن اس محتى الله بن كھانا ہوں كھانا جائے ہے۔ اور برازيہ بن مكھا ہم اس محتى ہو اكہ علاج كى غرض ہے بھتے اور انيون كا استعمال جائز ہے۔ النهرائفائق جى بھى اس تفسيل كو لكھنے ہے كہ اس علم سے معلوم ہواكہ علاج كى غرض ہے بھتے اور انيون كا استعمال جائز ہے۔ النهرائفائق جى بھى اس تفسيل كو لكھنے كے بعد آس كو صحيح قراد دیا ہے۔ (دو الحالم "جه معلوم دار ادیاء التراث العربی بیروت " دو معلوم)

سكون آور دواؤل كاشرى عم

سکون آورادویہ مثلّا اے۔ ٹی ون' ڈائزویام' دالیم' لبریم اور تغرائل دفیرہ کو بھی انسومینیا' دل کر فتکی (ڈپریش) اور مالیو ایا
ایسے امراض میں ماہر ڈاکٹر کی ہدایت کے مطابق استعمال کرنا جائز ہے ' حکین ان دواؤں کو بطور عادت یا نشہ استعمال کرنا جائز نمیں
ہے' یہ تمام دوا تعرب دفتی طور پر احسالی تھنج (ٹینش) کو دور کرتی ہیں 'حکین ان کے مابعد اثر ات زندگی اور صحت کے لیے بہت معتر
ہیں 'ان دواؤں کو یہ کھڑت استعمال کرنے ہے احصاب کزور ہو جاتے ہیں اور اخبر عمر میں رحشہ طاری ہو جاتا ہے۔

تمباكونوشي كاشرى تكم

اگر انسان مجی بہتی تمباکو پی لے تو یہ مباح ہے 'کین تمباکو تو ٹی کو علوت بنالین اور مستقل تمباکو پینا جائز نہیں ہے۔ کیو نکہ

اب جدید میڈیکل مائنس کی اس مختیق کو تمام و نیا میں تنظیم کرلیا گیاہے کہ تمباکو نو ٹی انسانی محت کے لیے معزہے 'تمباکو پینے سے باضوم او کوں کو کھائمی جو جاتی ہے۔ یہ ایک عام مشاہرہ ہے جس کا انکار نہیں کیا جا سکنا' تمباکو ہے مجمعظروں کی بیاریاں پیدا بوتی ہیں 'خوان کی شوانی نگ ہو جاتی ہیں 'بلڈ پریشر پردھ جاتی ہے 'کینمرجو جاتی ہو گائے اور بہت امراض پیدا ہوتے ہیں۔ امارے پاس بوتی ہیں 'خوان کی شوانی پیٹے اس جسم اللہ تعلق بینے کا کوئی حق نہیں ہے اور ہروہ چیز جس سے اس جسم کو نشمیان پیٹے اس جسم اللہ تعلق کی امان میں جسم اللہ تعلق کی تعلق کے اس جسم کو نشمیان پیٹے اس جسم کو نشمیان پیٹے اس جسم کو نشمیان پیٹے کا کوئی حق نہیں ہے اور ہروہ چیز جس سے اور اس کاار تکاب کرتا ممنوع ہے۔

علامد يكي بن شرف نودى متولى العامد لكيت بن

جوچیرں فقصان دہ ہوں ان کا کھانا جائز نمیں ہے۔ مثلاً ذہر 'شیشہ 'مٹی اور پھراور اس کی دلیل اللہ تعالیٰ کایہ ارشاد ترجمہ: "اپنے آپ کو گل نہ کرد" اور یہ ارشاد ہے" اپ کو ہلا کت جی نہ ڈالو" اور ان چیزوں کا کھانا بلا کت ہے 'اس لیے ان کا طائل نہ ہو ناواجب ہے۔ (شرح المذب 'ج ہ میں ہ ۳ مطبوعہ ھار الفائکو 'جروت) جو کے کی تعریف اور اس کے حرام ہونے کا بیان

اس آیت می جوا کیلئے کو بھی حرام قرار دیاہے او کیس معلوف قمار کامعنی لکھتے ہیں:

جروہ کمیل جس میں یہ شرط فکائی جائے کہ عالب معلوب سے کوئی جزیا ہے گا خواہوں جائدی ہو یا کوئی اور جزے

(المنجد من ١٥٣) مطبور المعبد الكالوليك محدث ١٩٢٤ -)

مرسيد شريف جرجاني منوفي ١٨٨ والمعيدين

مروه کھیل جس میں بہ شرط ہو کہ مغلوب کی کوئی چڑ غالب کو دی جائے گی تمار ہے۔

(التعريفات عن عند معلوم المطيعة الخيرية معرا؟ ١٥١١ه)

علامه سيد محد الين ابن عابدين شاي متونى ١٥١ عد كمية ين.

تمار' ترے مانوذ ہے۔ جو تمجی کم ہو تا ہے اور بھی زیادہ اور جوے کو تمار اس لیے کتے ہیں کہ جو اکھلنے والوں میں ہے ہر ایک آنامال اپنے ساتھی کو دینے اور اپنے ساتھی کا مل لینے کو (شرط کے ساتھ) جائز سمجتا ہے۔ اور یہ نص قرآن ہے حرام ہے اور اگر صرف ایک جانب سے شرط لگائی جائے تو جائز ہے۔

(روالحتار "ج٥ مس ٢٥٨ مطبوعه دار احياء الراث العربي ابيردت ١٠٠٠هـ)

علامه الو بكراحه بن على دازى بصاص حنى متوفى والله و لكهتة بين:

الل علم كابوت ك عابائز موت من كوئي اختلاف تيس ب اوريابم شرط لكتابي جواب- معرت ابن عباس رمني الله

عيان القر أن

منمانے فرمایا آئیں میں شرط لکتا جوا ہے اللہ جاليت من لوگ اپنال اور بيوى كى شرط لكتے تصديملے يہ مباح تما ابعد مي اس کی تحریم بازل ہوگئ ، جب مورہ روم بازل ہوئی تو حضرت ابو بھرتے رومیوں کے ایر اندوں سے عالب ہونے یر سٹرکین سے شرة لكائي تقى- نى يتي يد خرايا: شرة ين زيادتى كواور مت يومادو كريدين اس سه منع قرماديا اور جوئ كى حرمت عال مو گئے۔ اس کی حرمت میں کوئی اختلاف نیس ہے۔ البت شرسواری محوارے سواری اور نیزہ بازی میں سابقت کی شرط لكانے كى رفست ب الين سب سے آ مے نظنے والے كو انعام ديا جائے اور يہے رہے والے كو انعام نہ ديا جائے۔ (بدانعام كوئى تيرا فنس يامقابله كراف والادے كا اور أكريه شرط لكل جائے كدودوں من سے جو آكے نكل جائے كا ود الے كااور جو يجيے رو جائے گا وہ دے گاتوبہ شرط ناجازے اور اگر وہ کسی تیسرے مخض کو داخل کردیں اوب جائزے اور اس کو نبی بڑھا نے محلل فرلما ي- (احكام القرآن براعم ١٦٠ ملوع سيل أكيدى الادور مدمود)

معمه وكاثري أورسشه كاشرعي علم

جارے زمانہ میں معمہ اور لاٹری کا رواج ہے۔ معمہ میں ہیر ہو تاہے کہ ایک متررہ فیس اوا کرکے لوگ اس معے کو حل کر ك ماحب معرك إلى تست آزائى ك لي بيج دية بي اور لاكون بركاء كى فيسون ك زريد جور قوم جع بوتى بي اس میں سے تین جار انعام مقرر کیے جاتے ہیں۔ ملی حیثیت ہے تو اس سے کے بہت ہے حل می ہو سے ہیں الیکن انعام اس من کو ملاہے جس کا عل سمی معتول کو شش کی ہناہ پر نسین بلکہ محض امّاق سے کمیاندار کے عل کے مطابق ہو۔ جو نکہ سعے میں بھی تملیک کار ار خطرہ (Rlak) پر ہے اس لیے بہمی میسراور قمارے اور شرعاً ناجاز ہے اور حرام ہے۔

اس طرح الثرى مجى جوا ہے۔ الثرى على بوے بوے انعلات كالالح دے كراا كھوں ككث فروخت كے جاتے ميں اور كلوں ك دريد جور قوم جمع موتى يس اس يس عن قرم اندادى ك دريد چند لاكه روي تقسيم كرد. يخ جاتے يس- بهارے زمانه يس ہال احرادر فاقمید فاؤنڈیش کے رسل کلٹ کاکاردبار عام ہے " یہ کاردبار فائص جواہے "آگر کوئی مخص تب دل کے مریشوں کی مدد اور فریب جاروں کے لیے خون میاکر آے تو سید سے اور صاف طریقہ سے آکران اواروں میں مطیات جمع کرائے الاری كے كك خريد كر قسمت أز الى كے داست مريب اور غوار مريفوں كے ليے جوسے كى رقم مياند كرے اى طرح وہ سارے كميل اوركام جوئے من وافل بيں جن من اشياء كى تكنيم كارار حقوق اور خدمات اور متلى فيماوں ير ركھنے كے بجائے محض كمي القاتی امریر رک دوا جائے۔ محوار دوڑ کے مقابلوں میں اور جن الناقوای کمیلوں میں بارجیت پر جانبین ہے شرط لگانا اس طرح بارش مونے إند مونے ، اكى بحى القالى امرى جانبين سے شرط لكا صراحت سد اور جواب اور عاجاز اور حرام ب

میل اور در زش کے متعلق اسلام کانتظہ نظر

جسمانی ورزش اور باہمی دلچین کے لیے جو تھیل تھیلے جاتے ہیں ان کے تھیلنے سے آگر تھی فیر شری امر کاار تکاب نہ ہو یا مواور کوئی مبادت ضائع ند موتی موتوان کا کمیانا جائز ہے۔ مثلاً بعض کمیل ایسے بیں جن بی کمانا ڑی کمٹنوں سے اونچا نیکر پہنتے یں ابیض کمیل ایسے ہیں جو میے ے شام تک جاری رہے ہیں اور عمری نماز کاوقت کمیل کے دوران آکر نکل جا آ ہے اور کھلاڑی اور کھیل دیکھنے والے نماز کاکوئی خیال نہیں کرتے 'کھلنے اور جائے کاوقفہ کیا جاتا ہے "کیکن نماز کاکوئی وقفہ نہیں ہوتا' بعض دفعه ممي تعيل مي إرجيت وكوئي شرط ركمي جاتى ب-برسب امور ناجائز بي-

انسان کی صحت اور جم کو چاتی و چوبند رکھنے کے لیے محیل اور ورزش دونوں بہت مروری ہیں۔ بعض اوگ میز کری پر جیٹہ کردن وات بڑھنے لکھنے کا کام کرتے میں ان کوائے کام کی وجہ سے زیادہ ملنے پھرنے اور جسمانی مشقت کا وقع نہیں ما اس کی وجہ ہے ان لوگوں کی تو یہ نگل آتی ہے اور خون میں کلیسٹرول کی مقدار زیادہ ہو جاتی ہے کوریہ لوگ ذیا بیش (خون می شکر
کا ہوتا) ہائی بلڈ پریش دل کی بیار ہوں معدہ کا ضعف اور حیس کا شکار ہو جاتے ہیں ان بیار ہوں سے محفوظ رہنے یا بیاری الاش
ہولے کے بعد ان کا مقابلہ کرنے کے لیے مختف تم کے کھیاں اور ورزشوں میں مشغول رہنا حفظان محت کے لیے نمایت
مزوری ہے۔

اسلام میں مخلف کمیلوں اور ورزشوں کی بھی مناسب مدیک حوصلہ افزائی کی مخلے ، بی بیجید نے مکر سواری کا مقابلہ کرایا 'پیل دوڑ کا مقابلہ کرایا' آپ نے خود بہ نفس تنیس دوڑ کے مقابلہ میں حصد لیا' اس طرح آپ نے کھٹی بھی کی' اس سلسلہ

میں ہم نے تمام امادیث شرح معج مسلم عبلد سادس میں بیان کردی ہیں۔

جم كوچاق وچوبر اور صحت كوقائم ركف كے ليے جو كھيل تھلي جائيں اور جسمانی ورزشيں كى جائيں ان بي بيات برق جوئى جائيں ان بي بيات بوئى جائيں ورزشيں كى جائيں ان بي بيات بوئى جائے ہے اور اس كے رسول جي ہے ادكام پر زيادہ انھى طرح عمل كرسكا ہے ، اور حقوق العباد كى اوا تحق مال كرسكا ہے ، اور حقوق العباد كى اوا تحق الله مست اور قالنا جم سے بمنز طور پر كى جائيتى ہے۔ اس ليے انھى محت اور خال اللہ مال ہے انھى محت اور خال اور ورزشوں بي حصر ليما جا ہے۔

علامدابن قدامه منبلي لكيح بي

بنیر کسی موش کی شرط کے مقابلہ میں صد ایرنا مطلقا جائز ہے اور نہ اس میں کمی معین جن کے مقابلے کی تیر ہے۔ فواہ

ہاںہ دوڑکا مقابلہ جو 'کشتیر ان کا جو یا پرندوں 'فجروں اگد حوں اور ہاتھیوں یا نیزوں کا مقابلہ جو۔ اس طرح کشتی اڑتا بھی جائز ہے 'اور

طاقت آزبائی کے لیے پھر افعانا بھی جائز ہے 'کیونکہ آیک سفر میں نبی بڑھیں نے محرت عائشہ سے دوڑ میں مقابلہ کیا ہے۔ معرت

سلہ بن آکوع نے ایک افساری ہے دوڑ میں مقابلہ کیا 'نبی جھیں نے محضرت رکانہ سے کشتی اڑی اور نبی جھیں آئی اور نبی جھیں آئی اور نبی جھیں آئی اور نبی جھیں ایک قوم کے پاس

سے کزرے 'جو پھر افعائر طاقت آزبائی کرری تھی 'آپ نے ان کو مصح نہیں قربایا۔ اواستی 'جو میں معموم جود جودت)

ان تمام اماویٹ اور آ دار میں اس کا جوت ہے کہ صحت اور قوت کو برقرار رکھنے کے لیے صحت مند کھیاں اور جسمانی ورزشوں کو اختیار کرنا جاہیے کور ان کھیاں میں دلچہی پیدا کرنے کے لیے مقابلہ منعقد کرانا بھی جائز ہے۔ البتہ کسی بھی مقابلہ پر

ہار جیت کی شرط ریکھنا ہمبائز ہے۔ چو سراد ر شطر بج کے متعلق ندا ہب نقهاء

طامداين قدامد منبلي ليست ين

مروہ کیل جس میں آماد ہو اور حرام ہے اور جس کیل میں کمی ہی جاتب ہے کمی ہوش کی شرط نہ ہو ان میں ہے بعض حرام میں اور بعض مباح ہیں۔ حرام آو فردشیر ہے۔ اہم ابو حفید اور اکثر شافعیہ کا کی قول ہے اور بعض فقداء نے کہا ہے کروہ ہے اور میں ہیں ہے۔ ہواری دلیل ہے ہوا ہو کہ دسول اللہ حرام نہیں ہے۔ ہواری دلیل ہے کہ اہم ابوداؤد نے اپنی سند کے ساتھ صفرت ابو موکی جو پڑے ہے دواے کیا ہے کہ دسول اللہ بھی نے فریا جس محض نے فروشیر (جو سم) کھیا اس نے اللہ اور اس کے دسول کی بافرانی کی اور صفرت بریدہ جو پڑے ہے دواے کیا جس نے فردشیر کو کھیا اس نے اپنی خدن ہوری کے فون اور موشت میں دیک لیے اور سعید بن جبعد جس فردشیر (جو سم) کھیلے والوں کے باس ہے گرد تے تو ان کو ملام فیم کرتے تھے۔

ان دلائل کی بناہ پر جو فضی باربار نردشیر (چوسم) کھیلے اس کی گوائی مقبول نمیں 'عام ازیں کہ وہ جوئے کے ساتھ کھیلے یا بغیر جوئے کے امام ابو حذیفہ اور امام مالک کا بھی میں قول ہے اور میں لیام شافعی کا نظام رغیب سے 'شفرنج بھی چوسمر کی طرح حرام ہے۔

جُبِيانِ القر أن

البت اچ مرکی حرمت زیادہ شدید ہے کو تک اس کی حرمت میں مرح نفی دارد ہے اور شلن کو چو مربر قیاس کرے حرام کیا آیا ہے۔ قاضی ابوالحسین عے ذکر کیا ہے کہ حضرت علی بن ابی طالب 'حضرت ابن عرا حضرت ابن عباس رضی اللہ عنم 'سعید بن مسیب ' قاسم ' مالم ' عود ' جربن علی بن حسین ' ورائی اور ایام بالک کے نزدیک شفر نج حرام ہے اور بھی ایام ابو منینہ کا قول ہے اور ایام مالک کے نزدیک شفر نج حرام ہے اور بھی ایام ابو منینہ کا قول ہے اور ایام مالک کے نزدیک شفر نج حرام ہے اور بھی ایام ابو منینہ کا قول ہے اور ایام شافع کتے ہیں کہ شفر نج مبلح ہے۔ حضرت ابو جربرہ 'سعید بن مسیب اور سعید بن مجبود کا بھی بھی ذہاب ہے اس کی دلیل یہ ہے کہ اصل اشیاء میں اباحث ہے اور شفر نج کی تحریم میں کوئی نفس وارد نہیں ہے اور نہ بی شفر نج اور نرد شیر میں کوئی طحت مشتر کہ ہے۔ جنگی چالوں کی مشق ہوتی ہے 'الدا اید نیزہ بازی ' تیم اندازی اور گھو ڑے مواری کے مشابہ ہے۔

علام ابن قدامہ منبلی فراتے ہیں اہاری ولیل یہ ہے کہ اللہ تعالی نے میم لینی جوئے کو حرام کیا ہے۔ اللا کدونہ اور صحرت علی نے شارنج کو بھی میم فریا اور شارنج کھیلے والے اس کھیل ہے جنگی چالوں کی تربیت حاصل کرنے کا تعد منیس کرتے این کا اس سے قصد صرف کھیل یا جو ابو باہے ۔ نیزا اس بھی مشغول ہو کرانسان نمازوں اور خداکی یاد ہے غافل ہو جا ہے اس ان کا اس سے قصد صرف کھیل یا جو ابو باہے ۔ نیزا اس بھی مردود ہے۔ اہم ابو صنیفہ اور اہم بالک کا بھی کی قول ہے۔ ابو برکہ نے کہا کہ جو مختص شارنج کو کھیلے تو ہے گھل والے کی شاوت بھی مردود ہے۔ اہم ابو صنیفہ اور اہم بالک کا بھی کی قول ہے۔ ابو برکہ کہا کہ جو مختص شارنج کو کھیلے تو ہے قتل حرام ہے اور اگر اس کو مہام بھینے واس کی شاوت مسترونہ میں ہوگی اللہ کے اس کھیل کی وجہ سے وہ نمازوں سے قافل ہو جائے یا اس کھیل جی وہ جمورتی قتمیں کھائے یا بازار میں بیٹو کر کھیلے یا اس کی وجہ سے کوئی اور مستی اور ہے وقعت حرکت ہو۔ یہ اہم شافعی کا ذہب ہے "مو شاخ کا بھی دی تھم ہے جو باتی قتلف نید مسائل کا سے کوئی اور مستی اور ہے وقعت حرکت ہو۔ یہ اہم شافعی کا ذہب ہے "مو شاخ کا بھی دی تھم ہے جو باتی قتلف نید مسائل کا تعدل کے اور اسٹی اور سے المنی کی جو باتی قتلف نید مسائل کا سے والمنٹی کی جو باتی میں موجود کی اور مستی اور ہے وقعت حرکت ہو۔ یہ اہم شافعی کا ذہب ہے "مو شاخ کا بھی دی تھم ہے جو باتی قتلف نید مسائل کا توجہ ہے اس کھی دی تھم ہے دو باتی میں تھی میں تھی ہو تا ہے۔ والمنٹی کی جو باتی میں اور کا میں تھی تھی ہو تا ہے۔ والمنٹی کی جو باتی میں اور کا میں بھی اس کی دور سے والمنٹی کی جو باتی میں میں کھی ہو تا ہے۔ والمنٹی کی جو باتی میں میں میں میں تھی ہو تا ہے۔ والمنٹی کی جو باتی میں میں میں میں میں تھی ہو تا ہے۔ والمنٹی کی جو باتی میں میں میں تھی میں میں تھی تھی ہو تا ہے۔ والم کی دور سے دور میں تھی میں تھی تھی ہوئی تو تا ہے۔ والم کی دور سے دور میں تھی تھی ہو تا ہے۔ والم کی دور سے دور میں تھی تھی ہو تا ہے۔ والم کی دور سے دور میں تھی تھی تو تا میں میں تھی تھی ہو تا ہے۔ والم کی دور سے دور میں تھی تھی تھی تا ہو تا ہے۔ والم کی تھی تا ہو تا ہے۔ والم کی تا ہو تا ہے دور سے دور تا ہو تا ہو تا ہے۔ والم کی تا ہو تا ہو تا ہو تا ہو تا ہو تا ہو تا ہے۔ والم کی تا ہو تا

علامه علاؤ الدين الحسكني الحنفي لكميت بين:

زد (چ مر) اور شلرنج کمیلنا کردہ تحری ہے الم شافع نے شلرنج کمیلنے کو مباح کما ہے۔ اہم ابو بوسف سے ایک روایت کی ہے ' یہ اس وقت ہے جب بس میں شرؤ نہ لگائی جائے اور نہ اس کو کمیلنے کی عادت بنائی جائے اور نہ اس میں مشنولیت کی بناہ پ کسی واجب کو ترک کیا جائے' ورنہ شافرنج کمیان بلاجماع حرام ہے۔

(ور عني على امش ر دالعمار 'ج ۵ من ٢٥٣-٢٥٢ مطبور دار احيا والتراث العربي 'جروت)

کرکٹ میج کے متعلق امام احمد رضا کی ہدایت مولانا قبل احمد نوری لکھتے ہیں:

عرصه ۱۰ سال کا بواا طاقی احد حسین صاحب نے نمیب آباد می امائید ملاقات کے دوران ایک جیب واقد میان کیا کہ جب میں برلی بائی سکول میں پڑھ رہا تھا اور دہیں بورڈ مگ باؤس میں رہتا تھا اور ہفتہ میں دو تمن بار اعلی حضرت قبلہ قدس سرہ کی خدمت میں حاضر بواکر آتھا۔

ایک مرتبہ میرٹھ کی ایک میم ہر نبکہ ہے جیت کرہ کی کھیلنے پر لی آئی ہیڈ ہٹر اگریز بھی ماتھ تعلہ پہلے روز پر لی ک نیم کھیل اور جس ران بنا کر پوری نیم آؤٹ ہوگئی جس کے سب بڑی سراسیکی پیدا ہوگئی اور جینئے کاکوئی امکان نہ رہا۔ ای روز بعد مغرب جس اور غلام جیلانی (کہ ہم دولوں ہم سبق اور چر بھائی تنے) اعلی حضرت قدس سروکی فد مت میں عاضر ہوئے اور سازی کیفیت بیان کی۔ اعلی حضرت قدس سرو نے ارشاد فرملا کہ میرٹھ اور پر لی جردد جگہ کے کھیلنے والے می امید لیے ہوئے جس کے بھاری جیت ہو۔ بھر پر لی کے ظابوکی اگر اور اور کی جائے جب کہ جردد فراق جس مسلم اور غیر مسلم طلباء موجود ہوں کے۔

تبيان القر أن

عرض کیا ہاں وصنور 'بلت تو تک ہے 'تحرامٹر قرب محدصانب جو سید ہیں ' صنور انسیں خوب جلنے ہوں گے۔ فرمایا ہاں ا عرض کیا 'وہ ٹڑکول کو گیند بلا بھی کھلاتے ہیں اور ڈرل ماسٹر بھی ہیں 'ان کی شخواہ میں پندرہ ردیبے ترقی اس شرط پر قرار پائی ہے کہ برلی دائے جیت جائیں' فرمایا ہے بلت قابل خور ہے۔

ادشاو فربایا آگر میرفد والول کے سولہ فہرادن پیش او برلی والوں کی جیت ہے۔ مرض کی تی حضورا اس کے بعد ادشاو
قربا کہ کل میں جب برلی کے لاک کیلئے کے لیے چلیں و انہیں جو مسلمان ہوں مہنیں سکھا وہا جانے کہ ہم اللہ بڑھ کر قدم
جما میں اور سیدھے باتھ کی انگیوں پر محتملیاں ہے شہرا کریں اور کھید عصر بیپائی حموف ہیں ہر حرف پڑھے جا میں اور
ایک ایک ایک انگلی بند کرتے جا میں 'چرالئے باتھ پر حصص سے بھی بائی حموف ہیں 'ہر جرحرف پڑھے جا میں اور ایک ایک انگلی
بند کرتے جا میں 'جب وولوں معیاں بند ہو جا میں تب سورہ "الملم تر کیدمد" پڑھیں۔ جب ترمیسهم پر پنجیں واس کو
دس بار پڑھیں اور جراد سیدھے باتھ کی ایک ایک ایک ایک انگلی کو لے ' پھرالئے باتھ کی بھی تک دس بار ترمیسهم پڑھنے میں دس
انگلیاں کھل جا میں گی 'پھرائیسے سودہ بحصول و سحملهم کیدھ ماکول پڑھ کر اپنی جگہ جا کر
کوڑے ہو جا میں اور جو لاکا گیند جیکے 'است محمادی کے جرج مرتبہ حسم یہ سے ورن پڑھ کر گیند جیکے۔

معجدید اواکد ۱۱ران مناکر میراند کے دوسب اڑے آؤٹ او کے جوت معلوم کمال کمال سے جیت کر آئے تھے۔

یہ تھی انگی معرت قدس مرد کی فن ریاضی کل کئے یا کرامت کے بیٹ آپ نے بیٹ ایک ایبا محل عطافرادیا کہ اس ممل کے دربیر برخم کے مقابلوں میں فق عاصل کی جا سمتی ہے ، بعض عالمین نے اس پر یہ کماکہ کمی بھی قیت پر میرٹی والوں کے مولہ دن سے زیادہ بن می نمیں سکتے تھے ، کیونکہ اس محل میں بھی ایک جیب ظلفہ اور محکمت ہے۔ کہ بعد مص میں پانچ حدف ہیں۔ حسم سست میں پانچ حدف ہیں اور تر مید ہے میں جہ حدف ہیں۔ اس طرح کل طاکر مول حرف ہوئے ، ہی اعلیٰ معربت نے اس محل کے دربے ریش کردی تھی۔ الذا مولہ دن سے آگے بوصنا اور اس سے کم ہونانا ممکن تھا۔

(هم شبستان رضا محمد سوم عم ۴۸۰۵ مرام مطبوعه روی جبلیکیشنز کلامور)

شراب پر زیادہ تنعیل بحث شرح می مسلم جلد سادس اور خامس میں ہے اور جوئے پر زیادہ تنعیلی تفتیلو شرح می مسلم، جلد رالح اور خامس میں ہے۔

شراب اور جوئے کی دینی اور دنیاوی خرابیاں

اس ایت اس در وجود سے شراب اور جوئے کی حرمت بیان کی گئے ہے:

- ا۔ شراب اور ہوئے کو بنوں اور فال کے تیروں کے ماتھ ذکر فربایا ہے اور بعد اور فال کے تیر حرام ہیں مو شراب اور جوا مجی حرام ہیں۔
 - ۱- شراب اورجوے کو رجی لین عال فرایا ہے اور عال جرحام ہے اس لیے شراب اور جوا بھی حام یں۔
 - ٣- ان كوشيطان كاعمل فريايا ورشيطان كاعمل حرام ب-
 - السعابة المناب كرف كالحم والورجس عدامة المناب كرناواجب واس كالراكاب كرناح ام ب-
- ۵- ان ے ابتتاب کرنے پر اخردی فوزو قلاح موقوف ہے اور ان کاار تکلب فوزو قلاح کے متافی ہے اور جو چزا خردی فوزو قلاح کے متافی جو کو وہ ترام ہے۔
 - ٢- ان ك دريد شيطان تهاد مدرميان بغض بداكر آب اور بغض حرام ب

2- ان کے ذریعہ شیطان تمارے ورمیان عراوت پیدا کر آب اور عداوت ترام ب اور یہ دونون اجماعی ضرر ہیں۔

۱ن کے ذریعہ شیطان جہیں اللہ کی یادے رو کتا ہے اور جو چڑافتہ کی یادے رو کے وہ حرام ہے۔

٩- ان ك ذريع شيطان حميس نماز ، دوكا ب اورجوج نماز ، روك وه حرام ب.

١٠ پر قراليا كياتم باز آنے والے موج سوشراب اور جوت سے باز آنا قرض ہے اور ان ميں مشغول مونا حرام ہے۔

ای وجہ سے حضرت عمل نے فرایا خر (شراب) ام النبائث ہے۔ (النمائل عدامی) اور حضرت النس بن الک جنتی الل جنتی الل جنتی الل جنتی اللہ جنتی کہ وسول الله میں اللہ جنتی شرائی شرائی میں بات کا نافر مان النس الن النس مراکہ وہ وائی شرائی تما اللہ علی اللہ علی اللہ علی اللہ علی مراکہ وہ وائی شرائی تما اللہ سے اللہ علی مراکہ وہ وائی شرائی تما وہ اللہ سے اس علی مراکہ وہ وائی شرائی تما وہ اللہ سے اس علی میں سے گا بھے بنول کو بے بنے والا مور (سند البرائر عام میں اور حضرت عبد اللہ بن مسعود جرائی الله کرتے ہیں کہ خریر علی مراکہ وہ والے یہ انگور نمی شرائی میں کہ خریر علی اللہ علی میں اللہ میں مراکہ وہ والے یہ انگور نمی شرائی میں کہ خریر علی میں میں میں میں اللہ میں مراکہ والے یہ انگور نمی کرتے ہیں کہ خریر علی جانے والے یہ نمر اللہ میں مراکہ والے یہ انگور نمی کرتے ہیں کہ خرید میں اللہ میں ہیں اللہ میں ہو اللہ اللہ میں ہو اللہ میں ہو اللہ میں ہو اللہ میں ہو اللہ اللہ میں ہو اللہ ہو اللہ ہو اللہ ہو کر اللہ میں ہو اللہ ہو اللہ ہو کر اللہ ہو ہو اللہ ہو کر اللہ ہو ہو کر اللہ ہو کر ا

خرانسان کی مش ذاکل کروی ہے اور انسان نشہ کی صاحت میں ایسے کام کرتا ہے جن کی وجہ ہے او گوں کی نگاہوں ہیں اس کی عزت اور آبرو کر جاتی ہے اور اس کا و قار نہیں رہتا' نیک کاموں کی قدرت جاتی رہتی ہے اور برائی ہے دور نہیں ہو سکا۔ اس کے علاوہ شراب لوشی ہے اس کی صحت تباہ ہو جاتی ہے اور احصاب کزور ہو جاتے ہیں' اس کا اثر اس کی اولاد پر بھی پڑتا ہے اور اس کی اولاد کرور پیدا ہوتی ہے اور اس میں کی تیاریوں کی استعداد ہوتی ہے اور نشر کی صاحت ہیں انسان اپنی ہیوی کو طفاق دے ڈالٹا ہے اور اس سے اس کا کھر تباہ ہو جاتا ہے اور شیح ور ان ہوجاتے ہیں۔

جوئے۔ آیک ڈران کو بغیر کسی محنت اور عمل کے بہت فائدہ ہو تا ہے اور دو سرا فران ناگمانی طور پر بہت بزے فقصان سے
دوجار ہو جاتا ہے۔ اس وجہ سے وہ آیک دو سرے کے وطمن ہو جاتے ہیں اور بسالو قات سے دهنی قتل اور خون ریزی کی طرف
پنچائی ہے۔ خلاصہ سے ہے کہ شراب اور جوئے میں صفحی اور اجتمامی اور دینی اور وزیادی خرابیاں ہیں۔
انصاب اور ازلام کی تغییر

حضرت این عمیاس رمنی الله مخمالی فرمایا افساب اور فسب ان پخموں کو کہتے ہیں جن پر مشرکین اپنے جانو روں کو ذکح کرتے تھے۔ (میج انبواری کے 6 کر آئم الیمن شدہ ۳۵ مطبوعہ وارافکتب اصلیہ کی ہے۔)

ابو عبیدہ نے کمانصب واحدہ ہور افساب جم ہے۔ ابن قصیہ نے کمانے وہ پھریں جن کو گاڑ دیا جاتا تھااور ان کے پاس جانوروں کو ذرج کیا جاتا تھااور این پر جانوروں کاخون ڈال دیا جاتا تھااور انساب نصب کی بھی جمع ہے 'اور اس کامعنی بت ہیں۔ (حیالباری 'ج ۸ میں ۲۷۷-۲۷۵ میلوعہ دار فشرا کھتب الاسلامیہ 'لا ہور '۱۰ سماھ)

ازلام کے متعلق حضرت ابن عباس رضی اللہ عنمانے فرملیا ازلام ان تیموں کو کتے ہیں جن سے زملنہ جالیت میں سٹرکین اپنی قسمت معلوم کرتے تھے۔ وہ مرول نے کمازلم اس تیم کو کتے ہیں جس میں پرنہ ہوا ہد ہے اور اس کی جمع ازلام ہے۔ اور استقام (قسمت طلب کرنا) ہے ہے کہ تیم کو محملیا جائے۔ اگر وہ کسی کام سے منع کرے تو رک جائے 'اور اگر کسی کام کا تھم دے تو استقام استقام استقام کرتے ہے۔ اس کو کرے 'انہوں نے تیموں پر مختلف میم کی علامتی بنائی ہوئی تھی جن کے ڈراید وہ قسمت معلوم کرتے ہے۔ اس کو کرے 'انہوں نے تیموں پر مختلف میم کی علامتی بنائی ہوئی تھی جن کے ڈراید وہ قسمت معلوم کرتے ہے۔ اس کو کرے 'انہوں نے تیموں پر مختلف میں علامتی بنائی ہوئی تھی جن کے ڈراید وہ قسمت معلوم کرتے ہے۔ اس کا کسی بیروت)

یں کہتا ہوں کہ اس سے سے لازم نہیں آنا کہ وہ انفرادی طور پر جیروں کانہ استعمال کرتے ہوں 'جس طرح سراق نے کیا تھا'
اہم ابن جریہ طبری نے سعید بن جریہ سے روایت کیا ہے کہ اؤلام سفید کشریاں تھیں اور مجاند سے نقل کیا ہے کہ وہ پھر تھے 'جن
پر کچو کھیا ہوا تھا' اور وہ اپنے ہر سفریس خواہ وہ سفر بنگ کا ہو یا تجارت کا الن پھروں کے ساتھ سفر کرتے تھے 'یہ تغییراس پر محمول
ہے کہ وہ کعبہ والے اؤلام کے طاوہ تھے۔ محد شین کے کلام کا ظامرہ سے ہے کہ ان کے اذلام (فال لگائے کے جبر) تین تم سے
ھے۔ (۱) یہ تین تم کے جرتے اور سے جرائے کہ پاس تھے (۱۲) سامنام کے تیر تھے اور کی کوب میں تھے اور یہ طرب کے ہر
عاکم اور کائن کی دسترس میں ہوتے تھے' یہ تیر سات تم کے تیر تھے اور ان پر قصاص اور وہ و فیرہ کے ادکام کھے ہوئے اور
ایسے امور بھ یہ کشرت ویں آئے تھے۔ (۱۲) یہ بوٹ کے تیر تھے' یہ وی تھے' سات دھاری دار تھے اور تین ساوہ تھے
اور وہ ان تیروں کے ساتھ جوا کھیلتے تھے۔
اور وہ ان تیرون کے ساتھ جوا کھیلتے تھے۔

ابو عبیرہ نے کہا تسب معلوم کرنے یا فال نکالنے کا طریقہ بیر تھاکہ وہ تیر کو عمالے تا کہ ان کی قسب معلوم ہو۔ آیا وہ سفر کریں یا نہ کریں ' جنگ میں جا کمیں یا نہ جا کمیں اور جو بچھ لکھا ہوا ٹاٹ اس کے مطابق عمل کرتے۔

(فتح الباري ع ٨ عم ٨٥ ٢ - ١١ ٢ مطبوع قلاء و ١ ١ ١ ١١١٥)

ازلام کی تغییر چی مزید میاحث اور مسائل ای سورت کی آیت قبر ۴ جی طاحظه قرمائیں۔ الله تعالی کا ارشاد ہے: اور الله کا تھم ہانو اور رسول کا تھم ہانو اور مختلط رہو کا گراگر تم نے تھم عدونی کی تو جان الوک ہمارے رسول پر تو صرف احکام کوصاف طور ہے پہنچا دیتا ہے (المائدہ: ۴۴)

الین اللہ اور اس کے رسول نے خرا جو ہے اور دیگر محربات ہے اجتاب کا جو تھم دیا ہے اس تھم پر عمل کرواور اس بات سے ڈرو کہ اگر تم نے اللہ اور اس کے رسول کے تھم کی مخالفت کی تو دنیا میں تم پر کوئی مصیبت آ جائے گی یا تم آ خرت کے عذاب میں جملا ہو گے 'جیسا کہ اللہ تعالی نے اس آیت میں فرایا ہے:

جو نوگ رسول کے تھم کی تالات کرتے ہیں "وہ اس بات سے ژریں کہ انس کوئی آفت پنچے یاور دناک عزاب۔ فَلْيَحُذَرِ اللَّذِيْنَ يُحَالِفُونَ عَنَّ امْرِهَ أَنْ تُصِيْبَهُمْ فِنْنَكُمُّ أَرْيُصِيْبُهُمْ عَدَابُ الِبُّمَ

(التور: ۳۳)

اور اگر تم نے اعراض کیااور ہارے رسول کے تھم پر عمل نہیں کیاتو رسول اللہ میں جانے فرما چکے ہیں اللہ کی جست تم پر بوری ہو تھی ہیں جست تم پر بوری ہو تھی ہے اور اب تمارے لیے کسی عذر کی کوئی محوائش باتی نہیں دی۔

الله تعالی کارشوب: ایمان دائے اور نیک عمل کرتے دائے جو پکھ (پہلے) کمانی بچے ہیں "اس سے ان پر کوئی باز پرس نیس ہوگی بشر ملیکہ دہ اللہ سے ڈرتے رہیں اور ایمان پر پر قرار رہیں اور نیک عمل کرتے رہیں 'پر اللہ سے ڈرتے رہیں اور برستور ایمان پر قائم رہیں۔ پھر اللہ سے ڈرتے رہیں اور اجھے کام کرتے رہیں اور اللہ اجھے کام کرنے دانوں کوپند کرتا ہے۔

(الما کہ و: ۹۳)

شان زول كابيان

المام احدين خيل متونى ١٩١١ه دوايت كرست بيل:

صفرت ابن عباس رمنی الله عنما بیان کرتے ہیں کہ جب شراب حرام ہونے کا علم نازل ہوا تو محلبہ نے کمایار سول اللہ ا الدے ان بھائیوں کا کیا صل ہوگا جو شراب پیچے تھے اور اس حال میں نوت ہو گئے۔ تو یہ آیت نازل ہوئی ایمان والے اور نیک عمل کرنے والے ہو چور (پہلے) کھائی بچے ہیں اس سے ان پر کوئی ہاڑیرس نہیں ہوگی۔ الائے

استد احد کا رقم الحدیث: ٢٠١٧-٢٠٥٧ - ١٠٥٧ - ١٠٥٧ الفکو استد احد کی اص ٢٠٢٣ طبع تذیم اجامع البیان این من ۵۰ الم ما کم سالے کمایہ حدیث مجے ہے اور لام ذاک سالے ان کی موافقت کی المستد رک ج ۲ می ۱۳۲۳)

الم ابو ميني حرين ميني ترزي روايت كرتے بن:

حضرت براء جوجہ بیان کرتے ہیں کہ نی جہید کے اصحاب میں ہے کہ اوگ شراب کی دمت کا عم بازل ہونے ہے ۔ پہلے فوت ہو گئے : جب شراب کی دمت کا عم بازل ہونے ہے ۔ پہلے فوت ہو گئے : جب شراب حرام کردی گئی قو محلبہ نے کما دہارے ان اصحاب کا کیا مال ہوگا جو شراب پیتے رہے اور فوت ہو گئے ، جب ایت بازل ہو کی۔ الم ابو بیسی نے کمایہ صدعت حسن سمج ہے۔

(من رَدَى عه وقم الدعد ١٠٠٤ مع ابن حبال عن وقل عن وهم مند الديعلي ١٤٠٠ ما البيان عد

تريم فري ماريخ

مافظ شماب الدين احمد بن على بن جرعسقلاني لكعية بين:

شراب کو حرام کر کے اللہ تعالی ہے ہم پر احسان فرملا ہے کیو تکہ شراب عش کو زائل کردتی ہے سوجو چیز عشل کو زائل کرد دے 'اس کو حرام کر دیتا ہم پر بہت براانعام ہے۔ اگر یہ احتراض کیا جائے تو پھر گزشتہ احتوں میں خمر کو کیوں حامال ر کھا گیا' جبکہ عشل کی اُن کو بھی صروحت تھی ؟ اس کا جو اب بھی ہو گر گران کی مزودت تھی ؟ اس کا جو اب بید ہے کہ نشر کرنا تمام ادیان جس حرام دیا ہے 'ان پر خمر کی قلیل مقدار حامال تھی ' ہم پر خمر کی قلیل مقدار بھی حرام کر دی گئی' آگر قلیل مقدار جس خمر کا چیا کیٹر مقدار میں خمر بینے کا ذریعہ نہ بن جائے اور یہ اللہ

غيان القر ان

تعالی کاہم پر خصوصی کرم ہے کیونکہ اس نے ہم کو خیرام قرار دیا ہے۔ اگرید اعتراض کیا جائے کہ پھراس عکمت کی وجہ ہے ابتداء "اسلام میں خمر کو حرام کیوں نہیں قرار دیا؟ اس کاجواب یہ ہے کہ اللہ تعالی نے ابتداؤاسلام میں خمر کو مباح رکھا تاکہ مسلمان خمرے فساد کا خود مشاہدہ کریں 'حتی کہ جب ان پر خمر حرام کردی مجی قوانسوں نے جان لیاکہ اللہ تعالی کابی تھم برحق ہے۔ اللہ کے خوف کو تیمن بار ذکر کرنے کی توجیمات

اس آمت میں فرایا ہے بہ شرطیکہ دہ اللہ ہے ڈرتے دہیں اور ایمان پر بر قرار دہیں اور نیک عمل کرتے رہیں 'پر اللہ ہے ڈرتے رہیں اور بدستور ایمان پر قائم دہیں 'پر اللہ ہے ڈرتے دہیں اور ایتھے کام کرتے دہیں۔

اس آیت می ود مرتبہ ایمان لانے اور تین مرتب اللہ ے ڈرنے کا ذکر فرایا ہے اس کی کئی تغیریں ہیں۔

ا- پہلے ایمان اور تقویٰ ہے مراد اصل ایمان اور اصل تقویٰ ہے ایمیٰ انہوں نے شرک اور کفر کو ترک کیا اور اللہ ہرایمان اللہ کے اور دو سمری مرتبہ اللہ ہے ڈر نے اور اس پر ایمان الانے ہے مراویہ ہے کہ وہ اس ایمان اور تقویٰ پر بر قرار دہا اور تیمری مرتبہ اللہ ہے ڈرنے ہے مراویہ ہے کہ وہ اللہ کے خوف ہے اس کے بندوں پر ظلم کرنے ہے باز دہے 'اور ان کے ساتھ نیک سلوک کرتے ہے۔
 سلوک کرتے دہے۔

۱۰ کیلی باد اللہ کے ڈر اور اس پر ایمان لاتے ہے مراویہ ہے کہ وہ اللہ ہے ڈرے لور اس کے نازل کیے ہوئے مابقہ انکام مثل نماز 'روزہ اور جماو و فیرہ پر ایمان لاے اور دو سری مرتبہ اللہ کے خوف اور اس پر ایمان لانے ہے مراویہ ہے کہ وہ اللہ کے خوف اور اس پر ایمان لانے مراویہ ہے کہ وہ اللہ کے خوف ان اس کے مراویہ ہے کہ وہ ان کی خوف میں شراب ہوئے 'انساب اور ازلام کو حرام کیا گیا او وہ ان کی حرمت پر ایمان کے آسمت ہی تیسری بار اللہ کے ڈو سے مراویہ ہے کہ وہ خوف خوا سے محرمات سے اجتاب کرنے پر برقرار رہے اور نیک سلوک کرتے ہے۔

۳- کیلی بار اللہ کے ڈر اور اس پر ایمان اللہ نے سے مرادیہ ہے کہ وہ فوف فدا ہے محربات سے بیجہ تھے اور ایمان اور اعمال مالحہ پر برقرار رہے تھے اور ور سری بار ذکر ہے مرادیہ ہے کہ وہ فوف فدا سے بعد میں حرام کی جانے والی چیزوں مثلاً شراب سے گئنب ہوئے اور اس کی تحریم پر ایمان لائے اور تیمری بار ذکر ہے مرادیہ ہے کہ وہ اللہ کے ڈر ہے اس اجتناب اور اعمال ممالحہ پر برقرار رہے۔

٣٠٠ تين بار ذكرے تين او قات مرادي اينى وه ماشى بي اللہ سے ڈرتے ہے " مال بي بھى اللہ سے ڈرے اور مستقبل بير بھى اللہ سے ڈرنے والے بير۔

کی از ذکرے تمن احوال مرادیں ایسٹی دہ فوف فدائے کوئی ایس بات ٹیس کئے جو اللہ عزوجل کی شان کے الوئی نہ ہو' اور نہ وہ کوئی ایس بات کئے ہیں جو اور اسے نئس اور عام ہو' اور نہ وہ کوئی ایس بات کئے ہیں جو ان کے اپنے نئس اور عام مسلمانوں کے لیے باعث ضرر ہو' بلکہ اس کے بر عکس وہ افتہ تعالیٰ اس کے رسول بہتی ہو اور عام مسلمانوں کی فیرخوائی ہیں کوشل دیتے ہیں۔
 کوشل دیتے ہیں۔

١٠ وہ خوف فدا ہے كبيرہ اور مغيرہ كناہوں ہے بہتے ہيں ' ظاف سنت اور ظاف اولى كاموں ہے بہتے ہيں اور بحض ايسے
 مباح كاموں ہے بہتے ہيں جو د ثاوت اور محست نفس كاسب ہوں۔

2- اس سے مراد سلوک کی ابتداء مسلوک کادسا اور سلوک کی انتفادے جس میں انسان محبوب حقیق سے واصل موجاتا

£

۸۔ یہ بی ہوسکا ہے کہ اس سے حرکے بین اوواد مراو ہون ایکن دہ عرک ابتداء بیں بھی افتدے اور آھے وسلامل بھی اور آ تریش بھی۔

۱۰ ن شراب کی تحریم مازل ہوئے سے پہلے بھی اس سے ابتناب کرتے تھے اس کی تحریم مازل ہونے کے بعد بھی اس سے ابتناب کرتے رہے اور باقی اعمال میں فرف فداسے کا افزار سے ابتناب کرتے رہے اور فیک عمل کرتے رہے۔

ما. اس کرارے ایان اور طرف نداکی تاکیداور اس می مبلد متعودے " تاک مسلمان اس پر نداعت ایمیت کے ماتھ

دقراروي

يَّالِيُهُا الَّذِينَ امْنُوالِيبُلُونَكُمُ اللهُ بِشَىءٍ مِنَ الصَّيْرِ مَنَ الْكَالُهُ

اے ایان دالو ؛ انتدام کو مزور ایسے شکار سے آنائے کی جس تک تہادے باقت ادر تہاہے

ايبايكة ورماحكة ليعلوالله فن يخاف بالغيب فبن اعتلا

نیزست و کا مکی اک اخترے ظاہر کر شے کر کون اس سے خانبات ڈوٹا سے و موجل نے اس اُنہیدا

بعن دلك فله عناب الميوا المنوالا تقتلوا

کے بعدمدے تبلائیا اس کے بے دروناک طافید ہے 0 کے ایمان والو ا حافید اجزام عل شکار د

الصّينا وَأَنْ أَوْمُ وَمُورِدُ وَمَنْ قَتَلَهُ مِنْكُمُ مُتَعَمِّدًا فَجَزَا ءُمِثُلُ

ادو ، اور تم یں سے جی نے مذا شکر مارا کر جی جاور کا اس نے مار ہے

مَاقَتُلُمِنِ النَّعَوِيَ مُكُوبِهِ ذَوَاعَنُ لِلمِّعَكُمُ مِهُ ذَوَاعَنُ لِلمِّعَلَّمُ مَنْكُمُ مَنْكُمُ مَنْكُمُ مَنْكُمُ مَنْكُمُ مَنْكُمُ مَنْكُمُ مَنْكُمُ مِنْ النَّعْدِويَ مُكُوبُهُ وَاعْدُ إِلَا عُنْكُمُ مِنْكُمُ مِنْ مِنْكُمُ مِنْكُم مِنْكُمُ مِنْكُمُ مِنْكُمُ مِنْكُم مِنْكُمُ مِنْكُمُ مِنْكُمُ مِنْكُمُ مِنْكُمُ مِنْكُم مِنْكُمُ مِنْكُمُ مِنْكُم مِنْكُم مِنْكُم مِنْكُمُ مِنْكُم مِنْكُم مِنْكُم مِنْكُم مِنْكُم مِنْكُمُ مِنْكُمُ مِنْكُمُ مِنْكُم مِنْكُم مِنْكُم مِنْكُم مِنْكُم مِنْكُم مِنْكُم مِنْ

ای عن کو ونظیل یں سے ای کی حل قربان کی برگی و تم یں سے دوست اس دی

الكعبة ادكفارة طعام مسكين أوعدل ذلك وسياما

عین) اندور ای کے دمان مالیکرے قران کید کو بینے والی ہو، اوراس بر اجتماعیوں کا کھا تا ہے یا ان دک تعدد) کے دار

لِينَادُقُ دَبَالَ أَمْرِهِ عَفَاللَّهُ عَمَّا سَلَفَ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتُقِمُ

وند عد مناسب المده في كرون كور ي اى كرافرة مان كرويا : اور ي ود إروع كاكر كوافر

اللهُ مِنْهُ وَاللهُ عَنْ يُزِدُوانْتِقَامِ ﴿ أَجِلَّ لَكُمُ صَيْدًا الْبَحْرِدَ

التا التام على الد افد بهت فالب طنع ب و تباعد به مندرى شار الداس كا ملا)

طَعَامُهُ مَتَاعًا لَكُمْ وَلِلسَّيَّارُقِ وَحُرِّمُ عَلَيْكُمُ صَيْدَالْبَرِمَادُهُمُ

منال كردياكيا ہے تمالاے اور ممازول كے فائدہ كے سيے ۔ الاجب كى تم احام مى بوتمالاے ليے منتى كاشكار وام

حُرُمًا وَاتَّقُوا اللَّهُ الَّذِي اللَّهُ وَكُنْ وَكُونَ ﴿

كردياكيا ہے ، اور اندے ورت ربوجی كے صفرة مديش كے جاؤگ 0

الله تعالی کاارشاوے: اے ایمان والواللہ تم کو ضرور ایے شکارے آزائے گاجس تک تمارے ہاتھ اور تمارے بنا اسے نیزے بنج سیس ماک اللہ یہ خام کروے کہ کون اس سے عائباتہ ور آمے موجس بداس حمیہ کے بعد حدے خواد کیا اس کے لیے وردناک عذاب ہے۔ اللائمة عمر)

شان نزول اور مناسبت

آیک قول بیر ہے کہ یہ جمعت مدید کے سال میں نازل ہوئی ابعض سلمانوں نے احرام باند ما ہوا تھا اور بعض نے احرام اسم باند ما ہوا تھا اور جب ان کے سامنے شکار آتا تو ان کے احوال اور افسال مختفہ ہوتے اور ان پر احکام مشتبہ ہوجائے۔ تب افتہ نے ان کے احوال اور افسال محتفہ ہوتے اور جج اور جموعی ممنوں کام بیال کرنے کے لیے ہی آب تا تازل فرمائی۔ افتہ نے ان کے احوال اور افسال کے احکام بیان کرنے اور جج اور جموعی ممنوں کام بیال کرنے کے لیے ہی آب تا تازل فرمائی۔ افتہ نے ان کے احوال اور افسال کے احکام بیان کرنے اور جموعی ممنوں کام بیال کرنے کے لیے ہی آب تا تازل فرمائی۔ افتہ نے ان کے احدال الفکو اور وت کام احتمال کے احتمال کے احتمال کے احتمال کام احتمال کیا مقتم اور افسال کے احتمال کے احتمال کے احتمال کے احتمال کے احتمال کام احتمال کے احتمال کی احتمال کے احتمال کی احتمال کے احتمال کے احتمال کے احتمال کے احتمال کی احتمال کے احتمال کی احتمال کے احت

اہم این ابی حاتم نے مقاتل ہے روایت کیا ہے کہ ہے آیت مجرو صدیعیہ یں نازل ہوئی 'جب اللہ تعالی نے مسلمانوں کو وحش جانو روں کے شکار کی آزبائش میں جھاکیا اور وہ اس وقت احرام پائد ہے ہوئے تھے 'وحشی جانور کھڑے ان کی سوار ہوں کے گروہ کر رہے تھے 'اور وہ ان کے ہاتھوں اور نیزوں کی ذو میں تھے۔ حضرت آبر جعفر جھڑن نے فرایا پر غدوں کے چوزے اور وحش جانوروں کے بچے اور ایڈے ان کے ہاتھوں کی ذو میں تھے اور بڑے جنگی جانور 'مثلاً جنگی گدھا گائے اور اونٹ و فیروان کے نیزوں کی ذو میں تھے۔ ایک قول سے ہے کہ جو شکار قریب تھے 'ووان کے ہاتھوں کی وسترس میں تھے اور جو شکار دور تھے 'ووان کے نیزول کے فیزوں کی دسترس میں تھے اور جو شکار دور تھے 'ووان کے فیزول کے فیزوں کی دسترس میں تھے اور جو شکار دور تھے 'ووان کے فیزول کے فیزان رہے گاروں پر میں شال ہیں۔

اس آیت کود مرے بر کا افظی سن بیہ کہ اللہ یہ جان ہے کہ کون اسے عائبانہ ڈر آ ہے۔ اس پر یہ امتراض

او آ ہے کہ اللہ تعالی برج کو بیش سے جانے والا ہے اور کسی فض کے کسی کام کرتے یانہ کرتے پر اس کا علم موقوف نمیں ہے اس لیے ہم نے اس کا معنی یہ کیا ہے کہ اللہ یہ خلاج کر دے کہ کون اس سے عائبانہ ڈر آ ہے۔ اس کا خلاصہ یہ ہے کہ علم سے
مراد علم خدور ہے۔ اس کو عماو کی اصطلاح میں علم تنعیلی سے تجیر کرتے ہیں جو معلونات کا بین ہے اس کے برخلاف علم
اجمالی عالم کا بین ہو تا ہے۔

علامہ بینلوی نے کماکہ اللہ تعلق نے اپنے علم کاذکر کیاہے اور اس سے مراد معلوم کو واقع کرنااور اس کو ظاہر کرناہے۔ بیز علامہ بینلوی نے کمااس سے مرادیہ ہے کہ جو محص اللہ سے عائباتہ ڈر آئے ہی کے مراقد اللہ تعلق کا علم بالنسل متعلق ہو جائے اور بعض مغرین نے کمایسان پر مضاف محدوف ہے "لینی آگہ اللہ تعلق کے اولیاء جان لیس کہ کون اللہ سے عائباتہ ڈر آئے۔ امارے بیخ علامہ میداحر معید کا علی قدس مرہ نے اس کا یہ ترجمہ کیاہے "آگہ اللہ پہچان کرا دے اس کی جو بن دیکھے اللہ سے الرائے۔

طالت احرام من شكار كرف كى مزا

اس کے بعد قربایا سوجس نے اس سجیہ کے بعد صد سے تجاوز کیا اس کے لیے دروناک عذاب ہے کیو نکہ حجیہ کے بعد محرم
کا شکار کے در پے ہونا اللہ تعالی کے عظم ہے محض لاروائی برنا ہے اور اس کے ڈراور خوف ہے اپ آپ کو
آزادر کھنا ہے اور جو محض اپنے نفس کو نگام ڈالنے پر قادر نہ ہو اور اس تتم کے آسان احکام میں آزائش پر پورا نہ انز بکے 'اس
سے کب آت تی جا سکتی ہے کہ وہ بڑے بڑے اور سخت احکام میں آزائش پر پورا انز سکے گا۔ متباور یہ ہے کہ یہ عذاب آثر سے
میں ہوگا۔ صفرت ابن عباس رضی اللہ محتمانے قربایا اس کی پشت برہند کرکے اس پر کو ڈے لگائے جائیں گے اور پینخ الاسملام نے
میں ہوگا۔ صفرت ابن عباس رضی اللہ محتمانے قربایا اس کی پشت برہند کرکے اس پر کو ڈے لگائے جائیں گے اور پینخ الاسملام نے
میں ہوگا۔

الله الله معد قالب معتم عدد المائية والواحات الرام من تم شكار ند مارو اور تم من سے جس نے عدد شكار مارا و جس ماؤر كواس نے مارا ہے "اس فض كو مويشوں من اس كى حتى قربانى كرنى ہوگى "تم من ہے دو منصف اس (كى شليت) كافيملا كريں ہے در آنحاليك يہ قربانى كھ بركو و تنجيج والل ہو يا (اس پر) چند مسكينوں كا كھانا ہے يا ان (كى تعداد) كے برابر روزے ركمنا بيس الك دوا ہے كروت كا مزو تجھے۔ جو گزر كيا "اس كو اللہ نے معتف كرديا اور جو دوبارہ به كام كرے كا تو اللہ اس سے انقام لے كا اور الله بمعد قالب منتم ہے۔ والل محدودہ ا

ختکی کے جانوروں کے قتل کی ممانعت سے پانچ فاسق جانوروں کا استثناء

ختلی کے شکار کو مار نامحرم پر حزام ہے اور سمندری شکار کو مار نااس کے لیے طال ہے "کیو تک اللہ تعالی نے فرمایا ہے: اُجعال کی کھم منسینگ البیعیو و طلعات بہتمارے لیے سمندری شکار اور اس کا طعام طال کر دیا کیا منداعی الکیم وکیل تشتید آرق (السالده عام) ہے تمارے اور سائروں کے فاکدے کے لیے۔

خطی کاشکار دہ ہے جو خطل میں پر ابوا ہو اور خطی ہی میں رہتا ہوا ور سندری شکار وہ ہے جو پائی میں (خواور ریا ہویا سندر)
پر ابوا ہو الور پائی میں رہتا ہو اور شکار اس جانور کو کتے ہیں جو اچی اصل خلقت کے اختبارے انسانوں سے فیر پائوس ہواور ان
سے پیمٹر اور متو بھی ہو۔ رسول اللہ جینے کے جانوروں کو قتل کرنے کی محافظت کے موی تھم سے پانچ فہیٹ جانوروں
کو مستنی فرمالیا ہے۔ کاشخے والا کا بھیزیا جیل کو اسمانی اور بھو۔ کیو تک سے جانور ایتداء۔ حملہ کرتے ہیں اور ایذا پہنچاتے ہیں ،
اور کو سے سے مراووہ ہے جو مموار کھا آئے۔

الم مسلم بن حجال قصوى موفى ١٠١٥ روايت كرت إلى:

حفرت عائشہ رمنی اللہ عنها بیان کرتی میں کہ نی تھے، نے فرایا پانچ جانور قامل ہیں جن کو حرم یا فیرحرم میں قتل کردیا جائے گا۔ مانپ 'گوا' (جس کی پشت اور بیٹ پر سفیدی ہو) جو ہااور کانے والا کااور جیل۔

(مي مسلم : ج ٢٧ (١٩٩٨) ١٨٥٠ سنى نبائى "ج٥" وقم الحديث: ٢٨٢٩ سنى أين ماجد "ج٢" وقم الحديث: ٢٠٨٤)

جُيانُ اللَّرِ أَنْ

حضرت عائشہ رمنی اللہ صنما فرماتی ہیں ' پانچ جانور کل کے کل قاسل ہیں این کو حرم میں بھی آل کردیا جائے گا۔ کوا ا کلٹے والاکٹا کچھو اور چوہا۔

(میح انتخاری کی ترقم الحدیث:۱۸۲۹) سیح مسلم کی ایک (۱۱۹۸) ۲۸۲۰ سنن النسائی کی در قم الحدیث:۲۸۹۰) علامه یجی بن شرف لودی متوفی ۱۷۷۱ می تصفیح بین:

علاء کااس پر اتفاق ہے کہ عمر اور فیر عمر کے لیے کانتے والے کے کو حرم اور فیر حرم میں قتل کرنا جائز ہے۔ البتہ اس
میں اختیاف ہے کہ اس سے مراد کیا ہے؟ ایک قول بیہ ہے کہ اس سے ہی معروف کیا مراد ہے۔ لام اوزائی اہم ابر طنیفہ اور
حسن بن صلح کا بھی قول ہے اور انہوں نے بھیڑنے کو بھی اس کے ساتھ لاحق کیا ہے اور اہام زفر کے نزدیک کتے ہے مراد
مرف بھیڑیا ہے اور جسور علاء نے یہ کما ہے کہ کا تھے والے کتے ہے مراد بالخصوص یہ معروف کی نمیں ہے بلکہ اس سے مراد بر
وو در ندہ ہے جو علو ق محلہ کرتا ہو 'مثانی بھیڑیا اور چیتا و فیرہ اہم شافی 'اہم احد' سفیان توری دفیر حم کا بھی قول ہے۔ قاضی
عراض نے اس قول کو جمہور علاء کے حوالے ہے نقل کیا ہے۔

(میج مسلم مع شرد النودی 'ج۵'می ۱۳۲۳ مطبویر یکتبه زار مصلیٰ کی کرمه ۱۳۱۷ه) کھینوں کے کوے کے علاوہ ہر کوے کو قتل کرنے کا حکم ہندہ میں معافر میں تاریخ

فخ شبراجر مثال متونی ۱۹ الد کلیتے ہیں:

الماہ کااس پر اتفاق ہے کہ کوے کو گل کرنے کے تھم ہے وہ پھوٹا کوامٹٹی ہے جو دانہ کھا ہے۔ اس کو فراب زرع اور دالع کماجا ہے۔ اس کے مطابق ہے جو ان کا فول کرنے کا تھم ہے۔ فالموں کی جنی تشمیل ہیں 'ان سب کو قل کرنے کا تھم ہے۔ فالموں کی بھنی تشمیل ہیں۔ ایک صفحت ہے۔ فالموں میں لکھا ہے کہ یہ سفید اور سیاور تھ کا پر ندہ ہے 'اس کی آواز عین اور قف کے مشلبہ ہواور دو سمرا ایقے ہے 'جس کی پیٹھ اور پیٹ پر سفیدی ہے۔ تیمرا غداف ہے۔ اہل افت اس کو ابقے کہتے ہیں اور اس کو قراب ایس بھی کماجا ہے جم کہ جب ہوتا علیہ المطام نے اس کو زخن کی فیرالانے کے بھیا 'و اس کو ابقے کے جب اور دو سم ایس کی اس کو ابقے ہیں۔ جس کی ڈیٹ کی فیرالانے کے بھیا 'و اس کو قراب ایس بھی سفیدی یا ہیں جب ہوتا کو اب جو دانہ کھا ہے۔ جب کی ڈیٹ کی ڈیٹ کی ڈیٹ میں سفیدی یا ہیں جب اس کو فراب ذرع بھی کہتے ہیں 'یہ چھوٹا کو اب جو دانہ کھا ہے۔

(المح الملم على المع المعلوم مكتبه الحاز الراجي)

میخ طان نے داخ یا غراب درع کے سواکوے کی باتی اقسام کو حرام قرار دیا ہے اور فقماء کی عبارات سے عابت ہو آ ہے کہ
داغ (غراب درع) اور مقسل کے سواکوے کی باتی اقسام حرام میں۔ یہ بات واضح رہے کہ زاغ (غراب درع) اور مقسل دونوں
اس عام کوے سے چھوٹے ہوتے ہیں کان تقریحات سے واضح ہوا کہ یہ عام معموف کواجو معارے در فتوں پر پایا جاتا ہے 'حرام

سب صور تول میں محرم کے لیے شکاری جانوروں کو قبل کرنے کی اجازت ال علم کاس پر انفاق ہے کہ اگر محرم شکار کو قبل کردے قواس پر اس کی بڑا (آبوان) واجب ہوتی ہے ' جیسا کہ سور و مائدہ کی اس آبت ۵۹ میں مراشنا نہ کور ہے۔ شکار کے قبل کی بھی تنہیں ہیں ' ایک تم میاح ہے اور ایک تیم ترام ہے۔ ترام وہ تیم ہے جس میں محرم شکار کو بغیر کی سب موجب یا سب مبیعے کے قبل کردے۔ سب موجب یہ ہے کہ کوئی جانور محرم پر تملہ کر دے ' اور اس کو قبل کے بغیراس جانور سے جان بچانے کی اور کوئی صورت نہ ہو 'اس صورت میں اس جانور کو قبل کرنا واجب

<u> ئېيان القر اُن</u>

ہے " کیو تک جان بچانا فرض ہے۔ یہ اہم ابو طنیفہ اور اہام شافتی کے قاعدہ کے مطابق ہے "اور سبب می یہ ہے کہ انسان کے پاس طان ذرائع سے کھانے پینے کی کوئی چیزنہ ہو اور جان بچانے کی صرف یہ صورت ہو کہ انسان کمی جانور کو شکار کرکے کھالے "تو اس صورت میں اپنی جان بچانے کے لیے اس جانور کو شکار کرکے کھلامباح ہے۔

الله تعالى فرما ماسيمة

اورائي إتمون كوبلاكت بن نه زالو

وَلَا تُلَقُّوا بِآبُادِيْكُمُ إِلَى النَّهُلُكُمْ

(البقرة: 140)

تیمری صورت بدہے کہ وہ کمی جانور کو کمی درندہ یا کمی کے بہندہ سے بچانے کی کوشش کرے اور وہ جانور ہااک ہو جائے 'قواس پر مثمان خمیں ہے۔

بہت یہ میں آفک کرے یا خطاء " ہرصورت میں اس پر صان کا وجوب محرم عمد آفک کرے ہوں تکاری میں میں میں میں اس پر صان کا وجوب ائر نزاہب کا اس پر بھی امتاق ہے کہ عمرم شکار کو عمد النق کرے یا خطا میل کرے مہر صورت میں اس پر صان واجب ہے۔ان کی دنمل ہے مدیث ہے:

الم ابو عيدالله محدين يزيد ابن لمجه قزدي متوفى عدد مدايت كست ين.

حعرت جاہر بریش بیان کرتے ہیں کہ جس بو کو محرم شکار کرے مہم کا آوان رسول اللہ بیجین نے ایک مینڈھا قرار دیا اور اس کو شکار میں شار فرمایا۔ (سنن ابن ماجہ "ج ۴ رقم الحدیث ۵۰۵ معلومہ دار الفکو "مردت ۱۵۳۵م)

حطرت او ہرمرہ برائی میان کرتے ہیں کہ رسول اللہ جورہ نے فرایا محرم شرمرخ کا اعدا اشکارے ماصل کرے آواس کا آوان اس کی قیست ہے۔(سنن این اجر مجمع ارقم الحدیث:۲۰۸۲ مطبوعہ جدید)

وجد استدلال مدے کرنی جینے نے اس حمان کو حرے ساتھ مقید نمیں فرایا ابکد شکار کرتے پر مطلقاً آلوان کو واجب

شكار كي تعريف

شکار کو قبل کرنا محرم پر جزام ہے خواہ اس نے جج کا احرام باند صابو یا عمرہ کا اور شکار وہ ہے جس بھی قبین اوصاف ہوں۔ اس
کا کھانا طال ہو 'اس جانور کا کوئی مالک شد ہو 'وہ ٹی نفسہ پاتو جانور نہ ہو 'اور انسانوں سے فیرمانوس ہو 'ان کو دیکے کرھاگنے والا' بخنر
اور وحشی ہو۔ سواگر کوئی محض کسی در ندے کو یا جھاڑ نے چیرنے والے پر ندے کو یا حشرات الارض میں ہے کسی جانور مثانا چھپکل
باگر گمٹ و فیمیو اور و مگر کیڑے مکوڑے کو قبل کردے تو اس پر حہان نہیں ہے 'اسی طرح محرم اگر کسی پاتو جانور کو ذرائے کردے مثلاً
گائے' بکری اور مرفی و فیرو کو تو اس پر بلا تغلق حہاں نہیں ہے 'اور یہ ہم پہلے بیان کر بچے میں کہ سمندری اور و دریائی جانور کو شکار
کرنا جائز ہے ' صرف شکلی کے جانور کو شکار کرنا محرم کے لیے جائز نہیں ہے۔

شكارير ولالت كرتے كى وجہ سے صان كے لزوم من قرابب اتمه

للم ابوطیفہ اور اہم احمد کے زدیک جس طرح شکار کو تکل کرنے ہے تحرم پر جز الازم آئی ہے۔ اسی طرح آگر محرم کسی اور کو شکار کی طرف رہنمائی کرے یا اس پر دلالت کرے تو اس پر بھی طان لازم آئی ہے اور اہام شافعی اور اہام مالک یہ فراتے میں کہ طان کا تعلق قتل ہے ہے اور شکار پر دلالت کرنا اس کو قتل کرنا نہیں اور یہ ایسا ہے جسے فیر محرم 'فیر محرم کو کسی شکار پر دلالت کرے 'فتما واحداف کا استدلال اس مدیث ہے۔

الم مسلم بن جلع قديدى متوفى الماء دوايت كرية بين:

صفرت أبو قلوہ برجلی بیان کرتے ہیں کہ ہم رسول اللہ برجا کے ساتھ کے عق کہ ہم " قاح" میں پنچ ہم میں ہے بہتن حرم اور بعض فیر عرم تھے اچاک میں نے دیکھا کہ میرے ساتھی کی جز کو دیکے دے ہیں 'میں نے دیکھا کہ وہ ایک جنگل کہ حاقات میں نے اپنے مائیسیوں ہے کہا کہ حاقات میں نے اپنے ساتھیوں ہے کہا میں نے اپنے ساتھیوں ہے کہا مجھے جا بک اٹھا دو ' ساتھی محرم نے ' انہوں نے کہا فد اکی حم ہم تھاری اس مطلہ میں بائل مدد نہیں کریں گے میں نے اتر کر چا بک اٹھا اور سوار ہو کیا اٹھا دو ' ساتھی کریں گے ' میں نے اتر کر چا بک اٹھا اور سوار ہو کیا ہیں کریں گے ' میں نے اتر کر چا بک اٹھا اور سوار ہو کیا ہیں نے اس جنگل کدھے کو بیچے ہے جا کر پائزادر آٹھا کیک وہ ٹیل کے بیچے تھا میں نے نیزہ مار کر اس کی کو نجی کا دو ایس اور اس کو اپنے ساتھیوں کے پاس لایا۔ بعض ساتھیوں نے کہا کھا تو ' اور بعض نے کہا نہ کھاؤ' اور بعض نے کہا نہ کھاؤ' کی میں ہو گھا و۔ مارے ساتھی کہا کہ کھاؤ کہا و۔

(صحح مسلم * الحج * ۱۲۵ (۱۳۱۱) ۲۸۰۳ سمح البواري " ج۲" رقم الخدے شد ۱۸۳۳ سنن ابوداؤد" رقم الخدے شد ۱۸۵۳ سنن تززی وقم الحدے شدے ۱۸۳۳ سنن النسائی " ج۵" رقم الحدے شد ۱۳۸۳)

ورج ذيل مديث عن زياده وضاحت

. شیبان کی روایت میں یہ انفاظ میں رسول افتہ مجید نے فرمایا کیاتم میں سے کسی مخص نے اس کو جملہ کرنے کا تھم ویا تھا؟ یا اس کی طرف اشارہ کیا تھا؟ اور شعبہ کی روایت میں ہے کیاتم نے اشارہ کیا تھا یا ایراد کی تھی؟ یا شکار کیا تھا؟

(من مسلم الح المن المعاد المعد الم

طرف اشارہ کرنا کا اس کی طرف رہنمائی کی حوام ہے اور اس کے اس اشارہ کرنے کی دجہ ہے اس شکار کا اس زائل ہو گیا اور
اس کی جان تخف ہوگی او اس کے اشارہ اور اعات کی وجہ ہے وہ شکار کل کر دیا گیا سو شکار کی طرف اشارہ کرنے والے حرم پر
میں وہی حمان ہوگی جو شکار کو قتل کرنے والے محرم پر ہوتی ہے۔ صابونے کما ہے کہ تمام لوگوں کا اس پر اجماع ہے کہ شکار پر
والات کرنے والے پر بھی حمان ہے اور اس زمانہ کے لوگ محلبہ کرام اور تماجین تھے۔ علامہ این قدامہ نے المفنی میں تکھا ہے
کہ حضرت علی اور صحرت این عباس رضی اللہ منم کا بھی ہی تد ہے اور امام طوادی نے اس کو متحدد محلبہ ہے نقل کیا ہے ،
اور کمی محالی ہے اس کے خلاف حقول نہیں ہے تو اس پر اجماع محلبہ ہے اور حضرت این عمرے جو یہ حقول ہے کہ وزالت
کرنے والے پر حفان نہیں ہے اس کا حقول ہے کہ وہ بولالت کرنے ہے شکار کو قتل نہ کیا جائے۔

(في القديم " ج ٣ من ١٢٠ - ١٢ مطبوعه وار الكتب العلميد " بيروت " ١٥١٥هـ)

علامه عبدالله بن احمر بن قدامه منبل متوفى ١٧٠ م لكية بن:

شکار پر دفالت کرئے۔ بھی ضامن بنایا جائے گا' ہیں جب سمی عرم نے کمی فیر عرم کو شکار پر دفالت کی اور اس نے اس شکار کو شف کردیا' قراس کی بیری جزا محرم پر بوگ ۔ بیہ صحرت علی اور حضرت این هماس رضی افتہ حتما ہے مروی ہے اور بجابہ ' بکر مزنی ' اسحاقی اور فقہاء احتاف کا بھی بھی ڈیمب ہے ' اور اہام مالک اور اہام شافعی نے کما ہے کہ دفالت کرنے والے پر پچیے منہان مہم ہے ' کو تخد صائحت جنایت سے فازم آئی ہے ' دفالت سے فازم نمیں آئی اور اماری دلیل بیر ہے کہ فی جھیج نے صفرت ابو الله موجوز کے اسمحاب سے فرمایا تھا جمیع ہے محموت ابو محموت کی طرف اشار دکیا تھا؟ فیز شکار پر گذوہ جوجوز کے اسمحاب سے فرمایا تھا جمیات کی دور سے منہان لازم آئے گی اور یہ صفرت علی اور صفرت ابن مباس رضی دفالت کرنا اس کو شختہ کو مانا قبل ہے ' کو کہا ان کا نماف نمیں ہے۔

(اللَّتَى " ج ١٣٠٥ م ١٣٣ مطبود. داد الفكو "١٣٠٥) ٥٠)

شکار کی برزامی اس کی مثل صوری ضروری ہے یا اس کی قیت؟

اہم ابو منیفہ اور فام ابو بوسف و عمااللہ کے زدیک شکار کو قل کرنے کی جزاب کہ جس مقام پر شکار کو قل کیا گیا ہو جگہ اس کے قریب قرین ہو دوبان اس شکاو کی قیمت مقرد کی جائے اور دو فیک فیم اس کی قیمت مقرد کریں ' پھر فدید دے جس عرم کو افتیاد ہے ' اگر اتن رقم ہے قربانی کا جانور قرید کراس کو ذرئ کر دے اور اگر عاب قراس و قرید کراس کو ذرئ کر دے اور اگر عاب قراس در قرید کراس کو ذرئ کر دے اور اگر عاب قراس در قرید کر مسکنوں پر معدقہ کرے ' جر مسکنوں کو دو کلو کر ام گند م یا چار کلو گر ام مجود میں یا جو صدقہ کرے اور اگر چاہ تو جن مساکس پر صدقہ نازم آ تا ہے است دنوں کے دو اے در کھے 'مثان فدید کی رقم ہے دس کلو گندم آتی ہے ' جو بائح مسکنوں پر وس کلو گندم صدقہ کرے اور چاہے تو اس کے بجائے دنوں کے دون کے دون کا گندم صدقہ کرے اور چاہے تو اس کے بجائے دنوں کے دون کو دیکا کا کا کا کا کہ دون کا کہ دون کا کا کا کا کا کا کیا گا کی دون کے دون کی دون کے دون کے

الم شافع بے فراتے ہیں کہ جس شکار کی نظیر ہو سکتی ہو 'ہس ہیں اس کی نظیر کو صدقہ کرنا واجب ہے۔ ہرن کی نظیر بکری ہے ' اور بچو کی نظیر بھی بکری ہے اور فرکوش کی نظیر بکری کا بچہ ہے 'اور جنگل جو ہے کی نظیر جار او کا بکری کا بچہ ہے اور شر مرغ کی نظیراونٹ ہے اور جنگلی گدھے کی نظیر گلئے ہے 'کیو تکہ اللہ تعالی نے فرایا ہے:

تواس کا آوان اس جانور کی حق ہے جس کواس نے قبل کیا

فَحَزَا النَّعَيْمُ لَمَا فَنَوْلُ مِنَ النَّعَيْمِ

(المائده: ۵۵) -

اور منتول جانور کی شل وہ ہوگی جو صور گئی اس کی شل ہو اور قیت اس جانور کی شل نمیں ہے اور صحابہ کرام رمنی اللہ عظم نے بھی خلفت اور طاہری صورت کے انتہار ہے شل کو داجب کیا ہے۔ شتر مرغ مرز من جنگی گذھے اور فر کوش میں انہوں نے ان بی جانوروں کو مشل قرار دیا ہے جو ہم لے بیان کی ہیں۔ امام ابوداؤد روایت کرتے ہیں:

معرت جابرین عبدالله رضی الله عنما بیان کرتے میں کہ میں نے رسول اللہ مجین سے سوال کیا کیا بی شکار ہے؟ قربایا ہال جب محرم اس کاشکار کرے تواس میں ایک میندھائے۔

جس جانور کی نظیرند ہو اس بی ام محد رحمہ اللہ کے نزدیک قیت واجب ہے مثلاً چایا اور کیوتر اور ان کی مثل دو مرسے
پرندے اور جب قیت واجب ہو تو امام محد کا قول الم ابو جنیفہ اور الم ابو بوسف کے مطابق ہے اور امام شافعی رحمہ اللہ کیوتر بی
مرک کو واجب کرتے ہیں۔ امام ابو حنیفہ اور امام ابو بوسف کی دلیل بیہ ہے کہ قرآن مجید میں مثل کو مطلقاً ذکر کیا ہے اور مطلق
سے مراد فرد کال ہو تا ہے اور مثل کال وہ ہے جو صور ق انور معنی دونوں احتبار سے مثل ہو اور جب کال مثل متحقق نہیں ہو
سے نواس کو معنی مثل پر محمول کیا جائے گا کیونکہ مثل معنوی شریعت میں متعارف ہے ، جیساکہ حقوق العماد ہیں ہے ، جیساکہ
اللہ تعالی نے فرمایا:

فَكُنُ اعْنَدُى عَكَيْكُمُ فَاغْنَدُوا عَلَيْهِ مِوجَ مَى زادِلَى كرے وَ مَ بَى اس كى زادِلَى كابدروا يِسِشُلِ مَا اغْنَدُى عَكَيْكُمُ (البقرونه) اس زادِلَى حَل جَى اس لامَ يرزادِلَى كابدرونه

نیز جن جانوروں کی حش نس ہے ان میں اہم شافع کے زدیک بھی حش معنوی مراد ہوتی ہے اپنی حش معنوی بالاجماع مراد ہے۔ الغذاسب جگہ حش معنوی بی مراد ہے۔ اور شر آن مجید کے ایک انتظامے دو معنی مراد لینے لازم آئیں گے اکس مراد ہے۔ الغذاسب جگہ حش معنوی۔ نیز مشل معنوی میں عموم ہے اور حش صوری میں خصوص ہے اور مجوم خصوص پر رہاتی ہے اور آبت کا معنی یہ ہے کہ محرم نے جس شکار کو قتل کیا ہے اس پر اس کے کوان میں اس کی قیت واجب ہے۔ نیز قرآن مجید میں قتل کیا ہے اس پر اس کے کوان میں اس کی قیت واجب ہے۔ نیز قرآن مجید میں قتل کیا ہے اور بدانتظ جنگی اور پالتو دونوں شم کے جانوروں کے لیے بولا جاتا ہے۔

جزاء میں اختیار منصفوں کی طرف راجع ہے یا مخرم کی طرف ؟

الم ابوضیفہ اور الم ابوہوسف کے زویک جزاء میں اختیار محرم کی طرف راجع ہے " بینی محرم کو اختیار ہے 'خواہ وہ اس م جانور کی قیمت سے قربانی کا جانور قرید کراس کی قربانی کردے 'یا اس کی قیمت کا طباع خرید کر مساکین پر صدقہ کردے 'یا ان مسکینوں کی تعداد کے برابر روزے رکھ لے 'اور الم شافعی اور الم محرکے نزدیک سے افقیار فیصلہ کرنے والے رو نیک حاکموں کی طرف راجع ہے۔ اگر وہ قربانی کا محکم دیں تو اس جانور کی نظر قرید کراس کی قربانی کرے 'اور اگر وہ طعام صدقہ کرنے کا محکم دیں یا روزے رکھے۔ ایم روزے رکھے۔ ایم روزے رکھے ایم ابوج سف کی دیل ہے ہے کہ جہ افقیار محرم کی آسانی کے لیے دیا گیا ہے اور محرم کے لیے آسانی اس وقت ہوگی ابوج سف کی دیل ہے ہے کہ یہ افقیار اس کی طرف واقع ہو۔ ایا م شافعی کی دیل ہے ہے کہ اللہ تعالی نے قربایا ہے تم میں ہے دو مصف اس (کی مثلیت) کا جب سے افقیار اس کی طرف واقع ہو۔ ایام شافعی کی دیل ہے ہے کہ اللہ تعالی نے قربایا ہے تم میں ہو کہ برابر روزے رکھنا ہی نیم کے در آنحانیک ہے در آنحانیک ہے دو ایم کی تعد اور کے برابر روزے رکھنا ہی نیملہ کریں گے در آنحانیک ہے دو ایم کی تعد اور کے برابر روزے رکھنا ہی نیملہ کریں گئے در آنحانیک ہے در آنحانیک ہے تو ان بور کی تاری وزے رکھنا ہی نیمانی کی تعد اور کے برابر روزے رکھنا ہی نیمانی کی تعد اور کے برابر روزے رکھنا ہی نیمانی کی تعد اور کے برابر روزے رکھنا ہی نیمانی کی تعد اور کے برابر روزے رکھنا ہی نیمانی کی تعد اور کے برابر روزے رکھنا ہی نیمانی کی تعد اور کے برابر روزے رکھنا ہی اور ظاہر آمت ہے ہی معلوم ہو تاہے کہ یہ اختیار ان منعنوں کی طرف راجع ہے۔ طعام کاصد قد مکد میں کرنا ضرور ی ہے یا دو سرے شرمیں بھی جائز ہے؟

قربانی کا جانور صرف کھ جی ذیج کیا جائے گا اور مسکینوں کو طعام کا صدقہ کمی اور شرعی بھی دیا جا سکتا ہے۔ ایام شافع صدقہ طعام کو قربانی پر قیاس کر کے کہتے ہیں کہ یہ طعام بھی کھ کے مسکینوں پر صدقہ کیا جائے اور ان دونوں جی شترک چیز یہ ہے کہ حرم کے دہنے والوں کے ساتھ حسن سلوک ہو۔ ایام ابو منیفہ یہ فرباتے ہیں کہ شکار کی جزاء جی کمی جانور کو ذیج کرنا غیر معتول تعل ہے 'افقا وہ ذمان اور مکان کے اعتبار ہے اپ اسور جی بڑر دہے گا اور صدقہ کرنا ایک معقول تعل ہے۔ اس لیے دو ہر جگہ ہو سکتاہے اور دوزہ جی انتاق ہے کہ وہ کمی بھی شرجی رکھے جانے ہیں۔

(بداید ادلین می ۲۸۰-۲۷۲ مختراد موضحا مطبوعه مکتبه شرکت طبیه مکان)

دو سرى بارشكار كومارفى سے جزاء لازم ہوكى يا نسين؟

اس كے بعد اللہ تعلق نے فرمایا جو كرر كياس كو اللہ فے معاف كرديا اور جو دديارہ يہ كام كرے كا تو اللہ اس سے انتقام لے كاور اللہ بمت عالب شتم ہے۔ (المائدة 40)

اس آیت کا معتی ہے تحرم نے پہلی بار شکار کو آگل کیااور اس کی منان یا براہ اداکر دی تو اللہ اس کو معاف کردے گااور جس محرم نے دو مری بارشکار کو قتل کیا دوا خردی مزاب کا مستحق ہو گا۔

و مری بار شکار کو قتل کرنے والا همان اوا کرے گا انہیں اس میں ووقیل ہیں۔ عطاء ایرائیم ابن جبید احسن اور جمور
کا قول ہید ہے کہ محرار قتل ہے محرار جزاہ واجب ہوتی ہے اور حضرت این عماس رضی اللہ حضمااور قاضی شریح کا قول ہید ہے کہ
اگر محرم نے ووہارہ شکار کو قتل کیا تو اس کو کفارہ اوا کرنے کا حکم نہیں ویا جائے گا حتی کہ جب ان سے کوئی محرم سوال کرتکہ اس
فی مناز کو قتل کرویا ہے اب وہ کیا کرے تو وہ اس سے سوال کرتے تھے کہ اس نے پہلی بار شکار کو قتل کیا ہے یا دو سری بار اگر کیا ہوتا واس کو کفارہ کا حکم نہ وسیت اور وہ جو تکہ
اس نے پہلی بار قتل کیا ہوتا تو اس کو کفارہ کا تھم دیتے اور اگر وہ سری بار قتل کیا ہوتا تو اس کو کفارہ کا تھم نے دیتے اور وہ جو تکہ
عذاب اخرہ کی کا مستحق ہے اس لیے اب اس پر صرف تو بہ کرنالائم ہے اور یہ اللہ تعنائی کی مشیت میں ہے کہ اس کی تو بہ تول
فرائے یااس کو عذاب دے جس طرح باتی کیرہ گناہوں کا تھم ہے۔

انقام کاشکار ہوجائے میں جب بھی اس آیت کو پڑھتا ہوں او جمعہ پر خوف طاری ہوجا آہے۔ اضطرار کی صورت میں شکار اور مردار میں ہے کس کو اختیار کرنااولی ہے

اگر محرم کو کھانے پنے کے لیے بچونہ طے اور وہ بھوک ہے جال بلب ہو اور اس کو مردار اور شکار وونوں میمرہوں تو اس میں اختلاف ہے کہ وہ مودار کھاکر جان بچائے یا شکار کو ماد کر کھائے۔ ایام زفر نے کماوہ مردار کھالے کیونکہ مردار ایک دجہ سے حرام ہے اور شکار کو قتل کرکے کھٹا گئی وجہ سے حرام ہے اور ایام ابو صفیہ اور ایام ابو پوسف نے فرمایا کہ وہ شکار کو قتل کرکے کھا لے اور اس کی جزاوادا کرے بچونکہ مردار کی حرمت زیاوہ غلیظ ہے۔ کیاتم نہیں دیکھتے کہ شکار کی حرمت عارضی ہے اور ام

تبيان القر أن

(روح المعانی '۲۶ مسلوم واراحیا والترا العربی العربی '۲۹-۳۰ معلوم واراحیا والتراث العربی ایروت) مبسوط اور فاوی قامتی خال کی نقل میں تعارض ہے المارے نزدیک مبسوط کی نقل معتد ہے اور قوت ولیل کے اعتبار ہے وی رائج ہے۔

الله تعالى كاارشاوى: حمارى لي سندرى شكار اور اس كاطعام طال كردياكياك ممارى اور سافرول ك فاكده ك لي الله تعالى كالمنام عن كالمنام عن كالمنام ك

سمندری شکار کی تعریف اور اس میں نداہب اتمہ

سمندری شکارے مراوے جس جانور کو پائی ہی شکار کیاجائے 'خواہ وہ پائی سمندر میں ہو' دریا میں ہو' نسر میں ہو یا آلاب میں ہو اور اس سے مقصود وہ جانور ہے جو پائی میں پیدا ہوا ہو' کور اس کی نشود تمالور ہتا بھی پائی ہیں ہو اور اس کے طعام ہے مراو' پائی میں کیا ہوا شکار ہے۔ نقماء احناف کے نزدیک اس سے مراد صرف مجھلی ہے۔ ان کی دلیل میہ صدیث ہے:

معترت میدانندین محرومتی افتہ متمامیان کرتے ہیں کہ رسول افتہ چیجیز نے فرملیا ہمارے کے دو مردار طال کے گئے ہیں ا مجمل اور گڈی۔ (سنن ابن ماجہ 'ج ۴ رقم العب عد ۱۳۱۸ سند احرج ۴ رقم العب عدے ۱۵۵

اس صدیث کی سند کاایک داوی عبدالرحمٰن بن بزید ضعیف ہے۔

ائمہ اللہ علاقہ کے فزدیک اس سے مراد پائی کے تمام جانور ہیں اُن کا استدال اس آیت کے ظاہر سے ہے اور حضرت عمراً حضرت ابو ہریرہ اور حضرت ابن عباس سے مردی ہے کہ سمندری طعام سے مراو وہ تمام جانور ہیں جن کو سمندر ساحل پر پھینک دے اور حضرت ابن محرر منی افتہ عنمائے قربایا سمندری طعام سے مراو ہروہ چیز ہے جو سمندر سے فکالی جلے اس کو کھانو۔ اس میں کوئی حرج نہیں ہے اور سمندر کی ہر چیز کھائی جائے گی تواہوہ مردار ہو اسمندر میں ہویا سمندر کے ساحل پر ہو۔

(جامع البيان "٤٦ مي ٨٨-٨٨)

خطی کے شکارے مرادوہ جانور ہیں جو خطی میں پیدا ہوئے ہوں اور این کی نشود نمالور بقابھی خطی میں ہو اور شکارے مراد دہ جانور ہیں جو اپنی اصل خلفت کے اختبارے انسانوں سے غیر مانو سی اور متوحش اور خطر ہوں جیسے ہرن اور غیل گائے وغیرہ اور بحری گائے اور اور خدو فیروشکار نہیں ہیں کیونکہ وہ انسانوں سے مانوس ہیں۔ خطی کے جانوروں کو قبل کرنے تھے ممانعت کے حکم سے رسول اللہ ہیں ہیں بانچ فائل جانوروں کو مستی فرما دیا ہے۔ وہ یہ ہیں: بچھو اچ ہا کا معنے واللا کھا کو اور چیل ان کی تنصیل اور خمین ہم اس سے مصل پہلی آب کی تغییر میں بیان کر بچے ہیں۔ شکار کا کوشت محرم کے لیے ناجائز ہونے کے متعلق احادیث

اس آیت می قرالیا ہے اور جب تک تم احرام میں ہو "تمارے لیے فتکی کاشکار حرام کردیا ہے۔ اثمہ اللاشان آیت ہے یہ اشتباط کیا ہے کہ اگر فیر عمرم محرم کے لیے کمی جانور کو شکار کرے تو محرم کے لیے اس کو کھانا جائز نہیں ہے 'اور حسہ ذیل احادث سے بھی وہ استدانال کرتے ہیں۔

الم مسلم بن تجان فشيدى متوفى ١٠١٥ روايت كرت بن

حعرت ابن عماس ومنى الله محماييان كرتے بيل كه معرت صعب بن بالله ليشي براي نے وسول الله بالي كى فد مت میں ایک جنگل کد حادث کار کر کے) چیش کیا اور سول اللہ معجود نے وہ ان کو والیس کردیا۔ جب رسول اللہ معجود نے میرے چرے پر افسوس ك آثار ديكه وآب ن فرايا بم ن م كوي مرف ال لي والى كياب كه بم محرم يل-

(صحح مسلم * جح * ٥٠ (١٩٩٣) ٢٧٩٩ صحح البخاري ؛ رقم الحديث: ١٨٦٥ سنن تزذي * دقم الحديث: ١٨٥٥ سنن التسائي * دقم الحديث: ١٨٨١ سنن ابن ابد وقم الدعث: ١٩٠٠)

الم ابوداؤد سليمان بن اشعث متونى ٢٥٥ مد روايت كرتي بين:

حضرت مثمن جریش نے حادث کو طائف کا کور زرمقرر کیا تھا اس نے پکھ پر ندوں اور جنگی جانوروں کا شکار کیا اور یہ طعام معرت منان کی طرف بھیجا معرت منان نے یہ طعام معرت علی بریش کے ہاس بھیج دیا جس دقت ان کا قاصد معرت علی بالثند ك ياس كافيا أو ووالي اونوں كے ليے النے الله عدد دونوں سے بيت جماز رہے تھ اوكوں نے آب سے كمايہ طعام كمائيں۔ آپ نے قربانا تم لوگ كھالو كو تك بى عرم يول۔ پر قربانا قبيلہ الجيح كے جو لوگ يمال موجود بي ميں ان كو فتم دے كر بوجه تناموں كياتم كو علم ب كه رسول الله منظيم كى خدمت عن أيك مخص في جنگى كدم مع كاكوشت بيش كيادر انحاليك آپ محرم تي ؟ آب _ اس كوشت كو كما ف سه انكار كيا؟ انبول ف كما إلى ا

حعرت ابن مہاں رمنی اللہ عنمانے قربایا اے زید بن ارقم اکیا تم کو معلوم ہے کہ رسول اللہ ماہیم کی خدمت میں ایک فكار كى دسى چيش كى محى تو آب في اس كو تيول نيس كيالور فرمايا يس محرم بول-انبول في كما إلى ا

(سنن أبو دا وُ و مع ٢ مرقم الحديث: ١٨٥٠-١٨٣٩ مطبوعه و ار الكتب العلميه موروت ١٣١٧ هـ)

حعرت جابر بن عبدالله ومنى الله عنما بيان كرت بين كه بس في رسول الله عليبيد كويد فراح بوع مناب كد تساد ب لیے نشکی کاشکار طال ہے' بنب تک کہ تم اس کو خود شکار نہ کرو' یا اس کو تممارے لیے شکار نہ کیاجائے۔

المام ابوداؤد نے کماجب نی مجتبع کادو صدیثیں متعاد فن موں تواس صدیث پر عمل کیاجائے جس پر آپ کے اصحاب نے عمل کیا --- (سنن ابوداؤد "ج" رقم الحديث ١٨٥٠ سنن ترزي "ج" رقم الحديث عسم مسنن النسائل ع" وقم الحديث ١٨٢٠)

المام محمين جرير طبري متوفي اسماء ايني سند كم ساته روايت كرتين.

نو قل اپنے والدے روایت کرتے ہیں کہ معزت عثان اور معزت علی رمنی اللہ عنمانے ایک ساتھ ج کیا۔ ایک فیر محرم نے شکار کر کے معرت مین کے باس اس کاکوشت بھیجا معرت عین نے اس میں سے کھایا اور معرت عل نے نہیں کھایا۔ معرت على في الم في الم في الكركياب نداس كا تكم دياب نداس كى طرف الثاده كياب معرت على في برايت ردعی جب تک تم اوام میں او تمارے لے خطی کا شکار وام کردیا گیاہے

نافع بیان کرتے ہیں کہ حضرت ابن عمر رمنی اللہ نعاتی عنماجب محرم ہوتے تو شکار کو نہیں کھلتے تھے 'خواہ اس کو غیر محرم

طبيان القر أن

نے شکار کیا ہو۔ (جائع البیان 'بڑے 'ص ۱۳۰۹ء مطبوعہ دار الفکو 'بیروت ' ۱۳۱۵ء) محرم کے لیے شکار کا کوشت کھانے کے متعلق نے ایمی انکہ علامہ مونق الدین عبداللہ بن احمد بن قدامہ منبلی متونی ۴۰ مد تکھتے ہیں:

جب عرم خود شکار کرے یا شکار کو فرج کرے تو عرم پر اس کے حرام ہوتے جی کمی کا اختطاف نہیں ہے ' بعیسا کہ اللہ تعالی فے فرایا ہے جب تک تم احرام جی ہو' تسارے لیے خطکی کا شکار حرام کردیا گیا ہے۔(المائدو، ۱۹) اور اگر عرم اس شکار جی اعاشت کرے یا اس پر وادات کرے یا اس کی طرف اشارہ کرے ' تب ہمی وہ عرم کے لیے جائز نہیں ہے اور اگر فیر عرم' محرم کی خاطر شکار کرے تو یہ محل اختلاف ہے۔ ایام احد ' ایام مالک اور ایام شافع کے نزدیک اس صورت میں ہمی اس شکار کو کھانا محرم پر حرام ہے اور میں حضرت مثان بن عفان جو بین ہے حفول ہے ' اور ایام ابو صنیفہ رحمہ ادارہ فرماتے ہیں' اس صورت میں محرم کے لیے شکار کو کھانا جائز ہے ' کیو تکہ حدیث صمیح میں اس کا جواز ہے۔

محلہ جب رسول اللہ بھیم کی خدمت میں عاضر ہوئے تو عرض کیا گارسول اللہ اہم نے احرام باندھ لیا تھا اور ابو قادہ نے
احرام حمیں باندھا تھا ہم نے جنگلی گدھے دیکھے۔ حضرت ابو قادہ نے ان پر حملہ کیا اور ان کی کو ٹھیں کان ڈائیں ہم بے اخر کر
اس کا کوشت کھایا ' پھر ہمیں خیال آیا کہ ہم محرم تھے اور ہم نے شکار کا کوشت کھالیا ' پھر ہم نے باتی کوشت رکھ لیا۔ آپ نے قربایا
کیا تم میں ہے کسی نے شکار کا امر کیا تھایا اس کی طرف کسی حم کا اشارہ کیا تھا؟ انہوں نے کما شیں۔ آپ نے فربایا اس کا باقی باندہ
کوشت بھی کھالو۔

(صیح البخاری جو الرقم الدید من ۱۸۲۷ می مسلم جو ۱۴ ۱۳۱۱) ۱۸۱۰ من ایوداؤد ارقم الدید ۱۸۵۲ من ترزی ارقم الدید در ۱۸۲۳ من الدید الروال از قم الدید در ۱۸۳۸ من الدید الروال از قم الدید الروال ارقم الدید ۱۳۹۳ مستف عبد الروال ارقم الدید ۱۳۰۳ مستف عبد الروال ارقم الدید ۱۳۰۳ مستف عبد الروال ارقم الدید ۱۳۰۳ مستف عبد الروال از قم الدید ۱۳۰۳ مستف عبد الروال الدید ۱۳۰۳ مستور ۱۳۰۳ مستو

خلاصديب كداس متلدين تمن تظرات ين

۱- صغرت علی ' حضرت این محر' حضرت عائشه اور حضرت این عباس کامونف به ہے کہ شکار کا کوشت نمحرم پر ہر مال میں حرام ہے۔

۲- حضرت عثین برویش کاموقف ہے ہے کہ اگر فیر محرم نے محرم کی خاطر شکار کیا ہے تو محرم پر اس شکار کا کوشت حرام ہے '
 در نہ نہیں اور میں اگمہ شلافہ کاموقف ہے۔

۱۰ الم ابوطنیفہ رحمہ اللہ کاموقف یہ ہے کہ اگر محرم نے شکار میں فیر محرم کی اعانت تہیں کی نہ اس کی طرف اشارہ کیا 'نہ ولات کی 'قریم محرم کے لیے اس شکار کو کھلاجائز ہے 'خواہ فیر محرم نے محرم کی خاطر شکار کیا ہو۔

محرم کے لیے شکار کا گوشت کھانے کے مسئلہ میں امام ابو طنیفہ کے موقف پر دلا کل قوت دلا کل کے اعتبارے حضرت امام ابو طنیفہ رحمہ اللہ کا نظریہ رائج ہے 'کیونکہ امام ابو طنیفہ نے حضرت ابو قنادہ دویتر۔ کریں میں مصابات اللہ کیا میں ان مصحومتاں 'صحومسلمان مکر کئے۔ صحاح میں میں ان انکے طالعہ فرجعہ ہے جانب میں میں

کی حدیث ہے استدائل کیا ہے اور وہ میچ بخاری میچ مسلم اور دیگر کتب محاح بیں ہے اور ائمہ ٹلاٹ نے عفرت جابر کی حدیث سے استدالال کیا ہے وہ سنن آبوداؤر ' سنن ترزی اور سنن نسائل میں ہے 'اور محاح کی احادیث سنن کی احادیث پر مقدم ہیں۔اور

غيبان القر كن

دو مرا جونب سیر ہے کہ حضرت جابر کی مدیث میں لام تملیک کے لیے ہے ایعنی شکار کا کوشت تمہاری طک کر دیا جائے تو پھر تمہارے لیے اس کا کھکا جائز نہیں 'جبکہ تم محرم ہو۔ تیمرا جواب سے کہ سر حدیث اس پر محمول ہے کہ جب تمہاری اعانت سے تمہارے لیے شکار کیا جائے اور اس صورت میں اس کا کھٹا بلاتفاق حرام ہے۔

صفرت صعب بن بخام کی صدیت جی با انہوں نے ہی جو کی خدمت جی جنگی کد عایش کیاؤ آپ نے یہ قرباکر رو

کردیا کہ جی محرم اول۔ یہ صدیت انکہ خلافہ کے بھی ظاف ہے اور انام ابو صغیفہ کے بھی انکہ خلافہ اس صدیت کے بواب بی
یہ کتے ہیں کہ یہ صدیت اس جول ہے کہ صفرت صحب بن بٹائر نے دسول اللہ جو پر کی خاطر شکار کیا تھا اس لیے آپ نے

اس شکار کو واپس کر دیا اور انام ابو طبیفہ کی طرف ہے یہ بواب ہے کہ یہ صدیف معتمری ہے۔ صبح مسلم الی من میں ہے کہ
صفرت صحب نے آپ کی خد مت جی جنگلی گد حاجیش کیا اور انج ابدہ جی ہے اجتمال اس میں کیا جاتمہ اس ایک بائے چیش کیا اور انج ابدہ میں ہے اجتمال اس مدیث ہے جو بخاری اسلم اور دیگر کتب صحاح میں
موقف کے ظاف جمت نہیں ہے کہ کہ انام ابو صفیفہ کا استدالل اس مدیث ہے جو بخاری اسلم اور دیگر کتب صحاح میں
ہے اور فیر صنطرب ہے۔

اب دہایہ سوال کہ قرآن جید کی ذیر تغیر آئے۔ میں ہے جب تک احرام میں ہو تممارے لیے نظی کاشکار حرام کر دیا گیا ہے۔ اس کی بطاہر الم ابو صنیفہ اور ائمہ خلافہ دو لول کے ظلاف ہے۔ امام ابو صنیفہ کی طرف ہے اس کا جواب یہ ہے کہ یہ آئے۔ اس کی بطاہر الم ابو صنیفہ کی خشکی کاشکار تم پر حرام کر دیا گیا ہے جبکہ تم نے حالت احرام میں خود شکار کیا ہو یا شکار کرنے والے غیر محرم کی احالت کی ہو الم اعظم ابو صنیفہ کی تائید میں مزید احادیث حسب ذیل ہیں.

الم محمين حسن شيباني متونى ١٨١ه روايت كرت ين

معرت ابو ہریرہ بھٹے بیان کرتے ہیں کہ بی جرین کے پاس سے گزراتو جھے سوال کیا گیا کہ آگر فیر محرم شکار کرے تو آیا اس کاکوشت محرم کے لیے کھلا جائز ہے یا نسمی؟ میں نے اس کے جواز کافتونی دیا الیکن میرے دل میں پچھے اضطراب تھا میں نے معرت محرسے اس کاذکر کیا معرت محرفے فرمایا اگر تم اس کے ظاف فتونی دیتے تو تاحیات تم فتوئی نہ دے گئے۔ اس کے معرت محرسے اس کاذکر کیا معرت محرفے فرمایا اگر تم اس کے ظاف فتونی دیتے تو تاحیات تم فتوئی نہ دے گئے۔

(کماپ الاکار "رقم الدیث ۱۳۵۹ مطبوعه ادار دالقر آن "کراچی) ماداد به از کرتر کراچی از در القر آن "کراچی)

المام ابن جرير كى روايت يس الفاظ بين أكرتم اس ك قلاف فتوى دية توجى حميس ور سار لله

(جامع البيان 2 ع م عه مطبوعددا والفكو " يروت)

حضرت ذہیرین عوام بوہیں بیان کرتے ہیں کہ ہم دھوپ میں سکھایا ہوا شکار کاکوشت نے کر جاتے اور اس کو سفر میں کھانتے تھے' ملائکہ ہم رسول اللہ رچیز کے ساتھ احرام میں ہوتے تھے۔ (کلب لاکٹار 'رقم الدے، ۱۳۹۰مطبور کراچی)

صفرت طوین عبداللہ بولیز بیان کرتے ہیں کہ ہم اس می بحث کردہ ہے کہ عمر شکار کاکوشت کھا سکتا ہے انہیں اور
نی بھیلا سوے ہوئے تھے۔ جب آپ بیدار ہوئ تو آپ نے پوچھائم کس چزمی بحث کر دہے تھے؟ ہم نے موش کیا کہ عمر م شکار کاکوشت کھا سکتا ہے یا نہیں؟ تو آپ نے ہمیں اس کے کھانے کا تھم دیا۔ اہام محد نے فرایا ہم اس مدیث پر عمل کرتے ہیں جب فیراد کو مراح شکار کرے تو اواس کو عمر می خاطر ذیج کیا گیاہو اور ہی امام بیب فیر محرم شکار کرے تو اواس کو عمر می خاطر ذیج کیا گیاہو اور ہی امام او صنیفہ وحمد اللہ کا قول ہے۔

(كتاب الأثار وقم الحديث ١٣٦١ مطبوعه كراجي)

ا ور تعبه کی قربانی کو الاجازوں کے محول میں پشت موسٹے بڑی کو بیاس اخراست علي والا الع مدوم فرات والاس و رول ي المام كست م الاجهام ميات بر برابر بیس بومسکا ، فواه داند مخاطب ، تم کو تایاک کی کشت تاجی فتی بر و مواے مقل دالو ؛ 0 31 20 7 15 النرس المست دي

کعب، یہ چوکور اور باندیت ہے جس کو حضرت ایرائیم اور حضرت اسلیل طیماالسلام نے کم میں بنایا اکتب کے معن باند ہونا ہے اور یہ چو کمہ باند بہت ہے اس کے کعبہ کما کیا۔

میسام اللندار: جم چرکے میں ہے اوگوں کے مطالات کا تم اور درمت ہول گھید کی ڈیارت کرکے اور اس کا طواف کرے نوگ نج اور عمو کی عبارات کو انجام دیے جس میس سے ان کی آخرت درمت ہوتی ہے 'اور چ نکہ اللہ تعالیٰ نے اس کو

امن کی جگہ بنادیا ہے اور تمام دنیا ہے تجارتی سلکن تھنچ کر کھیہ کی سرز بین جلا آیا ہے اس سے ان کی دنیاد رست ہوتی ہے۔ الشهر المحرام: عام حرمت والے مينے يل- دوالقده " دوالجد" محرم اور رجب ان مينوں كے عبيع بمي ان ك معالمات قائم اور درست رہے ہیں ای تک ان مینول میں جنگ اور قبل کرنا جائز نہیں ہے۔

المهدى: جن جانورول كو قرمان كرتے كے ليے حرم ميں جميجا جائے 'ان كو العدى كہتے ہيں' فرماء اور فقراء ان كاكوشت کھلتے ہیں بجس سے ان کیدو ہوتی ہے۔

القالاند: قلاده بي كوكت إلى اس مراد قريانى كاده جاور بي ك كل عن باريا بنا موا الى مرب كا طريق تماك جس جانور کو قربانی کے لیے کعبہ کی ملرف ہیجے' اس کے مگہ میں پٹاڈال دیتے' اس کی اہمیت کی دجہ ہے اس کاخصو میت ہے ذکر

مناسبت

اس ہے بہلی آنت میں اللہ تعالی نے محرم پر فشار کرنے کو حرام فریلیا تھا' اس آنت میں بیان فریلیا ہے کہ جس طرح حرم وحثی جانوروں اور پر ندوں کے لیے باعث امن ہے 'ای طرح دہ انسانوں کے لیے بھی امن کا باعث ہے اور ونیا اور آخرت کی مملائوں اور سعادتوں کے حصول کاسیب ہے۔

کعبہ اور دیکر شعائر حرم کالوگوں کے لیے مصلح اور مقوم ہونا

حرب بیں کوئی امیراور رکیس نمیں تھا جو ضعیف اور مظلوم کاحق قوی اور ظالم سے ولا سکے اور جو کسی بد کار کو سزا اور نكوكاركوبرادے سكے أو الله تعالى نے كعيه كوجو البيت المحرام ب الوكوں كے معالمات كى در تكى اور اصارح كاسب بناديا جیے تمی ملک کا باوشاد اپنی رعیت کے معاملات کو درست اور قائم رکھتا ہے اور ان میں عدل دانعیاف پر قرار رکھتا ہے 'ای طرح ے کعبد اور حرمت والے مینے زمانہ جالمیت میں ان کی اصلاح اور در نکی کاسب شے "کونکہ وہ السیست الدرام کی تعظیم كرتے تنے اور اس شريس جنگ و جدال سے اجتناب كرتے تنے اور سال كے جار حرمت والے مينوں ميں بھي اڑائي جھڑے ے پر بیز کرتے تھے "کیونکہ ذوالقعدہ اور ذوالجہ میں ہوگ ج کے لیے سؤ کرتے تھے اور محرم میں سفرج ہے والیں جاتے تھے "اور رجب میں عمرہ کے لیے سفر کرتے تھے اور وہ زائرین بیت کو بیت اللہ کی تعظیم کی دجہ سے مامون اور محفوظ رکھتے تھے۔ ای طرح قربانی کے جو جانور حرم میں لے جائے جائے تھے جن کو البعدی اور البقیلا تبد کماجا یا تھا 'ان کی بھی ہیت اللہ کی دجہ ہے تعظیم كرتے تھے ابيت اللہ كى تعظيم ان كے دل و دماغ من متحكم ہو چكى تھى اور ان كے رگ ديد من سرابت كر چكى تھى۔ اور زماند اسلام من الله تعالى في بيت الله كي تعظيم كو اسلاى عبادات كاايم جمد بناديا مو فرمايا.

اورجب ہم نے کعبہ کولوگوں کے لیے مرکز اجماع اور مقام جكه بنالو اور جم في ابرائيم اور استعل سے عمد ليا كه وه میرے بیت کو طواف کرنے والوں اعتکاف کرنے والوں اور م کوج اور محدہ کرتے والون کے لیے پاک رکھیں۔

وَإِذْ مَعَلَمُنَا الْبَيْثَ مَنَابَةً لِلنَّاسِ وَأَمْنَا } اتَّوْدَدُوا مِنْ مَّفَام إِبْرَاهِيمَ مَصَكَّى إِوَعَيِهِدُنَا الناه الإورام في محمد إلى عام ايرابيم كونماز يرصنى اِلنَّى رَابُرَاهِيمُمْ وَ رَاسُمُ عِيبُلُ أَنَّ طَيِّهُمَا بَيْنِتَى لِلتَّطْ يُعِينَنَ وَالْعُكِيفِينَ وَالتَّرُكِيْمِ السَّعُودِ ٥

(البقره: ۵۵)

متلك على ادائكي كا دجد سے اس بے آب دكياد وريان اور بخرزين بي تمام دنيا سے مسلمان توت كر آتے ہيں 'اور ہر عکہ سے پہل تجارتی سلکن 'پکل اور غلہ پنچاہے 'اور یوں اس بیت کی دجہ سے ساکنان حرم کے لیے اسباب زیست فراہم ہوتے

یں اللہ تعالی نے قرالا

كيابم لے انہيں حرم من آباد شين كياجوامن والاہے ،جس آوَلَمْ نُعَكِّنْ لُهُمْ حَرَمًا أيسًا يُحَبِّى إلَيْهِ ک طرف ہر حم کے پیل اے جاتے ہیں جو مادی طرف ے نَسَرَاتُ كُيلِ نَسَمُ إِرْقَالِقُ لَكُنَّا وَلَيكِنَّ أَكُنَّرَهُمُ عطاکروہ میں ملکین ان کے آکٹرلوگ نہیں جائے۔ لاَيعَلَمُونَ- (القصص ١٥٥)

دور دورے لوگ حرم میں آگر مباوت کرتے ہیں اور ونیا کی زیب و زینت سے اجتباب کرتے ہیں احرام کی منوعات سے بازرجے ہیں وران مجدی حرم میں علوت كرتے ہيں اور زيادہ ہے زيادہ حرم ميں نمازين معتے مي وراواف كرنے كى سى كرتے یں 'ج کے اجاع کور کھ کر محشر کویاد کرتے میں ان کے دلوں میں فداکے سامنے کمڑے ہونے کا فوف زیادہ ہو تاہ اور وہ برے کاموں سے باز رہے اور بقید عریس زیادہ سے زیادہ نیکیاں کرنے کاعمد کرتے ہیں حرم میں کی ہوئی نیکیوں کا اللہ تعالی ایک الکو منا اجر عطا قرما آئے وائرین بمال آتے میں اور وائی جاتے ہوئے اپنادل پیس چموڑ جاتے میں اور ساری عمر پیس آنے کی بیاس

الله تعالى كاارشادم: رسول ير صرف علم بنچانام اور الله جانام جو يحد تم ظاهر كرتے مواور جو يحد تم جمياتے يو-(الماكدة: 44)

ی کو جراہدایت یافتہ بنانا فرائض رسالت میں ہے تہیں ہے

اس سے پہلی آیت میں اللہ تعالی نے فرما إتما اللہ كاعذاب بحث سخت ہے اور اللہ بحث والا سے مدرحم فرمانے والا ہے۔اللہ تعالی نے مملے عذاب کاذکر کیا آیا کہ لوگ اللہ کے عذاب کے ڈرے کتابوں سے پاڑ رہیں مجراجی مفقرت اور رحمت کا ذكر فرملياك أكر انسان سے شامت نفس سے كوئى كناد مو جائے و اير اللہ كى رحمت ير نظرو كے اس كے بعد اللہ تعالى لے يمر لوگوں کو عمل کی ترفیب دی اور قربایا رسول کا کام صرف تبلیج کرنا اور بدایت دیتا ہے انیک کاموں کی ترفیب دیتا اور برے کاموں ے روکنااور ان کوعذاب سے ڈرانا ہے ہم کونہ تو جراصالح اور میکو کاربناتار سول کامنعب ہے اور نہ تم میں ایمان اور تقوی پیدا كرنارسول كى زمدوارى ب اورند نيكيوں ير ثواب عطاكر اور برائيوں ير عذاب دينارسول كاكام ب اجب رسول الله مائيم ي تم کو نیکی اور برائی کے راہتے دکھااور بناویئے توان کاکام فتم ہوگیا اب ان پر عمل کرنا "نه کرنا تمہارا معللہ ہے اور اس پر ثواب عطا كنا إعذاب ويناب الله كاكام ب

البتہ قرآن مجید کی دیکر آیات اور احادیث مجدے ثابت ب كه نبي عظیم كنگارول كى منفرت كے ليے اور نيكوكارول كررجات من رقى كے ليے شفاعت فرائي مے بجس كى تنسيل اپ مقام ير انجل ہے۔

الله تعالی کاارشادے: آپ کئے کہ پاک اور ناپاک برابر نہیں ہو سکتا مؤاہ (اے تقاطب) تم کو ناپاک کی کڑے انجھی نكتي موسواے عقل والواتم اللہ عدرت رموس اك تم فلاح ياؤ (المائد مدد)

الله کے نزویک ٹیکو کاروں اور پر کاروں کابرابر نہ ہوتا

پاک اور ناپاک کوبرابر کرنااور صالح اور فاس و فاجر کوبرابرر کمنااللہ تعالی کی عکمت کے خلاف ہے اللہ تعالی قرما تاہے: کیاہم ایمان والوں اور شکی کرنے والوں کو زیمن میں فساد آمُنَحُمَلُ الَّذِيْنَ امَنُوْا وَعَسِلُوا الصَّلِخِينَ كَالْمُفْسِيدِيْنَ فِي الْأَرْضِ أَمْ سَحْمَلُ كَانُوالون فَالْمِح كُومِي كَامَم رِيز كارون كور كارون としょうしょし الْمُنْفِينَ كَالْفُحْارِ- (ص٢٨)

آمُ حَيبَ اللّهُ إِنَّ الْحَنَرَ حُوا السَّيِّاتِ آنُ الْحُنَدُ النَّوّا وَعَيلُوا الشّيَاتِ اللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللللّهُ اللّهُ اللّه

آفَنَحُعَلُ الْمُسَلِمِينَ كَالْمُحُومِيْنَ0مَا لَكُمْ كَيْفَ تَمْعُكُمُونَ القلم ٣٥٣٣

جن وگول فرگاند کے یں کیا تول نے مان کر ہا ہے کہ ہم الس ایمان الف دانوں اور نیک کام کرنے والوں کے برابر کر دیں گے ' کہ ان (مب) کی زندگی اور موت برابر ہو جائے گی وہ کیما پراٹیملہ کرتے ہیں ا۔

کیا ہم اطاعت گزاروں کو بحرموں کی مثل کر دیں ہے؟ نیس کیارہ ایشکر اقدا کی ترین

کی می کی بیا کہ بیان کے سیسے کے اس در سول ایس انہیں بیان کی اور کوجا افغید کر ہے۔ ؟

اس آیت میں بے فرایا ہے کہ اے دسول ایس انہیں بیان کی کر الور کوجا افغیم اور خرار رمان کی اور بر اعال اور خالم بھی برابر فہیں ہو کے والوں کو دیا جی بد کروہر اور بے ایمان لوگ زیادہ بیش و مشرت اور ایمان مائوں کی برابر جی برابر کی برابر

موا آے صافبان بھی ان تبید لوگوں کی ظاہری آن بان کو ندو کھو تھی ان وام ہیں د او اور مال حرام کی زیب و زینت سے مسحور مست ہو تھے تک مھی میری کا قاضا ہے ہے کہ بندو ایک سے ڈرے اور فائی کو ہاتی ہے امار منی کو دائی ہے ' باطل کو جی ہے ' المنظو کو مطابع ہے اور حرام کو مطال ہے ترجے نہ وے اور دینا کے بدلہ میں آ فرست کا سودا نہ کے دائی ہے ' مرامر کھائے کا سودا ہے۔

يَالَيُهُا الَّذِينَ الْمُنُو الْاِنْسَالُواعِنَ الشَّيَاءِ الْ ثَبِي لَكُمْ اللَّهِ الْمُنْ الْكُمْ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ عَفَا اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَفَا اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَفَا اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَفَا اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَفَا اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَفَوْ مَنْ عَلِيمُ الْمُنْ اللَّهُ عَنْ وَمَن مَالِكُمُ اللَّهُ عَنْ وَمَن عَلِيمُ اللَّهُ اللَّهُ عَنْ وَمَن عَلِيمُ الْمُنْ اللَّهُ عَنْ وَمَن عَلِيمُ اللَّهُ اللَّهُ عَنْ وَمَن عَلِيمُ اللَّهُ اللَّهُ عَنْ وَمَن عَلِيمُ اللَّهُ اللَّهُ عَنْ وَمَن عَلِيمُ اللَّهُ اللَّهُ عَنْ وَمَ عَنْ وَمَن عَلِيمُ اللَّهُ عَنْ وَمَن عَلِيمُ اللَّهُ عَنْ وَمَ اللَّهُ عَنْ وَمَن عَلِيمُ اللَّهُ عَنْ وَمَ اللَّهُ عَنْ وَمِن عَلْمُ اللَّهُ عَنْ وَمِن عَلْمُ وَاللَّهُ عَنْ وَمِن عَلِيمُ اللَّهُ عَنْ وَمِن عَلِيمُ اللَّهُ عَنْ وَمِن عَلْمُ اللَّهُ عَنْ وَمِن عَلْمُ اللَّهُ عَنْ وَمِن عَلْمُ اللَّهُ عَلْمُ وَاللَّهُ عَلْمُ وَمِن عَلْمُ اللَّهُ عَلْمُ وَمِن عَلْمُ اللَّهُ عَلْمُ وَاللَّهُ عَلْمُ وَمِن عَلْمُ اللَّهُ عَلْمُ وَمِن عَلْمُ اللَّهُ عَلْمُ اللَّهُ عَلْمُ وَاللَّهُ عَلْمُ وَاللَّهُ عَلْمُ اللَّهُ عَلْمُ وَاللَّهُ عَلْمُ وَاللَّهُ عَلْمُ وَمِن عَلْمُ اللَّهُ عَلَيْ الللَّهُ عَلْمُ اللَّهُ عَلَيْ الللَّهُ عَلْمُ اللَّهُ الل

ان وركزركا اورات مبت بخش والانبايت عم والاسب مم سع يسل ايك قوم ن اى قتم ك موالات كي سف ، بحروه

غیان(الگر آن

المالده ۱۰۱۰۰۰۰۱۰۰۰۰۱۰۰۰ رِينَ ⊕مَاجَعًا وك ان ي موالات كي وجرست كفرس ميتلا بحريك الشدف (جا فرول مي) كرتي بجيره فبي بنا يا اور ما أب اور نز ومبیر اور نز حامی اکثر وک میں سے کام بیس کتے الدميب ال سے كيا جا آ ہے آؤ اس رين O. ے فرنت ج انترست نازل کیا سبت اعلا اواد اور کھنے کر میں ساتی فرنت کا بھینے بھی وہ طریقز کا ٹی سبت جس پر ہم ستے لیے باب اور دا داکر پایا خواه ان شک پاپ داها کسی چیز کا علم نه در یکتے جوں مذ برابہت ، اِنت جول 🔾 الله تعالى كاارشادي: اسدائين والعالمي وتين نه يوجها كروجواكر تم يرخا بركردي جائي قوتم كوناكوار بون اور أكر تم ایسے وقت موال کرد سے جب قرآن نازل کیاجا رہاہو توں تم پر کاہر کردی جا کیں گی اللہ نے ان سے در کرر کیااور اللہ بست ويختف والانمايت ملم والاسته والماكرويين نی تناید سے سوالات کرتے کے متعلق احادیث لوگ ہی جین سے بھورت موال کرست سے این میں سلمان ہی تھ اور منافق ہی۔ مسلمان و امرواقع کو در افت کرنے

ے لیے سوال کرتے ہے اور منافق استحالاً استراء اور عنواسوال کرتے ہے محکی ہوچھتاکہ میرایلی کون ہے؟ اور کوئی ہوچھتاکہ میری او نفی کمال ہے؟ اس موقع پر سے آیت مازل موقع

الم محرين احاصل عادي حوق المعد وداعت كري عرق

حضرت انس بوائي بيان كرت يي كد أيك ون وسول الله واليا عليه وياكدي في الم ميا خطب مي ديس سنا تھا۔ آپ نے فرالیا: کہ اگر تم ان چڑوں کو جان او جن کو یں جانا ہوں ق تم کم آسو اور مدو تران مسول اللہ مجان کے اسماب نے ائے چرے وصاف کے اور باند آوازے دوئے کے ایک انس نے پر جمالیا وسول اللہ عوالی مرا باپ کون ہے؟ آپ نے فرلما تمارا بن قلال ے تب آیت نازل مول این ایم نوچ اکو اگر تم یر ظایر کردی ما کم و تم کو ماکوار مول-(مي البلاي ع ٥ وقم المدعد: ١٩١١ مي مسلم فلاكل ١١٥ (١٥١١ ١١٠ ما من ١٤٠٠ من من الدي ع ١٠ وقم المدعد ١٠٠٤ من كبرى المنسائل ع ١٠٠٥ تم تفرعث (١٨٥٣)

حفرت الى بين بين مان كرت ين كر لوك وسول الله وجين عداستراء سوال كرت ته أولى بويمتاك مرابل

غيان القر أن

٢٠٠٠ كوئى كمتاميرى أو منى كم موكى وواو منى كمال ٢٠٠٠ والله تعالى في آعت الل فرائي-

(محج البخاري ع ٥٠ رقم الحديث ١٩٢٢)

صفرت المن جہنے میان کرتے ہیں کہ لوگوں نے ہی جہنے سے موافات کے "حق کہ بہت زیادہ سوال کے قوایک دن ہی جہنے معبر روائق افروز ہو کے اور قربلیاء تم جھے ہے جس چرکے متعلق موال کرد کے جس حمیس اس چرکے متعلق بیان کروں گا جس اور اکس اور یا کس دو تو جر افغان اس وقت ہر محض اپنے کیڑوں جس سرؤائے ہوئے رور ہا تھان ایک جمنس کا جب کس ہے جس اور انتقان اور ہا کہ ایک جمنس کا جب کس ہے جس اور انتقان اور اس کو اس کے باپ کے غیر کی طرف منسوب کرتے تھے وہ کمنے لگائے اللہ کے نیم امیرا باپ کون ہے؟ آپ نے فرایا چرا باپ مذاف ہے ، چر محضرت عمر نے کہ ایم اللہ کو رب مان کر داختی ہیں اور اسمام کو دین مان کر اور (سیدیا) مجمل جہنے اور دور نے کہ ایم اللہ کی ہاتھ جس کے جس نے اس کو اس دور اس میں کہ اس کے میں دیکھا اس کی جس دیکھا کو بات اور دور نے کی قسور کو چیش کیا گیا " حتی کہ جس نے ان کو اس دیوار کے پاس دیکھا۔ تا وہ اس مدیث کا اس کیت میرے سلستے جنت اور دور نے کی تصور کو چیش کیا گیا " حتی کہ جس نے ان کو اس دیوار کے پاس دیکھا۔ تا وہ اس مدیث کا اس کیت میرے سلستے جنت اور دور نے کی تصور کو چیش کیا گیا تھیں نہ جو چھا کو اس دیوار کے پاس دیکھا۔ تا وہ ان کی اس دیوار کیا س دیوار کی باس دیکھا۔ تا وہ ان کا اس کیت کی کر ھے وات ذکر کرتے تھے ۔ "اے ایمان والوا اس باتیں نہ جو چھا کو ۔۔۔۔ "

(من العاري ع ١٠ رقم الدعث: ٨٩ مد من من مسلم " فضائل ١٣٤ (٢٣٥١) ٨٠٠١ مند احر اج ١١ رقم الديث: ١١٠٥١ طبع واراله يث قابرد مند احر اج من رقم الديث: ١٢٨٣٥ ١٢٨١ طبع هاد الفكو "بيوت" مند احد اج من ١١١ طبع قديم)

الم ابو عيلي عمن عيلي ترفري موفي الدور والت كرتم إن

(سنن ترذی کچ۵° د قم الحدیث: ۳۰۷۱ سنن این باز کچ۳ د قم الحدیث: ۲۸۸۳ میچ مسلم "انج ۳۳۳ (۲۳۳ (۱۳۳۷) سنن نسانی ک چ۵° د قم الحدیث ۱۳۷۹)

الم الد جعفر فيرين يري طرى متوفى ماسد الى سند ك سات روايت كرتين

(جامع البيان " 42 م - ١١ مطبوعه داد الفكو "بيروت ١٣١٥ هـ)

آپ سے سوال کرنے کی ممانعت کی وجوہات

نی اللہ اس کے جن چروں کے متعلق سوال کے جلتے تھے ان میں سے بعض مخلی ہوتی تھی ،جن کے ظاہر ہوتے سے کی کا براہو نے سے کی کا براہ ہوتے ہے کی کا براہ ہوتے ہے کی کا بردہ فاش ہو سکتا تھا اور اس کی رسوائی کا خطرہ تھا۔ مثلاً صحرت عبد اللہ بن مذاف السمی نے برجہا تھا؛ کہ میرے باپ کون جس؟

قرض يجيئه كران كے باب مذافد ند موت كوئى اور موت أو لوگوں من رسوا مو جاتے اور ان كى مال كى ماسوس پر دمبه لك جاتا ا اى طرح جس فخص نے بيد سوال كيا تفاكد كيا بر مال ميں ج كرنا فرض ہے "اگر آپ بال فراد ہے تو بر مال ج فرض ہو جاتا اور مسلمان محض اس دجہ سے مشكل ميں پڑ جاتے۔

الم أبو عيني حمين عيني رّندي متوني ٥٥ مد روايت كرية من

حطرت ابو طلبہ رہیز بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ معلی نے فرایا اللہ تعالی نے کچھ فرائض مقرر کیے ہیں ان کو ضائع مت کو اور پچھ صدو مقرد کی ہیں ان سے تجاوز نہ کرد اور پچھ چیزوں ہے منع فرایا ہے ان می اوٹ نہ ہو اور پچھ اشیاد ہے سکوت فرایا ان می تم ادے لیے رخصت ہے اللہ انسی بحولا نہیں ہے تم ان ہے بحث نہ کرد۔

(سنن كبرى لليمتى ع-امس ١١٠ المستدرك عمر ٢٠٠٥)

معرت سعد بن و قامی براین بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ برجیج کے فرایا مسلمانوں میں سب سے بواہم وہ ہے جس لے کی ایک چزکے متعلق سوال کیا جو مسلمانوں پر ترام نہیں تھی اور اس کے سوال کرتے کی وجہ سے وہ ان پر ترام کردی تھی۔

(می البحادی محمد آر قم الحدیث ۲۲۸۱ می مسلم افضائل ۱۳۳۰ (۲۳۵۸) ۱۰۰۰ مشن ابو داؤد "ج ۳ رقم الحدیث ۱۰۱۳ می اور محمد تعرب ابو ہراوہ براوہ برا

ب کے سے مرس مرس میں میں میں میں ہے۔ اور اجان ہے ہیں ہے۔ اور اعلامت اور اعلامت اور اعلامت کرنے سے منع فرمایا ہے ملائک قرآن جمید کی ایک اور آبت اور ایک حدیث میں سوال کرنے کا تھم فرمایا ہے افلاد تعالی کاار شاو ہے:

مَسْلَلُوْ الْمُلِ كَيْرِانَ كَنْتُم لَا تَعْلَمُونَ - الرَّم سَي جائة وَعُم والول عوال كرو-(الانساء: ٤)

الم ابوداؤد سليمان بن اشعث متونى ١٥٥ مد روايت كرت بيل:

حضرت جایر براہی بیان کرتے ہیں کہ ہم آیک سفر علی گئے "ہم عیں ہے آیک فض کو پھرلگ گیا 'جس ہے اس کا سرپھ بھرگ ہے' بھراس کو احتمام ہو گیا' اس نے اپ اس علب ہے پہر چھا کیا میرے لیے جم کرنے کی ر فصت ہے ؟ انہوں نے کہا' نہیں 'تم پائی کے استعمال پر قلور ہو' تمہارے لیے تعم کی رخصت نہیں۔ سواس نے قسل کیا اور وہ فوت ہو گیا جب ہم نبی کریم ہو چیر کی استعمال پر قلور ہو' تمہارے لیے تعم کی رخصت نہیں۔ سواس نے قسل کیا اور وہ فوت ہو گیا جب ہم نبی کریم ہو چیر کے پاس پہنچ تو ہم نے آپ کو اس واقعہ کی فیروی 'آپ نے فرایا انہوں نے اس کو بار ڈالا 'اللہ بن کو ہال کروے 'جب ان کو سکہ کما کائی تھا' یا وہ اپنے زخم سکہ کاعلم نہیں تھا تو انہوں نے سوال کیوں نہیں کیا؟ کو فکہ جمالت کی شقاسوال کرتا ہے 'اس کے لیے تھم کرتا کائی تھا' یا وہ اپنے زخم پر پائی بما آلہ

(سنن ابوداؤد عن وقوالحديث ١٠٣٠ سنن ابن ماجه عن وقم الحديث ١٦٥ مند احد عن اس ١٥٠ المبع قديم)

اس کاجواب ہے کہ نبی چیج کا انتخان کینے کے لیے یا آپ سے استر او کے طور پر سوال کرنے ہے ان کو منع کیا گیا تھا'یا
جس عبادت کے کرنے کا اللہ تعالی نے مسلمانوں کو عظم شعیں دیا تھا'نہ اس کا بی کتب میں ذکر کیا تھا' اس کے متعلق سوال کرنے
ہے مسلمانوں کو منع فرملیا تھا'یا جس چیز ہے کسی کی پر دو در ہی ہوتی ہواس کے متعلق سوال کرنے ہائوا تھا' کیا جس چیز ہے کہ کی پر دو در ہی ہوتی ہواس کے متعلق سوال کرنا جائز تہے' جیسا کہ اس آیت کے
اللہ تعالی نے تھم دیا ہواور اس کا دجوب جابت ہو چکا ہو' اس کی وضاحت کے متعلق سوال کرنا جائز تہے' جیسا کہ اس آیت کے
آخری حصہ میں فرملیا: اور آگر تم ایسے وقت سوال کرد گے جب قرآن نازل کیا جارہا ہوگاتو وہ تم پر ظاہر کردی جائے گی۔ (المائد داما)
الشاء وہی میں جو تھم مجمل ہو اس کی وضاحت کے لیے سوال کرنا' جو چیز سمجھ میں نہ آپ اس کو ہو چھنا' کسی پیش آمدہ
الشاء دمی میں جو تھم مجمل ہو اس کی وضاحت کے لیے سوال کرنا' جو چیز سمجھ میں نہ آپ اس کو ہو چھنا' کسی پیش آمدہ

مابت کے متعلق سوال کرنا' یہ تمام سوالات جائز ہیں اور قرآن مجید اور امان یہ میں ان کی بہت نظائر ہیں۔ آپ سے کیے ہوئے سوالات کے متعلق قرآن مجید کی آیات

الله تعالی نے مطاقہ کی عدت بیان فرائل اور جم کا فاوند فوت ہو کیا ہواس کی عدت بیان فرائی اور عالمہ کی عدت بیان فرائی اور اس مورت کی عدت بیان نہیں فرائل جس کو حیض آتا ہوائہ حمل نمبر آا ہوا بینی وہ بہت بو زھی ہوائو سحابہ نے اس کے متعانی سوال کیا تب یہ آیت نازل ہوئی:

وَالْمِيْ يَشِسُ مِنَ الْمَحِبُضِ مِنْ يَسَائِكُمُ رادِ ارْتَبِثُمُ مَوَدُّ تُهُنَّ ثَلْكَةً أَنْهُ مِرِ الطلاق؟)

اور تساری عود توں میں سے جو ماہریں ہو چکی ہوں اور حمیس (ان کی عدت تمن ماد

ای طرح حسب ذیل آیات میں محلبہ کرام کے ان سوالات کاذکر فرملیا ہے جو وہ کمی شرقی تھم پر عمل کرنے کی وضاحت کے سلسلہ میں کرتے تھے۔

> يَسْكُلُونَكَ مَاذَا يُسْفِقُونَ قُلُ مَا آنَعَقَتُمُ يَنْ عَيْرٍ فَلِلُوالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِيْنَ وَ الْيَفْسَى وَ الْمَسْكُنِينَ وَأَبْنِ النَّيِبِيلِ (البقر، ١٥٥)

> بَسُعِلُونَكَ عَنِ الشَّهُ إِلَّهُ عَرَامِ فِنَالٍ فِيهِ فَلُ فِنَالٌ فِيهُ كَيْنُورُ وَصَلَّعَنْ سَبِيلِ اللّهِ وَ كُفُرُنِهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْعَرَاعُ الْمُلْهِ مِنْ الْمَنْ لِمَا اللّهِ وَالْفِئْفَةُ الْكَبَرُونَ الْفَنْلِ -

(البقرة: ١٤٤)

يَسْعَلُونَكَ عَنِ الْحَمْيِرِ وَ الْمَبَّيِيرِ فُلُ فِيْهِمَالِثُمُ كَيِيْرُوَّ مَافِعُ لِلسَّامِ وَإِثْمُهُمَا الْجُبُرُيِنُ تُغْمِهِمَا (البغره ٢٨٠)

يَسْعُلُونَكَ عَنِ الْيَعْمَى قُلْ إِصْلَاحٌ لَهُمْ حَيْرُ- (السفره: ٢٢٠)

وہ آپ سے فرج کے متعلق موال کرتے ہیں' آپ کئے کہ تم جو (مال) بھی فرج کرو تو دہاں باپ ' قرجی دشتہ داروں' بنیموں مسکینوں اور مسافروں کے لئے فرج کرو۔

وہ آپ سے او حرام میں قال کے متعلق پوچھتے ہیں "آپ
کتے اس میں قبل کر ما ہوا کتاہ ہے "اور اللہ کی راہ سے رو کتا اور اللہ کا اللہ سے کفر کر ما اور مجد حرام جالے سے رو کتا اور اس کے رہے والوں کو اس سے تکالتا "اللہ کے نزدیک بحث برا کتاہ ہے اور قساد کرما قبل سے زیادہ مخت ہے۔

وہ آپ سے شراب اور جوئے کے متعلق موال کرتے ہیں' آپ کئے ان دونوں میں برا گناہ ہے اور بوگوں کے لیے کچھ فاکدے (بھی) ہیں' اور ان کا گناہ ان کے فاکدے سے زیادہ

وہ آپ ہے تیموں کے متعلق موال کرتے ہیں' آپ کئے کہ ان کی اصلاح زیادہ استرہے۔ وہ آپ سے جیش کے عظم کا سوال کرتے ہیں "آپ کیے کہ وہ کندگی ہے اپن مور تون سے حالت جیش میں الگ رہو۔ يَسْعَلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيُّضِ قُلُ مُوَادَّى فَاعْتَرِلُوا النِّسَاءُ فِي الْمَحِيْضِ __

(البقرة: ٢٢٢)

قرآن مجید میں اس طرح کے سوالات کی پندرہ آئیتی ہیں 'جن میں سے بارہ آغوں میں محلیہ کرام کے سوالات ہیں 'ان آیات سے معلوم ہواکہ کسی پیش آمدہ مسئلہ میں 'کسی چیز کا تھم معلوم کرنے کے لیے 'کسی شری تھم کی وضاحت کے لیے 'اور کسی اشباہ کو دور کرنے کے لیے سوال جائز ہے 'احلی شمی بھی اس کی بہت نظائر ہیں۔ آپ سے کیے ہوئے سوالات کے متعلق احادیث

نی بڑھیے ہے محلہ کرام امور مستقبلہ کے متعلق بھی موال کرتے تھے۔ الم محرین اسلیل بخاری متونی ۲۵۱ مدروایت کرتے ہیں:

حضرت ابو جریرہ بوائی بیان کرتے ہیں کہ ایک ون ایک مجلس میں ہی جہیر صحلہ کرام ہے گفتگو فرمارے ہے ہی کہ ایک انزال نے آپ کی حدیث کے دوران سوال کیا قیامت کب ہوگی؟ آپ نے اپنی حدیث جاری رکمی پھر سائل کو متوجہ کرکے فرمایا ہے مدیث جاری درکمی پھر سائل کو متوجہ کرکے فرمایا جب ایات کا انتظار کرنا اس نے بوچھا ایات کیے ضائع ہوگی؟ آپ نے فرمایا جب کوئی منصب فائل کے سرد کردیا جائے تو قیامت کا انتظار کرنا اس کے انوادی نے اور الکت اسلید اور ت کا انتظار کرنا اس کے انوادی نے اور الکت اسلید اور ت کا اسلیدی صحابہ کرام کمی چیش آمدہ مسئلہ اور حادث میں آپ جی ہو ہے سوال کرتے تھے:

صفرت مقبہ بن عامر روہ یہ بیان کرتے ہیں کہ انہوں نے ابو احلب کی بیٹی ہے شادی کی ایک عورت نے ان ہے کہ بیس نے مقبہ اور اس کی بیدی کو دودہ پالیا ہے اصفرت مقبہ نے کہا جھے نہیں معلوم کہ تم نے جھے دودہ پالیا ہے اور نہ تم نے پہلے جھے بتایا تھا ' مجروہ رسول اللہ بیجین کے پاس مین بہنچ اور آپ ہے اس کے متعلق سوال کیا تو رسول اللہ بیجین نے قربایا تم اس سے الگ کون نہیں ہوئے ؟ جبکہ یہ کما کیا ہے ، تو مقب اس عورت سے الگ ہو گئے۔ (مجمع البخاری نے اور تم الحدہ نہیں ہوئے ، جوت رضاعت کے دور تب کا یہ اور شام المور استجاب ہوئے ورت کے قول سے رضاعت تابت نہیں ہوتی 'جوت رضاعت کے لیے دو مردن کی گوائی یا ایک مواور دو حور قون کی گوائی ضروری ہے۔

 خواتین آپ ے عور توں کے خصوصی مسائل دریافت کرتی تھیں:

(منج البخاري عن الرقم المديث: ١٠٠٠ مروت)

قرآن مجید کی می اصطلاح کے متعلق بھی محلبہ آپ سے سوال کرتے تھے:

حضرت آبر موی رویز بیان کرتے ہیں کہ کی موج کی ایک مخص آبادر اس نے عرض کیایار سول اللہ اللہ کی راہ میں لال کرنے کی کیا تعریف ہے؟ ہم جس سے کوئی مخص قضب کی دج سے قبل کرتا ہے کوئی کروی تعصب کی دجہ سے قبل کرتا ہے 'آپ موج ہے اس کی طرف مراضایا' اس وقت وہ مخص کھڑا ہوا تھا' آپ نے فربایا جس مخض نے اللہ کے دین کی مرباندی کے لیے قبل کیا' دی اللہ عروج کی راہ میں قبل کرتا ہے۔(مسیح البواری' جا' رقم الحدیث: ۱۲۳ مطبوعہ بیروت)

بعض او قات سحلبہ آپ کی مدے کے معارضہ می قرآن مجید کی آیت ٹیش کرتے کی آپ اس کاجواب دیتے تھے۔
ابن الی ملیکہ بیان کرتے ہیں کہ نبی ہوچیو کی زوجہ معنرت عائشہ ٹیشٹیٹ جب بھی آپ سے کوئی مدیث سنتیں اور آپ
اس کے مطلب کونہ پہنچتیں تو آپ سے رجوع کرتی تھیں اور نبی ہوچیوں نے فریلا جس فحض سے حساب لیا گیا اس کو عذاب دیا
گیا معنرت عائشہ جوشی نے کما کیا افتہ سے نمیس فرما تا ہی سے منقریب بہت آسان حساب لیا جائے گا۔ (الاشتاق ۱۸) آپ نے فرمایا
اس آیت میں حساب کا پیش کرنا مراوے 'لیکن جس سے حساب میں مناقشہ کیا جائے گا' وہ ہلاک ہو جائے گا۔

(مح الخاري على ارقم الحديث؛ ١٠١٠ مطبوعه بيروت)

مشكل موالات اور بجمارت ڈالنے كى ممانعت

مافظ ابو عمراوسف بن عبد البرالقرطي المتوفى المهممد الى سند كے ساتھ دوايت كرتے ہيں:

حضرت معلوب بھائی میان کرتے ہیں کہ نی جھیز نے پہلیوں اور بجمار توں کے ڈالنے سے منع فرہایا کمی کو ساکت اور عائز کرنے کے قصد سے اس پر بجمارت ڈالٹامنع ہے اور شاگر دوں کا استخان کینے کے لیے بجمارت ڈالٹا جائز ہے ' فود نی جھیز نے صحاب سے بع جمارت ڈالٹا جائز ہے ' فود نی جھیز نے صحاب سے بع جمارت ڈالٹا جائز ہے ' بتاؤ وہ کون سا فرد سے بع جمادر فتوں میں سے آیک ایسادر فت ہے جس کے ہے تیم محر نے اور وہ مسلمان کی مثل ہے ' بتاؤ وہ کون سا در فت ہے۔ اس محر البخاری 'جائر قم الحدیث ہے)

صفرت معلولیہ بن ابی سفیان رضی اللہ عنماکے سامنے لوگوں نے سوالات کیے تو ہنموں نے کماکیاتم نبی جانے کہ رسول اللہ مائی کے مشکل سوال کرنے سے منع فرمایا ہے۔

حضرت ابن عباس رمنی الله عنمائے فرمایا میں نے سیدنا محد مجھیز کے اصحاب سے افضل کوئی قوم نمیں دیمی اور انہوں کے ر اور سول الله مجھیز سے صرف تیرہ سوالات کے جن کا قرآن مجید میں ذکر ہے۔ وہ تیرہ سوالات بید ہیں:

(۱) وادا سالك عبادى عبى (۲) يسئلونك عن الاهلة (۳) يسئلونك مادا ينفقون (۳) يسئلونك عن الشهر الحرام (۵) يسئلونك عن الحمر و الميسر (۱) ويسئلونك عن البتامي (٤) ويسئلونك ماذا ينفقون (۸) ويسئلونك عن

جُيان القر ان

المحيص- ي أثم موالات مورة البقرة على إلى و (١) يستلونك ماذا أحل لهم (المائده) (١) يستلونك عن الانعال (الانعال) (١) يستلونك عن الانعال (الانعال) (١١) يستلونك عن الانعال (الانعال) (١١) يستلونك عن الحيال (١١) يستلونك عن الحيال

بختین سے کہ صرف بارہ سوالات محلبہ نے کیے تھے 'قرآن مجید میں بسٹ لمونک کے میغہ سے باتی جو سوال ہیں 'وہ یمود اور مشرکین کے ہیں۔ طائوس بیان کرتے ہیں کہ صفرت عمر نے قرایا کسی مخص کے لیے یہ جائز نہیں کہ وہ اس چیز کے متعلق سوال کرے جو نہیں ہے "کیونکہ جو چیز بھی ہوئے والی ہے 'اللہ تعالیٰ نے اس کا فیصلہ کردیا۔

(جامع بيان انظم و فضله "ج ٢ من ٢٣٠١ بملخصا "مطبوعه دار الكتب العلميه " جروت)

سوالات کرنے کے جائز اور ناجائز مواقع

الله تعالیٰ کاارشادہ: تم ہے پہلے ایک قوم نے اس هم کے سوالات کیے بتے 'پھروہ لوگ انہی سوالات کی دجہ ہے کفریں جنا ہو گئے۔(انمائدہ: ۴۰۲)

کثرت سوالات اور مطالبات کی وجہ ہے پچھلی امتوں کا ہلاک ہونا

اللہ تعالی نے یہ بیان فرمایا ہے کہ تم ہے پہلی قوموں نے اپ نہوں ہے چند فرمائشی معجزات کا سوال کیا تھا 'جب اللہ تعالیٰ ان کے سوالات کو بورا کر دیا اور ان نبیوں کو وہ معجزات عطا فرمادے تو دہ ان نبیوں پر ایمان لانے کی بجائے اپ انکار اور کفر بیں بختہ ہوگئے 'جیسے معظرت صالح علیہ انسلام کی قوم نے او نمنی کا سوال کیا تھا 'اور جب وہ او نفنی آگئی تو انہوں نے اس کی کو نہیں کا ف دیں 'اور معرت عیلی علیہ المسلام کی قوم نے یہ سوال کیا تھا کہ ان پر آسان سے دسترخوان عازل کیا جا تھا اور جب ان پر دسترخوان تازل کردیا میا تو ایک اور جب ان پر دسترخوان تازل کردیا میا تو دہ مقاری و اللہ تعالی نے مسلمانوں کو ان کے نبی جنجیم کی وسلطت ہے اور ان کی زبان سے تنہیم کی ہے کہ وہ سوالات کرنے کے معالمہ میں اپ سے پہلی استوں کے راست پر نہ جل پریں 'اس لیے فرمایا کہ تم فرمائش

معجزات کاسوال نه کمه و نه کسی کابوشیده روز معلوم کرد و بورجو چیزتم پر فرض یا حرام نمیس کی گئی اس کاسوال نه کرد مجیس ایسانه مو كه اس كابيان كياجائة توتم كو تأكوار موياتم كسي د شواري يس يزجاز-

الم مسلم بن مجليج قضيدي متونى المام روايت كرت بين:

حفرت الوجريده جائي مان كرتے بيل كدرسول الله والى سن فرمايا من فرق كوجن جزول سے منع كيا ہے ال سے اجتناب كرو"اور جن چيزوں كا تھم ديا ہے "ان كو بجالاؤ" جتني تمهاري استطاعت ہے "كيو كله تم سے پہلے لوگ محض زيادہ سوالات كرف اورائي عمول سے اختلاف كرنے كى وجہ سے إلى مو محے مسلم 'فضاكل' ١٣٠٤ (١٣٣٤) ٥٩٩٨)

المام محدين اساعيل بخاري متونى ٥٦١ مد ردايت كرتي بن

حطرت ابو ہررہ برائی بیان کرتے ہیں کہ تی بڑی نے فرمایا میں نے تممارے کے جو چری چموڑی میں تم بھی ان کو چمو رود عمے ملے اوگ اپنے سوالوں کی وجہ سے اور اپنے نبول سے اختلاف کرنے کی وجہ سے بادک ہو مجے 'پس جب میں تم کو کمی چڑے منع کر دوں تو اس سے اجتناب کو اور جب میں تم کو کسی چڑ کا تھم دوں تو اس کو بجالاؤ اپنی استطاعت کے

(صمح بخاری کیچ ۴ رقم الحدیث: ۲۸۸ ممج مسلم کالیج ۳۳ (۳۳۷ (۳۳۷) سنن ترزی کیچ ۴ رقم الحدیث: ۲۱۸۸ سنن نساتی ک ج٥٠ رقم الحديث: ٣٧٩ مج أبن مبان اجهار قم الحديث: ١٥-١٩-١٩ سند احراج ٣٠ رقم الحديث: ١٥٦١)

اُنٹه تعالی کا ارشاد ہے: اللہ نے (جانوروں میں) کوئی بحیرہ نہیں بنایا اور نہ ومائیہ اور نہ ومیلہ اور نہ مای جمریہ کافر

جموث بول کران پر بہتان تراشیتے ہیں اور ان میں اکٹرلوگ عمل سے کام نہیں لیتے۔(الما کدہ: ۱۳۳)

اس ہے مہلی آبتوں میں کثرت سوال ہے منع فرملیا تھا'مبلوا کوئی چز حرام نہ ہو اور تہمارے سوال کی دجہ ہے حرام کرنہ ی جائے اور اس آیت میں فرمایا ہے کہ مشرکوں نے ازخود بعض جانوروں کو حرام کرلیا تھا' اللہ نے ان کو حرام نسیس کیا' وہ بدستور طال ہیں موجی چزکوافلہ اور اس کے رسول نے حرام نہ کیا ہوماس کو حرام قرار دے کر شریعت سازی نہ کرو۔

البحيره كامعى

بحرکے معنی وسعت ہے 'جب تھی او نٹنی کے کلن کو بہت لمبا چیرویا جائے تو اسے بحیرہ کہتے ہیں 'جب کوئی او نٹنی وس بیجے جنتی تو وہ اس کے کان چر کراس کو آزاد چمو ژدیتے "اس پر سواری کی جاتی نہ اس پر ملان لادا جا آ۔

(المقردات من ٢٥ مطبوعة ابران ١٣٦٢ه)

مروق نے بیان کیا کہ جب او نٹنی کے پانچ یا سات نے ہو جاتے تو وہ اس کاکان چردیے اور کہتے ہے تھرہ ہے۔ اللود نے بیان کیا کہ جب سمی او منی کے پانچ بچے ہو جاتے تو دوپانچ میں بچے کو رکھتے اگر وہ نر ہو تاتو اس او منی کو ذریح کر دیتے اوراس کو صرف مرد کھلتے کور اگر وہ بچہ مردہ ہو تاتواس او نتی میں مرداور جورت دونوں شریک ہوتے اور اگر پانچویں باراد نتی مونت کو جنم دیتی تواس کو آزاد چھوڑ دیا جا آئاس کادودہ دوبا جا آند اس پر سواری کی جاتی' نہ اس کے بالوں کو حاصل کیا جا آباد رنہ اس كودر كياجا مد (جامع البيان 27) م ١٣٠ ٥٣٠ مطبوع دار الفكو ايروت ١٥٥٥م السائيه كامعني

جب کوئی او بٹنی پانچ ہیجے جن لیے تو اس کو چرا گاہ میں چھوڑ دیا جا تا تھا' اور اس کو پانی اور چارے سے منع نہیں کیا جا تا تھا' اس كو مائيد كت تخف (المغروات م ٢٠٣١م مطبور امران ١٢٠٠٠) ھعبی نے بیان کیاکہ زمانہ جالمیت میں اوگ اپن تو تھیوں اور بکریوں کو اپنے بتوں کے پاس ذرج کے لیے چمو ژدیتے تھے 'وہ لوگوں کی بکریوں کے ساتھ خلط معلط ہو جاتمی' ان کا دودہ صرف مرد دوہتے تھے' کور جب ان میں سے کوئی سرجاتی تو مرد اور مورت دونوں اس کا گوشت کھاتے تھے۔ یہ سائبہ کی تغییر ہے۔

سدی نے سائنہ کی تقبیر میں بیان کیا کہ زمانہ جالمیت میں جب کمی شخص کا مال بہت زیادہ ہو جاتا کیا وہ کمی بیاری ہے شغایاب ہو جاتا یا کمی سفرے کامیاب لوشا تو وہ اپنی کمی او نثنی کو آزاد چھو ڈ دیتا کوئی فخص اس سے نفع حاصل نہیں کر سکتا تھا۔ ابن المسیب نے کماجس او نثنی کو وہ بتوں کے لیے چھو ژ دیتے وہ سائنہ کملاتی۔

(جامع البيان ٤٦٠ عم ١٢١٠-١٢١ مطبور داد الفكو بيروت ١٢١٥م) ٥٠

مائبہ وہ او نتنی ہے جس کی بنوں کے لیے نفر مانی جاتی ہور اس کو بنوں کے خدام اور محافظوں کے سپرد کر دیا جاتک وہ جمال چاہتی کچرتی اس پر سلمان لادا جاتانہ اس کا اون کاتا جاتا کاور نہ اس کا دورہ دو اِ جاتا کالبتہ مسمان مشتی تعل

(التغيير المتير "22 عمل ٨٥ "مطيوم دار الليكو" بيروت)

الوصيله كامعني

بسب سمی مختص کی بکری نراور ماده دو بچے جنتی او کئے کہ یہ بکری اپنے بھائی ہے واصل ہو گئی ہے ، پھراس ماده بچے کی وجہ سے نریج کو بھی ندیج کو بھی کا دور ہے تھے۔

(المغروات من ۵۵ مطبوعه امر ان ۱۳۶۲ اه)

ملتمہ نے الومیلہ کی تعریف میں کہا جب او نفنی مرف زیج کو جنم دی تو اس او نفنی کو مرد کھاتے تھے 'اور جب ایک ساتھ زاور ہاوہ کو جنتی تو کہتے ہیہ او نفنی اپنے بھنگ کے ساتھ واصل ہو گئی ہے 'پھران دولوں کو نہیں کھاتے تھے 'اور جب ز مرجا آتو اس کو صرف مرد کھاتے تھے 'کویا زیکے ساتھ بیدا ہونے والی او نفنی دسیلہ تھی۔

ابن المسیب نے بیان کیا کہ ومیذ وہ او نمنی تھی جو پہلی بار ماوہ کو جنم دے ' دو سری بار پھر مادہ کو جنم دے ' وہ کہتے تھے کہ بیہ ومیلہ ہے' دو مادہ او نشیوں کے در میان نر نسیں ہے ' اس او نشنی کو وہ بنوں کے لیے چھو ژ دیتے تھے۔

(جامع البيان ' 17 2 من ١٢٠٠ - ١٢ "مطبوع داد الفكو " بيروت " ١٣١٥) بد)

الحامى كامعتى

وہ ٹرجو دس مرتبہ ادہ کو کیا بھی کردے اس کو حامی کیتے تھے اس پر سلان لادا جا آتھا کہ اس پر سواری کی جاتی تھی۔ حسر المغر دات میں ۱۳۴۰-۱۳۴۰ مطبوقہ امر ان ۱۳۹۲ھ)

قلود نے کماجو اونٹ اور اس کابٹادس مرتبہ کمابھن کردے ' دہ مای ہے۔

الم ابن جریر نے کہا کہ جس اونٹ کی ضرب ہے مسلسلی وس اونٹیاں پیدا ہوں اور میان میں فرند ہو اس کو مای کہتے منع اس کی جاتی اند اس کی طرب ہے مسلسلی وسی اونٹیاں پیدا ہوں اور جرا گاہ ہے منع نمیں کیا جاتا تھا۔

(جامع البيان ٤٦ مم ١٢٠ ١٠٠ مطبوعه داد الفكو أبيردت ١٢١٥)

بحيره ادر سائبه وغيرهما كے متعلق احادیث

المام محربن اسليل بخاري متوني ٥١ مه روايت كرتے مين:

سعید بن المیب نے بیان کیا کہ بحیرہ وہ او نئی ہے جس کادورہ ودیمنا بنول کی وجہ سے منع کردیا جا یا تھا اور کوئی مخص اس کا

طبيان القر أن

دودہ نمیں دوہتا تھا اور سائیہ دواد نمنی ہے جس کو دوا ہے بتوں کے لیے چھوڈ دیے تھے اور اس پر کی چیز کو لادا نہیں جاتا ہا اور جھڑت ابو ہریرہ نے کما کہ رسول اللہ مل تقریبا کہ ہیں نے عمرو بن عامر فزاعی کو در کھا وہ دو ذرخ ہیں اپنی آئنوں کو تھسٹ رہا تھا اور کی دہ فخص ہے جس نے میں سائیہ او نئیوں کو چھوڈ اتھا اور دوسلہ دواو نئی ہے جو پہلی بار اونٹ بھسٹ رہا تھا اور دوسری بار او نئی بینتی ہے وہ اس کو اپنے بتوں کے لیے چھوڈ دیتے تھے ، بشر طیکہ دو کے بعد دیگرے مادہ کو جمنی مرتبہ گیا بھی کرسے ، جب دو ایمان فرد اور اس کو اپنے بتوں کے لیے چھوڈ دیتے تھے ، بشر طیکہ دو کے بعد دیگرے مادہ کو جمنی دے اور ان کے در میان فرنہ ہو اور حالی فراونٹ ہے ، جو چند معین مرتبہ گیا بھی کرسے ، جب وہ اپناعد د پورا کرے تو دو اس اور اس کو بتوں کے لیے چھوڈ دیے تھے۔

حضرت عائشہ النظامی بیان کرتی ہیں کہ رسول اللہ میں تاہدے فرمایا میں نے دیکھا کہ دو ڈپٹے کی بعض آگ بعض کو کھار ہی تھی اور میں نے دیکھا کہ عمرو اپنی آئنوں کو تھسیٹ رہاتھ اور یہ بسلہ فخض تھاجس نے سائیہ او نشنوں کو چھو ڑا۔

(صمح البخاري ع- ٥٠ رقم الحديث: ٦٢٣٣ م- ٦٢٣٣ ما مطبوعه وارا لكنب العلميه ويروت)

الم احمد بن منبل متوفى الاجمد روايت كرتي بين:

حضرت ابوالاحوص بنافشر بیان کرتے ہیں کہ بھی نبی سائٹر بھی کے خدمت بھی حاضر ہوا تو نبی سائٹر بھیانے فرمایہ جب تمہری اونٹریاں پیدا ہوتی ہیں تو ان کے کال سالم ہوتے ہیں کو تم استرا لے کران کے کان کلٹ ڈالے ہو، اور کہتے ہو کہ یہ بجیرہ ہے، اور اس کا کان چیر دیتے ہو اور کہتے ہو کہ یہ حرام ہیں؟ انہوں نے کما ہیں آپ نے فرمایا اللہ کی کلائی بہت سخت ہے اور اس کا استرابست تیز ہے اور تمہارا ہریال جو تمہارے لیے حلال ہے، اس میں سے کوئی چیز حرام نہیں کی جی۔

(منداحم عن ٥٠ رقم الحديث: ٨٨٨٥ سن كبرى لليمتى ون ١٠ ص ١٠ ج مع البيان وزي مل ١١٩ - ١١٨)

مافظ جلال الدين سيوطي متوفي الهو لكية بن:

(در متوراج ۲۲ م ۳۳۴ جامع البيان بزيم م ۱۱۸ روح المعاني بزيم م ۳۸)

الصال تواب كے ليے نامزد جانوروں كاحلال اور طبيب مونا

الله تعالی نے ان چار جانوروں کو حرام نہیں کیا کیکن زمانہ جاہیت میں مشرکوں نے بچیرہ سمائیہ و میلداور حامی ٹھمرائ ان کو اپنے بتوں کے لیے نامزد کیا اور ان ہے تفع حاصل کرنے کو حرام قرار دیا اور یہ محض اللہ پر افتراء ہے موان جانوروں کو جب مسلمان الله کے نام پر ذرج کرے گاتو ان کا کھانا حلال اور خمیب ہوگا اسی طرح قریانی کے لیے جو جانورلوگوں کی طرف منسوب کے جاتے ہیں میڈ عبداللہ کی جانوران کی طرف منسوب کے جاتے ہیں میڈ عبداللہ کی گائے ہے میدالرحمٰن کا بحراہے اور اولیاء اللہ کو ایسالی ثواب کرنے کے لیے جو جانور ان کی طرف

منسوب کے جاتے ہیں کہ مثلا اس بھرے کو ذرع کرکے اس کے طعام کے صدقہ کے تواب کو معرت فوٹ اعظم فیخ عبد القادر جیلانی قدس مرہ یا معرت دا تا تیج بخش علی ہجو ہری قدس مرہ کی روح کو بنچایا جائے گااور اس اعتبار سے کماجا تا ہے۔ یہ فوٹ پاک کا بھرا ہے یا معادب کا بھرا ہے تو جب اس کو مسلمان اللہ کے جام پر ذریح کرے گاتو اس کا گوشت بھی طال اور طیب ہے۔ اور جب ان ہے کماجا تا ہے آؤ اس دین کی طرف جو اللہ نے تازل کیا ہے اور رسول (کی اللہ تعالی کا ارشاد ہے : اور جب ان ہے کماجا تا ہے آؤ اس دین کی طرف جو اللہ نے تازل کیا ہے اور رسول (کی شریعت) کی طرف و گواوان کے باب اور دارا کس چیز کا مشریعت) کی طرف و گواوان کے باب اور دارا کس چیز کا مشم ند رکھتے ہوں یُن جو ایون موں (الماکم دیو کا

بحيره وغيره كي تحريم كاخلاف عقل مونا

ان آغول میں اللہ تعالی نے ذیانہ ہائیب کے گفار کی تشریع کو رد کردیا ہے کاوریہ اعلان کردیا ہے کہ اللہ تعالی نے ان جانو روں کو جرام نہیں کمیا ہے اور نہ یہ اس کی سنت ہاور نہ تربعت میں ہی وعبادے قرار دیا ہے اور اگریہ جائل مسل کے کام لینے تواول تو کفر اور شرک نہ کرتے اور اس نے ہاتھوں سے بنائے ہوئے بیشوں کی پوجانہ کرتے اور ان جانوروں کو بتول کے لیے وقت کرکے اور ان سے حصول گفتا کو حرام کرکے مزید گراونہ ہوئے جو پھڑ کسی تئم کے نفع اور نشسان پر اصلا قادر نہیں ہیں 'نہ ان کی بکار من سکتے ہیں 'نہ اس کا جواب دے سکتے ہیں 'نہ ان کی بکار من سکتے ہیں 'نہ اس کا جواب دے سکتے ہیں 'نہ ان کی بکار من سکتے ہیں 'نہ اس کا جواب دے سکتے ہیں 'نہ ان کی بات کی ہوئے گیا ماصل ؟ اور ان جانوروں کو ان کی قاطر حرام کرنے ہے کیافا کہ دے کیا ماصل ؟ اور ان جانوروں کو ان کی قاطر حرام کرنے ہے کیافا کہ دے ؟

تقليد فدموم اور تقليد محمود

ابداد کی اندھی تعلید میں گرفتار میں امال نکہ ان کے آباد ابداد جائل اور گراہ تے اور جابلوں کی تعلید خور و فکر کے اپنے آباذ ابداد کی اندھی تعلید میں گرفتار میں امال نکہ ان کے آباد ابداد جائل اور گراہ تے اور جابلوں کی تعلید ضرر محض ہے۔ عمل علم اور دین کے منافی ہے اور مصلحت کے خلاف ہے اس آب میں مطلقاً تعلید کی ذمت نہیں کی کلکہ ان نوگوں کی تعلید کی ذمت نہیں کی کلکہ ان نوگوں کی تعلید کی ذمت کی ہے جو جائل اور گراہ ہوں 'اور اس ہے یہ مطهوم نکا ہے کہ جو لوگ عالم اور جابیت یافتہ ہوں آن کی تعلید جائز اور جمیع ہے ' اس مواج ہے نام راؤی نے لکھا ہے کہ جو ایس عالم کی تعلید اس وقت محمیح ہے ' جب مقلد کو معلوم ہو کہ اس عالم کا قول دلیل اور جمت پر مناب کہ جو ایس عالم کی تعلید اس وقت محمیح ہے ' جب مقلد کو معلوم ہو کہ اس عالم کا قول دلیل اور جمت پر مناب اور بوقت ضرورت میں ہے تعفی اندھی تعلید نہیں ہوگی اور میں دراصل ای دلیل کے مطابق عمل کر رہا ہے 'اور یہ چیز متحل اور علم کے خلاف نہیں ہے۔

بن بین میں دا کل انسول نے فرد بھی بیان کے اور اس کے تمیع علاء نے بھی میان کے اس کے باوجود ان کی نیک نفسی اور علم و دیانت کا بیہ حال ہے کہ انسول نے کہا اگر جغرا کوئی قبل کمی صدیف سمجے کے خلاف ہو قواس قبل کو مسترد کردد 'اور مدیث پر عمل کردن جارا نہ ہیں ہو ان انکر کی تعلیم کرنا در اصل قرآن و صدیث کے انگام پر عمل کرنا ہے۔ یہ محض ان کی تعلیم نمیں ہور نہ میں اند می تعلیم ہے کہ تک تکہ ان کے اقوائی قرآن و صدیث پر بھی جی اور نہ ہیں جائل اور گراد کی تعلیم ہے انکہ یہ ان کی تعلیم ہے جو اسپنا اپنے دور عی علم اور جائے ہے آفل و مایتا ہے تھی سواس آیت ہے انکہ اربد کی تعلیم پر طمن کرنا علم اور دیانت کے خلاف ہے۔

مرد ہیں ہوگا ، انٹر ہی کی طرف تم سب نے وائنا سے ، بیٹروہ تم کو جر اے کا کر تم کی سلت ایمان وافر ؛ جنب تم یم سے کی کی موت (کا وقت) آ میلے اور دہ را ہو آ تھاری شادت کا نعاب ہے۔ کم ی سے دونیک اُدی داوا میں اور اگر تم زیں میں الن پر ٹنگ ہوتو تم الن ووقواہوں کو تماز سکے جمہ روک ہو وہ انٹرکانٹم کھاکرئیں کریم اکنی قائرہ کوچ اس مسک وفن کون ال بیس می گادر فوار قری وفته واری ان را ان ک مهایت بیس کری گے ،احدیم انشان کوابی بیس میدائی ورزم منت مخت می دن این شمار برن سی و میراوموم بر جاند کدوه دوول گراه کسی گناه کے ترکمب بحسندی تر بن وکون کا ی

غيان القر آن

یقوهن مقامهما من الدین استاحی علیه مالاولین فیقسمن الدی استاحی علیه مالاولین فیقسمن الدی این استاحی علیه مالاولین فیقسمن الدی الدی الدوری الد

والته لا عهد ي القوم الفسوين

متو: ادر افرال وگو*ل کو بدایت* جین دنیا 🙃

الله تعالی کاارشادے: اے ایمان دائوا تم اپنی گر کردجب تم براستے یو و کی گرای ہے جہیں کوئی ضرر میں ہوگا اللہ بی کی طرف تم سب نے بیلیا ہے کاروں تم کو جردے کاکر تم کیا کرتے دے تقے۔(الما کردہ ناہ) مناسب اور شان نزول

اس سے کی آیت ہم اللہ تعالی ہے قرایا تھا کہ جب مترکین کوافد کے دین کی طرف بازیا جا اسے تو وہ کتے ہیں کہ اعارے کے اور مائی با فرخی با ان جابلوں اور گراہوں کو اسلام کی طرف بالے کی مسلمانوں سے بوری کوشش کی۔ اللہ کے عزاب سے ڈرایا اور افروی افوالات کی ترفیب دی۔ اس کے بارجور جب ان جابلوں لے اپنی جمالت اور گرای کوشش کی۔ اللہ کے عزاب سے ڈرایا اور افروی افوالات کی ترفیب دی۔ اس کے بارجور جب ان جابلوں لے اپنی جمالت اور گرای کی رامزار کیا تو افر سے فرایا است مسلمانی تم این کا زمانت اور گرای کی پرواو در کرو اور ان کی وجہ سے پریشان شد اور گرای کی پرواو در کرو اور ان کی وجہ سے پریشان شد اور باک تم اللہ کے اسلام کی اطاعت کرتے وہو اور جس کا جمول سے اس کے سات ایک است ایک اور اس لیے در اور اس لیے اس کے سے تربیس کوئی ضرر نہیں ہوگا۔

حضرت این عباس دسی اللہ عنما بیان کرتے ہیں کہ نی چھی الل کتاب ہے ہے۔ تھول کر لیتے تھے اور عرب کے مشرکین ہے جہ ہول میں کرتے تھے۔ ان کے لیے صرف دو راسے تھے 'یا اسلام تھول کر لیں یا پھر جگ کے لیے تیاد رہیں۔ تب منافقوں نے مسلمانوں کو طاعت کی کہ تم بعض کفاد ہے ہیں۔ قبول کرتے ہو اور بہن ہے تھول قسم کرتے و اللہ تعالی نے یہ تبادل فربائی 'جس کا ظاعمہ یہ ہے کہ جب تم یواست پر ہو تو ان کی طاعت کی پرواوز کرو مسلمانوں کو اس ہے بہت تخت تناف فربائی 'جس کا ظاعمہ یہ ہے کہ جب تم یواست پر ہو تو ان کی طاعت کی پرواوز کرو مسلمانوں کو اس ہے بہت تخت تناف فربائی 'جس کا ظاعمہ یہ ہے کہ جب تم یواست کے مشاہدہ اور تب کی تی کو شھوں کے بوجود یہ کار کو قسم تعلیم ہو تھے۔ اور اپنی کرای پر ڈیٹے ہو تو ان کی تسلیم کے لیے ہو تھوں کے بوجود یہ کار کو فیس پھوڑتے اور اپنی کرای پر ڈیٹے ہو تھا تھا کہ تو ان کی تسلیم کے لیے یہ تب تافل فربائی 'جس کا معنی یہ ہے کہ تم ان کو جس تو اللہ تعلیم کی تھی کہ تم ان کو

جَيَانُ القر أَنْ

جلدسوم

مسلمان کرنے کے مکلت نہیں ہو 'تم صرف اپنی اگر کرد 'جب تم بدایت پر ہو تو ان کی جمالت اور مرائ سے حمیس کوئی ضرر نہیں ہوگا۔ (تلیر کیر 'جسام سامن مطبوعہ داو اللاکو ' بیردت' ۱۹۳۸ء)

معات کے لیے امریالمعرد ف اور منی عن المنکو کا ضروری ہوتا

المرت اور عالبت سنوار نے کی تھر کرو۔ اس آئ ہے بھا ہر یہ معلوم ہو آئے کہ اگر لوگ برے کام کر رہے ہیں تو کرنے دوتم افرت اور عالبت سنوار نے کی تھر کرو۔ اس آئ ہے بھا ہر یہ معلوم ہو آئے کہ اگر لوگ برے کام کر رہے ہیں تو کرنے دوتم مرف اپنی تفر کرو جس سے یہ بھیہ ٹھٹا ہے کہ کسی کو نکل کا تھم دیتا یا برائی سے روکنا واجب نہیں ہے 'صرف اپنی اصلاح کر لیا کا نے ہے۔ طاف ہیں؟ اس کا بواب یہ ہے کہ اگر کوئی فحض دو سروں کل ہے۔ طائک یہ معنی قرآن مجید باور احلوث کی دو سری ضعوص کے ظاف ہیں؟ اس کا بواب یہ ہے کہ اگر کوئی فحض دو سروں کو نکل کا تھم قسی دیتا اور کرائی سے تبیس دو کر تو وہ عذاب کا مستحق ہو گا مجد کہ امر المعروف اور بٹی عن المنکو واجب ہے 'اس لیے تم اپنی تفر کرو کا معنی ہے ہے کہ تم اپنی اصلاح کرو اور امر بالمسروف اور تھی عن السنکو کرتے رہو 'اس کے باوجود اگر لوگ برے کاموں سے باز نہ آئیں تو تم تفر نہ کرو 'جب تم ہدایت ہو جو انٹی کر دے ہو اور نیکی کا تھم دے درے ہو 'تو کسی کی برائی سے جہیں ضرو قسی ہوگا۔

امراكم وف اور منى عن المنكوك اجميت كے متعلق احاديث الم الم الوسيلي محرى عيلى ترزى متونى الم مدوايت كرتے ميں:

حضرت عبدالله بن مسعود وجني بيان كرتے بي كه رسول الله جنين كے قرابا بب بنواسرا كيل بن كاناه بهت بود كئة و الله في ان كه علماء من كيا وہ باز نہيں آئے وہ علماء ان كى مجلس بين جنين دے اور ان كے ساتھ كھائے ہے دے تو الله في ان كى علم حرح كروہ اور دسترت و اور دسترت و بينى ابن مريم كى زبان سے ان رامنت كى من كي تك وہ عاقر بانى كرتے كے دل بهي ان كى طرح كروہ على الله كائى كرتے كے اور دسترت دو عاقر بانى كر من جس سے اور دست من ميرى جان ہے۔ رسول الله جنين الك الك موئے تھے الله كروہ من كروہ كا اور قربايا اس ذات كى هم جس كے تبلد وقددت من ميرى جان ہے۔ (الم ابوداؤدكى دوايت من ہے) تم ان كو ضرور نكى كا تھم ديتے رہنااور برائى سے روكتے رہنااور برائى سے دوكتے رہنااور برائى ہے دو كرنا۔

(سنن ترزی کی مح ارقم الحدیث:۳۰۵۸ من ابوداؤد مع ۴ رقم الحدیث:۳۳۳۱ سنن ابن ماجه ۴ م ۴ رقم الحدیث ۳۰۰۱ م امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث متوفی ۵۵ مهد روایت کرتے ہیں:

قی میان کرتے ہیں کہ صفرت ابو بکر بہتے ہے اللہ کی تھ و تاکہ نے کے بعد قربایا اے لوگوا تم یہ آیت علاوت کرتے ہو اے ایمان والوا تم اپنی قکر کرو 'جب تم ہوایت پر ہو تو کسی کی گرای ہے جہیں کوئی ضرر جہیں ہوگا (الما کدونہ ۱۱) اور تم اس آیت سے خلا مطلب تکالے ہو اور ہم نے نبی بڑچ ہو کو یہ فرماتے ہوئے ستا ہے 'جب لوگ خالم کو دیکسیں اور اس کے ہاتھوں کو نہ گڑیں تو اللہ منا سب پر عذاب نے آئے گااور میٹم کی دوایت میں ہے جس کسی توم میں گناہوں پر عمل کیا جا آئے اور وہ ان گزیں تو اللہ ان سب پر عذاب نے آئے گا۔ گزیں تو اللہ ان سب پر عذاب نے آئے گااور میٹم کی دوایت میں ہے جس کسی توم میں گناہوں پر عمل کیا جا آئے اور وہ ان

(سنن ابوداؤد على مرقم المعين: ١٣٣٨ سنن ترزي عن رقم المعين: ١٣٠٨ سن كبرى النسائل عه ٢٠ رقم المدين: ١٥٥٤ سنن ابن اجد عه رقم المدين: ١٩٠٥)

المائده ۱۵-۸۵ کی تغیری ہم نے اس سلسلہ میں بہت اواری پیش کی ہیں۔ الله تعالی کا ارشاد ہے: اے ایمان والواجب تم بیسے می کی موت (کا وقت) آجائے اور وہ ومیت کر رہا ہو تو

تماری شاوت کانساب یہ ہے کہ تم میں ہے دو نیک آدی (گواہ موں) اور آگر تم زمین میں سنر کر رہے ہو اور تم میں سے کسی کو موت آ پہنچ تو قیروں میں سے عی دو فحض (کواو مول) اگر حمیس ان پر شک مو تو تم ان دو کو اموں کو تماز کے بعد روک لو۔ وہ اللہ کی شم کھاکر کمیں کہ ہم (کمی قائدہ کی دجہ سے)اس شم کے وقم کوئی مل شین لیس سے اور خواہ قرمی رشتہ دار ہول (ہم ان کی رعایت نہیں کریں گے) اور ہم اللہ کی کوائی نہیں چھپا کیں ہے "ورنہ ہم مخت گنہ گاروں بمی شار ہوں ہے " پر آگر معلوم ہو جائے کہ وہ دونوں کو او کمی گناہ کے مر بحب ہوئے ہیں تو جن لوگوں کا حق ان کوابوں نے ضائع کیا ہے "ان کی طرف سے دو کواہ ان کی جگہ کھڑے کیے جائمی اور وہ کوار قتم کھا کر کہیں کہ ہماری شاوت ان (دمیوں) کی شابوت سے زیادہ برحق ہے اور ہم نے مدے تجاوز نمیں کیا ورند عارا تار ظالموں میں ہوگا نیہ طریقہ اس بلت کے زیادہ قریب ہے کہ وہ (وسی) اس طرح شاوت دیں جس طرح شماوت دینے کاحل ہے اور اس بلت سے ڈریس کہ (ور اء کی) قسموں کے بعد ان کی تنمیس مسترد کردی جا نمیں گی اور اللہ سے ورتے رہواور (اس کے احکام) سنوا اور اللہ نافر مان لوگوں کو مداعت تمیں ویا۔ (الما کدو: ١٠٧٠١٥) سنرمیں وصیت پر اہل کتاب کو کو او بتانے کے متعلق احادیث

الم محرين اسائيل بخاري متونى ١٥١ه روايت كرتي بير.

حصرت ابن مہاں رمنی اللہ عنما بیان کرتے ہیں بنوسهم (عاص بن داکل سمی کے قبیلہ) میں ہے ایک محض جمیم داری اور مدى بن بداء كے ساتھ (سنريس، كيا-سمى الى جكديس فوت بوكيا جلل كوئى مسلمان نيس تھا، جب وہ دونوں سمى كانزك لے كرائے تواس كے ور عاء فياس عن جاندى كا باله كم إياجس عن مونے كے بترج سے ور عام في مول الله مرتبير مذان ے طف لیا ' پھروہ بالد مکہ میں بایا گیااور ان لوگوں نے کماہم نے یہ بالد حمیم اور عدی ہے خریدا ہے ' پھر سمی کے ور ثاویس ہے وو مضوں نے حم محاکر کماکہ جاری شاوت ان کی شاوت سے زیادہ برحل ہے اور یہ بالدان کے ساتھی کا ہے اور انہیں کے متعلق یہ آیت نازل ہوئی ہے۔اے ایمان والواجب تم میں ہے کسی کی موت کاونت آ جائے۔(الما کون ۱۰۲۱۰۸)

(صحح البخاري مج ٣٠٠ رقم الحديث ٣٧٨٠ سنن ابو داؤ د مج ٢٠ رقم الحديث ٣٦٠٠)

الم ابوعيس تزرى موفى ٥٥ اله في اس مديث كوزياره تنسيل كم ماته روايت كياب. حطرت ابن عباس رمنی الله عنمااس آنت (الما كدوره ۱۰۱) كے متعلق تميم داري سے روايت كرتے ہيں محيم داري نے كماوه اور عدى بن بداء دونوں نعرانی تنے 'اور اسلام لانے سے پہلے شام كاسفركرتے رہے تھے۔ ایک بار وعدونوں تجارت كے ليے شام روانہ ہوئے ان کے پاس بوسم کے آزاد شدہ غلام بھی تجارت کے مقصد سے آئے ان کانام بدیل بن الی مریم تھا ابن کے پاس چاندی کا ایک بیالہ تھا وہ اس کو بادشاہ کے پاس لے جاتا چاہے تھے وہ راستدیس بیار ہو گئے۔ انہوں نے ہم دولوں کو وصب ك اوربير كرد ان كا تركد ان ك الى كو يا يؤدي - تيم في كماجب وه فوت و كان تا جم في اس بالدر بعد كرليا اس كوجم في ا کے بڑار درہم میں فروفت کردیا۔ پھر میں نے اور عدی بن برام نے اس رقم کو آپس میں تقیم کرلیا ، دب ہم بدیل سمی کے مگر سنے تواس کا باتی ترکہ جو امارے پاس تھا وہ ہم نے اس کے محروانوں کو دے دیا انہوں نے اس ترکہ میں بیالہ کو تم پایا تو ہم ہے اس کے متعلق سوال کیا۔ ویم نے کمااس نے اس کے سوالور پکی شیس چھو ڈا تھا کورنہ اس کے سوالور کوئی چیز جمعی دی تھی۔ تمیم نے کھا جب میں رسول اللہ عظیم سے مدینہ تشریف لانے کے بعد مسلمان ہو کیا تو میں نے اس تعل میں گناہ جاتا میں ان کے کو کیا اور ان کو اصل واقعہ کی خبردی اور ان کو بانج سودر ہم داہی کردیے اور ان کو بتایا کہ میرے ماتھی کے پاس بھی اتے درہم میں۔ دہ اس (عدى بن براء) كورسول اللہ منتج كياس لائے أب تے مسى كے در الاء سے كولوطلب كيے الن كے

پاس کونو نمیں تھے۔ پھر آپ نے ان کو تھم دیا کہ وہ معری بن بداوے تشم طلب کریں جو ان کے دین میں سب سے بزی تشم ہو' اس نے تئم کھانی تب یہ آیت تازل ہوئی (المائدہ: ١٠٩٠١) پر حمد بن العاص اور ایک اور فض نے (ور او سمی کے موقف پر اور عدی کے ظاف اسم کمائی تو عدی بن بداء ہے پانچ سودر هم وصول کیے گئے۔ امام ترزی نے کمایہ مدعث غریب اور اس كى اساو مح نسيل ب- (منن ترفري حه وقم الحديث و ما مطبوعه داو الفكو ايروت)

سنرجل وميت كرا اور غيرمسامول كوكواه ينانے كے جواز پر امام احما ك دلاكل

ان آجوں میں سفراور حضرمیں وحیت کرنے پر تر نیب دی گئی ہے ، وحیت کے ثبوت اور اس کو باقذ کرنے کے لیے کواہ مقرر كرف كا تحم ديا كياب لوريه بتايا كياب كه اصل من مسلمان كوابول كو مقرر كما جاب اوريد كه ضرورت يا حاجت ك پیش نظر فیر مسلموں کو بھی مواہ بنایا جا سکتا ہے۔ اس آیت میں فرمایا ہے تم میں سے دو محض مواہ ہوں اس کامعنی ہے تمہارے دین اور تمهاری المت سے دو گواہ موں سے حضرت ابن مسعود منظرت ابن عباس معید بن مسید بن جبعد ، شرع ابن يرين اور شعبي كا قول ب- الم احر كا بحى يكى مخار ب- يجر فرمايا ب اور سفريس فيرون من س ي دو كواه منا لي جاكي معفرت ابن مسعود عفرت عباس اور ديكر فركور العدر فقماء ما يعين كے زويك اس سے مراد ب جو لوگ تهمارے دين اور تماري المت كے فير موں الين الل كئب على سے موں اور حن اور عرمه كا قول بيہ ك اس سے مراديہ ہے ك دو تمارے اقراء اور رشته داردل کے غیر ہول۔

جب يد مراول جائے كه فيروں سے مراد فيرمسلم اور افل كتاب بين اور يدك سفرين وميت ير افل كتاب كو كواو بناليا جائے' تو پھراس میں اختلاف ہے کہ یہ آیت محکہ اور غیر منسوخ ہے یا یہ کہ اب یہ تھم منسوخ ہوچکا ہے۔ معنزت ابن عباس ابن المسيب "ابن جبيد "ابن ميرين" قاده معيى "ثورى اور الم احمد كے زديك به آيت محكمه ب اور اب بني ال كتاب كوسغر مي دميت پر كواه بنانا جائز ب اور دو سرا تول يه ب كريد أيت اس آيت ، منوخ بولي:

ادر اپول (یعنی سلمانول) میں ہے دد نیک فخصوں کو گواہ

وَالنَّهِ وَوَا دُوَّى عَدْ إِي يَسْكُمُ (الطلاق: ٢)

زیر بن اسلم المام ملک اور الم شافعی کا سی تدہب ہے اور الم ابو منیفہ کا بھی اس طرف میلان ہے انہوں نے کہا کہ اہل كفرعادل (نيك) نيس إلى اور سانا قول زياده مح ب كو تكريه ماجت اور منهودت كامقام ب اور ايس مواقع ر مرف عورول کی گوای بھی میچے ہوتی ہے۔ جیسے حیض مناس اور پے کی پیدائش میں مور توں کی گوای میچے ہوتی ہے۔

(زادالمبير مج ۴ م ۲ ۲ ۲ ۲ ۲ ۲ ۲ ۲ ۲ مطبور کمتب اسلامی نبیردت ۲ ۲ ۲ ۱۳۰۵)

سغرمیں وصیت پر غیرمسانیوں کو گواہ بنانے کے عدم جواز پر جمہور فقهاء کے دلا کل جمور نقماہ کے نزدیک مسلمانوں کے مطلاف میں کفار کو گواہ بیانا جائز نہیں ہے 'اور اس آیت میں جو فیروں کو گواہ بتانے كا تكم ديا ب اس آيت من قيرون سه مراو فيرسلم بوتو پرس آيت واشه بدوا دوى عدل مسكم سه منوخ ب اوريا اس ایت ہے مفوع ہے:

اور اے (مسلمان) مردوں میں سے ود کو اور الو اگر وو مردنه ہوں تو ایک مرد اور دو حور تیں ان گو ایوں میں ہے جن -912/2018 وَاسْتَشْرِهِ دُوْاشَهِ بِنَدَيشٍ مِنْ رِّحَالِكُمْ فَإِنَّ لَهُمْ يَكُنُونَنَا رَجُهُكُنُونَ فَرَجُولُهُ وَ ٱمْرُاكَيْنِ مِشْنَ ترصون مِن الشَّهَدُّاءِ (البقرة: TAP)

ادر ظاہرے کہ ذی یا اہل کئب شرعا فیر پندیدہ ہیں "سویہ آست سورة مائدہ کی ڈیر تغییر آست نے لیے تاتخ ہے۔ اور ماضی میں مسلمانوں کی تعداد کم ہونے کی دجہ ہے اہل کئب کو سفر میں دمیت پر گولوہنانے کی اجازت دی گئی کیو نکہ اس وقت مسلمان سرف میند میں شخص اور آج کے دور میں تو ہر جگہ مسلمان موجود ہیں اس لیے کفار کی شعادت ماقط ہو جائے گی اس لیے اب مسلمانوں کا کافروں کو گواہ ہمانا جائز نہیں ہے۔

علامد بدر الدين محمود بن احمد يمنى متولى ١٥٥٥ مداس بحث من الكسية بين:

الل ذمد کی آپس میں کو اس کے جواز پر امام ابو منیقہ کے ولا کل

الم ابو صنیفہ نے کہاہے کہ کافروں کی آیک دو سرے کے خلاف کو اس جائز ہے 'اور مسلمانوں کے خلاف ان کی کو اس جائز نہیں ہے "کیونکہ شاوت کی تمام آیات اپنے سیات و سبات کے اختبار سے مسلمانوں کے متعلق ہیں 'اور کافروں کی کو اس ایک دو سرے کے متعلق تبول کی جائے گی۔ قرآن مجید میں ہے:

وَالَّدِيْنَ كَفَرُوا بَعْصَهُمْ أَوْلِيَّا أَمِنَعْهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الله الم

(الانتقبال: 44)

قرآن مجیر نے کافروں کی آیک دو سرے پر والایت ٹابت کی ہے اور والایت شاوت سے اعلی درجہ ہے اور حدیث بھی بھی اہل کاپ کی آیک در سرے کے خلاف شیاوت کا جو وت ہے۔ اہم ابو داؤد بھتائی متونی ہے تاہ دوایت کرتے ہیں:
حضرت جابرین عبداللہ رضی اللہ عنما بیان کرتے ہیں کہ یمود آیک مودور محدت کو لے کر آئے 'جنوں نے زناکیا تھا۔
آپ نے فرایا تم میرے پاس ایسے دو مردوں کو لے کر آؤ جو تمادے سب سے بڑے عالم بون وہ صور یا کے دو بڑوں کو لے کر آئے۔ آپ نے ان کو صمر دی کے سے بڑے عالم بون وہ صور یا کے دو بڑوں کو لے کر آئے۔ آپ نے ان کو صمر دی کے سے بتاؤ کہ قورات ہیں اس جرم کی کیا سراہے ؟ انہوں نے کہا قورات ہیں سے نہ کو دے کہ جب چاد آدی ہے گوائی دیں کہ انہوں نے مرد کے آلہ کو حورت کے اندام نمائی میں اس طرح دیکھا ہے جس طرح سلائی سرمہ دائی ہیں اس طرح دیکھا ہے جس طرح سلائی سرمہ دائی ہیں

موتی ہے تو ان دونوں کو رجم کرویا جائے گا آپ نے فرمایا پر تم کو انسی رجم کرنے سے کیا چیز مانع ہے؟ انہوں نے کما اماری سلطنت (انتدار) چلی می او پر ام لے قبل کرنے کو نامیند جانا مجرر سول الله مرتبع نے کوابوں کو بلایا سو جار کواہ آئے اور انہوں تے یہ شماوت دی کہ انہوں نے اس مرد کے آلہ کو اس مورت کے اندام نمانی میں اس طرح دیکھاہے جس طرح سلائی سرمہ دانی

(سنن ايودا ؤ د 'ج ۴ رقم الحديث: ۴۳۵۲ منن دار قلني 'ج ۴ 'رقم الحديث ۴۳۵۰)

اس مدعث میں یہ تعری ہے کہ اہل کتاب کی اہل کتب کے ظاف شادت جائز ہے' ایک اور مدعث سے مجی یہ بات مفهوأ ثكلتي سبب

المم على بن عمردار ملنى ٨٥ مدروايت كرت بين:

حعرت ابو جريره رمنى الله عند بيان كرتے ميں كه رسول الله عليديا نے فرمايا ايك لحت والے دو سرى لمن والول ك وارث نمیں ہوتے اور ایک ملت والول کی دو سری ملت والوں کے خلاف شادت جائز نمیں ہے۔ باسوا میری است کے ایو نکد ان کی شماوت دو مرول کے خلاف جائز ہے۔

(سنن دار تعنی سیم از قم الحدیث ۱۸ المعجم الاوسلاللير انی سیم الريث: • ۱۳۴۵ مجمع الزوا ند سیم ۱۳۰۱) اس مدیث کاملموم برے کر ایک ملت کے افراد کی اٹی ملت دانوں کے خلاف شاوت جائز ہے۔

علامه ابوالحس على بن الي بكر الرخية الى الحنفي متوفى مهديده لكيت بين:

اہل ذمہ کی ایک دو سرے کے خلاف شاوت قبول کی جائے گی' خواہ ان کی ملتیں مختلف ہوں۔ (مثلاً یہود کی گواہی نصار یُ کے خلاف متبول ہوگی الم مالک اور الم شافع نے کمان کی کوئٹی تیول نمیں کی جائے کی میونکہ مید فاسق ہیں۔اللہ تعالی نے فرمایا والحكافرون هم الفاسقور (قرآن مجيد ش به أيت تبي بي مادب دايه كاتباع به البتراس معن مي بيرايت بومن كفربعد دالك ماولتك هم الماسقون (الار ٥٥)

اس لیے ان کی خبرر تو تف کرناواجب ہے 'اس وجہ ہے مسلمانوں کے خلاف ان کی گوای قبول نمیں کی جاتی اور وہ بہ منزلہ مرتدیں۔ حاری دلیل مدے کہ ہی مرتبی ہے تصاری کی ایک دو مرے کے خلاف شادت کو جائز: قرار دیا ہے۔ نیزان کو اپنے اور اور این چھوٹے بچوں کے اوپر ولایت حاصل ہے۔ اندا ان کو اس کی جنس پر شاوت کا حق بھی ماصل ہوگا' اور فنق اعتقادی شلوت کو تیول کرنے سے مانع نہیں ہے 'کیے تک وہ اپندین میں جس چڑکو حرام اعتقاد کرتے ہیں اس سے اجتناب کرتے ہیں اور جموث بولناتهم ادیان میں حرام ہے۔ اس لیے وہ جمونی کوائی حمیں دیں سے اور ان کو مرتد پر قیاس کرنا سیج نہیں ہے اکیونکہ مرتد كو كمى ير بھى والايت حاصل تيس بوتى اور ذهيوں كى كوائى مسلمانوں كے خلاف اس كے مغبول نبيں ہے كر ذهبوں كو مسلمانوں يرولايت مامل نسي ب-الله قرما آب:

لَنْ يَتَحْعَلُ اللَّهُ لِلْكَعِيرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِيرِيْنَ اللہ کافروں کے لیے مسلمانوں کو مغلوب کرنے کا کوئی سَينيلًا (النساء) والتدوكر فتس بنائے كا۔

اور چو تکہ کا قرمسلمان ہے دشمنی رکھتا ہے اور دار اسلام میں اس سے مغلوب ہے 'اس کے وہ اس پر غلبہ پانے کے لیے جموث بولے گااور کفر کی ملتیں ہرچند کہ مختلف ہیں الیکن دار اسلام میں وہ ایک دو مرے سے مغلوب نہیں ہیں اس لیے ان میں بہم دشمنی نمیں ہوگی مجو ان کو جمعوتی کو ای پر اکسائے اور حربی متامن (جو کافریاسپورٹ لے کر ہمارے طک میں آئے) کی کو اس

جُيانُ اللَّهِ أَنْ

ذی کے خلاف قبول شیس کی جائے گی اور جو کافر الگ الگ ملکوں میں رہتے ہیں 'ان کی گوائی آیک دو سرے کے خلاف قبول نہیں کی جائے گی۔ (ہدایہ اخیرین میں ۱۲۲ مطبوعہ مکتبہ شرکت علیہ 'ملکن)

اور اس سے پہلے جو ہم نے مدہث ذکری ہے کہ ایک لمت والوں کی گوائی دو سری لمت والوں کے ظاف تول تہیں ہوگی اس سے مراد دو مخلف ملکوں میں رہنے والے کافر ہیں اور جو مخلف لمتوں والے ایک طلب کے کافر ہمارے ملک میں پاسپور ث لے کر آئیں ان کی گوائی ایک دو سرے کے فاواف قبول کی جائے گی کمی تکہ یمال وہ ایک دو سرے پر قالب نہیں ہیں اور ان میں باہم دھنی نہیں ہے ، جو ان کو ایک دو سرے کے فلاف جموثی گوائی پر ابھارے۔ البت استامن کی شمادت ذمی کے فلاف قبول نہیں کی شمادت دمی کے فلاف قبول نہیں کی جائے گی۔ متامن کی شمادت دمی کے فلاف قبول نہیں کی جائے گی۔

(بداے اخری می ۱۲۱۳)

امام ابو حذیفہ کے استدلال پر علامہ قرطبی کے اعتراض کاجواب

ا فتهاء ما لکد کاس متلد میں اختلاف ہے۔ ان کے نزدیک الل ذمہ کی شاوت مطلقاً متبول قسی ہے مسلمان سے خلاف 'نہ الل مما ہے خلاف سے اس لیے علامہ محرین احمہ الکی قرطبی متوفی ۱۷۸ھ فقداد احتاف کارد کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

انام ابوحقیقہ نے اس آیت والدا کد ۱۰۱۹ مل سے یہ استوالل کیا ہے کہ الل ذمہ کی آئیں جی شاوت جائز ہے "کو نکہ او اختوان من عبر کم کامنی ہے "یا ان کو گواہ بناؤ جو دین جی تمہارے فیر میں "اور جب الل ذمہ کو مسلمان گواہ بنا تھ جو رہی ہی تمہارے فیر میں "اور جب الل ذمہ کو مسلمانوں کا الل ذمہ کو گواہ دو آئیں جی ایک دو مرے کو بطریق اولی گواہ بنا تھ جی ۔ اس کے تمہارایہ استوالل جائز نہیں ہے ؟ اس کا جواب ہے ہے کہ یہ ایت عبارت النص ہے اس پر دامات کرتی ہے کہ الل ذمہ کو مسلمانوں کے خلاف گواہ بنا جائز ہے اور ہہ طریق حتیہ اس پر دامات کرتی ہے کہ الل ذمہ کو مسلمانوں کے خلاف گواہ بنا جائز ہے اور ہہ طریق حتیہ اس پر دامات کرتی ہے کہ الل ذمہ کو مسلمانوں کے خلاف گواہ بنا جائز ہے اور ہہ طریق حقیہ اس کی شاوت دامان کی شاوت سلمانوں کے خلاف ان کی شاوت مسلمانوں کے خلاف ان کی شاوت باطل ہے "تو آئیں جی ان کی شاوت کا جائز ہو جائل ذمہ کی آئیں جی شاوت کا جائز ہو جائل ذمہ کی مسلمانوں کے خلاف ان کی شاوت کا جائز ہو جائل دمہ کی آئیں جی شاوت کا جائز ہو جائل دمہ کی مسلمانوں کے خلاف شاوت باخل ہوگی جو امال تھی "قرجو اس کی فرع ہے گذائل ذمہ کی مسلمانوں کے خلاف شاوت جائز ہو اور جب الل ذمہ کی مسلمانوں کے خلاف شاوت باطل ہوگی جو امال تھی "قرجو اس کی فرع ہے بھی اہل ذمہ کی تہیں جی شاوت جائز ہو اور جب اہل ذمہ کی مسلمانوں کے خلاف شاوت باطل ہوگی جو امال تھی "قرجو اس کی فرع ہے بھی اہل ذمہ کی تہیں جی شاوت کا جو از دوب طریق اولی ہا خلی ہو جو سے گا۔

علامہ قرطبی کی اس عالمانہ بحث کی متانت ہے ہمیں انکار شیں ہے۔ لیکن اہم ابوطنیفہ نے اٹل ذمہ کی آپی جی شاوت کے جواز پر اس آیت سے استدلال نمیں کیا' بلکہ ان کا استدلال اس آیت سے ہواللہ بن کفروا بعضہ اولیاء بعض (الانفال: ۲۲) یہ آیت اور اس کے علاوہ دو حدیثیں جن سے اہم اعظم نے استدلال کیا ہے' ہم اس سے متعل پہلے منوان جی تنسیل سے بیان کریکے ہیں۔

ہم و کھتے ہیں کہ اہل ذمہ آبی ہی ترید و فروخت کرتے ہیں 'اجرت اور قرض کالین دین کرتے ہیں اور ان ہیں ہے کوئی دو سرے کے ساتھ زیادتی ہی کرتا ہے 'مثلاً قبل کرتا ہے یا زخمی کرتا ہے اور ان ہیں دیگر جرائم بھی ہوتے ہیں اور باہمی تازعات ہی ہوتے ہیں۔ ہارے ملک میں یہ اپنے مقدمات مسلمان حاکموں کے پاس نے جاتے ہیں'اگر ان کے معالمات' جرائم اور تنازعات میں ان کی اٹی شماوت قبول تہ ہو تو ان کے حقوق معطل ہو جا کی گے۔ ہارے ملک میں ان کو اقصاف شمیں مل سکے گا

اور علم اور فساد کاظہر ہوگا اور بداسلام کے خشاء کے خلاف ہے اس کے ضرورت کابہ تقاضاہے کہ دار الاسلام بیں اہل ذمہ بی ا یک دو سرے کے متعلق شادت کو تبول کیا جائے اور اس مسئلہ میں اہم اعظم ابو صنیفہ قدس سرہ کا سوقف ی قرآن مجید 'اعادیث اور متل عليم سے مطابق ہے۔

ناکزر صورت میں غیرمسلموں کو کواہ بنانے کا جواز

بعض او قات سفریں میہ ہو سکتاہے کہ کمی مسلمان کو دمیت کے وقت کوئی مسلمان گواہ میسرند ہو ' تو اب اگر مسلمانوں کے معللات میں اہل کتاب کی شادت بالکل میسرنہ ہوتو بعض مواقع پر مسلمانوں کے حقوق معطل ہوجائیں مح۔اس لیے جہاں ایس صورت ہو دہال کمی فیرسلم سے اس کے زہب کے مطابق متم لے کرایام احدین طبل کے زہب پر عمل کرتے ہوئے اس کو مولو بنالیا جائے او اس کی مخوائش ہے اکی تکہ اس آن کا منسوخ ہونامنی طیہ نسی ہے۔ حضرت ابن عباس ابن المسیب ابن جبید این سرین کلو معین توری اور ایام احر کے نزدیک یہ آیت محکہ ہے اور منسوخ نیس ہے۔ اندااگر کمی ایک صورت میں کمی غیرمسلم کو اس کے ذہب کے معابق تھم نے کر کواہ بنالیا جائے تو یہ ظاہر قرآن کے بھی مطابق ہے اور اس میں آسانی ہے اور مسلمانوں کے حقوق کا یمی تحفظ ہے۔

شك اورشبه كى بناء ير لمزم يالمهم كو قيد ميں ركھنے كاجواز

اس آعت من فرمايا ب

اکر حمیس ان پر شک مو تو تم ان دو کوابول کو نماز کے بعد ردک لو۔

اس آعت میں مدولیل ہے کہ جس مخص پر کسی شم کاشبہ ہواس کو روکتالور قید کرنا جائز ہے۔

الم ابوداؤد سلمان بن اشعث متوفى ١٥٥ مد روايت كرست بين:

بنرين مكيم ابن والدے اور وہ اب واواے روايت كرتے ميں كه ني علي نے ايك مخص كو تهمت كى بنار تيد كرايا۔ الم تنن كى روايت يسب بعد يساس كور إكروا

(سنن ابوداؤ على مرقم الديث: ١٣٠٠ من ترزي على ما وقم الديث: ١٣٢٢ من نسائي عبر أرقم الديث: ١٨٩١)

علامد احدين الدخطائي متونى ١٨٨ه الع لكني بين:

قید کرنے کی دو قشمیں ہیں۔ بطور سزا کے قید کرنالور بطور تفقیش کے قید کرنااور بطور سزا کے اس وقت قید کیا جائے گاجب اس پر کوئی جن وابسب مو گایا جرم عابت مو گا اور جس عض کو تصبت کی عامر تید کیا جائے گاؤ اس کی تفتیش کی جائے گی اور مدے عرب انی را ایک مخص کودن کے تموڑے دقت کے لیے قد کیا گراس کو رہا کرا۔

(معالم السنن مع مخضر سنن ابوداؤد "ج٥ مس ٢٣٣ مطبوعه دار السرف "بيروت)

نيزالهم ابوداؤد مداعت كرتين

عبداللہ حزاری بیان کرتے ہیں کہ قبیلہ کلا مین کے لوگوں کی چوری ہوگئ انہوں نے ماکہ کے پکو لوگوں پر چوری کی تهت لگائی و اوگ نبی منتی کے محالی صرت نعمان بن بشیرومنی اللہ عند کے پاس محے ، معزت نعمان نے ماکہ کے لوگوں کو چند روز تید رکما پران کور ہاکر دیا۔ کلاعین حضرت نعمان کے پاس سے اور کما ایپ نے ان او کول کو بغیر بارے پیٹے اور بغیر احتمان کے دہاکردیا۔ حضرت نعمان نے فرملیا آگر تم جاہوتو میں ان کو مار نگائی 'گر آگر تنمار اسلان نکل آیا تو نیما ورند میں تنماری يشت يرائع كو زے لكوں كا بيت ان كولك مول كـانوں نے كمايہ آپ كافيملے؟ معزت معمان نے كمايہ الله كا تكم ب

اور وسول الله ما يجيد كالحكم ب-

الم ابوداؤد نے کماا عراف ہے پہلے کمی کو بار ناجاز نسی ہے۔

(منن ابوداؤد 'ج۳'رقم الحدیث ۱۳۵۰ منن السائی 'ج۸'رقم الحدیث ۱۳۵۱ منن السائی 'ج۸'رقم الحدیث ۱۸۵۳)

د الفرے ملک میں محن شبہ کی بنا پر کمی مختم کو حوالات میں اتن مار نگائی جاتی ہے کہ وہ مارے بجنے کے لیے اپنے تاکروہ
جرائم کا اعتراف کرلیتا ہے 'یہ اسلام کے خلاف ہے۔علامہ سندی نے نکھا ہے کہ تھت اور شبہ کی بناوپر کمی کو قید کرنا جائز ہے۔
مجرمول کو قید میں و کھنے کا جو از

مجرمون كوقيدي ركنے كى اصل يه مدعث ب:

الم محرين اساعيل بخاري متوني ٢٥١ه روايت كرح ين:

معفرت ابو ہریرہ رمنی اللہ عند بیان کرتے ہیں کہ نبی مجھیج نے محواث سواروں کی ایک جماعت نبعد کی طرف بمبھی وہ ایک مخض کو گر فار کرے لائے جس کا پام تمامہ بن آجل تھا محلبے اس کو مجد کے ایک سنون کے ماتھ بائدہ دیا نبی ہوجید اس کے پاس تشریف لائے اور ہو جمااے شامدا تهاراکیا خیال ہے؟ اس نے کمااے محما میرانیک خیال ہے۔ آگر آپ جمعے قتل كريں كے قو آپ ایک فونی كو فل كريں مے اور اگر آپ جھ پر احمان كريں مے توایک شكر كزار پر احمان كريں كے اور اگر آپ مال چاہتے ہیں تو جتنا چاہیں جھے سے سوال کریں اس کو ای طرح رکھا گید آپ نے دو سرے دن پھراس سے قربایا اے ثناسدا تهاداکیا خیال ہے؟ اس نے کماوی ویس نے آپ ہے کما تھا' اگر آپ جمہ پر احدان کریں کے توایک شرکز اور راحدان کریں ك اس كو پراى طرح ركماكيا تيرے دن آپ نے پراس سے سوال كيا اے ثمار الكيا خيال ہے؟ اس لے كماوى جو ين آپ سے كمدچكا مول- آپ نے فرمايا ثمامد كو كول دو " يكر ثمند معجد كے قريب ايك كمجود كے در شت كے باس كيا اس نے حسل كيا كم مجر من داخل بوااور كن لكاشهدان لااله الاالله واشهدان محمدارسول الله العالمة التي المناقية بخدا (پہلے) تمام روئے زمن پر جھے آپ کاچرو سب سے زیادہ برا لکتا تھا اور اب آپ کاچرو جھے سب سے زیادہ پند ہے اور يخدا ايس پہلے سب سے زيادہ آپ كے دين سے بخض ركما تعااور اب آپ كادين جھے سب سے زيادہ محبوب ب اور پہلے ميں آپ کے شرے سب سے زیادہ بغض رکھتا تھا اور اب آپ کا شریحے تمام شہوں میں سب سے زیادہ محبوب ہے۔ آپ کے مواروں نے جھے کر فار کرلیا تھا اور اب میں عمرو کرنا چاہتا ہوں 'آپ کی کیارائے ہے؟ رسول اللہ بڑجور نے اس کو بٹارت وی اور اے عمرہ کرنے کا تھم دیا' جب وہ مکہ میں پہنچاتو اس ہے کسی فخص نے کماکیا تم نے دین بدل لیا ہے؟ انہوں نے کمانسی بخداً عن سيدنا محدد سول الله علي محمات مسلمان موكيا مون بخدا المهاري بالب عاسب الدوت مك كدم كالي واند مجی نمیں پہنچ کا بیب تک کہ نی جہید اس کی اجازت نمیں دیں گے۔

(منج البخاري كن من رقم الحديث: ۱۷۳ سنن ابوداؤد كن ۴ رقم الحديث: ۱۷۷۱ منج مملم بهناد ۵۱ (۱۳۳۷) ۴۵۰ سنن التسائي ا جها دقم الحديث: ۱۸۹ سند احمر ۴۲۴ م ۴۵۷ مع ۴۴ م ۸۴ طبع قد يم)

اس صدیث یس بیر تصری م کے نی معجود نے تمن دان تمام بن آنال کو قیدر کھااور بیر صدیث بحرموں کو قیدیس ر کھنے کی

تاد ہندہ مقروض کو قید کرنے کے متعلق احادیث الم ابوداؤد سلیمان بن اشعث متوفی ۲۷۵ھ روایت کرتے ہیں۔ ہراس بن حبیب نے اپنے والدے اور انہوں نے اپنے واواے رواعت کیا ہے کہ میں نہی جیرہ کیاس اپنے مقروض کو کے آیا 'آپ نے فرمایا اس کو قید کر لو' پھر جھے نے فرمایا: اے بنو تھیم کے پھائی اتم اپنے قیدی کے ماتھ کیا کرنا جا ہے ہو؟ (سنن ابو واؤ د اج ۲ د قم الحدیث مطبوعہ وا را اکتب اسلمیہ ایروٹ)

اس مدیث میں تادیندہ مقروض کو قید میں رکھنے کی دلیل ہے۔ عمودین الثرید اسپنے والد سے روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ سین نے فرمایا متمول آدمی کی (قرض واپس کرنے میں) سستی اور آخیراس کی عزت اور سزا کو حلال کردتی ہے۔

ام ابن المبارك نے كماك عزت كو طال كرنے كامعتى يہ ہے كہ اس ہے بختى اور درشت كلام كے ساتھ تقاضا كياجائے اور مزاطال كرنے كامھتى يہ ہے كہ اس كو تيد كرلياجائے (علامہ نووى اور علامہ سندى نے بھى يمى تشريح كى ہے)

(مثن الإداؤد على المرائد على المستند ٢٣٧٨) من التسائل جها رقم الحديث: ١٥٥٩-١٥٥٥ من ابن اجه على المه الديث. ١٣٣٤ مند الرسمية وقم الحديث ١٤٩٨) طبع جديد الما الفكو "مبتد الحر" جها ص ٢٨٦-٢٢٨ على قد يم الهم بخارى في اس حديث كو صليفة ذكر كيا ب-كلب الاستقراض بلب ١١٠٠

نیزاالم بخاری کے علیقا ذکرکیاہے کہ قاضی شریح مقرض کوم جد کے سنون سے باند منے کا تھم دیتے تھے۔ (کاب اصلوۃ 'باب ۲۷)

تاد ھندہ مقرد من کو قید کرنے کے متعلق نراب ائمہ علامہ مین محد خطانی متونی ۴۸۸مہ اس مدیث کی شرح میں لکھتے ہیں:

اس مدیث بی ہے ولیل ہے کہ علک دست اور فریب مقریض کو عدم اوائیگی پر قید نمیں کیا جائے گا کیو کلہ رسول اللہ علیم اس کی سزا کو جائز کما ہے جو اوائیگی پر قادر ہو اور اس مسئلہ جس علیاء کا اختلاف ہے۔ قاضی شریح کا نظریہ یہ قاکہ متمول اور نگ دست ووٹوں کو قید کر دیا جائے اسحاب وائے کا بھی نظریہ ہے۔ (نقهاء احتاف کا یہ نظریہ نمیں ہے سعیدی ففرلہ) امام الک نے کما تک دست کو قید نمیں کیا جائے گا اس کو اوائیگل کے لیے صلت دی جائے گی اہام شافعی کا ذہب یہ ہے کہ جو فخص جھا ہر حمول ہو اور وہ اپنے حق کو اوائد کرتا ہو اوائ کو قید کیا جائے گا اور جو مخص بھا ہر حمول ہو اور وہ اپنے حق کو اوائد کرتا ہو اوائ کو قید کیا جائے گا اور جو مخص بھا ہر حمول ہو اور وہ اپنے حق کو اوائد کرتا ہو اوائ کو قید کیا جائے گا اور جو مخص بھا ہر حمول ہو اور وہ اپنے حق کو اوائد کرتا ہو اوائد کرتا ہو اوائد کرتا ہو اور دو کا اصافہ کیا ہے۔ (سمالم السن سے مختمر سنی ابوداؤ و می میں جر محسقل فی شافعی متوفی جو محمد کلمتے ہیں:

اس مدعث سے بیر استدلال کیا گیا ہے کہ جب مقروض قرض ادا کرلے پر تادر ہو (اور قرض ادا نہ کرے) تو اس پر سختی کرلے کے لیے اس کو قید کرناجائز ہے۔ (فتح الباری'ج۵'ص ۱۳ مطبوعہ دار نشرالکتب الاسلامیہ انامور'اہ مہدہ) علامہ بدر الدین محمود بن احمد مینی دخنی منونی ۵۵۵ھ کھتے ہیں:

اس مدیث سے بہ استدالال کیا گیا ہے کہ جب مقروض قرض اوا کرنے پر قاور ہو (اور قرض اوا نہ کرے) تو اس پر تخق کرنے کے لیے اس کو قید کرنا جائز ہے گیو تکہ اس وقت وہ خاتم ہے اور نظم حزام ہے 'خواہ وہ قلیل ہو اور اگر مقروض کا نگ دست ہونا ثابت ہو تو اس کو مسلت دیناواجب ہے اور اس کو قید کرنا حرام ہے 'اور جس مخفس کا نگ وست ہونا ثابت ہو گیا ہو اور اس کو قید سے فکال ویا گیا ہو تو اس میں اختان ہے 'کہ آیا قرض خواہ مقروض کے ساتھ لازم رہے یا نہیں۔ امام مالک اور امام شافعی یہ کتے ہیں کہ جب تک اس کے ہیں کمی اور مال کا شوت نہ ہو' وہ اس کے ساتھ لازم نہ رہی اور امام ابو صنیفہ یہ فرماتے

ہیں کہ ماکم قرض خواہوں کو اس کے ساتھ اوم سے منع نہ کرے۔

(عرة القاري على مع ١٠٠٥ مطبوعه ادارة اللباعد المنيرية ١٣٣٨)

جس طرح الی صفق میں اس مخض کو قید کرنا جائز ہے جس پر کمی کا الی حق ہو 'ای طرح برنی حقق میں استفادہ کو حق داناتے کے لیے اس مخض کو قید کرنا جائز ہے جس پر قصاص فازم ہو 'ای طرح جس مخص نے مددد میں ہے کمی مد کاار تکاپ کیا ہو 'اس پر مد بافذ کرنے کے لیے اس کو قید کرنا جائز ہے۔

كواه بنانے كے ليے بعد از نماز دفت كى خصوصيت

اس آیت یں فرالم ہے:

اكر خميس ان يرشك موقوتم ان دوكوامول كو نمازك بعد مدك لوعده الله كي حم كماكر كمين

اکڑ طلاء نے ہماہ کہ اس آیت جی "بود از نماز" ہے مراو بود از نماز عصر ہے کہ کہ تمام اویان جی اس وقت کو عظیم کروانا جاتا ہے اور وہ اس وقت جی جموٹ ہولئے ہے اور جمول تنم کھلنے ہے اجتناب کرتے ہیں۔ اس وقت جی ون کے فرشتے بندہ کے اعمال لکو کر جارہ ہوتے ہیں اور رات کے فرشتے اس کے اعمال لکھنے کے لیے آرہ ہوتے ہیں اور روت کے فرشتے بندہ کے اعمال لکو کر جارہ ہوتے ہیں اور رات کے فرشتے اس کو دن کے فرشتے ہی لکو لینے ہیں ہور رات کے فرشتے ہی لکو لینے ہیں ہور رات کے فرشتے ہی لکو لینے ہیں ہور رات کے فرشتے ہی لکو لینے ہیں اور اس وقت ہو عمل کیا جائے اس کو دن کے فرشتے نے جاتے ہیں اس لیے اس وقت بھی لکو گئے ہیں۔ اس لیے اس وقت بھی لکو کر مشتی کی جائے ہیں۔ اس لیے اس وقت ہی ناور میت ہے اس وقت میں دوارہ کی کوشش کی جاتی ہے ہو وہ برے اعمال ہے جی الاسکان گریز کیا جا آگے ، فصو میت ہے اس وقت میں جموثی تم کھنا بست ہوا گناہ ہے۔

المام محمين اسليل عفاري متونى ١٥١ مدروايت كرت بين

اس مدے میں بدنتھری ہے کہ جو مخص عصرے بعد جمونی متم کھلے گا اللہ عزد جل اس سے کلام نیس کرے گا نہ اس کی طرف نظرر جمت فرملے گا نہ اس کو پاک کرے گااور اس کو در دناک عذاب ہوگا۔

حافظ احمد بن على بن جرعسقال في متونى عهده لكييت إلى:

معرک وقت کو زیادہ گناہ کے ساتھ خاص کیا ہے۔ ملاکلہ جموٹی شم ہروقت کھانا ترام ہے 'کونکہ یہ مظیم انشان وقت ہے 'اس وقت میں طائکہ جمع ہوتے ہیں اور ہے اعمال کے ختم ہونے کا وقت ہے اور امور کا راز خاتمہ پر ہے۔ اس لیے اس وقت میں گناہ کے ارتکاب پر سخت سزار کی ہے 'آگہ لوگ اس وقت میں گناہوں پر جراثت نہ کریں اور حقوجی معمر کے بور طاف لیے تھے اور اس سلسلہ میں مدیرے بھی ہے۔

(هخ الباري على ١٠٠٣ مليور وارفشرالكتب الاسلامية "الاور" ١٠٠١ه)

فتم دلانے اور گواہ بنانے میں مقام کی خصوصیت میں زاہب

جس طرح قدم کو بڑتہ کرنے کے لیے زبان کے اعتبارے عصر کے بعد کے وقت کی خصوصیت ہے ای طرح مکان اور مقام کے اعتبارے کو گانے ایس جا انسان ہے ۔ دئی مقام کے اعتبارے کی جی ایمیت ہے یا تھیں؟ اس جس ائمہ کا اختلاف ہے۔ ایام بخاری نے یہ عنوان قائم کیا ہے کہ دئی علیہ جمال جا ہے ہے ہے اور اس کو ایک جگہ سے وو سری جگہ خفل نہیں کیا جائے گا اور اس کے تحت یہ اثر ذکر کیا ہے کہ مروان نے صفرت زید بن ثابت کے خلاف فیصلہ کیا کہ وہ منبر پر قتم کھا کی محدد زید نے کما جس افی جگہ حم کھاؤں گا' گھرزید فتم کھائے گا۔ اور انہوں نے منبر پر قتم کھائے سے انکار کیا' مروان کو اس سے تجب ہوا' معرت زید نے کماکہ نی جائیں نے فرایا یا تم دو گواو پیش کرویا وہ قتم افرائے گالور آپ نے کسی جگہ کی تخصیص نہیں فریائی۔

علامه بدرالدين محمود بن احمر يمني حنى متونى ١٥٥٥ كلية بين:

الم ابو حنیفہ فے صفرت زید بن ثابت کے اثر ہے استدالال کیا ہے کو تکہ انہوں نے منبر پر ضم نہیں کھائی اور جو اس کو صروری قرار دیتے ہیں ' وہ عموان کے قول ہے بلاولیل استدالل کرتے ہیں۔ صاحب التوضیح نے امام شافعی کی طرف ہے استدال کیا ہے کہ اگر حضرت زید بن ثابت کو مید بقین ہو تا کہ حنبر پر ضم کھاتا سنت نہیں ہے تو وہ عموان پر دو کرتے اور کہتے کہ نہیں ' خداکی ضم ایس منبر پر ضم نہیں کھاؤں گا' میں صرف تہماری مجلس میں ضم کھاؤں گا۔ جس کمتا ہوں کہ یہ مجیب استدال ہے 'اگر حضرت زید کو عظم ہو تا کہ سنبر پر ضم کھاتا سنت ہے ' تو وہ عموان کی مجلس میں ضم نہ کھاتے اور منبر پر بی ضم کھاتے 'کین انہوں نے عمروان کے کلام کی طرف تو جہ نہیں کی اور اس مجلس میں ضم نہ کھاتے اور منبر پر بی ضم کھاتے 'کین انہوں نے عمروان کے کلام کی طرف تو جہ نہیں کی اور اس مجلس میں ضم کھاتے اور منبر پر بی ضم کھاتے 'کین انہوں نے عمروان کی طرف تو جہ نہیں کی اور اس مجلس میں ضم کھاتے اور منبر پر بی قدم کھاتے کا میں ہو موان کی محلوان کا دو نہیں تو اور کیا ہے !

(عدة القاري على ١٣٥٠-٢٥٢ مغبوصة وارة الغباعة المتيرية معر ٢٥٢-١١٥)

عافظ شهاب الدين احمد بن على بن جرعسقاؤني متوفى ١٨٥٧ لكيت بن:

حضرت ذید بن ثابت رضی اللہ عند کی آئید ہیں ہے اڑے۔ اہم آبو عبیدہ نے کتاب القتناء ہیں سند صحیح کے مائلہ بافع ہے
روایت کیا ہے کہ حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنما آیک عمض کے دھی تھے 'ان کے پاس آیک محض آیک و ستاویز لے کر آیا '
جس میں کوابوں کے ہام مٹ چکے تھے۔ حضرت ابن عمر نے نافع ہے کہ آباس کو منبر پر لے جاکر اس ہے حلف نو۔ اس شخص نے
کما جب یہ منبر پر جمعہ ہے حلف لے گاتو آپ تو نہیں من دہے ہوں گیا حضرت ابن عمر نے فرمایا تم نے بچ کما اور اس محض

ئبيان القُر أنْ

ے ای مجلس میں طف لیا۔

مردان کی آئید میں ہی اڑے۔ امام کراہیں۔ آواب القعناء میں سند قوی کے ماقد سعید بن مسیب سے روایت کیا ہدایک فخص نے کی آدی پر یہ دعویٰ کیا کہ اس نے اس فخص کا اونٹ فسب کر لیا ہے اس نے حضرت عثان برہیز کے پاس مقدمہ پیش کیا حضرت عثان نے اس کو عظم دیا کہ وہ منبر پر حتم کھائے اس نے حتم کھائے ہے انکار کیااور کہا: منبر کے علاوہ اور آپ جمال جاہیں میں حم کھاؤں گا مصرت عثان نے قربایا نہیں تم کو منبر پر حتم کھائی ہوگی ورنہ اونٹ آوان میں دیتا پڑے گا اس فخص نے اونٹ آوان میں دیتا پڑے گا اس فخص نے اونٹ آوان میں دیتا پڑے گا اس فخص نے اونٹ آوان میں دیتا پڑے گا۔

جس طرح زبان کے اعتبارے متم کی تعلیظ میں معرکے بعد کے وقت کی تخصیص ہے۔ ای طرح مکان کے اعتبارے متم کی تعلیظ میں منبرر سول مڑھ ہے کی تخصیص ہے اور اس سلسلہ میں دو مرفوع مدیشیں ہیں:

ا- الم مالك المام الدواؤو المم نسائل الم الن الجد الم ما من فزيد في كم ماتي اور المم ابن حبان اور المم عاكم وفيرجم في معترت جار برجيد. من دوايت كياب كدرسول الله عليه المرابع في الماء المحت على من مرك اس منبر ير جمو في تنم كهائ كانواه وه ايك منزم واكب مرح كمائ كانواه وه ايك مبزم واكب رضم كمائ كانواه وه ايك مبزم واكب يرضم كمائ الدوزخ من بناساك.

۱۰ الم نسائی نے نقد راویوں سے روایت کیا ہے معزت ابو المدین هدید بروین بیان کرتے ہیں کد رسول اللہ موجیج نے قربایا جس مخص نے میرے اس متبر پر جمعوثی قتم کھائی 'جس سے وہ کسی مسلمان مختص کا بال بڑپ کرنا چاہتا ہو' اس پر اللہ کی' فرشتوں کی اور تمام اوگوں کی لعنت ہو' اللہ اس کاکوئی فرض تیول کرے گا' نہ نقل۔

المخ الباري عنه م م م م م م م م م م م م الراكت الاملاميه "لا مور ١٠ م ١٥٠٥)

اس میں کوئی شک نمیں کہ مغیر دسول پر جموئی شم کھانا بہت ہوا گاناہ ہے اور جس شم میں حفیظ مقصور ہو' تو وہ مغیر رسول پر شم رخی جائے ہیں۔ اس بی کہ کیا ہے واجب ہے؟ اور کیا تمام دنیا کے مسلمانوں کے لیے اس پر عمل کرنا ممکن ہے؟ عصر کے بعد کا وقت تو دنیا میں ہر جگہ حاصل ہو سکتا ہے' اس لیے سخت اور قوی شم دینے کے لیے عصر کے وقت کی خصوصیت درست ہو سکتان دکن اور مقام پر ضم دینا یا مغیر رسول پر ضم دینا ہے۔ ممانا صرف حرمین طبیعی میں ممکن ہے اور اب اسلام تمام دنیا میں مجل چنا ہے۔ خصوصا پاس ور سے اور اب اسلام تمام دنیا میں مجل چنا ہے۔ خصوصا پاس ور دینا ہو مذینہ اور اہم احرکا ہے' اور وی قابل عمل ہے۔ اس دوری قابل عمل ہے دور اس میں دوری ہے۔ اس دوری تا میں دوری تا دوری تا میں دوری ہے۔ اس دوری تا میں دوری ہے دوری ہے۔ اس دوری ہے د

صرف الله كى دات كى تتم كهائى جائے يا اس كى صفات كا بھى ذكر كيا جائے ملامہ بدر الدين محود بن احمد مينى حتى متونى ٥٥٥ مد كليتے بين:

بھی دیا گیا تو وہ عاقد نہیں ہوگا۔ نتم کو زیادہ بات اور موکد کرنے کے لئے اللہ کی صفات کا بھی ڈکر کیا جائے۔ ایک قول یہ ہے کہ جو فض عرف میں نیک ہو ماس سے پختہ فتم کا مطالبہ نہ کیا جائے اور دو سرون سے مطالبہ کیا جائے اور ایک قول بیہ ہے کہ زیادہ مال كے مطلم ميں پانت هم كامطالبد كيا جائے اور كم مل كے معالم ميں نہ كيا جائے اور زبان اور مكان كے انتہار سے هم كو پانت ند كيا جائے (یعن معرے بعد تم کامطالبہ کرے ایامجے عبر پر تم کھانے کامطالبہ کرے۔ یو سکتاہے کہ اس کی وجہ یہ ہوکہ جب اس دفت میں اور منبر پر متم کھانے کارواج عام ہو جائے گاتو لوگوں کے زریک ان کی وقعت کم ہو جائے گی۔ ہاں اسمی بہت اہم اور خاص معللہ میں زمان و مکان کے ساتھ علید کرنی جاہیے اور اللہ کی ذات اور صفات کی متم دی جاہیے " کرو کلہ امام اوراؤو ئے معرت این مہاں ے روایت کیا ہے کہ نی جین نے ایک منس کو حم دی اور فرمایا یہ حم کھاؤ" باللہ الذی لاالہ الا هو" ميركياس مركى كى كوئى چزنس ب- (من ايوداؤد عن رقم المدعد وها) اس طرح قرآن ومعداور آثار محلب سب ي عمل موكا كيونك قرآن جيدي (مصرك) نماز كربد فتم ولاف كالحم بولور مدعث من الله كي ذات اور صفات كم ساتد فتم دینے کا تھم ہے "اور آثار محلبہ میں مجد کے مزیر پر جم دینے کاذکر ہے۔ اس لیے تھم کی مخلیق کا کید اور اس کو پانتہ کرنے کے لیے ان امور کے ساتھ متم دی جائے انکین جو تک قرآن اور صدعت میں اس منابع کو واجب اور ضروری نمیں قرار دیا اس لیے ان امور کے ماتھ حلیے کو عام معمول نہ متایا جائے " تا کہ لوگوں کی تکابوں میں ان کی وقعت اور ایمیت کم نہ ہو 'اور کسی بہت اہم اور فیرمعمولی معالم بی جمال بحت باکید اور علیت مقصود او و دبال عمرے بعد مسجدے منبر پر اللہ ی ذات اور صفات کی تم دی جائے۔ (سعیدی مغفرلہ) توضیح میں یہ ذکور ہے کہ کیا تھم دیتے وقت معضہ (قرآن مجید) کو بھی عاضر کیا جائے؟ اس میں اختلاف ہے۔الم الک نے اس کا افکار کیااور بعض الل علاء نے کما میں دیناریا اس سے زیادہ کی مالیت میں معحف کو حاضر کرنالازم ہے' اور این المنذر نے الم شافع سے نقل کیا ہے کہ انہوں نے کمامی نے سارف کو دیکھا ،وہ معجف کے سامنے طف افواتے تھے۔ (عرة العاري على ١٥٠ مما معلويد ادارة اللباية المتربير ١٨٣ ١١١١٥)

مدی کی متم پر فیصلہ کرنے کی توجیہ

اس آیت میں فربا ہے بھر آگر معلّق ہو جائے کہ وہ ود ٹول گواہ کسی گناہ کے مرتکب ہوئے ہیں کو جن لوگوں کا حق ان گواہوں نے صافع کیا ہے ' ان کی طرف سے دہ گواہ ان کی جگہ کھڑے کیے جا کمی اور وہ گواہ انڈ کی حم کھا کر کمیں کہ ہماری شماوت ان کی شماوت نے بیرو کی جا کہ ہم کھا گیا کہ ہم کو اس میت نے صرف انہا ہی میں انہا ہم کہ انہا ہم کی انہا ہم کہ انہا ہم کا اور ور چاہ نے ہیرو کو فی کیا کہ انہوں نے پورا مال نہیں پہنچایا 'اور انہوں نے جموثی حم کما کی اور انہوں نے ان ومیوں کے مقابلہ میں در چاہ کے دو آدی چیش ہوئے 'کور انہوں نے ان ومیوں کے مقابلہ حمل دو آدی چیش ہوئے 'کور انہوں نے ان ومیوں کے مقابلہ حمل دو آدی چیش ہوئے 'کور انہوں نے ان ومیوں کے مقابلہ حمل دو آدی چیش ہوئے 'کور انہوں نے ان ومیوں کے مقابلہ حمل دو آدی چیش ہوئے 'کور انہوں نے ان ومیوں کے مقابلہ حمل دو آدی چیش ہوئے 'کور انہوں نے ان ومیوں کے مقابلہ حمل دو آدی چیش ہوئے 'کور انہوں نے ان ومیوں کے مقابلہ حمل دو آدی چیش ہوئے 'کور انہوں کے ان ومیوں کے مقابلہ حمل کھا کی اور کما انہاری حمل ان کی حمل کے مقابلہ حمل دو آدی چیش ہوئے 'کور انہوں کے ان ومیوں کے مقابلہ حمل کی کھیل اور کما انہاری حمل ان کی حمل کے مقابلہ حمل دو آدی چیش ہوئے 'کور انہوں کے ان ومیوں کے مقابلہ حمل کی کور انہوں کے مقابلہ حمل کو کور کی کور کی کور کی کے مقابلہ حمل کے مقابلہ کی کور کی کور کی کی کور کے مقابلہ حمل کے مقابلہ حمل کے مقابلہ کی کور کی

اس آیت پر مید افتراض ہو آئے کہ ور او بری سے اور مرقی کے ذمہ گواہ ہوتے ہیں اور حم مرقی علیہ پر ہوتی ہے اور بسلام دی کی حم پر فیصلہ کردیا گیا ہوئے کہ جب ور فاء کے گواہوں نے حم کھائی کہ بیدوسی جموئے ہیں اس ملان میں بہالہ بھی تھا ۔ قا او ان کی حم پر فیصلہ کردیا گیا ہواں ہے کہ جب وہ بہالہ کہ میں فل گیا اور وصوں سے اس کے متعلق پر جما گیا اور ان کی حم پر فیصلہ کردیا گیا ہوئے اور میت کے ور فاء اس انہوں نے کہا کہ ہم نے میت سے یہ بہالہ خرید لیا تھا تو اب معالمہ پر تھی ہوگیا اب وہ مرقی ہوگئے اور میت کے ور فاء اس خریدادی کے منکر تھے اور میت کے ور فاء بر حم فازم تریدادی کے منکر تھے اور میت کے ور فاء پر حم فازم آئی اونہوں نے کہا کہ اللہ خرید نے کے گواہ نہ جموثے ہیں اور ان کی حم پر فیصلہ کردیا گیا۔

ود مراجواب بد ب كد أكر بالفرض ور او كورى قراد ديا جاست تب بحي اصول بدب كد أكر ممي خاري قريد سد وي عليدكى خانت اس كاجموث اور كناد البت موجائة قاس كى هم فيرسعتره وجاتى بيداور كاردى سه هم الراس كي هم ير نيمل كرديا جانا ب اوراس آعت سے كى اصول ايت عو الب اور يو كامده ب كد أكر مرى كياس كوار ند بون و دي عليدكى المر بعد كاما الب وداس وتت وب رئ عليد كالم مرجوث وسفي كالى فارى دليل اور قريد ند وواس موال كالبرا واب یہ ب کے یہ آیت اس آیت سے منوع ہے جس می کول کامسلمان ہونا ضروری قربایے اوراس آیت می فیرمسلوں او كواد بلا كاذكر اس ير مفعل بحث بم اس تيت كي تغير ك شهر على مريح بن-ولف من مي وكول سنت كل) ادری نے دی کم برام الل سے بھایا وجب تم ال کے ہای مدیق مجامت سے کرسٹے کو ان یہ سے کا ذول عيان القر ان

كُفَرُدُ إِمِنْهُ وَإِنْ هَٰذَا إِلَّا سِعُرُ عَبِينَ ﴿ وَإِذَا وَحَيْثَ إِلَى

كا ير كل جرئ مادوك موا اور كي جي ہے 0 الدجب ين تے جاريول ير البام

الْحُواي بين أَنْ أَمِنُوا بِي وَبِرُسُولِي "قَالُوا أَمَنّا والشَّهَدُ بِأَنَّنَا

ي كر مجد ير اور ميرسے ديول ير ايال لاؤ تو اضول فے كما يم ايال لاسے اور (ف) الله: إل

مُسُلِمُون ١١

كراه برجا كريث بم ملان ين ٥

الله تعالى كالرشاوي: جس دن الله تمام رسولوں كو جمع فرائے كا مجر فرائے كا تهيس كيا جواب ديا كيا تھا؟ وہ عرض كريں ہے "جميس الكل علم حميں ہے" ہے تك توى تمام فيوں كا جائے والا ہے اللها كدد ١٠٩٥ آيات مماليقة ہے مناسبت

اس آیت میں بیر ذکر ہے کہ اللہ تعالیٰ رسولوں ہے ور اللت قرمائے گامکہ حمیس تساری استوں کی طرف ہے کیاجواب ویا عمیاتی؟اس کی تظیر قرالن جور کی بید تریش میں:

مُلَنَسْعَلَنَ الَّذِينَ الْرَسِلَ اللَّهِمُ وَلَنَسُعَلَيَّ اللَّهِمُ وَلَنَسُعَلَيَّ الْمُرْسَلِلِينَ (الاعزاف؛)

موے تک ہم ان لوگوں سے ضرور موال کریں مے جن کی طرف رسولوں کو بھیا گیا تھا اور رسولوں سے بھی ضرور موال کریں گے۔

مو آپ کے وب کی تم اہم ان مب سے ضرور موال کریں کے ان مب کامول کے تعلق جود ، کرتے تھے۔ فَوْرَاتِكَ لَنَسْفَلَتُهُمْ اَحْمَوِيْنَ 0 عَقَا كَأْمُوايَعُمَلُونَ (الحجر:٣٠٩)

اس آبت سے معلوم ہو آب کہ انبیاء علیم السلام کو علم تمیں تھاکہ ان کی امتوں نے ان کو کیا جواب ریا؟ حالا تکد دو سری آیات سے یہ معلوم ہو آب کہ انبیاء علیم السلام اپنی امتوں کے اعمال کے متعلق کوائی دیں گے مشلابہ آبت ہے:

جُيانُ القر أنّ

بلدموم

فَكَيْفَ إِذَا حِثُمَا مِنْ كُلِّ أُثَّةٍ بِنَهِيهٍ وَّ حِثْنَابِكَ عَلَى هُوُلَا وَنَيهِيدًا (النساء)

اس وقت كيا طال يو كابب الم برامت سے ايك كوار لا كم كاور (اے رسول كرم) الم آب كوان سب ركواوينا كرلاكم كے۔

اس سوال کا بواب بیہ ہے کہ انبیاء علیم الساام کو بقینا کی استوں کے احوال اور این کے دیے ہوئے بوابات کاعلم ہے اور بب ہی وہ ان کے متعلق کو ای دیں ہے 'لیکن وہ اللہ تعالی ہے جو یہ عرض کریں ہے "جمیں ابساؤ علم نہیں ہے" اس کا معنی یہ ہے کہ اللہ عزوجیل کے غیر متابی علم کے مقابلہ میں ان کو اصافہ علم نہیں ہے۔ مغرین کرام نے اس سوال کے متعدد جو ابات ذکر کے بین مہان میں ہے بعض کو نقل کر وہ ہیں۔

علامه ابوعبدالله محدين احدماكي قرطبي متونى ١٩٨٨ ولكيية بين:

یں کتا ہوں کہ قیامت کے دن اکثر او قات میں انبیاہ علیم النظام کو کوئی خوف اور قم نہیں ہوگا میکن بعض او قات میں انبیاہ علیم النظام کو کوئی خوف اور قم نہیں ہوگا میں وقت ہر نی اور جر صدیت کوئی رہ خوف طاری ہوگا۔ ور مول اللہ چہنے نے فرایا کہ مجھے جرا کیل نے قیامت کے دن کا اتبا خوف دانیا کہ میں دولے لگا۔ میں نے کہا اے جہا میں کے کہا اے جہا میں کے کہا اے جہا میں کے کہا اے جہا اس کے کہا اے جہا اس کے کہا ہوں کے کہا ہوں کے کہا ہوں کا می معفوت ہوں کا می معفوت ہوں کا کہا ہوں کا میں ہوں اللہ تعلق کے اور اور کا معنی ہے کہ تم کو ظاہر اور باطن میں اور جلوت اور ظلوت میں کیا جواب دیا گیا؟

وہ کمیں سے بہیں اصفا علم نہیں ہے اور اس میں ان اوگوں کا در ہے جو معفرت مسے علیہ المام کو خدا کہتے ہیں اور این حوال کا در ہے جو معفرت مسے علیہ المام کو خدا کہتے ہیں اور این جرتے نے کہا اللہ تعالی کے اور شوع ہوں کہ ہمیں اس کا کوئی علم نہیں جرتے نے کہا اللہ تعالی کے اور شوع کہ ہمیں اس کا کوئی علم نہیں جب کہ تعالی ہے کہ تعالی کے اور ایس کے کا قورہ کمیں سے کہ ہمیں اس کا کوئی علم نہیں جب کہ تعالی کے اور اس میں اس کا کوئی علم نہیں جب کہ تعدی تعلی کے کو دور کمیں میں کوئی کوئی اللہ ہوں گا کہ کہا ہوں اس میں اس کا کوئی علم نہیں جب کہ تعدی تعدیث ہے کہ نے شری گام خور کی میں جانے کہ انہوں نے گا ہوں گا ہے نے شری آئیں گا ہی کہا ہونے کہ انہوں نے گا ہوں گا کہ کہا ہوں گا کہ کہا ہیں اس کا مشاب ہوں گا کہ کہا ہوں گا کہ کہا ہیں اس میں اس کا کوئی اس کے کہا ہوں گا کہ کہا ہوں گا کہ کہا ہیں اس کا کوئی گا ہے تھی تا ہوں گا کہ کہا گا گا کہا ہوں گا کہ کہا ہوں گا کہ کہا گا گا کہا گا کہ کہا گا کہ کہا ہوں گا کہ کہا ہوں گا کہ کہا ہوں گا کہا گا کہ کہا گا کہ کہا گا کہ کہا ہوں گا کہ کہا ہوں گا کہ کہا ہوں گا کہ کہا ہوں گا کہ کہا گا کہا کہ کہا گا کہ کہا گا کہ کہا ہوں کہ کہا گا کہ کہا گا کہ کہا کہ کہا گا کہ کہا گا کہ کہا گا کہ کہا گ

علامہ ماور دی نے کماکہ اللہ تعالی تو پہلے ہے تی ان کے مال اور ان کے جواب کو جائے والا ہے 'چران ہے کیون سوال قرائے گا؟ اس کے دوجواب ہیں۔ ایک ہے کہ آئے انجیاء علیم السلام کو اللہ تعالی تلائے کہ ان کے وصال کے بعد ان کی امتوں نے ان پر کیا کیا افتراء باتد ہے اور کیا کیا کفر کے ؟ اور دو مراجواب ہے ہے آ کہ ان کی امتوں کے کافروں کو تمام مخلوق کے مائے ذکیل اور در سواکرے ' اور میہ مجی عذاب کی ایک حم ہے۔ والجائے فا دکام افتر آن 'جزا میں والمعلوم دار الفکو 'جروت '10 ملاء) المام فوالدين همان عمروازي حقل المهار كلية إليه

نياده مح بولب دوب بو معزت اين عباس ومني الله عنما كالتأرب أر انهاء عليم السلام في الله سنة وض كيابس بك ملم تسيل مي كو كله وعمل المول في خايركي ، و يوشوه كي الن كو صرف توى جاناب مهم قو صرف ان اعمل كو جائة بي جو انہوں نے ظاہر کے۔ اس لیے الہوں نے اللہ کے مائٹ آئے علم کی لئی کی جواللہ کے علم کے مائٹ ان کاعلم عدم علم کے علم عى ہے۔ دد مراج اب بيہ ہے كہ يمس مرف الى دعرى عن ان كے الل كاظم قاادر مارى دالمت كے بعد ان كے الىل كائميں علم تھی اور جزاماور والب کارار فاحرے میسی علم نس کے ان کافاتہ کن افعال ہوا۔ اس وجہ سے انہوں نے کما ہمیں م كو علم نيس الور بعد ش جو فرمايا: ب تنك توي خيرول كالباشندالاب وه ان دولول جوابول كي محت ير دادات كرياب، اس تغيركو تصف وات جوجواب ميرك ول عن كيا فعير ب ك علم أورج بالدمود جين ب) اور عن اور يزيد اور مرفض كو ود مرے کے متعلق عن وہ بہت علم میں و بکہ ای وجہ سند فی منابع سند قرایا ہم مکامرے تھم لگے۔ بیں اور ہامن کامطافہ اللہ ے والے ہے اور فی باللہ نے قرابا تم محرت اور مقامت است او او سکان بار تم بن سے کوئی فنس زیادہ طلاقت اسائی (جب زبان) کے ساتھ لیے موتف کو بیل کرے۔ بی اگر (بالرش) بی بائل فیملے کردوں وکو ایس اس کو ال کاایک صد دے رہا ہوں اس انجیاء بنیم السلام سے قبل کامعی ہے ہے کہ جس ان سے انویل کا طم (این بیٹن) عیر، جس ان کے احوال کا مرا تن ماسل ہے اور تھن جرف وائل معتمرہ و آہے ہے تک دنیا کے ابھام مرف تھن پر بنی ہیں اور ا فرے میں تن ک طرف كوئي وجد ميس كى جلسة كى يريك ا ورت ك في من كن اشياء اور يواطن امود يرين بيل-اس وجد سے انهوں في كا ہمیں علم نہیں ہے موااس علم کے جو تو نے ہمیں ملاقربالا مور افزت میں اسپط عن کاڈکر نہیں کیا کیونکہ افزت میں طن کا المار دين او ااور افرى جاب ب كراتها وطيع المام كوسلوم تفاكر الد تعانى عالم عكم اور عادل ب اس كاكرتي كام عكست اور مدل کے خلاف تعیر سے۔ قوائموں کے جان لوک میں سے کا کا اعمد ماصل ہوگانہ کوئی تعمدان دور ہوگا اور اوپ کا فالنايب كدان كالمنظ مكون كالبلك كورمولداس عكم فورعادل يتوازوا جلك بواي والوماد الكوت ب

التخير آيا المائد الفائد الفائد الفائد الفائد الفائد المائد الما

الم شراع الله حل حق ١١٠ مد الم الله المراح الله المعديد

لیکن ابن عباس کے نزدیک "الاصلم لنا" کامطلب ہے کہ خواوی اے ترے علم کال و محیط کے مائے اعاراعلم کرو مجی نہیں محوایہ القاظ مکوپ مع اللہ کے طور مرکبے۔

(حاثیته اقرآن پرترجمه قرآن از چخ محمود الحن)

بین ملاور بینداس آیت کو انبیاہ علیم ہے علم فیب کی تئی می بیش کرتے ہیں مونسی شخ مثانی کی اِس تغیر میں فور کرنا علیہ ہے۔ اِتی ہمارے فزدیک انبیاء علیم السلام کو انتانی علم فیب ماصل ہے کا بینان کو اللہ قبائی نے عطا فرایا اور ہم انبیاء علیم السلام کے لیے فیب مطلق کے قائل تعمل ہیں اور ہماری کر اس کو عالم الفیب کمنا مجمع نہیں ہے الم احمد رضا قادری رحمہ الشدے بھی اس کی تفریح کی ہے۔ اللم احمد رضا قادری رحمہ اللہ نے بھی اس کی تفریح کی ہے۔

عيان القر ان

بلدسوم

الله تعالى يراساء كے اطلاق كامابطه

الم رازی فر الم یک بر آیت اس را دالت کرتی ہے کو اللہ تعالی مام کا اطلاق کرنا جائز ہے جیساک اللہ تعالی پر علام کا اطلاق کرنا جائز ہے جیساک اللہ تعالی پر علام کا اطلاق کرنا جائز نمیں اور اس کی وجہ بر ہے کہ آئ آئے ہو کے لیے بھی آتی ہے۔ افسیر کیر 'ج '' مریحا ' معلوم عاد الله کو ' موجہ)

اس عبارت سے بید معلوم ہوا کہ جس انتظ ہیں کمی تقض کا وہم ہو اس انتظ کا ابلہ پر اطلاق کرنا جائز نہیں ہے ' ہنارے عام
یول چال ہیں افلہ میاں اور اللہ سائی کما جاتا ہے۔ میاں کا انتظ ہوی کے مقاتل کے لیے بولا جاتا ہے ' کمی ہو ڑھے آوی اور گاؤں

کے مواوی کو بھی میاں بی کہتے ہیں' طوا تف کے مربرست کو بھی میاں ہی کہتے ہیں' اور سائیں فقیر کو بھی کما جاتا ہے۔ سو یہ
دونوں انتظ تقص کے معنی کو متنمی ہیں ' اس لیے اللہ توائی پر ان کا اطلاق جائز نہیں ہے۔ دو سری وجہ یہ ہے کہ اللہ توائی پر ان بی
اساء صفات کا اطلاق کرنا جائز ہے ' جس کا جموت قرآن اور صورے ہیں ہو۔ البتد اس کی ذات کو کمی بھی افتظ ہے تو ہر کیا جا سکتا ہے'
ہیں خوالوں ترکی ہیں حکری۔ اولہ توائی ارشاد فرانا ہے:

عَلَى الْمُنْسَاءُ الْمُسْسَاءُ الْمُسْسَى فَادَّعُوهُ بِهِمَا وَذَرُوا وَلِلْو الْاَسْسَاءُ الْمُسْسَاءُ الْمُسْسَى فَادَّعُوهُ بِهِمَا وَذَرُوا اللّذَيْنَ يُلْحِدُونَ فِي آسْسَانِهِ سَيْحُرُونَ مَا

كَانْتُوايَعْمَلُونَ ۞ (الاعراف،١٨٤)

اور الله ی کے لیے ایکھے ام یں سوان ی اموں ہے اس کو پکارو اور ان لوگوں کو چمو ڈروجو اس کے نام یں کے روی احتیار کرتے ہیں ان کو منٹریب ان کے اعمال کی مزادی جائے

اس کے اللہ تعالی پر این بی اساء مقات کا اطلاق کیا جائے' جن میں حسن ہو لور جن اساء میں کمی وجہ ہے نقص یا عیب ہو ان کا اطلاق اللہ تعالیٰ پر نہ کیا جائے' بلکہ اس سلسلہ میں قرآن اور مدے کے اطلاقات سے تجاوز نہ کیا جائے۔

اس سے پہلی آیت میں اللہ تعالی نے قیامت کے دن کی آیک ہے صفت بیان کی تھی کہ اللہ تعالی اس دن تمام عمیوں سے

موال کرے گا کہ تم کو کیا ہوا ہے تھا؟ اس آیت میں اس دن کی دو سری صفت بیان فربائی ہے کہ اس دن اللہ تعالی بالخصوص

حضرت مینی علیہ السلام سے کلام فرمائے گا اور این کو اپنی فوتیں یاد دلائے گا تور اس سے مقصود عیمائیوں کی فرمت کرتاہے کہ

اللہ تعالی نے حضرت مینی علیہ السلام کے واسطے سے ان پر استے اصابات فرمائے اور ان کی فرمائیس پوری کیس کی انہوں نے

اللہ کے ساتھ کفر کیا اور اس کا شریک بنالیا۔ دو سری استوں کے کافروں نے تو صرف اپنے عیوں کا کفر کیا تھا اور ان کی شان میں

مانی کی تھیں کی تھیں ان سے بود کے انہوں نے اللہ کی طرف یوی اور بیٹے کی فرمت کی۔ " معالی الملہ عن

ذالے کے اللہ عن آلہ تعالی نے اس آیت عمل صفرت مینی اور این کی والمد پر اپنی فوتیں یاد دلا کیں آگے دنیا کے سامنے ان آیات کی

ذالے کے اللہ عن آلہ تعالی نے اس آیت عمل صفرت مینی اور این کی والمد پر اپنی فوتیں یاد دلا کیں آگے دنیا کے سامنے ان آیات کی

خلات کی جائے کہ اللہ تعالی نے ان کو کتنی عزت اور کرامت عطا قربائی تھی۔ اس سے یہ بھی معلوم ہوا کہ اسلام تمام آسانی فراہب کے رہنماؤں کی تعظیم اور تحریم کرتا ہے 'اور تمام جمیوں کی شان اور ان کے باند ورجات بیان کرتا ہے 'اس میں میںودیوں اور عیمائیوں کے لیے سبق اور جمرت ہے جو بی براسلام سیدنا محمد بھیلیم کی تنقیص اور تو بین میں دن رات کوشاں رہے ہیں 'پر اللہ تعالیٰ نے معرت میسی علیہ السلام پر اپنی تعتیم کواتے ہوئے قربایا دیب میں نے روح القدس سے تمماری دو کی۔ روح القدس کا معنی روح القدس کا معنی

ردح القدى سے حطرت جراكل عليه السلام مراد جيں۔ اس ميں روح كى اضافت قدى كى طرف ہے 'قدى سے مراد اللہ عزو جل كى ذات ہے 'بعض طاہرہ نورانيه ہوتى ہيں 'بعض ذبيعہ خرو جل كى ذات ہے 'بعض طاہرہ نورانيه ہوتى ہيں 'بعض ذبيعہ ظلمانيه ہوتى ہيں۔ اللہ تعالى كايہ احسان ہے كہ ان كى مدد ظلمانيه ہوتى ہيں۔ حضرت جبراكل وہ روح ہيں جو طاہراور نورانى ہے 'اور حضرت فيسلى پر اللہ تعالى كايہ احسان ہے كہ ان كى مدد طاہراور نورانى روح ہے كى گئى ہے۔

حیات مسے اور ان کے زمین پر نازل ہونے کی دلیل

تم گوارے یں جی لوگوں سے گلام کرتے تے اور پنتہ عربی بھی پین بھی بھی ہی اور پنتہ عربی ہر دور میں ان کا کلام علی اور حکمت کے مطابق تھا اور حکماء کے کلام کے موافق تھا کو فکہ بسکو ڑے میں معزت علی علیہ السلام نے قربایا میں اللہ کا بنرہ ہوں اس نے جھے کاب عطائی ہے اور جھ کو نی بنایا ہے اور میں جہاں بھی ہوں اس مجھے پرکت والا بنایا ہے اور میں جہاں بھی ہوں اس مجھے پرکت والا بنایا ہے اور میں جب تک ذیرہ ہوں تھے نماز پڑھے اور زکو قادینے کا خطم دیا۔ (مربے ۱۰۵) معزت میسی علیہ السلام کو اللہ تعالی نے کموارے میں وی قربائی اس میں ایک مید سوال ہے کہ حضرت میسی علیہ السلام کا گوارہ میں کلام کرتا تو بھڑوہ ہوگیا؟ اس کا بواب ہے کہ کمولت تمیں ممال کے بعد کی عرکو کہتے ہیں اور معزت میسی علیہ السلام تمیں ممال سے طرح معزوہ ہوگیا؟ اس کا بواب ہے کہ کمولت تمیں ممال کے بعد کی عرکو کہتے ہیں اور معزت میسی علیہ السلام تمیں ممال سے بیات آسانوں کی طرف اٹھا لیے گا اور کی بڑار ممال گار دین پر ان کا زول ہوگا اور اس دقت وہ پختہ عمرے ہوں گا اور پر بھی حال میں کا معزوہ ہو گیا تارہ مال گار دین ہوں گا اور اس دقت وہ پختہ عمرے ہوں گا اور پر بھی حال میں کا مور اس کے اور پہنے عمری کو کہتے ہیں کا دور اس دقت وہ پختہ عمرے ہوں گا اور پہنے عمری کا مرکزی میں موں گا ہوں ہوں گا میں گارہ کریں گے۔

اس آیت میں دھرت میسی علیہ السلام کے زمین پر مزول کی بھی دلیل ہے "کو تک وہ پافتہ عراور کمولت کے زمانہ کو پانے سے پہلے آسانوں پر افعالیے مجھے تھے اور قرآن بجید کے مطابق ان کا کمولت کی عمر میں گلام کرنا بھی ضروری ہے "اس سے لازم آیا کہ حضرت میسی علیہ السلام ذخرہ بھی جی اور ان کا ذمین پر مزول بھی ہو گا کور نہ اس آیت کا صدق کیے ہو گا؟ اور اگر یہ کہا جائے کہ انہوں نے کمولت کا زمانہ پالیا تھا اور وہ کمولت کے زمانہ میں توسب کہ انہوں نے کمولت کے زمانہ جی تو ہے مجزو کیے ہوا؟ کمولت کے زمانہ جی تو بہ باتھی کرتے ہیں ہی جروائی وقت ہو گا جب انہیں کمولت کے زمانہ جی باتھی کرتے ہیں ہو گا اور وہ کئی بڑاو برس بعد زمین پر نازل بول اور کول سے باتھی کریں مواس طرح اس آیت میں اون کے مجزو کا ذکر بھی ہو گا اور یہ آیت ان کی حول اور اور کولت کے ذمین پر نازل ہونے کی دلیل بھی ہوگی۔

كتاب محكمت ادر تورات ادر انجيل كامعني

اور جب میں نے تم کو کتاب عمت اور ات اور انجیل کا طم دیا کتاب ہے مرادیاتواس کا مصدری معنی ہے ایعنی لکھنا اور یا یا کتاب بمعنی مکتوب ہے اور اس سے مراد جنس کتاب ہے۔ کو تکہ اضان پہلے اسمان کتابیں پڑھتا ہے اور پھر مشکل اور ادق کتابیں پڑھتا ہے اور حکمت سے مراد علوم نظریہ اور علوم عملہ ہیں۔ ایک قول یہ ہے کہ اس سے مراد نازل شدہ کتابوں کا علم اور

ان كامرارى فع ب-ايك قول يب كه حكت ب مراوئتس كاكمل على اور علم ك تقاضون ير عمل ب-ايك قول يب کہ عمت سے مراو سیم تول ہے اورات سے مراد وہ کتاب ہے جو صرت موی علیہ السلام پر تازن کی منی اس میں شرائع اور ادكام بين اور انجيل سے مرادوه كلب م جو معزت ميلي عليه السلام ير نازل كي مي اس مين مواعظ اور اخلاق بين بهل كاب كا ذكر فرالا ' مرتورات اور البيل كاذكر فرالا عالا كله وه بحى كتايس بن سي شرف اور فعنيات كى دجه عام كے بعد خاص كاذكر ب جيهاك اس آيت ين الاك كيورجراكل اورمياكل كذكركياكياب مالانك وه بحي الاكديس ين

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِللَّهِ وَمَلَاّ يُكَنِّهِ وَرُسُلِهِ وَ اللهِ وَمُسَلِّهِ وَ اللهِ اللهِ اللهِ الله الر میکا کل کار شمن ہے او اللہ کا فروں کار شمن ہے۔

يعبر بل و منكسل مَوانَ الله عَدُو لِلْكَافِريُنَ (المقرة: ١٨)

تورات اور الجیل کے معنی کی زیادہ تنعیل اور تحقیق ہم نے آل عمران سمیس کردی ہے۔ وہل ملاحظہ فرما کیں۔ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کار ندے بنانا ' بیاروں کو شفاد بیااور دیگر منجزات

جبتم میرے تھے سے منی سے برغرے کی صورت بیاتے تھے پھر تم اس میں پھو تک ارتے تھے تو وہ میرے تھے سے پرغرہ ہو جاتی تھی'اور تم میرے تھے سے ماور واو اند موں اور برص کے مریضوں کو تکدرست کرتے تھے۔ ایک قول یہ ہے کہ نوگوں نے بطور عزاد معرت میسی علیہ الساام سے کما اگر آپ اپند ویل می سے میں تو ہمارے لیے چھوڑ منا کم اور اس می روح ذال دیں ' حضرت میسٹی علیہ السلام نے مٹی اٹھائی اور اس سے چیکارز کی صورت بنائی۔ پھراس میں پھونک ماری تو وہ از نے مگی ' چگاوڑ کو بنااور اس میں پھو یک بار باحظرت میٹی علیہ السلام کا کسب تھا اور اس کو پیدا کربااللہ تعالی کا فعل تھا۔ ایک تول یہ ہے کہ انسوں نے چگاوڑ بنانے کا مطاب اس کے کیا تھاکہ یہ کوشت اور خون سے بنا ہوا جیب ترین جانور سے اور یہ پروں کے ساتھ اڑ آ ہے اور حیوان کی طرح یچے دیتا ہے "اور باتی پر غدوں کی طرح اعذے نمیں دیتا 'اس کے تھن ہیں جن سے دودھ لکا ہے' انسان کی طرح بنتاہے اور اس کو مورت کی طرح حیض آ تاہے 'یہ دن کی روشنی میں دیکھ سکتاہے نہ رات کے اند جرے میں 'یہ رات كابتدال حمد تك دكمالي ديناب- ١- ١

(حاشيه كى الدين شيخ زاده على اليهنادي علم ٢٠٠٧ مطبوعه دار احياء الزاث العملي ويردت)

اعمیٰ اس مخص کو کہتے ہیں جو بصیر پیدا ہو اور بعد میں اندھا ہو جائے اور اکے۔ اس مخص کو کہتے ہیں جو اندھا پیدا ہو۔ معرت میٹی علیہ الساام اور زاواند سوں کو اللہ کے تھم سے بینا کرتے تھے یوس ایک جلدی باری ہے جس کی وجہ سے جلد سفید ہو جاتی ہے اور ایک تکلیف وہ فارش ہوتی ہے وحرت میٹی طید السلام اللہ کے عم سے برص کے مریضوں کو تک رست کر دیتے تھے۔ اور تم میرے عم ے مردول کو فکالے تھے۔ یعنی تم میرے عم ے مردول کو زندہ کر کے قبول سے فکالے تھے۔ جب تم الله الله عاكرك مود عديد كت تع الله كاذن المالي قبر بابرآون العل من الله كاذكركيا ہے " آ کہ ب معلوم ہو کہ ان افعال کافاعل حقیق اللہ جار کے وتعالی ہے۔

اور سے ان اس اور اس اعلے بھا! بب تم ان کے اس موش مجرات لے کر گئے تو ان میں سے کافروں نے کما یہ کھنے ہوئے جادد کے سوااور پچھے نہیں ہے بعنی جب تم بنواسرائیل کے پاس اپی نبوت اور رسالت پر دلا کل اور معجزات لے کر محتے وانبوں نے تمهاری تکذیب کی اور تم پر تصت نگائی کہ تم جاود مر ہو اور انبوں نے جہیں قل کرنے اور سول دینے کاار اوہ کیااور میں نے تم کو اپنی طرف اوپر اٹھالیا اور تم کو ان کے شرے بچایا۔ انسانہ ۸۵امیں ہم نے حضرت بیسٹی علیہ انسلام کو آسان

ير المائ جان كابيان بدى تنسيل من كياب وبل طاحقه فراكي .

الله تعلق كارشاد ب: اورجب من في واريق رالهام كياكه جهدر اور مير، رسول راعان لاؤاتوانسول في كما يم اعلى المسكر اور (ال الله الله الواويو جاك بي تك بم مسلمان بي- (الما عدد ١١١)

حضرت عيسى عليه السلام كے معجزات كى حكمتيں

حواری حضرت مینی علید السلام کے افسار اور ان کے مطام اصحاب ہے اور کاستن ہے کسی چیز کو صاف کرتا اور ان لوگوں النامية نفوس كانزكيد كرك باك اور صاف كرايا تما اس آيت عن ذكور بع عن خدو اوسن كى طرف وى كى ايم يهل بان كريكے بيں كه اللہ جس كلام كوائي في كى طرف تازل فرما يائے "خواء فرشتے كے واسطے سے ہو يا جا واسطہ اس كو وى كہتے ہيں 'اس لياس آيت كامعنى بيم في حواويين كي قرف الهام كيا- قرآن مجيد كي اور يمي كي آجون من ومي معنى الهام ب

. اور ہم فے موی کی مال کی طرف العام قرمایا کہ السیل

وأوحب الكيانا موسى أن أرضيب

(القصيص: ٤) دوده لاؤ-

اور آپ کے رب لے شد کی ممی کے دل میں والا کہ تو الْيِحِبَالِ مُهُوْدًا وَمِينَ السَّحَيرِ وَيِهَا يَعْرِشُونَ عِالُول مِن مُرِينا 'اور در فتول مِن اوران چهرول مِن جنيس

وَأَوْحَى رَبُّكُ إِلَى النَّحْلِ آنِ النَّحِذِي مِنَ (النيسل: ١٨) لوك اوتيابا تين-

الله معلق في حواريوں كے ول من والاكه وو معرت يسلى ير ايمان لا تمي "موده ايمان في آيان آجول مي الله معالى حضرت ميني پر كي موكي فغيوں كو شار كرا رہا ہے "اس بريد سوال مو آہے كه حواريوں كا حضرت ميني پر ايان النا حضرت ميلي ك حق میں نعمت کیے ہوا؟ اس کا جواب سے ہے کہ تھی انسان کا اس درجہ میں ہونا کہ لوگ اس کے قبل کو قبول کریں 'اس کو محبوب مناكس اوراس كى اطاعت كريس اس كے مائے يران كى تجلت موقوف موسى اس يراث تعالى كاتعت برا انعام ہے۔ اور أكر ب سوال کیا جائے کہ ان آیات کے شروع میں اللہ تعالی نے صفرت میسی اور ان کی ماں پر اپنی نعمتوں کا ذکر فرمایا تھا؟ پرجن نعمتوں کا ذكر فرمايا ب ان سب كا تعلق حعرت ميلى عليه السلام سے بندك ان كى دائده سے ؟ اس كاجواب يد ب كد بينے كوجو شرف اور مقام ملاہے "دہ اس کی مل کے لیے عزت اور سرخ روئی کا باحث ہو گاہے "سویہ تعتیں حضرت مینی علیہ السلام رہمی ہیں اور منا اور باواسطران کی مل پر بھی ہیں۔

جس زمانہ میں جس هم کے کمال کاج جا اور شہرت ہوتی ہے " بی کو اس زمانہ میں اس نوع کا ایما کمال دے کر بھیجا جاتاہے کہ اس زمانہ میں اس کمال کے ماہرین اس کی نظیرالانے سے قاصراور عاج ہوتے ہیں اور یکی ان کا مجزو ہو تاہے جو ان كى نوت كى دليل قرار يا تا ہے۔ معرت موئ طير السلام ك زماند يس جادوكرى اور شعيده يازى كاچ جا تما تو حضرت موی علیہ السلام کو صداور ید بینادے کر بھیجاجو ان کی جادوگری پر غالب آگیا'اور حضرت میٹی علیہ السلام کے زماند من طب اور حكمت كاج جاتما تو آب كو عكمت كاليا كمال دے كر بيجاك اس زماند كے اطباء اور حكماء اس كي نظير لانے سے عاج ہو کے اور اعارے کی سیدنا محد عجیرے کے زمانہ میں زبان وائی اور فصاحت و بادخت کا زور تھا او آپ کو قرآن مجید دے کر مجھاجس کی ایک معوثی ہے چھوٹی سورت کی مثال اس زمانہ میں کوئی لاسکا نہ آج تک کوئی لاسکا ہے۔ علم اور اوب میں دن ہر ون ترقی ہورئ ہے اور اسلام کے گالفین بھی بہت میں 'اگر اس کی کسی ایک سورت کی بھی مثال کا لانا ممکن ہو یا تو کا نفین اب تک لا بچے ہوتے۔



بلدسوم

نبیان انڈر اُن

ءوجائیں0(المائدہ ۱۳۰۰) مناسبت اور شان نزول

اس سے پہلی آبوں میں دھرت سینی علیہ السلام پر آٹھ فعمتوں کا ذکر قربایا تھا اس آبت اور اس کے بعد والی آبتوں میں نوس کا ذکر قربایا ہے اور وہ حوارم لی فرائش اور حضرت میسی علیہ السلام کی دعاہے آ جان سے خوان فرت کا نازی ہونا ہے اور وہ حوارم لی فرائش اور حضرت میسی علیہ السلام کی دعا کا تول ہونا ہے اور ان کے دعا کرتے میں ان کے بندہ ہونے بائر تعالی کی قدرت کا اظہار ہے ، معرت میسی علیہ السلام کی دعا کا تول ہونا ہے اور ان کی الوہیت کی فنی ہے اور اس وجہ سے لوگوں کا ان کی نبوت کی تصدیق کرتا ہے اور یہ اللہ تعالی کا بینے بندہ اور دسول معرت میسی پر بہت بیا احدی ہے۔

الم ابوجعفر محدين جرير طبري متوني ماسهدائي سند كم ساتد روايت كرتے بين:

حضرت ابن عباس رمنی اللہ ختما نے بیان کیا کہ حضرت عیلی علیہ السلام نے بی امرا کیل ہے فربلیا تم اللہ کے لیے تمیں
دوزے دکمو 'پھراللہ تعالی ہے دعاکرو تو اللہ تعالی تماری دعاقبول کرے گا کیو تکہ جو فضی کی کے لیے عمل کرے وہ اس کا اجر
عطا فرما آئے ہے۔ جو اسرائیل نے تمیں روزے درکھے "پھر حضرت عیلی ہے کما اے فیر کی تعلیم دینے والے ! آپ نے کما تھا کہ جو
فض کی کے لیے عمل کرے اس کا اجر اس کے ذمہ ہو آئے 'کور آپ نے جمیں تمیں روزے درکھے کا تھم دیا تھا سو جم نے رکھ
نیاور ہم جس کے لیے جمی تمیں دن کام کرتے 'وہ جمیں میرکرکے کھانا کھلا آئا تب انہوں نے کما کیا آپ کا رب جم پر آئیاں ہے
فران (فحمت) نازل کر سکتا ہے؟

(جامع البيان 22 عم 201- ١٥١ مطبوعه داد الفكو "وردت ١٣١٥) ه)

نزول ما ئدہ کے فرمائٹی معجزہ کی توجیهات

اس جگدید اعتراض ہو آئے کہ اس سے پہلی آبت میں افتہ تعالی نے جارہوں کایہ آول فق فرایا تھاکہ ہم ایمان سے آئے اور اے افتہ او گواہ ہو جاکہ ہم سلمان ہیں اور اب ان کایہ آول نقل فرایا کیا آپ کارب آبان سے فوان نازل کر سکا ہے؟ اوریہ قبل افتہ کی تقدرت پر شک کو واجب کر آہے۔ پھروہ مسلمان کسے ہوئے؟ اس اعتراض کے حسب ذیل ہواہات ہیں:

(۱) اس سے پہلی آبت میں افتہ تعالی نے ان پر ایمان کا تھم جس لگیا تھا بلکہ یہ صرف ان کار عویٰ تھاکہ وہ موسی ہیں اور معرت میں کایے تھا بلکہ یہ صرف ان کار بھری کال نمیں تھا۔

(۲) وہ اپنے و مونی کے مطابق موسی سے اور این کا یہ کمناکہ کیا افتہ ایسا کر سکتا ہے؟ افتہ کی تقدرت پر شک کی وجہ سے نمیں افتہ ایسا کہ محمول طرف کے فیا تھا اسلام نے حصول طرف ہی تھا ہے فرایا تھا اے میں میرے دیسا تو بھے دکھرت ایرائیم علیہ السلام نے حصول طرف کے فرایا تھا اے میں میرے دیسا تو بھے دکھوا کی کہ دیسا تھا۔

(۱۳) اس ایت کا معنی بیر ہے کہ وہ حضرت جینی علیہ السلام ہے پوچھ رہے تھے کہ ابیاسوال کرنا آیا حکمت کے منافی تو تہیں ہے۔

(٣) مستطع على سين ذاكد باوراس آيت كامعنى بكيا آپ كارب آپ كى دعا قبول فرالے كار حضرت مينى عليه السلام في فريليا تم الله سے وُروان كاستى يہ بكر تم الله سے فرائشى مجزون طلب كرو بكو كد اس سے يہ ظاہر ہو آب كہ تم ضدى اور بهث دهرم ہو۔ دو مرامعنى يہ بے كہ تم تقوئى افقياد كرواور اپ مطالبات رامبركرو بكونك جو الله سے وُر آب الله اس كے ليے كوئى نہ كوئى سيل بدا فراد تا ہے۔

طبيان القر أن

وَمَنْ يَنَيْقِ اللّٰهُ يُحْمَلُ لَهُ مُخْرَجًا ٥ وَيَرْدُقُهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْمَلُ اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ مَهُ وَحَيْثُ لَا يَحْمَلُ اللّٰهِ ١٠٠٠)

- 4- 3K L J

حوار ہوں نے کما بم توبہ چاہیے ہیں کہ ہم اس خوان ہے کھا تھی اور ہمارے دل مطمئن ہو جا تھی اور ہمیں بقین ہو جائے کہ آپ نے ہم ہے مج کما تفلہ اس آیت میں حواریوں نے جو اپنا نڈر چیش کیا ہے اس کی حسب ذیل تقریریں ہیں: (۱) ہم اس خوان کو کسی مجزو کے طور پر طلب نہیں کر رہے ' بلکہ ہم پر بھوک غالب ہے اور ہمیں کہیں اور سے کھانا نہیں مان ' اس لیے آپ سے دعا کی در خواست کی ہے۔

(۲) ہرچند کہ ہمیں دلائل ہے اللہ کی قدرت پر بیٹین ہے لیکن جب ہم نزول مائدہ کامشاہرہ کریں گے تو ہمار ایقین اور پانتہ ہو جائے گئے۔

(٣) مريندكه بم نے آپ كے تمام معرات كى تعديق كى ب يكن اس معرو كو وكيد كر دمار اعرفان اور يقين اور يخته ہو جائے ك

(۳) اس سے پہلے جو آپ کے مغزات تے ان سب کا تعلق ذیمن سے تھا اور اس مغزرہ کا تعلق آسان سے ہوگا اس کو و کھے کر ادارے ایمان میں مزید تقویت ہوگی۔

الله تعالی کاارشادہ: عمینی ابن مریم نے دعائی:اے اعارے رب اہم پر آسان سے کھانے کا فوان نازل فرا آ آکہ وہ (دن) افارے اگلوں اور پچپلوں کے لیے عمید ہو جائے اور تیری طرف سے نشانی (ہو جائے) اور جمیں رزق مطافرا اور تو سب سے بھررزق مطافرائے والذہ ہے۔ والما تیمہ: سم

عام آدمی کی نظراور نبی کی نظر

عید کے دن اللہ تعالی کا شکر اوا کرنے کے لیے عبوت کی جاتی ہے معترت عینی علیہ السلام کی نظر پہلے اللہ کی عبوت کی طرف تھی ایک نوروالک کے دو تیری طرف سے نشانی ہو جائے ایسی لوگ نزول ما کدو میں فوروالکر کے اس کے بازل کرنے والے کی طرف رسائی حاصل کریں اور نظر اور استدالال سے فوا کو پچاھیں ایوں حضرت عینی علیہ السلام کی نظر ایک بلند مقام ہے اس سے بھی بلند تر مقام پر پہنی ہی جر بدب فرمایا ہمیں رزق عطافر ما تو فنس کے حصد کی طرف نظری اور خالق سے تلوق کی طرف نزول کے بعد پھر خالق کی طرف رجوع کیا اور جوں اس آیت جی نزول کیا اور جب کما تو سب سے بھتر رزق دینے واللہ ہو تو نزول کے بعد پھر خالق کی طرف رجوع کیا اور جوں اس آیت جی حضرت عینی نے دو مرتبہ خاتق سے خالق اور غیر اللہ سے اللہ کی طرف رجوع کیا۔ اس دعا کے اول جی بھی ان کی نظر اللہ کی خضرت تھیئی نے دو مرتبہ خاتق سے خالق اور غیر اللہ سے اللہ کی طرف رجوع کیا۔ اس دعا کے اول جی بھی ان کی نظر اللہ کی

طرف تنی اور آخر بی بھی ان کی نظراف کی طرف تنی اور اہل اللہ کا میں مل ہو آہے وہ ہر مال بی اللہ کی طرف نظر رکھتے بیں۔اے اللہ ابھیں بھی اس بلند مقام ہے مقد وافر مطافر ہادا آجن) اول اور آ فر کے لیے عمید ہونے کا معنی

ما كدوه دان جار سالول اور آخر كے ليے حميد ہو جائے۔ ابن جریج نے كمااول سے مراد اس وقت كے زئره لوگ ہيں اور اعتر سے مراد بعد جن آتے والے لوگ ہيں۔

مغیان نے کمااس سے مرادیہ ہے کہ اس دن ہم دو مرتبہ لماز پڑھیں۔

حضرت ابن عباس نے کمااس سے مراویہ ہے کہ جب ہمارے سامنے خوان رکھا جائے تو اول ہے لے کر آ ثر تک سب لوگ کھالیں۔

مدی نے کماجس دن ماکدہ بازل ہو اس مان کی تعظیم کرتے ہوئے ہم بھی اس دن میر مناکی اور مارے بعد آنے والے لوگ بھی۔

الم أبن جرير في كما مي قول بيت كه اس دعاكا معنى بيب كه ابيدون المراعب ليد عيد او جلت اور جس دن بيه خوان نازل او اس دن ايم نمازيز ميس اليسي لوك مير كه دن نمازيز هي بير-

(بائع البيان 422 مح ١٤٨-١٤٤ مطبور داد الفكو بحروت ١٥١٠ه)

بنوا سرائیل پر تازل ہوئے والے طعام کاخوان الم ابومیٹی محمین میلی ترزی حق اے مند روایت کرتے ہیں۔

حضرت عمار بن یا مرد منی الله عند بیان کرتے ہیں کد رسول الله عظیم نے فربایا آسمان سے جو خوان نازل کیا کہا تھا اس میں دوٹیاں اور گوشت تھا ان کو عظم دیا کیا تھا کہ وہ اس میں نہ خیانت کریں اور نہ اس کو کل کے لیے بچاکر رکھی۔ انہوں نے خیانت بھی کی اور کل کے لیے بچاکر دکھی۔ انہوں نے خیانت بھی کی اور کل کے لیے بچاکر بھی رکھا سوان کو مسمح کرکے برور اور خنو میادیا کیلہ (سنس تروی) جے اور المراب ہوتی ہے ہے۔ انہوں نے ہیں اور کا اس اور جنفر محدین جربے طبری حتوفی ماس دوایت کرتے ہیں:

بنو جل کے ایک فضی نے بیان کیا کہ جی نے حضرت محارین یا سرد منی اللہ حد کے پہلو جی نماز پر جی۔ انہوں نے نماز ان ارخ ہو کر جھوے ہو جہا کیا جہیں معلوم ہے کہ بنو اسرائیل کے فوان کا کیا مطلہ ہوا تھا؟ جی نے کہا نہیں۔ انہوں نے کہا بنو اسرائیل نے حضرت میں این مرجم ہے سوال کیا کہ ان کے اور کھانے کا ایمیا فوان نازل کیا جائے جس ہوں کہا کھاتے دہیں اور وہ بھی ختم نہ ہو 'ان سے کھا جھیا کہ نہ دہ فوان تمارے ہاں دے گا بخر طیکہ تم اس جی سے کھ جھیا کرنہ رکو اور خیات نہ کو اور اس جی سے کھی جھیا کرنہ رکو اور خیات نہ کو اور اس جی سے کوئی چیز نہ اضاف اور خیال نے فرایا اگر تم لے ایمیا کیو و نیا ہو اس نے موان کو ایمیا عز اب نہ ویا ہو گئے۔ اور اس جی سے جھیا اور افسالیا اور خیات کی 'موان کو ایمیا عز اب رہا گیا جو و نیا ہو گئے۔ اور اس جی سے ایمیا کو جائے ہے ' پھر اللہ نے تم جی تم بی جی سے ایک دس سے اور نہیں کو تم جائے اور کھی کو جائے ہے ' پھر اللہ نے تم جی تم بی جی سے ایک دس سے اور نہیں کو تم جائے اور کھی کو اور تمارے نبی کی ذبان سے تم کو یہ اطلاع وی کہ مختریب تم کو دس کو اور تم کو سوتے اور بھی تھے ' کور تمارے نبی کی ذبان دات مونا اور جائے کی تھی کور تمارے نبی کی ذبان دات مونا اور جائے کی تھی کی دیا تم اب دن دات مونا اور جائے کی کہ کور کے سے مع کیا اور بخوان کو کا تم اب دن دات مونا اور جائے کی تھی کور اور خوان کو کا اور تم کو سے اطلاع وی کے مع کرنے سے مع کیا اور بخوان کو تا تم اب دن دات مونا اور جائے کی تھی کور کی دور کی اور تم کو سے اور تم کور سے کور اور تم کور سے کور کی دور تم کور کی کور کی کور کے سے اور تم کور سے کور کی کور کی کور کی کور کی کور کور کے کور کے کور کے کور کی کور کور کور کی کور کی کور کی کور کور کی کور کی کور کور کی کور کور ک

حفرت عماد بیان کرتے ہیں کہ بنو اسرائیل پر مائدہ نازل کیا گیا اس میں جشت کے پھول تھے ان کو یہ تھم دیا گیا تھا کہ اس

میں سے نہ چھیا تیں' نہ خیانت کریں' نہ ذخیرہ کریں۔ ان نوگوں نے خیانت کی' چھیایا اور ذخیرہ کیا' تو اللہ تعالی نے ان کو بندر اور اختزيو مناويا-(جامع البيان ٢٦٠ من ١٨٠٠ ١٥ مطبور داو الفكو عيوت) ميلاد رسول يجيد

صدر الافاضل مولانا سيد محرفهم الدين مراد آيادي متوفى عاسعات السية ين

لین ہم اس (فوان طعام) کے نزول کے دن کو عید بنا کمی میں کی تعظیم کریں 'فوشیاں متا کمیں 'تیری عبادت کریں 'شکر بما لا تي -اس سے معلوم ہوا كه جس روز الله تعالى كى خاص رحمت نازل ہو "اس دن كو حميد بنانا اور خوشيال منانا" عباد تيس كرنا " شكر التی بجالانا مخریقہ صافعین ہے اور کچھ تک نہیں کہ سید عالم جھیج کی تشریف آوری اللہ تعالی کی عظیم ترین نعمت اور بزرگ ترین رحت ب-اس کے حضور عظیم کی ولادت میاد کدے دن مید متانا اور میلاد شریف پرمد کر شکر الی بجالانا اور اظمار فرح اور سرور کرنامستخسن و محمود اور الله کے مقبول بینروں کا طریقہ ہے۔ (فرائن العرفان میں ۱۰۰۰ مطبوعہ آج ممبنی لمینٹه الاہور)

علامہ شریف سید احمد بن عبدالنی بن عمرعابرین ومشقی متوتی و ۱۳۳۰ (سید محدامین این عابدین شای متوفی ۲۵۲ مدر کے عم ذار) نے علامہ ابن جرمیتی کی متونی عصد کی کتاب النعمة الكبرى كى شرح لكسى ہے۔ علامہ ابن جركى شافعى نے النعمة الكبرى " نی بڑھے کے مطاد کے جوت اور بیان بی لکسی ہے۔ اس کیاب کی متعدد شہدع لکسی مئی ہیں الیکن سب سے معموط شرح عذامہ احمد عابدین دمشتی کی ہے۔ علامہ ہوسف بن اساعیل نبیانی متوفی ۱۵۰ میں ہے اس شرح کو جواہرالبحار بیں کمیل نقل کیا ہے۔ ہم اس شرح کے چھوا قتباسات جو میلاد النبی جیور کے جوت سے متعلق میں ایمان پر نقل کر دہے ہیں۔

محفل ميلاد كابدعت حسنه جونا

جس لموش نی مرتبی کی ولادت ہوئی اس میں میلاد شریف کو منتا بدعات مستجہ میں ہے ہے اس کو ایجاد کرنے والا اربل كالإدثياد مظفر تعلد حافظ ابن كثيرن البدايه والتهايير على لكعاب كروه وزع الاول من ميلاد شريف منعقد كريا تعا اوربست عظيم الشان محفل كاابتهام كريا قفا اس كى بادشاى كانى عرمد قائم رى اور وه ١٧٠٠ مد يس فوت بوار وه بست بهاور " نيك عاول اور ذيين یاد شاه تما" وه اس محفل جن بست علاء اور صوفیاء کویه موکر با تمااور اس تقیم الشان د موت میں تین لاکھ دینار نزج کر با تما۔ علامہ نووی کے استاذ بیج ابو شامہ نے میلاد شریف کی رات بھڑت معدقہ و خیرات کرنے پر طک منافر کی بہت تعریف کی ہے اور علامہ ابو شامد كى يد تعريف شب ولادت من ميلاد شريف مناف سك بدعت حد موفى يربحت قوى دليل ب-

علامد ابو شامدى عبارست بيب:

المارے زمانہ علی نی مرتبی کی والدت کے وان جو میلاد شریف منایا جا آے اور صد قات اور خیرات کیے جاتے ہیں اور خوشی اور مسرت کا اظمار کیاجا آ ہے' یہ سب ہے اچھی اور نیک بدحت ہے' نیز اس ممل کے ذریعہ نی مائی ہے محبت کی وجہ ہے باداروں اور مغلسوں کے ساتھ حسن سلوک کیاجا آہے 'جس مخص نے اس بدعت کو ایجاد کیا' انٹہ تعالی اس کو نیک بڑا وے۔ نیزا اس عمل کی وجہ ہے کفار کور متانقین کے دل فیظ ہے جلتے ہیں۔

(الباعث على الكاراليدع والحوادث ملحديد المصاه مطبوع واراارايرارياش فيداولي عن ١٥١١هـ) علامد زر قانی الکی نے لکھا ہے کہ مافظ ابو الخیر عمس الدین بن الجزری نے کمادہ ابولیب جس کی قدمت بیں قر آن ٹازل ہوا' اس نے نی میں کی والات کی خوشی میں این بائدی توبید کو انگل کے اشارہ ہے آزاد کردیا تعلد اللہ تعلق نے اس کو اس تعلی ب جزادی که هر پیر کوجب ده اس انگلی کا سراچ ستا ہے تو اس کے عذاب میں تخفیف و جاتی ہے او نبی پڑھ کاامتی مسلمان اور موجد جب ایمان کے رشت ہے کی والدت پر فوقی منائے گااور اپنی استظامت کے مطابق بال فرج کرکے مدقہ اور فیرات کرے گا اس کی جزاء کیا ہوگی اور فیجے یہ امید ہے کہ اللہ تعالی اس کو اپنے فضل حمیم سے جنات النعیم میں وافل کردے گا۔ امام محفق ابوز دعہ عراقی سے سوال کیا گیا کہ میلاد شریف منانا آیا مستحب ہے اگردہ ہے؟ اور کیا اس میں کوئی چزدارد ہوئی ہے اور کیا یہ نسل محابہ کرام سے منقول ہے تو علامہ عراقی نے جواب دیا کہ وعوت کرنا اور کھانا کھانا ہم وقت میں مستحب ہے اور جب اس کے ساتھ کی مربعہ کو تشریف آوری کی فوقی اور مسرت شامل ہو تو یہ فضل کو تکر مستحب نمیں ہو گااور ہم ملف صافحین کے متعلق اس سے نی مربعی ہو گااور ہم ملف صافحین کے متعلق اس سے نی مربعی اور کھی چیز کہ کتنی بدعات مستحب ہیں 'بلکہ نیادہ نمیں جانے اور کسی چیز کے بدعت ہونے سے بدائم نمیں آنا کہ وہ بدعت کروبہ ہو آکیو کلہ کتنی بدعات مستحب ہیں 'بلکہ وابد ہیں۔

علامہ ابراہیم حلیی حتی نے کھا اگر محفل میلادیں برائیوں کو شال کر لیا جائے 'مثلا عور تیں شریک بہوں اور بلند آواز ہے گا ئیں 'یا مردوں اور عور توں کے مخلوط اجتماع بدوں (یا جلوس کے دور ان نمازیں نہ پڑھی جا ئیں) تو اس تسم کے افعال بلاجہاع خرام ہیں۔ (علامہ شامی نے علامہ ابن تجرہے فقل کیا ہے کہ پرائیوں کے شامل بونے کی دجہ ہے کسی نئی کو ترک نہیں کیا ہے ہے گا کیو نکہ اس وجہ ہے محلیات کو ترک نہیں کیا جاتا 'بلکہ افسان پر واجب ہے کہ وہ عبادات اور نیکیوں کو بجالائے اور بدعات کا افکار کرے اور حتی الامکان ان کا ازالہ کرے۔ (دوافعتار 'ج'می میں) ملامہ تر تائی نے کھاکہ فلاصہ سے کر فی نفسہ میلاد شریف بدھت ہے در نہ میں محلی بھی ہیں اور قبل تجرب موائم محاس کو افتیار کیا گیا اور قبل نے کھاکہ فلاصہ سے کر فی نفسہ میلاد شریف بدھت ہے در نہ ہوست ہی ہیں اور قبل تجربی 'سواگر محاس کو افتیار کیا گیا اور قبل تھی اس میں محاس ہو ہوست حسنہ ہو در نہ ہوست ہو ہوں۔

حافظ ابن مجر عسقایاتی نے ایک سوال کے جواب میں کوا کہ جھے پر میلاد شریف منانے کی اصل ظاہر ہوئی ہے اور وہ یہ ہے

کہ صحح بخاری اور صحح مسلم میں ہے کہ جب نی سڑیور مدینہ میں تشریف لاے تو آپ نے ویکھا کہ میودی عاشوراء (وس محر م) کا
ووزہ رکھتے تھے 'آپ نے این ہے اس کی وجہ وریافت کی۔ انسوں نے کہائی دن اللہ تعالی نے فرعوں کو غرق کیا تھا اور حضرت
موکی کو نجات دی تھی 'تو ہم اس دن بطور شکر کے روزہ رکھتے ہیں۔ اس سے معلوم ہوا کہ جس معین دن میں اللہ تعالی کوئی فوت
عطا فرائے 'اس دن اللہ تعالی کا شکر اوا کرنا چاہیے 'اور نی سڑیجر کی والات اور آپ کے ظہور سے بڑھ کر اور کون می نفت
عوال فرائے 'اس دن اللہ تعالی کا شکر اوا کرنا چاہیے 'اور نی سڑیجر کی والات اور آپ کے ظہور سے بڑھ کر اور کون می نفت
کرنا اور ان عموات سے اللہ کا شکر بجا ادنا اس مدے کے مطابق ہے اور جانھ ابن مجرسے پہلے علامہ ابن رجب حنبلی نے اس
اصل کو خالش کیا تھا۔ جانھ ابن مجرکی نے کہا تاوہ سے زیادہ حق ہے انہیاء علیم السام کی متابعت میں اس دن روزہ رکھا اور
میں دورہ میں اس مورٹ مولیٰ علیہ اسلام پر تارا تم سے زیادہ حق ہے۔

علامہ اجر علدین نے کہانی بڑی کی محفل میلاد میں شریک ہونا اور آپ کی دلادت مبارکہ کاواقد اور آپ کے فضائل اور محلد کو بیان کرنا اور آپ پر بگترت درود و سلام پڑھنا آپ کی محبت کا سب ہے اور آپ کے قرب کا موجب ہے سو ہروہ محفل جو آپ کی محبت میں سازت ہو اس محبید میں آپ کو فار آپ کی محبت میں اس محفل محبید کی آب پر خوش ہو اور اس ممبید میں اس محفل کو منعقد کرے اور اس میں آپ کی دلاوت کے متعلق اعلان محبید اور آخار قوید بیان کرے اور اس میں آپ کی دلاوت کے متعلق اعلان محبید اور آخار قوید بیان کرے اور اس میں آپ کی دلاوت کے متعلق اعلان محبد کی وجہ سے موجو محبی کو آپ کی شخاعت عاصل ہوگی کی تیک شخاعت آپ کی مجبت کی وجہ سے حاصل ہو تی ہے۔ سوجو محبی کو آپ کا گھڑت ذکر کر آب اور آپ نے فرایا ہے گھڑت ذکر کرے گاور آپ نے یہ فرایا ہے کہ جو محبی جس سے محبت کر آب اس کا بکترت ذکر کر آب اور آپ نے فرایا ہے کہ خوان میں اس کا در آپ کی محبت سے محفل میلاد میں آپ کاذکر کرنے والے انسان ای کے ساتھ ہو آ ہے جس سے وہ محبت کر آپ کی مجبت سے محفل میلاد میں آپ کاذکر کرنے والے انسان ای کے ساتھ ہو آ ہے جس سے وہ محبت کر آپ کی محبت سے محفل میلاد میں آپ کاذکر کرنے والے انسان ای کے ساتھ ہو آ ہے جس سے وہ محبت کر آپ کی محبت سے محفل میلاد میں آپ کاذکر کرنے والے انسان ای کے ساتھ ہو آ ہے جس سے وہ محبت کر آپ کی محبت سے محفل میلاد میں آپ کاذکر کرنے والے انسان ای کے ساتھ ہو آ ہے جس سے وہ محبت کر آپ کی محبت سے محفل میلاد میں آپ کو آپ کو ایس کے ساتھ ہو آ ہے جس سے وہ محبت کر آپ کی محبت سے محفل میلاد میں آپ کا دور آپ کی محبت سے محفل میلاد میں آپ کو ایس کے ساتھ ہو آ ہے جس سے وہ محبت کر آپ کی محبت سے محفل میلاد میں آپ کی انسان کی محبت کر آپ کی محبت کر آپ کی محبت کر آپ کی محبت کر آپ کو محب کر آپ کی محبت کر آپ کی محبد کر آپ کی محبت کر آپ کی محبد کر آپ کی محبت کر آپ کی محبت

اور آپ پر بکترت صلوفة و ملام پڑھنے والے 'جنت میں آپ کے ساتھ ہوں سے۔ سواللہ تعالی ان مسلمانوں پر رحمت نازل فرمائے 'جنہوں نے مطاورالتبی پڑھیں کے ماہ مبارک کی راتوں کو عمیدیں بنادیا۔

(جوابرالبحار عسم ٢٠١٠-٢٥٩ ملما - مطبوعه داوالفكو عيروت ١١١١ه)

عید میلاد النبی مزید کی مشروعیت پر ہم نے شرح میج مسلم جلد الث میں ٹیر حاصل بحث کی ہے اور اس سورت کی آیت ۳ میں بھی العین کے بکارت حوالہ جات ہے میلاد شریف کی مشروعیت اور استجاب کو بیان کیا ہے۔ یہ امرواضح رہے کہ ہمارے زدیک محفل میلاد منعقد کرنامتحن اور مستحب ہواجب یا فرض نہیں ہے۔

الله تعالی کا ارشادہ: یے شک ہیں اس خوان کو تم پر نازل قربائے والا ہوں' پھر تم ہیں ہے جو مخض اس کے بعد کفر کرے گاتو میں ضرور اس کو ایساعذ اب دوں گاجو تمام جمان والوں میں ہے۔ کسی کو بھی نسیں دوں گا۔ (المائدہ: ۱۵)

اس آیت کامعنی یہ ہے کہ تم پر اس مائدہ کو تازل کرنے اور تم کو اس کا طعام کھلانے کے بعد جس نے میرے نبی میسیٰ علیہ اسلام کی نبوت کا انکار کیااور میرے انکام کی اطاعت کرنے ہے روگر دائل کی قویس اس کو ایساعذ اسپ دوں گاہو اس سے پہلے کسی کو نبیس دیا ہوگا۔ قبلاہ نے بیان کیاہے کہ ان کو بخسو ہو بنا دیا گیا تھا اور حضرت عبد اللہ بن محروبے کما سب سے زیادہ عذاب تنین تشم کے لوگوں کو ہو گا؛ منائقین کو 'اصحاب مائدہ جس سے کافروں کو اور آل قرحون کو۔

(جائع البيان برع من ١٨٦ مطبور داد الفكو ميروت ١٣١٥) ه)

نزول ما ئده كى كيفيت كى محقيق

الم ابو محر مبدالله بن محر المعروف باني الشيخ الامبداني المتوفى ٩٦ سود الى سند ك مات روايت كرت بن: سلمان الخيررمني الله عند بيان كرت بيس كه جب حواريون فيسلي عليه السلام سه ماكده (طعام ك خوان) كاسوال كياتو آپ نے اس کو سخت ناپند کیااور فرمایا اے لوگوہ اللہ ہے ڈرواور اللہ نے تم کوجو رزق حلال زمین سے دیا ہے' اس پر قناعت کرو اور آسان سے ماکدہ کاسوال ند کرد "کیونکہ اگر وہ تم پر نازل کیا گیا تو وہ تممارے رب کی طرف سے نشانی ہوگی۔ تم سے پہلے قوم عمود نے اپنے نمی سے نشانی کا سوال کیا تھا' وہ اس نشانی جی جھا کیے میجے' پھر اس نشانی کے نقاضے بورے نہ کرنے کی وجہ ہے وہ ہلاک کردیئے گئے۔جب ان کی قوم نے اصرار کیاتو حصرت میسلی نے نماز پڑھی اور بہت کرید و زاری ہے دعا کی: اے انتدا ہم پر آسان سے ماکدہ نازل قرما کو اللہ تعالی نے دو بادلوں کے درمیان ان پر سرخ وسترخوان نازل کیا ہوا سرائیل اس کو نازل ہو تے د کچه کر خوش ہو رہے ہتے اور حضرت ملیٹی خوف زدہ ہو کربار بار دعاکر رہے تھے 'اے انٹہ اس خوان کو رحمت ببانا اور اس کو فضب نہ ہناتا۔ معترت میسٹی دعاکر رہے تنے کہ وہ دسترخوان معترت میسٹی کے پاس آکر ٹھمرمی احواریوں کو اس ہے ایسی خوشبو آئی جیسی انہوں نے اس سے پہلے مجمی نمیں سو جمی تھی، معزت میلی اللہ کاشکر اداکرتے ہوئے سیدہ بی گر مجے ' یبود اس خوان کو دیکھے کر غیظ و فضب ہے جل مجے۔ حواری اس دسترخوان کے گر دبیٹھ مجئے ' دہ خوان ایک رومال ہے ڈ مکاہوا تھا۔ حضرت عینی نے فرمایا جو شخص سب سے زیادہ عمادت گزار اور اللہ کاشکر گزار ہوگا' وہ اس کو کھولے کا حواریوں نے کہایا روح اللہ ا آپ بی اس کو کھولنے کے لائق ہیں محضرت عینی نے دوبارہ د ضو کیا نماز پڑھی اور اللہ ہے رو رو کرا پیناور قوم کے لیے پر کت ک دعاکی 'چراس کو مکولا 'قواس میں بست بری بھٹی ہوئی چہلی تھی جس میں کانے نہیں تے اور اس سے تھی بسہ رہا تعااور اس کے مرد برهم كى سزيان تقيل اور نمك اور سركه تعالور باليج رونيان تقيل الك روني ير دينون اليك ير مجور اور باتيول ير انار تنه شمعون نے کمایاروح اللہ ایہ طعام دنیا کے طعام میں سے ہیا آخرت کے طعام میں ہے؟ آپ نے فرمایا یہ ندونیا کا طعام

ہے نہ آخرت کا اس کو اللہ نے اپنی قدرت سے پیدا کیا ہے۔ حضرت میسٹی نے قربایا تم بھم اللہ پڑھ کر کھانا شروع کرواور اپنے رب كاشكر اواكروا ووقم كو مزيد مطافرات كالمانون في كماياروح الله ايم جاجع بين كه آب بمين اس نشال بين أيك اور نشاني و كما كي - حضرت ميلي نے فريلا سمان الله اكيا تمادے ليے يد نشاني كاني تيس بولور نشاني كاسوال كرتے ہو۔ جب انهوں نے امرار کیاتو معزت میسیٰ نے اس مچھل ہے کمااے مجھلی اتو اللہ کے تھم ہے دوبارہ پہلے کی طرح زیرہ ہوجا کہ مجھلی اللہ کی تدرت ے زندہ ہو گئے۔وہ شیر کی طرح منہ میاڑنے کی اور اس کی آتھیں کردش کرنے لکیں اوروہ پھڑکتے گئی مواری خوف زدہ ہو کر بحائے گے۔ معرت میسی نے فرمایا پہلے تم نے نشانی کا مطالبہ کیا تھا" اب نشانی و کید کر ڈرتے کیوں ہو؟ پھر آپ نے مجیلی ہے فرمایا اے مچھلی اللہ کے تھم سے دویارہ پہلے کی طرح بھنی ہوئی ہو جا مجرانسوں نے کمااے روح اللہ ا پ کمانے کی ابتداء کریں۔ آپ نے فرمایا سمان اللہ اوی کھانے کی ابتداء کرے گاجس نے اس کامطالبہ کیا تھا۔ حواری اور ان کے اسحاب ڈرتے تھے کہ اس ك كمالے سے كميں وہ مثلہ نہ ہو جائي " يان يركوكي آفت نہ آجائے۔ تب معزت ميني نے فقراء اور الإجوں كو بالياكہ تم الله كر رزق اور اين نى كى دعائ كمنؤ الله ك على من شروع كرواور الله ك شكر ر فتم كرد عم ركوني آنت نبيس آكى سو اس مائدہ سے تیرہ سو مرددل اور مورنوں نے کھیا اور ان میں سے ہر مخض میر ہوگیا محضرت عیسی اور حواریوں نے دیکھاوہ طعام اس طرح تقااس میں کوئی کی نمیں ہوئی تھی۔ مجروہ مائدہ آسیان کی طرف افعالیا کیااور جس فقیرنے اس مائدہ سے کھایا تھاوہ فنی ہو کیا اور جس اباج نے کھلا وہ تکدرست ہو کیااور وہ لوگ آوم حیات ای طرح رہے۔ پھر حواری اور ان کے اسحاب اس میں ے ند کھاتے پر پٹیمان ہوئے اور آوم مرگ ان کے دل میں اس سے کھانے کی حسرت دی۔ چند دلوں بعد پار ماکدہ تازل ہوا۔ پار ہر جگہ ہے امیراور غریب محت منداور بہار 'چھوٹے اور بڑے' بنوامرا کیل اس پر ٹوٹ پڑے۔جب معزت میسیٰ نے بیدریکھا تو آپ نے یاری مقرر کردی۔ ایک دن ما کرہ نازل ہو آانور ایک دن نازل ند ہو آ عالیس دن تک میں معمول رہا ،جب تک دو کھاتے رہے ماکدہ ان کے سامنے رہتا اور جب وہ کھا بھتے تو ماکدہ آسان کی طرف اٹھ جاتا کوہ اس کو دیکھتے رہے 'حق کر وہ ان کی نگاہوں سے غائب ہو جاتا۔ پھرانٹہ تعالی نے حضرت عیمیٰ طیہ انسلام کی طرف وی کی کہ اس مائدہ سے بیمیوں افقیروں اور اپاہجوں کو کھانا جائے اور امیر نوگوں کو نہ کھنایا جائے۔ تب امیروں نے اس میں ٹنک کرنا شوع کر دیا اور اس کے متعلق بری باتیں پھیاا دیں اور حضرت میسیٰ علیہ السلام ہے کمامکہ آپ ہمیں مائدہ کے نزول کے متعلق مطمئن کریں کو تکہ بہت ہوگ اس میں شک كرتے بيں (كريه الله كى طرف سے ہے يا نسيس) معرت مينى نے فرمايا بخد اتاأگر تم نے اس بيں شك كياتو تم بلاك موجاؤ كے اور الله تعالى نے حضرت سيني عليه السلام كي طرف وحي فريائي كه هي نے اس شرط سے مائده مازل كياتھاك جو اس كے بعد كفركرے كا میں اس کو ایساعذاب دوں گاکہ دنیا ہیں ایساعذاب سمی کو نہ دیا ہو گا۔ معرت میسٹی نے عرض کیا'اے اللہ ااگر کو ان کو عذاب دے تو یہ تیرے بھے بیں اور اگر تو ان کو بخش دے تو تو بہت عالب اور حکمت دالا ہے۔ شام کو جب ٹیک کرنے والے بستروں پر اپنی مور تون کے ساتھ لیٹے تو ان کی اچھی صور تی تھیں اور رات کے آخری حصہ میں اللہ تعالی نے ان کو مسے کر کے خسو ہو بنادیا' م کو دہ کو ڑے اور گندگی کے ڈھیروں پر گندگی تلاش کرے کھلنے تھے۔ پھر باتی بنو اسرائیل خوف ندہ ہو کر حضرت میسیٰ کی اطاعت كرنے لك جب حضرت ميلي عليه السلام بابر نكلتے تو وہ خسن مو وو ثرقتے ہوئے آپ كے باس آت اور آپ كے بيرون ير كرتے اور زار و قطار روتے معزت ميلي ان جي سے ہر مخص كانام لے لے كر پكارتے ان بن سے ہرا يك اپنا سريا، يا تعااور بول نیں سکا تھا۔ آپ فرماتے میں تم کو اللہ کے عذاب ہے ڈرا یا تھا مویا میں پہلے سے یہ دیکھ رہاتھا 'وہ تمن دن تک ای طرح بلكتے رب اور ان كے كھروالے ان كوركي كرروتے رب اوكوں كے دل ان كاحل دكي كر بلمل كئے ' پرچوتے دن حضرت ميسى 俳件

علیہ السلام نے اللہ سے دعاکی کہ ان پر موت طاری کردے ' سوچو تھے روزوں مرکے اور زھن پر ان کامردہ جسم نہیں دکھائی دیا 'اللہ علی جانتا ہے کہ ان کے مردہ اجسام کمال گئے۔ البت ایہ ایساعذ اب تھاجس سے ان لوگوں کی جز کٹ منی اور روئے زین پر ان کا ہم ونشان باتی نہیں رہا۔

(کاب النام میں دور اور الکتب العلمی میں ۱۳۹۷-۱۳۹۳ معلوی وار الکتب العلمی ایروت ۱۳۱۳) ہے) اس مدیث کو بعض مقسرین نے اختصار ہے اور بعض نے تنصیل ہے بعض نے اپنی سند ہے اور بعض نے بغیر سند کے

مان کیا ہے۔ ان کی تنعیل حسب ذیل ہے:

(ذاد المسير على المسهد المسير كير على المسهد المجامع المنام الترآن على المسير المسير على المسير على المسير على المسير على المسير على المسير الكبير على المسيد المسيد

علامہ سیوطی نے اس صدیت کو عکیم ترقدی کی نوادر الاصول سکے توالے ہے بھی نقل کیا ہے۔ یس نے اس کی چاروں جاندیں دیکییں ان جس مدے نوسے نہیں ہے۔ ایم رازی علامہ سمرقدی اور علامہ قرطبی نے اس صدی کو انتہار کے ماتھ ذکر کیا ہے ' یقی سب نے پوری تفسیل سے ماتھ اس کو نقل کر دیا سے سامہ ابوالحیان اندلس نے نوری تفسیل سے ماتھ اس دوایت کے ذکر سے اعراض کر آبوں ' کیو کہ اس دوایت بیس کوئی ایسالفظ ہے۔ علامہ ابوالحیان اندلس نے نکھاہے کہ جس اس دوایت کے ذکر سے اعراض کر آبوں ' کیو کہ اس دوایت بیس کوئی ایسالفظ نمیں ہے جس پر قرآن جمید کی آب دلالت کرتی ہو اور سب ہے اچھی وہ دوایت ہے جس کو ایام ترقدی نے نقل کیا ہے کہ ماکدہ آب میں ہوشت اور روئیاں تھی۔ بنواسرا کیل کویہ تھم دیا گیا تھا کہ اس جس ہے بہاکر نہ رکھیں اور خیات آبان ہو اور سام ترقدی کی دوایت کی توب اور دوئیاں تھی۔ بنواسرا کیل کویہ تھم دیا گیا تو ان پر عذاب نازل ہوا اور سلمان الخیری مفصل نہ کریں انہوں نے اس مان الخیری مفصل المام ترقدی کی دوایت کا مفاویہ ہے کہ بنواسرا کیل نے بور بھی مصرت بھیٹی علیہ اسلام کی توب بھی گیک کیا اور یہ کفرے تو

ا المان کا مفاویہ ہے کہ انہوں نے اس ما کدہ کے زول کے بعد بھی حضرت بھیٹی علیہ اسلام کی نبوت میں تک کیااوریہ کفرہ تو ان پر عذاب نازل ہوا۔ لیکن ترفیدی کی مدے محاح میں ہے ہور اور مدے مرفوع ہے اور اس مدے کی سند میں وہب بن منبہ ہیں یہ اسرائیلی عالم جھے 'بعد میں مسلمان ہو گئے تھے۔ سویہ مدے اسرائیلیات میں ہے ہے' اس لیے ہمارے زویک بھی اس کے مقابلہ میں اہم ترفری کی روایت ہی کو ترجع ہے' ہم نے صرف جھیق مقام کے لیے اس روایت کو بوری تفعیل کے ساتھ اس کے مافذ کے ساتھ ورج کیاہے' واللہ تعالی اعلم بالصواسیہ۔

یہ واضح رہے کہ عیمائیوں کی کتابوں میں زول مائدہ کاذکر نمیں ہے 'نہ وہ اس دن کو حید مناتے ہیں 'لیکن قرآن مجید می اللہ تعالی کاار شاد ہے کہ میں مائدہ کو نازل فرائوں گااس لیے ہمارے نزدیک جبت قرآن اور صدیث ہے 'میسائیوں کا نقل نہ کرنا ہمارے نزدیک جبت شمیر ہے۔

علامد ابوعبدالله محمرين احد مألى قرطبي متوفى ١٧٨ مد للصع بين

اس (سلمان الخير) كى مديث بن بحث كى محتجائش ب اوريه سند كے لحاظ سے ميح تبيں ب- حضرت ابن مہاں اور ابوعبد الرحمان سلمی نے کما اكره كا طعام روٹى اور مجملى تھی۔ حضرت قاربن يا مراور تاؤه نے كما اكره كا طعام روٹى اور مجملى تھی۔ حضرت قاربن يا مراور تاؤه نے كما اكره آسان سے نازل ہو تا تھا اور اس میں جنت کے پہل تھے اور وحب بن منبہ نے كما اللہ تعالى نے جو كى دوئياں اور مجملياں نازل كى تحيس اور يہ تمن اقوال الم

ترزی کی صدیث کے خلاف ہیں۔ اس میں نہ کور ہے وسول اللہ طبیع نے قربلیا آسمان سے ماکدہ نازل ہوا اس میں روٹیاں اور گوشت تھااور ترزی کی صدیث ان اتوال ہے اولی ہے۔

(الْجَامِع لاحكام القرآن بيزه اص ٢٨٤-٢٨٦ مطبوعه داد الفكر أبيروت)

وسترخوان اور ميزير كھانا كھانے كا شرعي تھم

سلمان الخير كى معت عن مائمه كابيان ب أور اس عن بيذكور ب كدوه سنوه (چزے كا دسترخوان) تها وه كوئى خوان (ميز)

دس سى جس كے بائے ہوں اور تى مختیج اور عربوں كائمه سنوه (چزے كا دسترخوان تها) تحيم ترفدى نے اپنى سند كے ساتھ صخرت انس دستى الله معت مدائية بيالى عن اور ته بحى آپ صحرت انس دستى الله معت مدائية بيالى عن اور ته بحى آپ كے ليے بياتى بياتى على اور ته بحى آپ كے بياتى بياتى كائى گئے۔ قاده نے معزت انس سے بوچھا پھروه كى چزر كھانا كھاتے تھے ؟ انهوں نے كرا، سنوه پر كھانا كھاتے تھے اسنوه برا كے ايم ترفدى نے كماخوان ايك فى چزب جس كو محيوں نے ايجاد كيا ہے ، عرب سنوه پر كھانا كھاتے تھے اسنوه بجزے كو سترخوان كو مائره كے جس اور خوان جو كى يا ميز كو كتے جس اور خوان جو كى يا ميز كو كتے ہيں اور خوان جو كى يا ميز كو كتے ہيں اور خوان جو كى يا ميز كو كتے ہيں اور خوان جو كى يا ميز كو كتے ہيں اور خوان جو كى يا ميز كو كتے ہيں اور خوان جو كيا ہم اور كہڑے كے وسترخوان كو مائره كھانا باد شاہوں كا فعل ہے اور كہڑے كے وسترخوان ير كھانا باد شاہوں كا فعل ہے اور كہڑے كے وسترخوان ير كھانا باد شاہوں كا فعل ہے اور كہڑے كے وسترخوان ير كھانا باد شاہوں كا فعل ہے اور كہڑے كے وسترخوان ير كھانا باد شاہوں كا فعل ہے اور كہڑے كے وسترخوان ير كھانا جو يوں كا طرفقہ ہے اور ير كھانا مور جو ان يور كھانا عرب ہيں سات ہے۔

(الجام لاحكام الترآن " 17 م ٢٨٨-٢٨٥ مطبوع داو الفكو " بيروت)

دَاذْقَالَ اللَّهُ يُعِيسَى ابْنَ مَرْبِهُ ءَ انْتَ قُلْتَ لِلنَّا سِاتَّخِذُونِي

ادرجب الله فرط في اس مين ابن مريم ؛ كي تم في وكان سه بركها تقا كر مي ادد ميرى مال كو التدك

حَافِقَى الْهَيْنِ مِن دُونِ اللهِ عَالَ سُخِنكَ مَا يَكُونَ إِنَّ اللهِ عَالَ سُخِنكَ مَا يَكُونَ إِنَّ انْ

اوا دو خدا بنا لو ؛ ده وق كري ك قرباك بعد يرسه يا و باز بني كري ده بات

اقُوْلَ مَالَيْسَ لِي بِحِقْ إِن كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَلُ عَلِمْتُهُ لَعُلْمُ

كول جل كا مجه فق بنين ہے ، اكري نے دالغرض، يركما بوتا تو تر اسے مزدرجانا ، توان باتوں كر

مَا فِي نَفْسِي وَإِلَّا عَلَمُ مَا فِي نَفْسِكُ إِنَّكَ انْتَعَ عَلَمُ مَا فِي نَفْسِكُ إِنَّكَ انْتَ عَ لَامُ

مانا ہے جومیرسے دل میں بیں ادر می ان چیزوں کو بنیں مانتا جوتیرسے عمیں بی . بیٹ تو بی سب غیرل کا

مِيانِ القرآن

أَمَاوُلُ ا زُمِيزُلُ أَلَا بِمَ كِلَّمُ اللَّهِ مِن سبت ال

لے بیر جائز نہیں کہ میں وہ بات کوں جس کا جھے حق نہیں ہے۔ اگریس نے (بالفرض) یہ کما ہو آتو تو اے ضرور جان تو ان باتوں کو جانا ہے جو جرے ول میں موریس ان جزول کو میں جانا

٢

غيان القر أن

جو تیرے علم میں ہیں' بے شک تو بی سب فیبوں کا جانے والا ہے۔(المائدہ:۱۱) اس اشکال کا جو اب کہ عیسائی تو حضرت مریم کو خد انہیں کہتے اور اللہ کی الوہیت کی فغی نہیں کرتے

الله تعالى نے معرت عینی علیہ السلام ہے یہ سوائی فرمایا کیا تھے نے لوگوں ہے یہ کماتھاکہ جھے اور میری مل کو اللہ کے سواوو خد اینالو اس سوال کی کیا حکمت تھی؟ اس کا بواب یہ ہے کہ جن لوگوں نے معرت عینی علیہ السلام اور ان کی مال کو فدا بنالیا تھا؟
اس آیت ہے ان کو زجر و تو بچ کرنا ان کا رو کرنا اور ان کی ذمت کرنا مقسود ہے "کیو تکہ جب معنرت عینی علیہ اسلام اس سے انکار کریں گے تو ان لوگوں کی واضح تکذیب ہوگی۔ نیز اس سوال وجو نب ہے یہ بناتا تھا کہ عیدائیوں نے معنرت عینی علیہ اسلام کے آسمان پر اٹھائے جانے کے بعد ان سکہ دین کو برل دیا اور معنرت عینی علیہ السلام کے متعلق الی چز کا دعویٰ کیا جس کے وہ خود تاکل نہ تھے۔

اگرید اعتراض کیا جائے کہ نصاری نے معرت مریم کو خدا نہیں کما کور ندید ان کا عقیدہ ہے تو پھرید آبت کس طرح ملاق ہوگی کیا تم نے یہ کما تھا کہ ججے اور میری مل کو خدا بنالو؟ اس کا جواب یہ ہے کہ جرچند کہ انہوں نے مراحہ معرت مریم کو خدا نہیں کما؟ نیکن ان کے اقوال سے یہ بات لازم آئی ہے کیو تکہ وہ کہتے ہیں کہ معرت مریم نے کسی انہاں کو جنم نہیں دیا ' انہوں نے خدا کو جنم دیا ہے اور بیٹا مل کا ہر اور مل کی جنس ہے ہو تا ہے 'تو جب بیٹا خدا ہے تواس سے لازم آیا کہ اس کی مال بھی خدا ہو۔ کویا وہ مرامتا حضرت میری کوخد اس کے جی اور الترا آن کی مل کو بھی خدا کہتے ہیں 'اس کی نظیریہ آیت ہے:

اِنْ عَدُواْ اَحْبَارَهُمْ وَرُهُبَانَهُم الْهَا الْمِنْ وَوْلِ اللهِ النول في الماء اورورويش كوالله كرواانارب اللّه وَالْمَرسَيْحَ النّ مَرْيَمَ (السويه ٢٠٠٤) بالإادر كابن مريم كوجي.

دو سراا عمران سیہ ہے کہ اس آیت میں فرمایا جھے اور میری مال کو اللہ کے سوارو خدا بنالو حالا نکہ عیسائیوں نے اللہ تعالیٰ کی الوہیت اور خدائی کی مجھی تھی ضمیں کی۔ خود قرآن مجید میں عیسائیوں کے متعلق ند کور ہے:

· اس کا جواب سے کے میسائی میر کئے تھے کہ صفرت میسی علیہ السلام اور صفرت مریم کے ہاتھوں سے جو مجزات طاہر موسے آن کے خالق صفرت میسی اور حضرت مریم میں۔ اس لحاظ ہے ان سے یہ نقل اور دکایت کرنا سمج ہے کہ جمیاتم نے لوگوں سے یہ کماتھا گر جمھے اور میری ماں کو اللہ کے سوارو خدا بھالو"۔

دو سراجواب سے کہ ہرچند کہ وہ اللہ کے خد الور معبود ہونے کی نفی نہیں کرتے ہے ، لیکن وہ اللہ کی عبادت کے ساتھ

حضرت مینی اور حضرت مریم کی عبادت بھی کرتے تھے۔ اب اللہ تعاقی نے اس پر متغبہ فربایا ہے کہ جب اللہ کی عبادت کے ساتھ فیراللہ کی عبادت بھی کی جانے گی تو کہ اللہ تعناقی جناستی عباد و وی عبادت اللہ کی عبادت اللہ کی عبادت کے ساتھ دو سروں کی عبادت بھی کی جانے تو پھروہ اس کی عبادت کے ساتھ دو سروں کی عبادت بھی کی جائے تو پھروہ اس کی عبادت سے ساتھ دو سروں کی عبادت بھی کی جائے تو پھروہ اس کی عبادت نمیں ہوگی تو حقیقت میں عبسائیوں نے حضرت عینی لور حضرت مزیم کو معبوہ بنا اور اللہ تعالی کو معبود نمیں بنایا 'اس لیے فرایا اے مسیلی این مریم اکیا تم نے لوگوں سے یہ کھا تھا کہ جمید اور میری مل کو اللہ کے سوادو فد ابنالوا حکم کا کمال اوب سے اپنی پراء ت کرنا

حضرت عینی علیہ السلام نے جواب علی عرض کیا تو ہمان (پاک) ہے میرے لیے یہ جائز نہیں کہ علی وہ بات کموں جس کا جھے حل نہیں ہے۔ حضرت عینی علیہ السلام نے جواب علی یہ نہیں کماکہ عیں نے یہ بات نہیں کی ایک آیک قاعدہ کلیہ بیان فربایا:

کہ عین حق کے سواکوئی بات نہیں کہ تااور اس کا تھے یہ ہے کہ جو تکہ یہ بات حق تبیں ہے ہیں لیے عیں نے نہیں کی اور کمل اوب ہے اس کو الله تعلق کم پر چھوڑ ویا کہ اگر عیں نے ایرا کما ہوتا تو تھے علم ہوتا کہ تک حقی میرے متعلق علم ہے اور عی ہے۔

تیرے متعلق علم نہیں ہے ایا اس کا سنی ہے تو میرے فیب کو جانتا ہے اور عین تیرے فیب کو نہیں جانتا کیا تھے میری دنیا کے متعلق علم نہیں ہے کہ ایکھے میرے اقوال اور افعال کا علم ہے اور جھے تیرے اقوال متعلق علم نہیں ہے کہ تی تھے میرے اقوال اور افعال کا علم ہے اور جھے تیرے اقوال کا علم نہیں ہے کہ اور تھے السلام کی ابتداء اور عین کہ ایکھ کے طور پر فربایا ہے کہ انڈ تو تی سپ فیبوں کا جائے والا ہے۔ معرت کی تاب کی علیہ السلام کے اس کی خرف جو شریک کی نہیت کی حمل ہے اس کی خرف جو شریک کی نہیت کی حمل ہے اس کی خرف جو شریک کی نہیت کی حمل ہے اس کی خرف کے ایکھ کے کہ انڈ تو تالی کی طرف جو شریک کی نہیت کی حمل ہے اس کی خرف کی حمل کی نہیت کی حمل ہے اس کی خرف کی حمل کی نہیت کی حمل ہے اس کی خرف کی حمل کی نہیت کی حمل ہے اس کی خرف کی حمل کی نہیت کی حمل ہے اس کی خرف کی خرف کی حمل کی نہیت کی حمل ہے اس کی خوالے کے دور کر کی کہ دور کی کہ کر کی کی خرف کی حمل کی نہیت کی حمل کی نہیت کی حمل کی خوالے کہ دور کی کو میال کی خرف کی حمل کی نہیت کی حمل کی کہ کی کہ دور کی حمل کی کہ کہ دور کی کہ کی کہ دور کی کہ دور کی کہ دور کی کہ دور کی کی کھر کی کو میں کی کی کو خوالے کی حمل کی کی کی کہ دور کی کی کہ دور کی کھر کی کہ کی کہ دور کی کھر کی کی کھر کی کی کھر کی کہ دور کو اس کی کی کھر کی کھر کی کہ کی کھر کی کھر کی کھر کی کہ دور کی کھر کے دور کے کہ کھر کی کھر کھر کی کھر کی کھر کی کھر کی کھر کی کھر کھر کی کھر کھر کھر کی کھر کی کھر کی کھر کی کھر کی کھر کھر کی کھر کھ

الله تعالى كافرشاوسى: على في ان من وى كما يت كن كالوف تكم موا قاكه (مرف) الله كى مبوت كروبو ميرا رب ب اور تهارا رب ب اور ش ان راى وقت تك نكسان قادب تك على ان على ربا كردب و في محصر آسان مر) افعاليا لو وى ان ركسان تعااور تو جرج ركواد ب (الما كود عه)

حضرت علیلی کے آسان پر افعائے جانے پر ایک اشکال کاجواب

اس آنت سے بہ ظاہریہ معلوم ہو تا ہے کہ حضرت میسی علیہ السلام وفات یا جے ہیں۔ کو تکہ نوفسی کامعن وفات ہے اور اس کا ظاہری معنی ہے کہ جب تو نے بھے وفات وے دی تو تو ی ان پر تکمبان تعل کین یہ سے تھے نہیں ہے دخترت میسی علیہ السلام کے آئان پر اٹھائے جانے کے متعلق جو اصاب ہیں وہ صد تو اتر کو پہنی ہوئی ہیں اور انتہاء، ۱۵۸ک تغیر میں ہم نے بست زیادہ اصاب ہیں کی ہیں۔ اسلام کے آئا کی اسلام کے اسلام کا اسلام کے اسلام کا اسلام کے اسلام کے اسلام کے اسلام کے اسلام کی اسلام کے اسلام کے اسلام کے اسلام کی اسلام کے اسلام کی اسلام کی اسلام کی اسلام کے اسلام کے اسلام کو اسلام کی اسلام کو اسلام کی اسلام کی اسلام کی اسلام کا کو اسلام کی کار کی اسلام کی کار کی کار کی کار کی کو اسلام کی کار کار کی کار کی کار کی کار کی کار کار کی کار کی کار کار کی کار کی کا

تومی کا فوہ وفاہ ہے۔وفاء کا معنی ہے کی چڑکو پر راکرنا یا کی چڑکا تمام دکال کو پنچنا موت کو وفات اس لیے کئے ہیں
کہ اس میں مرت احیات پوری ہو جاتی ہے۔ قرآن مجید میں ہے واو فوا الکیل (الا نعام: ۱۵۳) پورا پورا می کر دو واو فوا
بعدی (البقرد: ۳۰) مجمد ہے ہوئے حمد کو پورا کو و و فیدت کل مفس ما کسبت (آل حمران ۱۵۳) ہر نفس کو
اس کے اعمال کا بورا بول دیا جائے گا۔

قرآن مجید میں توفی کالفقا موت کے لیے بھی آیا ہے فور فیٹر کے لیے بھی: اَللّٰهُ یَنْدَوْفِی اَلْاَمْفُسَ جِیْنَ مَوْتِبِهَا وَالَیْنِی لَنَمْ الله موت کے وقت دوجوں کو قبض کر ایتا ہے اور جن کی تَمُتُ فِئْ مُنَامِهَا (الرمر:۳۲) موت نعی آئی ان کی فیز کے وقت۔ وی ہے جو رات کے وقت تہاری روضی تبض کر بیتا

وُهُوالَّادِي يَتُوفَّكُمُ إِلا لَيْلِ (الانعام:١٠)

اوراس آیت ش موهی کامعن بورابوراافعالیا ب جیماک بخرت اطوعت می بیان کیاگیا ب اس آیت می نونی کامعنی موت مراد لینے پر مرزائی حسب دیل صدیت سے استدالل کرتے ہیں۔

الم مسلم بن تجاج فشهدى متونى الاحد روايت كرح بن

حطرت ابن عباس رضی اللہ عظما بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بیجید نے ہمارے ورمیان کورے ہو کر تھیں کرتے ہوئے وہ ختون ہو گے اللہ نے موادر فربایا: اے نوگوائم اللہ کی طرف جمع کے جاؤ کے وہ آنمانیکہ تم نظے ہوا نظے بدن اور فیر مختون ہو گے اللہ نے فربایا ہے جس طرح ہم نے بہل بار مخلوق کو پید آکیا تھا ہم اس ملات میں اس کو لوٹا کمی گئے بہاراو عدو ہاور ہم بے شک اس کو لوٹا کمی گئے بہارالانجیاء ہما) اور سنوا محل میں سب سے پہلے حضرت اور ایس علی الساام کو لیاس پستایا جائے گا اور سنوا میری است میں سے چند لوگ لائے جائمیں گے۔ ان کو بائمیں جائے ہیں جائے ہو دین میں کو ان میں کو اس مرح کوں گا ہوں مو کہ اس طرح کوں گا ہے میرے رب ایہ میرے اسماب ہیں 'و میں اس طرح کوں گا ہیں 'و میں اس طرح کوں گا ہیں' و میں اس طرح کوں گا ہیں خوات وے جس طرح اللہ کے عبد صلح نے کما تھا میں ان پر ای وقت تک نگسیان تھا جب تک میں ان میں دہا' پھر جب تو نے مجھے وفات وے دی اور کو ان میں گوا ہو تھا۔ اللیہ الفائدہ میں ان پر ای وقت تک نگسیان تھا جب تک میں ان میں دہا' پھر جب تو نے تھے وفات وے دی ان پر گواہ تھا۔ اللیہ الفائدہ میں ان جو ایس کو ایس کو ایس کو ایس کے تھے۔ اس مرح اللہ کو ایس کو ایس کو ایس کو کرے تھے۔ اللیہ الفائدہ میں ان میں وہ تھے ہے کہ ایس کو ایس کو ایس کو کرے تھے۔ کی ان ہوں کو ایس کو کرے تھے۔ اس کو کرے تھے۔ کو کرے تھے۔ اس کو کرے تھے۔ کو کرے تھے۔ کو کرے تھے۔ کو کرے تھے کرے تھے۔ کو کرے تھے کرے تھے کرے تھے۔ کو کرے تھے۔ کو کرے تھے کرے تھے۔ کو کرے تھے کرے تھے کرے تھے۔ کو کرے تھے کرے تھ

(صمح مسلم 'الجنت' ۵۸ ' (۲۸۱۰) ۷۰۱۷ ^{اسمی}ح البخاری ' رقم الحدیث: ۵۲۲ ^۱ سنن ترزی ' رقم الحدیث: ۳۲۱۷- ۲۳۲۳ ' سنن زبال ' رقم الحدیث: ۲۰۸۷)

اس مدعث میں رسول اللہ علیج نے سورہ ماکدہ کی اس آیت کو نقل فرملیا ہے اور اس آیت میں تبو میں وفات کے معنی میں ہے۔ المذا حضرت عینی علیہ السام وفات بی سب مرذائی کتے ہیں اس ہے عابت ہواکہ اس آیت میں وفات کے معنی میں ہے۔ المذا حضرت عینی علیہ السام وفات پہنچ ہیں ہی ہوگا ہی تاریخ ہیں۔ اور حضرت میٹی علیہ السلام جب نبو فیسندی فرائی ہی ہوگا ہی تو ان کے حق میں اس کا معنی وفات نہیں ہوگا کے نکہ اس معنی کے فلاف ہو گئے ہیں۔ اور حضرت میٹی علیہ السلام جب نبو فیسندی فرائی ہی ہوگا ہے کہ آس معنی کے فلاف ہو گئے اور حضرت میٹی علیہ السام جب نبو فیسندی فرائی ہوگا ہے کہ آس معنی ہوگا ہے کہ آس کا المقالیا۔ بعض او قات فاعل کے اختلاف ہے فعل کا معنی آسان پر اٹھا لیا گیا گیا ہے۔ ملی اللہ کا معنی ہو جا آ ہے۔ ملی اللہ کی استخفار کیا معلی السامون کا معنی ہو تو اس کا معنی تو فیسندی کسی قواس کا معنی ہو تو آخے گئے آسان پر اٹھا لیا جبکہ ایم پہلے بتا چکے ہیں ہو تو آخے گئے آسان پر اٹھا لیا جبکہ ایم پہلے بتا چکے ہیں کہ تو تو تو تو تا تائیں پر اٹھا لیا جبکہ ایم پہلے بتا چکے ہیں کہ تو تو تا تائیں پر اٹھا لیا جبکہ ایم پہلے بتا چکے ہیں کہ تو تو تا تائی پر اٹھا لیا جبکہ ایم پہلے بتا چکے ہیں کہ تو تو تا تائی کی ان موت اور وفات فیل ووقات فیل کے اور وفات کے اور وفات کے اور وفات کی اور وفات کے اور وفات کے اور وفات کی اور وفات کے اور وفات کے

الله تعالی کاارشاد ہے: اگر تو ان کو عذاب دے تو ہے شک یہ تیرے بندے میں اور اگر تو ان کو بخش دے تو تو غالب ' بری حکمت دالا ہے۔ (الما کدہ: ۱۸)

بری مساور اسب استان کے دھنرت عیسیٰ علیہ السلام نے مشرکین کی شفاعت کی اس اعتراض کا جواب کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام نے مشرکین کی شفاعت کی سیاتی و سباق سے میں معلوم ہو تا ہے کہ حضرت عیمیٰ علیہ السلام کی یہ دعاان لوگوں کے متعلق ہے جنہوں نے تپ کے

ئىپانانائر ان

آ مان پر اٹھائے جانے کے بعد آپ کو اور آپ کی بھی کو معبود عالیا تھا کی کھے سلسلہ کلام ان بی کے ساتھ مراوظ ہے اور وہ اوگ مشرک بتے اور مشرکوں کے متعلق انڈ تعالی نے قربایا ہے کہ وہ ان کو تعیم بخٹے گا۔ پھر مطرت عیمیٰی علیہ السلام نے ان کی شفاعت کیے گئے گئے میں بخٹے گا۔ پھر مطرت عیمیٰی علیہ السلام نے ان کی شفاعت جائز نہیں ہے؟ اس کا جو اب بیہ ہے کہ اگر تو ان کو عذاب دے تو بے شک وہ تیماری کی کو تک مشرکوں کے لیے شفاعت جائز نہیں ہے؟ اس کا جو اب بیہ ہے کہ اگر تو ان کو عذاب دے تو بے شک وہ تیماری میں مغیران کی طرف راجح ہے جنہوں نے موت سے پہلے اپنے کفرے توب کرنی تھی۔

دو سرا جواب بیہ ہے کہ حضرت میٹی علیہ السلام کی ہے دعا قیامت کے دن کے بارے بھی تسی ہے' بلکہ آسان پر انھانے جانے کے بعد ہے اس تقویر پر اس آجت کا معتی ہے ہے کہ اگر تو ان کو کفر پر باتی دکھے' متی کہ یہ مرجا کی اور تو ان کو عذاب دے تو بہت ہے ہیں اور اگر تو انہیں توب کی تو نی اور اپنی توجید اور اطاعت کی عدایت دے' بھر تو ان کو بخش دے تو بہت عالی ہے تیرے بندے ہیں اور اگر تو انہیں توب کی تو ایٹ افعال بھی تھیم ہے جس بھی چاہتا ہے گرائی پیدا کر تا ہے اور جس میں چاہتا ہے گرائی پیدا کر تا ہے اور جس بھی چاہتا ہے گرائی پیدا کر تا ہے اور جس میں چاہتا ہے گرائی پیدا کر تا ہے اور جس میں چاہتا ہے گرائی پیدا کر تا ہے اور حکمت دور المائی مناب ہوگیا کہ اور ساگر تو ان کو بخش دے'' کے ماتھ' تو غالب اور حکمت دالمائی مناب ہو اور فقور و جیم مناب قبیل ہے۔

العزيزا ككيم اور الغفور الزحيم كافرق

اہم رازی کے والد میاہ الدین عمر رازی رحمہ انذ نے فرمایا اس آیت کے آخر میں العزیز الحکیم الفور الرحیم ہے اولی ہے۔ کو نکہ خفود رحیم البی صفت ہے جو ہر محاج کے سعفرت کو وابب کرتی ہے اور عزیز رحیم البی صفت ہے جو ہرا یک کے لیے معفرت کو واجب نسیں کرتی آگی تک عزیز ہونے کا نقاضا یہ ہے کہ وہ عالب ہے جو چاہے کرسے آگوئی اس کو رو کئے والا نسیں ہے اور جب وہ عزیز ہواور ہرا تقبار سے غالب ہو 'گھراس کا بخش دینا اس کا بہت براکرم ہے اور بعض علماء نے یہ کہا کہ آگر وہ خفور رحیم کتے تو یہ مقباد ہو تا کہ وہ شفاعت کر رہے ہیں اور جب انہوں نے العزیز الکیم کماتو معلوم ہواکہ انہوں نے یہ معالمہ بالکا یہ اللہ کے میرد کردیا ہے۔

فساتی مومنین کے لیے نبی جیر کی شفاعت

اس آیت ہے یہ استدال کیا گیا ہے کہ ہمارے ہی سیدنا کھر بھی گناہ کیرہ کے مرتجمین کے لیے شفاعت فرہ کس کے ایک تک مطرت میسی علیہ السلام نے جو یہ کما اگر تو ان کو عذاب دے تو یہ جرب بررے ہیں یہ نیکو کاروں کے حق میں نہیں فرہ نیا تھا کیو نکہ دو عذاب کے سزاوار نہیں ہیں اور نہ علیہ دعا کفار کے حق میں ہے کیو نکہ ان کا یہ تول "اگر تو ان کو پخش دے تو تو ہمت عالب بہت حکمت والا ہے "کفار سے لائق نہیں ہے "کیونکہ کافروں کی بخشش نہیں ہو سکتے۔ پس واضح ہوا کہ حضرت میسی علیہ السلام کی یہ شفاعت ان مو منجن کے ہم تجمیل علیہ السلام کی یہ شفاعت ان مو منجن کے ہم تجمیل کیا کہ کی شفاعت یہ طریق اول قابت ہوگی اور صحح حدیث میں ہے کہا کہ کی شفاعت یہ طریق اولی قابت ہوگی اور صحح حدیث میں ہے کہا کہ نبی مرتجم حدیث میں ہے کہا کہ نبی مرتجم حدیث میں ہے کہا کہ بی مرتجم حدیث میں ہے کہا کہ بی مرتجم حدیث میں ہے کہا کہ بی مرتجم حدیث میں ہو گئی امت کی شفاعت کے اس آ بیت کو پڑھا۔

الم مسلم بن حجاج قشيدى متونى ١٠١٥ ووايت كرت بين

حضرت عبدالله بن عمروبن العاص رمنی الله عنما بیان کرتے ہیں کہ نی مین پہر نے حضرت ابراہیم علیہ السلام کے اس قبل کی خلات کی اے میرے رہ ان بتوں لے بہت ہے لوگوں کو محراہ کر دیا موجس نے میری پیروی کی وہ ہے شک میرا ہے اور جس نے میری نافر مانی کی تو یقینا تو بہت الحالم نے دالا ہے والا ہے (ایرانیم اسم) اور میسی علیہ السلام نے کہ افکر تو ان کو عذاب دے تو تو بہت عالب مہت حکمت والا ہے (اندائدہ الله میں اور فکر تو ان کو بخش دے تو تو بہت عالب مہت حکمت والا ہے (اندائدہ الله میں اور فکر تو ان کو بخش دے تو تو بہت عالب مہت حکمت والا ہے (اندائدہ الله میں اور فکر تو ان کو بخش دے تو تو بہت عالب مہت حکمت والا ہے (اندائدہ الله میں اور فکر تو ان کو بخش دے تو تو بہت عالب مہت حکمت والا ہے (اندائدہ الله میں اور فکر تو ان کو بخش دے تو تو بہت عالب مہت حکمت والا ہے (اندائدہ الله الله الله میں اور فکر او ان کو بخش دے تو تو بہت عالم الله میں دے ان اندائدہ الله الله میں اور فلا میں اور فلا میں اور فلا ہے (اندائدہ الله الله میں اور فلا ہے دائد اندائدہ الله میں اور فلا ہے دائد الله میں اور فلا ہے دائد الله میں دے تو میں اندائدہ الله میں اور فلا ہے دائد کہ دیا ہے دیا ہے دیا ہے دائد ہے دائد ہا کہ دیا ہے دائد ہے دائد ہے دیا ہ

باتھ باند کے اور کمانے اللہ امیری است امیری است اور آپ رونے لگے۔ اللہ عزوجل نے کمااے جرا کیل ام منظم کے پاس جاؤ اور تمارا رب خوب جلنے والا ب ان سے مجموان کو کیا چزراناتی ہے؟ جرا کیل علیہ العلوة واسلام آب کے اس آئے اور آپ سے سوال کیاتو رسول اللہ چھیر سے ان کو خبردی اللہ تعالی نے فرملیا اے جبرا کیل امحر پھیر کے پاس جاؤ اور کمو ہم آپ کو آپ کی امت کے متعلق راضی کردی کے اور رنجیدہ ہونے نسی دیں گے۔

(محج مسلم اللايمان ۴۸۹(۲۰۲)۴۸۹ سنن كبرى للنسائي ارقم الحديث ۱۳۶۹)

اس مدیث سے معلوم ہواکہ نی مجھے اپنی امت پر بہت شغیق تھے اور امت کی بھلائی اور بہتری میں کوشاں رہے تھے۔ اس مدعث سے مید ہمی معلوم ہواک ہاتھ بلند کر کے دعاکر استخب ہے اور اس مدعث میں اس امت کے لیے بہت عظیم بشارت ہاوراس میں امت کی منفرت کی بعد بری امید ہاور اس سے یہ بھی معلوم ہو آ ہے کہ اللہ تعالی کے زو یک نی وہا کی مت وزت اور وجابت ہے اور حفرت جرائیل کو نی جہی کے پاس جمعے سے آپ کے شرف اور مرتبہ کا اظمار مقصود ہے۔ یہ مدعث اس آیت کے موافق ہے۔ مختریب آپ کارب آپ کو اتادے گاکہ آپ کو رامنی کردے گا۔ (الفنی:۵) اللہ اکبرا مارا جمان الله كو رامني كريا ہے اور الله اپ كو رامني كريا ہے۔ آپ كو رامني كرنے كى بشارت دينے كے بعد يه فرمايا الله آپ كو ر نجیدہ اونے نہیں دے گا کیونکہ بعض استوں کو بخش دے ہے رامنی کرنامختن ہو سکتاہے الیک اگر آپ کا ایک امتی ہی دوزخ میں رہ کیاتو آپ رنجیدہ ہوں کے۔ کویا کہ افتد تعلق نے فرمایا ہم آپ کو رنجیدہ ہونے نمیں دیں مے اور آپ کے تمام امتیوں کو دوز لخ ہے تجات دے دیں گے۔

الله تعالى كاارشاد الله فرائ كايه وه دن ب جس من يون كوان كانج نفع بنجائ كاان كے ليے جنتي بين جن كے بيتے سے دريا سے بيل وہ ان على بيشہ بيش ريل كے الله ان سے رامنى بوااور وہ اللہ سے رامنى بوئے۔ كى سب سے برى كلمياني ب- أسانول ومينون اورجو وكيوان س بان كى سلطنت الله ى كى مليت من ب اور ده بريزر قادر ب-

(الباكردية ١٢٠-١٩٩)

مج بو لئے كافائدہ صرف آخرت من كيوں ہوگا؟

اس پر اجماع ہے کہ اس دن سے مراد قیامت کادن ہے اور یہ کہ جن لوگوں نے دنیا میں بچے بولا تھا ان کا بچ اس دن کام آئے گااور ان کو نقع رے گا اور اس دن کسی کا کی ہوانااس کے لیے نقع آور شیں ہو گا کیونکہ دار احتکیعت اور دار انعل دنیا ہے اور قیامت کادن ہوم الجزاء ہے۔ اس دن توشیطان بھی ج ہو لے گانور کے کا

اور نیملہ ہو میلئے کے بعد شیطان کے گائے ٹک اللہ نے تم

وَ قَالَ النَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَعَدَكُم وعَدَالْحَيْنَ وَوَعَدُنْكُم فَاحْلَفَنْكُم عَدوده كياتماده كإده قاادري إج تم عدده كياس (ابراهيم: ٢٢) مي قاس يكظاف كيا-

شیطان کاب قول کے ہے لیکن اس دن کی کانچ اس کے کام شیس آئے گا۔

ود مرى تغيريه ب ك مسلمان وم آخرت من انهاء عليم السلام ك تيلغ كرن كى جو كى كوايى ديس كے اور الني اعمال كى کی کوای دیں سے نو مسلمانوں کی ہے کی کوائ ان کو نظے دے گی اور نظے بیہ ہے کہ ان سے شاوت کے چمپانے کامواخذہ نہیں ہو گا اوران کی منفرت کردی جائے گی۔

یج بولنے کا نظم دیسے تو انسان کو ہر روز حاصل ہو تاہے 'لیکن آخرت میں دائی اجرو ثواب مرف اس دن حاصل ہو گا۔ اس

کے بعد اللہ تعالی نے ہمایا کہ آخرت میں بج ہو لئے کا کیا نفی لئے گا وہ جستی ہیں جن کے بیچے سے دریا ہمہ دہ ہم ہیں۔ انسان کو کوئی فعمت مل جائے تو پھر بھی اس کو یہ فکر سماتی وہتی ہے کہ کمیں یہ فعمت زا کل نہ ہو جائے کو راگر فعمت زا کل نہ ہو تو اس نے ایک دن مرجانا ہے ' تب بھی وہ اس خیال سے المول دہ گا۔ اللہ تعالی کے قربایا کہ آخرت کی فعمتی زا کل نمیں ہوں گی نہ ان کو موت آسے گی' بلکہ دہ ان میں پیشہ بیشہ دہیں گے۔ جنہ انسان کے جسم کی فعمت ہے اور اس کی دوح کی فعت ہے کہ اللہ اس سے میں کامیابی ہے۔ رامنی ہو جائے تو جنٹ کو زمرے بعد اللہ تعالی نے یہ ذکر کیا کہ اللہ ان سے دہمنی ہوا۔ پھر فربات نمی ہیں اور اللہ کی رضااس سے رامنی ہو جائے اور اس کی دوج ہے گئی تو نمیں ہیں اور اللہ کی رضااس سے اس میں یہ اندازہ بھی ہے کہ میں ہوت کہ انہ کا رامنی ہو جائے تو نمیں ہیں وہ ایک قضل و کرم سے ہمیں جنت بینا اور اعلیٰ درجہ ہے۔ اللہ تو قبل ہمیں معاف کے ' ہم جنت کے لاکن تو نمیں ہیں وہ اپنے فضل و کرم سے ہمیں جنت الفروس یہ عطافرات اور سب سے ہوا مطلوب ہیں ہو جائے۔ الفروس عطافرات اور سب سے ہوا مطلوب ہیں ہو جائے۔ الفروس عطافرات اور سب سے ہوا مطلوب ہیں ہو جائے۔ الفروس عطافرات اور سب سے ہوا مطلوب ہیں ہو جائے۔ الفروس عطافرات اور سب سے ہوا مطلوب ہیں ہو جائے۔ الفروس عطافرات اور میں ہو جائے۔ الفروس عطافرات و جبروت کے ذکر میں مورت کا افترام

آ انول اور زمینول اور جو پچو ان می ب ان کی سلطت انته می کی طلیت می ب اس آیت می لفظ ما استعال قربایا بسب بی به سکت به به فرایا اور فیروندی العقول کے لیے آ آ ہے ہم میں ہو سکتا ہے بیہ عبد کرنا تقعود ہو کہ آسان اور ذہین اور ان جی ہو پچو ہے فوادوہ فدی العقول اور فدی العلوم ہوں فیروندی العقول اور فیروندی مجید کرنا تقعود ہو کہ آسان اور ذہین اور ان جی ہو پچو ہے فوادوہ فدی العقول اور فدی العقول اور فیروندی العقول اور فیروندی العقول اور خیروندی العقول ای کے سامنے فیر العلوم سبب اس کے قباد وقد دت کہ تام ہیں۔ اور ذوی العقول اس کے سامنے فیر فدی العقول اس کے سامنے می کا علم فدر ت میں اور اس کے علم کے سامنے می کا علم فدر اس کے علم کے سامنے می کا علم فیروندی العقول کو فدی کے کہ لفظ میا استعمال فربایا۔

شربعت اور حقیقت کی طرف اشاره

جب آسان اور زهن کی ہر چیز اللہ کی طک جل ہے تو صفرت میٹی اور حضرت مریم بھی اللہ کی طک جل ہیں۔ اس کے مملوک اور عبد ہیں اور جو مملوک اور عبد ہوں' وہ فدا کیے ہو کتے ہیں؟ اس آیت جل میسائیوں کے اس حقیدہ کا رو ہے کہ حضرت میٹی اور حضرت مریم فدا ہیں' اس بریت کے شروع ہیں فرمایا تھا اے ایمان والوا (اپنے) عمد پورے کر واور احکام شرمیہ کے ذکر ہے اس سورت کی ابتداء کی تھی اور اس سورت کا افتام اللہ عزوی کی کبریائی' اس کی عزت و جلال اور اس کی سلطنت کے ذکر ہے اس سورت کی ابتداء کی تھی اور اس میں ہے تعب اور تدرت پر کیا ہے۔ کویا بیسوںت شریعت کے ذکر ہے شروع ہوتی ہے اور حقیقت کے ذکر پر ختم ہوتی ہے اور اس میں ہے تعب اور تدرت پر کیا ہے۔ کویا بیسوںت شریعت کے ذکر ہے شریعت پر عمل کر کے ہی افران حقیقت تک پنچ گا۔ ہے کہ شریعت پر عمل کر کے ہی افران حقیقت تک پنچ گا۔ ہے کہ شریعت پر عمل کر کے ہی افران حقیقت تک پنچ گا۔

اس مورت میں احکام شرعیہ بیان کے گئے ہیں اور یمود کارد کیا گیا ہے جو مید ناجی ہے کی شریعت کا انکار کرتے تھے اور
عیمائیوں کارد کیا گیا ہے جو حضرت میں علیہ السلام کی الوزیت کے معتقر تھے کور اس مورت کو اس آیت پر شم کیا ہے جس کا معنی
ہے ہر چیز اللہ کی ملک میں ہے۔ اس کا ظامہ سے ہے کہ ہر چیز ممکن ہے اور اللہ تعالیٰ تمام ممکنات ارواح اور اجمام کا موجد اور کا
منالق ہے اور جب اللہ تعالیٰ سب کا خالق اور بالک ہے تو اے اپنی مخلوق کو امراور نمی کی میں دیے اور منع کرنے کا حق ہے اور یک
مشریت ہے موسی آیت احکام شرعیہ کی دلیل ہے اور جب اللہ خالق اور بالک ہے تو اے یہ حق ہے کہ وہ جس تھم کو چاہے
منطل کردے اور جس شریعت کو چاہے منسی تر کردے۔ مواس نے یمود کی شریعت کو منسوخ کر کے مید ناجم ہیں ہیں کی شریعت کو
منسوخ کر کے مید ناجم ہیں ہوگیا اور اس آیت سے خصوصیت نے مماتھ عیمائیوں کارد بھی ہوگیا کی تکہ جب ہر پین

اس کی مملوک ہے تو حضرت عینی بھی اس کے مملوک ہیں اور جو مملوک ہو وہ خدا نہیں ہو سکتا' سویہ آخری آیت اس بوری سورت کے مضافین کی دلیل ہے۔ اختیامی کلمات

آج بدروز چہار شنبہ مور خد ۱۹ مغر ۱۳۱۸ الله / ۱۹۹۵ تعری کے مبارک وقت میں سور ماکدو کی تغییر ختم ہو گئی۔ اس سورت کے تمام حفائق و معارف اور تمام امرار و رموز کو اللہ کے سواکوئی نہیں جائے۔ میں نے اسلاف کی کمآبوں سے استفادہ کر کے اور زیادہ سے زیادہ احادیث ویش کر کے اپنی استفاعت کے مطابق اس تغییر کی سعی کی ہے۔

الدانوالين ااس مى كوتيل فرائاس مى جوكو آئى ہوگا اس ب درگر فرااور جى طرح تونے محض النے فضل ب سورة ماكده كى تغييركى توفق عطا فرااور محض النے فضل دركم ب ميرى ميرے دالدين اور اساتذه كى ميرے طافره كى اس كے ناشر اس كے تامر اس كے تام مواد مين ميرے دالدين اور اساتذه كى ميرے طافره كى اس كے ناشر اس كے تام مواد مين معجب اور قار كين كى منفرت فرا۔ ہم سب كو دنيا اور آخرت كى بر مشكل معجبت اور پريشانى اور عذاب محفوظ ركم اور دنيا اور آخرت كى بر مساوت اور فيت عطا فرا۔ شرح ميج مسلم اس تغير اور ميرى بر تعنيف كو ميرے ليے معد قد باريہ كردے ان كابوں كو موافقين كے ليے موجب استفامت اور عالم بردے ان كابوں كو موافقين كے ليے موجب استفامت اور كافين كے فرد ب ان كابوں كو موافقين كے ليے موجب استفامت اور كافين كے فرد بيد ہدا يہ محمد حالت كافين كے فرد بيد ہدا ہ تا ميں بارب المعالمين بحاء نبيك سيدن المطاهرين و على السبيين فائد المعرسطين شفيع المعدس و على ارواحه امهات الموميس و على اولياء امنه و على علماء ملته المحدمين و على اولياء امنه و على علماء ملته المحدمين و على اولياء امنه و على علماء ملته المحدمين و على اولياء امنه و على علماء ملته المحدمين و على اولياء امنه و علماء ملته المحدمين و على اولياء المناه و علماء ملته المحدمين و



سورة الرنعام (۲)



النبئ الدال الأفياب الانتائي

سورة الانعام

اس مورت مبارکہ کا ہم الانعام ہے اس میں ہیں (۳۰) رکوع اور ایک مو پنیٹے (۲۵) آیات ہیں ہے مورت کی ہے البتدا
اس کی چند آیتی مدینہ طیبہ میں بازل ہو کی اور رسول اللہ عظیم نے ان آنوں کو اس مورت میں اپنے اپنے مقام پر تکھوا دیا۔
ان کی تنعیل انشاہ اللہ عظمیب بانوالہ آری ہے انعام کا معنی ہے موٹی۔ اس مورت کا نام الانعام اس لیے رکھا کیا ہے کہ اس
مورت میں ان مشرکین کارد کیا گیا ہے ' جنول نے از خود چند مویشیوں کو طائی کرلیا تھا اور چند مویشیوں کو حرام کرلیا تھا وہ آئی تس

وقالوا هذه العام وحرث وعرالا بطعام الأمر المستها الأمر المساعدة العام ورقا الأمر العام عرائة المقراة المنام الأمر عليها النزاة والعام المنو عليها النزاة عليه الفراة عليه الفراة عليه الفراة المنام الملو عليها الفراة عليه الفراة عليه الفراق المنام المنام

اور مشرکوں نے کہاہے مورٹی اور کھیدہ ممنوع ہیں المنیں وہ
کھائے گا جہے ہم چاہیں کے ان کے زخم فاسد کے مطابق اور
کچھ مورٹی ایسے ہیں جن کی پشتوں (پر مواری اور بار پرداری)
کو حرام کیا کیا ہے اور بعض مورشی ایسے ہیں جن پر وہ (ذرع کے
وقت) اللہ کانام نہیں لیتے تھے اللہ پر بہتان باند صف کے لیے اللہ ان کو ان کے بہتان کی منظریب سزا دے گا اور انہوں
نے کہا ان مورشیوں کے بہت ٹی جو کچہ (زندہ) ہے وہ خالص
مارے مردوں کے لیے ہے اور وہ اہادی نے ہوں پر حرام ہے
اور اگر وہ مردوی و قواس میں مب شریک ہیں۔ منظریب اللہ ان
کو ان احکام کو وضع کر آنے کی مزا دے گا ہے۔ شک وہ بری

جیراکہ ہم عنقرب باحوالہ بیان کریں گے یہ بوری مورت ایک رات میں یک بارگ نازل ہوئی تھی 'اور جس رات یہ نازل ہوئی آب عندان اور جس رات یہ نازل ہوئی آب کے اس مورت رسول اللہ ہوئی آب نے اس کو تکھوا دیا تھا۔ اس مورت کے مضامین پر خور کرنے سے معلوم ہو آ ہے کہ یہ مورت رسول اللہ منگی اللہ علیہ و آلہ وسلم کے کی دور کے آخری زمانہ میں نازل ہوئی تھی۔ اس سے پہلے اتفاقہ 'البقرہ' آل محران 'الساء اور المائدہ

منی سور تیں تھیں۔ ان سور توں می اصلات فطاب سوسین سے تعاد اور ان میں مسلمانوں کیلئے شرق ادکام بیان کے تھے۔

امان روزہ و کو قام ہے جو اسلار می مور توں کے حقوق کال مطاق وعدت و داشت اس المعروف و منی من المنکر اور دیگر ادکام
شرعہ بیان فرائے تھ اور دید متووہ میں جو قیر مسلم تے میرود اور عیمائی ان کی یہ مقید گیاں بیان کر کے ان کا رو فرایا تعااور
اسلام کے خلاف ان کے شکوک و شیمات کے جو الجا دیے تھے اور معافقین کی دیشہ دوائیاں بیان فرائی تھیں اور ان کی سازشوں
املام می مشرکین فرائی تھیں دو فرایا تھا۔ تر تیب مسحف
اور اسلام و شمن سرگر میوں سے مسلمانوں کو فردار فرایا تھا اور حسنا بھی آجوں میں مشرکین کا بھی رو فرایا تھا۔ تر تیب مسحف
کے اہماد سے یہ کہلی کی سورت ہے ، چو تک کہ مین مسلمانوں نے اپنی کوئی دیاست قائم نمیں کی تھی اور نہ ان کو اس کے سواتع
میر سے اس لیے وہاں مسلمانوں کے پاس اپنا نظام معیشت اور فطام حکومت قائم کرنے کے وسائل نسیں تھے۔ اس لیے کی
سور توں میں ادکام شرعیہ کو تصیل ہے بیان نہیں فرایا ، وہاں پر مسلمانوں کا مشرکین سے تصاوم تھا اور قودید کا بیتا می بہنوانے میں
مشرکین ذیر دست و کاوٹ سے بوت تھے۔ اس لیے کی سور توں میں اسلام کے بنیاوی مقائد کو بیان کرسے اور ان کو دلا کل سے
مشرکین ذیر دست و کاوٹ سے بوت تھے۔ اس لیے کی سور توں میں اسلام کے بنیاوی مقائد کو بیان کرسے اور ان کو دلا کل سے
مشرکین ذیر دریا گیا ہے۔

الانعام می توحید و رمالت کے بنیادی مسائل اور دلائل بیان فرمائے ہیں اور حیات بعد الهوت اور حشر و فشر کو بیان فرمایا ہے اور اصل دین ایراہیم کی وضاحت کی ہے اور انسان کی اند رونی اور ہیرونی شاوتوں اور منتل و فطرت کے مقاضوں ہے استدلال کمیا ہے 'مشرکیین کے فروائٹی معجزات فلاہر نہ کرنے کی وجوہ بنائی ہیں۔ نقد مرکابیان کیا ہے اور بعض مشرکانہ رسوم کا رو فرمایا ہے 'مشرکیین عذاب کامطابہ کرتے تھے۔ اس کے متعلق فرمایاک اگر یہ عذاب آئیاتو تممادے پاس اس کے جمچاؤ کاکیا مملان ہے؟ مسور ق الانعام کے نزول کے متعلق ا حادیث

الم ابوالقائم سليمان بن احرطراني متونى ١٠مه مدوايت كرتيب

حضرت ابن عمامن رمنی الله عنمائے فرمایا سور ؟ الانعام عمل آیک راب میں مکد میں نازل ہو کی اور اس کے گروستر بزار فرشتے تھے جو بلند آواز سے تبہیج پڑھ رہے تھے۔(المجم الكبيراج ١٣ رقم الحدیث، ١٣٥٠ مطبوعہ وار احیاء التراث العربي بیروت)

حضرت اساء بنت بنید رضی افتہ عنها بیان کرتی ہیں کہ نی پڑھیں پر سور ۃ الانعام بکیاری عمل نازل ہوئی۔ اس وقت میں نی بڑھیں کی او نفنی کی لگام پکڑے ہوئے تھی مور اس سورت کے بوجہ ہے لگتا تھا کہ اس او نفنی کی بڑیاں نوٹ جا کیں گی۔

(المعم الكبير ع ٢٠٠ و تم الدعث ١٩٠١-١٥٠٨ المطبوعة بيروت)

حضرت انس بن مالک جہنے بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ سیجید نے فرطا ہور ۃ العالم بازل ہوئی در آنحالیک اس کے ساتھ فرشتوں کی آیک بماعت تھی جس نے مشق اور مغرب کو بحرایا تھا وہ باند کواڑے تیج اور تقدیس کرری تھی اور زین لرزی تھی اور دین لرزی تھی اور دین کر اللہ المصلیم اس مدیث کی لوزری تھی اور دین تھی الدین ہے۔ اس مدیث کی دواعت میں احدین محد بیاری متفرد ہیں۔ (المحم الدین الدین الدین متفرد ہیں۔ (المحم الدین الدین الدین الدین متفرد ہیں۔ (المحم الدین ا

خاتم الحقاظ علامه جلال الدين سيوطي متوتى على ميان كري بين:

الم النخاس نے اپنی کتاب تائے میں حضرت این عباس رضی اللہ عنماے روایت کیا ہے کہ سورة الانعام مکمیں کمل یکبار کی تازل ہوئی سویہ کی سورت ہے۔ ماسوا تمن آجول کے وہ مینہ بی تازل ہو کی۔ (فیل نصالوا انیل ما حرم رمکم علیہ کے سالایہ: ۱۵۳-۱۵۱) الم ابن المنذر نے حضرت ابو حذیفہ برینی ہے ووائے کیا ہے کہ سورة الانعام عمل یکبارگی تازل ہوئی۔ اس کے ساتھ سر بڑار قرشتے تھے 'یہ کی سورت ہے۔ اس اس آئےت کے و لوائنا نزلسا المبیہ المسلائک آلانعام: ۱۱)

الم فریائی 'الم اسمال بن واحویہ اور الم عبد بن حمید نے شمین حوشی سے روائے کیا ہے کہ سورة الانعام عمل یکبارگی تازل ہوئی۔ اس کے ساتھ فرشتے باند آواز سے ذکر کر دے تھے 'یہ کی سورت ہے ناسوالان وو آنیوں کے قبل شدالہ الما اسل موری کے مائٹ فرشتے باند آواز سے ذکر کر دے تھے 'یہ کی سورت ہے ناسوالان وو آنیوں کے قبل شدالہ الما اسل محرم ریکم عدفیہ کے (الاید) اور اس کے بعد والی آئے ہے۔ (الانعام محمل کا المرائی دوری اللہ مائٹ کے مدعث میں ہے سورة الانعام جو آنیوں کے سوا کہ میں نازل ہوئی اور وسول اللہ برائی کا برائی کا اللہ اس سورت کو تکھوالیا تھا۔ اقرامی 'جہاس کے سوا کہ میں نازل ہوئی اور وسول اللہ برائی کا برائی دوری کو بلاکرای داست سورت کو تکھوالیا تھا۔ اقرامی 'جہاس کے سوا کہ میں نازل ہوئی اور وسول اللہ برائی کے سوا کہ برائی دوری کی الموالی تھا۔ آن کی فقط آئی المائی ہوئی اور وسول اللہ برائی دوری کو بلاکرای داست اس سورت کو تکھوالیا تھا۔ اقرامی 'جہاس کا اس میں کا الدائی اللہ بوئی اور دسول اللہ برائی دائی دوری کی فقط آئی المائی ہوئی المائی کو بلاکرای دائی ہوئی اور دسول اللہ بوئی المائی کو بلاکرای دائی اللہ بوئی المائی کو بلاکرای دائی گرد کی کو تکھوائی کی المائی کو بلاکرای دائی ہوئی کی فقط آئی المائی ہوئی کو بالکرای دائی گرد کے کی معملی المائی کو بالکرای دائی کو بالکرای دائی کے کہ معملی المائی کو بالکرای دائی کو بالکرای دائی کو بالکرای دائی کے کہ کو بالکرای دائی کو بالکر

سورة الانعام كي نضيلت كم متعلق اعاديث

الم ویلی کے سد ضعیف کے ماتھ حضرت انس جونی ہے روایت کیا ہے کہ رسول انقہ میں ہے فرمایا سور ۃ الانعام برعین اللہ ملوی ندا کر آئے۔ اس سورت سے عمیت رکھنے اور اس کی علاوت کرنے کی وجہ سے آؤ بہنت کی طرف الم اوالٹینے نے ابو تھرعابہ سے روایت کیا ہے۔ جس صف نے سور ۃ الانعام کی پہلی تبن آئیتں پر حمیں: تو اللہ تعالی سر برار فرشتے بھیجا ہے جو قیامت تک اس کے لیے دعا کرتے ہیں تیامت کے دن اللہ اس کو جزت میں داخل کردے گا اس کو کو ثرف سے مسل دے گا ور سلیمل ہے اس کو پائی پلائے گا اور فرمائے گا "میں تیما برحق رسبہ دوں اور تو میرا برحق بندہ ہے "۔

الم ابن العرب ابو محد فاری ہے روایت کرتے ہیں جس فض نے سورۃ الانعام کی پہلی تین آئیتیں پڑھیں اللہ توالی سر بڑار فرشتے بھیج گاجو قیامت تک اس کے لیے استغفار کرتے رہیں گے۔ قیامت کے دن اللہ اس کو جنب میں وافل کردے گااور اس کو اپنے عرش کے ملئے میں رکھے گا۔ اس کو جنت کے پہل کھائے گااور کو ٹرے پانی پالے گااور سلسیل ہے فسل دے گا اور اللہ فرمائے گا' میں تیماری اور تو میما بندہ ہے۔

المم ویلمی نے حضرت ابن مسعود پر پین سے روایت کیا ہے جس شخص نے ٹجر کی نماز جماعت سے پڑھی اور اپنے معلیٰ پر بیند کیا اور سور قالانعام کی پہلی تین تبیتیں پڑھیں 'اللہ تعلق ستر فرشتوں کو مقرر کرویتا ہے جو اللہ کی تنہیج کرتے ہیں اور قیامت تک اس شخص کے لیے استنفار کرتے ہیں۔ اللہ و المشور 'جسامس ہ مطبور ابران)

ان اماویث کو علامہ قر کمی تے ہی فقل کیا ہے۔ الایاح ادیام الفرائن "ج" می الا مدیم

مافظ سيوطى في سورة النافعام كى فنيلت على جواطوت نقل كى بين الن عن صرف ايك مدت كى سندكو ضعيف كما به اور باتى روايات كى امائيد سه سكوت كياب ليكن قلعده بيب كه جمل مدت هي محمل كم محل پر بهت زياده الله بيان كيا بات و موضوع بوتى بين آريد اولوي موضوع نه بون انب موضوع بوقوع نه بون انب به موضوع نه بون اور قضائل قر آن كه سلم بين اور قضائل اعلى بين اطويت ضعيفه بين محترو تي بين اور تورد امائيد سه حديث ضعيف بين محمد هند معنى بين اور قضائل اعلى بين اطويت تعمين بين كرده ثواب كى اميد برسورة الانعام كى بهل تين أي تقويت التي بهت بهم في اس نيت سه به اطويت تكمي بين كران عن بيان كرده ثواب كى اميد برسورة الانعام كى بهل تين من المنان بين بين من من بيان كرده ثواب كى اميد برسورة الانعام كى بهل تين أيتن بين بين بين من بين من من جائين المنان بين من بين من من بيات كران بيات كران بيات كور بين بين من المنان بيات كران بيات كران بين بين من والمنان بيات كران بين من المنان بيات كران بين من المنان بيات كران بيات كران بين بين من والمنان بيات كران بين بين من والمنان بيات كران بيات كران بين بين من المنان بيات كران بين بين بين بين بين بين كران بيات كران من كران بين بين بين من المنان بيات كران من والمنان بيات كران بين بين بين بين بين بيات كران من كران بيات كران من والمنان بيات كران من والمنان بيات كران منون ١٥ منون ١٠ منون ١٥ منون ١٥

حضرت ابو ہرمرہ روین مان کرتے ہیں کہ نی جھیزے نے فرملا ایک مخص نے ایک کئے کو دیکھاجو پاس کی وجہ ہے کیور جان رہا تھا۔ اس مخص نے اپنے موڈہ میں پانی بمر کراس کو جلوے پانی پلایا محتی کہ اس کتے کو سیراب کر دیا۔ اللہ نے اس کے اس عمل كومفكوركيااوراس فخص كوجنت من داخل كرديا- (ميح البهاري عن رقم الحديث: عدما معلويد دار الكتب العلميه ويردت) سواکر الله تعلق سورة الانعام کی میلی تین آیتیں پڑھنے ہے پخش دے اور جنت عطا فرمائے توب اس کے کرم اور کلتہ توازی

ے کب اور ہےا

سورة الانعام كاموضوع

جس طرح باتى كى سورتون بين اصدالية عقائد كوبيان كياكياب اب طرح سورة الانعام بس بهى اصول اور عقائدى كو خصوصیت کے ساتھ بیان کیا گیاہے اور الوہیت 'وحی ' رسالت 'بعث بعد الموت اور جزاء و سزا کا اٹہات اور اس پر دلا کل فراہم کریا اس سورت كالجيادي موضوع ب

علامہ قرطبی نے کما ہے کہ اس سورت میں مشرکین اور دیگر ان مبتد مین کے خلاف دلا کل ہیں جو حشراور نشر کا انکار کرتے تے اور اس کا نقاضہ سے ہے کہ اس بوری سور مند کو میکبارگی نازل کیا جائے۔ کیونکہ بوری سور مند ہے منزلہ ولیل واحد ہے۔ اگر چہ اس کی فردع بہت میں اور متعلمین نے اس سورت پر اپنے دانا کل کی بنیاد رکھی ہے "کیو تکمہ اس میں الی آیات ہیں جو تذریبہ کارو كرتى ين-(الجامع لاحكام القرآن على ٢٩١٠ ملبوم بيردت)

اس سورت میں اللہ متعالی نے خود مجمی دالا کل کو پنیش کیاہے تور رسول اللہ عظیم کو بھی والا کل کی تلقین کی ہے۔ خود دالا کل

مِين كرف كي جد مثاليس يدين:

ألْحَمُدُ لِلْوالَّدِي عَلَقَ السَّمُونِ وَالْأَرْصَ وَ جَمَلَ الطُّلُلُبُ وَ النُّورَ ثُمَّ الَّذِينَ كَمُرُوا بِرَبِهِمْ يَعْدِلُونَ (الانعام؛)

هُ وَالَّذِي حَلَفَكُمْ مِنْ طِلْسُ ثُمَّ قَصَلَى آجَالًا وَأَجُلُ مُنْسَعَلِي عِمْدَهُ نَامُ أَنْتُمُ لَمُعَرُونَ

(Pisaly: 7)

وُهُوالْفَاهِرُ مَوْقَ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمُ حَفَظَةُ حَنَّى إِذَا جَاءَا كَا الْكُونُ ثُولُنَّهُ رُسلساوَهُم لايفررطور (الاسعام)

ب فریقی اللہ کے لیے میں جس کے آسانوں اور زمینوں کو بیدا فرمایا اور آر بکیمیل اور روشنی کو پیدا فرمایا پمر (بھی) کنار اپنے رب کے ساتھ (دو سروں کو) برابر قرار رہیتے

وی ہے جس نے تم کو مٹی سے بنا إلى مدت (حيات) مقرر فرماوی اور (قیامت کا) معین وقت الله بی کے یاس ہے ' پھر تم -x2/2

اور وای این بندوں پر غالب ہے اور تم پر (تکسبان) فرشتے جیجاے حی کہ جب تم میں سے کمی یر موت (کاونت) آجائے قامارے فرشتا اس (کی دوح) کو قبض کرتے ہیں اور وہ کو آی -2-/00

آپ ہو چھنے کہ آسان اور زمین میں جو پکھ ہے ' دو کس کی كليت ٢٠ آب كئے كداللہ ى كى كليت ٢٠ اس نے ١١ يے كرم م) الخ اور رحمة الازم كرل ب_

اس سورت میں اللہ تعلق نے رسول الفته معظیم کو یہ کثرت والا کل تلقین قرمائے میں۔ ان کی چند مثالیس میہ ہیں: فُلُ لِيمَنُ ثَمَا فِي السَّمَا وِيهَ وَالْأَرْضِ فَكُلُّ لِللَّهِ كَتَبُ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةُ (الانعام:٣)

فُلُ إِنِّي أُمِرُكُ أَنَّ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسُلُمَ وَلَا كات والامون اورب كرتم بركز مشركون ش سعد تدمونا-تَكُونَنَ مِنَ الْمُشْيِرِكِينَ (الانعام: ١٣)

مرے اور تمادے در میان اللہ کو اہے۔ آپ ہو چیئے تہیں فکل اور سندر کی بار بیوں ہے کون المجات ریتاہے؟ جس کو تم عاج ی ہے اور چکے چکے پکارتے ہو۔ آگر وہ جمعی اس (معیبت ے) سے پھالے تو ہم ضرور اس کے شر گزارین جائیں کے 0 آپ کئے اللہ ی تم کو اس (معیبت) ے اور برمعیبت ، نیات دیتا ہے پر (بھی) تم شرک کرتے

آپ كئے مجے عم دياكيا ہے كہ جى مب سے يملے املام

آپ ہے جے سب سے بری کس کی کوائی ہے؟ آپ فرمائے

قُلُ آيُّ نَسُوا كَرُّ شَهَادَةً قُلِ اللَّهُ شَهِيَّكُ نَيْتُ رُوَيُتُكُكُمُ (الأنعام)) قُلُ مَنْ يُنَيِّقِبُكُمُ مِنْ ظُلُمُ مِن الْبَرِوالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَصَرُّعُا وَمُعُفِّيةٌ لَكِنُ أَنْحُسَامِنُ هُدِم لَمَكُونَنَّ مِنَ الشَّيِكِرِيُنَ ٥ فَلِ اللَّهُ بُنَوِّمَ لِكُمُ مِينَّهَا وَمِنْ كُلِلْ كَرْبِ ثُكَالِكُمْ تُنْفَرِ كُونَ

(الانعام: ١٧-١٧)

سور ہ الانعام کے مضامین

سورة الانعام كے مضافين كو حسب زيل منوانوں پر تعتيم كيا ماسكا ہے:

- ۱- الله تعالی کے وجود 'اس کی وحد انبیت اور اس کی صفات پر افسان کی اندرونی اور بیرونی شعاد تول سے استدلال
 - ۲۔ نبوت ٔ رسالت اور وی پر مقلی اور مشلد اتی دلائل اور مشرکین کے شبسات کے جوابات
 - ا- بعث بعد الموت مسلب وكتاب حشرو نشراور قيامت كدن اعمل كى جزاه نور سزا كالثبات
 - س ترنی اور معاشرتی زندگ کے مسلمہ اخلاق اور آداب کامیان۔
- ٥٠ حضرت آدم عليه انسلام ہے کے کرمیدنا محمد مرتبع تک تمام انبیاء علیم انسلام کا دین واحد ہونا اور اصول اور مقائد میں لوكول كانتظاف كالبواء شعصه اور آباه واجداوكي تظيدير بني بونا
 - ٠٦ ﴾ ترت مي ثواب اور عذاب كالوكول كے محضى اتبال پر جني مونا۔
- انسانوں کے افعال کو علق اللہ تعالی کرتا ہے اور اس کا کسب انسان کرتا ہے۔ کسب سے مراد انسان کا اعتبار اور ارادہ ہے۔ انسان جس قتل کاارادہ کرتاہے' اللہ تعالی اس قتل کو پیدا کر رہاہے اور اس کو بڑا و مزااہے کسب اور اختیار کی وجہ ہے التي ہے۔ اس ليے جربھي نسيں ہے كيونك انسان مخار ہے اور قدر بھي نسيں ہے كيونك افعال كاخالق اللہ تعالى ہے۔ اور تقدير كا معنى ب الله توالى كے علم اور مكت كے موافق اسباب كامسبيات كے ماتھ مربوط مونا۔
- ۸۰ کافروں اور فاستوں کو عذاب دینا اللہ تعالی کا عدل ہے لور مومنوں اور نیکو کاروں کو تواب دینا' اللہ تعالی کا کرم و فعنل
- ۹۰ طال اور حرام کرنے کی تشریع اور شریعت سازی اللہ عن وجل کاحق ہے اور بعض امور میں اللہ تعالی نے اپنے رسولوں کو یہ منصب مطاکیا ہے۔وہ اللہ تعالی کی مرمنی اور منتاء کے مطابق نیک کاسوں کا تھم دیتے ہیں اور برے کاسوں سے روکتے ہیں اور یہ بھی شریعت ہے کہ اللہ عزوجل اور اس کے رسول منتج کے سوائمی انسان کا یہ منصب نمیں ہے کہ وہ اٹی مرمنی سے کسی چز كوطال ياحام كري

۱۰ - آوگوں پر لازم ہے کہ وہ گزشتہ امتوں کے احوالی میں قور و فکر کریں کہ جن لوگوں نے رسولوں کی تحقیب کی 'ان کاکیا

طِينانُ القر أن

مل ہوا کاور زمین میں محوم پھر کران پر کیے ہوئے ہوائے عذاب کے آثار ویکے کر عبرت عاصل کریں اور ان بکڑے نشانیوں میں غور و قلر کریں جو افتہ تعلق کی ذات اس کی مظلمت اس کے علم اور اس کی قدرت پر دلائے کرتی ہیں۔

الله تعالى اضاف كو معاتب عد اور ونياوى زيب و زينت عد احمان اور آزمانش عي دانيا ي ماك تيك اور بد مناز

يول.

۱۶۰ انفه تعلق فاستول اور کافرون کو ذهمل دیتا رہتا ہے اس کے تمسی کافریا فاسق کی ونیادی بیش و مشرت اسودہ حالی اور اقتدار ہے تمسی مسلمان کو دھوکا نہیں کھانا چاہیے۔

الله الله الله الله تعالى كى تتركم كابيان استاداد العالى استراكى في كما ب كه سورة النافعام على توحيد ك تمام قوايد الله

۱۳- جو لوگ اللہ تعالی کی آیات سے اعراض کرتے ہیں ان کو ضیعت کرنا اور جو دین حق کی کلزیب کرتے ہیں ان کو پہلی امتوں کے مکذبین کی دمید سلنا اور یہ بناتا کہ این کے اٹھار سے صرف ان کو نقسان ہوگا۔

الله المومشركين كم في المله سعد معلوا معلوات طلب كرتے في الى كى جمالت كابيان كرنا۔

١١٠ أي علي كوي تملى ديناك آب كي قوم كم الهان ندالا في وجد س آب سه وازير من نهي موكيد

ے اور اس اور ایس کو بینچنے کی محکمت سے ہے کہ وہ اللہ کے عذاب ہے ڈرائی اور اس کے ٹوئٹ کی بشارت دیں اوگوں کی فرمائش مراک میں اور مطابق کا معرف میں میں اور اس اللہ میں اللہ کے عذاب ہے ڈرائی اور اس کے ٹوئٹ کی بشارت دیں اوگوں کی

سندان كومطيهات يرمطل كرناب وسول كامتصب تبيل سهد

١٨٠ فنيلت كاسميار الله تعالى ك دين كو ياللور تنوى بهد

۱۹- نفس کو طبیات بین پاکیزولور مطال چیزوں سے محروم کر مطابہ تفویل نہیں ہے ' بلکہ تفویل یہ ہے کہ نفس کے نامائز نظامنے بع رہے نہ کیے جائمی اور اس کو شموا عبیاطلہ کی محیل سے محروم کر دیا جائے۔

۱۰۰ امت تورید پریداحسان که افتد مندان کی داید که که قرآن نازل کیابس طرح معزمت موی پر تورات نازل کی تنی اور افتد تعالی نے اس امت کو سابقہ استوں کا خاتم بدلا۔

١١٠ قر أن اوروين اسلام كي نسيلسد توريدك اس است كي تكون كاواب الله في كن كنابوهايا

١٢٠ يه سورت سركين جاليت ك تام احوال ك جامع باوراس ين ان كي جمات رسب عن زودود كياكياب-

سُولَ إِلَّا الْمُعَامِرَ كُلِيَّ مَ وَهُمَ مِلْ الْمِنْ وَهُمَ مِلْ الْمِنْ وَكُولُكُ الْمُعَالِمُ وَالْمُولُولُكُ الْمُعَالِمُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّلَّا اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللّهُ اللَّهُ اللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الل

بِسُوِاللهِ الرَّحْلِنِ الرَّحِيْوِن

الله بى ك تام سے الرك كتابى و تبايت وم وطف مالابہت مراك 30

الحسد بنه البن على السلوت والراض وجعل الظلب و

مام تولیس اندی کے میں جی جی سے آماؤل اور زمیوں کر پیا فرایا اور کارکیوں اور اور کو پیدا

ابيان القر ان

بم نے ان کے گن ہوں ک پادائ یں ان کو تیاہ دیر بادکردیا الد ال کے بعد ہم تے ایک دومری

الله تعالی کاار شاف ہے: تمام تعریض الله علی کے لیے ہیں جس نے آمانوں اور زمینوں کو پیرا فرمایا اور آر مکوں اور نور کو پیرا فرمایا۔ پھر بھی کفار اپنے رب کے ساتھ (دو سمون کو) برابر قرار دیتے ہیں۔ (الانعام: ۱) حمد عمر سمر کا فرق

حمد الدر اور شکر می فرق ہے مرح الاسے عام ہے۔ جم اسی فض کی افتیاری فول اور کمال پر تعریف اور توسیف کو کہتے ہیں خواہ وہ فعت کے اور حدح کسی چزکے حسن اور خولی پر کی جانے والی تعریف کو کہتے ہیں۔ خواہ دہ اس کی افتیاری خولی ہویا فیرافتیاری۔ اگر آپ کسی عالم کے علم و فضل کی تعریف کریں گے تو ہے جم بھی ہا اور حدح بھی ہے اور حدح بھی ہے اور اگر آپ کسی پھول کی خوشبو کی تعریف کریں گے تو ہے می میں ہے۔ جم عام ہی ہوا فیمت کی وجہ سے تعریف کریں ہے تو ہے جہ عام ہی خواہ فیمت کی وجہ سے تعریف کریں جو آپ کو جانیا نہیں ہے خواہ فیمت کی وجہ سے تعریف کی جائے یا بغیر فیمت کے اور آگر کسی فیمس کے علم کی تعریف کریں جو آپ کو جانیا نہیں ہے اور آگر کسی فیمس کے علم کی تعریف کریں جو آپ کو جانیا نہیں ہے اور آگر کسی فیمس کے علم کی تعریف کریں جو آپ کو جانیا نہیں ہے اور آگر کسی فیمس کے آپ کو چکھ مال دیا ہو اور آپ اس کی حقومت کی تعریف کریں تو یہ شکر بھی ہے اور حجہ بھی ہے۔

تمام تعریفوں کا اللہ کے ساتھ محتص ہونا

ہم نے الحدوثہ کا ترجمہ کیا ہے تمام تعریفی افتہ ی کے لیے بیں کو تکہ الحد میں الف الم بنس کا ہے اور نقہ میں مام اختصاص کا ہے یا استحقاق کا ہے اور اس کا معنی ہے جرکی ابیت اور حقیقت افتہ عزو بنل کے مناتھ مختص ہے اور اس کا خلاصہ یہ ہے تمام تعریفوں کا مستحق افتہ تعالی ہے۔ اگر یہ اعتراض کیا جائے کہ منعم کا شکر واجب ہے مثل تعلیم کی وجہ ہے استاذ کا شکر واجب ہے۔ عدل کی وجہ سے منصف کا شکر واجب ہے احمان کی وجہ سے محسن کا شکر واجب ہے اور پالنے ہوسنے کی وجہ سے ماں باپ کا شکر واجب ہے۔ قرآن مجد میں ہے:

> میراشراد اکراد راسیناں باپ کا۔ نکل کاملہ نکل کے موااور کیاہے؟

آنِ اشْكُرْلِي وَلِوَ الِدَيْكَ الفسان ١٣٠٠ مَلُ حَرَّا يُو الْمُعَانِ ١٣٠٠ مَلُ حَرَّا يُو الْمُعَسَانُ ٥٠

(الرحيثي: ١٠)

اور المام ابوداؤد مليملن بن اشعث جستال روايت كرتي بين

حضرت ابو بريه والله بيان كرت بيل كر رسول الله ويلي سف فرمايا بو فض لوكول كاشكر ادا نسيس كرآا وه الله كاشكر ادا نسيس كرآ (المام ترفدي في كمايه مديث حسن مح ب)

(سنن أيوداؤد على من رقم المحت و ١٨٨ سنن ترفي على ارقم المحت و ١٦١ مند الا على ١٢٥ على ١٥٨ على ١٣٠ على ١٣٠ على

یہ پر جن ہے کہ جب کوئی افسان کمی افسان کے ساتھ کوئی نگل کرے یا اس کو کوئی فعت پنچائے تو اس کاشکر اوا کرناواجب
ہے 'کین در حقیقت تمام تعییں اللہ تعنائی عی دیتا ہے اور تمام احسانات ای کے جیں۔ ای لیے حقیقت میں صرف دعی مشکور ہے
اور باتی سب مجاز استکاور جیں۔ کیا آپ ہے جس دیکھتے کہ ایک افسان دو مرے افسان پر اس وقت احسان کر آ ہے جب اس کے دل
میں اس احسان کا محرک اور داھیہ پیدا ہو آ ہے اور یہ محرک اور داھیہ اللہ تعنائی پیدا کر آ ہے تو اصل احسان ای کا ہے۔ دو سمری وجہ
ہیں ہیں اس احسان کا محرک اور داھیہ پیدا ہو آ ہے اور بندہ کمی غرض سے احسان کر آ ہے اور یہ غرض یا حصول گفتے ہوتی ہے یا
ہیں ہے کہ اللہ تعنائی افسان پر بلاغرض احسان کر آ ہے اور بندہ کمی غرض سے احسان کر آ ہے اور اس پر احسان کر کے اس کے ممی ساتھ

جُيانُ القر أن

اصان کابدلہ چکا بہتے یا اخروی واب کے لیے اصان کرتاہے اور سے حصول نفتے ہے یاس منرورت مند کی منرورت کود کھے کراس کے دل میں رفت پیدا ہوتی ہے اور وہ اس رفت کے ازالہ کے لیے اس پر اصان کرتاہے اور مید دفع منردہے تو افسان انسان پر کسی نہ کسی غرض ہے احسان کرتاہے اور افتہ تعالی بلاغرض احسان کرتاہے۔ نیز افتہ تعالی بلاواسطہ احسان کرتا اور انسان بلواسطہ احسان کرتاہے۔

مثل ایک انسان کمی بھو کے مخص کو کھنا کھلا کر احسان کرتا ہے۔ اگر اس افسان کے پاس طعام فرید نے کے لیے چے نہ بوت یا چے تو ہوتے یا چے تار ہوگا ہوتے یا چے تار کی طعام کیے کھلا آگا گھر ہی سوچنے کہ یہ طعام کس کا پیدا کیا ہوا ہے اور اس اور انسان طعام فراہم کر لیتا لیکن وہ بھو کا فض کسی بھا ہو تا جس کی دجہ سے وہ کھانا نہ کھا سکتا تو وہ اس کو کینے پہنچا ہے تو اس سک اس احسان اور نیش کے کہا کھلا آگا فرض انسان جب کسی انسان پر احسان کرتا ہے اور اس کو نیش پہنچا ہے تو اس سک اس احسان اور نیش کئی ہے جس جسیوں واسطے ہوتے ہیں اور جرواسط اللہ کے نیش اور اس کے احسان پر فتم ہوتا ہے۔ تیجہ می نکلا کہ جو شخص کسی پر افعام اور احسان کرتا ہے وہ حقیقت میں اللہ تعالی کا انعام ہے اور اس کا احسان ہے۔ بھوتا تھا ما احسان ہے تھوت کی نکلا کہ جو شخص کسی ہوتا ہے۔ اور وہ کاس پر ستائش اور تعریف افتہ ہی کے لیے ہوروہ میں معکور ہے اور وہ گھرتی ہیں جس کی خوان پر حمہ کی جائے اور جس کے احسان کا شکر اوا کیا جائے وہ سب کھات ہوں جی میں معکور ہے اور وہ میں معکور ہے اور وہ میں معکور ہے۔

عالم كبير كى تخليق سے اللہ كے وجود اور اس كى وحد انيت ير استدلال

الله تعالی نے قربایا جس نے آسانوں اور زمینوں کو پیدا قربایا اور تاریخیوں اور نور کو پیدا قربایا الله تعالی نے بغیر کمی ستون کے اور بغیر کمی بھی کے آسان کو بنایا اور آسانوں میں سورج اور چاند کو رکھا اور اس کو ستاروں سے مزین کیا اور اوا کے دوش پر بادوں کو رکھا اور اس کو ستاروں سے مزین کیا اور اوا کے دوش پر بادوں کو رکھا نوش کی شادہ رائے رکھے اور اس میں سمندروں اور دریاؤں کو رواں دواں کیا اور پھروں سے جشنے نکا لے این تمام چیزوں میں اس کی وصدا تیت اور اس کی صفیم لذرت پر دلالت سے "کیو تکھا اس کا نکات کا بورا نظام طرز واحد پر چل رہا ہے اور اس نظام کی وحدت بے بتاتی ہے کہ اس کا غاظم بھی واحد ہے اور وی الله واحد قدار ہے ور بریز کا خالی ہے اور وی میاوت کا مستحق ہے "اس نے تاریکوں اور اور کو پیدا کیا۔ آسمان اور زمین کے پیدا کرنے کے بدر اکرا ہے اور اس اور زمین جواجراورا میان جی اور آبر کی اور نور معانی اور اعراض جی ۔

امام مسلم بن تجابی فیشیو می متوفی اس اور واجین کرتے ہیں:

حضرت ابو ہریرہ بریش بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ میں ہیں ہے میرا ہاتھ پکڑ کر فرہایا اللہ ہے مٹی (زیمن) کو ہفتہ کے دن پیدا کیا اور انوار کے دن اس میں بہاڑ پیدا کیے اور دیر کے دن در خت پیدا کیے اور منکل کے دن محرہ چیزوں کو پیدا کیا (مسلم کے علاوہ دو سری روایات میں المنتقب کا لفظ ہے جس کے معنی ہیں معدنیات) اور بدھ کے دن فور کو پیدا کیا اور جعرات کے دن اس میں مویشیوں اور جانوروں کو پھیلا دیا اور تکوت کے آخر میں جمد کے دن صعر کے بعد جمد کی آخری ساعت میں آدم علیہ السلام کو پیدا کیا۔

(منح مسلم النافقين ٢٤٠ (٢٤٨٩) ١٩٠٠ مند الو على رقم المدعث: ٨٣٣٩ طبع عاد الفكو استد احر على ١٣٢٥ طبع

كفاركي احسان فراموثي

ير آيت كفاركي شفلوت اور قبادت ير ولالت كرتى ب كو تكد اس آيت كامعنى يد ب كريد بلت سب كومعلوم ب ك

آسانوں اور زمینوں کو افتد نے پیدا کیا ہے اور اس کے پیدا کرنے کے والا کل اور نشانیاں سب پر ظاہر اور داشتے ہیں اور اس کی عطاؤں اور افتالت سے کا کنات کا ہر فرد فیض پارہا ہے اور قائدہ افعار ہا ہے اور کوئی فخص بھی اس کے کرم سے محروم نہیں ہے۔ پاران قمام اصلات کے باوجود یہ کفار ہے جان بنوں کو اپنے دب کے برابر قرار دیتے ہیں۔ اس کی مثل ایسے ہے جسے کوئی شخص کمی کو طامت کرتے ہوئے کی مثل ایسے ہے جسے کوئی شخص کمی کو طامت کرتے ہوئے کے جس نے تم کو انتقال دیا استی مزت دی اتم پر استے احسان کے کا پر بھی تم جھے گالیان استے ہو اور برائے ہو افتار موقائد تعلق کا شریک بھانے سے اس کو الی می افزیت ہوتی ہے۔

المام محدين اساعيل عقاري حوني ١٥١مه روايت كرسة مين

حضرت ابن عباس رمنی الله حمامیان کرتے ہیں کہ نبی بیجید نے فرمایا الله عزوجل ارشاد فرما آ ہے ابن آدم نے میری کلفت ہو کا اور اس کے لیے یہ جائزنہ تعلاماس نے بو میری کلفت کی دی اور اس کے لیے یہ جائزنہ تعلاماس نے بو میری کلفت کی دو اس کا یہ فادر اس کے لیے یہ جائزنہ تعلاماس نے بو میری کلفت کی دورا کہ میرا اس کا یہ قوں ہے کہ میرا میں معمول موں کو دورا دورا دورا کی ایکا میں اس کے دیرا میں میں اس معمول موں کہ میں کری کو بوری یا بیٹا میں اس

(می ابناری عوام الدعث ۱۳۵۲ سنی اترانی عوار قرالدیث ۱۰۵۷ سند احر عوام ۱۳۵۹ طبع قدیم) الله تعلق کاار شادی: وی به جس نے تم کو منی سے پیدا فرایا پاردت (حیات) مقرر فراوی اور قیامت کا معین وقت الله ی کے پاس بے اور تم لوگ تک کرتے ہو۔ الانعام: ۴

عالم مغیری مخلیق ہے اللہ کے دجود اور اس کی د مدانیت پر استدلال

پہلی آیت میں افتہ تعالی نے آسان اور ذھن اپنی عالم کیر کو پردا کرنے سے اپنی خاتیت اور وصدانیت پر استدال کیا تھا اور اس آیت میں افسان اپنی عالم منجر کو پردا کرنے سے اپنی خاتیت اور وصدانیت پر استدالل فرمایا ہے۔ اللہ تعالی نے فرمایا ہے کہ اس آب میں کو مٹی سے پردا فرمایا ہے۔ اس کے دوسمتی ہیں۔ ایک ہے کہ افتہ تعالی نے معنوت آدم کو مٹی سے پردا کیا اور تم آدم کی اولاد او افتذا تم کو بھی مٹی سے پردا کیا۔

الم ابويكراهم بن حيون علق متونى ٥٨ مهدروايت كرتے بين.

حضرت الن مرمن الله جنما بيان كري بي كر رسول الله منظيم في كدون خليد بي فرمايا الله الوكواب الكاللة منظل في من خطرت الناس المورد المرديات المورد المرديات كرديات المورد المرديات المورد المرديات المورد المرديات المورد المرديات المورد المرديات المورد المرديات المورد المردي المورد المردود المردي المورد المردي المردي المردود المردود

اس آمید کاد سرامین یہ ہے کہ تم کو بلاواسط مٹی سے برد آکیا ہے۔ اس کی دضادت اس مدیث سے ہوتی ہے :

عافظ ابو تھیم نے اپنی کیا ہی معترت ابن مسعود بھاؤی سے روایت کیا ہے کہ جو فرشتہ رحم پر مقرر کیا گیا ہے 'وہ نطفہ کو

اپنی انگلی پر دکھ کرید کمتا ہے 'اے رہ اس کی تطبق کی جائے گی یا نہیں کی جائے گی؟ اگر اللہ فرمائے کہ اس کی تخلیق کی جائے گی انہیں کی جائے گی ؟ اگر اللہ فرمائے کہ اس کی تخلیق کی جائے گی آئر کھنے فرمائے کہ اس کا رفت کی جائے گی اور اس کی موجہ کو برائل کے تم نوح محتوظ میں دیکھنے میں اس کا رفتی اس کا رفتی اس کا رفتی اس کا رفتی اس کا دفتی اس کی موجہ بلور بس کا عمل تکھنا ہوا ہو تا ہے۔ جس جگہ اس کو دفن کیا جائے گا وہ دیل سے مٹی لیا ہے اور اس کو اس کے نطقہ میں بلا کر گونہ حتا ہے اور یہ اللہ توالی کے اس تول کا

ہم نے ہم کو مٹی سعد پرد اکیا اور اس میں ہم کو لو تاویں کے اور اس میں اور اس میں اور اس میں اور اس میں اور اس می

مِنْهَا خَلَقْنَاكُمُ وَهَيْهَا نُولِدُ كُمُ وَمِنْهَا نُخْرِحُكُمْ نَارُهُ أَخْرَى (طنه ١٥٥)

(عليام لا مكام القرآن " ١٦ " على ٥٠٠ " معلوم عروست)

امام عبد بن ميداور امام ابن المنذر منه مطافر احانى مدوايت كياب جس جكد انسان كودفن كياجائكا كاوبال كى منى كوفرشته نطفه ير چنزكما به اوريد الله تعالى كاس قول كاصداق به مسها عمل فساكم-

(الدرالية والعام اص موا مطويد امران)

مانو ابو ایم امیمانی موق مسجد ای سد کے سات صفرت ابد برید و برید سے روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ مرتبید نے افرال بر سولود سے اور اس کی تجرک سطی چھڑکی جاتی ہے۔

(طيته الاولياء "ج ٢٠ من ٢٨٠ مطبوعه وار الكاب العربي ايروت ١٠٠١ه)

د د اجلوں کی تغییریں

الله تعالى في قربا الراس في اجل (موت) مقرر فرادى ادر اجل منى (د ت مقرده) اس كياس ب اجل كم معنى موت إلى ابن آعت عن الله تعالى في دو موقول كاذكر فراي بها موق كى تغيير جراس ايك تغيير ب كد كها اجل سه موت إلى ابن آعت عن الله تعالى في مواد قيامت ب كو كله آخرت عن ان كي حيات كادت كي كوئي انتائيس ب اور ندوه مراد ابن كادت و مواد الله عن مواد الله كامل الله كه موالوركي كومطوم نبس ب دو سرى تغيير ب كد بها اجل سه مراد السان كي بدائش سه في موت كامل الله كه موالوركي كومطوم نبس ب دو سرى تغيير ب كد بها اجل سه مراد السان كي بدائش سه في موت كامل الله كام موت كي مدت ب اور دو مرى اجل سه مراد موت كي بعد سه في المراس كي موت تك كي مت بها اور دو مرى اجل سه مراد موت كي بعد سه في ادراس كي موت كي بعد سها وردو مرى اجل سه مراد موت كي بعد سها وراد يو المرى الموت كي بعد ب اوراس مراد فيذ ب اور

هيبان القر أن

دوسرى اجل سے مراد موت ہے۔ چو تھی تغیریہ ہے کہ پہلی اجن سے مراد طبی موت ہے اور دوسرى اجل سے مراد طو تاتی موت ہے۔ الله تعالى سے فرال ہے مراد طو تاتی موت ہے۔ الله تعالى نے فرال ہے وہ اس کے پاس مقرد ہے۔ اس کا معنی ہے وہ اس کو مطلوم ہے اور لوح محفوظ بیس نہ کور ہے ، پر الله تعالى فرما تاہے کہ الله کی خاصیت اور اس کی وصدانیت کے اس قدر واضح دلائل فرما تاہے کہ الله کی خاصیت اور اس کی وصدانیت ہے اس قدر واضح دلائل وسے نے باوجود تم اس کی وصدانیت میں شک کرتے ہو۔

الله تعالی کاارشاوہ: اور الله بی آسانوں اور ذمینوں میں مبادت کا مستحق ہے۔ وہ تمہارے ملاہر اور باطن کے مال کو جانتا ہے 'اور تمہارے کاموں ہے واقف ہے الانعام: ۲) الله تعالیٰ کے کمال علم میر ولیل

اس سورت کی پہلی آیت میں فربایا تھا اللہ تعالی نے آسانوں اور زمینوں کو اور تاریکیوں اور نور کو پیدا فربایا و سری آیت میں فربایا جس نے تم کو مٹی سے پیدا کیا اور سے دونوں آیتیں اللہ تعالی کی کیل قدرت پر دلائت کرتی ہیں اور اس آیت میں اللہ تعالی نے فربایا کہ دو تساری خلوت اور جلوت کو جانا ہے اور تسارے کا سوں سے دانف سے اور این دونوں آیتوں کے کمال علم پر دلیل ہے اور کمل علم آور کمل تقریب کے کو عدے اللہ تعالی کی اور سے اور این دونوں آیتوں کے مجموعہ سے اللہ تعالی کی الورست کا بدار ہے اور این دونوں آیتوں کے مجموعہ سے اللہ تعالی کی الورست پر دلیل عمل ہو گئے۔ ا

ای آے کا بظاہر معنی ہے کہ وی افتہ آ سانوں اور زمینوں جن ہے ہے لازم آیا کہ آ سان اور زعن اللہ کے لیے مرف جی اور اللہ تعلق مطروف ہے اور مطروف جو دو ہو تا ہے اور محدوہ و ناالوہیت کے منافی ہے۔ اس سوال کا جو اب یہ کہ اس آیت کا معنی ہے اللہ آسین کے منافی ہے کہ اس آیت کا معنی ہے اللہ آسین کے اللہ آسین کی تدبیری منفرہ ہے 'یا اس کا معنی ہے اللہ تساری خلوت اور جلوت کو آسانوں اور زمینوں میں جانا ہے 'اور اس ہے کوئی چر میں منفرہ ہے 'یا اس کا معنی ہے اللہ تساری خلوت اور جلوت کو آسانوں اور زمینوں میں جانا ہے 'اور اس ہے کوئی چر میں میں ہے۔

اس آیت میں فرایا ہے اللہ جانتا ہے جو تم کسب کرتے ہو ،کسب کامعنی ہے حصول نفع یا دفع ضرر کے لیے کوئی کام کرنا 'ای لیے اللہ مقائل کے افعال کو کسب قبیل کما جا تا۔

الله تعالى كالرشاوم: اور جب بحل ان كے پاس ان كے رب كى نظافوں ميں ہے كوئى نشانى آتى ہے ، وہ اس سے مند مور ليتے ہيں موے تك جب ان كے پاس حق آلياتو انبول نے اس كو جمثا ديا۔ موعظم بہ ان كے پاس اس چزكى خرس آئيں كى جس كا دہ خداتى اور انسان كے پاس اس جزكى خرس آئيں كى جس كا دہ خداتى اور انسان من من ا

كفر بالله ير المامت كي بعد كفر بالرسول كي زمت

اس سے پہلی بین آیات کا تعلق تودید کے ساتھ تھااور ان آنیوں کا تعلق رسالت کے ساتھ ہے۔ سابقہ آنیوں بیں مشرکین کے اس کفر کو بیان قربایا تھا جو وہ افغہ کے ساتھ کرتے تھے اور ان آنیوں بیں ان کے اس کفر کو بیان قربایا تھا جو وہ اور افغہ کے ساتھ کرتے تھے اور ان آنیوں بیں ان کے اس کفر کو بیان قربایا ہے جو وہ رسول افغہ میں جہ اور ان آبات بیں وجہ اور ان آبات بیں وجہ اور ان آبات بی وجہ اور انداز میں اس لیے کرتے تھے کہ آپ افغہ من وجہ کی توجہ کی وجہ سے وہ آپ کی شاخت کے صوتی پر افغہ کی طرف سے کوئی نشانی اور مجرزہ چین کرتے تو وہ اس سے مند موڑ لیتے تھے۔ سب سے بوی نشانی ہے تھی کہ آپ نے قرآن مجدد چین کیااور سے دوئی کیا کہ کوئی افسان اس کی چھوٹی اس سے مند موڈ لیتے تھے۔ سب سے بوی نشانی ہے تھی کہ آپ نے قرآن مجدد چین کیااور سے دوئی کیا کہ کوئی افسان اس کی چھوٹی سے جھوٹی آب نے جائد کو وہ کئوے کرکے دکھایا اور کئی مجوزات سے جھوٹی آب نے جائد کو وہ کئوے کرکے دکھایا اور کئی مجوزات

پٹی کے الین انہوں نے ان معروات کانہ صرف انکار کیا بلک ان کانداق اڑایا۔

ان آینوں میں اللہ تعالی نے مشرکین کہ کے انکار اور کفرکے تین انوال بیان فرائے ہیں۔ پہلا طال ہے کہ انول نے اللہ کی نشانیوں سے اعراض کیا اور منہ مو ڈا۔ دو سرا طال ہے ہے کہ انہوں نے ان نشانیوں کی کا در ان کو جمٹلایا اور تیسرا حال ہے ہے کہ انہوں نے ان نشانیوں کی کا در ان کو جمٹلایا اور تیسرا حال ہے ہے کہ انہوں ہے ہی انتہ ہے کہ انہوں نے فرایا حقرب ان کے حال ہے ہے کہ انہوں ہے ہی اللہ خقرب ان کے باس سے مراد دنیا کا عذاب ہی ہو سکتے کو بیس اس جزکی خبری آئی جس کی و سکتے ہوئے اور ان کو اپنی عددی برتری اور طاقت کا جو محمنی تھا وہ خاک میں اس کیا اور بیس کے مراد دنیا کا عذاب ہی اس کے مراد آئرت کا عذاب ہو۔

یہ بھی ہو سکتا ہے کہ اس سے مراد آئرت کا عذاب ہو۔

الله تعالی کاارشاوہ: کیاانوں نے نمیں دیکھاکہ ہم نے ان سے پہلے کتی ایسی قوی بیاہ ویراد کردیں جن کو ہم نے دین می ایسا تقدار دیا تھا جیسا جہیں نمیں دیا۔ ہم نے ان سے موسلادھار بادشیں برمائی اور ہم نے ان سے اکھیتوں اور بانوں کی اور ہم نے ان سے اکھیتوں اور بانوں کی ہوائی میں ان کے کتابوں کی پاداش میں ان کو تباہ و برباد کر دیا اور ان کے بعد ہم نے ایک دو مری قوم پردِ اکردی۔ (الانعام: ۱)

ربط آيات اورخلامه مضمون

اس عصر کہا تھوں میں اللہ تعالی نے کفار کھ کو اللہ تعالی کی نشانوں ہے امراض کرنے ان کی کھنے ہے کرنے اور ان کا ازار استرام پر ان کو عذاب کی دھم سائی تھے۔ اس آیت میں یہ بیان فرانا ہے کہ کفار اور کذیبی کو عذاب کی دھم سائی تھے۔ اس آیت میں یہ بیان فرانا ہے کہ کفار اور کذیبی کو عذاب کی دھم سنتا اللہ تعالی کی سنت جاریہ ہے۔ کیانان کمذیبی کو لوگوں ہے فہری من کریہ معلوم نمیں ہوا کہ بہم نے ان ہے پہلے کئی ہی سابقہ امتوں کو دھنا قوم علود شور و قوم فرطون اور قوم اوط کو ہاک کردیا۔ جنہوں نے اپ اپ اپ منتاز دائوں میں اس محمد ہے اپ رسولوں کی محمد ہے۔ کی تھی کہ وہ بہت بالدار اور طاقتور ہیں۔ وہ قرائی کہ ہے اس بات می منتاز نفوں میں اس محمد ہے اس بات می منتاز سے کہ ان پر بکارت موسلا دھار بارشیں عاذل ہوتی تھی 'جس ہے ان کی ذری زمیس بہت ذریخ ہوتی تھی اور ان کے مکانوں کے کنارے پر دریا ہے تھے۔ لیکن جب انہوں نے رسولوں کی محمد ہے کا ور اللہ کی نمیتوں کی باشہ تھی اور ان کے بھول کر کرتا ہے۔ قرم اپ کے رسول کی محمد ہے اور اللہ کی نمیتوں کی باشہ تعالی اس قوم کو طیامیٹ کردیتا ہے۔ قرم اپ درسول کی محمد ہے۔ اور اللہ کی نمیتوں کی باشہ تعالی اس قوم کو طیامیٹ کردیتا ہے۔ قرآن مجد میں ہے:

ہم نے کتی ی بستیوں کو ہلاک کردیا (جن کے دہنے والے)
اٹی خو شحالی پر اثر اپنے کھے تھے۔ سوسے ہیں ان کے مکان 'جن میں ان کے بعد بہت کم رہائش کی میں ہے اور (ہالاً خر) ہم می وارث ہیں ان کے بعد بہت کم رہائش کی میں ہے اور (ہالاً خر) ہم می وارث ہیں اور تبیوں کو ہاہ کہ کرنے والا نہیں ہے جب تک کہ ان بستیوں کے مرکز میں ایک رسول نہ بھیج دے 'جو ان پر ہماری آنہ ان کی طاوت کرے اور ہم اس وات می بستیوں کو ہالاک کرتے ہیں جب اس کے اور ہم اس وات می بستیوں کو ہالاک کرتے ہیں جب اس کے دیتے والے ہوئی۔

وَكُمُ اَهُلُكُما مِنْ فَرُيَةٍ لِيَوْرَتُ مَعِيثَنَهَا فَيَلُكُ مَسَاكِسُهُمُ لَمُ نُسُكُنُ يِنْ لَعُدِهِمُ الْافَلِيلُا وَكُتَّاتِعُنُ الْوَرِيْقِينَ ٥ وَمَا كَانَ رَبُكَ الْافَلِيلُا وَكُتَّاتِعُنُ الْوَرِيْقِينَ ٥ وَمَا كَانَ رَبُكَ مُهُلِكَ الْفُرِى حَثْى يَبْعَنَ مِنْ أَيْهَا رَسُولًا مُهُلِكَ الْفُرِى حَثْى يَبْعَنَ مِنْ أَيْهَا رَسُولًا يَتُلُوا عَلَيْهِمُ الْنِينَا وَمَا كُتَّامُهُلِكِى الْفُرَى الْاَوَا هَلُهُ الْفُرَى ٥٠ الفصص ٥٠٥٥)

اس تیت سے مقصود میہ ہے کہ کفار مکہ کو نصیحت کی جائے اور انہیں اس بات سے ڈرایا جائے کہ کمیں ان پر بھی وہ عذاب

نہ آ جائے ہو بھیل امتوں کے ان جیسے کافروں پر آیا تھا' جب کہ وہ لوگ دنیاوی شمان و شوکت اور قوت و طاقت اور عددی حیثیت سے اہل کمدی بہ نسبت کمیں زیادہ اور مرتز تھے۔ قرن کی تحقیق ،

(تغيير كبير على ١١٠ ص ١١ الليع قديم)

اہم رازی نے جس مدیث کاذکر کیا ہے اور یہ ہے اہم محرین اسائیل بخاری متوفی ۱۵ مد رواعت کرتے ہیں: حضرت بھران بن حصین بوہن بیان کرتے ہیں کہ نمی مجھ نے قربایا تم سب میں بمترین میرا قرن ہے۔ بھروہ نوگ جو ان کے قریب ہیں 'مجروہ لوگ جو ان کے قریب ہیں (العب ش)

(من البرای من البرای من الدیده: ۱۹۷۱ من مسلم " فعنا کل محلب " ۱۳ ۱۳ ۱۳۵۵ ۱۳۵۳ سن ابوداؤد" بر ۳ ارتم الدیده: ۱۳۵۷ سنن ترزی این البرای من البرای مسلم " فعنا کل محلب " معالی محلوم البرای البرای

علامد أبو عبد الله محرين احر ماكل قرطبي منوني ١٩٨٨ م تكسيرين

اکثر محدثین کالس پر انتفاق ہے کہ قرن سوسال کا زمانہ ہے۔ ان کی دیمل یہ ہے کہ نبی عظیمیا نے حضرت عبد العقد بین بسر جوابشی سے فرمایا تھاکہ تم ایک قرن تک زندہ ربو کے تؤوہ سوسال زندہ دہے۔

(الجامع لاحكام القرآن ١٣٦١م من ٢٠٠٠ مطوع داو الفنكو عودت ١٢١٥ من

بعض سوالون کے جوابات

اس آیت پر ایک بداعتراض ہے کہ اس آیت میں بہتایا ہے کہ مکذمین کو اللہ تعالی نے ہلاک کردیا۔ اس میں زجر و تو بھے کی

طبيان القر أن

کون ی بات ب؟ کو نکہ موت تو ہر طحس کو آئی ہے۔ فواد موس او یا کافراس کا بواپ ہے کہ و و و فاقی وجہ یہ کہ ان کو عذاب شدید سے موت آئی۔ دو مرااعزاض بیرے کہ اس آبت علی بر قربا ہے کہ کیا انہوں نے گزشتہ استوں کی ہوئے کہ معدتی نسی دیکھا؟ ملا تکہ کانو کہ کہ گزشتہ استوں کے اوال کا مثلیدہ نسی کیا تھا اور دسول افتہ ہے ہے کہ کی خرد ہے کہ و معدتی نسی سے اس کا جواب ہے کہ اس کا جواب کے کیا ان کو اور اس استوں کی با کمت کے اوال کا شعب کہ اس کا جواب کے اور اللہ کو اس استوں کی باک سے کہ اس بات کے ذکری کیا ضور دسے کہ اس کہ اور اور کون کے در میان مشہور تھے۔ ایک اور موال بیرے کہ اس بات کے ذکری کیا ضور دسے کہ ان کی جگر ایک کرا ان کہ باک کر ای اور اور کون کر ان کو باک کرا اندر پر دشوار میں ہے کہ اس سے بیانا مشمود ہے کہ ان کو باک کرتا اندر پر دشوار میں ہے کہ اس سے بیانا مشمود ہے کہ ان کو باک کرتا اندر پر دشوار میں ہے اور اس سے بیانا مشمود ہے کہ ان کو باک کرتے ان کی جگر دو مری قوم کو لے آگے۔

وَلُونَزُلْنَاعَلَيْكَ كِتْبًا فِي قِرْطَاسٍ فَلَمُسُوِّهُ بِأَيْدِيمُ لَقَالَ

الد اگریم آپ پر کا قذیر کمی برنی کآب تازل گئے گئے ہے است ایٹ پاختوں سے جو لیے تہاناد

الّذِين كُفَرُ وَالنَّ هِلَّا الْأَسِحُرُ مِّبِينَ ۞ وَقَالُوالوَلَا أَنْزِلَ

یبی کہتے کر یہ محن کمنلا جو ا جادو ہے 0 اور انفول نے کہا اس دول پاؤٹت

عَلِيهِ مَلَكُ وَلُوْ اِنْزَلْنَا مَلَكُ الْقُوْيُ الْأَمْرِثُو لَا يُنظَرُونُ ٥

کیول نیس تازل کیاگیا ، الداکریم فرشته نازل کست واله کاکی پیرا برچکا بیزا دچرانی مبلت د دی جاتی 🔾

وكوجعلناه مككاكجعلناه رجلا وكلبستاعكيرم مايلبسون

ادراكر م ديول كو زشر بنا فين تب بى اى كر دمورة) مردينات اهداك يرديما فتهاه وال مينت بواثبتاه وه الديمية

وَلَقُلِ اسْتُهُ زِئُ بِرُسِلِ مِنْ قَيْلِكَ فَحَالَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا

ادر بینک آپ سے پہنے روزن کا ٹی خاق اڑایا گی تھ ابی مزاق اڈلے وابون کر ای مزاب نے تھے

وَنَهُ وَمَّا كُانْوُ إِنَّ يَسْتُهُمْ وَوْنَ قَ

يا جن كا ده خال الرائد ك 0

الله تعالى كاار شاوے: اور آگر بم آپ محفظ من تعلى بول تلب بائل كرت اوروه است النه إتون سه جمولية تب مى كفارى كينة كريد محل كملا بوا جادد بهد بالاضام،) ريد آيات اور شمان نزول

رسول الله علي كرد الوريدة الوريدة ما المام كو مستود كرف المواسليد المرك فوك على الكرد دو البين بيل و الرام عن مست شد اور ان كو اين قوعد وحشمت مركم نيا قل ان كالزكراس سه بيلي القال عن الميكاسيد، ومري هم كرد وكر شد

خيان القر ان

بكوسوم

بغ

جونی بڑھی کے بیش کے ہوئے مجولت کو کھلا ہوا جادو قرار دیتے تھے۔ ان کاذکر اس آیت یس ہے۔

الم عبدالرحمٰن بن علی بن محدودی متوفی عدد نے بیان کیاہے کہ مشرکین کھنے کہ الے عمل التی ہے اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ علی اللہ علی اللہ اللہ علی علی اللہ علی اللہ علی اللہ علی اللہ علی اللہ علی اللہ علی اللہ

کفار کے انکار کا حقیقی سبب

> وَلَوْفَتَ حُمَّاعَكَمْ مِهَمْ بَابُارِّسَ الشَّمَّةَ وَطَلَّوُا فِيُو يَعْرُحُونَ ٥ لَقَالُوْ النَّمَاسُكِرَتُ آبْعَارُكَا فِيُو يَعْرُحُونَ آبُعَالُوا الْمَاسُكِرَتُ آبْعَارُكَا مَلْ مَحُسُ قَوْمٌ قَسُحُورُونَ ١٧٥ المحمر ١٣٠٥)

اور اگر ہم ان کے لیے آسان سے کوئی دروازہ کھول دیں اور یہ اس جس (دن ہم) چ ہتے رہیں (قو پھر ہمی) یہ نوگ بینیا سی کمیں کے کہ محض ہاری نظر بادی کی گئے ہے ' بلکہ ہم او کوں یر جادو کیا ہوا ہے۔

افتہ تعالی کاار شاوہے: -اور انہوں نے کمااس رسول پر قرشتہ کیوں نمیں نازل کیا کیا؟ اور آگر ہم قرشتہ نازل کرتے توان کاکام پورا ہو چکا ہوتا' مجرانہیں مسلت نہ وی جاتی اور اگر ہم رسول کو فرشتہ بنادیتے' تب ہمی اس کو (مورق مرد بناتے اور ان پر وی اشتہاہ ڈال دیتے جو اشتہاہ وہ اب کر دہ چیں اور ہے تک آپ سے پہلے رسولوں کا بھی نہاق اڑا یا گیا' تو ان نہاق اڑا سنے والوں کو اس بنداب نے محمر نیاجس کا وہ نہاتی اڑاتے تھے۔ الانعام: ۱۹۸۸)

كفارك مطالب ك بأوجود في جي كماته فرشة كونه بيمين ك حكمت

حافظ جالال الدين سيوطي متوفي عامد لكين بين:

الم ابن المنذر اور الم ابن الي حاتم في الم حرين اسحاق ب روايت كياب كه رسول الله وجيد في آن كو اسلام كى و وحد دى اور ان كو مسلمان كرف كى انتمائى كو شش كى تو زمعد بن الاسود انضو بن حارث عبده بن عبد يغوث الى بن خلف اور عاص بن واكل في كماكد آب بر فرشته كول نسي عادل كياكيا؟ تب يه آيت نازل مولى كد آكر بهم فرشته نازل كرف توان كاكام بورا مويكا بو يكابو كمد الدر المشور "ج" من مطبوعه امران)

کفار مکہ کا خشاہ تھاکہ اگر اللہ تعالی قلوق میں ہے کمی کو رسول بناکر بھیجا او کمی فرشتہ کو زسول بناکر بھیجا کے نکہ فرشتوں کے علوم انسانوں سے زیادہ عوتے ہیں اور این کی قدر یہ بھور این کی جیب بھی انسانوں سے زیادہ موتی ہے اور وہ مکمل طور

طِيبانُ القر آنُ

یر وو مرول سے ممتاز ہوتے ہیں۔ سوان کی نیوت اور رسالت میں کسی کو شک وشید نمیں ہوگا اواس وجہ ہے اگر اولتہ کسی کو اپنا رسول بناكر بجيجاتو فرشته كورسول بناكر بجيجاك الله تعالى في ان كاس شبه كاجوجواب ديا ب اس كى تنسيل يد ب كه كفار مكه فرشتے کو اس وقت و کھ سکتے تھے جب وہ کمی جم کٹیف میں متمل ہو آالور ہر فخص اٹی جنس سے مانوس ہو آ ہے اور دو مری جن سے فیرانوس او آہے۔ تو آگر اللہ توالی فرشتہ کو ان کے پاس رسول بناکر جمیجاتو آگر دوائی اصل صورت میں ان کے پاس آیا تو وہ اس کو دیکی سکتے نہ اس کا کلام من سکتے اور نہ اس کی عبادات اور معمولات ان کے لیے نمونہ اور ججت ہوتے۔ کیو نکہ ووٹوں كى جنس الك الك يوتى اور أكر وو أن كے سامنے انسانى پيكر ميں متمثل يوكر آيا كوده اس سے كہتے كه تم فرشته نہيں يو اتم تو جارى طرح انسان ہو اور پھران کاوی پسلاشہ لوٹ آ لکہ انجیاء علیم السلام کے پاس بھی قرشتہ بعض او کانت انسانی پیکر ہیں آتے تھے۔ حضرت ابراہیم اور حضرت نوط ملیماالسلام کے پاس فرشتے انسانی صور نوں ٹس آئے اور نی مالی کے پاس حضرت جرا کیل اعرابی اور دحید کلبی کی شکل میں آئے اور نی منتیز نے دو مرجبہ حضرت جرا کمل کو ان کی اصلی شکل میں دیکھااور یہ آپ کی خصوصیت

علامه قرطبي متوفى ٨١٨ في المما ب ك أكر كفار فرشة كواس كى اصل صورت من ديكه لين تواى وقت مرجات اكونك ود اس کی صورت دیکھنے کی طاقت نہیں رکھتے تھے۔ مجلید اور عکرمہ نے کماکہ قیامت آ جاتی۔ حسن اور قلوہ نے کماان پر عذاب آکر ان کو ملیامیٹ اور قمس نہس کر دیتا' کیونکہ اوٹہ تعالیٰ کی سنت ہے ہے کہ جب کوئی قوم کمی نشانی کامطالبہ کرتی ہے اور اس کے مطالبدير وونشاني بيني دي جاتي ہے اور پروه ايمان نسي لاتي تو الله تعالى اس قوم كوني الغور بلاك كردية ہے اور چو كك رسول الله مائي كى بعثت كے بعد آساني عذاب نسيس آناتها اس ليے ان كايہ مطاب بررانسي كياكيا۔

(الجامع لاحكام القرآن " ٢٦ م ٥٠٠ مطبوع داد الفكو " بيروت ١٥١٥ م)

نی رہیں پر طعن اور استہز اء کرنے والوں کی سزا

بعض کفار مکہ تی بڑھیے سے استزاء یہ مطابہ کرتے تھے کہ آپ کے ساتھ کوئی فرشتہ آنا جاہیے ہو آپ کی رسالت کی كواى دے قواللہ نے آپ كى تائيد اور نصرت كے ليے يہ آيت نازل كى اور بے شك آپ سے پہلے رسولوں كابھى زاق اڑا يا كيا ا توان نداق ا ژانے والوں کو ای عذاب نے تھیرلیا جس کاوہ نداق اڑاتے تھے۔

اس سے پہلے دیگر کافر قوموں نے بھی اپنے رسولوں کا زبق اڑا یا تھا

وَلَغَدُارُسُلْمَامِنُ فَسُلِكَ مِنْ شِبَعِ الْأَوْلِيْسَ ١٠٠ اور به ثك الم في آپ سے پالے الله كروبوں على ر سول بھیج اور ان کے پاس جو بھی رسوں آیا وہ اس کا پرال -22111

وَمَا يَا أَنِينِهِمْ مِن رَسُولِ إِلَّا كَانُوابِهِ يَسْتَهَرُّونَ (الحجر: ١٠٠١)

نيزالله تعالى في ملا:

فَاصْدَعٌ بِمِنَا ثُوْمَرُ وَأَعْرِضُ عَين آپ کو جس بات کا علم دیا گیاہے اس کو علاتیہ ذکر قرما کیں الْمُسْتِرِكِيْنَ0 إِنَّا كَعَيْمُكَ الْمُسْتَهْرِئِيْنَ اور مشرکین ہے اعواض کریں اور بے شک ان نداق اڑائے والواج كومزادي كي لي بم كاني بي-(الحجر: 40-44)

اور مكر كے جومناويد رسول الله علي كانداق اڑات سے اللہ تعالی نے ان سے آپ كابدا لے ليا۔ الم ابن جرير ائي سند كے مائد روايت كرتے بين:

خ**بیان انقر ان**

(جامع البیان جرمه می ۹۵-۹۳ مطبور دار الفکو می وت ۱۳۱۵ه) ظامدیہ ہے کہ جو نای کرای کافر ہی جیج پر طمن کرتے تھے اور آپ کا زاتی اڑاتے تے وسب عذاب الی میں کر فار

قُلْ سِيْرُوا فِي الْرَهُ مِن تُو انظُرُ وَاكَيْفَ كَانَ عَافِيكَ فَى الْكُورِ الْكِيفَ كَانَ عَافِيكَ فَى الْكُورِ الْكِيفَ كَانَ عَالَا لَهُ الْكُورِ الْكُورِ الْكُورِ الْكُورِ الْكُورِ اللهُ الل

دا کسی اود کو کارسازینا اول جراً ماوندیا در زمیزار کا میدا جرحش سنے ای وقع منتاب دور کر دیا گی آ کامیانی سبت 🔾 الدوشی کا طب ۱ اگراشد تیس کرنی مترد بینیاست تواس سک مواکونی ایر بس ع اور اگروه جسین کون من منع منها-اور درياة تمام بندول پر قائب سے اوروہ بہت محت والا مبیت قرر کے والاسے 0 الند تعالى كارشاد، آب كئ كد تم زين على كمومو في المراج الله الول كانجام كيرابوا؟ (الاندام: ١) اس آیت کی تعمیل یہ ہے کہ ایشہ تعلق نے رسول اللہ موجور سے فریل اے محمد الموجود ان فراق ازالے والوں أور جمثلان والول من كين كم تان على مؤكر الود محتيل كرواور تم من يمل كافرول ير كلفت و وست او عذاب آيا تمالس ك آثار اور نشالت ديكمواور اس ك حفاق لوكول م خرى معلوم كوداس أيت عن كفيب كية والول م ووود لوك میں جو اللہ تعالی اس کے رسول منظام اور دین اسلام کی محقصب کرتے ہیں۔ الله تعالى كاار شاوي: آب (ان س) كئے كه آسانول اور دمينول على يو بكرے وركم كى مكيت بي آب كئے

<u>خيان انقر اڻ</u>

کہ وہ انڈی کی کلکت ہے۔ اس نے (محض اپ کرم ہے) اپنے اوپر رحمت لازم کر لی ہے۔ وہ تم کو ضرور قیامت کے دن جمع کرے گاجس میں کوئی تک نمیں ہے گرجن لوگوں نے خود اپنے آپ کو فقصان پینچلا ہے وہ ایمان نمیں لائیں گے۔(الانعام ۱۳) الوجیت مسالت اور قیامت پر ولیل

اس آیت ہے مقصود یہ قابت کرنا ہے کہ افتہ تعالیٰ اس کا نمات کا فائل اور مستحق عبادت ہے اور سیدنا تھر برائیں اس کے اعمال کا حساب لیا جائے گا اور دلیل کی تقریر ہے ہے کہ کفار اس بات کا اقرار کرتے ہے کہ تمام آسان اور زمینیں اور ان جی تمام رہنے والے سب اللہ تعالیٰ کی مکیت جیں اور ساری تحلق اللہ کی مملوک ہے اور ممنوک پر اپنے مالک کی اطاعت کرنا لاؤم ہے۔ سو تمام انسانوں پر لازم ہے کہ صرف اس ایک رہ ب کی مبادت کریں اور اس کو عبادت کا طریقہ تمالے اور اللہ سکہ افتام پہنچائے کے لیے ایک رسول کا ہونا شروری ہے ، جو دلیل اور معجزہ سے اپنی رسائت کو قابت کرے اور سیدنا تھر مربی ہے ۔ پھڑے دلیا کی اور معجزہ سے اپنی رسائت کو قابت کرے اور سیدنا تھر مربی نے بھڑے دلا کی اور معجزات سے اپنی تبوت و رسائت کو قابت کرے اور سیدنا تھر مربی نے کھڑے دلا کی اور معجزات سے اپنی تبوت و رسائت کو قابت کریں ان کو اجر وسینے کے اور جو نافر بانی کریں ان کو سزا دینے کے لیے ایک دن مونا جا ہے۔ اور وہ دوز قیامت اور دوز جزا ہے۔

الله تعالی کی رحمت کے متعلق احادیث ادر ان کی تشریح

اس آیت میں اللہ تعالی نے فرمایہ اس نے (محض اپنے کرم سے) اپنے اوپر رصت لازم کرلی ہے۔ اہام مسلم بن مجاج قصوری متونی پیمار روایت کرتے ہیں۔

عطرت ابو ہریر و جانبے بیان کرتے ہیں کہ نبی جیر نے قربایا جب افتہ نے تلوق کو پیدا کیا تو اپنی اس کآب میں لکھ ویا ہو اس کے پاس عرش کے اور تھی کہ بے شک میری رحمت میرے خضب پر عالب ہے۔

(میچ مسلم ٔ التوبه ٔ ۱۳ (۱۳۷۱ / ۱۸۳۳ میچ البخاری و قم الدیشد ۱۳۱۳ سنن کبری ملنسانگ بیس و قم الدیشد: ۱۳۵۰ سنن این باد ایسی و ۲ میلی مسلم ٔ التوبه ۱۳۳۰ مید ۱۳۳۰ میچ قدیم)

حصرت ابو ہریرہ بوچنے، بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ میں تاہیم نے فرایا جب اللہ تعالی نے محکوق کو پیدا کرایا تو اپنی اس کتاب میں لکھا جو اس کے پاس رکھی ہوئی تھی کہ بے شک میری رحمت میرے فضب پر غالب ہے۔

(سمح سلم التوب ۱۹۱ مند احد المح سلم التوب ۱۹۱ (۱۸ مند احد اج ۴ رقم الحدیث ۲۵۰۳ منج داد الفکو ابیروت)

الله تعالی کی رحمت کا معنی بیر ہے کہ وہ آبی کرنے والے مسلمان کو تواب مطافریائے اور اپنے بندہ کو نفع بہنچ سے کا ارادہ

کرے اور اللہ کے غضب کا معنی بیر ہے کہ وہ فاستوں اور نافر انوں کو عذاب میں جٹال کرتے اور مصیبت میں ڈالنے کا ارادہ کرے اللہ تعالی کا رادہ کرے اور مصیبت میں ڈالنے کا ارادہ کرے اللہ تعالی کا ارادہ کرنا اس کی صفت قدیمہ ہے 'جس سے وہ تمام مرادات کا ارادہ فرما آئے اور رحمت کی سبقت اور اس کے غلبہ سے مرادیہ ہے کہ رحمت بست زیادہ اور بہت کی شرافراد کو شال ہے۔

حطرت ابو جریرہ روینی بیان کرتے ہیں کہ نمی میں ہے فرالیا اللہ تعالی کی ایک سور ممینی ہیں۔ جنات انسانوں 'جانوروں
اور حشرات الارش میں اس نے (صرف) ایک رحمت رکمی ہے۔ جس کی وجہ ہے وہ ایک دو سرے پر شفقت اور رخم کرتے ہیں۔ ان جست کی وجہ ہے و حتی جانور انے بچوں پر رخم کرتے ہیں اور اللہ تعالی نے ننانوے رحمی مو فر کر رکمی ہیں۔ ان کے ساتھ قیامت کے دن اپنے بندوں پر رخم فرائے گا۔

(معج مسلم 'التوبه ۱۹' (۱۹۲ م ۱۸۳۴ مستن ابن ماجه اج ۲' رقم الحديث ۱۳۹۳)

ید دنیادار ابناء اور داراتکلیت ہے اور اس دنیا بھی بھی افتہ کی آیک رحمت سے مسلمانوں کو اسلام 'قرآن اور نماز کی رحمت حاصل ہوئی۔ بلکہ تمام شریعت افتہ کی رحمت ہے اور مسلمانوں کے دلوں بھی افتہ تعالی نے رحمت رکھی جس ہے وہ نیک ' مسلہ رحمی اور فریب پروری کرتے ہیں تو این نانوے و تنوں کی وسعت اور گیرائی کے متعلق کوئی شخص کیاتھور کر سکتاہے جو دار تا خرت ہیں حاصل ہوں گی جو دار القرار اور دار الجزاء ہے۔

حضرت مربن الحطاب بویز بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بیجیو کی خد مت جی قیدی بیش کیے گئے اقید ہیں ہے ایک عورت کی کو علائی کر ری تھی۔ امپانک اس نے قید ہوں جی اپنے کی کو دیکھا اس نے بیچ کو اپنے بیت ہے جمٹا بیا اور اس کو دورہ پایا۔ پھر رسول اللہ بیجیو نے ہم ہے فرمایا تمہار اکیا خیال ہے؟ کیا یہ مورت اپنے پی کو آگ می ڈال دے گی؟ ہم نے کہا نہیں خدا کی حمرہ آگر آگ میں ڈالناس کے لیے مقدور ہواتو یہ اپنے بی کو بھی آگ میں نسی ڈالے گی۔ رسول اللہ بیجیو نے بھی فرمانے وال ہے۔ مقدور ہواتو یہ اپنے بی کو بھی آگ میں نماوہ می فرمانے والا ہے۔ فرمانے والا ہے۔

المسيح مسلم التوبه ٢٢ (١٨٣٥ ٢١٥ ١٨٣٥ معيم ابناري ح٢ أرقم الديث: ١٩٩٩)

اس جگہ پر یہ اعتراض ہو تا ہے کہ جب مل اپنے بچہ کو آگ بی ڈالنا گوارہ نہیں کرتی تو اللہ اپنے بندوں کو آگ میں ڈالنا کیے گوارا کرے گا جبکہ اللہ مل ہے کمیں ذیاوہ رجم ہے۔اس کا جواب یہ ہے کہ اللہ اپنے بندوں کو آگ میں نہیں ڈالے گااور جن کو آگ میں ڈالے گا وہ اپنے آپ کو اللہ کا بندہ نہیں کہتے۔ کوئی خود کو بنوں کا بندہ کہتا ہے کوئی اپنے آپ کو سورج اللہ ' بنیل اور کوئی گائے کا بندہ کہتا ہے اور کوئی خود کو جسیٰ اور عزیر کا بندہ کہتا ہے اور کوئی اپنے آپ کو اللہ کا بندہ کہتا ہے گربندگی اپنی خوابشات کی کرتا ہے:

آرَةً يُسَتَّ مَيِّي الْمُعَدِّدُ اللهُ هُمُولُهُ آهِ آمُنَّ تَسَكُّولُ كَا آپ الله اس فَعَى كود يكها جس الله ف عَلَيْهِ وَرَكِيْلًا ١٤٥ المعرفان ٣٣٠) كواپنامود بناليا الوكيا آپ اس كي د كالت كرين هجه!

بان ابولوگ خود کو اللہ کا بندہ کملائے میں عار نہیں سیجھتے اور اپنی نفسانی خواہشوں کے برخلاف اللہ تعالی کی اطاعت خوشی سے کرتے میں کو وہ ان کو آگ میں نہیں ڈالے گااور ایسے لوگوں ہے آگر بہمی انسانی تقاضے ہے کوئی لفزش یا اطاعت میں کی ہوگئی اور انہوں نے پھر تو بہ کر کے اللہ کی طرف رجوع کرنیا تو اللہ انسیں معاف فرماوے گااور ان میں سے آگر کوئی افیر تو بہ کے مرگی تو اس کے لیے بھی اللہ کی رحمت اور نبی مرفی ہوئے ہو وہ گرزرکی مخودور گرزرکی مخوات ہے۔

اس مدے میں ہے کہ اگر بہ فدا میرا رب قاور ہوا تو بھے ایساعذاب دے گا۔ (الدے) اس پر اعتراض یہ ہے کہ اس مخص کے اس قول سے معلوم ہو تا ہے کہ اس کو اللہ کی قدرت پر شک تھااور اللہ تعالٰی کی قدرت پر شک کرنا کفرہے۔ اس اعتراض کے متعدوجواب ہیں۔

۱۰ اس مخص کے قول میں "قدر" قدرت سے ماخوذ نہیں ہے ' ملکہ قضاء قدر کے معنی میں ہے۔ لینی آگر میرے رب نے ميرے كے عذاب مقرر كردياتوں مجھے ايساعذاب دے كاك كمي كوامياعذاب ندويا ہو كا ٣- "تدر"اس قول من على كرنے كے معنى من ہے۔ يين أكر ميرے رب نے جھے ير على كى تو جھے ايها مذاب دے كار

قرآن مجيدين ہے: مَفَدُرَعَلَيْوِرِرُقَهُ (العجرm

مواس يراس كارزق تك كرويا ہونس نے کمان کیا کہ ہم ان رسطی نیس کریں ہے۔

مَظَنَّ الْأَنْ تُفُدِرُ عَلَيْهِ (الانبياء)

ا- "قدر" قدرت ي كم معنى يس ب- ليكن اس محض في سوج سجه كريد لفظ تسيس كما اور اس في جويد كما أكر الله عذاب ديني الدر مواقواس كواسا عذاب و علااس كلام سه اس كايد قصد اور اراده نسي تفاكه اس كوالله كي تدرس يرشك ے۔ الكه اس نے خوف وہشت اور سخت محبراہث كى كيفيت من بغير مديراور تظركے بيرالفاظ كے۔ جيسے كوئى فخص خفلت اور نسیان ہے کلمہ کفر کمہ دے تو اس کی تحفیر نہیں کی جاتی 'جیے ایک مخص کو اپنی کم شدہ او نٹنی ل مکی تو اس نے اللہ کاشکر ادا کرنے کے لیے شدت فرح اور خوشی کے جذبات سے بے قابو ہو کر کما تھا تو میرا بندہ ہے اور میں تیرا رب ہوں ای طرح اس نے غلب خوف اور دہشت کی وجہ ہے سموایہ الفاظ کے اور اس سے اس کی محفیر نمین ہوتی۔

٣- هر يوں كاايك اسلوب يہ بھى ہے كہ وہ يتيني امركو شك كى صورت ميں بيان كرتے ہيں۔ قر آن مجيد ميں ہے:

قُلْ مَن يَبْرُدُفُكُمْ قِينَ السَّمْوُاتِ وَالْأَرْضِ فَبِلِ آپ كُيَّ فَهِي آمَانُون اور زمينون عه د زق كون دينا

الله وَإِنَّا أَوْرِايًّا كُمُ لَعَلَى هُدُى أَوْمِي صَلاّ بِي الله وَإِنَّا أَوْرِيهِ لَك أَم والمديرين والمل

مَّيِيِّينِ (سيا:٣٣) کرای یں۔

ای طرح اس مخص کو اللہ کی قدرت پر یقین تھا لیکن اس امر کو شک۔ کی صورت میں بیان کیا۔

۵۰ وہ محض اللہ تعالی کی صفات سے جال تھااور جو محض اللہ کی تمی صفت سے جال ہو اس کی تحفیر متفق علیہ جس ہے۔ الم ابن جرار طبری اس کی تخفیر کرتے ہیں او محرائمہ نے کماکہ اللہ کی صفت ہے جبل کفر نمیں ہے اس کی صفت کا انکار کفر ے۔ اہم ابوالحن اشعری نے بھی ای تول کی طرف وجوع کیا ہے۔

٢- وه مخص زماند فترت من تعاادر اس كے ليے صرف توحيد كومانناكاني تعا اور منج تربب يہ ب كر شريعت نازل ہونے سے يسلط كوئي فخص ممي تحم كامكات نهين بوتك الله تعالى قرما بايه:

وَمَا كُنَّا مُعَدِّينً مَنْ مَنْ يَعْدَنُ رَسُولًا ہم اس دفت تک عذاب دینے والے نمیں ہیں جب تک

(الاسراء: ١٥) د سول نه يجي دي-

٠٠ اس مخص نے خود کو حقیراور مستحق عذاب قرار دینے کے لیے اور اللہ کی رحمت پر امید دیکتے ہوئے یہ کہا تھا اس کو اللہ كي لقدت ير لنك معين تعل

حضرت مذیقہ بریش بیان کرتے میں کہ نی کریم بیجی نے فرلما کہ تم ہے پہلی امتوں کے ایک محض کی روح سے فرشتوں کی ملاقات ہوئی۔ فرشتوں نے ہوچھاتم نے کوئی نیک کی ہے؟ اس نے کمانیں افرشتوں نے کمایاد کرد۔ اس نے کمایس ہوگوں کو قرض دیتا تمااور میں نے اپنے نو کروں کو تھم دیا تماکہ جو نگ دست ہو اس کو مسلت دینااور خوش حال پر سختی نہ کرنا۔اللہ عز و جل نے فرمایا اس سے ور گزر کرو۔ حضرت مذیف کی ایک اور روایت میں ہے اللہ تعالی نے فرمایا اس چیز کا میں تم سے زیادہ حقد ار

تبيان القر أن

الال ميرك بندے عدور كرد كور

(متیج مسلم الساقاه ۱۳۱ (۱۵۷۰) ۱۳۹۰ میج الجفادی نج ۳ و قم الحدیث ۲۵۰ منن این باد اج ۴ و قم الحدیث ۱۳۲۰) دستری این باد این ۱۳۲۰ (۱۵۲۰) ۱۳۲۰ می است می السته می است می جار در آن الله می داشته می جار در است می جال در اتفاله اس نے داسته می کانٹول کی ایک شخص داسته میں جال در اتفاله اس نے داسته میں کانٹول کی ایک شخص داسته میں اس نے اس کو داسته سے ایک طرف کردیا الفت سے اس نعمل کو مشکور کیااور اس کو پخش دیا۔

مام مسلم کی دو ممری دوایت میں ہے اس محض نے کمایہ خدا میں اس شاخ کو مسلمانوں کے داستہ سے مثانوں گا کہ ان کو ایزاء شدہ ہے۔ تو دو محتص جنت میں داخل کردیا گیا۔

. (صحیح مسلم البردانسلا ۱۳۵٬ ۱۳۵ (۱۹۱۳) ۲۳۵۳ میم ابوادی جسار قم الحدیث ۱۳۵۲ سنی نژی کا جسار قم الدرث: ۱۹۷۵ سنی این مادر جسم و قم الحدیث: ۱۹۷۳ میم این مبلن جسم و آن قم الحدیث: ۱۳۳۵ مید الحریدی و قم الحدیث: ۱۳۳۳ الموظاء و قر الحدیث: ۲۹۵ مید احر جسم ۱۳۵ طبع قدیم)

راستہ سے تکلیف دو چیز کو ہٹا دینا ایمان کی کھانیوں میں ہے ہے "خواہدہ کانٹوں کی ٹنٹی ہو 'شیشہ کا کلزا ہو 'کیلے یا آم کاچھانکا ہو 'کوئی گندی چیز ہویا مردار ہو۔

حضرت ابو ہریرہ پریٹی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ ہیجیز نے فرایا ایک فخص راستہ میں جارہا تھا اس کو بہت مخت ہیا س کی 'اس نے ایک کوال دیکھا' اس میں از کرپائی ہیا۔ بیروہ باہر آیا تو اس نے دیکھا ایک کنا ہیا س کی شدت ہے بیچرا جاٹ رہا تھا۔ اس فخص نے کھا اس کتے کو بھی آئی ہی ہیا س کلی ہوئی ہے جتنی جھے گلی تھی 'وہ کنو کی جس از ااور اس نے اپنے موزہ جس پائی بھرا' بھر موزہ کے مند کو بٹد کرکے کئو کس سے باہر آیا اور کتے کو پائی پلایا۔ اللہ نے اس کے اس تعلی کو مشکور کیا اور اس کو بخش دیا۔ سحابہ کرام نے بچ چھا بیار سول اللہ اکیا جانوروں کے ساتھ نیکی کرنے ہے بھی بھی اجر ملے گا؟ آپ نے فرمایا ہرزیرہ جگر میں اجر ہے۔

ا می مسلم اسلام ۱۵۳ (۲۳۳۳) ۵۵۱ می افغاری اجسار قم الحدیث: ۲۳۳۳ سنن ابوداؤد اجسار قم الحدیث ۱۳۵۰ می ایک کتے کو حضرت ابو جریرہ جوئیز بیان کرتے میں کہ نبی جیج ہے فرایا ایک زائیہ عورت نے ایک سخت کرم ون میں ایک کتے کو کو کم کے گرد چکرلگاتے ہوئے دیکھا جس نے پاس کی وجہ سے ذبان باہر نکالی ہوئی تھی اس عورت نے اپنے موزہ میں اس سکے سلے پانی بھرا اتواس مورت کو بخش دیا کیا۔ اسمیح مسلم اسلام اسمام اسلام اسمام (۲۳۳۵) ۵۵۵۵)

حفرت ابو ہریرہ جین بیان کرتے ہیں کہ ایک لی ک وجہ ہے ایک عورت دوزخ بیں داخل ہو گئی اس نے اس لی کو باندہ کرر کھا اس کو خود کھلایا نہ اس کو آزاد کیا گاکہ وہ زمین سے بچھ اٹھا کر کھالتی۔ حتی کہ وہ بھوک ہے مرحیٰ۔

(معیم مسلم "انتوبه" ۲۱ (۱۲۵۳) ۱۸۵۰ معیم البخاری میم ۴ دقم الدیث: ۲۳۳۵ منن النسائی میم رقم الدیث ۱۳۸۱ منن این ماجه میم کن ترقم الدیث ۱۲۵ (۲۳۵ منن داری کی ۲۲ دقم الدیث: ۲۸۳۳ سنن کبری للیصفی میم میم مید احر کیم ۴ می ۱۳۹ ۱۸۱٬۲۳۱ ۱۵۹ طبع تدیم)

آثار رحمت کی احادیث ذکر کرنے کے بعد ہم نے آخر میں آثار خضب کی بھی ایک حدیث ورج کروی ہے 'آکد کوئی مخص صرف رحمت پر نظر کرتے ہوئے گئاہوں پر ہے باک نہ ہو جائے 'کیو تکد اگر وہ ایک کئے کو پانی پالنے پر عمر بھر کے گناہ معاف کرکے جنت عطافر ہا آئے ہو آئی کو بھو کار کھ کرمار ویے پر ضضب میں آگر دوز نے بھی بھی ڈال دیتا ہے۔ اس لیے اس کی دونوں صفتوں پر نظر دہے اور ایمان 'عذاب کے فوف اور ثواب کی امید کی در ممانی کیفیت ہے۔

الله تعالى كاارشاوسى: رات اور دن مى جو بھى سكونت بذير ہو وہ سب الله ى كليت ہے وى خوب خنے والا بست جانے والا ہے اور وہ بست جانے والا ہے۔ آپ كئے "كيا مل الله كے سواكسى اور كو كارساز بنالوں جو آسانوں اور زمينوں كا پر اكرنے والا ہے اور وہ سب كو كھلا آہ اور اس كو كھلا الله ميں جا آ۔ آپ كئے كہ جھے تقم ديا كيا ہے كہ ميں سب سے پہلے اسمام لاتے والا ہو جاؤں اور سب كو كھلا آہ ہو اول ہو جاؤں اور سب كو تقم ديا كيا ہے كہ ميں سب سے پہلے اسمام لاتے والا ہو جاؤں اور سب كو تقم ديا كيا ہے كہ تم ہر گر شرك كرتے والوں ميں سے نہ ہو با۔ آپ كئے كہ اگر ميں اپنے رب كی نافر ان كروں تو ميں تقليم دن كے عذاب سے ذر آہوں جس سے اس دن عذاب دور كرديا كياتو ہے تك اس پر الله نے بہت و حم قربا اور ہي بہت واضح كاميا ہي ہو۔ (الا نعام : ١١٠ - ١١٠)

مغفرت " نجات اور دخول جنت كاسبب الله تعالى كافضل ہے نہ كه اعمال

بعض مفرین نے کما کہ یہ آعت اس وقت نازل ہوئی جب مشرکین نے یہ کما کہ جمیں معلوم ہے کہ تم نے یہ نبوت کا دعوں مفری دعویٰ اپنی ضرد ریاستہ ہوری کرنے کے لیے کیا ہے۔ جم تسادے لیے اس قدر مال جمع کرویتے جیں کہ تم ہم سب نے فنی ہو جاؤ کے۔ اس پر یہ آیت نازل ہوئی کہ رات اور دن میں جو چڑ بھی متحرک ہے یا ساکن 'یا جو چڑ بھی سکونت پذیر ہے 'وو سب اللہ می ملکیت ہے۔

پر فرایا آپ کئے کیا میں اللہ کو چھوڑ کر کسی اور کو رب مامر اور سعبود بنالوں؟ کیا میں آسانوں اور زمینوں کے پیدا کرنے دالے کو چھوڑ دوں؟ جو اپنی تمام مخلوق کو رزق دیتا ہے اور وہ اپنی حیات اور جنامیں کسی غذا کا محاج نمیں ہے۔

اور چونک نی مربیر اپن امت میں سب سے سابق ہیں اس لیے آپ کو سب سے پہلے اسلام لانے کا تھم دیا اور شرک کرنے ہے منع کیا۔ پھر فرمایا کہ آپ کئے اگر میں بھی بانفرض اپنے رب کی نافرمانی کروں تو میں عظیم دن کے عذاب سے اور آ

موں۔ اس میں امت کے لیے تعریض ہے جب نی مرتبیر جو معصوم ہیں جن کی وجہ سے ان گزت گزرگار بخشے جا کیں گئے اجب دو کی اللہ کی نافرمانی کو وہ سے اس کی اللہ کی نافرمانی کرنے پر عذاب سے ڈورتے ہیں تو عام مسلمانوں کو اللہ سے کتنا ذیادہ ڈورنا چاہیے۔ پھر فرمایا جس محتص ہے اس دن عذاب دور کردیا گیا ہے تک اس پر اللہ نے بہت رحم فرمایا۔

معترفہ یہ کتے تھے کہ نیک مسلمانوں کو اجرو تواب دینااور ان کو عذاب سے محفوظ رکھنااللہ تعالی پر واجب ہے۔ اس کے مقابلہ میں اہل سنت کا یہ ذرجب ہے کہ نیک مسلمانوں کو اجرو تواب دینااور ان کو عذاب سے محفوظ رکھنااللہ تعالی کا فضل ہے اور یہ آب اللہ میں اہل سنت کی دلیل ہے آبے ذکہ اللہ تعالی نے فرایا ہے جس فخض کا فروں اور فاستوں کو عذاب دینا اللہ تعالی کا عدل ہے اور یہ آب اہل سنت کی دلیل ہے آبے ذکہ اللہ تعالی نے فرایا ہے جس فخض سے اس دن عذاب دور کر دیا گیاتو ہے شک اس پر اللہ نے بہت رہم فرایا آبور یہ کہنا ابی وقت مستحن ہوگا جب نیک مسلمانوں کو عذاب سے بچانا اللہ تعالی کا عذاب سے بچانا اللہ تعالی کا حرم نہ ہو آب کی تعدید ہو تا ہو گیر اور جس ہو آب کی جان کو عذاب سے بچانا اللہ تعالی کا حرم نہ ہو آب کا حق نہیں ہے اور اس کا رحم و کرم اور فضل واحد اللہ پر کسی کا حق نہیں ہے اور اس پر کوئی چیز واجب نہیں ہے اور نیک مسلمانوں کو عذاب سے بچانا محض اس کا رحم و کرم اور فضل واحد اللہ پر سے۔

الم مسلم بن تجاج قضيدى متوفى المعدد واعت كرت بين:

حضرت ابو ہررہ وینے بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ منظیر نے فربایا تم میں ہے کسی مخض کو اس کاعمل جنت میں ہرگز واخل نمیں کرے گامحایہ کرام نے پوچھایار سول اللہ آ آپ کو بھی نمیں؟ فربایا جھے کو بھی نمیں۔ سوائے اس کے کہ اللہ جھے اپنے فضل اور رحمت سے ڈھانپ لے۔

(صحيح مسلم منافقين عد اله ١٩٨٣ محيح البعاري جد وقم الحديث ١٣٦٧ سنن ابن ماجد جه وقم الديث ١٣٠١ سنن

طِيانَ القر ان

داری " ج۲" رقم الحدیث: ۲۷۳۳ مند احد بختیق اجر شاکر " بیما" رقم الحدیث: ۱۳۹۷ میمود احد " ج۴ م ۲۵۱ ۱۳۵ میم لدیم)

المام محدين اسائيل عفاري متوفي الاعدروايت كرسة بين:

علات انس بوہنے بیان کرتے ہیں کہ نبی ہیں ہے قرمایا جس مسلمان کے بھی تمن تابالغ بچے فوت ہو جائیں اوو اس سلمان کو اللہ کے فعنل اور اس کی رحمت ہے جنت میں داخل کردیں ہے۔

اسمح البواري" ج" وقم الديمة « ۱۳۳۸ سن نسائل " ج" وقم الديمة « ۱۳۵۲ سنن ابن باجه " ج" وقم الديمة « ۱۳۴۵ سند احمد " ج" ص ۱۵۰ طبع قديم)

الم ابو عيني حرين عيني ترفدي متوفى اعده روايت كرت ين:

معترت عبدالله بن مسعود برجير بيان كرتے بي كر رسول الله علي نے فرما الله تعالى الله الله معالى عالى كو الله على كو نكد الله اس كو پند كر آ ہے كداس سے سوال كيا جائے اور كشاد كى كا انتظار كرنا افعنل عبادت ہے۔

استن روى "جه"ر قم الحديث: ١٣٥٨٢)

الم مسلم بن تجاج المدرى متوفى المدروايت كرت بين:

حضرت ابو اسید برونیز بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ میزور نے فرمایا جب تم میں ہے کوئی مخص معجد میں داخل ہوتو یہ دعا کرے 'اے اللہ آمیرے لیے اپنی رحمت کے دروازے کھول دے اور جب معجدے لکے تو یہ دعاکرے 'اے اللہ ایس تھے ہے تیرے فضل سے سوال کر تاہولیہ

(میح مسلم اسافرین ۱۸۴ (۱۹۱۰) ۱۹۴۴ سنن ابوداژد این رقم الدیده ۱۳۴۵ سنن نسانگ ۲۳ رقم الدیده ۱۳۹۵ سنن کمری ملنسانگ ۲۴ رقم اکدیث: ۱۹۰۰۵ ممل البوم و الفیله النسانگ رقم الحدیث: ۱۴ سنن این ماجه این ارقم الحدیث: ۱۳۷۳ سنن داری " نا" رقم الدیث: ۱۳۹۳ ج۲ ۱۳۹۳ سند احمه ۲۰ م ۲۰ م ۲۰ م ۱۳۲۵ طبع قدیم)

ئي منظم نے استخارہ كى جو دعا تعليم قرائى ب اس مى أيك جملہ يہ ب

السيح الناري عن من أرقم الديث ١١٦٢ اسن نسائل عن الديث: ٣٢٥٣ مند احد مع ٢٠٥٣ المع قديم) الم احد بن منبل متونى المعلم دوايت كرت بين:

حفرت قبیعیدین تخارق برین بیان کرتے ہیں کہ بھی دسول اللہ بڑی کی قدمت بھی حاضر ہوا 'آپ نے فرایا اے قبیعید تم کس کام ہے آئے ہو؟ بھی نے عرض کیا میں ہو رُحا ہو گیا ہوں اور میری بڑی کردر ہوگئ ہے 'بھی آپ کے پاس اس لیے آیا ہوں کہ آپ کے خوال اے قبیعید آئم کی لیے آیا ہوں کہ آپ نے فرایا اے قبیعید آئم کی پیٹر 'در خت یا مٹی کے دُمیا اے قبیعید آئم کی کی نماذ پڑھنے کی در خت یا مٹی کے دُمیا کے بیاں ہے نہیں گزرو کے 'گروہ تمازے لیے استغفاد کرے گا۔ اے قبیعیدا تم میم کی نماذ پڑھنے کے بعد تمن دفعہ یہ پڑھو 'مید میں میں کا دو گے۔ اے بید تمن دفعہ یہ پڑھو 'مید تمن دفعہ یہ پڑھو 'مید میں اللہ العصل و بحد مدہ ''تم نا بینا ہونے ' جذام اور قالے ہے محفوظ رہو گے۔ ا

البيه والمراتم بيروعا كروا ما الله المن المحمد من المرتبي المر اور جه يراني رحت بميروك اور جه يراني بركتن نازل فرا-(منداحر "جه من ١٠ مطور داد الفكر "يروت اطبع قديم) حضرت الوجريره بوالخور ميان كرتي بين كرتي مرجين تمازين قرائت سے پہلے جب سكوت كرتي تو اللہ سے اس كے فضل ے سوال کرتے تھے۔(منداحر عوم ٢٣٣٥ مطبوعہ دار الفکو عوب ملح قديم) اللہ کے نعنل اور رحمت سے دخول جنت کی محقیق

الل سنت كاند مب يرب كر مثل س الوار عذاب البن نيس مو آاورند ادكام كلينيد مثل س البت موت بير. یہ تمام امور شرع سے علبت ہوتے ہیں۔ نیز افل سنت کا ند بہب یہ ہے کہ اللہ تعالی بر کوئی چیزواجب نمیں ہے ، تمام جمان اللہ تعالی كى مكيت ب اور ونياو اخرت من اس كى سلطنت ب-وه جو چاب كرے اگر ده تمام اطاعت كرتے والوں اور صالحين كو دو زخ میں ڈال دے توبیر اس کاعدل ہو گالور جب وہ ان پر اگرام اور احمان کرے گالور ان کو جنت میں داخل کروے گاتوبیر اس کا فضل ہوگا اور آگر وہ کافروں پر اکرام کرے اور ان کو جنت میں وافل کردے تو دہ اس کابھی بالک ہے الیکن اللہ تعالی نے خردی ہے کہ وہ ایسانیں کرے گااور اس کی خرصادق ہے اور اس کی خرکا کانب ہونا کال ہے۔ اس نے یہ خردی ہے کہ وہ مومنوں کی مغفرت کردے گالور اپنی رحمت سے ان کو جنت میں داخل فرمائے گا'اور پیراس کافعنل ہے اور کافروں اور منافقوں کو عذاب دے گااور ان کو بیشہ دو زخ میں رکھے گا۔ اس کے برخلاف معزل کتے ہیں کہ احکام مخیفید مثل سے تابعت ہیں اور نیک اعمال کا اجروثواب وعاواجب

ہم نے جو املوں بیان کی ہیں ان میں اہل سنت کی دلیل ہے کہ کوئی مخص بھی اپنی اطاعت کی وجہ سے جنت کا مستحق نہیں ے کلہ جنت کا دار ممل پر نسیں محق اللہ کے فعنل پر ہے۔ البتدا بعض آیتی بظاہر معتزلہ کی موید ہیں۔ أدعلوا المعتقيما كتشم تعملون ان افعال کی وجہ ہے جنت میں وافل ہو جاؤ ہو تم کرتے

1 (التحل: ۲۳)

اور ہے ہے وہ بنت جس کے تم دارٹ کیے گئے ہوا ان تَعْمَلُونَ (الرحرف،٢٢) المال كادب عوم كرتاع

یه آیتی اور اس نوع کی دو مری آیتی اس پر دلالت کرتی میں که جنب میں دخول کاسب نیک افعال میں الیکن نیک افعال کی توفیق اور اعمال میں اخلاص کی ہدایت اللہ مقالی دیتا ہے اور اپنی رحمت ہے ان نیک اعمال کو تیول قرما تا ہے تو حاصل اللہ متعالی کی رحمت اور اس کافضل ہے۔ اس لیے یہ کمنا میج ہے کہ جنت محض عمل ہے نہیں 'بلکہ اللہ تعدلی کے فضل ہے کمنی ہے 'اس کی ویش اور بدایت ند مو تو کوئی نیک عمل کیے کر سکتا ہے۔

جان دى دى مولى اى كى تحى حق توبيه ہے كہ حق ادانه موا

دو سرا جواب سے بے کہ ایک جنت میں دخول کاصوری اور ظاہری سبب ہے اور ایک حقیقی سبب ہے۔ خاہری اور صوری سب نیک ا**کمل بیں ا**ور حقیقی سب اللہ تعلق کا فعنل اور اس کی رحمت ہے۔ ان آیوں میں مکاہری سب یعنی اٹمال کی طرف دخول جند کی نسبت فرمائی ہے اور جو احادیث ہم نے ذکر کی ہیں اس میں دخول جند کی نسبت حقیق سبب بینی اللہ تعالی کے ضل اور اس کی رحمت کی طرف قرمائی ہے اور عمل کی جو نفی ہے اس کامعنی یہ ہے کہ دخول جنت کا حقیقی سبب اعمال نسیں ہیں ابلکہ الله تعالى كافتل ب- بعض علاء نے كماجنت ميں وخول ايمان كى وجد سے ہو كلد ورجلت المالى كى وجد سے مليس كے اور جنت ميں دوام مومن کی نیت کی دجہ سے ہوگا کو تک مومن کی نیت بیشہ ایمان پر قائم رہنے کی ہوتی ہے اس کے اس کو اجر و ثواب بھی بيشه بيشه لماسه

انتد تعالی کاار شاوے: اور (اے عاطب،) اگر اللہ حمیس کوئی ضرر پنچائے تواس کے سواکوئی اس ضرر کو دور کرنے والانسي ب اور أكروه حميس كوكي نفع بنجائ تووه مرجزر عورب اوروى اب تمام بندول يرعاب اوروه بت محمت والا يمت فيرو كحن والاسب-(الانعام: ١٨-١٢)

حقیق حاجت روا کار ساز اور مستعان صرف الله تعالی ہے

اس سے مہلی آنوں میں اللہ تعالی نے فرمایا تھا آپ کھے "کیا میں اللہ کے سواکسی اور کو کار ساز بنالوں جو آسانوں اور زمینوں کا پیدا کرتے والا ہے اور وہ سب کو کھلا آ ہے اور اس کو کھلا انسی جاتک اس کا حاصل ہے ہے کہ اللہ تعالیٰ کے سواکوئی حقیقی حاجت روانسیں ہے اور اس مطلوب پر بیہ آیت دلیل ہے کہ اگر اللہ تمہیں ضرر پہنچائے تواس کے سوالور کوئی اس ضرر کو دور كرف والانهيں اور أكر وہ حبيس كل بينجائے تو وہ برجزير قادر ہے اور اي مضمون كي يہ آيت ہے:

مَا يَغْنَج اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحَمْةٍ مَلَا الله رحت عالاول كاليه وج ي كوك الله والله مُنْسِكَةَ لَهَا وَمَا يُمْسِكُ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْ روكة والانهي إور بس جزي وه روك له واس ك روکنے کے بعد اے کوئی چمو ژنے والا نہیں ہے اور وہ غائب

بَعْدِه وَهُوَالْحَرِيرُ الْحَرِكُمُ والْحَرِكُمُ (ماطر:٢)

مكت والايب-

يد سنى مدعث مح من بمى ب كرنى بين المازك بعد جوذكر كرت من اس من ير جمل ب-

حضرت مغیرہ بن شعبہ بریش بیان کرتے ہیں کہ نبی باتھ ماز کے بعد ذکر کرتے تھے۔ اے اللہ اجو چیز تو مطافراے اس کو کوئی روکنے والا نہیں ہے اور جس چز کو تو روک لے اس کو 'کوئی دینے والا نہیں ہے اور کوئی طاقتور اپنی طاقت ہے تیرے مقالجہ ص نفع نهي بينيا سكنك. (مي مسلم المنابد " عه" (عهد) ١٣٠٢ مي البعاري عن رقم الحدث: ٣١٥ سنن ابوداؤد " ج) رقم الحديث: ٥٠٥١ سنن التسائي "ج" رقم الحديث ١٣٠١)

الم ابوليسني محدين ميني ترفري متوفي ١٥ عد روايت كرية من

حضرت ابن عباس رضی اللہ حتمامیان کرتے ہیں کہ ایک دن میں سواری پر نبی بھید کے بیچھے بیشا ہوا تھا۔ آپ نے قر مما اے بیٹے ایس تم کو چند باتوں کی تعلیم دیا ہوں۔ تم اللہ کو یاد رکھو اللہ تمساری حفاظت کرے گا۔ تم اللہ کو یاد رکھو متم اللہ کو اپ سائے پاؤ کے۔ جب تم سوال کرو تو اللہ تعالی ہے سوال کرواور جب تم مدد طلب کرو تو اللہ تعالی ہے مدد طلب کرو۔ اور جان لو کہ اکر تمام امت تم کو نفع بنجائے کے لیے جمع ہو جائے تو وہ تم کو صرف ای چیز کا نفع بنجا سکتی ہے جو اللہ تعالی نے پہلے ہے تسارے لیے لکے ریا ہے۔ اگر تمام لوگ تم کو نقسان پنجائے کے لیے جمع ہو جائیں تو دہ تم کو صرف ای چڑ کا نقسان پنجا کتے ہیں جو اللہ تعالى نے لكھ ديا ہے۔ كلم افعالي محك بين اور محفے فتك ہو يك بين- يد مديث حسن مح ہے۔

(منن ترزي عسوم و من المعينة ٢٥٢٧ منداحر عسوم المعينة ١٨٠٧ ٢٨٠٧ من قايره منداحر عارقم المدينة ٣٨٠٠ ٢٨٠٣ ١٢٦١ في جديد واوالفكو "مشر احر" جا "ص٥٠٠ ٢٠٠٠ ١٠٠٠ في تديم واوالفكو "مشر ابويعلي" جه وتم الديث: ٢٥٥١ المعم الكبير للعبراني" جه" وقم الحصصة ١٥٠٠ ١٣٣٣ معه الكراب الدعا للعبراني" وقم الحديث: ١٩ سند الشاب ٢٥٧٥ المستدرك " ج٣ من ٥٣١ معلاج السنر "ج٣ من ٢٣٠ عل اليوم واليله لابن السنى" رقم الحديث: ٢٥٠ مطبوعه كراجي" ملكوة المصابح

تبيان القر أن

م موم المع كراجي)

قرآن جمید کی ان آیات اور اطاوی سے یہ معلوم ہوا کہ انسان کو فقر مرض فم اور ذات کی وجہ ہے جو معیبت اور انگیف کی ہے افلہ تعالی کے سوالن معمائب اور شدائد کو کوئی دور کرنے والا نہیں ہے اور رہے والم کو اس کے سواکوئی زاکل کرنے والا نہیں ہے اور رہے والم کو اس کے سواکوئی زاکل کرنے والا نہیں ہے کی تکہ اللہ تعالی می جرحزے قلور ہے۔ ای طرح صحت والمت عزت اور اولاو کا بھی صرف وی دینے والا ہے۔ دنیا اور آخرت میں اس کی سلطنت اور قرمانروائی ہے اس کا ظلبہ اور ای کی کریائی ہے برے برے برا بران اور جابر محکرانوں کی کردیم اس کے سلطنت اور قرمانروائی ہے اس کی طبخت کرتے ہیں اور اس کے سامنے ہور ورز میں اس کی حرانوں کی کردیم اس کے سامنے جمام انہیاہ اور سل اور قرمنے اس کی حاجتی ہوری کرتے ہیں اور اس کے سامنے ہو اور میں کی حاجتی ہوری کرتے ہیں اور اس کے سامنے مانے جو اور میں کی حاجتی ہوری کرتے ہیں اور اس کے سامنے درت موال در از کیا جائے اور اس کی حاجتی ہوری کرتے ہیں کا درانہ مطابق ہوری کرتے ہیں کا درانہ مطابق ہوری کرتے ہیں کہ در سامنے موال در از کیا جائے اور اس کی حاجتی ہوری کرتے ہیں کا درانہ کیا جائے در اس کی حدول ہور کی گری ہوری کرتے ہور کی کرتے ہیں کا درانہ کیا جائے در اس کی حدول ہوری کرتے ہور کی ہوری کرتے ہور کی کرتے ہور کرتے ہور

الم ابو عيني محدين عيني ترفدي متوفى ٥٥ مد دوايت كرتے إلى:

حضرت انس جوفیر بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ میں ہیر نے فرایا تم جی (بر) ایک محض کو جاہیے کہ اپنی تمام حاجت میں ا این رب سے سوال کرے من کر جو تی کا تعریبی ثوث جائے والے رب سے اس کا سوال کرے۔

استن رّ زي مع مع أو تم الحديث ٣٦٢٣ مطبور هاد الفكو 'بيروت مهماهاه)

معرت ثابت بیانی جوش بیان کرتے ہیں کہ وسول افقہ جونیو نے فرمایا تم میں ہے (ہر) ایک مخص کو جاہیے کہ دوائی ماجت میں اپنے رب سے سوال کرے 'حق کہ نمک کا بھی اس سے سوال کرے اور جب جوتی کا تعمد نوٹ مائے و اس کا بھی اس سے سوال کرے۔ (سنن ترزی کا ج۵ وقم الدے شدہ ۳۳۴ مطبور ھار اللکو 'جودت)

اگر کمی فضی کی دعافور آقبول ند ہو قواس کو باہر سی ہو کر دعا ترک نہیں کرتی چاہیے 'بلکہ مسلس دعا کرتے رہنا چاہیے۔
حضرت ابد جرمیدہ جو چڑے بیان کرتے ہیں کہ وسول اللہ سی چڑے ہے فربایا جو فضی بھی اس تدر باتھ بلند کرے اللہ سے سوال
کر آ ہے کہ اس کی بنظیں فاہر ہو جا کمی اللہ اس کا سوال پو دا کر دیتا ہے۔ جب تک کہ وہ جلدی نہ کرے۔ صحابہ کرام نے بوجہا
یار سول اللہ اجلدی کا کیا سمتی ہے؟ آپ نے فربایا وہ یہ کہ کہ جس نے سوال کیا اور جس نے سوال کیا اور جھے بچر نہیں دیا گیا۔ اور
حضرت ابد جرمیدہ جو چڑے ہے تھی ہے دوایت کیا ہے کہ تم جس سے کمی فضی کی دعا اس دقت تک قبول کی جاتی ہے جب تک
کہ وہ جلدی نہ کرے۔ وہ کتا ہے جس نے دعائی اور میری دعا قبول نہیں ہوئی۔

(سنن ترة ي "ج 4" و قم المديث ١١٩٠ ٣ كنز وعمال أو قم المديث ١٣٣٠)

معرت عبدالله بن عمروضی الله عنما بیان کرتے میں کہ رسول الله علیج نے فرمایا تم میں ہے جس عض کے لیے دعا کا دروازہ کھول دیا گیا۔ اللہ کے زدیک سب سے پہندیدہ سوال بیر ہے کہ اس سے دروازہ کھول دیا گیا۔ اللہ کے زدیک سب سے پہندیدہ سوال بیر ہے کہ اس سے

عافیت کاسوال کیاجائے اور رسول اللہ عظیم نے قربایاجو مصائب تازل ہو بھے ہیں اور جو تازل نہیں ہوئے ان سب میں دعات نفح ہو آ ہے۔اے اللہ کے بندوا دعاکیا کرو۔اہم تر قربی نے کمااس مدعث کی مند غریب ہے۔

(سنن ترزي عور قم الحديث: raat مطبوعه داو الفكو "بيروت)

حضرت ابو ہربرہ برطی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ مظاہر نے فرانا ہو مخض اس بلت سے فوش ہو کہ مصیرتوں کے وقت اس کی دعا قبول کی جائے 'اس کو جاہمے کہ راحت کے وقت بہ کشرت دعا کرے۔

اسنن رزري عه وقم الحديث: ٢٠١٠ المستدرك وقم الحديث ١٩٩٤)

حضرت سلمان فاری برین بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ مظیر نے قربایا اللہ تعالی حیادار محریم ہے۔ وہ اس سے حیا قربا آ ہے کہ کوئی مخص اس کی طرف باتھ اٹھائے اور وہ ان ہاتھوں کو نامراد اور خلل لونادے۔

اسن ترزی جه ار قم الدیده ۱۳۵۷ سن ابوداؤد اج ارقم الدیده ۱۳۸۸ سن ابن اجه ۱۶۴ رقم الدیده ۱۳۸۹ اسن ترزی این اجه ا انبیاء کرام علیهم السلام اور اولیاء کرام الله کی دی موکی طاقت اور اس کے افزان سے

تصرف کرتے ہیں۔ اس آیت میں یہ فرمایا ہے کہ افلہ کے مواکوئی مصببت اور ضرر کو دور نمیں کر سکتا طاہ کد انسان بھی خودائی کو شش سے مصببت کو دور کر ایتا ہے 'بھی اس کے دوست اور رشتہ دار اس مصببت کو دور کر دیتے ہیں 'انسان بیار پڑجا آئے تو ڈاکٹر دوا کے ذریعہ اس کی بیاری اور 'فلیف کو دور کر دیتا ہے 'قیاست کے دن انبیاء علیم السلام عموباً اور ہمارے نبی سیدنا محمہ مزیم نصوصاً گناد گاروں کی شفاصت فرماکر ان سے عذا ہے کہ مصببت کو دور کریں گے 'بلکہ آپ نے دوگنہ گاروں کی قبریہ شاخ کے دو محکوم نصب کرکے ان سے برزخ کاعذا ہے دور کر دیا۔ (محکم عاری ۱۲۲۱) مصرت علی برویٹی کو دکھتی ہوئی آ تھے میں 'مصرت سلمہ بن اکو م کی لوٹی ہوئی پنڈلی میں اور مصرت ذیورین معلق کی ثوثی ہوئی تا تھ میں احاب دیمن لگایا اور ان سے دنیا کی تکلیف کو دور کر دیا اور دو

شغایاب ہو گئے۔ افغاہ میں امام بخاری نے بھی حضرت علی کی آنگھوں کی شغا کی مدیث روایت کی ہے۔ اسمیح ابطاری میں ہوگئے۔ افغاہ میں اور ایام بخاری نے حضرت سلمہ بن اکوع کی ٹوٹی ہوئی پنڈلی کی صدیث بھی روایت کی ہے۔ (ج۵ ارقم اوقم الحدیث: ۱۹۳۹) اور امام بخاری نے روایت کیا ہے کہ ابو رافع بیودی کو قتل کرنے کے لیے حضرت عبداللہ بن حیک گئے اور اس الحدیث بین مان کی تاکمہ ٹوٹ کی۔ رسول اللہ بڑیجید نے اس پر باتھ بھیرا تو دواس طرح در ست ہوگئی کہ بھی ٹوٹی بی نہ تھی۔
مہم میں ان کی تاکمہ ٹوٹ کی۔ رسول اللہ بڑیجید نے اس پر باتھ بھیرا تو دواس طرح در ست ہوگئی کہ بھی ٹوٹی بی نہ تھی۔
د اسمیر ان کی تاکمہ ٹوٹ کی۔ رسول اللہ بڑیجید نے اس پر باتھ بھیرا تو دواس طرح در ست ہوگئی کہ بھی ٹوٹی بی نہ تھی۔

ایے ہے کڑت واقعات ہیں اس طرح اولیاء اللہ کی کرامتوں ہے بھی لوگوں کی بیاریاں اور ان کے مصائب دور ہو جائے
ہیں اور یہ تمام امور اس آیت کے خالف ہیں۔ اس کا جواب یہ ہے کہ اللہ تعلق اپنی ذاتی قدرت سے اپنے بندوں کے مصائب
اور * تکلیفوں کو دور کرتا ہے ' اس کے برخلاف لوگ جو ایک دو سرے کی مدد کرتے ہیں اور ان کی مشکلات میں کام آتے ہیں اور ان
کے مصائب کو دور کرتے ہیں ' دواللہ کی توفق اور اس کی دی ہوئی طاقت سے کرتے ہیں اور دواؤں ہیں شفاکی آئیراللہ تعلق نے
پیدا کی ہے۔ دو محض سب ہیں شفاد ہے والا اللہ تعلق ہے۔ دو چاہے تو بغیر دوا کے شفاد سے دے اور اگر وہ نہ چاہ تو کمی دواسے
شفانہیں ہو کتے۔ اس طرح انبیاء علیم السلام اور اولیاء کرام 'اللہ تعلق کی دی ہوئی طاقت اور اس کے اذن سے تعرف کرتے
ہیں۔ بیاروں کو شفاد ہے ہیں اور گذاگروں کی شفاعت کرتے ہیں لور شک وشتوں کو فنی کرتے ہیں اور این افعال کی ان کی طرف
نبیت کرنا جائز ہے۔ قرآن مجید ہیں۔

وَمَا لَقَهُ وَ إِلْاَانَ أَعْنَهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وِسُ اوران كومرف يرالكاكه الله اوراس كرمون في فَصَيله (النوبه: ٩٤)

دیجے حقیقت میں غنی کرنے والا مرف اللہ بہ الیکن اللہ تعالی نے فرایا اللہ اور اس کے رسول نے انہیں اپنے ففل سے غنی کردیا" سو معلوم ہو البیا کہنا جائز ہے۔ البتہ ایہ اعتقاد ضروری ہے کہ اللہ نے اپنی ذاتی قدرت سے غنی کیا اور رسول اللہ سوجی نے اللہ تعالی کی دی ہوئی قدرت اور اس کے افان سے غنی کیا۔ ای طرح قرآن مجید میں ہے:

وَإِذْ تَغُولُ لِللَّهِ يَ أَنْعُمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمَتَ اوردب آباس فنص عائمة تع جس رالله إنام

عَلَيْهِ الاحراب ع) فراياور اب ع (ابعي) العام قرايا-

نظاہرے کہ اللہ منعم حقیق ہے اور آپ نے اللہ کی دی ہوئی قدرت اور اس کے اون سے انعام فرمایا ، محراللہ تعالی نے انعام کرنے کی نسبت دونوں کی طرف کی ہے اور معرت جرائیل نے معرت مریم سے کما

حقیقت میں بینادینے والا اللہ تعالی ہے الین اللہ تعالی نے بینادینے کی نبت معرت جرائل کی طرف کی ہے ایونکہ اللہ ف فرت جرائل کو اس کا سب اور ذراید بنایا تعلد انبیاء علیم السلام کی دعاؤں سے بھی بینا ہو جاتا ہے۔ معرت ابراہیم علید السلام کی دعاؤں سے بھی بینا ہو جاتا ہے۔ معرت ابراہیم علیہ السلام کی دعاہوں۔ السلام کی دعاہوں۔

(مند احد عوم ملاك ملا المعم الكيم عدا من عدم من البرار عوم من من موارد العلمان المن هدا المستدرك عن

ص ۱۹۰۰ ملید الاولیاء 'ج ۱۰ می ۸۹ ولا کل النبوة 'ج ۱۶ می ۱۳۰۰ شرح الدین 'رقم الحدیث ۱۳۳۷ مصابح الدین 'ج ۴ می ۱۳۸) اور قرآن مجیدیش فدکور ب کد حضرت یجی علید السلام حضرت زکریا علید السلام کی دعائے پیدا ہوئے۔ اس طرح اللہ تعالی اولیاء کرام کی دعامت ور قربالے تو ان کی دعائے بھی اولاد ہو سکتی ہے و لیکن مسجح طرفقہ بید ہے کہ لولیاء کرام سے دعاکی در فواست

کی جائے گر آپ اللہ تعالی سے مارے کے دعا کریں کہ ہمارا فلال مطلوب بورا ہو جائے اور اللہ تعالی کے زویک اول ام کی ایک عزت وجابت اور معولیت ہے کہ اللہ تعالی اپنے کرم اور فسل سے ان کی دعا تیول فرمالیتا ہے اور رو نسیس فرما کا۔اس نے

خود فرمایا ہے کہ میں اپنے مقرب بندہ کو جب اپنا محبوب بنالیتا ہوں توجی اس کے سوال کو روشیں کرتا۔

(مح البحاري عدار قم الحديث ٢٣١٠ عمد)

صدیث بی بھی فنی کرنے کا استاد اللہ اور رسول دونوں کی طرف کیا گیا ہے۔ اہام محمدین اسامیل بخاری متونی ۲۵۲ مد روایت کرتے ہیں:

حضرت البع بريره برین بیان کرتے ہیں که رسول الله بیج نے صدقہ وصول کرنے کا تھم دیا' آپ کو بتایا گیا کہ ابن جیل' حضرت خلد بن ولید اور حضرت عباس بن عبد المطب رضی الله خمانے صدقہ دیے ہے منع کیا ہے۔ نبی بیج نبی سے فرایا ابن جیل کو قو صرف یہ بلت ناگوار ہوئی ہے کہ وہ فقیر تعاقو الله اور اس کے رسول نے اس کو غنی کردیا اور رہا خلد قوتم اس پر ظلم کرتے ہوائی زرہ محفوظ رکھ ہے اور اس کو جماد فی سیل الله کے نبی واقف کیا ہوا ہے اور دے حضرت عباس بن عبد المطلب ہوائی قرو وہ ول الله بیج بی اور دے حضرت عباس بن عبد المطلب برائتی قو وہ وہ الله بیج بی میں میں میں میں میں میں میں الله بیج بی اس کے باند دیا الله بیج بی کردی ہوئی اس کے باند دیا ان کے باند دیا ان میں دیا ہوا ہے اور اس کی جائے اس کے باند دیا ان کے باند دیا ان میں دی تو وہ دیا ہوں کی جائے سعیدی غفرار)

فبيان القر أن

ان تصریحات ہے واضح ہو کیا کہ حقیقتاً یا واسط اور بالذات مصائب کو دور کرنے والا اور تعین مطافرانے والا الله تعالی

ے' آہم اللہ تعالیٰ کی دی ہوئی قدرت اور اس کے اوال سے مقریان حضرت رب السوت مصوصاً ہادے ہی سیدہ محمد منظیم مجمی

عذاب اور مصائب کو دور کرتے ہیں اور دنیا اور آخرت میں غنی اور شاد کام کرتے ہیں۔ انترء میرے الاتبائے درمیان گواہ الي جي ديا - آم ر ارتبے ہوں ان وال کر ہے ک ں مہا دمت سبے اور میں سے ان (مسب) سے بری بحل جن کوم افر کا فرک ہے وہ اس دہی) کو کمیٹ پیٹول کی طرح پہچاہتے ہیں ۔ جمہ وگول سے اپنی جاؤل کو تعصال میں تحالا عوموريومنون®

ا ده ایال جس فی کے 0

حضرت ابن عباس رضی اینہ تعالیٰ متمایان کرتے ہیں کہ مکدے موادوں نے دسول اللہ بھور سے کما اللہ کو آپ کے سوار سول اللہ بھور سے کما اللہ کو آپ کے سوار سول بنانے کے اور کوئی نمیں ملفائیس کوئی محض قبیل ملاج آپ کے دسول ہونے کی تصدیق کرے۔ ہم نے یہود اور نمیل سے آپ ہمیں نمادیٰ سے آپ ہمیں نمادیٰ سے آپ ہمیں ہمیں کہ ایک کی فران کون دے گا؟ تب اللہ تعلق نے یہ ایست نازل قربائی آپ کیے دکر کس کی کوانی سب سے بیلی بنائے کہ کس کی کوانی سب سے بیلی

جلدسوم

غيان القر ان

ہے؟ آپ کئے افتہ میرے اور تہمارے در میان گولو ہے کے تکہ سب سے بڑی گوائی افتہ ہمانہ کی ہے اور جب وہ اس کو مان لیس تو آپ بتا کیں کہ میری نبوعہ پر افتہ گواہ ہے۔ کو تکہ جھے پر اس قرآن کی دی کی گئے ہے اور بیہ قرآن مجزو ہے کیو تکہ تم ضماء اور فیلغاہ ہو اور تم اس قرآن کا معارضہ کرنے اور اس کی نظیرانا نے سے عاجز رہے ہو اور جب بیہ قرآن مجروہ ہے توانتہ تعالی کا اس قرآن کو جھے پر نازل کمنا میرے و کوئل نبوت کے موافق ہے اور میں افتہ تعالی کی طرف سے میرے نبی ہوئے کی شماوت ہے۔ اور بید اس آب کا معنی ہے اور میری طرف اس قرآن کی وی کی گئی ہے آکہ میں تم کو اس قرآن سے ڈراوس (اور ان کو) جن تک میں تم کو اس قرآن سے ڈراوس (اور ان کو) جن تک میں میں ہے۔

الم محمين اساعيل بخارى متونى ٥١ معدروايت كرت ين:

حضرت عبداللہ بن عمد رسی اللہ تعالی عنمابیان کرتے ہیں کہ تی ہیجید نے قربایا میری طرف سے تبلیخ کرو واوا یک آیت مو۔ اوز بنو اسرائیل سے احادیث بیان کرو کوئی حرج نسیں ہے اور جس نے بھے پر عمد اجموث باند هاوه اپنا تعکانہ ووزخ میں بنا

(میچ البخاری کیم می دخم افریت: ۱۳۳۷ سنی ترزی کیم از قم افریت: ۱۳۵۸ سند اور ایم از قم افریت: ۱۳۹۷ میچ این دبان رقم الحدیث: ۱۳۵۷)

جن لوگوں کو قرآن اور مدعث کی تبلیق کی گئی کی مجتبر نے اس کی تمن متمیں بیان فرمائی میں۔

معرت او موی بروز بی موجی بروی سے دوات کرتے ہیں کہ افتہ نے جس بدایت اور علم کو دے کر بھے بھیا ہے اس کی مثل اس بادش کی طرح ہے جو کسی ذیان پر بری ان جی ہے بعض زمین زر فیز تھیں۔ انہوں نے پانی کو قبول کر ایا اور تر اور منگل کھاں کو اٹکیا اور بعض فیر ذرگی زمین تھیں ان جی پانی جع ہوگیا الفتہ نے ان سے اوگوں کو فائدہ پہنچایا۔ انہوں نے پانی بیا اسے مورشیوں کو پانیا اور کھیوں کو پانی دیا تو رائی اور دین کی تنم پر بادش ہوئی جو غیر تھی اس نے پانی جع کیا نہ کہ و اگایا۔ یہ مثل ہے اس منظی ہو غیر تھی اس نے بانی جمع کیا۔ اس نے علم مثل ہے اس محمد حاصل کی اور اللہ سند جو دین دے کر بھیے بھیا ہے اس سے نفع پایا۔ اس نے علم حاصل کی اور اللہ سند جو دین دے کر بھیے بھیا ہے اس سے نفع پایا۔ اس نے علم حاصل کی اور اللہ کی اس برایت حاصل کی اور اللہ کی اس برایت کو قبول کو تعلیم دی اور اللہ کی اس برایت کو قبول کی تعلیم کی جس نے اس دین کی طرف بالکل توجہ تعمی کی اور اللہ کی اس برایت کو قبول نسم کیا جس کے ساتھ بھے جھیا گیا ہے۔ (مجھ البحاری جاس نے اس دین کی طرف بالکل توجہ تعمی کی اور اللہ کی اس برایت کو قبول نسم کیا جس کے ساتھ بھے جھیا گیا ہے۔ (مجھ البحاری جس نے اس دین کی طرف بالکل توجہ تعمیم کی اور اللہ کی اس برایت کو قبول نسم کیا جس کی ساتھ بھی جھیا گیا ہے۔ (مجھ البحاری جاس نے اس دین کی طرف بالکل توجہ تعمیم کی اور اللہ کی اس برایت

ملی مثل کے معداق المد جمعدین میں دو مری مثل کے معداق مد غین میں اور تیسری مثل کے معداق کفار اور

بعض روایات پی فرکور ہے جس فنص کے پی کتب اللہ کی ایک آیت پینچ کی اس کے پی اللہ کا تھم پینچ کیا 'خواووہ اس پر عمل برے یا نہ کرے۔ مقاتل نے کماجن اور انس میں ہے جس کے پاس قرآن پینچ کیا' وواس کو ڈرانے والا ہے۔ اور قرقی نے کماجس کے پاس قرآن پینچ کیا کویا کہ اس نے سیدنا محد میں کوریکھالور آپ ہے سنا۔

(الجامع لاحكام الترآن ١٦٠ مل ١٦٠ مطبوع دار اللكو "بيروت ١٣١٥ه)

علامه سيد محود آلوى حولى مداله تكعية إل:

الم ابو تعیم و فیرو نے حضرت ابن عباس رضی الله تعالی عنماے روایت کیا ہے کہ رسول الله رہیں نے فرمایا جس محض کے پاس قرآن بھی کیا جمویا اس نے جمعہ ہے بالشاف سنا۔ اس آیت جس یہ فرمایا ہے آپ کھتے کہ جمعہ پر اس قرآن کی و تی ک گئے ہے' یا کہ جس تم کو اس قرآن سے ڈراؤں اور ان لوگوں کو جن تک یہ قرآن مہنے۔ اس آیت سے یہ استدلال کیا کیا ہے کہ جن لوگوں

تابيان القر أن

تک ادکام شرعہ نمیں پنے ان ہے ادکام شرعہ پر عمل نہ کرنے کو جہ ہے موافذہ نمیں کیا جائے گالور اس کی تائید اس مدیث سے ہوتی ہے۔ اہم ایو جل نے اپنی سند کے ماتھ صفرت ابی بن کعب بولین ہے دوایت کیا ہے کہ رسول اللہ موجید کیاں وکھ قبری لائے گئے۔ آپ نے پر جہاتم نے ان کو اسلام کی وجوت وی ہے؟ صحلہ نے قربالیان سی آپ نے فربالیان کو چھوڑ دو۔ پھر آپ نے یہ آیت پڑھی اور میری طرف اس قرآن کی وقی کی گئے ہے آکہ میں تم کو اس قرآن سے ڈراؤں اور جس تک یہ پنچ بندی ہے۔ اس مطلوب پردلیل ہے:

ہم اس وقت تک عذاب دینے والے نیس ہیں اجب تک

وَمَا كُنَّامُ عَيْدِينِينَ خَنْي نَبْعَتَ رَسُولًا

(الاسراء: ١٥) كرمول تد يح دي-

اس آیت میں فرملائے آپ کئے کہ وہ صرف ایک مستحق عبادت ہے کور بے ٹنک میں ان (سب) ہے بری ہوں جن کو تم اللہ کا شریک قرار دیتے ہو اس آیت ہے یہ معلوم ہواکہ اسلام قبول کرتے کے لیے صرف کلہ طیبہ یا کلہ شاوت پڑھ لیما کافی نمیں ہے' بلکہ یہ ضروری ہے کہ اپنے مجھلے دین کے باطل ہونے کا اعتراف اور اقرار کرے اور اس ہے براٹ اور ہیزاری کا اظہار کرے۔

الله نقافی کاارشادہے: جن لوگوں کو ہم نے کتاب دی ہے 'وہ اس (نبی) کو اپنے بینوں کی طرح پہلیانتے ہیں۔ جن لوگوں نے اپنی جانوں کو فقصان میں ڈالاسووہ ایمان نہیں لا نمیں گے۔ (الانعام: ۴۴) وما شمیس سرانیہ سرکی کے مصروفہ میں میں میں میں اس اور ا

الل كتاب كانى ين كوات بيون سے زيادہ پيچانا

اس سے پہلی آیت کے شان زول میں ہم نے ذکر کیا تھا کہ کفار نے یہ کما تھا کہ ہم نے آپی نبوت کے متعلق میمود و نسار کی سے سوال کیا تو انسوں نے کما کہ ہماری ترابوں نیں ان کی نبوت کا کوئی ذکر نسمی ہے۔ اسکا ایک جو اب اللہ تعالی نے اس سے پہلی آیت میں دیا کہ سب سے بوی کو ای تو اللہ تعالی کی ہے اور آپکی نبوت پر اللہ کواہ ہے اور دو سراجو اب اس آیت میں دیا کہ الل کماپ کا یہ کمنا تعلق ہے کہ وہ آپکی نبوت کو نسمی پہلے نے کا کہ وہ اپنے بیٹوں کو انتا نسمی پہلے نے بھٹا آپکو پہلے تے ہیں۔

الم ابوجعفر محسان جرير طبري ائي سند ك ساته روايت كرتي بين

ابن جریج نے بیان کیا کہ اہل کتاب میں ہے جو مسلمان ہو بھے تھے انہوں نے کہا۔ خدا ہم ہی جیج کو اپنے بیٹوں سے زیادہ پہچانے نے اسلمان کی سے دیادہ پہچانے کے بیٹوں سے زیادہ پہچانے کے بیٹوں سے زیادہ پہچانے کے بیٹوں سے زیادہ پہچانے کے بیٹوں ہے کے بیٹوں کے دور ہے اور رہے بیارے بیٹے تو ہم نہیں جانے کے بیٹوں کے بیٹوں نے کیا چھے کیا ہے۔ (جائع البیان کرنے میں ۱۱۸ مطبور داو الفکو کیوت ۱۵۱ مید)

الم محدين اساعيل عفاري متوفى ١٥ مد روايت كرتے مين:

حضرت عبداللہ بن ملام برین کویہ فرر پنی کہ نی بڑی ہدید تشریف لے آئے ہیں او وہ آپ کے ہاں آئے اور کما ہی آپ سے شین الی چیزوں کے متعلق سوال کروں گاجن کو نبی کے سوا اور کوئی نہیں جائے۔ (ا) آیامت کی پہلی علامت کیا ہے؟ اور الی جنت پہلے کون ساطعام کھا کی گے ؟ اور کس چیز کی وجہ سے بچہ اپنی این چیزوں کے مشابہ ہو آئے ؟ اور کس چیز کی وجہ سے بچہ اپنی ان چیزوں کی جبرا کیل نے فہروی ہے۔ وبداللہ نے کما اپنی ماروں کو مشرق سے فرطا جھے ابھی ان چیزوں کی جبرا کیل نے فہروی ہے۔ وبداللہ نے کما فرشتوں جی وہ بیودیوں کا دشمن ہے۔ پھر رسول اللہ بیچہ نے فرطا آیامت کی پہلی علامت ایک آگ ہے جو لوگوں کو مشرق سے فرشتوں جی دوروں کا دشمن ہے۔ پھر دسول اللہ بیچہ نے فرطا آیامت کی پہلی علامت ایک آگ ہے جو لوگوں کو مشرق سے مفرب کی طرف جمع کرے گی اور الی جنت جو طعام سے سے پہلے کھا کمیں گے وہ چھلی کے جگر کا گزا ہے۔ اور شیکی مشابہ مو کو ورت سے ممل تزوی کر آئے قواگر مود کا پانی غالب ہو آئے قو بچہ باپ کے مشابہ ہو آئے اور اگر

مورت کاپانی عالب ہو آئے تو بچہ ماں کے مشابہ ہو آئے۔ عبداللہ بن ملام نے کما جی گوائی دیتا ہوں کہ آپ اللہ کے رسو جی ۔ پھر کہ فارسول اللہ ایسور کو آگر میرے اسلام تبول کرنے کا علم ہو گیا تو وہ جمہوت ہو جا کیں گے۔ سویرور آئے اور عبداللہ گو جی چلے گئے۔ رسول اللہ جیجیج نے بچ چھا عبداللہ بن ملام تم جی کیے آدی ہیں؟ انسول نے کما وہ ہم جی سب سے بڑے عالم جی اور سب سے بڑے عالم کے بیٹے ہیں اور ہم جی سب سے افضل ہیں اور سب سے افضل کے بیٹے ہیں۔ رسول اللہ جیجیج نے فرایا یہ بتاؤ آگر عبداللہ اسلام لے آئی تو آانہوں نے کما اللہ تعالی اس کو اس سے بناہ جی رکھے۔ تب معرت عبداللہ بن مسام برائی ان کے سامنے آئے اور کما "اشھال ان لاالہ الااللہ و اشھالا ان صحصہ وسول اللہ "تو انہوں نے کما یہ ہمیں سب سے برتر مخص ہو اور سب ہے برتر مخص کا بیٹا ہے۔

(صحح البحاري على على من الحديث: ٣٣٠٩ مطبوعه وارالكتب العليه ويروت ١٣١٢ ما الاله

آبو تمزہ و فیرہ نے روایت کیا ہے کہ جب نی جہیم میند میں تشریف لائے قو حضرت مر جہیں۔ نے حضرت عبداللہ بن ملام جہائی سے کماکہ اللہ تعلق نے اپنے بہوں کی طرح بہائے جہائے اپ کماکہ اللہ تعلق نے اپنے بہوں کی طرح بہائے تا اس کماکہ اللہ تعلق نے بو آپ کی صفحت اور نعت بیان کی ہے ، ہم آپ کو اس مسلمت اور نعت بیان کی ہے ، ہم آپ کو اس مسلمت اور نعت بیان کی ہے ، ہم آپ کو اس مسلمت اور نعت سے بہائے نے تھے۔ جب ہم نے آپ کو تممارے ور میان دیکھا تو ہم نے آپ کو اس طرح بہان ایا جس طرح کوئی مسلمت اور نعت سے بہائے نے تھے۔ جب ہم نے آپ کو تممارے ور میان دیکھا تو ہم نے آپ کو اس طرح بہان ایا جس طرح کوئی مسلمت اور نعت سے بہائے کے در میان بہان لیتا ہے اور انلہ کی تنم اجھے سیدتا میں جہیم کی معرفت اپنے بہتے ہے زیادہ میں اپنے بینے کے در میان کہا گئی رہی تھی ؟ حضرت عمر جہائے نے فرایا تم نے بج کہا۔

(روح المعالي ميزيم من ١٢٠ مطبوعه بيروست)

بعض علاء نے کہاہے کہ یہ معرفت وال کل سے عاصل ہوئی تھی "کیو تکہ نی جیج مسلسل فیب کی فہری بیان فرائے تھے اور فیب پر مطابع ہونا بدوں دی کے متصور نہیں تھا۔ نیز آپ سے متواتر مجزات کا ظہور ہو رہاتھا اور سب سے برا مجزہ فود قر آن کریم تھا۔ اس لیے جو فض بھی ان داہ کل جی فور کر آیا ہے آپ کی نبوت کا عرفان ہو جا آیا اولاد کے نسب کے متعلق کوئی علی اور متعلی دلیل نہیں تھی اور آپ کی نبوت کے بارے جی بمت وال کل تھے اور یہ مجھے نہیں ہے کہ انہوں نے اپنی کابوں میں اور متعلی دلیل نہیں تھی اور آپ کی نبوت کے بارے جی بمت وال کل تھے اور یہ مجھے نہیں ہے کہ انہوں نے اپنی کابوں میں کھی ہوئی علی اور جائے وہ علامات شرق دفرب میں کھی ہوئی تھی اور جائے وہ علامات شرق دفرب میں کھی ہوئی تھی اور جائے وہ علامات شرق دفرب میں کہیں ہوئی تھی اور جائے وہ علامات شرق دفرب میں کہیں ہوئی تھی اور جائے وہ کہا تھی ہوئی تھی ہوئی تھی اور جائے وہ علامات شرق دفرب میں کہیں ہوئی تھی ہوئی تھی ہوئی تھی ہوئی کر لیتے؟

الله تعالی کاارشادہ: جن لوگوں نے اپنی جانوں کو نفسان میں ڈالا 'وہ ایمان نمیں لا کمی سے۔ دالاندام ۲۰) کفار کے اخروی نفصان کا معنی

اینی جو لوگ سیدنا مجر بہتی کی نیوت کو بہتائے تھے اس کے باوجود انہوں نے عمادا آپ کی نیوت کا اٹکار کیا۔ اس اٹکار

انہوں نے اپ آپ کو نقسان پہنچایا کیو تک ان کو اب دو ندخ میں ڈال دیا جائے گا۔ شارہ کی ایک تفسیریہ ہے کہ اللہ تعالی نے ہر محض کے لیے ایک جشت بنائی ہے آ کہ اگر وہ انجان کے آئے تو اس کو اس جشت میں داخل کر دیا جائے اور اس کے لیے ایک دو زخ بنائی ہے آ کہ اگر وہ انجان نہ لائے تو اس کو دو زخ میں ڈال دیا جائے اور قیامت کے دن کا فروں کی جنتی مسلمانوں کو دے دی جائے گاوریہ کا فروں کا نقصان ہے کہ اپنی جنتی ان کے باتھ کو دے دی جائمی گی اور یہ کا فروں کا نقصان ہے کہ اپنی جنتی ان کے باتھ کو دے دی جائمی گی اور یہ کا فروں کا نقصان ہے کہ اپنی جنتی ان کے باتھ سے نکل جائمی گی اور وہ کا فروں کی جنتی ان کے باتھ دارے ہوں گی اور اس کے بدلہ میں دوز فیس ملیس گی اور مسلمانوں کو اپنی جنتی بھی ملیس گی اور وہ کا فروں کی جنتوں کے بھی وارث ہوں گی مومنوں کے متعلق فربایا ہے:

وی واوٹ ہیں جو جنت الرووس کے دارث موں کے أُولِيكِكَ مُمُمُ الْوَارِثُونَ۞ الَّذِينَ يَرِثُونَ اوروداس شيشرين ك-الْفِرُدُوْسَ هُمُمُ فِينَهَا عَلَيْكُونُ٥ لركول كلام جركا بر المندير جونًا ببتاك لكاست يا المندكي آيول كوحيلا کی باتی بھر زمکس احدیم نے ان کے کافران میں گزائی بعدا کڑی ہے واحد اگر دہ قدم نٹ نیال می دیجہ میں جرمی ایمان نیس لائی ادروہ وگران کرای سے روستے بی اور فری ای سے دور بھا گئے ہی او عبيان القر أن

إِنَ يُهْلِكُونَ إِلَّا ٱنْفُسَهُمُ وَمَا يَشْعُرُونَ ۞

مرت اینے آپ کر بلک کر ایسے یں اور وہ اس کا شور ہیں رکھتے 0

الله تعالى كاارشادى: اوراس سے يزيد كركون ظالم ہوگا جو الله ير جمونا بستان لگائے يا الله كى آينوں كو جمالائے 'ب تك ظالم فلاح نہيں إكبر مجمد الانعام: ١١

يهود ونصاري اور مشركين كے لگائے ہوئے بہتانوں كى تنصيل

اس آبت میں اللہ تعالی نے کفار کے دو ظلم بیان فرائے ہیں۔ ایک ظلم ہے اللہ پر جمعو ٹا بستان مگانا اور دو سرا ظلم ہے اللہ کی آنیوں کو جمٹانا نا۔ اللہ پر جمعو ٹا بستان لگانے کی تفصیل ہے ہے کہ کفار کہ ہے تھے کہ بیرت اللہ کے شریک ہیں اور اللہ سجانہ نے ان کی عبادت کرسنے اور ان کے ذریعہ تقرب حاصل کرنے کا تھم دیا ہے 'نیز کفار کلہ کنے تھے کہ فرشنے اللہ کی طرف منسوب کرتے ہے۔ یہود و نصار کی جماد اللہ تعالی کی طرف منسوب کرتے ہے۔ یہود و نصار کی جمال کی شریعتیں فیر منسوخ ہیں اور ان کے نبوں کے بعد کوئی شف ہیں وروز و نصار کی جمال کی خریب ہیں اور دورتے کی آگ ہمیں صرف چند دن نی جمیں آب ہمیں اور ان کے نبوں کے بعد کوئی جمالہ کی اور اس کے محبوب ہیں اور دورتے کی آگ ہمیں صرف چند دن بی دمیں آب ہمیں جا دیا ہے گا اور خصوصاً نصار کی ہے تھے کہ اللہ تمین ہیں اللہ کے بیا اور ہی خود میں ان دونوں ہی ہے جمالہ کی اور ان کے بیا ان دونوں ہی ہے ہم اللہ تھی ہیں اور بھو و نصار کی ان دونوں ہی ہم ہم اللہ اللہ اللہ کی بین اللہ تھی ہمیں اللہ تھی ہمیں اللہ تھی ہمیں دوروز نصار کی ان دونوں ہی ہم ہمیں بات کا دعوی دار تھا کہ ان کہ سوا اور کوئی جنت میں نیس جائے گا در یہ تمام ہاتی اللہ تعالی پر افتراء اور بستان ہیں اللہ تعالی ان سے ہاک ہو کہ ہمیں جائے گا در ہو تھی دار تھا کہ ان کہ سوا در کوئی دنت میں نیس جائے گا در یہ تمام ہاتی اللہ تھی اللہ اس بات کا دعوی دار تھا کہ ان کے سوا در کوئی دنت میں نیس جائے گا در یہ تمام ہاتی اللہ تعالی پر افتراء اور بستان ہیں اللہ تعالی ہو اللہ ہو کہ ہو کہ کہ سے باک کا در ہو گی دار تھا کہ ان کے سوا در کوئی دنت میں نیس جائے گا در یہ تمام ہاتی اللہ تعالی پر افتراء کی دنت میں نیس جائے گا در یہ تمام ہاتی اللہ تعالی پر افتراء کی در سائی میں ان کی سوا کہ کی در تھی در تھی در تھا کہ ان کے سوا در کوئی در تھی کی در تھی تھی در تھی

ان کا دو سرا تقلم اللہ کی آخوں کو جمعنا ہے۔ سید نامحہ جہیج کی نیوت کے جوت پو اللہ تعالی نے جو مجزات طاہر فرائے یمود و نصاری اور مشرکین نے ان کو جمعنا دیا اور قرآن مجید جونی چہیج کی نیوت پر سب سے برا مجزو ہے 'باوجو و اس کے کہ وہ اس کی نظیر ڈانے کے چیلنج کو بچرا نمیں کر سکے 'انہوں نے اس کو کھلا جادو کھا بھی شعر و شاعری کھا اور مجھی کر رہے ہوئے لوگوں کی واسمان کھا اور مجھی کھانے محض ان کے تحیات ہیں۔ انہوں نے اس کے کھام اللی بورنے کا انگار کیا اور آپ کی نبوت پر ایمان نمیں

الله تعالى كاارشاد ب: اورجس ون جم سب كوجع كري مع بجرمشركين سے كبير مح تمهار سه (وه) شركاه كهل بين جن پرتم محمند كرتے تے؟ مجروه صرف مي قتد الله عيس من كه كبين الله كي تهماجو جارا رب ہے جم شرك كرتے والے نہ تھے - ديكھئے انہوں نے اپنے اوپر كيماجموٹ بائد هاكور (دنياجي)جو وہ افتراه بائد منتے تھے وہ سب مم ہو محصے۔

(الاتحام:۲۲۰۲۳)

روز قیامت مشرکین کی ناکای اور نامرادی

اس آیت میں ذکر فرمایا ہے کہ افذ تعالی مشرکین کو طامت کرنے اور ان کی ذمت کرنے کے لیے ان سے سوال قرمائے گا تہمارے وہ شرکاہ اور جھوٹے معبود اور پھر کی مورتیاں کمان میں جن کے متعاقی تم دنیا میں بیر دم کرتے تھے کہ بیہ تہمارے کارساز میں اور عددگار میں اور وہ تہمیں افذ کے قریب کر دیں گے اور افذ تعالی سے تمماری شفاعت کرکے تہمیں عذاب سے چھڑالیں گے اب وہ کمان میں۔وہ تممارے ساتھ کیوں دکھائی نمیں دیے ؟اس کی نظیریہ آیتیں ہیں:

وَ يَوْمُ يُسَادِيسِهِمْ فَيَقُولُ أَيْسُ شُرَكَاءِ يَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَرْعُمُونَ (القصص:٣) وَمَانَرُى مَعَكُمُ شُفَعَاءً كُمُ الَّذِينَ رَعَمْنُمُ اللَّهُمْ فِيكُمُ شُرَكَاءُ لَقَدُ تَقَطَّعَ بَيْكُمُ وَ صَلَّ عَدَكُم مِنَا كُنتُم تَرَعُم ورُدُور (الانعام: ٩٠٠)

اور جمی دن الله تعالی ان کوند اکرے فرمائے گا میرے وہ شر کاء کماں ہیں جن کو تم (میرا شریک) ز تم کرتے ہے۔ يم تمهارے ماند تمهارے ان سفارش کرنے والوں کو الميں وكي رہے جن كے حفلق تم يد زعم كرتے تھ كدوه تمارے کاموں بی (حارے) شریک ہیں کے شک تمارا (خود ساخته) ربله نوت کیااور تم دنیا پس جو زمم کرتے تھے وہ نوت کیا۔

حضرت این عباس رمنی الله عنمائے فرایا قرآن مجید میں جمال بھی زعم کالفظ آیا ہے اس کامعنی ہے جموعا قول۔ جب الله تعالى ان كورسواكرنے كے ليے يہ سوال قرائے كاتو دواس كے جواب بي جران اور بريشان بول كے اور كوئي سيح اور معقول جواب ان کی سمجھ میں نمیں آئے گااور اس کے سواانسیں کوئی بات نمیں سوجھے گی کہ وہ دنیا میں اپنے کیے ہوئے شرک کاانکار کردیں یااس کی وجہ یہ ہے کہ جب وہ دیکسیں سے کہ مسلمانوں کی مغفرت اور بخشش ہو ری ہے تو وہ کہیں سے کہ ہم بھی مشرک نمین تھے۔ معترت ابن عماس رمنی اللہ عنمانے فرمایا اللہ تعالی مسلمانوں کے گناہوں کو بخش وے گااور اس کے زر کے ان کا کوئی گناہ بھاری تمیں ہوگا۔ جب مشرکین یہ ماجرا دیکھیں کے تو کمیں کے کہ اللہ تعافی گناہوں کو بخش رہا ہے اور شرک کو نہیں بخش رہا' آؤ ہم بھی ہے کہیں کہ ہم گز گار ہیں' مشرک نہیں ہیں۔جب وہ اپنے شرک کو چھپا کیں مجے تو ان کے مونہوں پر مراکک جائے گی اور ان کے ہاتھ اور پاؤل ان کے ظاف کوای دیں گے اس وقت مشرکین ہے جان لیس کے کہ وہ اللہ تعالى سے كوئى بات جميانيں يكتے 'جيماك الله تعالى نے فرالا ب

جن لوگوں نے کفر کیا اور رسول کی نافر مانی کی 'اس دن وہ (الساء: ٣٢) ہے کوئی بات چمیانہ کیں گے۔

بَوْمَيْدٍ بُوَدُّالَدِينَ كَفَرُوا وَعَصَوُا الرَّسُولَ لَوْتُسَوْى بِهِمُ الْكُرْضُ وَ لَا يَكُنُسُونَ اللَّهَ مَنَاكِي كَ كَالْ اللهِ وَيْنَ بمواركروي باستاوروه الله حَدِيُثان

بعض مفری نے کمایہ آیت منافقین کے متعلق ہے اور اس کی تائید اس مدیث ہے ہوتی ہے۔ الم مسلم بن حجاج قشيوى متوفى ١٠١٥ روايت كرتے بيل.

حعرت ابو ہرارہ وجد بیان کرتے ہیں کہ محابہ کرام نے عرض کیا' یار سول اللہ اکیا ہم قیامت کے دن اپنے رب کو دیکسیس 2؟ آپ نے فرمایا کیاوو پر کے وقت جب باول تہ ہوں تو سورج کو دیکھنے میں جہیں کوئی تکلیف ہوتی ہے؟ محابہ نے کمانسی آپ نے فرمایا چود حویں رات کو جب باول نہ ہوں تو کیا جاتد کود کھنے سے خمیس کوئی تکلیف ہوتی ہے؟ محابہ نے کما نہیں۔ آپ نے فرمایا اس ذات کی متم جس کے قبضہ و قدرت میں میری جان ہے احمیس اپنے رب کو دیکھنے میں صرف اتنی تکلیف ہوگی جتنی تکلیف تم کو سورج یا جاند کو دیکھنے سے ہوتی ہے۔ آپ نے فرطیا پھر اللہ تعالی بندہ سے طاقات کرے گااور اس سے فرائے گا ا ۔ فلال اکیا میں نے تھے کو عزت اور سرداری نمیں دی؟ کیامی نے تھے زوجہ نمیں دی اور کیامی نے تیرے لیے محو زے اور ادث منخرسي كياوركياهي في تحدكورياست اور آرام كا طالت بين سي چمو (ااوه بنده كي كاكون سين الله تعالى فرائة كاكياتي يكن كريا تفاكر توجهد على والاع ؟ ووك كالنيس الله تعالى فرمائ كاعس في تحد كواى طرح إهلادياع جس طرح تونے مجھے بھلادیا تھا۔ پھر اللہ تعالی دو سرے بندہ سے طاقات کرے گااور قرماے گا کیا جس نے تھے کو عزت اور سیادت نہیں

دی؟ کیا جی نے تھے کو زوجہ نہیں دی؟ کیا جی نے تیرے لیے محووے اور اورت مسخر نہیں کیے؟ اور کیا جی نے تھے کو ریاست
اور آرام کی حالت جی نہیں پہو ڈا؟ وہ فخص کے گائیوں نہیں اے جیرے رہا اللہ تعالی قرباتے گائیا تو ہے گئی کرتا تھا کہ بھو ہے والا ہے؟ وہ کے گائیوں نہیں اے جی تھے کو اس طرح بھلاریا جس طرح تو نے جھے بھلاریا تھا پھر اللہ تعالی تھے ہو ' تیری کتاب پر اور تیرے اللہ تعالی تیسرے بندہ کو بلا کراس ہے اس طرح قرباتے گا۔ وہ کے گلا اے جیرے رہا جی تھے پر ' تیری کتاب پر اور تیرے دسولوں پر ایمان الیا ' جس نے نماز پر جی ' روزہ رکھا اور صدقہ دیا اور وہ اپنی استطاعت کے مطابق آئی تیکیاں بیان کرے گا' اللہ تعالی فرائے گا۔ جب تا گائی بیا گائی اس نے نماز پر جی ' روزہ رکھا اور صدقہ دیا اور وہ اپنی استطاعت کے مطابق آئی تیکیاں بیان کرے گا' اللہ تعالیٰ فرائے گائی فرائے گائی ہوں سے کہ جاتے گائی ہور اس کی دان ' اس کے گوشت اور اس کی بھی اس کے گوشت اور اس کی بھی اس کے گوشت اور اس کی بھی اس کے اعمال بیان کریں گی اور ساس کے کیا جائے گا کہ خور اس کی ذات جس اس کے خلاف جب قائم ہو۔ بیروہ متافق اور گائی اس کے اعمال بیان کریں گی اور ساس کے کیا جائے گا کہ خور اس کی ذات جس اس کے خلاف جب قائم ہو۔ بیروہ متافق اور گائی رائی ہوگا۔

(صحيم مسلم الزيد ١٦٠ (٢٩٧٨) ٢٠٠٣ مستن ابوداؤه و جسور قم الحديث. ١٣٠٠)

اس کے بعد اللہ تعالیٰ نے فرالا دیکھئے انہوں نے آپ کور کیساجھوٹ باندھامٹر کین کاجموٹ یہ تھاکہ انہوں نے کہا کہ بتول کی مباوت ہمیں اللہ کے قریب کروچی ہے اور متانقین کاجھوٹ یہ تھا کہ انہوں نے جموٹے عذر پیش کئے اور اپنے نفاق کا افکار کیا۔

پھر فرمایا اور (دنیا بھر) جو وہ افتراء باندھتے تنے وہ سب کم ہوگئے 'مینی دنیا بھر ان کا جو یہ گمان تھا کہ ان کے بعد ان ک شفاعت کریں گے وہ باطل ہو گیا۔ یااللہ کو چھو ژکروہ جن بتول کی عبلوت کرتے تنے 'وہ ان کے کسی کام نہ آسکے اور ان سے کسی عذاب کو دور نہ کرشکے۔

الله تعالی کاارشاد ہے: اور ان میں ہے بعض وہ ہیں جو کان لگا کر آپ کی ہاتمی سنتے ہیں اور ہم نے ان کے داوں پر پر دے ڈال دیئے ہیں آنا کہ وہ آپ کی ہاتمی سمجھ نہ سکیں اور ہم نے ان کے کانوں میں گر انی پیدا کر دی ہے اور اگر وہ تمام نشانیاں بھی دکھے لیس پھر بھی ایمان نہیں لا کیں گے 'حق کہ جب وہ آپ کے ہاں بحث کرتے ہوئے آ کمیں گے کہ رہے قران تو محمل پہلے لوگوں کا قصہ کمانی ہے۔(الانعام:۴۵)

الم ابوالحن على بن احمد واحدى متونى ١٨٨مه و لكصة بين:

حضرت ابن عباس رضی اللہ عنما بیان کرتے ہیں کہ ابو سفیان بن حرب ولید بن مغیرہ مضور بن الحارث عتب نہیں ہیں۔
رہید کے دونوں بیٹے اسے اور البی خلف رسول اللہ مجیرہ کی ہاتی کان لگا کرس رہے تھے تو انہوں نے نصورے کہا ہے ابو السلہ (سیدنا) مجد مجیرہ کیا گئے ہیں؟ اس نے کہا اس ذات کی حم جس نے میرے اور ان کے کلام شنے کے در میان کوئی چیز حاکل گئے میں اور وہ کردی ہے میں اور وہ بھیلے لوگوں کی داستانی میں مرف ان کے ہوئے دکھے دہا ہوں کہ دہ کچھے کہ رہے ہیں اور وہ جو کھ میان کرتے ہیں اور دہ سورگ کو دہا ہوں کہ وہ بھیلے لوگوں کی داستانی سنا آ ہوں۔ اور دہنس مجیلے لوگوں کی داستانی ہیں جساکہ میں حمیس گزرے ہوے لوگوں کی داستانی سنا آ ہوں۔ اور دہنس مخیلے لوگوں کے استانی سنا آ ہوں۔ اور دہنس مخیلے لوگوں کی داستانی کرتا تھا اور وہ اس کی ہاتی خور سے ہنے تیے اس اللہ توالی میں تاری فرائی۔

(اسباب النزول ۲۱۷٬ مطبوعه دار الكتب العلميه ميروت)

کفار کے کانوں پر ڈاٹ لگانے پر اعتراضات کے جوابات

اس آبت میں فرمایا ہے اور ہم نے ان کے داوں پر پردے ڈال دیئے ہیں آ کہ وہ آپ کی بات سمجھ نہ سکیں اور ہم نے ان کے کانوں میں فرمایا ہے اس آبت پر ایک اعتراض یہ ہو آب کہ اگر ان کے کانوں میں ڈاٹ (گر انی) تھی اور ان کے داوں پر پردے تھے تو چاہیے تھا کہ وہ کوئی بات نہ سنتے اور کسی بات کونہ مجھتے ملاکھ وہ لوگوں کی باتیں سنتے بھی تھے اور سکھتے اور سکھتے تھے اور نہ بھتے تھے اور نہ بھتے تھے اور نہ بھتے تھے اور اس کا یہ جواب دیا جائے کہ وہ نی رہی ہو گی بات کی معاد ض اس آبت کا آخری حصہ ہے جس میں فرمایا ہے جب وہ آپ کے ہاں بحث کرتے ہوئے آئیں گے تو کسیں کے کہ یہ قرآن تو محض پہنے لوگوں کی حصہ ہے جس میں فرمایا ہے جب وہ آپ کے ہاں بحث کرتے ہوئے آئیں گے تو کسیں کے کہ یہ قرآن تو محض پہنے لوگوں

کا تھے۔ کمانی ہے اس سے معلوم ہواک وہ آپ کے کلام کو نتے ہی تھے اور بھتے ہی تھے البتہ مانے نہیں تھے۔

اس اعتراض کا مجھے جواب سے ہے کہ بننے ہے مقصور سے تھاکہ وہ من کراس ہے نفع حاصل کرتے اور اس پر ایمان لاتے اور یحجے نے مقصور سے تھاکہ دہ اس میں فور و گر کر کے مجھے تھے۔ تکانے اور سے اعتراف کر لینے کہ واتنی سے افلہ کا کلام ہے اور کوئی انسان اس کی نظیر نہیں لاسکا اور نبی چھیجے کی نبوت کو ملن بلیتے اور جب انہوں نے سننے اور جھنے کے مقصود کو پر رانہیں کیاتو اللہ تھائی نے قربایا اور ہم نے ان کے کانوں بل تعالیٰ نے قربایا اور ہم نے ان کے کانوں بل محمد انسان کی ہوت کو مقصود کو پر رانہیں کیاتو اللہ تعالیٰ نے قربایا اور ہم نے ان کے کانوں بل محمد انسان کی ہوت کی بلت سمجھ نہ سکیں اور ہم نے ان کے کانوں بل محمد انسان کے کانوں ان کے کانوں بال پیرا کردی ہے ' پھراس آیت پر سے اعتراض ہو تاہے کہ سے آیت کفار کی ذرمت میں وارو ہوئی ہے اور جب ان کے کانوں انسان کے کانوں کے دور بی سے بھر ان کی تو ان کے کانوں بالی بیرا کردی ہے ' پھراس آیت پر سے اعتراض ہو تاہے کہ سے آیت کفار کی ذرمت میں وارو ہوئی ہے اور جب ان کے کانوں بالی میں دور بی ان کے کانوں بالی بیرا کردی ہے ' پھراس آیت پر سے اعتراض ہو تاہے کہ سے آیت کفار کی ذرمت میں وارو ہوئی ہے اور جب ان کے کانوں بالی بیرا کردی ہے ' پھراس آیت پر سے اعتراض ہو تاہے کہ سے آیت کفار کی ذرمت میں وارو ہوئی ہے اور جب ان کے کانوں بالی بیرا کردی ہے ' پھراس آیت پر سے اعتراض ہو تاہے کہ سے آیت کفار کی ذرمت میں وارو ہوئی ہے اور جب ان کے کانوں بالی بیرا کی دور بیب ان کے کانوں بالی بیرائے کو بیران کی دور بیب ان کے کانوں بالی بیرائی کیا تھوں کی بالی بیرائی کی بیران کی بیران کی دور بیران کی دور بیران کی دور بیران کی بیران کیا کی بیران کے دور بیران کی دور بیران کی دور بیران کی بیران کی بیران کی بیران کی بیران کی دور بیران کی دور بیران کی بیران کے دور بیران کی بیران کی

میں اللہ نے کرائی رکھی ہے اور ان کے داوں میں اللہ نے پردے ڈال دیتے ہیں تو دہ ایمان ند لانے میں معقد در ہوستے کہران کی برمت کی کیاد جہ ہے؟ دو سرا اعتراض ہے ہے کہ جب ان کے کانون میں اللہ نے ڈاٹ نگادی اور ان کے داوں پر پردے ڈال دیے

تواب ان کا بھان لانا ممکن نسیں رہا' پھران کو ایمان لانے کا مکلت کرنا کس طرح درست ہو گا؟ جب کہ اللہ تعالی نے خود فرایا ہے: لایٹ کے لیے مالیا میں میں اللہ و شعبہ کے اللہ میں اللہ میں میں اللہ اللہ میں مکانی مکلت کر آہے۔

اس کا جواب میرے کہ ان کافروں نے اپنے متاو اور بغض کی وجہ سے اللہ تعالیٰ کی جناب میں یار سول اللہ میں ہی جانکہ میں ایسی شدید شمتاقی کی جس کی سزا کے طور پر اللہ تعالی نے حن کو نئے کے لیے ان کے کانوں میں ڈاٹ لگادی اور حق کو سمجھنے

كے ليے ان كے دلوں پر پردے وال ديئ جيساك ان آيات ے واضح ہے۔

بلکہ ایکے کفری وجہ ہے ایکے دلوں پر اللہ نے مرنگادی۔ مید اس لیے کہ دوائیان لائے 'پھر انہوں نے کفر کیا 'سوان کے دلوں پر مرنگا دی گئی سو وہ پکھ تئیں مجھتے۔

بَلِّ طَبَعُ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ (النساء: ١٥٥) دُلِكَ بِالنَّهُمُ امَنْتُوا ثُمُّ كَفَرُّوا فَطُبِعَ عَلَى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفُقَهُونَ (المساعقون؟)

آن کے کائوں میں ذات لگانے اور ولوں پر پردے ڈالنے سے ہراد نسی ہے کہ حس طور پر ان کے کائوں میں ڈاٹ نگادی میں واٹ سے داول پر پردے ڈال دیے تھے ' بلکہ اس سے مراویہ ہے کہ کفار کفر اور معصیت کو اچھاجائے اور ایمان اور اطاعت کو برا جائے کے خوگر اور علوی ہوگئے تھے ' کو تکہ اپنے باپ دادا کی اندھی تقلیم کرنے اور دالا کل میں صحیح طریقہ سے خور و فکر کرنے ہو جگ تھی کہ ان پر کوئی بات اثر نہیں کرتی تھی۔ تو اللہ کرنے ہو جگ تھی کہ ان پر کوئی بات اثر نہیں کرتی تھی۔ تو اللہ تھالی نے ان سے داول میں انگار کی ایس طالت پیدا کردی جس کی وجہ سے ان میں حق نافذ نہیں ہو سکتا تھا اور ان کے کائوں میں ان کی کیوں میں ان کار کی ایس طالت پیدا کردی جس کی وجہ سے ان میں حق نافذ نہیں ہو سکتا تھا اور ان کے کائوں میں ان کو کھر ان کی کیوں میں اس کیفیت کا پیدا کرتا ان کو کھر اور گرائی پر مجور کرتا نہیں تھا ۔ بلکہ انہوں نے اپنے احتیار سے دالا کل میں خور و فکر کرنے کی بجائے اپنے باپ دادا کی اندھی تھا یہ اور گرائی پر مجور کرتا نہیں تھا ' بلکہ انہوں نے اپنے احتیار سے دالا کل میں خور و فکر کرنے کی بجائے اپنے باپ دادا کی اندھی تھا یہ کو جو اختیار کیا تھا ' ہے اس کی مزالور تحریر تھی ' تو جو تک ہر مکن اللہ تعالی کے پیدا کرنے سے وجود میں آ تا ہے اور ہرجے کو اللہ تعالی کو جو اختیار کیا تھا ' ہے اس کی مزالور تحریر تھی ' تو جو تک ہر مکن اللہ تعالی کے پیدا کرنے سے وجود میں آ تا ہے اور ہرجے کو اللہ تعالی

نے پیداکیا ہے اس کے اللہ تعالی نے فرمایا ہم نے ان کے دنوں پر پردے ڈال دیے ہیں اور ہم نے ان کے کانوں ہی گر انی رکھی ہے اور چو نکہ اس کو پیدا کرنے کا سب ان کافروں کا اپنا ارادہ 'افتیار اور کب تھا' اس وجہ سے ان کی ندمت فرمائی اور آیت سے قطع نظر کرکے ٹی نفسہ ان کا ایمان النا عمکن ہے اس کے ان کو ایمان کا مکلت کرنا ہی صبح ہے۔ خلاصہ یہ ہے کہ ان کا ایمان النا ممکن بالذات اور ممتنع بالغیر ہے۔

دو سراجواب سے کہ گفار از راہ تکبر خود کتے تھے ہم آپ کی بات نسیں ختے۔ آپ کی ہاتیں سننے کے لیے ہمارے کانوں میں ڈاٹ گلی ہو کی ہے اور آپ کے اور ہمارے در میان مضبوط پردہ حاکل ہے۔

تَ اللّٰهِ وَ فَالُوا فَاعْرَضَ اكْفُرُهُمْ فَهُمْ لَا بِنَالت وَبَابِوا اور وَرا آبوا اواكُوكُافُرول فِي مِد بِعِير يَسَسَعُونَ آلِكُ وَ فَالُوا فَلُوبُكَ فِي الْكُوبُكَ فِي اللّٰهِ وَ مِنْ اللّٰهِ وَ اللّٰهِ اللّٰهِ وَ فَيْ الْاللّٰهِ وَ فَيْ الْاللّٰهِ وَ فِي اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ وَ فِي اللّٰهِ اللّٰهُ اللللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللللللّٰ اللللللّٰ الل

-0:41

کفاریہ ظاہر کرتے تھے کہ رسول کا کلام ان کے شنے کے قاتل نہیں ہے۔ اللہ تعالی نے یہ ظاہر فریا نہیں بلکہ تم اس قاتل نہیں ہو کہ تم کو ہمارے رسول کا کلام سالیا جائے' تو جس طور ہے انہوں نے کہا تھ اگر ہمارے کانوں میں ڈاٹ ہے اور ہمارے دلول پر پردے ہیں' ای طور ہے اللہ تعالی نے فرمایا تمہارے کانوں میں ڈاٹ ہم نے لگائی ہے اور تمہارے ولوں پر پردے ہم نے ڈالے ہیں۔۔

تیرا بواب ہے کہ جب کافروں نے حق کو یخے اور اس کو مانے سے انکار کیا اور اس کے دلا کل میں فور و قکر کرنے ہے
مسلسل اعراض کیا اور اپنے باپ دلوا کی اندھی تھید پر اصرار کیا تو اللہ تعلق نے ان کے اس انکار اور اعراض کی حالت کو اس
طخص کے حال ہے تنہیہ دی جس کے دل پر پردے ہوں اور اس کے کانوں میں گرانی ہو سواس آیت کا بیر مطلب نہیں ہے کہ
حقیقاً ان کے دلوں پر اللہ نے پردے ڈال دیے اور ان کے کانوں میں ڈاٹ دگادی ' بلکہ اس کا مطلب بیہ ہے کہ حق ہو ان کی
مسلسل دوگر دانی ایک ہے جیسے ان کے دلوں پر پردے ہو گاری ' بلکہ اس کا مطلب بیہ ہے کہ حق ہو تا ہو۔
مسلسل دوگر دانی ایک ہے جیسے ان کے دلوں پر پردے ہو گاری میں گرانی ہو ' جیساک اس آیت میں جاتی ہیں تواس نے
مسلسل دوگر دانی ایک ہے جیسے ان کے دلوں پر پردے ہو گاری ' بلکہ ہو گاری آئی ہو گاری گاری ہو گاری

سورة بقره كى آيت حسم الله على قلوسهم كى تغيرين من في منعمل لكماس وإلى يرين في مرف يما بواب وإلى يرين في مرف يمل جواب كو زياده تنسيل اوروضانت سه لكمام اوريمال يردوم زيرجواب ذكر كيه بير-

الله تعالی کاار شادے: اور وہ نوگوں کو اس سے روکتے ہیں اور خود بھی اس سے دور بھاگتے ہیں۔ وہ صرف اپنے آپ کو ہلاک کر رہے ہیں اور دواس کا شعور نمیں رکھتے۔ (الانعام ٢٦) ایمان ابو طالب کی شخصی

اس آے کی دو تغیری ہیں۔ ایک تغیریہ ہے کہ کفار لوگوں کو بی مرتبی پر ایمان لانے اور آپ کی اجاع کرنے ہے

ببيان القر ان

ردکتے ہیں اور آپ سے دور بھاگتے ہیں یا وہ لوگوں کو قرآن جید کے شنے اور اس کو ملنے ہے روکتے ہیں اور اس ہے دور بھاگتے ہیں اور دواس طرز عمل ہے مرف اپ آپ کو ہلاک کر دہ ہیں۔ یہ تغییر حضرت ابن عباس اور افزادہ مروی ہے۔
اور اس آیت کی دو سمری تغییرہ ہے کہ یہ آیت ابوطالب کے متعلق نازل ہو کی ہے۔ ابوطالب کی ماہیم کو ایڈا پہنچائے ہوگوں کو مشع کرتے تھے اور خود آپ کی نیوت پر ایجان لانے اور آپ کی تقید بی کو دور دہ جے تھے کہ یہ تغییر بھی حضرت ابن عباس دھنی اللہ منا منازے میں ماٹور ہے۔

(جامع البيان ٤٦٠م ٢٣٤٠٩٢٩ مطبوعه داد الفكر كيروت ١٣١٥ ه)

ام ابر الحسن علی بن احمد الواحدی المترقی ۱۸ میر لکتے ہیں۔ حضرت ابن عباس رضی اللہ عظما میان قرماتے ہیں کہ یہ آبت ابر طالب کے متعلق نازل اور تی ہے۔ وہ رسول اللہ ہے ہیں کہ ایر ایر اپنے ہے مشرکین کو منع کرتے ہے اور خود نبی ہی ہی کا اے اور شالب کے باس نبی میں ہوئے دین ہے دور دہتے تھے۔ یہ عظا بن دینار اور قاسم بن معضوہ کا تول ہوار سفائل نے کما کہ ابوطالب کے پاس نبی ہی ہی ہی ہوئے اور یہ مطالبہ کیا کہ نبی ہی ہی ہو گے اور یہ مطالبہ کیا کہ نبی ہو ہو کے اور یہ مطالبہ کیا کہ نبی ہو ہو کے اور یہ مطالبہ کیا کہ نبی ہو ہو ان کے حوالے کر دیا جاسے اس کے بواب میں ابوطالب نے چند اشعار پڑھے جن کا ظامہ یہ تھا کہ جب تک میں زندہ بون ابیا نبی موسلک اس وقت یہ آبت نازل ہوئی کہ یہ لوگوں ہے آپ کا دقاع کر میں اور خود آپ کی تعدیق ہے دور دہتے ہیں۔ موسلک اس وقت یہ آبت نازل ہوئی کہ یہ لوگوں ہے آپ کا دقاع کر میں اور خود آپ کی تعدیق ہے دور دہتے ہیں۔

(اسباب النزول عم ٢١٨ مطبوعه دار الكتب النطب ابيروت)

ان روایات کے مطابق ابوطالب کا ایمان اور اسلام جابت تمیں ہے اور حسب ذیل اطاب اس کی موید ہیں۔ ابوطالب کے ایمان نہ لانے کے متعلق اصادیث اہم مسلم بن محاج قدیدی متونی ۱۳ مدارت کرتے ہیں:

معید بن مسب کے والد بھتے بیان کرتے ہیں جب ابوطالب کی وفات کا وقت قریب آپنیا تو رسول اللہ مظہر ان کے پاس تشریف لے گئے۔ اس وقت ابوطالب کے پاس ابوجس اور حبداللہ بن ابی امید بھی موجود تھے۔ رسول اللہ مظہر نے قربایا اے پچاا کیہ بار "لاالہ الااللہ " کموقو میں تسمارے حق میں اسلام کی گوائی دوں گا۔ ابوجس اور عبداللہ بن ابی امید کئے گئے 'اے ابوطالب! کیا تم بہپ عبد المصلف کی ملت کو چھو ڈرہے ہو' رسول اللہ بھتے مسلسل ابوطالب کو کلہ پڑھنے کی تلقین کرتے رہوں اباد الااللہ " کئے رہے۔ بسرحال ابوطالب کی ملت پر بموں اور "لاالہ الااللہ " کئے سے انکار کردیا' رسول اللہ بھتے ہو آخری الفاظ کے 'وہ بیہ تھے میں اپنے باپ عبد المصلف کی ملت پر بموں اور "لاالہ الااللہ " کئے ہو انکار کردیا' رسول اللہ بھتے ہو آخری الفاظ کے 'وہ بیہ تھے میں اپنے باپ عبد المصلف کی ملت پر بموں گا جب تک اللہ تعالی اس سے دوک نہ دے 'اس لے اللہ قبائی نے ہے آئے نائی فرمائی (ترجمہ) نی اور مسلمانوں کے لیے مشرکین کی مففرت کی دعا کہ جائز نہیں۔ خواہ وہ ان کے دشتہ دار کیوں نہ بھول بن کی جنا معلوم ہوچکا ہو (المتوب سے) اور ابوطالب سے بارے میں یہ جائز نہیں خواہ کی نائی فرمائی (ترجمہ) ہروہ محض جس کو آپ جائی آپ اس میں ہدایت جاری تیس کر کئے۔ البتہ اللہ تعالی جس کے حق آئی جس کے حق آئی جس کو جائی بازے فرمائی (ترجمہ) ہروہ محض جس کو آپ جائی وہ انسان کیا ہو ارائوب تھا گا جس کے حق آئی جس کی بازے فرمائی (ترجمہ) ہروہ محض جس کو آپ جائی وہ اس میں ہدایت جاری تیس کر کئے۔ البتہ اللہ تعالی جس کی جائی جو بات ہو دوہ ہو ایس ہونے وہ اور دوہ ہواہ ہونے نافوں ہو جائی وہ انسان کی دور انسان کیا ہو دوہ ہوائی ہوائی دوہ ہوائی دو

(صحيح مسلَم الايمان ٢ ٣٠ (٣٣) ٢٠٠٠ صحيح البخاري ج ٣٠ رقم الحديث: ١٠٠٥ سنن التسائي عمر وقم الحديث: ١٠٠٥ سنن كبرى العنسائي وقم الخدعث: ١٢٠٨ ١٢١

 ب مبری کا دجہ سے مسلمان ہوگیاتو میں کلہ پڑھ کر تمہاری آ کی ٹھنڈی کردیتا' تب اللہ تعالی نے یہ آیت نازل فرائی ب شک آپ جس کو چاہیں ہدایت یافتہ تمیں کر کتے 'حیمن اللہ تعالی جس کو چاہتا ہے' ہدایت یافتہ کر آ ہے۔ (القسم:۵۱) میں مسا

" (مي مسلم اللكان " ٣٣ (٣٥) " ٢٣ مي البواري " جه" و آم المدعن و عديه م سنن روي " جه" و آم الحديث ١٣٠٠ سند احر " جه"

رقم المدعثة ١٩٢٦، مج ابن حبان أرقم المديث: ١٤٧٠ ولا كل النبوة للبعثي عن ١٠٥٥، ١٢٥٠)

حضرت عماس بن عبد المعطلب نے بی جھی ہے عرض کیا: آپ نے اپنے بھیا ہے کس عذاب کو دور کیا؟ وہ آپ کی طرف سے دالعت کرتے تھے اپ کی خاطر صفیتاک ہوتے تھے۔ آپ نے فریلاوہ گخوں تک اُک میں ہے اور اگر میں نہ ہو ، آو

و آگ کے آخری طبقہ میں او لگ۔(مج البخاری 'ج-ار قم المدے : ۱۳۸۳ مجع مسلم 'الايلن' ۲۵۲' (۲۰۹) ۵۰۰)

معرت ابوسعید فدری روین بیان کرتے ہیں کہ انہوں نے سنا'نی میں ہے مائے ابوطالب کاذکر کیا گیا۔ آپ نے فرمایا قیامت کے دن میری شفاعت سے اس کو نفع پنچے گا'اس کو تھوڑی می اگل میں ڈالاجائے گابواس کے نخوں تک پنچ گی'جس سے اس کادماغ کھول دہاوگا۔ (می ابولای جسس قم الدعث: ۱۳۸۵م می مسلم الایان ۱۳۹۰ (۱۳۱۰) ۵۰۰۲)

معرت ابن عباس رضی الله عنما بیان کرتے ہیں کہ رسول الله جنبیر نے قربایا سب سے کم دوزخ کاعذاب ابوطالب کو ہوگا'اس کو آگ کی دوجو تیاں پستائی جا کیں جن ہے اس کادیل فی کمول رہا ہوگا۔

(مي مسلم 'الايكن '٣٣ (١٣٣) ١٩٠٠ مي البخاري " ١٥ أو فم العريث: ١٥١ مسنى ترزي " ٢٠٠ رقم الحديث: ١٦٣ مد الر " ١٢

رقم المعتدد ١٨٠٨، مح ابن مبان "٢٥٠ رقم المعتدد ١٨٢٥)

حضرت فعمان بن بشر برہ ان کرتے ہیں کہ علی سنے ہی ہو ہیں ہے۔ سناکہ قیامت کے دن دو زخ میں سب سے کم مذاب والا وہ مخص ہوگا جس کے بیروں کے کووں میں دو انگارے ہوں گے ، جس سے اس کا دماخ اس طرح کول رہا ہوگا جس طرح بیروں کے میروں کے ایس کا دماخ اس طرح کول رہا ہوگا جس طرح بیروں کے میں بیانی کو لا ہے۔ اس کا دماخ اس خرح کمول رہا ہوگا جس طرح بیروں کے میں بیروں کے ابواری نے ان آج الی میں بیروں کے میں بیروں کے ابواری نے ان آج الی میں بیروں کے میں بیروں کے ابواری نے ان آج الی میں بیروں کے ابواری نے ان آج الی میں بیروں کے میں بیروں کی میں بیروں کے میں بیروں کے میں بیروں کے میں بیروں کے ابواری نے ان کا دماخ اس خرح کی بیروں کے اس میں بیروں کے میں بیروں کی بیروں کی بیروں کی بیروں کے میں بیروں کی بیروں کی بیروں کے میں بیروں کی بیروں کی بیروں کے میں بیروں کی بیروں

الم احد عن شعيب نسائل متوتى مهد واعت كست بين

حطرت على روزي ميان كرتے بيل يل ف في وجيد سے عرض كيا" آپ كابو دُها كراہ چيافوت بوكيا"اس كو زمن ميں كون وفن كرے كا؟ آپ في فرمايا جاؤ"ا بينياب كو زعن ميں وفن كردو-(سنن اقسائل عمر رقم الديث ١٠٠٥) الم احمد بن مغبل متوفى اموجه دوارت كرتے ہيں:

حضرت علی بر پیزر بیان کرتے ہیں کہ بن کی مزین کی خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کیا کہ ابوطانب نوت ہو گیا ہے۔ نبی مزین کے فرملیا جاکر اس کو دفن کردو۔ بن نے عرض کیا وہ مشرک ہونے کی حالت میں نوت ہوا ہے۔ آپ نے فرمایا جاکر اس کو وفن کردو۔ جب میں وفن کرتے نبی جیجیز کے ہاں واپس آیا تا آپ نے فرمایا حسل کر ہو۔

(منداحمر اج المن اعلام ۱۳۰۱ ملام ۱۳۰۱ مليج قديم ولا كل النبوة فليصفي اج ۲ من ۴ س)

الم ابو بكر عبد الله بن محد بن الى شيد متونى ٥ تا مد روايت كرتے بين:

شعبی بیان کرتے میں کہ جب ابوطاب فوت ہوا تو حضرت علی جوٹنے نے نمی ہوتی ہے پاس جا کر کما آپ کابو ڈھا پہا ہو کافر تما'وہ فوت ہو کیا۔ (مصنف ابن ایل شیہ 'ج ۲۴ می ۲۴ مطبوعہ کراجی ۴۴ میں)

الم ابو بكراحمد بن حسين بيلي متوني ٥٨ مهد روايت كرتي مين:

حضرت ابن عباس رمنی الله عنمانے کما قرآن مجید کی آے اور وہ لوگوں کو (انس ایز المنجانے سے) منع کرتے ہیں اور خود

جُيان القر أن

ان سے دور رہے ہیں (الانعام ٢٦١) ابوطالب کے متعلق نازل مولی تھی۔ وہ رسول اللہ جھیم کو ایڈا بہنچانے سے مشرکین کو منع كرياتها ور آب ك لائة ويدون عدور ريتا تعلد (ولاكل النبوة عوم ١٣١٠ مطبوم يروت) ابوطالب کے ایمان نہ لانے کے متعلق مغرین کے ندا ہب کی تصریحات التوبه: ١١٠ كي تغيير من علامه سيد محمود آلوي حنى متوفى ١٠٠ المد لكيت إن:

صحیح یہ ہے کہ یہ آیت ابوطالب کے متعلق نازل ہوئی ہے۔ کو تک فام احد المام این ابی شید المام بخاری الم مسلم المام نسائی اہم این جری امام این منذر اور امام بہتی فے مسب بن حزن سے روایت کیاہے کہ جب ابوطالب کی وفات کاوشت آیا تو ني سيري اس كياس تشريف لے كئے اس وقت اس كياس اور حد الله بن الى اميد بينے ہوئے تھے۔ ني سيري نے اس سے قربایا اے پھیاالا الد الا اللہ کو اس اللہ کے زویک اس کلمہ سے جست بازوں گا ابوجس اور عبداللہ بن الی امیہ نے کما اس ابوطالب اكياتم عبد المعطلب كى لمت س امراض كرد به بو؟ رسول الله عنهي اس ير "له الد الدافقة" بيش كرت رب اور ابوجهل اور عبدالله اس كواس كلدك خلاف بمركات رب" أخرص ابوطاب نے كماده عبد المطلب كى محت يرب اور "الالد الاالله "كنے الكاركرويا- پرنى معيم نے فرمايا من تمارے ليداس وقت تك مغفرت كى وعاكر مار مول كا جب تك ججم

اسے منع ند کیا جائے۔اس کے یہ آمت نازل ہوئی۔

نسین بن فعنل نے یہ کما ہے کہ ابوطالب کی موت اجرت سے تمن سال پہلے ہوتی ہے 'کورید سورت مدینہ جس آخر جس نازل ہوئی ہے۔ اس کے اس مدیث کو اس آیت کا شان نزول قرار دینا متبعد ہے۔ علامہ واحدی نے کمایہ استبعاد خود متبعد ہے۔ یہ بھی تو ہو سکتاہے کہ تی جید ابوطال کی موت کے بعد اس کے لیے مسلسل استغفار کرتے رہے ہوں۔ حی کہ مدید منورہ میں یہ آسے نازل ہوئی اکیونک کفار کے ساتھ مختی کرنے کی آیات میند منورہ میں می نازل ہوئی ہیں۔اس آویل کی مناور مدیث کا معنی یہ ہوگا' اس لیے اللہ نے یہ آیت نازل کی' یہ معنی نہیں ہوگا اس کے بعد یہ آیت نازل کی اور خاسرل میں ما سبب کے لیے ہوگی نہ کہ محقیب کے لیے۔اکٹر علاونے اس توجیہ کو پند کیا ہے اور یہ ہے بھی عمرہ توجیہ۔ لیکن اس پرید اختراض ہو آے کہ اہم بین سعد اور اہم ابن مساکرتے حضرت علی جوہنے سے روایت کیاہے کہ ابوطالب کی موت کے بعد کی دن تک نی منتید اس کے لیے استغفار کرتے رہے 'حی کہ جرائیل اس آیت کو لے کرنازل ہوئے۔ اس کاجواب سے سے ك مديث ضعيف ب- وو مراجواب يه ب كريه موسكاب كه سور ، توبه كي يه آيت مكه بس يبلي نازل موتى مواور باتى آيات بعد ش مدیندش نازل ہوئی ہوں اور اس سورت کو بااختبار عالب کے مرنی کما جاتا ہو۔ بسرمال اید آعت اس پر دلیل ہے کہ ابوطالب كغرير مرااوري الل سنت وجماعت كامعروف تدبب ب

انام ابن التحق نے الی میرت می حضرت ابن عباس رضی الله عنماے ایک طویل مدے موایت کی ہے جس میں یہ ہے كه ابوطاب كے مرض الموت من في جير نے اس سے كماكه اسے بيا آب"لا الله الا الله "كس آك قيامت كون آب ك لي ميرى شفاعت جائز يو اور في عليد في سفيد امرار ترفيب دى-ابوطاب ن كما بدخد ااا ع بينيج ااكر جهيد خدش ند ہو آکہ میرے بعد قرایش تم پر اور تمارے باپ کی اواد پر طاحت کریں گے اور قرایش یے کسی سے کہ اس نے موت کے ڈر سے كلمديزه الياتو من يه كلمديزه الميتااور من صرف تماري خوشي ك ليديد كلدين منك جب ابوطالب يرموت كاوتت قريب آياتو حضرت عباس نے اس کی طرف و یکھاتواس کے ہونٹ ال رہے تھے انہوں نے کان نگاکر سنااور حضورے کمااے بینے اتم نے اے جس کلمہ کو پڑھنے کے لیے کما تھا' اس نے وہ کلمہ پڑھ لیا ہے۔ رسول اللہ چھپر نے فرمایا میں نے نہیں سالہ (البرایہ والتهایہ ا

ج" مس " ان سے علاو نے بید اور طالب کے جو اشعار حضور کی مدح میں مشہور ہیں ان سے علاو نے بید استدمال کیا ہے کہ ابوطالب مومن تھا۔ اس کا جو اشعار کی سند منقطع ہے علاوہ ازیں ان اشعار می ابوطالب کے ایمان مانے کی تعمر سے دی ہے دی اور ایت تو بید شیعہ کی دواجت ہے اس سے استدلال مسمح نمیں ہے علاوہ ازیں اس روایت میں ہمی ہے سے کہ آپ نے فریا اس روایت میں ہمی ہے ہے کہ آپ نے فریا اس نمیں سنا"۔

امام بیمی نے اس روایت کو نقل کرنے کے بعد لکھا ہے کہ اس کی سند منقطع ہے 'اور دھڑت عہاں ہو اس مدیث کے راوی ہیں 'اس وقت مسلمان نہیں ہوئے ہے اور مسلمان ہونے کے بعد انہوں نے فود رسول اللہ عظیم ہے ابوطالب کی عاتب کے متعلق سوال کیا کہ آپ نے ابوطالب کو کیا نقع پنچایا؟ وہ آپ کی مرافعت کر آفاد آپ نے فرمایا ہیں وہ تُخوٰں تک آگ میں ہے اور اور اگر میں نہ ہو آ تو وہ دوز خ کے آخری طبقہ میں ہو آلہ اس مدیث کو امام بخاری اور امام مسلم نے روایت کیا ہے اور وہ ضعیف روایت اس معین روایت اس میں رکھتی۔ (والا کل النبوۃ 'ج میں سام

باتی ابوطالب نے جو رسول انڈ میجیز کیا ہداور نظرت کی تو دودین اسلام کی حمیت میں نہیں کی کیکہ نسب اور قرابت کی دب سے کی 'اور اختبار دیٹی محبت کا ہے 'نسبی حمیت کا نسیں ہے۔ علاوہ ازیں رسول انڈ میجیز کے شدید اصرار کے بعد بھی ابوطالب نے ایمان نہ لاکر آپ کو سخت اذبت بھی تو پہنچائی ہے 'آہم ابوطالب کے کفر کے باوجود اس کی اس طرح ندمت نہ کی جائے جس طرح ابوجمل اور دیگر کفار کی فدمت کی جاتی ہے۔ (روح العالی 'جنام مساسل سلور بیردت)

اہم رازی شافع نے بھی اس آیت کی تغیر میں لکھا ہے کہ یہ آیت اوطالب کے لیے استغفار کی ممانعت میں پازں موئی ہے "کیونکہ وہ مشرک تفا۔ اتغیر میر 'ج من صاحه 'طبع قدیم' داواللاکو 'جودت)

حافظ ابن کیرشانعی نے اس آیت کی تغییر میں احادیث کے حوالے ہے ابوطالب کے ایمان نہ لانے کو بیان کیا ہے۔ (تغییرا بن کیرشامی ۱۳۹۰ مطبوعہ اوار وائد لس میروت)

علامہ قرطمی مالک نے بھی تغییر میں مک تکھا ہے۔ (الجامع فادیام القرآن جزا می ۱۲۰۱۱) علامہ عبد الرحمٰن بن علی بن محمد الجوزی الحنیلی المتوفی عادمہ کی بھی یکی تحقیق ہے۔

(زادالمير عسام ٢٠٠٢١ معبور كتب اسلامي ايروت ٢٠٠١ه)

علامه سيد حمود آلوي حنى متونى ١٥٠ المد تصيح بين

الم عبد بن حید الم مسلم الم ترزی الم این الی عاتم الم این مردویه اور الم بیعی فے حضرت ابو بریره دونی ہے دوایت کیا ہے کہ جب ابوطالب پر موت آنے گئی تو اسکے پس نی پڑتی تشریف لے گئے اور فرمایا اے پڑیا "اوالد الا الله " کئے ا میں قیامت کے دن الله سکہ سامنے آئے حق میں گوائی دون گلہ ابوطالب نے کما آگر جمعے قرایش کی مامت کا فدشہ نہ ہو آگر دو میں سے کرن الله سے موت کے ڈرے کل پڑھا ہوگی: کس کے کہ اس نے موت کے ڈرے کل پڑھا ہے تو میں تہماری آئے میں فحندی کریتا۔ اس دفت یہ آیت نازل ہوئی:

ایک کہ اس نے موت کے ڈرے کل پڑھا ہے تو میں تہماری آئے میں فعندی کریتا۔ اس دفت یہ آیت نازل ہوئی:

ایک کہ اس نے موت کے ڈرے کل پڑھا الله تا بعد علی آپ جمعے جاہیں اس کو ہدایت یافتہ نہیں کر کئے ا

يَهْدِيُ مَنْ يَنْسَاءُ (العَصص ١٥٠) يَهْدِيُ مَنْ يَنْسَاءُ (العَصص ١٥٠) . ين الله يجها من اله يانة كريا م

الم بخاری الم مسلم الم احر الم مسال اور و مر اتمد مدیث فے معرت ابن عباس رضی الله عنما ہے دوایت کیا ہے کہ بیت ابطالب کے متعلق نازل ہوئی ہے اجب نبی جین سے ابوطالب سے اسلام ان کے کے شدید اصرار کیا۔ الم ابن مردویہ نے بھی اس دوایت کو معرت ابن عباس سے دوایت کیا ہے۔ علامہ نووی شائعی نے تکھا ہے کہ تمام مسلمانوں کا اس پر

غيان القر أن

اجماع ہے کہ یہ آن ابوطالب کے اتعاق ازل مولی ہے۔ احرے مسلم عاص اس

ابوطانب کے اسلام کاسٹلہ مخفف فیہ ہے اور یہ کمتاکہ عمام مسلمانوں کا یا تمام مشرین کا اس پر اجماع ہے کہ یہ آیت
ابوطانب کے متعلق بازل ہوئی ہے مسلم نہیں ہے کو تکہ علاہ شیعہ اور ان کے آکٹر مشرین کا یہ نظریہ ہے کہ ابوطانب اسلام لے
آسے تھے اور ان کا دعویٰ ہے کہ اتحہ الل بیت کا بھی اس پر ایشل ہے ابور ابوطانب کے آکٹر فضائد اس پر شاہد جیں اور جن کا یہ
دعویٰ ہے کہ تمام مسلمانوں کا اس پر ایشل ہے کہ یہ آب ابوطانب کے حصلی بازل ہوئی ہے "ود عالمانہ شیعہ کے افتال ف اور ان کی
دوایات کا اعتبار نہیں کرتے ہم ابوطانب کے اسلام نہ گانے کے قبل کے اورد ابوطانب کو برانس کمن جا ہے اور نہ اس کے
جن میں یاوہ کوئی کمن جا ہے "کو تکہ اس سے علویوں کو ایداو چیتی ہے اور یہ ابنید نمیں ہے کہ اس سے نی مراج کہ کو ایدا

ابوطالب کے ایمان کے متعلق معتف کا تظریہ

وَلُوْتُرِي إِذْ وُتِفُوْاعَلَى التَّارِفَقَالُوَا لِلْيُتَنَانُرَدُ وَلَائِكُنِّ بَ

الدولے كا طب كائل لا ويكمنا جب ال وكافرول اكر ووزع يركموّاكي جائے كا وال وقت وہ كبير سكے كركائل بيل ونيا يما ل

ڽٵؖؽڸؾ؆ڗؾٵٞۅؙػڴڗٞؽؘڡؚؽٳڷ۫ؠڴۣڡۣڔؽؿ۞ؽڵٛؠؽۘٵڷۿؙؙؙٛۄؙڟٵڴٵٮٛۅٛٳ

دیا جائے اور ہم لیے سب کی نتا ہم ل کا تربید کریں اور مومون میں سے ہوجائیں ن بھران ہا اب وہ متنا کی مشعف ہو مجتے ہی

يُخْفُونَ مِنْ قَبْلُ وَلُورِدُوا لَعَادُوالِمَا نَهُوَاعَنْهُ وَإِنَّهُمُ

بن کرده به جماع سے ، او اگرده دنیا کی طوت لڑا جے کے زیروی کام کرنے بن سے انس سے کی ان الابط

تكني بُون ® وَقَالُوَّا إِنَ هِي إِلَاجِيّا ثَنَا الثَّنْيَا وَمَا نَحْنَ

دہ مزدرجو شقیل و الدوہ کے یم کر جاری ڈندگی موت ای دنیا ی ہے الد بم ووبارہ میں اشائے

طِينانُ القر ان

بِمَبْعُوْثِينَ ﴿ وَلَوْتَرَى إِذْ وُقِفُوا عَلَى مَرِّهُمْ قَالَ الْيُسَ

عائي كے ٥ اور (الع مناطب) كائل قو دہ منظر ديكيتا جب ال كوال كر ركي ماست كمراكيا جائے كا : الله فرطنے كا

هٰذَارِالْحَقِّ عَالُوْا بَكَى وَمَرِينَا قَالَ فَكُوْ وَتُواالُعَذَابِيمًا

كيار ودواره زنده بونا كر شين به وه كيس كريول نيس : اے بائے دب ! الدفر طفے كا بس اب تم ابنے كفر كى وجہ سے

كُنْتُوْتُكُفُّ رُنَ ﴿

مذاب (كامره) مجمو ٥

الله تعالى كاارشاده، اور (اے كالف) كاش الد ركھ اجب ان كافروں كو دونے پر كمزاكيا جائے كا اس دفت دہ كہيں اللہ تعالى كاارشاده ہم اللہ اور ہم اللہ دب كى نشائداں كى كلف بند كريں اور مومنون ميں ہے ہو جا كيں۔ كے كہ كاش ہميں دنيا ميں اور عومنون ميں ہے ہو جا كيں۔ (الانعام: ۲۷)

قیامت کے دن کافروں کے عذاب کی کیفیت

قرآن مجیدی وقوف کانفظ ہے ایجی ان کافروں کو جب دونے پر واقف کیا جائے گا۔ اس کا معنی قیام بھی ہے اور جانا بھی اس صورت میں اس کے گئی معنی ہیں۔ (۱) وہ دوز غ کے پاس کھڑے ہوں اور دوزغ کا مشاہرہ کر رہے ہوں (۲) دوزغ کے اس صورت میں اس کے گئی معنی ہیں۔ (۱) وہ دوزغ کے پاس کھڑے ہوں اور جو بل صراط ہو دونے کے عذاب پر واقف اور مطلع ہوں اور جو بل صراط ہے وہ اس کے اوپر کھڑے ہو سے دوزغ کے دو اس مل میں دونے میں کھڑے ہوں کہ دہ ہر طرف سے دوزغ کے شعلوں کی لیبٹ میں ہوں۔

اس آیت پس بڑا محدوف ہے اور حاصل معنی ہے کہ اے قاطب آب وید ویکے گاکہ فرشتے کافروں کو دوزخ کے پاس کر اگر دیں گے وقوان کو اس تذر خوف اور وہشت ہیں دیکھے گاجی کو مندبد کرنا مکن نہیں ہے۔ اس وقت یہ کافر ہوں گے اور یہ تمنیا کریں گے کہ کاش انہیں پھر دنیا میں اورا وہ است اور پھر ہم اپنے دب کی نشاندوں کو نہ جمٹنا کی اور مومنوں ہیں ہے ہو جا کی اور انڈ توالی کی تصدیق پر دالات جا کی اور انڈ توالی کی اور در الول کی تقدیق پر دالات کی اور انڈ توالی کی اور قیامت پر * فرشتوں اور در الول کی تقدیق پر دالات کرتی ہی اور انڈ تو ان تا تو ان کی اور قیامت پر * فرشتوں اور کرایوں اور و مولوں پر ایمان الا کی اور گاہوں ہے تو ہہ کریں اور قیامت اور آئی اور قیام تھا کریں۔ انڈر توالی ان کارو قرنا آب کے در کریں اور قیام تھا کہ کریں۔ انڈر توالی ان کارو قرنا آب کے در قرنا کی اور قیامت کریں۔ انڈر توالی ان کارو قرنا آب کے در کریں اور قیام تھا کہ کریں۔ انڈر توالی ان کارو قرنا آب کے در کریں اور قیام تھا کہ کریں۔ انڈر توالی ان کارو قرنا آب کے در کریں اور گاہوں کے در کریں اور قیام تھا کریں۔ انڈر توالی ان کارو قرنا آب کی اور قرنا آب کی کریں اور قرنا آب کی اور قرنا آب کریں گونا گاروں کریں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گونا گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں گاروں کریں گاروں کریں گاروں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں گاروں کریں گاروں گاروں گاروں کریں گاروں گاروں گاروں کریں گاروں گاروں کریں گاروں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں گاروں کریں کریں گاروں کریں کریں گاروں کریں گاروں کریں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں کریں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں گاروں کریں

غييان القر أن

جلدموم

بر الله تعالی نے ان کی ندامت یا تمنا کا مرامتا رد فربلیا کینی اگر وہ دنیا کی طرف نوٹادیے گئے تو ان کو جس کفر علو ا معصیت اور نفاق سے منع کیا کیا تھا کوہ پھرای کی طرف نوٹ جا کیں گے۔ کو تکہ کفرلور متلوان کی طبیعت میں رچ چکا ہے۔ وہ دنیا کی دنگینیوں اور نصب و زمنت کو دکھ کرا کی بار پھر آخرت کا انکار کردیں گے اور مرنے کے بعد دوبارہ اٹھنے احساب و کماپ اور جزاء اور مزاکی پھر تکذیب کریں گے۔

الله تعالى كاارشاد ب: اور دوكة إلى كه جارى زئركى صرف اى دنياس باور جم دوباره الخلة نسيس جاكس مح

(الإنعام:٢٩)

اس آیت میں اللہ تعالی لے ان کافروں کا مرامتا رو فرمایا ہے کہ آگر ان کو دنیا میں دوبارہ بھیج دیا گیا تو وہ گھرونیا کی الذوں میں مشغول ہو جا نمیں کے اور کا فرکریں کے اور کمیں کے کہ مشغول ہو جا نمیں کے اور کا فرکریں کے اور کمیں کے کہ مرف میں دنیاوی ڈندگی کا افرار کریں گے اور کمیں کے کہ مرف میں دنیاوی ڈندگی ہوا ہے نہ مرف میں دنیاوی دنیاوی ہو اس کے بعد نہ کوئی تواب ہے نہ مذاب ہے۔ یہ اوگ باوی اور اور فرد ہیں جو فریب پر ایمان شمیں لاتے اس کا نفس المردان کو کفر کمرای اور برے کا مول پر قائم رہے۔ یہ کا تھم دیا ہے۔

الله تعالى كاار شاوي: اود (اے كالب!) كاش الوو منظرد كھا جب ان كوان كرب كرمائے كراكيا جائے كا الله فرائے كا كيابيد (دوبارہ زندہ موہ) حق نسي ہے؟ دہ كس مر كيون نسي؟ اے مارے دب الله فرمائے كا بن اب تم اسنے كفر

كى دجر سے عذاب كامرو يكفون (الانعام: ١٠٠١)

اس آیت کا معنی ہے ہے کہ حشر کے دن کا قروں کو اللہ تعالی کے سامنے اس طرح پیش کیا جائے گاجس طرح مجرموں کو حاکم کے سامنے پیش کیا جاتا ہے اور پھر اللہ تعالی ان ہے باز پرس قربائے گا' جیسا کہ اس آیت جس ہے:

ان كو كمزاكروان عدموال كياجات كا-

وَقِعُوهُمْ إِنَّهُمْ مُنْدُولُولُ (الصفت: ١٣)

اگریداعتراض کیاجائے که قرآن مجیدیں ہے:

وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْيُعَيّامَة إِالْبِقره المحال اوراشان عقامت كدن كام في قراعة كا-

اور اس آیت میں ان سے کلام فرانے کاؤکر ہے۔ اس کا جواب یہ ہے کہ اللہ تعالی ان سے بلاواسط کلام نیس فرائے گا
اور اس آیت میں جس کلام فرائے کاؤکر ہے وہ فرشتوں کے واسطے سے ہے ' فاللہ تعالی ان سے رصت کے ساتھ کلام نیس فرائے گااور یہ کلام فیس کے ساتھ سے پر اللہ تعالی فرشتے کے واسطے سے ان سے قربائے گا کہ کیا یہ مرکر وویارہ افحانا تی نیس ہے 'جس کا تم انکار کرتے تھے۔ وہ تم کھا کر کمیں گے کہ یہ بالکل جی ہے۔ اس میں کوئی ٹیک نیس ہے ' پار اللہ تعالی فربائے گااب تم اپنے کفراور محقریب کی وجہ سے عزاب کا مزہ چکھو۔

قَلُ خَسِرَ الَّذِينَ كُنَّ يُوابِلِقَاءِ اللَّهِ حَتَّى إِذَاجَاءَ مُهُمُ السَّاعَةُ

بينك ان وكول من نفسان الحاباج برل في النوس القات كوجشاديا ، منى كرجب ان ك إلى اما بما بحد قيامت أيني كي قو

بَغْتَةً قَالُوا لِيحَسُرَتِنَاعَلَى مَا فَرَطْنَا فِيهُا لَوَهُمُ يَحُمِلُونَ

كبيرك إلى افرس المارى اى تقيري جاى السعيم بمسع برل الدوه ابى بينول يرويفانون

جلدسوم

ئبيان انقر ان

ی تھیم رمواوں کی تمذیب کی تکی سو اجول نے اس شکدیب اور ایڈا درمانی پر م د ۱۰ ت ۲۰۱۱ کی مرت دی فک بُرل کرتے ہیں پر اوّجہ سے استنے ہی الدمودہ دارل) یں سے دیم جاک غيان القر ان

مقتمتل

يَبْعَثُهُ وُاللَّهُ ثُمُّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿ وَكَالُوالُولَانُزِّلَ عَلَيْهِ

اللها شاسے گا ہر وہ اس کی طوت اوٹائے جائیں گے 0 اور اس لے کہا اس درمون ایر اس کے رب کی ون

ٵؽٷٛٞڡؚٚؽ؆ٙڽ؋ٷٛڵٳڰ۩ٚۿٷٳڋڒۼڵؽ؈ؙؿؙڹڒؚڵٳؽڐٷڵؚڰ

سے کوئی دمغوب مجزو کین نبی ازل کیا گیا ، آپ سمے کر استداس پر قادر ہے کر دان کامعنوب مجرو نازل کردے ، لین ان کے

ٱكْثَرُهُمُ لَا يَعَلَمُونَ ١

اکثر الگ نبیں جانتے 0

الله تعالی کاارشادے: یہ شک ان لوگوں نے نقصان اٹھایا جنوں نے اللہ سے ما قات کو جمعنایا حتی کہ جب ان کے پاس اٹھا کے تواہد تو اس کی تو کسی کے بات کے جب ان کے پاس اٹھا کی تو کسی کے بات کے افسوس اہادی اس تعقیر رجو اس بارے میں جم سے ہوئی اور دو اپنی ڈیٹوں پر السبے گناہوں کا) یوجو اٹھائے ہوئے ہوں ہے۔ (الانعام:۲۱) منگرین قیامت کے خسار و کا بیان

اس آیت میں بھی ان کافروں کے احوال بیان فرمائے ہیں جنوں نے قیامت کااور مرنے کے بعد دوبارہ اٹھنے کاانکار کیا'ان کا ایک مثل میر بیان فرمایا کہ انہوں نے تقصان اٹھایا اور دوسرا مثل میر بیان فرمایا کہ وہ اٹھی بیٹھوں پر اپنے گزاہوں کا بوجہ اٹھائے ہوئے ہوں گے۔

اس فتصان کی تعمیل ہے ہے کہ اللہ تعالی نے اضان کو اعتصاء جسانے اور علی و گرکے ماتھ بھیجا آپا کہ اضان اپنی توت علیہ اور قوت عقید سے نفع حاصل کرے اور وہ نفع ہے اثروی نفتوں کا اور فیرظل ایر و تواب کے حصول کا اور ہے نفع اللہ تعالی اور اس کے دسول ہو آہے۔ لیکن جب کا تر اللہ اور اس کے دسول پر ایمان اللہ نے اور اللہ تعالی اور دسول اللہ بھیج کی اطاعت ہے حاصل ہو آہے۔ لیکن جب کا تر اللہ اور اس کے دسول پر اور قیامت پر ایمان اسے توان کو اثروی نفتوں کا نفع حاصل تھیں ہوا اور کفراور معصیت کی وجہ سے تواب کے بیات ہوئے ہوں گے۔ اور اس کی معاوت کا کہل ہے ہے کہ وہ اللہ تعالی کی طرف متوجہ رہے اور اس کی مباوت میں قواب کے تعالی کی طرف متوجہ رہے اور اس کی مباوت میں مشخول رہے اور ور تم کے گناہوں سے اپنے آپ کو باز رکھ اور جو مشخول رہے اور ور تم کے گناہوں سے اپنے آپ کو باز رکھ اور جو مشخول رہے اور ور تم کے گناہوں سے اپنے آپ کو باز رکھ کو اس کے مشخص قیامت کا ادر مرف کے بعد دوبارہ اشخف کا انظر ہوگا وہ افروی زندگ کے لیے کی زاو راہ کو تیار نہیں کرے گا۔ اس کے مشخص قیامت کا اور مرف کے بعد دوبارہ اشخف کا انظر ہوگا وہ افروی زندگ کے لیے کی زاو راہ کو تیار نہیں کرے گا۔ اس کے مشخص قیامت اور غرام کی تو وہ کی کی دوبارہ اپنے گئی ہوں ہو تھا میں دوبارہ اس کی بیار کروں دیتوں کے بوجہ میں بیناف کرتا رہے گا۔ حق کی بیار اور جو اس کی بیار کو تیار نہیں کی بیار کی جو کی مشاف کرتا رہے گا۔ ور آنمائیکہ دوبارہ اپنی بیار کی جو کی اس کی جو کی مشاف کرتا رہے گا۔ ور آنمائیکہ دوبارہ اپنی بھی ہو گا دوبارہ کی بیار اور جو تھا۔ کہ بیار اور جو اس کی اس کی بیار اور جو سے مسل کی دوبارہ کی بھی ہو گا دوبارہ کی بیار اور جو سے کہ بیار اور جو تھا۔ کہ بیار اور جو سے میار اور جو تھا۔ کہ بیار اور جو سے میار اور جو تھا۔ کہ بیار اور کو تیار کہ بیار اور جو تھا۔ کہ بیار اور جو تھا۔ کہ بیار اور جو تھا کہ بیار اور جو تھا۔ کہ بیار اور جو تھا کہ بیار اور جو تھا کہ بیار اور کہ بیار اور جو تھا کہ بیار اور کو تھا کہ بیار کو تھ

روز قیامت کو ساعت اور اللہ سے ملاقات کاون فرمانے کی توجیہ

اس آیت میں قیامت کو ساعت سے تجیر فربلا ہے۔ اس کی ایک وجہ یہ ہے کہ قیامت ایک ساعت میں واقع ہوگی۔ دو سری وجہ یہ ہے کہ حماب و کناب بھی ایک ساعت میں ہوگا محویا قیامت ایک ساعت حماب ہے۔

غينان القر ان

اس آبت میں قیامت کے دن کو اللہ ہے ملاکات کادن فرایا ہے کی تکد می وہ دن ہے جس میں اللہ تعالی کی رضانو راس کے خضب کے آثار کا تھوں ہوگا۔ دنیا میں اللہ تعالی بندوں کو مسلت اور ڈھیل رہتا ہے اور ان کے گزاہوں اور سرکتی پر فور ڈ محرفت نہیں کر آلہ اللہ تعالی فرما آ ہے:

> وَلُويُعَيِّمُ اللهُ لِلتَّالِي النَّوَاسُوعِ عَالَهُمُّ بِالْعَبْرِلْقُصِي إِلَيْهِمُ آحَلُهُمْ مَسَدَّرُ الْدِيْرَ لَا بِالْعَبْرِلْقُصِي إِلَيْهِمُ آحَلُهُمْ مَسَدُّرُ الْدِيْرَ لَا يَرْجُونَ لِغَا أَوْلَا فِي طُعْبَ إِنْهِمْ يَعْمَهُونَ ٥

(يوس: ۱۱)

اور اگر اخد لوگوں کو مزا دیے بیں ہی اتی عی جلدی کر ؟ جننی جلدی دہ ہملائی کی طلب بی کرتے ہیں ' توان کی دے عمل ختم کی جانگی ہوتی (محریہ اللہ کا طریقہ نہیں ہے) اندا جو لوگ ہم سے طاقات کی امیر نہیں رکھتے 'ووالی مرکشی ہیں ہمنکتے پھرتے

الله تعالى في توكوں كو دنيا ميں مسلت اور واصل دى " آك لوگ الله ك ما تات كرنے كو ياد كري كه جب دوالله تعالى سے

ما تات كريں كے اور اس كے سامنے چين ہوں كے تو دوائے كنابوں اور سركتی كے متعلق كيا عذر چين كريں كے اس ليے

البيس ذندگی جي مسلت دی گئی كه كمي محل ہو دوائى ملاقات كے دان كو ياد كرك التي معصيت اور سركتی ہے باز آ جا كي اور توب

كرليں ۔ الله تعالى قرما آئے :

وَاتَّنُّوااللَّهُ وَاعْلَمُوااتُّكُم مُلفُوهُ

اور اللہ سے ڈرو اور یقین رکھوکہ تم ضرور اس سے لا تات کرتے والے ہو۔

اور ان سے کمہ دیا جائے گا آج کے دن ہم تم پر رحم نمیں کریں گے جس طرح تم نے اس دن کی ملا گات کو بھلادیا تھا اور تسار اٹھکاناد و زخ ہے اور تمہار اکوئی مدد گار نہیں ہے۔ (اليقره: ۲۲۳)

وَ فِيلُ الْيَوْمُ نَسُسُكُمْ كَمَا تَسِينُتُمُ لِفَا * يَوْسِكُمُ هٰذَا وَمَاوْسِكُمُ النَّارُ وَ مَالَكُمُ يِّنْ تُومِيرُينَ (الحاثية ٢٣٠)

الله تعالی سے ملاقات کے دن کو یاد رکھنے کا معنی ہے ہے کہ بھرہ اللہ سے ملاقات کے شوق میں ٹیک عمل کرے ' آ کہ اس دن اللہ تعالی اس پر تظرر صنت فرمائے اور حلبت کے ساتھ اس سے کلام کرے اور اس کو ڈپنے دیدار سے نوازے۔ امام محدین اسائیل بخاری متوفی ۱۵ مھے روایت کرتے ہیں:

صرت عمادہ بن الصاحت برہین بیان کرتے ہیں کہ نی بھیر نے فرایا ہو فض اللہ علاقات کو محب رکھتا ہے اللہ (ہی) اس سے ملاقات کو محب رکھتا ہے اور جو فض اللہ سے ملاقات کو بالبند کرتا ہے اللہ (ہی) اس سے ملاقات کو بالبند کرتا ہے۔ حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عشایا یا آپ کی کسی اور زوج نے کہا ہم قوموت کو بالبند کرتے ہیں آپ نے فرایا یہ بات نسی ہے۔ حضرت عائشہ رمنی اللہ تعالیٰ عشایا یا آپ کی کسی اور زوج نے کہا ہم قوموت کو بالبند اجب مومن پر موت کا وقت آتا ہے قواس کو اللہ عزوج ل کے رامنی ہونے اور اس کے کرم کرنے کی بشارت دی جاتی ہے۔ قواس وقت اس کو آخرت کے سفر میں آگے جانے ہے ذیادہ کوئی چیز محب نسیں ہوتی۔ سو وہ اللہ سے ملاقات کو محبوب رکھتا ہے اور اللہ مجی اس سے ملاقات کو محبوب رکھتا ہے اور اللہ میں ہوتی سو وہ اللہ سے ملاقات کو بالبند کرتا ہے۔ اور اللہ اس کی جانے ہے ذیادہ کوئی چیز بالبند نسیں ہوتی سو وہ اللہ سے ملاقات کو بالبند کرتا ہے۔ اور اللہ اس سے ملاقات کو بالبند کرتا ہے۔

 می مسلم کی روایت میں ہے رسول اللہ بہتی ہے قرطیا جو تسارا خیال ہے وہ بات نہیں ہے لیکن جب ہتایاں اوپر کی طرف چرد جا کی اور جب مانس مید می اکھڑنے گئے اور جسم پر لرزہ ظاری ہو اور انگیوں میں تشتیج ہو جائے اس وقت جو اللہ ہے مانت کو مجبوب رکھے قو اللہ بھی اس سے ملاقات کو مجبوب رکھے قو اللہ بھی اس سے ملاقات کو مجبوب رکھے تو اللہ بھی اس سے ملاقات کو مجبوب رکھے اور جا تو تی اور اس مدیث کا معنی ہے ہے کہ اللہ قطاق سے ملاقات کی خوجی اور ہاخو ٹی فرخ روح کے اس کا کیا انجام ہے؟ اور آخرت می اس کے لیے کیا تیار کیا وقت معتبرہ وقی ہے۔ اس وقت ہرانسان کو یہ خبردے دی جاتی ہے کہ اس کا کیا انجام ہے؟ اور آخرت می اس کے لیے کیا تیار کیا ہے۔ تیک لوگ موت کو اور اللہ سے ملے کو پرند کرتے ہیں اگر ان انعام اور اللہ سے ملے کو پرند کرتے ہیں اگر ان انعام اور اللہ بھی ان کو پرند کرتے ہیں گور کھ ان کو پرند کرتے ہیں کو کہ ان کو پرند کرتے ہیں کو کہ ان کو پرند کرتے ہیں کو اور اللہ بھی ان کو پرند کرتے ہیں کو کہ ان کو پرند کرتے ہیں کو کہ ان کو پرند کرتے ہی کہ ان کو پرند کرتے ہیں کو کہ ان کو پرند کرتے ہی کو برند کرتے ہیں کو کھی جاتے کہ ان کو پرند کرتے ہی کہ ان کو پرند کرتے ہیں کو کھی جاتے کہ ان کو پرند کرتے ہی کو برند کرتے ہیں کو کھی جاتے کہ ان کو پرند کرتے ہی کہ ان کو پرند کرتے ہیں کو کھی جاتے کہ کہ ان کو پرند کرتے ہیں کو کھی جاتے کہ دور در کھتا ہے۔ کہ ان کو پرند کرتے ہیں کو کھی جاتے کہ دور در کھتا ہے۔

الم ابن جریہ متوفی ۱۹ مید نے اس آجے کی تغیری جموی قیس ہوائے گیا ہے کہ موسی جب اپی قبرے لکے گاؤ اس کا نیک عمل حسین صورت اور تغیس خوشیو جی اس کا استقبال کے گا اور اس سے کے گا کیا تم بھی کو پچائے ہو؟ وہ کے گا نہیں 'البتہ اتہماری خوشیو بہت تغیب ہے اور تہماری صورت بہت حسین ہے۔ وہ کے گا تم بھی دنیا بی اس طرح تھا 'بی تہمارا نیک عمل ہوں' جی دنیا بی بہت عرصہ تم پر سوار رہا' آج کے ون تم بھے پر سواری کرد اور یہ آجہ پڑھے گاجس ون ہم منطق کو رحمٰن کی طرف بلور وقد جمع کریں گے (مریم: ۱۵۵) اور کافر کا عمل نماے یری صورت اور بداو کے ساتھ اس کا استقبال کرے گا اور اس سے کے گا تو دنیا بی اس طرح تھا 'بی تیما برا عمل ہوں۔ تو دنیا بی بہت عرصہ جمد پر سوار دہا' آج بی تھے پر مواری کروں گا۔ چربہ آیت پڑھے گا اور وہ اپنی چیموں پر (اپنے گناہوں کا) ہو جمد افسائے ہوئے ہوں گے۔ سنوا وہ کیما برا ہو جمد افعائے ہوئے ہوں گے۔ الانعام: ۱۲۰۱۱ جانح البیان 'جزے 'س ۲۰۰۰ مطبوعہ ھاد الفکو 'جود ' ۱۶۰۰ میں

الله تعالی کاارشادے: اور دنیا کی زندگی تو مرف کھیل تماثیاہے اور بے ٹک آخرت کا کھر متقین کے لیے بہت اچھا ہے 'چرکیا تم حق سے کام نمیں او کے۔(الانعام ۱۳۳)

آیات سابقیہ سے مناسبت اور وجہ ارتباط

جولوگ قیامت اور مرنے کے بعد دوبارہ اٹھنے کے متحریقے ان کے نزدیک دنیا اور اس کی دیگینیاں و لفریساں اور دنیا کی
راختی اور لذتی بہت بڑی جے تھی۔ سواللہ تعالی نے اس آیت میں دنیا کا فسیس اور گھٹیا ہو نالور اس کا رکیک اور ب وقعت
اور بے بلیہ ہو ٹابیان فربایا اور چو تکہ یہ دنیا آ تحری کی معاد توں اور کامیابیوں کا وسلہ لور زینہ ہے اس لیے اس آیت کی تغیر می
دو قول جی۔ ایک قول یہ ہے کہ مطلقہ نیا کی زندگی ندموم نہیں ہے ایک کافر کی زندگی ندموم ہے اور دو موا قول یہ ہے کہ یہ آیت عام ہے اور دنیا کی زندگی مطلقة
مو دو اس کے اس کی زندگی امود لعب فیمی ہے اور دو موا قول یہ ہے کہ یہ آیت عام ہے اور دنیا کی زندگی مطلقة
مو دو اس پر انسوس کرتا ہے کہ آگر اس دفت کو کمی نئل کے کام میں گزارا ہو تا تو زیادہ بھتر ہو تا اس طرح دنیا کی لذتوں سے
جب انسان فارغ ہو تا ہے تو دو اس پر افسوس کرتا ہے کہ آگر ہید دفت کمی عمادت میں صرف کیا ہو تا تو زیادہ بھتر ہو تا۔
دنیا کی زندگی کو لمود لعب قرار دینے کی وجو ہا ت

ا۔ امود احب کیدت کم ہوتی ہے اور بمت جلد ختم ہو جاتی ہے۔ ای طرح دنیا کی ذندگی ہی کم ہوتی ہے اور جلد ختم ہو جاتی ہے۔

۱- امود احب عموماً کئی فریب پر جنی ہو گئے۔ اس طرح انسان دنیا کی زندگی کو بھی سمی فریب کے سمارے گزار آہے۔

۱- عموماً ہے اور پیوان اور عافل اوگ امود احب میں ہشتقل کرتے ہیں اور جیدہ اور فریدہ نوگ امود احب میں زیادہ مشنوں مندور زیرک شیوں ہو ہے۔ اس طرح ونیا کی لفرق اور ولفر بیوں ہیں بھی جاتل اور عافل لوگ مشنول رہے ہیں اور جو عقل منداور زیرک اوگ بوٹ ہیں۔ اور جو مقل منداور زیرک اوگ بوٹ جی اور جو عقل منداور زیرک اوگ بوٹ جی اور جو جی کہ دوج ہیں۔ اور جو عقل منداور زیرک اور جو جی کہ دوج ہیں۔ اور جو جی کہ دوج ہیں۔ اور جو جی کہ جو ای نوبوں کے حصول کی جو جی مشخول دہ جو جیں۔

ونیا کے بے وقعت ہونے کے متعلق احادیث

مافظ ابدیکر عبداللہ بن محدین عبید بن سفیان بن ابی الدنیا متوتی ۱۸۰ مدائی سند کے ساتھ روایت کرتے ہیں:
حضرت مستورد بن شداو جائئے بیان کرتے ہیں کہ میں رسول اللہ طبیع کے ساتھ سواروں کی ایک جماعت میں جارہا تھا الما اللہ علیہ باک ہوں گا کہ جہائے کہ جب اس کے مائلوں اللہ عبدا اکر المردو) بچہ پڑا ہوا تھا۔ آپ نے فریلیا تمیارا کیا خیال ہے کہ جب اس کے مائلوں نے اس کو پھینکا ہو گاتو یہ ان کے نزدیک ہے و تعت ہو گا۔ صحابہ نے کہا اس کے بے و تعت ہو نے کہ وجہ سے بی انہوں نے اس کو پھینکا ہو گاتو یہ ان کے نزدیک ہے و تعت ہو گا۔ محابہ نے کہا اس کے بے و تعت ہو نے کی وجہ سے بی انہوں نے اس کو پھینک دیا ہے۔ آپ نے فرایا اس ذات کی خسم جس کے قبضہ و قدرت میں میری جان ہے۔ جس قدر یہ بحری کا مردہ بچہ اپنے میں میری جان ہے۔ جس قدر یہ بحری کا مردہ بچہ اپنے اللہ کے نزدیک بے وقعت ہے۔ اللہ عزد بحل کے نزدیک دنیا اس سے بھی ذیارہ ہے وقعت ہے۔

(موسوعد دما كل ابن الي الدنيا كرم أنم الديا وقم المحيث ٢ سن تذي جه وقم المحيث ١٣٣٨ سن داري جه وم وقم المحيث ٢٤٣٤ سنن ابن اجد في وقم المحيث ١٣١ سند احد كه وقم المحيث ١٨٠٣٥ هاوالفكو المبع بدي سند احراجه عم ٣٨٨ بي ٢ م م ٢٢١ ٢٣٠ داوالفكو المبع قديم)

(ذم الدنيا وهم العصف ٢٠ منن ترزي جه وهم المعصف ٢٣٣٩ منن ابن ياب البير عم وقم المعصف ٢٣٦ طيت الاولياء وجه م

حضرت ابو موی اشھری جھڑو بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بھی ہے فرمایا ہو مخص اپنی دنیا ہے محبت کرے گاوہ اپنی آخرت کو نقصان پنچائے گا۔ موتم باتی رہنے والی چزکو آخرت کو نقصان پنچائے گا۔ موتم باتی رہنے والی چزکو فافسان پنچائے گا۔ موتم باتی رہنے والی چزکو فافسان پنچائے گا۔ موتم باتی رہنے والی چزکو فافی ہونے والی چزپر ترجیح وو [وم الدنیا مرآ الدینا مرآ الدینا مرآ الدینا مرآ الدینا مرکز ہوئے ہوئے والی چزپر ترجیح وو اوم الدینا مرکز ہوئے ہوئے کہ میں الدینا کو جہت ہر گھاہ کی اصل ہے۔ (وم الدینا کا مہم الاردینا کا مہم کا کہ میں المرکز ہوئے ہیں کہ رسول اللہ مرکز ہوئے گئی ہوئے ہر گھا ہوئے گا اس مرکز ہوئے ہیں کہ رسول اللہ مرکز ہوئے ہیں کہ اوگوں نے حضرت علی بین الی طالب جرہوئے ہے کہا اے ابوالحن اہمارے لیے دنیا کی حقیقت بیان کریں۔ آپ نے فرمایا و نیا کی جو چڑی طال ہوں گی ان کا حساب لیا جائے گا اور جو چڑی حرام ہوں گی ان پر دوز خ کا حقیقت بیان کریں۔ آپ نے فرمایا و نیا کی جو چڑی طال ہوں گی ان کا حساب لیا جائے گا اور جو چڑی حرام ہوں گی ان پر دوز خ کا

تبيان القر أن

عذاب بو گله (دم الدنيا" ١٤ مطبوعه موسته الكتب الشقافيه "بيروت معاسله)

صفرت محروہ من موق بر وزال ملائے ہیں کہ وسول اللہ مجھیز نے فرمایا بہ خدا جھے تم پر فقر کاخوف نہیں ہے ۔ کین مجھے تم پر میہ خوف ہے کہ تم پر ونیا اس طرح کشادہ کردی جائے گی جس طرح تم ہے پہلے اوگوں پر کشاوہ کردی گئی تھی ' سوتم دنیا جس اس طرح د غیت کہ گے جس طرح انہوں نے د غیت کی اور تم ای طرح ہلاک ہو جاؤ گے جس طرح وہ ہلاک ہو گئے تھے۔ (مجھے البخاری 'ج ۴ رقم البحدے: ۱۳۵۸ مجے مسلم 'الزحد الا ۱۳۹۳) ۴۵۷ مشن ترزی 'ج ۴ رقم المدرے: ۱۳۵۸ مشن این ماجہ '

ج٢٠ وقم الحديث ١٩٩٤ مند الوعي ١١٠ مل ١١٠

صفرت عبداللہ بن مسعود برہین بیان کرتے ہیں کہ نمی ہیجی چائی پر آئیے ہوئے تھے ،جس کے نشان آپ کی جلد پر فلاش ہو گئے تھے۔ یس نے عرض کیا یارسول اللہ آپ پر میرے میں بلپ فدا ہوں 'اگر آپ ہم کو اجازت دیں تو ہم چنائی کے اوپر کوئی چیز بچھادیں جس سے آپ کی جلد محفوظ رہے۔ رسول اللہ جھیجیز نے فرمایا جھے دنیا سے کیاسطلب ہے ؟ میری اور دنیا کی مثال یہ ہے جیسے کوئی سوار کمی در فت کے مائے میں جیٹے ' پھر سائے کو ترک کرے سفر شروع کروے۔

(سنن ترای کی جو اور تم الحدیث ۴۳۸۴ سنی این اجه ۴ جو تا رقم الحدیث ۴۱۰۹ میز اجر ۴ جو تر آم الحدیث ۴۳۷۹ میز این کرتے جی که رسول الله بیجید نے فرملا الله ہے اس طرح حیا کر جس طرح حیا کر جس طرح حیا کر جس طرح حیا کرنے کا حق ہے۔ ہم نے کمایار سول الله افاقہ ہے دیا کرتے جی ہے۔ آپ نے فرملا مید بات نسیں ہے لیکن الله ہے حیاء کرنے کا حق ہے کہ تم سراور اس کے نجلے حصد کی حفاظت کر اور موت اور جم کے حق ہے کہ تم سراور اس کے نجلے حصد کی حفاظت کر اور جب کے بیادہ میں ہے اور اس کے نجلے حصد کی حفاظت کر اور موت اور جم کے بیسیدہ ہونے کو یاد رکھ واور جو محض آخرت کا اراوہ کرتا ہے 'وہ ونیا کی زینت کو ترک کر دیتا ہے اور جس نے ایما کیا اس نے اللہ سے اس طرح حیاء کی جو حیاء کرنے کا حق کے ایما کیا اس نے اللہ ہے۔ اس طرح حیاء کی جو حیاء کرنے کا حق ہے۔ (۴۵۹ الحدیث ترک کر دیتا ہے اور جس نے ایما کیا اس نے اللہ ہے۔ اس طرح حیاء کی جو حیاء کرنے کا حق ہے۔ (۴۵۹ الحدیث ترک کر دیتا ہے اور جس نے ایما کیا اس نے اللہ ہے۔ اس طرح حیاء کی جو حیاء کرنے کا حق ہے۔ (سنن ترزی عورت کو ترک کر دیتا ہے اور جس نے ایما کیا اس خورت کی دیو حیاء کرنے کا حق ہے۔ (سنن ترزی عورت کو ترک کر دیتا ہے اور جس نے ایما کیا اس خورت کی دورتا ہے اور جس نے کا حق کی کا حق ہے۔ (سنن ترزی عورت کو ترک کر دیتا ہے اور جس نے ایما کیا اس خورت کی دورتا ہے اور جس نے کا حق کی کا حق ہے۔ (سن ترزی کا جس کر تری ایما کی دورتا ہے اور جس نے ایما کیا ترب کی دورتا ہے دورتا کی دورتا ہے اور جس نے ایما کیا تھا کہ تو تھا کی دورتا ہے دورتا کی دورتا کی دورتا ہے دورتا ہے دورتا کی دورتا ہے دورتا کی دورتا ہے دورتا کی دورتا ہے دورتا کی دورتا کی دورتا ہے دورتا کی دورتا کی دورتا ہے دورتا کی دورتا کی دورتا کی دورتا کی دورتا ہے دورتا کی دورتا ہے دورتا کی د

حضرت ذید بن تابت بواین بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بینین نے فرمایا جس محض کا مقمود دنیا ہو اللہ اس کے حالات دگر گوں کر دیتا ہے اور اس کی آئیموں کے سامنے نظر کر دیتا ہے اور دنیا ہے اس کو دی چیز ملتی ہے جو اس کے لیے مقدر ہوتی ہے اور جس محض کی نیت آخرت ہوتی ہے 'اللہ تعالیٰ اس کے حالات مجتمع کر دیتا ہے اور اس کادل مستعنی کر دیتا ہے اور دنیا اس کے اللہ بیاس ذلیل ہو کر آئی ہے۔ (سنن ابن ماج مین اللہ عندہ ۱۳۰۱س صدیت کی مند میج ہے اور اس کے راوی ثقہ ہیں)

حضرت عبداللہ بن مسعود بورخ بیان کرتے ہیں کہ تمہارے نمی چھپر نے فرمایا جس مخص نے تمام تظرات کو صرف آخرت کا حصہ بنادیا 'اللہ اس کو دئیا کے افکارے کافی ہو گااور جس مختص کے تمام افکار دنیا کے حالات کے متعلق ہوں'اللہ کو اس کی کوئی پر داہ نہیں ہو تی کہ وہ کس دادی بیں ہلاک ہو تا ہے۔ (سفن ابن ماجہ 'ج۲'رقم الحدث:۲۰۱۳)

حضرت ابن عمرد منی اللہ تعالی عنما بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ منظیم نے فریلا دنیا میں اس طرح رہو جسے مسافر ہویا راستہ پار کرنے والے ہو اور اپنے آپ کو اہل تبور میں ہے شار کرو۔

(سنن ترفري' ج٣٠ وقم الحديث: ٣٣٣٠ سمح البخاري جء وقم الحديث: ٣٣١١ سنن ابن اجه ج٣٠ وقم الحديث: ٣١١٣ مميح ابن مبان وقم الحديث: ١٩٨٧ سنن كبرئ لليمعتي ج٣٠ م ١٣١١)

معرت سل بن سعد بویش بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بھیر نے قربایا اگر اللہ کے زویک ونیا کی وقعت مجمر کے پر کے برابر بھی ہوتی قاللہ کافر کو اس سے ایک محمونت مجمون پاتھ۔

(سنن ترزي عوم و قر الحديث: ٢٣٦٤ سنن ابن ماجه عوم و قر الحديث ١٠١٠ طية الادرياء عوم ١٠٠ ج ٨ من ٢٩٠)

ثبيان القر ان

صفرت مل بن سعد الساعدى برطن بيان كرتے بين كر ايك فلم فلم في بي بي كا فدمت بي حاضر اوكر عرض كيا يار سول الله الجھ كوكى ايما عمل بتائي جس كو بي كروں تو الله بحى جمدے حبت كرے اور لوگ بحى جمدے حبت كريں۔ رسول الله بيج بر فرايا تم ونيا بي ب رغبتى كرو الله تم ہے حبت كرے كااور لوكوں كے پاس بو چزيں بيس ان ہے ب دغبتى كرو تو لوگ تم ہے حبت كريں كے۔ (سنن ابن ماج من عور الحدیث: ۱۹۳۳ مطبوعہ ها والفكو اجودت ماسام)

صرت علی بروز کے قرایا دنیا جانے والی ہے اور آخرت آنے والی ہے اور ان میں سے ہر ایک کے فرزند ہیں۔ موتم آخرت کے فرزند بنو و دنیا کے فرزند بنو۔ آج عمل ہے اور حماب تمیں ہے اور کل حماب ہو گااور عمل تمیں ہو گا۔

المح البعاري الكب الرعاق عبب في الاف و الوله)

حضرت ابو معید فدری وہین ایک کرتے ہیں کہ ایک دن ہم کو رسول اللہ چین کے خصری نماز پر حائی پھر آپ نے کھڑے ہو کہ خطری آباد ہی جائز ہو حائی پھر آپ نے کھڑے ہو کہ خطبہ دیا اور قیامت تک واقع ہونے والی کی چزکو نہیں چھوڑا گراس کی ہم کو خبردی اس کو یاد رکھا جس نے یاد رکھا اور اس کو بھا دیا جس نے بعلا دیا اور آپ کے ارشاوات ہیں یہ بھی تھا کہ دنیا سرسبز اور جبھی ہے اور اللہ تم کو دنیا ہی ضیفہ بنانے والا ہے کہ تم کیا کرتے ہوا سنوا تم دنیا ہے ہی تھا کہ دنیا سرسبز اور جورتوں سے پر بیز کرد (مسلم کی روایت میں بنانے والا ہے کہ تم کیا کرتے ہوا سنوا تم دنیا ہے اور شاوات ہی ہیں تھا کہ جس محص کو جن کا علم ہو جائے آب کو تک بنواس کو جن بیان کرتے ہے باز نہ دیکھ حضرت ابو سعید روستے گئے اور کھا ہم نے کئی چیزوں کو دیکھا اور ہم دیاؤ میں آگئے۔ (الحدیث)

(سنن ترزی جس کر آم افرے شدہ ۱۹۸۸ سمج مسلم الزکر والدعام ۴۱ (۱۳۳۷) ۱۸۸۳ سنن این ماید اج ۴ رقم الحدیث: ۲۰۰۰ سمج این حیان جه درقم الحدیث: ۲۲۱ سند اند اجس رقم الحدیث: ۱۳۱۳)

معزت الدوین النعمان بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ جھیج نے قربایاجب اللہ سمی بندوے محبت کریا ہے تو اس کو دنیا ہے بچا آئے جیسے تم میں ہے کوئی فخص استماد کے مریض کو پانی ہے بچا آئے۔

(سنن ترین عرب و قم الدید: ۱۳۳۳ اسن ابودا و ارقم الدید: ۱۳۵۳ اسن ابن ابه عرب آم الدید: ۱۳۵۳ اسن ابن ابه عرب آم الدید: ۱۳۳۳ و با اسن ترین ابن ابه این الدید اور تاجاز خواشات کو پر داکرتے میں صرف کرے تو پکرونیالور دنیا کا ال قدموم ہے اور ان اصلاعت کا بی محمل ہے اور اگر دنیا کے مل و دولت کو دین کی سرباندی تبلغ دین اسلام کی نشرو اشاعت اور ضرورت مندول کی مدر پر صرف کرے اور تجمود کرے اور محمود کرے توق و قاور صد قلت اوا کرے اور ان استون میں مل کو شرح کرے اور جرد تا کا الل و دولت بہت مباد ک اور محمود ہے۔

اداکرے اور شی صرف کرنے کی نبیت ہے مال و نیا کا استحسان کی راومی صرف کرنے کی نبیت ہے مال و نیا کا استحسان

الم مسلم بن تجاج فصوى متونى المعدد دايت كرتے إلى:

حضرت عبداللہ بن عمرد منی اللہ عثمابیان کرتے ہیں کہ نبی جید سنے قربلیا صرف وہ فضوں پر حسد (رشک) کرنامسخس ہے۔ ایک وہ مخص جس کو اللہ سنے قر آن دیا ہو اور وہ دن رات قر آن کے ساتھ قیام کر آ ہو اور وو سراوہ مخص جس کو اللہ سنے مال ویا ہو اور وہ دن رات اس مال کو (نیکی عن) خرج کر آ ہو۔

(منح مسلم 'مسافرین' ۲۲۱' (۱۸۱۵) من ۱۸۷۳ منح الجوادی 'ج ۱۸ وقم الحدیث: ۱۵۳۹ سنی ترزی 'ج۳' وقم الحدیث: ۱۹۳۳ سنی کبری النسائی "ج۵' وقم الحدیث: ۲۵۰۷ سنمی این باید "ج۴' وقم الحدیث: ۳۲۰۱ میز اجر 'ج۴' وقم الحدیث: ۱۳۳۴ شاوالفکو 'طبع

مديد مستداحر " عام ١٨٥٠ داد الفكر "طبع قديم)

حضرت عبدالله بن مسعود بوین بیان کرتے ہیں کہ صرف دو مخصوں پر حسد (رشک) کرنامستحن ہے۔ ایک دہ مخض جس کو اللہ نے مال دیا ہو اور وہ اس کو حق کے راستوں پر حرج کرتا ہو اور دو سرا دہ مخص جس کو اللہ نے عکمت (علم دین) عطاکی ہو' اور وہ اس کے مطابق نیملے کرتا ہو اور تعلیم دینا ہو۔

(می مسلم مسافرین ۴۷۸ (۱۸۲۱ (۱۸۷) می البواری جا دقم الهری شد سی مسئی کبری دانسانی جس دقم الهرید. ۵۸۳۰ مشن این ماجه کیم کور قم الهری شده ۱۳۶۸ مسند احمد می ۱۳۳۴ میم ۴۳۳ ۸۸ ۱۳۳۱ میم ۱۳۵۰ میم ۱۳۵۰ می ۱۳۵۰ میچ قدیم)

اس مدعث يس بيد تشريح بي حي جي الي الدووات كوالله كالمنل قراد ديالوراس كي تائيداس آيت كريمه بي ا

غَبِا ذَا قَلْصِلْتِ الصَّلِوَّةُ فَالنَّتَ شِيرُوا فِي الْأَرْصِ وَ لِلْمِيانِ لِي رَيْدِ جائِمَةٌ وَثِينَ مِن مُنْ الله مَن مِن اللهِ وَاللهِ اللهِ مِن اللهِ مِن اللهِ اللهِ مِن اللهِ مِن اللهِ مِن اللهِ اللهِ اللهِ الله

الْتَنَعُوامِنُ فَصْلِ اللَّهِ (المحمعة:١٠) قَتَل اللَّهُ (المحمعة:١٠)

معرت انس بن بالک جو پندیده بال مرح می که معرت او طلی جو پندید کے افساد میں سب نیاده بالدار تھے۔ اور ان کا سب سے ذیادہ پندیده بال محبر کے بالقائل بیرما تھا ایہ محبر کے ساتے بنو جدیلہ کا کلّہ تھا) رسول انڈ بی بی مجرک بالقائل بیرما تھا ایہ محبر کے ساتے بنو جدیلہ کا کلّہ تھا) رسول انڈ بی بی مجرک کی عاصل نہیں کر جاتے تھے اور دہاں فوش ذا گفتہ بالی پندیده بیز کو فرج نہ کرو۔ (آل عرف: ۴) تو معرت ابوطی جو پند رسول انڈ بی پندیده بیز کو فرج نہ کرو۔ (آل عرف: ۴) تو معرت ابوطی جو پند رسول انڈ بی پندیده بیز کو اور میرے نزدیک میرا موٹ اور کما انڈ تعالی فرما آل ہے اور بید اند کی داوش مدف ہے۔ میں انڈ کے پاس اس کی نگل اور ذخرہ کی امید رکھا ہوں۔ سب سے ذیادہ پندیده بی ندیده بی ایک مرف کریں۔ آپ نے فرما ایک موٹ اور ہے کہ ایک ان کو دے دو۔ پھر معرت ابوطی نے بیرما کو اپنی مرف کریں۔ آپ نے فرما ایک درت داروں کو دے دو۔ پھر معرت ابوطی نے بیرما کو اپنی مرف کریں۔ آپ کے قرب بالی ایک درت دو۔ پھر معرت ابوطی نے بیرما کو اپنی مرف کریں۔ آپ کے قرب بالی ایک درت دو۔ پھر معرت ابوطی نے بیرما کو اپنی دشتہ داروں اور می ذاور می قرب کریا۔

المعج مسلم 'زكوة '۲۲ (۹۹۸) ۲۲ معج البخاري "ج ۴ و قم الحديث الاسما اسنن كبري للتسائي "ج ٧ و قم الحديث الا١١٠)

صفرت النس بریشی بیان کرتے ہیں کہ معزت ام سلیم نے موش کیا گیار سول افتد اانس آپ کا خادم ہے۔ آپ اس کے حق یم اللہ سے دعا کیجے ' آپ نے دعا کی۔ اے افتد اس کے مل اور اولاد کو زیادہ کر اور اس کو جو پکھ عطا فرمائے ' اس میں بر کت دے۔

(می مسلم 'فنائل محلبہ' ۱۳۱' (۱۳۸۰) ۱۳۵۰ می انبخاری جے 'رقم اللہ بعد ۱۳۸۸ مسن ترزی 'ج۵'رقم اللہ بعث ۱۳۸۳)
حضرت عمرین الفطاب بوچیہ بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ باتھیں جملے مطافر مارے تے 'جم نے وظیر بیارس اللہ ابھے
سے زیادہ مختاج کو دیجئے' حق کہ ایک مرتبہ آپ نے بیجے مال مطافر ملاے میں نے عرض کیا جملے سے زیادہ ضرورت مند کو دیجئے۔
آپ نے فرملیا اس کو لے لو' جب تممارے ہاں مال آئے در آنحائیکہ تم اس پر حربیں ہو' نہ اس کا سوال کر رہے ہو تو اس مال کو
لے لواور جو مال اس طرح نہ ہو اس کے در ہے شہو۔

(می مسلم ' ذکر قا او ۱۳۵۱) ۱۳۳۹ می البحاری ' جو او آلی بید: ۱۳ ۱۳ اسنی اقدائی اج ۵ و آم الی بیده ۱۳۳۹) دخترت میکی مین ترام بوین میان کرتے بیل بیل نے بی بیلی سے موال کیا۔ آپ نے جمعے عطافر بایس نے بیر سوال کیا اس نے بیر عطافر بایس نے بیر سوال کیا۔ آپ نے جمعے عطافر بایس نے بیر سوال کیا آپ نے جمعے بیر عطافر بایا بیر آپ نے فربایا بیر ال مرمبز اور بیٹھا ہے۔ بو محض آپ نے بیم عظافر بایا بیر ال مرمبز اور بیٹھا ہے۔ بو محض اس مل کو اس مل می برکت دی جائے گی اور جو محض حریص ہو کر اس مال کو لے گا اس کو اس مل کو استفراء فنس سے لے گا اس کو اس مال می برکت دی جائے گی اور جو محض حریص ہو کر اس مال کو لے گا اس کو برکت نمین دی جائے گی اور اور والا باتھ نمیلے باتھ سے بہتر ہے۔ برکت نمین دی جائے گی اور ووال باتھ نمیلے باتھ سے بہتر ہے۔ اس کو مسلم 'الزکو قالا ' (۱۳۵۵) ۱۳۳۹ سی ابواری ' جا ارقم الی دی۔ ۱۳۵۰ سنی النہ الی ا

(یخ مسلم الزکوة ۱۹۱۱) ۱۳۳۹ می البولدی " ج۲ رقم اله یشد: ۲۲ سنن ترزی ج۳ رقم اله یشدا ۱۳۳۷ من انسال ا ج۵ کو قم اله یشد: ۲۵۳۱ سنن کبری للسائی کو قم اله یشد: ۱۳۳۷ سند احمد " چ۵ کو قم اله یشد: ۱۳۳۷ می این حبان ج۸ کر قم اله یشد: ۱۳۲۳ المسلم الکبیر کرج و قم اله یشد: ۲۰۸۰ مستف عبد الرزاق کرقم اله یشد: ۱۳۳۰ سنن کبری للیمتی ج ۱۴ می ۱۸۱۱)

دنیای محبت مطلقا نرموم سی ب

ان اطویت سے واضح ہو گیا کہ مطلقا مال دنیا نہ موم نہیں ہے۔ البتہ اگر مل دنیا کو ناجائز خواہشات کے پورا کرنے میں خرج کیا جائے تو یہ لاکن ملامت اور مستوجب عذاب ہے۔ اس سے یہ بھی خلاجر ہوگیا کہ دنیا اور دنیا کی چیزوں سے محبت کرنا اور ان سے دل لگانا بھی مطلقا ممنوع نہیں ہے۔

الم ابوعبد الرحن احد بن شعيب تبائي متوني من سعد روايت كرتے بين:

حضرت انس برجیر بیان کرتے میں رسول اللہ بیجی نے فرمایا دنیا کی چیزوں سے مور توں اور خوشبو کی محبت میرے دل میں و والی کئی ہے اور میری ہاتھوں کی فعندک نماز میں ہے۔

اسن انسانی جیسار قالدے دور ہے۔ اور میں انسانی جیسار قم الدیدہ ۱۹۳۹ سند احمد اجرائی ۱۹۹۴ ۱۹۹۴ ۱۹۹۴ انسان میں انسانی اجرائی مقعد حیات سمجے لے اجبکہ مقعود آخرے ہے اور دنیا اس کے حصول کا وسیلہ اور اس تک کرنچ کا زینہ ہے یا بغرہ دنیا کی رنگینیوں اور دل فریبر ان پی ڈوپ کر انڈ تعالی کی یاد اور اس کی عبارت مصول کا وسیلہ اور اس تک کرنچ کا زینہ ہے یا بغرہ دنیا کی دیا ہے اور اس کی عبارت کے عاقل ہو جلے انسان اسپنے لیے اسپنے مال بہا اور اسپنے الی و عمیل کے لیے درق طال کی جبتج کرتا ہے اور اسپنے دشتہ داروں اور دیگر انسانوں کے مائی جو الفت اور محبت کے مائی چیش آتا ہے اور ملک و قوم کی قائل کے لیے اور انسانیت کی داروں اور اس اند اور اس فدمت کے لیے جو دنیا جس محل مطابق اجر و قواب بلے گا اور یہ تمام کام اطاعات اور عمادت جس شائل جیں اور جس وجہ سے دنیا سے دسول میں جو شائل جیں اور جس وجہ سے دنیا

غيان القر أن

كى زمت كى كى بى كى اس بى داخل نى اي-الدود لعب كى معنى كى فخفيق

اس آیت میں فرملا ہے اور دنیا کی زندگی تو صرف ابو واحب ہے۔ اس لیے ہم ابو واحب کی تشریح کرنا چاہتے ہیں۔ علامہ حسین ہن محمد راغب اصفمانی متونی موں عد ابو کامعتی بیان کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

جس چزیمی مشغولیت کی وجہ سے انسان اپنے مقصود سے غافل ہو جائے اس کو لیو کتے ہیں۔ دنیا کی زیب و زینت مثلاً عور توں اور بچوں کو بھی اسو و لعب کما جاتا ہے " کیو تک ان بی مشغولیت کی وجہ سے انسان اپنے مقصود سے غافل ہو جاتا ہے۔

قرآن جيدش سبه:

اَلْهُ مَكُمُّ الْقَلَكَ الْرُق حَقَّى أَرْدُهُمُ الْمَقَايِرَ 0 الْهِ مِن كَلَ مِن كَالِمَ مَ الْمَقَايِرَ 0 النكائر: ٢٠١) جَرول مِن يَحْ كُدُ-

اے انھان والوا تمہارے مال اور اولادی مشئولیت حمیس اللہ کی اورے عافل نہ کروہے۔

 يَا يَهُا الَّذِينَ امْسُوا لَا تُلْهِكُمُ امْوَالْكُمُّ وَلَا آوُلَادُ كُمْ عَنْ وَكُواللُّهِ (السنافقون؛) رِحَالُ لَا تُلْهِيهِمْ نِيحَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ دِكْرِ اللّهِ وَإِفَامُ الصَّلُوةِ وَإِيْنَاءُ الرَّكُووِيَحَادُهُ يَوْمُا تَنْفَكَلُّ وَلِيَامُ الصَّلُوةِ وَإِيْنَاءُ الرَّكُووِيَحَادُونَ يَوْمُا تَنْفَكَلُّ وَيُوالْفُلُوبُ وَالْإِيمَارُ

(النور: ۲۵) جاکسگ

ان آیات میں اوالاد' مال و دوئت اور تجارت میں مشغول ہونے سے مطلقاً مع ضمیں قرمایا' ملکہ اس حد تک اشغال سے مشع فرمایا ہے میک انسان نماز اور دیگر عبادات سے غافل ہو جائے' کے تک اللہ نتعانی نے دیگر آیات میں تجارت اور مال جمع کرنے کی اجازت دی ہے:

لِيَشْهَدُّوُّامَنَافِعَلَهُمْ (الحح:٢٨)

پر حاضرہ ہوں۔ (جج کے دوران) اپنے رب کا قشل (روزی) مل ش کرنے میں تم پر کوئی کمتاہ نہیں اپنے ۔ میں تم پر کوئی کمتاہ نہیں اپنے ۔

(وہ ج کے لیے قسم کے) ماکہ استانا کرے کے مقابات

(المغروات مم ٢٥٥ مطبوعه المكتبه المرتضويه امران ١٣٤٣ ١١٠)

لَبُسَ عَلَيْكُمُ مُنَاحُ أَنْ تَبِشَعُوا فَضَلَا يَنَ رَيِّكُمُ (الْبِقِرِهِ:٨٨)

احب کامٹی میان کرتے ہوئے علامہ را فب اصلمانی لکھتے ہیں:
احب اصلی ہیں احلب ہے ' یہ افتا اس وقت استعالی کیا جا آ ہے جب مند سے احلب بہنے لگے اور جب کسی مخص کا فعل بغیر تصد کے دائعے ہو قواس کو احب کہتے ہیں۔ (المفردات ' ص ۴۵۰ مطبوعہ امران)
عدد کے دائع ہو قواس کو احب کہتے ہیں۔ (المفردات ' ص ۴۵۰ مطبوعہ امران)
علامہ ابن الاجی الجزری المنتوفی ۱۰۹ مع کھتے ہیں:

لعب کامعنی ہے ذات میں کوئی کام کرتا۔ مدے میں ہے تم میں ہے کوئی فض اپنے بھائی کاملان بطور ذات عجیدگی ہے نہ کے بیپنی وہ اس کاملان اس کو نگ کرنے کے لیے لیتا ہے اور چوری کاار اور نمیں کرتا کیکن اس کو افت پہنچانے کا بجیدگی ہے ارا دہ کرتا ہے۔ سوالیانہ کرے اور جو فخص افو اور ہے قائدہ کام کرے 'اس کو بھی احب کہتے ہیں۔ مدے میں ہے ہم سمندر میں

غِيانُ اللَّرِ إِنّ

جكدسوم

مؤكر رہے تھے 'جب موجيں جوش سے اٹھ رہى تھيں اور أيك او تك موجين امارے ساتھ لعب كرتى رہيں 'ليني موجوں نے ان كو اس طرف نمين جانے دیا جس طرف وہ جاتا جاتے تھے۔ (النہائے 'جسم ۲۵۳-۲۵۳ مطبور امران ۲۲۳-۱۵۳)

اردوش نبوولعب کا ترجمہ کمیل تملٹ کے ساتھ کیاجا آہے۔ ہم نے ابو کا جو معنی بیان کیاہے اس کا ظامر ہے نافل کرنا اور لعب کا ظامہ ہے ہے مقعد اور بے قائمہ کام کور کمیل اور تماشہ عمد اُنٹو اور ہے فائمہ ہو تاہے اور اس میں مشغول ہونے کی وجہ سے انسان مہاوات اور کی اہم کاموں سے خافل ہو جا تاہے اس لیے کمیل اور تماشے کو ابود احب کہتے ہیں۔

عمل اورورزش کے متعلق اسلام کے احکام

ہر کمیل تماثنا مطلقا منوع اور حرام نعی ہے ' بلکہ تو کمیل تماثنا کمی فیر شرق امریہ مشتل ہو 'مثلاً فیر محرم مردوں اور حورتوں کا اختلاط ہو یا اجنبی مود مورتوں کے سامنے یا اجنبی عور تیں مہدوں کے سامنے مثلاً کرکٹ کمیلیں یا ٹینس کمیلیں یا رقص کریں یا کمی کمیل جی کھیلنے والوں کامتر کھلا رہے تو ایسے کھیل ممنوع ہیں یا جس کھیل جی جانبین سے شرط لگائی جائے کہ جو فرات مجی کمیل جی بار کمیا کہ جینے والے کو اتنی رقم دے گا'یا قلال چیزدے گایا قلال چیز کھلائے گا۔

یا تھی کھیل میں اس قدر اشتال کیا جائے جس سے فراکش اور واجبات ترک ہو جا تمیں تو وہ کھیل جائز نہیں ہیں۔ اہم ابو حید از حمٰن احمد بن شعیب نبائی متوفی موسور وابت کرتے ہیں:

حضرت مقبہ بن عام رہیں ان کرتے ہیں کہ رسول اللہ عظیر نے فرالما اللہ عزوں مرف تین چزوں می ہے۔ کسی افض کا اپنے محص کا اپنے محمو اے کو مدحلا کمی محض کا جی ہوگ ہے دل محلی کرنااور کمی محض کا تیراندازی کرنا۔

(سنن النسائي عهر تم الحديث: ٣٥٨ سنن ابو داؤد عن تم الحديث: ٢٥١٣ سند احر عن ١٣١٨)

الم محدين اسامل عقاري متوفي ٢٥١ه روايت كرتي بين

حضرت ابو جریرہ روہ ہیں کرتے ہیں کہ جس وقت صفی انی ہیں کے پاس مجد میں کھیل دے تھے مصرت عمروافل موے اور انہوں نے ایک کاری افعاکر انہیں ماری۔ آپ نے فرملیا اے عمروان کو چمو ڑوو۔

(می ایلاری عسور تم الدید ۱۹۰۱۰)

الم مسلم بن قبل قشدى متونى المعدردات كريدين

حضرت عائشہ اللہ اللہ علی کرتی ہیں کہ جن نے دیکھاکہ رسول اللہ ملی جرد کے دردازے پر کھڑے ہوئے تھے اور حبثی دسول اللہ ملی دستے اس جھے اور عن جمیارے ہے اس ان کے اور حبثی دسول اللہ علی دسے کھیل دے تھے۔ آپ جھے اپنی چادر میں جمہارے تھے اس ان کے کھیل کی طرف دکھ دری تھی۔ گار آپ جمری وجہ سے کھڑے دہے اس می خوددالی مڑی۔ سوتم اندازہ کردکہ ایک کم عمر کھیل کی شوقین اڑکی نے کئنی در کھیل دیکھا ہوگا۔

(مع مسلم میدین ۱۸۱ ما ۱۸۱ ما ۱۹۹۰ م ۲۰۲۹ م ۱ مع الجاری جاری الرین ۱۵۰ السن الکبری طنسال رقم افدین ۱۷۹۱) مدین و حدیث یم ب که عید کے دن حبتی معجد میں آکر دقص کر دے تصد علامہ تودی نے الکھا ہے کہ علامہ نے اس حدیث کو اس حدیث کو اس کے ماتھ کھیل دے بتے اور ان اس پر محمول کیا ہے کہ مبتل دول کے ساتھ کھیل دے بتے اور ان کا یہ کھیل دقع کے ساتھ کھیل دیں تھیا دول کے ساتھ کھیلے کا ذکر ہے۔ اس لیے اس حدیث کی ایس کی آبول کی جاتھ گھیلے کا ذکر ہے۔ اس لیے اس حدیث کی ایس کی آبول کی جاتھ کی جو باتی احلیت کے موافق ہو۔

الم احدين طبل متوني ١٩٠١ وايت كريري

معرت على يرايي بيان كريت بين كه بس معرت جعفراور معرت ذيد رضى الله تعالى عنهم ني التي كي خدمت بس حاضر ہوئے۔ آپ نے حضرت ذید سے فرملیا تم میرے موٹی (آزاو کردہ غلام) ہو تو وہ ایک ٹاتک پر رقص کرنے لگے اور حضرت جعفر ے فرمایا تم میری صورت اور سیرت کے مثلبہ مو تووہ مطرت زید کے بیچے ایک ٹانگ پر رقص کرنے سکے پر جھے سے فرمایا تم مجدے ہواور میں تم ہے ہوں تو میں حضرت جعفر کے بیچے ایک نامک پر رقص کرنے لگ

(منداحد "ج"م ١٠٨٠ مطبوعد داو الفكو مطبح قديم مسنداحد "ج" وقم الحديث: ٨٥٠ طبع دار الحديث "قاجره ٢١٣١٥) علامہ اجر شاکرے لکھاہے کہ اس صعب کی سند سے ہے۔ (سند احد عام ص ٥٣ ملع 8 مرد)

مافتة احرين على بن جرعسقان في متوفى ١٥٥٥ وكلية بين:

یہ مدید معترت علی کی روایت سے معد احد میں ہے۔ اس طرح الباقر کی مرسل روایت میں ہے کہ معترت جعفر نی بھی کے گرو چکر لگانے لگے۔ نی چھی نے فرلمانے کیا کر رہے ہو؟ انہوں نے کمایس نے میشیوں کو دیکھا ہے وہ اپنے باد شاہوں ك سائے اس طرح كرتے ہيں اور حضرت ابن عباس كى صعت بي ب كد تجائى جب اے اسحاب بي سے كى سے فوش مو يا واس كرد كرد مرايد اكر وقع كرن لكا وعدي سعدل كالنظام-اس كاستى ما أنك الكريد ہو کر دیات مخصوصہ کے ساتھ رقص کرنااور حضرت علی کی صدیث بیں نہ کورے کہ تینوں نے اس ملمے رقص کیا۔ (ح الباري ع من عده مطبوع لا اور ١٠٠١ه)

المام محرين اما ميل عقاري حوفي ١٥٩ه ووايت كرت ين

حضرت عائشہ رمنی اللہ عنما بیان کرتی ہیں کہ انہوں نے ایک مورت کو ایک انسار کے موست زفاف (شادی) کے لیے تاركيا- بي ما ي المار نه فرمايا ال عائشة كياتهارك إلى كوني لو (كليل) ب؟ كونك انسار كولواجما لكتاب-(مح البحاري "ج٢ وقم الحديث: ١٢١٥ مطبوعه جروت)

الم احرين شعيب نسائل متوفى موسور روايت كرت ين:

عامر بن سعد میان کرتے ہیں کہ میں معنوت قو ظار بن کعب اور معنوت ابو مسعود افساری رمنی اللہ عنما کے ساتھ آیک شادی میں کیا۔ دہاں بچیاں کاری تھیں۔ میں لے کما آپ دولوں رسول اللہ طاق کے بدری محلل میں اور آپ کے سامنے یہ ہو ربا ہے۔ انہوں کے کما اگر تم چاہو تو امارے ساتھ بیند کر گانا سنو اور چاہو تو سلے جاؤ اجسی شادی کے موقع پر امو کی اجازت دی گئ ے-(سنن النسائل" علا وقع العدائد مهم العداد المعلود وار بلعرف "بيروت" الا العد)

الما الدين خيل متونى ١٩١١ه روايت كرت إلى:

اولب كى بني كے خلوند ميان كرتے ميں كر جب ابولب كى بني كى شادى موكى تو صادے ياس رسول الله مائين تشريف لائے اور قرمایا کیا کوئی اسو (کمیل) ہے؟

BHE12'57' WM7)

علامداحد شاكرنے لكھا ہے كداس مديث كى سند مج باور بلامداين جرنے التعمل ميں اس كى تسويب كى ہے۔ (منداح الي عامل ١٦ مطوع كا برد ١١١ماند)

نی جھے نے محورے سواری کامقابلہ کرایا میدل دوڑ کامقابلہ کرایا آپ نے خودبہ نئس نئیس دوڑ کے مقابلہ علی حصہ

لیا ای طرح آپ نے رکانہ سے کشتی بھی کی۔ ان تمام مدیثوں کو ہم نے محاح اور سنن کے حوالہ سے (شرح می مسلم ،ج ۱۰) می اس بید بیس بیان کیا ہے۔

ظامدیہ ہے کہ ابود لعب مطلقاً ممنوع نہیں ہے اور جب کوئی کھیل کمی فیر شرعی امریر جنی نہ ہو' نہ اس بی شرط لگالی جائے' نہ اس سے کوئی عماوت ضائع ہو تو غرض سمجے سے مناسب مدیک اس کا کھیانا جائز ہے اور جب کمی کھیل میں زیادہ دلچی لینے کی دجہ سے انسان مماوات سے عافل ہو جائے' تو وہ ممنوع اور ندموم ہے۔

انسان کی صحت اور جم کو چاتی و چوبری رکھنے کے لیے متاب مد بھی کھیل اور ور زش متحن ہیں۔ بعض اوگ کری بہ بینو کردن رات پڑھنے لکنے کاکام کرتے ہیں ان کو اپنے کام کی وجہ سے زیاوہ چلنے پھرنے اور جسمانی مشاہت کاموقع نہیں ملائا جس سے ان کی توزید کال آئی ہے اور خون میں کلمٹرول کی مقدار زیادہ ہو جاتی ہے اور سے لوگ ذیا بیلی بائی بلڈ پریشر ول کی بیار ہوں مثل انجا کا معدہ کا ضعف کیس اور المر و غیرہ کاشکار ہو جاتے ہیں۔ ان بیار ہوں سے محفوظ رہنے یا بیار کی اور المر و غیرہ کاشکار ہو جاتے ہیں۔ ان بیار ہوں سے محفوظ رہنے یا بیار کی اور المر و غیرہ کاشکار ہو جاتے ہیں۔ ان بیار ہوں سے محفوظ رہنے یا بیار کی اور المر و غیرہ کاشکار ہو جاتے ہیں۔ ان بیار ہوں سے محفوظ رہنے یا بیار کی اور من خوری ہے اس کا مقابلہ کرنے کے لیات ضرور کی ہے اس سے پہلے باتو اللہ بیان کر بھے ہیں کہ اعلیٰ حضرت آیام احمد موم اس مدے موا

الله تعلق كاارشادى، (اے رسول كرم) ہم يتينا جائے ہيں كہ يہ لوگ جو بائيں يلتے ہيں ان ہے آپ شمكين ہوتے ہيں وراصل يہ آپ كى تكذيب نميس كرتے يہ خالم تواللہ كى آيوں كاانكار كرتے ہيں۔(الانعام: ٣٣) شمان نزول اور مناسب

الم ابن جري الى سو ك ما الدوايت كرت إلى:

تابیہ بن کعب بیان کرتے ہیں کہ ابر جمل نے نی جہے ہے کماکہ ہم آپ کی تکذیب نمیں کرتے اکین آپ ہو چرنے کر آئے ہیں ہم اس کی محذیب کرتے ہیں۔

(جامع البیان عمر ۱۳۰ مطبوعه دار الفکو میروت ۱۳۱۵ او ۱۳۱۵ او ۱۳۱۵) معرف ۱۳۱۵ او ۱۳۱۵ او ۱۳۱۸ او ۱۳ او ۱۳

اس سے پہلی آینوں میں کفار کارد کیاجارہا تھا اور اس آیت میں بھی ان کارد ہے۔ پہلے ان کفار قریش کارد کیاجو توحید ' نیوت اور قیامت کا انکار کرتے تھے۔ پھران کافروں کارد کیاجو سیدنا محمد جھید کی رسامت کاس لیے انکار کرتے تھے کہ آپ بشرتے اور فرشته ند تحصه تب الله تعالی نے فرایا تھاکہ اگر ہم فرشتہ کو رسول بناتے میں ہم ہی ہم ہی کو افسان کی صورت میں ہی ہیں ہوئے اور تم پر پھرا اختصاد ہو جا آبادر اس آیت میں ان کافروں کارد فرایا ہے جو نمی پڑھیے کو اپنی باتوں سے ایڈاء پہنچاتے تھے۔ بعض آپ کو جمونا کہتے تھے۔ بعض آپ کو جادو کر کہتے تھے اور بعض شاعر یا کابن یا مجنون کہتے تھے۔ نمی چھیے کی تسلی کی آبات

اس آیت میں اللہ تعالی نے بی مرجوز کو کفار کی تکذیب اور ان کی دو سری دل آزار باتوں کی دجہ سے تملی دی ہے۔ چہانچہ فرمایا ہم بیقیناً جائے میں کہ یہ لوگ جو باتیں بناتے ہیں' ان سے آپ ممکین ہوتے ہیں۔ در اصل یہ آپ کی محذیب نہیں کرتے' یہ ظالم تو اللہ کی آجوں کا انکار کرتے ہیں۔ قرآن مجید کی اور کئی آجوں میں مجی نبی برجوز کو اللہ تعالی ہے اس طرح تملی دی ہے:

اگر وہ اس قرآن پر ایمان تمیں لائے قر کسی فرط نم ہے۔ آپ ان کے دیکھے جان دے دیں گے۔ ان بر حرق ل کی وجہ سے آپ کی جان نہ جلی جائے۔

فَلَمَلَكُ بَا عِنْ مُسَكَ عَلَى أَنَّارِهِمُ إِنَّ لَمُ بُوْمِسُوْا بِهِدَ النِّحَدِيثِ آسَفُ اللَّهِ هِنَا) فَلَا تَذُهَبُ نَفُسُكُ عَلَيْهِمُ خَسَرَاتٍ وَلَا تَذُهَبُ نَفُسُكُ عَلَيْهِمُ خَسَرَاتٍ

کافردل کی ہاؤں پر مبریجے اور ان کو خوش اسلونی سے چھو ڑ دیجے اور ان جملانے والے مالداروں کو جمع پر چھو ڑ دیجے اور ان کو تھو ڑی میں مسلست دیجے۔

وَاصِّبِرُ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَاهْتُعُرِهُمْ هَمَّرًا مَيمَّهُ لُان وَذَرْبِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ وَكَ مَةِلْهُمُ مُؤِلِبُلًا (المرمل: ١٠٠١)

الله تعالی کاار شاد ہے: آپ سے پہلے بھی کتے ہی عقیم رسولوں کی محقیب کی گئی سوانموں نے اس محقیب اور آیڈا رسانی پر مبرکیا محق کہ ان کے پاس اماری مدد آئی اور اللہ کی یاؤں کو بدلنے والا کوئی نئیں ہے اور بے شک آپ کے پاس رسولوں کی خبرس آن کی جس-(الانعام: ۱۳۲۷)

اس آبت میں ٹی پڑتا کو دوبارہ تسلی دی گئی ہے اور یہ فرملیا ہے کہ مخافوں اور کافروں کی ایزا ر سانیوں پر مبر کرنا انہیاء سابقین علیم السلام کا فریقہ ہے اور ٹی کو جاہیے کہ ان کی ہے ہوں باتوں سے اعراض کرے اور ان کی اذبیوں پر مبر کرے قرآن مجید میں اللہ تعالی ار ٹراو فرما تاہے:

فَاصِيدُ كُمَاصَبَرَ أُولُوا الْعَرْمُ مِنَ الرِّسُلِ مِن الْمِسُلِ مِن اللهِ مِن اللهِ و مولول في مركا (الاحقاف: ۴۵) قاء

اس فتم کی آیات سے نی میں کے بار بار تسلی دینے اور مبرکی تلقین کرنے کی حکمت بدہے کہ مبر کرنے ہے مصائب کو برداشت کرنا آسان ہو جاتا ہے اور مبرکے اندر رحمت کے نزدل اور کشادگی کے حصول کی بشارت ہے:

فَيَانَّ مَعَ الْعُسْيِرِ يُسْتُرا الْأَوْ مَعَ الْعُسْيِرِ يُسْتُرا الْمُسْيِرِ يُسْتُرا اللهُ عَلَى عَلَى عَل (الانشراح: ١٠٥) ماقة آمانى -

اس کے بعد اللہ تعالی نے فرایا اور بے شک آپ کے ہاں رسولوں کی فیری آ چکی ہیں ایعنی ہم آپ سے بیان کر چکے ہیں کہ افہاء سابقین کولوگوں نے جمٹایا اور انہوں نے این کے جمٹانے پر مبرکیا اور بالا فر رسولوں کے ہی اللہ کی رو آ پہنی۔

رانگا کہ سور و در و در و کی اور ایمان والوں کا دیا ہے۔

رانگا کہ سور و مرد و کر ایمان والوں کی دنیا کی اللہ سور و مدد فرائی کے اور (آ فر مدی میں) جس ون والد کر سیاوی کو دو اور کا فر مدد میں) جس ون

جلدسوم

خِيانَ القر أَنْ

كواه كمزے يوں كے۔

ہم اپنے ان (مقرب) باروں سے جو رسول ہیں یہ پہلے کمہ المرسوليس والهم لهم المسعمورون وراق على المجيناوي مديد المجيناوي تظير إلى والا ب-

وَ لَقَدُ سَبَقَتُ كَلِمَنُمَّا لِعِبَادِنَا مُعَلَّدُ ثَالَهُمُ الْعَلِيثُونَ (الصنفت: ACI-1CP)

اورجو بات الله يمل فراجكات اس كاكوئى برائ والانس ب-

الله تعالى كاارشاوي: اور اكر ان اوكول كى بالمتائى آپ روشوار ب تواكر آپ زين يس كوكى سركك يا آسان يس كوئى بيرهى اللاش كريكة بين " ك ان كياس (ان كامطاوب) مجرد في الني (ق في النيرا) اور أكر الله عامناة ان سب كو مراعت رجع كرديا (قوام كالمسيمة) قو جركز ناو الوب يس عدد مو جانا والانعام ١٣٥٠) شان نزول

بعض آثار میں ہے کہ مارث بن عامر بن نو قل بن عبد مناف قرائش کی آیک جماعت کے ماتھ رسول اللہ بہور کیاس كيادر كماات محمة (صلى الله عليك وسلم) الماركياس الله كياس كوكى نطافى التي جيساك انبياء مايقين عليم السلام نشانيان لاتے تھے۔ پر ہم آپ کی تقدیق کریں مے اللہ تعالی نے ان کی مطلوب نشانیاں مطافرانے سے انکار فرایا۔ تو انہوں نے نی ولي سے مند پيرليانني ولين يران كا واض كرنابت وشوار بوالكونك آپ ولي افي قوم كے ايمان لاتے يربت ويص تھے'اور وہ جب بھی ممی نشانی کا مطالبہ کرتے تو ان کے ایمان لانے کی طبع میں آپ کی بید شدید خواہش ہوتی کہ وہ نشانی (مجزه) نازل كردى جلسة اس موقع رية ايت نازل مولى-(روح المعلل بزع اس مع معام مطبوع داراحياء الراث العلى يردت)

زمین میں سرتک بنائے اور آسان پر سیڑھی لگانے کے معالی اور توجیهات

اس آیت کا معنی یہ ہے کہ اگر آپ کو ان لوگوں کا کفریمت وشوار معلوم ہو آہے اور ان کی محکویہ بہت کران محسوس ہوتی ہے اور اس سے آپ کو بہت رہے پنچاہے تواکر آپ ذین می مرتک بناکراس می داخل ہو لے پر قادر ہوں یا بیڑھی لگاکر آسان پر چ منے پر قادر موں تو آپ اساکرلیں اور اگر آپ اس پر قادر نسی ہیں او پھر آپ پر ادام ہے کہ آپ ان کے خلاف فم خدر کو برداشت کریں اور اللہ تعافی نے اپنی توحید اور آپ کی نبوت اور دین اسلام کی تفاتیت پرجو دالا کل قائم کیے ہیں 'صرف ان ے استدلال کریں اور جن لوگوں میں فور و فکر کرنے کی البیت ہے ان کو اس کی طرف متوجہ کریں اور جو اپنی مقل ہے کام لینے كى بجلت بد وحرى ير قائم رست ين ان كى برواه ند كري-

اس آیت کادد مراسمی یہ کیا گیا ہے کہ اگر آپ کے خیال میں ان کے ایمان المست کے لیے آپ کا زمین میں سرتک بناکر علے جاتا یا آسان پر سیڑھی لگا کر چلے جاتا کافی ہے تو آپ ایسا کرلیں اور اس کا تیسرا معنی یہ ہے کہ اگر آپ کویہ خیال ہے کہ اگر آپ ذہن میں سرتک بناکر چلے جائیں یا آسان پر سیڑھی کے ذریعہ چڑھ کران کامطلوبہ مجزد لا سکیں تو آپ ایساکرلیں 'اور اس کی

آئد ان آنوں عول ہے

وَقَالُوالِنُ تُوثِينَ لَكَ حَنَّى نَفْهُمُ لِلَّالِينَ الأرص يَسْبُوعُ الكَاوِيَكُونَ لَكَ حَسَّةٌ مِّنْ سَحِيْل وَعِبَ فَنُمُ مُونِر الْأَنَّهُ وَعِلْلَهَا تَفْرِهُ مِرَّالُهُا لَفُرِهُ مِرَّالًا أَوْ تُسْفِطُ السَّمَّاءُ كَمَارَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا

اور کافروں نے کہاہم جرگز آپ پر ایمان نیس الا کی کے حیٰ کہ آپ مادے کی ذھن سے کوئی چشمہ جاری بر دیں یا آپ کے لئے مجوروں اور انگوروں کا کوئی باغ ہو' پھر آپ اس بن بنتے ہوئے دریا جاری کردیں ایا جیساکہ آپ نے کما

اَوْ تَانِيَ بِاللّٰهِ وَالْسَلَا يُكَة قَبِيلُانَ اَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتُ قِنْ رُحُرُو الْسَلَا يُكَة قِيلانَا السَّسَاءَ وَلَنَّ تُوْمِيلَ لِرُفِيرِكَ حَتْى تُسِرِلَ عَلَيْسَا كِنْبُا أَنْفُرَا وَلَنَّ فُلُ سُبُحَانَ رَبِّى هَلْ كُنْتُ الْآلِاسَسُرًا وَسُولُانَ (بنواسرائيل: ۱۹۰۹)

آپ ہم ہے آسان کو کوے کوے کرکے گرادی ایا آپ اللہ اور فرشتوں کو ہمارے منے بے تجاب لے آکم اس آپ کا سونے کا کھر ہویا آپ آسان پر چھ جا کیں اور ہم آپ کے آسان پر چھ جا کیں اور ہم آپ کے آسان پر چھ جا کیں اور ہم آپ کے آس کا میں کے جی ہر گزامان نمیں لا کیں گے جی کہ آپ ہم پر ایک کا پال کے ایک میں اور اللہ کا رسول دب یاک ہے کی مرف ایک ہر اوں اور اللہ کا رسول

-4.75

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيعَدِّيهُم وَآتَ فِيهِمْ

(الانسال: ۲۳) آپانش دوري-

معجزہ نی کے اختیار میں ہے یا نہیں؟

اس آیت ہے معلوم ہو گاہ کہ اللہ کے مقابلہ میں کی نشان اور مجزہ کو ظاہر کرنائی ہیں ہے۔ افتیار میں تمیں ہے۔
اللہ تعالیٰ چاہ تو وہ کمی نشانی اور مجزہ کو ظاہر فرادیا ہے اور اگر اللہ تعالیٰ نہ چاہ تو ہی جیرہ اپنی کو شش ہے کمی مجزہ کو ظاہر نہیں کر سے اور سے بالکل پر بی ہے۔ اللہ تعالیٰ نے ہی جیرہ کو قدرت دی ہے اور افتیار عظا فربلا ہے کی اس قدرت اور افتیار کا یہ معنی نہیں ہے کہ آپ اللہ میں نہیں ہے کہ آپ اللہ میں نہ یہ کہ آپ اللہ تعالیٰ کے مقابلہ میں قاور و مخار میں جی کہ جس کام کو افتہ نہ کرنا چاہے آپ اس کو کر کے ہیں۔ اس سلسلہ میں نہ یہ کہنا مطلقا درست ہے کہ کوئی مجزہ نمی بی افتیار میں نہیں ہے اور نہ یہ کہنا درست ہے کہ تمام مجزوات نمی بی ہی ہی ہیں۔ قرآن مجد نمی ہیں۔ اس محال اللہ میں ہیں۔ اس محال فرانا ہے۔ اس طرح فیس کی فرس دیا آپ کا مجروب کی محل میں ہو سے افتیار میں ہو سے افتیار میں ہو سے اللہ تعالیٰ نہیں ہو سے اللہ تعالیٰ آپ کو فیس پر مطلع فرانا ہے تو آپ فیس کی فیس کی فیرس دیا آپ کا مجروب نمی ہوئی ہو گئی اللہ اللہ میں دیا تو سے معالیٰ ہو آپ کے افتیار میں افسان فیرے دیا تی طرح نمی انسانوں سے معالیٰ میں افسان فیر میں ہو ہے اس انسانوں کے افتیار میں افسان علیہ دوستے ہیں اس طرح نمی کے افتیار میں افسان فیر میں ہوئے ہوئے ہیں اس طرح نمی کے افتیار میں افسان فیر میں ہوئے ہیں۔ اس طرح نمی کی افتیار میں افسان فیر

علوب (مجرات) ہوتے ہیں۔(طح الباری جو میں عدام طبع البور الدیاء العلوم جے اس موں طبع بیروت)

ہاتھ و کھاتو آپ کی الکیوں سے فوارے کی طرح پانی جاری ہو کیا۔ (مع البواری جا او تم الحریث: ١٩١١) معرک بدر ش جب جنگ کی شدت ہوئی تورسول اللہ علی نے کاروں کی ایک مشی ہو کر کنار کی طرف پیکی اور تمن مرتب شاهدت الوجوه فرمایا۔اللہ كى تدرت سے كاريوں كے دينے ہر كافر كى آ كھ من بنج اور وہ سب آ كھيس منے لئے۔ (دوح المعانی جو من ١٨٥) حفرت موی علیہ السلام نے ملک الموت کے ایک تمیٹر مار الور ان کی آگد نکل گی (میج البواری ج ۴ رقم ۱۳۳۹)

نی میں نے ایک مخص کے متعلق فرایا ابو فیشر ہو جاوہ مخص جو کوئی بھی تھا وہ ابو فیشر ہو کیا۔ اسمح مسلم التوب اسما (٢٨١١) ١٨٨٣) اس متم ك معرات سه يه ظاهر مو آب كه الله تعالى في المعرات كوني المعربي ك تدرت اور اعتيار من د

وباتحل

جرام ایت نه وینے کی حکمت الله تعالى في قرمايا ب:

اور أكر الله چاہتا تو ان سب كو ہدايت ير جمع كرونتا يعني أكر الله مقالي ان كو جرا مومن بنانا چاہتا تو ان مب كو مومن بناويتا' لکین میداللہ تعالی کی حکمت کے اور اس کے طریقہ کے خلاف ہے۔اللہ تعالی کا طریقہ یہ ہے کہ اس نے دنیا میں خیراور شردونوں چیزوں کو پیدا کردیا ہے اور شرکی تر خیب کے لیے شیطان کو پیدا کیااور خیر کی تحریص کے لیے انہاء علیم اسلام کو پیدا کیااور انسان کے اندر بھی خیراور شرکے دو محرک پیدا کیے۔ پھرانسان کو مقتل سلیم عطاکی اب دہ خارتی اور داخلی محریکات میں ہے جس ہے مجی مناثر ہو کرجو راستہ بھی اختیار کر آہے و خراور شری ہے جس راور چلنے کافیعلہ کر آ ہے اللہ تعالی اس میں وی قعل پیدا کر رجا ہے۔ اللہ تعالی از خود اس پر کوئی راستہ مسلط نمیں کر تا اور جو تکہ خیریا شربندہ میں اس کے افتیار میں پیدا کی جاتی ہے' اس لے اس اختیار کی دجہ ہے اس کو جزاویا سزادی جاتی ہے۔

اس آیت یس نی مالی کور بنایا کیا ہے کہ کفار کمہ کو ہدایت پر لانے کے لیے تمام ولا کل کھول کھول کر بیان کیے جانچکے ہیں اور بہت ہے مجرات اور نائیل وی جا چکی ہیں۔ اس کے پاوجود وہ اپنی کرای پر ڈٹے ہوئے ہیں۔ اب ان کو ہدایت پر دانے کی مرف یکی صورت رو گئی ہے کہ اللہ تعلق این میں جرا بداعت پردا کروے الیکن یہ اللہ عزوجل کا طریقہ نمیں ہے کیونکہ اگر ایسا کرنا ہو آنو اللہ تعالی از خود تمام انسانوں کو ہرایت یافتہ بنا دینا۔ پھر کمی نی اور رسول کو سینجے کی ضرورت ہوتی نہ کماب اور محالف نازل كرسن كاورند مجرات اور نشائيال بيش كرسنى مادست موتى اور دشد وجدايت كايد محمت يرعى نظام اور مربوط سلسله عبث اور ہے کار ہو جا لک

الله تعلق كاارشاد ب: (وعوت اسلام كو) مرف وي لوك قبول كرتے بيں جو توجہ ہے بنتے بيں اور مرده دلوں كو الله اتمائے گا مجروہ ای کی طرف لوٹائے جائیں گے۔(الانعام: ١٣٩)

کفار کو مردہ فرمائے کی توجیہ

جولوگ آپ کی وجوت اور تملغ سے مند موڑ رہے ہیں اور اللہ کی توحید اور آپ کی نبوت پر ایمان نمیں الارہے 'ان کے اليكن ند لانے اور اعراض كرنے سے آپ دل برداشتہ اور مغموم نہ وول كو كلد آپ كے بينام كو وى نوگ ہوجہ سے سنل كے جن کے کانوں کو اللہ عزوجل نے خورے منے کے کے کھول دیا ہے اور ان کے لیے آپ کی انتاع کو آسان کردیا ہے اور وہ اوگ

آپ کے پیغام کو توجہ سے منیں سنیں گئے جن کے کفر کی وجہ ہے اللہ نے ان کے کانوں پر مرزگادی ہے۔ سوجب آپ انسی اللہ تعالی کے دین کی طرف بلا کیں مے توان پر کوئی اثر نہیں ہوگا جس طرح مولٹی اپنے چرواہوں کی آوازوں کو سنتے ہیں اور ان کے منہوم کو نسیں مجھتے مو می ان کا مال ہے جیسا کہ قرآن مجید میں اللہ تعظیٰ تے فرمایا ہے:

اور جن او کوں لے کفر کیاان کی مثال اس طرح ہے کہ کوئی بِمَا لَا يَسْمُعُ إِلَّا دُعَا أَهُ وَسِدًا أَوْ صُمْ الْكُو عُدَى فَعَلَ الْكِ وَإِلَاكِ وَإِلَّا كَ موا يكون في ابرك كوتي الذهبين اليود وكوشين عظمة

وَمَنْلُ الَّذِينَ كَفُرُوا كَمَنْلِ الَّذِي بَنْمِي فَهُمُ لَا يَعُقِلُونَ (البقره شا)

اس آیت میں اللہ تعالی نے کفار کو موتی (مرده) فرلما ہے " کو تکہ جس طرح مردے کوئی آداز سفتے ہیں نہ کسی پکار کامعنی سکھتے ہیں'ای طرح یہ لوگ اللہ تعالی کی توحید کے دلائل میں خور و فکر نہیں کرتے اور نہ اس کی نشاتیوں سے عبرت اور نصیحت حاصل كرتے بين الله رسول الله عليور كى محذيب اور مخالفت سے باز آجا كي- قرآن مجيد كى اور آيوں يس بھى ان كو مرده

ے لک آپ مردول کو قبیں ساتے اور نہ بسروں کو ساتے ين اجب وه پينه ميم كرجار بيد عول اور ند آب اند هول كوان کی گرائ سے راہ راشت پر لائے والے میں ' آپ مرف ان ی کو ساتے ہیں جو ہماری آیات پر ایمان لانے والے ہیں ' سو دى سلمان يى۔ التك لاتسيع المتوثى ولاتسيع الضم الدُّعَاءُ إِذَا وَلَوْا مُدْيِرِينَ ٥ وَمَا أَمُكَ يِهٰدِي الْعُنْسِي عَنْ ضَلْكَيْهِمُ إِنْ تُسْسِمُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بْايْنِينَا قَهُمْ مُنْسَلِمُونَ ٥ (السمال:٨٠٠٨)

ب شک اللہ ساتا ہے نے چاہے اور آپ قبرواوں کو ستائے والے شعیں ہیں۔ إِنَّ اللَّهُ يُسْمِعُ مَنْ يَشَاءُ وَمَا أَنْتُ بِمُسْمِعِ مَّنُ مِي الْغُبُرُورِ ١٧٤ فاطر: ٢٢).

ان كافروں كى المحميل حميں حين ان كو اندها فرمايا ان كے كان تھے جربھى ان كو بسره فرمايا اور ان كى زبان تقى اس كے بادجودان کو کونگا فرمایا اور بد زعرہ تھے ' پر بھی من کو مردہ فرمایا۔ کیو تکد اللہ کے نزدیک آ تکمیس اس کی بیں جو محبت سے آپ کا جارہ دیکھے کان اس کے ہیں جو مقیدت ہے آپ کی باتھ سے "زبان اس کی ہے جو آپ کا کلمہ بڑھے اور زند دوہ ہے جو آپ کی فلامی ين زنده رہے۔جو آپ کی محبت سے جماد میں مارا جائے 'جو آپ کی خاطر سر کٹائے تو اللہ کے نزدیک وہ مردہ نمیں ہے 'جو آپ کی غلای میں رہے وہ زمین کے اوپر او میں تیر بھی زندہ ہے اور زمین کے لیچے ہو پھر بھی زندہ ہے اور جو آپ سے مخرف ہو اور آپ کا منز ہو وہ ذیان کے اور ہو ' پار می مردہ ہے اور زیان کے نے ہو پار بھی مردہ ہے۔

الله تعالی کاارشادے: اور انہوں نے کمااس (رسول) پر اس کے دب کی طرف ہے کوئی (مطلوبہ) معجزہ کیوں نہیں نازل کیا گیا "آپ کئے کہ اللہ اس پر قادر ہے کہ (ان کامطلوب) معجزہ نازل کردے "لیکن ان کے آکٹر لوگ جس جانے

(الانعام:24)

کفار کی مطلوبہ نشانیاں نازل ند کرنے کا سبب

یہ آست مناویر قراش کے متعلق نازل موئی ہے جو محاولور سرکشی کی بنایر تی بھیرے سے سمی مجزواور نشانی کاسوال کرتے تھے۔ورنہ اس سے پہلے بہت می نشانیاں اور مجزے ویے جا چکے تھے جو کمی منصف مزاج فض کے ایمان لانے کے لیے کانی تنے اورجن نشانیوں کا یہ سوال کر دہے تنے اللہ تعالی ان کے نازل کرنے پر بھی تاور تھا 'جیساک اس سے پہلے اللہ تعالی متعدد نشانیاں

طبيان القران

ان فرایکا تھا مثلا ان کے مطالبہ یہ چار کوش کیا گیا تھی ہے اس کے باد جود ایمان نیس اے اندا ان کے مطالبہ کے موافق نشانیاں بازل کرنے سے بھی کوئی فائمہ نیس ہوا کہو تکہ ہرفتائی بازل ہوئے کے بعد ہے کہ دستے ہیں کہ یہ کھلا ہوا جاد ہے۔ مو داشتے ہوا کہ یہ محض مطاور ہے دھری ہے نشانیوں کو طلب کرتے ہوئے گار ان کے آکھ کوگ یہ نہیں جائے کہ آکر ان کے اجتماع مطالبہ کے موافق کوئی نشانی بازل کردی جائے تو در ہے ہی ایمان نہ اور یہ تو ان کے موافق کوئی نشانی بازل کردی جائے تو در ہے ہی ایمان نہ اور تی ہے ورد الله توانی ان کامطالبہ ہو داکرتے ہے جائیں ہے کو ان کے مطالبہ ہو داکرتے ہے جائیں ہے۔ ورد الله توانی ان کامطالبہ ہو داکرتے ہے جائی میں ہے۔

وَمَامِنَ دَ الْبَاقِي فِي الْرَهُ مِن وَلَاطَيْرِ يَطِيرُ بِجَنَا حَيْهِ إِلَّا أُمَّ اللَّهُ أُمَّ

الدزمين يمن جنت والا مبر جوال الد انتشاص ؛ است بازوول سنت الرست والامبرير عمه تماري على مثوق

امْتَالْكُوْ مُمَا فَرَطْنَا فِي الْكِتْبِ مِنْ شَيْءٍ ثُوِّ إلى مَ يِبِهِمُ

ہے : ہم نے کاب (فرق کوؤ) می کی پیز کو تین جوزا ، پیروه است رب ی طرت ، س

يُحْشَى وْنَ®وَالْنِينَ كَنْ بُوابِالْتِنَاصُةُ وَبُكُمُ فِي الظُّلُلِيِّ

کے جایں کے 0 اور بی وال سے بلی آجرا کی تخذیب کی دوہ) برسے ادر کہتے یں ، انھوں می البطاعی :

مَنْ يَشَاِ اللهُ يُضْلِلْهُ وَمَنْ يَشَا أَيْجَعَلْهُ عَلَى مِرَاطِ مُسَتَقِيمٍ ٣

ال الشريع ياست كراه كر وست الديم ياست يدى ماه ير كاون كر دس 0

قُلُ الْوَيْتُكُمُ إِنَّ الْمُكُوعَنَ الْبَالِمُ الْمُ الْوَ أَتَتَكُمُ السَّاعَةُ اعْدِرَ

کہا ہے یہ بتاؤ اگر تمباعث ہاں انٹرکا مناب آسے کا تم پر تیامت آ جاسے ۔ کیا داس وقت اللہ

اللهِ تَنْ عُوْنَ إِنْ كُنْتُمُ صِيرِ قِينَ @بَلُ ايَّاهُ تَنْ عُوْنَ

ك الكي الاكر (مدك يف) بالدوك، (بناؤن) الرقم بي يدو و بكرتم الى كر باردك . بى اكر ده

فَيُكْشِفُ مَا تُنْ عُوْنَ إِلَيْهِ إِنْ شَاءَ وَتَنْسُونَ مَا تُشْرِكُونَ ®

(الاتعام:٣٨)

عيان اللر أن

آیات سابقدے مناسبت اور وجد ارتباط

اس سے پہلی آبت میں اللہ تعالی نے بیا تھا کہ اگر کھار کے فرمائشی اور مطلوبہ مجوات کے نازل کرنے میں کوئی فائدہ ہو گاؤ اللہ مجوات کو نازل فرما دیا اور اس کی آ کید اس آبت میں فرمائی کہ ذعین میں چلنے والا ہر حیوان اوز فضا میں اڑتے والا ہر یونان مجوات کو نازل فرما دیا ہو کہ اللہ میں اس ملرح آت کی جس اس ملرح آت کے جس اس ملرح تم پر بھی احداث کے جس اس ملاب مطلوبہ مجوات کو تم پر نازل نہ کریا بھی اعاراتم پر احدان ہے اور تم فرمانی خات کے جس اور تم اور تم اور کارتم ایمان نہ ادا تم و تم پر بازل نہ کریا بھی اعاراتم پر احدان ہے کہ کہ اگر تمدادی فرمائی خات کے جس اور تم اور کارتم ایمان نہ ادا تم و تم پر ایسان نہ اور تم پر بھی احداث کری جاتیں اور کارتم ایمان نہ ادا تم تو تم پر ایسان نہ ان کی جاتم ہو تا ہم سے تم کی تاری کردی جاتم اور کارتم ایمان نہ ادا تے تو تم پر ایسان نہ اور کی جاتم اور کارو دو جائے۔

دو سری وجہ میہ ہے کہ اس سے پہلی آیت میں فرملیا تھاکہ کافروں کو اللہ کی طرف لوٹلیا جائے گااور دواس کے حضور جمع کے جائیں گے۔اس آیت میں فرملیا ہے کہ حیوانات اور پر ندے بھی تساری مٹن ہیں پیچنی ان کو بھی اللہ کے حضور جمع کیا جائے گا۔ جانو روں کے حساب اور قصاص کے متعلق احادیث

الم ابر بعلی نے اس مدے کو حضرت ابو سعید خدری بریش سے روایت کیاہے اور اس کی شد حس ہے۔

استدایو بعلی مج ۴ تر قم الدیث: ۱۳۰۰ میر امیر اجر ۴ م ۱۳۰۰ می ۱۹ می ۱۹ می ۱۹ می ۱۹ می ۱۹ می ۱۹ میل ۱۹ میل ۱۳ می معرت ابو جربره روین میان کرتے بیل که وسول الله منظیر بیشے بوتے تھے اور دو بکریاں کھاس چر ری تھیں۔ ایک بحری

سے دو سری بکری کو سیکھ مار کراس کا حمل ساتھ کردیا' تو رسول اللہ بڑھے جنے کے آپ سے عرض کیا گیا' یار سول اللہ اآپ کو

من جن نے بسلا؟ آپ نے فرملا بھے اس بحری پر تعجب ہوا۔ اس ذات کی حم جس کے بعنہ و قدرت میں میری مان ہے اس

مکری سے قیامت کے دن تعمامی لیا جائے گا۔ (مند اس اس اس مند البرار اج مور آم الحدے: ۱۳۵۰)

الم احدى سند مح ب- (جمع الروائد عواص ١٠٥٠)

حضرت ملكن بوالله بيان كرت بي كر رسول الله بيجيد فرمايا قيامت كرون سينكر والى مكرى سد يغير سينكرى بكرى كا قصاص لياجائ كاسند البرار "جس" وقم الحريث: ١٠٣٣٩ بجمع الزوائد"ج ١٠٠٠ م ١٠٠٠)

معرت ابو ہررہ ویٹر بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ جھیج نے فرمایا قیامت کے ون بعض محلوق کا بعض سے حساب ایا جائے گا حق کہ بغیر سینکروالی بحری کاسینکروالی بحری سے اور حتی کہ جو نئی کا چیو نئی سے۔

(سندامد عامل ۳۹۳ المام احرى شد مي ب الجع الزوائد ع ١٠٠٠ م ١٥٠)

صفرت توبان برہنے بیان کرتے ہیں کہ نی جہیر نے فرمایا قیامت کے دن جہار تبارک و تعالی متوجہ ہوگا اور بل صراط پر اپنا پیرر کھ دے گا جم فرمائے گا بھے اپنی عرت و جلال کی هم اکوئی فائم علم کرتے جمدے ہماک نہیں سکتا ہم وہ بعض محلوق کا بھی محلوق کا بعض کا بعض

المعجم الكيم " ن" وقم الله عند الالا " الل مدعث كى مند ش أيك واوى يزيد عن وبهد ضعيف ب اود ياتى نقد بيل- جمع الزوائد " " مد مدد ال

5+'9 (ror)

حیوانوں اور پر ندوں کی انسانوں ہے مما نگست کی وجوہ

اس آیت میں یہ بتایا ہے کہ ہر حیوان اور ہرر ندہ تماری مثل محلوق ہے۔ یہ تمثیل اور تشبید کس چرمی ہے؟اس کی مغمرين في حسب ول وجوبات بيان كي ين.

1- چوانوں اور پر عدوں کو بھی اللہ کی معرفت ہے "وہ اس کی وصدانیت کا ذکر کرتے ہیں اور اس کی حمد اور تشیع کرتے ہیں۔

قرآن مجيد ميں ہے:

تُسَيِّعُ لَهُ السَّمُ وَاتُ السَّبِعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ مات آمان 'اور زمنیں اور جو پکھ ان جس ہے 'وواس کی سَّ وَالْ يِّسُّ شَنْيُ إِلَّا يُسَيِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَيكُنْ لَا هُورٌ تَسْبِهُ حَهُمُ (بسواسرائيل ٣٣٠) الكم ترآن الله يستع لأمر في التسموات

الأرص والتطير ضفت كل قد عيلم ملانة

تَشْيِبُكَةُ (النور٣٤)

تنع کرتے ہیں اور برجزاس کی حدے ساتھ اس کی تنبع کرتی ے لیکن تم ان کی شیع نیس مجھتے۔ كياتم نے ميں ديكھاكداندى كى تبيع كرتے بيں جو آمالوں یں اور ڈمینول میں اور صف بستر یر ندے ' ہرا یک نے

الي تازادر تشيع كوميان ليا_ حضرت شريد بوين بيان كرتے بيں كر مل في رسول الله مين كوي فرماتے موعد سا ہے كه جس فخص في بلا فائد و كس چیا کو تخل کیا وہ چیا قیامت کے دن اللہ عزوجل سے فریاد کرے گی اے میرے دب افلان مخص نے جمع کو بے فائدہ قتل کیااور مى نف ك في جمع قل ميں كيد

إسنن نسائل عد" وقم المعت ١٣٥٥، من احر عما ص ١٨٥ سند الحريدي وقم المعت ١٥٨٤ المعم الكبير عد وقم الحديث وقم الحديث و ٢٣٥٤ المتدرك عب ٢٣٦٠ سن كبرى لليمقي جه من ٨١ الكال لاين يدى عن ١٨٠٠ كز العمل جها رقم الديث:

اس مدعث سے معلوم ہو آ ہے کہ پر ندوں کو واقعات اور حوادث کالور اک اور ان کی معرفت ہوتی ہے۔ قرآن مجید میں حضرت سلیمان علید السلام سے بربر کے مکالہ کاجو ذکر کیا گیاہے اس سے بھی اس کی تائید ہوتی ہے۔ اس طرح دیونی کے جس كان كاذكر كياليا كاس من بحى حوانوں كے اور اك اور معرفت ير دليل ك

٢- جس طرح انسانوں ميں والد اور عامل ہے اور وہ ايك دو مرے سے انس ركھتے ہيں اى طرح حوالوں اور پر ندوں ميں بھی ہے امور ہیں۔

٣- الله عزوجل في جم طرح المانون كو ايك خاص تديرت پيداكياب وروه ان كرزق كاكفيل ب اي طرح حيوانول أورير ندول كامطله ب

م. بن طرح قیامت کے دن انسانوں سے ایک دو مرے کا قصاص لیا جائے گا' سو حیوانوں اور پر ندول سے بھی ہے معاملہ ہو گا۔

۵۰ ہرانسان میں تمی نے ان یا پرعے کی خصلت اور خصوصیت ہے۔ بعض انسان شیر کی طرح دلیراور بماور ہیں' بعض انسان بھیڑیے کی طرح مملہ کرتے ہیں 'بعض انسان کوں کی طرح بھو بکتے ہیں 'بعض انسان مور کی طرح مزین ہوتے ہیں ' بعض انسان معتذور كى طرح ياك يتزكو چمو و كرياياك كى طرف ليكت بين ابعض النسان على كى طرح خوشادى موت بين ابعض كوے کی طرح ترایعی اور بعض لومزی کی طرح عالاک ہوتے ہیں۔

بان القر ان

۲- جس طرح الله تعالى نے انسانوں كى موت ميات كان كامن كارنق اور ان كا خرى انجام مقدر كرديا ہے "اى طرح حيوانوں اور برغدل كے بھى يہ امور مقرر كرديئے ہيں۔

ے۔ جس طرح انسان اپنی روزی میں اللہ تعالی کا محاج ہے اور اسے نمی مکان کی حابت ہوتی ہے ،جس میں وہ مردی ہمری اور بارش سے پناہ حاصل کر سکے۔ اس طرح حیوانوں اور پر ندوں کو بھی ان امور کی حابت ہوتی ہے۔

ر سول الله علی کے ہم مثل ہونے کا محمل قرآن مجید میں اللہ تعالی نے فرمایا ہے:

وَمَنَا مِنْ دَانِيَةٍ فِي الْأَرْضِ وَ لَا ظَلْهِمِ تَبَطِيْرُ اور ذين من چُنْ والا بر حيوان اور فغايس النه إزووَن بِهَمَنَا حَبْهِ إِلَا أَمْمُ آمَنْنَا لُكُمُ (الانعام:٢٨) حاز في والا برر عده تهاري حل الوق ب-

اگر تمہیں کے اور معنویو کی مثل کما جائے تو یہ تمہاری توجین ہے۔ مالانکہ تنہیں کے اور معنویو پر اتنی نغیلت نہیں ہے جتنی رسول اللہ مالی کو ہم پر نغیلت ہے اتو سوچو کہ رسول اللہ میں کو اپنی مثل کہنے ہے آپ کی کس قدر توجن ہوگئ

رہایہ سوال کہ پھراس آے کاکیامطلب ؟ آپ کیے کہ جس تمباری ہی حل بشرہوں میری طرف یہ وہی کی جاتی ہے کہ تمبارامعبود ایک ہی معبود ہے۔ اس کاجواب یہ ہے کہ رسول انتہ بڑی صرف عدم الوہیت جس ہماری مثل بیں۔ نہ ہم خدا بین نہ آپ خدا جی اور اس پر جیر کرنے کے انتہ تعالی نے اس کے بعد قربالے تمبارامعبود ایک ہی معبود ہے۔ خلاصہ یہ ہیں نہ آپ خدا جی انتہ بھی کہ کہ کی دجودی دمف بیل کوئی رسول اللہ جین کے کامما کی نہیں ہے نہ بشریت میں نہ عبدے میں نہ نہوت اور رسالت جی اور اس کا کنت میں جو بھی آپ کی حمل ہے اور سالت جی اور استی عباد ہیں۔ نہ وہ وہ اجب کہ دوواب نہ تھی اور مستی عبادت ہیں۔

لوح محفوظ تمام مخلوقات کے تمام احوال کی جامع ہے

اس آیت می فرایا ہے ہم اے کاب میں کمی چرکو نسی چھوڑا اس آیت می کاب کی وہ تغیری کی جی ایک یہ ک كتب سے مراولون محفوظ ب اور محفوظ سے مرادودكتب بس من تمام كلو تلع كے تمام اوال تغميل سے لكيے ہوئ إل- قرآن جيدش ب

وَ كُلُّ شَنَّ فِعَلُوهُ فِي الرُّبُرِ٥ وَكُلُّ صَغِيْرِو انسول کے جو کھے کیا 'وہ سب کوح محفوظ میں لکھا ہواہے ' ہر

كَيْشِيرِمْسْتَطُو (القمر:٥٢-٥١) چو ٹاور ہزاکام لکھا ہوا ہے۔

حضرت مبدالله بن ممورمني الله منما بيان كرت بي كررسول الله علي فرمايا الله جارك وتعالى إلى محلوق كو ظلت میں پیداکیا' پھران پر اپنے نور ہے تکل فرمانی' سوجس نے اس نور کو پالیا' اس نے ہدایت کو پالیااور جس نے اس نور ہے خطاک وہ مراہ ہو کیا۔ای لیے میں کتابوں کہ تھم اللہ کے علم پر فتک ہوچاہے۔

(سنن ترزي عه وقم المعت ١١٥٠ مح البحاري عه وقم المعتف ١٨٥١ سن اين اجد عه و ١ وقم المعت ١١٥١ مح ابن

حيان " حاد فم المع عدد ١٦٠ من اب مولد " جا" رقم عا من احر " ج٨ و قم المدعد ١٢٠٠٥)

حعرت عبدائلہ بن عباس رمنی اللہ حتمامیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بڑھی کے فرمایا یقین رکھوکہ آگر تمام امت تم کو نفع پنچائے پر شنل ہو جائے تو وہ تم کو صرف وی نفع پنچا سکتی ہے جو اللہ تعالی نے پہلے لکھ دیا ہے اور اگر تمام امت تم کو نقصان پنچانے پر مجتمع ہو جائے تو وہ تم کو صرف وی نتسان پنچائت ہے جواللہ تعالی نے پہلے لکھ ریا ہے ، قلم اٹھالیے سے ہیں اور محیفے وكك او يك إلى- (سنن زوى مع وقم الحديث ١٥٢٣ مند احر على ٥٠٠٠ موه ١٠٠٠)

معرت ابو ہريد ويشر بيان كرتے بين كه يس في عرض كيايار سول الله إيس نوجوان مخص مول اور جمع اسين نفس بر زياكا خوف ہے اور مورتوں سے نکاح کرنے کی میرے پاس وسعت نہیں ہے آپ ظاموش رہے۔ میں نے پار موض کیا آپ نے پار مے کوئی جواب نمیں دیا۔ بی نے پیر وض کیا آپ نے پیر بھے کوئی جواب نمیں دیا۔ بی نے چو تھی یار ای طرح وض کیا تا آپ نے فرمایا اے ابو ہر پر ماجو کام حمیس در پیش ہیں 'ان کے متعلق تھم الکھ کر) نشک ہوچکا ہے ' خواہ تم ضی ہو یا ایسے رہو۔ (ميح البحاري علا وقم الحديد ١٥٠٤ من السائل علا وقم الحديث: ٣١٥)

ان صديوں سے يہ معلوم ہو آے كہ لوح محفوظ على تمام كلوقات كے تمام احوال لكه ديئے مح بين اور كلم لكه كر ديك برچاہے۔

قرآن مجيدتمام عقائد اسلاميه اور احكام شرعيه كاجامع ب

اس آیت بی کاب کادو سری تغییرید کی گئے ہے کہ اس سے مراد قرآن جید ہے اور اب معنی یہ ہوگا کہ ہم نے قرآن جید یں کی چیز کو نیس چھوڑا۔ اس پر سے احتراض ہو باہے کہ قرآن جمیدیں صلب الجیرا' ریامنی بور سائنسی علوم اور ان کے قواعد کا ذكر نميں ہے۔ اى طرح جديد اور تديم ميڈيكل سائنس كے علوم كاذكر الني ہے او چريد معنى كس طرح ورست ہوگاكہ ہم نے قرآن مجید یس کی بیز کوشیں چمو ال اس کاجواب یہ ہے کہ قرآن مجید کاموضوع ہے دین کی معرفت مقائد اور احکام شرعیہ کا بان-الله تعالى ناس كك كاتعارف كرات موت قربلاب:

لَا لِكُنَّا الْكِنْابُ لَا لَيْبَ لِيْهُو لِمُكَّاى ی علیم الفان کاب اس (کے حول من اللہ ہو لے) میں (البقره: ۲) کال تک نی ب برمتفیس کے لیے داعت ہے۔

طِيانُ القر أن

إِنَّا أَنْرَلْمَا إِلَيْكُ الْكِنَابَ بِالْحَقِّ لِنَحُكُمُ بَيْرَ النَّاسِ بِمَا أَزْمَكُ اللَّهُ (النساءه *)

وَمَا ٱلْرَلْمَا عَلَيْكُ الْكِحَابَ الْالِمُنَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي الْحَمَلَكُولَ فِيهُ وَ هُدُى وَ رَحْمَةً لِفَوْمُ يُتُوْمِدُولَ النحل. ٣٠)

وَلَرَّلْمَاعَلَبُكُ الْكِتَابَ نِبْيَالُ الْكُلِّلْ مَنْ فَيْ وَلَا الْمُكُلِّلْ مَنْ فَيْ وَلَا مُدًى وَلَا مُدَى وَرَحْمَةُ وَالنَّهُ وَلِي لِلْمُسُولِمِيْنَ 0 مُدًى وَرَحْمَةُ وَالنَّفُ وَلِيلْمُسُولِمِيْنَ 0

بیان کر وی اور یہ کتاب ایمان والوں کے لیے ہدایت اور رحمت ہے۔ اور ہم لے آپ پر یہ کتاب نازل کی ہے جو ہر چز کاروشن بیان ہے اور مسلمانوں کے لیے ہدایت ارجمت اور بٹارت

بے تک ہم نے آپ یر کتاب حق کے ماتھ نازل کی ہے

ہم نے آپ ہر یہ کاب صرف اس لیے نازل فرمائی ہے کہ

جس چزیں او کوں۔ 2 اختلاف کیا ہے "آپ اس کو مان مان

ا كد آپ لوگوں كے در ميان اس جركے ساتھ فيعلہ قرماكيں

جوالله في آپ كور كمال ب-

(النحل:M) ہے۔

اس آیت پی فرایا ہے ہے کہ برے کا روش بیان ہے۔ اس کا یہ معنی نہیں ہے کہ اس پی تمام علوم و نون کا روش بیان ہے اور ماشی و الله اور مستقبل کے قام واقعات کا تفسیلی ذکر ہے ' بلکہ اس کا سمنی ہے ہے کہ اس جی ہر بھی آ کہ ا مسئلہ کے سلے روشن ہدایت اور واضح طور پر بھی آ کہ اس جی منطق میں منطق کے سلے روشن ہدایت اور واضح طور پر معلام ہو جاتی ہے کہ اس کا موضوع مقائد اسلام اور احکام شرعیہ کا بیان ہے ' اس جی منطق کے شد' ریامتی اور سائنس موجود کی تعلیم نہیں ہے۔ و آن کرمے سے طابت نہیں ہیں۔ بعض و فیرو کی تعلیم نہیں ہے۔ ربی ہے بات کہ احکام شرعیہ سارے کے ساوے قرآن کرمے سے طابت نہیں ہیں۔ بعض قرآن مجید سے درسول اللہ طبح و آلہ و سلم کی سنت سے ' بعض آ اور محالہ سے ' بعض اجراح کا تھم سے اور بعض قیاس سے قابت ہیں۔ اس کا اجواب ہے ہے کہ قرآن مجید سے درسول اللہ جی ہیں۔ اس کی اصل محل ہے اور اجماع اور احمام کی قرآن کرم میں ہے اور اجماع اور احمام کی اصل بھی قرآن کرم میں ہے اور اجماع اور احمام کی اصل بھی قرآن کرم میں ہے اور اجماع اور احمام موجود ہو ای کہ جو اس کی اصل بھی قرآن کرم میں ہے اور اجماع اور احمام موجود ہو تا ہو مسائل آ قار صحابہ سے طابت ہیں ' ان کی اصل بھی قرآن کرم میں ہے اور اجماع اور قباس ہی قرآن کرم میں ہے اور اجماع اور قباس ہی قرآن کرم میں ہے اور اجماع اور قباس ہی قرآن کرم میں ہے اور اجماع اور قباس ہی قرآن کرم میں ہور کی اصل بھی قرآن کرم میں ہور اسل بھی قرآن کرم میں ہور آن کرم میں ہور کا میں ہور کا میں کا جنت ہو نا بھی قرآن کرم میں ہور آن کرم میں ہور آن کرم میں کی اصل بھی قرآن کرم میں ہور کی اصل بھی قرآن کرم میں کی اصل بھی قرآن کرم میں کی اصل بھی قرآن کرم میں کی اصل بھی گرآن کرم میں کی اصل بھی قرآن کرم میں کی اصل بھی گرآن کی اصل بھی کرم آن کی اصل بھی کی اس کی اصل بھی کی اس کی اصل بھی کرم آن کی اصل کی اصل کی اصل کی اصل ہمی کرم آن کی اصل کی کرم کی کرم کی کرم کی کرم کرم کی کرم کی کرم کی کرم کرم کرم کی کرم کرم

مبیدیں ہے۔ سنت کی مجیت پر دلا کل

جواحكام رسول الله منظيم كي سنت سے علبت بين ان كي اصل يہ آيات بين:

وَمَا أَنْكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا أَنْكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا أَنْهُكُمُ عَنْهُ

مَنُ يُكِيلِعِ الرَّسُولَ فَفَدُ ٱطَاعَ اللَّهَ

(النساء: ۸۰)

فُلْ إِنَّ كُنْتُمُ تُحِبِّونَ اللَّهَ فَالْمِعُونِيُّ يُخْرِبِبُكُمُ اللَّهُ وَيَغْمِرُلَكُمْ دُنُوبِكُمْ يُخْرِبِبُكُمُ اللَّهُ وَيَغْمِرُلَكُمْ دُنُوبِكُمْ الله عبادها

اور رسول تم کوجو (احکام) دیں ان کو تبول کرواور جن کاموں سے تم کومع کریں ان سے بازر ہو۔

جس نے رسول کی اطاحت کی 'اس نے اللہ کی اطاعت کر

ں۔

آپ کینے کہ اگر تم اللہ سے محبت رکھتے ہو تو میری اتباع

کرد اللہ تم کو اینا محبوب بنالے گااور تسادے گناموں کو بخش
وے گا۔

آ ڈار محابہ کی جیت پر دلا کل

اور محابد كرام رمني الله عنم كي اطاعت اور الباع كي اصل به اطاعث بين:

حضرت عماض بن ساديد والتي بيان كرتم بيل كر وسول الله وهي سف فرايا على تم كو الله سے ذريف احكام كو من اور اطاعت کرنے کی ومیت کرتا ہوں۔ خواہ تم پر حبثی غلام مسلط کر دیا جائے 'جو لوگ میرے بعد زندہ رہیں گے دہ بہت اختلاف دیمیں گے۔ تم دین میں ٹی ٹی باتمی نکالنے ہے اپنے آپ کو بچانا کیونکہ یہ تمراہی ہے ، تم میں ہے جو مخص اس چیز کو پائے اس پر لازم ہے کہ وہ میری سنت پر عمل کرے اور خلفاہ راشدین مصنعین کی سنت پر عمل کرے اور اس کو ڈا ڈھوں سے پاڑ لے۔ الم تذى في كمايه مديث حن مي ب-

(سنن ترزي "ج" وقم المدعث ٢٧٨٥ سنن الجواؤد"ج" وقم المدعث ٤ ١٣٠ سنن ابن ماجه "ج" وقم المدعث: ٣٧ سنن وار مي " جَا وَتُم الْحِيثُ وه مند الحراج الرقم الحريث والمعال طبع جديد مند الحراج المستده المع قديم المستدرك جي المراه ١٩٦٠) حطرت عبداللہ بن عمود منی اللہ عنمابیان كرتے ہيں كدر سول الله منظير فرمايا ميرى است ضرور وه كام كرے كى جو بنو ا مرائل نے کے بتنے 'بالکل برابر برابر 'حتی کہ اگر ان میں ہے کسی نے اپنی ماں کے ساتھ تعملم کھلا بد کاری کی ہوتو میری امت میں بھی لوگ ایساکریں سے اور بنو اسرائیل بمتر(۱۷) فرقوں میں منتشم ہو سکتے تھے اور میری امت تہتر فرقوں میں منتشم ہوگی 'اور ایک فرتے سے سواسب دونرخ بن جا کیں ہے۔ محلبہ نے ہم چھایار سول اللہ اوہ کون سافرقہ ہے؟ آپ نے فرمایا جس ملت پر میں مون اور ميرسد اسحلب جيل- (من ترفري عمر ارقم الحديث: مناسم مطبوع داد الفكو عودت ١١١١هم)

حعرت عمر بن الحطاب بورائي بيان كرت بين كه من نے رسول الله بينيم كوية فرماتے موعة سنا ہے كه ميرے بعد ميرے امحاب میں جو اختلاف ہوگا' اس کے متعلق میں نے اپنے دب سے سوال کیا تو اللہ تعالی نے میری طرف وی فرمال اے محما (مرتبر) آپ کے امحاب میرے زویک آسان میں ستاروں کی طرح میں۔ بعض امحاب بعض سے زیادہ توی ہیں اور ہرایک کانور ب 'جب ان کے موالف میں اختلاف ہو توجو مخص ان میں ہے جس کے موقف پر بھی عمل کرے گا وہ میرے نزدیک ہدا ہت پر ہے اور رسول اللہ معجم نے فرملیا میرے اسحلب ستاروں کی مائند ہیں تم نے ان میں ہے جس کی بھی اقتداء کی تو ہدایت یا جاؤ مك-اس مديث كوالهم رؤين في روايت كياب-(ملكوة الممايع من منه مطبوء قد يي كتب خاز مراجي)

اس مديث كے آخرى حصد كو علامہ زبيدى نے الم دارى اور الم ابن مدى كے حوالوں سے ذكر كيا ہے۔

(اتحاف السادة المنتين "ج ۲ من ۲۲۳ مطبوعه معيد معر الاسارة)

جس فض نے بدایت واضح مونے کے بعد وسول ک

خالفت کی اور مسلمانوں کے راستہ کے خلاف چلا تو ہم اس کو

ای طرف پھیرویں مے جس طرف وہ پھراہے اور اس کو جنم

اجماع کی جمیت پر ولا کل

اجماع كي اصل ورج زيل آيت اور اماديث ين وَمَنْ يُسَمَّا فِي الرَّسُولَ مِنْ يَعْدِمَا تَبَيِّنَ لَهُ ۗ الهدى وَيَنْبِعُ غَيْرَسَبِيلِ الْمُوْمِينِينَ تُولِم

مَانْتُولْي وَنُصُّلِهِ مَعَهَمَّ مَوْسُاءَتُ مَصِيبُرُا٥

(النسباء: ۵۵)

عل معلى كراوروه كيمايرا فعكان ب اس تبعت میں تمام مسلمانوں کے موقف اور مسلک کی تکلفت پر عذاب کی دعید ہے۔ اس سے واضح ہواکہ تمام مسلمانوں کا اجماعی موقف جحت ہے۔ حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنما بیان کرتے ہیں کہ رسول الله علیم نے فرمایا میری است بھی

طيان القر أن

بھی مرای پر مجتم نیس ہوگی سوتم جماعت کولازم رکھو کو تک جماعت پر اللہ کا اِتھ ہو آہے۔

(المعجم الكبير كي ١٤٠٤ مر تم الحديث: ١٣٢٣) مطبوعه واراحيا والتراث العربي كيروت)

حافظ المیثی نے لکھا ہے کہ اس مدیث کی دوسندیں ہیں۔ ایک سند کے راوی میج اور ثقه ہیں۔

(مجمع الروائد عيم مع م ١٦)

جعرت معاویہ جائے، بیان کرتے ہیں کہ جی ہے ہی جائے کو یہ فرماتے ہوئے سنا ہے کہ اللہ جس کے ساتھ قیر کاار اُرہ کر آ ہے'اس کو دین کی سمجھ مطافرا آ ہے۔ جس صرف تقلیم کرنے والا ہوں اور اللہ دیتا ہے'اور یہ است بیٹ اللہ کے دین پر قائم رہے کی اور کسی کی مخالفت ان کو فقصان نہیں پنچائے گی حی کہ قیامت آ جائے گی۔

(صح البحاري عارقم الحديث: الاسطبوع وار الكتب العلميه اليروت)

قیاس کی جیت پر دلا کل

مُوالَّدِي آخُرَ الْمُورِي الْمُورِي كَفَرُوا مِنْ اهْلِ الْمُحَسِّرِ مَا طَلَعَتُمُ الْمُولِ الْمُحَسِّرِ مَا طَلَعَتُهُم مَّالِكَ مُسْرِ مَا طَلَعَتُهُم مُحُسُّونَهُم الْمُحَدِّدُ وَالْمُحُوالَةُ اللّهُ مُن حَدِيثُ لَمْ يَحْتَدِيبُوالَ اللّهُ مُن حَدِيثُ لَمْ يَحْتَدِيبُوالَ مِن اللّهِ فَا نَهُمُ اللّهُ مُن حَدِيثُ لَمْ يَحْتَدِيبُوالَ مِن اللّهِ فَا نَهُمُ اللّهُ مُن حَدِيثُ لَمْ يَحْدَرُونَ المُنوالِقِم اللّهُ مُن حَدِيثُ لَمْ يَحْدِرُونَ المُنوالِقِم اللّهُ مُن حَدِيثُ لَمْ يَحْدِرُونَ المُنوالِقِم اللّهُ مُن حَدِيثُ لَمْ اللّهُ مُن اللّهُ مُن مَن مَن اللّهُ مُن اللّهُ مِن اللّهُ مُن الللّهُ مُن اللّهُ مُن اللّهُ مُن اللّهُ مُن اللّهُ

وی ہے جس نے کتار اہل کہا ہے کو ان کے کمروں ہے پہلی

ہار جلا وطن کرنے کے وقت نکالا تہیں ان کے نکل جائے کا
گمان (بھی) نہ تھا۔ وہ اس محمنیڈ میں تھے کہ ان کے مضبوط تلعے
المیں اللہ کے عذاب ہے بچالیں کے موان کہ پاس اللہ کا تکم
آگیا جمال ہے انہیں گمان بھی نہ تھا اور اللہ نے ان کے ولوں
میں رصب ڈال دیا وہ اپنے ہاتھوں ہے اپنے کمروں کو ویر ان
کر رہے تھے اور مسلمانوں کے ہاتھوں ہے ہی موان

اس آمت من قباس کی دلیل ہے کو تک اللہ تعالی نے اختبار کرنے کا تھم دیا ہے اور اختبار کا معنی ہے کی چیز کو اس کی نظیر
کی طرف اوٹانا کینی جو تھم اصل شے کے لیے جاہت ہوگا وی تھم اس کی نظیر کے لیے جاہت ہوگا۔ اس آبت میں مسلمانوں کو
میرت پکڑنے کا تھم دیا ہے اور اس کا معنی ہے ہے کہ جس کام کے سب سے کفار اہل کتاب پر عذاب بازل ہوا ہے 'تم وہ کام نہ کرنا'
ور نہ تم پر بھی وی عذاب نازل ہوگا اور کی قباس ہے کہ علم ہے اشتراک کی وجہ سے تھم مشترک ہو۔

معنوت ابن همیاس رمنی الله عنما بیان کرتے ہیں کہ ایک عورت نبی چھیج کی خدمت میں حاضر ہوئی اور کہنے تھی میری بمن نوت ہوگی اور اس پر مسلسل دوماہ کے روزے تھے۔ آپ نے فرملیا یہ بتاؤا اگر تمہاری بمن پر قرض ہو ٹانو کیاتم اس کو اوا کرتیں۔اس نے کماہل آپ نے فرملیا تو اللہ کاحق اوا نگل کے زیادہ حق دار ہے۔

(می البخاری ج ۱ و قم الحدیث ۱۹۵۳ می مسلم میام ۱۵۳۰ (۳۰۵۱(۱۳۳۸) من ترزی ج۲ و قم الحدیث ۱۲۱ سنن ایرداور کرج ۲ و وقم الحدیث ۱۳۳۱ سنن این باد. کسی و قم الحدیث ۱۸۵۱ سنن کبری ملنسانی کیج ۲ و قم الحدیث ۱۳۹۳)

اس مدیث میں نبی مزیم نے اللہ کے حق کو بندے کے حق پر قیاس کیا ہے اور جس مخص پر روزے ہوں اور وہ فوت ہو جائے تو اس کاول اس کی طرف سے قدید دے گا۔

حطرت ابن عباس رضی اللہ عظمامیان کرتے ہیں کہ ایک عورت نے جی نذر مانی 'مجروہ فوت ہو گئے۔اس کا بھائی ہی جہور کے پاس کیا اور اس کے متعلق سوئل کیا۔ آپ نے فرمایا یہ ہماؤا اگر تمہاری بمن پر قرض ہو آنو کیا تم اس کو اوا کرتے؟اس نے کما

ئېيان ال**در ان**

فيلدموم

الله آپ نے فرمایا پر اللہ کاحق اوا کرو کو اوا کی کے زیادہ حقد ارہے۔

(می ابتداری علی از قم العدید ۱۹۵۳ عدد آم العدید ۱۹۵۸ عدد ۱۹۳۵ من الدرائی از من الدرائی از من الدرائی از من الدرائی العدید ۱۹۳۱ من الدرائی العدید ۱۹۳۱ من الدرائی العدید العدید

استن الترقدی جس و قرال است التروی می ایست الترانی ای واؤد و جس و آن الدید الدی است الدی می الات کے۔

عبد الرحمٰن بن بزید بیان کرتے ہیں کہ ایک ون لوگوں نے حضرت عبد اللہ بن مسبود بریش ہے بہت زیادہ سوالات کے۔

صفرت میداللہ بن مسبود نے قرالیا ایک ذائد تھا کہ جم بالکل فیصلہ نہیں کرتے ہے اور ہم اس مقام پر فائز نہ تھے۔ پاڑاللہ عن بری کے بعد جس فضی کو فیصلہ کرنا پڑے اور آگر مطابق فیصلہ کرنا پڑے اور آگر کے بالد سنلہ ور فیش ہو جس کا حل کتاب اللہ بی شہبو اور وہ نی بڑی ہے کے فیصلہ کرنا پڑے کہ مطابق فیصلہ کرنا ہو اور آگر کوئی الیاسئلہ ور فیش ہو جس کا حل کتاب اللہ بی ہو اور نہ ہی بڑی ہے نے اس کا فیصلہ کیا ہو قرجس کا حل نہ کتاب اللہ بی ہو اور نہ ہی بڑی ہے نے اس کے مطابق فیصلہ کیا ہو قرجس طرح صالحین نے اس کا فیصلہ کیا ہو اور نہ مسافعین نے اس کا فیصلہ کیا ہو اور نہ نہ بی بڑی ہو جس کا حل ایسا امرور ہی ہو جس کا حل نہ کتاب اللہ بی داخع ہے اور ای کے در میان پکھ امور مشتبہ ہیں قرجس چر جس می میں دور نہ میں ہو جس کی جس فرف ذور ہوں کو چھو ڈ کر فیر مطابق کی داخع ہے اور این کے در میان پکھ امور مشتبہ ہیں قرجس چر جس میں میں دور ہی میں ہو جس کی دائر کی در میان پکھ امور مشتبہ ہیں قرجس چر جس میں میں دور ہی میں دیا ہو جس کی دائر جس کی دائر جس نہ ایس کی در میان پکھ امور مشتبہ ہیں قرجس چر جس میں دور نہ میں کو جس و در کر می کو کھو ڈ کر فیر مطابق کی داخع ہو اور اس کی در میان پکھ امور مشتبہ ہیں قرجس جب اور اس کی در میان پکھو ڈ کر فیر مطابق کی داخع ہو اس کی جس در کر میں کو جس در کر کی سے در میان کی در میان کی در کی در میان کی در میان کی در کیا ہور کر فیر مطابق کی در کر میان کی در میان کی در کی در کیا ہور کر کی میں در میان کی در کیا ہور کر اس کی در کی در کیا ہور کر کی در کیا ہور کر فیر مطابق کی در کی در کیا ہور کر فیر مطابق کی در کیا ہور کر فیر مطابق کی در کیا ہور کر کی در کیا ہور کر کی در کیا ہور کر فیر مطابق کی در کیا ہور کر کیا ہور کر کی در کی در کیا ہور کر کی در کیا ہور کر کی در کیا ہور کی در کیا ہور کی در ک

(سنن النسائي ع ٨ و تم المديث: ۵۳۱۲ ۵۳۱۳ مطبوعه وار العرف اجروت)

اس معت میں یہ تصریح ہے کہ مسائل کے استبلا اور ادکام کے اثبات کے لیے کتاب ملت اجماع اور قیاس کی تر تیب کو پیش نظرر کھنا ضروری ہے۔ پیر سیار کا مقدم میں میں کا میں است کے استبلا اور ادکام کے اثبات کے لیے کتاب ملت اجماع اور قیاس کی تر تیب

قرآن مجيد من برجيز كية كرمون يردا كل

اس مئلہ میں علاء کا اختلاف ہے کہ آیا قرآن مجید میں صرف من علوم کو بیان کیا گیا ہے جن کی مکلنین کو ہدایت اور اخروی فوز و فلاح میں احتیاج ہوتی ہے یا قرآن مجید میں ونیا اور آخرت کے جرواقعہ اور جرصاونہ کا ذکر موجود ہے۔ علامہ آلوی کا بخار عالی الذکر ہے۔وہ تصفیح ہیں:

اس آمت میں کب سے مراد قرآن مجید ہے۔ یہ فنی اور ایک جماعت کا علی ہے کہ قرآن مجید میں ان تمام چیزوں کا ذکرے جن کی دین اور دنیا عمل ضورت پڑتی ہے ' بلکہ اس کے علاوہ دو سمری چیزوں کا بھی ذکر ہے ' اور یہ ذکر یا مفصل ہے یا مجمل ہے۔ اہام شافعی علیہ الرحمہ سے معقول ہے کہ دین کا جو مسئلہ بھی چیش آئے گا اللہ کی کب میں ہس کے متعلق ہوایت موجود

الم بخاری نے معرت عیدافلہ بن مسعود برانی سے روایت کیا ہے۔ انہوں نے کماللہ کود نے والی پر اور کردوائے والی پر لعنت کر باہ کوریال نوچے والی پر اور جو خوبصور تی کے لیے وائنوں میں جھری کرواتی ہیں کور اللہ کی بناوٹ کو تیدیل کرتی ہیں۔ معم یعقوب نے کمانس کاکیا سبب ہے؟ صفرت عیدافلہ نے کمامی اس پر کیس نہ لعنت کروں جس پر رسول اللہ معتبد نے اعت بی

غيان القر أن

بلدسوم

ہے اور اس پر کلب افتہ میں احت ہے۔ اس مورت نے کما بہ فذا میں نے قرآن جید کو پڑھا ہے اس میں قاس احت کازکر نہیں ہے۔ معرت ابن مسعود نے قرآبار تم نے قرآن جید کو پڑھا ہو آتا تم اس احت کو پالیتیں 'چرآب نے یہ آجہ پڑھی اور رسوں تم کو جو (احکام) دیں ان کو قبول کرواور جن کاموں ہے تم کو صح کریں ان سے باز ربو۔ (الحشر: ۵۵) (می البحاری 'جے 'رقم المحت المحت میں مسعود جریئے نے اس مورت ہے المحت المحت معمود جریئے نے اس مورت ہے اس مورت ہے اس مورت ہے معرت ابن مسعود جریئے ہے اس مورت ہے معمود ہے قربا ارمول الله مریئے ہے اس کام سے منع فربا کیا تم نے یہ آجہ نہیں پڑھی 'اس نے کما پڑھی ہے۔ حضرت ابن مسعود نے قربا رمول الله مریئے ہے اس کام سے منع فربا ہے۔

آیک مرتبہ اہام شافعی نے مکہ میں قربایا تم جو جاہو جو ہے سوال کرد میں تم کو اللہ کی تلب سے اس کاجواب دوں گاان ہے سوال کیا گیاجو محرم بحر (سنمیہ) کو ہار ڈانے آپ اس کے متعلق کیا کہتے ہیں؟ انہوں نے کماوہ اس کو ہار سکتاہے اور اس پر معرت ابن مسعود کی طرح استدالل کیا۔

(روح المعاني بيرك على ١٣٠٥-١٣١٧ مطبوعه واراحياء الراث العربي بيروت)

قر آن مجید میں صرف ہوایت کے ذرکور ہونے پر ولائل میساکہ ہم نے پہلے ذکر کیا ہے کہ قرآن مجید کاموضوع صرف ہداہت دیا ہے۔ اس لیے اس نے مقائد اسلامیہ اور انکام شرعیہ کی ہدایت دی ہے 'اور اس سلسلہ میں مو عطت اور نصحت کے لیے انبیاء اور صالحین اور کفار اور متافقین کا تذکرہ کیا ہے اور جنت اور دوزخ کا بیان کیا ہے اور اخروی فوزو قلاح کی ہدایت کے لیے جو امور ضروری ہیں ان سب کاذکر فربایا ہے۔ اس کے مقابلہ میں بعض علاہ اور صوفیاء کا یہ فظریہ ہے کہ قرآن مجید میں تمام ما کیاں و مدایکوں کا بیان ہے 'این ابتداء آفریش عالم سے لے کروخول جنت اور وخول بار تک ہر ہرجزی اور معمی واقعہ اور حاویث کا ذکر قرآن کریم میں موجود ہے۔ ہرچند کہ ان کا صراحتا اور تنسیلا بیان نمیں ہے ، لیکن ان امور کا اجمالاً ذکر ہے اور یکھ رموز اشارات اور کتایات بیں جن سے ان تمام امور کا التخراج كيا ماسكنا ب-ان كي دليل قرآن مجيد كي يه آيت ب:

وَنَزُلْمَا عَكَيْكَ الْبِكُنْبَ يِسُبَانُ لِكُلِ شَعْقَ اور بم في آپ رِيد كاپ ازل كا به و بريز كاروش هُدُّى وَرَحْمَةً وَبُشُرى لِلْمُسْلِمِينَ

یان ہے اور مسلمانوں کے لیے بدایت اور رحمت اور بشارت

(التحل: M)

ظاہرے کہ یہ آیت ان کے مطلوب پر دلالت شیس کرتی کے تک اس میں یہ ذکور ہے کہ قرآن مجید میں ہر چیز کا روشن بیان ہے۔ اگر برجزے ما کان و ما یکون مراولیا جائے توان کے اپنے قول کے مطابق اس کابیان رموز اور اشارات ہے ہے اوراس کو جیان اور روش یا داشتے بیان نمیں کماجا سکت بال اگر اس سے مراو مقاعد اسلامیہ اور احکام شرعیہ ہوں تو ان کی ہرچیز کا قرآن جيديس موش ميان ہے۔ نيزوه اس آعت ہے جي استدلال كرتے ہيں۔

مَا كَانَ حَذِينًا يُعْدَرى وَلْكِي تَصدينَ عَدينَ الرأن الولى من كرت بات نيس إلى الله ان الكوى بَيْسَ يَكَدُبُورَ مَنْ مِيسُلَ كُلِ نَسَى وَهُدُى وَ كَابِل كَامِدِن بِهِ واس بِهِ عِلْمَازل مولى إن اوراس میں مرجز کی تعمیل ہے اور یہ ایمان لانے والوں کے لیے

رَحْبَةً لِقُوم يُتُومِنُونَ ٥ (يوسف)

لين اس آيت سے بھي ان كااستدلال مي نسي ب كو تكه بس ميں برج كى تنسيل ب أكر اس سے يہ مراد ہوكہ اس میں دنیا اور آخرت کے ہرواقعہ اور ہر ماد اور آسانوں اور زمینوں کی ہرجزی تنسیل ہے توفی الواقع قرآن کریم میں ان چزوں کی تنسیل نہیں ہے اور ان علاو کا بھی یہ کمناہے کہ ان تمام امور کا قرآن جمید یمی اجمالاً ذکرہے 'ند کہ تنسیلات اس لیے یہ آیت بھی ان کے معام دلیل نسم ہے اور اگر اس آعت ہے یہ مراد ہوکہ اس میں مقائد اسلامیہ اور ادکام شرعیہ میں ہے ہر چزکی تنعیل ے قویہ معن پر حق ہے الکین یہ معن المری مائید کر آے نہ کہ ان کی۔

قرآن مجید میں ہر چیز کے بیان کے متعلق منتد مفسری کا نظریہ

علامد ابوالحسن على بن احمد الواحدى اليشام رى المتونى ١٨٠ مهد لكمة بي- الله تعلل في فرمايا

مَا فَرَّطْمَا فِي الْكِكَتَابِ مِنْ شَتْقُ (الأسعام:٣٨) جم في اس كتاب بن كي بيز كو نبي جمو (ا مطانے کماہے کہ معنرت ابن عماس نے فرمایا اس کامعیٰ یہ ہے کہ بندوں کو جس چیز کی حابست تھی ہم نے اس کابیان کر

د پاہ یا مرت مبارت میں یا دامات النس ہے یا اجمال ہے یا تنصیل ہے ' جیسا کہ اس آیت میں فرمایا ہے: وَنَرُلْنَا مَلَيْكُ الْكِتَابَ نِبْيَانًا لِكُلِّ مَنْيُ اور جم في آپ ير سي کاب نازل کي جو بر پيز کاروش بيان

(النحل:M) ہے۔

لین قرآن مجید براس چیز کاروش بیان ہے جس کی دین میں احتیاج ہے 'اور سور وَ الانعام کی زیر بحث آیت کی دو سری تغییر یہ ہے کہ کتاب سے مراد اورج محفوظ ہے جو مساکساں و مسایسکون پر مشمل ہے ایسیٰ ہم لے اورج محفوظ میں ہرجے کو لکھ دیا ہے ا جيساك مدعث جن ع قيامت تك كي تمام جيون كو لكد كر قلم خلك بوكيا ب-

(الوسط "ج ٢ م ٢١٩ ٢١٨ مطبوعه وار الكتب اعليه ميروت ١٠١٠ه)

علامه واحدى نے جس مدعث كاحواله دؤ ہے وابيہ ہے:

جياڻ القر اڻ

حضرت عبلوه بن الصامت براين بيان كرتے بيل كه رسول الله بيجيز نے فرملائے تك الله تعالى نے سب بہلے تلم كو پيداكيا۔ اس سے فرمايا لكھ تواس نے ابد تك ہونے والى سب چيزوں كو لكھ ديا۔

(سنن الترفدي عنه الرعدة من البرعث البرعث البوداؤد على الموصف عنه عنه البرع عنه المراح المراح) من البرع عنه المر حقرت ابن عباس رمنى الله عنما بيان كرتے بيل كه في جي نے قربايا جب الله في الم كوپيدا كياتواس سے قربايا لكھ تواس نے تيام بت تك موتے والى تمام چيزوں كو لكھ ديا۔

المعجم الكبير" جهو وقم الهيث: ١٣٥٠ مند ابريعلي "جهو وقم الديث:١٣٣٧ منن كبري لليصتي، جه 'ص ۴ الاماء والسفات لليهمتي 'ص ٤٨٤٣ ، مجمع الزواكد' ج٤٤ 'ص ١٩٠ 'اس مديث كي مند منجع به)

علامہ ابوالفرج جمال الدین عبد الرحمٰن بن علی بن محد الجوزی الحنیل المتونی علامہ اس آیت کی تفییر میں لکھتے ہیں:

کتاب کی تغییر میں دو قول ہیں۔ ایک قول ہیہ ہے کہ اس سے مراد لوح محفوظ ہے ایسی جم فیر کو ام الکتاب میں لکھ دیا

ہے۔ دو سرا قول ہیہ ہے کہ اس سے مراد قرآن جمید ہے ایسی جم نے تمادی عاجمت کی ہر چیز قرآن جمید میں میان کر دی ہے یا

مراجاتا یا اجمانیا دلافتہ جمیساکہ سور و النول " آیت ۸۹ میں ہے جم نے آپ پر یہ کتاب نازل کی بنو جم چیز کاروش میان ہے لین ہر

اس چیز کو بیان کر دیا جس کی دین میں احتیاج ہوتی ہے۔ (داو السیر ایس اس معلومہ کھی اسلامی اور ت ایر اسمادی)

امام فخرالدین محدین ضیاء الدین عمررازی شافعی متونی ۱۰۰ مد لکھنے ہیں: قرآن مجید کی تمام یا اکثر آینتی مطابعتاً ''عضمنا''اور الترایّاس پر دفالت کرتی ہیں کہ اس کتاب کو نازل کرنے کامتعمد ہے ہے کہ دین 'اللہ کی معرفت اور اللہ کے احکام کی معرفت کو بیان کیا جائے۔

(تغیرنجیرانچ ۱۳۹۸ می ۳۰ مطبوعه داد اللکو ایروت ۱۳۹۸ ۵)

طلمه ابو عبد الله محمين احد ماكل قرطبي متوني ١٧١٨ و لكست بين:

ایک قول سے کہ کلٹ ہے مراد لوح محفوظ ہے کی تکہ اس میں تمام حوادث عابت کے گئے ہیں اور دو سرا قول سے کہ کتاب ہے مراد قرآن جید ہے کہ کتاب ہے مراد قرآن جید ہے کہ اس میں دلالت کتاب ہے مراد قرآن جید ہے اور اگر جمل دلالت ہے تو اس کا بیان رسول افقہ مراج ہے یا اجماع ہے یا قیاس ہے حاصل کیا جا سکتا ہے۔ یا قیاس ہے حاصل کیا جا سکتا ہے۔ الجامع لادکام افتر کان جزا میں ۱۳۲۸ مطبوعہ دار الفکو اجروت کا میں ا

قامنى عبدالله بن عرين محرشرازى شافعي متوفى هدار لكست بين

کتاب سے مراویا تو لوح محفوظ ہے "کیونکہ اس میں دنیا کی جریزی اور چھوٹی چیز تکھی ہوگی ہے نور اس میں کمی جائد اریا ہے جان کا سمی جزکو ترک نمیں کیا کیا اور یا کتاب سے مراو قرآن مجید ہے "کیونکہ اس میں ان تمام چیزوں کی تعدین کی مخی ہے جن کی دین میں اختیاج ہوتی ہے۔ مفصلاً بھی اور جملاً بھی۔ (الیستاوی مع الکاڑروٹی "جو" میں "معرور داو الفکو "جووت" ۱۳۱۷ھ) علامہ محدین ہوسف ابوالحیان اندلی المتوفی مہدارہ لکھتے ہیں:

آگر کتب سے مراو قرآن مجید ہو تو اس کامعیٰ یہ ہے کہ ہم نے اس کتب میں اٹسی کسی چیز کو نہیں چھوڑا جو اللہ کی معرفت کی دعوت دیتی ہو 'اور اس کے احکام کی طرف بلاتی ہو۔ اور اس میں یہ اشارہ ہے کہ یہ کتاب تمام احکام شرعیہ پر مشمثل ہے۔ (البحرافیط'ج سم ۱۰۰۳ مغیور داو الفکو 'جروت' ۱۳۱۶ہ۔)

علامد ابوعبد الله محدين إلى بكرابن قيم جوزيه حنيلي متوفى اهدر لكمة بن

طِيانُ القر أنْ

ملب کی تغییر میں اختلاف ہے۔ ایک قول یہ ہے کہ اس سے مراو قرآن مجید ہے۔ اس بناء پر اس آیت کا معنی یہ ہے کہ ہم نے اس چے کو نمیں چھو ڈاجس کے ذکر کی احتیاج ہے۔

(يدائع التغيير عن ١٣٨٨-١٣٥ مطبوعه وارابن الجوزي مرياض ١٣١٣ه)

علامد ظام الدين حسن بن محر حسين في نيابوري متونى ٨ ويد الصح إلى:

اللہ تعالی نے قربایا ہے ہم نے کتاب میں کی چڑے ذکر کو نہیں چھو ڈا۔ اس پر بیدا عمراض ہو تاہے کہ قرآن مجید میں طب و حماب و مجر علوم اور لوگوں کے ذاہب کی تفسیلات تو نہیں ہیں۔ اس کا جواب یہ ہے کہ تفریل نہ کرنے کا تقاضا یہ ہے کہ جس چڑ کی احتیاج ہو اس کو نہ چھو ڈا جائے اور احتیاج اصول اور قوانین کی ہوتی ہے۔ اور وہ قرآن مجید میں ذکور ہیں اور علم الفردع کی فاصیل کے متعلق علاء نے کہا ہے کہ وہ سنت اجماع اور قیاس سے عاصف ہیں۔

(غرائب القرآن ورغائب القرقان علي هامش جامع البيان ٤٦٠ من ١٣٦ مطبوعه وار المعرفه ويروت ١٠٠١ه)

علامہ ابوالبر کات اتمہ بن محمد تسفی حقی متو فی ملاحہ لکھتے ہیں: اگر کیا۔ ہے مراد قرآن مجمد ہو قواس کامعنی ہے کہ یہ کیا۔ انا

اگر کتاب سے مراد قرآن مجید ہو تو اس کامعنی ہے کہ یہ کتاب اپنی عبارت والات اشارت اور اقتضاء کے اعتبار سے ان تہام امور پر معتمل ہے جن کی طرف ہم اپنی عبادت میں عملیج ہیں۔

(دارك التنويل على حامش الحازن "ج ٢ من ١٥ مطبور دار الكتب العرب "بيثاور)

علامد ابوسعود محدين فير ماوي حنى متوفى ١٨٨٠ ماكست ين:

اگر اس آیت بی کلب سے مراد قرآن جید ہو تو اس کامعنی یہ ہے کہ ہم نے اہم اشیاء کے بیان بیں ہے قرآن کریم بیں کسے کو ترک نمیں کیااور ان بی سے یہ انڈ تعالی اپنی تمام کلو قات کی مصلحوں کی رعابت قربا آہے۔
می شے کو ترک نمیں کیااور ان بی سے یہ ہو تا گی خاص التغییر انگیر'ج ۲ می ۱۲۱ مطبوعہ داو الفکو 'بیروت ۱۳۹۸ھ)

قامنى تاوالله بالى في حنى متونى ١٠٠٥ مد لكمية بن

یا کمکب ہے مراو قرآن جیدہ کے تکہ اس میں ان تمام چڑوں کو مفسلاً یا جملاً مدون کیا گیاہے جن کی دین میں احتیاج ہوتی ہے۔ (التغییر المصلیدی عموم موسوم معلور بلوچتان بک ڈیو موسوم)

ميد محدد شيد د منااي استواليخ مر ميده كي تقرير للمن بن

اگر کہ سے قرآن مجید عراد لیا جائے قراس آیت کے عموم سے مراد دین کے موضوع کا عموم ہوگا جس دین کو دے کر رسولوں کو بھیا جا آئے اور وہ ہدایت ہے کیے تکہ برچز کا عموم اس کے انقبار سے ہو آئے اور اس آیت کا معنی ہے کہ جم برچز کا عموم اس کے انقبار سے ہو آئے اور اس آیت کا معنی ہے کہ جم نے اس کہ اس کی این اقدام جس سے کسی قتم کو ترک نہیں کیاجن کی وجہ سے دسولوں کو جسیا جا آئے اور جم نے اس کو اس کتاب جس بیان کر دیا ہے اور وہ دین کے اصول 'قوامر اور ادکام جس اور ان جس اسان کی قوت بدنی اور ان جس انسان کی قوت بدنی اور اقد معنی کی ہے دہن چیزوں کو افتہ تعلق نے انسان کے لیے معز کر دیا ہے 'وہ ان سے کس طرح استفادہ کرے اور افتہ تعلق کی سے دہنوں کی دعارت کر کس طرح سے انفرادی اور اجتماع کمل ماصل کرے اور قرآن میں جمید نے مرتج مجارات اور اشارات سے اس کے حصول کا طریقہ بیان فرمایا ہے۔

بعض لوگوں نے یہ کماہ کہ قرآن مجید میں تمام کا نفت کے علوم بیں اور تمام ماکاں و ماب کوں کاؤکر ہے اور یہ کہ ایک دن جی می الدین این العملی این دراز کوش ہے کر مجے اور ان کی ٹانگ نوے کی قرانموں نے لوگوں کو اس وقت تک ہے

طبيان القر أن

اجازت نمیں دی کہ ان کو اٹھا کی جب تک کہ انہوں نے سورہ فاتحہ سے اپ گرھے ہے گرنے اور ٹابک ٹوٹے کے حاویۃ کا استخراج نمیں کرایا۔ یہ دمی کا ایسا ہے کہ محلبہ میں ہے کی نے اس کا قول قمیں کیا اور نہ فقیاء آبائین اور علاء سلف صالحین میں ہے کہی کا یہ قول کرے گا سوا ان لوگوں کے جن کا یہ احتماء ہے کہ سے کسی کا یہ قول کرے گا سوا ان لوگوں کے جن کا یہ احتماء ہے کہ گزرے ہوئے کہ گزرے ہوئے لوگوں نے جو بھوا ہی کا یون میں لکھ دیا ہے وہ سب حق ہے۔ خواہ اس کو عمل قبول کرے 'نہ اس کی نفش آئید کرے اور نہ اس پر افت والمات کرے۔ اس کے بر تھی ائیہ سلف نے یہ کما ہے کہ عبوات ضروریہ کے تمام ادکام فرع ہر پر آن مجد مشمل نہیں ہے نہ مرت عبارت ہے 'نہ والمات انسی ہے 'نہ اشارۃ النسی ہے' بلکہ قرآن والمات کر آ ہے۔ نیز قرآن مجید مسلل اللہ بھی کے قواعد کو تابت کیا ہے کہ واعد کو تابت کیا ہے کو رسال اللہ بھی کے قواعد کو تابت کیا ہے اور دیگر قواعد کو بھی تابت کیا ہے۔ گذا قیاس کی فرور اور بر ٹیات پر بھی قرآن مشمل ہے اور دین کی کوئی چزان سے فارج نہیں ہے۔ والمار این میں میں مطبوعہ وار والمرف 'بیوٹ ک

علامه فيرجمل الدين قامى متوفى ١٠٠٠ مد كمية ين:

خلامہ سے کہ قرآن مجید شریعت کا کلیہ ہے اور اس می ہمور کلیات مجع کے گئے ہیں کی تکہ ان کے زول کے مکل اونے سے شریعت نام ہوگئ کندا جب ہم شریعت کے کلیات کی طرف نظر کرتے ہیں قو ہم دیکھتے ہیں کہ قرآن مجید ان تمام کو شال ہے۔(قلیرالقامی کیا 'ام اس میں مطبوعہ داوالفکو 'میروت)

علامد احر مسطق الروقي كليدين

ایک آول یہ ہے کہ کتب سے مراد قرآن مجدہ ایعنی ہم نے قرآن مجدمی ہدایت کی ان اقدام میں سے کوئی تھم نہیں چمو ڈی جن کی دجہ سے رسولوں کو بھنچا کیا ہے اور اس میں دین کے اصول انتظام اور محتوں کاذکر کیا گیا ہے اور یہ رہنمائی کی مخی ہے کہ انسان اپنی بدنی اور منتلی قوتوں کو کمس طرح استعال کرے۔

{ تغيير الراني ' 27 من ١١١ منبوه وار احيام التراث العربي اجروت)

(التغيير الحيّر " 172 م ب 11 مطبوع هاو الفكو " بيروت ١٣١١ه)

علامد مى الدين فيخ زاده حول معدد للعيدين

آگر کتاب سے مواد قرآن مجید ہو قواس پر یہ اعتراض ہے کہ قرآن کریم میں طم طب اور علم حساب کی تفاصیل کاذکر تو نہیں
ہے 'نہ دیگر علوم اور ان کے مباحث کاذکر ہے اور نہ انکہ کے زاجب کاذکر ہے اور نہ ان کے ان والا کل کاذکر ہے جو طم الاصول
اور علم الفورع میں ذکر کے مجے ہیں۔ اس کا جواب یہ ہے کہ اللہ تعالی نے جو یہ قربایا ہے کہ ہم نے کتاب میں ہے کی فیز کاذکر
نہیں چھو ڈا 'اس سے مراویہ ہے کہ مکلنین کو اپنے دین کی قیم میں جن امور کی ضرورت ہوتی ہے 'ہم نے ان کو نہیں چھو ڈا۔ اور
جن امور کی حاجت نہیں ہے 'ان کی تنسیل نہیں کی اور علم الاصول جملہ قرآن کرئم میں موجود ہے۔ کو کلہ قرآن جمید میں
دلا کل اصلیہ ہوری تنسیل سے موجود ہیں اور انکہ نہ امہ کی تفاصل اور ان کے اقوال کے ذکر کی اس می کوئی حاجت نہیں ہے۔
باتی ری علم الفورع کی تفاصل تو علی و نے جابت کیا ہے کہ قرآن مجید اس پر دوانت کرتا ہے کہ اجماع ' فہرواحد اور قیاس شراحت

میں جبت ہیں اور جو مسئلہ بھی ان تمن ذرائع میں ہے سمی ایک سے عابت ہوگا دو در حقیقت قر آن کریم میں موجود ہے۔ اللہ تعالى كے فرملا ہے اور رسول تم كوجو (احكام) ديں ان كو قبول كرواور جن كاموں سے تم كو روكيس ان سے باز رہو (الحشر ٥٩) اور ر سول الله علي الله علي الما مرى سلت ير اور مير العد خلفاه واشدين كي سنت ير لاز ما عمل كرنااور حضرت ابن مسعود في فرمایا میں اس پر کیوں نہ لعنت کروں جس پر اللہ تعالی نے اپنی کلب میں لعنت کی ہے ، ایعنی کود نے والی پر اور کدوانے والی پر اور بال جو رُف وال پر اور بال يرواف والى بر

روایت ہے کہ ایک عورت نے بورے قرآن کو پڑھا کھروہ حضرت ابن مسعود جوہنی کے پاس آئی اور کئے تلی میں نے كزشته رات بورے قرآن كو پڑھا اور مجھے اس ميں يہ آيت نهيں لي كه كودنے والي پر الله تعالى نے لعنت كى ہے۔ حضرت ابن حود نے فرملیا آگر تم واقعی تلاوت کرتیں تو تم کو وہ آیت مل جاتی۔ اللہ تعلق فرما باہے اور رسول تم کوجو (ادکام)دیں ان کو تبوں كرد اور جن كامول سے منع كريں ان سے باز رہو اور رسول الله ماجير نے جميں جو احكام ديئے بيس ان بيس سے تحم بحى ہے ك الله تعالی کودیے والی پر اور کروالے وال پر لعنت فرما آے اور روایت ہے کہ ایک دن اہم شافعی معجد حرام میں بیٹے ہوئے تھے ایک مخص نے آگر ہو جمااگر محرم بھڑا تھے اکو مار دے تو کیااس پر تکوان ہے؟ امام شافعی نے فرمایا اس پر کوئی تاوان شعی ہے۔ اس مخص نے ہوچھاک تھم قرآن مجدم كمال ب؟ كمالف تعالى نے قربايا ہے اور رسول تم كوجو (ادكام)دير وہ تبول كرو بحرسند ے ماتھ بیان کیاکہ وسول اللہ عظیم سے فرمایا تم میری سنت پر اور میرے بعد ظفاء واشدین کی سنت پر لاز آعمل کرنا۔ پر سند کے ماتھ ذکر کیا کہ جس محرم نے بعز کو تنل کیا تھا' اس کے متعلق حضرت محرفے بھی فرملیا تھا' تو اہام شافعی نے تین درجات کے ماتدان عم كوقران جيدے مستنبط كيا

خلامہ بیہ ہے کہ جب قرآن کریم اس پر دلالت کر آہے کہ اجماع جمت ہے اور خبرد احد جمت ہے اور قیاس جمت ہے المذا بروو محم جوان تمن طريقول عن سے كى ايك سے تابت ہو كا وہ در حقيقت قرآن جيدے تابع ہو كااور اس تقرير كے مطابق اس آیت کاب معنی مجے ہے کہ ہم نے کمک میں کمی چڑ کے بیان کو نمیں چمو ڈا ای نک اس کمک کاموضوع عقائد اسلام اور احكام شرعيه كابيان ب أوروه تمام عقائد لور احكام قرآن مجيد من يا صريح عبارت كے ساتھ موجود بيں يا والالت كے ساتھ موجود ال اور دودنالت اجماع ، خروارد یا قیاس بس سے کسی ایک سے ماصل ہوگ۔

(ماشيه څخ ز اده على تغييراليه خاد ي ځ ۴ م ۱۲۱۳ مطبومه دار احياء الزاث احربي ميروت)

ہم نے یہ واضح کرنے کے لیے یہ کثرت دلا کل اور حوالہ جلت چیش کیے ہیں کہ قر آن مجید میں صرف عقائد اسلام اور احکام شرعيد كوييان كياكيا ب- كونك المارى ذاند على يد بات بحت مضور جومنى ب كد قرآن مجيد على ابتداء آفرينش عالم س لے كر دخوں جنت اور دخول نار تک تمام کوائن اور حوادث اور تمام محلوقات کے تمام احوال بیان کیے مجنے ہیں اور جیساکہ قار کین پر واضع ہوچکا ہے الكل باسل بات ہے۔

الله تعلق كاارشاد ب: اور جن لوكول في عاري آغول كى تكذيب كى ده بسرے اور كو يكتے بيں-اند ميروں بين ابتكے ہوئے) ہیں اللہ ہے چاہے گراہ کردے اور نے جاہے سد می راہ پر گامزن کردے۔ (الانعام: ١٩١٩)

الله تعالی کے مرای اور بدایت پیدا کرنے کی توجید ،

جن كافرول في الله تعلل كى ان آيات كى محديب كى جواس كى وحد انيت ير داولت كرتى بين اور رسول الله الله عليهم كاانكار كيا ان كى جمالت اور ان كى مج اللي كى وجه سے ان كى مثل بسرے فضى كى طرح ہے جو ستانہ ہو اور كو تلے افضى كى ظرح ہے جو

غيان القر أن

ہو لنانہ ہو۔ وہ حق کی طرف وعوت وار شاد کو تبول کرنے کے فیے سنے اور حق کو پچھائے کے باوجود اس کا قرار نہیں کرتے اور وہ شرک 'بت پر تی اور رسوم جالیت کے اند جیروں جی بحک رہے ہیں اور جمالت' آباء واجداد کی اند حی تقلید اور بہت وحری اور کٹ ججتی کے اند جیروں میں مارے مارے باکر رہے ہیں۔ سوجو فضی بسرہ اور کو نگا ہو اور اند جیروں میں بحثک رہا ہو' وہ کیے صبح راستہ پر گامزن ہو سکتاہے یا ان آر بکیوں کے جال ہے کس طرح نگل سکتاہے؟

الله تعالی کاارشادہ: آپ کیتا ہے بناؤ آگر تسارے پاس اللہ کا عذاب آئے کی تیامت آ جائے کیا (اس وقت) اللہ کے سواکسی اور کو (مروکے لیے) پکارو کے؟ (بناؤ ا) آگر تم سے ہو؟ (الانعام، ۴۰) مصادیق مصر میں بات مدید کی کروروں اور اور کروروں کا تعداد

مصيبتول مين مرف الله كويكار ناانسان كافطري نقاضا ب

پہلے اللہ تعلق نے کفار کی جاہلیت کو واضح کیا اور یہ بتایا کہ تمام کا نکات میں اللہ تعلق کا علم محیط ہے اور اس کا نکات میں وی حقیق متعرف ہے۔ اس کے بعد اللہ تعلق نے یہ بیان فرما دیا ہے کہ جب ان کا فرون پر کوئی معببت نازل ہوتی ہے تو پھریہ اللہ تعلق متعرف ہے۔ اس کے بعد اللہ تعلق نے اللہ تعلق میں کرتے۔ اس ہے معلوم ہوا کہ ان کی فطرت کا بھی میں تعلق میں کرنا ہیں ہے۔ اور معببتوں اور تنکیفوں میں وی واحد نجات دینے والا اور کارسازے 'چنانچہ اس آیت میں فرمایے ہے۔

اے رسول محرم آپ ان مشرکین ہے گئے کہ جس طرح مابقہ استوں پر عذاب آتے تھے 'ان کو زمین میں دھنمادیا جا آ تھا' با ان پر سخت آندھیاں آتی یا بکل کی کڑک آلیتی یا طوفان آآ اگر تم پر ایسای عذاب آجائے یا تم پر قیامت آجائے تو کیا تم اس وقت اللہ کے سوائمی اور کو بکارو گے 'جو تم ہے ان مصائب کو دور کرے گایا تم اپنے ہاتھ ہے بنائے ہوئے تو ل کو بکارو گے جو تم کو ان تکلیفوں سے نجات دیں گے بناؤ اگر تم ان جوں کی عبادت میں ہے ہو؟ تو پھر اللہ تعالی از خود اس سوال کاجو اب دینا

الله تعالی کاارشاوہ: بلکہ تم ای کو پکارہ مے میں آگر وہ جاہے گاتو دہ اس تنگی کو کھول دے گاجس کے لیے تم اس کو پکار دیکے اور تم انہیں بھول جاؤ مے جن کو (اللہ کا) شریک بناتے تھے۔ (الانعام: ۴۱)

خلاصہ سے سے کہ بختی معیبت اور نظی میں تم صرف اللہ ی کو پکارتے ہو " آکہ تمہاری معیبیں اور تکلیفیں دور ہو جا کیں۔ پھراللہ تعنانی اپنی حکمت اور مشیبت کے مطابق اگر جائے تو تم سے وہ تکلیف دور کر دیتا ہے اور ایسے وقت میں تم اپنے بتوں کو بھول جاتے ہو اور اللہ کے سواتم کو کوئی یاد تمیں آئے جیساکہ اللہ تعنانی فرما تاہے: فَلْ مَنْ يُنْجِبُكُمْ مِنْ ظُلُمْ مِن الْكِيرُ وَالْبَحْير تَذَعُونَهُ تَصَرُّعًا وَحُفْيَةً لَئِنْ أَنْحُمَا وِنْ هَارِهِ كَسَكِوْنَنَّ مِنَ الشَّيِكِرِيُنَ ٥ فَيْلِ اللَّهُ يُسَيِّحِبُكُمُ يْسُهَاوَمِنْ كُلِ كَرْبِ ثُكُمْ أَنْتُمُ تُشُو كُوُنَ٥

(W-W-18-14)

فَوَادًا رَكَبُوا فِي الْعُلَكِة دَعُوا اللَّهُ معلصين كالقيس فكقاتهم إلى البرادا هُمْ يُشْرِ كُونَ ٥ (العسكبوت:٥٠)

مِطْرَةَ اللَّهِ الَّذِينَ مُطَّرِّ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا

آپ كتے كد خطى اور سمندركى بار يكيوں سے تنہيں كون نجات دیتاہے؟ جمعے تم عاجزی ہے اور چیکے پیکار ہے ہو کہ آگروہ جمي اس معيبت مع تعاديد در ويم شركر في الول من مے ہوجائیں مے اتب کئے اس (معبت) ہے اور ہر تکلیف ے تمیں اللہ ی نجات دیاہے 'کرتم شرک کرتے ہو۔

مرجب دو مشتی میں سوار ہوتے ہیں تووہ اللہ کو پکارتے ہیں ور آنجانیکہ وہ اخلاص ہے اس کی میادت کرنے والے ہوتے الله اور جب وه ان کو ختکی کی طرف نجات دے دیتا ہے " و ياك ده شرك كرن كلة ين-

اس کی وجہ سے کہ اللہ تعالی نے انسان کی نظرت میں اپنے خالق کی معرفت رکھی ہے اور اس کی نظرت کا مقاضا ہے کہ وہ خدائے واحد کی پرستش کرے اور اس کو بکارے۔اس کے انسان پر جب کوئی سخت معیبت اور پریشانی - تی ہے تو اس کی امید کی نظري اس كه موااور كمي كي طرف تعي المنتني:

الشد کی بنائی ہوئی سمرشت کواسینے اوپر لازم کر یو بجس پر اس الله كول كويد اكيا ہے۔ الله كى بيد اكى بوئى مرشت ميں كوئى

نَبُدِيُلَ لِيَعَلَّقِ اللَّهِ (الروم:٣٠)

ولقدا السلتا إلى أميرة ن قبلك فاخذتهم بالباسة

اور مینک ہم نے آپ سے پہلے کئی امتول کی طرف دمول ہیں ، پھر مم سف ان کر تنگی اور تملیعت میں منتل

والضَّا اولعلَّهُمُ يَتَضَرَّعُونَ ۞فَكُولِا إِذْ جَاءَهُمُ بِأَسْنَاتُهُ رَّعُول

كرديا الم وه كُرُكُوا كر وها كري 0 توجب ال ك ياس تكى كا عذاب أيا توائرل في كول ن

لِلْنَ فَسَتُ قُلُوبُهُمْ وَنَ يَنَ لَهُمُ الشَّيْطَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

الدارد اكر دما كى يكن ال ك ول مخت يوسك اورشيطان في ال ك كاكول كو مرين كر ديا ٥

فَلَتَانَسُوْاِمَاذُكُرُوْا بِهِ فَتَحْنَاعَلَيْهِهُ ٱبْوَابَكُلِّ شَيْءً خَتَى

يم جب وه اس تفيمت كو معول محية جان كوك فئ تى قوم نه ان ير مرجيز ك دروا زست كول يد، وي كر

ٳٞۏؖؾٷٳٳڿڽۯڂۿۄؠۼؾ؋ۜٙڣٳۮٳۿۄؘؗڡٞؠؙڸڛ

جب وه ان چیزول پر اترائے سکے جوان کو دی گئی جیس قریم سنے ان کواجا تک پڑمیں اوروہ ناامید ہو کررہ گئے 🔾

غيان القر اڻ

جلدسوم

ہوں بی کی میری طرف وی کی جاتی ہے واپ مجھے کی اعدما الد دیکھنے والا ہوا پرسے ، کیا تم خد بیس کرتے ن

هياڻ انڌر اڻ

الله تعالى كالرشاوي: اورب شك بم في آب ب سط كل امتول كى طرف رسول بيميع كر بم في ان كو تلى اور تكليف بين جلاكروا أكد وه كركر اكروعاكرين و وجب ان كياس تلى كاعذاب آياتو انهون في كون ند كركر اكروعاكى الكين ان كروا من الكرون كوم ان كروا من الانعام: ١٠٠٠)

مقیبتیں اور تکلیفیں بندوں کو اللہ کی طرف راجع کرنے کے لیے نازل ہوتی ہیں

اس سے پہلی آبت میں کافروں کی ایک قوم کا مال بیان فرمایا تھا جو مختوں اور مصیبتوں میں اللہ کی طرف رجوع کرتی تھی
اور اس آبت میں ان سے زیادہ سخت ول کافروں کا مال بیان فرما رہا ہے جو سخت تکلیفوں اور مصیبتوں میں بھی اللہ تعالی کی طرف رجوع نہیں کرتے تھے الب اساء کا معنی ہے شدت 'عذاب 'قوت اور شدت فقر اور اس کا اطلاق جنگ اور مشقت پر بھی کیا
جاتا ہے اور الباماء جنگ کی شدت کو بھی کہتے ہیں اور الصراء 'مزرسے بنا ہے 'مزر نفع کی مند ہے 'مین فقصان اور مرض کو بھی کہتے ہیں۔ اس آبت میں الباماء سے مراد ہے فقر کی تخلی اور الفراء سے مراد ہے بناری کی مختی۔

الله تعالی کاارشادہ: پر جسبودہ اس تھے۔ کو بھول کئے جو ان کو کی گئی تھی تو ہم نے ان پر ہر چیز کے دروازے
کھول دیئے 'حتی کہ جب وہ ان چیزوں پر انزائے گئے جو ان کو دی گئی تھیں تو ہم نے ان کو اچانک پکڑ کیا اور دہ تاامید ہو کر رو گئے 0 پس طالموں کی جز کاٹ دی گئی اور تمام تعریفی اللہ ہی کے لیے ہیں جو تمام جمانوں کاپروردگار ہے۔ وال نعام ، ہ سم سما گئاہوں کے یاو جو د تعمیوں کا ملئا اللہ کی طرف سے استدر اج اور و تھیل ہے

اس آبت میں ان کے ضبحت کے بھولنے کی وجہ ہے ان پر عذاب نازل کیا گیا علا تکہ بھولنے ہے احزاز توان کے اختیار میں نہیں ہے؟ اس کا جوائے ہے احزاز توان کے اختیار میں نہیں ہے؟ اس کا جواب یہ ہے کہ بھولنے ہے مراو ترک کرنا ہے " بینی جب انہوں نے اس نصبحت کے نقاضوں پر عمل کرنا ترک کردیا۔ ابن جریج نے اس کی تفریر میں کما ہے جس دین کی طرف ان کو اللہ اور اس کے رسولوں نے وعوت دی تھی اس کو انہوں نے ترک کردیا کہ اس کا انکار کیا اور اس کو رد کردیا تو بھم نے ان پر جریج نے دروازے کھول دیئے۔ یعنی معاش کی شکی کو رزت کی وسعت سے بدل دیا اور بھاریوں کو صحت اور سلامتی کے ساتھ بدل دیا۔

اگریہ اعتراض کیا جائے کہ اللہ تعالی نے یہ کس طرح فرمایا ہے کہ ہم نے ان پر ہمرچز کے دروازے کھول دیے حالا تکہ یہ معلوم ہے کہ ان پر رحمت اور توبہ کے دروازے نہیں کھولے گئے تھے۔ ان کے علاوہ نکی اور مملاح اور فلاح کے دروازے بھی بہت زیادہ ہیں؟ اس کا جواب یہ ہے کہ اس آیت کا معنی اس طرح نہیں ہے ' بلکہ اس کا معنی یہ ہے کہ ہم نے رزق کی وسعت ' فوشحالی اور جسمانی صحت و سلامتی کے جو دروازے ان پر برز کردیے تھے 'بطور استدراج اور ان کو ڈھیل دسینے کے لیے ہم نے وہ

بندورواز ان إلى المول ديدان كي نظيران آيت بن به و منا ارسلسا من قرية في قرية في الآانعذا المسلمة المس

ہم تے ہب ہمی کمی مہتی ہیں کوئی تبی جمیعاتو اس بہتی والوں کو انبی کی تخذیب کی وجہ ہے ہم لے بھی اور آنگیف میں کر آثار کر لیا گا کہ وہ گڑ گڑ اگر دعا کر ہیں 'پھر ہم نے بد حالی کو فو شحالی ہے بدل دیا ' حتی کہ وہ (مال اور اولاد جس) بہت زیادہ جو گئے اور کئے گئے ' ہمار کے آباء و اجداد کو بھی آنگیف اور راحت میں ماحت ہیں داست کی اور اولاد جس کی تکلیف اور راحت میں کیا در آنمالیک ان کو شخو رہد تھا۔

ادریں انہیں و میل دیتا ہوں ' بے شک میری تخفیہ تدبیر

والميني كهو إنّ كَبْدِي مَينبُنَ

(الاعراف: ۱۸۳ من مطيوط ي-

محرین مضور حارثی نے کہاہے کہ اللہ تعالی نے ان سبتی والوں کو جیں سال مسلت وی تھی۔ ابن جریج نے کہاکہ وہ خوشخال جی مغرور تھے کہ اچانک ان پر عذاب آمید ابن زید نے کہا مبلس وہ مختص ہے جس پر ایک معیبت آجائے جس کا تدارک نہ ہو تھے۔ یااس پر ابیاعذاب آئے جس ہے بچاتی نہ کیا جاسکے۔ (جامع البیان 'جزے' ص۲۵۵۰۲۵۱'مغبور داد الفکو' بیروت)

الم احدين منبل متونى الاله ودايت كرت ين:

دعرت مقب بن عامر جریز بیان گرتے ہیں گہ نی جہر نے فرایا جب تم یہ دیکھو کہ اللہ تعالی بندوں کو ان کے گناہوں کے باوجود ان کے مطابق عطا فرمار ہاہے 'تو یہ صرف اللہ تعالی کی طرف ہے ان کے لیے استدراج اور ڈھیل ہے 'چر آپ لے بیر آپ تا تا دراج اور ڈھیل ہے 'چر آپ لے بیر آب تا تا دراج اور ڈھیل ہے 'جو ان کو کی گئی تقی تو ہم نے ان پر ہر چیز کے دروازے کھول دیئے اللہ یہ استدامی 'جرجب وہ اس فعیمت کو جمول کے جو ان کو کی گئی تقی تو ہم نے ان پر ہر چیز کے دروازے کھول دیئے (اللہ) (سندامی 'جرجہ رقم الدیث بھی استدامی استدامی مطبوعہ دارالعکو 'جروت 'طبع جدید 'ساساعہ)

علامہ قرطی لکھتے ہیں ، حسن نے کماجس مخص پر بھی القد نے دنیاد سے کردی ہے ، اور اس کویے فوف نہ ہو کہ اس کو ذھیل
دی گئی ہے تو اس مخص کا عمل ناقص ہو گا اور اس کی فکر ردی ہو گی اور جس مخص ہے اللہ نے دنیا کی وسعت روک لی ہو اور اس
نے اس منتی میں خیر کا گمان نہ کیا ہو اتو اس مخص کا عمل بھی ناقص ہو گا اور اس کی فکر ردی ہوگی اور مدے ہیں ہے کہ اللہ تعالیٰ
نے حضرت موئی علیہ اسلام کی طرف وی کی جب تم فقر کو اپنی طرف آناد کھو تو نیک نوگوں کی طرح مرمبا کو اور جب تم غزا کو
انی طرف آناد کھو تو کو یہ آزائش ہے جس میں مجھے جتا کیا گیا۔

(الجامع لاحكام القرآن '١٦ م ٢٣٣ مطبور داو الفكو ' يروت ١٥١٥ ه)

 كك دى كى اور فراياتهم تعريض الله ى كے ليے بين جو تمام جمانوں كارورد كارے العنى كال شاء اور كمل شكر الله رب العامين کے لیے ہے ، جس نے اپنے رسولوں پر اور اپنی اظاعت کرنے والوں پر افعام فریایا اور ان کو اپنے کالف کافروں کے خلاف ولا کل اور برامین سے غلبہ عطا فرمایا اور کافرول کو ان کے کفراور رسولول کی محقیب کی وجہ سے جس عذاب کی وعید سال تھی وہ عذاب ان پر ہزل کر دیا اور اپنی وحمید کو سچا کر دیا۔

الله نتحالي كاارشاد ب: آپ كئے يہ بتاؤا أكر الله تمهارے كان اور تمهاري الحميس لے جائے اور تمهارے دلوں پر مهر نگارے تو اللہ کے سواکوئی معبود ہے جو یہ چیزیں تسارے پاس لے آئے ویکھتا ہم کس طرح بار بار واد کل بیان کرتے ہیں 'پمر

(بھی)وہ رو کر والی کرتے ہیں۔ (الانعام: ١٠٠١)

الله تعالى كے مستحق عبادت موتے ير دليل

اس آبت سے اللہ تعالی کی عکیمانہ خالقیت پر استدالال کرنامتعمود ہے " کیونکہ انسان کے اشرف الامعناء کان آئمیس اور دل ہیں۔ کان قوت مامد کا عل ہیں ' آ تکسیں قوت یامرہ کا عل ہیں اور دل حیات ' عمل اور علم کا محل ہے۔ اگر ان اعضاء سے ب مغلت زائل ہو جائیں تو انسان کے حواس اور اس کی کار کردگی کافظام فاسد ہو جائے گااور دہ دین د دنیا کے فوائد حاصل کرنے ہے محروم ہو جائے گااور یہ بابداہت معلوم ہے کہ جس ذات نے ان قونوں کو پیدا کیااور ان کو زائل ہوتے سے محفوظ ر کھاہے 'وہ الله كے سواكوئي نميں ہے اور جب يہ معلوم ہوكياك ان معيم الشان اور عالى قدر نعتوں كادينة والا صرف الله سماند و تعالى ب و پرید کمناواجب ہے کہ تعظیم 'شاء اور مباوت کا مستحق بھی صرف اللہ تعالی بی ہے اورید اس پر داالت کر باہے کہ بتوں کی عباوت كرناباطل اور فاسد طريقه ب

اس آیت میں فرملیا ہے آگر وہ تممارے دنوں پر مرنگادے۔اس کا ایک معنی یہ ہے کہ اللہ کافروں کے دلوں پر مرنگادے جس سنے دوہدایت کونہ سمجھ سکیں اور اس کاروسرا معنی ہے ہے کہ اللہ تعالی ان کی مقلوں کو بانکل زائل کردے اور وہ یا گلوں اور مجونوں کی طرح ہوجا تیں اور اس کا تیسرامعنی ہے ہے کہ اللہ ابن کے دنوں کو مردہ کر دے۔

الله تعالى في ملا ب ويمية اجم من طرح بار ولا كل بيان كرت بين ميني مجى بم السي الى تعتيل باد ولاكران كو ايمان لاك كى ترخيب دية بين اور مجى النين بجيلى امتون كاعذاب ياد ولاكرؤرات بين اور مجى اس بات سه درات بين كه أكر ہم چاہیں تو تمارے اشرف الاعضاء كو معطل اور بے كار كروي " ماك تم ايمان لے آؤ اور مجى اپني الوہيت كدرت اور توحيدي ولا كل يش كرت ين كرتم أن ولا كل مد متاثر موكر ايمان لے آؤ۔

الله تعالى كاارشدى: آب كئية بناؤاأكر تسادي إس الإنك إنحلم كملاالله كالنزاب آجائة وظالم يوكول كرسوا اور کون ہلاک کے جائیس کے۔(الانعام: عم)

کا فروں کے عمومی عذاب میں' آیا مومن بھی مبتلا ہوں کے یا نہیں؟

اس ہے پہلی آیت میں اللہ تعالی نے انسان کے صرف اشرف الاصناء کو زائل کرنے کی وعید سنائی تھی اور اس آیت میں عمومی عذاب کی وعید سال ہے۔ خلاصہ یہ ہے کہ عذاب خواہ کسی متم کا ہو "اللہ سبحانہ و تعالیٰ کے سوااس عذاب کو کوئی دور کرنے والانسي ب- اي طرح فوال كمي تم كي فير عو الله عرو جل كرسوائس كاكوئي عطاكر في والانسي ب- اس آعت شي عذاب كي دو تتمیں بیان قرمائی ہیں۔ اچانک اور تھلم کھلا اکیو تک یا تو عذاب کی پہلے علامتیں تمود ار ہوں گی یا پینٹی علامتوں کے بغیر عذاب آئے گا۔ ٹائی الذکر اچانک عذاب ہے اور اول الذکر تھلم کھلاعذاب ہے۔ ٹانی الذکر کا اچانک ہونا کیا ہرہے اور اوں الذکر کو تھل

کملااس کے فربلاک اس عذاب کی علامتی پہلے تمودار ہو بھی تھی 'حی کہ اگر وہ اس عذاب ہے بچنا ہائے تو وہ کفراور سرکش ہے تو ہہ کرکے فی سکتے تھے۔ اس آئے بھی فربلا ہے کہ اگر سے عذاب آ جلئے تو خالم لوگوں کے سوااور کون ھلاک کیا جائے گاا اس پر یہ اعتراض ہے کہ جب بھوئی عذاب آئے گاتو پھر نیک اور بدکی تمیز نہیں رہے گی اور کافروں کے ساتھ مو من بھی بھاک ہو جائیں گے؟ اہم را تری نے اس کا یہ جواب دیا ہے کہ آگر چہ بطاہر مو من اور کافر دونوں بلاک ہوں سے لیکن حقیقت جی بلاکت صرف کفاد کے لیے ہوگی اور مومنوں کے لیے یہ ضرر تحقیم تواب اور بلند در جات کا سب ہو گا اس لیے ان کے حق جی بید ہلاکت نہیں ہے۔ لیکن میرے نزدیک اس اعتراض کا جواب یہ ہے کہ اللہ توالی کی منت جاریہ 'یہ ہے کہ جب وہ کی علاقہ کے کافروں پر حمومی عذاب نازل قربا آئے تو ایجان والوں کو وہاں ہے نکال دیتا ہے' جیسا کہ حضرت نوح علیہ السلام اور حضرت نوط علیہ السلام کی قوموں پر جب عذاب نازل فربلا تو ایجان والوں کو دہاں سے نکال نیا۔

الله تعالی کا اُرشاوہ: ہم صرف خوش خبری سنانے والے اور ڈرانے والے رسول بھیجتے ہیں۔ پھرجو نوگ ایمان لائے اور انہوں نے نیک عمل کیے توان پر نہ کوئی خوف ہو گالور نہ وہ عمکیں ہوں کے 10ور جن لوگوں نے اماری آنیوں کو جمٹا ایا ان کو اس وجہ ہے عذاب ہو گاکہ وہ نافر بانی کرتے تھے۔ (الانعام: ۴۸۰۸)

انبياء عليهم السلام كامقرر شده كام

اس آیت کا معنی ہے کہ ہم رسولوں کو صرف تر خیب اور تر ہیب کے لیے بیجیج ہیں۔ وہ و تیا بی رزق کی وسعت اور آخرت میں تواب کی بشارت دیتے ہیں۔ قر آن مجید کی ڈرکور ذیل آنیوں میں تر خیب اور تر ہیب دولوں کی مثامیں میں۔

وَلُوْاَنَّ اَهُلَ الْعُرْى أَمْسُوا وَاتَّفَوْا لَفَعَتُ الْمُسَوَّا وَالْفَوْا لَفَعَتُ الْمُسُوا وَالْفَرْصِ وَلَيكُ عَلَيْهِمُ بَرَكُتِ بِنَ النَّسَمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَيكُ عَلَيْهِمُ بَرَكُ بُوا فَاخَذُنْهُمْ بِمِنَا كَانُوا بَكُرسِبُونَ 0 كَذَبُوا فَكُرسِبُونَ 0 أَفَا مَنْ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ

اور آگر بہتیوں والے ایمان کے آتے اور (افد سے)

ڈریٹے قو ہم ان پر ضرور آسان اور ذشن سے پر کتیں کول

دینے کی انہوں نے (رسولوں کی) کلفرسب کی قو ہم نے ان

کے کر قوق کی وجہ سے ان کو گرفت میں لے لیاں کیا بہتیوں

والے اس سے خوف ہیں کہ واقوں رات ان پر عذاب آ

جاے در آنحالیک وہ سود ہے ہوں۔

خلاصہ بیہ ہے کہ ہم نے رسولوں کو اس لیے بھیجا ہے کہ وہ خوشجری سنا کمی اور ڈرا کمیں۔ اس لیے نمیں بھیجا کہ کفار ان

ہمن مانے اور فرضی مجولت طلب کریں۔ انبیاء علیم السلام صرف ان ہی مجولت کو پیش کرتے ہیں جن کی اللہ تعالی کی طرف سے اجازت ہوتی ہے اور کمی انسان کی تسلی اور اطمینان کے لیے جس قدر مجولت کی ضرورت ہوتی ہے وہ اللہ تعالی انبیاء علیم السلام کو عطا فرا دیتا ہے اور جو محض ان مجولت کی وجہ ہے انبیاء علیم السلام کی تصدیق کرتا ہے اور جو محض ان مجولت کی وجہ ہے انبیاء علیم السلام کی تصدیق کرتا ہے اور نیک اعمال کرتا ہے وہ اللہ تعالیٰ کی ان کو عظر فرا دیتا ہے وہ بود انبیاء علیم السلام کی تحذیب کی اور اللہ تعالیٰ کی افریان کی آخرت میں عذاب ہوگا۔

الله تعالی کاار شاوی: آپ کئے کہ میں تم ہے یہ نمی کتاکہ میرے پاس اللہ کے قرانے ہیں اور نہ میں از خود نمیب بانتا ہوں اور نہ میں از خود نمیب بانتا ہوں اور نہ میں قرشتہ ہوں میں صرف ای جزی پیروی کر تا ہوں جس کی میری طرف وحی کی جاتی ہے۔ آپ کئے کیا اند ها اور و کیمنے والا برابر ہے کیا تم خور نمیں کرتے۔ (الانعام: ۵۰)

نی ﷺ سے ندرت 'علم غیب اور فرشتہ ہونے کی گغی

اس تیت کامعنی یہ ہے کہ آپ اپنی نوت کے محروں سے کئے کہ جس تم سے یہ نہیں کمتاکہ جس خدا ہوں جس کی ملک میں آسانوں اور زمینوں کے فزانے میں اور نہ میں تم سے مید کتا ہوں کہ میں از خود ایسے فیب کو جائیا ہوں جن غیوبات کو اللہ تعلل کے سوااز خود کوئی نہیں جانا 'حق کہ تم میرے دعویٰ نبوت کی محذیب کرو 'کیونکہ خدا دی ہو سکتا ہے جس کی ملکت میں كائتات كى برچز بولور جس كے علم سے كوئى چز مخفى نہ بولى يعنى جس كاعلم اور اس كى تدرت كال بوغداوى بوسكتا ہے اور نہ ميں نے تم ہے ہے کما ہے کہ جس فرشتہ ہوں کیونکہ جس تم کو د کھائی دیتا ہوں اور فرشتہ عام انسانوں کو د کھائی نہیں دیتا۔ جس نے تہیں التر تعالى كى طرف سے جو پيغام سنايا ہے يہ وى ہے جس كى ميرى طرف وتى كى گئى تقى۔ بيں مرف وتى الى كى بيروى كرتا ہوں ' میں نے جو دعویٰ نبوت کیا ہے اس پر میں نے اللہ کی طرف سے توی اور معظم دلیس چیش کی بیں۔ یہ کوئی نیادعویٰ نہیں ہے اور نہ عمل کے ظاف سے۔ اے محما میجیم آپ کئے میاوہ لوگ جو حق کو اور دلا کل کو دیکھنے سے اندھے ہیں وہ اور وہ نوگ جو ولائل کو دیچے کرحتی کا عراف کر لیتے ہیں ' دونوں برابر ہو کتے ہیں؟ کیاتم لوگ میرے دمویٰ کی سچائی اور اپنی محذیب کے فساد پر فور شيل كريد؟

الم فخرالدين محمرين ضياء الدين عمر دازي متوفى ١٩٠٧ه لكمية من اس آیت کے تین جملے در اصل مشرکین کے تین سوالوں کے جواب میں:

ا۔ مشرکین سے کہتے تھے کہ اگر آپ دافعی اللہ کے رسول ہیں تو آپ اللہ سے ہمارے لیے دنیا کے منافع اور امچھائیاں طلب كري اوريد كه الله المارك لي معادلول كه دروازك كمول دع أو الله تعالى في فيالا بان سه كف كه من تم عديه نيس كتاك مركياس الله ك فرائع يسد الله تعالى بس كو جابتا ب كك مطاكر آب-ده بس كو جابتا ب عرت ديا ب اور بس کو جابتا ہے ذات رہتا ہے۔ قیرای کے باتھ میں ہے میرے باتھ میں نسیں ہے۔ (فرانہ کامعنی ہے ایس حفاظت کی جگد جمال لوگوں کے ہاتھ نہ پہنچ سکیں)

۲- مشرکین سے کتے تھے کہ اگر آپ در حقیقت رسول میں تو آپ ہمیں سے بتائیں کہ مستعبل میں کیافائدے ہوں کے اور کیا نقسانات موں مے؟ آ كر بم فوائد ماصل كرنے كى تيارى كريں اور نقسانات سے محفوظ ديس - اللہ تعالى نے قربايا آپ ان سے كئے كہ بيس (از خود) غيب كو نهيں جانا او تم جھدے ان امور كاكيے مطابہ كرتے ہو؟

س۔ مشرکین میر کئے تنے کہ میر کیسار سول ہے جو کھٹا بھی کھا آہے اور بازاروں میں چلاہے اور شاوی کر آہے اور لوگوں کے مائد رہتاہ؟اللہ تعالى نے فرلما آپ ان سے كئے كه يل فرشتوں على سے تعلى مول-نی ﷺ سے قدرت اور علم غیب کی تغی کا محمل

الله تعالی نے تی سیجیر ہے ان تین امور کی نفی کرائی۔ اس نفی کرانے میں کیا حکمت ہے؟ اس کے متعلق حسب ذیل الرّال ين:

(الف) اس سے مرادیہ ہے کہ نبی بڑی اپنی طرف سے اللہ کے سامنے تواضع اور خضوع کا اظہار کریں " آکہ اوگ آپ کے متعلق وہ اعتقادنہ کرلیں جو حضرت مسے علیہ اسلام کے متعلق کیا گیا تعال

(ب) کفار مک آپ ہے بہت ڈیروست مجزوں کے اظہار کامطابہ کرتے تھے۔وہ کتے تھے ہم آپ پر ہر گز ایمان شیں مائیں ے وجی کہ آپ ہمارے کے ذیبن سے کوئی چشمہ جاری کردیں یا آپ کے لیے مجوروں اور انگوروں کاکوئی باغ ہو مچر آپ اس ے درمیان سے کوئی دریا جاری کردیں یا جساکہ آپ کتے ہیں آپ آسان کو کوئے کوئے کرکے ہادے اوپر گرادیں یا آپ الله اور فرشنوں کو ہادے سائے ہے جباب لے آئیں یا آپ کا سونے کا گھر ہویا آپ آسان پر چڑھ جائیں اور ہم آپ کے چڑھنے پر بھی ایکان تبین لائیں گے 'حق کہ آپ ہم پر آیک کتب نازل کریں جے ہم پڑھیں۔ آپ کئے جرا رب بھان ہے۔ ہیں تو مرف بھر ایس کے مرف ہوں اور جن امور کو تم طلب کر رہ ہوا ان کو مرف بھرات کا واللہ کی قدرت کے بغیر مامل کرنا ممکن نہیں ہے۔ سواس کام سے مقصود یہ ہے کہ جن مجرات کا تم مطابہ کر رہے ہوان کو مامل کرنا ممکن نہیں ہے۔ سواس کام سے مقصود یہ ہے کہ جن مجرات کا تم مطابہ کر رہے ہوان کو مامل کرنا ممکن نہیں ہے۔ سواس کام سے مقصود یہ ہے کہ جن مجرات کا تم مطابہ کر رہے ہوان کو مامل کرنے کے لیے میرے ہی مسئول قدرت نہیں ہے۔

(ع) بی تم تم سے یہ نہیں کتا کہ میرے پاس اللہ کے ترانے بیں اس کامعنی بیہ ہے کہ جی یہ دعویٰ نہیں کر تا کہ میرے پاس ایک قددت ہے جو اللہ تعالیٰ کے ثابان ثان ہے اور تہ جی خیب جانا ہوں اس کامعنی یہ ہے کہ جی بید دعویٰ نہیں کر تا کہ بن اللہ کے علم سے متصف ہوں اور ان دونوں جملوں کا حاصل بیہ ہے کہ جی الوہیت کا دعی نہیں ہوں۔

(تغيركير على ١ ١٥٠٤ مطبوعه داد الفكو عيروت ١٣٩٨ ١٥ مطبخ لديم)

قامنى بيناوى مونى ١٨٥ ه لكعة بن

یں تم سے یہ قبیل کتاکہ میرے پاس اللہ کے ترافے ہیں اس کا سن یہ ہے کہ میں یہ قبیل کتاکہ میرے پاس اللہ کے مقد درات اور اس کے فرانے ہیں۔ اور میں فیب نہیں جاتا اس سے مراویہ ہے کہ جس فیب کی میری طرف وہی نہ کی جائے ' یا جس فیب پر دلیل (عقلی یا سمی) قائم نہ ہو اس کو میں نہیں جاتا ' یا میں تم ہے یہ نہیں کتاکہ میں فرشتوں کی جنس ہے ہوں یا جن کا مول پر قرشتہ قادر ہیں ان پر میں قادر ہول۔ نی جیج نے فدا ہوئے اور فرشتہ ہوئے کے دعویٰ نے برانے کا اظمار کیا اور نبوت کا دعویٰ کیا ہو جشرے کملات ہے ہے۔

(انوار التنويل مع الكازروني مع مم ١٥٠٠ ١٥٠ مطبوعه داو الفكو ميت ١٣١٦ هـ)

علامه ميد محود آلو ي متوقى ١٠ عد اللهة من

مولانا شیخ اماسلام کا مختار ہے ہے کہ معنی ہے ہے کہ جس ہو وی نہیں کرتا کہ جس اللہ عزوج لیے افعال ہے متعنق علم نمیب
کو جائزا ہوں ' حتی کہ تم جھ سے ہے سوال کرو کہ قیامت کی وقت واقع ہوگی یا مذاب کی وقت نازل ہو گا؟ اور حضرت ابن عماس
رمنی اللہ عنمانے فربایا ہے کہ یہ فیب کفار کے انجام کے ساتھ مخصوص ہے ' یعنی میں اس کا دعویٰ نہیں کرتا اور نہ میں فرشتہ
ہونے کا دعویٰ کرتا ہوں حتی کہ تم جھے فلاف علوت افعال کا مکلف کرو' مثلاً آسان پر چڑھنے کا 'اس سے بیہ وہم نہ ہو کہ فرشتہ نبی
سے افعال ہوتا ہے کیو خکہ شیر' بھیٹرا' سائپ اور پر تدرے ایسے کام کر لیتے ہیں جو افسان فہیں کر سکیا' لیکن اس سے بید لازم نہیں
تاکہ وہ انسان سے افعال یوں۔ (دوح السانی' جے میں 20 ملور داو احیاء افراٹ العمل، جروت)

علماء دیو برند کے نزدیک علم غیب کی نغی کامحمل

اس آیت کو علاء دیوبند نے بھی اس پر محمول کیا ہے کہ نبی ہے مطلقا علم نیب کی نفی ضیس کی گئی ' بلکہ ستعقل اور بالذات علم کی نفی کی گئی ہے یا آپ ہے تمام معلومات ادلیہ کی نفی کی گئی ہے۔ شخ اشرف علی تعانوی متونی سی سیادہ اس آیت کی تغییر میں تکھتے ہیں۔

اور نہ بیں یہ کتابوں کہ میں تمام فیموں کو (جو کہ معلومات اللہ بیں) جانتا ہوں (جیسا کہ بھی بھی بطور عزاد اس تم کی یا تیں یو چھتے ہو کہ قیامت کب آئے گی؟) ابیان القرآن کے میں میں میں میں ملبور تاج کپنی لینڈ اگراچی، فع شبرام مثل موني ١١٠١١ ال آيت كي تغيري لكية بن

ینی کوئی مخص جو دی نبوت ہو اس کا بید دموی نبی ہوتا کہ قیام مقددرات المیہ کے فرانے اس کے بہندیں ہیں کہ جب اس سے محمل امری فرائش کی جائے ۔ وہ ضرور تی کر دکھلاتے یا تمام معلومات تھیبید و شاویہ پر خواہ ان کا تعلق قرائش رسالت سے ہویاند ہو اس کو مطلع کردیا گیا ہے کہ جو بچھو وہ فورانتلادیا کرے۔

التغيير حثاني يرترجمه فيخ محووالحن مص ١٤١٤

منتی محد شخص دیوبندی متونی ۱۹ سعه اس آبت کے تحت ظامر تغیر می لکھتے ہیں: اور ندیس تمام فیب کی جنون کو جانتا ہوں (جو اللہ تو الل کا خاصہ ہے)

(معارف الترآن عسم ٣٢٠ مطبويه ادار والمعارف كراحي ١١٠)

نی اللہ کے لیے علم غیب کا ثبوت

لْ لِكَ مِنْ أَنْهَا وَالْعَرْبِ نُوْجِيْهِ إِلَهِ كَ يَ يَعْبِي بِعَنْ فِرِي مِن فِيكِي مَ آبِ كَ طرف

(أل عمران: ۳۳) وي قراسة بيل

انبیاہ علیم الملام کے علم کا ایک ذریعہ وق ہے "سوجب نی مڑھ کی طرف فیب کا دی کی گئی قو آپ کو خیب کا علم ہوگی۔ چو تکہ شرح عقائد میں لکھا ہوا ہے کہ علم کے ٹین اسباب ہیں۔ دواس سلیر "خبر صادق اور مشل (شرح عقائد "ص ا) اور جب نی پڑچ کو فیب کی خبریں دی سمنی تو آپ کو فیب کا علم حاصل ہوگیا۔ قرآن جید ہیں ہے:

نِيلُكَ مِنْ أَنْهَا وَالْفَيْدِ مُوجِيهُ اللَّهِ كَ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ مِن فِي إِن فِي اللَّهِ الله على الله

(هود: ۳۹) وي فراتين-

عوى طور يرانماء عليم السلام كوفيب يرمطنع كرف كاذكران آيات مسب:

وَمَا كَانَ اللّهُ لِيُطلِعَكُمْ عَلَى الْعَيْبِ وَ الذكرية ثان نس كروه تهي فيب إر مطلع كرے إل لُكِنَّ اللّهُ يَحْتَنِي مِنْ رَسُلِهِ مَنْ يَّكَمَا أَهِ (فيب إِمطلع كرنے كے اور فين لِمَا بِ نِي جا ہے اور وہ

(آل عمران: ١٤١١] رافر كرول يل

على المعلى على المار المعلى على المار المعلى على المار المعلى المراب ال

بعض علاہ کی یہ تحقیق ہے کہ افتہ تعالی نے انبیاء علیم السلام کی طرف صراحتا علم فیب کی نبیت نہیں کی بلکہ اظہار فیب
اور اطلاع علی الغیب کی نبیت کی ہے۔ اس لیے ہوں کمنا جاہیے کہ انبیاء علیم السلام پر فیب ظاہر کیا گیا 'یاان کو غیب پر مطلع کیا
میااور جے تکہ افتہ تعالی نے اپنے فیرے علم فیب کی بلااستفاء نفی قربائی ہے 'اس لیے یوں نہیں کمنا جاہیے کہ نبی ہی ہو کہ اس خرب و تعلم خیب دیا گیا ہین عبارت میں کوئی ایسا قریزہ ہو جس سے معلوم ہو کہ اس علم سے

غييان القر أن

مراد عطائی ہے واتی سی ب

الم احد رضا قادري متونى ومساعد لكعة بين: ٠

علم جب كه مطلق بولا جائے خصوصا جب كر فيب كى طرف مغلف بولة اس سے مراد علم ذاتى بولا اس كى تصريح حاثيد كشاف پر ميرسيد شريف رحمة الله عليد في كرد كه كه اور بدينينا حق سيد كوئى فخص كى ظلوق كے ليے ايك ذره كاجى علم ذاتى الے يقيناً كافر بدر المانوظ عن من مرك من مطبور نورى كت خانه كابور)

الم احدر منا قاوري كاس مبادت يذكور العدر حقيق كى تائيد موتى ب-

مفتى عمر شفي ديوينرى حولى ١٩١٠ و الكيدين

اس معالمہ میں مسلمان کو گلام نہیں ہو سکنا کہ اللہ تعالی نے رسول کریم بھی کو قیب کی بزاروں لا کھوں چیزوں کا علم
عطا فرہایا تھا' بلکہ تمام فرشتوں اور اولین و آخرین کو بھتا علم دیا گیا ہے 'من سب سے ذیاوہ حضور بھیزو کو علم عطا فرہایا گیا ہے۔ ہی

ہوری است کا عقیدہ ہے۔ بل آس کے ساتھ ہی قرآن و سنت کی ہے شار تقریحات کے مطابق تمام ائر ہسلف و خلف کا یہ بھی
عقیدہ ہے کہ تمام کا نکامت کا علم محیط صرف حق تعالی شانہ کی مخصوص صفت ہے۔ جس طرح اس کے خالق و رازق تاور مطانق
ہونے بھی کوئی فرشتہ یا رسول اس کے برابر نمیں ہو سکنا' اسی طرح اس کے علم محیط میں بھی کوئی اس کے برابر نمیں ہو سکت ہی ۔
لیے اللہ تعالی کے سواکسی فرشتہ یا تیٹے برکو لا کھوں چیزس معلوم ہونے کے باوجود عالم الغیب نمیں کما جا سکتا۔

(معارف القرآن مج مع مع ٣٠٨ مطيوير اوار ةالمعارف اكراحي ١٣١٣ هـ)

نی چیر پر عالم الغیب کے اطلاق کاعدم جواز

اکارے نزدیک وسول اللہ مرابی کے لیے علم غیب تابت ہے۔ اس کے باوجود اعادے نزدیک آپ پر عالم الغیب کا اطلاق جائز نسیں ہے "کیونکہ عالم الغیب کا لفظ عرف اور شرع میں اللہ تعلق کے ساتھ مختص ہو چکا ہے۔ اس کی نظیریہ ہے کہ عجر عزوجل کمنا جائز نسیں ہے " ملائکہ آپ عزیز و جلیل ہیں۔ اس طرح اللہ جارک و تعالی کمنا جائز نسیں ہے " ملائکہ آپ بابر کت اور بلند ہیں "کیونکہ عرف اور شرع میں عزوجل اور تبارک و تعالی کے الفاظ اللہ تعالی کے ساتھ مختص ہیں۔

الماحررشاتونى معسد كليدين

تخوق کو عالم الغیب کمنا کرده اور یول کوئی حرج نمیس که الله کے بتائے ہے اسور خیب پر انسیس اطلاع ہے۔ (الامن والعلق میں ۱۳۰۳ مطبوعہ نوری کتب خانہ الاہور)

مولانا مردار احر متوفى ٨٣ مد لكمة بين

لفظ عالم الغیب کااطلاق ہم بھی عرفاً فیرخدا عزوجل پر نہیں کرتے۔(مناظمویر لی میں ۱۰ مطبوعہ المکتبہ الحامدیہ 'لاہور) ہم نے الجی کتاب مقام ولایت و نبوت میں علاء اہل سنت ہور خصوصاً علاء دیوبند کی بکٹرت عمارات چیش کی ہیں۔جن میں محلوق کی طرف علم فیب کی نبیت کی تمنی ہے۔

ئی مڑھیں کے علم غیب کے متعلق اہل سنت کا مسلک امام احمد رضا تلوری متونی میں جیسے لیستے ہیں:

ا- بالشبه غير فداك ليه ايك ذره كاعلم ذاتى نيس مهس قدر خود ضروريات دين سے باور محر كافر

۲۰ بلاشه غیرخدا کا علم معلومات اللیه کو ملوی نسی او سکله مسلوی تو در کنارتمام اولین و آخرین و انبیاء و مرسلین و ملائکه

غيان انقر ان

۳- بوشی اس پر اجماع ہے کہ اللہ عزوجل کے دیئے ہے انبیاء کرام علیم العلوقة والسلام کو کثیر و وافر فیروں کاعلم ہے۔ یہ محمود مات ہے انبیاء کرانے میں مادوریات دین ہے ہواس کا سحر ہو کافر ہے کہ سرے سے نبوت می کا سحر ہے۔

م ۔ اس پہمی اجماع ہے کہ اس فغل جلیل جس تھے دسول اللہ عظیم کا حصد تمام انبیاء اتمام جہاں ہے اتم واعظم ہے۔ اللہ عزوجل کی عطامے حبیب اکرم عظیم کو استے فیموں کا علم ہے جن کا شار اللہ عزوجل بی جانتا ہے اسلمانوں کا بیمال تک اجماع تھا۔

(خالص الاعتقاد مح ٣٨٠٣٩ مطبوعه مطبح ابل سنت بريل ١٣٣٨ه)

کیانی پڑنے کا تباع دخی کرنا آپ کے اجتماد کے منافی ہے؟ اس آعت کے آفری ہے اآپ کئے کہ بھی مرف ای جز کی ہے وی کرنا

اس آمت کے آخریں ہے (آپ کئے کہ) جس صرف ای چیزی پیروی کر آاموں جس کی میری طرف وقی کی جاتی ہے' آپ کئے کیا ند حااور دیکھنے والا برابر میں کیاتم خور نسیں کرتے۔(الدنعام: ۵۰)

الم فرالدين محمد مررازي متوفى العلاء اس آيت ك تحت لكيمة بين:

اس آبت میں تصریح ہے کہ نی میں اپنی طرف ہے کوئی تھم نہیں دیتے تھے اور آپ اجتماد نمیں کرتے تھے اللہ آپ کے تمام انظام دمی ہے صادر ہوتے تھے۔ اس کی تائید قرآن مجید کی اس آبت ہے بھی ہوتی ہے:

وَ مَا يَسْطِنَى عَي الْمَهُوى ١٥ وَمُمّوا لا وَحْدَى اوروه افي فوابش عام نس كرت ان كاكام كرا

يَوْسِلي ٥ مرفودوي عبوان كي طرف كي حاتى بهدا

اور جب ہی جہر اجتماد نمیں کرتے تو امت کے لیے ہی اجتماد جائز نمیں ہے کی تک اللہ نقائی نے آپ کی اجاع کرنے کا عظم دیا ہے ' بلکہ ان پر فاذم ہے کہ صرف وی الی کی اجاع کریں۔ پھر اللہ تعانی نے اس کی آ کید فرائی کیا اند ھا اور دیکھنے والا برابر بین کیو تک بغیروی کے عمل کرنا اندھے کے عمل کے قائم مقام ہے اور وی کے مطابق عمل کرنا دیکھنے والے کے عمل کے قائم مقام ہے۔ اور وی کے مطابق عمل کرنا دیکھنے والے کے عمل کے قائم مقام ہے۔ پھر فرایا کیا تم فور و نکر نمیں کرتے۔ اس سے صاحب عمل کو متنب کرنا مقصود ہے کہ وہ ان دو توں امور کا فرق سمجھے اور نافل نہ ہو۔ اتفیر کیر 'ج م' می مطبور دیلو الفکو 'بیروت ' ۱۹۸ میں۔)

نبی چیر کے اجتماد پر ولا کل

الم رازی کی یہ تغریر سیح تسیں ہے۔ نی پڑھی اور دیگر انجیاو علیم السلام کا اجتماد کرناجائز ہے اور نصوص پر قیاس کرنا بھی جائز ہے۔ سورہ انجیاء ۵۹۔ ۸۸ میں حضرت واؤد اور حضرت سلیمان طیماالسلام کے اجتماد کا ذکر ہے اور ایام بخاری نے حضرت ابن عباس رمنی اللہ مختمات روایت کیا ہے کہ ایک مورت نے جج کی تذریعان مجروہ فوت ہو گئی اس کا بھائی نبی سیتی ہے ہاس کی اور اس کے متعلق سوال کیا؟ آپ نے فرملا یہ بناؤ اگر تمساری بھن پر قرض ہو تا تو کیا تم اس کو ادا کرتے؟ اس نے کما ہی ا آپ نے اس کے متعلق سوال کیا؟ آپ نے کما ہی ا آپ نے اس کے متعلق سوال کیا؟ آپ نے کما ہی ا

فرمایا پر الله کاحق ادا کرد وه ادائیگ کے زیادہ حقد ارہے۔

(می الخاری کی از قم الحدیث المحدی المحدیث المحدیث المحدیث الحدیث الفرائی است الفرائی این المحدی المحدی المحدی المحدی المحدی المحدیث المحدیث

قرآن مجيد پيرسي:

اے صاحبان بھیرت المتبار کرد۔

مَاعَتَبِمُرُوايَالُولِي الْأَبْصَارِ الحسر،

اس آیت میں اللہ تعالی نے اختیار کرنے کا تھم دیا ہے اور اختیار کا معنی ہے ایک چیز سے دو سری چیز کی طرف نعنی ہو تااور یک معنی تیاس میں بھی متحقق ہو تاہے "کیو تکہ قیاس میں اصل کے تھم کو فرع کی طرف خطل کرتے ہیں۔ مقاضی الدالخہ علی اللہ میں تاہم میں قیل مدور کلکہ یہ

قامني ابوالخير عبدالله بن عمر بيناوي متونى ١٨٥٥ ولكي بين

اس آیت سے قیاس کی قیمت پر استدال کیا گیاہے ، کیونکد اس آیت میں ایک مل سے دو مرے مل کی طرف تجاوز کرنے کا تھم دیا گیا ہے اور دو چیزوں میں مشار کت کی وجہ سے ایک کا تھم دو مرے پر لاگو کرنے کا تھم دیا گیاہے اور می قیاس ہے۔(انوار النسو مل علی حامش مختلیۃ القاضی مجمد میں ۱۱۲۵ء) مطبور دار صاور میروت)

علامه شماب الدين خفاجي متوفى ١٠٧١ه لكسية بن:

اس آیت میں بھیں اختیار کرنے کا تھم دیا ہے اور اختیار کا معنی ہے کسی چڑکو اس کی نظیر کی طرف اوٹاٹا ہیں طور کہ اس شے پر اس کی نظیر کا تھم عائد کیا جائے اور یہ اختیار نصیحت حاصل کرنے 'قیاس شری اور قیاس بنوی کو شامل ہے اور یہ آبت نصیحت حاصل کرنے پر عبار ہ "اور قیاس پر اشار ہ" دلائت کرتی ہے۔(عملیہ القاشی 'ج۸' صوبہ کا مطبور دار صاور 'بیردت) صحابہ کرام کے اجتماد میر دلا کل

م بکفرت امادیث میں سحابہ کرام رمنی اللہ منم کے اجتناد کا ذکر ہے۔ حضرت عبد اللہ بن عمرہ بن العاص ایک مرد رات میں جنبی ہو گئے۔ انہوں نے اجتماد کر کے خسل کی بجائے تیم کر لیا تنی پیچیز ہے اس کا ذکر کیا گیاتہ آپ نے ان کو ملامت نہیں گ۔

إسمح البعاري مناب اليم إبد)

اور امام او ميسلي محدين ميسلي ترقدي متوني ١٥٥ مد روايت كري ين:

حطرت معللہ بر بینے بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بینی نے حضرت معلہ کو یمن کا قاضی بناکر بھیجا اور پوچھاتم کس طرح فیصلہ کرد کے؟ انسوں نے کہا ہیں کتاب اللہ سے فیصلہ کروں گا۔ آپ نے فرایا اگر کتاب اللہ ہیں تصریح نہ ہو؟ انسوں نے کہا پھر میں رسول اللہ بینی کی سنت سے فیصلہ کروں گا۔ آپ نے فرایا اگر رسول اللہ بینی کی سنت ہیں تصریح نہ ہو؟ انہوں نے کہا پھر میں اپنی رائے سے اجتماع کروں گا۔ آپ نے فرایا اللہ تعالی کی جر ہے جس نے رسول اللہ بینی کے نمائندہ کو توفق عطاک۔ میں اپنی رائے سے اجتماع کروں گا۔ آپ نے فرایا اللہ تعالی کی جر ہے جس نے رسول اللہ بینی کے نمائندہ کو توفق عطاک۔ استان افتر ندی میں اللہ ہے۔ اور قم الحدیث الاوراؤ و میں واؤ و میں میں اور اور میں میں اور اور میں اللہ میں اور

حضرت ابو ہررہ ویشی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ جیجیز نے فرملا بب ماکم احتفادے تھم کرے اور صحیح تھم دے تواس کے لیے دواجر ہیں اور جب وہ تھم میں خطاکرے تواس کے لیے ایک اجر ہے۔

(سنن ترذی کی جس و قم الحدیث: ۱۳۳۱ میچ البخاری کی اوقم الحدیث: ۱۳۵۰ میچ مسلم افغنید ۱۵(۱۲۱۱) ۲۳۰۰ سن ایوداؤد ا جس و قم الحدیث: ۲۵۷۳ سنن این ماجد کی ۳ و قم الحدیث: ۲۳۱۴ سنن کبری دانسانی ایجس و قم الحدیث: ۵۹۱۸) آپ کاوجی کی اتباع کرنااجتهاد کے منافی نہیں ہے

قرآن مجید اور اصافت محجہ ہے یہ عابت ہوگیاکہ نی بھیر نے اجتماد کیا ہور آپ نے محابہ کرام کو اجتماد کرنے کی ہدائت ہی کی ہے۔ اب رہا یہ اس آجہ میں ہے "میں صرف ای بیزی بیری کر آبوں جس کی میری طرف وی کی جاتی ہے "اس کی کیاتوجیہ ہے ؟ اس کا بواب یہ ہے کہ اس آجہ کا معنی ہی ہے کہ میں قرآن مجید میں اپنی مرض ہے کی نہیں کتا میں اس می کیاتوجیہ ہے ؟ اس کی کیاتوجیہ ہے ؟ اس کی اجام کر آبوں۔ دو مراجواب یہ ہے کہ نی بھیری نے اپنے اجتماد ہے جو ادکام دیے ان کی مرف اللہ کی دی ہے ہوگئی کو جمل ایک میں دیا ان کی مرف اللہ کی دی ہوگئی کو جگہ جب آب ادکام دے دے اس دقت زول وی کا زبانہ تھا۔ اگر آپ کے ادکام میں دیا ہوتی تو اللہ تھا۔ آگر آپ کے ادکام میں دیا ادکام میں دیا اس کی احتماد ہے اس کی اصلاح فرا دیا اور جب ایک مرف اس کی احتماد ہے اس کی احتماد ہوا کہ آپ کے احتماد ہے انہا کہ کی کر دے بھے۔ ادکام می خواد کام می کو برقرار رکھا تو معلوم ہوا کہ آپ کے احتماد ہے انہا دی گر دے بھے۔ ادکام می خواد کام می خواد ہو گئی گئی مامل تھی تو گویا آپ می کے احتماد ہے انتہاد ہے گئی کر دے بھے۔

اجتناد کی تعریف

الام فرال نے اجتلاکی یہ تقریف کی ہے احکام شرمیہ کا علم حاصل کرنے کے لیے مجتمد کا اپنی طاقت کو خرج کرتا۔ (المستعنی ع ۴ م ۳۵۰)

علامہ آمدی نے کمااحکام شرعیہ میں ہے کمی تھم شرقی کا تخن غالب حاصل کرنے کے لیے اتنی کو شش کرنا کہ اس ہے۔ 'زیادہ کو شش ہے تنس عاجز ہو۔ (الاحکام 'جسم میں ۱۲۹)

قامنی بیناوی نے کمااد کام شرعید ماصل کرنے کے جدوجد کرفا۔

(الماية المنول على معم معلى الابعاج على معم الابتاع اص ٢٦٥)

علامداین علم نے کمانتم شری تلنی کو حاصل کرنے کے لیے فتیہ کا چی طاقت کو فرج کریا۔ (تیمیر التحریر 'ج م' می ایرا) ان تعریفات میں طاقت فرج کرنے 'جدوجہ در کرنے اور کو شش کرنے ہے مرادیہ ہے کہ مجتند علمی اور ذبنی کو شش کرے اور جس فیٹر آمدہ مسئلہ کا تھم معلوم کرنا ہے ' قرآن مجید 'احادیث اور آفاد محلبہ میں اس کی نظائر خلاش کرے اور اصل اور فرع فیل علمت مشترکہ نکالے اور اس میں غور کرے کہ جس مسئلہ کو وہ قیاس سے معلوم کر دیا ہے 'کمیں وہ صراحتا 'کنب و سنت میں منصوص تو نہیں ہے۔

نی پڑچ کے اجتماد کے متعلق علماء اسلام کے غراجب

علاء اسلام کااس پر اجماع ہے کہ دنیاوی مصلحوں اور جنگ کی تدبیروں اور ان جیے اسور میں نبی ہے ہے کا اجتماد کرنا جائز ہے اور آپ نے ان اسور میں اجتماد کیا بھی ہے۔ ابن حرم نے اس کی یہ مثل دی ہے کہ نبی ہے ہیں نے مدید کے تمائی کھل دے ک

غيارً القر أن

معفان سے ملح کاارادہ کیااور یہ میل ہے کو تک آپ کے لیے جائز ہے کہ آپ اپنال سے جس کو جائیں ہد کرویں۔ای طرح جب مسلمانوں نے مجوروں میں پیداوار کی کی شکایت کی تو آپ نے مجوروں میں پوند لگانے کا عظم دیا کیونک ہر فض كرية جازب كروه الى مجورين بوعد لكائياند لكك كور الكام شرور بن آب ك اجتلوك متعلق اختلاف بكرجن چزوں میں نصوص دارد نمیں ہیں ان میں آپ کے لیے اجتناد کرناجائز ہے یا نمیں۔ بعض علاد کے نزدیک آپ کے لیے اجتناد کرنا جائز نہیں ہے ، بعض کے زدیک آپ کے لیے اجتماد کرنا جائز ہے اور بعض نے اس منلہ میں تو تف کیا ہے۔ ئی ﷺ کے اجتماد کے عدم جواز کے قاعمین

امتازاد معور کا دہب یہ ہے کہ نی بھی کے لیے اجتاد کرنا جائز نیس ہے کو تک آپ کو نص کے صول پر قدرت -- قرآن مجدي عان هو الاوحى يوحى الخريم، ال كاكام كرة مرف ددوى عدوى عرفن كى طرف كى جاتى بابن وم كالجى كى مخارب-ان كى دليل يدب كروب في ويور عدون كى ذكوة كم معلق موال كياكياة ابدخ فرمايا جمدي ان کے معلق کوئی تھم نازل جیس موا۔

(مح البلادي مع من قر الدعث: ٢٨٦٠ مح مسلم "زكوة " ١٢٥ (١٩٨٤) ٢٢٥٣ سنن نسائي عم" و تم اللاعث: ٣٥٦٣) نی بڑی سے بسب کی کام کے متعلق سوال کیاجا آت آپ وی کاانظار فرائے تے اس سے معلوم ہواکہ آپ کے لیے اجتلو کرنا جائز نمیں تلے پر ایک قال یہ ہے کہ آپ کے لیے اجتلو کرنا مقلا متنع ہے۔ یہ اہم الحرمین کا قول ہے جس کو انہوں نے تنخیص میں لکھا ہے اور ابو علی اور ابو حاشم کا غیر ہب یہ ہے کہ آپ اجتمادے عبادت نمیں کرتے تھے۔

نی پڑھ کے اجتماد کے جواز کے قاعمین

الم شافع 'الم احر 'اکثر ما کید ' قامنی ابو یوسف اور جمهور کاغذ بهب یه به که دمارے نبی سیدیا محمد پیچیز الور دیگر انبیاء علیهم اسلام کے لیے اجتماد کرنا جاز ہے۔ ایام شافع نے "ارسالہ" میں اس رہددلیل قائم کی ہے کہ جس طرح اللہ تعالی نے اپنے اور بندوں کو قدر اور اعتبار کرنے کا علم دیا ہے اور ان کے لیے مثالیں بیان فریائی ہیں اس طرح ہی مدید کو بھی مدیر اور تظر کرنے کا تحم دیا ہے 'بلکہ آپ اللہ تعالی کی آیات میں سے زیادہ فور و فکر کرنےوالے میں اور سے زیادہ اعتبار کرنے والے ہیں اور الله تعالى كاجويد ارشاد بان هو الاوحى يوحى "(التم م)ان كاكلام كرنامرف وه وي بجوان كي طرف كي جاتي ب اس سے مراد قرآن کریم ہے اور اجتناد شرق کی اجازت وی کئی ہے۔ جکی واقعات میں اس کی بعث مثالیں ہیں۔ حلانطور کو قل كرنااور بهت ے امور ين- آب نے فور و فكر كر كرو جائز كاموں على اك كو اختيار كيا ہے اور احكام شرميد على آپ كے ليے اجتلو كرناس ليے جازے كر جب امت كے ليے الكام شرعيد من اجتلو كرناجازے أو آپ كے ليے بہ طریق اولى جائز ہونا چاہے۔ کیونکہ آپ خطاعت معصوم بین اور امت خطاعت معصوم نہیں ہور اس لیے بھی کہ اجتمادے ممی تھم کو معلوم كرتے ميں منعوص علم كومعلوم كرنے كى به نسبت زياده وشوارى ہے اور جس عمل ميں زياده مشلات يوان ميں زياده ثواب ہو ماہے۔

نی چھ کے اجتماد کے متعلق توقف کے قائلین

علامه العير في في سي الرسالة " من تكعاب كريه الم شافعي كالدبب بي تكديك الم شافعي في الرسالة عن الموال نقل کے یں اور کی قول کو محار قرار نمیں دیا اور یہ کماک جس چریس نص کاب نہ ہو اور اس میں رسول اللہ سے ہی لے کسی طریقتہ کو بیان نہیں کیا' اس میں اختلاف ہے۔ بعض علاء نے کما تفتہ تعلق نے اپنی تو فق سے نبی جہز کو اس کا علم عطا فرمایا ہے

طبيان القر أن

ادر بعض علاء نے کمانی بڑی ہے ای کام کے طریقہ کو بیان کیا ہے جس کی اصل کاب میں ہے۔ اور بعض علاء نے کمانی بڑی ہے کے پاس اللہ کا پیغام آباتو نی بڑی اس بیغام ہے اللہ تعالی کے قرض اوا کرنے کا طریقہ (سنت) بیان قرماتے۔ بعض نے کمانی بیجوں نے کمانی بیجوں کے سنت ہے جمرانام شافعی نے النائخ والمنتوخ کے بیجوں کے سنت ہے جمرانام شافعی نے النائخ والمنتوخ کے بیب بین بیان کیا۔ اللہ تعالی فرما آ ہے

مَايَكُونُ لِي آنُ أُبَلِدُ لَهُ مِنْ يَلْفَاءِ مَنْ مِنْ يَلْفَاءِ مَنْ مِنْ يَلْفَاءِ مَنْ مِنْ يَلِفَاءِ مَ (بونس: ۵۹ کردول۔

یہ آیت اس پر داالت کرتی ہے کہ اللہ تعنالی نے اپنے رسول کو یہ حق دیا ہے کہ جس مسئلہ جس کتاب کا تھم ناز سنس ہوا ہے اس جس اللہ کی توقیق سے اپنی طرف سے بیان فرما کی۔ پر کما اللہ تعالی فرما تاہے:

يَسَجُوااللَّهُ مَايِشًا يُوينيُبُ الرعديه) الدُن الْالْبِيرِ اللهُ مَا الْبِيرِ اللهُ مَا اللهُ

الشرجس فرض كوجابتات مناديتا إورجس فرض كوجابتا عابت كرديا ب

آپ کے اجتماد کرنے سے متعلق الم شافعی نے بیہ متعارض دلا کل نقل کیے ہیں اس سے معلوم ہواکہ ان کار جمان تو تغف

نی میں کے اجتماد کے وقوع کے متعلق زاہب علماء

نی بڑھی ہے اجتماد کے وقوع کے متعلق چار فراہب ہیں۔ بعض علاو نے وقوع کا مطلقا انکار کیا بعض علاء نے اصول اور قواعد میں آپ کے اجتماد کرنے کا انکار کیا اور یہ کماکہ آپ فروع اور سمائل میں اجتماد کرتے تھے اور بعض نے اس میں وقت کیا۔ جنہوں نے اجتماد کو وقع کا انکار کیا انہوں نے کما تمام سنت وہی ہے 'لین یہ وہی فیر تملو ہے اور قرآن مجید وہی تملو ہے اور سنبن کے متعلق نی بڑھی نے فرملیا سنوا بھے قرآن ویا گیا ہے اور اس کی مثل اس کے ساتھ ہے۔ امام مسلم نے مصرت یعلی بن امید بڑھی سے بوچھا آپ بھی بن امید بڑھی سے دوایت کیا ہے کہ ایک محض کے جبہ پر فوشیو کے لیپ کے آفار تھے 'اس نے نبی بڑھی سے بوچھا آپ بھی بن امید بڑھی ہے کہ ایک محض کے جبہ پر فوشیو کے لیپ کے آفار تھے 'اس نے نبی بڑھی ہے بوچھا آپ بھی موجھا کی میں اور ایک کرنے کا چکم دیتے ہیں؟ اس وقت نبی بڑھی پر وہی نازل ہوئی 'آپ کے اور کی گراڈال ویا گیا۔ محرت بعلی کی یہ فواہوں کو اور ایک طرف بنائی قو صفرت بعلی کی یہ فواہوں ان کو اور نہ کی بڑھی کے دور اور بوگی تو آپ نے فرمایا اس فوشیو کے اثر کو دھو ڈانواور ان کو اور دور پوگی تو آپ نے فرمایا اس فوشیو کے اثر کو دھو ڈانواور ان کو اور دو کھی جھی کرتے بوٹر ہو گراٹال دواور دو کھی جھی کرتے بوٹر وی عمور میں بھی کردے

ا مجے مسلم آج '۴' (۱۸۵۰) ۴۷ مع بخاری اج ۴'رتم الحدیث ۱۸۳۷ سنن ایو داؤد اج ۴'ر تم الحدیث ۱۸۳۷) بیة صدیم بیم به اور اس شل بید قطعی دلیل ہے کہ جس طرح آپ پر قرآن نازل ہو یا تھا اس طرح سنت بھی نازل ہوتی

اس مدیث سے معلوم ہوا کہ فیر منصوص احکام بی نبی جید اجتماد نبی کرتے تھے 'بلکہ وی سے احکام عاصل کرکے بیان کرتے تھے۔ بلکہ وی سے احکام عاصل کرکے بیان کرتے تھے۔ علامہ مجی بن شرف نووی متوفی اعلامہ لکھتے ہیں:

اکٹر علاء نے کماک نی میں کے لیے اجتماد کرنانہ صرف جائزے بلکہ واقع ہے۔ البتہ اس میں اختلاف ہے کہ آیا ہی میں ایس اجتماد میں خطاجائز ہے یا نمیں۔ محققین کانہ ہب ہے کہ آپ کے اجتماد میں خطاجائز نمیں ہے اور اکٹر علاء جو از کے قائل میں الیکن آپ کو خطام بر قرار نمیں رکھاجا آ۔ اشرح می مسلم ملتودی کے اسمی ۱۸۵ نسلوں کہتے۔ تزار مصلفی کی کرر کے ۱۹۲۰ء)

بَيِيانُ القر أَنْ

نبی ﷺ کے اجتماد کے وقوع کے ثبوت میں احادیث

جن اوگوں نے ہی مجبیر کے اجتماد کے وقع کا نکاد کیا ہے 'انہوں نے معرت بعلی کی اس مدیث ہے استدال کیا ہے کہ جب آپ ہے عمرہ کے متعلق سوال کیا گیاتو آپ نے اس وقت تک جواب نہیں دیا جب تک آپ پر وحی نازل نہیں ہوئی ' کے جنر الی اطلاعات ہیں کہ نی سر جہیر نے نزول وحی کے بغیر ٹی الغور سائل کے جواب دیے اور یہ جوابات آپ کے اجتماد پر قوی کہ اس مدیث ہے یہ خابت ہو آپ کہ آپ وحی ہے ادکام عاصل قوی دلین ہیں اور معرت بعلی کی حدیث کا جواب یہ ہے کہ اس مدیث ہے یہ خابت ہو آ ہے کہ آپ وحی ہے ادکام عاصل کرتے تھے اور اجتماد بالکل نہیں کرتے تھے ' جبکہ آپ نے کہ خرت سوالات کے جوابات میں ٹی الغور ادکام شرعیہ بیان فر ایک

الم محدين اساعيل بخاري متوفي ١٥١ه ووايت كرتي بي

حض کواپ متول کے بدلہ جی قبل کردیا ہے ہیں کہ رسول اللہ عظیم کو گھدکہ دن سے خبردی می کہ خزاہ نے ہو ایسٹ کے ایک فضی کواپ متول کے بدلہ جی قبل کردیا ہے اور ان پر رسول اللہ جی بالا کہ اللہ کے دار جی متول کے بدلہ جی قبل کردیا ہے۔ سنوا مکر نہ جھ ہے پہلے کہ اللہ نے مکہ جی قبل کو برے بادو مومنوں کو مسلط کر دیا ہے۔ سنوا مکر نہ جھ ہے پہلے کی فضی کے لیے طال توالہ سنوا وہ میرے لیے دن کی صرف ایک ماعت کے لیے طال ہوا ہوا ہوا ہے اور سنوا ہو کا کا جات کے لیے طال ہوا کہ سنوا وہ میرے لیے دن کی صرف ایک ماعت کے لیے طال ہوا ہوا ہے اور سنوا ہو دی ماحت ہے کہ طال ہوا ہوا ہے گان اس کے در فتوں کو کاناجائے گااور نہ اس کی گری ماحت ہے اور جن ٹوگوں کا کوئی فضی قبل کیا گیا ہو اس کو دو افتیار ہیں 'یا تو وہ دیت ہوئی چیزا نمائی جائے گی' ماسوا اعلان کرنے والے کے 'اور جن ٹوگوں کا کوئی فضی قبل کیا گیا ہو 'اس کو دو افتیار ہیں 'یا تو وہ دیت کے یہ لکھ سے لئے انسان کے لیے میں تو ٹی ماسوا اور نہ اور جس کی گھاس) کا استرناء قربالیج آئیو تکہ ہم اس کو اپ گھروں جس اور جس کردیں۔ آپ نے قربایا ہول اللہ اور جس کی گھاس) کا استرناء قربالیج آئیو تک ہم اس کو اپ گھروں جس اور جس کردیں۔ آپ کے قربایا ہول اللہ اور کردیں۔ آپ کے تو کہ جس تو ٹی میں تو ٹی سرچھ نے قربایا ہول اللہ آئی کہ کہ کی گھاس) کا استرناء قربالیج آئیو تک ہم اس کو اپ گھروں جس اور جس کی گھاس) کا استرناء قربالیج آئیو تک ہم اس کو اپ گھروں جس اور کے جس تو ٹی سرچھ نے قربایا ہول اللہ اور کردیں۔ آپ کے تو کہ کی کھروں جس کو تھی تو ٹی سرچھیں تو ٹی سرچھیں تو ٹی سرچھیں نے قربایا ہول اللہ اور کردیں۔ آپ کی تو کہ بھروں جس تو ٹی سرچھیں نے قربایا ہول اللہ اور کردیں۔ آپ کی تو ٹی سرچھیں نے قربایا ہول اللہ تو کردیں۔ آپ کی تو کردیں۔ آپ کی تو ٹی سرچھیں نے قربایا ہول اللہ تو کردیں۔ آپ کی تو ٹی سرچھیں نے قربایا ہول اللہ تو کردیں۔ آپ کو ٹیک کی تو ٹی سرچھیں کے تو ٹی کی تو ٹی سرچھیں کے تو ٹی کی تو ٹی سرچھیں کے تو ٹی کی تو ٹی سرچھیں کی تو ٹی کی تو ٹی کی کا تو ٹی کردیں۔ آپ کی تو ٹی کی تو ٹی کی تو ٹی کی کی تو ٹی کی کردیں۔ آپ کی کردیں کی تو ٹی کردیں کی کردیں کی تو ٹی کردیں کی کردیں کردیں

(میح البخاری ٔ جَا' رقم الحدیث ۳۴ میح مسلم ٔ ج ۳۳۵ (۳۵۳) ۴۲۳۳ منن ابوداؤد ٔ ج۴ رقم الدیث ۴۰۱۸ منن زبائی ٔ ج۵ ا رقم الحدیث ۵۷۵ سمی ۴۸۷ سنن کبریل دلنسانی ٔ ج۴ وقم الحدیث ۴۸۵۷)

اس مدیث بی بیر تصری ہے کہ کی بیجیج ہے او اور کے استثناء کا سوال کیا کیا اور آپ نے وہی کی طرف مراجعت کے بغیر فی الغور اپنے اجتنادے اس کا استثناء کردیا۔

حضرت عبدالله بن عمروضی الله عنما بیان کرتے ہیں کہ نبی بیٹیز ہے ایک محض نے سوال کیاکہ محرم کیا ہے؟ آپ نے فرمایا محرم قبیص ہے' نہ عمامہ' نہ شلوار' نہ ٹوئی' نہ زعفران یا سرخ رنگ سے رنگا ہوا کپڑا۔ اگر اس کو تعلین نہ طیس تو وہ موزے بہن نے اور ان کو (اوپر سے) کاٹ نے حتی کہ وہ مختوں کے بیچے ہو جا نہیں۔

(صحیح ابتحادی کی جا در قم الحدیث: ۱۳۳ صحیح مسلم کیج ۳ (۲۷۲)۲۳۷۷ سنن النسائل کی در قم الحدیث: ۱۳۲۵ سنن این باد، کیج ۴ در قم الحدیث: ۲۹۳۲)

اس مدیث میں بھی ہے تقریح ہے کہ نبی میں ہے سائل کے جواب میں وجی کی طرف مراجعت کے بغیر فی الغور اپنے ابتدادے محرم کے لباس کے متعلق عظم شرقی بیان فرمایان

حضرت اسم عطید رسنی الله عنها بیان کرتی میں کد جب به آءت نازل ہوئی اے نی اجب آپ کے پاس ایمان والی عورتی ما منر ہول اور وہ آپ سے اس پر بیعت کریں کہ وہ اللہ کے ساتھ کی کو شریک نمیں بنائیں گی اور نہ چوری کریں گی اور نہ

برکاری کریں گی اور نہ اپنی اولاد کو قبل کریں گی اور نہ اپنے ہاتھ باؤں کے آگے کوئی بھین گھڑ کرلا کیں گی اور نہ کسی نکی کے کام شی آپ کی نافران کریں گی تو آپ ان کو بیعت کرلیا کریں۔ دالمتحد: ۱۳ اور نکی کے کاموں میں نے در کی حمانعت بھی تھی۔ می نے عرض کیا یارسول اللہ ا آل فلال کا استمناء کر دیجے 'کیونکہ انسوں نے زمانہ جابلیت میں (نو در کرنے میں) میری مدد کی تھی ' تو میرے لیے بھی ان کی مدد کرنا ضروری ہے۔ ہی رسول اللہ مرتبی کے فرمایا ماسوا آل فلال کے۔

المح مسلم "جنائز "٣٣ (١٩٣٤) • ١٦٣ السنن الكبري للنسائي "ج٢" رتم الحديث ١١٥٨١)

حضرت براء بن بازب بر بنی بیان کرتے میں کہ میرے ماموں حضرت او بردہ بن نیار نے نماز حید ہے پہلے قربانی کرلی۔ رسول اللہ جی بے فرمایا ہے بحری کا کوشت ہے (یعنی قربانی نسی ہے کیونکہ وہ نماز عید کے بعد ہے) انہوں نے کمایار سول اللہ! میرے پاس چو ماہ کا بجراہے ' آپ نے فرمایا تم اس کی قربانی کرلو تمہارے علاوہ اور کمی کے لیے یہ جائز نمیں ہے۔

الشخيح مسلم الاضاحي من (١٩٩١) ١عه من من البغادي عن رقم الدعث: ١٩٥٥ سن ايوداؤد عن ٢ رقم الدعث: ٢٨٠١ سن ترزي عن ارقم المدعث: ١٩٥٣ سن النسائي عن وقم الدعث: ١٩٧٣ سن كبري للنسائي عن ارقم الديمة: ١٩٨٨ من كبري نليمتي عن عن من ١٢٤ مند احد عن الرقم الديمث: ١٥٥٠ هن مديد)

ان دونوں صدیوں میں نبی جین نے وی کی طرف مراجعت کے بغیراتشناء بیان فرملا ہے۔

معرت جارین عبداللہ رضی اللہ عنما بیان کرتے ہیں کہ معرت عمرین المخطلب برین نے کما بیں خوشی ہے سرشار تھا تو میں نے روزے کے باوجود بوسہ لے لیا میں نے عرض کیا یار سول اللہ اگر میں تے بہت تھین کام کیا ہے۔ میں نے روزے کی حالت میں بوسہ نے لیا گہتے نے فرمایا سے بتاؤ اگر تم روزے کی حالت میں پانی ہے کلی کر لو توا (داری میں ہے) ہیں نے کہا تو اس سے پچھ فتصان نہیں ہوگا۔ آپ نے فرمایا تو اس سے کیے ہوگا۔

اسنن ابوداؤر علار قم الحديث ٢٣٨٥ سنن داري علائر قم الحديث ١٩٥٠ من احد على ١٩٥١) اس مديث عمل في علي المعلى المعلى المعلى على مراحمة قياس سے تعم شرى بيان فرمايا ہے اور دوزے عمى بوسه لينے كو كلي كرنے پر قياس فرمايا ہے اور سے آپ كے اجتماد پر واضح دليل ہے۔

معرت ابودر بویش میان کرتے ہیں کہ نی بیج کے اسماب نے نی بیج سے مرض کیا یارسول اللہ المادار نوگ تواہر و

واب نے گئے وہ اماری طرح نماز پڑھے ہیں اور اماری طرح روزے رکھے ہیں اور اپ زاکہ مال سے صوقہ دیے ہیں۔ آپ

فر ملیا کیا اللہ نے تمہارے لیے صوفہ کا سب میا نہیں کیا؟ ہریار "بحان اللہ "کمناصدقہ ہے ہریار "الحمد اللہ "کمناصدقہ ہے

اور ہریار "اللہ الله الله الله "کمناصدقہ ہے اور نکی کا تھم دیناصدقہ ہے اور برائی ہے روکناصدقہ ہے اور تم میں ہے ہر فض کا جماع

کرناصدقہ ہے۔ سحابہ نے کمایارسول اللہ آگر ہم میں ہے کوئی فضی محض شموت ہے جماع کرے اہم بھی اس کا یہ عمل صدقہ

ہے؟ آپ نے فرایا یہ بتاؤ آگر تم میں ہے کوئی فضی حمل شموت ہے جماع کرے ایم بھی اس کا یہ عمل صدقہ

طال محل میں شموت ہوری کرے گا تواس کو اجر لیے گا۔

ا محج مسلم ارکز قامه ۵۳۱ (۲۲۹۲ سنن ابوداؤراج ۳ ار قم الدیث ۱۳۹۳ منداور ع ۵ مل ۱۲۸-۱۲۷) اس مدیث میں جمل نی مینیور کے قیاس اور اجتماد پر داشتج دلیل ہے۔

حضرت ابن عماس رضی الله عشمامیان کرتے میں کہ ایک عورت نے ج کی نذر مانی مجروہ فوت ہو گئے۔اس کا بھائی نی منتج بر کے پاس گیااور اس کے متعلق سوال کیا۔ آپ نے قرمایا یہ ہاؤا اگر تمماری بمن پر قرض ہو آو کیاتم اس کو اوا کرتے ؟اس نے کہا

بان آپ نے فرمایا پھراللہ کاحق اواکرو کو اوائنگی کے زیادہ حقد ارہے۔ (محج البخاري "ج" وتم الجديث: ١٨٥٠ ستن انتسائل ع ٥ و تم الحديث: ٢٧٣١) اس مدعث على أي الله الشبك في كويند عدك في ياس كياب اوريد في الله كا احتلاى قوى دليل ب-الد اس اقرآن ، کے سائنہ الی برگزں کو را نه ان کا کونی بدو کار برگاز شفا مهند کزید تی والا ، وان ، کی جہ دمنت کرستے ہرسینے ہیں وراک مائیکہ وہ ہائی کی رہنا جرتی کرستے ہیں ، ان کا حراب الکل ومرجين سے على اگر زيانفرش ؛ آب سے ال اودای فرح ہم سلے ان یں سسے میمش کولین مان کیا ہے ؛ راے کا فرون کیا انٹر مگر گزارہ ل کرفوب جاننے والا تین ہے اکا درجب ایک وہ انگ آئی جر ساری ایتول پر ایمان آ يى وَابُ بِسِ مَ يِرِملام بوء بَها عرص النبط ومن لينت كوم سنه) است اوير دصت كولازم كرايا سبته ، كوتم يرسن جركي ف ناوا تغیبت کی وجرے کرن والا) کرایا جرای مے بعد توے کر لی اور املاح کر لی تو بھی غِيانَ القر أن جلاسوم

عَفْرَ ﴿ رَجِيْمُ ﴿ وَكَنْ لِكَ نُفَصِّلُ الْأَيْتِ وَلِتَسْتَبِينَ سَبِيْلُ

بخت والاب مدرم فرف والاب 10 ورم والى تغصيل سے أيول كر بيان كرت مي اور تاكر جرموں كا راستر واضح

الْمُجُرِمِينَ @

م وات م

الله تعالی کا ارشاد ہے: اور اس (قرآن) کے ساتھ ان لوگوں کو ڈرائے جو اپنے رب کی طرف جمع کے جانے ہے۔ ڈرتے ہیں 'در آنحالیکہ اللہ کے سوانہ ان کا کوئی ہددگار ہوگانہ شفاعت کرنے والا (ان کو ڈرائے) یا کہ وہ مثلی ہوجا کیں۔

(الاتعام. ١٥١)

كافروں اور مسلمانوں كو ڈرانے كے الگ الگ محمل

اس سے پہلے کی آنیوں میں قربایا تھا کہ اللہ تعالی نے رسولوں کو بشارت وسنے واٹنا اور ڈرانے والا بینا کر بھیجا ہے۔ لہذا اس آست من فربایا س قر آن کے ساتھ ان اوگوں کو ڈرائے بوائے رب کی طرف جمع کے جانے سے ڈرئے ہیں۔ اس میں سفرین کا اختلاف ہے کہ ان لوگوں سے کون مراو ہیں؟ بعض نے کہا اس سے مراد کافر ہیں " کیو تکہ رسول اللہ بینی کافروں کو مذاب آثرت سے ڈرائے ہے اور بعض کافروں پر اس ڈرانے کا اثر ہو تا تھا اور وہ سوچتے تھے کہ شایہ آپ تھیک کتے ہوں۔ پھر فربایا اللہ کے سواان کا کوئی مداکا دار اس کی اجازت کے بغیر کوئی ان کی شفاعت کرنے والا نہیں ہوگا۔ اس میں یبود و نصار تی کا در بھو کہ اللہ کے بیاں ان کی شفاعت کریں گے اور بعض مفرین نے کہاکہ ان لوگوں سے مراد مسلمان میں اور سخن ہے کہ آپ مسلمانوں کو ڈرائے جو اس کی طرف جم کے جانے سے ڈرتے ہیں " کیو تکہ مسلمانوں کو ہرچند کہ اپنے رب کہ سائے ہی مسلمانوں کو ہرچند کہ اپنے رب کہ سائے ہی مسلمانوں کو ہرچند کہ اپنے رب کہ سائے ہی مسلمانوں کو ہرچند کہ اپنے رب کہ سائے ہی مسلمانوں کو ہرچند کہ اپنے رب کہ سائے ہی مسلمانوں کو ہرچند کہ اپنے رب کہ سائے ہی مسلمانوں کو ڈرائے جو اپنے اور عذاب ہو اس کے قربایا کہ آپ انہیں آخرت کے عذاب سے ڈرائی آباکہ ان کا خاتمہ ایمان ہو گا کہ شفاعت کی جائے گا وہ گناہوں سے باز رہی اور نیک انجال کہ جو شفاعت کی جائے گا وہ گناہوں سے باز رہی اور نیک انجال کہ جو شفاعت کی جائے گا وہ گناہوں سے بوری ہو کی دو کرسکے گا نہ شفاعت کے باز رہی اور کناہ گار مسلمانوں کے بوری ہو شفاعت کی جائے گا وہ گناہوں سے بوری ہو گار مسلمانوں کے بوری ہو تو شفاعت کی جائے گا وہ گناہوں ہوں کہ کاری ہو کرسکے گا نہ شفاعت کی دو کرائے گا کہ دو گناہوں کے باز رہی اور کناہوں کے باز رہی اور کناہوں کے بینے بیاد کرائے کی دو کرسکے گا نہ شفاعت کی دو کرنے گار کرائے کی دو کرسکے گا نہ شفاعت کی دو گاری دو کرائے گار کرائے گار کرائے گار کرائے گار کرائے کرائے گار ک

کون ہے جو اس کی اجازت کے بغیراس کی بار کہ میں

مَنُ ذَا الَّذِي يَسْمَعُ عِنْدَ وَإِلَّهِ إِذْبِهِ

فقاحت كريح

(البقرة: 700) وَلَاتَنْفَعُ الشَّمَاعَةُ عِنْدَهُ الْأَلِمَنُ أَدِنَ لَهُ

اور اس کی بارگاہ میں صرف اس کی شفاعت سے نفع ہو گا جس کے لیے وہ اجازت دے گا۔

(سبها: ۳۲) وَلَايَشْفَعُونَ إِلَّالِمَنِ ارْتَطْي (الانبياء،۲۸)

اور ده (فرشتے) ای کی شفاعت کریں گے جس کے لیے ده

(دب)واشی ہو گا۔

الله تونل كاارشادے: اور ان (ممكين مسلمانوں) كودور نہ بجئے ہو مع وشام اپنے رب كى عبادت كرتے رہے ہيں در آنحاليك دواي كى رضاجو كى كرتے ہيں ان كاحساب بالكل آپ كے ذمہ نہيں ہے اور آپ كاحساب مرموان كے ذمہ نسي

غيان القر أن

ے اس آگر (بالفرض) آپ نے ان کو دور کردیا تو آپ فیر منصفوں ہے ہو جا کیں محمد (الانعام عند) مسکیین مسلمانوں کو ان کی مسکیتی کی بناء پر مجلس ہے اٹھائے کی عمانعت اہم احمد بن خبل متونی اج بھی روایت کرتے ہیں:

حضرت عبداللہ بن مسعود بر بین بیان کرتے ہیں کہ قریش کی ایک جماعت رسول اللہ بینجیز کے ہاں ہے گزری اس دقت آپ کے پاس معزت خباب معنزت مسیب معزت بلال اور معزت ممار رضی اللہ منم بیٹے ہوئے تھے۔ ان ہوگوں کے متعلق قرآن مجید کی ہے آیت نازل ہوئی اور اس (قرآن) کے ساتھ ان اوگوں کو ڈرائے جو اپنے رب کی طرف جمع کیے جانے ہے ڈرتے ہیں۔(الافعام ۵۱)

(سند احمر عن رقم الحديث: ۱۳۹۸ طبع دار الحديث قابره علامه احمد على الماسيد في الاستدار في الماسيد في ما به المح ب- مند احمر عن من ۴۴ طبع قد يم ميروت)

الم ابوعبدالله محدين بزيد ابن ماجه متوفي سهد العدروايت كرتے إلى:

تعفرت خباب برہی ہے ۔ قرآن جید کی آیت مبارکہ اور ان (سکین مسلمانوں) کو دور نہ بھی جو می و شام اپند رہ کی عافرت کرتے رہتے ہیں۔ (الانعام ۱۵۲) کی تغیری بیان کیا اقرع بن عابی حمی اور حیث بن صی فراری آئے۔ انہوں نے دیکھا کہ وسول اللہ بہجید مسکین مسلمانوں ہیں سے حضرت سیب محضرت بلال محضرت معاولور حضرت خباب آپ کے ہاں بیٹے ہوئے ہیں جب مشرکین نے ان کو نی بڑھی کے گرو بیٹے ہوئے دیکھا تو انہوں نے ان مسلمانوں کو حقر جانا کہی دو آپ کے ہاتھ مجلم ہی شرکت کرناچا ہے ہیں۔ آپ کو معلوم ہے کہ عمول میں اماری کیا فسیلت ہے؟ حرب کے دفود آپ کے ہات مجلم ہی شرکت کرناچا ہے ہیں۔ آپ کو معلوم ہے کہ عمول ہی اماری کیا فسیلت ہے؟ حرب کے دفود آپ کے ہات آپ کے ساتھ مجلم ہی شرکت کرناچا ہے ہیں۔ آپ کو معلوم ہے کہ عمول ہی مائوں کو ان فلاموں کے مائو بیان کیا نہوں کے مائوں کو دیا آئی ہے کہ حرب لوگ ہم کو ان فلاموں کے مائوں ہو ان کو اپنی ہی ہیل ہو گئی ہم آپ ہمیں ہو گئی گئی ہو گئی ہو گئی ہو گئی گئی ہو گئی ہو گئی گئی ہو گئ

چرافرہ بن حاب اور مینہ بن صفی کاذکر کیا اور قربایا اور ای طرح ہم نے ان میں ہے بعض کو بعض کے سب آزائش میں جائے ہا گیا گیا گیا گیا گا کہ انجام کاروو (مال دار کافر) یہ کمیں کہ کیا ہم میں ہے ہی وہ لوگ ہیں جن پر اللہ نے احسان کیا ہے؟ (اے کافروا) کیا اللہ شکر گزاروی کو فوب جائے والا نہیں ہے۔ (افافعام: عن) پھر فرمایا اور جب آپ کے پاس وہ لوگ آئی میں جو ہماری آنیوں پر اللہ شکر گزاروی کو فوب جائے والا نہیں ہے۔ (افافعام: عن) اپنے اور رحمت کو لازم کر لیا ہے۔ (افافعام: عن) حضرت ذباب نے کما پھر ہم آپ کے قریب بیضے تھے۔ حق کہ ہم اپنے گئنوں کو آپ کے تعفوں کے ساتھ ما کر جیسے تھے اور دسول اللہ ما تین ہمارے ساتھ جیسے تھے اور جب آپ اٹھ کر جانا جانچ و ہمیں مجلس میں چموڑ کر چلے جاتے تھے۔ تب اللہ قول نے نہ آت نازل فرمائی اور آپ مبرے ان لوگوں کے ساتھ (ہیٹھے) رہے جو جبی گار شام اپنے رب کی عملوت کرتے ہیں والی نے یہ آت نازل فرمائی اور آپ مبرے ان لوگوں کے ساتھ (ہیٹھے) رہے جو جبی اور شام اپنے رب کی عملوت کرتے ہیں ور " نام اپنے رب کی عملوت کرتے ہیں ور " نام اپنے رب کی عملوت کرتے ہیں ور " نام کی زندگی کی زیدت جائے ہوں۔ اور آپ کی آئی تھیں ان ہے نہیں کہ آپ و تیا کی زندگی کی زیدت جائے ہوں۔ اور آپ کی آئی میں ان ہے نہیں کہ آپ و تیا کی زندگی کی زیدت جائے ہوں۔ آپ اس می کی زندگی کی زیدت جائے ہوں۔ آپ ان اور آپ کی آئی میں ان ہے نہیں کہ اور شام اپنے وہ بی کی رضا جائے ہوں۔ اور آپ کی آئی میں ان ہے نہیں کر آپ و تیا کی زندگی کی زیدت جائے ہوں۔ اور آپ کی رضا جائے وہ اس کی رضا جائے ہوں۔ اور آپ کی آئی میں ان ہے نہیں ان ہے نہیں کہ آپ و تیا کی زندگی کی زیدت جائے ہوں۔ آپ ان کو گھنوں کو تیا گھنوں کر آپ ور آپ کی کر بھوں کو کر دور آپ کی کر دور آپ کی کر دور آپ کی کر دور آپ کی دور آپ

مخص کا کمانہ مانیں جس کاول ہم نے اپنی یادے عافل کردیا اور جو اپنی تفسیل خواہش کی پیروی کرتا ہے اور اس کا معاملہ مدے متجاوز ہو کیا۔ (الکمت: ۲۸)

معرت خباب نے کما پر ہم نی چھی کے ساتھ بیٹے تھ می کہ جب نی بیٹی کے جانے کاوقت آ یا تو ہم آپ کو چمو ڈ کر اٹھ جائے تھے۔ پکر آپ تشریف کے جاتے تھے۔

(سنن أبن أجه "ج" وقم الحديث: ٢٣٧ مامع البيان" جه "ص"٢٧ شعب الايمان" جه" وقم الحديث: ١٩٧١ مصنف ابن الي ثيب "ج" وقم الحديث: ٣٥٧٣ طيته اللولياء "ج" ص ٣٣١ الدو المشود" ج" ص ٣٣٠ اسباب النزول م ١٣٧٠ ١٣٢٠)

خاتم الحفاظ علامہ جلال الدین سیو علی نے اس حدیث کو متد ابو پیعلی اور دلا کل انتبوۃ کے حوالوں ہے بھی ذکر کیا ہے لیکن بید ان کا تساع ہے۔ متد ابو پیعلی اور دلا کل انتبوۃ میں بیر حدیث نہیں ہے۔ اہم ابن جریر 'اہم ابن ابی حاتم 'اہم ابن الجوزی' اہم رازی' علامہ قرطبی' علامہ ابوالحیان اندلی' حافظ ابن کثیراور علامہ آلوی وغیر حم نے اس حدیث کو نقل کیا ہے۔

حضرت معد بن انی و قاص برین بیان کرتے ہیں کہ سے آئت (علائدام: ۱۵) ہم چھ نفوس کے متعلق بازل ہوئی ہے۔ میرے متعلق عضرت این مسعود کے متعلق و تریش نے رسول متعلق معفرت این مسعود کے متعلق و تریش نے رسول اللہ جہرہ سے کہا ہم ان لوگوں کے پیرد کار بنے سے رامنی نمیں ہوں گے۔ آپ ان کو اپنے پاس سے انحاد ہیں کے رسول اللہ میں اور میں میں مسلمانوں کے دل میں وہ بات آئی جو اللہ نے جا بالہ آپ نے منصوبہ بنایا تو اللہ عزوج ل نے سے تازل فرائی ان (مسکمین مسلمانوں) کو دار نہ ہے جو جس میں در آنمایک وہ اس کی رضا کا ارادہ کرتے ہیں۔ (الانعام بدی)

(مج مسلم "فعناكل العجلية " ١٩٠٦ (١٩٧٣) ١٩٧٣ " ١٩٧٠ " من ابن باجد " جع" وقم الحديد ١٩٣٨ " من كبرى للنسائل وقم الحديدة:

(APY

مج وشام اخلاص سے عبادت کرنے کی وضاحت

اس أیت بین ان سکین سلمانوں کے متعلق فرملا ہے 'وہ فیج دشام اپ رہ کی مباوت کرتے ہیں 'اس سے مرادیہ ہے کہ وہ پابندی اور دوام کے ساتھ فرض نمازوں کو باضافت پڑھتے ہیں۔ یہ دھرت ابن عباس 'عبابر اور حسن بعری کا قول ہے۔ در مرا قول یہ ہے کہ اس سے عراو اللہ کاذکر اور قرآن مجید کی خلاوت ہے اور یہ بھی ہو سکتا ہے کہ اس سے عراو فیج اور شام اللہ سے دعا کہ دن کی ابتد اعاد راس کا افتتاح اللہ کی دعاہ ہو اور دن کا افتتام بھی اللہ سے دعا پر ہو۔ نیز فرملا ور آنحالیک وہ اس کی درخاجو کی رضاجو کی کرتے ہیں اور آئی مباوات اور اعمال میں اللہ کی درخاجو کی دھر آبات میں اللہ تعالی کی ذات کو "وج (چرو) کے سوا اور کسی چیز کی طرف توجہ نمیں کرتے 'اس آب میں اور قرآن مجید کی دیگر آبات میں اللہ تعالی کی ذات کو "وج (چرو) کے سوا در کسی چیز کی طرف توجہ نمیں کرتے 'اس آب میں اور قرآن مجید کی دیگر آبات میں اللہ تعالی کی ذات کو "وج (چرو) کے سال کے چروے ہو تی ہو آب اور اس کے قرام اعضاء میں سب نیادہ تحریم ساتھ تعبیر کیا آبا ہے 'کیو نکہ انسان کے جم کی شاخت اس کے چروے ہو تی ہو اور اس کے قرام اعضاء میں سب نیادہ تحریم اس کے چروے کو نکہ ان کو قات میں ہوگر آبا ہے۔ یہ وجہ نمیں ہوگر آبات میں اور قات میں ہوگر آبات میں اور گام کاخ اور چرو ہے 'می اور شام کے وقت عبادت کا خصوصت سے اس لیے ذکر فربلا ہے۔ یہ وجہ نمیں ہوگر آبات میں اور گام کاخ میں مشنول ہوں 'ورباتی نو قات میں بہ طریق اوتی عبادت میں مشنول ہوں 'ورباتی نو قات میں بہ طریق اوتی عبادت میں مشنول ہوں 'ورباتی نو قات میں بہ طریق اوتی عبادت میں مشنول ہوں ۔

مسکیٹوں کا حساب آپ کے ذمہ نہ ہونے کی وضاحت جسمت نے کف کریت میں ادار کیا ہے مصاحب

جب سورة كف كى يه آيت نازل مولى اور آب مبرے ان لوكول ك مائد (بيٹے) رہے ہو مج اور شام الية رب كى

عبادت کرتے ہیں تو بی بھی اس وقت تک میل سے نہیں اٹھتے تھے ایب تک کہ یہ ممکین مسلمان فرداس مجاس سے نہیں اٹھتے تھ ایس کے جیسا کہ سنی ابن اور دیگر کتب مدیث کے حوالوں ہے ہم بیان کر چکے ہیں۔ میراللہ تعالی نے فربایا ان کا حماب بالکل آپ کے ذمہ نہیں ہے اس کا معنی ہے ہے کہ ان کو ان کے اممال کی جزاور بنایا ان کو رزق میا کرنا آپ کے ذمہ نہیں ہا کہ ان کو جزا دینا اور ان کو رزق میا کرنا آپ کے ذمہ ہیں اللہ کے ذمہ ہیں اور کے ذمہ نہیں ہے۔ اس سے مراد ہیہ ہے کہ اگر یہ ممکین مسلمان تحریمی جٹنا ہیں تو اس سے آپ کو کوئی ضرر نہیں ہوگا، حتی کہ آپ میرکین کی فرائش پر ان کو اپنی مجلس سے افعالے کا اوادہ کریں۔ آپ پر ان کے رزق اور ان کے افتال کے تعامیہ کی ذمہ دار کی مشرکین کی فرائش بور کی کرنے کے در ہے ہوں۔ آپ کا کام منصب رسالت کی ذمہ دار ہوں کو پر را کرنا ہے اور اس کا نقاضا ہے کہ آپ مطالات کے طاہر پر عمل کریں اور این کے باطن کو اللہ کے حوالے کر دیں اور این مسلمانوں کا اس کا نقاضا ہے کہ آپ مطالات کے طاہر پر عمل کریں اور این کے باطن کو اللہ کے حوالے کر دیں اور این مسلمانوں کا منابر صال یہ ہے کہ یہ میں دینا میں اللہ تعالی کی عرادے کرتے ہیں 'سو آپ ان کی طرف متوجہ ہوں امن کے ساتھ مجلس ہی بیشیں ' فاہر صال یہ ہے کہ یہ میں دور نہ کریں۔ آپ

نی میں کو منع کرنا در اصل است کے لیے تعریض ہے

اس کے بعد فرمایا آگر آپ نے الفرض ان کو دور کر دیاتو آپ فیر منصفوں سے ہوجا کیں گے ظاہر ہے کہ نہی ہو ہوں ہے ہے۔ متصور نہیں ہے کہ آپ اللہ تعالی کے منع کرنے کے بعد بھی ان مسکین مسلمانوں کو اپنی مجلس سے دور کریں گے لیکن اللہ تعالی نے بطور تعریض دو مرے مسلمانوں کو سنانے کے لیے میہ فرملیا ہے کہ جب نبی مزیم پھی امیر کافروں کی رعابت کر کے فریب مسلمانوں کو بالفرض اپنی مجلس سے اتھا دیں 'تو جمپ فیر منصفوں سے ہو جا کیں گے 'تو کوئی اور مسلمان ایسا کرے گا تورہ کیو کھر ظالموں میں سے نہیں ہوگا۔ اس آیت کی نظیریہ آیت ہے:

كَنِينَ الشَرِكَتَ لَيْحَسَطَنَ عَمَلَكَ الرابالرض آب ١/٩) ثرك كياة آب كاعمل منائع

(الرمر: ١٥٠) يومائكا

ذیر بحث آیت اور نہ کور الصدر احادیث ہے یہ معلوم ہوا کہ کسی کافریا فاسق کی اس کی دنیاوی شان و شوکت کی دجہ ہے عزت کرنااور کسی نیک مسلمان کی فرمت اور افلاس کی دجہ ہے تو تیم کی اور تحقیر کرنا شرعاممنوع ہے۔ نبی سیجی کی عصمت پر اعتراض کا جو اب

 مخلف مم ك نوگوں كو (عارمنى) نفع افعات كے ليے دے ركى جي الله تعالى في آنا كي اور آپ كے رب كارزق سب سے بهتراور سب سے زيادہ باتى رہنے والا ہے۔ (طن اس) جب الله تعالى في آپ كو ذيت دنيا كى طرف الآخات كرنے منع فرمايا ہے اور سور و كف كى آيت من فرمايا ہے كہ آپ زينت دنيا كالورادہ كرتے جي تو آپ كايہ لفل كناه جوا؟ (العراز باللہ)

لیکن اللہ تعالی علام النیوب ہے اس کو علم تھا کہ یہ کفار اس موقع پر ایمان لانے والے نہیں ہے اس لیے اللہ تعالی نے

آپ کو اس ارادو ہے باز رکھااور فربایا آپ این کافروں کے اسلام لانے کے طبع میں ان مسکین مسلمانوں کو مجلس ہے نہ اٹھائے ا

کو تکہ یہ کافر تو بسرطل اسلام نہیں لا نمیں گے تو آپ اپ وفادار غلاموں کی دل آزار کی کافتصان کیوں اٹھا کیں۔ اہم رازی نے

لکھا ہے کہ آپ کا یہ فعل فلاف اولی تعلم میں کہتا ہوں کہ خلاف اولی ہمی تب ہو تا جب آپ اللہ تعالی کے منع کرنے کے بور

اشاعت اسلام کے لیے ان مسکین مسلمانوں کو والی طور پر مجلس ہے اٹھائے کا ارادو کرتے اور جس وقت آپ نے ان کو مجلس

ہوگی جس وجب اٹھائی کا ارادہ کیا تھا اس وقت تک اللہ تعالی نے منع می نہیں فربایا تھا تو اللہ تعالی کے کس تھم کی مخافحت ہوگی ؟ جس وجب آپ کا یہ ارادہ خلاف اولی کا ارادہ موالی کا ارادہ موالی کا ارادہ موالی کا ارادہ موالی کا ارادہ ہو آبا اجتمادی خطا قرار ویا جاتا؟

منظرین صحت کی دو سمری دلیل یہ ہے کہ افتہ تعالی نے آپ کو زینت دنیا کی طرف النفات کرنے ہے منع فرمایا اور آپ کا غرار اور ان کی دولت اور ثروت و کھے کر ذبت دنیا کا ارادہ فرمالیا تعالور یہ عمنوع کام کا ارادہ ہے اور گناہ کا ارادہ ہے ؟ اس کا جواب یہ ہے کہ ذبت دنیا کا زینت دنیا کی وجہ ہے ارادہ عمنوع ہے اور نبی چیج ان کافر مرداروں کے مال و دولت کی وجہ ہے ان کی طرف متوجہ نبیں ہوئے تھے ' بلکہ اشاعت اسلام کی وجہ ہے ان کی طرف متوجہ ہوئے تھے ' بلکہ اشاعت اسلام کی وجہ ہے ان کی طرف متوجہ ہوئے تھے ' آگ وہ لوگ مسلمان ہو جا نمیں اور ان کی وجہ ہے ان کی وجہ ہے ان کی مسلمان ہو جا نمیں اور ان کی وجہ ہے ان کے متبعین بھی مسلمان ہو جا نمیں اور آپ کا ہے ارادہ کسی معصیت کا یا ظاف اولی کام کا ارادہ نبیں جب ' بلکہ فرائض رسالت میں ہے ایک فرض کی لوائی کا کا ارادہ ہے اور اس پر آپ کو فرض ادا کرنے کا اجر و تواب لے گا۔ ہاں الله تعالی علام النیوب ہے ' اس کو علم تھا کہ یہ لوگ اس موقع پر اسلام لانے والے نہیں جس ' اس لیے اللہ تعالی نے قربایا کہ آپ ان کافروں کی فوشنودی کی خاطرائے دفا شعار اور اطاعت گزار غلاموں کو مجلس ہے نہ انعاز میں جن منظور کی مصمت پر اعتراض

ک اس وقت مخوائش ہوتی جب اس ممانعت کے بعد نبی چیج نے سمی مسکین مسلمان کو کافر سرداروں کی خاطرانی مجلس سے اٹھایا ہو تا یا اس کاارادہ کیا ہو آ۔

الله تعالیٰ کاارشاوہ: اور ای طرح ہم نے ان میں ہے بعض کو ابعض کے سب آزمائش میں جٹانکیا کا انجام کار وہ (ملل دار کافر) یہ کمیں کہ کیا ہم میں ہے میں وہ لوگ ہیں جن پر اللہ نے احسان کیا ہے (اے کافروا) کیا اللہ شکر گزاروں کو خوب جانے والا نہیں ہے۔(الانعام: ۱۹۵۰)

لِعِصْ لُو گُوں کی بعض پر نُفیلت کا آزمائش ہونا

الله تعالی کا بعض او گوں کو بعض او گوں کے سب آزمائش میں جٹا کرتا یہ ہے کہ اوگ رزن اور اخلاق میں ایک دو سرے سے متعلوت رہیں۔ بعض او گوں کو اللہ تعالی نے غنی بنایا اور بعض او گوں کو فقیر بنایا، بعض او گوں کو قوی بنایا، بعض او گوں کو ضعیف بنایا اور بعض او گون کو بعض او گوں کا مختاج کردیا۔

حضرت ابن عماس رمنی الله عنمانے اس کی تغییر علی فرالیا الله تعالی نے بعض لوگوں کو مال دار بنایا اور بعض لوگوں کو فقراء بنایا اور مالداروں نے فقراء کے متعلق کما جمیا ہی وہ لوگ ہیں جن پر الله نے ہم میں سے احسان فرمایا ہے ' بینی ان کو ہدایت دی ہے۔ انسوں نے یہ بعلور استہزاء اور زاتی اڑانے کی خاطر کما تھا۔

(جامع البيان " ٢٤ على ١٤٠ طبع داد الفكر " مروت)

اس آیت میں اللہ قبائی نے بیتایا ہے کہ ہر فض اپنے بالقائل کی ہے نسبت آزائش میں جٹا ہے' مل وار کافر اُنقراء محاب
ہوں کے اور یہ چیزان پر سخت وشوار تھی اور فقراء محاب ان مال دار کافروں کو بیش 'راحت اور فرآئے دستی میں دیکھتے تھے 'اور وہ
موچ تھے کہ ان کافروں کو بٹی و دولت کی ایسی فراوائی اور وسعت کیے حاصل ہو گئی؟ جبکہ ہم مال اور وسائل کی سخت بنگی اور
مشکلات میں جٹلا ہیں 'تو ایک فرای وہ مرے فراق کو وین میں بلندی پر دیک تھا اور وہ مرافریق اس کو ویا ہی فرافی میں دیکھتا تھا۔
اس لیے اللہ تعالی نے فرایا ہم نے ان میں ہے بعض کو 'بعض کے سب آزائش میں جٹلاکیا۔ اور اس بناء پر کافریہ کتے تھے 'کیا
ہم میں ہے کی وہ لوگ ہیں جن پر اللہ نے احسان کیا ہے؟ کو واحل حق جائے ہیں کہ اللہ تعالی کا ہر تعل حق اور اس کے کہ فعل پر کوئی اعتراض ضمی ہے۔
اس کے ہر فعل میں حکمت ہے اور اس کے کمی فعل پر کوئی اعتراض ضمی ہے۔

شمان نزول میں متعدد اقوال

اس آعت کے شان زول کے متعلق پانچ اقوال میں:

ا- حعرت الس بن مالك معين سائي ميان كياكرية آيت ان لوكون ك متعلق نازل مولى بيد ورسول الله عليد كى خدمت عى حاضر موسة اور عرض كياتم سے يوس يوس كنا مردو موسك يون وسول الله علي خاموش دب وي آيت نازل مولى۔ ۲- حسن بعرى اور عرمه في كمايه آيت ان لوكول كے متعلق نازل بولى بيد جن كو مجلس سے اٹھانے سے منع قربایا تھا انبی مجه ابتداملام كرن كانتم ديا_

٣٠٠ مطاوية كماية آيت صرت الويكر وحرت عرا وحزت على وحرت على وحرت عن وعرت وا منعون وعرت ابوعبده حضرت مععب بن مير وحزت سام وحزت ابوسل وحزت ارقم بن الي الارقم وحزت اراد حعرت بلال رضى الله منم ك متعلق بازل او كى ب-

م - ابن السائب نے کما حضرت عمر بن العقطاب نے رسول اللہ منظور سے اشار ہ " یہ کما تھا کہ ملدار کافروں کی دلجوئی کے لیے مسکین کافروں کو مو خر کرد بچے اور جب میہ آیت نازل ہوئی اور (این مسکین مسلمانوں کو)دور نہ بیچے جو میج و شام اپنے رب کی عبادت كرتي بي إصرت عراياس مثوره ير معذوت كرتي بوك اور استغفار كرتي بوك آئ تبية آيت نازل بولي-٠٥ او سليمان دمشق نے كماية آيت صفرت عربن العقطاب والديك املام كى بثارت دينے كے ليے نازل بوئى تقى-جب معرت مرآسة اور الملام قول كياتوني والإرسة اعت الماوت ك

حسن بھری اور عکرمہ نے کمااللہ تعلق نے فرملیا جب یہ لوگ آپ کے ہاس آئیں تو آپ کھتے تم پر سلام ہو اللہ تعالی نے ان کی حزت افزائی ہے لیے آپ کو یہ تھم دیا تھاکہ آپ انہیں سلام کریں اور ابن زید نے کما آپ کو اللہ کی طرف ہے انہیں سلام پنچانے كا تكم ويا كيا تقا۔ زجاج نے كماسلام كامعنى افسان كے ليے آفات سے سلامتى كى دعا ب-

(زاد المبير عن ٢٠١٣م ١٠٨٠ مطبوعه كمتب اسلاي ميردت ٤٠٠١هـ)

اولیاء اللہ کی تعظیم کی یا کید

لام مسلم بن عبل العبوى متولى المعدروايت كرتم بن

عائذ بن عموہ میان کرتے ہیں کہ حضرت سلمان معضرت صبیب دو حضرت بلال کے پاس چند لوگوں ہیں حضرت ابو مغیان آئے تو انہوں نے کما اللہ کی مکواری اللہ کے وشمنوں کی گرونوں میں اپنی جگہ پر نمیں پنچیں۔ معزت ابو بحر براہنے، نے فرمایا تم لوگ قریش کے مختاور سردار کے متعلق ایک یا تمی کررہے ہوا پھر معزت ابو بحر بریش نے ٹی بڑھیر کے پاس جاکریہ اجرا سایا۔ آپ نے فرملیا اے ابو بھراتم نے ان (فتراہ محلب) کو ناراش کردیا 'اگر تم نے ان کو ناراش کیاتو تم نے اپنے رب کو ناراض کید تب حعرت الويكران كياس مك اوركماا ، مير ، إما يُوايس في تم كوناراض كرديا انهول في كما نيس اب إماني الله آب كى مغفرت فرالسنك

(مج مسلم و فغناكل محلب مها مهم المهم الكبير عهد وقم الحديث ٢٨ مند الد " ح ها" وقم الحدث ٢٠٥١٨ طبع واد المصيف كابرة "مستد الو" ج2" و فم المدعث: ٢٠٠٦ في بديد داو الفكو "مستد الر" به "محله" طبح قد يم داو الفكو "سنن كبريًا " جه"

وقم العنشد ۸۲۷۷)

اس مدیث ہے یہ مستقاد ہو آ ہے کہ نیک مسلمانوں کا احرام کرنا چاہیے اور جس بات ہے انہیں غصر آئے یا ان کو ایذاء پنج 'اس سے اجتناب کرنا چاہیے "کو تک جو مخص اللہ کے اولیاء ہیں ہے کمی کو ناراض کر آ ہے 'وہ اللہ کے عذاب اور اس کے غضب کا مستحق ہو آ ہے۔

جہالت کی وجہ سے گناہوں کی معافی کی وضاحت

اس آعت می فرمایا ہے تم میں ہے جس تمسی نے پاواقنیت کی وجہ سے کوئی براکام کرلیا پیراس کے بعد توبہ کرنی اور اصلاح کرلی تو بے ٹک اللہ بہت بخشنے والا ہے حدر حم فرمائے والا ہے

عبلد نے کماجس مخص نے اللہ کی معصیت میں کوئی کام کیا توبیداس کی جمالت ہے حتی کہ دواس ہے روع کر لے۔ (جامع البیان 'جزے 'می ۲۷۳ملور دار اللہ کو 'بیروت '۱۳۵۵مار)

ام رازی نے کما جمات کا معنی خطا اور اللهی ہے اور اس پر توبہ کی ضرورت تعییں ہوتی ' بکد اس سے مراویہ ہے کہ سمی م مخص نے غلبہ شہوت سے معصیت کی اور اس کا بیان یہ ہے کہ جب کوئی مسلمان علم کے باوجود کوئی گناہ کرتا ہے اور پھراس پر توبہ
کرتا ہے ' تو اللہ تعاقی اس کی توبہ تبول فرمالیتا ہے۔۔ حسن ہمری نے کماجس نے کوئی معصیت کا کام کیا ' وہ جال ہے۔ پھر معصیت
کو جمالت سے تجبیر کرنے کی وجہ سے اختلاف ہے۔ بعض نے کہا وہ اس سے جال ہے کہ اس کام کی وجہ سے اس سے کتنا تواب
جاتا رہا اور وہ کتنے عذاب کا مستحق ہو گیا؟ دو سری وجہ سے کہ جرچند کہ اس کو علم ہے کہ اس فعل کا تتجبہ ند موم ہے ' لیکن اس
نے نوری اور ویاوی لذت کو دیر سے اور آخرت میں ملنے والی فیر کھیرے ترجے دی اور جو مخص تھیل کو کھیرے ترجے دے 'اس کو

خلاصہ بیہ ہے کہ جس فخص نے عمد انسی معصیت کا ارتکاب کیا ہر چند کہ وہ جلل تمیں ہے انکین اس نے کام جاہوں والا کیا ہے اس کے کام پر جمالت کے کام کااطلاق کیا گیا ہے۔

(تغیر کیر اج ۲ من ۵۳ مطبور داد الفکو اطبح قدیم ۱۳۹۸ه)

علامد ابوالميان اندلى متوفى مهدر لكيد بين

رسول الله بي المستان المستان المستان المستان المستان المستان المستان المستان الله المستان الم

(العرافية على ١١٥ مطبوعه دار الفكو أيروت ١١١١ه)

خلامہ یہ ہے کہ جس مخض نے شدید خصہ ہے اغلبہ شوت یا ملات کی بنام افروی سزاے نافل ہو کر کوئی گناہ کرلیا ' پھر اس نے اخلاص کے ماتھ اپنے گناہ پر توبہ کی 'اس گناہ سے ربوع کیااور ناوم ہوااور مستنقبل بیں دوبارہ وہ گناہ نہ کرنے کاعزم کیا' ا پے عمل کی اصلاح کی اور اس کناد کی حال اور تداوک کیا اور اس کناد کے بعد کوئی نگی کی تاکہ اس کناد کا اثر من جائے و اللہ تعالی اس کے کناد کو بخش دے گا کو بحکہ دو بہت و حست اور منظرت والا ہے۔
مجر مول کے طریقتہ کو بیان کرنے کی حکمت
اس کے بعد فرما اور بھم وخی تنسیل ہے کھوں کو ماون کرتے ہوں اور تاکہ مجرموں کا داستہ داہمی ہو جائے اپنی جس

اس کے بعد فرمایا اور ہم یوخی تنسیل سے آجوں کو بیان کرتے ہیں اور آگر جرموں کا راستہ واضح ہو جائے ایسی جس طرح ہم نے توحید اور رمانت اور تضاعو قدر کے والا کل بحث آمان اور موٹر طریقہ سے بیان کے ہیں ' قرآن مجدی آیات کی تنسیل کی ہے اور تفائق شریعت بیان کے ہیں۔ اسی طرح ہم ہراس حق کو بیان کرتے ہیں جس کا اہل باطل انکار کرتے ہیں ' آگر موضیل کی ہے اور تفائق شریعت بیان کے ہیں۔ اسی طرح ہم ہراس حق کو بیان کرتے ہیں جس کا اہل باطل انکار کرتے ہیں ' آگر موضیل کا طریقہ داشتے ہو جائے گاؤ اہل حق اور مسلم نور کا طریقہ معلوم ہو جائے گاؤ اہل حق اور مسلم نور کی تصوصیت سے بہانی طریقہ معلوم ہو جائے گا کو کر بیاف کی ضد حق ہے میں کرتے ہیں کہ مقابل ضد کی تصوصیت سے بہانی میں اور مسلم کی تعدومیت سے بہانی میں ہو جائے گا کہ کرتے یا تھی کی ضد حق ہے ہم کا کہ کا کہ ایک خدر کی تصوصیت اس کے مقابل خدر کی تصوصیت سے بہانی ا

قُلُ إِنَّى نِهِيْتُ أَنْ أَعْبِلُ الْرِينَ ثَنْ عُوْلَ مِنْ دُونِ اللَّهِ

آب کیے بیشک میصان کی بھا منت کرتے ہو کی گیا ہے جی گیا تم انترکے ہوا پرسٹن کرتے ہو ، آپ

ڠؙڶ؆ٚۯٵڗۜۼڔؙٳۿۅؙٳٷڴۿڒڰڶڞٳڎٛٳۊۜڡٵٵٵٵ؈ٳڶؠٛڣؽڹڰ

میری تمباری وابشات کی چروی نبس کرتا ، داگر بامغرض نے ایسای) توبر گراه برمباؤن کا اور مرایت یافته و کولیان سنس ربر ل کا 🔾

قُلُ إِنَّ عَلَى بَيْنَا وْ مِنْ مَرْ إِنْ وَكُنَّ بِثُمْ بِهُ مَا عِنْ بِي مَا

آپ کیے بد مک یں اپنے رب کی وات سے اس دوستن ویل پر برل مر کر مے جانویا سے جی پیر کوام

تَسْتَعْجِلُونَ بِهُ إِنِ الْحُكُمُ إِلَا لِلهِ لِيَقْضُ الْحَقّ وَهُوخَيْرُ

من الله المراج مروم مرس ما من الله موت الله كاب ، ووحل بيان فرما أب الدوه بهتران

الفصلين ﴿ قُلُ لَوْ إِنَّ عِدْدِى مَا تَسْتَعُجِلُونَ بِهِ لَقُضِي

نيعد فران د و الم الله الم الم الله من و يزير بولى جن كولم يه مجلت طلب كريب بو تو ميراداد

الْكَمْرُبِينِي كَرِينِيكُمُّ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالطَّلِمِينَ @وَعِنْكَامُ مَفَاتِمُ

قبالهده دربیان دمی کا نیمد برج کا برتا اور اشر تفالول کو قرب جاتا ہے 0 ادر ای کے پاس بیب کی

الغيب لايعلما إلاهو ديعلهما في البروالبحروا تسقط

ما بال ين ال كرا (ازود) ال كوكي في جانا ، ووسراس ييز كوجانات موطق الدممدون يسب، ده برال

غينان القر ان

100 B

اوروی رات یم تمیاری دونوں کر قیمل کر ایم اورجانا ہے جو کھے تم سے دل میں کیا ، پیر دل می تم کو اشا ویتا ہے تاکہ مقررہ میعاد پوری ہو

ہرای کا طرف تمبارا وائنا سبت ، ہر وہ تم کو ان کا کول کی خبر شدے کا جو تم کرتے ہے ہ

الله تعالی کا ارشاوے: ایس مجے کے ب ال بھے ان کی عبادت کرتے ہے منع کیا گیا ہے جن کی تم اللہ کے سوا ر ستش کرتے ہو' آپ کئے کہ بین تنماری خواہشات کی جدی سی کر اواکر یافرش بی نے ایماکیا، تو بس مراہ ہو جاؤں گااور مراست افت او کون عی سے قسین د مون کا۔ الا تعام اس بتول کی عمادت کاخلاف معمل ہونا

اس سے پہلے اللہ تعلق نے قرید تھا کہ جم الات کی تصول کرتے ہیں الاک حق کا براو اور جرموں کا راست واسع ہو جائے اوراس آیت می الله تعالی سے ان کے واسد پر مطالے سے مع قربانا ہے توریہ فربانا ہے کہ مشرکین صرف این خواہی اور است یاب داداک اندهی تظید کی دید سے جون کی عبارت کر دے ہیں اگر تک بر بھی محق جماوات اور پھروں ہو انسان سے بہت کم درجہ کے بیں اجکہ انسان اشرف انفاد کلت ہے اور اشرف کالرول کی میادے کرے محل کے خلاف ہے۔ بیزا ان بتوں کو خود ان الوكول في التي التي علياً اور عال اور صائع كالية معمل إور معنوع كى عبادت كريابي معل اوردرايت كم متافى ب-اس ے واضح ہوگیاکہ ان مشرکین کا بھل کی عیوت کرنا ہوایت کے تعاقب سے اور ان کی قواہش پر بٹی ہے۔ اس لیے فرال کہ اب كنة كه جي ان كى ميادت كوسان من مح كيا كميلت إين كى تما في سكر موائي ستل كرت بوا كم يستري كري من تهاري خوادشات ک مردی نیس کر آزاکر بافرش عی نے ایراکیا) و عی قرارہ و جاول گا۔

غیراللہ کو پکارنے میں مشرکوں اور مسلمانوں کا فرق

اس آیت من "تدعون من دون الله" فرایا به اور دعا کامعی ب طلب تقع یا فع شرر کے لیے ندا کرا مین مشركين ائي ممات اور مشكلات على بطور عبادت ان يول كوند اكرة تصداس لي يمال دعاد كامعي عبادت ب كوكدوه ان بنول کی عبادت کرتے تھے اور ان کا مختیدہ تھا کہ سیات نفع پہنچانے تور صرد دور کرنے پر قادر میں۔ سوان کا بنول کو پکاوٹادر اصل ان كى عبوت كرا تعامل لي بم في يعلى وعاكاستى يرسش اور عبارت كياب اور صعت مى بحى وعاكو عباوت فريايا ب-حضرت نعمل بن بشير بويني بيان كرت ين كرني بيان حد في الله من قرايا وعاكمان مباوت ب- برآب في تها وا

طبيان القر أن

رب فرما آب اجمعے دعا کروش تمماری دعا قبول کروں گائے تک جو لوگ میری عبادت کرنے سے تحبر کرتے ہیں دہ عنقریب ذات سے جنم میں داخل ہوں کے المومن: ۱۰۰ ترزی نے کمایہ مدیث حسن مجمع ہے۔

(سنن الترفدي عنه وقم المدعد المهمة المهمة الإواؤد عن وقم المدعد الاستن البرائي البرائي المراد عنه المهمة المعمد المهمة المهمة المعمد المهمة المعمد المهمة المعمد المهمة المعمد المهمة المعمد ا

بعض مسلمان اپنی مشکلات اور مملت میں یاعلی مداور یا فوٹ الا مظم المدد کتے ہیں افضل اور اولی قرمی ہے کہ یا اللہ کما است اللہ کو پادا جائے اور اس سے عد طلب کی جائے "کین این مسلمانوں کی اس داسے فرض یہ ہوتی ہے کہ یہ اولیاء کرام اللہ تعلق کی مدد کرتے ہیں۔ اس لیے ان کی یہ دا اللہ تعلق کی مدد کرتے ہیں۔ اس لیے ان کی یہ دا شرک جسی ہے۔ شرک جسی ہے۔ اس اللہ اور یا فوٹ اعظم کے الفاظ ہوتے ہیں یہ شرک جسی ہے۔ شرک اللہ اور یا فوٹ اعظم کے الفاظ ہوتے ہیں ہے کہ شرک جسی ہے۔ شرک اس وقت ہوگا جب پار نے والداس اعتقار سے کلمات ذوتی و شوقی اور محبت سے کے جاتے ہیں ہے ہمی شرک جسی ہے۔ شرک اس وقت ہوگا جب پار نے والداس اعتقار سے پارے کہ جس کو وہ پار رہا ہے اور ان خور منتا ہے اور ان خوات کو ان کی دور کرتا ہے "یا وہ اس کو مستحق پارے کہ جس کو وہ پار رہا ہے "وہ استحق کی جاتے ہیں ہے جساکہ مشرکین اپنے بنوں کو ندا کرتے تھے۔ مشرکین کے بتوں کو پار نے اور مسلمانوں کا اولیاء اللہ کو پار نے شرک ہے اور مسلمانوں کا اولیاء اللہ کو پار نے شرک ہے اور مسلمانوں کا اولیاء اللہ کو پار نا شرک ہے اور مسلمانوں کا اولیاء اللہ کو پار نا شرک جسی ہے۔

(سنن تروی مند الد الرحث ۱۵۲۴ سند الد من الد من ۱۳۰۳ مند ۱۳۰۳ مند ۱۳۰۳ مند الد الد الد المدارة المده ۱۳۲۳ (من المده ۱۳۲۳) المند الد الد شاكر في المده الد المده ال

انبیاہ علیم السلام اور صافین کرام کا یہ معمول رہا ہے کہ وہ اپنی معملت مشکلات اور تمام ماجات میں صرف اللہ تعالی ہے وعا کرتے تھے اور اس سے استر او اور استفالہ کرتے تھے۔ سو جمیں بھی ان کے اسوہ حند پر عمل کرنا چاہیے اور اپنی جر ماجت کا صرف اللہ تعالی ہے سوال کرنا چاہیے 'اور اس سے مدو طلب کرتی چاہیے۔ بال انبیاء علیم السلام اور صافین عظام کاوسیلہ چیش مرف اللہ تعالی سے سوال کرنا چاہیے 'اور اس سے جو از اور استحسان میں کوئی شک و شبہ نسیں ہے 'اور جب مقریزین بار گاو صوریت کے وسیلہ سے وعالی کی جائے گی 'تو اس کا مقبول ہونا زیادہ متوقع ہوگا۔

الله تعالى كاارشاد ب: آب كئے ب شك ص النے رب كى طرف سے اس روش دليل ير مول جس كو تم في جمنا الا

ے 'جس چرکو تم مجلت سے طلب کررہے ہو 'وہ میرے پاس نسم سہد تھم صرف اللہ کا ہدوہ تق بیان قربا آئے اور وہ بمترین فیصلہ فرانے والاہے 6 آپ کیکا اگر میرے پاس وہ چربو تی جس کو تم بہ مجلت طلب کردہ ہو 'قومیرے اور تمہارے ورمیان (مجمی کا) فیصلہ ہوچکا ہو آباد واللہ خاطوں کو خوب جاسا ہے 6 (الانعام ۸۰۰ عدہ)

كفارك مطالبه كے باوجود ان ير عذاب نازل نه كرنے كى دجه

اس آیت میں بے ذکرے کہ نی بڑی اپنے رب کی طرف سے ددش دلیل پر قائم تھاور کھر قراش اس دلیل کی تھذیب کرتے تھے۔ اس دلیل سے موادوہ دلیل ہے جو قر آن جید میں اللہ کی توحید پر قائم کی گئی ہے 'جب کھار اس دلیل کو سنتے تو اس کو جمٹلاتے تھے' وہ خالم لوگ آپس میں مرکوشی کرتے ہوئے کہتے تھے:

هَلُ هُدُالِلَاسَتُرِيتُكُكُمُ اَفَتَأْتُونَ السِّحْرَوَ آنتُم تُبُوسُرُونَ (الانبياء:٣)

یہ مرف تم میں بشریں کیا تم جادد کے پاس جاتے ہو مالا کے تم دیکھتے ہو۔

نی مڑا ہوں مشرکین کو عذاب المی سے ڈراتے تھے کو وہ ڈرنے کے بجائے آپ سے اس عذاب کو جلد ہیجے کامطابہہ ارتے تھے۔ قرآن جیدیں ہے:

وَإِدُ قَالُوا اللّٰهُمْ إِنْ كَالَ هَذَا هُوَالْحَقُ مِنَ مِنَا مُوَالُحَقُ مِنَ عِنْدِ كَا فَالُوا اللّٰهُمُ إِنْ كَالَ هَذَا هُوَالُحَقُ مِنَ عِنْدِ كَا فَالْمُ اللّٰهُ السَّمَا وَالْمِيمَ النُّهُ النُّهُ اللّٰهُ لِيُعَدِّبَهُمْ وَمُنْمُ وَانْتَ فِيهُمْ وَمَا كَالَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَمُمْ وَانْتَ فِيهُمْ وَمَا كَالَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَمُمْ وَانْتَ فِيهُمْ وَمَا كَالَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَمُمْ وَانْتَ فِيهُمْ وَمَا كَالَ اللّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَمُمْ وَمُنْمُ لَا اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَمُمْ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَمُمْ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللللّٰمُ الللّ

اور جب انہوں نے یہ کما کہ اے اللہ اگر کی (قرآن)
تیری جانب سے حل ہے تو تو اپنی طرف سے ہم کہ آسان سے چھر
یرما' یا (کوئی اور) در دیاک عذاب لیے آ' اور اللہ کی شان
تیس کہ دو ان کو عذاب دے در آنجائیکہ آپ ان جس موجود
ہوں اور اللہ انہیں عذاب دیے والا نہیں ہے' در آنجائیکہ وہ
استنتار کردہ ہوں۔

الم عبد الرحل بن على بن محدودي متوفى عدد كلية ين:

(زاد المسير "ج ٣٠ ص ٥١ معلمور كتب اسلامي بيروت ٢٠٠٠ مااه اسباب النزول ٢٢٢٠)

اس آیت سے مرادیہ ہے کہ اس عذاب کو نازل کرنا صرف افتہ تعالی کی قدرت اور اس کے افتیار میں ہے۔ وہ آگر جا ہے گا تو عذاب کو نازل فرمائے گا اور آگر وہ اپنی کسی حکمت کی بنا پر عذاب کو نہ نازل کرنا جائے تو نہیں نازل فرمائے گا جھے اس عذاب کے نازل کرنے یا اس کو مقدم اور مو تر کرنے پر قدرت نہیں ہے اور آگر بالفرض یہ معالمہ میرے افتیار میں ہو تا تو می تمہارے مطالبہ پر عذاب کو لاچکا ہو آگ

زیر بخش آیت کاایک مدیث ہے تعارض اور اس کاجواب

اس مکہ یہ سوال واروہ و ماہے کہ اس آیت ہے یہ معلوم ہو ماہے کہ نبی جین یہ چاہتے تھے کہ کفار پر عذاب نازل ہواور

غيبان القر أن

بعض اطویت سے یہ معلوم ہو آ ہے کہ نبی ہنجیج یہ نبیں چاہتے تھے کہ کفار پر عذاب نازل ہو 'جیسا کہ حسب زیل مدیث ہے واضح ہو آ ہے۔

نی با جہر کی ایساون آیا جو جنگ احد سے زیادہ شدید تھا؟ آپ نے فریا بجے تساری قوم سے بہت زیادہ تکفیف بھی اور اللہ اکیا آپ پر کوئی ایساون آیا جو جنگ احد سے زیادہ شدید تھا؟ آپ نے فریا بجے تساری قوم سے بہت زیادہ تکفیف بھی اور سب سے زیادہ تکلیف وہ تھی جو بھی ہو تھا کہ جب می نے اپنے آپ کو این عبد کالی بن عبد کلال پر چش کیا ایسی اس سے وہ چر تجول میں کی جو بھی چاہتا تھا۔ پس می غم قدہ بو کروائیں چلا آیا اور قرن فعالی پر بھی کر جھے افاقہ ہوا اور کہا آپ می سے دیکھا اس میں جرا کیل سے انسوں کر جھے افاقہ ہوا اور کہا آپ می سے دیکھا تو بھے پر ایک بدل نے مالیہ کیا بوا تھا۔ جس نے دیکھا اس میں جرا کیل سے انسوں نے بھی آواز دی اور بھی تو اس میں جرا کیل ہو اس کو ان کفار کے متعلق جو چاہیں انتخاب ورائی میں اور بھی انسوں نے آپ کی طرف بہاڑوں کا فرشتہ جمیعا ہے 'آ کہ آپ اس کو ان کفار کے متعلق جو چاہیں 'تھی دیں۔ حضور نے فریا بھر بہاڑوں کا فرشتہ بھی اور بھی سام کیا۔ پھر کھا اس میں بازوں کا فرشتہ ہو تا اور دی اور بھی آپ کہ آپ اس کو ان کفار کے متعلق جو چاہیں و شول نے آپ کی قوم کا جس میں اور بھی انسوں کو ان کفار کے متعلق جو چاہیں قبل نے آپ کی ہو اس کو ان کفار کے متعلق جو چاہیں اور ایس کی ماروں کو ایس کو ان کو ان کو ان کو ان کو ان کو ان کو کہ کو میں انسوں کو نوائی کو جو چاہیں کو شری سے آگر آپ چاہیں تو شری ان دونوں بہاڑوں کو بیوا کرے گاجو صرف انٹ کی حیاجت کریں گے اور اس کے ماروں کی کو شریک میں گالی ان کی پشتوں سے ان لوگوں کو بیوا کرے گاجو صرف انٹ کی حیاجت کریں گے اور اس کے ماروں کی کو شریک میں گالی سے کہ انتہ تھائی ان کی پشتوں سے ان لوگوں کو بیوا کرے گاجو صرف انٹ کی حیاجت کریں گاد ان سے کہ ماروں کو بیوا کرے گاجو صرف انٹ کی حیاجت کریں گاد اور اس کے ماروں کو کھی کو شریک میں گا

(من مسلم عبدار الله ۱۱۱۱ من کری طنهائی اج ۱۰ تم الدیده ۱۱۱۱ م اس آیت می اور اس مدیث میں اس طرح موافقت ہے کہ آیت میں کفار کی طرف ہے ہذا ہے مطالبہ پر عذا ب نازل کرنے کاذکر ہے اور مدیث میں کفار کی طرف سے عذا ہے کہ مطالبہ کاذکر قیم ہے کا گھر میاڑوں کے فرشتے کی اس فواہش کاذکر ہے کہ کفار پر عذا ہے نازل کیا جائے جس کے جواب میں نبی پیچاج نے فرایا ججے امید ہے کہ ان کی پشتوں ہے ایسے لوگ پیدا ہوں کے جوافتہ کی عبادت کریں گے اور اس کے ماتھ شرک فیمی کریں گے۔

الله تعالی کافرشاوہ: اور ای کے پاس فیب کی جایاں ہیں اس کے سوا (از خود) ان کو کوئی نہیں جاتا اوہ ہراس چیز کو جاتا ہے جو دنگی اور سمندروں میں ہے۔ وہ ہراس پیز کو جاتا ہے جو در فت ہے کر تا ہے اور زمین کی تاریکیوں میں ہردانہ اور ہر دنگ چیز بوج محفوظ میں تکمی ہوئی ہے۔ (الانسام 80)

مفاتح الغيب كي تغيير من بعض علاء كي لغزش

علامد محودان عمر معخشوى متوفى ١٩٥٨ تكسة بس:

اس آیت میں مفائح انتیب کاذکر ہے۔ مفائع مقتی جمع ہے۔ مفتح کامعنی جانی ہے اور بید کام بہ طور استفارہ ہے کو نکہ جائی ہے ترانہ تک پہنچا جاتا ہے۔ لین النہ جائی ہو اور اس کو کھولنے کا طریقہ معلوم ہو 'وہ خزانہ کو پالیتا ہے۔ لیذا النہ تعالیٰ نے یہ اراوہ کیا کہ فقط وی نجیب بنک واصل ہوئے والا ہے۔ جس طرح جس مخص کے پاس فزانے کے تقلوں کی جابیاں موں اور اس کو کھولنے کا طریقہ معلوم ہو تو دی خزانہ تک واصل ہو سکتا ہے۔

(ا كلاف مج ٢٠٥٠ ١١ نشرابلات مق الران ١١١١ه)

علامہ ز معضوی کاب لکستا میح نہیں ہے کہ افتد تعالی جانی کے زریعہ غیب تک واصل ہونے والا ہے کیونکہ اس سے بد

وہم ہو آئے کہ اللہ تعالیٰ کو بالنعل علم حاصل نمیں ہے ' بلکہ تدریجا علم حاصل ہو آئے اور اللہ تعالی اس سے منزہ اور باک ہے۔ اللہ تعالیٰ کے علم میں غائب حاضر کی مائند ہے ' مامنی اور مستنقبل کا علم اس کے سامنے کیساں ہے ' ہرچیز کا علم اس کے سامنے ہر وقت حاضر ہے۔

ای طرح شخ اساعیل دالوی متونی ۱۳۹۱ه کابید لکستاجی سیح نسی ہے۔

جس کے ہاتھ گئی ہوتی ہے' قفل ای کے انھیاد میں ہوتا ہے۔ جب چاہے کھولے' جب چاہ نہ کھولے۔ ای طرح ظاہر کی چیزوں کو دریافت کرنالوگوں کے انھیاد میں ہے۔ جب چاہیں کریں' جب چاہیں نہ کریں۔ سوای طرح فیب کا دریافت کرنا ایٹ اسٹیاد میں ہو' جب چاہی کرلیجئے۔ یہ اللہ صاحب ہی کی شمان ہے۔ (تقویت الایمان میں اواکاں) مطبوعہ مطبع ملبی' ما ابود)
اس عبارت سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ اللہ تعالی کے ہاں بالفسل فیب کا علم نسیں ہے۔ وہ جب چاہے' فیب کو دریافت کر سکتا ہے اور یہ براہتا ہا طل ہے۔ اللہ تعالی کے سامنے ہروقت تمام صغیبات اور شماوات کا علم حاضرے اور اسے بھی ہی دریافت کر سکتا کے اور یہ براہتا ہا طل ہے۔ اللہ تعالی کے سامنے ہروقت تمام صغیبات اور شماوات کا علم حاضرے اور اسے بھی ہی دریافت کرنے کی حادث نہیں ہوتی۔

مفاتح الغيب كي تغيير مين احاديث اور آنار

حضرت عبداللہ بن ممرر منی اللہ عثمانیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ سائی ہے فرمایا غیب کی جابیاں پائے ہیں۔ جن کو اللہ ک سواکوئی نہیں جانا۔ کوئی عض نہیں جانا کہ کل کیا ہوگا اور نہ کوئی فضی یہ جانا ہے کہ ماں کے پیٹ میں کیا ہے اور نہ کوئی عض یہ جانا ہے کہ محل کیا کرے مجانور نہ کوئی محض یہ جانا ہے کہ وہ کس جگہ مرے گا اور نہ کوئی محض یہ جانا ہے کہ جارش کب آئے گی؟

(صحیح البخاری جه از قم الحدیث: ۱۳۹۹ مند احمد ۴۴ وقم الحدیث ۱۳۷۳ مطبور پیروت جه از قم الحدیث: ۳۷۲۳ واد الحدیث قابره النجم الکبیر جه از قم الحدیث: ۱۳۳۳)

حضرت عبدالله بن مسعود بویش فرماتے بیں تمهارے نبی جیور کو ہرچیز کی مفاتی دی گئی ہیں۔ سوا پانچ چیزوں کے۔ ب شک الله علی کے پاس قیامت کا علم ہے 'وی بارش نازل فرما آہے 'وی جانا ہے کہ رحموں جس کیا ہے 'اور کوئی فخص نبیں جانا کہ وہ کل کیاکرے گااور کوئی فخص نبیس جانا کہ وہ کمال مرے گا۔ بے شک الله بہت جانے والا مبت خرر کھنے والا ہے۔

(القران: ۱۳۴) (مند اجراج م) وقم الحديث: ۱۳۵۹ علامه محد احد شاكر حوتی ۱۵ ملاحد كمايه مدرث مي ب امند ابويلعلی اج۵ وقم الحدیث: ۵۱۵۳ مند حيدي اجها و قم الحدیث: ۱۳۳ جامع البيان اجري مرد ۲ مجمع الزوائد اجرام ۱۲۲۳)

امام مسلم نے صفرت ابو ہریں ہوئے۔ سے ایک طویل مدے روایت کی ہے۔ اس کے آخر میں ہے صفرت ہرائیل نے نی سی سوال کیا گیا ہے 'وہ سائل ہے زیادہ نہیں جاتا۔ میں عزقہ یب موال کیا گیا ہے 'وہ سائل ہے زیادہ نہیں جاتا۔ میں عزقہ یب حمیس اس کی علامتیں بیان کروں گا جب تم و کھو کہ عورت ہے اس کا مالک پیدا ہوا 'و یہ قیامت کی علامتوں میں ہے ہے 'اور جب تم مویشیوں جب تم نظے ہیر' نظے بدن' ہرے 'مور تھے نوگوں کو ذھن کا مالک و کھو تو یہ قیامت کی علامتوں میں ہے ہے اور جب تم مویشیوں کے جرانے وانوں کو بڑے بڑے ممان بناتے و کھو تو یہ قیامت کی علامتوں میں ہے ہی اور جب تم مویشیوں کے جرانے وانوں کو بڑے بڑے مکان بناتے و کھو تو یہ قیامت کی علامتوں میں ہے۔ پھر آپ نے یہ آب پر حمی ہے ٹک اللہ کی سے بات کہ وہ کل کیا میں گیا ہے اور کوئی فض نہیں جات کہ وہ کمال مرے گا ہے تک اللہ بہت جانے والا ہے۔ افران ہو اللہ ہو اللہ

مفائح الغیب کی تغییر میں علماء کے نظریات

علامه سيد محمود آلوي متوفى مدين المع لكيت بن

مفاتح الغیب کی تغیری جن پانچ چیزوں کا مدیث میں ذکر کیا گیاہے اس سے مراد اہم چیزی ہیں۔ورند طاہرے کہ ان پانچ چزوں کے علاوہ جو باتی مغیبات میں ان کو بھی اللہ کے سواکوئی تمیں جات۔

(روح المعاني ٤٦٠ من الاالمطبوعة واراحياء التراث العربي ميروت)

میر بالنج جرس مون یا باقی غیرب از خود این کو الله تعالی کے سوا کوئی تعیل جائزا الله تعالی ایند ر سولول کو خیب کاعلم عطا فرما تاہے اور اس نے ان یا فج بیزوں کاعلم بھی جارے نی سیدنا می مجدد کو مطافر لما ہے۔

لما على قارى متونى الهوامد لكيية إل:

علامہ قرطبی نے کماجو محض رسول اللہ مرجوں کے توسل کے بغیران پانچ چیزوں کے جاننے کارعویٰ کرے 'وہ اپنے وعویٰ يس جمونا بيد (مركات العالى عام ص ١٥ مطبور مكتبد اداديد المكن مهمهد)

علامہ بدر الدین بینی متوفی ۵۵۹ء اور علامہ شماب الدین ابن حجر عسقلانی متوفی ۱۸۵۴ء نے بھی اس عبارت کو نقل کیا -- (عدة القاري ع) على معه مطبور معر ٨٨ ١٠ المد الق الباري عام ١٢٥ مطبور الاور ١٠ ١١ه)

علامه جلال الدين سيوطي متوفى المد لكمة ين

بعض ملاء نے بیان کیا ہے کہ نبی چھیر کو ان پانچ چے وں کا علم مجی دیا گیاہے اور ونت وقوع قیامت اور روح کاعلم مجی دیا كياب أور آب كوان كے جميانے كا حكم در كيا ب- (شرح العدور اس ١٣٩ مطور دار الكتب العليه عروت البه الله) ي ميراور مثلل موني ١٩٠١ه المد المية إلى:

مطلب ہے ہے کہ فیب کے فرانے اور ان کی تنجیاں صرف خدا کے پاتھ میں میں وی ان میں ہے جس فرانے کو جس ونت اور جس قدر چاہے 'کسی رکھول سکتا ہے۔ کسی کویہ قدرت نہیں کہ اپنے حواس و منتل و قیرہ الات اور اک کے ذریعہ ہے علوم عيبيد تك رسائل ياسك واجت فيوب اس ير منكشف كردية محتة بين ان عن از خود اضاف كريد كيونك علوم عيبيدك تخیال اس کے اتھ میں نمیں دی حمی ۔ خواہ لا کھول کرد ٹدل جزئیات و واقعات میں سر سمی بندے کو مطلع کر دیا گیا ہو ' تاہم نیب کے اصول و کلیات کاعلم جن کو مغالج فیب کمنا جاہیے 'حق تعالی نے اپنے لیے می مخصوص ر کھا ہے۔

(تغییر فیخ مثانی نمس ۱۷۹ مطبویه شاه نبد قر آن کریم پر مثلک کمپلیکس)

علامه عمرين يوسف أبوالميان اندلسي متوتي مهدي الكينة بين

حضرت ابن عباس رمنی الله عنماے مودی ہے کہ مفاتح الغیب سے مراد آ مانوں اور زمینوں میں غیب کے فرالے ہیں۔ مثلار زق اور قدرت کے مطاومے کمااس سے مراو تواب عذاب اور مستقبل کی عائب کی جنری ہیں۔ زجاج نے کمااس سے مرادوہ چڑی ہیں جو علم غیب کے حصول کارسیلہ ہوں۔ایک قول ہے ہے کہ اس سے مراد عمردں کے انجام اور خواتیم اعمال ہیں۔ (البحرالميوع مع من ٥٣٣٥ مطبوعه داد الفكو "بيروت ١٣١٢ هـ)

اس تیت میں مفاتح کالفظ ہے۔ عملی قوائد کی رو سے بیہ مفتح (میم کی زیر کے ساتھ) کی جمع بھی ہو سکتا ہے۔ اور مفتح (میم کی زیر کے ساتھ) کی جمع بھی ہو سکتا ہے۔ اگر سفتے (میم کی زیر) کی جمع ہو تو اس کا معنی چابیاں میں اور اگر سفتے (میم کی زیر) کی جمع ہو تو اس کامعن نزانہ ہے۔

جلدسوم

طِيان القر أن

آیانی چیر کو صرف غیب کی خرب وی گئی ہیں یا غیب کاعلم بھی دیا گیا ہے؟

ترآن مجید بی افتہ تعلق کے فیرے علم غیب کی نفی ہی کی گئے اور انبیاء علیم السلام کے لیے علم غیب کا اثبت ہی کیا گئے ہے ملاء اسلہ علی مقد تو جیسات کی ہیں۔ ایک یہ ہے کہ بلا واسلہ الا تعلیم اور ذاتی علم غیب کی غیرافلہ ہے نئی کی سیا ہے۔ اور بالواسلہ ابذریعہ وی و المام اور عطائی علم غیب کا فیرافلہ کے بیوت ہے۔ دو سری توجیہ ہے کہ علم غیب کا فیر بافلہ کے جوت ہے۔ دو سری توجیہ ہے کہ علم غیب کی نفی ہے اور اظمار غیب کا ثبوت ہے ایر دولوں توجیمات میچ ہیں۔ بعض متا قرین علاہ دیوبرا نے یہ کہا ہے کہ علم غیب کی فیرے اور فیر کی خبول کا ثبوت ہے۔ اس توجیہ میں میں ملام ہے کیو تک خبر بھی علم کا ایک ذریعہ ہے اور کسی چز کی خبرت کو متلزم ہے ان توجیہ میں مملام ہے کیو تک خبر بھی علم کا ایک ذریعہ ہے اور کسی چز کی خبرت اس کے علم کے ثبوت کو متلزم ہے ان خبر حقومین علاء دیوبرا نے تی جانبی کے علم پر علم غیب کا اطلاق کیا ہے ایک میں متا قرین علماء دیوبرا کی میارت نقل کریں گے ایکراس پر جرح کریں گے۔

منتى الد شفع دي يشرى متوتى ١٩١١ علم كلية إلى:

ای طرح کی رسول و ہی کو پزرید وی یا کی ولی کو پزرید کشف والمام ہو فیب کی یکد چنوں کا علم دے دیا گیا اس کو قرآن میں فیری کی بیائے انہاہ الخیب کما گیا ہے ' جیسا کہ متعدد آیات میں فرکور ہے۔ "نسلک من انباء العیب نوحیه البیک "ان میں انباء العیب نوحیه البیک "اس کے آیت فرکورہ میں "لا یعلمها الاهو" یعنی فیب کے گرافن کو بجزاللہ تعالی کے کوئی نہیں جان اس کی شری استام کی گوئی نہیں جان اس میں کی شری استام کی گوئی نہیں۔ (معادف القرآن ج ۲۰سم معمود دوار قالمعادف معادل)

نيزمنتي في طفع ديويدي للسة ين.

حق تعالی خود بذراید و جی این انبیاء کوجو امور غیبهد بتلاتے ہیں اوہ حقیق علم غیب قبیل ہے ایک فیب کی خریں ہیں۔ جو انبیاء کو دی گئی ہیں جن کوخود قرآن کریم نے کئی جگہ انباء الغیب کے انقظ سے تعبیر فرایا ہے۔ "من انباء العیب نوحیها الب ک "(معارف القرآن ع ۴ می ۲۳۸ مطبور اوارة اللعارف ۱۳۲۳)

لکین حقد بین علماء ربو برند نے نبی جین اور دیگر کلوق کے علم پر علم غیب کااطلاق کیا ہے۔ شیخ اشرف علی تعانوی متونی سیسور لکھتے ہیں:

اگر بعض علوم علیمه مرادیں تواس میں حضوری کی کیا تخصیص ہے؟ ایساعلم قیب تو زید و عمرو بلکہ ہر میں و مجنون بلکہ جمع حیوانات و بمائم کے لیے بھی عاصل ہے۔ کیونکہ ہر فخص کو کسی نہ کسی اسی بلت کاعلم ہو تاہے جو دو مرے فخص سے مخلی ہوگی ہے۔ (حفظ الائمان 'ص) 'مطبور مکتبہ فعمانے' دیوبند ہولی)

اس عبارت میں شیخ تفانوی نے نہ صرف رسول اللہ پہنچار کے علم پر علم فیب کا اطلاق کیا ہے ' بلکہ ہر آدی ' بچوں' پاگوں' حیوانات اور برائم کے علم پر بھی علم فیب کا اطلاق کیا ہے۔ شیخ تفانوی کے خلیفہ مجاز شیخ مرتفعنی حسین جائد ہوری متوفی اے مہدہ اس عبارت کی تشریح میں لکھتے ہیں:

حفظ الایمان میں اس امرکو تشلیم کیا گیا ہے کہ سمرور عالم میں ہے کے کو علم غیب باعطاء اللی عاصل ہے۔ (تو خیج البیان فی حفظ الایمان میں ۵ مسلموں لایور)

ير لكے بن

مردر عالم میجیز کوجو بعض علوم **هیب مامل بین اسے قریماں بحث ی نمیں۔** مردر عالم میجیز

(تو فيح البيان في حفظ الاعمان من «المطبوع الامور

نيز شخ چاند يوري لکيتے ہيں:

صاحب حفظ الايمان كامرى توييب كر مردر عالم مجتير كوباوجود علم فيب عطائل بون كے عالم الغيب كمناجائز نهيں۔

34

إلوَّ شِيحِ البِيانِ في حقة الإيمان عمل الأعطبو عدلا مور)

واضح رہے کہ جارے نزدیک بھی نی ساتھ کو علم غیب ماصل ہے۔ لیکن آپ کو عالم الغیب کمنا سمجے نمیں ہے۔ کیونکد عرف أور شرع مي عالم القيب ألله تعالى كي صفت معنت معنت معنون من الوجود عن اور جليل بوت ك محر عزد جل كمنا جائز نهيس ب- اعلى حضرت تي ك لي عالم الغيب كمنا كروه قرار ديا ب-

نيز في اشرف على تعانوى منونى سامد لكه ين

اول: يس في وعوى كياب ك علم غيب جو بلاواسط مو وه تو خاص ب حن تعالى ك سائد اور جو بواسط مو وه كلوق ك لي ہوسکتاہے بھراس سے محلوق کو عالم انغیب کمنا جائز شیں۔ (مغتا الایمان میں ۱۴ مطبوعہ مکتبہ نعمانیہ 'دادبند)

اس حم کی حبارات بست ہیں۔ ہم نے بد غرض اختصار چند عبارات نقل کی ہیں۔اس کی تنسیل ہاری کتب مقام واایت و نبوت میں ہے۔ بسرطل ان عبارات سے یہ ثابت ہو کیا کہ نبی جھیز کو عطاء البی سے علم غیب حاصل ہے ، جیسا کہ شخ جاند ہوری نے اس کی تصریح کی ہے 'اور آپ کی طرف علم غیب کی نبعت درست ہے 'اورید کمنا سیجے نبیں ہے کہ آپ کو صرف غیب کی جرس وي محى مين وقيب كاعلم فيس --

الله تعالى كے علم اور رسول الله على كا علم من فرق

مفتى محر شفيح ديوبندي متونى ١٧ مهد لكيت ين

غلامہ سے ہے کہ علم کے متعلق دو چزیں حق تعالی کی قصوصیت میں ہے ہیں جن میں کوئی فرشتہ یا رسول یا کوئی وو سری محلوق شریک نسیں۔ ایک علم فیب اور سرے موجودات کاعلم محید جس سے کوئی ذرہ مخلی نسیں۔

(معارف القرآن مج ۴ م ۴۳۸ مطبور ادارة المعارف اكراجي)

نيزمنتي فحرشنيع لكهتة بين

بلاشبه الله تعالى نے اپنے انبیاء علیهم السلام کو اور پالخصوص حضرت خاتم الانبیاء پیجیز کو غیب کی ہزاروں فاکھوں چیزوں کاعلم عطافرالیا ہے اور سب فرشتوں اور انہیاء سے زیادہ عطافرلما ہے کین یہ ظاہرے کہ خداندانی کے برابر کسی کا علم شعی نہ ہو سکتا ہے۔ ورن پھریہ رمول کی تعظیم کاوہ غلو ہو گاجو بیسائیوں نے افقیار کی کہ رسول کو خدا کے برابر تھمزادیا۔ ای کانام شرک ہے۔ نعوذ يالله مند- (معارف القرآن عسم ١٥٥٠ مطبوع ادارة العدف كراجي)

جارے نزدیک بھی اللہ تعالی اور رسول اللہ چھیج کے علم میں مساوات کا قول کرنا شرک ہے۔اللہ تعالی کاعلم قدیم اور غیر منائل ب اور ني التين كاعم مادت اور منائل ب الله تعالى كاعلم از خود اورب تعليم ب اني التين كاعلم الله تعالى ك عطااور اس کی تعلیم ہے ہے۔ ہم پہلے بھی بیان کر چکے ہیں کہ ایک قطرہ کو جو نبعت سمندرے ہے 'نبی پڑیور کے علم کو اللہ کے علم ہے وہ نبت بھی نمیں ہے چریونکہ قطرہ اور سمند رہی متلی کی نبت متابی کی طرف ہے اور نبی سیجیز کے علم اور اللہ کے علم میں منائ کی فیر منائ کی طرف نسبت ہے ' بلکہ ایک ذرہ کے متعلق ہی رسول اللہ مائید کاعلم اللہ کے علم کی مثل نہیں ہے ایو تک آپ کو ایک ذره کاعلم متای وجوه سے ہو آے اور اللہ تعالی کو ایک ذرہ کاعلم بھی غیر متای وجوہ سے ہو تا ہے۔

اعلى حفرت الم احد رضافاضل برطوي متوفى وموسود لكعترين

سى علم كى معزت عزوجل سے مخصيص اور اس كى ذات باك ميں معراور اس كے غيرے مطلقاً نفى چند اور ب ب. اول: علم كاذاتى ہوناكہ بذات خود بے عطاء غير ہو

ووم علم كاغتاك كسي آله جارحه وتدبير فكر ونظر والتفلت وانغمل كالعملاً محاج نه و

سوم: علم كامردى يوناكه ازلاً ايرابو

جارم: علم كاوجوب كدكس طرح إس كاسلب مكن نديو

تنجم: العلم كااتفى غايت كمل ر موناكد معلوم كى ذات فاتيات اعراض احوال لازمدا مفارقد واحد اضافيه المنيدا آتيد (مستغبله) موجوده مكند سے كوكى ذرو كى وجد ير مخفى ند موسكے۔

ان پانچ وجہ پر مطلق علم حضرت المدیت جل وعلاہے خاص اور اس کے فیرے مطلقاً منٹی ایسیٰ کسی کو کسی ذرہ کا ایسا علم جو ان پانچ وجوہ ہے آیک وجہ بھی رکھتا ہو ' ماصل ہونا ممکن نہیں ہے جو کسی فیرالنی کے لیے عقول مفارقہ ہوں خواہ نفوس ناطقہ آیک ذرہ کا ایساعکم عابت کرے ' یقیناً اجماعاً کافر مشرک ہے۔ الصمام 'ص بے۔ الاعمان پر اس لاہور ' ۱۳۳۷ء)

نيزام احمد رضا كادري لكمة بين:

میں نے اپنی تنابوں میں تصریح کروی ہے کہ اگر تمام اولین و آخرین کا علم جنع کیا جائے تو اس علم کو علم النی ہے وہ نسبت ہرگز نمیں ہو سکتی جو آیک قطرہ کے کروڑویں حصہ کو سمندر ہے ہے کی تک یہ نسبت منابی کی تمانی کے ساتھ ہے اور وہ فیر تمای کی تمانی ہے۔ (الملفوظ علم اس اس اسلور نوری کتب خانہ الاہور) نوح محقوظ کا بیان

ای آیت کے پہلے حصہ میں اللہ تعالی نے اجمالی طور پر اپنے علم کی دسعت بیان فرمائی تھی کہ اس کے پاس فیب کی جابیاں میں اور اس کے سواان کو کوئی شمیں جانیا الور آیت کے دوسرے حصہ میں اللہ تعالی نے تنصیلی طور پر اپنے علم کی دسعت بیان فرمائی۔ وہ ہر اس چیز کو جانیا ہے جو خطکی اور سمندروں میں ہے "وہ ہر اس ہے کو جانیا ہے جو در خت سے کر آہے 'اور زشن کی تاریمیوں میں ہردانہ اور ہر تر اور خلک چیز لوح محفوظ میں تکھی ہوئی ہے۔

ایسی جس طرح اللہ تعالی تمام معیبات کو جاتا ہے "ای طرح نظی اور سمندر کی جرج کو جاتا ہے اور اس کا علم تمام موجودات کو مجیفہ ہے انہیں و آسیان جس ہے کوئی زرواس ہے جے شیدہ نسی۔ وہ غیب اور شاوت کی جرج کو جانے والا ہے اور شدت کے چوں جس ہے کہ کوئی پیتا کر آئے ؟ نیا آت 'جناوات اور حیوانات کی تمام حرکات اور ان کے تمام احوال اس کے علم جس جیں اور مکلفین جس ہے جن اور انس کے جرفش ہے وہ واقف ہے ذہین کے اندھ جوں جس ہوئے اور ان کے تمام احوال اس کے اندو رہنے والے کیڑوں کو ژوں اور زجین کے اور جانداروں اور بے جانوں کے تمام احوال اوٹی چیزاس کے علم ہے باہر نسیں۔ جو تر اور خیک 'ویرویا عروہ' کھل یا کوئی دانہ زجین پر گر آئے "وہ سب سے واقف ہے اور ان جل ہے جرچ کو اس نے باہر نسیں۔ جو تر اور خیک 'ویرویا کر بیدائش اور اس کی موت اور حیات 'موت اور ماجد الموت کے قیام کوا نف اس جس کھی جو جیں اور جرچ کو پیدا کرنے ہی ہی جانوں نے تمام محلوق کے احوال اس جو جی ہی ہی جانوں نے تمام محلوق کے احوال اس کھی دیے جی ہے۔ قرآن مجیو جی ہے۔

زمین میں کوئی معیبت نہیں پیٹی اور نہ تمہاری جانوں میں الکی معیبت نہیں کی ہے۔ لیک کتاب میں تکھی

مَّا اَصَابَ مِنْ مُنْصِيْبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلا فِيَّ الْفُسِسَكُمُ إِلَّافِي كِنْبِ مِنْ قَمْلِ أَنَّ تُنْرَاهَا إِنَّ دَالِكَ عَلَى اللَّهِ بَسِيِّرُ ٥ لِكَيْلًا تَاسَوْاعَلَى مَافَانَكُمْ وَلاَنَفْرَ حُوابِمَاأَنْكُمُ وَاللَّهُ لاَيحِبُ كُلُّ مُغْتَالٍ فَنُعُورِ ١٥ المحديد: ١٣-١٣)

تمادے اللہ سے جاتی رہے تو تم اس پر دیج نے کرداور جو مکھ الله في حميل ويا ہے متم اس ير اترايا نه كرو اور الله كمي امرَ الے والے حکیر کو پیند نہیں کر آ۔

حصرت عبدالله بن محمد بن العامل رضى الله عنما بيان كرتے بيل كه بيل نے رسول الله عظيم كوب فرائستے ہوئے سناہے ، کہ اللہ تعالی نے آسانوں اور زمینوں کو پیدا کرنے ہے پہاس ہزار سال پہلے تلوقات کی تقدریں لکسی تھیں اور اس کاعرش پانی

(مج مسلم " لقر " ١٢ (٣١٥٣) ٣١٣ مسنن الترزي " ع" د قم الحديث ٣٢٣ مج ابن مبان " ج" وقم الحديث ١٣٣٨ مدر اجر "

ج٢٠ رقم الديث ومعده من كبري لليمتي مل ١٠٠٠)

کا نکات کے وجود سے پہلے ازل میں اللہ تعالی کو جو اس کا نکات کا علم تھا اس کا پیم تقدیر ہے۔اللہ تعالیٰ کے علم اور ارادہ کے مطابق اس کا نکت میں جو پکھ ہونا تھا اس کو اللہ تعالی نے آسانوں اور زمینوں کے پید اکرنے سے پیاس بڑار سال پہلے لوح محفوظ میں لکھ دیا۔ اللاک کی حرکت اور سورج کی گروش سے دان رات اور باد دسال کا تھین ہو آے اس لیے افذاک سے پیدا کرنے ے پہلے زمانہ اور سالوں کا کوئی وجود نہ تھا۔ اس لیے اس مدے میں پہلی بزار سال کا حقیق معنی مراد نہیں ہے ، بلکہ اس سے مرادیہ ہے کہ اسانوں اور زمینوں کے پیدا کرنے ہے اتنی مہت پہلے لوح محقوظ میں لکھاکہ اگر آسان و فیرہ ہوتے تو اتنی مت میں بچاس بزار مال کزر جاتے اور یا بچاس بزار مال دے کے طویل ہونے سے کنایہ ہے۔

اس كتاب كولوح محفوظ اس لي كما جاتا ہے كہ يہ كتاب تريف اور شيطان كى رسائى سے محفوظ ہے أياب محواور اثبات سے محفوظ ہے چیونکہ محواور البات فقط فرشتوں کے محیفون میں ہو تاہے ایاس کی وجہ یہ ہے کہ یہ محفوظ ہے۔ بھلائی نہیں گئے۔ امام

رازی کی مختیل بدے کہ گئب مین سے مراد اللہ تعالی کاعلم ازل ہے۔

الله تعلق كاارشادى: اور دى رات من تمارى روحول كو تعنى كرليما ب اور جاسى بو يكونم في دن من كيا، پر دن میں تم کو اٹھاریتا ہے' تا کہ مقررہ میعادیوری ہو۔ پھرائی کی طرف تمہارا لوٹناہے ' پھردہ تم کو ان کاموں کی خبردے گاجو تم كرت تصر والانعام: ١٠٠

نيند كاوفات مغري موتا

اس سے پہلی آبت میں اللہ تعالی نے اپنا کمال علم بیان فرمایا تھاکہ فیب اور شمادت کی کوئی چڑاس کے علم ہے ہا ہر نہیں ہے اور اس آعت میں اللہ تعالی نے اپنی قدرت کا کمال بیان فرمایا ہے کہ وہ رات میں تمہاری روح قبض کر لیتا ہے اور ون میں پھر تمهاری روح اوٹا ویتا ہے اور تمهارے اس سونے اور جاسمنے میں حشرد نشر کی دلیل ہے ' اور بالا تر تم نے ای کی طرف او گاہے۔

اس جكه بيه اعتراض مو تاہے كه بلاشيه سونے والا زندہ مو تاہے۔ وہ سانس ليتاہے اور كرو جس براتاہے كو پرانند تعالى كابيه فرمانا کس طرح درست ہو گااور وی رات میں تماری روحوں کو تبض کر لیتا ہے؟ اس کاجواب بید ہے کہ روح دو تھم کی ہیں۔ ایک روح کا تعلق احماس کے ماتھ ہے اور وو سری روح کا تعلق حیات اور حرکت بالاران کے ماتھ ہے۔ بب انسان سویا ہوا ہو آ ہے تو اس کی ارواح حمامہ ظاہرے باطن میں جلی جاتی ہیں "اس لیے اس کے حواس ظاہرہ عمل کرتے ہے مسطل ہو جاتے میں اور فیند کے وقت اس کے جم کا ظاہر بعض ائرانی ہے معطل ہو جاتا ہے اور موت کے وقت اس کا پورا بدن ہر حم کے مجل سے معطل ہو جاتا ہے "اسی طرح نیکد اور موت کی صاحت میں آیک حم کی مشاہمت ہے اور اس انتماد سے نیند پر بھی موت اور وفات کا اطلاق سمجے ہے۔

اس کے بعد فرمایا پھرافتہ تمہیں دن میں افعان ہے اپنی تمہاری ارواح صلہ پھریاطن سے ظاہر میں اوٹادی جاتی ہیں اور تمہارے قوئی ظاہرہ پھرکام کرنے گئے ہیں 'آک تم دو کر سکوجو تمہارے لیے مقدر کے گئے ہیں اور جو عرطیبی تمہارے لیے مقدر کردی می ہے اور و جاری کہ مقارے کے مقدر کردی می ہے اور و جاری کو جاری رکھتا ہے ' کردی می ہے 'اس کو تم پورا کر سکو 'اور اس کا معنی ہے کہ اللہ تعالی تمہارے سوئے اور و اس کو جاری رکھتا ہے ' آگئے تم اپنی طبعی حیات کو پورا کراؤ ' پھر تم نے دوبارہ وزیرہ اور کرافتہ تعالی کے سامنے پیش ہونا ہے اور وہ تم کو فیردے گاکہ تم اپنی رائوں اور دون میں کیا کام کرتے ہے۔

نيندوفات مغري ہے اور موت وفات كري ہے۔ اللہ تعلق نے ان دولوں وفاتوں كاذكردرج ذيل آيت مس مجى فرمايا ہے:

جن کی موت کاوقت ہو اللہ ان کی جالوں کو آبش کر ہے۔
اور جن کی موت کا وقت نہ ہو ان کی جانوں کو (ہمی) نیز می
قبض کر لیتا ہے ' پھر جن کی موت کا تھم قرماد یا ان کی جانوں کو
روک لیتا ہے اور دو مری (جانوں) کو ایک وقت مقرر و کے لیے
بامو ڈ دیتا ہے۔ اس میں ان لوگوں کے لیے نشانیاں ہیں جو قکر

الله يَتَوَفَى الْانفُسَ جِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّيْقُ لَمُ اللهُ يَتَوَفِّى وَالْمَيْقُ لَمُ اللهُ يَتُولِ مَن فَي مُنامِهَا فَيُسُرِّسِكُ النَّيِيُ فَعَنى قَلْمِي الْمُوتَ وَيُرُوسِلُ الْالْحُرْقَى وَالْتَي المَلِ الْحُرْقَى وَالْتَي المَلِ الْمُحْرَقِي وَالْتَي الْمَلِ الْمُحْرَقِي وَالْتَي الْمَلِ الْمُحْرَقِي وَالْتَي الْمَلِ الْمُحْرَقِي وَالْتَي الْمَلِ الْمُحْرَقِي وَالْتَي الْمُلِي الْمُلِي الْمُلُولِ اللهِ اللهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَالّهُ وَاللّهُ وَلّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّ

(الرمر: ۲۲)

حدث على ہے 'نبی منظوم نے فرملانیز موت كابھائى ہے۔ معرت جابر بوجن، بیان كرتے ہیں كہ نبی جھیں ہے سوال كیا گیا ' بارسول اللہ اكیا اہل جند كو نیز آئے گی؟ رسول اللہ منظوم نے فرملانیز موت كابھائى ہے اور اہل جند كو نیز نس آئے گی۔

ے کام لیے ہیں۔

(المعجم الاوسلام ج) وقم الحديث: ٩٢٣ مند البرار على وقم المديث: ١٥٥٧ مليته الادلياء على مه الل تناميه على مناميه المرار المعرفة المدينة المدينة الادلياء على مناميه المرار على المدينة على المدينة على المدينة المدينة

مافظ المیشی نے کہاہے کہ سعد ابرار کی سند سمجے ہے۔

وهُوالْقَاهِمُ وَوْ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُوْ حَفَظَةً عَنَى إِذَا الدرى الج بنوں إلى الب عاسم إلى الله والله والدون البيام المؤلف الله المؤلف الله المؤلف الله المؤلف الله المؤلف الله المؤلفة المؤل

الله ك طراف الألاث ما يس محرج ال كا براق الك ب ومنواى كا محميه الدوه مسيست عبد مراب يايية والاب 0

طبيان القر أن



ہے۔ مثلاً نور پر ظلمت کے ساتھ قبر قربا آئے اور ظلمت پر نور کے ساتھ اون پر رات کے ساتھ اور رات پر دان کے ساتھ قبر فربا آئے۔
حیت پر موت کے ساتھ موت پر حیات کے ساتھ قبر فربا آئے اور یہ قبر کا ایسا ہوئے۔ جس کا کوئی ساحل نہیں ہے۔ وہ ہر چیز پر اس کی ضد
کے ساتھ قبر فربا آئے ہے۔ وہ الک الملک ہے جس کو جاہتا ہے ' ملک عطافر ہا آئے اور جس سے جاہتا ہے ' ملک جیمین ایسا ہے ' وہ جس کو جاہتا ہے ' موت دیتا ہے اور جس کو جاہتا ہے کو اس میں جلاکر آئے ہے۔ اللہ تعلق فربا آئے ہے۔

(يونس: ١٠٤) اواده كر عواس كفنل كوكولى دوكر في والانسى --

الله تعالی نے دن کام کاج کے لیے بنایا ہے اور رات نیز کے لیے بنائی ہے۔ اگر انسان دن میں نیز کامعمول بنانا چاہیں اور رات کو کام کاج کے کام کاج کر مجبور ہیں۔ کتنی مرتبہ ایسا ہو آب ہوا ہو گام کاج کر مجبور ہیں۔ کتنی مرتبہ ایسا ہو آب ہے کہ انسان جاگنا چاہتا ہے اور نیز اس پر غالب آجاتی ہے اور کئی پار ایسا ہو آب کہ وہ سونا چاہتا ہے اور اس کو نیز نسیں آئی محت اور بھاری اور حیات اور موت میں انسان کامفلوب ہونا اور اللہ تعالی کاان پر غالب ہونا اور مجمی واضح ہے۔

کراماً کا تبین کی تعریف اور ان کے فرائض

اس کے بند قربایا اور وہ تم پر حفاظت کرنے والے قرشتے ہیجا ہے۔ حفظتہ اصافظ کی جمع ہے۔ جیسے طلبہ طالب کی جمع ہے۔ اس سے مرادوہ فرشتے جیں جو بندوں کے اعمال کی حفاظت کرتے جیں اور بندوں کی آفات سے حفاظت کرتے ہیں۔ قاؤہ سے معقول ہے کہ وہ عمل ارزق اور میعاد حیات کی حفاظت کرتے ہیں۔ یہ وہ فرشتے رات کے اعمال کو تقصفے کہ لیے ہیں اور دوون کے معقول ہے کہ وہ عمل کے جیں۔ ایک فرشتہ بیا کی تعقید کر ایس کا معال کے تقصفے کے لیے ہیں۔ ایک فرشتہ بیاس کو تقصفے کے لیے ہیں اور دو مرا قرشتہ برائوں کو تکستا ہے اور مہاح کاموں کے تصفیم میں۔ انداز ان ہے۔ ایک قرشتہ وہ ہے جو وان رات میں سے اختاان ہے۔ ایک قرشتہ وہ ہے جو وان رات میں سے ایک قول یہ ہے کہ کل پانچ فرشتہ حفظہ ہیں۔ دو دان کے دو رات کے اور ایک فرشتہ وہ ہے جو وان رات میں سے

محی بھی وقت جدائیں جو گ۔

كُرْاماً كَاتِبِينَ كَ مَعَلَقَ قُر آن مجيد كى آيات وَلاَ عَلَيْكُمُ لُحْمِظِينَ ٤ كَرَامًا كَانِيبُنَ ٥ يَعُلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ (الانفطار: ٣٠١) إِذْ يَضَلَفُهُ الْمُتَلَقِّبُ ان عَى الْيَمِيْسِ وَ عَن إِذْ يَضَلَقْبُ الْمُتَلَقِّبُ ان عَى الْيَمِيْسِ وَ عَن

إِذُ يَضَلَغْنَى الْمُتَلَغِّيَانِ عَيِ الْيَوِيُّنِ وَعَنِ الشِّمَالِ فَوِيُنُدُ 0 مَا يَلُمِظُ مِنْ قَنُولِ إِلَّا لَدَيُهِ رَفِيْكِ عَنِيْدُ (ق ١٨-١٤)

و وُضِعَ الْكِسُبُ فَتَرَى الْمُخْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِتَا فِيُهِ وَيَقُولُونَ لِوَيْلَتَنَا مَالِ مُذَا الْكِسُبِ لَا يُعَادِرُ صَعِيْرَةً وَلَا كَبِيْرَةً الْآ آحُصٰهَا وَوَحَدُوا مَاعَصِلُوا حَاضِرًا وَلَا يَعِلِمُ رَبُّكَ آحَدُانَ رَبُّكَ آحَدُانَ

اور ہے تک تم یہ ضرور حفاظت کرتے والے (قرشنے مقرر) ہیں استرز لکھنے والے اور جانے ہیں ہو یکی تم کرتے ہو۔ بہب (اس کے ہر قول اور خیل کو) لے لیتے ہیں دو لینے والے (فرشنے) ایک وائی طرف اور دو مرا بائی طرف بیٹا ہو آئے اور ہو یکی زبان سے کتا ہے اس کو لکھنے کے لیے ایک شمبان (فرشنہ) تیار ہو آہے۔

اور نامہ اعمال رکھ دیا جائے گا' پی آپ دیکھیں گے کہ جُرم اس سے ڈور دہے ہوں گے جو اس جی (ڈکور) ہے اور وہ کمیں کے بائے اعادی کم بختی آیہ کیما نوشتہ اعمال ہے کہ اس نے نہ کوئی چھوٹا گناہ چھو ڈا ہے نہ بڑا گناہ 'گراس کا احاظہ کر لیا ہے ' اور جو بکے انسوں نے کیا تھا' وہ سب اپنے سامنے موجود پائس گاور آپ کارب کی بر علم نیں کر تا۔ کرایا کا تبین کے قرائض اور وظا کف کے متعلق احادیث

المام محمدين اساعيل عفاري متوفي الاعلم وواعت كرت ين:

صفرت ابوہریدہ جو بی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ سکھیں نے فرمایا رات کے فرشتے اور دن کے فرشیتے تہمارے پاس باری باری آتے ہیں اور فجر اور صفر کی نمازوں میں جمع ہوتے ہیں۔ پار جن فرشتوں نے تہمارے ساتھ رات گزاری ہے 'وہ اور پرھ جاتے ہیں۔ ان کارب ان سے سوال کر آ ہے 'طافا کہ وہ ان سے زیادہ جانے والا ہے 'تم نے بیرے براوں کو کس طل میں پھو ڈانا وہ کتے ہیں ہم نے جس وقت ان کو پھو ڈانا وہ (فحر کی) نماز پڑھ دے تھے اور جب ہم ان کے پاس کے تو وہ (محمر کی) نماز پڑھ دے تھے اور جب ہم ان کے پاس کے تو وہ (محمر کی) نماز پڑھ دے تھے۔

(مَحْ البخارى كَارِقُم المحديث: ٥٥٥ مَحِ مسلم "المسابع ٢٠٠ (٣٣) ٥٠٠ اسن التسائل كيا وقم الحديث: ١٨٥ ٣٨١ ١٨٥ السن الكبرى المتسائل كي الرقم المحدث: ٤٤٤١)

صرت ابن محرر منی الله طنما بیان کرتے میں که رسول الله طبیع فی قربا تم یر بنگی سے احراز کرو کیو تک تمهارے ساتھ وہ (فرشتے) اوسے بیل جو تم سے بیت الخلاء اور عمل تزویج کے سواکسی وقت جدا نہیں ہوتے 'تم ان سے حیا کرد اور ان کااکرام کرد- (سنن ترزی کی جس رقم اللہ عشد ۲۸۰۹ شعب الایمان جس رقم اللہ عشد ۲۲۰۱۱)

الم اوجعفر هدين جرم طبري متوفى ١٠٠٠ دوايت كرتے بين:

مجانہ بیان کرتے ہیں کہ واکمی طرف کا فرشتہ نکیاں لکھتا ہے اور یا کمی طرف کا فرشتہ پرائیاں لکھتا ہے۔ ابراہیم مجی بیان کرتے ہیں کہ واکمی جانب کا فرشتہ باکمی جانب کے فرشتہ کا امیر ہوتا ہے ' جب بندہ کوئی برائی کرتا ہے تو واکمیں جانب والا فرشتہ ہاکمی جانب والے فرشتے ہے کتا ہے ' رک جاؤ' شاید یہ توبہ کرلے۔

مهاد بیان کرتے ہیں کہ ہرانسان کے ماقد دو قرشتے ہوتے ہیں۔ ایک دائیں جانب اور ایک بائیں جانب ہو دائیں جانب کے دو بے 'دو نیکیاں لکمتاہے اور جو یا کمیں جانب ہے 'وہ برائیاں لکمتاہے۔ (جائع البیان '۲۲۶'می ۲۰۵'م۔۲'مطبوعہ داو الفکو' پیردت) خاتم الحفاظ حافظ جلال الدین سیو طی متوفی ہے ہے ہیں:

الم این الی الدیائے الندید میں اپنی سند کے ماقد دوایت کیا ہے کہ حضرت این عمیاں دھنی اللہ عظمانے فرمایا بھیاں لکھنے والا وائم میں جانب والدی نیکیاں لکھ این ہے ،
والا وائم میں جانب ہے اور برائیاں لکھنے والا یائم جانب ہے ، جب بندہ کوئی نیکی کر آئے تو وائم میں جانب والا دی نیکیاں لکھ این ہے ،
اور جب وہ کوئی برائی کر آئے تو وائم میں جانب والا یائم میں جانب والے ہے کہتا ہے اس کو چھوڑ دو ، حتی کہ یہ تعلی کرے یا استعفار
کرے ۔ چرجب جعرات کاون آ آئے تو اس وقت تک جو نیکیاں اور برائیاں ہوں اور اکھ دی جاتی ہیں اور اس کے ہموا کو چھوڑ دیا جاتا ہے ، کو اس میں جن تھی ہوئی ہوتی ہیں۔
دیا جاتا ہے ، چرید تو شخت اوح محقوظ پر چیش کیا جاتا ہے ، تو اس میں سے تمام چیزی لکھی ہوئی ہوتی ہیں۔

الم ابن الى الدنيا اهنف بن قيم سے روابت كرتے بيل كر دائي جانب والا فرشتہ نيكياں لكمتا ہے اور وہ بائي جانب والے فرشتہ پر امير ہو ماہے۔ اگر بندہ كوئى كناه كر ماہ تووہ كتاہے رك جاؤ ، پر اگر بندہ استغفار كرے تووہ اس كوده كناه كھنے ہے منع كر ماہے اور اگر بندہ استغفار كى بجائے كناه پر اصرار كر ماہے ، تووہ اس كناه كو لكه ليتا ہے۔

(الدر المتور ع- 2 من ١٥٥ مطوع دار الفكر اليروت ١٩١١ه)

الم أبو محد عبد الله بن محر المعروف بالى الشيخ الامعماني المتونى ١٩٠٠مد روايت كرت إلى:

غيان القر أن

ابن جریج وحمہ اللہ بیان کرتے ہیں دو فرشتے ہیں۔ ان جی سے ایک دائمیں جانب ہو جی بیاں لکھتا ہے اور دو سرا فرشتہ بائمیں جانب ہو ہے جو دائیں جانب ہو ہائیں جانب ہو ہائی شاوت کے بغیر لکھتا ہے اور دو سرا بائیں جانب ہو ہائی صاحب کی شاوت کے بغیر نسیں لکھتا۔ اگر بھرہ جیٹے جائے تو ایک فرشتہ وائیں جانب ہو ہائے ہو ایک فرشتہ بھرہ کے ایک فرشتہ بھرہ کے آئے ہو ہائے اور ایک بیچے اور اگر وہ سوجائے قو ایک فرشتہ اس کے سری جانب ہو تا ہے اور ایک بیروں کی جانب ہو تا ہے اور ایک بیچے اور ایک بیروں کی جانب ہو تا ہے اور ایک بیروں کی جانب ہو تا ہے اور ایک بیروں کی جانب ہو تا ہے اور ایک بیروں کی جاتب ہو تا ہے دورات کے ساتھ بائج فرشتے مقرر کے جاتے ہیں اور بانچواں فرشتہ دن دات کے سی دقت ہی اس سے الگ نہیں ہو تا

(كتاب العظيد وقم الحديث: ٥٢١ من ١٨٥ مطبوع كتيدوار الباز اكد كرم اسماماه)

الم الويكرا حمر بن حسين المصلى المتوني ٥٨ مهم رواعت كرت ين

معرت الن براین میان کرتے ہیں کہ رسول اللہ علی اللہ تو قبل اللہ تعالی جب کمی مسلمان کے جم کو کمی معیدے میں جلا کر آئے تو قرائی جب کمی مسلمان کے جم کو کمی معیدے میں جلا کر آئے تو قرائی ہے تو اس کو حسل ہے پاک جملا کر آئے تا گار آئی اس کو شفاعتا ہے تو اس کو حسل ہے پاک کر دیتا ہے اور اگر اس کی دورج کو قبل کر لیتا ہے تو اس کو بخش دیتا ہے اور اس پر رحم فرما آئے۔

(شعب الاعان ع ٤ أو فم الحديث: ٩٩٣٣ مطبوعه واد الكتب العليد اجروت ١١١١ه)

معرت انس بن مالک روانے بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ عجود نے فرمایا ہو مسلم اپنے جم کی کمی بیماری میں جٹا ہو آ ہے و اللہ تعالی اس کے مرض میں اس کی محت کے ہر نیک عمل کو لکمتار ہتا ہے۔

(شعب الاعان ع ٤٠٠ و فم الحديث: ١٩٣٠ مطبوط بيروت)

(شعب الاعال عيد و في الحديث: ١٩١١ مطوع ويردت)

آيادل كى باتول كوكراماً كاتبين للصة بي يا نسيع؟

بعض احادث سے معلوم ہو آ ہے کہ فرشتے دل کی باتوں اور ار اووں پر مطلع ہوتے ہیں اور ان کو لکھ لیتے ہیں۔ اہم مسلم بن تجان قشیدی متونی ۱۳۹ھ روایت کرتے ہیں:

حضرت اوجریوہ بوطن بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بیجیم نے فرمایا کہ اللہ تعناقی ارشاہ فرما ہا ہے جب میرا برندہ کمی گزاد کا ارادہ کرے تو اس کو نہ تکھو اور اگر وہ اس پر عمل کرے تو اس کا ایک گزاد لکھ لو اور اگر وہ نکی کا ارادہ کرے اور اس پر عمل نہ کے ارادہ کرے نئی لکھ لو اور اگر وہ نکی کا ارادہ کرے اور اس پر عمل کرے تو اس کا ایک مسلم نے حضرت اور ہم بریدہ ہو ایک دوایت اس کرے تو ایک نئی لکھ لو اور اگر وہ اس پر عمل کرے تو اس کا کھولو اور اگر وہ اس پر عمل کرتے ہیں اے رہ اس مسلم نے حضرت اور میں کہ اور ایک دوایت اس طرح کی ہے کہ درسول اللہ بریجیم نے فرمایا فرشتے مرض کرتے ہیں اے رہ انجراب بریدہ گزار اوہ کر دہا ہے اور اگر اس کو ترک کو بری کو ترک کو بری کو ترک کو بری کو ترک کو ایک کرنے کو ایک کو کرے تو اس کا ایک گزاد کو اگر اور اگر اس کو ترک

كرديد واس كى ايك ينكى لكداو كيو تك اس في ميرى وجد اس كناه كوترك كياب-

(میم مسلم ایمان ۲۰۰ ۴۰۱ (۳۸) ۴۰۲ میم آلبخاری نیم دقم الحصت: ۱۳۵۱ مسئن ترزی نیم در قم الدیث: ۳۰۸۳ سنن کبری النسائی نیم و تم الحصیت: ۱۳۸۱ میم این حبان نیم و ترقم الحصیت: ۳۸۰ مستد احد و یم ۴ رقم الحدیث: ۵۳۰۰)

اس مدیث ہے واضح ہوتا ہے کہ فرشتے دل کی باؤں اور ارادوں پر مطلع ہوتے ہیں اور بعض دیگر اطوعت سے بر معلوم ہوتا ہے کہ فرشتے دل کے احوال اور نیات پر مطلع نہیں ہوتے۔

الم عبدالله بن محرابوالشيخ الامسالي المتوفى ١٠٩١ مدروايت كرتي مين

(کتاب العظمد ارقم الحریث: ۵۲۰ می ۱۸۵ مطبور بیروت انتیاب افر مداناین البارک ارقم الحریث ۲۵۲ مطبور بیروت)
الم این المبارک کی روایت می ہے میرے اس برک نے اخلاص ہے محل کیا ہے اس کو علیمین میں لکھ دو۔
بد کا ہران مدیوں میں تعارض ہے الکین حقیقت میں تعارض نہیں ہے کیونکہ جس مدیث ہے ہیہ معلوم ہوتا ہے کہ
فرشتے دل کی باق پر مطلع ہوتے ہیں۔ وہ میج بخاری میج مسلم میج این حبان اور سنن نزندی اور سنن نسانی کی روایت ہے اور

جس صف سے یہ معلوم ہو آئے کہ فرشتے ول کی باتوں پر معلم میں ہوئے وہ کتاب العظم اور کتاب الرحد کی روایت ہے اور انی الذکر کتابیں اول الذکر مرسل روایت ہے اور انی الذکر مند اسمی ہوئے ہے اور انی الذکر مند اسمی ہوئے دل کی اور اول الذکر مند اسمی ہوئے ہے اور ان الذکر مند اسمی ہوئے دل کی ہوئے دل کی ہوئے ہوں ہوئے وہ اور موافر روایت کی ہے تو جی کی جائے ہے کہ اللہ تعنائی نے رہا اور افزام کو مستمی فرمایا ہے افزام کو مسلمی و سے میں اور موافر روایت کی ہے تو جی جائے اور رہا کو مختی رکھا آتا کہ دیا کارے عمل کی قیامت کے دن اس بندے کی وزید افزائی کی جائے اور رہا کو مختی رکھا آتا کہ دیا کارے عمل کی قیامت کے دن

زیاده رسوائی موجیها که اس صدعت سے طاہر مو تاہے۔

الم ابوالقاسم سليمان بن احمد طبراني متوفى ١٠١٠هـ روايت كرت بين:

حضرت عدى بن حاتم بریٹی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بھی ہے فرمایا قیامت کے دن بچھ لوگوں کو جنت ہیں جانے کا عظم دیا جائے گا حق کہ جب وہ جنت کے قریب ہوں گے اور جنت کی فوشیو سو تعمیس گے اور جنت کے گلوں کی طرف دیکسیں گے اور ان چیزوں کی طرف دیکسیں گے اور ان چیزوں کی طرف دیکسیں گے جو اللہ تعلق نے جنتیوں کے لیے تیار کی ہیں تو ان کو ندا کی جائے گی کہ جنت ہے والی آئی جائے گی کہ جنت ہے والی آئی گائی ہوں گئی تعمید نمیں ہے۔ وہ حسرت کے ساتھ جنت سے والی آئی گے اور کمیں گے اے ہمارے رب! کائی! قو جمیں اینا تواب و کھانے سے پہلے اور اپنے اولیاء کے لیے جو تو نے تعتیں تیار کی ہیں ان کو دکھانے سے پہلے جمیں دونے خ

ئبيان القر آن

یں داخل کر دینا' تو سے ہم پر اسمان ہو لک اللہ تعالی فرمائے گائیں نے سے ارادہ اس وقت کیا تھا کہ جب تم خلوت میں ہوتے تو میرے ساتھ بہت برامقابلہ کرتے ہتے اور اوگوں کے ملئے تم میرے لیے عاجزی کرتے ہتے تم اوگوں کے لیے و کھلوا کرتے ہتے اور تم اسينداوں سے جھے اس كے خلاف ديتے تھے اور تم لوكوں سے ذرقے تھے اور جھ سے نہيں ڈرقے تھے 'اور تم لوكوں كوبزرگ جائے تے اور جھے برانسی جانے تھے۔ سو آج میں تم کو در دیاک عذاب چکھاؤں گانور تم کو ڈاب سے محروم کروں گا۔ (المعم الاوسط على وقم العديث: عن عن المعم الكبير عن ما وقم العديث: ١٩٩ من ٨٦ ملية الادلياء عن من ١٣٢٠ عل

الايان عن وقم المدعة المهد، جمع الزوائد عوا من ١٧٠) اعمال كولكهوائ كي حكمتين

اس من اخلاف ہے کہ ایک منص کی نیکیاں اور برائیاں لکھنے والے فرشتے ہرروز بدلتے ہیں یا اخر عمر تک وی فرشتے لکھنے رہے ہیں۔ لیکن یہ بسرطال ثابت ہے کہ دن اور رات کے فرشتہ برلتے رہے ہیں 'ای طرح اس میں اختلاف ہے کہ بندہ کی موت کے بعد فرشتے کیا کرتے ہیں؟ بعض نے کماوہ آسان پر جاکر عبادت کرتے ہیں الیکن ہم شعب الاعمان کے حوالے ہے بیہ مدیث ذکر کر بچے ہیں کہ وہ قیامت تک اس بندے کی قبر پر بینے کراس نے لیے استغفار کرتے رہے ہیں۔

كراماً كاتبين جوبندوں كے افغل لكيتے بيں اس كى كيا حكمت ہے؟ ايك حكمت توبيہ ہے كہ قيامت كے دن بندو كے سامنے اس کے خلاف ایک ماوی جست قائم کروی جائے" آگ وہ اپنے کسی قول یا عمل سے انکار نہ کر سکے۔ود سری حکمت یہ ہے کہ جب بندہ کو یہ معلوم ہوگاکہ اس کے اعمال لکھ کر محفوظ کے جارہ جیں اور پر سر محشر لوگوں کے سامنے یہ اعمال چیش کیے جائیں مے اور اور اس کے ملے اپنی برائیاں اور بے حیائیاں کھنے کے خوف سے وہ برے اور افٹ کاموں کے اور تکاب سے باز دہے گا۔ تيسري دجه يد يه ك فرشتول في ابن آدم كى بيدائش يريد كما تفاك بد زين بي خون ريزى اور مند وفساو كريد كااور جب و، خود اہن اتموں سے مسلمانوں کی نیمیاں تکمیں مے توان پر این آدم کی پیدائش کی عکمت کال طریقہ سے واضح ہوگ۔ چو تھی عکمت یہ ہے کہ انسان کے اعمال میران جی وزن کیے جائیں محر بظاہریہ متبعد معلوم ہو تا ہے کیونکہ اعمال از قبیل اعراض میں الغذا ہو سکتاہے کہ اعمال کے وزن کرنے سے مراد محانف اعمال کاوزن کرناہو۔

الله تعمل کاارشاد ہے: حتی کہ جب تم میں ہے کسی کو موت آتی ہے تو ہمارے بھیجے ہوئے فرشتے اس ای ردح) کو قبض كرتے بين اور وہ كوئى كو يكى تميس كرتے۔ (الانعام ١٩)

الله تعالی منک الموت اور فرشتوں کی طرف قبض روح کی نسبت کی دضاحت

تر آن مجید میں بندہ کی روح قبض کرنے کا اساد اللہ تعالی کی طرف بھی ہے ' ملک الموت کی طرف بھی ہے اور عام فرشتوں

موت کے وقت اللہ جانوں (روحوں) کو قبض کر تاہے۔

آپ کئے کہ موت کا فرشتہ تمہاری روح قبض کر آے جو

کی طرف بھی ہے۔ جیساک حسب ذیل آغوں سے طاہر ہے: الله يَتَوَفَّى الْأَنْفُسُ حِيْسَ مَوْتِهَا (الرمر ٣٢٠)

قُلْ يَتَّوَفُّكُمُ مُلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وَ كِلَّ بِكُمْ تُمُ الْيُرَبِّكُمْ تُرِجَعُونَ (السحدة))

تم ير مقرر كيا كياب ' پرتم اپند ب كي طرف لونائ جاؤ ك_ اور زر تغیر آیت می فرایا ب ادارے بھیج ہوئے فرشتے اس (کی روح) کو تیف کرتے میں۔(الانعام: ١١)

ان آیات میں اس طرح تظیق دی گئے ہے کہ روح تبض کرنے کی نبست اللہ تعالی کی طرف اس انتہارے ہے کہ وہ روح قبض كرنے كافاعلى حقيقى ب اور ملك الموت كى طرف اس التبار ، نبت ب ك وه ظاہرى فاعل ب اور روح قبض كرنے

تابيبان القر أن

والے فرشتوں کاریمیں ہے اور دوسرے فرشتوں کی طرف اس اعتبارے نبست ہے کہ وہ روح قبض کرنے میں ملک الموت ك احوان اور انساريں - بعض صوفياء نے كما ہے كہ افسان كے درجہ اور مقام كے التمبار ہے احوال مختلف ہوتے ہيں اس ليے بعض انسانوں کی روح اللہ تعالی با واسط قبض کرتا ہے "بعض کی روح ملک الموت قبض کرتا ہے اور بعض کی دیگر فرقتے روح تبن كرتيس

موت کے وقت مسلمانوں اور کا فروں کی روحوں کے نکلنے کی کیفیت الم احدين منبل متونى احامد دوايت كرية بين:

حفرت ابد مريره بواين مستريس كرني ويور في موايد في المام من والفيد ياس فرفت آت يس بس جبوه كوكي نيك هخض ہو آے تو وہ کتے ہیں 'اے پاکیزہ روح نظوتم پاکیزہ جسم میں تھیں 'تم تعریف کی ہوئی باہر آؤ' تہیں خوشی اور مسرت کی نوید ہواور رب کے رامنی ہونے کی بٹارت ہو۔اس کو ہونی کماجا آرے گا حق کہ روح باہر آجائے گی۔ چروہ روح آسان کی طرف ج سے گی۔ اس کے لیے آسان کو تھلوایا جائے گا۔ ہو جما جائے گائے کون ہے؟ بھراے بنایا جائے گایہ فلاں ہے آسان والے کمیں كے كيارہ روح كو فوش آميد مو سياكيزه جم جي تقى تم تعريف كى موكى داخل مو۔ حميس خوشى اور مسرت كى بشارت مواور رب کے رامنی ہونے کی لوید ہو۔اس سے ہو نمی کما جا آرہ گا حتی کہ وہ اس آسان (مرش المی) میں پہنچ گی 'جس پر اللہ عزد جل جلوه فرما ہے۔ اور جب مرنے والا کوئی برا فض ہو ماہے تو فرشتے کتے ہیں لکل اے ضبیث (بلیاک) روح اتو ضبیث جسم میں تھی' كل و يرمت كى موكى ب- مجمع كو لت موسة بريودار بانى كى بشارت موالور اسى مسم كاور بالى ك-اب يوشى كما ما أرب كا حی کہ وہ دوج جم سے نظے گی۔ پھراس کو آسان کی طرف چرحلیا جائے گا کور اس کے لیے آسان کو تھاوا اوا جائے گا۔ ہو جما جائے كايد كون ٢٠٠٠ برينا بائ كانيه قلال إلى كماجك كاس باكروح كا آنامبارك موسيه باك جم بي تقي أو زمت كي ولی داہی و جا تیرے لیے آسان کے دروازے نسی کھولے جائی کے 'پراس کو اسان سے بھیج دیا جائے گا پر قبر تک پہنچ

علامد محداحد شاكر متوفى ١٦ - ١١ مدے كما ہے كه اس مديث كى سند سيح ہے۔ (سند احر علم الرقم الديث: ١٨٥٥ مطبور واراله يث القابرة إسد الد علم عصوب معه طبع تديم اسن ابن ابداع الرقم الهديد ١٧٣) الم ابوعبد الرحن احدين شعيب نسائي متوني مه مهد روايت كرت بين:

حضرت ابد جریرہ بوزنی میان کرتے ہیں کہ نبی میڑی نے فرمایا جب مومن پر موت کا وقت آیا ہے تو اس کے پاس رحمت ك فرشتے سنيد ريشم كو كر آتے ميں اور كتے ميں (اے روح) فكلوا در أنحاليك تم اللہ سے رامنى ہواور اللہ تم سے رامنى ہو' تم الله كى راحت اور خوشى كى طرف فكو اور رب كى رضاكى طرف فكو - چرروح مشك كى ياكيزه خوشيوكى طرف تكاتى ب احتى كد بعض فرشتے اس روح کو لیتے ہیں اور اس کو آسان کے وروازے کی طرف لاتے ہیں اور آسان والے کتے ہیں ' یہ کیسی پاکیزہ خوشبو ہے جو زمین کی طرف ہے آئی ہے؟ پھروہ اس دوح کو موسنین کی ارداح ہے ملاتے ہیں اور وہ رومیں اس روح ہے مل کر

ای طرح خوش ہوتی ہیں میے کوئی مخص این چھڑے ہوئے دوست سے ل کرخوش ہو آہ۔

مردواس ، يوجعة بين كه فلان فض كيهاب؟ فلال فض كيهاب؟ پيركت بين كداس كوچمو ثو وه دنياك تم من ب اور جب وہ کتا ہے کہ کیاوہ تمارے ہاں نمیں آیا؟ تو وہ کتے ہیں کہ اس کو دوزخ میں ڈال ریا گیا اور جب کافر کے پاس موت کا وتت آنا ہے قرشتے اس کے پاس ثاث کو لے کر آتے ہیں اور اس کی روح سے کہتے ہیں 'فکل ور آنحالیک قواللہ سے ناراض ہے

غيان القر أن

اور الله تھے سے ناراض ہے۔ تو اللہ کے عذاب کی طرف نکل تو وہ انتمائی اگروار بدیو کی طرح نکاتی ہے۔ حتی کہ وہ اس کو زمین کے دروازه كى طرف لاتے بين اور زين والے كتے بين أي ار بربو ب ؟ پروه اس كو كفار كى دوحوں كى طرف لے جاتے بيں۔ (سنن نسائي 'ج مع و قم الحديث: ١٨٣٢ مجع اين حبان 'ج ٧ و قم الحديث: ١٨٠٣ المستدرك 'ج ١ م ٣٥٣) صافظ جلال الدين سيو لحي متوفي المهد مان كرتے بين:

الم بزار اور المم ابن مردويه في حضرت ابو بريره جريد سه روايت كياب كه في عظيم في والما جب مومن ير موت كا وقت آناہے واس کے پاس فرشتے رہم میں ملک اور کل رعن کے فے نے کر آتے ہیں۔ پراس کے جم سے روح اس طرح نكل ليت ين جس طرح آف سے بل نكل لياجا آب اور كماجا آب اين ورح الله كي فوقي اور اس كى كرامت كى طرف رامنیہ اور مرمنیہ ہو کرچلو' اور اس کو رہم میں لپیٹ کر علیون کی طرف لے جاتے ہیں اور کافر پر جب موت کاوقت آیا ے و فرشت ایک نان میں انگارے لے کر استے میں اور بڑی گئے ۔ اس کی مدح کو سینجتے میں اور کماجا آ ہے اے بالک روح ا لكل در اتماليك بوالله عاراض إورالله تحديد اراض ب تكل الله كادى موكى دات اوراس كم عذاب كى طرف-اور جب روح نكل جاتى ہے تو اس كو اس انكارے ير ركد كر عث من ليب ريا جاتا ہے اور اس كو مكن كى طرف لے جايا جاتا ہے۔ (شرح الصدور من مها مطبوعه دارالكتب العلميه ميردت مهه مهد)

الله تعالی کاارشادہ: پمردہ اللہ کی طرف اوٹائے جائیں گے جو ان کابر حق بانک ہے۔ سنوا اس کا تھم ہے اور دہ سب ے جلد حملب لیندوالا ہے۔(الانعام: ١٠)

الله تعالی کے موتی اور حق ہونے کا معنی

اس آیت میں فرالما ہے مجروہ اللہ کی طرف او ٹائے جائیں سے جو ان کاالیاموٹی ہے جو حق ہے۔ موٹی کاایک معن ہے آزاد كرك والا اس من اشاره بكر الله تعالى مسلمانوں كو عذاب سے آزاد قرمادے كا بعيماك الله تعالى نے فرمايا ب ميرى رحمت ميرے فضب پر غالب ہے۔ (مند الحميد) جم ارتم الحمد ١٣٠١) نيز الله تعالى نے الى اضافت اپنے بندوں كى طرف فرمائى ہے ا یعی ان کاموئی اور یہ اضافت انتمائی رحمت کو ظاہر کرنے کے لیے ہے۔ پھر قربلیان کاموٹی جو حق ہے 'اس میں یہ اشارہ ہے کہ دنیا میں انسان باطل آ فاؤں کے ماتحت تقااور وہ نفس مشموت اور ضنب کے احکام کی اطاعت کر یا تھا جیے اللہ تعالی کاار شاوے أَرَءَ يُتَ مَنِ النَّهَ لَا لِلْهُا مُعَلِّوهِ * كاتب ا ا و كما جس إلى تغماني قوابش كوابنا

(الفرقان: ١١٦) معروباليا

اور جب انسان مرجا آب تو باطل آفاؤں کے ادکام کی اطاعت سے آزاد مو جا آب اور صرف اپ حققی مولی کے ذری تصرف أجا ماي

روح کے انسان کی حقیقت ہونے پر امام رازی کے دلا کل الم فخرالدين رازي متوني ١٠٠ ه لكية بن

يہ آيت اس پر قوي ديل ہے كہ انسان كى حقيقت يہ جم نيس ہے الكديد روح ہے۔ كيونكه اس آيت من مراحقا يہ فریلیا ہے کہ انسان مرجائے گااور مرنے کے بعدوہ اللہ تعالی کی طرف اوٹایا جائے گا اور اس مردہ جسم کا اللہ کی طرف اوٹایا تو ممکن میں ہے او ابت مواکد اس کی روح کو اللہ کی طرف لوٹایا جائے گااور اس سے یہ بھی معلوم موتا ہے کہ بدن کے ساتھ تعلق سے پہلے روح موجود تھی کیونکہ اس عالم سے اللہ کی بار گاد کی طرف روح کالوٹائی وقت ہو سکا ہے جب روح پہلے سے موجود

البيان القرآن

ہواور یہ آیت بھی اس پر دلالت کرتی ہے: ارْجِعِي إلى رَبِّكِ (المحر:٢٨)

اینے رب کی طرف اوٹ جا۔ (تغیرکیر " ج ۲ م م ۲۰ - ۵۹ مطبور داد الفکر "بیروت ۱۳۹۸ ه)

امام رازی کے دلائل پر بحث و تنظر

ا ہم رازی کی اس تغریرے معاوج مثل کا انکار لازم آیا ہے ' جبکہ الل سنت کا عقیدہ کے انسان کا حشرروح مع اجسم ہو گا اور اس مردہ جمم کو قیامت کے دن اللہ تعالی زندہ کردے گا اور جسم میں روح ڈال کر اس کو اللہ تعالی کے سامنے میش کیا جائے گا۔ قرآن مجید کی متعدد آیات میں اس جسم کے زندہ کیے جانے اور اللہ کے سامنے اس کے چیش کیے جانے پر ونا کل نہ کور جین:

> وَ قَالُوا ۗ ءَاذَا كُتًا عِظَامًا وَ رُفَانًا ءَالَّا عَرْبَالًا وَأَرْفَانًا ءَالَّا الَّذِي حَلَقَ السَّمُوْتِ وَالْأَرْضَ فَاذِرٌ عَلَى أَنَّ بَعْدُكُنَّ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَدُلُارَيْبَ فِيْو فَأَبِي العَلْمِلْمُورَدِ إِلَّا كُمُورُانَ

اور انبول نے كماجب بم يرياں اور ريده ريده يو جاكي كَتَبِعُونُونَ حَلَقًا حَدِيدُ لِدُا الْأُولَمُ يَرُوا أَنَّ اللَّهَ مَا وَكُولِوا فَي بِمَارَ مِرَوْبِيرا كِي جَائِين كَ البالنول فياس م فور مس کیا کہ اللہ جس نے آسانوں اور زمینوں کو پیدا کیا ان كى حل بدائے يا قادر ہے اور اس نے ان كے ليے موت كا ایک وقت مقرد کر و کھا ہے جس میں کوئی شبہ نہیں ہے اپس ظالموں کے کفر کرنے کے سوا ہریات کا انکار کرویا۔

اس نے کماجب بڑیاں ہوسیدہ ہو کر کل جا کیں گی تو ان کو کون زندہ کرے گا؟ آپ کئے انسی دی زندہ کرے گاجس الميل إرائيس بداكياتفا

(بسواسرائيل: ٥٨٠٩) فَالَ مَنْ يَتُحْبِي الْعِطَامُ وَحِبَى رَمِيْكُ ٥ فُلُ يُحْمِينُهُ اللَّهِ فِي ٱسْنَسَاهُ الْوَلِّي مَرَّةِ (يس ٤٤-٨٥)

قرآن مجید کی ان آیتوں سے بدواضح ہو آ ہے کہ اللہ تعالی کی طرف صرف روح نسیں لوطی جائے گی کیکہ روح اور جسم دونوں اوالے جا کی مے اور انسان صرف روح کا باس نیس ہے ، بلکہ روح اور جسم وونوں کے مجموعہ کا نام ہے۔ راید اعتراض ک پدا ہونے کے بعد جم کی ساخت اور اس کے تشخص میں مرکے ساتھ تبدیلی آتی رہتی ہے اور مرنے کے بعد جم ہو سیدہ ہو کر ریزه ریزه جو جا آیے اور انسان واحد کی حقیقت اور اس کا تشخص تو معین اور فیرمقبدل ہونا چاہیے اور وہ نقین تو مرف روح میں ے اس کا جواب سے ہے کہ انسان کے جسم میں اجزاء اسلیہ ہوتے ہیں جواس کے جسم کے تمام مختلف اودار میں مشترک رہے ہیں ا اورجب جمم بوسیدہ اور ریزہ موجاتاہے اتب بھی وہ اجزاء باتی رہے ہیں اور ان بی اجزاء کے ساتھ روح کا تعلق ہو تاہے اور انسان کی حقیقت اور اس کے تشخص کا دار روح اور ان اجزاء اسلیہ برہے۔

جسم سے پہلے روح کے پیدا ہونے پر دلا کل اور بحث و نظر

البندانام رازي كايد كمناميح بكر روح كوجهم بيدا كياكياب اوراس كادليل بد حديث ب: حضرت عائشہ معدیقہ رضی اللہ عنما میان کرتی ہیں کہ نی جہر نے فریلا روضی مجتمع تشکر ہیں 'جو ان میں سے ایک دو سرے سے متعارف ہوتی میں وہ ایک دو سرے سے الفت رکھتی میں اور جو ایک دو شرے سے نا آشنا ہوتی میں اوہ آلی میں اختلاف كرتى بين- السيح البخاري جه وقم الحديث. ١٣٣٦ مع مسلم ير ١٥٩ (٢٧٣٨) ١٥٨٠ سنن ابوداؤه وجه رقم الحديث ידאדי ייתורב" בדים בדם ברים בירים בין

حافظ شماب الدين احمد بن على بن حجر عسقاراني متوفى ١٨٥٣ م كليم ين

اس مدیث مراوید ہو سکتی ہے کہ اس سے ابتداء خلقت کی خبردیا مضور ہو 'جیساکہ مدیث میں آیا ہے کہ روحوں کو جسموں سے پہلے پیدا کیا گیا ہے اور جب ودعوں کا جسموں میں حلول ہو تو ہان کی آئیں میں شامرائی یا عدم شامرائی عالم ارواح کے اختیار سے ہوئی ' تو روحی جب و نیا میں ایک وہ مرے سے ملیں تو ان کا ایک دو مرے سے متفق یا مخلف ہونا بھی اس مرابق مارائی یاعدم شامرائی کے اختیار سے تھند (حج الباری ' ج ام میں میں مطبور لاہور ' اسمانی یا عدم شامرائی کے اختیار سے تھند (حج الباری ' ج ام میں میں مطبور لاہور ' اسمانی)

حافظ جلال الدين سيوطى متوفى المعدن بعى لكساب كه حديث من آياب كه الله تعافى في دوحوں كو جسموں سے پہلے پيدا كيا ب- الحادي للنتاوي عوم مواسطور الكتب النورية الرضوية التليور كائتان)

علامہ بدر الدین بینی حنی متوفی ۱۹۵۵ء نے بھی لکھا ہے کہ صدیث بیں ہے کہ روحوں کو جسموں نے پہلے پر اکیا گیا ہے اور یہ بھی لکھا ہے کہ جسموں کے فتا ہونے کے بعد بھی روحی باتی رہتی ہیں۔ اس کی تائید اس سے ہوتی ہے کہ صدیث ہیں ہے شدام کی روحی مبزر عدل کے بوٹول میں راتی ہیں۔ امر ڈالقاری عصاص ۱۳۲۰ مطبوعہ اوار ڈالعباد المنیز یہ معر ۱۸م میں

مانظ عسقاناتی اور مانظ سیوطی نے یہ تو لکھاہے کہ روضی جسوں سے پہلے پردائی گئی ہیں انگیاں یہ نہیں لکھا کہ یہ حدیث کس آنام نے کس محافی سے روایت کی ہے؟ البتہ علامہ این لیم جوزیہ نے لکھاہے کہ آنام آبو عبداللہ بن مندہ نے اپنی سند کے ساتھ خطرت عمود بن حنب سے روایت کیاہے کہ رسول اللہ جنوبی نے فرالیا بندوں کی روضی بندوں سے دو ہزار سال پہلے پیدا کی گئی ہیں۔ سوجو روضی ایک دو سرے سے متعارف تھیں ' ووایک دو سرے سائفت رکھتی ہیں اور جو روضی ایک دو سرے کے لیے اجنی تھی ' وہ ایک دو سرے سے اختلاف کرتی ہیں۔ دالروح ' می صحف سابعا ' مطبوعہ دارالی بیٹ ' تاہرہ ' 1914ء)

پر علامہ این قیم جوزیہ متوتی اهدر نے اس مدیث کی سند پر اعتراض کیا ہے کہ اس میں ایک راوی بتر بن سکن ہے۔ امام دار تعلقی نے اس کے متعلق یہ کماکہ یہ حردک ہے اور ایک راوی ارطاق بن منذر ہے۔ امام ابن عدی نے کہناس کی بعض اصادیث فاط بیں۔ والدی میں ۱۵۰۵ معلومہ کا ہرہ)

جس کتا ہوں کہ اس مدے کی اصل سمج بخاری اور سمج مسلم بھی ہے جس کو ہم نے شروع بھی بیان کیا ہے۔ اس بھی اگر چہ دو ہزار سال پہلے کے الفاظ نمیں ہیں کین دو مدیث اس پر دانات کرتی ہے کہ روضی ایک مجتمع افتکر کی صورت میں پہلے پر اوو پکی تھیں این مزید گائید ان مدیثوں ہے ہوتی ہے۔

الم ابوعيل محدين عيني ترقدي منوفي الاحدد وايت كرتے بين

حضرت او جریرہ جریزہ بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بی جرید نے فرلیا جب اللہ نے آدم کو پیدا کیاتواں کی پشت پر ہاتھ بھیراتو ان کی پشت سے جروہ رور گر گئی جس کو وہ ان کی اولاد سے قیامت تک پیدا کرتے والا ہے اور اس نے ان جس سے جرانہاں کی دو ان کی پشت سے جروہ رور گر گئی جس کو وہ ان کی اولاد سے کہ حضرت آدم علیہ السلام پر چیش کیا محضرت آدم علیہ السلام نے کہا اے میرے دسیا ہے کون کے فرخی کو ریکھا جس کی دو نوں میرے دسیا ہے کون کی جو نوں اولاد جس سے آخری ان جس سے ایک شخص کو دیکھا جس کی دو نوں آئی کھوں کے در میان کی چنک انہیں بہت ایمی گئی۔ پر چھا اے میرے رسیا ہے کون ہے؟ فربایا ہے آخری امتوں سے ایک محض ہے۔ اس کو داؤد کہا جاتا ہے "محضرت آدم نے پوچھا اے میرے رسیا اس کی عمر کتنی ہے؟ فربایا ساتھ امتوں میں سے ایک محض ہے۔ اس کو داؤد کہا جاتا ہے "محضرت آدم نے پوچھا اے میرے دسیا اس کی عمر نیادہ کردے "جب محضرت آدم علیہ السلام کی عمر پوری مال اس کی عمر زیادہ کردے "جب محضرت آدم علیہ السلام کی عمر پوری میں انکار کیاتوان کی ادلاد نے بھی انکاد سے کہا کیا ابھی میری عمرے چالیس سال باتی کہ میری عمرے چالیس سال باتی کہ الموت آئے۔ محضرت آدم علیہ اسلام نے کہا کیا ابھی میری عمرے چالیس سال باتی کی انکاد نے بھی انکاد کے اس ملک الموت آئے۔ محضرت آدم علیہ اسلام نے کہا کیا ابھی میری عمرے چالیس سال باتی کی انکاد نے بھی انکاد کے انکاد کیاتوان کی ادلاد نے بھی انکاد

كياور معرت آدم بحول مح توان كي اولاد بحى بحول كلي لور معرت آوم في (اجتمادي) خطاكي توان كي اولاد في بحى خطاك الم ابو عيسى في كمايه مدت مسيح بي دوريد متحد مندول كرساته از ابو حريره ازني بيجيد مردي ب

(سنن رَدَى عَهُ رَمَّ الحديث: ٥٨٠ ملوم دار الفكر كبروت ١١١١ه)

اس صعف على يه تقري م كد صفرت آدم عليه السلام كى پشت مان كى تمام لولاد كى رد دول كو تكالا كيا ، جس من يه واضح يوكياك رد دول كو بمالا كيا ، جس من يد الكياكيا من يسلم يد الكياكيا م

نيزامام او عبداند عرب عبداند عام نيشانوري متوني ٥٠ مهد روايت كرتے بن

رمالت كامروميثل السينيش وبنقاقهم ومنكذو وإذا نعذ سامر السينيش وبنقاقهم ومنكذو من نوق ولاراه مم وموسلي وعيستي المن مريم و المعذ ساميسهم في فاعليطا (الاحزاب ع) فاقم وحمه كذللة بي حييفا وطرت اللو الني فعلرالناس عليها لاتبد بل ليعلي الله الني فعلرالناس عليها لاتبد بل ليعلي الله

اور (یادیکینے) جب ہم نے بجوں سے میثال لیااور آپ سے اور نوح سے اور ایرائیم سے اور موئی سے اور میٹی بن مریم سے اور ہم نے ان سے بخت میٹال لیا۔

مو آپ اللہ كى اطاعت كے ليے الى ذات كو اابعہ در م ر مجس اویان باطلہ سے اعراض كرتے ہوئے اپ آپ آپ كو اللہ كى بنائى ہوئى مرشت پر لاؤم كرلو بحس پر اس لے لوگوں كو پير ا كياہے اللہ كى مرشت فى گوئى تبد فى تسب ہے۔ سے ایک ڈرائے والے جی پہلے ڈرائے والوں جی ہے۔ اور ہم نے ان كے اكثر لوگوں ہے حمد كى وفا نعي بائى اور ہم نے ان عى ہے اکثر كو نافریان می بائے۔

پر فوج کے بعد ہم نے ان ہوگوں کی طرف رسول میں جو ان کے بور ان اور کو ان کے باس دو شن ولیلیں سلے کر آئے تو دوان پر ایمان لانے کے لیے تیاد ند ہوئے کی وواس سے پہلے ان کی محمد میں کر

هذَانَدِيْرَتِنَ النَّدُرُ الْأُولَى (النحم ٥٠) وَمَّاوَحُدُنَا لِأَكْثَرِهِمُ مِنْ عَهَدٍ وَانْ وَحَدُنَا اكْثَرَهُمُ لُفْسِيقِيْنَ ٥ (الاعراف: ٢٠٠) ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعَدِهِ رُسُلًا إلى قَوْمِهِمَ فَحَاءُوهُمُ مُوالْبَيِنَاتِ فَمَا كَانُوالِيُ وُمِنُوابِمَا كَذَّبُوانِهِ مِنْ فَسُلُ (يونس ٢٠٠)

ہی حضرت عینی کی روح ان ارواح میں سے تھی جن سے آدم علیہ السلام کے زباند میں اللہ تعالی نے حمد الما تھا ، پھر اللہ تعالی نے یہ روح صرت مریم کی طرف بھیجی 'جواپنے کھروالوں ہے الگ ہو کرایک شرقی مقام میں آئی تھی۔ مجراو کوں کی طرف ے انہوں نے ایک پردہ بنالیا کو ہم نے ان کی طرف اپنے ایک فرشتہ کو بھیجا جس نے ان کے سائنے ایک تک رست آدی کی صورت اعتبار كى برمريم في اي كواين بيد ين يل الوريد حعرت يمينى عليد السلام كاروح في-

یہ مدیث می الاسلام اور میمن نے اس کو روایت نہیں کیا۔ انام ذہبی نے بھی اس مدیث کو سمح قرار رہا ہے۔

(المتدرك عام ١٢٢٠-٣٢٣ مطبوعه وارالباز المدكرمه)

اس مدعث میں مجی بیر تقری ہے کہ اللہ تعالی نے حضرت آدم کی پشت ہے ان کی اولاد کی روحوں کو ٹکالا اور ان دونوں مريوں كى تعديق إس معت عص ب

وَإِذْ أَخَذُ لَنُّكُ مِنْ آبَنِي أَدَّمُ مِنْ ظُلُّهُ ورهِمْ اور (یاد میجے) بب آپ کے رب لے بنو آدم کی پشتوں ہے ان كى اولاد كو تكالد اور ان كوان كى جالون ير كواد بنايا (قربايا) كيا ذرينتهم وأشهدهم على الفيهم الست بِرَيْكُمْ فَالْتُوا بَلِنِي شَهِدُنَا أَنْ تَقُولُوا يَوْمَ می جمارا رب دیس موں اس نے کما کوں نیس ایم ف الْقِيْسَةِ إِنَّا كُنَّاعَنُ مُلَّاغُهُ لِلَّهُ وَا موای دی (براس کے کہ) کمیں تم قیامت کے دن کو ہم زاس

- 274c (الاعراف: الما)

علامہ این تیم نے ان دلا کل کے معارضہ میں میں حدیث پیش کی ہے کہ فرشتہ مل کے بید میں دوح پھو تک ہے۔ اس سے معلوم ہواک روح جم کے ساتھ یا اس کے بور مادث ہوتی ہے ؛ ودص عدیہ ہے:

الم محمين اساميل بفاري متوني ٥٦١ه روايت كرتي بين:

حضرت عبدالله بن مسعود مواجر بيان كرتے بين كه بهم ب رسول الله مزجيد في فرمايا اور آپ صافق اور مصدوق بين مك تم بی سے ہرایک کی خلقت اپنی مال کے پید میں چالیس دن تک جمع کی جاتی ہے (ایسٹی نطفہ) مجروہ جماہوا خون بن جا آ ہے 'مجر چالیس دن کے بعد وہ کوشت کا کلزا بن جا آہے ' پھرچالیس دن کے بعد اللہ تعالیٰ ایک فرشتہ بھیجناہے اور اس کو بیار کلسات لکھنے کا عَم دیا جا آہے'اور اس سے کماجا آہے اس کا عمل تکھو اور اس کارزق اور شتی یا سعید ہونا' پھروہ اس میں روح پھو نکا ہے۔۔ب نك تم يس ايك من مل كر تاريتا به حق كه اس كاورجت كدر ميان ايك باقد كافاصله رو جا آب اقواس ير لكمابوا عالب ا جاما ہے ، مرده دوز خوں كا عمل كرما ہے اور ايك فض عمل كرما رہتا ہے حتى كر اس كے اور دوز خ كے در ميان أيك باتھ كافاصله ره جاتا بي تواس ير لكها موا غالب آجاتا بي كرده جنتون كاعمل كرتاب

(مي البواري عن رقم الهديد ٢٠١٠ م ٢٠١٠ على أرقم الهديد ١٥٩٣ عه أرقم الهديد ١٥٥٣ مي مسلم ور ١٠ (٢١٢٣) ١٥٩٨ عن الزرى عما وقم المديث ١١٣٨ من الإداؤ عما وقم المديث ١١٥٨ من ابن البرع المرية الديث ١١٠٠ مي ابن حبان 'ج٣١ رقم المدعد بمنعه مستداند 'ج٣ رقم المدعث: ٣٣٣ مند حيدي 'ج١ رقم المدعث: ٣١ سنن كبري المنسائي وقم المدعث:

جرچند که اس مدیث کا ظاہر معنی بیہ ہے کہ جس وقت فرشتہ بھو تک سار ماہے مہس وقت اللہ تعالی اس میں روح بیدا کر ماہے' لیکن دو سرے دلا کل سے مطابقت کے لیے یہ بھی کما جا سکتا ہے کہ فرشنہ کے پھو تک مارتے وقت اللہ متعالی اس میں وہ روح بھیج رتا ہواں سے پہلے پدائی جا بھی ہے۔

قیامت کے دن جلد حساب لینے کابیان

اس کے بعد اللہ تعنالی نے فرالی سنوائی کا تھم ہے بینی صور ق اور معنا ہر طرح ای کا تھم ہے۔ اس آیت سے یہ استدال کیا گیا ہے کہ کمی مخص کی اطاعت تواب کو داجب نہیں کرتی ہوئی اور کمی مخص کی معصیت عذاب کو داجب نہیں کرتی ہو تکہ اگر ایر ایجا ہو تا تو اطاعت کرنے دائے تعالی ہو تک وہ اللہ تعالی کو تواب مطاکرنے کا تھم دے مانا تکہ اللہ ترین کا تھم باقذ نہیں ہو سکتا کا کہ چرچے اس کا تھم باقذ نہیں ہو سکتا کا کہ چرچے اس کا تھم باقذ ہے۔

اس كے بعد فرمايا اور وہ مب سے جلد حملب لينے والا ہے حسب ذيل آنت بي بھي الله تعالى نے جلد حماب لينے ك

متعلق فرملا ہے:

اللہ تھم فرما آہے اور اس کے تھم کور دکرنے والا کوئی نیس ہے اور وہ بہت جلد حساب لینے والا ہے۔

وَاللَّهُ يَحُكُمُ لَا مُعَيِّبَ لِحُكْمِهِ وَ مُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ (الرعد: ")

۔ آللہ تعالیٰ تمام کلوق کا صلب بہت جلد لے لے گلہ اور ایک ہی وقت جس نمی ایک عمض ہے صاب لیمااور اس وقت جس نمی دو مرے ہے صلب لیمااس کے لیے مانع اور رکلوٹ نمیں ہوگا۔

علامه سيد محمود آلوي متولى مي عدد لكيية بن:

صدیث میں ہے کہ اللہ تعالی تمام گلوں کا حساب اتن دیر میں لے لے گا جتنی دیر میں بحری کا وودھ دوہا جا ہے اور بعض عدیثوں میں ہے کہ اللہ تعالی فود حساب نسیں صدیثوں میں ہے کہ اللہ تعالی فود حساب نسیں سے گا بلکہ اللہ سجانہ و تعالی فرشتوں کو حساب لینے کا تھم دے گا۔ سو ہر فرشتہ ہر بندے ہے حساب لے گااور بعض علاء نے ہے کما ہے کہ مسلمانوں سے اللہ تعالی فود حساب لیے گااور کافروں سے فود حساب لیتا ہے کہ مسلمانوں سے اللہ تعالی فود حساب لیے گااور کافروں سے فرشتے حساب لیس مے کیے تک اگر اللہ کافروں سے فود حساب لیتا تو ان سے کلام جمی فرمائے گا میں اللہ تو ان ہے کہ اور کا میں فرمائے گا دیوا ہے کہ اللہ تو ان سے کلام فرمائے گا اور قرآن مجید کی اللہ فرمائے گا دور قرآن مجید کی خاہر اللہ تعالی کافروں سے دھست کے ساتھ کلام فیس فرمائے گا کو قرآن مجید کی خاہر اللہ کہ کام مردوالات کرتی ہیں:

وَبَوْمَ لَكُولُ لِلَّذِيْلَ الشَّرَكُولُ آيُنَ شُرَكَآءُ كُمُ الْدِيْلَ كُنْمُ الْدِيْلَ كُنْمُمْ الشَّرَكُولُ آيُنَ شُرَكَآءُ كُمُ الْدِيْلَ كُنْمُمْ الرُّعُمُونَ (الانعام:۲۲)

قَدُوفُوا بِمَا نَسِبُنُمُ لِكَاءَ بَوْمِكُمُ هُدااِتًا نَسِبُلْكُمُ وَدُوفُوا عَدَابَ الْحُلْدِ بِمَا كُنْمُ مُ تَمْمَلُوْنَ 0 (السحدون 1)

اور جس دن ہم سب کو جع کریں گے اپھر شرک کرنے والے ہو کوں سے تمہیں کے تمہارے وہ شرکاء کماں ہیں جن کاتم وعویٰ کیا کرتے تھے؟

بی اب تم (اس کامزه) چکھوکہ تم نے اس دن کی حاضری کو بھلا دیا تھا۔ بے شک ہم نے حمیس قراموش کر دیا اور دائمی عذاب کا مزہ چکھو ان ایرے) کاموں کے بدیلے جو تم کرتے

باتی حساب لینے کی کیا کیفیت ہوگی؟ اس کا متک انسانی اصلا نہیں کر سکتی 'ہم اللہ کے حساب لینے پر اندان لاتے ہیں اور اس کی کیفیت کو عالم انفیب والشہاد ہ کے سپرد کرتے ہیں۔ (روح المعانی 'جے ' میں اسماد مدر دار احیاء التراث انعربی ' بیروت ا حساب کے متعلق قرآن مجید کی آیات اللہ تعانی ارشاد فرما تیا ہے: فَيَوْمَ لِهِ لِأَيْسَفَلُ عَن دُنْيِهِ إِنْ مَ لَا لَهِ مَاللَّهِ اللَّهِ مِن كَى انْبَانِ اور جن سے اس كے كتاد كے متعلق (الرحمن: ٢٩) سوال نيم كياجا كا۔

اس آبت سے معلوم ہو آ ہے کہ قیامت کون حملہ نیس ایاجائے کا کین اس کے معارض دو سری آبت ہے: مَوَرَیْکَ لَسَسْمَلُسَیْسُم آسُسَمِیتُ کَ عَشَا ہو آپ کے دب کی حم ایم ان سے ضرور موال کریں گے
گانوا یَعْسَلُونَ ۵ (الحدید: ۱۹۳۳) ان ب کامول کے متعلق جودہ کرتے تھے۔

ان آبنول میں تغیق اس طرح وی گئی ہے کہ ان سے یہ موال نمیں کیا جائے گاکہ تم نے کیا کیا ہے؟ کو نکہ ان کے اہمال فرشتے نے لکھے ہوئے ہیں ' بلکہ ان سے یہ موال کیا جائے گاکہ فلان کام تم نے کیوں کیا ہے؟ دو مرا بواب یہ ہے کہ قیامت کے دن احوال مختلف ہوں مجے۔ کسی دفت کوئی موال نمیں کیا جائے گالور کسی دو مرے وقت موال کیا جائے گا۔ اس کی نظیر یہ ہے کہ کسی وقت دو ایک دو مرے کے خلاف اپنی تجنس چیش کریں یہ ہے کہ کسی دو آت کسی کو اپنا عذر بیان کرنے کی جزائے نمیں ہوگی اور کسی دفت دو ایک دو مرے کے خلاف اپنی جمنس چیش کریں گے۔ جیساکہ ان آبنوں نیں ہے:

هُذَا يَوْمُ لَايسَطِفُونَ ٥ وَ لَا يُؤْدُنُ لَهُمُ الى دن وه ند كولَ بات كر عيل كاور ند العي عادري في في عند وي في عند وي المنطقة وي المنطقة

نُمَّ إِلَّكُمُ يَوُمُ الْفِيلَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ ﴿ عُرِيقِيَامٌ قِيامِت كُونَ بِيضِ بِهِ كَالْمُوكَى: نَهُ نَنْهِ مُنُونَ (الرمر:٣١)

میلی آبت میں فرملا کہ وہ اس دن کوئی بات نہیں کر عیس سے اور دو سری آبت میں فرملاوہ جھڑا کریں ہے اس کامی محمل ہے کہ قیامت کے دن احوال مختلف ہوں ہے۔

حاب کی کیفیت کے متعلق اعادیث

الم محمين اساميل بقاري حول ١٥١ه روايت كرتين

ئی مڑھی کی زوجہ معرت عائشہ رمنی اللہ عنماجب بھی کوئی مدے سنی تھیں اور اس کوینہ سمجھ یاتی تو وہ نبی مڑھی ہے نوچھتی تھیں' حتی کہ اس کو سمجھ لیتنں۔ اور نبی مڑھیں نے فرملا جس مخص سے حساب لیا کیااس کو عذاب ریا کیا معرت عاکشہ نے موض کیا کمیااللہ تعالی ہے جس فرما آنا؟

فَأَنْ مَنْ أُوتِي كِنْبَهُ بِبَدِيثِنِهِ ٥ مَسُوفَ جرب الغال الداس كراكي إلا عي را جاء كان المنظال الداس كالم

، آب نے فرمایا اس سے مراد طرف العال کو پیش کرنا ہے ، نیکن جس سے صلب میں مناقشہ کیا گیا (کہ فلان کام تم نے کیوں کیا) دہ بلاک ہو جائے گا۔ (میج البحاری مینا رقم الدے شدہ ۱۰۰ مطبوعہ دار الکتب العلمیہ اندونت)

حضرت عبداللہ بن مسعود جربین بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بڑھی نے فرملیا قیامت کے دن لوگوں کے در میان سب سے پہلے قتل کے متعلق ٹیملہ کیا جائے گا۔

(منح البخاري عن رقم المدينة ١٨٧٣ من من منام ويات ٢٨ (١٩٤٨) ٢٠٠٢ من الزري عن رقم المدينة ١٣٠١ من التسائل عن رقم المدينة ١٠٠٣ من ابن الد عن رقم المدينة ١٣٠٥)

يه صديث حقوق العباور محول إور حقوق الله من مب سع يمل نماذ كاحداب لياجات كا

طِيان القر أن

جأدسوم

الم ابوليسين عدين عين تروى متونى الاعدروايت كرت ين

حضرت الاجريره جوينى بيان كرتے بيل كه وسول الله بي آخر الماقيات كون بقد ك عمل سے سب يہلے نماز كا حساب ليا جلت كا أكر نمازيں ورست ہو كمي تو وہ كامياب اور كامران ہو كيا اور أكر نمازيں قامد ہو كي تو وہ ناكام اور نقصان الفات والا ہوكيا۔ أكر نمازيں قامد موكي و وہ ناكام اور نقصان الفات والا ہوكيا۔ أكر اس كے فرض من كى ہو تو رب جارك و تعالى فرائے كا ديكمو ميرے اس بنده كے فشل بير؟ كام فرائن كا منان كو لوا فل سے يوراكيا جلت كا بي كم باتى اعمال كا بى اى طرح معالم ہوكا

اسنن الرّذي عن وقم المدينة ١٣٦٠ سنن الإداؤد عن وقم المدينة ١٨٧٠ سنن النسائل عن وقم المدينة ١٣١١ ١٣١٥ سنن ابن اجه كنا وقم المدينة ١٣٤٥ مند احر كن ٢٠٠ ص١٠٠ ١٩٠٠ جه من ١٠٠ كل ٢٠٠ من ١٨٧٠)

قاش او برابن العربي الماكل المتوتى مهمنداس مدعث كي شرح يس كليد ير.

اس میں یہ بھی اختال ہے کہ فرائض کی تقداد میں جو کی رہ گئی ہے اور نوا قل سے پوری ہو جائے اور یہ بھی اختال ہے کہ
فرائض کے خشوع میں جو کی رہ گئی ہوا وہ نوا فل سے پوری ہو جائے اور محرے نزدیک پہلاا ختال زیادہ ظاہر ہے کیونکہ آپ نے
باتی اعمال کا بھی میں تھم بیان فرمایا ہے اور زکو تامیں صرف فرض ہے یا نشل ہے ایس جس طرح زکو تاکا فرض فاضل صد قات ہے
پورا ہو جاتا ہے اس طرح نماز کا فرض بھی نشل سے بورا ہو جائے گالور اللہ کا فضل بہت و سیج ہے اور اس کا دعدہ بہت بافذ ہونے
والا ہے اور اس کا عزم اتم اور اعم ہے۔ (عارضة الاجوزی جو اس معرور دار احیام التراث الحرائی جوت)

علامہ سیوطی متوفی اور اس مدے کی شرح میں لکھتے ہیں اہم پہنی نے کہا ہے کہ اس مدیث کا معنی ہے کہ نماز کی سنتوں ہیں جو کی روہ جاتی ہے اور افل سے ہوری کی جائے گی۔ کو تکہ کوئی سنت واجب کا بدل نہیں ہو عتی ہے۔ مدیث الدی ہے جننا جھ سے قرائض کے ذریعہ قرب ماصل ہو تاہے "انتااور کمی چزے نہیں ہو تااور چخ مزالدین نے کہاہے "کہ ذکو ہوا اور ہے جننا جھ سے قرائض کے ذریعہ قرب ماصل ہو تاہے "انتااور کمی چزے نہیں ہو تااور چخ مزالدین نے کہاہے "کہ ذکو ہوا واجب کے ایک در حم کا آخوال مصد نظی بڑار دور حم سے ذاکد ہے اور کوئی آدی ساری حرفظی قیام کرے "بلکہ تمام ذماتہ قیام کرے تو وہ مسیح کی دور کھت قرض کے برابر نہیں ہے۔ (سنن النسائی ج) شرح الدے دیں ہوار السرف البیروت " اس میدی

الم ابو بكر مبدالله بن جمين الي شيد منوني ١٥ مهد روايت كري جي:

زید بن حارث بیان کرتے ہیں کہ جب صفرت ابو بکر صدیق برہ نے گی وفات کا وقت آیا تو انہوں نے صفرت محر برہ نے کو باد کر فرمایا اللہ کا رات میں ایک حق ہے جس کو وہ دن میں قبول نہیں کرتا 'اور اللہ کا دن میں ایک حق ہے جس کو وہ رات میں قبول نہیں کرتا' اور جب تک فرض اوا نہ کیا جائے اللہ لفل کو قبول نہیں کرتا۔ (الحدیث)

(معنف ابن اني ثيبه " خ "" رقم المصدد ١٣٧٠ ع "" وقم المدين ١٩٠٠ تما الزعد الان الهادك" وقم الحديث ١٩٨٠ مايت الاولياء " جامع الاسلامات الكبير" ج "" وقم المصدد ١٨٨٠)

الم الوعيني حمرين ميني ترزي موفي الماه روايت كرتي من

حفرت ابن مسود جریز بیان کرتے ہیں کہ نی پہیر نے قربایاین آدم کاقدم قیامت کے دن اپنے رب کے سامنے ہے اس دنت تک نسیل ہے گا حق کہ اس سے پانچ چزوں کے متعلق سوال کرلیا جائے۔ اس نے اپنی عرکس کام میں فتا کی؟ اس نے اپنی جو انی کس کام میں بتا کی؟ اس نے بالی جو انی کس کام میں بتا کی؟ اس نے بالی کسال ہے حاصل کیا؟ اور کسال اس کو بخرج کیا؟ اور اس نے اپنے علم کے مطابق کیا میں اس کو بخرج کیا؟ اور اس نے اپنے علم کے مطابق کیا میں اس کو بخرج کیا؟ اور اس نے اپنے علم کے مطابق کیا میں اس کو بخرج کیا؟ اور اس نے اپنے علم کے مطابق کیا میں اس کو بخرج کیا؟ اور اس نے اپنے علم کے مطابق کیا گئل کیا؟ (سٹن الزری کی جس کر الحدیث دی جسم ا

حفرت ابو جريره بوائي بيان كرت بيل كر رسول الله مين في فرما كياتم جائ بوكر مفلس كون ب؟ انهول في كما

طِيانُ القر أنْ

یارسول اللہ امغلس وہ محض ہے جس کے ہیں در هم ہونہ کوئی متاع ہو۔ رسول اللہ علی بنے فرمایا میری امت میں ہے مغلس وہ محض ہوگا ہو تا است کے دن نماز 'روزہ اور زکو ہ لے کر آئے گا اور اس نے کمی کو گل دی ہوگی اور کمی کو تست لگائی ہوگی '
کمی کا مال کھایا ہوگا اور کمی کا خون ہمایا ہوگا اور کمی کو مارا ہوگا وہ محض بینہ جائے گا اور اس کی تیکیوں میں ہے اس کو بدلہ دیا جائے گا اور اس کو بدلہ دیا جائے گا۔ چم آگر اس پر جو حقوق ہیں 'ان کی اوائی ہے پہلے اس کی تیکیاں فتم ہو جا کی آو ان کے کنا ہو اس پر ڈال دیے جا کی گو دنے میں ڈال دیا جائے گا۔

(سنن الزندي جه وقم الدعث ١٣٢٦ مع مسلم وقم الحدعث (٢٥٨٩) مي ابن حبال جه اوقم الحديث ١٣٦١ مند احر جه من وقم الدعث ١٨٠٦ منن كبري لليمتي جه صهه)

صرت ابر جرم و اور صرت ابو سعید رضی الله عنما بیان کرتے ہیں کہ رسول الله بی نے قربا قیامت کے دن بی کو چین کیا جائے گاتو الله تعلق الله بی کان اور آبکسیس تعین بنائی تعین ؟ اور کیابل اور اولاد نسی و چین کیا جائے گاتو الله تعین کیا تھیں؟ اور کیابل اور اولاد نسی و سیئے تھے؟ کیا تیرے لیے مویشیوں اور کھیتوں کو معزشیں کیا تھا؟ کیا تھے مرداری اور خوش مال نسی دی تھی؟ چرکیاتو جھے ہاں در خاتات کا تھین رکھا تھا وہ کے گاشیں الله تعالی فرائے گا آج جی تھے اس طرح قراموش کرووں گاجس طرح تو نے اس دن طاقات کا تھین رکھا تھا وہ کے گاشیں الله تعالی فرائے گا آج جی تھے اس طرح قراموش کرووں گاجس طرح تو نے بھے بھلادیا تھا۔ (منن الرزی کی جس و آلدی ہے۔ ۱۲۳۳)

المام ابوعبد الله محمرين اساعيل عقاري متوفى ٢٥١هـ روايت كرتيم بن

حضرت عبدالله بن محروض الله عنما بيان كرتے ميں كمد من نے وسول الله مهجيم كوية قرباتے ہوئے سناہے كہ مومن اپنے رب كة قريب كيا جائے كا حتى كہ الله اس كوائي وحمت ہے كھير لے كا پراس ہے اس كے كنابوں كا قرار كرائے كا فربائے كا مرازا پروہ ركھا كا تم فلان كناه بنجائے ہو؟ وہ وو بار كے كا ہے ميرے وب الله بنجانا ہوں۔ الله تعالی قربائے كا من فربائے كا من تم اور كرائے كا اس كى فيكوں كا محيقہ ليب ويا جائے كا باتى دہے كفار تو ان كو تمام لوگوں كے مائے بكار كر بلایا جائے كاكہ بدوہ لوگ ہيں جنوں نے اپنے وب پر جموت بائد صافحا۔

(من البحاری کی اور قم الحدیث: ۱۳۸۵ منی مسلم کوب ۵۳ (۱۳۷۸ ۱۸۳ منی این باید کی ارقم الحدیث: ۱۸۳ (۱۸۳ تا کری المنسئل کی از قم الحدیث: ۱۳۳۲ مند احد کی ۲ رقم الحدیث: ۱۹۸۹)

الم مسلم بن تجاج فشهدى متوفى ١٠١٥ روايت كرت بين:

حضرت ابوذر بوینی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بیجیج نے قربا ہے شک میں ضرور اس محض کو جانا ہوں جو سب سے
آخر میں جنت میں وافل ہوگا اور سب سے آخر میں دوزخ سے نظے گا' ایک فخص کو قیامت کے دن لایا جائے گاہی کہا جائے گا
اس پر اس کے چھوٹے چھوٹے گناہ چیش کرد اور اس کے بڑے بڑے گناہ اس سے دور رکھو۔ پھر اس سے کہا جائے گا کہ تو نے فلال دن سے کام کیا تھا' وہ کیے گا' ہی اور اس کا افکار نہیں کر سکے گا اور وہ اس سے ڈر رہا ہوگا کہ کمیں فلال دن سے کام کیا تھا' وہ کیے گا' ہی اور اس کا افکار نہیں کر سکے گا اور وہ اس سے ڈر رہا ہوگا کہ کمیں اس کے بڑے بڑے گناہ نہ چیش کر دیا گا گا ہے۔ تب وہ مسلم کے گا اور کی اس کے برا میں ایک نکی ہے۔ تب وہ مسلم کے گا' اس میرے دب میں نے تو اور بھی بہت کام کے تھے جن کو جس بہل نہیں دکھے رہا' پارٹی نے دیکھا کہ رسول اللہ جھی ہے جن کو جس بہل نہیں دکھے رہا' پارٹی نے دیکھا کہ رسول اللہ جھی ہے جن کو جس بہل نہیں دکھے رہا' پارٹی کے دیکھا کہ دسول اللہ جھی ہے جن کو جس بہل نہیں دکھے رہا' پارٹی مبارک واڑ میں گا ہم ہو گئیں۔

(صحيح مسلم اليمان ١٩٠٧ - ١٩٠١) ١٩٠٩ مسنن الترزي وقم الحديث: ٥٠١٥)

الم الوليسي محمد اليسي تمذى متوفى المراهد روايت كرت إن

معرت ابوللمد بوبني ميان كرتے ميں كرش نے رسول الله وجيد كوب فرماتے ہوئے سنام كر جحد سے ميرے رب نے یہ وعدہ کیاہے کہ میری امت میں سے ستر بزار کو بغیر حسلب اور عذاب کے جنت میں وافل فرمائے گااؤر بزار کے ساتھ ستر بزار (مزیر) ہوں کے اور میرے رب نے دونوں اِتھوں سے تین بار لی (بک) بحرنے کا وعد د کیا ہے۔

(سنن التروي عماء قم الحريث: ٢٣٣٥ سنن ابن بايد عمار قم الحديث: ٣٣٨١ مجح ابن حبان عهما وقم الحديث: ٣٣١٥ من

اجر 'ج٨' رقم المدعة ١٩٢٨ ٢٢١ المجم الكيم عيم وقم المدعث ١٤١٤)

حساب کی کیفیت کے متعلق محابہ " آبغین اور علاء کے تظریات

علامه محدين احد المقارعي الحبل المتوفى ١٨٨ مد المعترين

حسلب كى كيفيات أور اس كے احوال مختف اور متفاوت ميں۔ بعض كاحساب آسان ہو گااور بعض كاحساب مشكل ہو گا' بعض کے ساتھ عدل ہوگا بعض پر فضل ہوگا بعض کی تھریم ہوگی بعض کی زجر وقوئع ہوگی بعض سے در گزر ہو گااور بعض کی گرفت ہوگی۔ لور یہ سب اس اکرم الاکرمن اور ارتم الراجمین کی مرمنی بور مثیب بر موقوف ہے۔

مب سے پہلے علام الجاروں الل واروں اور خوش مالوں سے صلب لیا جائے گا۔ حقوق اللہ على مب سے پہلے نماز اور

حقوق العراد من سي سيا فل كاحساب موكد

اس میں بھی اختلاف ہے کہ کس چیز کے متعلق سوال کیا جائے گا۔ حضرت ابن عباس رمنی اللہ عشمانے فرمایا "الاالہ الا الله" كے متعلق موال ہو كا اور ضحاك نے كمالوكوں سے ان كے كنابوں كے متعلق موال كياجائے كا اور علامہ قر لمبى نے كما تمام ا توال اور افعال کے متعلق سوال کیا جائے گا۔ قرآن مجید میں ہے:

إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَعْسَرَ وَالْفُتُواد كُلُّ أُولَا لَكُ ب لك كان" أكد اور دل"إن سب ك معلق يومما . 1524

كَانَ عَمَهُ مُسَنَّولًا (بسواسرائيل)

فَوَرَيْكُ لَمُسْتَلَنَّهُمْ أَخْمَونُينَ 0 غَمَّا سو آپ کے رب کی حم اہم ان سب سے ضرور سوال "كَانُوايَعْمَلُونَ (النحل ١٠٠٠) كرير كے ان سب كاموں كے متعلق جود ، كرتے تھے..

الم رازي كابحى كى ر جمان ہے كہ ہر كام كے متعلق موال ہو كا۔ اس آيت عن فرمانا ہے كہ بم ان سب سے موال كريں ے اس کا تقاضا یہ ہے کہ انبیاء علیم السلام ہے بھی سوال کیا جائے گا۔ انبیاء علیم السلام ہے سوان کے متعلق اس آن می تفريج:

مَلَمَسْمَلُنَ الَّذِينَ أَرْسِلَ الَّهِمْ وَلَمُسْمُلُنَّ المرميلين (الاعراف)

سوہم ان لوگوں سے ضرور سوال کریں ہے جن کی طرف ر سول بھیج محے اور ب شک ہم رسولوں سے الجی) مرور سوال کریں گے۔

ي آيس اس بردالت كرتى إلى كرب شمول انبياء عليهم السلام برفض سے سوال كياجائ كا-ابت ان سے بدطور مناقش سوال نہیں ہوگا کاک تعظیم و تحریم کے ساتھ سوئل کیا جائے گااور اصادیث میں جن کے متعلق بدبشارت ہے کہ وہ بغیر حساب کے جنت میں جائیں مے اودان آیات کے عوم سے مخصوص اور مشکی ہیں۔ انبیاد علیم انسلام سے تبلیغ رسانت کے متعلق سوال ہوگاور کفارے انبیاء علیم السلام کی محدوب کے متعلق موال کیاجائے کا علامہ بلبانی نے اکسا ہے کہ کفار نے جو نیک کام کے ہیں ان سے ان کے عذاب میں مختیف موقع ہے (یہ سمج نبی ہے قرآن مجد می تقریح ہے کہ ان کے عذاب میں تخفیف ميس كى جلسكى - لا ينعم عنهم العداب ولاهم يعظرون (الترديم)

بیخ ابن تعید نے مقیدہ واسلید یم فکھا ہے کہ اللہ تعلق موس سے تعلق می حساب نے گااور اس ہے اس کے گناہوں کا اقرار کرائے گا جیسا کہ کہا ہے کھار ہے اس تم کا اقرار کرائے گا جیسا کہ کہا ہے کھار ہے اس تم کا حساب نس لیا جائے گا کو کہ ان کی کوئی نیکیاں نس ہیں کین ان کے اعمال کا شار کیا جائے گا ان ہے ان کا قرار کرایا جائے گا

نعتوں کی کتنی مقدار پر حساب لیا جائے گا

الم اجمد فے سند جید کے ساتھ حضرت آئی حسیب برونی ہے روایت کیاہے کہ نبی سرتی حضرت ابو بکراور حضرت عمر رمنی اللہ عثما کے ساتھ سمی افساری کے باغ میں داخل ہوئے باغ کے مالک نے مجوروں کا ایک فوشہ قو ژکر نبی سرتی کو بیش کیا اللہ عثما کے ساتھ سمی افساری کے باغ میں داخل ہوئے باغ کے مالک نے مجوروں کا ایک فوشہ قو ژکر نبی سرتی کو بیش کیا اللہ مسلم اللہ علی سرال کیا جائے گا۔ عرض کیا کمیا کیا دران تم ہے اس کا سوال کیا جائے گا۔ عرض کمیا کمیا کیا درسول اللہ اللہ جزوں کے متعلق بھی قیامت کے دن سوال کیا جائے گا؟ آپ نے فرمایا باس اسوال کیا جائے گا۔ عرض کمیا کمیا کہ سرائی جائے اور اتنا جروجو وجو پ ان تمن چیزوں کے ساتھ شرم گاہ کو لبیٹا جائے 'روٹی کاوہ محل اجموال میا بائے اور اتنا جروجو وجو پ اور بارش سے بھوک مثانی جائے اور اتنا جروجو وجو پ

صاب کو آسان کرنے کا طریقہ

الم طرانی الم براراورالم ماکم نے صفرت او ہررہ عافی سے مداعت کیاہے کہ دسول افتہ بڑی ہے فرایا تین خصلتیں جس میں ہول افتہ اس ہے آسان حساب لے گا اور اس کو اپنی رضت ہے جنت میں داخل کر دے گا۔ محابہ نے برجھاندہ کیا خصابہ یا جس میں ہیں؟ فرایا ہو تم کو حروم کرے اس کو دو۔ جو تم ہے تصلتی ہو اور ہے تعلق ہو اور جو تم پر زیادتی کرے اس کو معاف کردو۔

الم امبانی نے معزت ابو جریرہ بولیز ہے دوایت کیاہے کہ رسول اللہ مالی نے فرمایا اگر تم کر بحقے ہو کہ جب تم صبح انھو یا جب شام ہو تو تمہارے دل میں کسی کے خلاف کینہ نہ ہو تو ایسا کر لو کیو تکہ اس سے تمہارا حساب زیادہ آسمان ہوگا۔

الم میمی نے معزت ابو ہریرہ جائے۔ سے روایت کیا ہے کہ ایک اعرائی نے کمایار سول اللہ اقیامت کے ون کلوق کا صاب کون لے گا؟ آپ نے فرملیا اللہ ابس نے کمار پ کھیے کی تشم اعادی نجات ہوگئے۔ آپ نے فرملیا اے اعرائی وہ کیے؟ اس نے کما اس لیے کہ کریم جب قادر ہو آہے تو معاف کروتا ہے۔

ممی نے خوب کما ہے کہ کریم جب قاور ہو آ ہے تو بخش دیتا ہے اور جب تم سے کوئی اخرش ہو تو دہ پردہ رکھتا ہے اور جلدی

مد کرنااور انقام لینا میر کریم کی عادت نمیں ہے۔

فركور العدر احاديث ين سب كرتم كى زيادتى معاف كردوابس سے تهارا حساب آسان بوكا اس كامعنى يرب كرتم بندول کی خطاوی کو معاف کرود اکثر تعالی تماری خطاوی کو معاف کردے گا۔

علامہ قرالمی اور دیگر علاء نے لکھا ہے کہ مسلمانوں کی تحریم کے لیے انٹہ تعالی حساب کے وقت ان سے بغیر ترجمان کے كام قرمائ كادر كفار كى الات كے ليے ان مے فود كلام نيس فرمائ كا كلك فرشت ان مداليس كے۔

(اوامع الافواد البعيه "ج ٢٠ ص ١٥١- ١٥١ مطيعا مطبوعه المكتب الاملاي أبيردت ١١١١ه)

الله تعالی کاارشادے: آپ کئے تہیں نظی اور سمندروں کی تاریکوں سے کون نجلت رہا ہے 'جس کو تم عاجزی ے اور چیکے چیکے پارتے ہو کہ اگر وہ ہمیں اس (معیبت) ہے بچائے تو ہم ضرور شکر گزاروں بیں سے ہو جائیں کے 0 آپ كئے كر اللہ على تم كواس (معينت) سے اور ہر تكليف سے تجات ديا ہے ' يمراجى) تم شرك كرتے ہوا (الانعام: ١٧٠-١١١) معیبت نل جانے کے بعد اللہ کو بھول جانے پر ملامت

اس سے پہلی آغوں میں اللہ تعلق نے انوبیت پر بعض ولا کل بیان فرائے تھے کہ اس کاعلم برجے کو محیط ہے اور اس کی قدرت ہر چزکو شال ب اور وہ تمام محلوق پر عالب ب اور ان کے اعمال کی فرشتوں سے حفاظت کرا آ اے۔ اس آیت میں اللہ تعاتی نے ایک اور متم کی دلیل بیان فرائی ہے جو افتہ تعالی کی قدرت کے ممال اور اس کی رحمت اس کے فعنل اور اس کے

احسان يرواللت كرتى ب

اس اعت می خیکی کی تاریکیوں کاؤکر قربایا ہے اس سے مراوحی تاری بھی ہے اور معنوی تاری بھی۔ حس تاری ، رات کا ایر حرام کمرے باولوں کا اند حرا' بارش اور آند حیوں کا اند حرا ہے اور سمند روں کی حس بار کی رات کا اند حرا' باولوں کا ائد جرااور موہوں کے الاطم کاائد حراب اور معنوی تارکی ان اند جروں کی وجہ سے خوف شدید انتازوں کے نہ سلنے کی وجہ سے من كى مرايت نها كا فوف اور دخمن كرا جا تك ثوث برائ كا فوف ب-

اس سے مقمود یہ ہے کہ جب اس تم کے اسباب مجتمع ہو جائیں جن ہے بہت مجبراہث اور شدید خوف لاحق ہو آ ہے اور انسان کو نجات کی کوئی صورت نظر نمیں آتی اور وہ ہر طرف سے المد ہو جاتا ہے 'قراس وقت وہ صرف الله تعالی کی طرف رجوع كرتا ہے الور اس وفت وہ زبان اور ول دونوں سے اللہ تعالی كی طرف مؤجد ہوتا ہے۔ اس سے معلوم ہواكہ انسان كى فطرت سليد كايى تقاضا ہے كه اس مثل ميں صرف انذ تعالى كى طرف رجوع كياجائے اور اى كے فضل دكرم ير اعتاد كياجائے اور ای کو اوئ و فجالور جائے پتاہ قرار دیا جائے۔ اور جب اس مل بی دی فریاد رس اور دیجیرے و بر مال میں مرف ای کو پکار نا علي-ائ ے مد طلب كرنى علي اور اى كى عبادت كرنى عليه "كين انسان برا باشكرا ب جب وہ مشكات كى بعنور ے لکل جاتا ہے تو سیمنا ہے کہ اس کو مادی اسباب کی وجہ ہے یہ نجات لی ہے اور پھردہ اخلاص اور رجوع الی اللہ کو ترک کر دیا اور این خواہشات کے تراشیدہ بنوں کی پرسٹش کرنے لگا ہے۔

اس آیت سے معلوم ہو آ ہے کہ جب افسان معیبت میں جٹلا ہو آ ہے تو وہ اللہ سے دعاکر آ ہے اور عاجزی سے کو کڑا آ ے اور اس کی طرف اخلاص سے متوجہ مو آے اور وعدہ کر آے کہ وہ آکھ و زندگی جس اللہ تعالی کا بعظیم فرمانمردار اور شکر کزار بن كروم كالكين جيم ي وه اس اور ملاحق كوپاليتا يهدوه عرايي مايته روش پر لوث جا آب-بد ظاہراس آیت میں مشرکین کو زجر و توج کی گئی ہے اور ان کے طریقہ کارکی قدمت کی گئی ہے الیکن بد صورت مال ان

مسلمانوں پر بھی منطبق ہوتی ہے جو عام طور پر اللہ تعالی کی عباوت اور اس کی یاد ہے عاقل رہتے ہیں ' لیکن جب ان پر اچا تھ کوئی آفت آٹو ٹتی ہے اور انہیں اس سے نجات کا کوئی راستہ نظر نہیں آٹ ٹو ہے انھیار اللہ کو یاد کرتے ہیں اور گز گڑا کر اس سے دعا کرتے ہیں اور لماذیں پڑھتے ہیں اور جب اللہ تعالی ان سے اس معیبت کو دور کردیتا ہے ' تو پھروہ فد آکو بھول جاتے ہیں اور اپنے میش و طرب اور امود احب میں مست اور ہے خود ہو جاتے ہیں۔ اللہ تعالی نے اس مضمون کو قرآن کریم میں متعدد جگہ میان قرابا

وَ إِذَا مَشَكُمُ الضُّرُ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدُعُونَ مِالْآ إِلِمَاهُ فَلَكَ النَّمُ كُمُمُ مِالَى الْبَرِّ آعُرَضُتُمُ وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا

بہود حمیں بھی کی طرف مجاہد دیاہے و تم (اس ہے) منہ
پیرلیتے ہواور انہان بوای اشکر اے۔
اور بہ انہان کو کوئی معیبت کینی ہے تو وہ اپنے رب کو
پار آئے اس کی طرف رجوع کرتے ہوئ کی جہاراللہ اپنی
طرف ہے اے کوئی لوت مطافر اوے تو وہ اس (معیبت) کو
بھول جاتا ہے جس کے لیے اس ہے پہلے وہ اللہ کو پکار تا تھا اور

اللہ کے لیے شریک قرار دیتا ہے انا کہ اوروں کو بھی اس کی

اور جب حمیں مندر میں کوئی آنت چیجتی ہے تواللہ کے

مواجن کی تم یہ ستش کرتے تھے وہ سب مم ہو جاتے ہیں 'بمر

(بنى اسرائيل: كا) وَإِذَا مَشَ الْاِنْسَانَ صُرَّدَ عَالَيّهُ مُونِبِهُ اللّهِوثُمُّ إِذَا تَعَوِّلُهُ يِعُمَّةُ مُنْهُ نَصِى مَا كَانَ يَدُعُوْ اللّهِ إِذَا تَعَوِّلُهُ يِعُمَّةً مُنْهُ نَصِى مَا كَانَ يَدُعُوْ اللّهِ عِنْ فَسُلُ وَحَمَّلَ لِللّهِ اللّهُ الْدَادُ الْمِي عَنْ سَيِيلِهِ (الزمر: ٨)

-دادحداد

الله تعالی کاارشادہے: آپ کئے کہ وی اس پر قاورہ کہ تم پر تہمارے اوپرے مذاب بھیج یا تہمارے پاؤں کے میج سے یا تہمارے پاؤں کے میچ سے یا تہمارے پاؤں کے میچ سے یا تہمارے باؤں کے میچ سے یا تہمارے بعض کی ازائی کا مزہ چکھادے۔ دیکھیے ایم کس طرح بار الرام کو بیان کر دہے ہیں تا کہ سے مجمد شکیں۔ (الااحام: ۱۵)

الله كى طرف مع وي جاند والعنداب كى اقسام

اس سے پہلے اللہ سبحانہ نے بیریان فرمایا تھا کہ مشرکین و فیرو بہ مضائب ہیں اظامی کے ساتھ اس کو پکارتے ہیں تو وہ ان کو ان مصائب اور آفات سے تجات دے ویتا ہے اور اس آیت ہیں یہ فرمایا ہے کہ وہ مختف طرفیقوں سے تم پر عذاب نازل کرنے پر قاور ہے ' ٹاکہ مشرکین میرت اور فیسحت حاصل کریں اور یہ بھی اللہ تعالی کی الوجیت اور تو دیو پر ایک نوع کی دلیل ہے ' آگہ وہ فیسحت حاصل کریں۔

الله تعالى نے فرمایا كه وہ اس پر تاور ب كه تم پر تهمار ب اور ب عذاب بھيد معرت اين عباس نے فرمایا اس ب مراو ب برے اور خالم حكام۔ مجاند نے كمانس سے مراو مولئاك آواز ب یا آئد هی ب یا چھوں كابرستا ہے۔ بعض مغمرین نے كمانس سے مراد مخت طوفانی بارشیں ہیں 'جسے معرت توح علیہ السلام كے ذمانہ ہيں موكی تھیں۔

الله تعالى نے فرمایا یا تمارے پاؤں کے بیچے سے عذاب بھیجے حضرت ابن عباس نے فرمایا اس سے مراد ہے برے اور

بدكار نوكراور فدام - كابد نے كمااس سے مراوب زلزله كور زين ي دهننے كاعذاب

بالله تعالى في فرايا حميس مخلف كروبول من تقتيم كرد عنور تمار عباض كو بعض كا الى كامزه چكماد عد كافد في الله المان على الله كامزه بكماد على الله كامزه بكماد على الله كامزه بكمان من كامذاب كمان الماداب المدومر على الله كامذاب المان كامذاب كمان كامذاب

كزك اور زازل ه

اور سے عذاب نازل ہونے کی مثل یہ ہے جسے معرت اوج علیہ السلام کی قوم پر طوفانی بارشیں ہو کی اجیے معرت اولا علیہ السلام کی قوم پر پھریدسے اجیمے ابریہ کے اتعیوں پر البسلوں نے ککریاں برسائیں اور جوعذاب باؤں کے بنچ سے ظاہر ہوا اس کی مثل ذائر لے بیں اور جسے قارون کو ذھن میں دھنسادیا کیا۔ یا بارش اور ضلوں کی پیدادار روک کر قولا کاعذاب نازل کیا میا۔

الم محمين اساميل عقاري متوفي ٢٥٧هـ روايت كرتي بين:

حفرت جابر برائز بیان کرتے میں کہ جب ہے آبت نازل ہوئی "قبل هو القادر علی ان بسعث علیہ کے عدابابس فوقکم "قر رسول اللہ بھیر نے قربایا میں جرے کی بناہ میں آتا ہوں اور جب ہے آبت نازل ہوئی "او مس تحت ارجلکم "قرآپ نے قربایا میں تیرے چرے کی بناہ میں آتا ہوں اور جب ہے آبت نازل ہوئی او بلبسکم مس تحت ارجلکم "قرآپ نے قربایا میں تیرے چرے کی بناہ میں آتا ہوں اور جب ہے آبت نازل ہوئی او بلبسکم شیعا و بذیر بعص کے باس بعض قور سول اللہ میں تیرے قربایا یہ زیادہ سمل اور زیادہ آسان ہے۔

(مح البخاري مح و تم الحديث ١٦٢٨ السن الكبري للنسائي و تم الحديث ١١١٦٥)

امت کے اختلاف اور اڑا ئیوں سے نجات کی دعاہے اللہ تعالی کا آپ کو منع فرمانا

اس آبت میں فرہلا ہے یا تہمیں مختف گروہوں میں تفتیع کردے۔ اس نے مراویہ ہے کہ رنگ و نسل اور زبان اور فلمان و اعتقادی نظریات میں اختلاف کی وجہ سے یہ امت مختف فرقوں میں بٹ جائے گی۔ نیز فرہلا اور تممارے بعض کو بعض کی اختلاف کی وجہ سے یہ امت یا تا موجہ ہے اور تال کرے گی۔ نیز فرہلا اور قبل کرے گی۔ نیز بر نے دعا کو اللہ ان تمام تم کے عذا ہوں سے محفوظ رکھے۔ او فہ تعالی نے اور اور اور اور اور ایج سے و بیئے جانے والے عذا ہوں سے حفاظت کے متعلق آپ کی وعاقبول کرلی اور امرت کے آپس کے تفرقہ اور اڑا کیوں سے حفاظت کی وعاقبول کرلی اور امرت کے آپس کے تفرقہ اور اڑا کیوں سے حفاظت کی وعا کرنے ہے تی کو منع کر دیا جمیساکہ حسب ذیل احلامات سے واضح ہوتا ہے۔

الم مسلم بن مجلع قصوى متوفى المعدروايت كرت بين

صفرت قوبان برہی بیان کرتے ہیں کہ وسول اللہ بھی نے فرالیا ہے شک اللہ تعالی نے تمام روسے ذین کو میرے لیے الیت ویا سویل نے اس کے قمام مشارق اور مغارب کو دیکے لیا اور یقیع بھتی ذین میرے لیے لیٹ کئی ہے میری امت کا ملک وہاں تک پہنچ کا اور جھے مریخ اور سفید (سونے قور چاندی کے) دو فرانے دیئے گئے ہیں اور بی نے اپنی امت کا کہ لیے بید سوال کیا کہ وہ ان کو عام تھا ہے نہ ہلاک کرے اور یہ کہ ان کے اور ان کاابیا چانف و شمن مسلط نہ کرے ہو ان کو یا کہ نے بید سوال کیا کہ وہ ان کو عام تھا ہے نہ ہلاک کرے اور یہ کہ ان کے اور ان کاابیا چانف و شمن مسلط نہ کرے ہو ان کو بالکل فتح کر دے۔ تب میرے دب نے فرایا اے محمال ہے کہ ان کو قط عام سے ہلاک نمی کروں گا کور یہ کہ میں ان پر ان کا خانف ایساد شمن مسلط نمیں امت کے لیے یہ کردیا ہے کہ میں ان کو قط عام سے ہلاک نمی کروں گا کور یہ کہ میں ان پر ان کا خانف ایساد شمن مسلط نمیں افراد میں گوران کا جاتھ کے ان کے اور چرحائی کرے میں کردے تب کی امت کے بعض افراد جمل گوران کے ان کی کردے تب کردیا ہے کہ میں ان کر فراد وہ تمام دوئے ذبیان سے ان کے اور چرحائی کرے میں کردے تب کی امت کے بعض افراد جمل گورانگ کرتے تب کی امت کے بعض افراد جمل گورانگ کرتے تب کی امت کے بعض افراد جمل گورانگ کرتے تب کردے تب کور کور میں گور کردے کر ہے گیا گور کردیا گارے کی امت کے بعض افراد کرتے گئی گورانگ کرتے گئی گور کردے کرتے گور کردیا گور کردی گورانگ کرتے گئی کردے کردی گور کردی گور کردی گور کردی گورانگ کرتے گئی گورانگ کرتے گور کردی گوردی گوردی

بنيان القر أن

بلدسوم

الم الوعيني همان عيني ترفري متوفي الاعدروايت كرتم ين:

حضرت خباب بن ارت جیز بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ میج نے ایک مرتبہ بت لی نماز پر حی محابہ نے وض کیا اللہ اللہ ہے ایک نماز پر حی ہے جو آپ عام طور پر نمیں پڑھے۔ آپ نے فرملا بال اللہ ہے رفیت اور اس ہے خوف کی نماز تحق میں ہے اللہ ہے منح کرویا۔ جی نے اللہ کی نماز تحق میں امت کو قط میں بلاک نہ کرنا تو اللہ نے جھے یہ مطاکر دیا کور میں نے سوال کیا کہ میری امت پر ان کے مالک کو میں امت کو جمال کرویا ہور میں بیش ہے دی اور اس کے اللہ کو مسلط نہ کرنا تو یہ جھے مطاکر دیا اور میں نے سوال کیا کہ میری امت کے بعض ابین سے جنگ نہ کریں تو جھے اس سے منا فرادیا۔ اہم ترفی نے کما یہ حدیث حسن میم خریب ہے۔

(سنن الترزي "ج٣"، قم الحديث ٢١٨٢ مطبوع داد الفكو "بيروت ١٣١٣ هـ)

الم الوجعفر محدين جرير طبري متوفى واسعد روايت كرت بين:

حسن میان کرتے ہیں کہ نمی چھ کے فرمایا میں نے اپنے رہ سے سوال کیاتو جھے تین چیزیں دی گئیں اور ایک چیز سے
منع کر دیا گیا میں سے اپنے رہ سے سوال کیا کہ میری امت پر ان کا نظاف و شمن چرسلط کیاجائے جو ان کو بالکل فتم کر دے اور
ان پر قبط نہ مسلط کیا جائے اور وہ مگرای پر متفل نہ ہوں۔ تو انڈہ تعالی نے جھے یہ مطاکر دیا اور میں نے یہ سوال کیا کہ وہ متفرق نہ
ہوں اور بعض 'بعض سے لڑائی نہ کریں تو بھے اس دعا ہے دوک دیا گیا۔

حسن بیان کرتے ہیں کہ جب یہ آجت نازل ہوئی "و بندین بھسکہ بہاس بھٹ "(النج) الانعام: ۲۵) قر سول الله عندی ہے اور نہ ہے اور نہ ہے اور اللہ عندی ہے اور نہ ان کو مختلف کر وہوں میں تعلیم کرے اور نہ بعض کو بعض کی لڑائی کا مزہ چکھائے۔ جیساکہ بوامرا کیل کو چکھایا تھاتو حضرت جرا کمل علیہ انسلام آپ کی طرف نازل ہوئے اور کھائے محل اڑھی آپ نے اپنے دب ہے چار چزوں کا موائل کیا ہے اللہ تعالی سے آپ کو دد چزیں عطا فرادی ہیں اور دو چزوں کے موائل ہے منع فراویا ہے۔ آپ کی امت پر نہ اور ہے عذاب آگا اور نہ ان کے جروں کے بوال ہے منع فراویا ہے۔ آپ کی امت پر نہ اور سے عذاب آگا اور نہ کے جروں کے بوال ہے منع فراویا ہے۔ آپ کی امت پر دونوں انسمیں ہراس امت کے لئے ان کے جروں کے بیان اور وہوں میں تقدیم فرائے من جس جس جس جس کے اپنے تی کی محقول ہوا ہوا را بن دو انسموں کے عذاب این اوکوں کے لیے ہوتے ہیں جو کاب کا اور ان کو ایک دونوں کے عذاب میں بھی کو آپ کی ذائر کی شدیق کرتے ہیں اور انہا و تھی اور ان کو ایک دونوں کے عذاب میں تقدیق کرتے ہیں۔ اس حدیث میں ہے کہ افتہ توائل نے نبی براہی کو آپ کی ذائر کی ہو اور اپ کی اندازی کی سے معنونا اور انہا و تھی اور ان کو ایک دونوں کے موائل نے نبی براہی کو آپ کی ذائر کی ہی اور ان کو ایک دونوں کے موائل نے نبی براہی کو آپ کی ذائر کی ہی اور ان کو ایک دونوں کے موائل نے نبی براہی کو آپ کی ذائر کی ہی اور ان کو ایک دونوں کے موائل نے نبی براہی کو آپ کی ذائر کی ہی اور ان کو ایک دونوں کے موائل نے نبی براہی کو آپ کی ذائر کی ہی سے کہ اور ان دو انسموں کے دونوں کو آپ کی موری کو آپ کی دونوں کے دونوں کی موری کو آپ کی دونوں کے موائل نے نہ کو تاب کو ایک کو تاب کو کر کے جو ان کو ایک دونوں کے موائل کے نبی براہی کو آپ کی دونوں کے دونوں کے دونوں کے دونوں کی دونوں کی دونوں کے دونوں کے دونوں کو تاب کو ایک کو تاب کو کر کے جان کو ایک کو دونوں کے دونوں کے دونوں کے دونوں کے دونوں کے دونوں کی دونوں کو دونوں کے دونوں کے دونوں کو کر ان کو دونوں کے دونوں کے دونوں کی دونوں کے دونوں کے دونوں کے دونوں کے دونوں کے دونوں کے دونوں کو کر کو دونوں کے دونوں کے دونوں کو دونوں کے دونوں کے دونوں کے دونوں کے دونوں کے دونوں کو دونوں کے دونوں کے دونوں کے دونوں کو دونوں کے دونوں کے دونوں کو دونوں کے دونوں کو دونوں کے دونوں

(جامع البيان ٤٦٠ م ٢٩٣-٢٩٣ مطبوع داو الفكو "بيروت)

ان تمام احلات اور روایات میں بیان کیا گیا ہے کہ اللہ تعالی نے آپ کو اس دعاہے منع قرادیا ہے تہیں ہے کہ اللہ تعالی کے آپ کو اس دعاہے منع قرادیا ہے تہیں ہے کہ اللہ تعالی کے اللہ تعالی کے دعا تبول نہیں ہے ایکن اس نے اپنے فضل و کرم ہے اپنے احباء کے متعلق یہ فرمایا ہے کہ وہ ان کا سوال رو نہیں فرمایا 'اور نبی جیجیز سب ہے بڑھ کر محبوب میں اور سب سے زیادہ مستجاب میں اور سب سے زیادہ مستجاب میں اس کے جو چیز اللہ تعالی کی حکمت کے خلاف تھی اللہ تقالی نے آپ کو اس کی دعا ما تھتے ہے منع فرمادیا 'آکہ آپ کی دعا کا استرد کرمالازم نہ آئے۔

الم ابوعبدالله محدين يزيد ابن ماجه متوفى ١٥٠ مد روايت كرتے بيل:

صفرت این محرد منی افظہ عظما بیان کرتے ہیں کہ نی جھیے شام کونت اور می کوان ظلفت سے دعا بالکنے کو ترک نہیں کرتے تھے۔ اے افلہ ایش تھے سے دنیا اور آثرت میں عافیت کا سوال کرتا ہوں۔ اے افلہ ایس تھے سے اپنے دین اور آپی دنیا ہی اور اپنے الل اور اپنے ملل میں مخو اور عافیت کا سوال کرتا ہوں۔ اے افلہ امیرے میوب پر پردو رکھ اور جن چڑوں سے بھے خوف سے ان سے باسون دکھ۔ اے افلہ ایکھ آگے اور چھے سے وائم میں اور ہائمی ہے اور یے اور یے سے دفاظت میں رکھ اور میں ہے کہ اور سے اور یے سے دفاظت میں رکھ اور میں ہے کی معیبت (دھنماویے) سے تیری پناو میں آتا ہوں۔

(سنن اعن ماجه "ج" المرتم الحريث: ٣٨٤١ مطبوعه داد الفكو "بيروت)

اس مدعث کی مند مجے ہے۔ یہ ہر تم کے عذاب سے ہاہ کے لیے بست جائع دعاہے اور نی چھیز اظمار موددت استثال امراور ہاری تعلیم کے لئے میں دعائم کے دشام یہ دعائم کے عذاب سے ہاہ کے مقدم الثان رسول اور اللہ کے مجوب ہو کراس قدرید دعا کرتے ہیں تو ہم جو دعاؤں کے والیے تی ذیادہ مختاج ہیں ایمیں کس قدرید دعا کرتی چاہیے۔
فقہ کالفوی اور اصطلاعی معنی

اس کے بعد اللہ تعالی نے قرالادیکھئے ہم کس طرح بار بار دلیاوں کو بیان کرتے ہین آنا کہ بے حقد کریں (مجھ سکیس) علامہ حسین بن محد راغب اصفرانی متونی جسمہ لکھتے ہیں:

حاضر علم سے عائب علم تک رسائی حاصل کرنے کو فقہ شکتے ہیں اور اصطلاح میں ایکام شرعیہ کے علم کو فقہ کہتے ہیں۔ (المغر داست میں ۱۳۸۳ء مطبوعہ المکتبہ المر تعلویہ الر تعلویہ المر تعلویہ المر تعلویہ المران ۱۳۹۳ء)

علاء شافعہ نے فقد کی یہ تعریف کی ہے اسکام شرعیہ عملیہ کاظم ہو والا کل تفصیلیہ سے ماصل ہو 'اور تھم شرعی کی تعریف یہ ہے کہ اللہ تعالی کا خطاب ہو مکلفین کے افعال سے متعلق ہو 'اور اسکام شرعیہ یہ ہیں۔ فرض 'واجب' سنت موکدہ ' سنت فیر موکدہ 'مستحب' مبلع' حرام ' محمدہ تحری 'امام ست' محمدہ شرکی ' خلاف اولی 'آنام ابو منیفہ رحمہ افتہ سے فقد کی یہ تعریف معقول

لقس كايد بجاناك كياج اس كے ليے ضرر كاباعث ب اور كياج اس كے ليے نفع كا باعث ب

ولا كل التمايدية إلى حظا الموجوب كرا بها الورشى تحريم كرا بها الوردا كل تفعيله يوس مثلا "افيدوا المسلوة "اور "لا تقربوا الرسا" اور ولا كل تفعيله بها الكام شريد كه حسول كى مثل به بد نماز كاام كياكيا ب المصلوة "اور "لا تقربوا الرسا" اور ولا كل تفعيله بها الكام كياكيا به وه واجب به الموجوب كرا بها كياكم الله تعالى من المراجوب كرا بها كياكم الله تعالى من المراجوب كرا بها الموجوب كراج بها المدانمة واجري مثل بها و ناس في كي كل بها يونك الله تعالى في قربا "لا تقربوا الرنا" اورجس جزي المنافرة واجب بها ووجوب كرا بها المراجوب الموجوب كرا بها المراجوب الموجوب كرا بها المراجوب المراجوب الموجوب الموجوب

الله تعالى كاارشادى، أوراك قوم فاس كوجمثلاً ملاكدى فق ب- اب كي كدي من تمارا ذهدوار نسي الله تعالى كاارشادى، اور الله كالمرادة مرادة من المرادة منارك المرادة منارك المرادة منارك المرادة منارك المرادة الم

اس آیت می فرایا ہے ملاکدین تق ہے۔ اس می کس جزا کو حق فرایا ہے اس می حسب زیل اقوال میں:

- ١٠ كفارة العداب كالكاركية ملاكداس كازول حقي
 - ۲- کفار نے اس قرآن کا اٹار کیا ملا تھے یہ قرآن حق ہے۔
- الله تعالى ف الوييت اور وحيد ير استدالل ك لي يو آيات نازل كي بي كنار ف ان داد كل كالنكار كيا مال كديد واد كل

طِيانِ القر أن

-013

اس کے بعد فربایا آپ کئے کہ میں تمبارا ذمہ دار نہیں ہوں اینی بگر تم ان دلائل ہے اعراض کرتے ہو اور حق کا انکار کرتے ہوتو میں تمبارا ذمہ دار نہیں بوں اینی نہ میں تم پر جرکرکے حبیب مومن بنا سکا بوں اور نہ تمبارے اعراض کرنے کی حمیس سزا دے سکتا ہوں۔ میں تو تم کو صرف آخرت کے عذاب ہے ڈرانے والا ہوں۔ اس نیج پر قرآن مجید میں اور بھی آیات

> تَحُنُ آعُلَمُ بِمَا يَعُولُونَ وَمَّا آمُتَ عَلَيْهِمُ بِحَنِّارِ مَذَ كِرُبِ الْقُرُانِ مَنْ بَنَعَافُ وَعِيْدِ

(ق: ۵۵)

فَدَ يَكُرُ النَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرُ النَّاتَ عَلَيْهِمُ بِمُكَنْيُولِي (الغاشية:١١٠١)

ہم فوب جانے ہیں جو یکھ وہ کمہ رہے ہیں اور آپ ان ے جرا موالے والے نہیں ہیں تو آپ قر آن ہے اس کو فیحت فرما کمی جو جرے ہزاپ کی وحیدے ڈر آبو۔ ایس آپ فیحت کرتے رہیں آپ تو فیحت می کرنے والے ہیں آپ ان کو جرے موائے والے نہیں ہیں۔

الله تعالى نے فرایا ہر فر کا ایک وقت مقرر ہے اس کا سخن یہ ہے کہ الله تعالی نے جو فردی ہے اس کا ایک وقت مقرر ہے
اور اس وقت بیں باتینا اس فر کا عمور ہوگا اور اس میں کوئی تقذیم آفیر نسی ہوگ اس سے یہ مراد ہو مکا ہے کہ الله تعالی نے ہو کفار کے لیے عذاب آفرت کی جو فہردی ہے اوہ عن اب کہ الله تعالی نے ہو کفار کے طاب آفرت کی جو فہردی ہے اوہ اس سے یہ مراد بھی ہو سکت ہے کہ الله تعالی نے ہو یہ فردی ہے کہ کفار کے ماتھ جگ می مطمان کا فرول پر قالب ہوں گے او بقر شک و شہر کاس فر کا ظمور ہوگا سے الله تعالی کی طرف سے کفار کے ماتھ جگ می مسلمان کا فرول پر قالب ہوں گے اور اس سے اس فر کا تصور ہوگا سے الله تعالی کی طرف سے کفار کے لیے و مید ہے کہ کہ وہ مرت کے بعد دوبارہ الینے کا انکار کرتے تھے اور دنیا ہی ہی ان کے لیے و مید ہے جساکہ ہدرو فیرہ ہی وہ کہ است سے دو چار ہو ہے اور مسلمانوں کو بھی ڈر ناچا ہے آگر انہوں نے قر آن مجبد کے اداکام کی ظاف ور ذی کی کو ہے قرآن مجبد کے انکار کے حراد اس ہے کو ایسانہ ہو کہ وہ مجل کے دو ہوارہ الی سے دو جا کی ۔

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي الْتِنَافَا عَرِضَ عَنْهُمُ

ادر الساع مناطب!) جب تم ان وگرل كود كيوج بادى أيترل كراهي انتيم كا احتد بنات بي قران سن اعراق كرد ،

حَتَّى يَخُونُوا فِي حَرِيْتِ عَيْرِهِ وَإِمَّا يُنْسِينَكُ الشَّيْطُنَ

می کر دہ کی اور بات می مشغل ہم جائیں ، اور اگر خیطان تمیں بھلا دسے لا

فَلَا تَقْعُلُ بَعْلَا اللِّاكْرَى مَعَ الْقُومِ الطّلِيدِينَ ® وَمَاعَلَى

یاد آنے کے بعد الم کرنے والے واکل کے مائن نہ بیٹو 0 الد پر ہیڑ گاروں سے

الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَا بِهِهُ مِّنْ شَيْءٍ وَلِكِنَ ذِكُرِي

ان رحالوں) کے امال پر کوئی بازیری بنیں ہوئی ، ابتر ان کر تعبیست کرتے دیں

جيان القر أن

0 2 25

الله تعالى كاارشاد ب: اور (اے كاظب) بب تم ان اوكوں كو ديكمو جو اعارى آيوں كو (طعن و تشنيج كا) مشغله بناتے اين تو ان سے اعراض كرو متى كر وہ كى اور بات من مشغول ہو جائيں اور اگر شيطان حميں بھلا وے تو ياد آخے كے بعد ظلم كرنے والے اوكوں كے ماتھ نہ جيمون (الانعام: ١٨٥)
دين ميں تفرقه و النے كى قد مت

الم مبدائر من بن محدین اور نس رازی بن انی ماتم متوفی عہد روایت کرتے ہیں: معرت ابن عباس رسی اللہ متمامیان کرتے ہیں کہ اس متم کی آغوں میں اللہ نے مسلمانوں کو اپی جماعت کے ساتھ رہے

کا تھم دیا ہے اور ان کو آپس میں اختلاف کرنے اور تفرقہ سے منع قربایا ہے اور یہ خبردی ہے کہ اس سے پہلے کی قومی اپنے دین میں اختلاف کرنے اور مناظرے کرنے کی دجہ سے ہلاک اور جاوی و کشم ۔

سعید بن جبید کے متعلق بازل ہوئی ہے تھنے ہی تاہوریہ آیت مشرکین اور الل ایداء کے متعلق بازل ہوئی ہے۔
مدی نے بیان کیا ہے کہ مشرکین جب مسلمانوں کے ساتھ بیٹنے قونی جیرے اور قرآن مجید کے متعلق برگوئی کرتے اور ان
کیمان اڑائے۔ تب انڈ تعالی نے یہ محم دیا کہ جب تک وہ کمی اور موضوع پریات نہ کریں ان کے پاس نہ جیمو۔

اندان اڑائے۔ تب انڈ تعالی نے یہ محم دیا کہ جب تک وہ کمی اور موضوع پریات نہ کریں ان کے پاس نہ جیمو۔

د تف ادار استان کے باس نے معملان میں مناز میں میں میں اور موضوع پریات نہ کریں ان کے پاس نہ جیمو۔

(تغییرالم این الی عاتم "ج ۱۲ می ۱۳۱۷ مطبوعه مکتید نزار مصلی "افریاش ایراس

جيةن القر ان

اس سے بیل آعت بیں سے فرمایا تھا کہ ای رچھیے محمول اور مقدوں کے اعمال کے وحد دار عافظ اور تکسیان نہیں ہیں۔ آپ کاکام مرف تیلن کرتا ہے اور وقت آنے پر انہیں اپن محذیب کا انجام خود معلوم ہو جائے گااور اس آیت میں یہ بتایا ہے کہ جب بے نوگ دین اسلام ' رسول الله علید اور قرآن جیر پر کھت چین کریں تو مسلمانوں پر واجب ہے کہ ان کی مجلس میں نہ بنيس اس آيت من عام مسلمانون سے خطاب كياكيا ہے۔

ای طرح جب بدختی اور مراه فرقے اپنی بدعت کی ترویج لور اشاعت کر رہے ہوں اور اہل ہنت و جماعت کار د کر رہے اول اوان کی مجل سے بھی احراز کرنالازم ہے اور کراہ لوگوں کے ساتھ الفت اور محبت کے ساتھ ملتا جانا ربط منبط برحلتا بھی جائز نمیں ہے اور عام مسلمانوں کے لیے ان مراہ فرقوں کالزیم متاہمی جائز نہیں ہے۔ کو تک وہ یہ کتابیں پڑھ کر شکوک، شہات میں جملا ہوں کے البتراالی علم کوان کی کتابیں پر منی جائیں اور ان کے شکوک و شہات کارد کرنا جاہیے۔ شیطان کے کیے تی جھے کو نسیان میں جلا کرنا ممکن شیں

جياك ہم نے پہلے ميان كيا ہے كه اس آيت بي عام مسلمانوں سے خطاب ہے اور ني بينيد اس آيت كے خاطب نسيس ہیں اور اس پر قوی قریت ہے کہ اس آیت کے آخریں فرمایا ہے آگر شیطان حمیس بملادے تو یاد آنے کے بعد ظلم کرنے والے وكول ك ماته نه بينواوريد بلت شرعاً كال ب ك شيطان كاني مايي بر تسلط مواور وه آب كوكولى بات بعلاو ، الله تعالى

شيطان سے فرا آے:

ب لك ميرے خاص بندوں ي تھے ظب سي يو كا-البت ج تحری میروی کرے محرا ہوں میں ہے۔

إِنَّ وَبَهَا وَيُ لَيْسَ لَكُ عَلَيْهِمْ سُلُطَانُ إِلَّا مَن البُعَكَامِلَ الْغُرويْلَ (الحجر:٣٢) اور شیطان نے خود بھی اعتراف کیا کہ اللہ کے خاص بندوں پر اس کاکوئی زور نہیں ہیل سکے گا

شیطان نے کمالی تیری عزت کی حتم ایس ان سب کو ضرور

قَالَ فَيهِ مِرْتِكَ لَأُغُورِيُّهُمْ أَحْمَعِيْنَ 0 إِلَّا عِبَادَ كَثْرِمْهُمُ الْمُعْلَمِينَ (ص:۸۲۰۸۲)

بكاؤل كالموان كروان يس عرع فاص بند ي

اور رسول الله بالل سے برم كركون الله كا خاص بدو ب يس معلوم بواك رسول الله بالله ير شيطان كاكوكى زور اور غلبہ یا تصرف اور تسلط شیں ہو سکک اس لیے میر ممکن شیع ہے کہ شیطان ہی جھیج کو بھلادے "اس لیے میر ضروری ہے کہ اس آیت می خطاب سے مراد عام مسلمان ہو الکین مید ابوالاعلی مودودی متوفی ۱۹۹ سد فراس کے بریکس ترجمہ کیا ہے اور لکھتے ہیں: اوراے مماجب تم دیکھو کہ لوگ ہاری آیات ریختہ بینیاں کردہے ہیں قوان کے پاس سے ہٹ جاؤیماں تک کہ وہ اس

منتکو کو چمو ژکردو سری باتوں میں لگ جا کیں 'اور اگر مجمی شیطان جہیں بھلاے میں ڈال دے تو جس وقت جہیں اس تغطی کا احساس ہو جائے اس کے بعد پرایسے کالم نوکوں کے پاس نہ جیمو۔ (تنسیم القرآن جام میں ملی الدج معاملان) مفتى المرشفية ديوبندى متونى ١٩٠١مه لكسع ين

اور آگر خطاب نی کریم بڑھا کو ہے تو ہمال سے سوال بدا ہو آے کہ آگر افتد کے رسول و نی پر بھی بھول اور نسیان کا اثر ہو جلا كرے أو ان كى تعليمات ير كيے اعلى و اطمينان ره سكتا ہے؟ جواب يد ب كد اجياء عليم السام كو بھى كى خاص عكت و مصلحت کے تحت بھول تو ہو سکتی ہے جمرائلہ تعالی کی طرف سے قور اان کو سیبہ بذریعہ دی ہو جاتی ہے جس سے وہ بھول پر قائم مس رہے۔اس کے بلا خران کی تعلیمات بھول اور نسیان کے شبہ سے پاک مو جاتی ہیں۔

(معارف القرآن ع م مع ١١٥١-١١ م اطبع جديد ١١١١١ه)

في امن احس اصلاى لكعة بي:

یمل خطاب آگرچہ واحد کے میغہ سے ہے 'جس کا عالب قرینہ یکی ہے کہ خطاب آتخفرت سے ہو لیکن یہ خطاب انخضرت کے واسلے سے تمام مسلمانوں سے ہے۔(قدر قرآن 'ج۳'ص بے استلبور فاران فاؤیڈیشن'۹۰۱۱ھ)

المرے نزدیک اس آیت میں نی بھی کو خطاب نیں ہے الکہ عام مسلمانوں کو خطاب ہے اور اس کا غالب قرید ہہ ہے کہ اس آیت کے آخر میں ہے اگر شیطان خمیس بھلا دے۔ اللہ۔ اور یہ کال ہے کہ شیطان نی جیبر کے در میں وسور اندازی کرے اور کوئی تھی شری آپ کو بھلا دے۔ بعض مضرین نے یہ لکھا ہے کہ اس آیت میں آپ کو خطاب ہے نیکن اس سے مراد آپ کی امت ہے جیساکہ اس آیت میں ہے:

اگر (بالغرض) آپ نے (بھی) شرک کیاؤ آپ کے مب

لَوْسَ أَشْرَكُتَ لَبَحْبَطَنَّ عَمَلُكَدُ (الرموه)

عل منالع بوجائي ك_

قر آن اور سنت کی روشنی میں انبیاء علیهم السلام کانسیان انبیاء علیم السلام کے نسیان میں بھی کلام کیا کیا ہے۔ شخ ابو جعفر جو حسن اللوی المتونی ۱۲۰۰۰ء لکھتے ہیں۔

جہائی نے اس آیت سے یہ استدال کیا ہے کہ انہاء علیم السلام پر سمو اور نسیان جائز ہے۔ اس کے برخلاف رافضی یہ کتے ہیں کہ انبیاء علیم السلام اللہ تعالی کی طرف ہے جن امور کو جن امور کو جن امور کو انبیاء علیم السلام اللہ تعالی کی طرف سے نواکرتے ہیں ان می سمو کور نسیان جائز نسی ہے اور جن امور کو وہ اللہ تعالی کی طرف سے اور ان پر سمو اور نسیان جائز نسی ہوگا؟ مال تکہ وہ سوتے ہیں اور بار سے اوا نسی کرتے اور ان پر سمو اور نسیان جائز ہے۔ اور ان پر سمو اور نسیان کیے جائز نہیں ہوگا؟ مال تکہ وہ سوتے ہیں اور بار مور اور تیار اور تیار اور تیار اور تیار ہوگا؟ مال تکہ وہ سوتے ہیں اور بار مور تی اور ان پر سے اور ان پر سے اور ان پر سمو ہے اور وہ اپنے بست سے تعرفات میں بھول جاتے ہیں۔

(النهان عمام ١٦٥-١٦٥ مطيور واراحياء الزات العربي ايروت)

جس طمع بشری نقاضے سے اور کئی جسمانی موار ض انہاء علیم السلام پر طاری ہوتے ہیں 'ان پرنسیان بھی طاری ہو تا ہے۔ معنرت آدم علیہ السلام کے متعلق قرآن مجید میں ہے:

مودہ بھول مے اور ہم نے ان کاکوئی عزم نمیں پایا۔

فَتَسِنَى وَلَمْ سَجِدُلُهُ عَرِّمًا (طه:١٥)

اور معرت موی علید السلام فے معرت معرعلید السلام سے فرالیا ، لائٹو اجد ڈیٹی بیک انکیسیٹ (الکھف، ۲۳)

وَّا خِيدَ نِنْ بِيسَانَ سِيتَ (الحصف: ٣٦) ميرے بولنے يور جي باعد مواقد دنہ كريں۔ اور مارے ني ميدنا فير جي سے متعلق الله تعلل كاار شاوي:

اور جب آپ بھول جا کیں تو (یاد آتے ی) اپنے رب کا ذکر کیجئے۔۔۔۔۔ وَادْ كُرْزُبْكُ الدَّاسِينَ (الكهد:٣٢)

الم ابوعيل فيمن عيني ترفدي متوفى ١٥ الدروايت كرتم إن

حضرت ابو ہریرہ برائی بران کرتے ہیں کہ رسول اللہ جین نے فرملا حضرت آدم بھول محے سواکی اولاد بھی بھول مئی۔ (سنن الترزی کو میں اللہ میں ۱۳۰۸، مطبوعہ داو الفکو میردت)

الم الحدين احاصل بخاري متوفى ١٥١ مدروايت كرية من

حطرت عبدالله بن مسعود جرین بان كرتے مل ك نى منتق نے نماز يوسلى اس بى آب نے كر زيادتى يا كى كى - جب

غيان ائقر ان

آپ نے سام بھیراتو آپ سے کماگیا نمازی کوئی نیا تھم آیا ہے؟ آپ نے پوچھاکیوں؟ محلبہ نے کما آپ نے اس اس طرح نماز پر حائی ہے ' آپ نے پیر موڑے اور قبلہ کی طرف منہ کیا دو سجدے کیے ' پھر سلام پھیردیا۔ پھر ہاری طرف منہ کرکے فرایا آگر نمازیس کوئی نیا تھم آ آتا تو میں تم کو خبردیا' لیکن میں محض تساری طرح بھر بوں میں اس طرح بھوٹ ہوں جس طرح تم بھولئے ہو۔ پس جب میں بھول جائوں تو جھے یا دولایا کرواور جب تم میں سے کسی کو نمازی شک ہو تو وہ مجے امریر خور کرے 'نماز پوری کرے ' پھر اسموسکے اور مجدے کر لے۔

(صحح البحاري عن رقم الديث المسمح مسلم مسلم مسلم " مسليد " ٨٥ (١٠٥٠) ١٣٥١ منن ابوداؤد " جما" رقم الحديث ١٩٣٠ منن التسائل " جم" وقم الحديث ١٣٣٧ منن ابن بايد " جما" وقم الحديث ١٣١١)

حضرت عائشہ رمنی اللہ عنها بیان کرتی ہیں کہ رسول اللہ میں ہے رات کے وقت ایک مخص کو ایک سورت پڑھتے ہوئے سنا' نو آپ نے فرمایا اللہ اس مخض پر رحم کرے اس نے مجھے فلاں فلان آیت یاد ولا دی جس کو بیں فلال فلال سورت سے بھلاد یا کمیا تھا۔

ا منح البلاري عنه و تم الديث ١٥٠٦ من مند احد المنح مسلم معلاة المسافرين ٢٢٣ ١٨٠٤ ١٨٠١ من الدواؤد على و قم الديث ١٣٣١ منن كبرى النسائل عن وقم الديث ٢٥٠٦ مند احد الجمه وقم الديث ٢٣٣٨٩ مند احد الجمه الديث ١٣٣١٦ منع واوالديث ا

نی ہوں کے سمواور نسیان کے متعلق فقهاء اور محدثین کاموقف

علامه ابوعبدالله محرین احمد انساری اکلی قرطبی متوفی ۳۲۸ هه کلیسته بین: اکر نزگها سرکه حسب انهاء ملیهم انسلام رینسان طاری دو آیسته مواند

ائد نے کہا ہے کہ جب انبیاء ملیم السلام پر نسیان طاری ہو تاہے تو اللہ تعالی ان کو اس نسیان پر برقرار نہیں رکھا کا لکہ ان کو اس پر سند فرادیا ہے۔ البتہ اس جس انتقاف ہے کہ ان کو علی الغور سند فراتا ہے یا تاخیرے۔ قاضی ابو بکراور اکثر علاء اول الذکر کے قائل جی اور ابو المعالی ٹائی الذکر کے قائل جی سے علاء کی ایک جماحت نے افعال بلاغیہ اور عبادات شرعیہ جس سمو کو منع کیا ہے اور اتو ال جلیفیہ جس سمو انقاقا ممنوع ہے اور قرقہ باطنیہ نے یہ کما ہے کہ نبی علیہ السلام پر سمواور نسیان جائز نہیں ہے۔ آپ قصد اور عمد انسیان کی صورت طاری کرتے جس " آگ کہ احکام شرعیہ مسئون او جائیں ' ایک بہت بڑے الم ابوالملفر الاسلامی کی تکھا ہے ' لیکن بیہ نظریہ صحیح نہیں ہے۔

(الجامع لا حكام التر آن '7 × من ١٥ مطبور داد الفكو ' بيروت ١٥١٥ هـ)

علامه سيد محمود آلوي حنى متوفى ١٥٠ المد اللعظ ين

اس میں کمی مسلمان کو تک نسی ہے کہ شیطان کا نی جین کے دل میں دسوے ڈال کر سمواور نسیان پیدا کرنا کال ہے۔
قاضی عیاض نے کہا ہے ' بلاشبہ حق بد ہے کہ انبیاہ علیم السلام کی کمی بھی خبر می غلطی واقع ہونا محل ہے۔ خواہ سموا یا عمرا'
شدر سی میں یا بیاری میں ' فوقی میں یا نخصب میں ' نی جین کی میرت' آپ کے اقوال اور آپ کے افسال 'جن کے ججوعہ ہم موافق و کالف و مومن اور منکر واقف ہے 'ان سے یہ ظاہر ہو آپ کہ آپ نے بھی کوئی غلط بات نہیں فرمائی ' نہ آپ کو بھی کمی اس بات یا کسی کل بھی جس وہم ہوا۔ اگر ایسا ہوا تو یہ منقول ہو تا جیسا کہ نماز میں آپ کا سمو واقع ہونا منقول ہے۔ انہتہ و نیاوی معاملات میں بعض مرتبہ آپ نے اپنی رائے سے رجوع فرمایا جسے کمجوروں میں ہوند لگانے کا واقعہ ہونا منقول ہے۔ انہتہ و نیاوی معاملات میں بعض مرتبہ آپ نے اپنی رائے سے رجوع فرمایا جسے کمجوروں میں ہوند لگانے کا واقعہ ہونا منقول ہے۔ انہتہ و نیاوی معاملات

(روح المعالي ٤٦٠ م ١٨٣ مطبوعه دار احياء التراث العربي ابيروت)

ئی چین کے سمواور نسیان کی بحث میں مدعث می پیٹر نظرر بنی چاہیے: المم بالك بن انس المبحى متونى ١٩١١ مد داعت كرت مين:

انسي يه حديث ينجي ب كدرسول الله وجيد فرلاب تك يس بمول مول مول المارا بالأمون الكركيكم كورست كول (موطالهم بالك) رقم الحديث: ٢٢٥ مطبوع هاو الفكو "جوت)

حافظ ابو عمرو يوسف بن عبدالله ابن عبدالبراكي متوفى ١٠٠٠ مداس كي شرح من لكيمة إلى:

آپ کی مرادیہ ہے کہ بی امت کے لیے طرفتہ معین کروں کہ وہ سمو کی صورت بی کس طرح عمل کریں اور میرے لعل كي افتذاء كرين... (الاستذكار "ج مواص عدم مطبوعه مؤسسة الرساله " يدوت معامله)

نيز مانظ ابن عبد البراكلي لكيمة بين

الم مالک نے از ابن شاب 'از سعید بن المسیب روایت کیاہے کہ جب رسول اللہ میجیج ایک شب خیبرے واپس ہو گ جب رات كا أخرى حصد مواتو آب في ايك جكد قيام فريا اور حعرت بال سے كماتم مع كك مارا برون اور رسول الله عليها اور آپ کے بعمل سو گئے۔جب تک معزت بلال کی تقدیم من آقا وہ پروو سے دہد محرانوں نے اپنی سواری سے لیک لگا ل وواس وقت جرك مقاتل تھے۔ پران كى آئىموں پر نيزو غالب آئى وسول اللہ منتج بيدار ہوئے نه معرت بلال نه قافله كا اور کوئی فرد حی کے ان پر دھوپ اسمی میررسول اللہ میں چیز محبرا مے۔ پس بلال نے کمایارسول اللہ امیرے نفس کو بھی ای ذات نے بڑالیا تھاجی نے آپ کے نفس کو پکڑلیا تھا۔ تب رسول اللہ عظیم نے فرمایا سال سے کوچ کرو او انہوں نے اپنی سواریاں الماكي اور وہال سے مجمد دور جلے۔ پررسول الله منتج نے حضرت بلال كو نمازكى اقامت كينے كا تكم ديا ، پر آب نے ان كو مبح كى نماز پر مائل ، پر نماز اواكرنے كے بعد آپ نے فرمايا جو مخص نماز كو بھول جائے توجب اے ياد آئے دہ نماز پر معے "كيونكد الله تارك و تعالى ي فرمايا ب ك محصياد كرنے كے لي نماز ير حو- (موطالم مالك د تم الدعدد ٢٥)

اس مدعث سے سے شاہت ہو آئے کہ مجمی مول اللہ عظیم عام آدمیوں کی طرح سوجاتے تے اور ایسا بست کم ہو آ تھا تاكد الله نعالى كى حكمت يورى بواور آپ كى امت كے ليے ايك الى سنت قائم بوجائے جو آپ كے بعد بالى رہے اور اس پر رسول الله عليم كابير ارشاد والالت كرياب على البيت بموتنا مول يا بعلاديا جانا مول كي كم من كي كام كوسنت كرون اور علاء بن خلب كى مديث على ب كر في عظيم في المراد والله على بيدار كرنا جابتات بيدار كرديا الكن الله تعالى تيد اراده كياك تمهارے بعد والوں کے لیے سے سلت ہو جائے اور آپ کے سونے کا بوطین فطری اور معروف طریقہ تمااور آپ سے پہلے نمیوں كالبحى وويه ہے كه جس كو آپ نے خود ميان فرمايا كه بے شك ميري آتكسيں سوتی بيں اور ميراول نميں سو يا اپ نے اپ اس معمول كومطلقا بيان فرمايا باورتمي وتت كمات متد تهي فرمايا-

ا یک اور حدیث میں ہے ہم گروہ انبیاء کی آتھیں سوتی ہیں اور ادارے ول نمیں سوتے۔ اس حدیث ہیں آپ نے یہ خروی ہے کہ تمام جوں کا یی معمول ہے اور اس کی تائید اس سے وہ آل ہے کہ آپ نے قربایا مف میں ال کر كور يوكونك من تم كواب يس بشت يمي ويكما مون وسول الله ملى الله عليه و آله وسلم كى جبلت و فطرت اور آپ کی عادت ہے۔ باتی رہا سفر میں نماز کے وقت آپ کا سوتے ہوئے رہ جانا تو یہ آپ کی عادت کے خلاف تما' آ کے آپ کی امت کے لیے قضاء نماز کی سنت کا عمل قائم ہو اور آپ امت کو یہ تعلیم دیں کہ جو محض نماز کے وقت سو پارہا' حی کہ نماز کاوقت فکل کیا' اس پر کیا کرناواجب ہے اور وہ کس طرح کرے گااور اس وقت میں آپ کی نیند کو اللہ تعالیٰ

تے آپ کی امت کے لیے تعلیم کا سب بنا دیا۔

(التميد على ٢٠١٠ - ٣٨٥ ملتقفا مطبوعه مكتبه قدوسيه الاور الموم ١١٥٥)

نيز مانظ ابن عبد البراكي متوفى مههمد لكمة بن:

(التميد ع ٢٠٥٠م ١٠٥٠م مغما مطبور كتيد تدوسيد كابور اس ١٠٠٠م

نيز حافظ ابن عبد البرماكي متونى معهمه لكين بن

اہم مالک از ابن شماب از عبد الرحمن اعربے از عبد اللہ بن بعینہ روایت کرتے ہیں کہ دسول اللہ مجھیج نے دور کعت نماز رد صائل ' نیمر آپ بیٹے بغیر کھڑے ہو گئے الوگ بھی آپ کے ماتھ کھڑے ہو گئے۔ جب آپ نے پوری نماز پڑھ لی قوجم آپ کے ملام پھیرنے کے منتظر تھے ' آپ نے اللہ اکبر کمالور بیٹھ کر ملام سے پہلے وہ بجدے کیے ' ٹیمر ملام پھیردیا۔

(موطالهم الك او قم الحديث:٢١٨ المطبوعة داوالفكو)

اس مدیث سے یہ معلوم ہواکہ کلوق یں سے کوئی فض بھی وہم اور نسیان سے محفوظ نس ہے۔ اور نبی بھیج پر ہو نسیان طاری ہو آئے۔ اور نبی بھیج پر ہو نسیان طاری ہو آئے۔ وہ است کے نسیان کی طرح نسی ہو آئے کیا تم نسی دیکھتے کہ نبی بھیج سے او شاد فرایا ہے ہے تنگ میں بھونا ہوں یا بھلادیا جا آبادوں آنا کہ (کوئی کام) سنت ہو جائے۔

(التحميد "ج ١٠٠٥م ١٨١٠-١٨١ معلوي كتبد لدوسيد كامور مه ١٨٠٠)

فاس اور بدعقیدہ سے اجتناب کے متعلق قرآن 'سنت اور آثارے تصریحات

الله عزوجل أرشاد فرما مايية

اور ظالموں ہے ممل جول ندر کھو مور ند حمیس دوزخ کی آگ چھوئے گی۔ وَلَا تُرْكُدُوا إِلَى اللَّهِ يُلَّ ظَلَمُوا فَسَمَّنَا كُمُ

الم محدين اسائيل بخاري متوفي ٢٥١هـ روايت كرتي بن.

حضرت عائشہ رمنی اللہ عضابیان كرتی ميں كه رسوال اللہ عليد فرما جب تم ان لوكول كود كموجو آيات متابات كى

مروی کرتے میں تو سے وی لوگ میں جن کے متعلق اللہ تعالی نے ارشاد فرمایا ہے مان سے یر بیز کرد۔

(منج البغاري عن مرقم المديث: ٢٥٥٠ من الإداؤد عن أرقم المدينة ٢٥٩٨ من آلب السنر عن أرقم المديث ٥)

الم ابر بكر عموين الي عاصم الشبيلني التوفي ١٨٨ه و دايت كرتي بيل:

صفرت محربن الخطاب برینی بیان کرتے میں کہ رسول اللہ جیج نے صفرت عائشہ رمنی اللہ عنماے فرمایا اے عائشہ ابنو لوگ اپنے دین سے الگ ہوگئے وہ شیعہ (ایک فرقہ) تصدید لوگ پر حتی اور اپنی خواہش کے ہیرہ کار تھے اور اس است کے گراہ موگ تھے۔ اے عائشہ ابد حتی اور خواہش کے ہیرہ کار کے سوا ہرگزگار کی تو یہ ہے ان کی کوئی تو بہ نمیں ہے۔ میں ان سے بیزار موں اور یہ جمعہ سے بری ہیں۔

(كتاب البير "ج" وتم الديث من المعيم الهيم "م" في الديث عن " من الديث المن من ا الم ابوالقاسم سليمان بن احمر الغبر اني المتوفي واست و وايت كرتے بن:

حفرت معاذین جبل جائز، بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ عظیم نے فر کیا جو مخص پر حتی کی تعظیم کرنے کے لیے کمیا اس نے اسلام کے متعدم کرنے پر اعازت کی۔

(التيم الكبير ج-٢٠ رقم الحريث ١٨٨ من ٢٥ ملية الادبياء ج٢٠ م ٢٩١ س كي سدي ابتيه ضعيف ٢٠)

الم احدين منبل متوفى الاجهد روايت كرية بين:

حضرت ابو برزہ اسلمی چھٹے۔ بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ مٹاہیر نے فرملاجن چیزں کا بجھے تم پر فوف ہے 'وہ تمہارے چیزں اور شرم کاہوں کی مگراہ کن خوارشیں ہیں اور فتنوں ہے مگراہ کرنے والی چیزیں ہیں۔

اسندامد "ج" من مستوالاولياء "ج" من وح التاب النز و تم الديث ال

الم مسلم بن تجان قشيدى متونى الم مسلم بن تجان قشيدى متونى الم

حضرت آبو ہریرہ جھیز بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ سی بھیر نے فربلا آخر زمانہ میں وجل اور کذاب ہوں گے۔وہ نم کو ایس باغیں سنا کیں کے جو تم نے سی ہوں گی نہ تمہارے باپ دادائے 'تم الناسے دور رہنا'وہ تم سے دور رہیں 'کمیں وہ تم کو گراہ نہ کر دیں 'کمیں وہ تم کو فت میں نہ ڈال دیں۔

امقدمه منج مشلم 'باب ۳ مدیث ۴ مند احر انج ۸ ارقم الحدیث: ۱۸۵۰ م۵۵۸ طبع دارالدیث کابرد اسند احد اج ۱۴ ص ۱۳۹۰ طبع تذیم)

الم ابو براحمد بن حسین بیستی متونی ۵۸ مید روایت کرتے ہیں کہ حضرت عمر جریش نے رکوع کے بعد دعاہ قنوت پر حمی اس میں یہ الفاظ تھے جو تیری نافر مانی کرے ایم اس سے قطع تعلق کرتے ہیں اور اس کو ترک کرتے ہیں۔

اسنن كبري لليعتي "ج ٢ م ١٠١١ مطبومه نخرالسته المنان)

الم ابوداؤر سليمان بن اشعث متوفى ١٥٥ جمد روايت كرتے بين:

حضرت حبداللہ بن محرر متی اللہ مختمامیان کرتے ہیں کہ نبی ہی ہی نے فرمایا منکرین نقد ہر اس امت کے بحوس ہیں۔ اگر وہ نار ہو جا کمیں تو ان کی عمیادت نہ کرد اور آگر وہ حرجا کمی تو ان کے جنازہ پر نہ جاؤ۔

(سنن ابوداؤو 'ج ۳ مرقم الحديث ۴۶۹۱ مطبوعه دار الكتب العلميه 'بيرد ت)

ر منین بن عطاء بیان کرتے ہیں کہ اللہ عزد جل نے حجرت یوشع بن نون کی طرف دی کی میں تماری قوم میں ہے ایک

لاکھ چاہیں ہزار نیکوکاروں کو اور ماٹھ ہزار برکاروں کو بلاک کرنے والا ہوں احضرت ہوشع نے عرض کیا اے میرے دب اقد برکاروں کو تو بلاک قرمائے گا؟ نیکوکاروں کو کیوں بلاک قرمائے گا؟ اللہ تعالی نے قرمایا وہ بدکاروں کے پاس جاتے تھے ان کے ساتھ کھاتے اور پیتے تھے اور اللہ تعالی کے خضب کی دجہ ہے ان پر تحضیتاک شمیں ہوتے تھے۔

(شعب الاعان ع عور قم الحديث: ArtA مطبوعه والاكتب العلميه عبروت "المسالط)

الم عبدالله بن عبدالرجن داري سرفتدي متوفي ٥٥ مد روايت كرتے يون:

ایوب بیان کرتے ہیں کہ ابوظایہ نے کما کہ اہل احواء (بدعتی) کے ساتھ بیٹھونہ ان سے بحث کرد کیونکہ میں اس سے بے خوف نہیں ہوں کہ وہ تم کو اپنی کمرای میں ڈیو دیں گے کیا جس دین کو تم پہچاہتے ہواس میں شبسات ڈالل دیں گے۔

(سنن الداري ج ا كر قم الحديث ١٣٩١)

نافع بیان کرتے ہیں کہ حضرت ابن عررضی اللہ عنما کے پاس آیک عنص آیا اور کئنے لگا کہ فااں مخفص آپ کو سلام کمتنا ہے۔ حضرت ابن عمرنے فرمایا مجھے یہ خبر کپنجی ہے کہ اس نے دین میں نئی پاتیں نکال ہیں (بدعتی ہو کیا ہے) اگر وہ بدعتی ہو کیا ہے تو اس کو میراسلام نہ کمنا۔ (سنن الداری' جا' رقم الحدیث: ۱۳۹۳ مطبور دار الکتاب العربی' بیروت ' ۲۰۲۵ء)

امیاء بن عبید بیان کرتے ہیں کہ بد حتیوں جس ہے وہ فخص ابن سیرین کے پاس سے اور کھااہے ابوبکرا ہم آپ کو ایک صدیث سنا تیں۔ انہوں نے کھا نہیں۔ انہوں نے کھا پھر ہم آپ کے سامنے کلب افقہ سے ایک آبت پڑھیں ڈانہوں نے کھا نہیں۔ تم یہاں سے اٹھ کر چلے جاؤا ور نہ جس اٹھ جاؤں کا سو وہ دونوں چلے گئے۔ کسی نے کھااے ابو بکمااگر وہ آپ کو قرآن مجید کی ایک آبت سناویے تو کیا حرج تھا؟ انہوں نے کھا جھے یہ فوف تھاکہ وہ جبرے سامنے ایک آبت پڑھیں گے انجراس میں سعنوی تحریف کریں گے تکمیں ان کی بیان کروہ باطل آویل جبرے دل جس جیٹھ نہ جائے۔

إستن الداري عجار قم المديث ١٠٩٠ مطبوعه جروت)

ملام بن ابی مطبع بیان کرتے ہیں کہ ایک برعتی نے ابوب سے کما ہیں آپ سے ایک بات کے متعلق سوال کر آبوں۔ وہ اٹھ کر چل دیئے اور کما ہیں آرحی بات کا بھی جواب نمیں دول گا۔ اسن الداری 'جا' رقم الحدث ۱۳۹۸)
ہشام بیان کرتے ہیں کہ حسن اور ابن سرین نے کما پر حتیوں کے پاس نہ جیمو' نہ ان سے بحث کرواور نہ ان کی ہاتھی سنو۔
ہشام بیان کرتے ہیں کہ حسن اور ابن سرین نے کما پر حتیوں کے پاس نہ جیمو' نہ ان سے بحث کرواور نہ ان کی ہاتھی سنو۔
ہشام بیان کرتے ہیں کہ حسن اور ابن سرین نے کما پر حتیوں کے پاس نہ جیمو 'نہ ان سے بحث کرواور نہ ان کی ہاتھی سنو۔

اہل بدعت کے معداق

کتے ہیں اور جو مسلمان یار سول اللہ ایکے اس کو مشرک کتے ہیں اور بعض عالی لوگ مزاروں کا طواف کرتے ہیں اور ان کو سجدہ کرتے ہیں۔

فاس آور بدعقیدہ سے اجتناب کے متعلق فقیاء کی تصریحات

علامد الوعبد الله محرين احد مالكي قرطبي متوفي ١٧٨ م لكمة إل

اس آیت یں ہے دلیل ہے کہ بیرہ گناہ کرتے والوں کی جمل میں بیٹھتا جائز نہیں ہے۔ ابن فویز منداد نے کہا بو محنی قرآن جمید کی آیات پر طبق کرے اس کی جلس ترک کردی جائے ' فواددہ مومن ہو یا گافر۔ اسی طرح ہمادے ماناہ نے دشمن کے علاقہ اور اس کی میادت گاہوں میں داخل ہونے ہے منح کیا ہے اور کفار اور بد مقیدہ اوگوں کے ساتھ بیٹھنے ہے منح کیا ہے۔ ان کے ساتھ دوئی و کی جائے ' نہ ان کی یا تیں سی جائم ہونے ہوا کی اور نہ ان سے مناظرہ کیا جائے۔ فقیل بن میاض نے کہا جس فض نے ساتھ دوئی و کی جائے و کہا اللہ اس کے ماند و کس کے کہا جس کے ساتھ دوئی و کی اللہ اس کے قرر کو نگال دے گااور جس نے اپنی بر مقیدہ ہو دوئی و کی بدھتیدہ ہے کہ اس نے اس ہے وہم منتقطع کردیا اور جو فض کی بدھتی کے ساتھ جیٹھا اللہ تعالی اس کو حکست نہیں دے گا اور جب اللہ تعالی ہے جان ایتیا ہے کہ قلال محض کی بدھتی ہے بغض رکھتا ہے تو جمیے امید ہے کہ اللہ تعالی اس کو خست نہیں دے گا اور جب اللہ تعالی ہے جان ایتیا ہے کہ قلال محض کی بدھتی ہے بغض رکھتا ہے تو جمیے امید ہے کہ اللہ تعالی اس کو خست نہیں دے گا اور جب اللہ تعالی ہے کہ قلال محض کی بدھتی ہے بغض رکھتا ہے تو جمیے امید ہے کہ اللہ تعالی اس کو خست نہیں دے گا اور جب اللہ تعالی ہے کہ قلال محض کی بدھتی ہے بغض رکھتا ہے تو جمیے امید ہے کہ اللہ تعالی اس کو سید کی دھتی ہے امید ہے کہ اللہ تعالی اس کو سید کی دھتی ہے بغض رکھتا ہے تو جمیے امید ہے کہ اللہ تعالی اس کو سید کی دھتی ہے دوئی کی دھتی ہے دیت کے دائی ہے کہ اللہ تعالی ہی دھتی ہے دی ہے دوئی ہے کہ اللہ تعالی ہی دھتی ہے دوئی ہے کہ دیا ہے دوئی ہے کہ دوئی ہے دوئی ہے کہ دوئی ہے کہ دوئی ہے دوئی ہے کہ دوئی ہے کہ دوئی ہے دوئی ہے کہ دوئی ہے دوئی ہے کہ دوئی ہے کی دوئی ہے کہ د

علامد أو سليمان خطائي مولى ٨٨ معد لكين إلى:

مسلمانوں کے درمیان جو تمن دن سے زیادہ قطع کلام کو ممنوع قرار دیا کیاہے 'اس کا ممل ہے کہ وہ دنیاوی معاملات اور معاشرتی وجوہ میں سے محک وجہ سے ایک دد سرے سے ناراض ہوں اور دین کی دجہ سے جو نارانسکی ہو 'وہ دائمی ہے جب تک کہ وہ تو ہہ نہ کرے۔اس لیے بدعقیدہ اور بدمجی محنص سے جب تک وہ تو ہدنہ کرے 'ددستی اور محبت کا کوئی تعاتی نہ رکھا جائے۔

[معالم السن ع ع مع ٥ مطبوم وار المعرف ميروست)

علامه علادُ الدين محرس على بن محر المسكني المنفي المتوفى ٨٨ مده لكمة بين:

ممی فض کو رقمہ میں بالیا گیااور اس محری ابود اسب اور گانجانا تھا تو دہاں بیٹے کر کھانا کھالے اور اگر جس جگہ دستر خوان بھائھا 'دہاں یہ برے کام بھی تو اس کو دہاں جس بیٹسنا جا ہے ' بلکہ اٹھ کر جلے جانا جا ہیں ۔ کیونکہ اللہ تعالی نے فرہایا ہے ' بس یاد آنے کے بعد ظلم کرنے والے لوگوں کے باس نہ جیٹور (الانعام: ۱۸۸) اگر وہ ان لوگوں کو منع کرنے پر قلاد ہے تو منع کرے اور نہ مبر کرے۔ آگر وہ لوگوں کا چیٹوا ہے اور منع کرنے پر قلور نہیں ہے تو اٹھ کر چلا جائے 'کیونکہ اس کے جیٹھے دہنے دین کی برنای ہوگ ۔ (الدر الذا فر اندا کو مسلور دار احیاء التراث العمل ' بروت ' عاملہ)

علامہ ابن عادین شامی نے اس کی شمع میں لکھا ہے کہ اگر دسترخوان پر لوگ ایک دد سرے کی غیبتیں کر دہے ہوں تب بھی اٹھ کرچلا جائے "کیونکہ فیبت امود لعب سے پواکنادے۔

نيز علامه ميد محمرا من ابن علدين شاي متوفى من عدد لكيمة جي.

جوبو ڑھا مخض ڈاق کر تاہو 'جموٹ ہو آب ہو 'اور ہے ہودہ ہاتیں کر تاہو 'اس کو سلام نہ کرے 'اور جو مخض لوگوں کو گالیاں ریتا ہو اور اجنبی خواتین کے چیوں کو دیکھتا ہو 'اس کو بھی سلام نہ کرے اور نہ فاسق ملعون کو سلام کرے اور نہ گانے ہجائے والے کو سلام کرے اور جو لوگ کسی گناہ جس مشخول ہوں 'ان کو بھی سلام نہ کرے۔ (دوالونار 'جن میں میں استان مطبوعہ بیروت) اللہ تعالی کا ارشاد ہے: یاور پر بینز گاروں ہے ان (خالموں) کے اٹھال پر کوئی باذیر سی نہیں ہوگ 'البتہ ان کو نصیحت کرتی

<u> عِيانُ القر اَنْ</u>

عامیے ماکروہ کافم اللہ ہے ڈریں۔(الانعام: ۱۹) احتجاجاً واک آؤٹ کرنے کی اصل

عائد الاانقرج عبدالرحمن بن على بن محد يوذي متوفى عدم لكح بيل:

اس آیت کے شان زول کے متعلق تین اقوال ہیں:

ا - مسلمانوں نے کما اگر ایما ہو کہ جب بھی مشرکین قرآن مجید کانداتی اڑا کی اور اس پر اعتراضات کریں قوہم ان کو منع کریں ' پھر ہمارے لیے مسجد حرام میں بیٹسنا اور کعبہ کا طواف کرنا ممکن شمیں ہوگا۔ تب یہ آیت نازل ہوئی اور پر بیزگاروں سے ان کے اندال پر کوئی بازیرس نہیں ہوگی۔

۱۰ منلمانوں کے کمااگر ہم ان کو قرآن مجدر اعتراض کرنے ہے منع نہ کریں قرہم کویہ خوف ہے کہ ہم گنگار ہوں گے تب یہ آبت نازل ہوئی۔ یہ دونوں روایتی حضرت ابن مہاں رمنی اللہ حنما ہے ممدی ہیں اور ندکور ذیل تیسری روایت مقاتی ہے ممدی ہے:

۳۰ اگر ان کے اعتراضات کے وقت ہم ان کے پاس ہے اٹھ جائیں تو ہمیں یہ خوف ہے کہ جب ہم ان کے اعتراضات کے وقت ان کے اعتراضات کے وقت ان کے اعتراضات کے وقت ان کے باس بیٹیس مے توگنہ گار ہوں مے۔(زادالمیر "ج ۳ مملور کتب اسلای ابیروت اے مہدہ)

ظامہ یہ ہے کہ آگر مسلمانوں نے قرآن مجید ہی چھیز اور دین اسلام پر اعتراض کرنے والوں کے پاس بیٹنے ہے احراز کیا تو ان کے اعتراضات اور تکتہ چینیوں پر مسلمانوں ہے باز پرس نہیں ہوگی اور مسلمانوں کو چاہیے کہ وہ ان اوگوں کو تصیحت کرتے رہیں ' ہوسکتا ہے یہ لوگ اپنی اسلام د جمئی ہے باتر آ جا کیں۔

بعض منسرین نے کماجب یہ لوگ اسمام اور نی جین کے ظاف طعن و تختیج کی ہاتھ کریں اور اس دقت مسلمان ان کی مجلس سے اٹھ جائیں تو ان کا مجلس سے اٹھ جائیں تو ان کا مجلس سے اٹھ جائیں تو ان کا مجلس سے اٹھ جائیں تا ان کا مجلس سے اٹھ جائیں تا ان کا مجلس سے اٹھ جائیں تا ہو سکتا ہو سکتا ہے مسلمانوں کے اس واک آؤٹ ہے ان مشرکوں کو دیا آئے اور ان کا خمیرانہیں ان باتوں پر ملامت کرے اور آئندہ کے لیے و مسلمانوں کے سامنے ان دل آزار باتوں سے احراز کریں۔

انى الذكر تغيرواك اوت كاصل ب

الله تعالی کا ارشادہے: اور ان اوگوں کو چھوڑ دو جنوں نے اپنے دین کو کھیل اور تماشا ہا اہے 'اور جن کو دنیا کی دندگی نے دھوکے میں ڈال دیا ہے اور اس (قرآن) کے ساتھ ضیعت کرتے رہو کسی ہے اپنے کرفوتوں کی وجہ ہے ہلاکت میں نہ جاتا ہو جا کیں 'اللہ کے سوانہ کوئی ان کا مد گار ہوگانہ شغاعت کرتے والا 'اور اگر وہ ہر ضم کا فدیہ دیں تو ان ہے نہیں لیا جائے گا' بید وہ لوگ جی جو لا ہوا پائی اور در دیاک ہذاہ ہے 'کیو نکہ وہ میں جو اوگ جی جو لا ہوا پائی اور در دیاک ہذاہ ہے 'کیو نکہ وہ کھر کرتے تھے۔ (الانعام: ۵)

بسل كامعتي

اس آنت میں بسل کالفقائی بسل کامعنی ہے بہاور ہونا کمی کو اس کی حاجت سے روکنا منع کرنا۔ ابسله کامعنی ہے کمی کو ہلاکت کے سپرد کردیتا و بن رکھنا۔

علامه حسين بن فحررا غب اصفهاني متوني ١٠٥ه فكعة بي:

بسل کامنی ہے کی شنے کا ضم ہونااور روکنا جس مخص کے چرے پر ناگواری ہواس کو باسل کتے ہیں اور کیونکہ اس

عُبيانُ القر أَنّ

می منع کامعنی ہے اس لیے حرام ہے اور رہن رکھی ہوئی ہے کہ بھی ہسل کتے ہیں۔ قرآن مجد میں ہے: وَ ذَکِیْرَیّهِ اَنَّ نَبْسَلَ مُفْسِیْمِیْ مِی اَکْسَتَتْ اور اَن کو اس (قرآن) کے ساتھ ضیحت کرتے رہو 'کس (الانعمام: ۵۰) یہ اپنے کروتوں کی وجہ سے ہلاکت میں جملا ہو جا کیں۔

اس آبت میں ممل منع اور محروم کے معنی ہیں ہے۔ بسسل کامعتی بلاک ہونا بھی ہے اور ثواب سے محروم ہونا بھی بلاک کو متعمن ہے۔ اس لیے ہم نے اس کامعنی بلاکت کیا

بت برستی کالهو د لعب ہونا

فلاصدیہ ہے کہ اے دسول آ آپ اور مسلمانوں ہی ہے جو آپ کے ہیروکار ہیں 'وہ ان مشرکین ہے اعراض کریں جنوں اے اپنے ہاتھوں سے ہاتھ ہتا ہے ہاتھوں سے اپنی عراس فیر مفید عبادت میں صالح کرکے اس کو لمبو و لعب بنالیا ہے۔ انہوں نے اپنی آبادوں ہے انہوں ہے اور انہوں ہے اور انہوں ہے اعراض کیا اور اپ مقدد عبارت میں اشتقل کی وجہ سے میدنا محمد عبارت انہوں ہے اعراض کیا اور ان کا یہ اشتقل کی وجہ سے میدنا محمد عبارت کی نیوت اور آپ کی دعوت سے باور و نہوں نے ظافی و نیا کی لذتوں کو آخرت کی وا اور انہوں ہے ظافی و نیا کی لذتوں کو آخرت کی وا اور انہوں نے ظافی و نیا کی لذتوں کو آخرت کی وار و کر کرنے کی عبات ان کا نداق اور ان پر طعی و تقشیح کرنے غی مشمک اور گئے ہے اس کا نداق اور ان پر طعی و تقشیح کرنے غی مشمک اور گئے ہے۔ اس کا نداق اور ان پر طعی و تقشیح کرنے غی مشمک اور گئے ہے۔ اس کا نداق اور ان پر طعی و تقشیح کرنے غی مشمک کو ان کو کے سو آپ ان لوگوں سے دسن معاشرت اور مانا جانا محمور و دیجے 'یہ معنی نہیں ہے کہ ان کو ورنے کی تبائے ان کا تبان کی تباخ کرتا ہے میں فرائے ہے و دان کو عذاب ان کو عذاب الی سے دار این کرتے ' جیساک اس آ میت علی فرائی ہے۔ اور ان کو عذاب ان کو عذاب الی ہے۔ ورن کی تباخ کرتا ہوں کے دارا نے کرتے ' جیساک اس آ میت عی فرائیا ہے۔

قَرَهُم يَا كُلُوا وَيَتَمَنَّعُوا وَيُلْهِم الْأَمْلُ انْسِيهِ وَدَيِحَ وَهُ كُمَا مِن اور فائد وافعا من اوران كي مُسَوفَ يَعَلَّمُونَ (المحمدون) جمول اميدين ان كوعا فل ركين عن وه حدّيب جان لين

_2

اس کے بعد فرماً یا اللہ کے سوانہ ان کا کوئی مدد گار ہو گائد شفاعت کرنے والا اور اگر وہ ہر تھم کافدیہ دیں تو ان ہے نہیں لیا حاسے گا

اس آعت میں کافروں کے لیے شفاعت کی نئی کی گئے ہے۔ اس تم کی قرآن مجید میں بہت آیتیں ہیں: مَ الْمِنْطَلِيْسِيْسَ مِنْ حَسَمَتِهِمَ وَلاَنْسَمِيْهِم يَّعِلَاعُ مَ لَا اللهِ اللهُ اللهِ کاند او کاند سفارش جس کی بات الٰ

(المؤمن ١٨) جائد

اور یہ بھی فرمادیا کہ ان سے کسی متم کافدیہ قبول نہیں کیا جائے گا بینی جس طرح دنیا میں جسمانی یا مالی فدید دے کر تبد ہے آزاد ہو جائے میں استان میں نجات کااس طرح کا کوئی حیلہ کارگر نہیں ہوگا اور نہ وہاں کسی کے زور یا سفارش سے کوئی فائدہ سینچ کا اور ان کویے سزاجو دی جائے گی ہے وقیاشن ان کے کیے ہوئے کاموں کا بدائے ہیں مین کو کھو آبا ہوا پائی پاایا جائے گا جو ان کے چنوں کو جلازائے گااور ان کی انتزیوں کو کلٹ ڈالے گا۔ انڈ تعالی ارشاد قرما تاہے:

اور ان کو کو او ایالی بان بان بان کا دو ان کی انتزی س کو محوال موا بانی بان بان بان کا دو ان کی انتزی س کو محو

(محمد: ۵۵

قُلُ أَنْكُ عُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَّا وَلَا بَضَّ نَاوُنُرَدٌّ

آب کیے کی ہم اللہ کو چرو کر ان کی پرسٹش کریں جوم کو د نقے قسطتے ہی شانسنجا سے ہیں ؛ الدم اللہ

عَلَى اَعْقَابِنَابِعُدَادُهُ لِللَّهُ كَالَّذِي إِللَّهُ كَالَّذِي إِللَّهُ كَالَّذِي إِلَّهُ الشَّيْطِينَ

کے مرابعت وسینے کے بعد است یا وال وہ ایسے جاتی وائل مھٹن کی طرح جی کرینات نے مطل ہی بھٹ ویا ہو

في الْرَبْضِ حَيْرَاتُ لَكُ أَصَحَبُ يُنْ عُونَكُ إِلَى الْهُدَى اثْبِتَا

اوروہ اس مال یم میران و پرسال چرر باہو ، اس کے اجاب اس کو بار تھے ہوں کر یہ میدما رات ہے ہالمعیال

ڠؙڵٳڰۿڒؽٵٮڷٚۼۿۅؘٲڵۿڵڴڿٳؙڝۯؽٵٚؽۺڵؚڡڵڕۜؾؚٲڵڂڸؘؽ^ؾ

اؤراب مے کواٹر کا جا اور تری سیدھا واستہ اور میں محروق ہے کہ تا جا ال کے رہے ہے سرافامت محرور

وَإِنْ أَقِيْمُو الصَّلَوْةُ وَاتَّقَوْهُ وَهُوَ النِّيْ وَهُوَ النِّيْ فَيُونَّ فَ فَ وَهُوَ النِّيْ فَيُونَّ فَ فَ

ادر ہے کہ فر قام کرد ادر ای سے در حدی اوری سے یک فاطرت تم . کے میا فرک 0

وهُوالَّانِي خُلَقَ السَّلُوتِ وَالْرَبَّ صَ بِالْحِقِّ وَيَوْمَ يَقُولُ

الدرى سے سے اعادل الد دميوں كري بسداك عاددي وال ده دير فنا ميده بيزے) فرائے كا ا

كُنُ فَيَكُونُ ثُقُولُهُ الْحَقُّ وَلَهُ الْمُلْكُ يُوْمَ بِنَفَحُ فِي الصُّورِ

ہم و دہ ہر جلنے کی اس کا زبانات ہے اور اس کو صدی ہوئی ہی ون مور یں بیونکا جائے گا ،

علم الغيب والشهادة وهوالحكيم الخبير

ده مرطبيب اور مرطامركا جائة والاب الدومي نبايت كمت الأبهت فرركمة واللب 0

الله تعلق كارشاب: المسكة كايم الله كوچو و كران كريستن كري بويم كونه الع دسه يكة بن ند نقصان ينها

جلدسوم

تبيان القر أن

سکتے ہیں اور ہم اللہ کے ہواہت ویے کے بعد النے پاؤی لونا دیئے جائیں اس فض کی طرح جمی کو جنات نے جگل ہیں بھٹکا دیا ہو
اور وہ اس حال میں جران و پریٹان چر دیا ہو اس کے احباب اس کو پکار دہے ہوں کہ یہ سید حار استہ ہے 'ہمارے پاس آؤ' آپ
کئے کہ اللہ کا بتایا ہوا راستہ می سید حار استہ ہے اور ہمیں تھم دیا گیا ہے کہ ہم تمام جمانوں کے دب کے لیے سر اطاعت فم کر
دیں اور یہ کہ تم فماز قائم کرد اور اس سے ورتے د ہو تور وہ ہے جس کی طرف تم جمع کیے جاؤے ک (الانعام: الا است)
کمرانی میں بھٹکنے والے شخص کی مثال

الم عبد الرحل بن محمد الى ماتم متولى ١٠٠٥ مد روايت كرتير

حضرت ابن عماس رمنی اللہ فیما بیان کرتے ہیں کہ اللہ تعالی نے جن کی اور اللہ کی طرف وجوت دینے والوں کی ہے مثال بیان فرائی ہے میں اللہ عنص راستہ سے بحک میابو اور اسے کوئی فیص بکارے کہ اس طرف آؤاور اس کے خیر خواہ بھی ہوں ہو اس کو بلائی ہے ایک فیص بکارے کہ اس طرف آؤاور اس کے خیر خواہ بھی ہوں ہو اس کو بلائی کے اس راستہ پر آؤ کو وہ پہلے بلانے والے کی بکار پر چلا جائے تو دہ اس کو بلائی کے گڑھے ہیں گرا دے گا۔ اور اگر وہ بدائی جائی جائے ہی دو ہوا ہے گا اور یہ صحرا کیا جائے والے جنات اگر وہ ہداہت کی دعوت دینے والے کے پاس چلا جائے تو راستہ کی ہدائت یا جائے گا اور یہ صحرا کیا جنگل میں بلائے والے جنات ایس ان ابی حاتم میں میں ہوں کہتے زور مصفیٰ کہ کرر نے اس میں

الم أين جري حوق واحد للسع ين.

حضرت ابن عماس نے فرمایا یہ جنات میں جو جنگل میں بینتے ہوئے انسان کو اس کا پام اور اس کے پاپ داوا کا پام لے کر پائے میں۔اے قلال بن فلال بن فلال ما اوحر آؤ۔ (جامع البیان ۲۵٬۰۵۰ مطبور داوالفکو ایروٹ کا مہدہ)

جو انسان حق سے یاطل کی طرف اوٹ آئے یا حق کوچمو ڈکر یاطل کی طرف آئے اس کے متعلق کما جاتا ہے کہ یہ اپنے محاول پر اوٹ محیالہ اس کا سب بیر ہے کہ انسان ابتداء میں جلل تھا۔ پھردہ اللہ تعالیٰ کی دی ہوئی قوتوں اور مطاحیتوں سے علم اور ہراہے کو حاصل کرتا ہے۔ اللہ تعالیٰ فرما تاہے:

وَاللَّهُ آخُرَ مَكُمُ يَنْ أَبُطُونِ أُمَّهُ يَكُمُ لَا الله لَهُ مَارى اوَل كَيت عَمْ كويداكا مَ كويداكا مَ ك تَعْلَمُونَ شَيْعًا وَّحَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ مَن جائے تے اور قمارے كان آنكي اور ول بنائ وَالا وَالْاَفْعِدَةَ لَعَلْكُمْ مَنْ مُرُونَ (السحل ۱۵)

سوجو فض علم ہے جہل کی طرف اوٹ جائے اس کے متعلق کما جاتا ہے کہ دوا ہے بیروں پر نوٹ گیا۔ آپ ان سے کہنے کہ جمیں تھم دیا گیا ہے کہ ہم اللہ رب العلمین کی اطاعت کے لیے سر تسلیم قم کردیں ایعنی صرف ای کی اخلاص ہے مجاوت کریں اور جم کو نماز قائم کرنے کا تھم دیا گیا ہے اور نماز قائم کرنے کا معنی ہے ہے کہ اللہ ہے اس طرح مناجات کی جائے جمریا کہ بندہ اللہ کے سامنے کھڑا ہوا اس کو دیکھ رہا ہے جس کے آثارے ایک اثر سے کہ وہ بے حیاتی اور برائی کے کلموں سے رک جلے اور اس کانٹس پاکیزہ ہو جائے اور نیز جمیں اللہ سے ڈرتے رہنے کا تھم دیا ہے میمنی خوف فدا سے ہر قسم كے يرے كامول اور كتابوں كو چمو ڑويا جائے اور قرائض وواجبات ير پايندى سے محل كيا جائے ہور سنن اور مستجبات كانفس كو عادی بنایا جائے۔

خان مدیدے کہ ہم کو تین باتوں کا تھم ویا کیاہے۔اخلاص کے ساتھ صرف اللہ وصدہ لا شریک کی عبارت کی جائے والم کے ساتھ کال طرفت سے نماز پر می جائے اور ظاہروہافن ہرمال میں تقویل کے فقاضوں پر ممل کیا جائے۔ پھر قربایا قیاست کے دن تم سب الله ك ملعظ بيش كي جاؤك و تماري افعل كاحباب في كالور تم كو تماري افعل كى يزاد ع كالدين مثل اور حكمت كايد نقاضا ب كد مرف الله كى عبادت كى جائداوراس كے ساتھ ممى كو شريك ندينايا جائے۔

الله تعالی کارشاد ہے: اور وی ہے جس نے آسانوں اور زمینوں کو برحق پیدا کیااور جس دن وہ ہر (فاشدہ چیز ہے) فرائے گا" ہوجا" تودہ ہو جائے گی۔اس کا فرمانا حق ہے اور اس کی حکومت ہوگی جس دن صور جس پھونکا جائے گا دہ ہر فیب اور ہر ملامر كاجائة والا باوروي تمايت حكت والابحت خرر كفه والا ٢٥٠ (الدنعام: ١٥٠)

آسانوں اور زمینوں کو حق کے ساتھ پید اکر لے کامعنی

الله تعلل کے آسانوں اور زمینوں کو حق کے ساتھ پیدا کیا ہے۔ اس کا ایک معن بیہ ہے کہ آسانوں بور زمینوں کی پیدائش يري اور سمج ها العني إطل اور خطائيس معار اس آيت سے معلوم ہو آند:

وما حَلَقْنَا السَّمَا وَالْأَصْ وَمَا بَيْمُمَّا اور ہم كے ؟ ال اور زعن كو اور جو بكر ال كے در ميان بَاطِلًا (ص ١٤١) ے کے اکروسی بنایا۔

ا اور زمینوں اور جو بچھ ان کے درمیان ہے ان کے پیدا کرتے میں اللہ تعالی کی محست ہے وہ علیم اور ملیم ہے ا اس کاکوئی کام حکمت سے خلا شیں ہے۔

اس آیت کارد مرامعنی یہ ہے کہ اللہ تعالی نے آسانوں اور زمینوں کواسپنے پر حق کلام کے ساتھ پیدا کیا۔ جیسا کہ اس آیت

پس کاسان اور زعن وونول ست قرایا تم دونول توشی یا عُفِقُ ہے ماضر ہو جاؤ 'انہوں نے کما ہم فوقی ہے ماضر - £ x فَغَالَ لَهَا وَلِلْآرْضِ الْنِيَا طَوْعًا أَوْ كُرُهًا فَالْتَانَيْسَاطَايَّيْعِيْسَ(خُمِ السحدوة)

كيونك الله تعالى نے تمام چيزوں كوائے كام سے بيدا فرمايا ہے اور جب به تمام چيزي قابو جائي كي او پھران كو دوبارہ اپنے كلام من بدا فرائد كا ووان من فرائد كا او جال الي وواو جا كي ك قر آن اور احادیث کی روشنی میں معور پھو نکنے کابیان

اس كيور فرمايا اوراسكي حكومت بوكى جس دن صورش يجو نكاجائ كله فد كوره ذيل آيت بي بحي صور بحو يحت كالزكرب.

اور صور على پيونكا جائے كاتو بو آسانوں على بيل اور جو ذمينول يس يه وه سب فنامو جا كم مح كرجن كو الله جاب چرددباره صور من چونکا جائة كان ورد اجانك ريجيت بوت

ونُعِجَ فِي القَّنُورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمُواتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّامَنْ شَاءً اللَّهُ ثُمَّ نُفِعَ فِيهُو أُخُرى فَوَادُاهُمْ قِيبًا مُ يَسْطُرُونَ ١٥ الرمر ١٨٠

کھڑے ہو جا کیں گے۔

الم ابو عيني فين عيني ترزي متوفي ٥٤ الدروايت كرتے إلى:

حضرت عبداللہ بن عمومین العاص رمنی اللہ عظمامیان کرتے ہیں کہ ایک اعرابی نبی پڑتین کے پاس آیا اور اس نے کماصور کیا چیز ہے؟ آپ نے فرمایا وہ ایک سیکھ ہے جس میں پھوٹکا جائے گا۔

(سنّن ترزّی میم از قم الیریث: ۲۴۴۸ سنن ایوداؤر میم از قم الیریث: ۳۷۳ میم این حبان میم این حبان میم الیریث: ۱۳۳۸ مند احمه میم و قرآنی میشند ۱۵۱۷ سنن الداری میم و قرآنی الیریث: ۴۷۹۸)

حضرت ابوسعید خدری برینی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بریجینے نے قربایا میں کس طرح نفتوں ہے قائدہ افحاؤں اللہ سیکھ والے نے اپنے متر میں میں گو تک مار نے کا تھم دیا حال تکہ سیکھ والے نے اپنے متر میں میں گو تک مار نے کا تھم دیا جائے تو وہ اس میں چو تک مارے میں میں اللہ کافی جائے تو وہ اس میں چو تک مارے میں میں اللہ کافی جائے تو وہ اس میں چو تک مارے میں میں میں اللہ کافی ہے اور وہ اچھا کار مازے اور ہم نے اللہ تی پر توکل کیا ہے۔

(سنن الزري عسورة الديث:۲۴۳۹ منداحه ۴۳۴٬ قم الديث ۱۱۲۹۲۰)

الم مسلم بن تجائ قشیدی متوفی ہو ہونے حضرت حداثہ بن عمرورضی اللہ عنماے قیامت کے فتوں کے متعلق ایک طویل صدیف روایت کی ہے۔ اس میں فدکور ہے و سول اللہ بڑیجیز نے قرایا پھر صور پھو تک ویا جائے گا' جو محض بھی اس کو سنے گا' دو ایک گا دو ایک گا دو ایک اللہ طرف کر دن جمکائے گا دو دو سری طرف سے اٹھالے گا۔ جو محض سب سے پہلے اس کی آواز سنے گا' دو اپنے او نوں کا دوش کا دو ایک بھر درست کر رہا ہو گا' دو ہو ہی ہو جائے گا اور دو سری الوگ بھی ہے ہو ش ہو جا کیں گے۔ پھراللہ تعالی حجم می طرح ایک جوش بازل فرمائے گا' جس سے لوگوں کے جسم آگ پڑیں گے۔ پھرود سری بار صور پھو نکا جائے گا' پھر لوگ کھڑے ہو کر دیکھنے بارش نازل فرمائے گا' جس سے لوگوں کے جسم آگ پڑیں گے۔ پھرود سری بار صور پھو نکا جائے گا' پھر لوگ کھڑے ہو کر دیکھنے گئیں گے۔ پھر کما جائے گا' ان کو کھڑا کرد۔ ان سے سوال کیا جائے گا' پھر کما جائے گا' دوڑ ٹے گئے لیے گروہ نکاور اس دن ساتی (پنڈلی) کھوئی جائے گا ہم بڑار جس سے تو سو نکانوں سے آن اور اس دن ساتی (پنڈلی) کھوئی جائے گا ہم بڑار جس سے تو سو نکانوں۔ آپ نے فرکایا ہو دون ہے جو بچوں کو یو ڈھاکروں گا اور اس دن ساتی (پنڈلی) کھوئی جائے گا ہم بڑار جس سے تو سو نکانوں۔ آپ نے فرکایا ہو دون ہے جو بچوں کو یو ڈھاکروں گا اور اس دن ساتی (پنڈلی) کھوئی جائے گا ہم بڑار جس سے تو سو نکانوں۔ آپ نے فرکایا ہو دون ہے جو بچوں کو یو ڈھاکروں۔ گا اور اس دن ساتی (پنڈلی) کھوئی جائے گا ہم بڑار جس سے تو سونکانوں کے دوئر گی کوئی جائے گا۔

(مجي مسلم افتن ١١١٧ (٢٩٣٠) ٢٣٧٤ اسنن كبري للنسائي عه ار قم الحديث ١١٦٢٩)

المام الدين اسائيل عفاري متولى ٥٦١ مدروايت كرتي بس:

حضرت آبو ہربرہ بوہیں بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ سی ہیں ہے فرمانی دو پار صور پھو تکنے کے در میان چالیس کا دقنہ ہوگا۔
اوگوں نے کما اے ابو ہربرہ اچالیس دن؟ انہوں نے کما میں شیں کہ سکک لوگوں نے کما چالیس باد؟ انہوں نے کما میں نہیں کہ سکک لوگوں نے کما چالیس باد؟ انہوں نے کما میں نہیں کہ سکک اوگوں نے کما چالیس بال؟ انہوں نے کما میں نہیں کہ سکک پھر اللہ تعنائی آسان سے پائی بازل فرمائے گا۔ جس سے نوگ اس طرح آئیس کے جس طرح سیزہ آئی ہے۔ حضرت ابو ہربرہ نے کما ایک بڈی کے سوا انسان کے جسم کی ہرجے گل جائے گی اور دہ دم کی بڈی کا مراہے 'اور قیامت کے دن ای ہے انسان کو دوبارہ بنایا جائے گا۔

(می ابتداری علاد دو مری آلدید من ۱۹۵۰ می مسلم فنن ۱۳۱ (۲۹۵۵) ۱۳۸۰ افنن الکبری النسائی علاار قم الدید بیشت ۱۳۵۹ کی ۱۳۵۹ کی ۱۳۵۹ کی الدید کا الدید بیشت کی ساتھ روایت کیا ہے کہ دو مرتبہ مود پھو تکنے کی دت چالیس ملل ہے اور ایک سند ضعیف سے معترت ابن عماس رضی الله عنما ہے ہی روایت کیا ہے کہ دو یار صور پھو تکنے کی دت چالیس ملل ہے اور ایک سند ضعیف سے معترت ابن عماس رضی الله عنما ہے ہی روایت کیا ہے کہ دو یار صور پھو تکنے کی دت چالیس ملل ہے۔ الم حاکم اور الم ابن معلی نے صفرت ابن معید خدری جریز بے روایت کیا ہے کہ دو یار صور پھو تکنے کی دت چالیس ملل ہے۔ الم حاکم اور الم ابن معلی نے صفرت ابن معید خدری جریز بے روایت کیا ہے کہ دو یار صور پھو تکا کی مرح ہے۔ وہ پشت کی جرین

تبيان القر أن

ایک باریک بڑی ہے اور وہ دم کی بڑی ہے ؟ جو چہائے ہیں دم کے مرکی جگہ ہوتی ہے۔ اس مدیث ہیں ہے کہ ایک بڑی کے سوا انسان کے جسم کی ہرجیز گلی جائے گیناس قاعدہ ہے انبیاء علیم السلام منتی ہیں۔ کیونکہ سنن ابوداؤد ہیں یہ مدیث ہے کہ اللہ تعالی نے انبیاء علیم السلام کے جسموں کو کھانا زہین پر حزام کر دیا ہے اور اس طرح شداہ بھی اس قاعدہ ہے منتی ہیں کیونکہ قرآن مجیدتے شداء کی حیات کی تصریح کی ہے۔

(هخ الباري عج ٨ من ٥٥٣- ٥٥٢ مطبوعه وار نشراً لكتب الاسلاميه "لا بور ١٣٠١هـ)

علامہ انی مالکی متونی ۱۸۲۸ء نے لکھا ہے کہ قرآن مجید اور املون محمد میں ہید دلیل ہے کہ صور میں پھو نکا جائے گئے۔ امام غزال نے لکھا ہے کہ اس میں حقیقاً پھو تک ماری جائے گی۔ ایک قول یہ ہے کہ صور پھو تھتے والا کے گا اے بوسیدہ اجہام اور منتشر ڈربو اللہ تعانی تہیں تھم دیتا ہے کہ تم فیصلہ کے لیے جمع ہو جاؤ۔

(ا كال اكال المعلم "ج ٩ من ١٧٠ مطبوعه وار الكتب العلميه "بيروت ١٥٥ الااحد)

وَمَا يَسْطِرُهُ وَكُلِّي الْاَصَبِ عَدِّةً وَاللَّهَامِينَ اوروه مرك ايك زبروست في كالتقاركرد به بين جس عَوَاقِي ٥

کی اللہ تعالی میاڈوں کو اڑا دے گاتو دہ بادلوں کی طرح کال دہے ہوں گے 'چروہ خاک کاؤ ھیر ہو جا کیں گے 'اور ذین اپ ماکنوں کے مائٹہ لرز رہی ہوگی۔اس کاذکر اس آیت میں ہے:

يَوْمَ تَرْحُفُ الرَّاحِمَةُ 0 تَتَبَعُهَا الرَّادِفَةُ 0 جَن ون ارز نے وال ارز جائے گی پر چیجے آنے وال اس فَلُوْبُ يَتُومَهُ فِي اَحِفَةُ (النوعت ۱۸۰۱) كَيْجِهِ آنَ كَي مُت عدل اس ون ارز دے ہوں كے۔

اور زین اس طرح کے اور جمولنے گئے گی جس طرح بلند جماز کو سمندر میں سوجیں ہر طرف و مکیلتی رہتی ہیں یا جس طرح بست میں لئکی ہوئی قندیل کو ہوا جمونے وہتی رہتی ہے ' چراوگ زمین پر کرنے تکیس کے۔ دودہ پلانے والیاں بچوں کو بمول جا کیں گئ مللہ موروں کے حمل ساتھ ہو جا کیں گے اور نے یو ڑھے ہو جا کیں گے 'شیاطین جان بچانے کے لیے زمین کے آخری کناروں تک بھائیں گئ فرشے ان سے مقابلہ کر کے ان کے جروں پر ماریں گے 'اور لوگ چینہ موڑ کر بھائیں گے۔

عُيانُ القر أن

تشن ہر طرف سے پہنے گے گا اور ایماعتیم واقعہ طاہر ہو گاہواس سے پہلے دیکھانہ کیا تھا اور ایس گھراہ نے اور وہشت طائری ہوگ جس کو اللہ عی جاتا ہے ' پھر لوگ آ ہان کی طرف دیکھیں کے تو وہ پر نہدے پر ڈے ہو کر اڑ رہا ہوگا سورج اور چائد وحند لاجا کی کے اور ستارے بھرچا کیں گے ' آسلیٰ بھی کلاے ہوجائے گھر سول اللہ بڑی نے فرمایا لیکن مردوں کو اس کی بالکل خبر نمیں ہوگی۔ حضرت ابو ہر یرہ نے کھایار سول اللہ اللہ تعالی نے اس آیت میں کس کا استثناء فرمایا ہے؟

يَوْمَ يُسْفَحُ فِي العَيْنُورِ فَفَيعَ مَنَ فِي العَيْنُورِ فَفَيعَ مَنَ فِي العَيْنُورِ فَفَيعَ مَنَ فِي العَشَاءُ اللهُ

اور جس دن صور میں پھو نکا وائے گا تو جو آسانوں اور زمینوں میں میں ووسب محبرا جا کیں کے گر جنہیں اللہ جاہے

(النمل:۸۷) گاـ

آپ نے قربایا دہ شداء ہیں وہ اپنے رب کے نزد یک زندہ ہیں اور ان کو رزق دیا جاتا ہے 'اور گھراہٹ کا اثر (ظاہرا) زندہ نوگوں پر ہوگا۔ سو اللہ تعالی ان کو اس دن کی گھراہٹ سے محفوظ اور مامون رکھے گالور سے اللہ تعالی کا عذاب ہے جو اللہ تعالی اپنی محلوق ہی سے برے لوگوں پر بھیجے گالور اس کا ذکر اس آے جس ہے:

يَّا يَهُ النَّاسُ الْفُوْ الْكُمُ إِنَّ رَلْوَلَةُ السَّاعَةِ مَنْ وَلُولَةُ السَّاعَةِ مَنْ عَظِيمُ النَّامُ وَمَا تَدُمَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ مَنْ عَظِيمُ اللَّهُ مَا تُدُمَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ مَنْ مَنْ عَمَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ الْمُعَالِمُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُنْعُلِمُ اللَّهُ اللَّه

اے لوگواای درب ہے ڈرو بے ڈک تیامت کا زار رہ بینی (بھاری) چزہے 'جس دن تم اے دیکو کے قو ہردورہ بیائے والی اس نے بیات والی اس انجی ہے قافل ہو جائے گی جس کو اس نے دورہ بیائے تھااور ہر حالمہ اپنا حمل کر اوے گی اور (اے گالمب) تو لوگوں کو مخور دیکھے گا' حالا تکہ وہ فشہ میں نہیں ہوں گے' میں الحکہ وہ فشہ میں نہیں ہوں گے' میں الحکہ وہ فشہ میں نہیں ہوں گے'

پھرجب تک اللہ چاہے گالوگ اس عذاب میں جلا دیں گے اور ایک طویل عرصہ تک یہ طالت رہے گی پھر
اللہ تعالی اسرائیل کو علم دے گاکہ وہ موت کا صور پھو تھیں ' مو وہ موت کا صور پھو تھیں گے۔ جس ہے تمام آسانوں
اور زمینوں کے لوگ ہلاک ہو جا کیں گے ' ماسوا ان کے جنہیں اللہ 'چاہے گا اور جب وہ سب ہلاک ہو جا کیں گے تو ملک
الموت علیہ السلام اللہ تعالی کے سامنے حاضر بھوں گے اور عرض کریں گے 'اے میرے رہا تمام آسانوں اور زمینوں
کے لوگ ہلاک ہو گئے' ماسوا ان کے جنہیں تو نے چاہا' اللہ عزوجل بچ بھے گا حال تک وہ خوب جانے والا ہے ' تو کون کون
باتی رہ کیا؟ وہ کیس کے 'اے میرے رہا تو باتی ہو زندہ ہے اور تو نہیں عرے گا' اور تیرے عرش کو افعانے والے
باتی یوں اور جرا کیل اور میکا کیل باتی میں اور میں باتی ہوں۔

الله عزد جل فرائ کا جرائل اور میا کیل کو بھی فوت ہونا جا ہے 'پی عرش کے گا'اے جیرے رہا تو جراکل اور میا کیل کو بھی مار قالے گا الله عزوجل فرائے گا فاموش رہوا جی ۔ آپ عرش کے نیچ ہرایک کے لیے موت مقرر کردی ہے' وہ ددنوں عربا کیں گے۔ پھر طک الموت علیہ السلام الله کی بار گاہ عن حاضرہوں کے اور عرض کریں گے' جراکل اور میکا کیل فوت ہو گئے۔ الله عزوجل بچ جھے گا' حال تکہ وہ قوب جانے والا ہے' تو اب کون باتی ہے ؟ وہ عرض کریں گے 'اے میرے رہا تو باتی ہی ہو کہ دو قوب جانے والا ہے' تو اب کون باتی ہے ؟ وہ عرض کریں گے 'اے میرے رہا تو باتی ہی ہو تو باتی ہی ہوں۔ پھر الله تعالی فرائے گا' باتی ہے جو ذندہ ہے اور جس کو موت تبیں آئے گی اور تیرے عرش کے حالین باتی جی اور عی باتی ہوں۔ پھر الله تعالی فرائے گا' میرے عرض کے حالین کو جانے والا ہے ' قوب جانے والا ہے گا مال کے ماخے حاضر ہوں گے' میرے عرض کے حالین کو جی موت آ جائے 'اپس وہ عربا کی فوت ہو گئے۔ پھر الله تعالی ہو جھے گا حال کے وہ خوب جانے والا ہے

تواب کون باق ہے؟ وہ کمیں کے 'اے میرے رہا تو باقی ہے جو زعرہ ہے اور جس کو موت نہیں آئے کی اور بیں باتی ہوں۔ اللہ مز د جل فرمائے گاتو بھی میری محلوق میں سے ایک محلوق ہے میں نے تھے اس کام کے لیے پیدا کیا تھا اب نؤ بھی مرجاسووہ مر جائے گا اور اس وقت اللہ تبارک و تعالی کے سوا کوئی باتی نئی دہے گا۔ المواحد الاحد العسمد جوند کی كاباب بند بٹا' دی آخر ہو گاجیسا کہ وہ اول تھا۔ آپ نے قربایا اہل جنت پر موت ہو گی نہ اٹل نار پر موت ہو گی۔ پھر آسان اور زمین کو اس طرح لپیٹ دیا جائے گاجس طرح اور اق کو لپیٹ دیا جاتا ہے ان کو پھر کھواا جائے گااور پھر لپیٹا جائے گا۔ پھر قرمائے گاجی جہار مون كرالله بيادك وتعلل يلتد أواز من فراسة كا"لمدن المسلك السوع؟" آج كم كي باد ثمان منه؟ يمر قراسة كا"لله الواحد القهار" (غافر: ١١) الله واحد قداركى إوثان ب- مرفها على سنواجس في مير الي مرك منايا يواود ال آئے۔ سنواجس نے میرے لیے شریک بنایا ہو' وہ لے آئے۔ سنواجس نے میرے لیے شریک بنایا ہو' وہ لے آئے۔ پھراس آسان اور ذہن کے علادہ دو مرے آسان اور زمین بید آگرے گااور ان کو پھیلا کر در از کردے گا'جس میں تم کو کوئی کجی اور نقص نہیں دکھائی دے گا' پھر اللہ تعالی محلوق کو زبروست آواز کے ساتھ جھڑکے کا پھر لوگ اس نو پیدا شدہ زنین میں پہلے کی طرح ہو جائیں گے۔ پھراللہ تعنافی تمهارے اور عرش کے بیچے ہاتی نازل فرملے کا پھرتم پر چالیس دن تک آسان ہے بارش ہوتی رہے گی حق کہ تم پر بارہ ہاتھ بانی بلند ہو جائے گا۔ پھر اللہ تعالی جسموں کو اسمنے کا تھم دے گاتو وہ سبزیوں کی طرح اسمنے تکبیں سمے ا جب اجسام پہلے کی طرح تھل مو جائیں سے تو اللہ تعالی قرائے گا حالمین عرش زندہ موجائیں 'پراللہ عزد جل حضرت اسرائیل کو صور پکڑنے کا تھم دے گا' پھر اللہ تعالی فرائے گا' جرز کیل اور میکا کمل زندہ ہوں مودہ زندہ ہو جا کیں گے۔ بھر اللہ مور و جل ارداح کو بلائے کا وہ لائی جائیں گی۔مسلمانوں کی روحیں نور کی طرح چیک ری ووں کی نور دو سری روحیں تاریک ہوں گی۔ پھر الله تعالى ان كو صور من ذال دے كا كراللہ تعالى اسرافيل سے قرمائے كان كو زنده كرنے كے ليے صور ميں بحو كو ' تو وہ زنده كرنے كے ليے صور پيو كے كا پيرتمام روحنى شدكى كھيوں كى طرح لكيں كى جن سے زين اور اسان بحرجاكي كے اللہ تبارك و تعالى فرمائ كا تمام روهي الي اجهام هي واخل موجائي او سب روهي جهول هي واخل موف لكيس كي اور نتخوں کے راستہ داخل ہوں گی۔ جس طرح ذہر تمی مار کزیدہ میں سرایت کر جاتا ہے۔ پیر ذعن پیٹنے کھے کی اور میں سب ہے پہلے زمین سے لکوں کا اوک سرحت کے ساتھ اپنے رب کی طرف لکیں ہے جم سب ہمیں سال کی عمر میں افھو سے اور اس دن سب کی زیان سریانی بوگی:

> مُعَنَّنَهُمْ مَعَرَادُهُمْ يَعْرَكُونَ مِنَ الْآجَدَانِ كَأَنَّهُمْ مَعَرَادُهُمُ مَنَّ فِي اللَّهِ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللِّهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللْمُلْمُ الللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُلْمُ الللَّهُ الْمُلْمُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ الللْمُلْمُ اللْمُلْمُ الْمُلْمُ الللَّهُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللْمُلِمُ اللْمُلْمُلِمُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللْ

وہ نی آ بھیں کے ہوئے قبروں سے تکیں کے مویا وہ زعن پر مھیلے ہوئے مدی ول ہیں کانے والے کی طرف دو ڈتے ہوئے کافر کس کے برا ختون ہے۔

یہ قبول سے نظنے کادن ہے اس دن ہم تم کو جس کے اور تم میں ہے کئی کو نئیں ہمو ڈیس کے کھروہ آیک جگہ میں سر سال تک کھڑے دیں گے۔ اللہ تمہاری طرف نہ دیکھے گانورنہ کسی کاکوئی فیصلہ کرے گا خلقت روئے گا اور جب آنے ختم ہو جا کیں گے تو آئے گھول سے خون بہنے گئے گا کوگ اپنے ہیں میں شرابور ہو جا کیں گے ان کی ٹھو ڈیوں اور منہ تک ہیں ہو جا کیں گے تو آئے گھول سے خون بہنے گئے گا کوگ اپنے ہیں میں شرابور ہو جا کیں گئے ان کی ٹھو ڈیوں اور منہ تک ہیں ہوا ہو گا کوگ کیں ہوا ہو گا کوگ کیں گئے ان کی ٹھو ڈیوں اور منہ تک ہیں ہوا ہو گا کوگ کیں گئے کہ جمارے در میان فیصلہ کرے۔ لوگ کیں ہوا ہو گا کوگ کیں گئے کہ تمارے باتھ سے پیدا کیا ہے اور ان میں اپنی ہے کہ تمارے باتھ سے پیدا کیا ہے اور ان میں اپنی ہے کہ تمارے باتھ سے پیدا کیا ہے اور ان میں اپنی ہے کہ حضرت آدم کے باس جاکر اپنا مقصد بیان کریں گے 'صفرت آدم کے باس جاکر اپنا مقصد بیان کریں گے 'صفرت آدم کے باس جاکر اپنا مقصد بیان کریں گے 'صفرت آدم کے باس جاکر اپنا مقصد بیان کریں گے 'صفرت آدم کے باس جاکر اپنا مقصد بیان کریں گے 'صفرت آدم کے باس جاکر اپنا مقصد بیان کریں گئون حضرت آدم کے باس جاکر اپنا مقصد بیان کریں گے 'صفرت آدم کے باس جاکر اپنا مقصد بیان کریں گئون حضرت آدم کے باس جاکر اپنا مقصد بیان کریں گے 'صفرت آدم کے باس جاکر اپنا مقصد بیان کریں گے 'صفرت آدم کے باس جاکر اپنا مقصد بیان کریں گے 'صفرت آدم کے باس جاکر اپنا مقصد بیان کریں گئون حضرت آدم کے باس جاکر اپنا مقصد بیان کریں گئون حضرت آدم کے باس جاکر اپنا مقصد کیاں کو اپنا کو کھوں کے 'میں کو کھوں کے کھوں کو کھوں کو کھوں کے باس جاکر کے کھوں کی کھوں کو کھوں کو کھوں کو کھوں کے کھوں کو کھوں

اس الکار کرویں گے۔ چروہ جرتی کے پاس پاری پاری جائیں گے اور وہ اس کام ہے انکار کریں گے۔ چرد سول اللہ بھیج اللہ و فرانیا چروہ جیرے پاس آئیں گے وہیں حرش کے بیچے ہوہ جس کر ردوں گا می کہ اللہ حرو جال جیرے پاس آئیں گے وہیں حرش کے بیچے ہوہ جس کر ردوں گا می کہ اللہ حرو جال جیرے پاس آیک فرشتہ جیسے گا جو چھے بازوے پاکڑ کر افحات گا پھر افلہ عزد جال ہو جھے گا ماد تکدوہ خوبا تھا کہ اللہ ہوا اس ہے ماراصلی اللہ علیک و سلم) کیا بات ہے؟ جس کوں گا اے جمرے دہا تو لے جھے سے شفاعت کا دعدہ فرایا تھا کہ اپنی تکلوق اس میری شفاعت آبول فرا اور ان کا فیملہ فرا اللہ عزد جل فرائے گا جس نے تسادی شفاعت آبول کی میں تسارے پاس کے متعلق میری شفاعت آبول کی میں تسارے پاس کر حمادے دور میان فیملہ کروں گا۔ دسول اللہ عزوج سے فرائیا جس قائی کر اور کو مالا کہ کرا ہو جاتوں گا موجس وقت ہم کرے ہوں ذہین کے خور ذہین کے خور دہیں ہو جائے گا تھی دائی مسلم کی تور ذہین ان کے فور دہیں ہو جائے گا تھی دائی مسلم کی تا اس کے فور دہیں ان کے فور سے دو شن ہو جائے گا تھی دائی مسلم کی تا کی دورے دوشن ہو جائے گا تھی دائی مسلم کی تاکن کے فور نے مان کے فور کے میں ہو جائے گا تھی مسلم کی تاکن کی دورے دوشن ہو جائے گا تھی دائی مسلم کی تا کی دورے دوشن ہو جائے گا تھی دائی مسلم کی تاکہ ہوں گا تھی گا تھی دائی مسلم کی تاکن دور اس کے تور کی ان کے فور کر شن ان کے فور کی ان کے فور کی دور ان کر دور اس کر دور ان کی دور ان کر دور کی دور کر دور کی دور کر کر دور کی دور کر دور کی دور ک

پھر تیمرے آسان ہے اس ہے و گئے فرشے تازل ہوں گے اور وہ ذیمن کے جن واٹس نے بھی و گئے ہوں گے و کی رہب وہ دیمن کے جی اور وہ اپنی منفس ما کی ہوں گے وہ ہیں گے جی کہ جم ان ہے کہیں گے جی اور وہ اپنی منفس ما کی ہوں گے وہ ان ہے کہیں گے جی اور وہ اپنی منفس ما کی گئے۔ اور وہ اپنی منفس ما کی گئے۔ اور وہ اپنی منفس ما کی ان ہے کہیں گے جی اللہ اولوں کے میں گئے وہ آئے والا ہے۔ پھر اس ہو گئے فرشتے تازل ہوں گے۔ پھر ان جارک و تعالی باولوں اور فرشتوں کے جم من من بازل ہو گئے۔ آئے فرشتے اس کا عرش افعات ہوتے ہوں گے کہ مان کد اس وقت تو اس کا عرش جار فرشتے افعات ہوتے ہوں گے کہ مان کد اس وقت تو اس کا عرش جار فرشتے افعات ہوتے ہوں گے کہ مان کہ اس وقت تو اس کا عرش جار فرشتے افعات ہوتے ہوں گے کہ مان ان کی آو ھے و حر تک وکنے تھے بی موٹ ہوں ہے جی کو در جا جی جہ در ہے ہیں۔ تاہم ذرشیں اور آسمان ان کی آو ھے و حر تک وکنے ہیں موٹ ان کے کند حول پر ہے اور وہ بلند آواز ہے تھے بڑھ دہے ہیں۔

سبحان ذى الملك والملكوت سبحان ذى العرة والحبروت سبحان الحي الذى لايموت سبحان الذى يميت الحلائق ولايموت سوح قدوس رب الملائكة و الروح قدوسا قدوسا سبحان ربسا الاعلى سبحان ذى الملكوت و الحبروت و الكبرياء والسلطان والعظمه سبحانه ابدالاباد

پیرافتہ تعالی زمین پر جمال جاہے گا اپنا عرش رکے گا۔ پیر فرمائے گا بھے اپی عزت اور جلال کی حم اکوئی مخص بھی ظلم کر

ہے میرے قریب نمیں ہوگا پیرائی متاوی ندا کرے گا جس کو تنام ظلوق نے گی۔ اے جن اور انس کی جماعت ایس نے جب

ے حمیس پیدا کیا ہے ' آج بحک ظاموش تھا ' تساوی ہائیں متناز ہا' تساوے اعمال دیکتارہا۔ اب تم ظاموش رہو تسادے اعمال

کے محیفے تم کو پڑھ کر سنانے جا کیں گے ' جو مخص نکیاں پائے' وہ اللہ کی جد کرے اور جس کے محیفے اس کے ظاف ہوں' وہ
صرف آپ نفس کو طامت کرے ' پیرافتہ تعالی دو ترخ کو تکم دے گاتو اس میں ہے ایک سیاد چکتی ہوئی گردن نمودار ہوگ۔ پیرافتہ تعالی فرمائے گا

وَامْتَارُواالْيَوْمَ اللَّهَاالْمُتَجْرِمُونَ 0 اَلْمُاعُهَدُ إِلَيْكُمْ لِبَنِيَّ أَدَّمَ اَنَّ لَا تَعْمُدُوا النَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُومُنِينَ 0 (يس : ١٠٥٥)

اے مرموا آج (تیوں سے) الگ ہو جا اُ اُ اے آرم کی اولاد آکیا میں سلے تم سے یہ حمد شمل لیا تھا کہ تم شیطان کی مبادت شرعا مین کرتا مین شیطان کی مبادت شرعا میں میں مبادت شرعا میں مباد ا

پراٹ تنائی جن و انس کے سوا تمام علوق کے درمیان فیصلہ فرمائے گا بعض کا بعض ہے قصاص لیا جائے گا حتی کہ بغیر سیکھ وال بکری کا سیکھ والی بکری سے قصاص لیا جائے گا حتی کہ جب کسی کا کسی رخت نمیں دے گا تو فرمائے گا تم سب مٹی ہو

جلؤاس وقت كافر كي كا

يسْلَيْسَنِي كَبْتَ تَرَابًا إلى النباء ١٠٠٠ اكارُنام من اوالد

پرائٹہ عزوجل جن اور ائس کے درمیان فیصلہ فرمائے گلہ ہی سیسے پہلے خون کے متعلق فیصلہ فرمائے کا اس مخص کو الیا جائے گاجو اللہ کی راو عل محل کیا کیا اور اس کے قاتل کو الیا جائے کا حقل کی دکون سے خوان بدر او کا وہ کہیں گے اے مارے رب اہم کواس مخص نے قبل کیا ہے۔ اللہ مزوجل پر بھے گاماؤ تک وہ قوب جائے والا ہے متم ان سے قبل کیوں کیا تفاكودك كالسدير مرب يس في حرى عزت كى خاطر عن سد قل كيا تما الله عزد جل فراسة كاتم في كما إمرالله تعالى اس كاچرو سورن كى طرح متور كروك كا بجر فرشتة اس كرجنت كى طرف ف جاتي مجمه بجراس هخص كواايا جائے كاجو دنيا جي بغيرالله تعالى ك علم اوراس كى اطاعت ك محنى دنيادي غليد كى دجه ست قبل كيامياتها اوراس كا قال بني است كالد منتول اسيخ خون میں تشمرے ہوئے مرافعاتے ہوئے موں سے اوران کی آئٹی خون میں التمثری ہوئی مون گی او کمیں سے کہ اے امارے رب اہم کواں مخص نے قل کیاہے 'اللہ مرویل پر چھے کا مطابقہ عدائ سب سے زیادہ جلت والاہے 'تم نے ان کو کیوں قل كيا؟ ووسك كال مرد رب التي النظير والل كرن الله الله الله الله ورجل قراع كالم بالك بوسك مجراس كاچروسياه اوراس كى الحميس تىلى كروى جائين كى كرير فال كو معنول كريد كري كيا جائد كا بجرافد تعالى باق كلول ك ورمیان فیملہ فرائے گا۔ پھروورے بیں بائی مائے والے کو اس بات کامکان کرے گاک دواس وورد سے بانی کو الگ کرے فروف د كسك احتى كديب مى النس كاكس النص يركونى حل بال نعى دب كاتوايك منوى يراكرك تنام علوق كوسنات كاور كي كا منوا مب لوگ است است خد اول سے ساتھ لاحق موجا کی توران کے ساتھ جن کی دوالد کو چھو ڈ کر پر سنٹل کرتے ہے اور جس فض نے بھی اللہ کو چھوڑ کر کمی سعبود کی پرستن کی تھی اس کے سامنے وہ معبود مشکل کردیا جائے گالور اس دن آیک فرشد حفرت مینی علیہ السلام کی شکل بھی جادیا جائے گا۔ فساری اس کے پیچے جا کئی کے اور ایک فرشتہ معزمت عزیر کی شکل میں منادیا جائے گامیودی اس کے بیچے بہلے جائیں مے محرون کے معبود ان کو جنم کی طرف لے جائیں میں اور اس کاذکر اس آیت ين سيء

كُوكَان هُوُلُو الْهِيهِ عِلَا وَرَدُوهَا وَ كُلَ فِيهَا الْهِيهِ عِلَا وَرَدُوهَا وَ كُلَ فِيهَا الدراج)سيد الله دُون (الانهياء:١٩)

اس کو سجدہ کریں مے 'ادر اللہ عز وجل منافقوں کی پشتوں کو گلئے کی پشتوں کی طرح سید ها(بضر کیک کے) کردے گا' دہ اپنی جینیوں کے بل گریزیں مے۔

پر الله مزد جل ان کو اضف کا عظم دے گا کھران کے لیے جنم کی پشت کے اوپر صراط (بل) بنادیا جائے گا۔ جو بال ہے بادیک
اور آلوار سے تیز اوگا اس میں جگہ جگہ آ کو ساور کانٹے ہوں گے کا طرح گزر جا کیں گے بھنے کی جگیدیں ہوں گی۔ بعض سلمان اس پر
ہے بلک جمپئے جن گزریں گے بعض جو اور بعض ہوا کے جو کے کی طرح گزر جا کیں گے ابھن تیز رفار گھوڑے کی طرح اور بعض
تیز چلنے والے کی طرح گزریں گے بعض سے سام گزر جا کیں گے ابھن ذخی ہو کر گزریں گے ابعض مذہ کے بل جنم جن کر
جا کیں گے۔ اللہ عزوج فی کی محقوق میں ہے ایک گروہ جنم میں جاگرے گا ان کے اعمال ان کو ہلاک کریں گے۔ بعض کے مرف
جا کیں گے۔ اللہ عزوج فی کا اس ہے آگے تجاوز نہیں کرے گی ابھن کی نصف پنڈلیوں بھ آگ پنچ گی ابعض کے معقد اوار تک
بیروں تک آگ پنچ گی ابعض کے چروں کے مواج و سے پاس اماری کون شاعت کرے گا؟ آگ دیم بھی جنت میں
جنتی جنت جن چلے جا کی مجل کے قولوں کیس کے کہ ہمارے و سے پاس ماری کون شفاعت کرے گا؟ آگ دیم بھی جنت میں
جو جا کیں۔ پاس وہ کمیں گے کہ تمارے باپ صفرت آدم علیا ماری کون شفاعت کرے گا؟ آگ دیم بھی جنت میں
جو جا کیں۔ پاس وہ کمیں گے کہ تمارے باپ صفرت آدم علیا اسلام ہے زیادہ اس گااور کون حقد ار ہوگا۔ اللہ عزوج مل کے اس جا کی گا۔

صفرت آدم کو اپنا (صور ق ت) گناویاد آئے گا وہ کیس کے جس اس کے لائن نہیں ہوں انکین تم صفرت نوح کے پاس جاؤا وہ اللہ کے پہلے درسول علیہ السلام ہیں جن کو اللہ قائل نے مخلوق کی طرف بھیجا۔ پھروہ صفرت نوح کے پاس جا کیں گئا ور ان سے شفاعت طلب کریں گے وہ کہیں کے جس اس کے لائق نہیں ہوں انکین تم صفرت ابراہیم علیہ السلام کے پاس جاؤا کیو تکہ اللہ تعالیٰ نے ان کو اپنا قلیل بنایا ہے۔ پھرلوگ حضرت ابراہیم علیہ السلام کے پاس جائمیں کے اور ان سے شفاعت طلب کریں گئا وہ ان کو اپنا قلیل بنایا ہے۔ پھرلوگ حضرت ابراہیم علیہ السلام کے پاس جاؤا اللہ تعالیٰ نے ان کو اپنا قلیل بنایا ہے۔ پھرلوگ حضرت ابراہیم علیہ السلام کے پاس جاؤا اللہ تعالیٰ نے ان سے سرگو جی جس کلام کیا ہے اور ان بر قرات نازل کی ہے۔ اس کے لائق نہیں ہوں الیکن تم صفرت موئ کے پاس جاؤا اللہ تعالیٰ نے ان سے سرگو جی جس کلام کیا ہے اور ان برقرات نازل کی ہے۔

پھرلوگ حضرت موئی علیہ السلام کے پاس جائیں گے اور ان سے شفاعت طلب کریں ہے 'وہ کمیں کے جی اس
کے لاکن نمیں یوں 'لیکن تم روح اللہ اور کلتہ اللہ حضرت بیٹی این حریم طبعا السلام کے پاس جاؤ۔ وہ حضرت مینی
علیہ السلام کے پاس جا کر این سے شفاعت طلب کریں گے 'وہ کمیں گے جی اس کے لاکن نمیں یوں' لیکن مختر یب جی
صاحب شفاعت کی طرف تمادی رہنمائی کروں گا۔ تم (سیدنا) تھر چیج کے پاس جاؤ' رسول اللہ چیج نے فرایا پھر
لوگ جیرے پاس آئیں گے اور جرے و ب کے پاس میری تمین شفاعتیں جی جن کا اس نے جھے سے وہدہ فرایا ہے 'پھر
میں جنت کی طرف روانہ ہوں گا اور جنت کے وروازہ کو کھلواؤں گا' پھر میرے لیے جنت کے وروازہ کو کھول دیا جائے
گا ور جھے تعظیم کے ساتھ خوش آ دید کما جائے گا۔

یں جنت میں داخل ہو کر عرش کے اور اپنے رب مزر بل کو دیکھوں گائیں اس کے سامنے ہجرہ میں گر پڑوں گا۔ اور جب تک اللہ چاہے گائیں ہور تھی کر بڑوں گا۔ اور جب تک اللہ چاہے گائیں ہور اس نے اپنی عمر اللہ چاہے گائیں ہور تھی کرنے کی اجازت دے گا جو اس نے اپنی مخلوق میں سے کسی کو نہیں دی تھی۔ پھر اللہ عزو بل مجھ سے ارشاہ فرمائے گااے محما اپنا سر اٹھائے اور شفاعت کیجے 'آپ کی شفاعت تھے 'آپ کی شفاعت تھے 'آپ کی شفاعت تھی 'آپ کی دوسی شفاعت تو بالے گا۔ ہور میں اپنا سر اٹھاؤں گا۔ اللہ تعالی جم سے بوجھ گا' ملا تکہ وہ سب

کھ جانے والا ہے۔ کیابات ہے؟ جس کموں گائے میرے رب اوّ نے جمدے شفاعت کا دعدہ کیا تعلد و افل جنت کے متعلق میری شفاعت قبول کرئی اور جس نے ان کو جنت جس واخل ہونے کی میری شفاعت قبول کرئی اور جس نے ان کو جنت جس واخل ہونے کی اجازت دے دی مووہ جنت جس واخل ہو جا کیں گے۔

اور رسول الله علی ہے قرباتے ہے کم و نیا جی اپنے گھروں اور یویوں کو اس قدر نہیں پہانے جس قدر تم جنت جی اپنے گھروں اور یویوں کو نہون کو بہاؤ گئے۔ پھر رسول الله بہتے ہے فر با جس شفاعت کروں گانوریہ کموں گا اے میرسے رہا میں الله عن الله عن و و بل الله عن الله عن و و بل الله عن الله

مافظ ابن کیر لکھتے ہیں یہ حدیث مشہور ہے اور بہت طویل اور بہت غریب ہے۔ متغرق اطویٹ میں اس کے متغرق کاڑے
ہیں۔ اس میں درج بعض امور لا آئق انکار ہیں۔ اسائیل بن رافع قاضی مدینہ اس کی روایت میں منفرد ہیں اس کی صحت میں
اختیاف ہے۔ بعض نے اس کی قویش کی ہے 'بعض نے اس کو ضعیف کما ہے 'بعض نے انکار کیا ہے 'بعض نے حزوک کہا ہے۔
دراصل یہ حدیث کی احادث کو جو ز کر بنائی گئ ہے اور اس کو ایک میں سند سے بیان کر دیا کیا ہے 'اس لیے یہ قابل انکار ہوگئی۔
ہیں نے اپنے استاذ حافظ المزی سے سنا ہے کہ یہ واردین مسلم کی ایک تصنیف ہے جس کو اس نے جمع کر رکھا ہے ہمویا یہ بعض
الگ انگ حدیثوں کے شواح ہیں۔

(كنكب العطفة وقم الحديث: مهم الهريث ١٣٦٠ ع ١٣٠٠ بامع البيان ع٢٠٠ م ١٣٠٠ تغير المم ابن ابي عاتم عن ٢٠١٠ من ٢٢٦٠ ٢٥٠٠ تغير الم ابن ابي عاتم عن ٢٠١٠ ٢٥٠٠)

غيان ا**نڌر ان**

الله المركب والمردية بور والى كالموارب بالربا بالمركبة المركبة والمركبة وا

الى الله وقلاهاس و لا

سته اشر محمتن منكونة بوحالا كماس في معدايت يربرة ارماادي

الدوي وايد يانت يى ٥

الله تعالى كاار شاوي: اور (يو يجيئ) جسينا يزادي على الين المن) باب آزرت كما كيا تم بيون كو سبود قرار دين بوج منه شك ش حمين اور شماري قوم كو كمل بنوكي مخزلتون ش جناوية تامين (الانعام: عن) " المدر الانتساس و هادر معادد مناه

<u>غينان القر ان</u>

طدموم

کے فااف استدلال کیا جائے کو تکہ تمام زاہب اور اویان کے لمنے والے ان کی فعیلت اور بزرگی کا اعتراف کرتے تھے 'اور سب ان کی لمت کی طرف انتشاب کے دعوی دار تھے۔ یمود و تصاری ان کی لمت کی انتاع کے عرفی تھے 'اور مشرکین عرب اپنے آپ کو معترت ابراہیم علیہ السلام کی اولاد کئے تھے۔ اس نے ان کی هخصیت اور میرت سب پر ججت تھی۔ معترت ابراہیم علیہ السلام کا نام 'نسب اور آریخ پردائش

مانظ ابوالقائم على بن الحن ابن مساكر حتوتى اعدم عن حضرت سيد ناابراجيم عليه السلام كانسب اس طرح لكعاب. ابرانيم بن آزر اور وه بمارخ بين بن بانورين شاروخ بن ارغو بن قالع بن عابر بن شارخ بن او العفشاذ بن سام بن نوح بن

كمك بن متوسط بن خنوخ اور وه اوريس إل بن يارو بن معا كل بن قينان بن الوش بن شيث بن آدم-

حضرت ابرائیم طلیل الرحمٰن ہیں آور آپ کی کنیت ابو الفیفان ہے۔ مجے یہ ہے کہ حضرت ابرائیم عراق کے شربالل کے موضع کوئی میں پیدا ہوئے۔ مجلید نے کہا ہے کہ آزر حضرت ابرائیم کے باپ ضی تھے، مجے دہ ہے جو ہم نے پہلے ذکر کیا ہے۔ قرآن مجید میں ہے وہ ابرائیم بن آزر ہیں اور تورات میں ہے وہ ابرائیم بن نارخ ہیں۔

(مختر آريخ دمخل عيم من ١٣٣٠ مطبوعه دار اللكو ايروت ١٣٩٣م)

اس بیں اختماف ہے کہ حضرت ایراہیم کے والد آزر تھے یا تارخ؟ اعاری حقیق یہ ہے کہ آپ کے والد تارخ تھے جیسا کہ ان شاواللہ ہم عظریب بیان کریں ہے۔

محمہ بن عمروالدی بیان کرتے ہیں کہ حضرت لوح اور حضرت آدم کے در میان دس صدیاں ہیں اور حضرت ابراہیم اور حضرت لوح کے در میان دس صدیاں ہیں۔ پس حضرت ابراہیم خلیل اثر حمٰن حضرت آدم کی پیدائش کے دو ہزار مال بعد پیدا اوے 'ایوب بن حتبہ قاضی بیامہ میان کرتے ہیں:

حضرت آدم اور حضرت لوح کے درمیان دی آباء تھے اور یہ آیک ہزار مال کا عرصہ ہے اور حضرت نوح اور حضرت ابراہیم کے درمیان دی آباء تھے اور میں آباء ہے اور حضرت ابراہیم اور حضرت مویٰ کے درمیان سات آباء ہیں اور حضرت مویٰ کے درمیان سات آباء ہیں اور حضرت مویٰ کور حضرت میں کے درمیان آبک ہزار پانچ سوسال ہیں اور حضرت میں اور اور حضرت میں اور حضرت میں اور حضرت میں اور اور حضرت ا

(مختر آد یخ دملل مجس م ۳۳۹-۳۳۸ مطبوعه داد الفکو میروت)

علامه بدر الدين محود بن احمد يمنى متوتى ١٥٥٥ مد اللهي بين:

حضرت ایرائیم علیہ السلام عضرت آدم علیہ السلام کی پیدائش کے تین بڑار تین سوسیتیس (۱۳۳۳) سال بعد پیدا ہوئے اس وقت طوفان نوح کو بارہ سو تریش (۱۳۳۳) سال گزر بچکے تھے۔ زیادہ مجھے یہ ہے کہ حضرت ایرائیم علیہ السلام دو سوسال کی عمر میں گزار کر فوت ہوئے کہ کا ایک سو چھپڑ (۱۳۵۵) سال کی عمر تھی۔ آپ گزار کر فوت ہوئے کہ کا ایک سو چھپڑ (۱۳۵۵) سال کی عمر تھی۔ آپ مبرون جی مقدور ہے۔

(عدة الخاري عام معمور ادارة اللباعة الميرية معر ١٣٨١ه)

حضرت ابراہیم علیہ السلام کی زندگی کے اہم واقعات

حعرت ابراہیم ظلیل اللہ علیہ السلام نے متعدد بار توحید کو ثابت کیالور مشرکین کے قول کو دلا کل سے باطل کیا۔ انہوں نے اپنے عرفی بلب سے مناظرہ کیا اپنی قوم سے اور کا دونت سے اور کافروں سے مناظرہ کیااور راہ حق میں سر خرو ہوئے۔ عرفی بلب

تأبيان انقر أن

ے مناظرہ کی یہ مثل ہے:

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ لِمَا بَتِ لِمَ نَعْبُدُمَ الْأَيْسُمَعُ وَلَا يُبْهِرُ رَولَا يُعْيِى عَنْكَ صُيُفًا ٥ (مريم:٣٠)

اورائی قوم سے مناظرہ کی بید مثل ہے: مَلَقَارُ ٱلنَّنَا مُسَنَّى بَارِغَةً فَالَ هٰ ذَارَتِيْ هٰ ذَا

اَكُبَرُ فَلَقَا اَفَلَتُ قَالَ يُغُومُ اِنِي بَرِعَهُ عَالَ هَدَا رَبِي هَدَا اَكُبَرُ فَلَقَا اَفَلَتُ قَالَ يُغُومُ إِنِّي بَرِيْ بَرِيْ مِنْ مِنْ اللهِ عَالَ يُغُومُ إِنِّي بَرِيْ فَي مِ

تُشَيِر كُنُونَ (الانعام:٨٨)

جب ایراهیم فے اپنے (حرقی) باپ سے کمااے میرے باب ا تم کوں ایسے کی پر منٹل کرتے ہو جو نہ منتا ہے 'نہ دیکھا ہے ا، ر نہ تمارے کمی کام آسکتا ہے۔

پرجب انہوں نے روش آفاب دیکھاؤ کما 'یہ میرارب ہے؟ یہ (ان مب ہے) برا ہے ' پرجب ود فردب ہو کیا قر انہوں نے کمااے میری قوم ای ان مب سے بیزار ہوں جن کو تم اللہ کا شریک قرار دیتے ہو۔

جب ایرایم لے کما میرا دب زندہ کرتا ہے اور مارتا ہے اس (بادشاہ) نے کمامی زندہ کرتا ہوں اور مارتا ہوں ایرا ہیم لے کما ہے تک افذہ مورج کو مشرق سے نکاتا ہے تو اس کو مغرب سے نکال تواس یہ وہ کافر مکا بکارہ کیا۔

ہی (ایرائیم کے) پرے بدے کے موامب بنوں کے کلزے کوے کردیئے کا کہ وہ ان کی طرف رجوع کریں۔ اور باوشاه وتت عناظرو كي يدمثل إ

إِذْ قَالَ إِبْرَاهِهُمُ رَبِينَ الَذِى يُحَيِينَ وَيُوبِينَ وَيُوبِينَ وَاللَّهُ فَالَ أَلَّ أَلَا الْمُرَاهِبُمُ فَإِنَّ اللَّهُ فَالَ أَلْرَاهِبُمُ فَإِنَّ اللَّهُ لَا أَلْرَاهِبُمُ فَإِنَّ اللَّهُ لَا أَلْرَاهِبُمُ فَإِنَّ اللَّهُ لَا أَلْمُ يُوبِي فَاتِ بِهَا مِنَ لَا لَكُنْ يُولِ فَاتِ بِهَا مِنَ الْمَثْرِقِ فَاتِ بِهَا مِنْ الْمُثَالِقِ فَاتِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ الللللَّهُ الللّهُ اللَّهُ الللّهُ الللّهُ اللللللّهُ الللللّهُ اللللللّهُ الللّهُ الللللللّهُ اللللللّهُ الللللّهُ الللللللّهُ الل

اور کافروں منے مناظرہ کی بے مثل ہے: فَحَعَلَهُم مُحَذَاذًا إِلَّا كَبِيْرًا لَهُم لَعَلَهُمْ إِلَيْهِ يَبِرُ وَمُعُونَ (الانبياء: ۵۸)

اور جب کافران کو والا کل سے جواب دینے سے عابر آگے تو انسوں نے کمان کو جاا ڈالو لور اپنے بتوں کی مدد کرو معرت ا ابراہیم علیہ انسانام کو آگ یں ڈال دیا کیالور اللہ نے اس آگ کو سلامتی کے ساتھ فینڈ آکر دیا۔ اس واقعہ کے بور معرت ابراہیم علیہ انسانام نے اپنے کو اللہ کی راہ میں قربان کر دیا۔ انسوں نے اپناول عرفان اللی کے لیے ' ذبان تو دید پر برهان کے لیے اور اپنے بدن کو اللہ کی راہ میں اگر میں جمو تھے کے لیے لور اپنے بینے کو قربانی کے لیے اور اپنے بینے کو قربانی کے لیے اور اپنے مال کو مسانوں کے لیے وقف کردیا۔ انسان کو اللہ کی راہ میں آگ میں جمو تھے کے لیے لور اپنے بینے کو قربانی کے لیے اور اپنے مال کو مسانوں کے لیے وقف کردیا۔

آ زر کے متعلق مفسرین کے مختلف اقوال

علامد ابرالفرج عبد الرحمن بي على بن محد الجوزي المتوفى عديد في آزر كم متعلق جار قول لكيم بين:

ا- معترت ابن عباس رضى الله عنما حسن معرى اور ابن اسحاق تے كماك آزر معرت ابراہم عليه البام كے والد كانام ب-

٢- كايد كما آزريت كالم باور معرت ايرايم كوالدكالم مارخ ب-

ا : زجاج نے کماکہ آزر نام نمیں ہے کلہ فرمت کا کلہ ہے المویا معزت ابراہیم علیہ السلام نے فرمایا اس خطاکار اتو بتوں کو

معبود قرار دے رہاہے۔

۱۰۰ مقال بن حیان نے کماکہ آزر معزت ایراہیم کے باپ کاہم نہیں ہے ایدان کالقب ہے۔ (زاوالمبیر عجم میں ۱۷-۵۷ معلوں کتب املائی میروت) اس من مغرین کاختلاف یک صرت ایراییم علیہ السلام کے والد کا بھم آور یہ یا بارٹ ہے۔ وراصل یہ اختلاف ایک اور اختلاف یہ جی ہے اور وہ یہ ہے کہ انجیاہ علیم السلام کے والدین کا کافر ہو تا جائز ہے یا تعیں۔ ایام این جربے کیام رازی علامہ قرطمی اور علامہ ایو الحیان و فیر بھی کی رائے ہے کہ این کے والدین کا کافر ہو تا جائز ہے محور متاخرین علی سے علامہ نیشاپوری علامہ سیوطی اور علامہ آلوجی کی تحقیق ہے کہ انبیاء کر ام علیم السلام کے آباء کرام مومن تھے اور ہمارے نبی سیدنا محمد المجان کے سیوطی اور علامہ آلوجی کی تحقیق ہے کہ انبیاء کرام علیم السلام کے آباء کرام مومن تھے اور ہمارے نبی سیدنا محمد المراہم علیہ المسلام کے والد کا بام آباء اور البحات مومن تھے اور ہمارے میں جائے ہو تا ہے کہ حصرت ایراہیم علیہ السلام کے والد کا بام آباء کی اور آب کا بیا تھا اور عرب محلورات علی چاپ بالطابی و آ رہتا ہے۔ حضرت ایراہیم علیہ السلام کا باپ بارخ تھا نہ کہ آ ذرا

نسب میان کرنے والول کے ورمیان اس امری کوئی اختلاف نیس ہے کہ صفرت ایراہیم کے والد کا ہام تارخ تھا اور قرآن اس پر والات کر ناہے کہ ان کا ہم آزر تھا۔(معانی التر آن واعراب للاجاج ،ج۴م ١٥٥٥)

انام ابن جرم اپنی مند کے ساتھ روایت کرتے ہیں کہ مجلد نے کماکہ آزر معرت ایراہیم علیہ السلام کے باپ کانام نہیں ب وہ بت کانام ب- (جامع البیان '27 موسام معبور دار اللاکو ' جودت ' الاسلام)

اہم میدافر حنّن بن محدین اور لیں رازی ابن ابی حاتم متوتی ہے ہو۔ اپنی مند کے ساتھ روایت کرتے ہیں: منحاک معترت ابن عباس رمنی اللہ عنما ہے اس آیت کی تغییر میں روایت کرتے ہیں۔ معترت ابراہیم کے باپ کا یام آزر نہیں تھا مین کے باپ کا یام تارخ تھا۔

كلوميان كرست بي كه آزر صغرت ايرابيم عليه السلام كابلب تعيل تحل

منی کی میان کرتے ہیں کے حضرت ابن عباس نے اس آیت کی تغییر میں فرملیا حضرت ابراہیم طیہ السلام نے آ ذرہے کہا کیا تم انتہ کو چموڈ کر بھول سے مدد مانکتے ہوا ایسانہ کرو اور حضرت ابن عباس فرماتے تھے حضرت ابراہیم کے والد کا ہام آزر نہیں تھا، ان کے باپ کا ہام آدرخ تھا۔ (تغییر ایام ابن الی حاتم 'جسامی ہے ہے مطبور کتیہ زوار مصطفیٰ کہ کرمہ ' کا اللہ) خاتم الحفاظ حافظ جال الدین سیو هی متوفی اللہ حد بیان کرتے ہیں:

الم این الی حاتم اور الم ابوالشیخ نے معرت این عہاں رمنی اللہ فنما سے دوایت کیا ہے کہ آزریت ہے اور معرت ایرائیم کے باب کا یام یازر ہے اور ان کی بار کا یام مثل ہے اور ان کی بور کا یام مارہ ہے اور ان کی باندی معرت اسامیل کی بال ایرائیم کے باب کا یام بازر ہے اور ان کی بان کا یام ایرائیم کے بابر سے اس کا یام ایرائی بیر اور ایام این المنڈ ر آور ایام این الی حاتم نے مجاہد ہے دوایت کیا ہے۔ بندوں نے کیا آزر معرت ایرائیم کے والد کا یام نہیں ہے "کیان یہ بعد کا یام ہے۔

(درمشور "ج ۳ مل ۲۰۰ مغیوصد او الفکو "پیروت ۱۳۱۳ مه)

آ زر کو حضرت ابراہیم کا پاپ کمنے کی توجیہ خاتم المفاظ مافظ جلال الدین سیو ملی منونی 100 تحریر فرائے ہیں:

اہم ابن المنذر نے مد می کے ساتھ ابن جرتے ہیں آبت کی تغیری دوایت کیا ہے کہ آزر حضرت ابراہم کاباپ نسی ہے 'وہ ابراہیم بن مارخ بن مادور بن شاروغ بن عابر بن ظالع جی۔ قرآن مجید بیں آزر کے اور حضرت ابراہیم کے اب (باب) کا اطلاق کیا گیا ہے۔ اس کی بیہ توجید کی می ہے کہ عرب میں

<u> ڪياڻ الڌر ڳڻ</u>

"اب" كااطلاق عم رب كثرت كياجا آب أكر چديد مجاز ب- قرآن مجيد مل ب

آمُ كُمنتُم شُهَدَآء إِذْ حَصَرَبَعَقُوبَ الْمَوْتُ كَالُوا الْمَوْتُ كَالْمَالُونُ لَا كَالْمَالُونُ لَا تَعُبُدُونَ مِن بَعْدِى قَالُوا الموس قالِمَ اللّهُ فَالْوُا الموس قالِمُ اللّهُ مَا تَعُبُدُونَ مِن بَعْدِى قَالُوا الموس قالِم اللّهُ مَا تَعْبُدُولَ المَّالُونُ مِن اللّهُ مَا اللّهُ مِن اللّهُ مَا اللّهُ مِنْ اللّهُ مَا اللّهُ مِن اللّهُ مِنْ اللّهُ مَا اللّهُ مِنْ اللّهُ مَا اللّهُ مِنْ اللّهُ مَا اللّهُ

کیاتم اس وقت) ما ضرفے بب بیتوب کو موت آئی بب انوں نے اسپنے بینوں سے قرمایا تم میرے بعد کس کی عمادت کرو مے؟ انہوں نے کمائم آپ کے معبود اور آپ کے باپ وادا ایرامیم 'اسامیل اور اسحاق کے معبود کی عمادت کریں

اس آیت میں معزت اسامیل پر باپ کا اطلاق کیا گیا ہے' طلا تکہ وہ معزت بیتوب کے باپ نمیں' بلکہ پچا ہیں اور اہم ابوالعالیہ نے اس آیت کی تغییر میں کما کہ اس آیت میں پچا پر باپ کا اطلاق کیا گیا ہے اور انہوں نے مجر بن کعب قرعی ہے روایت کیا ہے کہ مامول والدہ اور پچا والدہ اور اس آیت کی تلادت کی۔

(الحادي للفتادي عليم مع ١٠٠ مل معلومه مكتبه نوريد رضويه "لاكل يور "ياكستان)

حضرت ابراجيم عليه السلام كوالدك مومن موت يروليل

الم ابن المنذر في الى تغير على سند مح كم ما تقد صفرت سليمان بن صورت روايت كياب كر جب كفار لے صفرت ابرائيم عليه السلام كو آف عن والے كار اور كياتو وہ كئرياں جمع كرتے گئے وہ كي ايك بوره عي حورت بھى كئزياں جمع كرتے گئى۔ جب وہ صفرت ابرائيم عليه السلام كو آگ عن والے عن والے گئے تو آپ سے كما" حسسى الملله و نصم المو كيل "اور جب انہوں نے آپ كو آگ عن والى جو الله عن والى جو الله عن والى بيار بيار بيار بيار بيار بيار بيار كونى بردا و سلاما على ابراهيم "(الانميام بيار) اے آگ تو آپ ايرائيم برق وجد الله على ابراهيم "(الانميام بيار) اے آگ تو آپ ايرائيم بيلى الله من والى بوجد صفرت ابرائيم عليه السلام كے چياتے كما ميران وجد سے ان سے عذاب دوركيا كيا ہے " تب الله تعلق الكرائيم بي الله من والى بوجد على بوركيا كيا ہے " تب الله تعلق كما ميران وجد سے ان سے عذاب دوركيا كيا ہے " تب الله تعلق كے آگ كما ميران وجد سے ان سے عذاب دوركيا كيا ہے " تب

اس الرص به تعرف کی می ہے کہ آزر حضرت ایراہیم کا پی تھااور اس الر سے به بھی تابت ہو آئے کہ آزراس وقت میں ہاک کیا کیا تھا جب حضرت ایراہیم علیہ انسلام کو بھٹ میں ڈالا کیا تھا اور اللہ سیجانہ نے قرآن مجید میں یہ خبردی ہے کہ جب حضرت ایراہیم علیہ انسلام کو بہ معلوم ہو گیا کہ آزر اللہ کا دغمن ہے تو انہوں نے اس کے لیے استغفار کریا ترک کردیا 'اور احادے میں آیا ہے کہ جب وہ حالت شرک میں مرکیا تو حضرت ایراہیم علیہ انسلام کو اس کا دغمن خدا ہونا معلوم ہو گیا اور انہوں نے پھراس کے لیے استغفار نہیں کیا۔
لیے استغفار نہیں کیا۔

الم این ابی عاتم نے سد سی کے ساتھ حضرت این عباس دھی انتہ عتما ہے دوایت کیا ہے کہ حضرت ابراہیم علیہ السلام اپنے (عرفی) باپ کے لیے مسلسل استففاد کرتے دے اور جبوہ عرکیاتوان کو معلوم ہوگیاکہ یہ انتہ کاد شمن ہے۔ پھرانہوں نے اس کے لیے استففاد نہیں کیالور انہوں نے جی بن کعب کارہ مجابہ اور حسن وغیرہم ہے دوایت کیا ہے کہ حضرت ابراہیم اس ک سات میں اس کے ایمان کی امید در کھتے تھے اور جب وہ شرک پر عرکیاتو وہ اس سے بیزار ہو گئے۔ پھر آگ میں ڈالے جانے کے حیات میں اس کے ایمان کی امید در کھتے تھے اور جب وہ شرک پر عرکیاتو وہ اس سے بیزار ہو گئے۔ پھر آگ میں ڈالے جانے کے واقعہ کے بعد حضرت ابراہیم علیہ السلام نے شام کی طرف بجرت کی بھیساکہ قرآن مجید نے اس کی تفریح کی ہے پھر ابجرت کی موجود کی گئی تا اور انجام کار کائی عرصہ بعد وہ معرمی داخل ہوئے اور وہاں حضرت ساوہ کے سب سے طائم باوشاہ کے ساتھ ان کاواقعہ چش آیا اور انجام کار حضرت باجرہ آپ کی بائدی بنادی شکن اس کے بعد آپ پھرشام کی طرف ہوٹ گئے۔ اس کے بعد اللہ توالی نے آپ کو تھم دیا کہ حضرت باجرہ آپ کی بائدی بنادی شخص ناس کے بعد آپ پھرشام کی طرف ہوٹ گئے۔ اس کے بعد اللہ توالی نے آپ کو تھم دیا کہ تو دھائی۔ بدرہ ای بید دھائی۔ بدرہ ای بعد دیا دیا ہوئی اس کے بعد آپ پھرشام کی طرف ہوٹ گئے۔ اس کے بعد اللہ توالی نے آپ کو تھم دیا کہ بید دھائی۔ بدرہ آپ کی بائدی بنادی گئیں اس کے بعد آپ پھرشام کی طرف ہوٹ گئے۔ اس کے بعد اللہ توالی نے بید دھائی۔

رَّتُنَا إِنِّيُ اَسْكَنْتُ وِنَ ذُرِيَتَيُّ وَوَالَا عَبُرِذِي وَلَا عَبُرِذِي السَّالِقَ عَلَيْهِ الْمُحَرَّعِ وَتَمَا لِيُعِينُهُوا الصَّلُوةَ فَاحْعَلُ الْفَيدَةُ قِبْلِ السَّاسِ نَهُوىَ الصَّلُوةَ فَاحْعَلُ الْفَيدَةُ قِبْلِ السَّاسِ نَهُوىَ السَّهِ مِنَ السَّاسِ نَهُوىَ السَّهِمُ وَ الرَّفَهُمُ قِبْلَ السَّمَاتِ لَعَلَّهُمُ مَا يُعْفِي وَمَا السَّمُونِ لَعَلَّهُمُ مَا يُعْفِي وَمَا السَّعْفِي وَالْمُونِ وَمَا السَّعْفِي وَمَا اللَّهِ مِنْ وَمَا السَّعْفِي وَمَا اللَّهِ مِنْ وَمَا السَّعْفِي وَمَا اللَّهُ وَمَا اللَّهُ وَمَا اللَّهُ وَمَا اللَّهُ وَمَا اللَّهُ وَمَا اللَّهُ وَمِنْ فَيْ اللَّهُ وَمِنْ اللَّهُ وَمِنْ اللَّهُ وَمِنْ أَنْ اللَّهُ وَمِنْ أَنْ اللَّهُ وَمِنْ فَيْ اللَّهُ وَمِنْ فَيْ اللَّهُ وَمِنْ أَنْ اللَّهُ وَمِنْ أَنْ اللَّهُ وَمِنْ أَلْهُ وَمُنْ أَنْ اللَّهُ وَمِنْ أَنْ اللَّهُ وَمِنْ أَلْكُونِ مِنْ أَنْ اللَّهُ وَمُ اللَّهُ وَالْمُ اللَّهُ وَمِنْ أَلِي وَالْمَالُونُ وَمِنْ فَيْ اللَّهُ وَمُ اللَّهُ وَمُ اللَّهُ وَاللَّهُ فَى وَلِلْمُ اللَّهُ وَمِنْ اللَّهُ وَاللَّهُ وَالْمَالُونَ وَمِنْ فَيْ اللَّهُ وَاللَّهُ فَيْ اللَّهُ وَاللَّهُ فَيْ اللْمُ الْمُعْمِلِي وَالْمَالِقُ وَاللَّهُ فَيْ اللَّهُ وَاللَّهُ فَيْ وَلِلْمُ اللَّهُ وَاللَّهُ فَيْ اللَّهُ وَاللَّهُ فَيْ اللْمُعِلَى الْمُعْمِلِي وَالْمُلْكِلِي الْمُعْمِلِي وَاللَّهُ فَيْ اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ فَيْ اللْمُعْلِي وَالْمُ الْمُعْمِلِي وَالْمُ اللَّهُ وَالْمُ الْمُعْمِلُ وَاللَّهُ فَيْ الْمُعْلِقُ وَاللَّهُ فَا الْمُعْمِلُ وَالْمُنْ الْمُعْمِلُ اللْمُ الْمُعْمِلُ اللَّهُ وَالْمُعْمِلُ اللَّهُ وَاللَّهُ فَا الْمُعْمِلُ الْمُعْمِلُكُولُ اللَّهُ الْمُعْمِلُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْمِلِي الْمُعْلِقُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْمِلُ اللَّهُ الْمُعْمِلُ الْمُعْلِقُ اللَّهُ الْمُعْمِلُ الْمُعْمِلُ الْمُعْمِلُ الْمُعْمِي الْمُعْلِقُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الل

اس آیت میں یہ تقریح ہے کہ حضرت ایرائیم علیہ السلام نے اپنے بچا آزر کے فوت ہونے کے طویل عرصہ بعد اپنے والدین کی منظرت کے لیے دعا کی۔ اس سے میہ واضح ہوگیا کہ قرآن مجید میں جس مخض کے کفر اور اس سے حضرت ایرائیم علیہ السلام کے بیزار ہوئے کاؤگرہے وہ ان کے بچاھے 'نہ کہ ان کے حققی والد۔

الم محد بن معد فے اللبخات میں کلبی ہے روائت کیاہے کہ جس وقت معزت ابرائیم علیہ السلام نے بال ہے شام کی طرف جرت کی قو ان کی محر سیستس (۳۷) سال تھی ' مجرانہوں نے یکھ عرصہ حزان میں قیام کیا ' مجر سیستس (۳۷) سال تھی ' مجرانہوں نے یکھ عرصہ حزان میں قیام کیا ہجر کے اور ایلیا اور فلسطین کے در میان قیام کیا۔ وہاں ہے معرف کے اور ایلیا اور فلسطین کے در میان قیام کیا۔ مجروبی کے لوگوں نے آپ کو مثلیا تو آپ رملہ اور ایلیا کے در میان سلے کے اور اہام این معد نے واقد کی ہے دوایت کیا ہے کہ فوے سال کی محرض صفرت ابرائیم علیہ السلام کے ہاں صفرت ابنا میل علیہ السلام پیرا ہوئے اور ان دونوں اثر وں سے یہ معلوم مورت اس کی محرض صفرت ابرائیم علیہ السلام کے ہاں صفرت ابنا میل علیہ السلام پیرا ہوئے اور ان دونوں اثر وں سے یہ معلوم میں اور مکھ محرصہ میں جو آپ نے دعا کی مقی اور مکہ محرصہ میں جو آپ نے دعا کی مقی اور مکہ محرصہ میں جو آپ نے دعا کی مقی اور مکہ محرصہ میں جو آپ نے دعا کی مقی اور مکہ محرصہ میں اور مکھ مال کا عرصہ ہے۔

(الحادي للفتاوي عمم ٢١٥-١١٥ مطبور مكتب نوريد رضويه اليمل آباد)

ظامریہ ہے کہ آزر کے مرف کے پہاں سے زیادہ مال کے بود صفرت ابرائیم علیہ المنام نے اپ والدین کی منفرت کے لیے دعائی ہے اور جب کہ آزر سے دہ بیزار ہو چکے تنے اور اس کے لیے دعائو ترک کر چکے تنے تو اس سے بہ ظاہر ہواکہ آزر اور فضی تنا ہے ہی وجہ ہے کہ قرآن مجید نے ان کے بچاآزر کو اب (عرفی بلب) کے لفظ سے تجیرکیا ہے اور ان کے حقیق باپ کو والد کے لفظ سے تجیرکیا ہے ' آ کہ تغییر عنوان تغییر معنون پر دالات کر سے ہم نے علام سیوطی کے جس استدال کو تفصیل کے ماتھ نقل کیا ہے ' ملام آنوی سے بھی اس کا ظلامہ ذکر کیا ہے۔

(روح المعاني ايز عاص ١٩٥٥ طبع بيروت)

قیامت کے دن آزر کوباپ کنے کی توجید

اس ملسلہ میں اس مدیث ہے بھی احتراض کیا جا آہے: الم محرین اساعل بخاری متونی ۱۵ مدروایت کرتے ہیں:

حضرت ابو ہریرہ روہنی بیان کرتے ہیں کہ ٹی چھیم نے فرالیا کہ حضرت ابراہیم علیہ السلام کی اپنے (عرفی) باپ آزرے قیامت کے دن طلاقات ہوگی اور آزر کے چرے پر دھواں اور گروہ فہار ہوگا۔ حضرت ابراہیم اس نے فرمانی کے اس کے ابیم سے فرمانی کے اس کے دن طلاقات ہوگی اور آزر کے چرے پر دھواں اور گروہ فہار ہوگا۔ حضرت ابراہیم نے نہیں گا آن کے (عرفی) باپ کس کے "آج جی آپ کی عافر الی ضمی کروں گا۔ حضرت ابراہیم فرمانی کی کا فرمانی و میں کرے گااور اس سے برای اور کہا شرک کے اس میرے دور ہوا اللہ تعالی فرمانے گا جی خودہ کا فروں پر حزام کردی ہے ' ہر کہا جائے گا اس کے باتیم اسلام دیکھیں کے قودہ گذر کی میں تحزا ہوا ایک بو ہوگا۔ اور گا اس کو تا گول سے برائری ایل اور اس ایک بو ہوگا۔ اور گا اس کو تا گول سے برائری میں تحزا ہوا ایک بو ہوگا۔ اور کا تاکول سے برائری میں انسان دیکھیں کے قودہ گذرگی میں تحزا ہوا ایک بو ہوگا۔ اور اس کو تا گول سے برائری والے والے گا

(می ابغاری می از قم الحدیث: ۱۳۳۰ سنن کبری النسائی کا از قم الحدیث ۵۵۳ المستدرک ۲۴ م ۴۳۸ کنز العمل ا بچه از قم الحدیث: ۱۳۲۷ منگلونة المعالی جس رقم الحدیث: ۵۵۳۸)

مافظ مماد الدين ابن كيرشافع متونى مديد لكية بريد

یہ صدیث اس پر داالت کرتی ہے کہ صفرت ابراہیم کے باپ کا نام آزر ہے اور جمبور اہل نسب ' بد شمول حضرت ابن عباس رمنی اللہ ختماسی اس پر متنق میں کہ حضرت ابراہیم کے باپ کا نام آرخ ہے اور اہل کتاب تارح کہتے ہیں۔

(البدايدوالساية عام ١٣٠١ مطبور داو الفكو ايروت ١٩٤١م)

في عبد الحق معدث والوى متونى عده الداس مدعث كى شرح بن لكست بين:

بعض علاہ رحم اللہ اس بات کے قائل ہیں کہ رسول اللہ جین کے تمام آباہ کرام شرک اور کفری آبادرگی ہے پاک اور منزہ ہیں۔ ان کے زویک آزر حضرت ابراہیم علیہ السلام کے پہائیں ان کو مجاز اباپ کما کیا ہے اور ان کے باپ کا ہام آر فی ہے۔ اس کے زویک آزر حضرت ابراہیم کا ہے باپ ہے ملاقات ہوگی آنک کو ان کے حقیق والدی طرف زامن حتوج نہ ہوا اس وجہ سے مطلقانسیں فرمایا کہ مصرت ابراہیم کی اپنے باپ سے ملاقات ہوگی آنک کو ان کے حقیق والدی طرف زامن حتوج نہ ہوا اور ان کے والد کے ساتھ آزر کا ذکر کیا آنا کہ معلوم ہوکہ بھی مجازی باپ مراوہ ہے۔

(اشعته اللمعات عم م مهم ١٠٠٠ مطبوعه مطبع تيج كمار " فكمتو)

في ادريس كاند علوى متونى مه مورد اس مديث كى شرح بس كفية بين:

تحقیق ہے کہ آزر معرت ابراہیم علیہ السلام کا پہا تھا اس کو مجاز متعاوف کے طور پر بہ کما گیاہے اور آپ کے بہا کا مرخ ہے۔ بعض محققین علاء جنہوں نے آدم علیہ السلام سے نے کر اعارے نی ہے ہی کے تمام آباہ سے کفری نفی کی ہے اس کی بی تحقیق علاء جنہوں نے آدر کا ذکر اس لیے ہے کہ آگر ہوں کما جاتا کہ معرت ابرائیم کی آپ بہت ان کی بی تحقیق ہوالہ کی طرف ذہن جلا جاتا کو رجب آزر کی قید لگائی تو ان کے حقیق والد کی طرف ذہن ما تات ہوگ کو اس سے ان کے حقیق والد کی طرف ذہن جلا جاتا کو رجب آزر کی قید لگائی تو ان کے حقیق والد کی طرف ذہن منس جائے گا۔ معرت ابرائیم کا اختیاط اور ان کی الفت اپنای منس جائے گا۔ معرت ابرائیم کے اس بچاپر بلپ کا اطلاق اس لیے کیا گیاہے کہ معرت ابرائیم کا اختیاط اور ان کی الفت اپنای

(التعليق السيح على ١٠٠١ معلوم مكتب تعمانيه كابور)

اس مدیث پر دو سرااعتراض سے ہوتا ہے کہ جب معرت ایراجیم علیہ السلام زندگی جس آزر کے دشمن خدا ہونے کی وجہ ہے اس سے ویزار ہوگئے تھے تو پھر قیامت کے دن اس کی سفارش کیوں کی؟ اس کا جواب سے ہے کہ معنرت ایراجیم علیہ السلام ازر کے لیے نجلت کی دعائر نے سے بیزار ہو گئے تھے اور قیامت کے دن انہوں نے اس کی نجلت کے لیے سفارش نہیں کی بلکہ اس کے عذاب جس تخفیف کردی جاتی ہے۔ اس کے عذاب جس تخفیف کردی جاتی ہے۔ اس کے عذاب جس تخفیف کردی جاتی ہے۔ تی روبیل جی جو پر دلیل

المارے نی سیدنا مجد بھی کے سلسلہ نسب جی تمام آباء کرام مومن ہے۔ اس پر ولیل ہے ہے کہ اطاب معجد اس پر ولیل ہے ہے کہ اطاب معجد اس پر ولیل ہے ہے کہ اطاب معجد اس پر ولائت کرتی ہیں کہ حضرت آدم علیہ السلام ہے لے کر حضرت عبداللہ تک نبی جھین کے تمام آباء کرام اپنا اپنے زمانوں میں مسب سے خیر(بمنز) اور سب سے افضل تھے کور قرآن جیدس ہے تصریح ہے:

وَ لَعَبِدُ مُوْمِينَ عَيْرَ مِنْ مُنْسِرِكِ وَ لَوْ اور بِ فِك مومن فِكام 'مثرك (آزار) بهرب فواه أعتب كم البقره (۲۲) و تين مُنْسِرِكِ وَ لَوْ اور بِ فِك مومن فِكام 'مثرك (آزار) بهرب فواه

اور جب مومی مشرک ہے بہتر اور افضل ہے اور نی رہی کے آباد کرام اپنے اپنے ذباتہ میں مب ہے بہتر اور افضل سے قو ضروری ہواکہ وہ مومی ہوں۔ نیز احلات اور آثار اس پر دالات کرتے ہیں کہ حضرت آوم علیہ اسلام یا حضرت نوح علیہ السلام کے بعد ہے سید تا اور ایجی کی بیشت تک کیا گیا مت تک روئ ذمین پر کچھ ایسے اوگ رہے ہیں جو اللہ تعالی کی توجید پر قائم رہے اور اس کی مہات کرتے رہے اور ان می کی وجہ ہے ذمین محفوظ رہی ور نہ ذمین اور ذمین والے ہذاک ہو جاتے اور ان مقدمات سے قطعی طور پر یہ تیجہ نکا ہے کہ نی پیچین کے آباد میں کوئی مشرک نمیں تھا۔ کیو تک بر تیمن اور ان مقدمات سے قطعی طور پر یہ تیجہ نکا ہے کہ نی پیچین کے آباد میں کوئی مشرک نمیں تھا۔ کیو تک ذمین اور مشرک نمیں تھا۔ کیو تک ذمین اور افضل میں دی اور میں مشرک ہے بہتر اور افضل تھے اور مومن مشرک ہے بہتر اور افضل جو اور مومن مشرک ہے بہتر اور افضل جو اور مومن مشرک ہے کہ ذمین ہو مومن نمی کریں گے کہ ذمین اور مومن نمی کریں گے کہ دیش کریں گے کہ دیش کی موسین اور مومدین سے خالی نمیں دی اور پر اس امر پر دانا کل پیش کریں گے کہ صفرت آدم علیہ السلام سے لے کر صفرت میں میں اور والے سے بہتر اور افضل تھے۔ اسلام سے لے کر صفرت قدم علیہ السلام سے لے کر صفرت قدم نمی بھی ہو کے تمام آباء کرام اسے اپنوں میں سے بہتر اور افضل تھے۔

موحدین اور عابدین سے زمین بھی خالی شیس رہی خاتم الحفاظ مافظ جلال الدین سیو ملی متوفی الله بیان فرائے ہیں:

المام عمد الرزاق نے اپنی مصنف میں از معمر' از ابن جریج ' از بین المسیب روایت کیاہے ' روئے زمین پر بیشہ تیامت تک کم از کم سات مسلمان رہے ہیں اور آگر وہ نہ ہوتے تو زمین اور زمین والے ہلاک ہو جاتے۔

الم بخاری اور مسلم کی شرفہ کے مطابق ہے معت تھے ہے اور ہرچند کہ یہ حضرت علی جونی کا قول ہے الکین اس قام کی بات رائے سے نمیں کی جا سکتی کی ہے معدے حکمات مرفوع ہے۔ الم این المنذر نے اس مدے کو الم عبد الرزاق کی سند ہے اپنی تفریر میں درج کیا ہے۔ الم این جربی شرین حوشب سے روایت کیا ہے۔ انہوں نے کماز مین میں بیشر چودہ ایکی تفوس رہے جن کی دجہ سے اللہ تعالی زعین والوں سے عذاب دور کر تا تعالور این کی برکت زعین میں پہنچا تا تھا کا مواصرت ابراہم علیہ الموام کے ذال کے کیونکہ وہ اسے ذالہ میں صرف ایک تھے۔

الم ابن المنذر في قاوه ما الى تفير من روايت كياب كه بيشه زمن من الله ك اولياء رب من بب ما الله تعالى الله تعالى عدرت أدم عليه السلام كو زمين برا آداب مجمى زمين البيس كه ليه خلل نمين ري اس من بيشه الله تعالى ك اولياء رب

یں جواس کی اطاعت کرتے دے ہیں۔

مافظ ابو عمو ابن عبد البراز قام از فام بالك روايت كرتے بين كه جمعے مدعث كئي ہے كه حضرت ابن عباس رمنى اللہ الله عنمانے قربالاجب تك زيمن بن شيطان كاولى ہے تو زيمن بن اللہ كاولى بھى ہے۔

الم احمد بن طنبل نے کیاب افزود جی بخاری اور مسلم کی شرط کے مطابق سند میچ کے ساتھ صفرت ابن عباس رسی اللہ عندات روایت کیا ہے دوایت کیا ہے کہ حضرت ابن عباس رسی اللہ عندات روایت کیا ہے کہ حضرت اور علیہ السلام کے بعد ذیمن مجمی سات ایسے نفوس سے خال نہیں رہی جن کی وجہ سے اللہ تعالیٰ زیمن والوں سے عذاب دور کر آ ہے۔ یہ حدیث بھی تھا مرفع ہے۔

الم ازرتی نے ماری کھ میں زمیری تھے۔ رواعت کیا ہے کہ بیشہ نیٹن پر کم از کم سلست ایسے مسلمان رہے ہیں کہ اگر وہ نہ ہوتے تو زیٹن اور ڈیٹن والے ہلاک ہو جاتے۔

المام ابن المنذر فے اپنی تغیری مند مجی کے ساتھ ابن جرتے سے روایت کیا ہے' انہوں نے کما حضرت ایراہیم طبہ السلام کی اولاد سے کچھ لوگ پیشہ فطرت پر دے اللہ کی حباوت کرتے دہے۔

لهم برار نے اپنی مشد بھی اور اہم این جریہ اہم این المنظر الور الم این الی حاتم نے اپنی اپنی تفایر بھی اور اہم حاکم نے المستدرک بھی تھی سند کے معاقد اس آیت "کان الساس امدة واحدة "کی تغیر بھی روایت کیا ہے کہ حضرت ادم اور صفرت نوع سکہ درمیان وس قران ایں اور ان بھی ہے ہرا کیک شریعت بی رہے۔ پھران کے بعد اوگوں بھی اختلاف ہو کیا تو اللہ تھے۔ تعرف نے انجاع علیم السلام کو بھیا اور ڈیمن والوں پر اللہ تعالی نے جو سب سے پہلا رسول بھیا وہ صفرت نوح علیہ السلام تھے۔ اور اہم محدین محد نے طبقات بھی صفرت این عمیاں دمنی اللہ مخترت کو المام سے صفرت اور اہم محدین محد نے طبقات بھی صفرت این عمیاں دمنی اللہ مخترات کیا ہے کہ حضرت اور علیہ السلام سے صفرت اور اہم محدین محد نے المبال میں اور وہ سب اسلام پر تھے۔ المبال میں محدید معدد میں آباہ ایں اور وہ سب اسلام پر تھے۔ المبال کی معدد میں معدد المبال کی در میں آباہ ایں اور وہ سب اسلام پر تھے۔ المبال کی معدد میں معدد المبال کی در میں آباہ ایں اور وہ سب اسلام پر تھے۔ المبال کا میں معدد کے المبال کی در میں آباہ ایں اور وہ سب اسلام پر تھے۔ المبال کی معدد میں آباہ ایں اور وہ سب اسلام پر تھے۔ المبال کی معدد میں معدد المبال میں المبال کی در میں آباہ ایں اور وہ سب اسلام پر تھے۔ المبال کی معدد میں آباہ ایں اور وہ سب اسلام پر تھے۔ المبال میں معدد کے المبال کی در میں آباہ ایں اور وہ سب اسلام پر تھے۔ المبال میں معدد کی ساتھ کی در میں آباہ ایں اور وہ سب اسلام پر تھے۔ المبال کی معدد کی معدد کی المبال کی در میان کی در میں آباہ ایں اور وہ سب اسلام پر تھے۔ المبال کی معدد کی معدد کی معدد کی المبال کی معدد کی در معدد کی معدد کی معدد کی معدد کی معدد کی در معدد کی در

الم مسلم بن عباج قصدى متونى المعددايت كريدي

حضرت الني بروني بيان كرتم بين كر رسول الله وجهير في قربلا قيامت قائم نبي بوكى حق كر زين بين الله الله نه كما جلسك حضرت النس سے دو مرى دوانت ب رسول الله وجهيز في قربلا بب تك ايك فضى بحى الله الله كما رب كاس پر قيامت قائم نبين بوكى۔

(من مسلم الكان ٣٣٠ (١٣٨) ٣٧١ من الروى جه و من الموديد ١٣٥٠ من المال من المعلق المال المعلم المعلم

اس مح مدعث سے بید واضح ہو کیا کہ ہردور عی اللہ اللہ کئے والے مسلمان بندے دوئے ذبین پر رہے ہیں اور کی دور پس بھی اللہ اللہ کینے والوں سے زبین خال نہیں رہی 'ورنہ قیامت آ بچی ہوتی۔ رسول اللہ بڑی کے تمام آیاء کرام کا اپنے اپنے زمانہ میں سب سے افضل اور بهتر ہوتا الم محمدین اسامیل بخاری متوفی ۲۵ موروایت کرتے ہیں:

حفرت ابو بریرہ برور بیان کرتے ہیں کہ وسول اللہ بچھنے نے فرلما مجھے ہو آدم کے برقرن اور برطبقہ میں سب سے بستر

<u>خبيان القر أن</u>

قرن اور طبقہ ہے مبعوث کیاجا آرہا حتی کہ جس قرن میں میں ہوں۔

(من البلای) ج ۴ رقم الحدیث عصد ۱۳۵۰ مند این عه و آم الحدیث ۱۳۳۰ ۱۳۳۰ طبع دارالحدیث قابره استد این ۲۳ و ۴ من مری ۴۳ طبع قدیم "منکوة الفسائع" ج ۴ رقم الحدیث ۱۳۵۵ کزاخیل که و آم الحدیث ۱۳۳۰ وا کل اینوة للیصتی کا می ۵۵۱) ایام ابویکرا حدین هیمن پیمتی متوتی ۱۳۵۸ مد دوایت کرتے ہیں:

المراير فيم امساني متونى ومهمد الى مد كمات ردايت كريس

معرت این مہاں دمنی افتہ عنما بیان کرتے ہیں کہ رسول افتہ ما تھی کے فرملیا کہ میرے ماں باب بھی ہی بدکاری پر جمع میں اوے۔ افتہ مزد جل بیشہ بھے پاک پشتوں ہے پاک رحمول کی طرف خفل فرما تا رہا جو صاف اور مرزب خیس۔ جب ہی ووشانعیں پھوٹی میں ان جس سے بھر شاخ میں تفا۔ (دلا کل النبواۃ جا ارتم الحد بعث دہ)

الم او ميني جرين ميني ترفري متوني ايد عدروايت كرت بن

حضرت عہاں بن عبدالعطلب وینز بیان کرتے ہیں کہ عمل نے عرض کیڈیار سول افتدا قریش آہی جی جینے ہوئے
اپنے حسب و نسب کاذکر کر دہے ہے۔ انہوں نے آپ کی مثل اس طرح دی جیے ذعین کے محورے (گندگی ڈالئے کی جگہ) جی
مجود کاور شت پیدا ہو گیا ہو۔ نبی ججھ نے فرمایا افتہ تعالی نے تکون کو پیدا کیا اور جھے ان جی سب سے بھتر اوکوں جی اور سب
سے بھتر کر داموں جی اور سب سے بھتر فرقوں جی دکھا چر قبیلوں کا انتخاب کیا اور جھے سب سے بھتر قبیلہ جی رکھا چر کھروں کا
انتخاب کیا اور جھے سب سے بھتر کھرجی رکھا چی جی بیٹور فضی سب سے بھتر ہوں اور بہ طور گھر سب سے بھتر ہوں۔ امام
تندی نے کہا یہ مدیدہ حسن سے۔

(سنن الرّدي عن وقم المعصد ١٩٣٨ ولاكل النبوة لليمتى عن عن عن المعم الكبير عن وقم المدعث (اعد ١٥٥٠ مند الر" جه من ١٨٠٠ ١٨٠٠)

المام الواقعيم اصباني متوتى وسهمه روايت كرتي بين

حضرت ابن عماس رضی الله عنما "و تقلب ک فی الساحدین" کی تغیر می بیان کرتے ہیں 'بی جین بیش انبیاء علیم السلام کی پینوں میں منتقلب ہوتے رہے 'حق کہ آپ اپنی واقع سے پیدا ہوئے۔ (ولا کل النبوة 'ج) وقم الدیث الدین الله علیم السلام کی پینوں میں منتقلب ہوتے رہے 'حق کہ آپ اپنی واقعہ سے پیدا ہوئے۔ (ولا کل النه عزوجل نے سات آسانوں کو پیدا کیا حضرت عبدالله بن عمر رضی الله منتما بیان کرتے ہیں کہ وسول الله منتوب نے فر ملیا الله عزوجل نے سات آسانوں کو پیدا کیا

حضرت عبدالله بن محروضی الله عنما بیان کرتے ہیں کہ وسول الله بیجید نے فرطیا الله عزوجل نے سات آسانوں کو پیدا کیا
اور ان میں ہار پر والے آسانوں کو پند کیا اور ان میں سکونت رکی اور بنتی آسانوں میں اپنی تکلوق میں ہے جس کو چاہا سکونت
دی۔ بھراللہ نے تکلوق کو پیدا کیا اور تکلوق میں ہے بنو آدم کو پند کیا اور بنو آدم میں ہے عروں کو پند کیا نور عروں میں ہے معنر
کو پند کیا اور معنر میں ہے قریش کو پند کیا اور قریش میں ہے بنو ہائم کو پند کیا اور بنو ہائم میں ہے بھے پند کیا سومی پندیدہ
نوگوں میں ہے بند کیا کیا ہوں۔ انداجس نے عروں ہے عمیت رکی اس نے میری عبت کی وجہ ہے ان ہے محبت کی اور جس
نے عروں ہے بغض رکھا اس نے بھے ہے بغض رکھنے کی وجہ ہے ان ہے بغض رکھا۔

(دلا کل النبو ة جنا و قم الدين د ۱۵ المحم الكيم علا وقم الدين مدى جهر المستدرك جهر ص ٨٦٠٨ كال اين مدى جهر ' ص ١٠٠٠ مين مثل ابن الي حاتم 'جهر مهمه عديه مهر الروائد 'جهر الروائد)

اس مدیث کی سند میں جماوین واقد کے سواسب کی توشق کی گئے ہور وہ بھی معتبرراوی ہے۔

الم مسلم بن عبل قصيدى متونى معد روايت كرت بي:

حطرت واظدین استم جانئے بیان کرتے ہیں کہ جس نے رسول اللہ جی کو یہ فرائے ہوئے ساہ کہ اللہ تعالی بے صرت اسامیل علیہ بالسلام کی اولاء کاند کو پہند کر لیا اور صرت اسامیل علیہ بالسلام کی اولادے کتانہ کو پہند کر لیا اور بخرائی کو پہند کر لیا اور بند کر لیا اور بند کر لیا ہوں ہے جھے پیند کر لیا۔

(می مسلم 'فضاکل ا' ۱۳۷۱ ۱۳۸۰ مشن ژوی ایچه ' رقم تلدین «۳۳۵ می این میان ' چ۳۵ رقم الحدیث: ۳۳۷ سیر اور ' چ۷' رقم الحدیث: ۱۲۸۸ المیم الکیم' چ۲۲ رقم الحدیث: ۱۱۱)

الم ابوالقام سليمان بن طراني متوفى ووسع روايت كرتم بي:

صفرت عائشہ رمنی اللہ عنما بیان کرتی ہیں کہ رسول اللہ عظیم نے حضرت جرائیل علیہ السلام سے روایت کیا کہ الموں نے کہا میں نے زمین کے تمام مشارق و مفارب کو الٹ پلٹ کرد کیے لیا تو (سیدہ) تھے مٹالی سے افضل کمی فض کو نہیں پایا اور نہ بنو ہاشم سے افضل کمی فائدان کو بلا۔

اس مدیث کی سند میں موئی بن عبیدہ ریزی ایک شعیف رنوی ہے۔

(المجم الاوسلائے عارقم المریث: ۱۲۸۱ مجم الزوائد کی ۲۰۰۰ ملی جدید دار الفکو نیروت ۱۳۱۳ می الامام الله النام الفکو نیروت ۱۳۱۳ معتبوت معلوم ہوا کہ معرت آدم علیہ السلام ہے معرت مبداللہ تک می علیہ السلام کے نسب جس تمام آباء کرام اپ البی نظر کے تمام لوگون سے خیراور افغنل نے ابور قرآن جمید جس تمریح ہے اور اس پر مسلمانوں کا اجماع بھی ہے کہ مومن مشرک سے خیرلور افغنل ہے القدا جات ہواکہ آپ کے تمام آباء کرام مومن شھے۔

 ابوین کریمین کے ایمان کے مسلم میں تغییر کبیریر بحث و نظر

الم رازی نے تغیر کیر میں اس منلا سے اختلاف کیا ہے توریہ فیعلہ کیا ہے کہ حضرت ایراہیم علیہ السلام کے باپ کانام آزر تھااور اس پر یہ دلیل قائم کی ہے کہ یمودو نصاری نی مختیج کی تخذیب پر بہت حریص تھے۔ اگر فی الواقع حضرت ایراہیم علیہ السلام کے والد کانام آزر نہ ہو آباور قرآن کہتاکہ ان کے باپ آزر نے ہوں کماؤ علوق یمودو فصاری کاخاموش رہنا ممکن نہ تھا اور وہ نی علیہ السلام کی محلف ہے اور کھتے کہ آزر ان کے باپ نسیں ہیں اور جب انہوں نے نبی جیجید کی محلف نمیں کی تو معلوم ہواکہ قرآن مجید کابیان کیا ہوانسب مجے ہے اور حضرت ایراہیم علیہ السلام کے باپ آزری ہیں۔

(تقير كير عيم من من داد الفكر ١٣٩٨م)

اس اعتراض کاجواب یہ ہے کہ افل کلب کے نزدیک معنرت ایراہیم علیہ انسلام کے والد کانام نارح ہے۔ یا کیل میں لکھا ہے نحور انتیں برس کا تھاجب ہیں ہے تارح پردا ہوا' اور تارح کی پردائش کے بھر نمور ایک موانیس برس اور بینار ہااور اس سے جیٹے اور بیٹمیال پردا ہو کمی اور تارح ستریس کا تھاجب اس سے ایرام اور نمور اور حاران پردا ہوئے۔

(برانا مديام أيد انش إب اا أيت ٢٠٠١ من ١٥ مقدس من ١١ مطبوم باكبل موسائن أما مور)

باقی دہاہی کہ پھرائی کہ ہے۔ نہی بڑھی ہے۔ اعتراض کیں نس کیا کہ قرآن نے آزر کو باب کما ہے بہارہ صحرت ابراہم
کا کیا تھا اس کا بواب ہے کہ اہل کہ بھلاوات عرب واقت تھے کہ علودات عرب میں بھا پہلے کا اطلاق کیا جا ہے۔

یز قرآن مجید بھی صحرت اسامیل کو اواد محقوب علیہ السلام کا باپ فربا ہے 'طان کہ وہ ان کے بلاتفاق بھا تھ 'اور اس بر بھی اہل
کہ سے اس وہ ہوں وہ سے اعتراض جمیں کیا تھا۔ ورنہ اہم دازی کی قرر کے مطابق یمودیوں کو اس کی محذیب کن چاہیے تھی۔

یز اہم دازی نے کھا ہے کہ شیعہ کے نزدیک رسول اللہ بڑھی کے آباہ واجہ اور محد کوئی فضی کافر جمیں تھا وہ اس بر بھی ان کی کئی دلیلیں ہیں۔ ایک دلیل ہیں ہے کہ قرآن مجید بھی ہو اس کے بیاد اللہ ی بیراک حسین تبقوع و تبقیلیک نمی اداری کی کئی دلیلیں ہیں۔ ایک دلیل ہیں۔ کہ والم اس کی کئی دلیلیں ہیں۔ ایک دلیل ہیں ہے کہ قرآن مجید بھی ہوں محد کرنے والوں میں آپ کے بالے کو دیگی ہے پھرانام دانی کے بیرانام دانی ہو کہ ہو کہ کہ ایک موج کے اس کی موج کے آزر کے مرتے کے تقریبا پہا ممل بعد صفرت ایرائیم مالی اندے جو الذی کی منفرت کی دعفرت کی دعام دانی دو الدین کی منفرت کی دعفرت کی دواری کی اس کی موج کے آزر کے مرتے کے تقریبا پہا ممل بعد صفرت ایرائیم مالی اللہ میں کیا ہو جو کے تھے۔ اندان کی منفرت کی دعفرت کی دور ہوں کی تھی کیا تو موسی کیا ہو ہو کہ ایک دور میں میں کیا ہو تھیں المام دانی کے تاب موسی کیا تھیں کے آباہ مرک نہ میں کیا تھیں کہ اس سے بدازم نہیں آبا کہ آپ کے آباہ مرک شدہ وں کی دکھ یا گیزہ دوروں میں محتول میں انہ کو اس کی کہ دور کی دیا گیائی کی دوروں میں محتول ہوں کی دیا گیائی کہ دوروں میں محتول ہو تھیں آبا کہ آپ کے آباہ مرک شدہوں کی دکھ یا گیزہ دوروں میں محتول کیا ہو کہ بیا گیائی کے تو کہ کیائی دوروں میں محتول ہو تھیں کا میں انہ کیائی کی دوروں کی دیا گیائی کیائی کیائی کیائیں کی کہ دوروں میں محتول ہو تھی کیائی کی دوروں میں محتول ہو گیائیں کیائی کی کہ کیائیں کیائیں کیائیں کیائیں کیائیں کیائیں کیائیں کیائیں کی کہ کیائیں کیائیں کیائیں کیائیں کیائیں کیائیں کیائیں کیائیں کی کر کیائیں کیائیں کیائیں کیائیں کیائیں کی کرنے کی کرنے کیائیں کیائیں کیائیں کیائیں کیائیں کر

اس کا جواب میرے کہ ہم نے اس مدعث سے استدائل نہیں کیا ہمارا استدائل میں ہفاری کی اس مدیث ہے۔ جمعے ہوتا ہوں۔ اس بوتا ہوں۔ اس سے نازم آیا کہ آپ کے قمام آباء خبر تھے اور مومن مشرک سے خبر اور بھترے۔ فقد آپ کے قمام آباء کا مومن ہوتا ہاں۔ ہوا' سے نازم آیا کہ آپ کے قمام آباء خبر تھے اور مومن مشرک سے خبر اور بھترے۔ فقد آپ کے قمام آباء کا مومن ہوتا ہاں۔ اس دلیل سے بھی الم رازی نے تقرض نہیں کیا۔ الم رازی نے شید کی طرف سے تیمری دلیل سے چی الم رازی نے تقرض نہیں کیا۔ الم رازی نے شید کی طرف سے تیمری دلیل سے چی الم رازی نے تقرض نہیں کیا۔ الم رازی نے شید کی طرف سے تیمری دلیل سے چی کی حضرت ایر اہیم

نے بہت شدت اور بختی کے ماتھ آزر کا رد کیاہے 'آگر وہ ان کے بہب ہوتے تو ان کے ماتھ تری ہے کلام کرتے۔ اس ہے معلوم بواکہ وہ ان کے بچاہے 'گراس دلیل کارد کیاہے کہ ان کی ہے بختی اس کے شرک پر اصرار کی وجہ ہے تھی۔ (تغیر کبر 'جس) معلوم بواکہ وہ ان کے بچاہے 'گراس دلیل ہے استدالل جس کیا میں اس پر امام رازی کا احتراض قوی جس ہے 'کیونکہ کفراور شرک کے باوجود ماں بہب کے ساتھ تری ہے کلام کرنے کا تھم دیا گیاہے۔ ویکھنے قرمون معزت موئی علیہ السلام کا بہب نسیس تھا اس نے صرف معزت موئی علیہ السلام کا بہب نسیس تھا اس نے صرف معزت موئی علیہ السلام کی پرورش کی تھی۔ اس کے باوجود اللہ تعالی نے معزت موئی علیہ السلام کو اس سے ترم گفتاری کا تھم دیا :

الْهُ هَمَا الله فِرْعَوْلَ إِنَّهُ طَعْلَى اللهُ وَكُولًا لَهُ فَوْلًا لَهُ فَوْلًا لَهُ فَوْلًا لَهُ فَوْلًا لَيْنَا لَعَلَهُ يَتَذَكَّرُ أَوْيَكُ شَي (طه:٣٢)

-6-15

آگر آزر صفرت ابراہیم کابب ہو آتو آپ اس سے اس قدر کئی اور شدت کے ساتھ بات نہ کرتے اندا تابت ہواکہ وہ آپ کاب نہیں 'بچا تھا۔ اس آب کابب نہیں 'بچا تھا۔ اس آب کی سور قرار دیتے ہو؟ بے لک مصری اور تہماری قوم کو کملی ہو گی گرای میں جا دیکھا ہوں۔ (الافعام: سمن) اگر آزر معفرت ابراہیم کابب ہو آبورہ اس سے اس قدر المانت آمیز کلام نہ قرالے۔

اس بحث کے بعد الم رازی نے لکھا ہے کہ رہے اعادے اصحاب و ان کا قول بید ہے کہ رسول اللہ ماجی کے والد کافر تھے ' اور انہوں نے ذکر کیا ہے کہ قرآن جمید کی اس آءت جس تصریح ہے کہ آزر کافر تھافوروہ معزت ایرائیم علیہ انسلام کاوالد تھا۔ (تغیر کبیر 'ج ۴ مسلم اند کا معلونہ داو الفکو بیروت '۱۳۹۸ء 'طبح قدیم)

ہم اس قول کی شناعت ہے اللہ تعالی کی بناہ انتھے ہیں۔ اہام رازی میں العقیدہ تھے "دین اسلام کے لیے ان کی ہیزی خدمات ہیں اور اسی بناہ پر اللہ تعالی ۔ نے ان کو اس قول سے رجوع کی تو نتی دی۔ جمی دلا کل کو انہوں نے تغییر کبیر ہیں رو کر دیا ہے 'اسرار التعزیدل ہیں ان تی دلا کل ہے انہوں نے رسول اللہ جھی کے والدین کر پیمین اور آپ کے تمام آباہ کرام کا انجان ٹابت کیا ہے۔ علامہ جلال الدین سید علی نے اس کا خلامہ نقل کیا ہے 'ہم اس کا اقتباس یماں پیش کر رہے ہیں۔ ابوین کر بہیمن کے نیمان کے متعلق آبام رازی کا مجمع موقف

مسلک ٹائی: نی ٹائی کے والدین سے شرک ٹابت نس ب کا کہ وہ اپنے جد آکرم حضرت آرائیم علیہ انسلام کے دین طیف پر تے 'جیسا کہ حرب کی آیک جماعت اس دین پر تمی ۔ شائز زید بن تحرو بن فالی اور ور قد بن نو قل و فیرها 'اور یہ علاء کی ایک جماعت کا مسلک ہے۔ ان ہی جی سے الم فر الدین رازی جی 'انہوں نے اپنی کلب اسرار التنویل بی تکھا ہے جس کی علارت یہ ہے ایک قول بد ہے کہ آزر حضرت ایرائیم علیہ السلام کا والد نہیں تھاور اس پر کی وجوہ سے استدال کیا گیا ہے۔ ایک ولیل یہ ہے کہ انڈ تعالی نے فرایا "الذی ولیل یہ ہے کہ انبیاء علیم انسلام کے آباء کافر نہیں تھے اور اس پر کی والا کی جی ۔ ایک بد ہے کہ اللہ تعالی نے فرایا "الذی براک حین نقوع و تقلب ک فی الساحدین "اس آیت کا معنی یہ ہے کہ آپ کالور ایک ساجدی وہ مرے میاجد کی طرف خطل ہو آرہاور اس نقذ و پر یہ آیت اس پر دلائے کہ میدنا ہی جی جی آباء مسلمان تھے اور اب ساجد کی طرف خطل ہو آرہاور اس نقذ و پر یہ آیت اس پر دلائے کہ میدنا ہی جی کے قام آباء مسلمان تھے اور اب منابع طور پر یہ کمنا واجب کے حضرت ایرائیم کے والد کافروں جس سے نہیں تھے اور آزر آپ کا چیا تھا۔ زیادہ سے زیادہ سے کہ اور آزر آپ کا چیا تھا۔ زیادہ سے زیادہ سے کما ما

سکتا ہے کہ "و تقلب ک فی الساحدین" کے اور بھی کی کال ہیں اور جب کہ ہر محل کے متعلق ایک روایت وارد
ہوان میں باہم کوئی متفات بھی نہیں ہے تواس آیت کو ان تمام کال پر محول کرناواجب ہے اور جب یہ سمج ہے تو تابت
ہوگیا کہ صفرت ایرائیم علیہ السلام کے والدیت پر ستوں میں سے نہیں تھے۔ پھراہم رازی نے فربلا سیدنا محد ہوہیں کے تمام آباء
کے مشرک نہ ہونے پر یہ صدیف والات کرتی ہے کہ نمی مجھیں نے فربلا می بحث پاکیزہ پشتوں سے پاکیزہ ر موں کی طرف خفل
ہوتا رہااور اللہ تعالی نے فربلا "انسا المسئسر کون نسمس "مشرک محض ہاک ہیں ہی واجب ہوا کہ آپ کے اجداء کرام
سے کوئی صفح مشرک نہ ہو۔ ایام رازی کا کلام ختم ہوا۔

تم اہام رازی کی المت اور جلالت پر فور کرو کو اپنے زمانہ میں اہل سنت کے اہم ہیں اور بدعتی فرقوں کارو کرنے والے ایں اور وہ اپنے زمانہ میں ندمب اشاعمہ کے ہامراور موید ہیں اور وی چھٹی معدی ہجری میں ایسے عالم ہیں ہو اس است عکے لیے بہ طور محدد بہنچے گئے ہیں اور میرے زویک لام فخرالدین رازی کے ذہب کی تائید میں اور بھی دلائل ہیں۔

(الحادي المفتادي مج عنص ١٢٠ مطبوير فيعل ١ باد)

اہم رازی نے یہ بجٹ اسرار اخترین وازار اللویل میں ۱۳۹۰ مطبور بنداد میں ہے۔ یہ کاب بھے بودیں فی ان شاہ الشراب الشراب میں اس کاب سے اہم رازی کی اصل عبارات پیش کروں گا۔ ابوین کریمین کے ایمان کی بحث میں حرف آخر

یہ بات بھی طونا رہنی چاہیے کہ رسول اللہ جی الدین کریمین کے ایمان کاستلہ معقد بین علماو پر مخلی رہا۔ یہ سستلہ اللہ تعالی نے متا فرین پر مکشف کیا ہے۔ مجل عبد الحق محدث وہلوی متونی 10 ملد تکھتے ہیں:

لیکن متافرین علیونے صفور بڑی کے والدین کریمین الکہ صفرت آدم علیہ اسلام تک آپ کے تہام آباہ و امرات کا ایمان ثابت کیا ہے اس اثبات کے لیے انہوں نے تین طریقے افتیار کے ہیں۔ ایک یہ کہ یہ سب صفرات صفرت ابراہیم علیہ اسلام کے دین پر تھے۔ وہ سرایہ کہ ان معرات کو و موت اسلام نہ پنجی الکہ یہ حضرات زائد فترت میں ہی انقال کر بچے تھے ان کو صفور مالیا کہ ان کو صفور مالیہ السلو قوالسلام کی وعا صفور مالیہ کی نیوت کا زمانہ نہ ملہ تیمرا طریقہ یہ ہے کہ آپ کے والدین کر بیمین کو خدا اقدالی نے صفور علیہ السلو قوالسلام کی وعا سے آپ سے دست اقد س پر وویادہ زندگی عطافر مالی اور وہ آپ پر ایمان الایک صفور علیہ السلو قوالسلام کے والدین کے زندہ کرنے کی صدیث آگر چہ اپنی مدوات میں صعیف ہے ان مورد طریق سے اس کی تھیج اور تھین کر دی تی ہے اور یہ بات کویا حقد میں سے بھی مدال تعنیف کے اور دواکل ہے اس مسللہ کا اثبات فرمایا میں انظام کے دوابات و یہ اس مسللہ کا اثبات فرمایا میں دیا جات ہوابات و یہ اس مسللہ کا اثبات فرمایا میں دیا جات ہوابات و یہ اس مسللہ کا اثبات فرمایا میں دیا جات دوانتہ الخم

(اشعته اللمعات ع، مل ١١٨ مطبوعه مطبح تح كمار كلمتو)

جی نے ابوین کر پیمین کے مسئلہ پر بہت تنصیل ہے مختطو کی ہے۔ خصوصاناس کے کہ تغییر کیرجی انام رازی نے ہو گفتگو کی ہے' اس سے بہت سے مسلح المعقیدہ علاء بھی مستقبو تھی تھے' اس کیے جی نے چاپاکہ انام رازی کی تغییر کی بحث کا ہواب لکھوں اور ہیرواضح کرون کہ انام رازی نے ہی نظریہ سے رجوع قربانیا ہے ہور بھی ملف صافعین اور علاء و ہانسین کی فٹانی ہے۔ آخر جی 'جی دعاکر آ ہوں کہ اللہ تعالی میری اس کلوش کو قبول قربائے اور جھے اپی رضااور اپنے حبیب اکرم مرجی کی فوشنود کی عطافر اے' اس بحث کی مزید تنصیل کے لیے البقرید 18 کا بھی مطافعہ قربا کیں۔

بتول کی پر ستش کا تعلی ہوئی مراہی ہوتا

اس آنت می الله تعالی من فرلما ب جب ایراهیم فراین (عرفی) باب آزرے کماکیاتم بنوں کو معبور قرار دیتے ہو؟ ب

شك يس حميس اور تمهاري قوم كو كملي موئي مراي من جناد كيما مول الانعام: عدى

بعنی تماری عبوت کا طریقہ ہر صاحب مقل سلیم کے نزدیک کملی ہوئی محرای اور جمالت ہے اور اس سے زیادہ واضح

جمالت اور مرای کیا ہوگی کہ تم اپنے یا تھوں ہے بعث بنا کران کی پرسٹش کرتے ہو۔ قر آن مجید میں ہے: قَالَ أَنْعَبِدُونَ مَا تُنْجِينُونَ ٥ وَاللَّهُ عَلَقَكُم المائيم في كماكياتم ان يول كى سش كرتم وجن كوتم

خود تراشتے ہو؟ مالا نک حمہیں اور تمہارے مب کاموں کو اللہ

وَمَا تَعْمَلُهُ ذَ ٥ (الصعب: ٩٥٠)

نے ی پیرافرہایا ہے۔ اور سے بت بالک بسرے میں عماری فراد کو نمیں سنتے 'نہ حمیس کوئی نفع پنجا کتے ہیں اور نہ حمیس سمی ننسان سے بھا

یجے ہیںا

ابراميم نے كماكياتم الذكوچمو وكرايوں كى مبادت كرتے او جو حبيس کي نقع پيما ڪيس اور نه فقصان " تف ہے تم ير (اور تمارے ہوں یاجن کی تم اللہ کو پھوٹر کر عبادت کرتے ہولیں کیاتم کے نس ہو۔

فَأَلَ أَمَنَعُبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَالاً بُسْعَمُكُمْ شَيْفًا وَلَا يَضُرُّ كُمُ ٥ أُبِّ لَكُمُ وَلِمَا نَعْمُدُونَ مِسُ دُونِ اللَّهِ آمَلَا تَعْقِلُونَ (الانبهاه: ١٩٠٢)

أيك اور مقام پر الله تعالى يتول كى برستش كابطلان بيان كرت موسة قرما آي:

ب شك تم الله كوچمو (كرجن (بلول) كي مبادت كرتے يو ده سب لل کر بھی ہر گز ایک بھی کو شیں بنائے 'اور اگر کھی ان ہے کوئی چڑ چین کرلے جائے تووہ اس سے چیزا نس کتے ' طالب اور مطلوب دولوں کزور ہیں۔

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَحُلُفُوا ذُبُكَابُا وَلَواحَنَمَ عُواكَةً وَإِنْ يَسْلُبُهُمُ الدُّبَابُ شَيْقًا لَا يَسْفَنْفِذُوهُ مِنْهُ ضَعْفَ الطَّالِبُ وَ المُطَلُوبُ٥(الحج ٢٥٠)

پھرا ہے کزور 'لاچار' بے حس اور ہے جان تراشیدہ پھروں کو اپنا خدا ماننا اور ان کی پر سنش کرنا کملی ہوئی گمرای کے سوااور الإجالا

الله تعالی كاار شاد به: اور اى طرح بم نے ابراہيم كو آسانوں اور زمينوں كى باد شاي د كمائي اور اس ليے كه وه كال يقين كرت والول من عدوه ما سي-(الانعام- ١٥)

حضرت ابراہیم علیہ السلام کود کھائے گئے ملکوت کامعیدات الم ابوجعفر محمان جرير طبري افي سند كے ساتھ روايت كرتے ہيں:

مجاہد بیان کرتے ہیں کہ حضرت ابراہیم علیہ السلام کے لیے سات آسین کھل مجے ' حق کہ عرش بھی ' پھرانہوں نے ان کو د كيد الإاور ان كے ليے شات زمينيں كال كئيں اور انہوں نے ان كو بھی د كيد الا۔

عطاء میان کرتے ہیں کہ جب حضرت ابرائیم علیہ السلام کو آسان کے طلب کے اور اٹھایا گیاتو انہوں نے ایک بندے کو زنا كرتے ہوئے ريكھا انہوں نے اس كے قلاف دعاكى و مهلاك ہو كيا۔ انہيں دوبار و اٹھليا كيا انہوں نے پر ايك بندے كو زناكر ح ہوتے ویکھا 'انہوں نے اس کے خلاف وعاکی' وہ ہلاک ہو گیا۔ انس پھر اٹھلیا گیا 'انہوں نے پھر ایک بندے کو زنا کرتے ہوئے

جيان القر أن

ریکھا'انہوں نے پھراس کے خلاف دعائی تو ان کو ترائی گئی اے اہراہیم فحموء تم متجاب بندے ہو اور میرے اپنے بندہ کے ساتھ تمن معلقات ہیں' یا تو وہ جھے سے توب کرے تو ہیں اس کی توبہ تبول قرباؤں کا' یا ہی اس سے نیک اولاد پیر آکروں کا' یا ہر کاری میں اس کو ڈھیل دوں گااور پھریں اس کو دیکھ لوں گا۔ اس مدے کو امام این انی حاتم متوثی سے ہو ہے نے شرین حوشب سے روایت کیا ہے۔ (تغیر این الی حاتم' ج سام میں اس کا

تندہ بیان کرتے ہیں کہ ہم سے یہ ذکر کیا گیاہ کہ حضرت ایراہیم علیہ السلام آیک خالم بنو شاہ سے ہماگ کر ایک سرعک می ہمسپ گئے اللہ تعافی نے ان کا رزق ان کی انگلیوں کے ہے روں میں رکھ ویا۔ جب بھی وہ اپنی انگل کو جوستے 'قوان کو رزق مل جا تا' جب وہ اس سرنگ سے باہر آئے قواللہ تعالی نے ان کو آسانوں کی حکومت و کھائی 'ان کو سورج اور جاند اور ستارے اور بادس اور ایک عظیم مخلوق و کھائی اور ان کو زمین کی حکومت و کھائی تو ان کو بہاڑ' سمتدر' دریا' در ڈت اور مرتئم کے جانور اور ایک محتمم مخلوق درکھائی۔

الم ابن جربے ہے کماہ کہ مکوت کی ذیادہ بھتر تغییریہ ہے کہ اللہ تعالی نے ان کو آ مان اور زھن کا ملک و کھایا اور جو چڑیں ان میں پیدائی گئی ایس مشال سوری چائد ستاوے اور جانور و فیرو اور ان کے لیے تمام امور کے ظاہر اور باطن مکشف کر دیئے۔ حضرت ابن عمامی رضی اللہ مختمانے اس آبے کی تغییر بس فرمایا اللہ تعالی نے حضرت ابرا ایم علیہ السلام کے لیے تمام امور کے ظاہر اور باطن مکشف کر دیئے اور مخلوق کے اجمال بی ہے کوئی عمل ان سے مختی نیس رہا اور جب وہ کناہ کرنے وانوں پر خات کرنے کو انوں پر خات کرنے کے قواد ان کو پہلی کیفیت پر نوٹا دیا۔ اس صدیت کو قام ابن ابی حاتم سے بھی دوایت کیا ہے۔ (قفیر ابن ال حاتم میں کہا ہے ہے۔ اور ان کو پہلی کیفیت پر نوٹا دیا۔ اس صدیت کو قام ابن ابی حاتم نے بھی دوایت کیا ہے۔ (قفیر ابن ال حاتم میں بھی)

حضرت مبدالر من بن عائش برین بیان کرتے بیں کہ ایک دن رسول اللہ برین نے میں کی نماز پر هائی ایپ ہے مسلم کی نماز پر هائی آپ ہے کہ ایک دن رسول اللہ برین نے اس میں دیکھا آپ نے فرمایا ایسا کوں نہ ہو۔ میرے پاس میرا رب (خواب میں) نمایت حسین صورت میں آیا۔ اس نے کمااے مجراب فرشتے کس جزیس بحث کر دے بیں ایمی نے کمال می فوب جانا ہے ایک اللہ میں آباد سے قدرت میرے دو کند حوں کے در میان رکھاتو میں نے آ جانوں اور زمینوں کی تمام چیزوں کو جان لیا ' ہر آپ نے اس آیت کی خلاوت کی: "و کد لک نری ابرا هیسم ملکوت السموت و الارض ولین کون مین الموقسین "

الله تعلق كاارشاوب: پرجبان ير دات كى آركى ميل مى قوانوں نے ايك ستاره و بكما انهوں نے كمايہ ميرا دب ب؟ پرجب وہ ڈوب كياتو كماش ڈوب جلنے والوں كو يند نهي كرنان پرجب انهوں نے جمكا آبوا جاند د يكھاتو كمايہ ميرا دب ب؟ پرجبوه (جمع) ڈوب كياتو كما اگر ميرا دب جھے جو ايت پر ير قرار نه و كماتو من ضرور كراو نوكوں من سے يو جانان پر

غيبان انظر ان

جب انہوں نے روش آفاب دیکھاتو کہا یہ میرارب ہے؟ یہ (ان سب سے) ہوا ہے 'پھر جب وہ فردب ہو کیاتو انہوں نے کہائے۔ میری قوم ایس ان سب سے بیزار ہوں جن کو تم اللہ کا شریک قرار دیتے ہو 'یس نے اپنارخ اس ذات کی طرف کر ایا ہے جس نے آسانوں اور زمینوں کو پیدا کیا ہے اور میں شرک کرنے دالوں میں سے نہیں ہوں۔ الانعام: ۱۱۵۰) ستارے 'چاند اور سور ج کی الوہیت کے عقیدہ کو باطل کرنا

جب دات کا او جراح ما گیاتو حفرت ایرائیم علیہ السلام نے ایک بہت چک دار ستارہ دیکھیا انہوں نے اپنی تو م ہے اناہ ا استدائل میں قربایا یہ جیرا رب ہے ' حضرت ایرائیم علیہ السلام کا یہ قول قوم کے سامنے ستارے کی ربوبیت کے انکار کی تمہید سمی اور ان کے طاف جمت قائم کرنے کا مقدمہ قطائتو پہلے حضرت ایرائیم علیہ السلام نے ان کے دہائے میں یہ بات ڈائی کہ وہ ان کے موافق ہیں۔ پھر مثابوء اور منتم سے اس قول کا دو فربایا جتائی۔ جب وہ فریب ہوگیا تو فربایا یہ کیا بات ہوئی؟ میں غروب ہوئے والوں کو بہند نہیں کر آئا کیو تکہ فدا وہ ہے جس کا تمام کا نکات پر غلبہ ہے 'وہ تمام دنیا کو ہروت دیکھنے دالا ہے 'ان کی باتوں کو سننے والا ہے 'وہ کھی کری چیزے قافل ہو تاہے 'نہ تائب ہو تا ہے۔

ستارہ کی الوہیت کے حقید، کو یاطل کرنے کے بعد حضرت ابراہیم علیہ السلام جاند کی الوہیت کو ہاطل کرنے کے در ب اور خ ہوئے 'جو ستابہ سے زیادہ روشن تھا'اور اسی طرح انکار کی تمید کے طور پر فربایا ہے میرا رب ہے اور جب وہ بی فردب ہوگیا تو اپنی قوم کو سالے کے لیے فربایا اگر میرا رب جھے ہوایت پر بر قرار نہ رکھتا تو بی ضرور گراہ الاگوں میں ہے ہو جاتا۔ حضرت ابراہیم علیہ السلام کے اس قول میں ان کی قوم پر تعریف ہے کہ وہ گرائی کا شکار ہے 'کور اس میں یہ جبید ہے کہ جس نے چاند کو خدا ماناوہ بھی گراہ ہے اور اس میں بیر رہنمائی ہے کہ الوہیت کے متعلق مجھ مقیدہ کی معرفت ومی النی پر مو توف ہے۔

جاند کی فدائی کے حقیدہ کو باطل کرنے کے بعد حضرت ایرائیم علیہ السلام سورج کی الوہیت کے حقیدہ کو باطل کرنے کی طرف متوجہ ہوئے 'تمام سیاروں ہیں سب سے حظیم سیارہ سورج ہے۔ اس کی حرارت 'اس کی روشنی اور اس کا نفع سب سے ذیادہ ہے۔ اس کے انکار کی تمبید کے طور پر فریلیا یہ میرا دب ہے 'یہ تمام ستاروں اور سیارہ اس کے انکار کی تمبید کے طور پر فریلیا یہ میرا دب ہے 'یہ تمام ستاروں اور سیارہ اس سے بیارہ کی سورج بھی ان سیارہ اور بھی سب کی بہ نسبت الوہیت کے ذیادہ لا گئے ہے اور جب دیگر ستاروں کی طرح سورج بھی ان کے افق سے فروب ہو گیا' تب حضرت ایرائیم علیہ انسلام نے اپنے عقیدہ کی تقریح کی اور اپنی قوم کے شرک سے بیزاری کا اظہار کیا اور فران سے فروب ہو گیا' تب حضرت ایرائیم علیہ انسلام نے اپنے عقیدہ کی تقریم کی اور دین قوم کے شرک سے بیزار ہوں جن کو تم اپنا دب قرار دیتے ہو 'جن آماؤں اور زمینوں کو پیوا کرنے والے کی طرف اپنا درخ کردیکا ہوں 'جن ہر کرائی کے مقیدہ سے مند موڈ کردین سنیف' دین حق اور دین قومید پر خابت قدم اور بر قرار ہوں۔ جس ان مشرکوں کے گروہ سے فراد ماخیۃ معبودوں کی پر سنش کرتے ہیں۔ جس اس کی جرقرار ہوں جو گرائی کے مقیدہ سے بھر کر فود ساختہ معبودوں کی پر سنش کرتے ہیں۔ جس اس کی عمید وقدرت جس برجن کے قبلہ وقدرت جس برجن ہے۔ جس کے قبلہ وقدرت جس برجن ہے۔ جس کے قبلہ وقدرت جس برجن ہے۔ جس کے قبلہ وقدرت جس برجن ہے۔

حفرت ابراجيم عليه السلام كاستارے كو"هدداربي "كمنا علك كى بنا بر سي تھا

ان استدال می معرت ایراہیم علیہ السلام نے جو یہ فرایا تھا۔ میرا رب ہے 'یہ آپ نے بطور تنزل فرمایا تھا کہ اگر میں میں فرض یہ ستارہ میرا رب ہو تو اس کا غروب ہو جانا ہی کے رب ہونے کی تحقیب کرتا ہے اور یا یہاں استفہام محذوف ہے جس کا آپ نے ذکر نسیں فرمایا کہ کمیں قوم بلت اور استدائل کھل ہونے ہے پہلے ہی بدک نہ جائے اس لیے آپ نے سوال کو دل میں رکھ کر فرمایا ہے میرا رب ہے 'اور آپ کا خشا تھا گیا ہے میرا رب ہے 'اور آپ کا خشا تھا گیا ہے میرا رب ہے ؟ یہ توجیعات اس لیے ضروری ہیں کہ نبی ایک آن کے لیے بھی میتنا ستارہ کو اپنا رب نہیں کہ سکا لور نہ بھی اے اللہ تعالی کی توجید میں تردد ہو سکتا ہے ' جرنی پروائٹی مومن اور نبی

غيان القر أن

ہو آ ہے۔ نیز حضرت ابراہیم علیہ السلام کے متعلق قرآن مجید میں تعریج ہے کہ وہ اپنی قوم کے ساتھ مناظرہ کرنے سے پہلے ہی مومن تصداللہ تعلقی کاار شادے:

وَلَقَدُ أَنْهُ الْمُ الْمُراهِبُهُ وَلَيْدَهُ مِنْ قَبْلُ وَكُمَّاهِ مِعَلَى الْمُعَالِهِ عَلَيْهِ مَا فَيْدِهِ مَا فَيْدِهِ مَا فَيْدِهِ النَّهُ مَا فَيْدُهِ اللَّهُ مَا فَيْدُهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُلْقُلُولُ اللَّهُ مُلْكُولُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُلْكُمُ اللَّهُ مِنْ اللّلْمُ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ أَنْ اللَّهُ مِنْ أَلَّا مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ

(الأنبياء: ٥١-٥١)

إِنَّ الْمُرْهِبُمَ كَانَ أُمَّةً فَالِتُ الْلُوحَيِبُفُ أُولَمُ مَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيُنَ 0 شَاكِرًا لِإِنْفُيهِ الْمُنَابُهُ وَهَذَالُهُ اللّٰي مِنْوَاطٍ مُسْتَنِينِينِ 0 الْمُنَابُهُ وَهَذَالُهُ اللّٰي مِنْوَاطٍ مُسْتَنِينِينِ 0

(P*-P) (P*-P)

استدلال سے اللہ تعالیٰ کی معرفت حاصل کرنا

اور بے تلک ہم نے پہلے علے ایرائیم کو ہوات عطافریا دی تھی اور ہم المیں فوب جانے تھے اور جب انہوں نے اسپتے (حملیٰ) پاپ اور اپنی قوم سے کمانے کیے بعد ہیں جن کی یہ ستش یر تم تھے بیٹے ہو۔

ب فک ایرامیم اپنی ذات میں ایک فرمانیردار امت تے باطل ہے الگ میں پر کا تم رہے دالے اور وہ مشرکین میں ہے باطل ہے الگ میں بر کا تم رہے دالے اور وہ مشرکین میں ہے نہ تھے اس کی فعتوں پر فکر کر رہے دالے اللہ کے ان کو چن لیا در ان کو مراط مستقیم کی طرف برایت دی۔

ان آیات میں الا بیت اور اللہ تعالی کی وجد کا ابات کے لیے مناظرہ کا جوت ہے اور یہ کہ دین حق کے ابات اور اس کی نفرت کے لیے مناظرہ کرنا حضرت ایرائیم علیہ السلام کی سنت ہے۔ ان آیات میں یہ بتایا ہے کہ جو فروب یا غائب ہو جائے 'وہ فد ا میں ہو سکتا اور اس سے یہ بتیجہ نکا ہے کہ فد الجم نمیں ہو سکتا کی کہ اگر وہ جم ہو آتی وہ کی ایک افق کے سامنے ہو آتی وہ دو مرے افق سے غائب ہو بالق کے سامنے ہو آتی وہ دو مرح افق سے غائب ہو بالد نیز اس سے یہ بھی ٹابت ہو آب کہ خوا مفات ماوہ کا محل نمیں ہو سکتا کی کہ اس می بھی تغیر کا معنی ہے۔ نیز اس وہ حضیرہ کا اور حضیر فد انہیں ہو سکتا کہ دو اس می بھی تغیر کا معنی ہے۔ نیز اس سے یہ بھی معلوم ہوا کہ انہیاء علیم السلام کے مقائد دولا کل پر جی ہوتے ہیں اور یہ کہ اللہ استدلال کا کوئی فائدہ نہ ہو آبادر اس سے یہ بھی معلوم ہوا کہ انہیاء علیم السلام کے مقائد دولا کل پر جی ہوتے ہیں اور یہ کہ اللہ سے استدلال کیا جائے۔ جس طرح حضرت ابراہیم علیہ السلام نے سامدہ چاند اور سوری کے فروب ہونے سے یہ استدلال کیا کہ ذوب خوالا اور حضرت ابراہیم علیہ السلام نے سامدہ چاند اور سوری کے فروب ہونے سے یہ استدلال کیا کہ ذوب خوالا اور حضرت ابراہیم علیہ السلام نے سامدہ چاند اور سوری کے فروب ہونے سے یہ استدلال کیا کہ ذوب خوالا اور حضرت ابراہیم علیہ السلام نے سامدہ چاند اور سوری کے فروب ہونے سے یہ استدلال کیا کہ ذوب خوالا اور حضرت ابراہیم علیہ السلام نے سامدہ چاند اور سوری کے فروب ہونے سے یہ استدلال کیا کہ ذوب خوالا اور حضرت ابراہیم علیہ السلام نے سامدہ خوالد کیا دوب ہونے سے بیاستدلال کیا کہ ذوب خوالا کی دوب کی دوب کا میں میں سوری کے دوب کو السام کے مقائد دوب کی دوب کی دوب کو دیا ہوں کے دوب کو المام کے مقائد دوب کی دوب کو دوب کو دیا ہوں کہ کی دوب کو دیا ہوں کی دوب کو دیا ہوں کی دوب کو دیا ہوں کی دوب کی دوب کو دیا ہوں کی دوب کو دیا گی دوب کو دیا گی دوب کو دیا گیا ہوں کی دوب کو دوب کو دیا گیا ہوں کی دوب کو کو دیا گیا ہوں کی کو دیا گیا ہوں کی دوب کو دیا گیا ہوں کی دوب کو دیا گیا ہوں کی کو دیا گیا ہوں کی کو دیا گیا ہوں کی دوب کو دیا گی

الله تعالى كاار شاوع: اور ان كى قوم في ان سے جھڑا كيا انہوں في كما تم بھو سے اللہ كے متعلق جھڑتے ہو؟ ملائكداس في جھے بدایت پر برقرار د كمانور بس ان سے نہيں ڈر آجن كو تم اللہ كا شريك قرار ديتے ہو سوائے اس كركہ ميرا دب بى مجھ جائے ممرے دب كاعلم برج كو محيط ہے ممياتم نصحت قول نبس كر حيدالانعام ١٨٠٠)

حفرت ابراجيم عليه السلام كانتي قوم كے ساتھ ميادة الم ابوجعفر محدين جرير طرى الى سند كے ساتھ دوايت كرتے بين

بينان القر ان

جلدسوم

کو شرک بنانے سے تیمی ڈریے جن کے متعلق اللہ نے تم یہ کوئی دلیل ٹائل قیمی کے۔ پس بردد فریق بی سے بے خوف ہونے کاکون زیادد حقد ارہے؟ اگر تم علم رکھے ہو۔ (الانعام: ۱۸)

یہ ایرائیم علیہ السلام کافہی توم کو جواب ، بب انہوں نے صفرت ایرائیم کو اپنے بنوں سے ڈرایا تفاکہ اگر تم نے ان کی فرمت کرنانہ چھوڑی تو جمیس کوئی آخت یا معیبت پنچ گی۔ صفرت ایرائیم علیہ السلام نے فرمایا میں ان بنوں سے کیے ڈرول جن کی تم اللہ کو چمو ڈکر حمیاد تر میں ہیں۔ اگر وہ کسی چزر پر پچھ تاور کی تم اللہ کو چمو ڈکر حمیاد تر کہ ان کو کلیاڑے سے کوئے کا اس کو ضرر پنچانے پر تاور نیس ہیں۔ اگر وہ کسی چزر پچھ تاور میں وقت میں نے ان کو کلیاڑے سے کوئے کوئے کیا تھا اس وقت میرا پکھ بگاڑ لیے اور جس ان بنوں سے کیے ڈر سکتا ہوں جو کسی لفتے اور خیسان پر قاور نیس ہیں۔ اب تم می بناؤ کہ ونیالور آخرت میں اللہ تعالی کے عزاب سے کون مامون اور موزیا ہے اور جو اس کی عبادت کر آ ہے جو کسی نفتے اور ضرر کا تھا ہے اور جو اس کی عبادت کر آ ہے جو کسی نفتے اور ضرر کے خوالے کہ اور جو اس کی عبادت کر آ ہے جو کسی نفتے اور ضرر کے خوالے کہ ایک نمیں ہے۔

الله تعالى كاار شاوي: جولوگ ايمان الائد اور انهون في ايمان كے مائد علم كوشي طايا ان ى ك ليه ب

اس مباحثه بين الله تعالى كاليمله

اس ایت بی علم سے مراو شرک ہے ای کا مقل کا معنی ہے کسی چڑکو اس کے مقام پر ند رکھتا اور ہو محض فیران کی مہادت کر آہے ، وہ مہادت کو اس کے علی میں نمیں رکھتا اور اس کی تاثید اس مدے سے ہوتی ہے:

حضرت عبدالله بن مسعود رضى الله عند بيان كرتے بي كر جب يه آيت نازل بوئى "المد بس امسوا و لم بملبسوا
ابسامهم بطلم "(الانعام: ۱۸) قويد رسول الله بيجيد كامحاب ير بمت دشوار بوئى۔ انبول في كفايار سول الله المهم بس عدم مخض الى جان ير يكون تركي علم كر آب- تب رسول الله بيجيد في قبل ظلم كايد معنى مراد لهي بهد كياتم في القمان كا اب بين كے متعلق يہ قول لهي سناكہ شرك علم معيم ب

(مج البلای ع) رقم الحدیث ۱۳۳ مج مسلم ' ۱۳۷ (۱۳۲۱ ۱۳۳۰ سنی الزوی عن رقم الحدیث ۱۳۰ (۱۳۰۰ النن الکبری المنسلق ا جه ارقم الحدیث ۱۳۷۱ مسر اس ۲۰ رقم الحدیث ۱۳۰۱ النن الکبری المعمتی ع ۱۰ می ۱۸۵ جائع البیان ۲۲ می ۱۳۲۱-۱۳۲۱)

وتلك حجتنا البناعا البرهيم على حوم الم

غيان القر أن

ادران کی اولادی ست داؤد هوى) الديم الى طرع يكى كرسف واول كو جزا دنيية إلى ٥ أور ذكريا الدميلي ادر الياس ميرسب صلحين جي سعد جي اورا ل کی اولا فہ اور ال سے ہمائیون بی سنتے میمن کو (ہدا بہت دی) اور بم ہے ای کوپٹن لیا اور ان س کی ہدایت دکان مراشد کی جابہت ہے جمل سکے ماقت وہ اپنے بندول یں سے جے جا بتاہے ہدایت و کیے بوٹے نیک مل خاتم 0 2 CO مرابيت ادر نبوت علا كي متى ، بي أكر يه وك ان جيزول كا الكاركرية يي ووك بمست كأب الاط خيان القر أن

وَكُلْنَا بِهَا قُوْمًا لَيْسُو أَبِهَا بِكُفِي بِنَ ۞ أُولِيْكَ الَّذِينَ هَاى

حرج بنیں ؛ م سقان چیزوں پرایسی وم کو مقرد قرما دیا ہے جوان چیزوں کا اٹکار کرتے والی بنی ہے یہ وی وگ یو یو کو اندے

اللهُ فَبِهُالهُ مُ اكْتُكِاهُ قُلُ لَا السَّاكُمُ عَلَيْهِ آجُرًا إِنْ هُوَ إِلَّا اللَّهُ فَبِهِال

پرامیت کی سب ، موآب می ان سے طریعتر پر مہیں ، آپ مجیے کہ میں اس و تبلیغ اسن ، پر تم سے کوئی مواد صرفالسب میں کرا ، پر زمرت

ذِكُرِي لِلْعُلِمِينَ ﴿

تنا جان والول كے ليے تعيمت و

الله تعالی کاار شاوہ: یہ تھی ہماری وہ توی دلیل جو ہم نے اہراہیم کو ان کی قوم کے مقابلہ میں مطاکی'ہم جس کو اللہ تعالیٰ کا ارشاوہ ہے مطاکی'ہم جس کو اللہ تعالیٰ کا ارشادہ ہے۔ الانعام: ۸۳) مسلمانوں پر مصائب تا زل ہوئے کی وجوہات مسلمانوں پر مصائب تا زل ہوئے کی وجوہات

اس آیت می صرت ایرائیم علیہ السلام کے دیے ہوئ ان تمام دلاکل کی طرف اشارہ ہے جن کاذکراس ہے پہلی آیتوں میں اچکا ہے۔ ان کی قوم کے کافروں نے کما تھا گہ تم جارے بتوں کی خالفت کرتے ہو اس لیے جمہیں ان کی خالفت کی وجہ سے کوئی الشت یا معبست بھی جائے گی۔ معرست ایرائیم علیہ السلام نے فرمایا جو لوگ اللہ پر ایمان لاے لور انہوں نے ایمان کے مائٹہ کمی ظلم کی آمیزش نہیں کی وی لوگ جرائم کی آفتوں اور معیبتوں سے محفوظ رہے ہیں۔

اس جگہ یہ سوال ہو آے کہ بہت ہے مسلمان بھی آفات اور مصائب کا شکار رہے ہیں۔ پھریہ کہنا کس طرح سمجے ہوگا کہ ایمان دالے دنیا اور اگرت کے عذاب ہے محفوظ رہے ہیں؟ اس کا آیک جواب یہ ہے کہ یہ آفات اور مصائب انسان کی اپنی بعض بدا جمانوں کے سب سے لاحق ہوتے ہیں۔ اللہ تعالی فرما آئے:

اور جومعیبت حمیں پنجی ہے تو دہ تسارے اپنے کر تو توں کے سب حمیں مبنجی ہے اور بہت می خطاؤں کو قودہ معاف کر

وَمَا آصَابَكُمُ فِينَ مُنصِبْبَةٍ فَيِمَا كَسَبَتُ آيُدِيُكُمُ وَيَعُفُواْعَنَ كَيْنِيرٍ (الشورى:٣٠)

دومری وجہ یہ ہے کہ افخہ تعنائی اپنے نیک فور صالح یعدل کو آزائش میں جانا کرتا ہے فور اس آزائش میں ان کی استفامت اور ان کامنیا اور صبران کے تقرب اور ان کے در جات کی بلتدی کا سبب بنتا ہے اور قیامت کے دن اللہ تعانی ان کوجو بلند در جات عطا فرمائے گا' تو اس کی دلیل اور ججت کے فور پر آفات' مصائب اور حشکلات میں ان کی استفامت اور ان کے مبرو منبط کو خابر فرمائے گا۔ اللہ تعانی فرما تاہے:

آحَسِبَ النَّاسُ آنُ يُعَرِّرُ كُوْ آنَ يَعُولُوْ آمَنَا وَ الْمَعْدُولُوْ آمَنَا وَ الْمُعَدِّرُ كُوْ آنَ يَعْدُولُوْ آمَنَا وَ مُسْمَ لَا يُفْتَدُونَ (العنكبوت: ٣)

وَلَنَسِلُولَنَكُم بِنَدُ فِي إِلَا كُعُوفٍ وَالْعُوعِ وَ

کیالوگوں نے یہ گمان کرنیا ہے کہ وہ (محض) ان کے اس کنے پر چھو ڈریئے جا کس کے محمد ہم ایمان نے آئے اور ان کو آزائش جس نوالا جائے گا۔

دور ہم م کو بکھ خوف اور بھوک اور بال اور جان اور

بلدسوم

طِيانُ القُر أَنْ

پھلوں کی گئے ضرور آزمائی مے اور آپ مبرکرتے والوں کو خوش خبری سناہے جب ان لوگوں کو کوئی مصیبت پہنچی ہے تو وہ کہتے میں ' ہے شک ہم اللہ می کے لیے میں اور ہے شک ہم اللہ می کی طرف لوشنے والے میں ' یہ وہ لوگ میں جن پر ان کے ریسے کی جانب سے صلوات اور رحمتیں نازل ہوتی میں اور ہی مَقْصِ مِنَ الْأَمْوَالِ وَالْاَنْفُونَ وَالنَّمَرُ بِوَوَمَيْسِرِ الشّبِرِيْنَ 10 اللّهِ مَن إِذَا أَصَابَتُهُم مُعِيبًا قَالُوْا إِنَّا لِللهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ وَاجِعُونَ 0 اُولَيْكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتُ مِنْ آرِيْهِمْ وَرَحْمَةً وَاُولَيْكَ مُمَ الْمُهَتَدُونَ (البقره عاده)

اوك بداعت إفترين-

انبیاء علیهم السلام علاء اور مومنین کے درجات کی بلندی

نیزاس آنت میں فرملا ہے ہم جس کو جاہتے ہیں اپنیموں میں ہے ان کے در جات بلند کرتے ہیں۔ یہ در جات ایمان ا علم و حکمت اور نیوت کے در جات ہیں ' جیسا کہ اللہ تعلق نے فرملا ہے:

ے سب د سول ہم نے ان جی ہے بعض کو بعض پر نسیات وی ہے۔ ان جی ہے کی ہے اند نے کلام فرمایا اور کسی کو (سب بر)در جات کی لیندی مطافرمائی ہے۔ يَلُكُ الرُّسُلُ مَشَلِّا المُعَمَّمُ مَالُ مَكُ الرُّسُلُ مَثَلًا المُعَمَّمُ مَالُ مَكُ اللهُ وَرَفَعَ العُصَّهُمُ دَرَجْتِ مِسْهُمْ مَنْ كُلُمَ اللهُ وَرَفَعَ العُصَّهُمُ دَرَجْتِ (البقره: ۲۵۳)

رسولوں کے علاق اللہ تعلق نے ایمان والول اور علاء کے در جات کی بلندی کا بھی ذکر فربلا ہے:

تم بیں سے جو لوگ کائل ایمان لاسے اور جنہیں علم دیا گیا' اللہ ان کے درجات بلتد قربائے گا۔ يَرْهُمِ اللَّهُ الَّذِيْنَ امْتُوامِثُكُمُ وَالِّدِيْنَ أُوتُوا الْمِلْمَ دَرَّالِمِيْنِ (المحادلة»)

ادر آ محرت میں اللہ تعالی اجرو تواب کے اعتبار ہے ان کے درجات پلند قرائے گا۔ اس آیت میں مرادیہ ہے کہ اللہ تعالی معمد مار مصرا مال ان کے ایک تقریب کے اعتبار ہے ان کے درجات پلند قرائے گا۔ اس آیت میں مرادیہ ہے کہ اللہ تعالی

تے حضرت ابراہیم علیہ السلام کی دلیل کی قوت اور غلبہ کے اختبار سے دنیا پس بلند درجہ عطافر ہایا۔

الله تعالی کاار شاوے: اور ہم نے ابراہیم کو اسخی اور یعقوب عطاعیے اور ہم نے سب کو ہدایت دی۔ اور اس سے مسلے نوح کو ہدایت دی۔ اور اس سے مسلے نوح کو ہدایت دی اور اس سے داؤد اور سلیمان اور ابوب اور یوسف اور موی اور ہارون کو (ہدایت دی) اور ہم اس ملح نیکی کرنے والوں کو جزاویے ہیں۔ (الانعام: ۱۸۸)

حضرت ابراجيم عليه السلام پر الله نغالي كي نعمتوں كالشلسل

ان آیات میں اللہ تعالی نے معرت ایرائیم علیہ المالام پر اپی تعتیں بیان فرائی ہیں۔ ان میں سے ایک یہ نعت تھی کہ اللہ تعالی نے ان کو کفار کے مقابلہ میں جمت اور ولیل کے انتہار سے قالب اور سر فرو کیا اور دو سری فعت یہ تھی کہ ان کے در جات بلند فرمائے اور تمیری فعت یہ ہی کہ ان کی نسل سے اللہ تعالی نے انبیاء علیم السلام کو مبعوث فرمایا ، جن کا ذکر اس آیت میں فرمایا ہو معرت ایرائیم علیہ السلام اور ان کی ندوجہ معرت سارہ دونوں بہت ہو تھے ہو بھے تھے۔ اس وقت معرت لوط علیہ السلام کی طرف جاتے ہوئے ان کے باس فرشت آئے اور ان کو معرت اسلام کی طرف جاتے ہوئے ان کے باس فرشت آئے اور ان کو معرت اسلام کی طرف جاتے ہوئے ان کے باس فرشتے آئے اور ان کو معرت اسلام کی والدت کی بشارت دی۔ اس بشارت سے معرت سارہ کو بہت تھی ہوا۔ انہوں نے کہا

مادہ نے کمایائے افسوس اکیا جس بچے جنوں گی ممال تکہ بیں یو ژھی ہو چکی ہوں اور میہ میرے شو ہر (بجی) یو ژھے ہیں 'ب شک میہ جیب بات ہے۔ فرشتوں نے کما کیا تم اللہ کے تھم سے قَالَتُ يُويْلُنَيُّ الْدُوالَا عَجُورُوَّ هٰذَا بَعَلِيُّ شَيْخًا إِنَّ هٰذَا لَشَيُّ عَجِيبُ 0 قَالُوْا اَنَعْحَيِيبُنَ مِنْ امْرِ اللّٰورَ حَمَّتُ اللّٰهُ وَبَرَكْنَهُ

عَلَيْكُم أَهُلَ الْسَيْنِ إِنَّهُ حَمِيدٌ مَّوِيدُ تعجب کرتی ہوا اے ایراہیم کے اہل بیت 'تم پر اللہ کی رحمیں اور يركش يول عي كالدوى ها تريف كيابوايدى برركى (هود: ۲۵-۲۵)

حضرت ابراہیم علیہ السلام کو الله تعظی نے مصرت اسلام کی بارت دی: وبشرنه باسخق نبياتي الصلحين ا در ہم نے ایرامیم کو اعلق کی کی بشارت دی جو صافعین عر

-172

اور پھر انقد تعالی نے معترت اسلی کے بعد معترت مارہ کو دا ان کے بچستے ؛ معترت میتوسب کی بشارت دی :

فَبَنْسُرْنَهَا بِإِسْعُقَ وَ مِنْ وَرَآءِ إِسْعِيقَ اور بم في ماره كوا على كارت رى اور اعلى كربد (هود: آن) کیتوبی کید حضرت ابراہیم کی اولاد میں حضرت اساعیل کو ذکرنہ کرنے کی وجہ

اس آیت میں معرت ابراہیم علیہ السلام کے دو بیوں میں سے معرت اعلی کاذکر فریلیا ہے اور معرت اسامیل علیہ السلام کا ذكر تهيں فرملا 'اس كى وجہ يہ ہے كه حضرت ايراہيم اور حضرت مارہ كے يو ڑھے ہونے كے بعد الله تعالى كى قدرت كى نشانى كا عمور اول حضرت اسلق كى پيدائش سے موا- دو مرى وجہ يہ سے كه اس جكه انجياء فى امرائل كاذكر كرنا مضمود سے اور منو اسرائلك منام انبياء معرت الخق اور معرت يعقوب كى اولاد عيد

حضرت ابرا ہیم علیہ السلام حضرت نوح علیہ السلام کی اولاد میں سے ہیں ان سے پہلے اللہ تعالیٰ نے حضرت نوح علیہ السلام كونيوت اور مكمت ، نوازا تعااور يه حضرت ايرايي عليه السلام كى بهت يدى فعت ، ان كم بد أكرم في تصدوه خود بحى في تهاوران كي اولاد بس مجي انهياء عليم السلام بين. حضرت داؤه "حضرت سليمان" حضرت يوسف "حضرت موي اور حضرت بإدون عليم السفام يدمب ان كى درعت طيب ع

دُرِيَّةً لِكُوسُهُ امِنْ تَعُضِ (العمران:٣٢) ان میں ہے بعض ابعض کی اولاد ہیں۔

اس میں مغمرین کا اختماف ہے کہ مس دریت کی خمیر معرت ایراہیم کی طرف داجع ہے یا معرت نوح کی طرف آگر ہے مغمیر معترت نوح کی طرف راجع ہو تو اس آیت کامعنی ہو گا معترت نوح علیہ السلام کی اولاد میں سے معترت واؤد ' معترت سلیمان ' حعرت ابوب معرت بوسف معرت موی معرت إرون معرت زكري معرت يكي معرت الياس ميرا اور اس يركوني احتراض نهي إوراكري مخير صغرت ايرابيم عليه السلام كي طرف واجع موقويه تمام انبياء معزت ابرابيم عليه السلام كى اولاد قرار پاكي محداس اختيار سے توب مناسب به كيونك اس كلام كاسياق و سباق عضرت ابراہيم عليه اسلام بر نعتوں كا بیان ہے اور یہ ان کے حق میں اللہ تعالی کی نعت ہے کہ یہ سارے انبیاء علیم انسلام ان کی اولاد میں مین اس پر اعتراض ہے کہ حضرت میٹی علیہ السلام حضرت ابراہیم علیہ السلام کے صلی بیٹے تہیں ہیں الکہ وہ ان کی بٹی حضرت مریم کے بیٹے ہیں اور دور کی پشتوں میں جاکر آپ کے نواہے ہوئے تو حضرت عیلی علیہ السلام پر ان کی اولاد کااطلاق کس طرح درست ہوا؟اس کاجواب بیہ ے کہ یہ اطلاق مجازی ہے۔اس کی مزید تنسیل ان شاء اللہ ہم آے ۵۸ کی تغیر میں ذکر کریں مے۔ الله تعالى كاارشادى: اور زكرااور كي اور الياس يرسب مالين مى عين-(الانعام: ٨٥)

جیماکہ ہم نے پہلے ذکر کیا ہے کہ اس میں اختلاف ہے کہ مین ذریت ہی خمیر کامرجع حشرت نوح میں یا حضرت ابراہیم. عبيان القر أن ابوذكرا يكي بن زياد القراء المتوفى ١٠٠٥ ف لكمام يه ضمير معرت توحى طرف داجع مهداني القرآن جامس ١٣٣٧) نواسول كاولاد من واخل مونا

الم ابن ابی حاتم متونی ٢٠ معد ابدالا مود مدوایت كرتے بی كد تجاج نے بی بن بعد كو بلاكر كماكد جملے معلوم بوا ہے كہ تم ہے كہتے ہوكہ حضرت حسن اور حضرت حسين في رجيب كى اولاد بيں۔ كيا قرآن مجيد بي اس پر كوئى دليل ہے ؟ بي نے اول من آز تك قرآن مجيد پڑھا جملے اس پر كوئى دليل ميں لجي يجي بن بعد نے كما تم نے مورة الانعام كى ہے آ ہے ديس پر مى و من ذريشه المي قوله و بحسبى و عبيسى اس نے كماكوں نميں انہوں نے كماكيا حضرت ابراجم كى اولاد نميں بين علائك ان كاكوئى باب نميں ہے۔ تجاج نے كماآپ نے كماكوں

(تغيير المام ابن الي حاتم مج ١٠٥٥ من ١٣١٥ مطبوعه نزار مصطفى وياض كا١١١ه)

ابو اسخق ابرائیم الرجاح المتوفی اسمد نے اکھاہ ، جائز ہے کہ یہ انجیاء علیم السلام حضرت نوح علیہ السلام کی اولاد میں سے موں اور یہ بھی جائز ہے کہ یہ انجیاء علیم السلام حضرت ابرائیم علیہ السلام کی اولاد فیں سے موں۔

(معانى التر آن واموابه المزجاج على ٢٦٩م ٢٦٩ مطبوعه عالم الكتب بيروت ٨٠٠١٥ه)

قامنى عبدالى بن عالب بن صليد الدلسي متونى اسماعد كلية إلى:

زجاج نے کماہے کہ مین ذریت کی مغیر کا ایراہیم کی طرف لوٹنا بھی جائز ہے۔ اس پر میہ اعتراض ہو گاکہ ان انبیاء میں حضرت لوڈ علیہ السلام کا بھی ذکر ہے اور وہ حضرت ایراہیم علیہ السلام کی لولاد میں ہے نہیں ہیں' بلکہ وہ ان کے بہتے ہیں اور ایک قول میہ ہے کہ وہ ان کے بھانے ہیں لور جو فحض مامول پر باپ کا اطلاق کرتا ہے وہ اس آیت سے استدلال کرتا ہے۔ اور ایک قول یہ ہے کہ یہ طمیر حضرت نوح علیہ انسلام کی طرف او تق ہے اور یہ بہت مناسب ہے۔

(الحروالوجيز على ١٩٠٥ملوم كتبد تجاريه الكه كرمد)

ایام این این ساتم این شد کے ساتھ محرین کعب سے روایت کرتے ہیں کہ ماموں بھی والدہ اور پچا بھی والدہ۔ اللہ تعالی نے معرت لوط علیہ السلام کی ان کے ماموں کی طرف تبت کی ہے اور قربایا "و می ذریعه (الی قوله) و زکریا و بحیبی وعیسی والیاس کیل میں المصلحین

(تغييرا بام ابن الي حاتم "ج"م م ١٣٣١ مطبوير كمتيه ززار مصلق ارياض الا ١١٠١ه)

نواسوں کو اولاد میں شار کرنے کے متعلق ترابب فقهاء علامہ ابوعبداللہ محرین احمد آئی قرقبی متونی ۲۱۸ مد کلیتے ہیں:

اکر یہ کما جائے کہ یہ ذکور انبہاء علیم السلام صفرت ابراہیم علیہ السلام کی اولادیں ہے ہیں قواس پر یہ اعتراض ہوگا کہ اس آیت میں حضرت ہوئی اور حضرت ابراہیم علیہ السلام کی اولاد میں ہے نہیں ایت میں حضرت ہوئی اللہ السلام کی اولاد میں ہے نہیں ایس حضرت اور ایک تھول یہ ہے کہ ان کے بھائے تھے۔ صفرت ابن عباس دخی اللہ فنمائے فرایا یہ تمام انبیاء حضرت اور ایس علیہ السلام کی اولاد کی طرف منسوب ہیں 'اگر چہ ان میں بعض انبیاء ایسے ہیں جو باس اور باپ کی طرف ہے حضرت ابراہیم علیہ السلام کی اولاد کی طرف سے حضرت ابراہیم علیہ السلام کی اولاد کی طرف منسوب ہیں 'اگر چہ ان میں بعض انبیاء ایسے ہیں جو باس اور عرب ہیا کو باپ کھے حضرت ابراہیم علیہ السلام کی جانب کو باپ کھے ہیں اور عرب ہیا کو باپ کھے ہیں اور عرب ہیا کو باپ کھے ہیں اور عرب ہیا کو باپ کھے ہیں انہوں نے کہا آنہ کے اور آپ کے باپ سیساکہ قرآن مجمود کی عبادت کریں گے اور آپ کے باپ سیساکہ قرآن مجمود کی عبادت کریں گے اور آپ کے باپ سیست کی معمود کی عبادت کریں گے اور آپ کے باپ

<u> جيان القر آن</u>

إسميعيل وإسخق (البقره:٣٠٠)

دادۂ ابراہیم اور اساعمل اور اسخن کے سعبود کی عمادت کریں محمہ ب

ملائك معرت اساعيل معرت ليتوب عليه السلام كر ي تا تف

اور صفرت عینی علیہ السلام کو بھی صفرت ایراهیم علیہ السلام کی ؤرےت سے شار فربلا ہے ملا تکہ وہ ان کی بٹی کے بیٹے بین اس کا بناء پر حضرت فاطمہ رضی افلہ صناکی اولاد میں واقل کرتے ہیں اور ہو فقیاد بیٹیوں کی اولاد میں واقل کرتے ہیں ' وہ اس آیت سے استدلال کرتے ہیں اور ان کا استدلال اس صدیث سے بھی ہے:

الم محدين اساعل عارى متونى ١٥١ه روايت كرتي ين

تعرب ایو بکر بوائز، بیان کرتے ہیں کہ ایک دن رسول اللہ عظیم حصرت حسن برائز، کو نے کر آے اور ان کو منبر رچ حایا ا پھر آپ نے فرلما میرا یہ بیٹا سید ہے اور بے شک اللہ تعالی اس کے سب سے مسلمانوں کی دو عظیم جماعتوں کے در میان مسلم کرائے گا۔

(منج البخاري عن وقم المديث: ١٣٠٩ سنن الرّزي عن وقم الديث: ١٨٥ سنن ايوداؤد عن وقم المديث: ١٦١٩ سنن السائل عن وقم المديث: ١٠٠٩ منج ابن حيان عنا وقم الديث: ١٢٧٧ سند احد عن وقم الديث: ١٠٠٩ طبع جديد "سند احد" جن ص ١٠٠٤ من طبع قديم المعجم الكبير عن وقم الديث: ١٥٥٩ مجم الزوائد عن مهما)

جمیں کسی کے متعلق بید علم نسیں ہے کہ اس نے بیٹیوں کی اواد پر ان کے بٹائی اواد کے اطلاق کو ہاجائز کما ہو اور اخت ہے بھی اس کی مائید ہوتی ہے متوفد ہیں۔ سو قرآن جید کی بھی اس کی مائید ہوتی ہے متوفد ہیں۔ سو قرآن جید کی بھی مائید ہوتی ہے متوفد ہیں۔ سو قرآن جید کی اولاد ہمی مائی مدعث اور افت ہے یہ عابت ہے کہ کسی محتمل کی بیٹی کی اولاد پر بھی اس محتمل کی اولاد اللہ مائی منظم حضر کی بیٹی کی اولاد پر بھی اس محتمل کی اولاد اللہ مائی حضر کی اولاد اللہ مسلم حضر کی بیٹی کی اولاد پر بھی اس محتمل کی اولاد اللہ مائی حضر کی اولاد اللہ اللہ ہو تا ہے۔

امام ابر صنید اور امام شافعی یہ فراتے ہیں کہ جس طف نے اپنی نوالد اور اولاد کی اولاد کے لیے کمی جائد اوکو وقف کیاتواس میں بیٹیوں میں بیٹیوں کی اولاد بھی داخل ہوگی اسی طرح جب کمی طفعی نے اپنے قرابت داروں کے لیے وصیت کی تواس میں بیٹیوں کی اولاد بھی داخل ہوگی۔ ایم ابو صنیفہ رحمہ اللہ کے نزدیک ہرزی رحم محرم کو قراب شال ہے اور ان کے نزدیک اس وصیت کی اولاد بھی داخل ہو جا کیس کے ایک تکہ وہ محرم نسی ہیں اور امام شاخی رحمہ اللہ کے نزدیک ہرزی رحم محرم نسی ہیں اور امام شاخی رحمہ اللہ کے نزدیک ہرزی رحم محرم اور اس کے فیر کو قرابت شال ہے اسوان کے نزدیک اس وصیت سے بچاکا بیٹا اور اس کا فیر ماقلہ نسی ہوگا اور امام مالک کے نزدیک اس دصیت میں بوگا اور اس کا اپنی اولاد واخل نسی ہوگا اور اس کا اپنی اولاد واخل نسی ہوگا۔ اولاد کی اولاد کے لیے وصیت کرنا ہی اولاد واخل نسی ہوگا۔ اولاد کی اولاد کے لیے وصیت کرنے کی مثل ہے اور اس وصیت میں بیٹے کی اولاد واخل ہوگی اور بیٹیوں کی اولاد واخل نسی ہوگا۔ اولاد کی اولاد کی اولاد کی اولاد کی ایک قبل اسی طرح ہے۔

الم مالك كى وليل يدب كر الله مبحلته و تعالى فرما آب

یُومِ بِنَکُمُ اللّٰهُ مِنَی اُولَادِ کُمُ (النساء الله) الله تماری اولاد (کے صوب) کے متعلق تھم دیتا ہے۔ تمام مسلمان اس آیت کابی معنی تحصے ہیں کہ اس آیت ہیں اولاد سے مراو صلی اولاد ہے اور خصوصاً بیٹا مراد ہے۔ ای خرح اللہ تعالی نے قرمایا

ل ۱۳۱ مول کے لیے اور اس کے قراب وار وال کے لیے۔ اور اس کے قراب وال کے لیے۔

وَلِلرَّمْوُلِ وَلِيدِى الْفُرَّلِي (الانغال:٣١)

ر سول الله عظیم تے ہے جسم قراب واروں میں ہے بھا کو دیے " ماموں کو ضمی دیے "ای طرح عرف میں بیٹیوں کی اولادان كے بلائى طرف منسوب نسمى كى جاتى اور الجمونسب من ود بلا كے ساتھ نسمى لتى۔

(الجائع لاحكام المرّ آن 27 م. ٣٠ مطبوعه دا واللكو "بيروت ١٣١٥) ١٠)

جي كي اولاد ير اولاد ك اطلاق اور اولاد ين اس كوافل موت يربيد اللي يه كر قر آن جيد ين ي:

مرااے رسول کرم ا) آپ کیاس وی آنے کے بعد بھی جو لوگ معترت مبینی کے متعلق بحث کریں تو آپ (ان ہے) ایل اور ق کواور تم ایل اور ق کواور ام اید آب کواور تم الميد آپ كو مجرائم مايرى كرمات الله عدوماكرين اور مِم نول يرافد كالعنت واليل-

فَمَنْ حَالَمُ كُذُونِي وَيُورِنُ بَعُودِ مَا حَاءً كُذِينَ الْعِلْمِ فَفُلُ تَعَالَوْانَدُعُ أَبْنَاءُ نَاوَابْنَاءُ كُمُ وَ نَبْنَهِلُ فَنَعْمَلُ لَعْسَتَ اللَّهِ عَلَى (آل عيمران: ١١) الكرديش0

ا مادیث میں ہے کہ تی میں ہے اپنے بیوں کے لیے صفرت حس اور صفرت حسین رمنی اللہ منما کو بالیا تھا اس سے واضح ہوآ کہ بٹی کی اولاد بھی اولاد جس داخل ہے۔

علامد جانال الدين ميوطى متوتى العديان كرتے بين:

الم ابن انی شید الم سعید بن منصور الم عبد بن حمید الم ابن جرا اور الم ابو تعیم عصبی سے روابت كرتے ہيں كه ال مران میسائیوں کی ایک بوی قوم تھے۔ انہوں نے حضرت میٹی بن مریم کے متعلق ایک عمین بلت کی اور وہ نی مریم ے اس ستلدیں بحث کر رہے تھ او اف تعلق نے ان سے مباہر کرنے کا تھم دیا۔ میج کوئی بڑھ تحریف لائے اور آپ کے ساتھ حفرت حسن معفرت حسين رمني الله عنما اور حفرت سيده فاطر رمني الله عنها تيس أوانهول في مبال كرف في انكار كرديا اور جزید دسینے یہ سلے کی۔ نبی چھیے نے فرملیا مجھ سب نے بٹارت دی تھی حی کہ در منوں یہ جیٹے ہوئے پر ندوں نے بھی کہ اگر يه مبالم كرية وتنام الل جران طلاك يو جات

الم مسلم الهم ترقدي الهم اين المنزو الهم حاكم إور الهم بيهتي في الني سنن جير) حضرت معد بن الي و قاص مواين سن روايت كاب كرجب يت تت ناتل موفى "قبل تعالواندع ابساء ناوابناء كم" تورسول الله مرتير فصرت على حعرت فالمر محترت حسن أور حعرت حسين رمني الله منم كو بلايا اور قربايا اسد الله ابيرب ميرب الل بيت إس

(در منور "ج" من ۲۳۳-۲۳۳ مطبوع داد الفكو "بروت ۱۳۱۳ امر)

علامه ميد محود آنوي متوفى مع العد العيدين

بعض علاء نے اس کا یہ جواب دیا ہے کہ بٹی کی اولاد کو بیٹا کمنا کیے جھید کی خصوصیت ہے۔ اور امارے اسحاب (فقهاء احناف) کے اس سکلہ میں مختلف فتوے میں اور میرار جمان سے کے بیٹی کی اولاد اولاد میں داخل ہے۔

(روح المعاني مجرع من ٣١٣ مطبوعه واراحيا والتراث العربي ميروت)

حضرت الياس كانسب اور ان كامصداق

معرت الماس عليه السلام كرنس اور ان كے مصداق من اختلاف ب-الم ابن جرم متوفی ١٠١٠ روايت كرتے ہيں. حضرت حبد الله بن مسعود بعاضي نے فرملیا اور اس الباس بیں اور اسرائل بیتوب ہیں۔ اور اہل انساب نے یہ کما ہے کہ اور ایس علیہ انسلام حضرت نوح علیہ انسلام کے جد (داوا) ہیں۔ وحب بن منبہ ہے اس طرح مردی ہے "کیونکہ اس آبت میں حضرت المیاس کو حضرت نوح علیہ انسلام کی ذریت قرار دیا ہے تو پھروہ حضرت اور یس کیے ہو سکتے ہیں ؟ کیونکہ حضرت اور ایس علیہ انسلام تو حضرت نوح علیہ انسلام کے داوز ہیں "اس لیے اہل انساب کا قول صحح ہے۔ (جامع البیان '22 میں ۴ مطبور داو العکو 'ہیروت میں ۱۳۱۵ہ)

الم ابن ابی طائم متونی ۱۳۲۷ نے بھی حضرت عبداللہ بن مسعود جہیں کا بیہ قوں روایت کیا ہے کہ حضرت الیاس بی حضرت اور ساتھ ایک ہے۔ دخترت الیاس بی حضرت اور بس بیں۔ (تغییرایم ابن ابی عائم 'جس' میں ۱۳۳۳ مطبوعہ مکتبہ نزار مصطفیٰ مکہ مرر '۱۳۱۷ء)

علامه ابو عبدالله محدين احر ماكي قرطبي متوفى ١٩٨٨ م لكست بين:

ایک قوم نے یہ وہم کیا ہے کہ البسع ی المیاس ہیں اللہ اس طرح نہیں ہے "کیونکہ اللہ تعالی نے ہر ایک کا الگ الگ ذکر کیا ہے۔ وصب بن منبہ نے کما کہ معفرت السع معفرت المیاس کے شاگر وہیں اور یہ دونوں معفرت ذکریا اور معفرت کی اور معفرت میں بہت معفرت الدیں معفرت ادریں ہیں اور یہ صبح نہیں ہے اسلام سے پہلے کزرے ہیں۔ ایک قول یہ ہے کہ معفرت الایاس ی معفرت ادریں ہیں اور یہ صبح نہیں ہے کہ معفرت ادریں معفرت نوح کے داوا ہیں اور معفرت المیاس ان کی اولاد ہیں ہے ہیں۔ ایک قول یہ ہے کہ معفرت المیاس ی معفرت نماریں اور دو سرا قول یہ ہے کہ نہیں ایک معفرت المیاس معفرت نماریں۔

ا جامع البيان ٤٦٠ عن ١٦ مطبوع دار الفكر بيزوت ١٣١٥ه)

علامه سيد محود آلوي متوتى ١٥٠ عدد لكست بن

الم ابن اسحاق نے حضرت المیاس کانسب اس طرح بیان کیا ہے" الیاس بن لیس بن فناص بن العیرار بن بارون ہے وہ بارون میں جو حضرت المیاس حضرت ہے شع کے نوا ہے بارون میں جو حضرت المیاس حضرت ہے شع کے نوا ہے بیں اور ایک قول ہے ہے کہ وہ حضرت اسام کے بھائی ہیں۔ حضرت ابن مسعود نے کماوہ اور یس میں اور امام ابن اسحاق نے بین اور ایک قول ہے ہے کہ وہ حضرت اسمامیل کے نوا ہے ہیں۔ حضرت ابن مسعود نے کماوہ اور یس میں اور امام ابن اسحاق نے حضرت اور یس کانسب اس طرح بیان کیا ہے اور یس بین بروی مله تیل ابن انوش بن قیشان بن شیٹ بن موجود و حضرت نوح معنوت اور یس کے در میان ایک بزار مسلم کے دادا بیں۔ حضرت اور یس کے در میان ایک بزار مسلم کے دادا بیں۔ ان میاس دسی اللہ عمل میں انداز المسلم کے دادا بیں میاس دسی اللہ بیروت)

الله تعالی کافرشاوی: اور اسامیل اور الیسے اور یونس اور لوط اور بم نے مب کو (ان کے زمانہ کے) تمام جمان والوں پر فضیات دی اور ان کے باپ دادا اور ان کی اولاد اور ان کے بھائیوں میں ہے بعض کو (ہدایت دی) اور ہم نے ان کو چن لیا اور ان سب کو صراط مشقیم کی ہدایت دی (الانعام ۵۲۰۸)

علامہ قرطبی نے وہب بن منبہ کے حوالے ہے بیان کیا ہے کہ حضرت البسع حضرت الیاس کے صاحب تھے اور یہ دونوں حضرت ذکریا اور حضرت بچی اور حضرت میسنی علیم السلام ہے پہلے گز دے ہیں۔ اغیاء علیمم السلام کے ذکر میں ایک نوع کی مناسبت

اس من به بل الله على الله تعالى في بلط جار نبيول كاذكر فرمايا اوروه صفرت نوح المطرت ابرابيم المحفرت المخل اور معفرت ايعقوب عليهم السائم بيل - بعران كي الولاد بيل سے جوده نبيول كاذكر فرمايا اور ده بيل - محفرت داؤد الحضرت سئيمان المعفرت ايوب المعفرت وسف السائم بيل - محفرت البياس المحفرت بارون المعفرت ذكريا المعفرت يجي المحفرت عيلى المعفرت البياس المعفرت الماميل المعفرت البياس المعفرت الولام المام اور بيركل المعاره نبيول كاذكر بيل

انبياء عليم السلام كالملائك عدافعل مونا

اس تبت ہے یہ ستلہ بھی مستبط کیا گیا ہے کہ انبیاء علیهم انسلام تمام اولیاء ہے افضل ہیں کیونکہ اللہ تعالی نے ان انبیاء علیهم انسازم کو انعلمین پر فضیلت دی ہے اور انعلمین میں اور بیاء کرام بھی داخل ہیں۔

بہ ظاہر اس آیت کا نقاصا ہے ہے کہ یہ انہاء علیم السلام امارے نمی سیدنا ہی جینے ہے بھی افضل ہوں کو نکہ اس میں فرمایے ہے ہم ان اسب کو المصل میں ہے۔ اس لیے مضرین فرمایے ہم نے ان اسب کو المصل میں ہے اور المصل میں امارے نمیرین نے اس کے مضرین نے اس کے اس میں کو اسپنے اپنے ڈوائوں میں تمام جمان والوں پر فضیلت دی ہے۔

ان آنتوں میں اللہ تعالیٰ نے انھارہ انہیاء علیم السلام کاذکر فربلیا ہے' ان کے علاہ قرآن مجید میں سات انہیاء علیم انسلام کا اور ذکر فربایا ہے۔ وہ بیہ جیں۔ معترت آوم' معترت اور بیں' معترت حود' معترت ذوا تکفل' معترت صالح اور معترت شعیب علیم انسلام اور ہمارے نبی سیدنا محد خاتم الانبیاء والرسلین صلی اللہ تعالی علیہ و علی آلہ واصحابہ و بارک وسملے۔

ان آیتوں میں اس پر دلیل ہے کہ جس رسول نے سب سے پہلے طفال اور حرام اور دیگر شرعی احکام بیان کیے ' وہ معنزت

نوح عليه السلام بير-

الله تعالی کاارشادہ: یہ الله کی ہوایت ہے جس کے ساتھ ووائے بندوں بیں سے جے چاہتا ہے ہوایت وہا ہے۔ اور
اگر وہ شرک کرتے تو ان کے کیے ہوئے نیک اعمال ضائع ہو جائے ں یہ وہ لوگ ہیں جن کو ہم نے کتاب اور محم شریعت اور نبوت
عطاکی تھی۔ پس اگر یہ لوگ ان چیزوں کا انگار کرتے ہیں (تو کوئی حرج نہیں) ہم نے ان چیزوں پر ایسی قوم کو مقرر فرماوی ہے جو ان
چیزوں کا انگار کرنے والی نہیں ہے۔ (الانعام:۸۸-۸۸)

الله کیدایت

یہ اللہ کی ہداہت ہے۔ اس سے مراد وہ ہدایت ہے جس کی اللہ تعالی نے انبیاء اور رسل علیم السلام کو ہدایت دی ہے اور
ان کو دین حتی کے ساتھ متصف ہونے کی قضق دی ہے 'جس کے سب سے انسوں نے دنیا اور آخرت کی عزت اور کرامت کو
حاصل کیا اور اللہ کی ہدایت کا معنی ہے اللہ کی قومید کا قرار کرنا 'ہر هم کے شرک سے دانما 'مجتنب رہاا اور افغاص کے ساتھ اللہ
کی اطاعت اور عبادت کرنا۔ پھر فرمایا (بہ فرض محل) اگر ان نبیوں اور دسولوں نے بھی شرک کیا تو ان کے نیک اعمال ضائع ہو
جا کی گیا گئے۔ اللہ تعالی شرک کی آمیزش کے ساتھ کسی نیک عمل کو قبول نبیس فرمانی اس تیت میں انبیاء علیم اسلام کی
امتوں کے لیے تعریض ہے کہ جب انبیاء علیم السلام سے بھی اللہ تعالی نے یہ فرمادیا کہ آئر اندوں نے بالفرض شرک کیا تو ان کے
نیک اعمال ضائع ہو جا نمیں گئے تھار میں گئی شار میں ہیں۔

الله تعالى في طرايا ہے ميد ووافياء بيں جن كو بم في كتابيں دى بيں ان كتابوں سے مراد معرت ابرائيم كے تعيفے بيں اور حضرت موكى كى تورات ہے معزت واؤدكى زبور ہے اور معفرت فيسى عليم الصلوة والسائام كى انجيل ہے اور علم سے مراد ہے كتاب الله بين فيكور احكام كى قيم اور معرفت اور نبوت كامعنى ہے اللہ كى طرف سے فيب كى خبريں اور احكام شرعيہ عاصل كر سكة بندوں تك يمنيانك

پر فرمایا آگر اہل مکہ نے میری کتاب کی ان آیات کا کفراور انکار کیاتو جی نے ان آیات پر ایمان لانے کے لیے ایمی قوم کو مقرر کیا ہے واس کا انکار نمیں کریں گے۔ ابن جرتے نے کمااس قوم سے مراوائل دینہ اور انصار ہیں۔ معزت ابن عباس رضی اللہ عنمانے فرمایا اہل دینہ وسول اللہ سی تیج ہے۔ اللہ عنمانے فرمایا اہل دینہ وسول اللہ سی تیج ہے۔ میں تشریف لانے سے پہلے اہل ایمان کے لیے دینہ میں جگہ بنا چکے تھے۔ قادہ نے اس تیسی کی یہ تفرید کی ہے تھاری آیات کی محذیب کی (قوکیا نقصان ہے) ہم نے اس سے پہلے قادہ نے اس سے پہلے

طِيانُ القر أن

انماره نبع ل كاذكركيا بيد جو جارى آيات پر ايمان لا نين والے جي دائم اين جربر نے اي تفيير كو رائح قرار ديا ہے۔ (جامع البيان '22 مل ٣٣٢-٣٣٥ ملحما "ملومد دار العكو 'بيروت '١٣٥٥)

الله نتحالی کاارشادہ: یہ دی نوگ ہیں جن کو اللہ نے ہدایت دی ہے ہو آپ بھی ان کے طریقہ پر چلیں۔ آپ کہتے میں اس (تبینج اسلام) پر تم ہے کوئی معاوضہ طلب نسیں کر آئی یہ تو صرف تمام جمان والوں کے لیے نفیحت ہے۔ الانعام نبی پڑیور کا تمام صفات انبیاء کا جامع ہو تا

ائی آبت کا معنی ہے اے رسول محرم!ان جمیوں اور رسولوں نے جو عمل کیا ہے آب اس کے مطابق عمل کریں اور جس منسان پر میر چلتے رہے جیں 'اس منسان پر چلیں اور اعادی دی ہوئی ہدایت اور توفیق کے مطابق جس طرح انہوں نے زندگی گزاری ہے' آپ اس طرح زندگی گزاریں اور ان تمام جمیوں اور رسولوں کے جس قدر محاس اور خوبیاں جی آپ وہ سب اپنے اندر جمع کرلیں۔ اس آبت جس نبی مزیج ہو تھے منقبت ہے کہ تمام جمیوں اور رسولوں جس جو خوبیاں اور کمالات الگ اور متفرق طور پر پائے جاتے تھے' وہ سب کملات آپ کی ذات جس جمع ہو تھے' جمیساکہ اس جدیث سے خاام ہو آہے۔

الم مالك بن انس المبحى متوفى الاهاد روايت كرتي من

رسوں الله علیم بنے فرمایا میں اس لیے مبعوث کیا کیا ہوں آگہ حسن اخلاق کو تھمل کرووں۔

(الموطارةم الدعث:١٦٤٤ مظوة رقم الدعث ١٩٠٥٠)

المام ابوعبدالله محدين عبدالله عالم نيشابوري متونى ٥- مهدروايت كرتيب

حعبرت او جریرہ جو بین میان کرتے ہیں کہ رسول اللہ جھیر نے فرمایا جھے اس لیے مبدوث کیا گیا ہے کہ میں صالح اضراق کو ممل کردوں۔

(المستدرك مع ۱۴ م ۱۹۳۷ سنن كبرى تطبيعتى مع ۱۴ الاستذكار مع ۱۴ الديث ۱۳۹۳ مند احد اجه الم الديث. ۱۹۳۴ على شاكر في كما اس مديث كى شد منج ب اسلومه واد الحديث قابره اسند احد اجه ام ۱۳۸۸ طبع قديم اكنز العمال ۱۳۱۶ رقم ۱۲ ۱۹۹۹ الحديث ۱۳۱۹۹)

الم احدين عمر حيكي بزار متوفى عهد روايت كرت بين:

معرت ابو بريره بوجر بيان كرت بيل كه وسول الله مريوم في قرمايا محصد مرف مكادم اطاق كو بوراكرف كر لي بعيماكيا

. (مند البراو' ج ۱۳ رقم الحديث ١٤٣٥ المجم الاوسط' ج٤ وقم الحديث ١٨٩ علامه البيثي في كما الم براو كي مند مجع ب مجمع الزوائد ' خ۵ م ۱۵ طبراني كي دوايت عمل ايك راوي ضعيف ب الدوالسنتوه' رقم الحديث ١٨٨) الم مخرالدين محمد بن ضياء للدين محرد ازى متوفى ٢٠٩ه فه تيمين

علماء نے اس آیت سے استدلال کیا ہے کہ امارے وسول جنید قدام انبیاء علیم السلام سے افضل جیں اور اس کی تقریر یہ سے کہ صفات کمال اور فصل شرف اس جی متفق ہیں۔ حضرت واؤد اور حضرت سلیمان علیما السلام نوت پر بہت شکر کرنے والے تھے اور حضرت یوسف علیہ السلام مہراور شکر کے والے تھے اور حضرت یوسف علیہ السلام مہراور شکر کے جائے تھے اور حضرت یوسف علیہ السلام قوی شربیعت کے بائی اور عالب مجزات کے حال تھے اور حضرت زکریا اور حضرت کی اور حضرت میں مائے قدم رکھتے تھے۔ حضرت اسام کمل یہ صدق مالب تھا اور حضرت المام و حضرت یو نس اللہ حضرت تعینی اور حضرت المام و حضرت یونس اللہ اور حضرت المام و حضرت یونس اللہ اللہ علی مدی مالیا میں ملیم الملام و جس وائے قدم رکھتے تھے۔ حضرت اسام کمل یہ صدق مالب تھا اور حضرت یونس اللہ ا

البيان القر اَن

الانعام ٢: ١<u>٩٩ ... ___ ١</u> واذاسمعواك ا۸۵ کی بار کاہ میں بہت کر گزا کر دعا کرنے والے تھے۔اس ہے معلوم ہوا کہ اللہ تعلق نے جن انبیاء علیم انسازم کا یہاں ذکر فرمایا ہے' ان میں سے ہرایک پر شرف اور نعنیات کی کوئی تد کوئی صفت عالب تھی۔ پر اللہ تعالی نے سیدنا محر جین کو یہ تھم ریا کہ وہ ان تمام انبیاء کی اجام کریں۔ کوباک اللہ تعالی نے سیدنا جو بیجید کویہ تھم دیا کہ جودمت اور اطاعت کی کل صفات ہو ان تمام انبیاء عليم السلام عن متنف طور پر يائي جاتي جن آپ تفالن مقلت عند متصف عوجا عن اور خدا كل رفيد اور شاكل جيل كواتي ذات میں جمع كرئيں اور جب الله تعالى نے آپ كويہ تھم ديا توبيد على ہے كہ آپ ان مفات كمال كے حصول مي كوئى كو بائى كرير- بس طبت بواكه شرف اور منيك كي تام مفات آب كي ذات عن جن بو محكي اور بو كمل تام انبياء عليم السلام من متنل تے ورس آپ کی ذات مبارک میں تی ہو گے۔ القراب کمناواجب کے دمارے نی سیدیا ہے ماہم انہا وے افضل ين-(تغيركير ع) من ٥٠ ملوم وارامياه الرائ العلي عوت ١٥٠ ميد عود ملوم معل اس كے بعد اللہ تعالى نے فرالا كي كيتے من اس اللغ رسائ يرتم من كوئى معاوف طلب ميں كر اس من مراديد ہے کہ جب اللہ تعالی نے آپ کو انبوارسائقین ملیم البلام کی میرون مل کرنے کا تھم ہوا ہے اور تام انبواء ملیم السلام کی میرت ی تھی کہ وہ دین کو پہنچائے اور شریعت کی بھی گرنے پر اور معلوق کا مطالب تسی کرتے تھے تو آپ نے بھی ان کے طریقہ کی بیروی کی اور قرطا میں دین کے پہنچا۔ انسان موش تم ہے کسی معلومند کامطالیہ انہیں کر آلود یہ قرآن تو تمام جمان والول کے لیے نصیحت ب الینی تمام انسانوں کو اپنی دنیا اور آخرت کی ملاح اور قلاح کے لیے جن جربور کی ضرورت ہوتی ہے اور سب قرآن جید یں موجود ہیں اور اس بی ہے دلیا ہے کہ عارے تی سردنا می موجع تنام دنیا کے انسانوں کی طرف معوث ہیں " نہ کہ کسی ایک

، کا خذ یا ہے ، ہم ان کو قام رکست ہداددان می سے اکثر معنہ کر جیا ۔

ں وہ معم دیا گیا جس کور تم جانت سنتے اور نہ تمبا ایسے باب وا دا ،آب مجید الفر (ہی سنے اس کن برزازل کیا ہے) بھران کوان

ل في بخ ير يجيد كے ليے جوڑوں 0 ير كانت حب كريم في الزل كياب يدركن الهي ايران (امل) أمال كار

<u> بيان القر ان</u>

(می) ایال بیخت بی ادروه این تمازول کی مفاطعت کرشتے ہیں O مفارشیون کو نبی بنیں دیکھ دے جی ر دہ تمیادسے کا بول ہیں ہما ہے طِيَانُ القَرِ أَنْ

بَيْنَكُوْ وَضَلَّ عَنْكُوْ مَا كُنْتُوْ تَزْعُمُونَ ﴿

شریک یں بیک تمارا ای تن رث گالای برتم ممند کرتے وہ تم سے جاتے دہے 0

الله تعالی کارشاوہ: اور انہوں نے اللہ کی قدر نہ کی جس طرح اس کی قدر کرنے کا جن تفاجب انہوں نے کما اللہ فی بھرر کھو نازل نمیں کیا۔ آپ کھئے: پھراس کاب کو کس نے نازل کیا جس کو موٹ لائے تھے؟ وہ لوگوں کے لیے نور اور ہراے تھی ہم نے الگ الگ کاغذ بنالے 'تم ان کو ظاہر کرتے ہو اور ان جس نے اکثر حصہ کو چمپالینے ہو 'اور جہیں وہ علم دیا گیا ہے جس کو نہ تم جانئے تھے اور تہ تمارے باپ دادا' آپ کھئے: اللہ (ی نے اس کانپ کو نازل کیا ہے) پھران کو ان کی کج دیا گئی جس کو نیڈ کے لیے چھو ڈویں۔ (الانعام: 14)

مناسبت اور شان نزول

قرآن جمید کاموضوع توحیدا رسالت اور آخرت کو تابت کرتاہے۔ اس بے پہلے اللہ تعالی نے معزت ایراهیم علیہ اسلام کے بیان کردہ دلاکل توحید کو نقل فرالی چران کو مزید معظم فرالی اور اب اللہ تعالی نے رسالت کے اثبات کے لیے دلاکل کو ذکر فرالیا۔

اس میں مفرن کا اختاف ہے کہ یہ آیت یمودیوں کے متعلق نازل ہوئی ہے یا مشرکین کے متعلق نازل ہوئی ہے۔
یمودیوں کے متعلق نازل ہونے پریہ قرینہ کو نبوت اور رسالت کے یمود معتقہ تنے اس لیے اس آیت میں جو معارف ذکر کیا گیاہ کہ اگر کسی بشر کوئی چڑانال نہیں ہوتی قرتاذ مولی پر قورات کیے نازل ہوئی؟ یہ معارف مرف یمود پر ہی ججت ہو سکا ہے اسٹرکین قو نبوت اور وسالت کے معتقہ نہیں تنے۔ آئیم اس کا یہ جواب دیا جا سکتا ہے کہ بعض مشرکین اہل کتاب ہے س کر معفرت مولی اور معفرت میں اور معفرت اس کی رسالت کے معتقر تنے وہ صرف سیدنا محمد باتھ ہے کہ رسالت اس معتقر تنے وہ صرف سیدنا محمد باتھ ہے کہ رسالت مائے ہے انکار کرتے سے اور مشرکین سکے متعلق اس آیت کے نزول پریہ قرینہ ہے کہ یہ صورت کی ہے اور ہوری سورت کم بارگ نازل ہوئی ہے اور یہ دوست کی ہے اور ہوری سورت کم متعلق ہے ، لیکن اس اعتراض کا یہ جواب دیا گیا ہے کہ یہ ایک ایس مورت میں رکھوا دیا اور یہ جواب دیا گیا ہے کہ یہ ایک تب متعلق ہیں۔

الم این جرم متوفی اسمد این سد کے ساتھ روایت کرتے ہیں:

معید بن جبید بیان کرتے ہیں کہ مالک بن صیف نام کا ایک بیودی ٹی پڑی کے ماتھ بحث کر رہاتھا۔ نی پڑی نے فرایا می جہیں اس ذات کی هم رہتا ہوں جس نے موئی پر تورات کو نازل کیا ہے۔ کیا تم نے تورات میں یہ نہیں پڑھا کہ اللہ تعالی موٹے عالم کو ناچند کر آ ہے اور وہ مونا عالم تھا وہ فضب ناک ہوگیا اس نے کما یہ فدا اللہ نے کمی بشرر کوئی چیز نازل نہیں گ۔
تب اللہ تعالی نے یہ آبت نازل فرائل۔ اجامع البیان جری میں سے مطبوعہ دار الفکو میروت میں ہے)

اور مشرکین کے متعلق سے روایت ہے:

مجاد بیان کرتے ہیں کہ مشرکین قریش نے یہ کما تھا کہ افتہ نے کمی بشرر کوئی بیز ازل دمیں کی تو افتہ نے اس کے روش ب آیت ازل کی۔(جائع البیان 'بڑے 'ص ۳۴۹' مطبور هاو الفکو 'بیوت '۱۳۱۵ه)

اس آیت کا آخری حصہ جس میں یہ ندگورے تم نے اس کے الگ کانغزینا لیے "تم ان کو ظاہر کرتے ہو اور ان میں ہے اکثر

جَيِانُ القَّرِ اَنْ

حصد کوچمپا کیتے ہو یہ اس روایت کو مسترد کرتا ہے "کیونگہ تورات میں تحریف کرنا بسرصل میں دویوں کا کام تھا۔ مشرکین کا کام نمیں تھا'اس کیے مستح بی ہے کہ یہ آیت میں درکے متعلق نازل ہوئی ہے۔ تورات میں تحریف کے متعلق امام رازی کاموقف اور بحث و نظر امام نفرالدین محرین عمررازی متوفی ۱۳۰۲ ہو نکھتے ہیں۔

اس كے بعد فرایا تم نے اس كے الگ الگ كاتذ بنا ليے عم ان كو ظاہر كرتے ہو اور ان میں ہے اكثر حصد كو چمپا ليتے ہو اگر يہ اعتراض كيا جائے كہ ہر كتاب كو كاتذوں میں محفوظ كيا جاتا ہے تو اگر ميود نے تو رات كو كاتذوں میں محفوظ كرليا تھا تو ان كی قدمت كس دجہ ہے كی جاری ہے؟ اس كا جو اب بيہ ہے كہ ان كی قدمت كلنذوں میں محفوظ كرنے كی وجہ ہے نہيں ہے ا بكد اس دجہ ہے كہ انہوں نے كتاب ہے دو حصے كر ديئے تھے۔ ايك حصد لوگوں پر ظاہر كرتے تھے اور اس كا اكثر حصد چمپا ليتے تھے۔

اس برید اختراض ہو آئے کہ میود تورات کو چھپانے پر کو تکر قادر تھے؟ ببکہ وہ مشق اور مغرب میں چیل چکی تھی اور بہت کو گان جیدے کچھ آیتوں کو چھپا چاہ تو اس بہت ہے لوگوں نے اس کو حفظ کرلیا تفااور اس پر دلیل ہے ہے کہ اگر اب کوئی شخص قرآن مجیدے کچھ آیتوں کو چھپا چاہ تو اس پر قادر ضمی ہو سکے گا؟ اس کا جواب ہد ہے کہ تورات میں تحریف کرنے سے مراد ہد ہے کہ انہوں نے تورات کی آیات کی من گھڑت اور باطل تفییر کی تھی اور اگر یہ کما جائے کہ سیدنا تھے جائے ہے متحلق قرقورات میں بہت کم آیات تھیں اگر آیات کو چھپانے سے مراد ان کا سمج محمل چھپانا اور ان جی باطل آو بل کرنا ہے تو اللہ تعالیٰ نے یہ کیے فرایا ہے کہ تم اس جس ہے اکثر حصد کو چھپا لیتے ہو؟ اس کا جو اس جس ہے اکثر حصد کو چھپا لیتے ہو؟ اس کا جواب یہ ہے کہ میود بعض احکام کی آیات میں جمی باطل آدیل کرتے تھے۔ مثلاً رجم کی آیت کی باطل تول کرتے تھے۔ مثلاً رجم کی آیت کی باطل تول کرتے تھے۔ مثلاً رجم کی آیت کی باطل تول کرتے تھے۔ مثلاً رجم کی آیت کی باطل تول کرتے تھے۔ مثلاً رجم کی آیت کی باطل تول کرتے تھے۔ مثلاً رجم کی آیت کی باطل تول کرتے تھے۔ مناور معری

یہ امام دازی کی تقریب کیان اس پر بھی یہ اعتراض ہو تا ہے کہ سید نامیر اٹیج کے حفاق اور دہم کے متعلق مل کر بھی آیات بہت کلیل ہیں 'جبکہ قرآن مجید ہی فرمایا ہے کہ تم اس کا اکثر حصہ چھپا لیتے ہو۔ اس لیے صبح می ہے کہ یہودی تو دات میں نفتی تو یف بھی کرتے تھے اور امام دازی کا اس کو قرآن مجید پر قیاس کرنا صبح میں ہوئی اور ند اس کے قرآن مجید پر قیاس کرنا صبح میں ہی دور میں بھی قورات کی اشاعت قرآن مجید کی طرح شیں ہوئی اور ند اس کے قرآن مجید کی طرح مانظ ہیں۔ اس لیے قرآن مجید ہی تھا در یہودیوں بیں۔ اس لیے قرآن مجید ہی گئے کہ اس وقت فردا شاعت کے استے ذرائع اور در ماکل نہ تھے اور یہودیوں کی تعداد اس وقت فردا شاعت کے استے ذرائع اور در ماکل نہ تھے اور یہودیوں کی تعداد اس وقت میں میں ہی ہوئے ہوئے نہ تھے 'اس لیے قرآن مجید کے الفاظ کو بلاوج کی تعداد اس وقت میں درست نمیں کی تعداد اس در تی میں درست نمیں اس کے ظاہری اور حققی معنی سے بٹاغا ور آیات کے چھپانے کو یاطل تاویل پر محول کرنا ہماری دائے میں درست نمیں ہے۔ والیف تعالی اعلم بالمصواب۔

آيت پذکوره کامنسوخ نه جونا

اس کے بعد فرملیا آپ کیئے "اللہ "اس کامعنی ہے ہے کہ عقل سلیم یہ شاوت دی ہے کہ جو کمکب بدایت اور نور ہے اور

جس کی تائید میں معزے موئی علیہ السلام ایسے قوی مجزات لے کر آسے ہوں اس کو نازل کرنے والا اللہ کے سوائور کون ہو سکتا
ہے؟ اور یہ اس طرح ہے جیسے کوئی شخص وجود باری پر استدان کرتے ہوئے کے وہ کون ہے جو مردہ میں جان ڈالآ ہے؟ وہ کون ہے جو لائلی کے بولا ملمی کے بولا ملمی کے بولا ملمی کے بولا میں ہے اور اخر ہوں ہے جس نے آگھ کے ڈھیلے میں برطانی رکھی؟ وہ کون ہے جس نے کان کے سوراخ میں ساعت رکھی؟ پھروہ کہنے والا خود کے باللہ اللہ اور اس ہے متصوریہ ہے کہ جب کلام بمال تک پنچ گاتو ہر صاحب متل اعتراف کرے گاکہ اس نقل کا فائل اللہ بی ہے اور اخر میں فرایا پھران کو ان کی کئے بحثی میں کھیلئے کے لیے چھو ڈ دیں اس کا معن یہ ہے کہ جب آپ نے ان کے خلاف جمت ہوری کر دی اور ان کے تمام شکوک و شبسات کو زائل کر دیا اور ان کو عذا ب خد اوندی سے ذرائجے تو آپ اپنی ذمہ داری ہوری کر چکے اس کی نظیریہ آیت ہے:

قیان آغر منوا فقا ارسلنگ علیهم می ارده اواش کری وجم ن آپ ان ادر دارماک

حَمِيتُ عُلَالًا مُعَلَيْكُ إِلَّا لُبَلَاعُ الشورى ١٩٨٠) ني بيها آپ كاكام و صرف الاياب-

بعض علماء نے یہ کما ہے کہ ہیر آیت 'آیت لگل سے منسوخ ہے۔ یہ قول بعید ہے' اس لیے کہ اللہ تعالی کاار شاہ ہے۔ پھر ان کو ان کی بج بحث کے لیے چھوڑ دیں ہے ارشاہ بعلور تندیر ہے اور بیہ حصول لگل کے منافی قسیں ہے' گانڈ ااس آیت کو منسوخ قرار دینا میجے نسیں ہے۔

الله تعالى اور رسول الله على كاقدر ناشئاي

ای آیت کے شروع میں انڈ تعالی نے ارشاہ فرمایا اور انسوں نے افلہ کی اس طرح قدر نہ کی جس طرح قدر کرنے کا حق تھا جب انسوں نے کمااللہ نے کسی جربہ کچھ نازل نسیں کیا۔ اہام رازی نے فرمایا اس کامعنی یہ ہے کہ یہوہ نے نبوت اور انکار کمیا اور جس نے نبوت اور رسالت کا انکار کمیا اس نے رسولوں کے بیسجے میں اللہ تعالی کی عکست پر طعن کمیا اور یہ اللہ تعالی کی صفت سے جمالت ہے اور کمی معنی ہے اللہ تعالی کی قدر نہ کرنے کا۔

الخفش نے کہائی آیت کامفی ہے انہوں نے اللہ کی کماحتہ معرفت عاصل نہیں کی اور حفرت ابن میاں نے فر ایا اس کا معنی ہے انہوں نے اللہ تعلیم نے معنی ہے انہوں نے اللہ تعلیم کی کماحتہ تعلیم نہ اور اللہ اللہ جی انہوں نے اللہ تعلیم کی کماحتہ تعلیم نہ اوا اللہ کو رسول اللہ جی سے برحاویے بیں او کتے بیں کہ خفرول تھے اور حضرت موئی بی تھے۔ اور حصول علم کے لیے بی ولی کے باس جانا پڑتا ہے ' حالا کلہ جحتی ہے ہے کہ حضرت تعفر علیہ السلام نبی تھے ' بیساکہ ہم نے شرح می مسلم جاد ساوس بی بیان کیا ہے۔ اور کم سے اللہ میں معنی ہے ' بیساکہ ہم نے شرح می مسلم جاد ساوس بی بیان کیا ہے۔ اور کم مسلم جاد کہ واقعہ ہے کہ حضرت ذکریا کو جب بولی واللہ ہوئی واللہ واللہ حضرت دکریا کو جب بین کی واللہ واللہ کی دانہ تعلق حضرت درکیا جب اس طرف متوجہ بواجو ہے موسی جال میں میں ہیں دے دبا ہے تو ان کا ذہری اس طرف متوجہ بواجو ہے موسی جال دے دبا ہے تو ان کا ذہری اس طرف متوجہ بواجو ہے موسی جال میں اور ایک واللہ میں دیے اللہ تعلق سے بینے کے لیے دعا کی اس طرف میں بیان کی اس طرف میں بین کی بیان کی واللہ کی دیتے ہی تواد ہے۔ اور پر انہوں نے اللہ تعلق سے بینے کے لیے دعا کی ' اس طرف اللہ کی دیتے کی حضرت کی بیان کی ان اللہ کی دیتے ہی تواد ہے۔ اور پر انہوں نے اللہ تعلق سے بینے کے لیے دعا کی ' اس طرف اللہ کی دیتے کہ دیا تو ایک دیا ہوئی کی انہوں نے اللہ تعلق سے بینے کے لیے دعا کی ' اس طرف اللہ کی دیتے کی دعائی ' اس طرف اللہ کی دیتے ہیں اور انہ کی دیتے ہی اور ہے۔ اور پر انہوں نے اللہ تعلق سے بینے کے لیے دعا کی ' اس طرف اللہ کی دیتے ہیں اور انہ کی دیتے ہیں اور انہ کی دیتے ہیں اور انہوں نے اللہ تعلق سے بینے کے لیے دعا کی ' اس طرف کی انہوں نے اللہ کی دیتے کی دعائی ' اس طرف کی انہوں نے اللہ کی دیتے کی دعائی ' اس طرف کی کی دیتے کی دعائی کی دیتے ہیں دور کی جو کی دیا گور ہے۔ اور پر انہوں نے اللہ تعلق سے دعائی کو انہوں کی دیا گور کی دیا گور

حضرت معلق بن جبل جان الرتے بین کرتے ہیں کہ رسول اللہ میں بینے فرمایا اللہ عزد جل فرما آے جو لوگ میری ذات ہے محبت رکھتے ہیں 'ان کے لیے نور کے منبر بون کے اور ان پر انبیاء اور شداء بھی دشک کریں گے۔ اسٹن رزی 'ج۴'رقم الحریث: ۱۳۹۵ میڈ اجر 'ج۸' رقم الحدیث ۱۳۱۴ میں مبان 'جا' رقم الحدیث: ۵۷۷ المجم الکبیز'

ج٠٠٠ رقم الدعث: ٣٠٠ منية الأولياء كبير الساس)

مالا کد اس مدیث کامعنی بید ہے کہ انبیاء اور شداہ بھی ان کی تحسین کریں ہے ' یہ اس بات کی چند مثالیں ہیں کہ آج کل کے واصطفیٰ اولیاء اللہ کو نی اور رسول سے پوھادیتے ہیں اور اب چند مثالیں اس امر کی بیان کرتے ہیں کہ یہ لوگ رسول اللہ مالیے کو اللہ تعالی سے پوھادیتے ہیں۔

مافظ احمر بن على بن حجر مسقلاني متوفى ١٨٥٧ مد لكية بين:

الم دار تعنی اور الم این شامین نے اپی اپی شدون سے روایت کیا ہے کہ جنگ امد میں معرت قادہ بن تعمان میں آئی۔ کی آئے۔ تک نکل کرر خسار پر کر ملی انبی مجاور ہے اور اور دورد نوں آئی میں نیادہ شکر رست اور صحح آئکہ تھی۔

(الاصلب على ٢٢٥م مغبوعد داو الفكو أبيروت ١٣٩٨هـ)

ای طرح ایک شعرب:

خدا جس کو کائے چیزائے ہے جم کا کاڑا چیزا کوئی تبین شکل

اور جو دوڑ آبوا آپ کے پاس آیا اور دوائے رہے۔ ڈرر اب ئو آپ اس ہے ہوجی کرتے ہیں ا وَاَهُمَا مَنْ جَمَّاءَ كَا يَسُعِلَى0وَهُوَيَخُسُمَى0 مَانَتَعَمُّهُ ثَلَكُهُمى0(عبس:٩٠٨) یاد رکھئے رسول اللہ مجھیر الی تعریف ہے مجھی خوش شمیں یوں کے بلکہ اس کے برنکس ناراض اور رنجیدہ ہوں گے' جس تعریف میں آپ کا مرتبہ اللہ تعالٰی سے برحانے کا دہم ڈالا جائے یا اس کانفسور دیا جائے۔ وار ان اسام میں اللہ میں ہے فرمین سے اسک تا

المام ابوداؤ وسليمان بن اشعث متونى هدام روايت كرتے بين:

عافظ زى الدين ابو محد المئذري المتوفى ١٥٧ مداس مديث كي شرح من كلية بين:

نی بڑتی نے اللہ تعالی کی عظمت اور جاانت بیان کرنے کے لیے یہ مثال ذکر فربائی ہے' تا کہ بننے والے کو اللہ تعالی ک بلند شان' جاالت قدر اور عظیم ذکر کا اندازہ ہو اور کوئی فض اللہ تعالی کوئمی مخلوق کے پاس سفارشی نہ بناہے' ورنہ اللہ تعالیٰ کسی چنزے مشابہ نہیں ہے' اور نہ وہ کسی صورت ہے کیمن ہے۔(مختمر سنن ابوراؤد' جے یہ اس معاور دارالعرف ابیروت)

ا کید اعرال نے اللہ تعالی کونی مزجیر کے پاس سفار فی بنایاتونی مزجیر بہت رنجیدہ ہوئے کیار بار افسوس کیاداور سجان اللہ ا سجان اللہ پڑھا۔ آپ سوچنے کہ جب رسوں اللہ مزجیر کو اللہ تعالی سے بڑھانے کی تحتہ آفری کی مخی تواس سے رسول اللہ مزجیر کو کتناافسوس ہوگا؟

اس سے بھی بڑا ظلم یہ ہے کہ آج کل کے واحظین یہ حکامت بیان کرتے ہیں کہ آیک مرتبہ حضرت جنید بغدادی وجد پر آئے اور یااللہ کتے ہوئے اس پر ذمین کی طرح چلے گئے 'بعد میں آیک فیض آیا۔ اس کو بھی دریا کے پار جانا تھا اور کشتی کوئی نہ تھی 'اس نے حضرت کو جاتے ہوئے و کھا تو چھامی کس طرح آؤں؟ آپ نے فرمایا یا جنید کا جائے آ۔ اس نے بھی کما اور اور بھی سے یا جنید دریا پر ذمین کی طرح چلے لگا۔ جنسین اور بھی سے یا جنید دریا پر ذمین کی طرح چلے لگا۔ جنسین تھی وریا میں پہنچاتو شیطان نے دل میں وسوسہ ڈالا کہ حضرت خود تو یا اللہ کمیں اور بھی سے یا جنید کہلواتے ہیں۔ میں بھی یا اللہ کیوں نہ کہوں؟ اس نے یا اللہ کھا اور ساتھ می فوطہ کھایا 'پکار احضرت میں چلا' فرمایا وہی گرک کہ یا جنید '
یا جنید! جب کما' دریا ہے پار ہوا۔ بعد میں حضرت ہے اس کی دجہ بو جھی تو فرمایا اور ساتھ ہی تو جنید تک پہنچانہ میں اللہ تک رسائی کی ہوس ہے۔

اس حکات کو پڑھ کر ہے افتیار ذبان پر ہے آئے تاتی ہے "و ما قدر وااللہ حق قدرہ "انہوں نے اللہ کی کماحقہ قدر اور تعظیم نہیں کی اس حکات ہے ہے معلوم ہوتا ہے کہ یاجند کننے ہے بندہ پار لگتا ہے اور یااللہ کئے ہے ڈوب جاتا ہے اور اس حکارت کی میں گلوت کے ذکر کے ارادہ کو شیطان کاوسوسہ قرار دیا ہے اور میں گلوت کے ذکر کے ارادہ کو شیطان کاوسوسہ قرار دیا ہے اور میں معزت جند پر بہتان ہے 'اللہ کے ذیک اور صالح بندے اپنے متو ملین کو اللہ کے ذکر کی تلقین کرتے ہیں' نہ کہ اپنے میں نہ کہ اپنے متو ملین کو اللہ کے ذکر کی تلقین کرتے ہیں' نہ کہ اپنے متو ملین کو اللہ کے ذکر کی تلقین کرتے ہیں' نہ کہ اپنے دکر کی۔

اعلی معزت الم احمد رضافاضل بر طوی متونی مهم الله سے اس حکایت کے متعلق موال کیا گیا او انسوں نے اس کارو فرایا۔ مسئلہ: از شفا خاند فرید ہور ڈاک خاند خاص اسٹیشن پتمبر ہور مسئولہ مظیم اللہ کمپویڈر کے رمضان اسماعہ

کیافرائے ہیں علاے دین کہ جند ایک ہزرگ کال بچھ 'انسوں نے سنزکیا' رائے ہیں ایک دریا پرا'اس کو پار کرتے وقت ایک آدی نے کھاکہ بھے کو بھی دریا کے پار کرد بچئے۔ تب ان ہزرگ کال نے کماتم میرے بچھے یا جند یا جند کتے ہے آؤ اور شن اللہ اللہ کتا ہا تہ میرے بچھے یا جند یا جند کہتے ہے آؤ اور شن اللہ کتا ہاوں گا۔ در میان میں وہ آدی بھی اللہ اللہ کنے لگا' تب دہ ڈو ہے لگا'اس دقت ان ہزرگ نے کماکر تو اللہ اللہ اللہ مت کمو' یا جند یا جند کو 'تب اس آدی نے یا جند یا جند کا جب وہ نمیں ڈویا' یہ در سے ہے یا نمیں اور ہزرگ کال کے لئے کیا تھم ہے اور آدی کے کیا تھم ہے ؟ بیسوانو حروا .

الحواب: یه نظرے کہ سنری دریا طا بلکہ دجلہ ی کیار جاتا تھا اور میہ بھی زیادہ ہے کہ میں اللہ اللہ کتا چلوں گااور یہ محض افترا ہے کہ انہوں نے فرمایا تو اللہ اللہ مت کر۔ یا جنیہ کمتا مخصوصاً حیات و نیاوی بیں مخصوصاً جبکہ پیش نظر موجود ہیں اے کون منع کر سکتا ہے کہ آدمی کا تھم ہم جمجا جائے اور مصرت سید الطا کفہ جنیہ بغد ادمی دمنی اللہ تعالی منہ کے لیے تھم ہم جمنا کمال ہے ادبی و محتافی ودر بیدہ دہل ہے۔ وافقہ تعالی اعلم۔

(فأويل وضويه ع ٢٠٥٥ م ١٩٥٠ مطبوعه كمتبد وضويه الراحي)

اعلی حضرت نے اس مکابت کاجو رو کیا ہے اس ہے معلوم ہوا کہ دانمانوظ جا اس ملبوند درید وبلٹنگ کہنی کرا ہی اور اس کا معلوم نوری کتب فاند المہور) عن اس مکابت کی نسبت جو اعلی معرت کی طرف کی کئی ہو اس کو اعلی معرت کا ملنوظ قرار میں اس مکابت کی نسبت جو اعلی معرت کی طرف کی کئی ہو اس کو اعلی مخارت کے دو ایک مکابت موجوع نہیں ہے۔ اعلی معرت کے دل میں اللہ تعالی کی جو معملت اور جانات ہے اس سے یہ بہت بعید ہے کہ دو ایک مکابت بیان کریں اس سلسلہ میں یقیدیا الملنوظ کے مرتب کو سمو ہوا ہے۔ اس پر دلیل قادی رضوبے کی نہ کور العدد مبارت ہے۔

م 🗢 اور انبول فے اللہ کی قدر نہ کی جس طرح اس کی قدر

وماقدروااللهحققدره ١٥ (الانعام)

-B3825

الله تعالی کاار شاوے: یہ کتاب بے جس کو ہم نے نازل کیا ہے 'یہ برکت والی ہے 'یہ ان (اصل) آسانی کتابوں کی تصدیق کرنے والی ہے جو اس سے پہلے نازل ہوئی ہیں آگر آپ مکہ والوں اور اس کے گردو نواح کے لوگوں کو (عذاب سے) فررائی اور ان لوگوں کو جو آخرت پر ایمان رکھتے ہیں اور اس کتاب پر (بھی) ایمان رکھتے ہیں اور وہ اپنی نمازوں کی حفاظت کرتے ہیں۔ اور ان اوگوں کو جو آخرت پر ایمان رکھتے ہیں اور اس کتاب پر (بھی) ایمان رکھتے ہیں اور اس کتاب پر ابھی ایمان رکھتے ہیں اور وہ اپنی نمازوں کی حفاظت کرتے ہیں۔ اور ان اوگوں کو جو آخرت پر ایمان رکھتے ہیں اور اس کتاب پر (بھی) ایمان رکھتے ہیں اور وہ اپنی نمازوں کی حفاظت کرتے ہیں۔ اندوں مدور

قرآن مجيد کی خيرادر بر کت

اس تبت سے پہلے اللہ تعالی نے یمود کے اس قول کو باطل فرمایا کہ اللہ تعالی نے کمی بشریر کوئی چزیازل نمیں کی اور جب

یے طابت ہو گیا کہ اللہ تعالیٰ نے کتابیں نازل کی ہیں 'قو پھراس کے بعد اللہ تعالی نے پیدان فرمایا کہ قرآن مجید اللہ کی کتاب ہے اور اس کو اللہ تعالی نے سیدنا محمد ہے ہیں پر نازل فرمایا ہے 'ہم نے اس کتاب کو بہت خیراور برکت والی بنایا ہے اور یہ سابقہ ''سانی کتابوں کی تائید' تقمد میں اور مفاظمت کرتی ہے۔

اس کتب کی تیرویرکت ہو ہے کہ انسان کو علم اور عمل کی فضیلت سے دنیا اور آخرت کی سعاوت عاصل ہوتی ہے اور اس سے افضل اور اشرف علم اللہ تعالی کی ذات و صفات کا علم ہے اور نبی کی شرورت اور اس کے مقام و منصب اور ادکام شریعت کا علم ہے اور اس علم کا متکش قرآن مجید ہے اور سب سے افسال عمل اللہ تعالی کی عمباوت اور اطاعت کرنا نور اس کے مقاضوں رسون میجید کی انباع کرنا ہے اور اس علم کا منبع مجی قرآن کریم ہے۔ سوجس نے قرآن مجید کا علم حاصل کیا اور اس کے نقاضوں پر عمل کیا اور اس کے نقاضوں پر عمل کیا اور دریا کی فیمراور پرکت حاصل ہو جائے گی گر تک بھر دیکھتے ہیں کہ اعمراہ عکام اور مراب داروں کو وہ عزت ماصل نہیں ہے جو علماء کرام کو حاصل ہو آل ہے۔

زندگی میں بھی اور مرنے کے بعد بھی ہم نے دیکھا ہے کہ گزرے ہوئے باوشاہوں کے مقبرے ویران پڑے رہے ہیں' دہاں لوگ باکک منانے اور سیرو تفریح کے لیے تو جاتے ہیں' حلات قرآن اور ایسال تواب کے لیے کوئی نہیں جاتے اس کے یہ تکس علاء اور اہل افتد کے مزارات مرجع خلائق ہوتے ہیں اور وہاں دن رات مسلمانوں کا بجوم رہتا ہے اور یہ صرف قرآن مجید پڑھنے اور اس پر عمل کرنے کی فیرو پرکت ہے۔

قرآن مجيد كأسابقه آساني كتابون كأمصدق مونا

اس آبت میں فرایا ہے کہ یہ کلب سابقہ آسال کابوں کی تصدیق کرتی ہے۔ اس تعدیق کی تصبیل یہ ہے کہ آسانی کابوں میں دو چنرس بیان کی گئی ہیں۔ اصول اور فروع اصول ہے عراد ہیں عقائد اسٹانا اللہ تعالی کی ذات و صفات اورید اور طابع عقائد اسٹانا اللہ تعالی کی ذات و صفات اور برالت اللہ کا کہ افترین اللہ کے ذمان و مکان کی تبدیلی اور انجیاء کے فرق ہے ان مقائد میں کوئی فرق نمیں ہوا۔ تورات اور اور انجیل میں جو عقائد تھ اوری مقائد قرآن مجید میں ہیں انہاء کے فرق ہے اور برزمانہ کے محصوص صلات ارسم اس لحاظ ہے قرآن مجید ان مابقہ کابوں کا صدت ہے اور فروع ہے عراد ہیں ادکام شریعت اور ہرزمانہ کے محصوص صلات ارسم و دوائج اور تحدید و ترن کے اعتبار ہے اس ذمانہ کے نبی کی شریعت دو سرے انہاء ہے تعلق ہوتی ہے اور بون تمام انہاء کے ادکام شریعت ایک دو سرے ہے تعلق ہیں تکن تمام انہاء کے ادکام شریعت ایک دو سرے ہے تعلق ہیں تا تو سیدنا مجد اور اور اس چنج میں قرآن ان کا صدق ہے۔ نیزان تمام سابقہ آسانی کتابوں میں یہ تصابوا تھاکہ آخری ذمانہ میں تی تو سیدنا مجد ہیں ہوت کی اور اس بیزی کو معوث کیا جائے گا جو سابقہ شریعت کو مشوخ کرویں گے اور میں اور اور کی تورید تا کھی شریعت نافذ ہو گئی تو سابقہ آسانی کتابوں کی سید ہوں کو مرف ان کیا جائے گا جو سابقہ تسابی کتابوں کی شریعت نافذ ہو گئی تو سابقہ آسانی کتابوں کی ہوت کی سرون کو ترن کیا ہو تا اور قرآن نجید کے ذرجہ آپ کی شریعت نافذ ہو گئی تو سابقہ آسانی کتابوں کی ہوت کی سرون کی تو سابقہ آسانی کتابوں کی ہو تا کہ کمر مد کا ام القرطی ہو تا

اس آیت میں مکہ مکرمہ کو اللہ تعالی نے ام القری فربایا ہے ام القری کا افغلی معنی ہے شہوں کی ہیں۔ معزت ابن عباس رمنی اللہ عنمانے فربایا مکہ مکرمہ کو ام القری اس لیے فربایا ہے کہ تمام زمینیں اس کے بیچے ہے نکل کر پھیاائی می بیں اور ابو بر امیم نے کماہے کر مکہ تمام و نیاد الوں سے پہلے آباد ہوا ہے 'وگویا می اصل ہے اور باتی تمام شمراور تصبات اس کے آباح ہیں۔ نیز تمام دنیا کے مسلمانوں کی چردور میں مرکزی عبادت نج ہے اور جج مکہ محرمہ میں ہوتا ہے اور اس دجہ سے تمام محلوق مکہ محرمہ میں

طِيانُ القر اَنُ

جمع ہوتی ہے میں سے کے مل کے گر دجمع ہوتے ہیں۔ اس لیے اس کو ام القرئی فرمایا ' نیز نج کی وجہ ہے مکہ محرمہ میں انواع واقسام کی تجارت ہوتی ہے اور اس شرمیں کسب معاش اور روزی حاصل کرنے کے ذرائع دو مرے شروں کی ہہ نسبت زیادہ ہیں ' اس لیے اس کو ام انقری فرمایا اور اس کی ایک وجہ یہ بھی ہے کہ اللہ کی حماوت کا پسلا گھر مکہ محرمہ میں بنایا گیا اس لیے اس کو ام انقری فرمایا۔

نی جور کی عمومی بعثت پر بیمود یوں کے اعتراض کاجواب از آمیہ مرفول سے کی تاریخ

اس آیت میں قرمایا ہے آگ آپ کم والوں اور اس کے گردو نواح سے لوگوں کو ڈرائیں۔

میں و کی ایک جماعت کا یہ نظریہ ہے کہ ٹی ماہی مرف بزیر و عرب کے رسول ہیں اور وواس آیت ہے مسلمانوں پر الزام قائم کرتے ہیں کہ اس آیت میں فرمایا ہے' آگ آپ مکہ والوں اور اس کے گر دو نواح کے نوگوں کو عذاب ہے ذرا کیں۔اس کا ایک جواب ہے ہے کہ اس آیت میں مکہ اور اس کے اردگر دک نوگوں کو ڈرانے کا ذکر ہے اور باتی عاند کے بوگوں کو ڈرانے ک نفی نمیں ہے 'جبکہ دو سری آیات ہے تابت ہے کہ آپ تمام جمان والوں کے لیے (عذاب افٹی ہے) ڈرانے والے ہیں۔

تَبَرَّكُ اللَّذِي أَرَّلُ الْمُرْقَالَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِمُعْلَمِيْنَ نَدِيْرًا (المرفان؛)

وہ بڑی برکت والا ہے جس نے اپنے (مقد س) بندے پر فیملہ کرنے والی کتاب نازل کی ' آ کہ وہ تنام جمانوں کے لیے ڈرانے والے ہوں۔

آپ کتے اے لوگوا ہے ٹک میں تم سب کی طرف اند کا رسول ہوں۔

اور آپ ایل کتاب اور ان پڑھ لوگوں سے کئے: کیا تم اسلام نے آئے؟ آگر انہوں نے اسلام قبوں کرنیے قوانہوں نے ہدایت پالی اور اگر انہوں نے اعراض کیاتو آپ کا کام صرف عظم پنجادیتا ہے۔ مُّلْ يَايَّهَا السَّاسُ إِنِّي رَمْسُولُ اللَّهِ إِلَبُكُمْ حَيِيْسُكًا (الاعراف،١٥٨)

وَ قُلُ لِللَّهِ بُنَ أُوْلُوا الْهِكَ وَ الْلِيْتِينَ وَ الْلَهُ وَاللَّهُ وَاللّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ واللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالَّالِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّ

اس آیت میں یہ تقریع ہے کہ نی عظیم اہل کلب اور قیرائل کلب دونوں کے لیے رسول ہیں اور اس سے پہلی آیات میں یہ تقریع ہے کہ نی عظیمتہ تمام مخلوق کے لیے رسول ہیں۔ای طرح اس مدے میں بھی یہ تقریع ہے۔

حضرت جابر جوہز بیان کرتے ہیں کہ رسول انٹہ میں ہیں ہے۔ فربلا بجھے پانچ ایسی چزیں دی گئی ہیں جو جھے ہے پہلے کسی نی کو نمیں دی تمکیں 'پہلے نبی بالخصوص ایک قوم کی طرف جھجا جا باتھ آور بچھے بالعوم تمام لوگوں کی طرب بھجا گیاہے اور میرے لیے مصیحتیں حال کردی تمکی اور وہ بچھ سے پہلے ترام تھی اور میرے لیے تمام روئے زہن مجد اور طمارت کاذر بعد بنادی گئی اور ایک مادکی مسافت سے دشمن پر میرا رعب طاری کردیا جا تاہے اور ججھے شفاعت دی تمنی ہے۔

(سنن داری ٔ جها رقم الحدیث ۱۳۸۹ میچ البودی ٔ جها رقم الحدیث ۳۳۵ میچ مسلم الساجد ۳ (۵۳۱) ۱۳۳۳ سنن الزندی ۳ ، رقم الحدیث ۱۵۵۹ سنن التسائل ٔ جها رقم الحدیث ۲۳۹۱ سری ۱۳۳۰

آخرت إيان في المان بي إيان لان كومتازم

اس آیت من قرایا ہے جو لوگ آخرت پر ایمان لاتے میں وہ رسول اللہ چیج پر ایمان لاتے میں اور اس آیت کاب طاہر یہ معنی ہے کہ آخرت پر ایمان الله میں ہیں۔ ایک وجہ معنی ہے کہ آخرت پر ایمان الله میں ہیں۔ ایک وجہ

فيانُ القر أنّ

یہ ہے کہ جو مختص آخرت پر ایمان الے گان وجد و وجد اور واب و عذاب پر بھی ایمان الے گانور ایما مختص واب کے حسول کی کوشش کرے گانور عذاب کے موجبات ہے ہے گا اور وہ توجید اور دسائت کے وال کل عن فور و فکر کرے گا اور یہ اس کے اللہ اور رسول اللہ مختیج پر ایمان النے کا ذریعہ ہو گا۔ وہ مری وجہ یہ ہے کہ سیدنا محد مختیج کے دین عل مرتے کے بعد ایمین اور قیامت قائم ہو نے کے مقیدہ پر بہت دور ویا گیا ہے اور انتا دور کی اور نی کے دین علی نمیں دیا گیا اس وجہ ہے آخرت پر ایمان الناسدنا محد مختیج پر ایمان النے کو مسلوم ہے۔
الناسدنا محد مختیج پر ایمان النے کو مسلوم ہے۔

نیزاس آیت میں فرایا ہے کہ جو لوگ آخرت پر ایمان لاتے ہیں وہ اپنی نمازوں کی حفاظت کرتے ہیں۔ اس جگہ یہ سوال ہو تاہے کہ آخرت پر ایمان لانے والے تمام نیک اعمال کی حفاظت کرتے ہیں اور تمام برے کاموں سے بچتے ہیں تو اس آیت می نماز کا خصوصیت کے ساتھ کیوں ذکر فرانا ہے؟ اس کا بونب ہے ہے کہ اس سے مقصود اس بات پر سند کرتا ہے کہ ایمان لانے کے بعد سب سے افتال اور اشرف مجادت نماز ہے۔ می وجہ کہ قرآن جمید میں نماز پر ایمان کا اطلاق فرایا ہے: وقد انگار اللہ لیسیسیت کے ایمان انجاز کے اس سے اللہ کی یہ شان نمیں کہ وہ تمار اایمان (نماز) منائع کر

(البقرة: ١٣٣) دكه

يرا ماديث يس عدا نماز رك كرفي كفر كااطلاق كي كياب-

حضرت انس بن مالک پرہیز بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ ہیز ہے قرمایا جس محض نے عمد انماز کو ترک کیااس نے تعلم کملا کفرکیا۔ اس کی روایت بیں محمد بن الی واؤد منفرد ہے 'یاتی راوی ثقہ ہیں۔

(المعم الاوسط عمار فم الديث: ١٥ عمد مطبوعه وياض ١٥١٠٥ه)

حضرت مسور بن مخرمہ بھٹی حضرت محر بھتی کی عیادت کے لیے گئے اور ان کا مال پو چھا کھر والوں نے کما جیسا تم و کھی ر رہے ہو کیس نے کما ان کو تماز کے لیے بیدار کرو۔ وہ نماز سے زیادہ اور کسی چڑے لیے تکر مند نہیں ہوتے۔ گھر والوں نے کما یا امیرالموسنین ا نماز محضرت محر نے کما اللہ اید نماز کا وقت ہے اور فرمایا اس محض کا اسلام میں کوئی حصہ (ایک روایت میں ہے مین انہوں نے نماز پڑھی اور این کے ذقم ہے خون بھر رہاتھا۔

العجم الاوسط عنه ارتم الديث: ٨١٨٨ على دار تعني ج ٢ رقم الديث ١٢٠ مانط ميشي ن كما اس مديث ك تمام راوي ميج بي - مجمع الروائد اج العرب ٢٩١٩)

حضرت جابر بواین بیان کرتے ہیں کہ تبی ہیں ہے فرمایاانسان اور کفرد شرک کے در میان نماز کو ترک کرتا ہے۔ (میح مسلم 'ایجان ۱۳۳۲ مشن ابوداؤد 'ج ۴' رقم الحدیث ۱۳۵۸ میں ترفدی 'ج۳' رقم الحدیث ۱۳۳۸ مشن انسائی ' ج) رقم الحدیث ۱۳۳۳ مشن این ماہر 'ج آ' رقم الحدیث ۱۸۵ میر احمد 'ج۳' می ۲۸۹ فعج قدیم 'مند احمد 'ج ۵' رقم الحدیث ۱۳۹۸) الم ابو عیملی محمدین عیملی ترفدی متوفی ای جو روایت کرتے ہیں:

حضرت بریدہ جوہ ہیں۔ بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ جہید نے فرمایا ادارے در میان اور ان کے در میان حمد انماز ہے۔ سو جس نے نماز کو ترک کیا اس نے کفر کیا۔ امام ترندی نے کما میہ حدیث حسن صحح ، غریب ہے۔ اور یہ حدیث حضرت انس اور حضرت ابن عباس سے بھی مودی ہے۔

(سنن ترتدي عور تم الحديث ٢٦٣٠ من النسائي عوار قم الحديث:١٩٦٣ من النهاج ارقم الديث ١٩٤٩)

طِيان القر ان

آرک نماز کے متعلق نداہب نقهاء

علامدابو حيدالله محدين احد مالكي قرطبي متوني ١٩١٨ مد لكين بين:

حضرت جابر بریتن کی صدیث کا معنی ہے ہے کہ جس فضل نے نماز کو ترک کیااس کے اور کفر کے در میان کوئی ہائے اور تجاب نسیں ہے وہ کافر ہو گیااور ہے صدیث ای ظاہری معنی پر محمول ہے 'اس کی تنسیل ہے ہے کہ جب وہ نماز ترک کروے تو جمور کا قبل سے کہ آگر اس نے آفر وقت تک نماز نہیں پڑھی تو اس کو گئل کرویا جائے گا۔ حضرت علی 'اہام احمر 'اہام ابن السبارک 'اسحاق اور علامہ ابن حبیب ہاگل کے نزدیک اس کو کو کری بنا پر گئل کیا جائے گا اور اہام ہالک 'اہام شافتی اور دیگر علماء کے نزدیک اس کو حد ا گئل کیا جائے گا۔ فقساء احتاف نے یہ کما ہے کہ اس کو گئل نہیں کیا جائے گا 'اس کو نماز پڑھنے کا تھم دیا جائے گا اور اس کو اس وقت تک مزادی جائے گی اور قیدیں رکھا جائے گا'جب تک وہ نماز نہ پڑھ لے۔

می بیے ہے کہ وہ فضی کافر نہیں "کے تکد کفرانکار کو کہتے ہیں اور یہ نمازی فرطیت کا منکر نہیں ہے 'اس کی تائید اس مدین ہے اور تی ہے۔ امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث متوفی هے احد روایت کرتے ہیں:

حضرت عبادہ بن اضامت برجنے بیان کرتے ہیں کہ یس نے رسول اللہ برجین کویہ قرماتے ہوئے ساہے کہ اللہ عن و جل سنے پانچ نمازیں فرض کی ہیں۔ جس مختص نے ان نمازوں کے لیے اچھی طرح دضو کیا اور ان کو اپنے او قات میں پڑھا اور ان کا برا کوئے نمازیں فرض کی جس جس مختص نے ان نمازوں کے لیے اچھی طرح دضو کیا اور دشوع کیا تو اللہ نے از راہ کرم اس کی مغفرت کرنے کاؤمہ لیا ہے اور جس نے ایسانسی کیا تو اللہ پر اس کا کوئی ذمہ نمیں ہے اگر وہ جاہے تو اس کو بخش دے اور وہ جاہے تو اس کو عذا ب دے۔

(سنن ابوداؤد على و تم الديث ١٣٥٥ سنن النسائي على إلى تم الديث ١٣٠٥ سنن ابن بابر على و تم الديث ١٣٠١ سند المد ا و تم الحديث ١٣٤٤ ١٣٤٤ ٢٣٤ ٢٣٤ طبع داو الفكو "سند المد" جه م ١٣٣٢ ١١٨ طبع قديم)

اس مدے میں یہ تقری ہے کہ نماز کا ترک کرنا کفرنسی ہے اور یہ شرک سے کم درجہ کی معصیت ہے اور شرک سے کم درجہ کی معصیت کے لیے اُرتُد تعالی نے مغفرت کرنے کا اعلان قربلیا ہے:

راز اللّه لا يَعْيِعُرُ آلُ يُسْسَرَكُ بِهِ وَ يَعْيِمُ مَادُونَ بِعَلَى الله الله الله الله الله الله الله ال د لِلكَ لِلمَّنَ يَسْسَا عَلَا السَسَاءِ الله الله الله الله الله الله على ورج كاناه كوجس كر ليه

الم كالخش دس كا

قرآن مجید اور صدیت شریف کی تقریح ہے واضح ہو کیا کہ مستی اور کلل ہے نماز کو ترک کرنا گفر آبور شرک نمیں ہے۔ المنعم میں المنعم میں المنعم کے اس 12-11-12 میں کیٹر کیروت اے اسام ا

آبوک نماز کو تنل کرے مدم جواز پرید دلیل ہے کہ اسلام بی صرف تین جرموں کی سزاقتل ہے "کسی مسلمان کو ہاجائز قبل کیا ہو 'شادی شدہ شخص نے زناکیا ہویا کسی شخص نے اسلام کو چھوڑ کر کوئی اور ند بہب اختیار کر لیا ہو۔ ان تین جرموں کے سوااور کسی جرم میں کسی مسلمان کو (بطور مدا قبل کرناجاز نمیں ہے۔

الم محمد بن اسائيل عاري متوني ٥٦١مه روايت كرتي بين.

معرت عبداللہ بن مسعود بھیتے۔ بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ جہیرے فرمایا کی مسلمان مرد کو جو یہ کوای دیتا ہو کہ اللہ کے سوا کوئی عبادت کا مستحق نمیں اور ہیں اللہ کارسول ہوں مین جرموں جی ہے کہی ایک کے سوا قبل کرنا جار نہیں ہے۔ (وہ یہ جی اجان کابد جان 'شادی شدہ ذائی اور دین ہے نکلنے والا اور جماعت کو چھوڑنے والا۔

تبيان انقر أن

المسيح البخاري" بيه، وقم الحديث: ١٩٨٨ مميح مسلم " قسامه" ١٩٢٩ اله ١٩٢٩ من ابوداؤد " بيه " وقم الحديث: ١٩٣٥ منن ترزي " بيه وقم الحديث: ١٩٣٤ منن اين ماجه " بيم " وقم الحديث ١٩٣٥ منن كبويل بيم " مهم ١٩٨٣ ١٩٣٠ منن زمائي " بير الحديث: ١٩٣٠ مم مجمع اين حبان " بيم " وقم الحديث: ١٩٣٨ مند احر " بيما من ١٩٣٧ مليع تديم " منذ احر " بيم " وقم الحديث: ١٩٣١ منذ احر " بيم " وقم الحديث: ١٩٣٨ منذ احر " بيم " وقم الحديث: ١٩٣٨ منذ احر " بيم " وقم الحديث: ١٩٣٨ منذ احر " بيم " وقم الحديث الحديث الموسمة المع المدينة الموسمة المع المدينة الموسمة الموس

یہ مدیث الم ابو صنیفہ کی دلیل ہے کہ آدک نماز کو قبل کریاجائز نہیں ہے۔

الله تعالی کا ارشاوے: اور اس سے بوا طالم کون ہوگا جو الله پر بہتان لگائے یا کے کہ میری طرف وی کی مئی ہے حال کہ اس کی طرف یالکل وی شمیں کی گئی اور جو یہ کے کہ میں مخترب اس کی طرف یالکل وی شمیل کی گئی اور جو یہ کے کہ میں مخترب اس کی جازل کروں گا جسی الله نے مازل کی ہے اور دا سے خاطب ایک اش تو وہ منظر دیکھے جب یہ خالم موت کی مختوں میں جما ہوں گے اور فرشنے ان کی طرف باتھ بجمیائے ہوئے ہوں کے داور کمیں گئی نکاو اپنی جانوں کو آج تہیں ذات والے عذاب کی مزادی جائے گی کھ تک تم اللہ پر ماحق بہتان تراشیتے تھے اور تم اس کی آجوں (پر ایمان اور شمان بر اور شمان نرول ،

اس سے پہلی آنت میں قرآن مجیداور نبی مزیر کی صفات بیان فرمائی تھیں اور اس آبھ میں ان لوگوں پر وعید ہے جنہوں نے جموثی نبویت کار حوثی کیل

الم ابن جريد متوفى ١٣١٥ إلى سد ك سات روايت كرت يوب

عرد بیان کرتے ہیں کہ آیت کا پہلا حصہ بینی اور اس سے برا طائم کون ہو گاجو انڈ پر بہتان لگائے یا کیے کہ میری طرف وہ کی گئی ہے وال کہ اس کی طرف بالکل و می نسیس کی گئی ، مسیل سے متعلق نازل ہوا ہے ' جو ہنو عدی بن حفیفہ کے قبیلہ سے تعد اور آیت کا دو مراحصہ بین "اور جو یہ کے جس منقریب اسی چڑ نازل کروں گا جیسی انڈ نے نازں کی ہے " ہے حبد انڈ بن معد بن ابی مرم کے متعلق نازں ہوا ہے ' یہ بنو عامرین لوی کے قبیلہ سے تھا' یہ نبی جربیر کے لیے و می لکھتا تھا۔ اس نے آیک دن عربیر سے سے مرقد ہو کر قریش کے ساتھ جا دن عربیر حسک سے مرقد ہو کر قریش کے ساتھ جا ملائی میں میں جربیر کے اپنے والی کے ساتھ جا ملائی جربی ہی جربید اسلام سے مرقد ہو کر قریش کے ساتھ جا ملائی جربی ہی جربید اسلام سے مرقد ہو کر قریش کے ساتھ جا مسیلم اور اسود العمی کے آخو ال

علامد البالعياس التدين يرالمناكئ القرطى المترنى وه وم عليق اي

الم ابن المحق نے بیان کیا ہے کہ مسیلہ کاہم مسیلہ بن تمارین کیر تھا یہ قبیلہ بنو طنیفہ سے قلد اس نے رسوں اللہ سائی کے حمد میں وی جبری میں نیوت کا وی کیا یہ کلے پر حتا تھا "لااللہ الااللہ وال محمد اعبدہ ورسولہ "اس کا زمم تفاکہ وہ نی بیٹی کے ساتھ نیوت میں شریک ہے ' بنو طنیفہ بہت جار اس کے خلاج ہوگے۔ اس نے اپنی قوم کے دو آدمیوں کو لینا خلادے کر رسول اللہ مؤتی ہے بیا ہیں بیجا اس میں تکھا تھا یہ مسیلہ وسول اللہ کی جانب سے مجد رسول اللہ کی طرف ہے۔ سلام طلک ایس معالم میں تمارا اللہ بیجا اس میں تعمدہ نام میں تعمدہ میں تمارا میں تعمدہ نے بیات نہ ہوئی ہے اور نسف تماری ہے 'لین قراش سیان نسانہ قوم ہے۔ طلب ایس معالم میں تمارا اللہ بیات نہ ہوئی کیا ہے جو جانبوں نے کہا وی جو ہمارے صاحب دسوں اللہ سیج بی دسول اللہ اللہ المرحمد میں المرحمی کیا جا آتو میں تم دونوں کو قتل کر ویتا۔ پھر صاحب نام کیا جا تھی جانب سے مسیلہ کہ اب کی صاحب میں گا ہوئی کا جانب سے مسیلہ کہ اب کی سائٹ میں کیا جا تھی جانب سے مسیلہ کہ اب کی سیکھ کہ اب کی سیکھ کہ اب کی سیکھ کہ انسانہ کی جانب سے مسیلہ کہ اب کی سیکھ کہ اب کی سیکھ کہ اب کی سیکھ کہ اب کی سیکھ کہ انسانہ کی جانب سے مسیلہ کہ اب کی سیکھ کہ انسانہ کی جانب سے مسیلہ کہ اب کی سیکھ کہ اب کی سیکھ کہ اس کی جانب سے مسیلہ کہ اب کی سیکھ کہ اب کی سیکھ کہ انسانہ کی جانب سے مسیلہ کہ اب کی سیکھ کہ اب کی سیکھ کہ اب کی جانب سے مسیلہ کہ اب کی سیکھ کہ اب کی سیکھ کہ اب کی جانب سے مسیلہ کہ اب کی سیکھ کہ اب کی جانب سے مسیلہ کہ اب کی جانب سے مسیلہ کہ اب کی سیکھ کی سیکھ کی سیکھ کی سیکھ کی جانب سے مسیلہ کہ اس کی جانب سے مسیلہ کہ اس کی سیکھ کی سی

طرف 'اس پر سلام ہوجو ہدایت کا بیرد کار ہے: انگا آگر کھیں لیڈ ہوئٹ ڈکٹ انڈ کٹر تا تا کہ

إِنَّ الْأَرْصُ لِلْهِ يُوْرِثُهُا مَنُ يَّضَا أَكُوبُ عَبَادٍ مِوَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُنَفِيْسَ (الاعراف، ١٠٨)

ہ شک زئن اللہ کی ملکت ہے وہ اینے بندوں میں سے جس کو جاہے اس کا وارث بنا آ ہے اور نیک انجام اللہ سے در نیک انجام اللہ سے در نیک واول کے لیے ہے۔

جب مسلمہ نے میں جواب پڑھاتو وہ ماہوس ہو گیالور بنو حقیقہ نے کما اعارا خیال ہے کہ (سیدیا) محمد مزاجر معارب کو اپنا شریک متاتے پر تیار نہیں ہیں۔

الم ابن اسخاق في كمارسول الله منظم سك عدم مسل اور صنعاء ك صاحب اسود بن عزه العنى اور طله عداور سجاح تميد في نوت كادعوى كياتها سجاح مسيل كياس كي اور كين كلي تم يركيادي آلي بها اس في كما بحدي الي بيدوى آلي بها السم تر الدى ديدك كيم حدل الحبلي المحبلي كياتم في الحديد وب كي طرف نسي ديما اس في مسه السمة تسمعي عبس صعاق الحرح عالم كو پداكيا اس ساك ايك دوح فكال او باريك كمال وحديد المحديد المحدود فكال او باريك كمال وحديد المحدود في المحدود فكال او باريك كمال وحديد المحدود في المحدود فكال او باريك كمال وحديد المحدود في المحدود في

اس نے کہا جس کو ای دیتی ہوں کہ تم نی ہو۔ سیل نے کہا تم بچھ سے شادی کراو ہم دونوں ل کر عرب کو کھالیں ہے۔ اس نے شادی کرلی اور اس کے متاوی نے نداکی سنوا ہم ہو صنیفہ کے دین جس داخل ہو گئے ہیں اور ہو صنیفہ کے منادی نے ندا کی سنوا ہمارے نبی نے تہماری نبیعہ سے شادی کرل ہے اور سجاح نے مسیلہ سے کہا اپنی قوم سے یہ دولی نمازیں صشاء اور فجر منسوخ کردو او مسیلہ کے مناوی نے ان دو نمازوں کے منسوخ کرنے کا اعلان کردیا اس سے ہو صنیفہ بہت خوش ہوئے۔

پر مسیلہ ای طل میں بالہ چاہ گیا یہاں تک کہ رسول اللہ بڑی کا دست ہو گیا اور تمام اہل بینہ اسلام ہے مرتد ہو کر مسیلہ کے اور ویگر مرتدین بھی آگران ہے ہل گئے اور ان کی شوکت بہت ہوہ گی۔ حضرت ابو بکر صدیق ہوتی نے اس کی طرف بہت خطوط لیکھے 'اس کو بہت تھیجیں کیں اور بہت ڈرایا 'بالا ٹر آپ نے حضرت فالد بن دلید بوائن کی آبارت میں اس کی طرف بہت خطیم افکار بھیجا 'اس کو بہت مسیلہ ہے گئل کیا ور انجام کار مسیلہ حضرت وحش برائی کے ہاتھوں بارائیا۔ مسلمانوں کا ایک مظیم افکار بھیجا 'جس نے مسیلہ ہے گئل کیا ور انجام کار مسیلہ حضرت وحش برائی کے ہاتھوں بارائیا۔ اسلمانوں کا ایک مظیم افکار بیروت 'ایراساندی اسلمانوں کا ایک مظیم دار ابن کیر 'بیروت 'ایراساندی

الم محرين اساعيل بخاري متولى ٥٦ مدروايت كرتي بين

حضرت ابن عماس رمنی الله عنما بیان کرتے ہیں کہ وسول الله علیج نے فرملیا ہیں نے ایک رات خواب دیکھا کہ میرے ہاتھوں میں سوسلے کے دو کنٹن و کھ دسیے گئے ہیں۔ میں ان سے تھبراگیا اور ان کو ناپند کیا ' پھر بھے ان کو پھو تک مارنے کی اجازت دی گئی تو وہ اڑ گئے ' میں نے اس کی بیہ تعبیر کی کہ میرے بعد دو کذاب تکلیں گے۔ عبیداللہ نے کما ان میں سے ایک العنسی ہے جس کو فیروز نے یمن میں مختل کیا اور دو ممرامیل ہے۔

المسيح البخاري عن وقم الحديث: ٣٣ ٢٣ مسيح مسلم " دويا ٣٣ (٥٨٣١ (٢٣ ١٣٠) منن الترفدي جه" وقم النديث ٢٢٩٩ مسيح ابن حبان "ع١٥ وقم الحديث: ٣١٥٣ ولا كل النبوة لليمتى "ع٥ من ٣٣٥ مند احد "ع" وقم الحديث: ٨٢٥٦ طبع داد اللكو)

اس مدیث میں ہے کہ دو کذاب نکلی کے۔ اس کامعنی ہے میری وفات کے بعد ان کا تضور اور غلبہ ہوگا ورنہ وہ رسول اللہ میں موجود تھے اور ان کے متبعین بھی تھے۔ مشعاء اور میلمہ کے لوگ املام میں داخل ہو چکے تھے اور اسلام کے معلون اور مددگار تھے لیکن وہ لوگ مسیلمہ لور المنسی کی سنری باتوں میں آ گئے۔ یہ دونوں شرنی چھیر کے دویا تھوں کی طرح

غيان انقر ان

تے کونکہ آپ ان سے قوت حاصل کرتے ہے اور سونے کے دو کتن صاحب بیامہ اور صاحب صنعاء ہے اور ان کی چکنی چڑی باؤں کو سونے کی طمع کاری سے تشہد دی ہے اور آپ نے جو ان کو پھو تک مار کر اڑایا اس میں یہ اشارہ ہے کہ یہ آپ کی امت کے باتھوں بلاک بوں ہے۔

معرفت کے جھوٹے وعویٰ واروں کارواور ابطال

علامہ قرطبی مالکی نے اکھا ہے کہ نیوت کے جمو نے وعوی واروں کی سنگ میں وہ لوگ خسلک ہیں جو نقہ احدیث اور علوم علیم

علیمہ کے حصول سے اعراض کرتے ہیں اور کہتے ہیں کہ میرے ول میں یہ بات واقع ہوئی ہے یا میرے ول نے یہ کما ہے اور ان کا یہ ذمی ہوتا ہوئی ہوتا ہے کہ اور صاف ہے اور وہ فیرانلہ کے افتحاظ ہے مامون ہیں اس سے اللہ تعالی ان کے دل پر علوم اور معرفت کی تجلیات عادل قربا آہے اور وہ تفائل رہائے اور اسرار کا نات کے مامون ہیں اس وجہ ہے وہ قوامد شرع ہے مستنی ہیں۔ وہ کتے ہیں کہ یہ شرع انگام عام لوگوں کے لیے ہیں اور خواص اور الراح اللہ اور اس مدیث ہیں۔ اور اس مدیث ہیں اور اس مدیث ہیں اور اس مدیث ہیں۔ استعمال کرتے ہیں اور اس مدیث ہیں۔

حضرت وابعدہ بن معبد الاسدى برہین بیان کرتے ہیں کہ رسول الله ہیں ہے وابعدے فرایا تم نیکی اور محناہ کے متعلق پوچنے آئے ہو؟ انہوں نے کما تی آگے۔ ان کی انگیوں کو آکھا کرکے این کے سینہ پر مارا اور تمن بار فرایا اے وابعدہ انٹونل پوچنے آئے ہو؟ انہوں نے کما تی آگے۔ ان کی انگیوں کو آکھا کرکے این کے سینہ پر مارا اور تمنا و اور محنا و اور

(سنن داري من ۲ رقم الحديث: ۲۵۳۲ مطبور وار الكتاب اسري ورد " ۲۰۷۱ مطبور

دعرت ابو تعلبه ختنی جائز بیان کرتے ہیں کہ بیں نے عرض کیا یار سول اللہ ایجے بتائے کیا چیز میرے لیے حال ہے اور
کیا چیز حرام ہے؟ انہوں نے کما چررسول اللہ چیج منبرر رونق افروز ہوئے اور نظر جھکائی۔ چرنی جیج نے قربا نیک وہ ہے
جس پر مغیرر سکون ہو اور دل مطمئن ہو اور گناہ وہ ہے جس پر مغیری خاش ہو اور دل مطمئن نہ ہو خواہ تمہیں مفتی فقے دسیے
دیں۔ (مند احد 'جا ' رقم الحدیث عصاصل طبح دار العکو 'مند احد 'جس میں میں العبی قدیم)

ان اعلایت کامحمل ہیں ہے کہ جس فیش آمدہ مسئلہ میں قرآن مجید اور صدیت شریف کی مرتع بدایت نہ ہواور نہ اس کے متعلق اجماعی تھم موجود ہو اور اس میں طال اور ترام مشتبہ ہو اس میں انسان اپنے خمیر کے تیملہ پر عمل کرے۔ مثلاً روزے میں انسان اپنے خمیر کے تیملہ پر عمل کرے۔ مثلاً روزے میں انہان کا میں انجکشن لگوانے کے متعلق ہمارے دور کے اکثر مفتی کہتے ہیں کہ اس سے روزہ نہیں ٹونی کیکن ایک سلیم الفظرت انسان کا

طبيان القر آن

ضمیریہ کتا ہے کہ جب منہ سے دوا کھانے سے روزہ ٹوٹ جا آہ اور منہ سے کھائی ہوئی دوافظام بھنم کے مراحل فے کرنے کے
بعد خون جس ال جاتی ہے اور ای وقت وہ دوا موثر ہوتی ہے 'تو اگر وہ دوا انجکشن کے ذریعہ براہ راست خون جس پہنچادی جائے تو
ہہ طریق اوٹی روزہ ٹوٹ جانا چاہیے۔ ان احادیث کا یہ مطلب نہیں ہے کہ قر آن مجید اطوعث اور ائر مجتدین سے بے نیاز ہو کر
انسان اپنے ہے نگام ول کے فیصلوں پر عمل کرے 'جیساکہ ان بناوٹی چیوں اور معرفت کے جھوٹے و موئی داروں نے سمجے رکھا
ہے۔ علامہ قرطبی نے لکھا ہے کہ ان لوگوں کے زندیق ہونے جس کوئی شہر نہیں ہے 'اسلامی حکومت ہو تو ان کو قتل کر دیا جائے۔
ان سے توبہ طلب کی جائے نہ ان سے بحث کی جائے 'کیو تک ان کے اقوال سے احکام شرعیہ کا متدم ہو نا اور ہاؤرے نی شرخیہ
سے بور نیوت کا شہات لازم آ تا ہے۔ انجاع کا حکام القرآن 'جزے 'من سے ''سالام کو میروٹ کا تعمراو موضا)
حصرت عبد اللہ بن سعد بن الی مرح کے احوال

اس آیت کے دو مرے حصد میں فرباہ اور جو یہ کے کہ میں عفریب الی چڑ نازل کوں گا جسی اللہ نے نازل کی ہم مغرین نے کما ہے کہ بید آیت عبد اللہ بین سعد بن الی مرح کے متعلق نازل ہو کی ہے وہ رسوں اللہ بین ہم کے لیے وہی لکستا تھا اسے مرد ہو کر مشرکین سے جا ملا تھا۔ مغرین نے ذکر کیا ہے کہ جب یہ آیت نازل ہو گی "ولفد حلف الانسان می مسلالہ می طیس ۔۔۔ نہم استسان مسلالہ می طیس اللہ میں معد کو انسان کی خافت پر بحت آجب ہوا اور اس نے ہمافتہ کما "نباد کے اللہ احساس المحالفيس "رسول اللہ بین ہے فرایا جمد پر ای طرح یہ آیت نازل اور اس نے مافتہ کما "نباد کے اللہ احسان میں شک پڑیااور اس نے مافتہ کما تر بید معادل ہیں تو جمد پر بھی ایک ہوئی ہے۔ ایک جن اللہ اسک مرد ہو کر مشرکین سے جا ملا اور اللہ تعالی نے آیت اس کی تر دمت میں نازل کی اور جو ہے کہ میں مقرب ایک چڑناذل کوں گا جسی اللہ ۔ نے نازل کی اور جو ہے کہ کہ میں مقرب ایک چڑناذل کوں گا جسی اللہ ۔ نے نازل کی ہے۔

الم ابوداؤر سليمان بن اشعث متونى هد جد روايت كرتم بين ا

حضرت ابن مہاں رمنی افقہ عنما بیان کرتے ہیں کہ عبداللہ بن سعد بن الی سرح رسول اللہ مرجوبر کے لیے وہی لکھتے تھے۔ ان کو شیطان نے لفرش دی وہ کفار کے ساتھ جالے ورسول اللہ مرجوبر نے فتح کمہ کے دن ان کو قتل کرنے کا تھم ویا۔ حضرت عثمان مریخیہ نے ان کے لیے پالہ طلب کی تو رسول اللہ مرتبی سے ان کو پنادوے دی۔

(سنن ابوداؤد مع ارقم الحديث ٢٣٥٩ اسنن النسائل عد ارقم الحديث ٨١٥٨)

الم ابو وبدالر من احمد بن شعیب نسال متوفی موسور نے اس کو زیادہ تنسیل سے روایت کیا ہے۔ معد بیان کرتے ہیں کہ مع مکہ کے ون رسول افتہ موجود نے جار مردوں اور دو عور توں کے مواسب کو المان دے دی۔وہ

اسنن انسائی "جے" رقم الدیث ۸۷۰۴ سنن ایو داؤد "ج۴" رقم الدیث ۴۲۸۳ ج۴ رقم الدیث ۴۲۸۳) حافظ ابو همربوسف بن حبد الله بن مجربن حبد البرائقر طبی المالکی المتوفی ۱۳۳۸ کیستے ہیں:

عبداللہ بن سعد بن الی مرح فی مکسک آیام جی دوبارہ مسلمان ہو کاور انسوں نے اسلام پر بست انجی طرح ممل کیااور
اس کے بعد ان سے کوئی بالبندیدہ بات صادر نہیں ہوئی کہ وقراش کے معزز دائش مند مرداروں جی سے ایک تھے ' پھر حضرت عرو
حیان غنی پرچنے۔ نے ١٥ مد جی انہیں معر کاکور نر بنادیا ' عرب جی انسوں نے افریقیہ کو فئے کیا۔ معری فئے کے موقع پر حضرت عمرو
بن العاص صاحب میں تے معری تمام جنگوں جی حضرت عمرو بن العاص ہی وائی تھے ' جب حضرت میان نے ان کو معزول کر کے
حضرت حمداللہ بن سعد کو ان کی چگہ مقرد کیاتو حضرت عمرو بن العاص حضرت حیان برچنے پر کھتے چینی کرنے گئے اور ان کی خلافت
پر تنقید کرنے گئے ' حضرت عبداللہ بن سعد حضرت علیان کی شدادت تک فلسطین جی دہے۔ انہوں نے حضرت علی اور حضرت
معاویہ رضی اللہ مختمادونوں جی سے کی کے باتھ پر بیعت نہیں کی ' حضرت معاویہ کی خلافت منعقد ہوئے سے پہلے ان کی دفات
معاویہ رضی اللہ مختمادونوں جی سے کہ یہ افریقیہ جی فوت ہو تے اور میجے یہ ہے کہ اسمادیہ یا عادہ جی عسقدان جی فوت ہوئے۔

(الاستيعاب مع ٢٠٠١م ١٠٠٠ على هامش الاصاب الختر آديخ دمثل ع ١٢م ١٠٥٠ ١٢٠٠ ملحسا)

كافرك جمم سروح نكالني كى كيفيت

اس کے بعد اللہ تعالی نے فرملیا: اور (اے کاطب!) کاش تو وہ منظر دیجے جب بید ظالم موت کی مختوں میں جنتا ہوں کے اور فرشتے ان کی طرف ہاتھ پھیلائے ہوئے ہوں کے اور کس کے 'نکالواچی جانوں کو آج تمہیں ذات والے عزاب کی مزاوی جائے گی 'کیونک تم اللہ پر ناخی بستان تراشیے تھے اور تم اس کی آنٹوں (پر ایمان لانے) سے تکبر کرتے ہتے۔ (الانعام جہ) اس جگہ یہ سوال ہو آئے کہ کافروں میں بلکہ کمی جی افسان میں یہ قدرت نمیں ہے کہ وہ اپنے بدن ہے اپنی جان نکال سکے 'پر ان کو یہ بھم دینے کاکیا فائدہ ہے کہ ''نکاوا پی جانوں کو ''اس کاجواب ہے کہ یہ امر مکلٹ کرنے کے لیے نمیں ہے 'بلکہ ان کو عابز کرنے اور ان کو دسوا کرنے کے لیے ہے 'موت کے دقت کفار بہت سخت عذاب میں جملا ہوں گے اور جس طرح کوئی کانے دار شاخ کپڑاور گارے میں پیشسی ہوئی ہو تو اس کو تھینچ کر بڑی تختی سے نکلا جاتا ہے 'ای طرح ان کی روح ان کے بدن سے عذاب اور تختی سکے ماتھ ذکال جائے گی 'اس وقت ان سے قرشتہ کمیں گے کہ اگر تم آمانی کے ماتھ روح کو اپنے بدن سے نکال سکتے ہو تو نکال اور کافر مرفے کے بعد دوبارہ اشمنے اور اللہ سے طاقات کے شکر تھے 'اس لیے اللہ تعالی ان کو زات والے نذاب میں جمالا کرتے ان کی روحوں کو ان کے جسموں سے فکوا آب ہے۔

الم محرين اسائيل عفاري متوفى ٢٥١ه روايت كرتيمين

حضرت عمادہ بن الصامت ویٹے بیان کرتے میں کہ نی جھیر نے فرمایا جو انٹہ کی طاقات سے محبت رکھ اللہ بھی اس کی طاقات سے محبت رکھ اللہ بھی اس کی طاقات سے محبت رکھا ہے۔ طاقات کو چاپیند کرتا ہے۔

(میم ابناری بی ارقم الحدیث ۱۵۰۵ میم سلم کار موات "۱۲ (۱۹۸۲) ۱۹۸۳ سن الزری بی ۴ رقم الحدیث ۱۸۷۸ سنن السائل بیم وقم الحدیث ۱۸۵۳ ۱۸۸۷)

مافظ ابن کیرمتونی سمے ہے فکھا ہے کہ جب کافری موت کاوقت آئے ہے تو فرشتے اس کو عذاب اور سزا اور گلے میں ڈالے جانے والے طوقوں اور زنجیروں ووزخ آگر م پانی اور اللہ تعالی کے فضب کی بٹارت دیتے ہیں تو اس کی روح اس کے جسم میں منتشرہ و جاتی ہے اور جسم سے نگلنے ہے انکار کرتی ہے۔ تب فرشتے اس کے چبرے اور دبر پر مارتے ہیں اور کہتے ہیں نکالوا بی جانوں کو آج حمیس ذات والے عذاب کی مزادی جائے گی کیونکہ تم اللہ پر ناحق بستان تراشیتے تھے۔

حضرت عبدالله بن همود دہنی الله عنما بیان کرتے ہیں کہ بہ الله تعالی کافر بندے پر موت وارد کرتا ہے تو اس کے پاس و فرشتے بھیجتا ہے اور اس کے پاس ایک ٹاٹ کا کلوا بھیجتا ہے۔ جو ہر بر بودار پیزے زیادہ بدبودار اور ہر بخت چیزے زیادہ خص ہوتا ہے ' باہر نکل تو نے بہت برے اعمال بھیج ہیں' دور در آ ایسے بدبودار مردہ کی طرح نظے گی کہ اگر تم میں ہے کوئی محض ہوئے لے تو اپنی خاک بند کر لے اور آسان کے اور گردوالے فرشتے کمیں گے ' جمان اللہ از جن سے ایک مردہ اور خبیث روح آئی ہے ' اس کے لیے آسان کے دردازے نہیں کھولے جا کمی گے۔ پھراس کے جم کو زجن پر پھیننے کا تھم دیا جائے گااور اس کی قبر میں تنگی کی جائے گی اور اس کو اورٹ کی گرون جتے مونے ساتیوں ہے بھر دیا جائے گا وہ اس کا گوشت کھالیں گے اور اس کی بنزیوں میں کی جائے گی اور اس کو اورٹ کی گرون جتے مونے ساتیوں ہے بھر دیا جائے گا وہ اس کا گوشت کھالیں گے اور اس کی بنزیوں میں بول گے ' دہ بکھ دیکیس گے نہیں' آگر انہیں رحم آئے اور اند جے فرشتے بھیجیں جا کمی گران کے پاس ہو ہے کہ بتھو ڑے بول گے ' دہ بکھ دیکیس گے نہیں' آگر انہیں رحم آئے اور کوئی آواز نہیں سئیں گے ' آگر انہیں اس پر ترس آئے۔ دواس کو

حافظ البیشی افتوفی کے ۱۸۰۷ نے کماک میہ حدیث المبھی الکبیریں ہے اور اسکے تمام رادی نقتہ میں یا جمع الزوائدج ۲ م الله تعالی کاار شاو ہے: اور بے شک تم ہمارے پاس ای طرح تنوا آئے ہوجس طرح ہم نے تمہیں پہلی مرتبہ (تنوا) بید اکیا تعااور جو پکھے ہم نے تمہیں دیا تھا' وہ مب تم اپنے بیٹھے چھوڑ آئے ہواور ہم تمہارے ساتھ تمہارے ان سفار شیوں کو بھی

غيان القر أنْ

نمیں دکھ رہے جن کے متعلق تم یہ محمد ڈکرتے تھے کہ وہ تمارے کاموں میں داوے شریک میں ' بے شک تمارا باہی تعلق ثوث کیااور جن پر تم محمد ڈکرتے تھی تم ہے جاتے رہے۔ (الانعام: ۱۹۷)

مال و دولت أور شرك كے برستاروں كى آخرت ميں محروى

اس آیت میں اللہ تعنال نے یہ خردی ہے کہ کفار وزیاجی مال جمع کرتے تھے اور اس کی طاقت پر بھردسہ کرتے تھے اور بتوں کی شفاعت اور مددیر اعتکو کرتے تھے' لیکن قیامت کے دن وہ تھا آئیں گے' ان کے پاس مال ہوگانہ ان کے ساتھ ان کے خود ساختہ اور باطل معبود ہوں گے۔

الم مجرين اسائيل بخاري حوفي ١٥٩هـ روايت كرتي بين:

حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنما بیان کرتی ہیں کہ میں نے رسول اللہ بھی کویے فرماتے ہوئے شاہ ہم کی آیامت کے دن اور فرمی اللہ عنما ہیاں کرتی ہیں کہ میں نے رسول اللہ اور مرد جمع ہوں دن اور فیر مختون حالت میں جمع کیا جائے گائیں نے عرض کیا یارسول اللہ اعمار میں اور مرد جمع ہوں کے کیادہ ایک دو سمرے کی طرف دیکھیں ہے؟ رسول اللہ بر تھی ہے فرمایا اے عائشہ اس سے بست ہولاناک ہوگا کہ اوگ ایک دو سمرے کی طرف دیکھیں۔

(میخ البخاری "جے " دقم الحدیث: یا ۱۵۳ میخ مسلم " جنت "۵۱ (۲۸۵۹) ۲۰۱۵ من انسانی " ج ۳ دقم الحدیث: ۲۰۸۳ سنن این بادر "ج ۳ دقم الحدیث: ۳۲۷۳ سنن کبری للنسانی "ج ۳ دقم الحدیث: ۲۲۳)

اس آیت سے حسب زیل سین مامل ہوتے ہیں:

إِنَّ اللَّهُ فَلِقُ الْحَتِ وَالنَّوٰى لَيُخْرِبُ الْحَيْمِنَ

سے شک اشر ری دانے اور مشلی کر بماڑنے والا ہے ، وبی ذنرہ کو مردہ سے

ثُوْفَكُون ﴿ فَالِقُ الْإِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنَّا وَالشَّمْسَ

بنک سے ہو 0 دورات کو جاک کر کے بع اللانے واللہے ، اور ای نے وات کو آرام کے یے بنایا اور موری

ئ*ى*يان القر ان

بالتبصيف مستفادول كوبتايا حاكرتم النست فظى الدسمتدركي كاديمول يمد جايبت حاصل كرو ئے جو سفتے جلتے ہی ہیں اور مختصت مجی ہیں ، حب یہ ور فعت میل لایں تر ان سے میل اوراس بگنائ فرت دلیو، جنگ ای می ایمان الانے والے وگاں۔ الدائمان سف الله كر مل يول كوشريك تزارويا مالاكم السقال كويدا كيا ب الدائمان المرك ي طِيانُ القر أنّ

بِغَيْرِعِلْمِ سُبُحْنَهُ وَتَعْلَى عَمَّايِصِفُونَ ۞

اورشیال گزیں ،اورووال سے پاک اور بالاتب جودہ بیان کرتے ہیں 0

ای آیک در خدد بر فور کرنواس کی بزیم بھی کوری کی بی اس کا تا بھی گاؤی کااور بزیس زین کے بیچے جاری بی اور عن اور عن اس کا تا بھی گاؤی کااور بزیس زین کے بیچے جاری بی اور عن خدمت کا خاصا دی جاری ہی جائے ہے قاتانے کی جاری جاری کی خدمت کا خاصا دی جاری کی خدمت کا خاصا دیں گائے ہیں کہ سب کو جاتا ہے اور جاری کا خدمت کا خاصا کہ کے گائے ہیں کا مسرکو جاتا ہے اس کو بیچے کردیا ہے اور جس حد کو جاتا ہے اور کردیا

الله تعالى في فرما وى زيمه كو موه من فالآن اور موه كو زيمه من فالني والان محدد ابن مباس في فرما وه فلفه من ويش فرما و ويمه من في الله والانتهاء وروي المرح بي بيان الأسب مرقى كاج وه فكال به اور زيمه بشر من فلف فكل به من المرح بي بيان الأسب مرقى كاج وه فكال به اور زيمه مرفى من بي بيان الأا في المرا بيان الأسب كا فلانا من المرا بيان الأسب كرد من المرا من في المرا من المرا بيان المرا ب

عبيان القران

مو آے اور عالم کے بال جال اور جائل کے بال عالم پراہو آے۔

اور جب تم الله کے وجود اور اس کے واحد ہونے کے ان والا کل کامشاہر ہ کر دے ہو تو پھران بتوں کی برستش کیوں کر رہے ہو؟ اور اللہ كو چھوڑ كراس كى مخلوق كو كيوں إيارتے ہو؟ ان كى مبلوت كيوں كرتے ہو؟ اور ان ہے ختيں اور مرادير كيوں مانگلتے ہو؟اس كانك معنى يد بھى ہے كہ جب تم يد مشام وكر دے جوك الله تعالى موده سے ذعرہ پر اكر ديتا ہے تو تم مرنے كے بعد دوبار و پدا ہونے کا کوں انکار کرتے ہو؟ جب وہ ایک بے جان قطرہ سے جیتا جاتمانات کواکر دیتا ہے تو وہ تممارے مرنے اور پھر دیزہ ریزہ ہونے کے بعد تم کو ان می منتشر ذرات ہے دوبارہ کیوں پیدا نہیں کر سکتا؟ تم سوچنے کیوں نہیں اور ادھر ادھر کیوں مارے ارے پررہ ہو؟

الله تعالى كاار شاوع: وورات كو جاك كرك مع فلالنے والذب اور اس فے رات كو آرام كے ليے عنايا اور مورج اور جاند کو حماب کے لیے اس بحث عالب اور بے حد علم دالے کا مقرر کیا ہوا اندازہ ہے۔(الانعام ۹۷) آسان کی نشانیوں سے وجود باری اور توحید پر دلا مل

اس سے پہلی آیت میں اللہ تعالی نے نبا آلمت اور زمین کی نشانیوں ہے اپنے وجود اور توحید پر استداال فرملیا تھا اور اس آیت جس سورج اور جانداور آسان كى نشانوں سے اپنے وجود اور توحيد پر استولال فرمايا ب-

اس آیت کے شروع میں اللہ تعالی نے فرمایا تھا اللہ تعالی نے علمات اور نور کو پیدا فرمایا ہے اب فرمایا ہے کہ وہ رات کی ظلمت اور آرکی کوچیر کرمیح کی روشن کوپیدا فرما آے جو آسان کے کناروں پر سیل جاتی ہے اور اس سے رات کی سیای معنمل موتی مولی کافور مو جاتی ہے۔اللہ تعالی سے سے بیان فرایا ہے کہ وہ اچی قدرت سے متعناد چیزس پیدا فرما آ اے اور اس سے اس ک غالب قدرت اور مظیم سلطنت ظاہر ہوتی ہے۔ اس کے بعد فریایا اور اس نے رات کو آرام کے لیے بنایا سینی رات کو جب اند ميرا ميماجا آب تولوگ دن كے كام كاج ب رك جاتے بين اور تھے بارے نوگ رات كى كوديس سوجاتے بين- بيساك الله تعالى نے قرمایا

وَ حَمَلْنَا مُومَكُمُ شَبَانُ٥ وَ حَمَلُنَا الْبُلُ اور ہم نے تماری نیند کو راحت بنایا اور ہم نے رات کو لِبَاسُانَ وَحَعَلْمَا النَّهَارَمَعَاشًا ١٥ السِاءِ ١٠١١) یر دو پوش کردیا اورون کوروزی کمانے کارنت بنایا۔

مجر فرمایا اور سورج اور جاند کو حسلب کے لیے بیٹیا میٹنی سورج کے یومیہ دورہ سے دن اور رات وجود میں آتے ہیں جن کو م چوبیں ماعوں میں تختیم کرتے ہو اور چاند کے حساب سے تم مینوں کانقین کرتے ہو اور بارہ مینوں کی گنتی ہے تم سال کا حساب كرتے مو- نيزان تعالى نے فرمايا ہے:

اَلْتُمْ مُن وَالْقَمْرِيحُ مُبَانِ (الرحمن: ٤) هُ وَالَّذِي حَمَد النَّهُ مُ سَرِيبًا وَ الْفُحَر لُوراً وَ فَكُرَهُ مَسَارِلَ لِنَعُلَمُوا عَدَدَ السِّيمِينَ وَ الُحِسَابَ (يونس:٥)

سورج اور چاند ایک حماب کے ساتھ اگر وش میں) ہیں۔ دى ہے سے موسى كوروش بنايا ور جايد كوفراورا كى ترايم مقرر کیں " کہ تم نوگ سالوں کی گفتی اور حساب معلوم کر رہا

يعنى سورج اور جائدى كردش كے لينے ايك مل كاتصاب اور نظام مقرد كرديا ہے۔ كرميوں ميں دن كايزا بو بااور مرديول میں دن کا چھوٹا ہونا اس مقررہ نصلب اور نظام کی وجہ سے وجود بین آیا ہے اور سورج کے طلوع اور غروب میں اور طلوع کے بعد بتدر تئے نصف النمار مک پہنچے جس اور زوال کے بعد وجل جانے میں تمازی نمازوں کے او قلت اور ماہ رمضان میں محری اور

تبيان انقر ان

جلدسوم

افظاری کے اوقات بیں اور جاند کے مختے بدھنے کی علامتوں سے تم مینوں کا تقین کرتے ہو اور ماہ رمضان عیرالفطر عیدالامنی اور ج کی عبادات انجام دیتے ہو۔ اس آیت میں اللہ تعالی نے تین نشانیاں بیان فرمائی ہیں ارات کو چیر کر میج کو پیدا کرنا ارات کو آرام کے لیے بتایا اور مورج اور جاند کو حساب کے لیے بتایا۔

ئی جیر نے اللہ تعالی کی اُن مفات کے ساتھ شاء کر کے دعا کی ہے۔ الم مالک بن انس امبی متونی الالا دوارت کرتے ہیں:

المام الك كو يحلى بن سعيد سے بيد حديث بينى ب كه رسول الله بينجيد اس طرح وعاكرتے تھے۔ا سے الله ا(رات كى آركى سب كو چركر لكا لئے والے اور رات كو آرام كے ليے بنانے والے اسورج اور جائد كو حساب كے ليے بنانے والے اميرى طرف سے قرض كو اواكرو سے اور جھے فقرے فنى كروے اور ميرى ساحت اور بھارت اور ميرى طاقت سے جھے اسپنے راستہ بس طرف سے قرض كو اواكرو سے اور جھے فقرے فنى كروے اور ميرى ساحت اور بھارت اور ميرى طاقت سے جھے اسپنے راستہ بس انفع عطا فرانہ (موطالهم مالك كو قم الحدیث: ١٩٠٣ممليور دار الفكو البيوت ١٩٠٧هم)

الله تعالی کا اُرشاد ب: دی ہے جس نے تسارے لیے ستاروں کو بنایا" آگر تم ان سے منظی اور سمندر کی ماریکیوں میں ہدایت حاصل کرو" نے تک ہم نے علم والے لوگوں کے لیے کھول کر نشانیاں بیان کردی میں۔(الانعام عه)

اس کے بعد اللہ تعالی نے ستاروں کو پیدا کرنے کافا کدہ بیان کیاگہ تم اپ سٹروں میں سورج اور چاند کے علاوہ ستاروں ہے بھی راہنمائی حاصل کرتے ہو۔ اون کی دو ہے اندین راستوں کو خلاش کرتا ہے اور راستہ بھنگنے ہے محفوظ رہتا ہے 'جب اندان آسان کی ان نشانیوں اور ان کی بار کیوں اور ان کے اسرار و رموز پر فور کرتا ہے تو اس پر اللہ تعالی کی عظمت اور حکمت سکشف ہوتی ہے۔ اس لیے اللہ تعالی کے عظمت اور تو اس کے اسرار و رموز پر فور کرتا ہے قام والے لوگوں کے لیے کھول کر نشانیاں بیان کر دی جے۔ اس لیے اللہ تعالی نے اس آبات کی آخر میں قربایا ہے شک ہم نے علم والے لوگوں کے لیے کھول کر نشانیاں بیان کر جور اور کا تات میں وجود باری تعالی پر بھری ہوتی نشانیوں کو اہل علم اور فور و قار کرنے والوں کے لیے وضاحت سے بیان کردیا ہے۔ تا کہ وواللہ تعالی کی عظمت کے اسرار کو پاسکیں اور ان سے اللہ تعالی کہ وجود 'اس کی وحد انہت اور اس کی قدرت پر استورائل کر سکیں۔

الله تعالی کاارشادہ: وی ہے جس نے تم (مب) کوایک نفس سے پیدائیا مجرم ایک کے فعرنے کی جگہ اور اس کی میردگ کی جگہ اور اس کی میردگ کی جگہ ہوا کہ اور اس کی میردگ کی جگہ ہے۔ الانعام: ۹۸) میردگ کی جگہ ہے کہ بھے تھے والوں کے لیے کھول کر فشانیاں میان کر دی ہیں۔(الانعام: ۹۸) انسان کے نفس سے وجود باری تعالی اور تو حید پر دلا کل

زمین اور آسانوں میں وجود یاری اور اس کی توحید پر نشانیوں کا بیان کرنے کے بعد اللہ تعالی نے وہ نشانیاں بیان فرمائمیں جو خود انسان کے اندر پائی جاتی ہیں۔ سواللہ تعالی نے فرمایا اس نے تم کو ایک نفس سے پیدا فرمایا اور وہ صفرت آدم علیہ انساام ہیں جن کی تسل سے از دواج اور قامل کے ذریعہ تمام انسان پیدا ہوئے۔ اللہ تعالی کا ارشاد ہے:

نَا يُنَا يُنَهُ السَّاسُ الْفُوْلَ رَبَّكُمُ الَّذِي عَلَفَكُمْ الَدِي عَلَفَكُمْ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ وَاللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ الله

تمام افسانوں کو آیک نفس سے پیدا کرنا اللہ تعالی کے دجود اس کی وحدت اس کے علم اور اس کی قدرت اور اس کی حکمت پر دلائت کر باہ کہ افسان غور کرے جس طرح تمام افسانوں کاسلسلہ ایک نفس پر جاکر نتم ہو جا باہے اس طرح اس کا نکات اور حوادث کا سلسلہ بھی ایک اصل اور ایک فاعل مختار پر ختم ہو جا باہے اور وہ افتہ عز دجل کی ذات مقدمہ ہے اور وجو دواحد ہے اور واجب اور تدیم ہے 'ورنہ اسے بھی کمی موجد کی ضرورت ہوتی اور اس تمام کا نکات کو اس نمط واحد پر اس نے علم اور حکمت کے ماتھ پداکیاہے اور ظاہرے اس کے علم اور قدرت کے بغیر انبانوں کانے سلسلہ وجود میں نسی آسکا تھا۔

تمام انسان نسيلا برابرين

تمام انسانوں کا ایک لئس سے پیدا ہو یا جس طرح اللہ تعالی کی وحداثیت کی معرفت کاذر بعد ہے 'ای طرح اس بیس ب ر ہنمائی ہمی ہے کہ تمام انسان أيك اصل اور ايك نوع سے جي ان كاايك خمير ہے۔ يہ ايك مل باب كى اولاد جي ايد سب آپس مين المائل مين النيس الم المائيون كي طرح شيرو شكر و مناجل بي اور اختلاف اور اختلار نيس كرنا جاب ان بي رنك السل اور علاقة اور زبان كاجو اختلاف ب، وه محض شاعت اور تعارف كے ليے ب ورند اصل ان مب كى ايك ب الله تعالى قرا آب:

كيا اور يم في حسيس (مخلف) يدى قويس اور تباكل بنايا ما كد تم ايك دو مرے كو پيچانوا ب شك الله ك زويك تم يس ئادويدر كوالادد عجوم شنادوي يركار بو

بَا بَهُمَا النَّاسُ إِنَّا حَلَقُنْ كُمْ مِنْ وَكَرِوَانْتِي وَ الْهُوانِمِ فَيْ صَيلاً عَرواورا يك مورت مع بدا جَمَلُنُكُمْ شُعُوبًا وَ فَبَآثِلَ لِمَعَارَفُوا إِنَّ ٱكْرَمَكُمْ عِنْدَاللَّهِ أَتْفُكُمْ الحجرات ٣٠)

الم إحدين طبل متوفى ١٣١ه روايت كرت بن

ابد نصوه میان کرتے میں کہ ایام تشریق کے وسا میں جس مخص نے رسول اللہ ماجیر کا تعلبہ سنا اس نے جمعہ سے بیان کیا کہ آپ نے فریلااے لوگوا تسارا رب ایک ہے اسنوا کسی عربی کو مجمی پر کوئی فنیلت نیس ہے اور ند مجمی کی عربی پر کوئی فنیلت ے ممی کورے کی کالے پر کوئی فغیلت نسم ب نہ ممی کالے کی کورے پر کوئی فغیلت ہے۔ (المعث)

(مند احد 'جها' دقم الحديث: ٢٣٣٨ مطبور وأد الديث قاجره اسند احد 'جه من ١٩٠ طبع قديم مافظ البيتي في كمااس مديث ے تام داوی میں۔ جعالاما نداع مواسم

الم الويكراهم بن حسين بيلق متوتى ٥٥ معد روايت كرتي بين

حضرت جابر بن عبد الله ومنى الله عنما بيان كرت بين كه وسول الله يزوي في ايام تشريق ك وسط من بمين مجته الوداع كا خطبه دیا اور فرملیا اے لوگوا تهمارا رب واحد ب اور تهمارا باپ واحد ب سنوائمي عربي كو تجي پر كوئي فغيلت نسي ب اور ند كمي مجى كو عنيار كوكى فينيات مي ند كور عد كو كلف ير اور ند كلف كو كور مدير كوكى فينيات ب محر مرف تقوى مي اب شك تم میں مب سے زیادہ عزت والاوہ ہے جو مب سے زیادہ متی ہوا سنوہ کیامی نے تبلغ کردی ہے؟ سحابہ نے کما کیس نمیں یار سول الله الله عن فرماياتو ما ضرعائب تك يه بيغام بانجاد --

(شعب الايمان مع ٢٨٩ مل ٢٨٩ مطبور دار الكتب الطبيه ميروت ١٣١٠ هـ)

متنقراور مستودع كامعني

اس کے بعد اللہ تعالی نے ار ثالہ فرمایا پھر ہرا یک کے تھرنے کی جگہ اور اس کی سپردگی کی جگہ ہے حطرت ابن مسعود بھجو. نے فرمایا استقرار کی جگه رحم ہے اور سروگ کی جگه وہ زهن ہے جمال وہ دفن ہو گلہ اور حسن بعری نے کمااستقرار کی جگه تبریس ب اور اکثر مغرین نے کما ہے کہ استقرار کی جگد قبرے اور سردگی کی جگد ملب (پشت) میں ہے۔ معرست ابن عباس دمنی اللہ فنماے ایک روایت یہ ہے کہ استقرار کی جگہ زشن می ہے اور سردگی کی جگہ پشت میں ہے۔ معید بن جبید کتے ہیں کہ جمع ے حضرت این عباس رضی الله عنمانے یو چماکیاتم نے شادی کرلی ہے؟ میں ئے کماشیں قربایا الله عزوجل تمهاری پشت سے ان

کو نظامے گاجن کو اس نے تماری پشت کے پرد کیا ہے اور هغرت این عباس رضی اللہ عظمات دو سری روایت بیہ ہے کہ مشتقر دو ہیں جو پیدا ہو بچکے اور مستودع وہ ہیں جو ایمی پیدا نسس ہوئے اور حضرت این عباس رضی اللہ عظمات ایک اور روایت بیہ ہے کہ مستودع وہ ہیں جو اللہ کے نزدیک ہیں۔(الجامع الاحکام اللز آن 22 مس ۴۳ مطبوعہ ہاواللہ تکو میروت کا اسمامہ)

قرآن جيد كي ايك اور آعت عملوم مو تاب كه متعقرة من م بدافته تعالى كاار شادب:

وَلَكُمْ فِي الْارْضِ مُسْنَفَرُّ وَمَنَاعُ إلى حِبْنِ الدر تمارے لي ايك قاص وقت تك زين بن تعرف

الله تعالی کاارشادہ: وی ہے جس نے آسان سے پانی پر ملیا 'پھراس سے جرتم کی نیا تات اکائی 'پھراس سے سر سبز
کھیت اور درخت پیدا کے 'پھران سے تنہ بہ تنہ کئے ہوئے دانے اور کمجور کے شکونوں سے پھلوں کے بیکھے پیدا کیے ہو جھکے
پڑتے ہیں اور انگوروں اور ذبتوں اور انار کے باخ اگئے جو لمجے جلتے بھی ہیں اور مختف بھی ہیں 'جب بیدور خت پھل لا تھی توان
کے پھل اور اس کے بچنے کی طرف و کھمو ' بے شک اس میں انھان اللہ والے لوگوں کے لیے ضرور نشانیاں ہیں۔ (انا نعام: ۱۹۹)
سمانیقہ آیا ہے سے ار شاط

الله تعالى في سب ملے ذين كى نشانيوں سے وجود بارى تعالى اور توحيد پر استدلال كيا و مرى بار آسان كى نشانيوں بى سے سورج اور چاند سے استدلال كيا جر تيمرى بار ستادوں سے استدلال كيا جو تھى بار شس انسان سے استدلال كيا اور اب بانچ يں بار آسان سے نازل ہوئے والى بارش سے استدلال كيا۔ اس آيت بى وجود بارى اور اس كى توحيد پر دليل بحى ہے اور اس بى مندلال كيا۔ اس آيت بى وجود بارى اور اس كى توحيد پر دليل بحى ہے اور اس بى الله تعالى كى مختوں كا بحى بيان سب بعض علاء كتے بيس كر اولا آسان سے بائى بادلوں كى طرف آ باہ اور جريا وال سے زيمن بيانى برستا ہے۔ اور بعض علاء كتے بيس كر درياؤں اور سمندروں سے بخارات اور الله جاتے بيس اور بادل بن جاتے بيس اور بر الله جاتے بيس اور بادل بن جاتے بيس اور برائد تعالى سے بان برسایا اس كا سعنى ہے آسان كى جانب سے بانى برسایا اس كا سعنى ہے آسان كى جانب سے بانى

تحجوركے فضائل اور اس كامومن كى صغت ير مشمل ہونا

الله نفال نے اس آیت بیل جارت مے درخت بیان فرائے ہیں۔ مجور 'انگور' زینون اور انار اور ور خت کے پھلوں سے کہتوں سے کا کر فرایا کو تکہ محیتوں سے غذا حاصل ہوتی ہے اور ور ڈنوں کے پھلوں سے لذت حاصل ہوتی ہے اور غذا اذت سے اہم اور اس پر مقدم ہے 'اور محجور کو باتی پھلوں پر مقدم کیا کو تکہ مجور غذا کے قائم متنام ہے خصوصاً مربوں میں اور محماء نے بیان کیا ہے کہ مجور کی حیوان کے ساتھ کی وجود سے مقامیت ہے 'اس کے متعلق صدیت میں ہے:

المام احمد بن على المشنى المعيى المتوفى ١٠٠٥ و دوايت كرتے إلى:

حضرت على بن ابى طائب جوئز. بیان کرتے میں کہ رسول الله بڑھیا نے قربایا مجود کے ورشت کی توقیراور تعظیم کو اور تعظیم کو جو بھی ہے اکے نکھ وہ اس کے علاوہ اور کسی ورحت کو گابھن نہیں کیاجا آباور وسول الله بھیجیوں نے قربایا بھی جنے وال عورتوں کو آزہ مجوریں کھلاؤ اور آزہ مجوریں میسرند ہوں تو بھیوارے کھلاؤ اور الله کے نزدیک اس ورخت سے نیادہ اور کوئی عزت والا ورخت نہیں ہے جس کے بیچے مریم بنت عمران ایری تعین ۔ اس میں بہت مران اللہ کی تعین ۔ اس میں بہت مران اللہ کے نزدیک اس ورخت سے نیادہ اور اور کوئی عزت والا ورخت نہیں ہے جس کے بیچے مریم بنت عمران اللہ کی تعین ۔ استد ای بعدلی موسلی ان اور تم اللہ میں اور ایک اور ایک ایس میں بھی اور والد ا

اس مدے کی سند منقطع ہے۔ عروہ بن رویم کی حصرت علی ہے طاقات نسی ہے"اس کے علاوہ اس کاایک راوی مسرور بن سعید ضعیف ہے۔

الم محدين اساعل بخارى متوفى ٢٥١ه روايت كرتے مين

حضرت عبدالله بن عمر وضي الله عنها بيان كرتے إلى كه وسول الله عليه عنها و دخوں بن سے ايك ورخت به جس كے سية نميس كرتے اور وہ مسلمان كى حتل ہے۔ جھے ہتاؤ وہ كون ساور خت ہے؟ اوكوں كا خيال جنگل كے درخوں كى طرف كيا محضرت عبدالله حق ما ميرا وہ مسلمان كى حتل ہے ورخت كى طرف كيا كيكن جھے (يوے اوكوں كے سامنے يولئے ہے) شرم آئى۔ پھر محضرت عبدالله حق ما ميرا وہ من محبور كے ورخت كى طرف كيا كيكن جھے (يوے اوكوں كے سامنے يولئے ہے) شرم آئى۔ پھر اوكوں نے سامنے يولئے ہے اس كاز كر كوں نے مار من مار من مار من سے دھرے اس كاز كر كوں ساور خت ہے؟ آپ نے فرايا وہ كھي و كاور خت ہے من نے حضرت عمرے اس كاز كر كيا۔ انہوں نے كما اگر تم اس وقت بير ہتا ديے كہ يہ كھي و كال فلال جنرے نے اور وہ بو آ۔

(صحح البخادی می از قم الدین ۱۳۰۱ سمی مسلم من نقین ۱۳۰۱ (۲۸۵) ۱۹۳۵ من کیری ملندانی ج۰ وقم الدین ۱۹۳۸ مند امر ۱ ج۱ می ۱۳۴۳ ملی قدیم)

رسول الله مرجی نے کھور کے ورخت کو مومن اور مسلم کے ساتھ اس لیے تشبیہ دی ہے کہ اس ورخت میں فیر بہت المادہ ہے 'اس کا سلم ہے' اس کا پہل میٹھا ہے اور یہ بھیٹہ کھایا جاتا ہے۔ تازہ بھی اور خکل بھی 'اس کے منافع بہت ہیں' اس کے شختے میں جو تقییر کے کام آتے ہیں۔ اس کے جوں ہے دی 'پٹائل' فولی اور چکے بنائے جاتے ہیں' اس ک مختل ہے جوج بنی ہو تقییر کے کام آتی ہے' پھر یہ بہت حسین و جمیل درخت ہے۔ اس طرح مومن میں بھی بہت فیر ہے۔ اس کا عبادت کرنا' ایجے افلاق ہے چیش آنا' عبادت میں توانل حاصل کرنے کے کھانا بینا' آرام کرنا اور سونلہ فرضیکہ حسن نیب سے اس کا عبادت کرنا' ایجے افلاق ہے چیش آنا' عباد و شواب ہے۔

دو مری دیہ ہے ہے کہ موسمی کی صفت ہے ہے کہ وہ سب سے زیادہ رسول اللہ بڑیز سے محبت کرتا ہے اور در فتوں میں محجود کے در فست کی ہے صفت ہے کہ وہ آپ سے بہت کرتا ہے احتی کہ محبود کے در فست کی ہے صفت ہے کہ وہ آپ سے بہت کرتا ہے احتی کہ محبود کے در فست کی ہے صفت ہے کہ وہ آپ سے فیل جلا کر دونے لگا مومن کی محبت کے متعلق ہے صدیث ہے۔

المم الحدين اساعيل بخاري متونى ٥٦ معد روايت كرت مين

حفرت انس برائی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ سربیر نے فرایا کوئی بندہ اس وقت تک مومن نمیں ہو گا جب تک کر بیں اس کے نزدیک اس کے احل اس کے مال اور سب لوگوں سے زیادہ محبوب نہ ہو جاؤں۔ ایک اور روایت جس ہے متی کہ بین اس کے نزدیک اس کی اولاد "اس کے والد اور تمام لوگوں سے ذیادہ محبوب نہ ہو جاؤں۔

(صحیح البخاری" جه" دقم الحدیث: ۱۵ صحیح مسلم "ایمان ۱۳ (۳۳) ۱۳۳۰-۱۳۰ سنن انتسانی " ج۸" د تم الحدیث: ۱۵۰۱۳ سنن این باب " ج ۱ د قم الحدیث: ۱۷۷)

اور آپ سے محبت کی بناپر آپ کے فراق میں محبور کے در فت کے رونے کے متعلق یہ صدیث ہے: الم محرین اسامیل بخاری متونی ۵۲ میں روایت کرتے ہیں:

حضرت جابرین عبداللہ رضی اللہ عظمانیان کرتے ہیں کہ نبی ہے ہو کے دن مجود کے منے نیک لگا کر کھڑے ہوتے منے۔ انسار کی ایک خاتون نے کمایار سول اللہ اکیا میں آپ کے لیے ایک منبرنہ بناوول یا آپ نے فرمایا اگر تم چاہو تو 'انسوں نے آپ کے لیے ایک منبرنہ دول یا آپ نے فرمایا اگر تم چاہو تو 'انسوں نے آپ کے لیے ایک منبرنتادیا 'پھرجب جمعہ کادن آیا تو آپ منبرز کھڑے ہو گئے 'تو دہ مجور کا تنابح کی خرج جن جن کر روسنے لگا' آپ

نے اس کو اپنے ساتھ لیٹلا تو رہ بچند کی طرح سکیل اور بجیاں پھرنے لگا۔ حضرت جابر نے کماوہ آپ کے ذکر کے فراق ہے رود یا تھا۔ دو سری سند کے ساتھ حضرت جابر ہے روایت ہے کہ معجد نبوی کی جست کھجور کے تئوں سے بٹی ہوئی تھی اور نبی ہے تھے۔ دب آپ کے لیے منبر معاویا کیا اور آپ اس پر جیند گئے تو ہم نے کھجور کے ایک حنے کے ساتھ کھڑے مو کر قطید دیتے تھے۔ دب آپ کے لیے منبر معاویا کیا اور آپ اس پر جیند گئے تو ہم نے اس سنے ہے اس طرح دونے کی آواز کی جس طرح او تنی اپنے بچوں کے فراق جس روتی ہے می کی بڑیجیں نے آکر اس پر اپنا ہاتھ رکھانہ پھراس کو قرار آگیا۔

ا من البرعة المورد على المورد على المورد على المورد على المردي على البريد المورد على المورد على المورد الم

الم عبدالله بن عبد الرحمن داري سمرقدي متوفى ١٥٥ه روايت كرية بين:

(سنن داری مجائز قم الحدیث ۳۲ المعم الادسائج ۴ ئر قم الحدیث ۴۲۷ دلا کل النبوة لالی نتیم مج ۴ ئر قم الحدیث ۴۳۰٪ امام طبرانی اور امام ابولنیم کی ردایت بیل ہے متمهار سے پملوں ہے متقی اولیاء اللہ اور انبیاء و مرسلین کھائمیں۔ تھجو ر 'انگور ' ڈیٹون اور اتار کے خواص

سمجور کامزاج گرم ختک ہے اس کی اصلاح آثار تور سمجین ہے ہو جاتی ہے۔ اس میں و چاہئزا دیا تین) اور تمام اہم معدنی نمکیات یائے جاتے ہیں 'اس کے استعمال ہے خون کے مرخ ذرات میں اضافہ ہو تاہے 'یہ کویسٹرول کو متوازن رکھتی ہے 'مدینہ منورہ کی مجور مجود خاص طور پر دل کے لیے مغید ہے 'یہ پیٹ کے کیڑے ارتی ہے اور پیٹاپ کھول کر لاتی ہے 'سو کر ام مجور میں ۱۲۱۴ حرارے ' اکرام پروفین ' سائے کر ام نشاستہ 'ایک گر ام چکانگ ' ۵ وہ کی گر ام کیائیم ' ۴ء اگر ام سوؤیم ' موہ یہ کی کر ام بو ٹائیم ' ۲ کے کی کرام فاسفورس ' ۵ وسولی کر ام فولاو اور یہ کی گر ام چھوک ہوتی ہے۔

الله تعالی نے مجور کے بعد انگور کاؤکر فرایا کیونکہ انگور تمام پھلوں میں افضل ہے کیونکہ یہ پھل بھی اول ہے لے کر آخر

تک نفع بخش ہے۔ اس سے مرکہ لور نبیز بھی بنایا جا آ ہے۔ انگور دو ضم کے بوتے ہیں ایک چھوٹا نگور ہو آ ہے ایہ جب فشک

ہو جائے تو اس کو کشمش کہتے ہیں 'اور براانگور جب فشک ہو جائے تو اس کو منتیٰ کہتے ہیں۔ انگور کا مزاج کر م تر ہے 'یہ ذور بھم

اور کٹیرالفقد اے '۔ فون صالح ہے کثرت بیدا کر آ ہے لور بدن کو فرہہ کر آ ہے 'موگر ام انگور میں 14 حرارے 'ایک کر ام پرو نین 'ان

گرام نظامتہ ایک گرام چکتائی کا لی گرام میلئیم ' ۱۱ فی گرام قاسنورس ' ۱۱ء می گرام نولاد ' ۱۱۰ فی کرام و نامن اے ' ۲۰۰۰ می گرام دعامن ٹی اور ۱۲ فی گرام وعامن سی ہو تاہے۔

انگور کے بعد زجون کاذکر فربلا ہے 'اس کا پھل میزادر ساہ دو رنگ کا ہوتا ہے۔ یہ فلسطین' عرب 'ایران اور جنوبی ہورپ میں پیدا ہوتا ہے' زخون کا تمل بہت مفید ہے۔ مردی کے دردوں میں اس سے بدن پر مالش کی جاتی ہے' مید بدن کو غذائیت بخشا ہے۔ اعصاب کو تقویت دیتا ہے' برحماہے کے تمام عوارض میں مفید ہے' جدید سائنسی صحیتی سے عابت ہوتا ہے کہ روض زجون کویسٹرول کو عل کرلیتا ہے۔

انار دو حتم کا ہوتا ہے۔ سرخ دانوں دالا اور سقید وانوں دالا۔ سرخ دانوں والے کازا کفتہ کمٹا مٹھا ہوتا ہے اور سفید دانوں دالا شیریں ہے۔ اس میں جراشیم کش خصوصیات بھی دالا شیریں ہے۔ اس میں جراشیم کش خصوصیات بھی دالا شیریں ہے۔ اس میں جراشیم کش خصوصیات بھی ہیں ' ۱۰۰ کر ام افار میں میں اے ۱۰۸ کی گرام افار میں میں اے ۱۰۸ کی گرام افار میں میں اے ۱۰۸ کی گرام دیا میں اے ۱۰۸ کی گرام دیا میں اے ۱۰۸ کی گرام دیا میں ہی ہوتا ہے۔ دیا میں بی ہوتا ہے۔

پھلوں کی ابتدائی حالت اور ان کے کئے سے دجود باری پر استدلال

اس آیت کے آخر میں فرملیا ہے "جب یہ ور فت کیل لا تمیں تو ان کے کیل اور اس کے کچنے کی طرف ویکمو ' بے شک اس میں انیمان لانے والے نوگوں کے لیے منرور نشانیاں ہیں "۔

توڑے بغیر کینے سے پہلے ور خت پر لکے ہوئے پیملوں کی بیع کامد م جواز

الم محد بن اساعيل عفاري متونى ٥٦ معد روايت كرتي بين.

معرت این محرومنی الله محتمامیان کرتے ہیں کہ رسول الله منظیر نے ظہور صلاحیت سے پہلے پھلوں کے بیچنے سے منع فرمایا ' بیچنے والے اور فرید نے والے دونوں کو منع فرمایا۔ ایک اور دوایت میں ہے مجوروں کی بیچ سے منع فرمایا آ و قشیکہ وہ سرخ یا زوونہ ہو جا کمی اور سفید ہوئے سے پہلے بالیوں کی بیچ سے منع فرمایا ' آلوفتیکہ وہ آفات سے محفوظ نہ ہو جا کمیں۔

(میچ البحاری جسم و آفدیت: ۱۹۹۳ میچ مسلم نیدع ۴۹٬ ۱۳۹۳ میلی ۱۳۹۰ و ۱۳۹۱ المدید ۴۳۰ منی ابوداؤد ارقم الحدیث ۱۳۹۳ ۱۳۹۳ منی الزندی نیج البحاری جسم المدید ۱۳۳۰ مسلم نیدع ۴۳۰ میلی الزندی نیج البحد ۱۳۵۰ منی النسائل جسم از قم الحدیث ۱۳۵۵ منی ابنی البد ایج ۴ رقم الحدیث ۱۳۵۸ منی المدید ۱۳۵۸ میلی دوه قدرتی آفات سے محفوظ بو افتحاء احزاف کے زدیک خمود ملاحیت کا بید معنی ہے کہ پیمل اتنی مقدار کو چنج جائیں کہ وہ قدرتی آفات سے محفوظ بو

جائیں اور نقباہ شافعہ کے زریک اس کامعی پھلوں کا پک جانالور اس میں مضاس کا آجانا ہے۔ (میسوط عینا میں ۱۹۹) باغوں میں پھلوں کی مروجہ ربیج کے جو از کی صور تیں

ادرے زانہ کے اکثر اسلامی شہوں میں بلقات کے پھلوں کی بچے کا طریقہ سے کہ در دنوں پر لکے ہوئے پھلوں کی بچے ہوتی ہے۔ پھلوں کو در خواں سے تو ڈ کر بچے شیں کرتے اور باضوم اس دفت بھے کی جاتی ہے جب پھلوں کا ظہور بھی نہیں ہو آ اور مرف ان کا بور گام ہو تا ہو کہ جس کے بیش نظر بھے کی ہے مروجہ مرف ان کا بور گام ہو تا ہے اور بھی بور کے بھی ظہور سے پہلے بھے ہو جاتی ہے۔ ان اصادیث کے بیش نظر بھے کی ہے مروجہ صور تیں باخل بیں۔ ہمارے نقداء نے اس کے عل کی جار صور تیں بیان کی بین:

۱۰ علامد مرضی منفی متوفی ۱۸۳ معد نے بیان کیا کہ تُریدار ظهور ہے پہلے پھلوں کو ترید نے اور ایک برت معید تک زیمن کو کرائے پر لے لئے ' پھر پھلول کے اتار نے تک جو زیمن ہے افزائش اور روئیدگی حاصل ہوگی' وہ کرایہ کاعوض اور اس کا جاز حق ہو گا۔ (المبسوط' ج ۱۴ مل ۱۲۲ مطبور دار السرف میروت ۱۸۹ میرو)

۱۰ اگر بہض پھلوں کے بور کا ظہور ہو گیا ہو اور بعض یا اکثر کا ظہور نہ ہوا ہو تو جن کا ظہور ہو گیا ہے' ان کو اصل قرار دیا جائے اور جن کا ظہور نہیں ہوا ان کو تابع قرار دیا جائے۔ یہ اہم مالک اہام مجربی حسن شیبانی اہام حلوانی اور بعض دیگر فقراء کے خات ہے۔ المبسوط جن میں ۱۹۸۰مطبوعہ دارالمرفد ' پیروت' ۱۹۸۸میں)
موری جائز ہے' اگر چہ ظاہرالروایہ کے ظاف ہے۔ (المبسوط 'جن میں ۱۹۷۰مطبوعہ دارالمرفد ' پیروت' ۱۹۸۸میں)
موری دو ختواں مرجم رقد دیمی دوریا میل معال دان دکھ شرد اور شور سال کراں کرانہ فصل سے جس آن بھی مھاس کرمیں ان

۳۰- درختوں پر جس قدر بھی ہور یا پھل ہوں ان کو خرید او خرید ہے اس کے بعد فصل تک جس قدر بھی پھل سمیں ان سب کو بلغ کا مالک عزیدار پر طال کردے۔

المبسوط على المبسوط على المحال المحق القدير على المام المعلور سكر البحرار التي على المهار معلى المبور معرى الم يه تين عل صرف اس صورت عن بين بسباغ كور فتول عن سه كمى ايك پر بهى كم از كم بور لك كيابو البكن الديس الراس وقت بل عن الكراس وقت بالغ كرك ايك ورفت پر بهى بور تك نبين بوتك اس صورت من مرف يه على اس الله وقت بالغ من المرف يه على المرف الله على المرف المر

علامد سيد محراش ابن علدين شاى حنى متوفى عن عدد كلين بن

ھی کتا ہوں کہ اہارے ذبانہ میں ضورت کا متحق ہونا تختی نہیں ہے۔ فاص طور پر دمشق میں جمال ہماؤں کے در خت

بہت زیادہ میں اور چو نکہ او گوں پر جمالت کا ظلبہ ہے 'اس لیے شرق حل پر ان ہے عمل کرانا علوہ ہے۔ ہرچنز کہ افزاوی
طور پر بعض او گوں ہے عمل کرانا ممکن ہے 'لیکن دنیا کے تمام او گوں ہے اس پر عمل کرانا محال ہے اور او گوں ہے ان کی عادت
پہڑانے میں بہت شرح ہے اور اس صورت میں جن شہوں میں صرف اس طرح پھلوں کی تھے ہوتی ہے 'ان کے لیے ان پھلوں کا تھے ہوتی ہے 'ان کے لیے ان پھلوں کا تھے ہوتی ہے 'ان کے لیے ان پھلوں کا محملاً حرام ہو جائے گا اور نبی جھیج نے تھے سلم کی رخصت ضرورت کی بناء پر جی وی ہے 'طانا کہ وہ بھی تھے المعدوم ہے۔ پس کھانا حرام ہو جائے گا اور نبی جھیج نے تھے سلم کی رخصت ضرورت کی بناء پر جی وی ہے 'طانا کہ وہ بھی تھے المعدوم ہے۔ پس کھانا حرام ہو جائے گا اور نبی جھیج نبی ہے۔ سواب یہ بھی اس کے ساتھ بطریق والمات الاجی کرنا محملی ہے۔ سواب یہ بھیج اس تھے کو تھے سلم کے ساتھ بطریق والمات الاجی کرنا محملی ہے۔ سواب یہ بھی اس تھے کو تھے سلم کے ساتھ بطریق والمات الاجی کرنا محملی ہے۔ سواب یہ نبی اس تھے کو تاجائز ہونا جا ہے۔

(روالحار عمام ٥٠ مطبوعه استنول عمام ١٨-٣٩ مطبوعه بيروت)

الله تعالى كالرشاوم: اور انهول نے اللہ كے ليے جنوں كو شريك قرار ديا طابا علم اس نے ان كو پيداكيا ہے انهوں كے بلا علم اللہ كے ليے بينے اور بينياں كمر ليس اور وہ اس سے باك اور بلائز ہے جو وہ بيان كرتے ہيں۔ (الانعام: ١٠٠٠)

مشرکین کے اپنے شرکاء کے متعلق نظریات اور ان کے فرقے اس میں سل تا ہ موالۂ منال فرقہ میں انوالم ہوئے کھی اسامہ تا

اس سے پہلی آیات میں اللہ تعالی نے توحید پر پانچ ولیاس قائم کیں اور اس آیت میں اللہ تعالی مشرکین کے نظریات بیان فرمار باہے اور ان کے باطل نظریات کارد فرمار ہاہے۔

حسن بھری و فیرو نے کما ہے کہ یہ آیت مشرکین عرب کے متعلق نازل ہوئی ہے اور جنوں کو اللہ تعالی کا شرک بنانے کا معنی ہے کہ وہ جنوں کی اس طرح اطاعت کرتے ہیں جس طرح اللہ عزو جمل کی اطاعت ہوتی ہے۔ گاوہ و فیرو نے کما ہے کہ اس معنی ہے ہوگئے ہیں کہ وہ جنوں کی اس طرح اللہ کی بیٹیاں ہیں اور کلی نے کمایہ آیت و ندیقوں کے متعلق بازں ہوئی ہے جو کہتے ہیں کہ اللہ اور الجیس وو بھنگی ہیں۔ اللہ اضانوں اور مورشیوں کا خالق ہے اور الجیس جنات ورندوں اور مجمود کا خالق ہے اور الجیس جنات ورندوں اور مجمود کا خالق ہے اور اس قال کے قریب مجموع کا قول ہے جو کہتے ہیں کہ اس جمان کے دو منا نے والے ہیں۔ ایک خدا قدیم ہے اور دو مراشیطان مورشیوں اس قول کے قریب مجموع کا تول ہے جو کہتے ہیں کہ اس جمان کے دو منا نے والے ہیں۔ ایک خدا قدیم ہے اور دو مراشیطان ماد شہر ہوران کا زعم ہے کہ برائی کا پیدا کرنے والا صادت ہے۔

(الجامع لاحكام القرآن 27 م 40-00 مطبوع داد الفكو "بيروت 1016 م)

الم افرالدین عمدین ضیاه الدین عمردازی متونی ۱۸۰۸ کیسے ہیں۔ اللہ تعالی کے لیے شریک قرار دینے والوں کے حسب زمل فرقے ہیں۔

۱۰ بت پرمت لوگ ہیں۔ یہ اس کااعتراف کرتے ہیں کہ بتوں کو تمنی چیز کے پید اکرنے پر قدرت نمیں ہے 'کین یہ بتوں کو مہادت میں اللہ تعالی کا شریک قرار دیتے ہیں اور بتوں کی مبادت کرتے ہیں۔

۱۰ بعض مشرکین یہ کئے ہیں کہ اس عالم کے مدیر کوا کب ہیں 'اور ان کے دو قرقے ہیں ایک قرقہ یہ کتا ہے کہ کوا کب واحب آلو حود لذوا تبدیا ہیں اور ایک فرقہ یہ کتا ہے کہ یہ مسک الوحود لدوا نبدہ ہیں اور حادثہ ہیں اور ان کا خالق اللہ تعالی ہے 'گراللہ سجانہ لے اس عالم اسٹل کی قدیم ان کی طرف مونب دی ہے۔ معرت ابر اہیم خلیل اللہ علیہ اصلو قاو السلام نے ان بی ہے مناظرہ کیا تھا'جہ یہ کما تھا" لااحب الافلیس ".

۳۰ بعض مشرکین سے کہتے ہیں کہ اس جمان کے وو خدا ہیں۔ ایک برائی کا فالق ہے "وہ اہر من ہے اور ایک بھائی کا فالق ہے اوہ یزوان ہے۔ دھرت ابن عباس نے قربایا ہے آت زند یقوں کے بارے میں غازل ہوئی ہے جو یہ کتے ہیں کہ اللہ اور الجیس دو بھائی ہیں۔ اللہ انسانوں "مویشیوں اور نیکیوں کا فالق ہے اور الجیس در ندوں "مانیوں" مجھوؤں اور برائیوں کا فالق ہے اور الجیس در ندوں کا ند ہب ہے ہو اور برائیوں کا فالق ہے۔ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنمانے جو قد ہب میان کیا ہے جو وہ ہوسیوں کا ند ہب ہے جو بردان اور اہر من کے قائل ہیں۔

۳- کفار سے کہتے تھے کہ فرشتے اللہ کی بیٹیاں میں اور وہ یہ بھی کہتے تھے کہ جن سے مراد فرشتے میں کیونکہ جن کامعنی ہے چھی ہوئی چیزاور فرشتے بھی آتھوں سے چھے ہوئے ہوتے ہیں۔

٥- يهود حفرت عزير كواور عيسائي حفرت عيني عليهماالسلام كوخد ا كابينا كمتر مصر

(تغيركبير عن ٢٠ م ٥٠ - ٨٨ مخقراد موضحا مطوعه دار احياء الراث العربي بيروت ١٣١٥ هـ)

الله تعالی کے لیے مولود نہ ہوتے پر دلائل

اس آیت کے آخری حصد میں اللہ تعالی نے قرمایا ہے انہوں نے بانا علم اللہ کے لیے جنے اور یٹیال کر لیں۔وہ اس سے پاک اور بالا تر ہے جو وہ بیان کرتے ہیں اللہ تعالی سے اولاد کی نفی پر علیاء اسلام نے حسب ذیل دلا کل قائم کیے ہیں .

. طبيان القر آن

جلدسوم

ا- خدااور معبود كاواجب لذا= بونا ضرورى ب أكر خداك في بين كو قرض كياجات توده واجب نذاه موكايا ممكن لذاة ہوگا' اگر وہ واجب لذاہ ہو تو اس كامولود ہونا يافل ب "كوتك مولود والدسے منافز اور اس كى طرف محان ہو آب اور واجب لذاء كى سے متاخر اور كى كا عتاج نسي مو آ ياك مستنتى اور قديم مو آب اور آكرود مكن لذاء مو تو يعرد والله كابنده اور اس كى كلوق بوكانور مولود والدكاين، اور اس كى كلوق نسي بويا تيز مولود والدكى بنس سے بويات اور مكن عمان اور طوث واجب ستغنی اور قدیم کی جنس سے نہیں ہے۔ ٢٠ مولود كى احتياج اس كے موتى ب كر والدكى موت كے بعدود اس كا كائم مقام موفور اس كر مثن كو آ كے برحائ اور الله عزد جل ير موت كا آنا محل ب اس اليداس كامولود مي محل ب-اند مولود والدكاج مو باب توريس كاكوفي جر موجد مركب مو باب أور مركب حادث مو باب الير كامولود موجاس ے مرکب اور مادث ہونے کو مستازم ہے اور اس کا مراب اور مادث اونا علی سے اس سے اس کا مواود ہی حل سیسہ ام - مواود والدے مشاب ہو ماہ کور اللہ کے مشاب کوئی اللہ اللہ کا مشاب اللہ کا مواود ہو یا مال ہے۔ بالى راب امرك موجوده عيسائى كنت بين كرجم الله كوباب اور عين كوناف كابنا كاداكت بين باب ، مراد رحم اور شفق ہے۔ جسمانی لحاظ ہے باب مراد تعین ہے ؟ اس کاجواب یہ ہے کہ پار صفرت عیمی کو خصوصت سے بیٹا کیوں کہتے ہو؟ اور اس بر اصرار کیوں کرتے ہو؟ ساری کا کلت کوافلہ کابیا کو کدسب پر شنق اور رحیم سید اللہ تعالی کو شفق اور دعیم اور صغرت میسی کو مزيز اور رحيم كيال لمي كتف جب كه باب اور بينا ك الغاظ جسماني رشة كو طاهر كرسة بي جو الله تعالى كي جناب من مراحنا تص ہے اور معزب میسی علید انسلام ہے متعبور قبیں کہ وہ خواکو باپ کمیں جو اس کے لیے تاتش کاموجب ہے۔ وہ آما زن اور زمزن کا مرجعیہ واس کی اولاد کرنگر ہوتی حالانکر اس کی بیری می جس وہ مرجز کو فرب ماننے والا ہے 0 میں ہے اللہ جرتبالاری ،ای کے س رن جارت کامتی بنی وه مرجز کا بدا کرف والا ب موتمای جادت کرد. اور وه مرجز کا مجان آنکیں اس کا اماط جس کرسکتی اور وہ برجیز کا اماط کے ہوئے ہے ، وہ بایت ارکینان مر القلاحاء لوبعد بينك بمائدے إلى بمالات وب كى وقت دوش ثانياں أكبى الرس فاتي

إوز الانجريل کی ہے امتر کو چیوڈ حبادمت كريتة جن هذيه برسكمن ألاجبالت سنع الشرك یاں کرن نان آئی توں مزور اس بر ایال نایں کے ، آپ کیے الندك ياس بي الد المصلان ميس كو معوم كر حب يه نشانيال أبايي ل ورول برمي ايال بي الي كان غيان ائقر ان

وَنُقَلِّبُ آئِكُ تَهُمُ وَ اَبْصَارُهُ وُكِمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهُ اَوِّلُ مَرَّةٍ

م ان کے دوں اور آ محموں کو ہیے ہے جی جی طرح یہ لوگ ای قرآن پر سبی یاد ایمان جیس لائے تے

وَنَنَارُهُمُ فِي طَغْيَارِنِهِ مَ يَعْمَهُونَ ١٠٠٠

الدسم ان کوان کی مرکش میں بیشک ہوا جبور کے میں

الله تعالى كاارشاوي: وه آسانون اور زمينون كاموجدب اس كى اولار كو تحربوكى علا تكد اس كى يوى بى نيس ب

حصرت عینی علیہ السلام کے ابن اللہ ہونے کاولا کل سے رو

اس سے مملی آبت میں اللہ تعالی نے واضح فرایا تھاکہ مشرکین کے مقائد یاطل میں اور اس آبت میں ان کے باطل ہونے یر دلائل قائم کیے میں ان ولائل کی تقریر اہم رازی نے اس طرح فرائی ہے:

ا۔ بدلیج کامعنی ہے کسی چیز کو بغیر کسی سابقہ مثال اور نمونہ کے پیدا کرنالور اللہ تعالی تمام آسانوں اور زمینوں کو ابتداء "بغیر کسی سابقہ مثال کے بیدا کرنے والا ہے "اور میں بیسائیوں کے مقیدہ کے باطل ہوئے کی دلیل ہے۔ وہ کتے ہیں کہ کیونکہ اللہ تعالی سے معفرت میں کو بغیریا ہے کہ اللہ تعالی معفرت معنی کو بغیریا ہے کہ بدا کیا ہے "جس کی پہلے کوئی نظیر اور مثال نہیں تھی۔ اس سے عابت ہوتا ہے کہ اللہ تعالی معفرت میں باشہ تعالی سے اس دفیل کا رو فرایا کہ اللہ تعالی نے تمام آسانوں اور زمینوں کو ابتداء ابغیر کسی سابقہ مثال اور نمونہ کے پیدا کیا اللہ تعالی تمام آسانوں اور زمینوں کا ابتدائ نمونہ کے پیدا کیا اللہ تعالی تمام آسانوں اور زمینوں کا باپ ہے اور آگر اس وجہ سے وہ تمام آسانوں اور زمینوں کا باپ نمیں ہے "و معفرت میں علیہ السلام کا اس وجہ سے کہے باپ ہو سکتا ہے؟

۱- میدائی جو کتے ہیں کہ حضرت میسی علیہ السلام اللہ تعالی کے بیٹے ہیں اور اللہ تعالی ان کاباب ہے۔ اگر اس ان ان کی بیٹے ہیں قو مراد ہے کہ بیٹے انسانوں میں معروف طرفقہ سے اولاد ہوتی ہے 'اس طرح سے حضرت میسی علیہ السلام اللہ تعالی کے بیٹے ہیں قو اللہ تعالی نے اس کا رو قربایا کہ اللہ تعالی کی تو ہوئی ہی تھیں ہے تو اس کا بیٹا کیے ہوگا؟ نیز معروف طرفقہ سے اولاد کے حصول میں وہ فضی محکزہ ہوگا ہو علی الفور میں چیز کے بردا کرنے ہوگا ہو تو وہ لو لھ کے انتظار کے بعد اولاد کو حاصل کرے گا الکین جس کی شان ہے ہو کہ وہ جس چیز کو پردا کرنا چاہے تو وہ ایک لفظ کن قرباتی ہو وہ وہ چیزای وقت موجود ہو جاتی ہے۔ وہ اس معروف دنیاوی طرف اللہ تو کہ وہ جس چیز کو پردا کرنا چاہے تو وہ ایک لفظ کن قرباتی اللہ تعالی کے اس ارشاد میں اشارہ قربایا ہے اور اس نے ہرجے کو بردا کیا ہے اور اس نے اس ارشاد میں اشارہ قربایا ہے اور اس نے ہرجے کو بردا کیا ہے۔

غيان القر ان

مناخر ہوناقد یم کے منافی ہے۔

الله تعالی کاار شاوے: می ہے اللہ جو تمارارب ہے اس کے سواکوئی عبادے کامستی نیں ہے ، وہ ہر چڑکا پیدا کرنے والا ہے 'سوتم ای کی عبادے کامستی نیس ہے ، وہ ہر چڑکا پیدا کرنے والا ہے 'سوتم ای کی عمادت کرداوروہ ہر چڑکا تکہ بان ہے۔ اللافعام: ۱۹۰۲ الله تعالی کے واصد ہوتے پر دلا کل

اس آبت میں اللہ تعالی نے اپنی تو حید کا ذکر فرمایا ہے کہ صرف دی عماوت کا مستحق ہے اور اس کا کوئی شریک نہیں ہے' اللہ تعالی کے واحد موسے نے رحسب ذیل ولا کل ہیں:

ا ہم کتے ہیں کہ تمام کا نات کی تخلیق کے کیے ایک صافع عالم تاور اور در کافی ہے۔ اگر ایک سے زیادہ صافع کی ضرورت ہے تو ہم پوچھتے ہیں 'کتے صافعین کی ضرورت ہے؟ اگر تم تمی مدو کی تخصیص کرو' مثلا تمن یا جار کی تو یہ ترجی باا مرج ہے' کیونکہ تمام اعداد مساوی ہیں اور اگر تم کمی مدد میں صافع کا حصر نہ کرو تو فیر تمانی صافعین کا ہوتا لاؤم آئے گااور یہ براحین ابطال تسلمل سے باطل ہے۔

۱۰ ہم کتے ہیں کہ تمام کا نات کو پیدا کرنے کے لیے ایک صافع کافی ہے ، جو تمام معلومات کاعالم ہواور تمام ممکنات پر قادر اور مرہ ہو۔ اب اگر دو سرا صافع قرض کیا جائے تو یا تو ان دونوں ہیں ہے ہرا یک اس جمان کے حوادث میں ہے کسی چز کو دجود ہیں مانے کا مستقل فاعل ہو گا اور دو سرے کو اس میں داخلت کرنے ہے الفع ہو گا۔ اسی صورت میں کسی چز کو سوجود کرنے کے لیے ان دونوں میں ہے صرف ایک کافی ہو گا اور دو سرا عاجز اور معطل ہو گا اور اگر کسی چز کو سوجود کرنے کے لیے وہ دونوں ایم ان دونوں میں ہے صرف ایک کافی ہو گا اور دو سرا عاجز اور معطل ہو گا اور فر اگر کسی چز کو سوجود کرنے کے لیے وہ دونوں ایم اشتراک اور تعاون کے محلج ہوں تہ یہ باطل ہے "کیو تک جو وہ الوہیت اور خد اتی کی صلاحیت نمیں رکھنا۔

۳- اگر دوخدا قرض کیے جائیں قو ضروری ہے کہ دو دونوں مفات کمل کے جامع ہوں اور اس صورت میں تمام مفات کمال ان دونوں میں مشترک ہوں گی ' مجران دونوں میں انتیاز کے لیے ایک امر ممیز بانابھی ضروری ہے۔ کیو تک تعدد اور افسینیت بلا انتیاز باطل ہے۔ اب ہم ہوچھے ہیں کہ دو امر ممیز صفت کمال ہے یا صفات انتیار باطل ہے۔ اب ہم ہوچھے ہیں کہ دو امر ممیز صفت کمال ہے یا صفات کمال ہے دائے نہ دہ اس محکورونوں تمام صفات کمال کے جامع نہ دہ اس محکوری ہے۔ الاشتراک ہے اب الاشتراک ہے اب الانتیاز نمیں ہے اور اگر دو انتی صفات کمال میں سے ہے ' تو ہیر اب الانتراک ہے باب الانتیاز نمیں ہے اور اگر میں کما۔

۳۰ اگر دو فدا فرض کے جائیں تو دجوب دجود اور قدم ان میں مشترک ہوگا اور کو نکہ انسست بادا اتماز باطل ہے'اس لے ان میں ایک اور کی نکہ انسست بادا اتماز باطل ہے'اس لے ان میں ایک اور ممیز اور ممیز اور جو مرکب ہو'وہ اے اجزاء کامحاج ہو آ ہے اور جو محاج ہو وہ الوہیت کی صلاحیت نمیں رکھتا۔ ہے اور جو محاج ہو وہ الوہیت کی صلاحیت نمیں رکھتا۔

۵- اگر دو خدا فرض کے جائی قراگر ایک معین وقت جی مثلاً ایک خدا ذید کو محرک کرنے کا ارادہ کرے اور دو سرائی کو ساکن کرنے کا ارادہ کرے تو دونوں کا ارادہ پورا ہونا محل ہے اگر تک یہ اجماع ضدین ہے۔ اس صورت جی مرف ایک کا ارادہ پورا ہوگا اور مغلوب الوہیت کی صلاحیت نمیں رکھتا آگر یہ اعتراض کیا جائے کہ وہ پورا ہوگا اور مغلوب الوہیت کی صلاحیت نمیں رکھتا آگر یہ اعتراض کیا جائے کہ وہ دونوں اتعاقی کرلیج جیں اور اختلاف نمیں کرتے تو ہم کہتے جیں کہ ان جی اختلاف کرنا محکن ہے یا نمیں اگر اختلاف کرنا محکن نمیں تو وہ عاج ہوں کے اور عاج الوہیت کی صلاحیت نمیں رکھتا اور اگر اختلاف کر بحتے جیں تو بھروی پہلی تقریر جاری ہوگی۔ نیز بم کہتے جیں کہ وہ عالی کر بحتے جیں تو بھروی پہلی تقریر جاری ہوگی۔ نیز بم کہتے جی کہ کو افتان کر بحتے جیں تو بھروی پہلی تقریر جاری ہوگا ور تابع الوہیت کی صلاحیت نمیں رکھتا۔ اس دلیل کی طرف اللہ تعالی نے اس تمنوں جی اشارہ فریایا ہے۔ الوہیت کی صلاحیت نمیں رکھتا۔ اس دلیل کی طرف اللہ تعالی نے اس تمنوں جی اشارہ فریایا ہے۔

مَّا أَنَّكُ ذَالِلُهُ مِنْ وَلَيْهِ وَمَا كَالَ مُعَهُ مِنْ اللهِ إِذَا لَدَهَبَ كُلُ إِلْهِ يِمَا حَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلَى بَغُضِ سُبُحَانَ اللَّهِ عَنَّا يَصِفُونَ

(المواتسون: ٩)

(الأنبيباء: ۲۲)

لَوْكَادَ مِنْهِمَا لِهَةُ إِلَّالِلَّهُ لَعَسَدَنَا

جودواس كے حفل بيان كرتے ہيں۔ اگر اسالوں اور زمینوں میں اندے موااور معبود ہوتے تو

الشبنة كوئى اولاو تعين بنائى اور نداس كے ساتھ اور كوئى

معبود ہے اور تہ ہر معبود اپنی محکوق کو الگ لے جا آباد رہرا کی

معبودوو مرس مع ظليها أالشران جيرول عصياك أوربالا ترب

خرورودودولول آسان اورزش بتايه ومات-

۲- آگر در خدا ہوں تویا تو وہ صفات ذات ہیں ایک دو سرے کے بانکل مساوی ہوں کے یا ایک اعلیٰ اور دو سرا اوٹی ہوگا۔ پہلی صورت اس لے باطل ہے کہ النینت با اتماز محل ہے اور دو سری صورت اس لیے باطل ہے کہ جو اونیٰ ہو وہ الوہیت ک ملاحيت نهيس دكمتك

٢- أكردو خدا مول توياتوان مي سے براكالي مصوع بر خصوصى دليل قائم كرنے ير قاور موكا ياكوكى قاور نسيس موكا يا مرف ایک قاور ہوگا؟ مو فر الذكر دونوں مور تم اس ليے باطل ميں كه قاور نه ہونا ججز ہے اور عابز الوہيت كى ملاحبت نسيس ر كمتا اور اول الذكر صورت اس في باطل ب كه جب في الواقع ممي معنوع كے ووصائع بوں تو مثل كے زويك يد كال ب ك اس كى دلالت ممى ايك صافع بر مو "نه كه وو مرب يرب مثلا ايك ورفت إلى رباب اب كالجنااس ير دليل ب كه اس كاكونى ہلانے والا ہے 'کیکن مقل کے نزدیک اس پر کوئی دلیل نہیں ہے کہ اس کا بلانے والا فلاں ہے اور فلاں نہیں ہے۔

 ۸- اگر دو فدا اوں تو ہم ہوچھے میں کہ ایک خداائی گلوق کو دو سرے خدا ہے چھپانے پر قاور ہے یا نسمی؟اگر وہ قاور نہ ہو تواس كا ججزان م آئے كا اور أكر ووائي كلوتى كو دو سرے خدا سے جسانے ير تكور موتودو سرے خدا كاجل لازم آئے كا اور نہ عاجز غدا ہونے کی ملاحیت رکھتا ہے اور تہ جاتل۔

 ۹- اگر دو خدا ہوں تو ہم ہو چھتے ہیں کہ ان میں ہے ہرا کے بغیرد و سرے کے تعذون کے مستقل تمام جمان کو پیدا کرنے پر قادر ہے یا نسي؟ أكروه اس ير قادر نسي بي و عاجز بو كا كور عاجز الوبيت كي صلاحيت نسي ركه كد أكر ان بي سے برايد بغيردو سرے ك تعاون کے مستقاستمام جمان کو پیدا کرنے ہے تاور ہے تو دو سرے کاستعمال ہو تالازم آئے گالور اس کو خد امانا عمیث ہو گا۔

١٠٠ جم ركية ين كر تمام جمان كانظام أيك مواور طرز واحدير جل رباب اور جمي اس بن تغير نسي بو آ-مثلاً سورج الهائد اور ستارے بیشہ آیک مخصوص جست سے طلوع ہوتے ہیں اور اس کے مقلل جانب غروب ہوتے ہیں۔ بارش آسان کی جانب ے ہوتی ہے اور غلہ زشن سے پیدا ہو تاہے 'مجھی ہیں کے برنکس نہیں ہو تا۔ انسان کے ہی بیشہ انسان پیدا ہو تاہے' بندریا نگور پدائس ہو آا اور شرکے ہل شرپدا ہو آئے مجھی لومزی پدائس ہو آ۔ سیب کے در فت میں مجھی تربوز نسیں لگا اور محندم کی بالیوں میں مجمعی جوار شیں لگنگ بید ساری کا نتات نظام واحد پر جمل رہی ہے اور اس کا نظام واحد پر جاری ہونا زبان حال ے بتا آئے کہ اس کا ناظم بھی دامد ہے۔ اگر اس کا نکات کے خالق متعدد ہوتے تو اس میں متعدد نظام ہوتے اور ان میں یکسانیت اور وصدت ند ہو تی۔ معترت ایرائیم علیہ السلام نے نمرود کے سامنے ای دلیل کی طرف اشارہ فرمایا تھا۔

مغربے نکال۔

قَالَ إِنْرَاهِيْهُمْ فَيَانَّ اللَّهُ يَهَا يَنِي بِالشَّمْسِ مِنَ ايرابيم ل كماك الله مودج كومثرق مع تكانات واس كو الْعَشِيرِقِ فَأَنِ بِهَا بِنَ الْعَغْيِرِبِ

(السقرد: ۲۵۸)

۱۰ ہم دیکھتے ہیں کہ اس دنیا ہی ہر کثرت کی وصدت کے آباع ہوتی ہے اور ہو کثرت کی وصدت کے آباع نہ ہو آواس کا نظائم
فاسد ہو جاتا ہے۔ مثلاً کلاس میں طلباء کی ایک استاد کے آباع ہوتے ہیں اور جب اسکول میں متعدد استاد ہوں آو وہ کی ہیڈ اسٹر
کے آباع ہوتے ہیں۔ صوبہ میں جب کی وزیر ہوں آوان کے اور وزیر اعلی واحد ہو آئے اور متعدد مرکزی وزراء پر وزیر اعظم واحد
ہو آہے۔ کی ملک میں دویاد شاہ نہیں ہوتے نہ دو صدر ہوتے ہیں نہ دو وزیر اعظم ہوتے ہیں نہ کی فوج کے دو کماعڈر انجیف
ہوتے ہیں نہ کی ادارہ میں دو نیجنگ ڈائر کمٹر ہوتے ہیں۔ ہر شعبہ میں مرکزی اقتدار صرف ایک کے پاس ہوتا ہو آپ اور ہر کثرت
کی وصدت کے آباع ہوتی ہے۔ سوای طرح اس کا نکات کا کار ساز مطلق اور مقدر راحل ہی واحد ہے۔ آگر اس کا نکات کے صافع
اور مدیر ہی دویا دوے زائد ہوتے آباس کا نکام میں فاسد ہو جاتک اور جس طرح کمی مملک کے دوصدر نہیں ہو سے اس کا نکات کے دوصدر نہیں ہو سے اس کا نکات کے مانع

الله تعالی کی و حد انیت پر جو می نے دانا کل چین کے جین 'ان میں سے پکھ دانا کل علاء حققہ مین سے مستقاد ہیں جن ک میں نے اپنے انداز سے تقریر کی ہے 'اور ان میں سے پکھ وانا کل الله تعالی نے میرے ول میں القاء قربائے ہیں۔ ولله المحمد صلی ذالے کے حسد اسکشید ا

الله تعالی کاارشادے: محمیں اس کا حلا شیں کر سکتیں اور وہ جرچے کا احلا کے ہوئے ہے اوہ نمایت بازیک بین اور بہت باخر ہے۔ (الانعام: ۱۹۰۲)

ردیت باری کے معلق فقہاء اسلام کے تظریات

تقریباً ہردور کے علاء اسلام کے درمیان اس مسئلہ جمی اختاف رہا ہے کہ اللہ تعالی کی روے راس کارکھائی رہا) دنیا اور آخرت جمی فمکن ہے یا نہیں۔ بعض علاء نے اس کا افکار کیا اور جمہور علاء اسلام کاموقف ہیہ ہے کہ دنیا اور آخرت جمی اللہ تعالی کی دوجت فمکن ہے اور دنیا جس سے دوجت صرف سید ہاتھ ہوئی اور آخرت جس تمام انہیاء علیم کی دوجت فمکن ہے اور دنیا جس دوجت واقع ہوگی میدان حشر جمی بھی اور جنت جس بھی۔ اسلام اور موہنین کے لیے ہے دوجت واقع ہوگی میدان حشر جمی بھی اور جنت جس بھی۔ مشکرین روجت کے دلا کمل اور این کے جو ایات

معزل اور دیگر منکرین مدیمت کی ایک ولیل ہے کہ جو چیزد کھائی دے 'وہ دیکھنے والے کی مقابل جانب میں ہوتی ہے۔ اگر اللہ تعدالی دے تواس کے لیے ایک جانب اور جمت کا ہو تالازم آئے گا؟ اس کا جواب یہ ہے کہ پھر حمیس چاہیے کہ تم اللہ تعدالی کے دیکھنے کا بھی انگار کر دو 'کیو تک و کھنے والا بھی دکھائی وسے وائی چیز کی جانب مخالف میں ہوتا ہے۔ دو مراجواب یہ ہے کہ دیکھنے اور دکھائی وسے کا یہ تقدم ممکنات اور محلوقات کے انتہار سے ہے۔ اللہ تعالی کے لیے نہیں ہے اللہ تو الی کے ایم نہیں ہے اللہ تو الی کے دیکھنے کے اللہ کی شرط ہے انہ دکھائی دینے کے لیے بانب اور مقابلہ کی شرط ہے انہ دکھائی دینے کے لیے۔

منکرین دون کی دومری دلیل میہ آبت ہے جس کا معنی وہ میہ کرتے ہیں کہ آجھیں اس کو نہیں دکھ شکتیں؟اس کا جو اب
یہ ہے کہ اس آبت کا معنی ہے ہے کہ آتھیں اس کا اصلا نہیں کر سکتیں۔ وہ سرا جو اب یہ ہے کہ اس آبت ہیں سلب عموم اور فنی
شمول ہے۔ عموم السلب اور شمول التفی نہیں ہے۔ لین ہم ہم آتھ کے دیکھنے کی فنی نہیں ہے 'نہ ہم ہم ذمانہ ہیں دیکھنے کی فنی ہے '
نہ ہم ہم مواقع پر دیکھنے کی فنی ہے ' بلکہ بعض ذمانہ ہیں بعض مواقع پر بعض کو گوں کے دیکھنے کی فنی ہے ' موونیا ہیں دیکھنے کی فنی ہے اور کھار اور منافقین اور آثرت کے بعض مواقع ہی جب اور جلل ہی ہوگائی دیکھنے اس کو دیکھنے کی فنی ہے اور کھار اور منافقین کے دیکھنے کی فنی ہے دار کھار اور منافقین کے دیکھنے کی فنی ہے اور کھار اور منافقین کے دیکھنے کی فنی ہے اور کھار اور منافقین کے دیکھنے کی فنی ہے دور کھار اور منافقین کے دیکھنے کی فنی ہے دیکھنے کی فنی ہے۔ دیکھنے کی فنی ہے دیکھنے کی فنی ہے دیکھنے کی فنی ہے دیکھنے کی فنی ہے۔ دیکھنے کی فنی ہے دیکھنے کی دیکھنے کی فنی ہے دیکھنے کی دیکھنے کی دیکھنے کی فنی ہے دیکھنے کی دیکھنے کی دیکھنے کی دیکھنے کی دیکھنے کی دیکھنے کی دیکھنے کے دیکھنے کی دیکھنے کی

اور جملہ مومثین کے دیکھنے کی تغی قبیں ہے۔

متحرین مدے کی تیسری دلیل میہ ہے کہ جن بن امرائیل نے اللہ تعالی کو دیکھنے کامطالبہ کیا تھا' اللہ تعالی نے ان کے اس مطاب كوبد طور فدمت نقل كياب اوراس مطابد يرعذاب نازل كياد

اورجب تم المااے مویٰ اہم آپ م بر کزایان نسیں اللَّهُ جَهْرَةً فَاتَحَذَّتُكُمُ الصَّعِقَةً وَ النَّمُ الأَي عَلَى اللهُ وَمَمُ مَا وَيَ لِي وَمَ كو (كلي ك) ك ك يد يك الورتها مع كور كور بي تهد

وَإِذْ مُلْنَهُمْ يَمُوسِنِي لَنْ تُؤْمِنَ لَكَ حَتَى نَرى تَنْظُرُونَ ٥ (البقره:٥٥)

اس كاجواب، يه ك ان يرعداب تازل كرن كي وجديه ك انمون في صحرت موى عليد السلام يرايمان لاف اوران کی باتوں پر یقین کرنے کو ازراہ متاولوں سر کشی اللہ تعالی کے دیکھنے پر معلق کردیا تھا اس وجہ سے جس کہ وہ اللہ تعالی محبت اور شول کی وجہ سے اللہ تعالی کو دیکمنا جاہتے تھے۔

منكرين دويت كى چونتى وليل يد مديث ب- المام مسلم بن تبليع قصيدى متوفى المهد روايت كرت إلى: مراق بیان کرتے ہیں کہ میں معزت عائشہ صدیقہ ام المومنین رمنی اللہ عنها کے پاس بیٹها ہوا تھا کہ معزت عائشہ نے فرلما اے ابوعاکشرہ جس منس نے تین باتوں جس سے ایک بلت ہمی کی اس نے اللہ تعالی پر بہت براجموث بالد حلد میں نے ہے چھاوہ کون ی ہاتیں ہیں؟ معزت عائشہ نے فرلماجس فض نے یہ زمم کیا کہ سیدنا عجد بھی نے اپنے رب کو دیکھا ہے اس في الله يربه بدا جموت إندها مروق في كما عن فيك لكائ موع تمامي سنبحل كربيت كيا- عن في كماا عدام الموسنين ا جمع مهلت دیں اور جلدی تہ کریں جمیاللہ عزوجل نے بیہ تہیں قرمایا:

وَلَقَدْرًا وَيُوالْأُفُولِ النَّهِيئِينَ ٥٠ (التكوير ٢٣٠) اور ہے ٹیک انسوں کے است روشن کتار سے پر دیکھا۔ وَلَقَدُرْ أَوْسُرُكُو أَخْسُرى (السجم: ١١) اود الكائبول است دو سرى إد خرور ديكما

معزت عائشہ نے قربایا میں است میں دہ سے بہلی منس ہوں جس نے ان آندں کے متعلق رسول اللہ مجھید ے سوال کیا تھا؟ آپ نے فرمایا اس سے مراد حضرت جرائیل میں محضرت جرائیل طبیہ انسلام کوجس صورت پر پیدا کیا گیا میں ال صورت بران كو صرف دوبار و يكما ب- ص في ان كو آسان مه اترت بوع ديكما ان كي هيم خلفت في مسال م زین تک کی جگہ کو بحرایا تعلد معزت عائشہ نے (مسروق سے) فرملا کیا تم نے قرآن مجید کی یہ آیتی نمیں سیں:

لأندركه الأبصاروه ويدرك الأبعسار آتھیں اس کو نہیں دکھے سکتیں اور وہ آتھوں کو دیکمتا (الانعام: ۱۹۳ - ع-

وَمَا كَالَ لِبُشَيراً ثُهِ كَلِمَهُ اللَّهُ إِلَّاوَحُبًّا أَوْ اور كى جرك ائن نيس كروالله عد كام كرے ، حر مِنْ وَرَآنِي حِسَمَانِ أَوْيُرْسِلَ رَسُولُا عَيْورِحِي بِإِذْيهِ وَي ما إِرد الم يَجِيم ما وه كول فرشته بجيج د ما جواس مَايَشَآءُ (الشوري،٥١) ے عم ہے جو یک اللہ چاہے "بہنجادے۔

(سیح مسلم 'ایمان '۲۸۷'(۱۷۷) میح البخاری چ۵ د قم المهاشنده ۲۸۵۵ ۱۳۳۳ سنن الرّزی 'چ۵' د قم المعاشد ۲۸۹۰ ۲۰ مستد احر " جوار تم الهده ١٠٠٠ السن الكيري للنسائي "جوار تم الهده ١٠٠٠)

اس صدیث کاجواب بدے کہ محلبہ کرام رمنی اللہ محتم کااس مسئلہ بی اختلاف تھا، جیساکہ ہم ان شاء اللہ عقریب بیان کریں گے۔ حضرت عائشہ رمنی اللہ عنما اس بات کی کا کل نہیں تھیں کہ رسول اللہ پڑچیں نے شب معراج اللہ تعالی کو دیکھا

تبيان القر أن

ہے الکین وہ آخرت میں روعت باری کا انکار نمیں کرتی تھیں۔ معرت ابن عباس رضی اللہ عنماشب معراج میں اللہ تعالیٰ کے ديدارك قائل يته اورجمور علاء إسلام ان كى مدعث عداستدائل كرية بي- معرت عائشه رسى الله عناف مورة الانعام كى جس ذر بحث آیت سے استدالل کیا ہے اس کا جواب ہم دے مجے ہیں کہ اس کا معنی یہ ہے کہ آتھیں اس کا اعالم نسیس کر سكتين نه بيرك أتحسين اس كامطلقا ادراك شين كرستين.

الله تعالیٰ کے دکھائی دینے کے متعلق قرآن مجید کی آیات

و مروج ہو میں ہوتا ہے ہوں گے اس میں اس کے اس میں ترو آن موں کے اس میں اس کے اپنے رب کی وہدوہ بیوں کے اپنے رب کی

(القيامه: ١٢٠-٢١) طرف ديكية بول ي-

اس آبت من آخرت من الله تعالى ك د كمال دسين كي تصريح به:

كَلْا إِنْهِم عَن زَيْهِم بَوْمَدِيدٍ للمَحْدُونِ بِاللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَن زَيْهِم بَوْمَدِيدٍ للمحدودون بالله الله عندور محروم

(التطفيف: ۵۵ اول کے

اس آیت میں سے بتایا ہے کہ قیامت کے دن کفار اپنے رب کے دیدار سے محردم بوں کے اور یہ جےزان کے لیے ای دائت باحث حمان ویاس ہوگی جب مسلمان اس دن اپنے رب کادید ار کر رہے ہوں ایج نکہ اگر ان کو بھی اللہ تعالی کادید ار عاصل نہ ہو اور نہ کافروں کو او چرہے جزان کے لیے باعث افسوس نسیں ہوگی۔

الحميران كونس وكم عتين-

لَاثُدُرِكُهُ الْأَبْضَارُ (الانعام: ١٩٠٢)

يد آيت الله تعلل ك مرح على إوريد آيت الله تعالى كا مرح على اس وقت او عتى ب جب الله تعالى كاو كعالى دينا ممكن ہو اکیو نکہ ای چیز کی گئی وجہ کمال ہو تی ہے جس کا ثبوت مکن ہو۔ مثلاً ہوا انوشبولور آواز کاد کمائی دینا مکن نسی ہے۔ اس لیے ان کی مرح اور تعریف میں ہے نہیں کما جا آگ ہوا' خوشبواور آواز کو آجمیں نہیں دکھے سکتیں' تو اس آیت میں جو یہ فرایا ہے کہ آ تکھیں اس کو نہیں دکچے سکتیں' یہ اللہ نعانی کی عدح اور تعریف اس دنت ہوگی جب اللہ نعانی کو دیکھنا ممکن ہو۔ سویہ آیت بھی الله تعالى كركمانى دين كى دلى ب:

مویٰ نے وفر کیا'اے میرے رب الجھے اپی ذات رکھا ش تھے دیکھوں۔ غَالَرَبِّ أَرِسِيَّ أَنظُرُ النِّكُ (الاعراف:mr)

اگر ونیا جس الله تعالی کاد کھائی رہامکن نہ ہو آتو حضرت موئ علیہ السلام اللہ تعالی ہے یہ سوال نہ کرتے۔ وَلَكُمْ فِينَهَا مَا نَشْنَهِ فِي أَمْ مُكُمْ وَلَكُمْ الدر تماد على الدر تماد الدر الماد الما تقال المدود إلى الم دل چاہے اور تمہارے کے اس میں جروہ چڑے جس کو تم

مِيْهَامَاتَكُ عُنُونُ O (حم السجده ٢١٥)

طلب كرو محر نیک اور صاف دل لوگ جنت میں اپنیہ تعالیٰ کا دیہ اور طلب کریں سے اور اپنیہ تعالیٰ نے وعدہ فریلیا ہے کہ وہ جنت میں ان کی مرخوامش ہوری فرمائے گائسویہ آیت جنت میں اللہ تعالی کے دکھائی دینے کی ولیل ہے۔ آخرت میں اللہ تعالیٰ کے دکھائی دینے کے متعلق احادیث الم محرين اسائيل بخاري متونى ٢٥١ه روايت كرتي بن

حفرت برار بروز بان کرتے ہیں کہ بم بی معیر کے اس بیٹے ہوئے تھے اچاک آپ نے چود مویں رات کے جاند کی

خبيان القر أن

طرف دیکھا۔ آپ نے فرایا تم عنقریب اپنے رب کو اس طرح دیکھو سے جس طرح اس چاند کو دیکھ دہے ہو۔ تہیں اس کو دیکھنے سے کوئی تکلیف نہیں ہوگی ایس اگر تم یہ کر بیکتے ہوکہ طلوع آفاب سے پہلے نماز پڑھنے سے مغلوب ند ہو اور غروب آفاب سے پہلے نماز پڑھنے سے مغلوب نہ ہو تو اس طرح کرد۔

البوداؤو عما رقم الحديث: مقم الحديث: ١٨٠٠ مقم الحديث ١٣٥١ عـ ١٣٥٥ عمل المسابد ٢١١ (١٣٦٢) ٥٠٠ استن ابوداؤو عما رقم الحديث: ١٦٤٧ سنن الترزي عما رقم الحديث: ٢٥٦٠ سنن كبري للنسائل جها رقم الحديث: ١٣٠٠ سنن ابن ابد عن ارقم الحديث: ١٣٠٠ سنن ابن ابد عن رقم الحديث: ١٣٠٠ سنن ابن ابد عن رقم الحديث: ١٣٠٠ مند احد عن المعاد الحديث ١٣٠٠ مند احد عن المعاد الحديث ١٣٠٠ مند احد المعاد الحديث ١٣٠٠ مند احد المعاد المعاد

الم ابوعيلي محدين عيني ترفري متوفى اعلاء دواعت كرتے بيل

معرت سیب مین بان کرتے میں کہ نی مجیر ناس آیت کی تعلیری فرمایا

لِلَّدِيْنَ أَحْسَمُوا النَّحْسَنَى وَرِبَادَهُ عَلَيْهِ مِن وكون في كام كيان كيا مي جزاء مادر

(يونس: ۲۱) - اس ع مي تاده-

آپ نے قربایا جب جنتی جنت میں داخل ہو جا کیں گے تو ایک متاوی ندا کرے گا گد اللہ کے پاس تساراا کی وعدہ ہے 'وہ
کمیں سے کیااللہ تعالی نے ہمارے چرے سفید نمیں کیے اور ہم کو دو زخ سے نجات نمیں دی اور ہم کو جنت میں داخل نمیں کیا؟
وہ کمیں سے 'کیوں نمیں آپ نے قربایا پھر تجاب کھول دیا جائے گا۔ آپ نے قربایا جنتیوں کے زن یک اس سے زیادہ محبوب کوئی
چیز نمیں ہوگی کہ دواللہ تعالی کی طرف ویکھیں۔

(سنن ترزی) ج۳ رقم الحدیث: ۱۵ میچ مسلم "ایکن"۲۰۴ (۱۸۱) ۱۳۳۲ انسن الکبری للنسائل کنه وقم الحدیث ۱۳۳۳ سنن این باجه کجه اگریث: ۱۸۷ سند احر مجسم ۱۳۳۶-۱۳۳۳ طبع قدیم)

(القيامه: ٢٢٠٢٣) مرف ركع يول 2-

ا مام ترزی نے کمایہ مدیث حسن میم نخریب ہے۔ (سنن الترزی اجس) در آلے الدیث ہوتا) حضرت ابو بھرین عبد اللہ بن قیس اپنے والد ہے روایت کرتے ہیں کہ نبی ہوتی ہے فرمایا دو جنتیں چاندی کی ہیں۔ ان کے برتن اور جو پچند ان میں ہے چاندی کا ہے 'اور دو جنتیں سونے کی ہیں۔ ان کے برتن اور جو پچند ان میں ہے 'سونے کا ہے' اور ان نوگوں اور ان کے رب کے دیدار میں صرف اللہ کی کیریائی کی چاور ہے جو جنت عدن میں اس کے چرے یہ ہے۔

(صحح مسلم 'ايمان' ۲۹۱' (۱۸۰۰) ۱۳۳۱ صحح البخاري " يه " رقم الحديث ۲۸۱۸ سنن الرّزي " ج۳ و قم الحديث ۲۵۳۱ المسنن الكبرئ طلسائی " ج۳ و قم الحديث: ۲۵۳۱ مند احر " ج۳ و قم المديث: ۲۵۳۱ مند احر " ج۳ و قم المديث: ۲۵۳۱ مند احر " ج۳ و قم المديث به ۲۰۰۰ وقم الحديث: ۲۵۳۱ مند احر " ج۳ و قم

الهن ۱۸۳۲ مع بدید اسد احد عن مه ۱۳۳۵ ۱۳۳۵ مع قدیم المتدرک عن م ۱۸۰۸ شب معراج الله تعالی کے دید ارکے متعلق علاء امت کے نظریات

علامه ابوانعباس احد بن عمرين ابرابيم ماكلي قرطبي متوفى ١٥٦٥ ومج مسلم كي شرح من لكيمة بن :

الم ابوعبدالله محمين احر مالكي قرطبي مالكي متوفي ١٩١٨ مد كلين بين:

عبد الله بن الحفرث نے بیان کیا کہ حضرت ابن عباس اور حضرت ابی بن کعب رضی الله عنم کی ملاقات ہوئی۔ حضرت ابن عباس نے کہا ہم بنوباہم ہیں گئے بیل کہ سیدنا مجد برجیج نے اپ دب کو دو عرب و کھا ہے۔ پھر حضرت ابن عباس نے کہا کیا تم اس پر تجب کرتے ہو کہ فلت حضرت ابن عباس نے کہا گئے ہو ہی جو پھر حضرت ابی بن کعب نے بعد اور دیدار سیدنا مجد برجیج کے بود پھر حضرت ابی بن کعب نے بعدت بلند آوازے کہا الله اکبرا حتی کہ مہاڑ گونج المصر پر حضرت ابن عباس نے کہا الله تعالی نے دویت اور کلام کو سیدنا محد ملی الله تعالی علیہ و سلم اور حضرت موٹ علی نبینا و علیہ انسلام کے در میان تقسیم کر دیا ہے۔ اور الم عبدالرزاتی نے روایت کیا ہے کہ حسن بھری الله کی حمل کر سے تھے کہ سیدنا محد برجیج نے اپ درب کو دیکھا ہے اور ابو مجم العلمندی نے اس قول کو حضرت ابن مسودے بھی دوایت کیا ہے اور بسم مختلفین نے اس قول کو حضرت ابن مسودے بھی دوایت کیا ہے اور بسم العلمندی نے اس قول کو حضرت ابن مسودے بھی دوایت کیا ہے اور ابام ابن اسحانی نے دوایت کیا ہے کہ مہان نے حضرت ابن حضرت ابن عباس کی حدیث و دیکھا ہے انہوں نے کہا بی الور خاتی نے الم ابن اسحانی کہا کہا الور خاتی نے الم ابن اسحانی کہا ہی انہوں نے کہا جی دوایت کیا ہے انہوں نے کہا بی الور خاتی نے الم ابن اسحانی کہ دسمان کہ دیکھا ہے۔

وہ بار بار کتے رہے کہ آپ نے اپنی آئی تھوں ہے اپ ور کھاہ حی کہ اہم احد کامانس منقطع ہو گیا۔ شخ ابوالحس اشعری اور ان کے اصحاب کا بھی یکی نظریہ ہے کہ سیدہ کھی بیٹی نے اللہ تعالی کو اپنے سرکی آئی کھوں ہے دیکھا ہے۔ معزت انس معظم عباس عرب کی نظریہ ہے۔ اہم ابوالعالیہ تر تی اور رہے بن انس کا یہ تول ہے کہ انس معظم کی نظریہ ہے۔ اہم ابوالعالیہ تر تی اور رہے بن انس کا یہ تول ہے کہ آپ نظریہ ہے۔ اہم ابوالعالیہ تر تی اور رہے بن انس کا یہ تول ہے کہ آپ نظریہ ہے۔ اہم ابوالعالیہ تر تی اور رہے بن انس کا یہ تول ہے کہ آپ نے اپنے دب کو اپنے دل ہے دیکھا ہے۔ معزمت ابن میاس اور عکرمہ سے بھی یہ تول منقول ہے۔ علامہ ابن عبد البرنے اس میں اس میں انس نے کہا کہ اللہ تعالی باتی انس میں دکھائی دیا تھوں کی دیا تھوں کی دیا ہے تو ان کو باتی رہنے وال آ تحمیس دی ہے اور فانی آ تھوں سے باتی کو نمیں دیکھا جا سکی اور جب مسلمان آخرت میں پہنچیں کے تو ان کو باتی رہنے وال آ تحمیس دی

جائم گی و پھر اتن آ تھوں سے باتن ذات کو دیکے لیں گ۔ قامنی عماض نے کہا ہے محدہ کلام ہے۔ اس دلیل کابیہ مطلب نہیں ہے کہ اللہ تعالیٰ کو دیکھنا تھال ہے 'بلکہ اس کامعنی ہیہ ہے کہ دیکھنے والوں کی اس دنیا میں قدرت ضعیف ہے اور اللہ تعالیٰ اپنے بندوں میں سے جس کو چاہے ' اتنی قدرت مطافر ہادے کہ وہ اللہ تعالیٰ کی رویت میں ۔

منت نيس ب- (الجامع لاحكام القرآن 22 من عده الا مطور داد الفكو كيوت كاعلم

حضرت عائشہ رمنی اللہ عنما کے انکار رویت کے جوابات علامہ بخیٰ بن شرف نودی متونی اعلامہ معے مسلم کی شرح می تصبح میں

فلاصد بیہ کہ اکثر علاء کے نزدیک وائے یہ بحک و سول اللہ بھیجا ہے شب معراج مرکی آگھوں سے اپنے وب کو دیکھاہ کیے نکہ اس کو حضرت ابن عباس و منی اللہ ختمانے بیان کیا ہے اور یہ انہوں نے صرف و سول اللہ بھیجا ہے من کری بیان کیا ہے۔ حضرت عائشہ کا استدالل صرف آندوں ہے ہو اپن سور ۃ الانعام کی آعت ۱۹۳۳ کا بجواب یہ ہے کہ اس آعت میں ادر اک بہ طور اصلا کی نئی ہے اور سور ہ شور کی گی آعت اف سے جو انہوں نے استدالل کیا ہے اس کا بجواب یہ ہے کہ اس آعت میں اللہ تعدالی کیا جائس کا بجواب یہ ہے کہ اس آعت میں اللہ تعدالی کی باہ مجلب دورت کی نئی نہیں ہے ، اگلہ بلا تجاب کلام کی نئی ہے اور دورت کلام کی نئی ہے اور دور اور در اس کے اور دور اس کے دورت کلام نہ کیا ہو۔ دو سم اجواب یہ ہے کہ اس آعت می عام قاعدہ بیان کر آپ نے صرف اللہ تعدالی کا دیدار کیا ہو اور دور اس کے دورت کلام نہ کیا ہو۔ دو سم اجواب یہ ہے کہ اس آعت می عام قاعدہ بیان کر آپ اور عام مخصوص اور مستنی ہیں۔ کہا ہے اور عام مخصوص اور مستنی میں معرب انودی تی تاہدے کی سلم و کھوں کیا کہا ہو کہا ہو انودی ان عام محصوص اور مستنی میں۔ کہا ہو کہا کہا ہو کہ کہا ہو ک

المند تعالی کا ارشادے: بے شک تسارے ہی تمسارے دب کی طرف سے نشانیاں آئٹیں موجس نے آنکھیں کول کردیکھاتواس کافائدہ ہے اور جواندھا بنار ہاتواس کا نقصان ہے میں تسارا تکسیان نہیں ہوں۔ الانعام: ۱۹۳۰) کیا چیز رسول اللہ بچھ کے ذمہ ہے اور کیا چیز آپ کے ذمہ نہیں ہے!

بعض مضرین نے کماکہ اس آیت میں اُکان لائے یا نہ لانے کا جو افتیار دیا ہے وہ قبال اور جداد کی جنوں سے منسوخ ہوگی۔ یہ قول معج نسیں ہے ' جماں تک ممکن ہو آیات کو عدم شخ پر محمول کرنا جا ہیے اور جماد اور قبال کے بعد بھی ایمان کالانایا نہ مانا انسان کے اسنے افتیار میں ہو تا ہے۔

الله تعالی کاار شاوے: ہم بار بار مختف اندازے آنوں کو بیان کرتے ہیں آنکہ یہ نوگ کمیں کہ آپ نے (ممی سے) پر حاہ اور آنکہ ہم اس قرآن کو علم والوں کے لیے بیان کرویں ۱ الانعام:۵۰۱

سیدنامحمہ بڑپر کی نبوت پر کفار کاشبہ

کفاد کے اس شبہ کا بیان اللہ تعالی نے اور بھی کی آیات میں کیا ہے۔

وَقَالَ الَّذِينَ كَمَرُوا إِنَّ هُدَّ الِآلُوكُ الْمَتَرَّ الْمُوَالَّ الْمُدَّالُولُكُ الْمُتَرِّ الْمُورَّ أَعْنَالُهُ عَلَيْهِ قَنُومٌ الْحُرُولَ فَفَدُ جَاءً وَ اطْلَمَّا وَرُورُا ٥ وَقَالُوا السَّاطِئِرُ الْأَوْلِيثِلَ الْكُنْفَيْنَ الْمَيْفِي فَيْفَ وُرُورُا ٥ وَقَالُوا السَّاطِئِرُ الْأَوْلِيثِلَ الْكُنْفَيْنَ الْمُتَافِيةِ الْمُهْتَى

نُمْلَى عَلَيْهِ بُكُرَةٌ وَالصِيلًا (العرفان ٥٠٠)

اور کافروں نے کمایہ (قرآن) صرف بنتان ہے جس کو اس دسول نے گرنیا ہے اور اس کاتم پر دو سمرے نو کوں ئے ان کی مرد کی ہے (یہ کمہ کر) انہوں نے بہت بڑا ظلم کیا اور انہوں نے کمایہ پہلے لوگوں کے (جموشے) تھے جس جو اس (رسول) نے الکھوالے ہیں۔ مودہ می شام ان پر چرہے جاتے ہیں۔ اور ب شک ہم جانے ہیں کہ وہ یہ کتے ہیں کہ انہیں یہ قرآن ایک آدی محما آہے ' حالا نکہ جس کی طرف یہ (سممانے کی) جمو ٹی نسبت کرتے ہیں اس کی زبان مجمی ہے اور یہ قرآن نمایت روش عراج۔

وَلَفَدْدَهُلُمُ اللَّهُمُ يَقُولُولَ إِلَّمَا يُعَلِّمُ النَّكُمُ النَّكُمُ لِللَّهُ النَّكُمُ لِللَّهُ النَّكُمُ لِللَّهُ اللَّهُ النَّكُمُ النَّهُ النَّكُمُ النَّهُ اللَّهُ اللْلِلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللِّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللِّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

ان ك اس شير كا قرآن مجيد في متحدد بارجواب ديا به أكر تماد به زعم من بيداند تعالى كا كلام نبين به اور كسى اندان كابنا بوا يا سكم الله تعالى كا كلام نبين به اور كسى اندان كابنا بوا يا سكما بابوا كلام به قرقم اس كى كمى جمونى مورت كى تى مثل بناكر في آؤ الكين ان جي سه كوكى بحى اس كى كسى ايك سورت كى بحى نظير نبين لا سكا

الله تعالی کاار شاوہ: آپاں چرکی بیروی بیج جس کی آپ کے رب کی جانب ہے آپ کی طرف و تی کی گئے ہے' اس کے سواکوئی عملوت کا مستحق نسیں ہے اور مشرکیوں سے اعراض کیجئے۔ (الانوام:۱۳۹۱) کفار کی ول آزار ہاتوں پر نمی پڑچ کو نسلی دینا

اس ہے پہلی آعت میں بہتا ہا تھا کہ گذر آپ ہے بہتان بادھتے ہیں کہ آپ نے کھے علاء ہے کہ مضامین کے لیے ہیں اور ان کو آپ الفاظ می ڈھل کے ہیں اور ان کو آپ الفاظ می ڈھل کر چیں اور ان کو اللہ تعلی خیر آپ کے بعد اللہ تعلی نے ہیں تازل فرائی کہ آپ آپ الفاظ می ڈھل کر چیں اور ان کی اور کی جروی کیجے آپ کی اور کہنے ہیں آپ کی دعو ہتا ور آبانی متاثر نہ اور اس آجت ہے مصوویہ ہے کہ ان کے اس شک و شہور و طعن و تشنیع ہے جو آپ کو حزن و طال اوا ہے 'وہ ذا کل معاشر نہ اور آپ کو حزن و طال اوا ہے 'وہ ذا کل اور آپ کے دل کو تقویت حاصل اور بھر فرالمائی سواکوئی عملے ہی کہ متاثر نہ اور قربی اور قربی امر کین ہے کہ آپ مرف اس کی اطامت کیجے اور جالوں کی جمالت کی وجہ ہے اپ مشن کو متاثر نہ اور قربی اور قربی امر کین ہے امراض کیجے علامہ قربی نے فکھا ہے کہ ہے آپ آیت الل ہے مشوع ہے۔ لیکن یہ قول ضعیف ہے 'اس کا معنی یہ نسی ہے امراض کریں اور ان پر فم اور افروس نہ کریں ' بلکہ اس کا معنی یہ ہے کہ ان کی دل آزار باتوں ہے اعراض کریں اور ان پر فم اور افروس نہ کریں ' بلکہ اس کا معنی یہ ہے کہ ان کی دل آزار باتوں ہے اعراض کریں اور ان پر فم اور افروس نہ کریں ' بلکہ اس کا معنی یہ ہو۔

الله تعالى كاار شاوى: اور أكر الله جابتاتوده شرك ندك اور ايم في آب كوان كا تكمبان ليس منايا اور ند آب ان ك دمددار بيس-(الانعام: ١٠٠٠)

اس آیت کا تعلق بھی ای سابق طعن ہے مشرکین نے دسول اللہ باللہ اور سے کما تھا کہ آپ نے علاء ہے ذاکرات کر کے یہ قرآن بتالیا ہے قوگویا اللہ تعلق نے قرایا آپ ان کی ان جالانہ اور سعائد انہ باؤں کی طرف توجہ نہ کریں اور ان کا کفر آپ پر بوجہ در ہے گیو تکہ آگر میں ان ہے کفرزا کل کرنے کا اوادہ کر آتو میں اس پر تھور تھا گین میں نے باوجود قدرت کے ان کو ان کے کفرر چھو ڈویا تو آپ بھی ان کی طعن آمیزیاتوں ہے آپ دل پر اثر نہ لیں اس کے بعد اللہ تعالی نے اس کلام کو موکد کرنے کے کفرر چھو ڈویا تو آپ بھی ان کی طعن آمیزیاتوں ہے آپ دل پر اثر نہ لیں اس کے بعد اللہ تعالی نے اس کلام کو موکد کرنے کے کئر پر چھو ڈویا تو آپ کے کفری وجہ ہے کیول پر جان ہو تھیں۔ آپ کو ان کا تکہان اور ذمہ دار نہیں بتایا 'آپ کے ذمہ صرف مقائد کی تعلیم دیا ہے اور ادکام شرعیہ کا بہنچاریا ہے۔ آگر انہوں نے آپ کے بیغام کو قبول کر لیاتو اس کا نفر ان کو بوگا اور آپ کے منصب دسالت پر کوئی اثر نہیں بوگا۔ اور آگر آپ سے ہیغام کو قبول نہیں کیاتو اس کا ضرد بھی صرف ان کو بوگا اور آپ کے منصب دسالت پر کوئی اثر نہیں بوگا۔ اور آگر آپ سے پیغام کو قبول نہیں کیاتو اس کا ضرد بھی صرف ان کو برؤنہ کو جن کی بید اللہ کو چھو ڈکر عبادے کرتے ہیں 'ورنہ بید بنی اللہ کو چھو ڈکر عبادے کرتے ہیں 'ورنہ بید بنی اللہ کو چھو ڈکر عبادے کرتے ہیں 'ورنہ بید بند اللہ تو اللہ کا ارشاد ہے ۔ اور (اے مسلمانوا) تم ان کو برؤنہ کو جن کی بید اللہ کو چھو ڈکر عبادے کرتے ہیں 'ورنہ بید بند اللہ تو اللہ کا ارشاد ہے ۔ اور (اے مسلمانوا) تم ان کو برؤنہ کو جن کی بید اللہ کو چھو ڈکر عبادے کرتے ہیں 'ورنہ بید بند کیا کہ کو بیات کرتے ہیں 'ورنہ بید بند کو بیا کہ کو بھو ڈکر عبادے کرتے ہیں 'ورنہ بید بند کیا کہ کو بیات کے دور اسے مسلمانو کی کو برؤنہ کو جن کی بید اللہ کو چھو ڈکر عبادے کرتے ہیں 'ورنہ بیات کو برؤنہ کو برؤنہ کی بید ان کو برؤنہ کی بید کیا گور کیا کہ کو بھو ڈکر عبادے کرتے ہیں 'ور اسے مسلمانو کا کو برؤنہ کی بیا کہ کو بی کی بید کیا کہ کو بیات کی بیات کی بیات کو بیات کو بیات کی بیات کی بید کی بید کی بیات کی بیات کی بیات کی بیات کی بیات کو بیات کی بیات کی بیات کی بیات کو بیات کو بیات کی بیات کو بیات کی بیات کی بیات کی بیات کی بیات کو بیات کی بیات کی بیات کی بیات کی بیات کی

علی اور جمات سے اللہ کو پراکس مے۔ ہم نے اس طرح ہرقوم کے لیے اس کاعمل مزین کردیا ہے 'پر انہوں نے اپنے رب کی طرف لوٹنا ہے۔ پھروہ ان کو خبردے گاکہ وہ کمیا کرتے رہے تھے۔(الانعام: ۱۰۸) رسول اللہ بیجینے کے ساتھ معاملہ کرنا اللہ تعالی کے ساتھ معاملہ ہے

اس آیت کابھی اس مابق آیت کے ماتھ دویا ہے جس می افلہ تعالی نے کفار کابے شہ بیان فرایا تھاکہ انہوں نے اہل عظم کی باتیں من من کر فقرے بدالے ہیں اور یہ قرآن جع کر ایا ہے اور اس وقت یہ بعید نسیس تھاکہ مسلمان اس بات کو من کر مختصل ہوئے اور باخور معارضہ کے اکفار کے بتوں کو یرا کہتے اس لیے بیش بندی کے طور پر افلہ تعالی نے مسلمانوں کو کفار کے بتوں کو یرا کہتے ہے مسلمانوں کے فار کے بتوں کو یرا کہتے ہے مسلمانوں کے فداکو یرانہ کھنے تھیں۔ اس سے یہ معلوم یرا کہتے ہے مسلمانوں کے فداکو یرانہ کئے تھیں۔ اس سے یہ معلوم ہواکہ جب میں جات ہے میں معلوم ہواکہ جب میں جات ہے گئے۔

الم ابوجعفر ہے بن جربر طبری متونی ماسد اپنی سندے ساتھ دوایت کرتے ہیں:

الله بیان کرتے ہیں کہ مسلمان کفار کے بیوں کو برا کہتے تھے او کفار اس کامعار ضد کرنے کے لیے اللہ تعالی کو برا کہتے تھے تو اللہ تعالی نے مسلمانوں کو منع قربایا تم ان کے بیوں کو برانہ کمو ور نہ وہ اپنی جمالت سے تسارے خدا کو برا کہیں گے۔

(جامع البيان " بزے " ص ۲۰۰۳ مطبوعد داو الفكو " بيرو ت " ۱۳۱۵ هـ)

اس روایت پر بید اعتراض ہو آئے کہ کنار مکہ نور قریش اللہ تعانی کو مائے تھے اور اس کی تعظیم کرتے تھے اور بڑوں کی عماوت بھی اس نے کرتے تھے کہ وہ اللہ تعانی کی بار گاہ میں ان کی شفاعت کریں 'قوان ہے بیہ کس طرح متصور ہے کہ وہ اللہ کو برا سمجتے۔

اس کا جواب میہ ہے کہ جب مسلمان جوں کو ہرا کہتے تھے تو در اصل کفار اس کے جواب میں رسول اللہ بھیر کو ہرا کہتے ہے اللہ تعالی نے اور اصل کفار اس کے جواب میں رسول اللہ بھیر کو ہرا کہتا ہے اللہ تعالی کے بائب مطلق میں اور دسول اللہ بھیر کے ساتھ کوئی مصللہ کرنا اللہ تعالی کے ساتھ کوئی مصللہ کرنا اللہ تعالی کے ساتھ کوئی مصللہ کرنا اللہ تعالی کے ساتھ معالمہ کرنا ہے 'جیساکہ قرآن مجید میں ہے:

إِنَّ اللَّذِيْنَ أَيْبَابِعُونَكَ إِنْكَا يُبَابِعُونَ اللَّهَ ﴾ فك هو لوگ آپ سے بيعت كرتے بين وه ور اصل (الفسع: ۱۰۰) الله عند كرتے بين۔

ای طرح جب سر انسار نے مقبہ ٹانے کے موقع پر رسول اللہ موجع سے عرض کیا جب ہم اپنی جانوں اور مالوں کو آپ کی اماعت میں شرج کریں تو ہمیں اس کے عوض کیا نے گا؟ آپ نے قربلا جنت تو یہ آیت نازل ہو گی:

ے لک اللہ عملانوں سے ان کی جانوں اور مادس کو

بند كيدل في قيدلا-

ہے شک جو لوگ اللہ اور اس کے رسول کو ایڈ او پہنچا تے میں 'اللہ نے ان پر دنیااور آ فرت میں لعنت قرمائی ہے۔ اَنَّ اللَّهُ اشْتَرَى مِنَ الْمُوْمِنِيْنَ اَنْفَسَهُمْ وَ الْمُومِنِيْنَ اَنْفَسَهُمْ وَ الْمُوالَهُ مُرالَهُمُ اللَّهُ النَّهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي اللَّائَبُ وَالنَّهُ مَدُابًا مُهِبُنًا فِي اللَّائُبُ وَالْمُحْرَةِ وَاعْدَلْهُمْ عَدَابًا مُهِبُنًا فِي اللَّائُبُا وَالْأَحْرَةِ وَاعْدَلْهُمْ عَدَابًا مُهِبُنًا

(الاحزاب، عه) الله تعالى كوايزا كانجلنا متصور لمي ب وراصل رسول الله يجزير كوايزا ويناى الله تعالى كوايزا ويناب -يُعَلِّدِ عُونَ الله وَاللهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاور مَعْمَانُون كود هو كدوية بين ي

وہ اللہ تعالی کو مائے تھے ان کا بخشاف صرف رسول اللہ میں ہے تھا۔ ان کے نزدیک بھی بھٹہ تعالی کو دھو کا رہنا ممکن نہ

طِيئانُ القر أنْ

قائوه این زم می رسول الله علیم کودهو کادیت شخص کین الله تعالی نے بیا کا بر فرمایا که رسول الله کودهو کادینا الله تعالی کو دهو کا استاہے:

جس نے رسول کی اظاعت کی اس نے اللہ کی اطاعت کر

مَنْ يُعطِيعِ الرَّسُولَ فَفَدْ اطَاعَ اللَّهَ

(النساء: ۸۰) أن

ان آیات ہے واضح ہو گیاکہ رمول انڈ رہیں ہے بیت کرنا انڈ توالی ہے بیعت کرنا ہے۔ آپ کا قرید نا انڈ کا قرید ناہے 'آپ کو ایڈ اور نا انڈ کو ایڈ اور تا ہے 'آپ کو دھو کلونا انڈ کو دھو کلونا ہے اور آپ کی اطاعت کرنا انڈ کی اطاعت کرنا ہے اور جب آپ کے ساتھ کوئی معالمہ انڈ کے ساتھ معالمہ ہو آہے تو آپ کو پر اکستانڈ کو پر اکستا ہے۔ اس لیے بتوں کو پر اکسنے کے جو اب بھی کفار رسول انڈ مرجیج کو پر اکستے تو انڈ تعالی نے مسلمانوں ہے قربایا تم ان کے بتوں کو پر انہ کموود تہ وہ انڈ کو پر اکسی سے۔

الم ابن جرير متوفى اسور اور ديكر مفرين في اس آيت ك شان نزول على اس روايت كالجي ذكركيا ب-

جب ابوطالب کی موت کادفت آیا تو ترکش نے کہان کے باس چلواور ان ہے کمو کہ وہ اپنے بیجیے کو متع کریں آئی کہ اس ہے حیا آئی ہے کہ ان کی موت کے بعد ہم ان کے بیجیے کو قل کروی۔ تو اوگ کیس کے کہ وہ اپنے بیجیے کا وفاع کرتے ہے اور ان کے مونے کے بعد انہوں نے ان کے بیجیے کو قل کر دیا۔ تب ابو سفیان ابو جسل انہوں ہی افحارث المہ بن وفات اس کی جب اجازت ل گئی تو انہوں نے کہا اے ابوطالب تم ہمارے برے اور ہمارے موازی ہو اور (سید تا) مجمد جیجیے ہی گئی تو انہوں نے ایک آور ہمارے خوازی کو انہا ہم انہوں نے کہا اے ابوطالب تم ہمارے برے اور ہمارے موازی کا وارت کی تو اور اس کا کہا کہ اس کا تو انہوں کے ابوطالب نے آپ کہا ہمارے کہ تو اور ہمارے کو اور اس کا تو ہمارے فوازی کو انہ کہ جب ابولا ہو کہ تم ہمارے ہو اور اس کا کہا کہ اس کا تو ہمارے فوازی کو انہ کہا ہمارے کہ تو اور کہا ہم کہ ابوطالب نے آپ کہا ہمارے کہ تو اور کہا ہم کہ ابوطالب نے آپ کہا ہمارے کہا کہ تو اور کہا ہم ہم تم کو کو مورورہ کو اور کہا ہم کہا کہ تو اور کہا ہم ہم تم کو کو مورورہ کو کہا ہمارے کہارے کہا ہمارے کہا ہمارے کہا ہمارے کہا ہمارے کہا ہمارے کہا ہمارے کہارے کہا ہمارے کہا ہمارے کہارے کہا ہمارے کہارے کہا ہمارے کہارے کہا ہمارے کہارے کہ

(جامع البيان ويزع م ٢٠٠٣ تغيرامام ابن الي ماتم ع ٢٠٠٥ م ١٣٠١ تغيرا بن كثير ع ٢٠٠ م ٥١-٨٥)

سد ذرائع کی بناء پر بتوں کو پر ایسنے کی ممانعت

علامد ابوعبدالله تحرين احمد مالكي قرطبي متوفي ١٧٨ مد لكسية بين:

اس آیت میں کفار کے خداؤں کو برا کہنے ہے منع قربایا ہے۔ علاہ نے کما ہے کہ یہ تھم اس امریہ میں ہر طال میں باتی ہے النظام بھی اللہ عزوجل کو برا کے گان تو کسی مسلمان کے لئذا جب تک کافرائی تفاظت میں ہو اور یہ خدشہ ہو کہ وہ اسلام کو یا نبی ہو چیج کو یا اللہ عزوجل کو برا کے گان تو کسی مسلمان کے لیے یہ جائز نمیں ہے کہ وہ ان کی صلیب کو یا ان سے وہ ان کی عبادت گاہوں کو برا کیے اور نہ کسی ایسے کام کے در ہے ہو جس کی وجہ سے وہ اللہ تو تو اللہ میں ہو یہ کو براکس کے تکہ یہ معصیت پر ابھار نے کے قائم مقام ہے۔

اس آیت عی بدولیل بھی ہے کہ جو کام کمی رائی کا ذرایع سیے اس کو روکنالور اس کانہ کرناواجہ ہے اور اس عی بہی دلیل ہے کہ بھی اس کا حق وصول کرنے سے اس لیے روک رواجا آہے کہ اس کی وجہ سے دین جس کمی مشرر کے وقتے کا خطرہ ہو تاہے۔ ملامہ این العملی سے کہا ہے کہ اگر حق واجب ہوتھ اس کو جرحال جی وصول کرے اور اگر جائز ہو تو بھراس میں وصول کرے اور اگر جائز ہو تو بھراس میں بیر قول ہے۔

الله تعافی کے فریا ہم ہے اس طرح ہرقوم کے لیے اس کا عمل مزین کردیا ہے۔ صفرت ابن عباس رضی اللہ مختمانے فریا اس کا معنی ہے کہ ہم نے اطاعت گزاروں کے لیے اطاعت کو مزین کردیا ہے اور کا فروں کے بیدے کفر کو مزین کردیا ہے۔ اور کا معنی ہے کہ اگر ان کے پاس کوئی نشانی آگئی قو وہ ضرور اس پر ایمان الشد نقالی کا ارشاد ہے: اور انہوں نے کی تشمیس کھائیں کہ اگر ان کے پاس کوئی نشانی آگئی قو وہ ضرور اس پر ایمان الائم کے 'آپ کئے کہ فشانیاں قو صرف اللہ کے پائن جی اور (اے مسلمانوا) تمہیس کیا معلوم کہ جب پر نشانیاں آجائیں گی قوید

لوگ ہر ہمی ایمان نسیں فائیں محمہ الانعام: ۱۰۰۹ فرمائشی معجزات نہ و کھانے کی وجہ

اس سے بہلی آغوں میں اللہ تعلق نے كفار كمد كائي عظير كى نوت ميں أيك ثبر بيان كيا ، مجراس كے جوابات دست اور اس ميں آپ كى نوت ميں ان كادو مراشر بيان فرايا ہے۔

الم ايوجعفر هدين يريو طري حوالي والعد روايد كرتي إلى:

عمن کمپ قرقی بیان کرتے ہیں کہ قریش نے وسول اللہ چھھ ہے کہا اے اور آپ ہمیں یہ فرویتے ہیں کہ حضرت مون کے ہاں ایک لا علی تقی جس کے انہوں نے بقرد ماراتو اس ہے ہارہ چھٹے ہوٹ چے اور آپ فرویتے ہیں کہ حضرت اسلیٰ مودل کو ذارہ کرتے تھے اور آپ فرویتے ہیں کہ عمود کے ہاں ایک او ختی تھی تو آپ بھی ان مجرات میں ہے کہی مجرد چین کریں ' آگ کہ ہم آپ کی تصدیق کریں۔ نی بھی ہے جا کہا ہم کیا جا ہے ہو کہ میں کس تم کا مجرد کہاؤں؟ انہوں نے کہا آپ ہمازے کے جا کہا آپ ہمازے کے جا کہ انہوں نے کہا آپ ہمازے کے مقامیاتر موسے کا بیادی ہے۔ آپ نے وجیااگر میں نے ایمائر کریا تھر بی کردیگرا کیل طید الرام یہ فدا آگر آپ نے ایمائر کریا ہو جا کے گاور آگر یہ مجرد چین کردیا کیا اور سے ہمری تقد وی کردیا کیا اور سے ہمری تقد وی کردیا کیا اور سے ایمائر کی ایمان کی جا کہ اور اگر آپ جا ہیں تو بھو وہ وہ سے گالور آگر یہ مجرد ہی کہ دورانے کی تو ہم تو اس سے کو عذاب دیں گے اور اگر آپ جا ہیں تو آپ ان کو چھو وہ دیں ' حق کہ ان میں ہے تو ہہ کرنے آب ایمان کی جو تو جس کری جا گالور آگر یہ جا کہ ایمان کی جا کہ ان کی تو ہم تھراں گرا جا گالے گال کرنے جا ہے گالور آگر یہ جا کہ ان میں ہے تو ہہ کرنے والے کی تو ہم تھرل کرنی جائے گالے میں ان میں کو عذاب دیں گرائے گالے گال کرنی جائے گالے در اگر ایمان کرنے آب ان میں ہے تو ہہ کرنے والے کی تو ہم تھرل کرنی جائے گالے تب اللہ کے تو ہم ان میں کے خوالے گالے در اللے کی تو ہم تھرل کرنی جائے گالے در اللے گالے در اللے گالے۔ (جائم المبیان 'جرے میں ہو میں ہو کہ کا ان میں ہے تو ہم کرنے کا معرب کرنے جائے گالے۔ (جائم المبیان 'جرے کہ میں ہو میں کرنے کا کہ کرنے گالے کرنے کا کہ کرنے گالے کرنے کا کہ کرنے گالے کرنے گالے کرنے کیا گالے گالے گالے کرنے گالے

افتہ تعالی کا رشاوہ: ہم ان کے ولوں اور م تھموں کو پھیردہ ہیں جس طرح یہ لوگ اس قرآن پر پہلی بار ایمان شیں لائے تجداور ہم ان کو ان کی سر کئی ہی بھیکا ہوا چیو ژرہے ہیں۔(الاندام: ۱۸) جب اللہ نے کفار کے ولوں کو چھیرویا تو ان کا کفر میں کیا تصور ہے؟

یہ آبت ہی ان آبات میں سے ایک ہے جو اس پر دالات کرتی ہیں کہ کفر اور ایمان کا تعلق اللہ تعالی کا فغاءِ قدر سے سے۔اس آبت کا معنی بید ہے کہ جب کفار کے ظلب کردہ مجرات پیش کردہ یے گئے اور کفار کو بتا جل کیا کہ یہ مجرات میدنا محمد میں اللہ سے دولوں اور آ کھوں کو اس محج والانت سے بچر میں اقوام کے دولوں اور آ کھوں کو اس محج والانت سے بچر ریا تو دوائے کفرر قائم دہ اور ان مجرات کی والانت سے فائدہ نسمی افواسے کفرر قائم دہ اور ان مجرات کی والانت سے فائدہ نسمی افواسے۔

غيبان القر ان

علدسوم

اس جكدب سوال وارد يو تاب كديب الله تعالى في ان كوليل اور الحمول كوسيائي برايت اور اسادم ك راو ي ميروا او بران ك ايمان نه المساعل ان كالياضور ٢٠١٠ كايواب يه كري كديل إرب ان كافرائش مجره وكماياكيا لور جاند کوشن کردیا کمیااور وہ میر بھی ایمان شیس السے تو دو سمی یار اللہ تعلق نے ان کو بے سزادی کہ جب مجزو ہی منظام کے مدق يروالات كريا والله تعالى ان كواول اور أكلمول كو يجيرونا اوروه السية كفرير برقرار وسيت دوسراجونب برے کہ آ ترے عل اللہ تعلق ان کے داول اور آ محمول کودوز نے عموں اور انکاروں کی طرف مجیردے كان كاكدان كوعذاب مواجس طرح دنياجي بير مكل يار ايمان فيس المستة فيف ایال د است مولئے ای مے کہ اندی مثیبت برتی الافل الد جون كو وحق بنا ويا ده ال (فرفتا بالون) كي فوت مال بون العراك بالمرك كالاتكاب كرت والدي لسنة الليك وكان المعرك كما كم في العالمة التي المعرك كما كما كا المعرك ا

غيان القر أن

بلدموم

ل کن ب نازل کوئی ، اور جن وگرل کو ہم نے گنب وی ہے وہ جاستے ہیں کر یہ قرآن ان سکے رب کی حرف ت كے مائة نازل بوا ہے ، مو والے فى طب :) تم بركز تك كرے واوں يس د برجانا ١٥ اور آپ ك رب ك بات مجانی اور مدل کے اغیادے ہوری بول ، اس کے احکام کوکوتی برسنے والا میں سے ، اور وہست سنے والا ، ا جلتے والا میں اور دلسے نماطیب :) اگر تو زمین سے اکثر وگوں کی اطاعیت کریسے تو وہ بیٹھے الشرکی راہ ست وی کے و دومن گان کی چردی کرتے ہی اور صرف تیاس آرائیاں کرتے ہیں الله المَّا عَلَمُ مَنْ يَضِلُ عَنْ سَبِيلِهُ وَهُو آعَ ب تك آب كارب زياده ببتر جانا ب كركن اى كراسة عراه بركا ، اور وه برايت يان داون بالمهتديين ١ کردمی فرب جاتا ہے 0

الله تعالى كاار شاوي: اور أكر بم ان كى طرف فرشتوں كو بھى ازل كرتے اور مردے ان سے باتمى كرتے اور بم برجز کو ان کے ملتے جمع کر دیتے " تب بھی وہ ایمان نہ لاتے " سوائے اس کے کہ بید اللہ کی مشیت ہوتی حکین ان میں ہے اکثر نوگ جال يس- (الانعام: ١١١)

الله تعالى كامطلوب بندون كااختياري ايمان ي

اس سے پہلے آیت ۱۰۹ میں اللہ تعالی نے مسلمانوں کو قاطب کرے فرمایا تھا تہیں کیا مطوم کہ دسب یہ نشانیاں آجا کمی گی اتر یہ لوگ چر بھی ایمان تمیں لا کیں سے (الانعام: ١٠٠١) اس ایت میں اللہ تعالی نے اس کی تفصیل بیان فرمائی ہے کہ آگر اللہ تعالی ان ك تمام مطلوبه مجرات قرابهم كروك بلكه اس بهى زياده مياكرد يه كد قرشة نازل كرد يه اور مرد ي ان ي كلام كريس بلکہ برجزان کے ملعظ جمع کرتے پیش کردی جائے تو یہ پھر بھی ایمان تمیں لا کی کے۔ایمان مرف دی لوگ لا سکتے ہیں جن کے متعلق الله تعلق نے پہلے ایمان لانا مقدر کردیا تھا اور جن کے متعلق اللہ تعالی کو ازل میں علم تھاکہ وہ اپنے انتہارے ایمان لانے

غيان القرآن

والے نمیں ہیں۔ اس کیے اللہ تعالی نے ان سکے لیے ایمان مقدر نمیں کیا' وہ ایمان لانے والے نمیں ہیں' یہ ہوگ اپنی ضد اور ہٹ دھری میں اس مد کو پہنچ بچے ہیں کہ اب اگر اللہ تعالی ان میں جرا ایمان پردا کر دے' یہ تبھی ایمان لائمیں ہے' کین یہ چز اللہ تعالی کی محمت کے خلاف ہے۔

یدواضی رہے کہ ہم جو گئے ہیں کہ اللہ تعالی ہے چاہتا ہے کہ اس کے بندے اپنا افقیارے ایمان الا کمی اور وہ کی ہی جرا ایمان پدانسیں کرنا چاہتا اس کا یہ مطلب نمیں ہے کہ بقے اپنان کے قالق ہیں جیسا کہ معتزلہ کا ذہب ہے ابکہ اس کا مطلب یہ ہے کہ جب بقے اپنے افقیار ہے ایمان لائے کا ارادہ کرتے ہیں تو اللہ تعالی ان میں ایمان پدا کر دیتا ہے ابندہ کسب اور ارادہ کرتا ہے اور اللہ تعالی فلتی اور پردا کرتا ہے۔

الله تعالی کاارشاد ہے: اور آس طرح ہم نے ہر ہی کے لیے شیطان انسانوں اور جنوں کو دشمن بنا دیا 'جو (لوگوں کو) دھوکے میں ڈالنے کے لیے ایک دو سرے کو خوش نمایا تھی القاکرتے رہتے ہیں۔الانعام: ۱۱۰) انسانوں اور جنوں میں سے شیاطین (سرکشوں) کا ہونا

اس آیت کا معنی ہے ہے کہ جس طرح ہم نے انبیاء سابقین علیم اسلام کے لیے مرکش اور شیطان انسانوں اور جنوں کو و شمن بنادیا تھا'ای طرح آپ کے لیے بھی مرکش اور شیطان انسانوں اور جنوں کو دشمن بنادیا ہے۔

اس آبت عمی شب اطبی الانس و المحص قربایا ہے۔ اس کی دو تغییری ہیں۔ ایک تغییریہ ہے کہ شیطان ہے مراد
سرکش ہے اور انسانوں اور جنوں میں ہے بعض سرکش ہوتے ہیں اور یہ دونوں مومنوں کو بہکانے اور گراہ کرنے کی کو ششوں میں
گئے رہتے ہیں۔ اور دو سری تغییرہ ہے کہ تمام شیطان الجیس کی اولاد ہیں 'اور اس نے ان کے دو گروہ کر دیئے ہیں۔ ایک گروہ
انسانوں کو بہکا آب اور دو سراگر دو جنوں کو بہکا آب اور ان دونوں گر دووں کو شیاطین الانس و الجن کما جاتا ہے ' لیکن پہلی تغییر
دانتی ہے اور اس کی آئید جی سے مدینے ہے:

الم احدين منبل متولى الاله روايت كرتي بن:

حفرت ابوالمد جن جن اس ليده و آپ ك رسول الله بيني مجدي بينے ہوئے تے "اور صحاب كايد كان تھاك آپ بروى الله بيني محد على ابوذر جن بينى آكر آپ ك باس بينه ك الله بورى ب اس ليد وه آپ ك سائے چپ چاپ بينے تھے۔ اتے بى حضرت ابوذر جن بي آكر آپ ك باس بينه ك آپ في را بيا آب ابوذراكيا تم في آب تماز پره لى به انسوں في كمانيس آپ في قربايا اب كورے ہوكر تماز پرهو جب انسوں في طرف متوجہ ہوك اور قربايا متوں اور انسانوں ك بيناه انسوں في نماز پره لى آپ ان كى طرف متوجہ ہوك اور قربايا متوں اور انسانوں ك بيناه طلب كياكرو انسوں في كما يا بى الله الكيا انسانوں ك ليے بحى شيطان ہوتے ہيں آپ في فربايا بال اجن اور انس كے شيطين طلب كياكرو انسوں في كما يا بى الله الكيا انسانوں ك ليے بحى شيطان ہوتے ہيں آپ في فربايا بال اجن اور انس كے شيطين (اوگوں كو) دھوك ميں والے مي والے الك دو مرے كو فوش نما باتم التاكرتے ہيں۔ الحدیث بلولہ شخ احمر شاكر في كما اس حدیث كی شد حسن ہے۔

(سند احد 'جاز'ر قم الدیث ۲۱۳۸ ۱۳۲۸ منع دارالدیث کا بره اسند احد اج۵ ۴۲۰ ۳۵۰ منع قدیم 'سن انسانی ج۸' رقم الدیث: ۵۵۲۲ المعیم الکبیر'ج۸'رقم الدیث دیدک مجمع الزوائد 'ج۳ می ۱۹۵۵) و تی ' زخرف القول اور غرور کے معنی

اس آیت میں فرمایا ہے ان میں ہے بعض ابعض کی طرف غرور (وجو کے) میں مثلا کرنے کے لیے ز فرف القول کی ومی کرتے ہیں۔ وی کام جو اللہ توالی انجیاہ علیم السلام پر بلاواسطہ یا فرشتے کی و ماطت سے فید یا بیداری بھی المزام کی طرف ہو تو اس کامنی ہے اللہ توالی کا مبت ہے اللہ توالی انجیاہ علیم السلام پر بلاواسطہ یا فرشتے کی و ماطت سے فید یا بیداری بھی الزل فرما آئے اور جب اس کی نبت شیطان عام مسلمانوں کی طرف ہو تو اس سے مراو العام ہو تا ہے۔ یعنی ممی فیراور نیک بلت کاول بھی و الزااور جب اس کی نبت شیطان کی طرف ہو جیساکہ اس آب بھی ہے تو اس کامعن ہے و سوسہ ایعنی میں بری بلت یا برے کام کی طرف انسانوں کے دل کو ماکل اور دافعہ کرف ز فرف اس بیز کو کہتے ہیں جس کا یاطن یافل کر الی اور گزاہ ہو اور اس کا ظاہر مزن ' فوش تما اور فوپ صورت اور دافعہ کرنے اے سوا بیا کر چش کیا جائے۔

غود کے معنی ہیں دھوکا معبوروہ فض ہے جو می بیز کو مصفحت کے مطابق موہ فور لفع آدر مملن کرے اور در حقیقت وہ

اس طرح نداو-

شیطان کے دسوسہ اندازی کی حقیق

شیطان کے وسوسہ سے دھو کا کھانے کی تحقیق یہ ہے کہ جب بھانمان کی چڑکے متعلق یہ بھین نہ کرے کہ اس میں خیر
عالب ہو اور لئے زیادہ ہے اور اس چڑھی رفہت قبیل کر آبادر اس کے حصول کے درید قبیل ہو بکہ پھراکر اس کا یہ بھین واقع
کے مطابق ہو تو یہ حق اور صدق ہے اور اگر یہ بھین کمی فرشتے کے افتحاء کرنے کی وجہ ہے ہو المام ہے اور اگر اس کا یہ
بھین واقع کے مطابق ضمی ہے اور اس کا خاہر حسین اور مزین ہے اور اس کا باطن قاسد اور باطل ہے تو یہ کام مزفر نے ہے۔
اب یاتو اس نے اپنی العلمی کی وجہ سے بری چے کو اچھا اور مشل کو سونا سمی لیافور یا ارواح فیش نے اس کے ول میں یہ وسوسہ ڈالا

در حیقت در میں در حم کی او تی ہیں ایک فیب اور طاہر او تی ہیں ہے فرشتے ہیں اور دو سری باپاک اور شرم اور تی ہیں ایر ارواح شیطین ہیں۔ ارواح طیبہ جس طرح لوگوں کو شکی کا عظم دی ہیں ای طرح ایک دو سرے کو بھی شکی کا عظم دی ہیں اور ارواح طیف جس طرح لوگوں کو برائی کا عظم دی ہیں برائی کا عظم دی ہیں۔ پھر انسانوں میں جن کی سرشت خید جس طرح لوگوں کو برائی کا غلبہ اور آپ کی ان کی فرشتوں کے ساتھ مناسبت اور تی ہو آسے اور جن کی سرشت فیسٹ مورق ہوتی ہو آسے ان کی فرشتوں کے ساتھ مناسبت او تی ہے اور ان کے داوں میں کی سرشت فیسٹ اور ان کے داوں میں شیطان و سرح میں اور میں ہوتی ہے اور ان کے داوں میں شیطان و سوے ڈالنے رہے ہیں۔ پھرانسانوں میں جو تیارہ فیسٹ اور سرح میں اور میں اور و کوں کو برائیوں کے داوں میں اندازی کرتے ہیں اور برائیوں کو فوش نی باکہ دو سرے لوگوں کو دھو کے میں ڈالنے میں اور گراہوں پر رافب اندازی کرتے ہیں اور برائیوں کو فوش نی شیطان اندانوں اور میوک میں ڈالنے کے لیے برائیوں کو فوش نی تا ہوں کو فوش نی شیطان اندانوں اور شیطان جنوں سے پڑھ کا تھی دیا ہوں کو خوش نی تا ہوں کو خوش نی تا ہوں کہ میں اور شیطان اندانوں اور شیطان جنوں سے پڑھ کی تا ہو کے میں ڈالنے کے لیے برائیوں کو خوش نی تا کریان کرتے ہیں کو دو اس کو دو شیطان اندانوں اور شیطان جنوں سے پڑھ کی تا ہو کے دسول افتہ سرتانی دور شیطان اندانوں اور شیطان جنوں سے پڑھ کی تا ہو کی کی تا ہو کے دسول افتہ سرتانی کرتے ہیں کو دو کر میں کی تا ہو کی دسول افتہ سرتانی کرتے ہیں کو دو کر میں کرتے ہیں کو دو کرتانے کا تھی کی تا ہو کہ کی دور اس کو دو کر کرتے ہیں کو دور کرتانے کا تھی کو دور کرتانے کا تھی کو دور کرتانے کو دور کرتانے کی کو دور کرتانے کا تھی کو دور کرتانے کا تھی کو دور کرتانے کی تھی کو دور کرتانے کی کو دور کرتانے کا تھی دور کرتانے کی تا ہو کر دور کرتانے کی کو دور کرتانے کی کو دور کرتانے کو دور کرتانے کا تھی دور کرتانے کی کو دور کرتانے کی کو دور کرتانے کو دور کرتانے کور کو کرتانے کو دور کرتانے کی کور کرتانے کور کرتانے کور کرتانے کی کور کرتانے کرتانے

اس بحث على بيد مدعث بحل بيش تقرد الى جائيے-اللم الد عين في عن تعين ترفدى موتى الاعد ودايت كرتے إلى:

حضرت عبدالله بن مسعود برائيد بيان كرتے بين كر ابن آدم كے قريب ايك شيطان كانزول بو ماہ اور ايك فرشته كانزول بو آب الله القاكر فرشته كانزول بو آب الله القاكر فرشته كانزول بو آب الله فرشته شيطان كى طرف سے القاكر فرالا اس كو الله الله الله كر الله الله كر الله الله كر الله الله كر الله الله عن الله على الله على الله على الله عن الشبطان كي الله عن الشبطان كي الله عن الشبطان كا الله عن الشبطان كا الله عن الشبطان

غيان القر أن

-4-

الرحيم لاے الراساني أيمور عن

اَلَشْيَطُنُ يَعِدُكُمُ الْمَفْرَ وَيَامُوكُمُ

بِالْفَحْشَاءِ (البغرة:٢٧١)

الم الوعيني في كمار مديد عن فيديد

(سنن الترذي من الكبري المعين: ٢٩٩٩) من حمال من المن المعين على الني الكبري من المري المعين الدين الدين المعالي المام سنم بن تجل قشيدي متوني ٢٠١٤ دوايت كرتي بين:

معرت عبداللہ بن مسود ہوہتے بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ جین کے فریلاتم میں سے ہر فض کے ماتھ ایک جن پیدا ہو آ ہے۔ محلبہ نے ہوچھا بارسول اللہ ا آپ کے ساتھ بھی پیدا کیا گیا ہے؟ آپ نے فربلا بال امیرے ساتھ بھی پیدا کیا گیا ہے' لیکن اللہ تعالی نے میری اعامت فربائی کو مسلمان ہو کیا۔ وہ جھے نکی کے سوالور کوئی مشورہ نسی دیتا۔

(مح مسلم معافقين ١٩٠ (١٩٨٣)١٥٤٠ ميد اجر اج ٢٠ رقم الديث:٨١١٨)

شیمان تم کومفلی سے درا آے اور ب دیائی کا عم ریا

کائن میان نے کماہ کر امت کائس را بعام ہے کہ ہی جھی کا جم ایک کادل اور اپ کی زبان شیطان کے آوار سے محفوظ ہے اور اس مدے میں بداشارہ ہے کہ نبی جھی کا قرین جن (ہم زاد) نبی جھی کی برکت اور اپ کی مبارک محبت سے محفوظ ہے اور اس مدے میں بداشارہ ہو کیا اور برائی کا تھم دینے والانکی کا تھم دینے والانکی کا تھم دینے والانکی کا تھم دینے والانک کیا کور ہمیں جاہیے کہ ہم اپنے آپ کو شیطان کے افواء اور اس کے وصوموں سے بچلنے کی کوشش کریں۔

الله تعالى كاارشادى: اور آكر آپ كارب چايئاقودىيد كرتى سواپ انسى اور ان كى افراء پردازيوں كوان كے مل يہو دوس رااندام: ع

شیاطین کو پیدا کرنے کی حکمت

ای آیت کامٹی ہے کہ اگر اللہ تعلیٰ جاہتاتو اضافوں اور جنوں می سرسی اور شیاطین ماہد انجیاء علیم انسلام اور ان کے استیوں کو اپنے وسوسوں اور سازشوں سے فقصان تہ م م اللہ قور ای طرح دہ آپ کو اور آپ کی امت کو ہی ضرر پہنچائے سے باز رہج میں نیے بعض نیک اوگ ان شیاطین کی حیست ہے ہے کہ بعض نیک اوگ ان شیاطین کی سازشوں اور دہوسوں کی دجہ سے ضرر میں جھا موں ' گھراللہ تعلیٰ ان شیاطین کو آخرے میں سزادے اور تیک اوگوں کو ان کے سازشوں اور دسوسوں کی دجہ سے مزر میں جھا موں ' گھراللہ تعلیٰ ان شیاطین کو آخرے میں سزادے اور تیک اوگوں کو ان کے انتقال میں کامیاب ہوئے اور مصائب پر مبر کرنے کی دجہ سے جزادے ' قو آپ الیس اور اس کے بیرد کاروں کو اور ان کی مزخرف باقوں کو ان کے صفحی مزخرف باقوں کو ان کے صل پر چھو ڈ دیجے سے آیت کفر رحذاب کی وعید اور اسمام پر جابت قدم دہنے والوں کی بٹارت کو مشمی سے اور اس میں نی مجھور کو تعلی دیا ہے اور آپ کے تھب مبارک میں فی کارائی کرتا ہے۔

غيان القر أن

الله تعالی کاارشلوم، اور آکہ جو لوگ آخرت پر بھین تمیں رکھے' وہ ان (خوش نمایاتوں) کی طرف اکل ہوں اور ان کو پہند کریں اور ان پرائیوں کاار تکلب کرتے رہیں جن کاوہ او تکلب کرنے والے ہیں۔(الانعام: ۱۳۰۰) لیتہ صدیقائی کامعنی

اس آیت میں است معنی کانفظ ہے' اس کا مادہ مغی ہے۔ علامہ جار اللہ محدین عمرز محشری متوفی ۵۸۳ھ نے اس کا معنی کلما ہے' مغی کامعتی ہے کمی چیز کی طرف میلان کرنااور جھکنا۔

(الفائق ج ٢٠ ص ٢٥٠ مطبور وار الكتب العليد " يروت " عاصفه ا

اور علامد این اثیر محر جزری متوفی ۱۰۷ مد لکھتے ہیں:

بلی کی صدیث ش " کان بعد می الب الاساء" وواس کے لیے برش جمکاتے تے " آکدوہ موات سے پائی لی لے ا اور صدیث میں اس کامنی کان لگاکر ستاہمی ہے۔(التراب ج موصوم معلور ایران عاصور)

اس آیت کا معن ہے یہ شیاطین ایک دو سرے کی طرف مزفزف اور مزن اقوال پنچاتے ہیں' تا کہ نیک مسلمانوں کو بہکا ئیں اور ان کی طرف ان کفار اور فساق کے ول مائل ہوں جو آفرت پر بیٹین نمیں رکھتے 'کیونک ان کے وسوے ان کی خواہشوں کے سوافق ہیں اور تا کہ وہ ان سے خوش ہوں 'لیکن جو مسلمان انجام پر نظرر کھتے ہیں' وہ ان کی خوش نما باتوں ہیں دمیں آ ہے۔

الله تعالی کا ارشادے: (آپ کئے) تو کیا میں اللہ کے سواکوئی اور افساف کرنے والا علاش کروں امال نکہ ہے وی ہے جس نے تسادی طرف مفصل کتاب نازل کر دی ہے اور جن ہوگوں کو ہم نے کتاب دی ہے وہ جانے ہیں کہ ہے قرآن ان کے رب کی طرف سے حق کے ساتھ نازل ہوا ہے 'سو(اے کاطب!) تم ہر گزشک کرنے والوں میں سے نہ ہو جاتا۔ (الانعام ۱۱۲۳) نہوت کی وو وَفَیلیں

اس سے پہلے اللہ تعالی نے فرمای تھاک کفار نے کی تسمیں کھاکر کہا کہ اگر ان کے مطاب مجزات دکھا دیے جائیں تو وہ اللہ مفرور الیمان کے آئیں گئے۔ انٹہ تعالی نے اس کارہ فرمایا کہ ان مجزات کے دکھانے سے کوئی فائدہ ضمیں ہوگا کیو نکہ وہ چر بھی المیان فرمایا ہے کہ آپ کی نبوت پر دلیل قائم ہو پھی ہے 'اور وہ قرآن جمید ہے۔ وہ کہا ہم مفصل ہے جس جم علام کٹیو ہیں اور قورات اور مفصل ہے جس جم معارضہ سے اتمام کلوائ عابر ہو پھی ہے '
اور اس سے پہلے اللہ تعالی نے قورات اور انجیل بازل کی جن ص آپ کی نبوت پر واد کل اور چشین کوئیاں ہیں اور قورات اور انجیل سے اللہ تعالی نہو ہو گئی ہے ' اور وہ استان کی مفرورت ہے ؟
افتہ تعالی کے پڑھنے والے جائے ہیں کہ آپ ہے اور پر حق نبی ہیں 'سوان دود میلوں کے بعد اساور کوئ کی مفرورت ہے ؟
اللہ تعالی نے فرمایا (آپ کئے) کیا ہی اللہ کے سوا اور کوئی تھم خلاش کروں؟ بھنی آپ کئے کہ تم جمعہ نے فرمائٹی مجزات کی جرک کے مفرورت ہے جس نے میری نبوت کی تعد ایق مجزات کی خرورت ہے جس نے میری نبوت کی تعد ایق مجزات کی جرک کو نازل کر پڑھا ہے 'جس میں میرے نبی ہونے کی پیش کوئی ہے ' کور میری طاب بھی میرے نبی ہونے کی پیش کوئی ہے 'کور عال کھا کہ 'جس میں میرے نبی ہونے کی پیش کوئی ہے 'کور میری علاستیں اور نشانیاں بیان کر دی گئی ہیں اور جن لوگوں نے قورات اور انجیل کو پڑھا ہے جسے حضرت سامان میں اللہ مختم دغیرہم وہ آپ کے نبی ہونے کی مور نہی کوئی ہے 'کور میری علاستیں اور نشانیاں بیان کر دی گئی ہیں اور جن لوگوں نے قورات اور انجیل کو پڑھا ہے جسے حضرت سامان میں اللہ مضی اللہ مختم دغیرہم وہ آپ کے نبی ہونے کو فار کی محرت معیب دوئی ' حضرت معیب دوئی ' حضرت معین صام اور میری طرح میری اللہ علی کوئی ہیں۔

میر قربایا نبوت کی ان دو دلیلوں کے آنے کے بعد تم ننگ کرنے والوں میں سے نہ ہو جاتا۔ اس میں بہ طاہر آپ کو خطاب

ہے "کیکن مراد اس سے آپ کی آمت ہے 'یا اس میں ہر پڑھنے والے کو خطاب ہے۔ اللہ تعالی کا ارشاد ہے: اور آپ کے رب کی بات سچائی اور عدل کے اختبار سے بوری ہوگئی اس کے احکام کو کوئی یر لئے والا نمیں ہے اور وہ بہت نئے والا خوب جاننے والا ہے۔(الانعام: ۵۵)

كلمات رب كماوق اورعاول بوت كمعاني

اس بہلی آیت میں بید بیان کیا تھا کہ قرآن مجید مجزے اور اس آیت میں بے قربایا ہے کہ آپ کے رب کا کلہ صدق اور عدل کے اختیار سے بیار اور کیا۔ بینی قرآن مجید جو مجز کلام ہے 'وہ پورا ہو گیا جو نبی ہجیج کے صدق پر دانات کر آہے۔ اس کا دو سرامعتی بید ہے کہ مکلفین کو قیامت تک علم اور عمل کے اظہار سے جن چیزوں کی ضرورت ہے 'وہ سب قرآن مجید میں جملہ موجود ہیں اور اس کا قیرامعتی بید ہے کہ ازل میں اللہ تعالی نے جو امتام دیے وہ سب تمام اور کمل ہیں 'ان میں نہ کوئی تغیرہ و سکتا ہے اور نہ کوئی اضاف ہو سکتا ہے 'جساکہ اس مدید میں ہے۔

الم ابوميني همين ميني ترفدي متوفى ٥٥ الدروايت كرتے بين:

حضرت ابن مماس وضى الله عنما بيان كرتے بيل كرنى بيليز نے قربلا تلم المالے كے بيل اور محفے فك بور كئے بيل۔ (سنن ترزي عمر الله عند ٢٥٢٥ مطبور دار الله كو ابيروت)

معرت عبدالله بن مروبیان كرتے بين كرنى جين فرليالله تعالى كے علم پر معم ديك دو يكا ب

(سنن تروي عسر تم الحديث:١٦١٥)

معنرت ابر ہریرہ بوری ایان کرتے میں کہ نبی برتیر نے ملے سے فرمایا تم جن پیزوں سے ملاقات کرنے والے ہو'ان کے متعلق اللم الكد كرا ختك ہو چكا ہے۔ (می البنادي القدر ابب ۲)

حعرت عباده بن الصامت برخ بیان کرتے میں کہ نی جہیز نے فرمایا اللہ تعالی نے مب سے مبلے کلم کو پیدا کیا اور اس سے فرمایا لگھ اس سے مبلے کلم کو پیدا کیا اور اس سے فرمایا لگھ اس نے فرمایا لگھ اس نے کما است میرے رہا ہی کیا تکھوں؟ اللہ تعالی نے فرمایا قیامت تک برجزی تقدیم لکھے۔ (الحدیث) اسن الکبری الله میں ایوداؤد 'ج" وقم الحدیث: ۱۳۲۰ اسن الکبری الله میں الکبری جوامی ۱۳۲۳ میں المان الکبری الله میں الکبری بھی المحقی 'جوامی ۱۳۰۴ محضرا تحاف الداوة المحرة 'جا' رقم الحدیث ۱۳۲۳)

علامد ابو بحرين اساميل بوميري منوني ومهمد تكفية بن:

اس صدیث کو امام احمد بن منبع نے سند صحیح کے ساتھ روایت کیا ہے۔ اور الم ابوراؤد اللیالی اور الم ابوراؤد جمستانی نے روایت کیا ہے۔ امام ترفدی نے اس کو افتصار کے ساتھ روایت کیا ہے اور اس کو صحیح قرار دیا ہے 'اور اس کی سند میں احمد بن سنیم ضعیف ہے۔ (اتحاف السادة المرة بروائد السائید الحشرہ' جا'ص ۱۳۳ مطبور دار الکتب العلمیہ 'میروٹ' عامیدہ)

اس آبت می اللہ کے کلہ کوجو صدق اور عدل فربا ہے اس کاچو تھا معی ہے کہ قرآن مجیدی آیات دو سم ی ہیں۔ ایک سم میں خبری ہیں اور دو سری انتخاب اس کاچو تھا معی ہے کہ قرآن مجیدی دی ہوگی خبروں کے ساتھ ہے اور عدل کا تعالی عراق میں اور دو سری سنتی میں معتا کہ اور ادکام شرعیہ ہیں۔ صدق کا تعالی مقائد اور ادکام شرعیہ تعالی مقائد اور ادکام شرعیہ سب عادل ہیں میں متوسط ہے جو افراط اور تفریط کی ور میانی کیفیت کا جم ہے۔ اللہ تعالی مقد تعالی میں کو ب کیا تھے عدل کا من متوسط ہے جو افراط اور تفریط کی ور میانی کیفیت کا جم ہے۔ اللہ تعالی سب عادل ہیں گذہب محال ہے۔

الم فخرالدين محمرين منياء الدين عمر دازي متوفي ١٠٠١ م لكيت بن

الله كاكلمد صاوق ب- اس كى دليل يدب كد كذب نقص بور عص الله تعالى ير على ب اور الله تعالى ك وعد اور وعيدود فول على طلف كال سهد (تغيير كبير " ن" عن عاها مطوع واراحياء الزات العبل كديد " ١٥٥٥)

آكري اعتراض كياجائ كراشاموة خلف ومدك كاكن بيداس كاجواب يهدك ووبه ظاهر خلف وميدكوجائز كنت بي لكين حقيقاً جاز نسم كيت ميو كله واكت بي كه جس آيت بي الله تعالى المريح مي كوئي مزايان كى بوالى بيه شرط يا ير قيد فوظ ب كر أكر على معاف ند كرول إ أكر عن جاءون اس كامطاب يدب كر أكر الله تعالى ف معاف ند كيا وعذاب و عدا اور اگر اللہ تعلق نے معاف کردیا تو عذاب نمیں دے گا۔ الذا اب وحید کے خلف نمیں ہوگا ہیا ا شرک پر جو عذاب کی وحید اللها الله والله والمرام والمراس وحيد كاخلاف او الور كافراور مشرك كا بخشا ملا كل باور الم رازى في وكراب كر منت وميد على باس سے مراو شرك كى وميد ب- وكركناون يرجو وميد باس كاخلف مراو ديس ب كيونك الله تعالى شرك اور كفرك مظده يركنه كوبسرهال بلال دے كال سے يہ الى مطوم بواك بو لوگ كتے يس كه خلف و ميد كذب كو متلوم ہے اور خلف وجد کانسکان کذب کاامکان ہے ابن کا یہ قول یاطل ہے آبے تک خلف وجمید تو یالنمل واقع ہو گا اور اان کے قاعده يران كالم كالمائس كذب بونالازم آع كالدموالاند

الله تعالى كافرشاوى: اور (اے تعلب،) أكر توزين كے اكثر لوكوں كى اطاعت كرے اور كتے الله كى راوے كراء كر ویں کے اور محل مکن کی جدوی کرتے ہیں اور محش قیاس آرائیاں کرتے ہیں۔(الاضام: ١١١)

عقیدہ اور عمل کی کمراہیوں کی تفصیل

اس سے پہلی آبنوں میں اللہ تعالی نے سیدیا محد منظام کی نبوت پر کفار کے شہمات بیان کیے اور ان کے جوابات دیئے۔ اس کے بعد فرمایا جب حق واضح ہو گیا، پھر بھی اگر کوئی سید نامحر جھیز کی نبوت کا انگار کرے اور آپ کے پیغام کو نہ مانے اور وہ محق اسيخ مكن كى ويدى كرف والا يو كالور كراه يو كا

اس آیت میں قربالے کے زین کے اکثر لوگ حمیس مراہ کردیں کے اور مراہ کرنا مراہ ہونے کی قرع ہے اور مرائی تین چزوں میں متصور ہو سکتی ہے۔ انوہیت کے احتقاد میں تنیوت کے احتقاد میں اور ادکام شرعیہ کے احتقاد میں۔ الوبيت كے احتلام كرائل يہ ہے كہ كوئى فض خداك دجود كوند الله عليه جيد د جربيد ين أيا متعدد خدا ماليا۔ جيد

مشركين اور به يرست بين أياده نوگ جو خدا كے بينے لمانتے بيں۔ جيسے عيمانی حضرت عيميٰ كو فور يمودي حضرت عزير كو۔ نوت كے اعتد مى كرانى يہ ہے كہ مطلقائى كوند الے۔ جيسے بندوسكى لور بدھ ند بسبدالے إسد مائى بيال كے آنے اور منتم نبوت کے بعد ممی اور نبی کی بعث کا اعتقاد و کھے۔ جسے مرزائی ابدائی اور دیدار جو صدیق جن بھوشورکو مانے بین ایا سیدنا مر منظار كا اسماب كو احت اور حمواكرة والع يهي رافعي بين أيا آپ كى آل اطهار كويرا كنن والع يهي عاصى بين أيادولون كويراكنے والے جيمے خارى بين كارسول الله عظين كى تنعيص اور ب المي كرے "آپ كى زيارت كے ليے سزكو حرام كے اور جوں کے جن میں نازل شدہ آیات کو آپ پر منطیق کرے آپ کے فضا کل اور کمانات کو کم کرنے اور چمیانے میں کوشاں رہے ا

یا بودومری جانب فلو کے "آپ کے بشر ہوئے کا اٹار کے ایا آپ کے لیے ذاتی علم فیب اور ذاتی قدرت ملے یا آپ کے کملات اللہ تعالی کے مساوی یا زائد قرار وے۔

الله شريد يل كراى يه ب ك جس كام كوفي ويد الله على وارديا موان كومت جالك يد شيد مام كرن كو ب جائے ہیں۔ یاجی کام کوئی بھی نے وام نے کمادو اس کو وام کما جے کوئی فض موقا کرے مقرد کرے ایسال واب اتباع فن كي مُزمت كي ومناحت

اس آبت على اجل عن ك درمت كى كل سهداس يريد المتراض الدكاكر القياد العلد الدر تياس يريد عمل كياجا أب الديمي و عن ك درج عب مهاه اس كابواب يديد كو مشرك الله الله المن كالمعط كرة عند قداس كالمتروكي النبي دليل رسي توار اس كرير خلاف الحياد العلواد تياس كابستنو وكل تعلى يرسه بو قران كريم سيد

الله تعالی کا ارشادے: سے فلک آپ کا رب تامه بحر جاتا ہے کہ کان اس سے راسط سے کراہ ہوگا اوروہ فرایت

يات والول كوائكى خرب جانا بيد والوضام عدي

اس آیت کی تغییری و آفل ہیں۔ آیک قال ہے کہ جب آپ کو معلوم ہو گیاکہ حق کیا ہے اور یافل کیا ہے اور کی اس ان جائے ان جائیں کے درب نہ ہوں ایک ان کا معلقہ اللہ تعلقی ہے و دریں۔ اللہ تعلق کو علم ہے کہ کون ہوا ہے یافتہ ہے اور کون کراہ ہے؟ وہ ہر محص کو اس کے مقیدہ اور عمل کے افتہاں نے جانوے گلہوں مواقیل ہے ہے کہ یہ کافر اگر چر ہماں بھین کے ماقد ہے و مولی کرنے ہوائی کے دونوں کی موردوں کی موردوں کی موردوں کی موردوں کی دونوں کے دونوں کی دونوں کی دونوں کی موردوں کی موردوں کی دونوں کے دونوں کی دونوں کے دونوں کو دونوں کے دون

هُواَعُلُمُ بِالْمُعْتَى بِينَ ﴿ وَذَرُوْاظَاهِم الْاِنْهُو بَالْطِئَةُ وَالْمَا مُورُ وَرَا الْمَا وَالْمَا الْاِنْهُو وَبَالِطِئَةُ وَلَيْ الْمَاكُانُوْالِيَقْتُوفُونَ ﴿ اللَّهُ مِلْ مَن اللَّهُ مِلْ مَن اللَّهُ مِلْ مَن اللَّهُ مِلْ مَن اللَّهُ مَلْ مَن اللَّهُ مَلِيهُ وَاللَّهُ لَا فَاللَّهُ مِلْ مَن اللَّهُ مَا لَكُ مَل اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ لَوْسَقُ ﴿ وَ اللَّهُ مَلْ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ لَوْسَقُ ﴿ وَ اللَّهُ مِلْ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ لَوْسَقُ ﴿ وَ اللَّهُ مِلْ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ لَوْسَقُ ﴿ وَ اللَّهُ مِلْ اللَّهُ مِلْ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

0 Zig 100 775

الله تعالى كالرشاوب: اكر تم الله كى الدى العان و كلته بوقيس الدهد على الله كالم الإكيابو (الانوام ١١١١)
الله تعالى الله عمل الله كالله الدكانام الإكيابو الدكانام الماكيابو المركيان كى طرف قويد ندكرو بو مميار قو كما ليت بي اور مسلمان جن جانور كوافله كهام يروز كرك بي اس كاكمانا براجات

الم او عيلى عمري يسى تروى عول الدان ووايت كرسة بي

حضرت عبدالله بن عباس دهنی الله عنماییان کرتے ہیں کہ فی جھید کے ہاں کے لوگوں نے آکر کمایار سول اللہ اکیا ہم اس کو کھالیں جس کو ہم نے کئی کیارہ اور اس کو یہ کفائن کی بھٹی کو اللہ بنانے کی کیاہے اللہ تعالی نے یہ آیت نازل فرائی اگر تم اللہ کی آجوں پر ایمان دیکتے ہوئو اس وجہ سے کھلا جس پر ملا کالام نیا کیا ہوں۔

(سنن تزلَدُی' خ۵' وقم الخدعث ۱۹۰۰ من البردالاد بمی می البردالاد بمی می آخم الخدیث ۱۹۸۱ سنن النسائی " بی ک و تم الخدرشد ۱۳۳۱ السنن الکیرنی لفتسائی " بی می قم الخدرت داعی

بعض الماه في المراحة الم معدت من المستولال كيام كم الر مسلمان مى بالود كون كرا اوراس بر بعول كرام الله ند بز مع قواس كا كمانا بحى جائز اليس من الور فتهاواحتاف بير محت جي كر اكر مسلمان بمول كرام الله ند بز هم قواس انبيد كا كمانا جائز ب البند أكر وه عوا بهم الله بز من كو ترك كروت الو بكراس انبير كو كمفنا جائز اليس به الله كان تنعيل بحث سورة المانعام ١١١٠ من انتاه الله آسي كي -

مشركين يركية في كم ملمان فدا كماد مدية جاود كو ترام كية إلى اورائي اد مدية جاور كو طال كية إلى

ئېيان انقر ان

ان كاب قول ممانت ير بن تعالم كو تك دونوں جانوروں كو مارنے والدائلة بيد البنة جو طبعي موت مراب أس كى جان خدا ك نام ير نہیں نظی اور جس جانور کو مسلمانوں نے اللہ کے ہم پر ذیج کیا ہے اس کی جان خدا کے ہم پر نگلی ہے۔

الله تعالى كاارشاد ہے: اور حبيس كيا ہوا ہے كہ تم اس ذبيحہ كو نبس كھاتے جس پر الله كانام ليا كيا ہے وال تك حالت

امتطرار کے سواجو چڑی تم پر حوام ہیں ان کی تفسیل اللہ نے حمیس بنادی ہے اور بے تک بہت سے لوگ بغیر علم کے اپنی خوابشوں سے مرای پھیلاتے ہیں اور بے تک آپ کارب مدے پر جند والوں کو خوب جان ہے۔(الانعام: ١٩١)

عمی سورت میں مدتی سورت کے حوالہ کا اشکال اور اس کاجواب

طالاتک طالت اضطرار کے سواجو چزیں تم پر حرام ہیں ان کی تنسیل حمیس بنادی ہے۔ اس کے متعلق اکثر مفرین سفید كما ب كراس تعميل مرادوه تعميل ب جوسورة ما كده ٣٠ من ميان قربالى سب:

حَرِّمَتُ عَلَيْكُمُ الْمَيْنَةُ وَاللَّهُ وَلَحْمُ تم پر حزام کیا گیاہے مودار اور فون اور شعشر پسر کاکوشت البحثيرة روماً أهِل لِعَبْرِ اللَّوبِ (الايه) اور بس مانور پر ذیج کے وقت فیراننہ کانام بکار آگیا۔

لیکن اس پر سیاعتراض ہو تاہے کہ سور و الما کدہ مدنی ہے اور سور و الانعام کی ہے الذاب تنعیل اس سورت کے بعد نازل موئى ہے۔ تواس سے پہلے نازل مو نے وال سورت میں اس کے بعد نازل موسف والی سورت کا حوالہ کس طرح دیا جاسکتا ہے۔الم رازی نے اس کام جواب دیا ہے کہ سور و النانعام میں بھی یہ تنسیل بیان کی منی ہے اور دورہ آست ہے:

غُلُ لَآ آجِدُ فِنْ مَا اوُجِيَ إِلَتَي مُحَرِّمًا عَلَىٰ آپ كِيْحَ كه جودي ميري طرف كي كل باس مين مي طَاعِيم تَعْطَعَمُهُ إِلَّاآلُ لَيَكُونَ مَّنْتُهُ أَوْ دَمَّا منسفنوها أولكم جيرير فياته رخش اويسفا أجرك ليمير اللويه والانسام: ١٣٥٥

مى كمات والى كى لي ان ك مواكولى كمات كى چز حرام تعيل با أكدوه مردار يويا بيت والاتون يويا عسريس كأكوشيق مو موده ب شك نجس ب إ نا قرمانى كے ليے جس بر ذرع كے

وقت قيرالله كانام يكار اجائه

اب أكريه احتراض كيا جائے كر تهت ١٩٤٥ آيت ٥٥ كاكا والد ديناكس طرح درست يو كاكاس كالمام رازي في بواب را ہے کہ بے تر تیب وضع کے اختبار سے ہے ' ہو سکتاہے اس کانزول پہلے ہو کیا ہو۔

لكن يه جواب اس ليه ورست شيس ب كر سورة الانعام بورى كى بورى مكبارى نازل موكى به اور اس مى كوكى آيت دو مری آیت پر نزول کے اختبار سے مقدم یا موفر نمیں ہے۔ میرے نزدیک اس کاجواب سے ہے کہ حرام چیزوں کی بیہ تنصیل نی ر این از مسلمانوں کو پہلے ی بنادی تھی اور مکہ کرمہ کی زندگی میں بھی یہ چیزیں حزام تھیں 'اگر چہ ان کے متعلق آیت بعد میں نازل ہوئی۔ اس کی نظیرے ہے کہ مکہ جس و ضوء کرنا مشروع تعااور مسلمان وضو کرکے تماز پڑھتے تھے۔ اگر چہ آیت وضوع مدینہ جس مورة ائدين عازل موتى ہے۔

تقليد سيح اور تقليد باطل كافرق

اس كے بعد اللہ تعالى نے فرمايا اور ب شك بهت اوك بغير علم كے اپنى خوابشوں سے مرابى بھيائت بيں۔ ایک قول سے کے ان لوگوں سے مراد عمرو بن لی اور اس کے بعد کے مشرکین میں " کیونکہ وہ پہاؤ مخص تعاجس نے حضرت العاعمل عليه انسلام كے دين من تغير كيا اور بحيره اور سائب كو حزام قرار ديا اور مردار كھانے كو جائز كما اور عمرد بن في نے محف الى جمالت سى يد دوب فكال اواساق اراهم بن الدى الرجاع المتولى ومد كالعديد

اس سے مراد وہ لوگ ہیں جو مردار کو طامل کہتے ہیں اُور تم سے اس سے طام ہونے کے متعلق مناظرے کرتے ہیں اور اس طرح وہ تمام لوگ جو اس گرائی ہیں جاتا ہیں اوہ محل اپنی ہوادہ وہ س کی انتاع کرتے ہیں۔ ان کے پاس نہ کوئی بسیرت ہے' نہ کوئی علم ہے۔ (معلق القرآن و اعرابہ لملاجاج اج اج اس عمل العملون عالم الکتب ایرون ۵۰۱۸ء)

اس آء ہے۔ معلوم ہواکہ محض ہوا و نفسانی کی ہا پر تھید کرنانہ موم اور جرام ہوا کہ دین کی تفید کرتے ہیں ا وہ اس لیے کرتے ہیں کہ بہیں معلوم ہے کہ اطرے اکر ہے اقوال قرآن اور مدعد کی نصوص پر بٹی ہیں اور ادارے اکر نے یہ تعرق کی ہے کہ آگر ہمارا قول کی مدعث مجے کے طاف ہو تواس قول کو چمو ڈکر مدعث مجے پر عمل کرداور تھید مجے اور تھید باطل میں کی فرق ہے کہ تھید مجے کا بنی قرآن اور مدعث ہے اور تھید باطل کا بنی ہوائے نفس ہے۔

الند تعالی کا ارشاد ہے: اور کا اکتاد اور ہوشیدہ کناد چھواڑوں کے فلک ہو اوگ کناد کرتے ہیں ان کو انتزیب ان کے کتابوں کی سزادی جائے گے۔(الانعام: ۱۳۰۰)

ظامرادر بوشيده تنابون كي ممانعت

قرآن جيد كي ايك اور آمت على بلي ظاهراور فني كتابول عدم قرالي ي:

وَلَاتَهُمْرَبُواالْفَوَارِمِشَ مَاظَهَرَمِنْهَاوَمُنَابَظِنَ اور يولِي كامون كتريب تاجاد اوان على عام والأنجاع الذي كام وون اورجو وشرود

الانعمام ۱۵۹ کا بروں اور جو ہو شرو۔ خواک نے بیان کیا ہے کہ زبانہ جالیت ہی جو لوگ چمپ کر ڈٹاکر کے تھے اس کو وہ طابل کئے تھے اور عری نے بیان کیا ہے کہ جو لوگ برکار موروں کی دکاوں پر جاکر ڈٹاکر کے تھے اس کو برا جائے تھے اور سعید بن جبیو نے کما ظاہری گناہ ہاؤں ا بیٹیوں اور بہنوں ہے نکاح کرٹا تھا اور ہا گئی گناہ ڈٹاکرٹا تھا۔ اس آیت میں انڈ تونال نے ہر حم کے گناہوں کی ممانعت کردی۔ اجامع البیان کا مرکزہ ماور الفکو ایروت)

اثم كامعني

علامدوافب اصفرانی متوفی میدهد نے لکھا ہے کہ اہم ان افسال کو کتے ہیں ہو تواب کو ماقد کرنے کے موجب ہوتے ہیں۔ نیز انہوں نے لکھا ہے اٹم عدوان سے عام ہے۔(المغروات میں ۱۰ مطبور امران میں سید)

علامہ فیوز آبادی متوفی علامد نے لکھا ہے اثم کا معلی ہے ذئب (کناد) خمر اور تمار اور ہر باجائز کام کرنے کو اثم کتے ہیں اور فیم کا معلی ہے کذاب درالقصوس الحید'ج مامس دو مطور دار ادبیاہ التراث العمل میروت)

ائم کی تعریف اور مصادیق کے متعلق اعادیث

الم مسلم بن خاج قصوى متولى ١٠ مد روايت كري ين:

حضرت نواس بن معان انسادی دینی بیان کرتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ بھالے ہے برانگی اور اثم (کناه) کے متعلق سوال کیا؟ آپ نے قربایا یا ایک افغال میں اور اثم وہ کام میں او تمہارے ول میں اضطراب پیدا کریں اور جس کام پر تم نوگوں کے مطلع ہونے کو چیند کرد۔

(منج مسلم البراس) (۱۳۰۳) ۱۳۰۳ سنن الترزي جهار قم المدعث ۱۳۳۹ منج ابن دبان جهار قم الحديث ۱۳۵۰) الادب المغررا وقم الحديث ۱۳۰۳ ۱۳۰۵ مند احد " خالار قم الحديث ۱۳۵۱ منج ما الفكر)

غييان القر آن

الم احرين طبل موفي الالهدروايت كرت ين

حطرت عبداللہ بن مسعود بروین بیان کرتے ہیں کہ میں نے عرض کیا یارسول اللہ اکون ساائم سب بواہ ؟ آپ نے فرمایا یہ کہ تم اللہ کے لیے شریک قرار دو طاا تکہ اس نے تمہیں پردا کیا ہے۔ میں نے عرض کیا یارسول اللہ ایکر کون ساہ؟ آپ نے فرمایا یہ کہ تم اپنے پڑوی کی بیوی ہے زنا کرد۔ (اللہ اس مدان کی سند سمجے ہے)

(منداح "ج" وقم الحديث ١١١١م ملي وار الديث كابره استراح "ج" اس ١٢٦ ملي الديم كروب)

اس مدیث کو ایام بخاری نے بھی روایت کیا ہے "گراس میں اثم کی چکہ ذنب کا فقط ہے۔ (دیکھنے مجے ابتواری ' رقم الحدیث: ۱۳۰۷ ۱۳۰۷ ۱۳۷۷ ۱۳۸۰ ۱۳۹۰ ۱۳۹۵ نیز دیکھنے مجے مسلم ' رقم الحدیث: ۱۳۵۱ سنن ایوداؤد ' رقم الحدیث: ۱۳۳۰ سنن افززی ' رقم الحدیث: ۱۳۳۰ السنن الکبری الشنائی ' رقم الحدیث عدید احد امیر امیر ' ج) می ۱۳۸۰ ملج قدیم ان تمام احادیث پی اثم کی چکہ ذائب کا تفظ ہے ؟

الم مسلم بن تبل النسوى متونى المعدروايت كرت بن

فیش بیان کرتے ہیں کہ ہم حضرت عبداللہ بن عمور منی اللہ عنمائے ہیں ہیٹے ہوئے تے اسے میں ان کا قربان (کار عذار ا آمانی اور مصارف کا ذمہ وار) آیا۔ حضرت عبداللہ بن عمور اس سے بع جماکیا تم نے غلاموں کو کھٹا کھلا دیا ہے؟ اس لے کما نہیں۔ حضرت عبداللہ بن عمو نے کما جاؤ ان کو کھٹا کھلاؤ۔ ہر کمارسول اللہ باتھیں نے فربایا کمی مخص کے اثم (کناد) کے لیے یہ کانی ہے کہ وہ ان لوگوں کا کھٹا روک لے جن کو کھٹا ہے کا وہ ذمہ دار ہے۔

(سنن ابوداؤد 'ج ۴ رقم الحديث: ۱۹۹۳ مج مسلم 'مقدمه رقم الحديث: ۵ مج ابن مبان 'ج ۱ رقم الديث: ۳۰) حضرت ابن مباس دمنی افته ضماعیان کرتے میں که وسول الله بیجید نے فربلیا تهمارے اثم (کناد) کے لیے یہ کانی ہے کہ تم بیشہ لڑتے جھڑتے داو۔ امام قرزی نے کمانے مدعث فریب ہے۔ حافظ ابن مجرنے اس کو ضعیف کماہے۔

(سنن الرِّذِي "ع" وقم الحديث: ١٠٠١ أمجم الكبير "ج١١" وقم الحديث: ١١٠١١)

دل کے افعال پر مواخذہ کے دلا کل

ظاہر کتا ہے مراد وہ کتا ہیں ہو علائے اور محلم کھلا کے جا کم اور ہے شیدہ کتا ہے مراد وہ گناہ ہیں ہو چھپ کر کے ہیں۔
دد مری تغیرہ ہے کہ ظاہری گناہ ہے مراد وہ گناہ ہیں جو ظاہری اصفاء ہے کے جا کی اور بہ شیدہ گناہ ہے مراد وہ گناہ ہیں جو دل
سے کیے جا کیں۔ مثلاً تکیر' حدد' فود پندی' مسلمانوں کا برا جابتا' جرام کاموں کا ارادہ کرنا' بہ گمانی کرنا' بہ حیائی کے کاموں ہے
مجبت کرنا۔ بحض علاء نے یہ کما ہے کہ صرف اصفاء کی معصیت پر مواقعہ ہو تا ہے اور دل کے برے کاموں پر مواقعہ تھیں ہو تا'
یہ قول میج نہیں ہے اور قرآن مجید اور احادیث محمد سے مودور ہے۔ اللہ تعالی قرباتا ہے:

اِنَّ اللَّهِ إِنَّ اللَّهِ إِنَّ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ الْعَاجِدَةُ فِي النَّهُ الْحَاجِدَةُ فِي النَّهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ

غيان القر أن

اس آیت می مسلمانوں کے ایور بے حیائی کی بات سیلنے کے پند کرنے برعذاب کی وحید فرمائی ہے اور بد پند کرناول کا

الم محرين اساعل عقاري متولى ١٥١ه ووايت كرت ين.

امنت بن قيس بيان كريت ين كديس اس مخض (معرت على جائي) كى دركرنے كے ليے جانے لكا و ميرى الماقات حضرت ابو بروجي سے ہوئي۔ انہوں نے ہو جہاتم كمال جارہ ہو؟ مل نے كمام اس فض كىدد كروں كا انہوں نے كمالوث جاؤ۔ کیونکہ میں نے رسول اللہ موجوں کو یہ فرماتے ہوئے شاہ کہ جب دو مسلمان مکواروں سے اڑتے ہیں تو قاتل اور متفول دونون دوز فی بین میں فے عرض کیا یارسول اللہ ایہ تو قائل ہے معنول کا کیا قسور ہے؟ آپ نے فرمایا دہ میں اسپنے مقابل کو قتل

(تعج البحاري كم الحريث: ١٦ كي وقم الحديث ١٨٠٥ عه عدد ١٨٠٥ عه وقم الخديث: ١٨٠٠ السح مسلم المتن ١١٩(٢٨٨٨) سنن ابوداؤد٬ جه٬ رقم الحديث: ١٣٣٨ ٣٣١٩ سن النسائل٬ ج٧٬ رقم الحديث: ١٣٣٠ سنن ابن بابر٬ ج۴٬ رقم الجديث: ٣٩١٥ سنن كبرى ج٨٠ص١٠٠ عليد الاولياه وج مع صحوم جه مع مع الكال لاين عدى وي عد مع ١٠١٥ ملكوة ورقم الحديث ١٠٥٨) اس مدعث مس مسلمان كو فقل كرنے كى حرص ير عذاب كى وحيد ب اور يہ حرص ول كافعل ب-

المام مسلم بن تجاج قشيدى حوفي ١١٥ مد روايت كرتے إلى:

معرت مدانلہ بن مسعود برائے بیان کرستے ہیں کہ تی جیر کے فرمایا جس محض کے ول میں ایک ذرہ سے برابر جمی تحبر ہو' دہ جنب میں داخل نسیں ہو گا۔ ایک فخص نے کھاایک آدی ہے پہند کر تاہے کہ اس کے کپڑے اجھے ہوں اس کی جو تی اچھی مو اب نے قربایا اللہ تعالی جیل ہے اور جمل کو پند کر آ ہے۔ تھر حق کا انکار کرااور او کوں کو حقیر جانا ہے۔

(معج مسلم "ابعان ١١٥٤ (١٩) ٢٥٩ سنن الترزي" جه وقم الحديث ٢٠٠١ ٥٠٠٠ معج البحاري جه د وقم الحديث: ٢١٥٧ سن البوداؤدا جه وتم المدينة المعمل من ابن مانيا جاء تم المدينة ٥٠ جه وقم المدينة ١٣١٦ مج ابن حبان جه و تم الديث ١٨٥٠ مند احد مع و وقم الديث و ١٩٠٠ من كبري لليمتي ع ١٠٠ من ١٩٨٠)

حضرت انس چاہیے. بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ ماہیج نے فرملیا ایک ووسرے سے قطع تعلق نہ کرو' وشنی نہ رکھو ابغض ند رکمو محمد ند کرو اللہ کے بندے اور بھائی بھائل بن جاؤ اور سمی مسلمان کے لیے تمن ون سے زیادہ اسپے بھائی کو چھو ڑتا جائز نس ب-الم الوليسي تركمايه مدعث حس مح ب-

(سنن الترزي على على المديث والمعلى مع البغاري على ارقم الحديث الماسم مسلم أرقم الحديث ومده ٢٥٥٩ سن ابوداؤو على وقم الحديث: ٣٩٠ مج ابن حبان عه وقم الحديث: ٢٠١٥ معنف عبد الرزاق عه و الحديث: ٢٠٢٣ مند احد عه وم أرقم الحديث: الا ١٠٠٠ موطا المام الك ارقم الحديث: ١٩٨٣ مستد الليالي ارقم الحديث: ١٩٠٦ سنن كبرى لليمتي عيد ١٠٠٠)

اس مدیث میں ایک وو سرے ہے و متنی رکھنے اینض رکھنے اور حد کرنے ہے منع فر کیا ہے اور یہ سب دل کے افعال

الله تعالی کاارشاد ہے: اور اس ذیجہ کو نہ کماہ جس پر اللہ کا نام قیس لیا گیا ہے شک اس کو کھانا کناہ ہے۔ بے شک شیطان اپنے دوستوں سکے داوں میں وسوے ڈالتے رہے میں ناکہ وہ تم ہے بحث کریں اور اگر تم نے ان کی اطاعت کی تو تم مشرك يوجاة ك- (الانعام: ١٢١)

جس ذبیحہ پر اللہ کانام نہ لیا گیا ہو' اس کے متعلق نراہب فقہاء

جس ذبیحہ پر انتد کا نام نہ لیا گیا ہو 'اس کے متعلق فقعاء ندامب کی مختلف آراء ہیں۔ امام شافعی کے زویک مسلمان نے جس جانور کو ذرع کیا ہو اس کا کھلا حلال ہے۔ خواہ اس نے عمر اہم اللہ ند پڑھی ہویا نسایا۔

(تغير كيير "ج ٥ مى ١٣٠ مطبومه دار احياء الراث العربي ابيرد ت ١٣١٥ه)

الم احم کے زدیک آگر بھونے ہے ہم اللہ شیں پڑھی تو ذیجہ طائل ہے اور آگر عمر اہم اللہ کو ترک کرویا ہے تو اس میں ان کے دو توں میں۔(زاد المیر اج ۱۰می۵) ان کے دو توں میں۔(زاد المیر اج ۱۰می۵)

المام الك اور المام ابو صنيف ك زويك أكر عمد الميم الله كو ترك كرويا تؤوه ذبيحه حرام باور نسيانا بهم الله كو ترك كرويا تو پير وه ذبيحه حلال ب- (بداية البجند " عن م ١٠٢٨ مطبور هاو الفكو "بيروت)

امام ابوصنيفه ك نديب مرولاكل

ام ابو براحدین علی رازی بصاص حنی متوفی مدسمداس پردلیل قائم کرتے ہیں کہ عدایم اللہ ترک کرنے سے ذیجہ حرام ہو جا باہے۔وہ لکھتے ہیں.

اس آیت کا ظاہریہ نقاضا کرتا ہے کہ جس ذبیعے پر انتہ کا عام نہ لیا گیا ہو وہ حرام ہے۔ خواو عمد اعام نہ لیا ہویا نسیانا۔ لیکن اماد بھ سے یہ شاہت ہوتا ہے کہ نسیانا ہم القہ کو ترک کرنا موجب حرمت نہیں ہے۔ اس لیے ہم نے کما یہاں نسیان مراد نہیں ہے 'اب اگر ہم اللہ کو عمد انترک کرنا بھی جائز ہوتو اس آیت پر بالکل عمل نہیں ہوگا۔ نیز اللہ تعالی نے فرمایا ہے:

واف گروا اسم اللہ و تعلید و السائدہ ۳) شکار پر (سو هائے ہوئے کے کو چھو اڑتے وقت) اللہ کا عام

-9

اور امروجوب کا نقاضا کرتا ہے اس کے شکار پر شکاری جانور پھوڑتے وقت ہم اللہ پر مناوابب ہے اور سنت ہے ہمی اللہ پر دلیل ہے۔ دھزت عدی بن حاتم برزیر بیان کرتے ہیں کہ جس نے نمی بڑیوں ہے شکاری کے کے متعلق سوال کیا؟ آپ نے فرمایا بسب تم اپنا سد حلیا ہوا کتا بھوڑواور اس پر ہم اللہ پڑھو تو اس کو کھا او ابٹر طیک اس نے تمہارے لیے شکار کو اکھانے ہے ، روک رکھا ہو اور بسب تم اس کے سواوو سراکا دیکھو جس نے بلاک کیا ہوتو اس کو نہ کھتو اکو کھ تم نے اپنے کتے پر ہم اللہ پڑھی ہے اور دو سمرے کتے پر ہم اللہ پڑھی ہے اور دو سمرے کتے پر ہم اللہ پڑھی۔ اس کے متاوابب ہورائ کو عمرائرک کرنا جائز نہیں ہے۔

واحكام النترة إن " في حامض أند والأمليسا معلوم لا بور)

اور آگر بھوسانے سے ہم اللہ ندرہ می جائے تو ذیجے کے طال ہونے پر بیا صدیث دالات کرتی ہے: حضرت عائشہ رمنی اللہ عضامیان کرتی ہیں کہ مسلمانوں نے نبی ہیج ہو سے عرض کیا کہ کچھ لوگ ہمارے ہاں کوشت لے کر سے بیں ہمیں با نمیں کہ انہوں نے ذریج کے وقت اللہ کا نام لیا ہے یا نمیں! آپ نے قرایا تم اس پر ہم اللہ پڑھ کر کھالو، حضرت عائشہ نے کمااس وقت نوگ نے نئے کفرے نکلے تھے۔

ا من البوادي من الديث المديث المنطل من النسائل من المراح المديث المدين ابن ابد البرائم الديث المدين المدين المستف عبد الرزاق من المراح المدين المراح المدين المراح المدين المراح المدين المراح المدين المراح المدين المراح المراح

طبيان القر آن

ونت الله كانام ليما بحول كميا توود كلف في وقت بم الله بإند كر كلف في المن مديث كي مند حسن ب) (منن دار تطبي عن الرقم المديث: ١٤ من ٢٠٠)

طال کو حرام کرنے یا حرام کو حلال کرنے کا شرق علم

اس ك بعد الله تعلل في أرايا بي منك شيطان المية ووستول كه واول على وسوع والحد رج بين آك وه تم سع

اس دسوسہ کامیان اس مدیمت بھی سبے۔ اہم این ماجہ متو**نی سے جمد روایت کرتے ہیں:** حصرت این عماس دمنی افتہ فنماناس آیت کی تغییر جس فراتے ہیں۔ مشرکیون یہ کئے تھے کہ جس پر اللہ کانام نیا جائے 'اس کو نہ کھاؤ اور جس پر افتہ کانام نہ نیا جائے 'اس کو کھاتھ۔

(سنن لين الإ "ج"ر فم المدعث: ٣١٤٣ سنن الوداؤد" ج"ر فم الحديث ١٨١٨)

اور وہ بحث ہے کرنے منے کہ یہ کیابات ہے جی اُوافظ کے انسان کوئم نیمن کیلئے اور جس کوئم نے کُل کیا ہے اس کو کمالیتے ہو۔ اس کے بعد فرمایا آگر تم نے این کی اطاعت کی اُئم مشرک ہوجاؤے

یہ آ بت اس پر دلالت کرتی ہے کہ جس فاف تعالی سے میں منال ہے ہوئے کو حرام کیایا اس سے حرام کے ہوئے کو مال کیا تو وہ مشرک او جائے گا۔ البتدیہ ضروری ہے کہ وہ طال کو حرام فور حرام کو طال استاد کر ہدا تب وہ کافر اور مشرک ہوگا اور مشرک اور مشرک اور مشرک میں اور اللہ کے حرام کو دائد کے حرام کی جانتا ہو تو وہ فاس اور مو گا در اللہ کے حرام کی جانتا ہو تو وہ فاس اور مرتکب معصیت کریرہ ہوگا گا فراور مشرک نسی ہوگا۔

اُومَن گان مَیْنا فَاحْیینه وجعلناله نورا

يُنْشِى بِهِ فِي التَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهُ فِي الظُّلُلْتِ لَيْسَ بِخَادِجٍ

ایک ور بنایا جی کی دجہ سے دہ وگرن کے درمیان جات ہے ، دوائ کی حق پوسکا ہے جو افرمیران میں ہر اور ان سے منگل

مِنْهَا * كَانْ لِكُ زُيِّنَ لِلْكُورِينَ مَا كَانْدُ إِيعَمَلُونَ ۞ وَكَانْ لِكَ

د ساہر ای فرع کا فرج مل ک ہے جن مدان کے بے وسٹنا یا جے گئے ہیں 0 ادر ای فرح

جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْبَةٍ ٱلْبِرَمُجُرِمِيْهَ الْيَنْكُرُوْ إِفِيْهَا وَمَا

بم سے ہربی یں ای سے جرون کو مرداد با دیا یا کردہ دیاں فریب کاری کرن دمالا کر میتندیں دہ مرت

بنكرون الربانفسم ومايشعرون وإذا جاء تماية

است مائة وريب كرت ين الدوه الى كا شور اين وسكة ٥ اورجب ال كم ياك كرن تان

غيان القر ان

جلدسوم

وفق لانهم وفف منزل

O تربيت ان زن مراه كراه كر دا اور الاالان عمد سے ال کے دوست کیس کے ،

تبيان القر آن

رَبِّكَا اسْتَمْتَعُ بِعَضْنَا بِبِعُضْ وَبِلَغْنَا أَجُلَنَا الْرِي آجُلْتُ الْجَلَنَا الْرِي آجُلْتُ الْجَلْنَا الْرِي آرِيهِ وَيَا الْجَلْنَا الْمِنْ الْمِيهِ وَيَا مِنْ وَلَا لِهِ الْمِنْ وَلَا لِهِ اللّهِ اللّهُ اللّلْمُ اللّهُ اللّلْمُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّ

02 2/8

الله تعالی کاارشادہ: کیجو مخص پہلے موہ تھا کار ہم نے اس کو زندہ کیااور ہم نے اس کے لیے ایک نور منایا 'جس کی دجہ سے دوالوگوں کے درمیان چانا ہے ' دہ اس کی مثل ہو سکتا ہے جو اند حروں جس ہوادر ان سے نکل نہ سکتا ہو 'اس طرح کافر جو ممل کر دہ جیں دہ ان کے لیے خوش نما بنادیئے گئے ہیں۔ الانعام ۱۳۳ کا فرکے مردہ اور مومن کے ذندہ ہوئے کی مثالیں کا فرکے مردہ اور مومن کے ذندہ ہوئے کی مثالیں

(اسباب النزول ارقم الحديث. ٣٥٠ مطبوعه وار الكتب العلميه اليروت)

ان مديثول كے مطابق حضرت مريا حضرت سيد الشداء حزه رضي الله عنما يہلے كفر من مرده ستے " بحر الله تعالى نے ان كو

اسلام ہے زندہ کیا اور ان کو اسلام کی نمایاں فدمات کرنے کی تونتی دی جس کی دجہ سے مسلمانوں کی ناریخ میں وہ دونوں آئی تلک روشن ہیں اور بعد کے نوگوں کے بیارہ بیٹ ہیں ہو بھٹ ہیں ہو بھٹ کفر کے اور تین اور بعد کے نوگوں کی مثل کب ہو بھٹے ہیں ہو بھٹ کفر کے اندھیموں میں اور تان اندھیموں سے کمی نکل نہ سکے 'جریند کہ اس تربت کے شان نزوں کے متعلق وو روایتی ہیں انکین مفرین نے کہائے کہ ان تربی میں مطلقاً مومن اور کافر مراد لینازیاوہ متاہب ہے۔ علم اور جہل کے مرات

انام فخرادین محدین شیاء الدین عمر دازی متونی ۱۳۰ ہے کہ اب کہ ارواح بھرنے کی معرفت میں جار مراتب ہیں۔ پہلے مرتب میں اس کو ہانسول کوئی علم حاصل نہیں ہوئے۔ لیکن وہ طوم اور معارف کی استعداد رکھتا ہے ابسالہ قات ہے استعداد کال ہوتی ہے اور بعض او قات ہے استعداد کم اور ضعف ہوتی ہے۔ اس مرتبہ کو اس آب میں موت کے ساتھ تجبیر کیا ہے۔ وہ سم امرتبہ یہ کہ انسان کو علوم کلید اولیہ حاصل ہوتے ہیں اس کو مقل کتے ہیں۔ اس مرجبہ کی طرف اس آب میں جا حب سبت او اہم نے اس کو زندہ کیا) سے اشارہ فربایا ہے۔ تیمرے سرت میں انسان معلومات بدیدید سے مجمولات تظریہ کو حاصل کرتا ہے اس کی طرف اس آب ہت ہیں و جدھلما لیہ نورا (اور بھر نے اس کے لیے ایک فور بطایا سے اشارہ فربایا اور چوق مرجبہ ہے کہ تام معارف اس آب ہت ہیں اس کے ساتھ منور اور کال ہوجائے۔ اس کی طرف اس آب ہت ہیں لئر سرائی کی معارف اس مرجبہ کے دورا کی معارف کے دورا کی معارف کے معارف کے ماتھ منور اور کال ہوجائے۔ اس کی طرف اس ترجبہ کے دصول کے ایک نور میان چاہے اشارہ فربایا ہے الور اس مرجبہ کے دصول کے بعد نفس انسان کی معاوت کے درجات معال ہوجاتے ہیں۔

یہ بھی کما کیا ہے کہ دیکھتے کے لیے اور چیزوں کی ضرورت ہے۔ '' کلے سلامت ہو اور کوئی خارتی روشنی بھی ہو' ای طرح بعیرت کے لیے بھی دو چیزوں کی ضرورت ہے۔ عقل علیم ہو اور نور وٹی اور نور کتاب ستیاب ہو۔ اس لیے مفسرین نے کما ہے کہ اس آیت میں نور سے مراد قرآن ہے۔ بعض نے کمااس سے مراد دین ہے اور بعض نے کمااس سے مراد محکمت ہے۔

خلاصہ یہ ہے کہ بھرادر بھیرت کے لئے '' تکہ اور مقل فاسالم ہونااور خارتی روشنی اور نور قر آن کا میسر ہونا ضروری ہ اور یہ دونوں چیزیں امتد تقافی نے مومن کو عطاکی جیں اور رہا فافر تو وہ بھیشہ جمل ' برے اخلاق اور بدا تعالیوں کی تاریکیوں اور کفر اور ممرای کے اند میروں میں ڈویار جتا ہے' اور خونے' وہشت اور بھڑ کے اند میروں میں باتھ پاؤں ارتبار ہتا ہے۔

(تغییر کبیر " ی ۵ مل ۱۳ ۱۳ - ۱۳ ۱۳ مطبوعه و او احیا و التراث العربی " بیروت ۱۳۵۵ هـ)

الله تعالیٰ کاارشاوہے: اور ای طرح ہم نے ہر پہتی میں اس کے بحرموں کو سردار بنادیا' تا کہ وہ دہاں فریب کاری کریں(حالانکہ وہ حقیقت میں) صرف اپنے ساتھ فریب کرتے ہیں اور وہ اس کا شعور نسیں رکھتے۔الابعام: ۱۳۳) کفار اور فساق کو مقتدر بنانے کی حکمت

مجرموں کو ان بستیوں کا سردار اس لیے بنایا کہ عمد شکنی عمرو فریب اور جھونی اور باطل باؤں کو ہوگوں میں رائج کرناان ی وگوں کی زیادہ قدرت اور اختیار میں تھا۔ نیز مال کی کشت اور منصب کی قوت انسان کو ان کی حفاظت میں زیاوہ کو شش کرنے ابھارتی ہے اور اس کے لیے انسان ہر منم کے جائز اور ہاجائز حیلے انتقیار کرتا ہے اور جھوٹ محراور فریب مید شکنی اور دخابازی سے کام لیزائے۔

اس آیت کامعنی یہ ہے کہ جس طرح اہل کھ کے اٹھان ان کے لیے مزین کردیئے گئے ہیں اس طرح انسانی معاشرہ میں انڈ تعالی کی سنت جاریہ ' یہ ہے کہ ہر بستی میں اس کے فسائل اور آغار کو مقدر اور مردار بناویتا ہے ' اور اس وجہ ہے حق اور یاطل '

ایمان اور کفرے ورمیان شورش بیا رہتی ہے۔ ان بستیوں کے مردار انبیاء علیم انسلام اور ان کے متبعین کو نک کرتے ہیں.. اور ان کے خلاف فریب سے کام لیتے ہیں الکین ور حقیقت اس فریب کا نقصان ان می کو پانچاہے۔ کیونکہ اس وجہ سے آخرت مي ان كو سخت عذاب ديا جائے كا ونيامي كفار اور قسال كو غلب دينے كى حكمت يد ہے كه مسلمانوں كو آزمائش ميں جالاكياجات اور بنومسلمان اس امتحان میں کامیاب اور سرخرو ہوں ان کو آخرت میں بلتد درجات دیے جائیں۔

الله تعالی کاارشاد ہے: اور جب ان کے پاس کوئی نشانی آتی ہے تو وہ کتے ہیں کہ ہم ہر کر ایمان تسیں لا کیں ہے 'حتیٰ کہ جمیں بھی اس کی مثل دیا جائے 'جیسا اللہ کے رسولوں کو دیا گیا ہے۔ اللہ ہی خوب جانتا ہے کہ وہ نجس جگہ اپنی ر سالت کو ر کے گا عقریب مجرموں کو اللہ کے بال ذات اور سخت عذاب منے گا کو تک وہ فریب کاری کرتے تھے۔ الانعام: ١٢١١) حصول نبويت كامعيار

ولیدین مغیرہ نے کماکہ اگر نبوت من ہوتی تو آپ ہے زیادہ بس نبوت کے لاکن تھا مکیونکہ بس آپ ہے عمر بس بھی برا ہوں اور میرے پاس مال مجی زیادہ ہے اور ابوجس نے کما بخد اہم اس وقت تک ان ہے راضی نمیں ہوں گے اور ان کی ویروی نمیں کریں گے جب تک کہ ہارے پاس اس طرح وی نہ آئے جس طرح ان کے پاس آتی ہے اس وقت یہ آے تازل ہوئی: الله عی خوب جانباہے کہ وہ کس جگہ اپنی ر سائت کو رکھے گلہ

منحاک نے بیان کیا ہے کہ ہر کافریہ جاہتا تھا کہ اس کو دحی اور رمنات کے ساتھ خاص کر لیا جائے' جیسا کہ اس تبت میں

بَلُ يُرِيدُ كُلُّ امْرِي يِسْهُمُ أَنْ يُتُونِي مُستَعِمًا لك ان يل ع بو فض يه جابتا ب ك كط بوسة آماني مُنْسَدُونًا (المدثر:۵۲) محيفة اس كود عديث جائم-

ا کام الرین محد بن عمر دازی متونی ۱۰۱ د فراتے میں معمول نبوت کے مسلہ میں علماء کا اختلاف ہے۔ بعض علماء یہ کہتے ہیں کہ لئس حقیقت کے لحاظ ہے تمام انسان حصول نبوت میں مساوی ہیں اور بعض انسانوں کار سالت کے ساتھ مخصوص ہوتا' میہ محت الله كافضل اور احسان ب اور بعض علاء نے يه كماك نفوس انسانيه اين ذات ك اعتبار ب مخلف موت بين بعض رو میں باکیزہ ہوتی ہیں تعلقات بسمانیہ ہے منزہ اور انوار الدیہ ہے منور ہوتی ہیں اور بعض رومیں خسیس اور مدر ہوتی ہیں اور جسمانی تعلقات میں جکڑی ہوتی ہیں۔ پس اس متم کی روحیں حصول وی کی مطاحیت نسیں رسمتیں اور پہلی متم کی روحیں حسول وی کی مطاحیت رکھتی ہیں ' پھران ہیں بھی مراتب اور در جات ہیں۔ اس کے نبیوں اور رسولوں کے در جات بھی متفاوت ہیں ، بعض کی عمراور معجزات زیادہ ہوتے ہیں اور ان کے پیرد کار کم ہوتے ہیں۔اور بعض کی عمراور معجزات کم ہوتے ہیں اور ان ك ويرد كار زياده بوت ين- (تغير كبير "ج٥ من ١٠١٠١٠ مطبور وار احياء التراث العربي بيروت ١٥١٥٥)

حکماء کے نز دیک استحقاق نبوت کی مفات اور ان کار و

ر سولوں کو جینے کے لیے یہ شرط نمیں ہے کہ جو لوگ عبادات میں سخت ریاضات کریں اور خلوت میں مجاہدے کریں اور ونیاہے منقطع ہو کراللہ کی عباوت کریں اور جن کے جو ہرذات میں کناہوں کی کدورتوں اور ملمتوں ہے تجرا اور تسو ہ ہو اور ان کی فطرت یاد قار اور روشن ہو اور وہ مایت درجہ کے ذکی ہوں ان کو اللہ تعالیٰ رسول بنالیتا ہے ' ملکہ اللہ سجانہ و تعالیٰ جس کو جابتا ب این رصت کے مات خاص کرلیتا ہے۔ اندا نبوت اللہ تعالی کی رصت اور اس کی مطاب ہو اس کی مثیت کے ماتھ متعلق ے اور الله ي خوب جانا ہے كه ووائي رسالت كوكس جكدر كے كا؟ النافعام: ١١٥٠ اور يى الل حق كاند بب يكو نك الله تعالى

قاور مخار ہے۔ وہ جو جاہتا ہے اور جو پیند کر آ ہے وہ کر آ ہے۔ اس کے برخلاف ظلاسفہ نے یہ کماکہ نبی وہ مخص ہے جس میں تین خواص مجتمع ہو جا کیں:

ا - اس کو مامنی عل اور مستقبل کے تمام مغیبات پر اطلاع ہو۔

۲- اس کا مجردات عالیہ اور تغوس سلویہ کے ساتھ ار تباط اور تعلق ہو عور اس کے کانوں میں کلام منظم سالگ دے جس کو یاو کیا جائے اور جس کی تلادت کی جائے اور میں وحی ہے۔

٣٠٠ اس پر فرشته اور كلب كانزول موجس من نظام معاش انجلت " تخرت اور بندول كى اصلاح اور فلاح ك ادكام كاييان

ان کے نزدیک جو محض اوصاف مخانہ کا حال ہو اس کا تی ہو ناوابیب ہے "لیکن سور وُ الانعام: ۴۴ کی روشنی میں ان کا بیہ توں یا طل ہے۔ نیزاللہ پر کوئی چیز وابیب نسی ہے اور آن میں ہے بعض اوصاف فیرنی جی بھی پائے جاتے ہیں۔ مثلاً اولیاء اللہ کو بھی بعض مغیبات کا علم ہو آئے اور تمام اوصاف بعض انبیاء میں نسی پائے جاتے 'مثلاً ہرنی پر کتاب کا نزول نہیں ہو آلہ کو بھی بعض مغیبات کا علم ہو آئے اور تمام اوصاف بعض انبیاء میں نسی پائے جاتے 'مثلاً ہرنی پر کتاب کا نزول نہیں ہو آلہ (شرح مواقف 'ج ۸ م ۴۱۸-۲۹۸' ملحما 'مطبوعہ امراس ان ۴۰۳اء ' شرح مواقف 'ج ۸ م ۴۱۸-۲۹۳' ملحما 'مطبوعہ امراس الل حق کے نزویک مجبوعت نبوت کا منتاء

علامد في السفاري المنيل المتوفى ١٨٨ ميد لكست بين:

رسولوں کو بھیجنا محابوں کو تازی کرنااور شریعتوں کو مقرر کرنا اللہ تعالی کا احسان اور فضل ہے ایے اس پر واجب نہیں ہے۔ حضرت آدم علیہ السلام ہے لے کرسیدنا محمد بڑیوں تک اللہ تعالی نے جس قدر نبی اور رسول بھیج کیے اللہ تعالی کالطف اور کرم ہے۔ تاکہ وہ اللہ سمانہ کے امراور نبی اور وعد اور وحید کو بیان کریں اور اللہ کی طرف ہے اس کے بندوں کویے بتا کمی کہ وہ اپنے معاش اور معاویں کن احکام کے محمل میں۔ بندے تمن اصولوں کی معرفت میں رسولوں کے محملے میں؛

١- الله تعالى كي توحيد "اس كي صفات التقرير " لما تك اور الله ك اولياء تور اعداء ك انجام كابيان ــ

٣٠ ادكام شرعيدى تنصيل كياچيز طال ب اور كياچيز حرام ب اور الله تعالى كوكياپند اور كياجيند ب؟

۳۰ آیامت منت دوزخ مساب د کمک اور نواب اور عذاب

نى كى صفات لازمهٔ

نی کے لیے ضرور کا ہے کہ دوجس قوم کی طرف مبعوث ہو 'وہ اس میں سب سے اشرف اور کرم ہو اور وہ آزاد ہو کیونکہ غلامی ایک نکفس ہے جومقام نبوت کے لاکق نمیں ہے اور مرد ہو "کیونکہ اللہ تعالی نے فرمایا ہے

وَمَا أَرْسَلْمَا مِنْ فَسُلِكَ اللهِ بِحَالا اللهِ حِنْ اور الم فَ آپ على مردول كرواكى كورسون اكر النهام. النهام. المنهام. (بوسف: ١٠٩) النم العمام.

اس آیت کی بناہ پر جمہ و اہل سنت کے زدیک عورت کانی یوناجائز ضیں ہے۔ اہام ابوالحس اشعری اور علامہ قرطبی مالی کا
اس میں اختلاف ہے۔ یہ حضرات حضرت مریم 'آبیہ 'سارہ ' ہاجرہ اور حضرت موئی کی دائدہ کی نبوت کے قائل ہیں۔ نیز نبی کے
لیے ضروری ہے کہ وہ قوی ہو ' قبیم اور عالم ہو اور اس کے اخلاق عمدہ ہوں 'آگر لوگ سمونت کے ساتھ اس سے استفادہ کر
عیس۔ انبیاء علیم السلام بخل ' بزدل افواور نب قائدہ کاموں اور تمام رزائل سے مجتنب ہوتے ہیں۔ اس طرح وہ ونیا کی حرص
سے بھی منزہ ہوتے ہیں اور اپنی قوم میں ان کافس سب سے عمرہ اور اشرف ہوتا ہے۔

فالصديب كر عقل اذ كاوت اور شجاعت كے لئاظ عود فوع انسان كے كائل ترين فرد ہوتے ہيں اور دوم برائي سفت و كيفيت سے منزہ ہوتے ہيں جس سے طبیعت سليد تشخر ہو۔ مثلا ان كے آباء ميں كوئى ر ذالت نسيں ہوتى اندان كى ماؤں كى طرف بدكارى كى است ہوتى ہوتى ہوتى اور شدوہ عاميات كام كرتے است ہوتى ہے اور شدان پر كوئى الى يَعارى آتى ہے جس سے لوگ تخطر ہوں مثلاً برص ہور جذام و فيرم اور شدوہ عاميات كام كرتے ہيں مثلاً بازاروں ميں جين ہوتا ور كھاتے نسيں اور نہ كوئى ايساكس كرتے ہيں جولوگوں ميں معبوب سمجھاجا آبہو۔

برن کو گذاہوں کی کدورت سے پاک کرنے اور محدوافاق کے ماتھ متعف ہونے اور مخت عباوت اور ریاضت کرنے سے نبوت و رسالت حاصل نہیں ہوتی۔ یہ صرف اللہ تعالی کا فضل اور اس کی رحت ہے اوہ اسپنے بندوں میں سے جس کو چاہتا ہے ' نبوت عطافرہا آج ۔ لیکن استقرار آم اور المتح سے اور قر آن اور حدیث کے دلائل سے یہ عابت ہو پکا ہے کہ اللہ تعالی نے جس کو بھی نبوت عطافرہا آج ۔ لیکن استقرار آم اور المعدر صفات ہوں وہ نبی برائل ہے کہ وہ ندکور المعدر صفات کا طائل تھا۔ لیکن یہ ضروری نہیں ہے کہ جس مختص میں یہ صفات ہوں وہ نبی موٹ اللہ می خوب جانا ہے کہ وہ کس جگر اپنی نبوت کو رکھے گا۔ پہلے نبی حضرت آدم علیہ اسلام میں اور آخری نبی سیدنا محمد میں موٹ نہیں ہو سکنا اولوالعزم پانچ میں حضرت آدم علیہ اسلام میں اور آخری نبی میعوث نہیں ہو سکنا اولوالعزم پانچ میں حضرت نوح ' مضرت ایرائیم ' معضرت موٹ معضرت عمیلی علیم السلام اور ہمارے نبی سیدنا محمد میں ایک لاکھ چو جس بڑار جیں۔ این علی سے تمن سو تھود رسول ہیں۔

(الوامع الاتوار اليميد مج ٢٠١٠ مل ٢٥٦-٢٥٦ معلما المطبوعه كتب اسلامي ويروت الماماه)

الله تعالی کاارشاوی: سوالله جس کو بدایت دینا جاب کا بیند املام کے لیے کمول دیتا ہے اور جس میں ممرائی پیدا کرنا جاہے اس کا بیند کھنا ہوا تھے کر دیتا ہے۔ کو یا وہ مشقت سے آسان پر چڑھ رہاہے اسی طرح ان لوگوں پر شیطان کو مسلط کر دیتا ہے جو ایکان نمیں لاتے۔(الانوام: ۳۵) دیتا ہے جو ایکان نمیں لاتے۔(الانوام: ۳۵) اسمال م کے لیے شرح صد و کی علامت

اس آیت کامعنی ہے ہے کہ جس تعنی کو اللہ تعالی قیامت کے دن جنت کے داستہ کی طرف ہدایت دینے کاار اوہ فرمائے گا' اس کا سینہ ونیا جس اسلام کے لیے کھول وے گا' حتی کہ وہ اسلام پر تابت قدم رہے گااور اسلام کو ترک نہیں کرے گا' یہ عالت ایمان لائے کے بعد ہوگی' جیساکہ ان تتحول جی ہے:

وَمَنْ يَتَوْمِنَ إِللَّهِ يَهُو مَلَكَ الله الله يَهُو مَلَكَ الله الله عالى الله الله الله الله الله الله ال ماعت فرائة ال

والله يس محاهد وافيد اليسهاد يسهم مسلك اورجن وكون في ماري راه ين جهاد كيا مم ضرور النين والله يس محاهد وافيد المعند كمومته دالايات الهي بالهين وكما أمن شك

اس کی آئد ان اماویث ے بھی ہوتی ہے۔

حطرت معلومہ بر بھی بیاں کرتے ہیں کہ میں نے ہی مینی کو یہ فرناتے ہوئے ساہے کہ جس فخص کے ساتھ اللہ خیر کاار اور فرما آئے 'اس کو دین کی سمجھ عطافرما آہے۔

(משש וניצות ל " הי" כقم الحديث: 12" רווץ "רווץ" ביין " היים "מואם" ביין "ונוגום" ביין " יין כقم الحديث الحديث (" ביין כقم الحديث (" ביין כقم الحديث (" ביין " ביין

الم ابن جرير متوفى ١٠١٥ ابوجعفرے روايت كرتے بيں كر جب يہ آيت نائل ہوئى هسس برد السدال سهاد اله بستسرے صدره لـ الاسلام و محلم نے بي جمال كا شرح مدر كيد ہوگا؟ آپ نے فرمايا جب اس كول بي نور نازل ہوگاؤ

نبيان القر ان

اس کا مینہ کھل جائے گا' صحلیہ نے ہو چھاکیا اس کو پہنانے کی کوئی علامت ہے؟ آپ نے فرمایا ہاں اس کاول آ ٹرت کی طرف راغب ہو گااور دنیا ہے وہ پہلو بچائے گااور موت کے آپنے ہے پہلے وہ موت کے لیے تیار رہے گلہ

(جامع البيان "٨٦ مس٣٦ مطبور دار الفكو "يروت ١٥١٥ه)

خلاصہ بیب کدان آیات میں ہی ہی ہی کو تعلی دی گئے کہ مشرکین جود فوت اسلام کو مسترد کر رہے ہیں "پان سے رنجیدہ ند ہوں 'جو فخص اللہ کے ارادہ اور اس کی تقدیر میں ایمان لانے کا اللہ ہوگا اللہ اس کا بیند اسلام کے لیے کول دے گا جیساکہ ان آیات میں ہے:

اَ فَهَ مَنْ شَرَتَ اللّهُ صَدْرَهُ لِللّهِ سُلَامَ فَهُ وَعَلَىٰ مُورِيِّنُ زَنِهِ الرمر: ٢٢)

وَلَكِنَّ اللَّهُ حَسَّبَ البَّكُمُ الْإِنْسَالَ وَرَبَّهُ مِي مُلُوْمِكُمُ وَكَرَّهُ البَّكُمُ الْكُمُورَ وَ الْعُسُوقَ وَ الْمِعْبَالَ أُولَامِكُ مُمُ الرُّ شِدُولَ ٥ الْمِعْبَالَ أُولَامِكَ مُمُ الرُّ شِدُولَ٥

ہ جس فض کا جینہ آنڈ ئے اسلام کے لیے کھول دیا دوا ہے: رب کی طرف سے اعظیم) نو د برہے۔

لیکن اللہ نے حمیں ایمان کی محبت عطاکی اور اس کو تمارے دنوں میں مزین کر دیا اور کفراور فتق اور معصیت سے حمیں پخفر کردیا می وگ کال جاست یافت ہیں۔

(الحجرات: ٤)

اور جم مخص نے شرک سے اتی فطرت کو فائد کر دیا اور فسق اور معصیت سے اپ دل کو میلا کر دیا وہ اسلام کو تبول کرنے ہے اپ دل میں شدید سی اور محمن محسوس کرتا ہے اور کسی بھی نیکی کے لیے اس کے دل کے دروازے نہیں کھلتے۔ بیسے کوئی فخص اپنے میلان ملبعی کے خلاف آسیان کی جانب چڑھ رہا ہو تو اس کو اپنادم محمنتا ہوا محسوس ہو تاہے۔اس طرح اس کے اللہ اور اللہ شیطان کو مسلط کردے گالور اسی طرح ان لوگوں پر بھی جو اللہ اور اس کے رسول پر ایمان لائے سے انکار کرتے ہیں بھر شیطان اس کو کمراہ کردے گالور سیدھے راستہ سے بھٹکادے گا۔

الله تعالى كاارشاد ب: اورية آب ك رب كالبنديده سيدها داسة ب بهم في تعيمت قبول كرف والول كر لي لي لي التعميل من التعميل من

اس آیت کا منی ہے ' بید اسلام جس کے لیے اللہ تعالی مومنوں کا بینہ کھول دیتا ہے ' کی آپ کے دب کا وہ طریقہ ہے جس کو اس نے لوگوں کے لیے پہند کر لیا ہے اور کی طریق مشتم ہے ' کی تک اللہ تعالی کا بیان کیا ہوا راستہ مشتم ہی ہو تا ہے ' جیسا کہ اس مدیث میں قرآن جید کے متعلق ہے۔

حفرت علی بوین میان کرتے ہیں کہ رسول الله ستیج نے قربایا یہ اللہ کی مضبوط رسی ہے اور یہ ذکر تھیم ہے اور یہ صراط منتقیم ہے۔اسنن انترزی کی مار قم اندیث ۲۹۵ مطبور هاو العام امیروت ۱۳۲۲هه)

ہم نے نفیجت حاصل کرنے والوں کے لیے تنسیل سے آنوں کو بیان کردیا ہے اور جو لوگ اسلام پر مجع عمل کرتے ہیں ' ان کے لیے جنت ہے جو ملامتی کا کھر ہے۔

الله تعالى كاارشادے: ان ي كے ليے ان كى رب كے إس سلامتى كے كريس اور وى ان كاكار سازے كو كك وو (نيك) كام كرتے تھے۔ الانعام عے)

جنت كودار السلام فرائة كي وجوبات

اس آیت میں جار مجدور کی تقدیم مغید حصر ہے۔ یعنی دارالسلام ان بی کے لیے ہے ان کے فیر کے لیے تمیں ہے۔

طبيان القر أن

دار السلام كے دومعنى بیں۔ ایک بید كه ملام الله تعالى كانام ب- ہى دار السلام كاسعنى ہے دو كھر جس كى اضافت الله تعالى كى طرف ب اور بيد اضافت تشريف اور عزت افزائى كے ليے ہے۔ جستے بيت الله ابور ناقة الله جس ہے۔

اور اس کاود مرامعنی سے ب کہ ملام دار کی صفت ہے الین ہے سلامتی کا گھر ہے اور جنت کو دار انسلام اس لیے فرمایا ہے ک جنت میں ہر تتم کے عیوب انگلیفوں اور مشقق ل سے سلامتی ہے۔

جنت کو دارالسلام کنے کی تیمری وجہ یہ ہے کہ جنتیوں کو جنت جی و خول کے وقت ملام کیا جائے گا اللہ کی طرف ہے ا فرشنوں کی طرف سے اور اہل اعراف کی طرف سے ان کو سلام چیش کیا جائے گا اور جنتی بھی ایک دو سرے کو سلام کریں ہے ا جیساکہ ان آنتوں جن ہے:

و بادوا اصحاب العبة ان مبلام عليكم (الاعراف ٣٧) و تحيتهم فيها سلام ايونس ١٠)سلام عليكم بماصير تم فيعم عقبي الدار(الرعد،٢٣)ادخلوها بيبلام اميين (الحبجر ٣١) يقولون سلام عليكم ادخلوا الجنة يما كنتم تعمّلون (البحل،٣٢)سلام قولاً من رب رحيم ايس، ٥٨) وقال لهم حربتها سلام عليكم طبتم فادخلوها جالدين (الرمر:٤٢)

الله تعالی کارشاد ہے: اور جس دن وہ (الله)ان سب کو جمع کرے گاراور قرمائے گا) اے جنات کی بناصت اتم نے بت ے انسانوں کو گراہ کر دیا اور انسانوں بین ہے دوست کمیں گے اے بہارے رہا ہمارے بعض لوگوں نے بعض ہے (ناجائز) فاکدے افعات اور ہم آئی اس معاد کو پہنچ گئے جو تو نے ہمارے لیے مقرر کی تھی۔ الله فرمائے گا(دوزخ کی) آل تمارا فعل کا کاروزخ کی آل تمارا فعل ہے۔ الله فرمائے دالے ہو بحر جے الله چاہ اے تک آپ کا رہ بہت محمت والا فوب جانے والا ہے۔

النافتاح ١١٢٨

جہنم کے خلود ہے استثناء کی توجیهات

انسانوں کو گراہ کردیا اور جن انسانوں نے جانت کے وسوے فورے نے تھے اور ان سے مجت رکھی تھی اور ان کی اطاعت کی است کے است کے وسوے فورے نے تھے اور ان سے مجت رکھی تھی اور ان کی اطاعت کی تھی اور ان کی اطاعت کی تھی اور ان کے جواب میں کمیں گے ہم میں ہے جرایک نے دو سرے سے نقط افعایا انسانوں نے شیطانوں سے نقع افعانی سے افعانی کو ذکہ شیطانوں نے باز زرائع اور انزاد کے افعانی کو ذکہ شیطانوں نے باز زرائع اور انزاد کے راستوں پر جل کراپی شوت کو پورا کر لیا تو شیطین جو ان کو گراہ کرنا چاہے تھے ان کا مقصد پورا ہو گیانے اس طرح ہرایک فراق کرنا چاہے تھے ان کا مقصد پورا ہو گیانے اس طرح ہرایک فراق کرنا چاہے تھے ان کا مقصد پورا ہو گیانے اس طرح ہرایک فراق کرنا چاہے تھے ان کا مقصد پورا ہو گیانے اس طرح ہرایک فراق کی دو سرے فریق ہے فائدہ اٹھا لیا۔ پھروہ کمیں گے کہ ہم نے وہ میعاد پوری کرلی جو تو نے ہمارے لیے مقرد کی تھی اندی بھی ذار کی بھر کی بوری کرلی جو تو نے ہمارے لیے مقدر کی تھی اور یہ ہم سے مقصود سے ہو گھی ذار کی بوری کرلی جو دو جانے کا اور اس میں سے اپنے گاہوں کا اختراف کریں گے اور اپنی تفقیرات پر حسرت اور نداست کی دھرکا دن ہو گائے وہ ان کو بھرائی کو رائل کے میدان حشری پہنچ گئے۔ اس کلام ہے مقدود سے ہو کا اظمار کریں گے اور انڈ تعالی میں جو بھرائی اور انکم الحالی میں ہے اور انڈ تعالی میں ہو تھا ہے قیصلہ فرا۔

پرانڈ تعلق فیصلہ فرمائے گائم دونوں کا احتکادوز ٹر کی جس جس جس تم بھیشہ رہنے دالے ہو۔ اس کے بعد فرمایا گر جے اللہ جائے اس کے بعد فرمایا گر جے اللہ جائے اس استثناء کی دونو جسس میں۔ اللہ جائے گئے جس میں دہیں کے حراس سے دووفت مشتنی ہیں۔ ایک قبر سے حشر تک کا زمانہ اور دو سرامیدان حشر میں کے محاسبہ تک کاوفت۔ اس کے بعد ان کو دوز ٹر میں ڈال دیا جائے گا اور وہ اس میں حشر تک کا زمانہ اور دو سمرامیدان حشر میں ہی کے محاسبہ تک کاوفت۔ اس کے بعد ان کو دوز ٹر میں ڈال دیا جائے گا اور وہ اس میں

ایش ایش ریس کے۔ (۴) جبودز فی دوز فی اگ کی شدت سے قراد کریں گے اوان کو دوز فی آگ سے فکل کر زمر ہے اور خوان کی دوز فی آگ ہے۔ فکل کر زمر ہے اور خوان کی جائے گاور جب زامر ہے کی اور خوان کی گھڑ کے سے گھرا کر قراد کریں گے اوان کو پاردوز خیس وال اور جب دو مرے عذاب کی طرف خطل ہوں گے۔ دواج کے معالی سے دو مرے عذاب کی طرف خطل ہوں گے۔ معالی سے قربالا کمی ہم مسل کے لیے یہ جائز نمیں ہے کہ وہ اللہ تعالی کے متعلق یہ تھم الگائے کہ وہ اللہ تعالی کے متعلق یہ تھم الگائے کہ وہ اللہ تعالی کے متعلق یہ تھم الگائے کہ وہ اللہ تعالی کو دواج کی کہ کی گلول کے متعلق یہ تھم الگائے کہ وہ اللہ تعالی کے متعلق یہ تھم الگائے کہ وہ اللہ تعالی کے متعلق یہ تھم الگائے کہ وہ اللہ تعالی کے متعلق یہ تھم الگائے کہ وہ اللہ تعالی کے متعلق یہ تھم الگائے کہ وہ ایک کی گلول کو جنت میں داخل کرے گا

(جائع البیان ۸۶ میرد دار الفکو وردت ۱۳۱۵ میرت الفکو این مرح بعض کالم سلط کردیتے میں ایمو تک وو (معصیت کے) کام کرتے ہے۔ (الاندام: ۱۳۹)

ظالم حكومت كاسب عوام كاظلم ب

اس سے پہلے اللہ تعالی نے بیان فرینیا تھا کہ بعض جن اور انسان ایک دو مرے سے استفادہ کرتے ہیں اور ان کا یہ باہمی استفادہ اللہ تعالیٰ کے مابق علم اور قضاء وقدر کے موافق تھا اور وہ جس چڑ کا ارادہ کرتے تھے اللہ تعالیٰ ان میں وی چڑ پیدا کردیا تھا۔ ای طرح اللہ تعالیٰ بعض خالموں کو بعض کا دل کار ماز اور مدد کار بنادیا ہے۔ جسے اللہ تعالیٰ نے فرایا ہے:

موسی مرد اور موسی اور تی ایک دو سرے کے مدد کار

وَ الْمُوْمِدُونَ وَ الْمُؤْمِسَاتُ بَعْضُهُمْ اوْلِيَا الْمُ بَعِّضِ (التوبه الله)

ں۔ بعض کافر بعض کے مدد گاریں۔

وَالْلِدِيْنَ كَنْفُرُوا بَعْصُهُمْ ٱوْلِيَّا وُبَعْنِ

(الانصال: ٤٢)

اور جس طرح بعض افسان اور جن ایک دو مرے کے کام آتے تھے اسی طرح کافر کفرادر معصیت میں ایک دو سرے کی مدد کرتے ہیں۔

ابن زید نے اس آیت کی تغییر میں کما ہے کہ اللہ تعالی بعض خالوں کو بعض پر مسلط کردے گااور اس آیت میں ہر شم کے خالم داخل ہیں۔ وہ محض جو معصیت کر کے اپنے تغیس پر ظلم کر آئے اور بو حاکم اور افسرا پنے ہاتحت او کوں پر ظلم کر آئے اور بو حاکم اور افسرا پنے ہاتحت او کوں پر ظلم کر آئے اس طرح جو چور اور ڈاکو مسافروں اور شروں پر بو آئے جملی اشیاء اور طلوت وفل چیزیں فروخت کر کے صارفین پر ظلم کر آئے اس طرح جو چور اور ڈاکو مسافروں اور شروں پر ظلم کرتے ہیں اور قیکس پر قیکس انکا کر موام کی رکوں سے خللم کرتے ہیں اور قیکس پر قیکس کی محدہ دار اور و ذراء عوام کی فیکس سے بوا خالم مسلط کرتے ہیں اور قیکس پر قیکس انکار عوام کی رکوں سے خون نے ڈے رہے ہیں ان سب خالموں پر اللہ تعالی کوئی ان سے بوا خالم مسلط کردیا ہے۔

الم أبو يكراجد بن حسين يهل متوفى ٥٨ حد الى مند ك ماقد روايت كرتي بن.

حسن بیان کرتے ہیں کہ بنو اسرائیل نے حصرت موی علیہ السلام ہے کدا آپ بھارے لیے اپنے رہ ہے سوال کیجے کہ
وہ جمیں میہ بتائے کہ اس کے رامنی ہونے کی علامت کیا ہے اور اس کے ناراض ہونے کی علامت کیا ہے؟ حضرت موی علیہ
السلام نے سوال کیاتو اللہ تعالی نے فربلیا ہے موی النمیں یہ بتاؤکہ جب میں ان کے اجھے نوگوں کو ان پر حاکم بناؤں تو میں ان سے
رامنی ہوں اور جب میں ان کے برے اوگوں کو ان پر حاکم بناؤں تو میں ان سے ناراض ہوں۔

غيبان القر أن

الانعام ١: ١٢٥]-404 بمتری کاار اوہ کرے تو نیک باوشاہ مقرر کرتا ہے اور جب ان کی ہاؤکت کاار اوہ کرے تو بیش پرست باوشاہ مقرر کرتا ہے۔ (شعب الايمان ع٢٠٠ وقم الحديث ٢٨٩) ا براهیم بن جمش میان کرتے میں کہ میرے والدیہ کتے تھے اے اللہ الوقے اعارے اندال کے مطابق ہم پر حکام مسلط کر وي اجو بم كو ويجانت بين نه بم يروح كرت بين- (شعب الايمان علاوقم الحريث ومهاي) یونس بن اسحاق اپنے والدے روایت کرتے ہیں کہ وسول اللہ منظور نے قربایا جیے تم ہو کے ویسے تم بر حاکم بنائے جا تیں مراب مديث ضعيف ب- (شعب الاعلن الما المحديث ١٥٠ م حطرت ابن عمرومنی الله عنماییان کرتے ہیں کہ جس محص نے تعلم پر مدد کی وہ آدم مرگ اللہ کی نار انسٹی میں رہے گا۔ (سنن ابوداؤو مع مع مرقم المديث ٣٥٩٨ منن ابن ماجه مع الرقم الحديث ٢٣٢٠) حصرت ابن عماس رمنی الله عنمالے قرمایا جب الله تعالی محمی قوم کو سزا دیے کاارادہ فرما یا ہے تو اس پر بد ترین لوگوں کو حاكم بناوية سب- قرآن مجيدش سب وَمَا أَصَابَكُمُ مِنْ تُصِبُهِ فَهِمَا كُمُبُتَ اور تم کو جو معيبت سيخي ب وه تسارے اسينے کي ہوئ آيديكم ويعفواعن كينبر الشورى ١٠٠١ ١٠ كامول كالتجب اوربت ياون كووه معاف فراديا -اے جنامت اور اناول کے محروہ: کی تمارے باس تم یں سے دول نیں آئے سے جم پر میری آبات بال سقسنے اور تمیں اس ول کی مات سے ورائے سے و وہ میں کے بال بم خود اسے خودت اور اسبنتے میں اور اسب) انبی ونیاک زندگ نے وجو کے میں رکھا بواسے اور انفول نے خود استے خلات گابی دی یراگوا بی ای وجه سے فی کی آپ کا رب سیتیوں کو تلان باک والانبیں ہے درآل حالیکہ ان میں دستے والے (ٹرنویسے) ہے غیریوں 🔿 اور سراکیٹ کے بیے اس کے تل کے مطابق ورجانت م

اور أي كاربى

وحمنت والآب

جلدسوم

ئېيان القر ان

اور آب کا رب ان کے افال سے بے خبر بیں سے

روہ چاہے و تبیں سے جانے اور تباری بھر جن وگوں کو چاہے سے آئے ، جی طرح تم کو ایک مِثْكُ مِن (روز قيامين) كاتم ست اأنته بِمُعَجِزِينَ ﴿ قُلْ لِقُومِ اعْمَلُواعَ عده مزور آند والاست اورتم (الدرى) وج كرف والينس واب كي است ميرى قوم: تم إي بحر على كرية یں دایی جگر) عمل کرنے واق ہوں ، ہوتم عنقریب جان ہو سکے کہ آخرت یں کس کا اخرم سے شک طام فلاح نبیں یا نے 0

الله تعالی کاار شادے: اے جنات اور انسانوں کے گروہ اکیا تمہارے پاس تم میں سے دسول نمیں آئے تھے 'جو تم پر میری آیات بیان کرتے تھے اور حمیس اس دن کی ملاقات ہے ڈراتے تھے؟ وہ کمیں کے 'بی ایم خوراپے خلاف کو ای دیتے ہیں اور (اب) الميس دنياكي زندگي في دهو كي ميس ركهابواب اور انهون في خود اين ظاف كواي دي كه وه كافر تصدرالانعام ١٣٠٠) جنات کے لیے رسولوں کے ذکر کی توجیمات

اس آیت میں بہ ظاہر یہ معلوم ہوتا ہے کہ جنات ہے بھی رسول مبحوث ہوتے رہے ہیں' ملائکہ اس پر انقاق ہے کہ رسول مرف انسانوں سے معوث کے گئے ہیں۔ اس احراض کے حسب ذیل جوابات ہیں:

 ا- جنات کے رسول سے رسول کا اصطلاحی اور معروف معنی مراد جمیں ہے ایسیٰی وہ انسان جس کو افقہ تعنائی نے ادکام کی تبلیغ کے لیے اوگوں کے پاس بھیجا ہو اور اس پر وقی اور کتاب کا نزول ہو' بلکہ یمال رسول ہے منوی معنی مراو ہے۔ حضرت ابن عہاس نے فرمایا جنات کے رسول وہ میں جنوں نے رسول اللہ میں ہیں سے وی من کرائی قوم کو پہنچانی میلغ جیسا کہ قرآن جمید میں

> وَ إِذْ صَرَفْنَا الْمِنْكُ نَفَرًا يِّنَ الْبِعِينَ يَشْنَمِعُونَ الْقُرْآنَ فَلَمَّا حَصَرُوهُ قَالُوْآ آنصِتُوا فَلَمَّا قُيضَى وَلَوْا اِلنَّي قَوْمِهِمُ مُّنُذِرينَ (الأحقاف: ٢٩)

قُلُ اُونِينَى إِلَى آنَهُ اسْتَمَعَ نَفَرُ يِنَ

اور إد كجيد بب بم آب كى طرف جنات كى ايك بما احت كو لائه موجب وہ آپ کے باس حاضرہ و نے وائبول نے (آپس من) کما خاموش ر ہو' پھر جب (قر آن کی تلادت) ہو پیکی تو د ہ الى قوم كودرات موسكاوف_

آپ کئے کہ میری طرف یہ وی کی گئی ہے کہ جات کی ایک

طبيان القر أن

مَمَّالُوُّا إِنَّا سَمِعُمَّا قُرْانًا عَمَيَّا ۞ يَهُدِي إِلَى الرُشْدِ قَامَتَا بِهِ وَلَنُ ثُشْرِ كَ بِرَبِيَّا أَحَدُا٥ الرُشْدِ قَامَتَا بِهِ وَلَنُ ثُشْرِ كَ بِرَبِيَّا أَحَدُا٥ (الحن: ١٠٩)

معاهت نے میری طاوت کو تورے سنا اوّ انہوں نے (ا بی قوم سے) کما ہے شک ہم نے ایک جیب قرآن سنا ہے جو صراط متعقم کی طرف ہدایت کر آئے 'ہم اس پر انجان لائے اور ہم این رسے ساتھ کمی کو شریک نیس کریں گے۔

۱۶ کابد نے کمااندانوں کی طرف رسولوں کو مبعوث کیا گیا ہے اور جنات کی طرف منذرین کو اور اس آیت بی جنات کے رسول سے مراو منذرین ہیں ایعنی ڈرائے والے۔

۳۰۰ کلبی نے کماکہ سیدنا محمد طبیح کی بعثت ہے پہلے انسانوں تور جنات دونوں کی طرف رسول بھیج جاتے ہے 'کین یہ سیج نمیں ہے کیونکہ آپ سے پہلے ہر رسول صرف اپنی قوم کی طرف مبعوث کیا جاتا تفااور آپ کو تمام انسانوں کی طرف مبعوث کیا ممیا۔ ایام بخاری روایت کرتے ہیں:

حضرت جارین عبداللہ رضی افتہ عنما بیان کرتے ہیں کہ نبی چھپے نے فربلیا جھے پانچ الی چڑی دی گئی ہیں جو جھ سے پہنے کسی کو نہیں دی گئیں۔ ایک بادی مسافت سے میرا رعب طاری کر دیا گیا تمام روئے ڈھن میرے لیے مجد اور طہارت کا آلہ بنا دی گئے۔ بس میراامتی جس جگہ بھی نماز کا دقت پائے 'وہی نماز پڑھ نے اور میرے لیے ختیتوں کو طال کر دیا گیا جو جھ سے پہلے کسی کے لیے طال نہیں کی تمکی اور چھے شفاعت دی گئی اور پہلے ہر نبی صرف اپنی قوم کی طرف مبعوث کیا جا آخا اور جس تمام لوگوں کی طرف مبعوث کیا گیا ہوں۔

(می البحاری جهار قم الحدیث: ۱۳۳۷ ۱۳۳۹ می ۱۳۳۳ می مسلم الساجد ۱۳۳ (۵۳۱) ۱۳۳۳ مشن النسائل کهار قم الحدیث: ۱۳۳۳ ج۳ رقم الحدیث: ۷۳۷)

م م حضرت ابن مباس رضی الله تعالی عشمانے فرمایا پہلے صرف السالوں کی طرف رسول مبعوث ہوتے تھے اور امارے نی مید تا محمد میں السانوں کے بھی رسول میں اور جنات کے بھی رسول میں اور اس کی آئید اس صدیث سے ہوتی ہے جس میں نی میں ہے فرمایا میں تمام محلوق کی طرف بھیما کیا ہوں۔ امام مسلم روایت کرتے ہیں:

" دهزت ابو بریره بویلی وان کرتے بی کد رسول افتد بیجید نے فرایا جھے (سابق) انبیاء علیم السلام پر چه وجوه سے تعنیات دی
سی ہے۔ جھے جوامع العم (جس کلام میں الفاظ کم موں اور معنی زیادہ) مطاکے کے بیں۔ رصب سے میری مدد کی گئی ہے اور میرے
لیے غضمتوں کو طائل کر دیا گیا اور تمام رو بے زمین کو میرے نے آلہ طمارت اور معید بنا دیا اور جھے تمام کلوق کی طرف رسول
بنایا کیا اور انبیاء کی بعث بھے پر شتم ہوگئے۔

(سیح مسلم ' المسابد' ۵' (۱۳۳۵) ۱۳۳۷ سنن الرّزی " جه و آم المدعث: ۱۵۵۸ سنن این یاب شی او آم المدعث: ۵۱۷ سند احر' ج۴ و آم الحدیث: ۱۳۳۸ طبح بدید حاد الفکو)

٥- اس آیت می تنظید جنات کے مبلنین پر رسولوں کا طلاق کیا گیاہے ، سے ذکر کو مونٹ پر غلب دیا جا آے اور قر آن مجید
کی آیات میں صرف ذکر کو خطلب کیا جا آ ہے اور مونٹ پر بھی ذکر کے میند کا اطلاق کیا جا آ گے۔ وہ ذکر نس ہو تی۔
ای طرح جنات کے مبلنین پر بھی رسول کا اطلاق کر دیا گیا ہے ' مثانا کے جنات میں معروف اور مصطفح سفی میں رسول نہیں ہوتے۔
جنات کے مبلنین پر تغلیب رسول کا اطلاق اس لیے فربایا ہے کہ میدان قیامت میں صرف افسانوں اور جنات سے حماب لیا جائے گا اور جاتی ہے حماب لیا جائے گا اور جاتی ہے حماب لیا جائے گا اور جات کے لیے ایک طرح کا

ئ*ېي*ان!**نقر ان**

صلب لیاجائے گا' تو کویا میہ دو نوں ایک جماعت ہیں اور ان سے ایک خطاب کیا گیا۔

جنات کو دملوں والی آگ سے پیدا کیا گیا ہے اور افریان کو منی سے پیدا کیا گیا ہے اور اول کی خلفت الگ الل ہے۔ ان بیل بھی موس سے بھی موس اور کافر ہوئے ہیں اور الجیس دونوں کا دشمن ہے وہ ان کے کافروں سے دوستی رکھتا ہے اور ان کے موسوں سے عداوت رکھتا ہے۔ ان میں شیعد کدر سے اور مرحد و فیما فرقے ہیں۔ وہ حاری کتاب کی خلاوت کرتے ہیں اللہ تعالی نے جنات کا بے قول نقل کیا ہے:

وَالْمَا مِنْكَ اللَّهِ اللَّهِ المُعْرِدَ وَمِنَا دُوْدَ ذَ لِيكَ كُنَّا مَلْرَا ثِنَى فِدَدًا (الحرية)

منگوں میں متفرق میں۔ اور ہم میں مجمد اللہ کے فرمانبردار میں اور ہم میں کچھ

اور ہم میں ہے کچے نیک ہیں اور پکھ اس کے خلاف 'ہم کی

وَاتَّامِسَّا الْمُسْلِمُ وَرَمِينًا الْعَاسِطُونَ.

الحن: ۱۳ عاران يس-

پھراللہ تعالی نے مسلمانوں سے خطاب کر کے فرمایا ان کو دنیا کی ذندگی نے وجوکے میں رکھ ہوا ہے اور تیامت کے دن جب ان کے مصناء خود ان کے خلاف کوای دیں گے تو وہ اپنے شرک کااعتراف کرلیں گے۔

الله تعلق كالرشاوع: يه (كواى اس وجه سے لى كلى) كه آپ كارب بستيوں كو ظفا باك كرنے والا نسي ب ور آنحاليكة ان مي رہنے والے (شريعت سے) به خبر بوں- إلانعام: ١٠٠٠)

جن علاقوں میں اسلام کا پیغام نمیں پہنچا وہاں کے باشندوں کا حکم

اس آیت کا معن بے کہ اللہ تعالی نے جو رسولوں کو بھیجا ہے اور انموں نے نوگوں کو کفراور شرک پر مذاب النی نے ور الل ہے اس کی دید بید ہے کہ اللہ تعالی کے جب تک کی ور این کی در اللہ تعالی کی سنت جاریہ یہ ہے کہ جب تک کی تو میں اس کی دید بید ہے کہ اللہ تعالی کی سنت جاریہ یہ ہے کہ جب تک کی تو میں جبجا۔ اللہ توم کے باس اللہ کی طرف سے ایکان اللہ کی دعوت نہ جبجا۔ اللہ تعالی کا ارشاد ہے:

وَإِنْ مَنَ أَنَّةٍ إِلَّاحَلَاهِ عِهَالَدِيْرُ افاطر: ٢٥٠ م وَلَقَدُ بَعَنْسَا مِنْ كُلِ أَنَّةٍ زَّسُولًا إِنَّ اعْبُدُوا اللَّهُ وَاحْتَهِ بِرُواالطَّاعُ وُتَ (السحل ١٠٠٠) وَمَا كُنَّامُ عَذِيبَ لَ حَتْنَى نَسَعَتُ رَسُولًا

اور ہرقوم شیا کی۔ ڈرائے دالاگزر پکائے۔ اور بے فک ہم نے ہرقوم بی رمول بیما کہ اللہ کی مہادت کرداور شیطان سے بچ۔

ہم اس وقت تک عذاب وینے والے نہیں ہیں جب تک

ابنو اسرائيل ١٥٠ کهم د اول: پيج دي -

ان آنتوں سے یہ استدال بھی کیا جاتا ہے کہ جن طاقوں میں بالفرض اسلام کا پیغام نمیں پہنچا ان کے لیے صرف اللہ تعالی کے وجود اور اس کے واحد ہوئے کو مان ایما کافی ہے 'ان کی نجات ہو جائے گی۔

الله تعالیٰ کاارشادہے: اور ہرایک کے لیے اس کے عمل کے مطابق درجات میں اور آپ کارب ان کے اعمال ہے بے خبر جمیں ہے۔(الانعام: ۱۳۷)

آیا مومن جن جنت میں واخل ہوں سے یا نہیں؟

اس آیت کامعنی بید ہے کہ جن اور انس میں سے ہر فخض کو اس کے عمل کے مطابق برا ملے گی۔ اس آیت سے ابت بو آہے کہ مومن جن بھی جنت میں داخل بوں گے۔ حسب ذیل آیتوں میں بھی الله تعالی اس طرح فرایا ہے:

طِيانَ القر اَنُ

جلدسوم

أُولَيْكُ الَّٰدِينَ حَتَّى عَلَيْهِمُ الْفُولُ مِنَّ أَمْهِم فَدُخَلَتْ مِنْ فَبْلِهِمْ إِنَّ الْحِنْ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ كَأَنُوا خَيِيرِيْنَ ٥ وَلِيكُلِ دَرَجْتُ مِنْمَاعَيمُ لُوْاوَ لِيُوقِينَهُمُ أَعْمَالُهُمْ وَهُمُ لَا يُطْلَمُونَ 0

مطابق در جات جي " آگه ايند انسي ان ب كامون كايو را ايو را

(الأحقياف: ١٩-١٨)

اجردے اور ان پر یالک علم تبیں کیا جائے گا۔

ہے کرری جو لی قوموں میں ہے جن اور انس کے وہ ہوگ

میں جن ہر اللہ کی بات ہوری ہو کر دی اید یقیناً نقصان اٹھائے

والول میں ہے تھے اور ہر ایک کے لیے ان کے کاموں کے

یہ آعت اس پر دلالت کرتی ہے کہ انسانوں کی طرح جنات میں ہے بھی جو اطاعت گزار اور نیکو کار ہوگا'وہ جنت میں جائے کا اور جو ٹافریان اور ید کار کافر ہوگا' وہ دوزخ میں جائے گا۔ اس سئلہ میں زیادہ سمجے قبل میں ہے' اس کے برطاف بعض علماء کی رائے یہ ہے کہ جنات جنت میں ضمیں جائیں ہے۔ (الجامع لادیام افتر آن اجرے اس ۸۰مطبوعہ داد الفکو ایروت ۱۳۱۵ء) جنات کے دخول جنت کے متعلق علاء کی آراء

علامه احمد شهاب الدين بن الجرافيتي المح المتوفي حدومه لكيمة بي:

علاء کااس پر اتعاق ہے کہ جنات میں ہے کافروں کو آخرے میں عذاب دیا جائے گا۔ امام ابو صنیغہ 'ابوالزیلو 'لیٹ بن انی سلیم ے یہ روایت ہے کہ جنات میں ہے موسنین کو آ فرت میں کوئی ٹواب نہیں ہو گا سوااس کے کہ ان کو دوزخ ہے نجات ہو جائے گی۔ پھر حیوانوں کی طرح ان ہے بھی کما جائے گاکہ تم مٹی ہو جاؤ اور سمجے قول دہ ہے جس کو انی ابن کیلی او زامی المام مالک 'امام شافعی اہم احد اور ان کے اصحاب نے کما ہے کہ ان کو ان کی عمادات پر تواب دیا جائے گااور اہم ابو صنیفہ اور ان کے اصحاب رمنی الله متم سے مید معقول ہے کہ جنت جس ہے موشین جنت میں داخل ہوں گے۔ بیہ قول ابن حزم نے جمہور ہے نقل کیا ب اور اس پر سورة الانعام كى اس آيت ك استدلال كياب ولسكيل در حيات ميمها عيد اوا ١٣٠١) كو تك اس آيت كوجن اور انس کے ذکر کے بعد ذکر کیا گیاہے اور الم ابوائینے نے معرت ابن عماس سے روابت کیا ہے کہ کل ملا تکہ جنت میں بوں ک اور کل شیاطین دو زخ میں ہوں کے اور جنت لور دو زخ دونوں میں انسان اور جن ہوں گے۔

(فأوي عديث من ١٦ مطبور ملبد مصطفى البال علبي وأولاده بعصو ١٣٥٦ه)

مسلمان جنوں کے جنت میں داخل نہ ہونے کے ولا کل

الم عبد الرحمٰن بن محربن اور لي رازي ابن اني عاتم متوفي ٢٢مه ووايت كرتے بي:

عجام بیان کرتے ہیں کہ حضرت ابن عباس نے فرمایا موس جن جنت میں داخل نہیں ہوں سے جمیو تک وہ البیس کی اولاد میں اور الجيس كي اولاد جنت جي واخل شيس يوكي- (تميرالهم ابن الي مائم "ج-١٠مي ١٠٥-٣١٠)

الم ابوات عبدالله بن محد اصفهاني متولى ١٩٣١مه دوايت كرست بن

سلمہ نے کماکہ جن جنت میں داخل ہوں گے نہ پار میں "کیونکہ اللہ تعالی نے ان کے باپ کو جنت سے نکال دیا۔اب وہ ان ے باپ کو جنت بیں او ٹائے گاند ان کو۔ (آباب العظمت او قم الحدیث: ۱۲۷ مطبوعہ واو الکتب اعظمیہ ایروت ۱۳۱۳ مارو) سلمان جنوں کے جنت میں واخل ہونے کے ولا کل

المام عبدالرحمٰن بن محمد بن اوريس رازي ابن ابي حاتم متوفي ٢٢٣ه هدروايت كرتي بين:

يعقوب بيان كرتے بيں كه ابن الى ليلى نے كماك جنوں كو تواب فے كااور اس كى تقديق قرآن مجيد كى اس آيت ميں ہے : وَبِكُلُ درجمتُ مِّنَاعُملُوا(الاحقاف،١٩) اور (جن دانس میں سے) ہرا یک کے لیے ان کے عمل کے

ضِيانَ القر أنْ

مطابق دو جات میں۔

(تغييرا مام ابن الي حاتم مج ١٩ مص ١٣٨٩هـ)

الم الوالشيخ عبدالله بن محراصفهاني متوفى ١٩٣٥ ودايت كرتي بين

ضحاک بیان کرتے ہیں کہ صفرت ابن عباس رضی اللہ عظمانے فرملیا تقلوق کی جار فقمیں ہیں۔ ایک قتم کمل جنت میں جائے گئ وہ فرشتہ ہیں اور دو سمری قتم کل دوزخ میں جائے گئ وہ شیاطین ہیں اور مخلوق کی دو قسمیسی جنت اور دوزخ میں جائیں گئے۔ وہ جن لور افسان ہیں ان کو تو آپ بھی ہو گالور عذاب بھی ہو گا۔ اکتب العظمت اوقی الدر ہے اسلام سلور ہیروت)

منحاک نے کماجن جنت میں داخل ہوں کے اور کھا کیں اور پیکس کے۔ اکتب العظمت اوقی الدین الا مطبور ہیروت)

ار طاق بن المنذر نے خمر آبن صبیب سے ہو چھا کیا جن جنت میں داخل ہوں گے ؟ انہوں نے کما پی اور اس کی تصدیق اللہ عزوم کی تکب میں ہے۔

الرحس: ٥١) ك

انہوں نے کماجنوں کے لیے جنت میں جنیات ہیں اور افسانوں کے لیے انسیات ہیں۔

اکتاب العظمت ارقم الهریث: ۱۱۲۳ مطبوط بردت) حرف بیان کرتے میں کہ این دہب سے سوال کیا گیاکہ آیا جنوں کے لیے تواب اور عذاب ہو گا؟ این دہب نے کما اللہ تعالی فرما آئے:

> وَحَقَى عَلَيْهِمُ الْفَوْلُ هِنَى أَمْمِ فَدْحَلْتُ مِنَ فَيْ الْمُعْمِ فَدْحَلْتُ مِنَ فَيْ الْمُعْمِ فَالْوا فَيُلِهِمُ قِبْنَ الْيَعِيِّ وَ الْاِلْسِ إِنَّهُمْ كَالُوا وَ خَيِيرِيْسَ 0 وَلِكُلِّ دَرَحِتُ يِسْتَا عَمِلُوا وَ لِيُوفِيْنِهُمْ آعُمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ 0

(الأحقاف: ١٨-١٨)

یے گردی ہوئی قوموں میں ہے جن اور انس کے وہ نوگ ایس جن اور انس کے وہ نوگ ایس جن اور انس کے وہ نوگ ایس جن جن اور انس کے بات ان انسان انسان والوں میں ہے جن اور جر ایک کے لیے ان کے کاموں کے مطابق درجات ہیں ' تا کہ اللہ انسی ان کے کاموں کا پر را پر را اجر در اور اور الجر دا اجر دے اور ان کر یا تکل ملم تمیں کیا جائے گا۔

(كأب العظمته وقم الديث: ١١٦٣ مطبوعه بيروت)

قرآن مجید کے ان داشتے دلا کل کے اعتبار ہے انہی علاء کا نظریہ در ست ہے' جو کہتے ہیں کہ مسلمان جن جنت میں جا تمی کے اور کافر جن دونر قیمیں۔

الله تعالیٰ کاارشاد ہے: اور آپ کا رب بی مستنی 'رحت والا ہے' اگر وہ چاہے تو تنہیں لے جائے اور تساری جگہ جن توگوں کو چاہے لئے آئے 'جس طرح تم کو ایک اور توم سے پردا کیا ہے۔ (الانعام: ۱۳۳) اللّٰہ تعالیٰ کے مستنفیٰ ہونے کامعنی

اس آیت کامعنی ہے ہے اے محما (صلی اللہ علیک وسلم) آپ کے رب نے اپنے بندوں کو بعض کام کرنے کا تھم دیا ہے اور بعض کاموں ہے منع کیا ہے اس کا بیہ تھم دینا اپنے کسی فائدہ 'کسی غرض یا کسی عوض کے لیے نہیں ہے ' بلکہ ان کو اپنی عبادت کرنے اور ان کا تفع اور ان کا منع اور ان کا تفع اور ان کا منع اور ان کا تفع اور ان کا منعمان اس کے ہاتھ بھی ہے ' دواس کے ممل طور پر محمل جی ہے۔ اس لیے ضروری ہے کہ وہ عبادت کر کے اپنی احتیاج اس کے کا منتصان اس کے ہاتھ بھی ہے ' دواس کے ممل طور پر محمل جی جی اس کے ضروری ہے کہ وہ عبادت کر کے اپنی احتیاج اس کے

نبيان القر آن

جلدسوم

سامنے ظاہر کریں ' آگہ وہ ان پر اپنالف و کرم اور اپنافشل واحسان کرے نیز گناہوں کی آلودگی اور معصیت کے زنگ ہے ان کی روحیس مکدر اور ظلمانی ہوں گی۔ اس لیے ارواح بشریہ اور نفوی انسانیہ کو معلمین اور ایرار کے درجہ میں بہنچ نے کے لیے ضروری ہے کہ ان کو آطاعات و عبادات کی ترفیب دی جائے اور ممنوعات اور مخاہوں ہے باز رہنے کی تخفین کی جائے۔ سواس کے فرایا کہ آپ کا رہ مستعنی ہے ایعنی اس کو بندوں کی اطاعت اور عبادت کی اطلباج نبیں ہے۔ وہ رحمت والا ہے 'اس لیے یہ احکام اس کی رحمت کا تفاضا ہیں ' آگر اس کے بندے وائی فوزو فلاح حاصل کر سکیں۔ استغناء اور رحمت کا اللہ تعالیٰ ہیں متحصر ہو تا

الله تعالى كے مستنى اونے پر يدوليل ہے كد أكر وہ مستنتى ند بو تو وہ اپنے كمال كے حصول ميں غير كامحان بو كااور جو محاج ہو دہ خدا نمیں ہو سکت اور یہ کلام مفید حصرب ایعنی اس کے سوالور کوئی مستنی نہیں ہے ایجو تک واجب لذات واحدی ہو تاہ اور اس کے مامواسب ممکن ہیں اور سب اس کے مختاج ہیں۔ای طرح رحم فرمانے والا بھی دی ہے اس کے سوااور کوئی رحم كرف والما نسي ب- أكر كوئى يه اعتراض كرے كه بم ديكتے بين كد لوگ ايك دو سرے ير د حم كرتے بين بموے كو كھانا كھلات میں ' پیاے کو پانی پلاتے میں قوہم کمیں کے کہ اگر اللہ تعالی کھانے پینے کی جزیں پیدانہ کرتا اور کیے کھلاتے اور پلاتے اور اگر یہ چزیں پیدا کر دی تغیس پھر بھی اگر رقم کرنے والے بیں اتن قدرت نہ ہوتی کہ وہ ان چیزوں کو حاصل کر سکتا تو وہ کیسے ان کو کھلا تہ اور پالا آ؟ اور اگر تدرت بھی ہوتی میکن اس کے ول میں اللہ تعنالی رحم کا جذب پیدانہ کر آبو وہ کیسے کھانا آباور پالآ؟ اور اگریہ سب یجہ ہو تا لیکن جس کو کھلانا پلانا ہے "اس بیس کھانے پینے کی قدرت نہ ہوتی 'حثلاً اس کے مندیں باسور ہو تا یا اس کااوپر کاجیزا نجلے جبڑے پر بیٹے جا آاور اس کامنہ بند ہو جا آاتو وہ کیے کھا آپتا؟اوریہ کیے اس کو کھلا آاور پلا آ؟ پس فور سیجنے کھانے پینے کی چیزیں الله تعالی نے پیدا کیں ان کے حصول کی قدرت بھی اس نے دی ول میں رحم کا مذبہ بھی اس نے پیدا کیا محو کے اور پانے می كمانے اور ينے كى صلاحيت اور قدرت بھى اس نے دى تو دى رحم كرنے والا ب، بندے نے كياكيا ب، گربنده كار حم كرناكسى غرض اور سمى موض كے ليے ہو آئے مجمى مابق احمان كوا آرنے كے ليے رحم كر آئے مجمى وتيا يس تعريف مجمى آخرت بيس اجركے ليے رم كرتا ہے المجى اس ليے رحم كرتا ہے كہ وقت پڑنے پر اس پر جى رحم كيا جائے اور بمى اس ليے كه كمى ضرورت مند کود کچھ کراس کے دل میں جو رفت پیدا ہوتی ہے 'اس کو زائل کرنے کے لیے رقم کر باہے۔ مویندہ جو رقم کر باہے 'اس میں سمی فرض یا سمی عوض کی احتیاج ہوتی ہے اور ان اسباب کی احتیاج ہوتی ہے جن کاہم نے پہلے ذکر کیا ہے۔ اور جو ہر سبب ہر عوض اور ہر فرض سے مستنی ہو کرر حم کرتاہے وہ صرف اللہ عزوجل ہے۔ای لیے فربلا آپ کارب بی مستنی ہے اور وہی رحمت والاب

اس آیت میں چونکہ رحت کاذکر فرمایا ہے اس وجہ ہو سکتا ہے کہ کوئی مخص یہ کمان کر آئر اللہ تعالی کی دعت ای جمان کے ماتھ مخصوص ہے۔ اس کے اللہ تعالی نے فرمایا کہ اگر اس جمان کے توگوں نے اس کی اطاعت نہیں کی تو وہ اس جمان کے کوگوں نے اس کی اطاعت نہیں کی تو وہ اس جمان کے کوگوں نے اس کی اطاعت نہیں کی تو وہ اس جمان کے کوگوں کو ایک اور نسل سے پیدا کر چکا ہے اور اس سے واضح کے لوگوں کو فاکر کے ایک اور تو م کو بید اکر دے گا ہے معنی نہیں ہے کہ اس کی رحمت کمی ایک قوم کے ماتھ مخصوص ہے ، بلکہ وہ ہر توم سے مستنی

الله تعلق كاار شاديد: ب شكر (روز قيامت) كالم بعده كيا كياب وه ضرور النوالاب اور تم (الله كو) عايز كرية والنياع المور الانعام: ١٠٠٠)

جس چیز کاتم سے دعدہ کیا گیا ہے 'اس کی تغییریہ ہے کہ ان سے قیامت کا دعدہ کیا گیا تھا اور وہ اس کا انکار کرتے بتھے۔ انتہ تعالیٰ نے فرمایا جس کا تم سے وعدہ کیا گیا ہے وہ آنے والی ہے اور تم اللہ کو اس کے لاتے سے عابر کرنے والے نہیں ہو۔ اس میں اور بھی کی احتال میں کہ مسلمانوں سے جو ثواب کا وعدہ فرمایا ہے اور کفار اور منائقین کو جو عذاب کی وحمید سنائی ہے 'وہ بھی آنے والی ہے۔

الله تعالى كاارشاوي: آپ كئے: اے ميرى قوم اتم اپنى جگه عمل كرتے رہو جن (اپنى جگه) عمل كرنے وارا ہوں سو
تم عنقريب جان او مے كه آخرت جن كس كا انجام المجاب " بيد تك خالم قلاح نمي باتے (الافعام ١٣٥)

اس آيت كا معنى يہ ہے كہ تم اپنے طریق كار پر قائم رہو جن اپنے طریق كار پر قائم ہوں... اگر اس پر بيد اعتراض كيا جائے كه
كفار كو كفر كے طریقہ پر قائم رہنے كا تھم كس طرح درست ہو سكتا ہے؟ اس كاجواب يہ ہے كہ بيد تھم مكفت كرنے كے ليم نميں
ہے ؛ بلكہ تمديد اور مرزش كے طور ير ہے 'جيساكہ اس آيت جن ہے:

موج جا با الحال لا عداورج جا ب كفركر عد

فَمَنْ شَاءُ فَلْيُؤْمِنُ وَمَنْ شَاءُ فَلْيَكُمُورُ

(الكهف: ٢٩)

اوراس تديد راس آيت كاير "فرى جمله والات كرياب موعقرب تم جان او يك كد آخرت مي كس كاانجام امجاب

وَجَعَلُوا لِلْهِ مِمَّاذَكُم آصِ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ

اور ابنول سف الله كى پيل كى برق كيتيول اور مويشيول بي سے ايك حصة الله

نَصِيْبًا فَقَالُوا هَا أَرْتُهِ بِزَعْمِهِ مُوهِ وَهَا الشَّرَكَايِنَا عَمَا كَانَ

كے بے مؤركر اور برم ويل ميك كريا اللہ كے بيے ہے اور مارى خركا وكے بيے ہے ، موجوحتمال كے

لِشْرَكَاءِمُ فَلَايِمِلُ إِلَى اللَّهِ وَمَا كَانَ بِلَّهِ فَهُو يَصِلُ

شرك كه يله ب ده اند ك ون بس يتي الدج معة اند كه يه ب ده ان ك شرك ك وات

إلىشركاءِمُ سَاءَمَا يَحُكُمُونَ®وَكُنُولِكَ زَيْنَ لِكَثِيْرٍ

بنے با ہے ، یہ وک کی بڑا فیعد کرتے ہیں ٥ ای طرح بستے مشرکین کے ہے ان کے

مِنَ الْمُشْرِكِينَ قَتْلَ آوْلَادِهِمْ شُرْكًا زُهُمُ لِيُرْدُوهُمُو

شركاء سف ان كى ادلاد ك تل كرف كر من كر ديا تاكروه اينى بلاك كردي الد

ڸؽڵڛڛۘۅٛٵۘۘۼڮڣؚۿڔؽڹۜۿؙۿ۫ٷٙڶۅ۫ۺٚٵۼٵۺ۠ۿٵۼۼڵۅؙڰؙڣۜڬۯۿۿ

ان پر ال کے وین کر مشیتہ کر ویں۔ اور اگر اخد جابتا تو وہ یہ کا) دکرتے ہو آب ان کواور

طِيانَ القر اَن



ہیں اور ان کے دیگر جاہلانہ اتوال کی ترمت کی تھی اور ان کی عشل اور سوچ کاضعف اور فساویان فرمایا تھا۔ ان کی ان ہی جمالات میں سے آیک یہ جمالات تھی کہ وہ اپنی ور کی پیراوار اور مویشوں میں سے پچھ حصد اللہ تواتی کے لیے مخصوص کر دیتے اور پچھ حصد اللہ تواتی کے لیے اور یہ ان کا محض جموث تھا حصد اپنے بتوں کا ہے اور یہ ان کا محض جموث تھا اور یہ بتوں کا ہے اور اپنے بتوں کا محالات میں بھوٹ تھا اور یہ جموث اس لیے تھاکہ انہوں نے اللہ کی پیراکی ہوئی چیزوں کے دوجھے کیے۔ ایک اللہ کا اور ایک بتوں کا حالاتک میں بچھ اللہ تا کہ اللہ کی محلیت ہے۔

الله تعالی نے فرمایا سوجو حصہ ان کے شرکاء کے لیے ہے وہ اللہ کی طرف نہیں پنچا' اور جو حصہ اللہ کے لیے ہے وہ ان ک شرکاء کی طرف پننچ جاتا ہے۔ اس کی تغییر میں حسب زمل اقوال ہیں:

۱۰ حضرت ابن عباس بریزی نے فرلما جن پھلوں کو انہوں نے اللہ کا حصہ قرار دیا تھا اگر ان جس ہے کہ پھل شیطان کے حصہ میں گر جاتے تو ان کو چنو مصد میں گر جاتے تو ان کو چن حصہ میں گر جاتے تو ان کو چن حصہ میں گر جاتے تو ان کو چن کر ان کی حفاظات کرتے اور ان کو شیطان کے حصہ میں ڈال دیتے۔ اس طرح اللہ کے حصہ کی تھیتی میں بانی دیتے ہوئے اگر پچر پانی کھیت سے بانی تعلق میں بانی دیتے ہوئے اگر پچر پانی کھیت سے نکل جا آتو اس کو تعلق دیتے اور شیطان کے حصہ کی تھیتی میں بانی تعلق الگاتو اس کو روک لیتے۔

۴۔ حسن نے کمااگر جوں کے لیے رکھے ہوئے حصہ میں ہے کوئی چیز قراب ہو جاتی تو اس کے بدلہ میں اللہ کے حصہ میں ہے اتنی چیزاٹھا کر بتول کے حصہ میں رکھ دیتے اور اگر اللہ کے رکھے ہوئے حصہ میں ہے کوئی چیز قراب ہو جاتی تو اس کے بدلہ میں بتول کے حصہ میں ہے کوئی چیزنہ اٹھانے۔

۱۰ گادوئے کما اگر قبلا آجا آباتو اللہ کے حصہ میں رکمی ہوئی چڑوں کو کھانے پینے کے کام میں لاستے الیکن ہوں کے حصہ میں رکمی ہوئی چڑوں کو ای طرح محفوظ رکھتے۔ (جامع البیان 'جز۸' میلاہ-۳۵' ملحسا مطبوعہ داد الفکو 'جروت '۱۳۱۵ھ) اس تقسیم کی ڈرممت

الله تعالی نے فرایا ہے یہ لوگ کیما برا فیملہ کرتے ہیں؟ اس فیملہ کے برے ہونے کی حسنب ذیل وجوہ ہیں: ا- پھلوں اور غلہ کی حفاظت میں انہوں نے اللہ تعالی کے حصہ پر بتوں اور شیطان کے حصہ کو ترجے ہی۔

۲- انہوں نے از خود پچھے حصہ بتوں کے لیے مخصوص کیا 'اور پچھے اللہ کے لیے ' حالا تکر سب اللہ تعالی کا پیدا کیا ہوا تھا' یہ ان حدالہ میں سر

۳۰ حسول كى يە تختىم انوں نے بغير كى مقلى اور شرى ديل كے كى اور يدان كى جمالت ب-

۳۰ پھلوں اور مویشیوں کی پیدائش میں بتوں کا کوئی دخل نعی ہے نہ وہ ان پھلوں اور مویشیوں سے کوئی نفع عاصل کر یکتے ایں 'تو پھر پتون کے لیے پھلوں اور مویشیوں میں سے حصہ رکھنالور اس کی حفاظت کرنا محض ان کی جمالت ہے۔ ان وجوہ سے ملام ہو کمیا کہ مشرکین کانے بہت پراٹیصلہ تھا۔

الله تعالیٰ کاارشادے ، اس طرح بہت ہے مشرکین کے لیے ان کے شرکاء نے ان کی اولاد کے قتل کرنے کو مزین کر رہا۔ دیا' آپا کہ وہ انہیں ہلاک کرویں' اور ان پر ان کے دین کو مشتبہ کر دیا اور اگر الله چاہتا تو وہ یہ کام نہ کرتے' سو آپ ان کو اور ان کی افترا پر داڑیوں کو چموڑ دیجئے۔ (المانعام ، ۱۳۵)

آیات سابقہ سے ارتباط

اس آیت کامعنی یہ ہے کہ جس طرح اللہ تعالی اور بنوں کے ملے پھلوں اور مویشیوں کی تقسیم کرنا اینے خالق اور منعم کی

نبيان القر أن

معرفت سے نمایت جمالت تھی' ای طرح شیطان کے ورغلانے ہے اپی لولاد کو قبل کرنا بھی ان کی نمایت جمالت اور ممرای ہے۔ اس سے معلوم ہو آہے کہ ان کے احکام اور افعال نفو اور باطل ہونے میں ایک دو سرے کے مشابہ ہیں۔

مجند نے بیان کیا ہے کہ ان کے شیاطین نے ان کو یہ تھم دیا کہ یہ اچی اولاد کو قتل کردیں ' آ کہ رزق میں کی کی دجہ سے ان کو اولاد کی پرورش کرنے میں کوئی پریٹانی نہ ہو۔ اور بعض نے یہ کما کہ شیطان نے ان کو تھم دیا کہ وواجی بیٹیوں کو قتل کردیں ' آ کہ بٹی کے بلپ کو جس عار اور ذات کا مامناہو آ ہے 'اس سے یہ بچ جا کیں۔

[جامع البيان ٤٠ ٨ م م ٥٥ مطبوم داد الفكو بيروت ١٣١٥ ه)

خاندانی منصوبه به یمی کی ترغیب اور تشهیر کا شرعی تم

شیطان نے جو ان کے لیے تحل اولاد کو مزین کیا تھا 'اس کی ایک دجہ یہ تھی کہ شیاطین نے ان کے دلوں میں یہ خوف ڈالا ک اگر بچے زیادہ ہو گئے تو ان کی پردرش مشکل ہوگی' سووہ تھی رزق ہے ڈورے اپنے بچوں کو قتل کر دیتے تھے' جیسا کہ قرآن مجید میں ہے۔

وَ لَا تَغَمَّلُوا اَوْلاَدَ كُمْ خَشْيَةً إِمُلاَ فِي مَحْسُ اورالِ اولاد كوفاق كؤرے قل دروي مَرْدُفْهُمْ وَاتِهَا كُمْ الاسراء: ٣١) ديتي اور قهيں جي۔

آن کل حکومتی ذرائع فشرد اشاعت ہے صبط والد اور خاندانی مصوبہ بندی کابت زیردست پروپیگنڈہ کیاجا آہ اور ہد کہا جا آپ کہ کم نیچاور خوش حال گھرانااور یہ کہاجا آہ کہ تیام پاکستان ہے اب تک (ے او مقاری سرال میں خلک کی آبادی تقریباً جار کئی ہو چک ہے اور خوش حال گھرانااور یہ کہاجا آپ کی تعریباً جار گئی ہو چک ہے اور خلک کی بیامتی ہوئی آبادی کے اس سیلاب کے آگے بند بائد هنا ضروری ہے۔ خلک کے درائل آبادی کے اس سیلاب کے متحمل نہیں ہیں اس لیے ہے وہ می اجتھے۔ لیکن خاندانی منعوبہ بندی اور ضبط تولید کی بنیاد بنتی رزق کا خوف ہے اور یکی زمانہ جمالت میں کافروں اور مشرکوں کا نظریہ تقلہ جس کا قرآن مجید نے مختل کی ساتھ روکیا ہے اور نبی میں ہیں۔ یہ اور دیا ہے اور نبی میں ہیں ہیں۔ یہ اور دیا ہے اور نبی میں ہیں۔ یہ دوریا ہے کہ دوری ہی ہیں۔ یہ دوریا ہے کہ دیا تھوں کی جا کھی۔

المام ابوداؤد سليمان بن اشعث متوتى ١٥٥ مد روايت كرتے بين:

حضرت معمل بن بیاد چین بیان کرتے ہیں کہ ایک فض نے نی چین کی خدمت میں حاضر ہو کر عرض کیا ' جھے ایک عورت فی ہے جو بہت خوبصورت اور عمدہ خاندان کی ہے ' کین اس سے نکج تمیں ہوتے (وہ بانجھ) ہے اکیابی اس سے نکاح کر بول ؟ آپ نے فرمایا تمیں اوہ دوبارہ آیا اور پھر اجازت طلب کی ' آپ نے پھر منع فرمایا۔ اس نے تبسری مرتبہ آکر اجازت طلب کی ' آپ نے پھر منع فرمایا۔ اس نے تبسری مرتبہ آکر اجازت طلب کی ' آپ نے نکاح کر آپ نے فرمایا مجب کرنے والی اور بچہ بردا کرنے والی مور توں سے نکاح کر اپ کو نکہ بے شک میں تمہاری کشرت کی دجہ سے دو مری امتوں پر فرکرونی گا۔

(سنن ابرداؤد 'ج'ار قم الحديث: ٢٠٥٠ سنن بقسائی 'ج' رقم الحدیث ۲۳۲۷ میج این حبان 'جه' و قم الدیث: ۲۰۵۷ ۴۰۵۷ ۴۰۵۸ ۲۰۱۸ سنن سعیدین منصور ' رقم الحدیث: ۴۴۰ مند احر 'ج۳امی۴۳۵۵ ۴۸۴ سنن کیری للیمقی 'جد می ۸۱-۸۲ مجمع الزوائد 'ج ۴ می ۲۵۲-۲۵۸ المتیم الاوسلا 'جه' و قم الحدیث: ۴۲۷۷)

قرآن مجیدی اس صریح آبت اور اس مدیث مجیح کاماف اور صریح مثناء اولادی کشت باند که اولادی قلت اس لیے خاندانی منصوبہ بندی اور منبط تولید کاوسائل پیداوار میں کی کی بنیاد پر پروپیکندہ کرنا اسلام کے خلاف ہے اور اس کو کسی جری قانون کے ذریعہ عوام پر لاکو کرنا شرعاً جائز نہیں ہے البت اسمی مجیح شرعی عذر کی بناہ پر جدید غبی طریقہ سے منبط ولادت کو روکا

غيان القر أن

جلے تورد جازے۔

ضبط تولید کے بارے میں مصنف کی تحقیق

خاندانی منعوبہ بندی کو تکی عام قانون کے ذریحہ جمرا تمام مسلمانوں پر لاگو کر دیا جائز نمیں ہے کیے نکہ اول تو اس کی اباحت
تمام مکاتب فقہ کے نزدیک متفق علیہ نمیں ہے۔ شخ ابن جزم اور علامہ دویانی عزل کو باجائز قرار دیتے ہیں اور بعض فقہاء کر اہت
کے ساتھ اس کی اجازت دیتے ہیں اور جو فقہاء اس کی بلا کر اہت اجازت دیتے ہیں وہ اس کو بیوی کی اجازت کے ساتھ مشروط
کرتے ہیں۔ اس لیے خاندانی منصوبہ بندی کو کمی عام قانون کے ذریعہ ہم محض پر لازم کر دیتا شرعاً جائز نمیں ہے اور افغراوی طور
پر بھی دو صور توں میں خاندانی منصوبہ بندی اصلاً جائز نمیں ہے۔

(الف) کوئی فض علی در آن (حسبة الملاق) کے فوف کی وجہ منبط توزید کرے میاس لیے تامازے کہ اس کا حرمت کی علمت ہونا قرآن مجیدی منصوص ہے لا تفت لوا اولاد کے حسبة الملاق (اسراء ، ۱۰۰۰)

(ب) کوئی فض ٹرکول کی ہدائش ہے احراز کے لیے منبط تولید کرے کی تک ان کی تزویج میں مشقت اور عار کا سامنا کرنا پڑتا ہے اور یہ نیت زمانہ جالمیت کے مشرکین عرب کی ہے۔ قرآن اور صدیث میں اس کی بہت زیاد ذمت کی گئی ہے۔ جن صور توں میں مخصوص طلات کے تحت افغرادی خور پر منبط تولید جائز ہے اور حسب ذیل ہیں:

(الف) لونڈیوں سے منبط قراید کرنا کا کہ اولاد مزید لونڈی اور قلام بنے سے محفوظ رہے ہر چند کہ اب نونڈی قلاموں کا رواج نہیں ہے اسکین اسلام کے احکام وائی اور کلی ہیں۔ اگر کمی زمانہ میں یہ رواج ہو جائے قو لونڈیوں کے ساتھ منبط تولید کا عمل جائز ہوگا۔

(ب) اگر سلسلہ قراید کو قائم رکھے ہے مورت کے شدید بھار ہوئے کا فدشہ ہوقہ ضبط قراید جائز ہے۔ (ج) اگر مسلسل پیدائش سے بچل کی تربیت اور محمد اشت بھی حمیح کا فدشہ ہوقو دیتھے ہے پیدائش کے لیے صبط قراید جائز ہے 'کیونکہ جب محرجی مرف ایک مورت ہواور نو دس باہ بعد دو مرائجہ آ جلئ' قواس کے لیے دونوں بچوں کو سنبھالنا مشکل ہو آہے۔

(۱) حمل اور وضع حمل کے وقفوں کے دوران بعض صور توں میں انسان اپنی خواہش ہوری نبیں کر سکتا'اس لیے زیادہ عرمہ تک بیوی ہے جنسی خواہش ہوری کرنے کی نبیت ہے منبط تولید کرنا جائز ہے۔

(د) بعض عورتوں کو آپریش سے بچہ ہو آب وی کو آپریش کی تکلیف اور جان کے خطروے بچانے کیلئے یہ عمل جائز ہے۔ (د) جب پیٹ میں مزید آپریش کی مختبائش نہ دہے تو ہیما طریقہ القیار کرنا واجب ہے 'جس سے سلسلہ تولید بالکیہ بند ہو عائے۔

(ز) اگر البر ڈاکٹرید کے کہ مزید بچہ پیدا ہونے سے حورت کی جان خطرہ میں پڑ جائے گی 'تب بھی سلسلہ تولید کو بند کرناوابب ۔

هیان القر ان

عمل کے بعد مورت مجمی بھی بچہ پیدا کرنے کے قاتل نعی رہتی ہے عمل صرف دو صورتوں میں جائز ہے۔ ایک اس صورت میں جب عورت کا آپریش سے بچہ پیدا ہو آبواور مزید آپریش کی مخبائش ند رہے اور دو مری اس صورت بس جب کوئی ماہر ڈاکٹر بید کے کہ بچہ پیدا ہوتے سے یا مزید سے پرا ہونے سے مورت کی بلاکت کا خطرہ ہے۔ ان صورتوں میں ال بندی صرف جائزی نبيس لك واجب هي

منبط تولید کا ایک طریقتہ شرعامنوع ہے اور وہ ہے نس بندی (Vasec Tomy) اس ممل میں مرد کی جن بالیوں سے تولیدی جراؤے (Sperm) گزرتے ہیں "ان پانیوں کو کاٹ کر بائدہ دیا جاتا ہے۔ اس عمل کے بعد مرد میں بچہ پیدا کرنے کی ملاحیت بیشہ کے لیے فتم ہو جاتی ہے۔

نس بندی سے بسیاک بیان کیاجاچکاہ مرد بانچھ ہو جا آہ اور مرد کااے آپ کو بانچھ کرالیما جائز نمیں ہے ہم کو کا انسان ا پنے جسم کا فود مالک نمیں ہے 'انسان فود کو بچ سکتا ہے نہ خود کشی کر کے خود کو فتح کر سکتا ہے 'نہ اپناکوئی عضو کا کے کر کسی کو دے سكتا ب اى ليے اسلام ميں اعضاء كى بوند كارى بھى جائز نميں ہے۔ ما بريں نس بندى بھى جائز نميں ہے۔ معج مسلم كى يہ مديث كزر يك بك بعض محابد في مرت كى يناه ير رسول الله يجيز سے ضى اون كى اجازت طلب كى تو اپ ان كو اجازت نيس دي اور شوت كم كرتے سك ليے روزے د كھنے كا حكم ديا۔ اسمج مسلم على اسم معهد مطبور كراجي)

استقرار حمل کو رو کئے کے لیے کولیاں کھائی جائیں "كيميائی اشياء نگائی جائیں يا خارجی حائل (سائتی اور جعلہ وفيرہ) كا استعال کیا جائے۔ ان میں سے کوئی چیز بھی عمل سے رکلوٹ کا بھینی سبب نہیں ہے۔ بسااد قات دوا نمیں اور کیمیادی اشیاء اثر نسیں کرتیں ابعض مرتبہ ڈایا قرام کے استعل کے باوجود قطرات وحم میں چلے جاتے ہیں اور حمل ہو جاتا ہے اور بعض او قات معد کے استعمال کے باوجود حمل ہو جا آ ہے اور بعض او قات کنڈوم (ساتھی) پیٹ جا آ ہے اور قطرے رحم میں چلے جاتے ہیں۔ دے گاور یہ بار بامثابہ ہواک منبط تولید کے تمام ذرائع استعال کرنے کے باوجود یچے پیدا ہو جاتے ہیں اور بعض او قات جزوال يج بحي بيرا موجاتے بيں۔

علاوہ ازیں ان تمام چیزوں کے معنرا اڑات بہت زیادہ جیں۔ بعملہ اور ڈایا فرام کے استعال ہے الرحی اور انفیکش کی شکایات عام بیں اور کھانے والی دواؤں سے سناکیا ہے کہ چھاتی کا کینمر ہو جاتا ہے۔ انسان جب مجی الله تعالی کے بنائے ہوئے فطری اور طبی نظام سے مث کر کوئی کام کرے گا مشکلات میں کر فار ہو گا۔ اس لیے ناکز پر طلات کے علاوہ صبط تولید سے احرّاز کرنا

الم غزالي في النيخ ذمائے علات مردريات اور وسائل كے اعتبارے عزل كى بانچ صور تمل بيان كى بيں۔ ايك صورت حرام 'ایک بدعت 'اور تین صور تی جائز قرار دی ہیں۔اب جو تک نرتی یافتہ دور ہے 'بہت سے نے اسباب اور و سائل وجود میں " مجلے ہیں 'اور ضروریات اور نقاضے بھی بڑھ گئے ہیں اور مسائل بھی زیادہ ہیں۔ اس اعتبارے ہم نے صبط تولید کی نو صور تھی بیان کی بیں اجن میں پانچ میاح (جائز بیں) دو تاجائز ہیں۔ اور دو صور توں میں سلسلہ توکید ختم کرناواجب ہے۔ ان میں عورت کی نسوانی انڈول والی نس (Fallopian Tube) کو کلٹ کرباعدہ دیا جاتا ہے ' یا کہ یہ نسوانی انڈے رحم میں نہ راخل ہو سکیں' اس عمل کو نمل بندي (Tubal Ligation) کتے ہیں۔

بعض لوگوں کو میہ پریشائی ہوتی ہے کہ قرآن مجید میں ہے و سامین دامة می الارص الاعلی الله ررقبها (عود ١٦)

زین پر چلنے والے جرجاندار کارزق اللہ تعالی کے زمد ہے اس لیے خاندانی منصوبہ بندی پر عمل کرنااللہ تعالی کی رزاتیت پر توکل ك خلاف ٢٠١١ إلى اوكول م من به كتابول كر جب الله توالى في رزق كاذر في الماب أود صول رزق ك في نوكوال اور کاروبار کول کرتے ہیں؟ مستنبل کے لیے رقم ہیں انداز کول کرتے ہیں؟ کیاان کے یہ اعمال اللہ تعالی کی رزاتیت پر توکل کے خلاف نعیں ہیں؟ پس جس طرح حصول رزق کے ذرائع اور اسباب کو احتیار کرنا اللہ تعلق کی رزالیت بر نوکل کے خلاف نہیں ب ای طرح بار معیشت کو کم کرنے کے لیے منبط تولید کرنا بھی اللہ تعالی کی رزاتیت 'ایمان اور توکل کے خلاف نیس ہے اور بعض لوگوں کو یہ الجمین بوتی ہے کہ منبط اولید کرنا تقدیر پر ایمان کے خلاف ہے؟ اس کا جواب یہ ہے کہ پھر آپ مصائب اور پریٹائیوں میں اللہ تعالی سے دعا کیوں کرتے ہیں؟ جب تقدیر کا ہونا ائل ہے اور تقدیر بدل نمیں علی تو آپ دعا کریں یانہ کریں جو ہونا ہے وہ او کر رہے گا۔ای طرح آپ بار پر جانے پر علاج کین کرائے ہیں؟ اگر نقد بر می بار رہتا ہے تو آپ لاک علاج كريس محت مند نمي يو يكت اليكن اس موقع ير آب يى كت جي كد اسبلب كو اختيار كريابي جائز ب اسباب كو اگر اس نيت ے اختیار کیا جائے کہ یہ اسباب اللہ تعالی کے علم اور مقدر مبرم کو بدل ذیں ہے ' تو یہ یقیناً ناجائز اور کھانا ہوا کفرے۔ لیکن اگر امباب كواس نيت سے بردے كار لايا جائے كه الله تعنالى نے دنيا ي مائع كے حصول كے ليے امباب كو پيدا كيا ہے اور امباب ك حسول ك بعد بو تتج ملط ؟ آ ب وى دراصل نقدم بوتى ب- بم دعالور علاج تقدير بدل اور نظام قدرت مى مدا فطت کے لیے ضمی کرتے ، الک اس لیے دعا اور علاج کرتے میں کہ اللہ تعالی نے جو راحت اور شقاء ہمارے لیے مقدر کی ہے اس کو وجود میں لا سکیں۔ای طرح منبط تولید کا محل تقذیر کو بدلنے یا اللہ تعالیٰ کے نظام خلق میں مداخلت کے لیے نہیں ہے (اور اگر تحوتی اس نیت ہے کرے تو اس کے کفریس کوئی ٹنگ نسیں) بلکہ منبط تولید کا یہ عمل اس رکلوٹ اور پیدائش میں اس وقفہ کو وجود جي لائے كے ليے بحس كو الله بقائل في بعارے ليے مقدر كيا ہے۔

محلہ کرام دسول اللہ عظیم کے زمانہ میں عزل کرتے ہتے اور پیرکی پیدائش ہے احزازی کے لیے کرتے ہتے۔ کیاکوئی مخص بید کمان کر سکتا ہے کہ محابہ کرام د ضوان اللہ علیم اعمین کو اللہ تعالی کی د زائیت پر توکل نہیں تھا اس لیے عزل کرتے تھے ا یا محابہ کرام کا تقدیر پر ایمان نہیں تھا اس لیے عزل کرتے تھے 'یا محلہ کرام اللہ تعالی کے نظام علی بیں داخلت کے لیے عزل کرتے تھے۔ کرام کا عزل کرتے تھے۔ ایس میں تھا کہ نہیت محبوری بناوپر تھا اس کرتے تھے۔ ایس جان مجبوری بناوپر تھا اسی طرح دو سرے مسلمانوں کے اس عمل کو بھی نیت محبور محبول کرنا جا ہے۔

یاد رکئے اسب و علل کو افتیاد کرنارسول اللہ میں ہیں ہور آپ کی میرت ہے۔ آپ کی کی دنوں کے لیے کھانا لے کر غاد حرامی ہوت ہے۔ آپ کی گی دنوں کے لیے کھانا لے کر غاد حرامی ہائی ہو کر میدان جنگ میں جاتے دے ہیں 'کر غاد حرامی ہائی ہو کر میدان جنگ میں جاتے دے ہیں 'کر غاد حرامی ہو کر میدان جنگ میں جاتے دے ہیں 'کاری میں مشکلانوں کو علاج کرانے کی ہرایت دی ہے' اس لیے بیادی میں مشکلانوں کو علاج کرانے کی ہرایت دی ہے' اس لیے کسی مرددت کے دائت منبط تولید کرنا تعلیمات اسلام کے خلاف نیس ' بلکہ میں مطابق ہے۔

ہم نے منبط تولید کے مسلم پر جو بحث کی ہے اور اس کی ابادت کی جو صور تیں بیان کی ہیں ایہ خالص علمی اور فقہی نوعیت کی بحث ہے۔ اور اس کو اس تناظر میں پڑھنا اور سمجھنا جاہیے اور یہ بحث اسلام کے اس عموی قلنے پر جنی ہے کہ اسلام دین ہر ہے 'اور اس کے مبلویات اور اصولوں میں اتن جامعیت اور ہمہ گیری ہے جو جردور کے چیش آمدہ مسائل اور پیچید گیوں کا مثبت مل چیش کر کتے ہیں۔ اس سے خالص اور پر ستانہ اور سیکو کر قلنے پر جنی خاندانی منصوبہ بندی کی اس جن الاقوامی تحریک کی آئید و سمایت یا حوصلہ افزائی ہر گز مقصود منس ہے 'جو موجودہ دور میں پر اپر بیکنڈے کے محراور ترخیب و تحریص کے قالف طریقوں کو سمایت یا حوصلہ افزائی ہر گز مقصود منس ہے 'جو موجودہ دور میں پر اپر بیکنڈے کے محراور ترخیب و تحریص کے قالف طریقوں کو

طبيان القر آن

مدے کار لاکر چلائی جا رہ ہے ' بلکہ جارا ستعدیہ ہے کہ کمی اضطراری صورت حال 'کمی فرد کی ایس خالص مخصی وجود جو معقولیت پر بخی ہوں یا واقعی ضرورت کے چیٹی تظرامام کی دی ہوئی رضتوں کو بیان کردیا جائے۔

جمال تک دور جدید کے باور ستاند نظریہ خاندانی منصوبہ بندی کا تعلق ہے توبہ خالص الحاور جن ہے اور اسلام میں اس کی تظما کوئی منجائش میں ہے۔ اس نظریہ کا مرکزی مقط اور محوریہ ہے کہ انسانی آبادی کے پھیلاؤ کو با قاعدہ منصوبہ بندی کے تحت محدود کردیا جلئے' آگ و ممائل معاش اور اسباب معیشت کی تنگی کاسامنانہ کرنا پڑے' یہ خالص خود غرمنی پر جنی قلبغہ ہے۔جس كى اساس يد ہے كہ ہم الى آسائش كے ليے دو سرے انسانوں كاوجود برداشت كرنے كے ليے تيار نيس ييں۔ آريخ انسانيت كا مطلعه اور دور حاضرے انسانوں کامشاہر اور تجربہ بیاتا ہے مکہ جریخ دور میں نسل انسانی کی افزائش کے باوجود بحیثیت مجموعی ا انسان نے اپنے گزشتہ اووار کے مقابلہ میں زیادہ سل اور پر آسائش زندگی بسری ہے اور وہ وسائل رزق کے اعتبار ہے بھی مرف المل را ہے۔اس سے معلوم مو آ ہے کہ یہ قانون قدرت ہے اور وسائل واسباب سے بر زلور بالاز رزق مخلوق کی حقیقی منصوبہ بندی قادر مطلق نے اپنے اپنے میں رکمی ہوئی ہے۔ البتدایہ ضرور ہے کہ جب اور جمال خلا بری طور پر جغرافیائی موسمی یا سائنسی اور علمی و آئی وجوہ کی بنایر وسائل رزق انسانوں کے تمی گروہ یا تمی مکٹ یا قوم کے پاس ان کی ضرورت سے زیادہ مجتمع ہوئے تو بص او قلت یہ بھی دیمنے میں آیا کہ انہوں نے اس سے تکوق خدا کو فیض پاب کرنے کی بجائے لا کھوں ٹن فلہ سمندر میں مبادینا' یا اے ضائع کرزینا (Damping) زیادہ مناسب سمجما ورجقیقت می دہ اقوام میں جو قلاح انسان اور انسان دوسی کے پر کشش یام پر زر کیر صرف کر کے خاندانہ منصوبہ بندی کی مم کو ہی ماندہ اقوام اور تیسری دنیا کے ممالک میں پھیاا ری ہیں افعال لک آج بھی ایک سادہ اورخ دیماتی ہے ہوچھا جائے تو وہ میں کمتا ہے کہ انسان کھانے کے لیے ایک مند اور کانے کے لیے دوہاتھ لے کرپیدا ہوا ہے۔ کویا قدرت الی اس طرف اشارہ کر ری ہے کہ اگر تم محنت اور مشعت کو کے تو روزی کے وروازے بھی تم پر نگ ني*س بول كـ " بلك الله تعالى قرما تا* ومن ينتق الله ينجمل له محرجا ويبررقه من حيث لا ينحتسب (طان ، ۲) جس مخص کے ول میں فوف خدا ہو او اللہ تعالی اس کے لیے (عالم خیب سے) رامیں کھول دے گااور وہا ہے رزق مطافرمائے گا'جمال اس کاوہم و کمان ہمی تمیں تما۔

الله تعالی کاار شادہے: اور انسوں نے کمایہ مولٹی اور کیتی عموع میں ان کو دی کھائے گاجس کو ہم چاہیں ہے (یہ پابندی) ان کے زعم باطل میں ہے اور بعض موبشیوں پر سواری حرام کی گئی اور بعض موبشیوں پر بید (ذیح کے دقت) الله کا مام نمیں لیتے 'الله پر افتراء کرتے ہوئے 'وہ عنقریب ان کو ان کی افتراء پر دازیوں کی مزادے گا۔ (الافعام ۱۳۸۸) مشرکیوں کے خود سماخت احتکام کا رو اور ابطال

کفار اور مشرکین نے ذاتہ جالیت میں اپنے مویشیوں اور اپنے کمیتوں کی تمن تشمیں کردی تھیں:

ا - دو مویش اور کمیت جن کے متعلق وہ کہتے تھے 'ان سے نفع اٹھانا کی شخص کے لیے بھی جائز نہیں ہے ' یہ ان کے باطل معبودون اور بتوں کے لیے تخصوص میں۔وہ کہتے تھے ان کو دی شخص کھا سکتا ہے جس کو ہم کھانا چاہیں اور ان کو مرف بتوں کے معبودون اور بتوں کے لیے مخصوص میں۔وہ کہتے تھے ان کو دی شخص کھا سکتا ہے جس کو ہم کھانا چاہیں اور ان کو مرف بتوں کے مرد خادم کھا گھا جن محمد مقتلی نہ نقلی نہ نقلی۔ مرد خادم کھا گھا جس تھی ' مقتلی نہ نقلی ۔ مرد خادم کو دی مراد خادم کھا تھا اور تیں نہیں تھی ' مقتلی نہ نقلی۔ مور تھی جس کی پشت حرام کر دی تھی 'ان پر کوئی سواری کر سکتا تھا اور نہ ان پر ملمان لاد سکتا تھا' ان جانوروں کو وہ

انبحارُ "السوائب اور الحوامي كنتے تھے۔ ان كي تفعيل المائدہ: ١٠٠٠ من كزر چكى ہے۔

٠٠ وه جانور جن ير فري كے وقت ووالله كايام نيس لية سے دوان ير فري كے وقت مرف جول كايام ليتے تھ اور ان سے

طِيانَ القر أنَّ

کوئی تفع نہیں اضاتے تھے 'حق کہ حج میں بھی اس ہے فائدہ نہیں اٹھاتے تھے۔

انموں نے جو یہ حمق میں محمل اللہ تعالی پر افترا تھی۔ اللہ تعالی نے ان کے لیے اس کو مشروع نہیں کیا تعالور ان کے لے یہ جائز نمیں تفاکہ وہ از خود اللہ تعالی کی اجازت کے بغیر کی چیز کو طال یا حرام کریں میساکہ اللہ تعالی نے ارشاہ فرمایا ہے:

عُلْ الرَّبْسَمُ مَنَا أَسْرَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِنْ رَزُقِ آب كَ كَر بِهِ المَا عَادُ وس الله قال ف تمار عليه فَحَعَلْتُمُ مِنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلُ ٱللَّهُ آوِرَ لَكُمُ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَغُنَّرُونَ (يونس،٥٩)

جورزق الاراتهائم نے اس میں سے بعض کو جرام کر بیااور بعض کو طال کر ایا۔ آپ ہو چھنے کیا تہیں انتہ اللہ اس کی)

ا جازت دی تھی یا تم انتہ پر بہتان یاند ہے ہو۔

مجرانله تعالی نے وعید سالی کہ عنقریب اللہ ان کو ان کی افتراء پر دازیوں کی مزادے تھے

الله تعالى كاارشاد ب: اور انهول نے كما جو يكو ان مويشيوں كے چيۇں يس ب وہ بمارے مردوں كے ليے مخصوص میں اور حاری مورتوں پر حرام میں اور اگر وہ بچہ موہ پیدا ہواتو اس میں موداور مورتیں سب شریک میں 'وہ ان کی من محزت باتول كى عنقريب مزاور عكا ب تك وه بمت حكمت والابحث جلت والاب ب- (الانعام ١٠٥٠)

جو مجمد ان مويشيول كے چيول يس ب اس سے كيا مراد ہے؟ معرت ابن عباس رضى الله عنمائ فرمايا اس سے مراد دوده ے۔ عامر نے کما بحرہ کا دورہ صرف موچے تے اور اگر بحرہ مرجائے تو اس کاکوشت مرد اور مور تی دونوں کھاتے ہتے۔ نیز حضرت ابن عماس رضى الله عنماے ايك روايت ب كه جو يكو ان كے پين س ب اس سے مراد دورہ ب وہ اس دورہ كو مورتوں پر حرام قرار دسیتے تھے اور اس دورہ کو صرف مردیتے تھے اور بھری جب نر کو جنتی تو اس کو صرف مرد کھاتے اور مورتیں نسي كمائي خيس اور أكر وه بله كو جنتي تواس كو ذرئ خيس كرتے تھے اور أكر وه مرده جنتي تو اس ميں مرد اور عور تي سب شريك موسكة توالله تعالى في اس عد منع فراويا - (جامع البيان مير ٨٠ ص ١٠٠ -١٠ مطبوعه هاو الفكو ميون ٥٠٠ ١٥ ١٠٠٠)

اس كے بعد اللہ تعلق نے فرمايا اللہ تعالى منقريب ان كو ان كے اس جموث كى سرادے كا حيساكد اس آيت يمي فرمايا ہے.

اور جن چزوں کے متعلق تمہاری زبانی جوت بولتی هُذَا حَلَالٌ وَ هَذَا حَرَامٌ لِنَعَنَرُوا عَلَى اللّهِ مِن ان كبار عني يد كوكر يوطال إوريرام ؟ ا كر تم الله ير جموت باندهوا ب شك جولوك الله ير جموت بالدهنة بين ووفلاح نهي يا كمن كے۔

وَلاتَفُولُوالِمَا تَعِيفُ ٱلنِّيمَنُكُمُ الْكَادِبَ الْكَدِبَاِنَّ الَّذِيْنَ يَعُنَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَايْمُلِحُودُ٥ (المحل)

خود ساخته شربعت سازي كار د اور ابطال

ان آیات می بیددلیل ہے کہ اٹی طرف ہے بغیر شرمی دلیل کے کمی چیز کو فرض یاوابب قرار دینا ایابغیر شرمی دلیل کے كى چيزكو ناجائز اور حرام كمنا الله تعلل ير افترا باندھنے كے حرادف ب-مثانيد كمناك الم جعفر صادق كى نياز كى كميريوريوں كواى جكد بين كر كمايا جائے اور اس كو وہاں ہے خفل كرنا جائز نسي بي اجي لوگ بغير كسى شرى دليل كے تبعند بحرد از حى كو داردب كت ين الي بيت بعض نوك ميلاد شريف محيار وي شريف موئم فور جلم وفيره كو ناجاز اور حرام كت بي اور بعض نوك يارسون الله اكنے كو ترام كتے بين اور بعض لوگ ائركى تقليد كو ناجا يز اور ترام بلك شرك كتے بين اور بعض لوگ يارسول الله ا كنے كو بھى شرك كيتے بيں۔ ملا تك مديث ميں اس ير وحمد ب- معرت مذيف بورشي بيان كرتے بيں كه رسول الله مرتبي نے فرمایا جن چیزوں کا جھے تم پر سب سے زیادہ خوف ہے ان میں سے مید ہے کہ ایک فض قرآن پڑھے کا حتی کہ جب تم اس پر

جُيانُ القر اَنْ

قرآن کانور دیجھو کے اور وہ اسلام کی پشت ہناہ ہوگا و قرآن اس سے جاتا رہے گااور وہ اس کو پس پشت پھینک دے گااور اپ پڑدی پر مکوار سے عملہ کرے گااور اس پر شرک کی تمت لگت گا۔ جس نے پوچھا یار سول اللہ اان جس سے کون شرک کا مصدائی ہوگا ، جس پر شرک کی تمت لگائی گئی ہے 'یا شرک کی تصت لگانے والا۔ آپ نے قرمایا بلکہ شرک کی تمت لگانے والا۔ اس مدے کو اہم ابو بھلی موصلی نے روایت کیا ہے۔

ا محقم اتفاف السادة المحرة بزوائد العثرة على مقل المديث ١٦٩١ مطبوعه وار الكتب العلميه ميروت ١٣١٤ ما الله التلك الله تعالى كالوشادي: به شك النالوكول في خساره بالاجتنول في جمالت اور حماقت كي وجه سه الني اولاد كو تملّ كرديا لورجو رزق الله في ويا تعا الله بر افترًا بردازي كرك اس كو حرام قرار ديا مب شك به كراه بو محة اور مدايت بات والمباحة عن نسيس الله المانعام: ١٣٠٠

بیٹیوں کو قبل کرنے کی شفاوت

اس آیت کامعنی سے بےکہ زمانہ جالیت بھی جن ٹوگوں نے اپنی ادلاد کو گلّ کیالور ان کو زندہ در گور کر دیا'ان ٹوگوں نے اپنی ادلاد کو گلّ کیا۔ یہ نظف دستی اور قلت رزق سے ڈرتے تھے اور یہ لوگ اس انتسان افعایا۔ ان لوگوں نے اپنی جمامت سے اپنی ادلاد کو قلّ کیا۔ یہ نظف دستی اور قلت رزق سے ڈرتے تھے اور یہ لوگ اس بات سے جال تھے کہ رزق دیے والا تو اللہ تعالی ہے اور اللہ تعالی ہے ان کو جو پاکیزہ رزق دیا تھا'اس کو انسوں نے ادللہ تعالی برائے گئے۔ انسوں نے دین اور دنیا کی سعاوت کو کھو دیا اور یہ بدایت کو حاصل کے دین اور دنیا کی سعاوت کو کھو دیا اور یہ بدایت کو حاصل کے دائے والے تھے بھی تمیں۔

علامہ قرطبی مالکی متوفی ۱۷۸ مدے بیان کیا ہے کہ روایت ہے کہ نی جیور کے اسجاب میں ہے ایک محض بیشد مغموم رہتا تن آپ نے اس سے بوچھاکیا بات ہے؟ تم کول مغموم رہے ہو؟ اس نے کمایار سول الله اجس نے زمانہ جابایت جس ایک بہت برا كناه كيا تفااور يس ڈريا بول كه الله ميرے اس كناد كو نيس بخشے كا خواه يس مسلمان بوچكا بول۔ آپ نے فرمايا جمعے بناؤا تهارا مناد کیا تعا؟ اس نے کمایار سول اللہ ایس ان لوگوں میں ہے تھاجو اچی بیٹیوں کو زندہ در کور کردیے تھے۔ میرے ہاں ایک بنی بیدا موئی اس کی مل نے جھے ہے سفارش کی کہ جس اس کو چھوڑ دوں حق کہ وہ بدی ہو گئ حق کہ وہ جور نوں میں حسین ترین لڑی تھی۔ اوگوں نے اس سے نکاح کرنے کا پیغام رہا مجھے اس پر عار آیا اور میرے دل نے یہ برداشت نہیں کیا کہ جس اس کا نکاح کر دول اواں کو بغیر نکاح کے رہنے دول۔ بس نے اپنی ہوی ہے کما میں اس کو فلاں فلاں قبیلہ میں اینے رشتہ واروں ہے مانے کے لیے لے جارہا ہوں وہ بیس کر خوش ہوئی۔ اس نے اس کو اجھے کیڑے اور زیور پہنائے میں اس کو لے کیا حتی کہ میں ایک کنو کیں پر مہنچانور میں نے کنو کمیں میں جمانک کرویکھا' وہ لڑکی سمجھ گئی کہ میں اس کو کنو کیں میں ڈالزا چاہتا ہوں' وہ مجھے چے شکی اور رونے می اور کئے میں اے میرے باب تممارا کیا اِرادہ ہے؟ تم میرے ساتھ کیا کرنا جاہتے ہو؟ مجھے اس پر رحم آیا ' پھر میں نے کو تی کی طرف دیکھااور جھ پر پھر عار غالب آگیا۔ وہ اڑک پھر جھ سے چنت تی اور کنے گی اے میرے باب امیری بال کی المانت کو ضائع نہ کر۔ میں نے پیردو سری مرتبہ کنو کمیں کی طرف دیکھااور پیراس کی طرف دیکھا۔ جھے اس پر رحم آیا لیکن جھے پر شیطان غالب جھیا' میں نے اس کو پکڑا اور اس کو او ندھے منہ کنو کیں میں ڈال دیا اور وہ کنو کمیں میں جلا رہی تھی' اے مبرے باب او نے جھے مار والا؟ من اس كوئيں پر ممرار ماجتى كه آواز أنى بند ہوگئى مجرس وايس اليدرسول الله ستاج اور آب ك امحاب یہ من کررونے تھے۔اور آپ نے فرملا اگریس کمی فخص کو زمانہ جاہلیت کے فعل پر سزا دیتا تو تنہیں دیتا۔ (البامع لا حكام القرآن ٤٠٠ م ٨٨ مطبوعه دار العكو "بيروت ١٣١٥ه)



كُنْتُمْ شُهِدًا ءَ إِذُوطُسُكُمُ اللَّهُ بِهِذَا عَنَى اَظْلَمُ مِثِنَ افْتَرَى

وقت م درستے جب العرفے تیں ہے تھے ویا تھا، ہو اس سے بڑا تھام اور کرن ہو گا جراند

عَلَى اللهِ كَنِ بَالِيُضِلَ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمِ ﴿ إِنَّ اللَّهُ لَا يُمْوِى

یر افرا پردازی کرے تاکہ وہ بنیر عم کے وگوں کو گراہ کرے ، میٹک اشرفام وراں کو مابت

الْقُوْمُ الطُّلِينَ ﴿

ائیں دیا ہ

افند تعالی کا ارشاد ہے: اور دی ہے جس نے بیلوں والے باخ پیدا کے اور جس نے در دون والے باغ پدا کے اور کم بدا کے اور کم بدا کے اور کم بدا کا اور کم بدا کا در کر بدا کا اور کم بدا کا در کر بدا کا کہ دو مرے سے لمتے جاتے بھی ہیں اور ذاتون اور اناد اگائے جو ایک دو مرے سے لمتے جاتے بھی ہیں اور مختلف بھی۔ بہب وہ در خت پھل وار بوں تو ان کے پھلوں سے کھاتو اور جنب ان کی کٹائی کا دن آئے تو ان کا حق اوا کرد اور ہو جا فرج کر اوالی کو پہند تھیں کر تا۔ (الافعام: ۱۳۱) مشکل الفائل کے معالی معالی

معروشان: بدلفظ عرش سے بناہے عرش کا معنی ہے جمت۔ جس چنے پر بادشاہ بینستاہ اس کو بھی بلندی کی وجہ سے مرش (تخت) کہتے ہیں۔ عرب کتے ہیں عرشت السکر م جس نے انگور کی جمت بنادی انجور کی بینی انگور کی بیلیں اس طرح بھیلا دیں کہ ان سے جمت بن محل ۔ اس آیت جس حسات معروشیات ہے مراد وہ باغ ہیں جن جس بھلوں کی بیلیں ہوں 'مثلا انگور کی با خراد زہ اور قراد زہ اور قراد زکو۔

غیبر معروشات جن پھلوں کے در قول کو زیمن پر چھوڑ دیا کیا ہو 'جو اپنے سنٹے اور شاخوں کی وجہ سے کمی چھست پر والے جانے سے مستنتی ہوں۔

حداد بر انظ صدے بناہ میں کامنی ہے ضل کانا۔ در انوں سے بالوں کے قرائے کو بھی صاد کتے ہیں۔ وجود باری اور تو خیر پر دلیل

قرآن مجید کاموضوع توحید و معالت النکام شرعید معلواود براو و مزاکوبیان کرنا ہے۔ اس سے مملی آیتوں پس اللہ تعالی نے ان کفار کو سرزنش کی تقی جو شرک کرتے تھے اور از خود امتکام بنا کیتے تھے اس کے بعد اب پھرامسل مقصود کی طرف متوجہ ہوا اور وجود باری اور قوحید پر دانا کل دیئے۔

اس آیت میں یہ بتایا ہے کہ اللہ تعالی نے بیلوں اور ور شوں والے یاغات پروا کیے اور مجور کے ور الت اور کھیت پروا کے۔ ان بھوں کی شکل و صورت ان کا رنگ ان کی فوشو اور ان کا ذا گفتہ ایک دد سرے سے مختف ہے۔ ای طرح کھیتوں سے جو اللہ پروا ہو تاہے ان کی ویکن ان کا ذا گفتہ اور ان کے قوائد ایک دد سرے سے مختف ہیں۔ یہ جزی از فود تو پروا نہیں ہو کی اور شری سورج مجارد اللہ اور ستاروں نے پروا کی ہیں۔ کو تکہ جب وہ فروب ہو جاتے ہیں تب بھی یہ جزی ای طرح بروار دیتی ہیں۔ کو تکہ جب وہ فروب ہو جاتے ہیں تب بھی یہ جزی ای طرح برقوار دیتی ہیں۔ گردنیا بھر کے لوگ جو اللہ کے قائل ہیں گئی جزی کی نے بھی یہ دعوی مدومین

هٰپياڻ ائٽر اڻ

نہیں کیا کہ وہ ان باخوں اور کمیتوں کے پیدا کرنے والے ہیں۔ بلکہ ادالہ کے سواکوئی بھی ان کے پیدا کرنے کار کوئی وار نہیں ہے تو پھر ہم کیوں نہ مانیں کہ اللہ کی دنیا بھر کے باخوں 'کمیتوں اور ہرے بھرے جنگوں کا خالق ہے اور جب بید ٹابٹ ہو گیا کہ وہ نہا آت کا خالق ہے تو جملوات 'حیوانات 'انسانوں' جنوں اور فرشنوں اور ساری کا کات کا بھی وی خالق ہے اور وی عملوت کا ستحق ہے۔ فصل کی کٹائی کے حق سے مراو عشر ہے یا عام صدقہ ؟

الله تعالى في فرايا ب بب صلى كالى كادن آئة تواس كاحق اواكرو

علامد ابو بكرا حمد بن على را زي بصاص حنى متوفى و يرسور لكعية بين:

حضرت این عباس اجاری ذید اعجمین حنید احس بعری اسعیدین مسیب افاق ازیدی اسلم اقتوا و رخاک کاید قول به که اس حق مرا عشر ایداوار کادسواس حصر) اور نصف الحشر (پیداوار کادبیواس حصد) به و حضرت این عباس به دو سری دوایت یه ب که اس حق کواس حدیث نے منسوخ کردیا جس جس عشراور نصف عشر کوفر فرض کیا گیا اورید قول اس اصور یہ بی ب کہ ب که قرآن کے حکم کو منت ب منسوخ کردیا جس بعری سے دوایت ب که اس حکم کو زکو قر نے منسوخ کردیا مخاک نے کہا ہے کہ قرآن کے حکم کو منت ب منسوخ کردیا اور دعارت این عراور مجلد ب دوایت ب که یہ آیت مخاک نے کہا ہے کہ وقت اس حق کو اوا کو اوا کراواجب بود دیرت این عراور مجلد بود وایت ب که یہ آیت مخلف افیر منسوخ کردیا اور منسوخ کردیا اور دوایت ب که یہ آیت مخلف افیر منسوخ کردیا اور منسوخ کردیا اور منسوخ کردیا کو اور منسوخ کردیا کہا کہ کہا ہے کہ اور منسوخ کردیا کو اور منسوخ کردیا کہا کہ کہا کہ بیا کہ کو دیا ہے کہ منسوخ کردیا ہوئے تو اس جی کے حصد مناکین کو دیا جائے اس کی کودیا جائے اس حل کا کی جائے تو اس جی کہ حصد مناکین کو دیا جائے اس حل کا خراج جب در خدت سے مجودی تو زی جائی قربی جائی تو کہ مجودیں ان کو دی جائیں۔ ای طرح جب ان کو صاح کے صلب سے بیا طرح جب در خدت سے مجودیں تو زی جائیں قربی جائی ورائی منظری سیل اکیڈی کا دین جائیں۔ ان کو صاح کے صلب سے بیا جائے قوان کو کہ محودیں دی جائیں۔ اداکام افر آن ان جائی ان کو دی جائیں۔ ای طرح جب ان کو صاح کے صلب سے بیا جائے قوان کو کہ محودیں دی جائیں۔ اداکام افر آن ان جائی ان مورد سیل اکیڈی کا دور دی جائیں۔

خلاصہ یہ ہے کہ حضرت ابن عماس رضی اللہ عنما کے زدیک اس آیت بی فصل کی کٹائی کے حق سے مراد عشریا نصف عشرے اور حضرت ابن عمر رضی اللہ عنما کے زدیک اس حق سے مراد عام صدقہ ہے اور یہ حق ذکو قاکے علادہ ہے۔ حضرت ابن مہاس رمنی اللہ عنما کا تول اس لیے رائج ہے کہ امادے میں بھی ارمنی پیدادار کی ذکو قام عشریا نصف عشر بیان کی تی ہے۔

حضرت عبداللہ بن محروضی اللہ مختمامیان کرتے ہیں کہ وسول اللہ سینجیج نے فربلیا جو ہاغ یا کھیں۔ بارش ہے یا چشموں ہ یا بارش کے جمع شدہ پانی ہے میراب کیا کیا ہو' ہس ہی عشرے اور جن کو کنو نمیں سے پانی حاصل کرکے میراب کیا کیا ہو'اس میں نصف عشرہے۔

الشجيح البخاري" جا"ر قم الحديث الشرك الترزي ج"ر قم الحديث ١٣٠ مجيح مسلم" زكوة ٢ '٢٢٣٩ (١٩٨٩) ١٩٢٣ سنن ابوداؤ، "ج"ر قم الحديث: ١٥٩٧ سنن القبائل" ج٥ وقم الجديث: ٢٣٨٩)

عشرك نصاب مين زابب نقهاء

الم ابو صنیفہ کے نزدیک زیمن کی پیداوار تقیل ہویا کیڑاس میں عشریا نصف مشرواجب ہواد ائمہ علال کے زریک پانچ وسن (تقریباً تمس من) سے کم کی مقدار میں محترواجب نمیں ہے۔

اتمد خلاف كادليل بدعث ب

حضرت ابوسعید خدری برخ بیان کرتے ہیں کہ ٹی بوجید نے فرمایا پانچ وسل سے کم میں صدقہ نسی ہے اور نہ پانچ اونوں سے کم میں صدقہ ہے اور ندیا نچ اواق دوسوور هم 'اسوسے کرام 'ساڑھے بلون تولہ جاندی سے کم میں صدقہ ہے۔ (من البواؤد على من المراق على عند ١٣٣٤ من من من الله المرك ١٣٣٤ من ابوداؤد على ١٤٥٥ من الدين المراؤد على المرك المركز المرك المركز الم

الم ابوطنینه کی دلیل قرآن مجید کی زیر تغییر آیت ہے۔ام افرالدین رازی نے اس کی یہ تقریر کی ہے۔ امام ابوطنیند رحمہ اللہ نے فرمایا تقیل اور کثیر میں محتروا بدب ہے اور جمهور نے کما بدب زمین کی پیداوار پانچ وسق کو پہنچ جائے۔ام م ابوطنیند رحمہ اللہ نے اس آیت ہے استدلال کیا ہے۔ اللہ تعالی فرما تا ہے:

وَانْتُواحَقَّهُ يَوْمُ حَصَادِم (الانسام ١٠١٥) اور اصلى كالل كالل كاح اداكرو

و حواست ہو است ہو است با اور کیر میں جن کے بیوت پر دلیل ہے اور جب یہ حق زکو ہ (عشر) ہے تو قلیل اور کیر میں وجوب زکو ہ کا یہ آیت قلیل اور کیر میں حق کے بیوت پر دلیل ہے اور جب یہ حق زکو ہ (عشر) ہے تو قلیل اور کیر میں وجوب زکو ہ کا قول کرناواجب ہے۔ (تغیر کبیر 'ج۵' میں ۱۸۳ مطبور دار احیاء الزائ العربی ایروت)

نیزاانام ابو صنیفہ لے اس مدعث ہے جمی استدانال کیا ہے جس میں ہی ہی ہی ہے۔ قربایا جس ذین کو بارش اچھے یا بارش کا جمع شدہ پاتی سیراب کرے 'اس میں مختر ہے اور جو زمین کنو کمیں کے پائی ہے سیراب کی جائے 'اس میں نصف مختر ہے۔ (میم البخاری ' رقم الحدے: ۱۳۸۳ سنن ابوداؤر' رقم الحدے: ۱۳۸۷ سنن الترزی ' رقم الحدہ شدہ ۱۳۸۰ سنن الترزی' رقم الحدید باسمن الترزی' رقم الحدید باسمن الترزی ' رقم الحدید باسمن دار تعلق ' رقم الحدید باسمن الترزی ' رقم الحدید باسمن الترزی ' رقم الحدید باسمن الترزی ' رقم الحدید باسمن دار تعلق ' رقم الحدید باسمن الترزی ' رقم الحدید باسمن کے باسمن کے باسمن کی باسمن کر الحدید باسمن کر الحدید باسمن کی باسمن کر باسمن کر الحدید باسمن کر الحدید باسمن کر با

اس مدے ہے وجہ استدال سے کہ نبی جوہر نے ذہن کی پیدادار پر سیل عموم عشریا نسف عشر داجب کیا ہے اور اس موجہ ہے ماتھ خاص نہیں کیا اور عام نفاص پر مقدم ہوتا ہے 'افذاجس مدے جی آپ نے پانچ دس پر وجوب زکوۃ کا حکم فرمایا ہے وہ مل تجارت پر محمول ہے 'بیخی جس مختص کے پاس پانچ دست ہے کم مل تجارت ہو 'اس پر زکوۃ فرض نہیں ہوگی اور اس وقت پانچ وست دسو 'اس پر زکوۃ فرض نہیں ہوگی اور اس وقت پانچ وست دو مودر ہم کے برابر ہوتے تھے۔

نيزالم ابومنيف رحمد الله كالسدلال اس تبت عيى ب:

وجہ استدلال ہے ہے کہ اللہ تعالی نے برسیل عموم فرمایا ہے کہ زعن سے ہم نے جو پکھے پیداکیاہے اس میں سے فرج کرد اور اس کو اللہ تعالی نے نمی مقدار اور نصاب کے ساتھ مقید نمیں فرمایا اور اس میں ایام ابو حذیفہ کے موقف کی آئید ہے مکہ زمین کی پیداوار خواہ قلیل ہو یاکٹراس میں عشرواجب ہے۔

نظی صدقہ کرنے میں کیاچیزاسراف ہے اور کیانسی؟

نیزانلہ تعالی نے ارشاہ فرانیا ہے اور بے جاخری نہ کو بے شک اللہ بے جاخری کرنے والوں کو پہند نہیں کر تا۔ اہل لغت کے اسراف میں دو تول ہیں۔ ابن الاعرائی نے کما حد سے تجاوز کرنا اسراف ہے اور شمرنے کما ہال کو مغو اور ب فاکدہ کاموں میں خریج کرنا اسراف ہے۔ (اسان العرب علام اسم الاسمان مطبوعہ اسران)

انسان جب اپناتمام بل صدقه كروب اور اين الل وعيال ك لي محدنه جمورت تويد بهي امراف ب- الله تعالى كا

ادشادست

وَلَا نَبُسُطُهَا كُلَ الْبَسْطِ مَنَفَعُدَ مَلْوَمًا اورندانا إلى فرح كول دے كه بغارے مامت مَنْحُسُورًا ١ (الاسراء ٢٩٠)

ابن جری کے کمایہ آبت ٹابت بن قیل بن شاس کے متعلق نازل ہوئی ہے۔ انہوں نے اپن در خت ہے کجوری و رُزی ہے۔ انہوں نے اپند در خت ہے کجوری و رُزی اور کما آج ہو مخض بھی آئے گاہیں اس کو کھلاؤں گا پھروہ لوگوں کو کجوری کھلائے رہے۔ حق کے شام ہو گئ اور ان کے پاس آیک کجور بھی باتی نہیں ہی۔ تب اللہ تعالی نے یہ آبت نازل کی کہ بے جا خرج نہ کرو ہے تک اللہ ہے جا خرج کرنے دالوں کو پہند نہیں کرتے۔ ایسان برد میں المام المام ور معلوالفکو اور ہے ان اللہ ا

حضرت علیم من حزام بولی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بین بر خرابا بھترین مدقد وہ ہے جو خوشحالی مالت میں دیا جائے کور اوپر والا القریمی والے اتھ سے بھترہے اور مدقد کی ابتداء اپنے میال سے کرو۔

المح مسلم الزكوة ' ٩٥ ' (٣٣٠٥) ٣٣٠٥ من السائل عن المراق عن الاستان مح البلاري عن المراق الديد (٥٣٥٠) مح مسلم الزكوة المريده والمريدة والما المريدة والما المن المريدة والمريدة والمريدة

(سنن أيوداؤد على وقم الحديث: ١٧٩) سنن النسائل عن ارقم الحديث: ٢٥٣٣ من الثافق على ١٠٥٠ من ١٧٠٠ من الد عله مماك ٢٥١ مج أين مبان عه أرقم الحديث: ١٢٠٣ المستورك على ١٠٥٠ سنن كبرى لليمثى عدا م ١٢٠٠)

حضرت طارق محارلی براین برای برای کرتے ہیں کہ رسول اللہ بھین نے کھڑے او کرلوگوں کو خطبہ ریا اور فرمایا دینے والے کا اللہ بلند ہو مگہ اور صدتہ کی ایتداء اپنے میال ہے کرو۔ اپنی مل اپنے باپ اپنی بس اور اپنے بھائی کودد۔ پھر بو تمہارے زیادہ قریب اول اور جو ان سے قریب اول۔

تبيان القر أن

مجلد نے کما اگر تم ابوقیس (ایک بہاڑ) کے برابر سونا بھی اللہ کی اطاعت میں خیرات کردو توب اسراف نمیں ہے اور اگر تم ا يك صاع (جار كلو) يمي الله كي معصيت من ترج كرد تويد اسراف ب-(رقم الحريث: ١٨٩٧٠)

ا تغییرا مام این الی حاتم" ج ۵ می ۹۹ ۱۳ مطبور کتبه زار مصلی که کرمه ایراساند)

الم ابوالشخ نے معید بن جبیو سے روایت کیاہے کہ ابو جرنے بیان کیاکہ لوگوں نے ایاس بن معلویہ سے بو مجماء مرانب كياب؟ انهول في كماجب تم الله كے تحم سے تجؤوز كروتوب اسراف بيد سفيان بن حسين نے كماجب تم اللہ كے تكم من كى كرونوب امراف ب- (درمتوراج ٢٠١٥ ١١١ مطور دار الفكو ايدت ١١١١ ١١١٥)

الله تعالى كاارشاد ہے: اور اس نے بعض قد آور مولئى پيدا كيے جو يوجد افعائے والے بيں اور بعض زين سے ك ہوے (کو آلو قد) مولٹی پیدا کیے 'اللہ نے متہیں جو رزق دیا ہے اس سے کھاؤ اور شیطان کے قدموں پرنہ چلو' ہے شک وہ تسارا كملا بواد عمن ب- الانعام: ١٣٠٢)

مویشیوں کے وجود میں اللہ تعالی کی تعتیں

اس آیت میں اللہ تعالی نے اپنی مزید رحمتوں اور برکتوں کا بیان فرمایا ہے کہ اس نے سواری اور بوجد الدنے کے لیے بزے بزے اور قد آور جانور پیدا کیے جسے کھوڑے 'اونٹ' نیل اور مینے وغیرہ اور چھوٹے جانور پیدا کیے جن کو زمین پر بچھا کرڈے کیا جا سکا ہے اجیے جھیز مجری اور و نے وغیرہ ان جانوروں ہے دورہ حاصل کیا جاتہ ہے جو جماری غذائی ضرورت ہورا کرتے ہیں اور ان سے اون مجی ماصل کیاجا آہے جو ہماری لہاس کی ضرورت ہورا کرتے ہیں میساکد ان آیات میں فرمایا ہے:

اوَلَمْ يَرَوُا أَنَّا حَلَقْنَا لَهُمْ يَسْتَا عَسِلَتُ . كاانون في شين كماك بم فالهذوت تدوت و الله يُسَاآلُ عَامًا فَهُمْ لَهَا مَالِكُوْرُ ٥ وَذَلَلْهَا لَهُمْ مَيسَهَارَ كُونُهُمْ وَمِنْهَا بَأَكُلُونَ ٥ وَلَهُمُ وبنها متنافع ومتشارب أفلا يشكرون

ان کے لیے موٹی پیرا کیے جن کے وہالک ہیں 'اور ہم أان مویشیوں کوان کے مابع کرویا مووہ بعض پر مواری کرتے ہیں اور بعض کو وہ کھائے ہیں 'اور ان کے لیے ان مویشیوں میں بست فائدے ہیں اور پینے کی چیزیں ہیں توکیاد و شکر نمیں کرتے۔ اور ب شک مویشوں میں تمارے کے مقام فورے اہم

مسساس جے ہاتے ہیں جوان کے ہیوں بن ہے الو براور خوں کے دو میان سے بینے واس کے لیے خاص خوش کوار (4-49-64) وَاذَ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامُ لَعِبْ وَالْمُعْمِ مِنْ الْمُعْمِ مِنْ الْمُعْمِ مِنْ اللَّهِ الْمُعْمِ مِنْ اللَّهِ مِيْ بُطُونِهِ مِنْ بَيْسٍ فَرْثِ وَدَمْ لَبَا خَالِطُا سَآلِعُالِلنَّيرِيتِينَ (السحل)

پر الله تعالی نے جس طرح غلہ جات اور پھلوں ہے کھانے کا تھم دیا تھا؟ ای طرح اب ان مویشیوں سے کھانے اور ان کا دودھ پینے کا تھم ویا۔ خلاصہ سے ب کد در خت اور کھیت ہوں یا مورش مب کو اللہ تعالی نے انسان کے منافع اور فوا کد کے لیے پیدا فرایا ہے اسواس کو چاہیے کہ ان سے نفع حاصل کرے اور شیطان کے تدموں پر ند بلے اکو تکد شیطان اندان کا کھلا ہوا و شن ب مساكران آيون من ارشاد ب

إِنَّ النَّسُيطَانَ لَكُمُ عَلُوًّ فَانْحِدُوهُ عَلُوًّا ہے شک شیطان تمارا و شمن ہے ' سوتم بھی اس کو و شمن إِنْسَا بَدُعُوا رِحْرُنَةً لَيَكُونُوا مِنُ ٱصْحب ى ينائے د كھوا وہ اپنے گروہ كو اس ليے بلا آہے كہ وہ دوزخ والحيره جائي

الشَيِيُّةِ ٥ طبيان القر أنُ

جلدسوم

إِنَّمَا يَامُرُكُمْ بِالنُّسُوءِ وَالْعَحْشَاءِ وَأَنَّ شیطان تم کو صرف برال اور بدیانی کا عظم دیا ب اور تَفُولُواعَكَى اللَّهِ مَا لَاتُعُلَمُ اللَّهِ مَا لَاتُعُلَمُ وَنَا الْبِقِرِهِ ١٣٠٠) اللہ کے حفل الی بات کنے کاجس کو تم نسیں جانے۔

الله تعالى كاارشادى: الله ق آند جوزے بدا كے وجيميزى هم سے اور دو بكرى كى هم سے ال کئے۔ کہ کیا اس نے دو تر حرام کی یا دو مادہ حرام کیں کیا وہ جے دونوں مادہ اپنے بیٹ میں لیے ہوئے ہیں۔ مجمع علمی دلیل ے فردو آگر تم ہے ہو 0اور اللہ نے اونٹ کی شم سے دواور گائے کی شم سے دو پیدا کیے۔ آپ کئے کہ کیاس نے دو تر حرام کے ایا دو مادہ حرام کیں ایا دہ جے دہ دونوں مادہ اپنے پیٹ میں سلید ہوئے ہیں ایا تم اس دخت حاضر تھے جب الله نے حمیں یہ تھم دیا تھا' مواس سے پڑا ظالم اور کون ہوگا؟ جو اللہ پر افترا پر دازی کرے ' مّا کہ وہ بغیر علم کے لوكول كو ممراه كرسه مب شك الله ظالم نوكول كوبد است فيس ويتا- إلانعام- ١٣٣٠ ١٣٣٠)

مناظره اور قیاس کی اصل

وہ مولی جو دراز قدادر کو آلو قد میں ان کی آٹھ فتمیں ہیں۔ ان میں سے ایک لونٹ اور او نشی کاجو ڑا ہے ' دو سرا تل اور گائے کا جو زاہے "تھے رامینڈ ھااور بھیڑ کا جو ژاہ اور چوتھ کرے اور بھری کا جو زاہے اور بدکل آٹھ عدد ہیں۔

مشركين عرب في مويشيول على سے بحيرہ مائيہ ' دميلہ اور عام بنار کھے تھے اور عام اوكوں كے ليے ان پر سواري كرنا ' بوجھ لادنان كو كمانا اور ان كادوده بينا حرام كرديا تقل الله تعالى فرما يكب اسدرسول كرم مرتبير آب ان يد يوجية مياالله تعالى ن ان سے دو تر حام کے بیں اگر اللہ تعالی نے زک صنف حام کردی ہے تو تم تر جانور کیوں کھاتے ہواور اگر اللہ نے ادو ک منف حرام كردى ہے تو تم ماده كيول كھاتے مواور أكر اللہ نے دونوں حرام كرديے ميں تو پھر تم زاور ماده دونوں كيول كھاتے ہو؟ اور الله تعالى في ان عن سے ممی منف كو حرام نسي كيا۔ يہ تحريم كر وي عن محض جموتے بيں۔ بمرانله تعالى نے اس الكاركومند مؤكد كرسة كے ليے فرماياكياتم اس وقت اللہ تعالى كے سائے ماضر تے جب اللہ تعالى في ان جانوروں كو حرام كرنے

ک دمیت قرمانی تھی؟ سوید محض تمهارا جموت اور افتراء ہے اور اگر تم سے ہو تو بناؤ اللہ تعالی نے ممس نبی کی کتاب میں ان جانوروں کی تحریم تازل کی تھی ایس نی پروٹی آئی تھی؟اگر تمارے اس کوئی نقل ہے تو بیش کو ان آغوں میں علمی مباد اور مناظرہ کے جوازیر دلیل ہے اور اس میں قیاس کی ہی اصل ہے کہ اگر اللہ نے ذکر کو ترام کیا ہے تو ہرذ کر ترام ہے اور اگر

مونث كو حرام كياب في برمونت حرام .

فينمآأوري إلى ون يو دي کي کي ج ي اي ي (ان يلون مينة اودما قسفوها والے پر ان بیزوں سے اوا اور کوئی بیز حوام جیس یا تا : وہ مرداری یا بہا ہوا خوان ہو ، یا خزیر کا اشت ہو سیموں کر وہ مجس ہے یا یہ طور تافرانی کے اس پر (ورج کے وقت) فیرانشرکا نا پارائی ہو، اوج تش ج

جيان القر ان

موستان کی بیردی کرتے ہمد اور تم معن اکل بج ، کھے کر قری ولیل تو مرف اللہ ہی سے پائے ، بس آگر اللہ جا ہا تودہ مزور تم-جَيَانُ القُرِ أَنْ

قُلُ هَلُمُّ شَهِكَ اءَ كُوُ الَّذِينَ يَشَهَكُ دُنَ اللَّهَ حَرِّمَ هَٰ فَأَ

آپ کیے کہ تم اینے ال گواہوں کو پیش کروج ہے گواہی دیں کہ اشدیتے اس کو جام کیا ہے ، پس اگر دہ

كِانَ شَهِلُ وَا فَلَا تَشْهَلُ مَعَهُمُ ۚ وَلَا تَثْبِعُ الْفُو ٓ الَّذِينَ كُنَّابُوا

م دھوٹی پاکواہی ویں تو (اے مفاطب تم ان کے مائٹ گواہی شردیا اور ندان وگوں کی نفسانی توامینوں کی ہروی کرنا

ڔٵٛؽؾٵػٳڷڒؽؽؘڵڒؽٷ۫ۄٮؙؙۅٛؽڔٵڵٳڿڒٷؚڮۿؠٚڔڗۜؠٛؠؙؽڡ۫ڔڵۅؙؽ۞

جہر لئے ہاری آبات کی تحذیب کی سہت اور جو آخرت پر ایمان نہیں رکھتے اور جو (دوسروں کو) لیے رہے برابر قرار شہتے ہیں ن اللہ تعالی کاار شاویے: آپ کئے کہ جبری طرف ہودی کی گئے ہے میں اس میں کسی کھائے والے پر ان چیزوں کے سوا اور کوئی چیز جرام نہیں پاتا وہ مردار ہو ' یا ہما ہوا خون ہو ' یا خنو ہو کا گوشت ہو کیو تکہ وہ نجس ہے یا ہہ طور نافر مانی کے اس پر (ذائع کے وقت) فیراللہ کانام پکار آگیا ہو۔ سوچو مختص مجبور ہو اور نہ وہ مرکشی کرتے والا ہو نہ صدے برھنے والا ہو ' ق بے ٹی آپ کا رب بہت بختے والا ہے مد برقم قرائے والا ہے۔ (الانوام: ۲۵)

قرآن اور مدیث میں حرام کے ہوئے طعام کی تضمیل

ذانہ جائیت میں کفار اور مشرکین بعض اشیاء کو از فود طال کتے اور بعض اشیاء کو از فود حرام کتے اللہ تعالی نے ان کارد خرایا کہ کمی جزکا طال کرنا اور کمی جزکا حرام کرنا صرف و تی ہے معلوم ہو آئے اور رسول اللہ جہورے فرمایا کہ آپ کیئے کہ جمعہ پر جو و می کی گئی ہے۔ معلوم ہو آئے اور رسول اللہ جہورے فرمایا کہ آپ کیئے کہ جمعہ پر جو و می کی گئی ہے۔ مردار مباہوا فون مندور کا کوشت اور جس جانور پر فرق کی گئی ہے۔ اس میں صرف چار جزی حرام کی تین اور جس جانور پر فرمایا ہوا فون مندور کے جس ان کا فرم جانور پر فرمایا ہے۔ اور کر جانور کی مرف ان چار جزوں کا ذکر قربایا ہے۔ بعد می تفصیل ہے کر چکے جس ان کا دہاں مطاحد فرائم ہیں۔ بعد می نازل ہونے والی سور تول فران مور تول کی جانوروں کو حرام فرمایا ہے ' بعض و کر جانوروں کو حرام فرمایا ہے ' بعض و کر جانوروں کی جانوروں کو حرام فرمایا ہے ' بعض و کر جانوروں اور شراپ کی حرمت کا بیان افلما کدہ میں ہے:

حُرِّمَتُ عَلَيْكُمُ الْمَبْنَةُ وَالْدُهُ وَلَحْمُ الْمَبُنَةُ وَالْدُهُ وَلَحْمُ الْمَبُنَةُ وَالْمُنْتَعِنَفَةُ وَالْمِنْتَعِنِفَةً وَالْمُنْتَعِنِفَةً وَالْمُنْتَعِنِفَةً وَمَا اكْلُ النَّمُ وَالْمُنْتَعِنَةً وَمَا اكْلُ النَّمُ وَمَا ذَبِعَ عَلَى النَّمُسِوَ السَّبُعُ إِلَامَا وَكُنْهُ وَمَا ذَبِعَ عَلَى النَّمُسِوَ السَّبُعُ النَّمُ فِي مُنْ وَمَا ذَبِعَ عَلَى النَّمُسِوَ السَّامُ وَمَا ذَبِعَ عَلَى النَّمُسِوَ اللَّهُ الْمُنْعُ فِي مُنْ وَمَا ذَبِعَ عَلَى النَّمُ فِي مُنْ وَالْمُنْ اللَّهُ الْمُلْعُلِي اللَّهُ اللَّهُ الْمُلْعُلِي اللْمُلْعُلِي اللَّهُ الْمُلْعُلُولُ اللَّهُ الْمُلْعُلِي اللْمُلْعُلِمُ الْمُلْعُلِمُ اللَّهُ الْمُلْعُلُمُ الْمُلْعُلِمُ الْمُلْعُلُمُ الْمُلْعُلُمُ الْمُلْعُلُمُ الْمُلْعُلِمُ الْمُلْعُلُمُ الْمُلْعُلُ اللْمُلْعُلُمُ الْمُلْعُلُمُ الْمُلْعُلُمُ الْمُلْعُلُمُ الْمُلِ

(السائدي: ٣٠

کاکوشت اور جس بر ذری کے درت فیران کانام پیار اکیا ہو اور بر کور تدے نے کھالیا ہو موااس کے جس کو تم نے ذری کر لیا ہو اور بر بروں کے تمان پر اور برو بروں کے تمان پر اور برو بروں کے تمان پر اور بوت کے خیروں سے اپنی قسمت معلوم کرنا میں تم پر جرام کیا گیا ہو اور بوت کے خیروں سے اپنی قسمت معلوم کرنا ہیں۔
اسے ایمان والوا شراب بروا این اور قسمت معلوم کرنے اس اس اور قسمت معلوم کرنے اس کے تیم (سب) تایاک ہیں۔ شیطان کاموں سے ہیں موتم ان

ا پر چنام اتم پر حوام کر دی گئی جی مرداد " فون " - حسز پسر

يَاتُهَا الَّذِيْسَ امَنُوَّا إِنْسَا الْعَدُرُوَا لَسَيْسِرُوَ الْأَنْصَابُ وَالْآزُلَامُ رِحْسُ مِّنْ عَمَدِل الشَّبَطَان

الْحَنَيْبِوُهُ لَحَلَكُمْ تُعُلِيحُونَ ٥ (السائده:٩٠) ے کے ا کے کامیاب ہو جاؤ۔ اور فی مراج اے بھی کی جانوروں کو حرام فرلا ہے۔

حفرت ابو العلبه مختی و بني بيان كرت بيل كه ني وجي ان مر كليول واقد و ند ا كو كمان است منع فرايا ب-

(مي البناري عدر قم الدعث: ٥٨٠٥ مع مسلم العيد والذبائح ١٩٣٢) ١٩٣١)

حضرت ابن عباس رمنی الله عنما بیان کرتے میں که رسول الله منتج الله عنام کیلیوں واسلے ور ندے اور برناخن والے يندعه تع فرمايا-

(منج مسلم ؛ العبيد والذبائح ٢١ (١٩٣٣) ٨ ١٩٠٥ منن ابوداؤد " ج٣ وقم الحديث: ٣٨٠٠ سنن ابن بابد " ج٣ و قم الديث. ٣٢٢٣ ا موطالهم بالك كرقم الحديث وهديه

حضرت ابو تعلید برائد بیان کرتے میں کہ رسول اللہ مجرور نے پالتو کد موں کے گوشت کو حرام فرمادیا۔ (منج البخاري "جه" رقم المديث ٤٥٠٤ منج مسلم العيد والذبائح "٢٠٠ (١٠١٨) و ١٠٠٠ سنن النسائي "ج ٤ " د قم الديث: ١٠٩٣ ١١) حفرت عبد الرحمن بن ثبل جويز مان كرتم بي كري جيد في المجد كاكوشت كمان عدم فراديا-

(ستن ابوداؤد "ج موثر قم الحديث: ١٠١١م)

حضرت عبدالله بن عمروضی الله عنمابیان كرتے بیل كه وسول الله عظیم نے فرملیا تنمارے ليے دو مردار اور دو خون حلال کے گئے ہیں۔ دو مردار چمل اور مذی ہیں اور دوخون میجی اور کی ہیں۔

(سنن ابن ماجه "ج ۴ رقم الحديث ٣٣١٣٠ مند احر "ج ۴ رقم الحديث ١٩٢٤)

حضرت جابر بن عبد الله ومنى الله عنماميان كرتے بيل كه رسول الله مينيو نے فركيا جن جانوروں كو سمندر پيمينك دے كيا جن ہے چیچے ہٹ جائے ان کو کھا و اور جو جانور سمندر میں مرجا کمی اور سرکر اور آجا کمیں ان کو نہ کھاؤ۔

اسنن الإداؤد "ج"ر قم الدعث AIA " سنن ابن ماج "ج"ر قم الدعث ٣٢٣٤)

كافع والے كت مائب كيو ويل اور كو كو في وجير نے حرم اور فير حرم من قل كرنے كا عم ديا ہے ، الميم ابوارى ج ٢٠ رقم الحديث: ١٨٨) اس كيدان كو كعال بحي حرام ب-

خشرات الارض اور بول دیراز اور دیر برهم کی نجاست کے حرام ہونے پر تمام امت مسلمہ کا انهاع ہے۔ مھملی کو کھانا بلانقاق حال ہے اور مھملی کے علاوہ باق دریائی جانوروں میں اختلاف ہے۔ امام ابو حفیفہ کے نزدیک وہ حرام یں کیونک وہ سب خبیث ہیں الین لمع سلیم ان سے بتدر ہوتی ہو فبیث چیزوں کو اللہ تعالی نے حرام کرویا ہے۔

[عدائي اخيرين اص ٣٣٣)

وَ يُحِلُ لَهُمُ الطَّلِينَاتِ وَ يُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ وہ نی ای ان کے لیے طیب جزیں طال کرتے ہیں اور الْحَيَالَيْكَ (الأعراف:20) مبیث چزوں کو حرام کرتے ہیں۔

المام الك ك زويك تمام ممندرى جانور طال مين كموا ان كي جن كي حل فتكي هي حرام ب- مثلاً حدود إماثيد الدسوتى 'ج ٢ م ١٥٥) المام احمد ك نزد يك بحى مجلى سميت تمام جانور طال بي- البته ان ك نزد يك مينذك كو كمانا جائز نسي ب كونك في ويور في المركة عن فرايا إلى المائي الوريداس كريم كديل إدر حريه اور كوج (ايك تم کی چھلی جس کی سونڈ پر آرا ہو تاہے) کو کھلا بھی جائز نمیں ہے " کو تک بید دونوں آدمیوں کو کھا جاتے ہیں۔ امنی ابن قدامہ"

فينان القر أن

جندسوم

ع ' م ۴۳۸ مطبومہ هلوالفکو ' بیروت) المام شافعی کے زویک مینڈک کے سواتمام سمندری جانوروں کو کھانا جائز ہے اور بعض ائمه شافعيد في مينزك كے كھانے كو بھي جائز كما ب- اللمذب ج ٢٠ ص ٢٥٠)

ائمه څلاشد کې دليل قر آن مجيد کي په آيت ہے:

تمهادے کیے سمند ری شکار اور اس کا خدام طال کر دیا گیا ے بحرمارے اور مسافروں کے فائدو کے لیے۔ أحِلَّ لَكُمُ صَيْدُ الْسَعْبِرَوَ طَعَامُهُ مَسَاعًا لَّكُمُّ مَوَلِلسَّيِّنَارَةِ (السائده ٩٤٠)

اوراس مدعث سے بھی ان کااستدالل ب

حعرت ابو جريره براين الرق ين كر أيك فض في من وسول الله منويد سه سوال كياك بم مندر من سفركت بي اور ادارے پاس بان کم مو آ ہے۔ اگر ہم اس بانی سے وضو کر لیس تو پاسے رہ جا کی مے اکماہم سمندر کے بانی سے وضو کرلیں؟ آپ نے فرمایا سمندر کایانی یاک کرنے والا باور اس کا مروار طال ب

(سنن الترزي 'جا' رقم الحديث: ١٩ ' سنن ابوداؤه 'جَا' رقم الحديث: ٨٣ سنن النسائل 'جا' رقم الحديث: ٥٠ 'سنن ابن ماب 'جا' رقم الديث ٢٨٦ موطالم بالك رقم الديث ١٣٠ المستدرك عاص من مع مع المح ابن مبان وقم الديث ١٣٣٠ المستقى ارقم الديث ١٣٣٠ سنداس عارة مالدعث ١٢٠٤ فيع جديد اسند احراج واص ١٢٠٠ فيع قديما

علامد ابن قدامد نے کما ہے کہ عطاء اور عمرو بن دینارے روایت ہے کہ نی پڑھیں نے فرمایا اللہ تعالی نے ابن آوم کے ليے سمندر من برچ كون كرديا إس (المنى جوس ٢٣٨ مطبور دار الفكر ايروت ٥٠٥١مار)

الله تعالى كاارشكو ب: اور يموديون رجم في برناخن والاجانور حرام كرديا تعاادر بم في ان ركائ اور بكرى كى جربى حرام کردی تھی محرجو چرلی اس کی چینموں پر ہو ایان کی آنتوں پر ہو ایجو چرلی ان کی بڑی پر ہوا ہے ہم نے ان کو ان کی سراتش کی سزا دی تھی اور بے شک ہم ضرور سے میں-الانعام ١١٣٦) بعض الفاظ کے معنی

دی طبعسر خاخن والے 'اس سے مراد ایسے جاتور ہیں 'جن کے ناخن ان کی انگیوں سے الگ نہ ہوں۔ جیسے اونٹ اور دیگر مورش 'اس کے برخلاف پھاڑنے والے در ندوں کے ناخن ان کی انگیوں ہے الگ ہو جاتے ہیں 'جن ہے وہ شکار کرتے ہیں۔ شحم كامعنى بح يل اور المحوايا الحاويه كى جمع باس كامعنى ب أنت التوى

مید نامحمہ چیچ کی نبوت پر ایک دلیل

المام ابن جرمر متوفی ۱۳۱۰ء نے معترت ابن عباس رمنی اللہ تعالی فنماہے روایت کیاہے کہ نافن والے جانور واب ہے مراد اون 'شتر مرغ اور اس متم کے دیکر چوپائے ہیں۔ معزت سعید بن جبیو نے کمااس سے مراد ایسے جانور ہیں جن کی انگلیاں کملی بوئی نه ہوں۔ قادہ نے کمااس سے مراد اونٹ اشتر مرغ اور پر ندے ہیں۔

(جائع البيان ٨٦٠٩ مل ١٠٩٤ مطبوع داد الفكو أبيروت)

پر الله تعالی نے فرمایا ہم نے ان پر گائے اور بکری کی چربی حرام کردی تھی۔ اس سلسلہ عن مدیث ہے: حضرت ابن عباس رمنی الله عنما بیان کرتے میں کہ حضرت عمر رمنی الله تعالی عند کوید خبر بیخی که فالاں محض ب خمر (شراب) فرونت کی ہے۔ حضرت عمرنے کما اللہ تعالی فلاں مخص کو قتل کرے ' وہ نہیں جانتا تھاکہ رسول اللہ معلی الله عليه و آله وسلم نے فرمایا تعالفہ تعالیٰ بهود کو ہلاک کرے ان پر چربی حرام کی گئی تھی انسوں نے اس کو مجھلایا اور پھر

البيان القر أن

جلدموم

فرد فت كرديا - (مح البخارى ' ج ا ارتم البريث: ۱۲۲۳ مح مسلم 'المباقة ' ۲۲ مير احر ' ج ا ارتم الهديد: ۱۷۰)

الله تعلى في ان جانورول كو بنو اسرائل پر ان كى سركشى كى دجه بيطور سزاح ام كيار كو خلا و انجاء عليم الملام كو باخق الله كرتے ہے اور او كون كو الله كر دائے ، دوكے ہے اور سور كھلتے ہے اور ديكر بلجائز طريقوں سے اوكوں كا بال كھا۔ آ ہے 'اور سے اس ليے ذكر فرايا ہے كہ يمود سے كئے ہے كہ الله تعالى في ان پر كسى جے كو حرام ديس كيا باسوا اس كے جس كو دھرت يعقوب في ورد است من مي الموا اس كے جس كو دھرت يعقوب في فود اسپند فلس پر حرام كيا تھا اور جو كا الله تعالى في بين كى خبردى تھى جس كاكسى كو علم نسيں تھا اس ليے الله تعالى في دورى تھى جس كاكسى كو علم نسيں تھا اس ليے الله تعالى في دورى تھى جس كاكسى كو علم نسيں تھا اس فير على ضور ہے ہيں اور سے ميد باھر ميلي كى نبوت كى دليل ہے كہ آپ في ميود كو باخى كى انبى الله بيات كى خبردى جس كاكسى كو علم نسيں تھا اور جس كو جائے ہے ليے وقى كے سوالور كو كى ذرايد نميں تھا۔

الله تعالی کاارشاد ہے: پس آگر وہ آپ کی محذیب کریں تو آپ کئے مکہ تمہارا رب بہت وسیع رحمت والا ہے اور اس کاعذاب جرم کرنے والے لوگوں سے تلانس جاسکیک الانوام نے 18

اس آیت کامعنی ہے کہ اے مجماع ملی افتہ طلی و سلم آگر ہید میں واس خبری آپ کی تخذیب کریں جو ہم نے آپ کو اہمی
بیان کی ہے کہ ان کی سر کشی کی بنا پر ہم نے ان پر کیا کیا ہوا م کر دیا تھا تو آپ گئے ہمارا رب سب پر رجیم ہے۔ اس کی رحمت تمام
تکلوق پر محیط ہے۔ خواہ وہ اس پر ایمان لائے ہوں یا نہ لائے ہوں۔ نیک ہوں یا بد کار ۔ وہ نہ کافروں کو جلد بکڑ آ ہے نہ گرزگاروں
سے جلد انتظام فیٹا ہے محود وہ ایمان لائے والوں اور اطاعت گزاروں کو بوشی نمیں چھوڑ دیتا اور ان کو ان کے اعمال کے ثواب سے
محروم نمیں کر بائد لیکن جب بجرموں کی برا تمالیوں کی سزاد ہے کا وقت آئے گاتی بھراس کے عذاب کو کوئی ان سے بال نمیں سکے

الله تعالی کاارشادہ: اب مشرک یہ کمیں سے کہ اگر افلہ چاہتاتو ہم شرک کرتے نہ ہمارے ہاں واوا اور نہ ہم کمی چیز کو حرام قرار دیتے۔ اس طرح ان سے پہلے اوگوں نے بھی محذیب کی تھی حتی کہ اندوں نے ہمارا عذاب چکھا۔ آپ کہتے کیا تسارے پاس کوئی علم ہے؟ (اگر ہے تو) اس کو ہمارے میائے چیش کردتم صرف تلن کی پیردی کرتے ہو اور تم محش انگل بچر سے بات کرتے ہو۔ (الانعام: ۴۸) ____

مشركين كے شيمات كاجواب

میلد کے گماکہ گفار قریش نے کماکہ اگر اللہ چاہتاتی ہم اور الدے باپ داوا شرک نہ کرتے اور نہ وہ بحیرہ ممائبہ اور وسیلہ و فیرہ کو حرام قرار دیتے۔ اس کا معنی بیہ ہے کہ اگر اللہ چاہتاتی ہمارے آباء واجداد کی طرف رسول بھیجا ہو ان کو شرک سے منع کرتا اور ان جانوروں کو حرام قرار دیتے ہے منع کرتا اور وہ این کاموں ہے رک جلتے 'پھر ہم بھی این کی اتباع کرتے۔ اللہ تعافی ہے ان کارد کیا اور قربلیا تعمارے پاس کیا دلیل ہے کہ جس طرح تم کمہ رہے ہو ماضی جی ایسای ہوا تھا اگر تعمارے پاس کوئی دلیل ہے تواس کو چی کرد۔

اللہ تعالیٰ نے ان کے اس شبہ کارد فرایا'ای طرح ان سے پہلے اوگوں نے بھی کاذیب کی تھی' حتیٰ کہ انہوں نے ہمارا عذاب پیکھا۔ بین جس طرح کفار مکہ نے بی سیجی کے اللہ تعالی کی توجید پر دیتے ہوئے دلا کل کی کاذیب کی ہے'ای طرح پہلے بھی مشرکین نے اپنے رسولوں کی کلفیب کی تھی اور اس کی بنیاد بھی کوئی علم اور عشل کی دلیل تبیں تھی۔وہ بھی محض ظن اور انگل کوئے سے نے رسولوں کی کلفیب کرتے تھے اور اگر ان کابہ قول سمجے ہو آتو اللہ تعالیٰ ان پر اپناعذ اب کیوں نازل فری آباور ان کو صغیر جستی سے کیوں مثاری علی جب انہوں نے رسولوں کی تحذیب کی توان پر عذاب آیا اور بید اس کی دلیل ہے کہ اللہ نے

غيان القر ان

ان کی طرف رسول بھیے تھے جنول نے ان کو شرک اور خود سائن ترجم سے مع قربالی قد

الله تعالى كاارشادى: آپ كئے كه قوى دليل قو صرف الله ى كه إلى اكر ود عابتا قو ود ضور تم سركو بدايت دے دينا۔ (الانوام: ۱۳۹)

تجريه كاروادر اطال

الله النوائي كاار شاديد : الب كف كرتم البيدان كوابول كو الل كرداويه كوابى دين كه الله في اس كوجرام كياب البل اكروه (يعول كوابي دين إله إلت مقالب) تم ابن كه ما هر كوابي شد وجاكور ند ان نوكول كي تفساقي خوابشول كي يعدي كرما جنول في اماري الماست كي كافري بي بها و جو آخرت برايمان جمي و تكن اور جو (دوممول كوالب رب ك برابر قرار دسية إلى -

(الانتام: ۱۵۰)

اس آیت شن اللہ تعالی سے اسپند رسول مسلی اللہ طلبہ و الدوسلم کو یہ بھم دیا ہے کہ وہ مشرکین سے یہ مطالبہ کریں کہ دہ ہو ہو ہو گئی کرستے ہیں کہ بھیرہ مسائنہ و خیرہ کو اللہ تعالی سنے حوام کیا ہے "وہ اس پر کوئی کو اولا کی اور کوئی شمادت چی کریں کر اللہ تعالی ہے اور اگر شمادت چی کریں کہ اللہ تعالی ہوا ہے اور اگر اللہ خی جورٹی شمادت چی کہ مازل ہوا ہے اور اگر باللہ خی جورٹی شمادت چی کہ موال ہوا ہے اور اگر باللہ خی جورٹی شمادت چی کردیں تو اے مسلم اللہ اللہ کی تعدیق تد کرنا اور جولوک تو اس کہ اور منافع کے حصول اور مصائب اور تعین خوا کہ اور منافع کے حصول اور مصائب اور تعین خوا کہ اور منافع کے حصول اور مصائب اور تعین خوا کہ اور منافع کے حصول اور مصائب اور تعین خوا کہ اور منافع کے حصول اور مصائب اور تعین نہ کریا۔

قُلْ تَعَالُوْا اَتُلُ مَا حَرَّمَ مَ لِكُمُ مَلِيْكُمُ الْلِالْشُرِكُوْ إِنِهِ شَيْئًا وَ

آب کے کراڈی آم یہ اور اس کرن کرتما ہے درب ہے آم یہ کی چری واج کی بی اے کر اس کے ماقد کی کوٹریک قرار

بِالْوَالِلَايْنِ احْسَانًا وَلَاتَقْتَكُوا وَلَادَكُومُ مِنَ الْمُلَاقِ فَيْنُ

دو ادرال باب کے مائد ایما مؤکر و والد این اولاد کو دائل یم کی دجرے کی د کرد ، بم جیس بی

ببيان ائقر آن

کاکا سیکے درآ<u>ل حالکہ</u> خِيانَ القر آنَ

ؽؙٷٝڡؚڹؙۅ۫ؽؘ۞ٙ

ایال سے آیں 0

الله تعالی کارشاوہ: آپ کے کہ آؤی تم پر خلوت کوں کہ تمارے دب نے تم پر کا چین جرام کی ہیں؟ یہ کہ تمارے دب نے تم پر کا چین جرام کی ہیں؟ یہ کہ تم اس کے ماتھ کسی کو شریک نہ قرار دو اور مل باب کہ ماتھ اچھا سلوک کو اور اپنی اولاد کو رزق میں کی کی دج ہے قل نہ کو ایم جمیں بھی رزق دیے ہیں اور ان کو بھی اور دب حیاتی کے کاموں کے قریب نہ جاتو ' فولووہ فلا بر بھوں فواہ پوشیرہ اور جس کے قبل کو الله نے حرام قرار دیا ہے اس کو ہائی قبل نہ کو ' میں وہ کا اینٹہ نے تم کو مؤکد تھم دیا ہے آ کہ تم سمجھوں اور ایسے طریقہ کے بغیریل چیم کے قریب نہ جاتو ' تی کہ دوا پی جوائی کو بھی جائے اور انصاف کے ماتھ پوری باپ قرال کو ' بم بم اور ایسے طریقہ کے بغیریل پینے کی فواہ دو تم ارس کی طاقت کے مطابق ملک ترک جیں اور جب تم کوئی بات کو قواہ انساف کے ماتھ کو فواہ دو تم ارب قراب دار بوں اور اللہ کے حمد کو پورا کو ' میں دہ مور ہیں جن کا اللہ نے حمیس مؤکد تھم دیا ہے آ کہ تم نصحت حاصل کو ۔

(الانعام. ١٥٢-١٥١)

الله تعالى كے حرام كيے ہوئے كاموں كى تفسيل

اس سے پہلی آغوں میں اللہ تعالی نے قربایا تفاکہ مشرکین ہے بعض کاموں اور بعض بیزوں کو از خود حرام قرار دے دیا ہے۔ اللہ تعالی نے اللہ تعالی نے کیا کیا ہے۔ اللہ تعالی ہے کیا کیا جرام فرمائی ہیں؟ ان دو آغوں میں اللہ تعالی نے نوچیوں کی حرمت بیان فرمائی ہیں؟ ان دو آغوں میں اللہ تعالی نے نوچیوں کی حرمت بیان فرمائی ہیں؟ ان دو آغوں میں اللہ تعالی نے نوچیوں کی حرمت بیان فرمائی ہے اور ان کی ضد کو فرض اور وابس قرار دیا ہے۔ وہ لوچیوں ہے۔ اللہ میں اللہ تعالی ہے نوچیوں کی حرمت بیان فرمائی ہے۔ اور ان کی ضد کو فرض اور وابس قرار دیا

(۱) الله كاشريك قرار دينا۔ (۱) ملى باب كے ماتھ فيك سلوك ند كرنا۔ (۱) اولاد كو قل كرنا۔ (۱) بديائى كے كام كرنا۔ (۵) عافق قبل كرنا۔ (۱) يتيم كے مل میں بے جاتصرف كرنا۔ (۵) عاب قول می كی كرنا۔ (۸) عافق بات كرنا۔ (۹) اللہ سے كيے ہوئے حمد كو يوراند كرنا۔

ان نو کاموں کو اللہ تعالی نے حرام قربایا ہے اور ان کی شد اور ان کے خلاف کرنے کو فرض اور واجب فربایا ہے۔ ہم ان شمرے ہرا کیک کی تقدرے تفصیل بیان کر رہے ہیں۔ بھر سرائے کی تعدرے تفصیل بیان کر رہے ہیں۔

شرك كاحرام يونا

بعض مشركين بيول كوالله كاشريك قرار دية تص جيهاك اس آيت بين اشاره ب

وَاذْ فَالَ الْمَرْ هِيْمَ لِآبِيهِ أَزَرَ اَنَتَ عِدُ اصَنَامًا اور جب ايرايم في الإيه آزرے كا محياة هَدُّ اللَّهُ اللَّهِ عِيْمَ الْآبِيهِ أَزَرَ اَنَتَ عِدُ اَصَنَامًا اللهِ اور جب ايرايم في الله الله الله الله

اور بعض مشركين متامعل كى يستش كرتے ميس كى طرف اس آيت مي اشاره ب:

فَلَمْنَا أَفَلَ قَالَ لَا أَحِبُ الْإِفِلِينَ (الانعام ١٤٤) مرجب وه ماده إوب كياة ابراجم كالماس إوب مات

والول كويت تيم كريار

بعض مشركين جنات كونظ تعالى كاشريك كيت تنه بعيداكداس آيت يسب. وَجَدَهَالُوا لِللهِ شُدَرَكَا أَوَاللِّحِينَ (الانعام: ٥٠٠) اور انون في جنات كوالله كاشريك قرار ديا ..

يبيان القرآن

بعض مشركين الله تعالى كے ليے بينے اور بنياں النے تھے جيساك اس آءت ي ب وتعرفواله بيهن وبهات بغيرعلم اور انسوں نے بغیر علم کے اللہ کے لیے اور پٹیاں کمڑ (الأنصام: ١٠٠٠)

الله تعالى كے ليے برحم كا شريك اناحوام ب-اوريد اياكناد ب جس كى آخرت يس معانى حيس بوكى۔

حفرت عبدالله بن مسعود بوليز وان كرتم إلى كريم في فرسول الله منظير من سوال كيا الله تعالى ك زويك مب م بواکناه کون ماہ؟ آپ نے فرمایا ہے کہ تم اللہ کے لیے شریک قرار دو طال تکہ اس نے تہیں پیدا کیا ہے۔ یس نے کہا ہے شک یہ بہت براکنا ہے۔ پھر کون ما براکنا ہے؟ آپ نے فرمایا پھریہ ہے کہ تم اپنی اولاد کو اس خوف سے قبل کرد کہ وہ تسارے مائذ کمناکمائیں ہے۔ میں نے یو جما مجرکون ساگناہ بواہے؟ فرمایا پھریہ کہ تم اپنے بڑوی کی بیوی ہے زناکرو۔

(مج البحاري عه وقم المدعد ١٠١٤ مهم ملم اجل ١٣١٠ (٢٥١ ٨١١ من الوداؤد ع ٢ وقم الدعد ١٢١٠ من الزدى ج٥٠ و قم الحديث: ١١٩٣٠ سنن نسائل عدار قم الحديث: ١١٠١٠ سنن كبري للتسائل عه، وقم الحديث: ١١٠٩٨٤

والدين كے ساتھ بدسلوكى كا حرام ہونا

اس كے بعد مال بلب كے مالته يكل كرنے كا تھم ہے "كيو كلہ افسان يرسب سے بدا احدان الله تعالى كا ب كر اس نے افسان کو پیدائیا۔ اس کے بعد انسان کے اور مل باپ کا احسان ہے اکیو تک انسوں نے اس کی پرورش کی اور جب دو بہت چموٹا اور کھے نسيس كر سكتاتها' اس دقت اس كو ضائع ہونے ہے بچلا۔ اس ليے اللہ تعالیٰ نے ان كی انتمائی تعظیم اور تو تیر كاعظم دیا ہے 'اور اپنا شكراداكرا كے بعد مل بلپ كاشكراداكرنے كى تلقين فرماتى ب

وَبِالْوَالِدَيْنِ إِخْسَالُالِمَّا يَبُلُعُنَ عِنْدَكَ الكبر آخذ مُمَا أَرْكِلا مُمَا مَلا نَعُلُ لَهُمَا أَفِّ وَلاَ تَنْهَرُهُمَا وَقُلْ لَهُمَّا قَوْلًا كَرِيْمُا 0 وَ اغيف لهمكا حَنّاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ زَّبّ ارْحَمُهُمَا كَمَارَبَّيْتِي صَعِيْرًا٥

اور بال إب ك ما في فيك سلوك وكوا أكر تمادي سائے ان بیں ہے ایک إور نوں برحایے کو پہنچ جا کیں تو انہیں اف تک نے ساتھ اور نہ انہیں جمڑ کنااور ان کے ساتھ اوپ ہے بات كر اور زم ول كرمات ان كرمائ عابرى سے بھے ريناوري وعاكرنا كراب ميرب وسيدان دوتون يروحم قربانا

جيهاكه ان دونول نے بچين جل جھے إلا-

اور ہم نے انسان کو اس کے دالدین کے متعلق (نیکی کا) عظم دیا ہے۔ اس کی ماں نے کروری یر کروری برواشت کرتے ہوئے اس کو پیٹ پی اٹھایا اور اس کا دوروں پھو ٹنادو ہریں میں ہے (وہ تھم یہ ہے کہ) میرا اور اپنے والدین کا شکر اوا کرو (تم ہے ہمیری علمرف لو نتاہے۔ (بنی اسرائیل: ۲۳-۲۳) وَوَضَيْسَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَبُوحَسَلَتُهُ أَكُّهُ وَحُسُلَ عَلَى وَهُمِ وَ فِيعِسَالُهُ عِنْ عَامَيْنِ آدِ الشَّكُرُلِيُّ وَلِوَالِدَيْكَ الْكَوَالِكُوالْكُوالْكُوالْكُوالْكُوالْكُوالْكُوالْكُوالْكُوالْكُوالْكُولُولُولُولُ

حضرت حبداللہ بن عموبن العاص دمنی اللہ مختمامیان کرتے ہیں کہ ایک عنص نے نبی پڑیج کی خدمت میں آکر عرض کیا' میں آپ سے جرت اور جماد پر بیعت کر آموں اور اللہ ہے ایر جابتا ہوں۔ آپ نے پوچماکیا تممارے ماں باپ میں ہے کوئی زندہ ے؟اس نے کماہل بلکہ دونوں زعرہ ہیں۔ آپ نے بوچھاتم اللہ ے اجر جاہے ہو؟اس نے کماہل، آپ نے فرمایا اپنال باپ کے باس جاؤ اور ان سے نیک سلوک کرد-(می مسلم البرد اصله '۱' (۱۳۵۳) ۱۳۸۷) والدین کے ساتھ نیک ہے ہے کہ ان کی فرمانہواری اور اطاعیت کی جلت ان کااوب اور احرام کیا جائے۔ ان کی ضروریات ہوری پوری کی جائیں اور ان کی ضروریات کو اپنی ضروریات پر مقدم رکھا جلت آگر وہ ظلم کریں 'پھر بھی ان کی اطاعت کی جائے۔ البتدا فیر شرقی احکام بھی ان کی اطاعت نہ کی جائے 'پھر بھی ان کے ساتھ نری رکھی جلتے اور اگر وہ فوت ہو جائیں تو ان کی قبر کی برارت کی جائے اور ان کے لیے استعفار کیا جائے۔

قل اولاد كاحرام مونا

زماند جالیت می بعض مشرکین رزن می کی کے دُرے اپی اولاد کو قبل کردیے تھے اور بعض عارکی وجے اپی بیٹیوں کو قبل کردیے تھے اور بعض عارکی وجے اپنی بیٹیوں کو قبل کر دیے تھے۔ ایشی انزال کے دلت اندام نمانی ہے آلہ باہر نکال لینا)

بعض مسلمان بھی وزل کرتے ہے "نی منتید نے وزل کو پھیندیدہ قرار رہا ہے۔

حضرت ابوسعید فد دی جرائی بیان کرتے ہیں کہ ہم رسول اللہ جنوبر کے ساتھ فروہ بنو مصال میں گئے۔ ہم نے عرب کی خوبصورت موروں کو قید کر لیا ہمیں اپنی بوبوں ہے الگ ہوئے کانی دن گرد ہے تھے ہم نے چاہا کہ مشرکین ہے فدیہ لے کر ان موروں کو چھوڑ دیں اور ہم نے یہ بھی چاہا کہ ان موروں ہے جسمانی فائدہ بھی حاصل کریں اور عرال کر لیں ایجن از ال کے دات آلہ باہر نکال لیں کا کہ حمل قائم نہ ہو) پھر ہم نے سوچاکہ ہم عرال کر دے ہیں اور دسول اللہ جنوبر ہما ہوں کو جو ہمانہ موجود ہیں اور دسول اللہ جنوبر ہمان کو جو ہمانہ کو ایک عرب ہمانے کے دسول اللہ جنوبر سے اس کا بھر معلوم کر لیں۔ ہم نے دسول اللہ جنوبر سے یہ چھاتو آپ نے فربایا تم پر کوئی حرج تمیں ہے کہ تم ایسانہ کرو ایم بھر ہمانہ کرو ایم کی دیا ہے کہ معلوم کر لیں۔ ہم نے درسول اللہ جنوبر سے یہ جمانی کی دیا ہو کر دے گی۔ کہ تم ایسانہ کرو ایم کی دیا ہو کر دے گی۔

(من البطاري عن وقم المصف عنه المه من من المراه الاستها المهم النواؤد على المراق المراق المراه المراق المري المري المنسلك على المراق المراث والمراث المراه المراه المراه المراه المراه المراق المراق المراه المراه المراه المراه

حضرت جابر بورائد بیان کرتے ہیں کہ آیک فضی وسول الله جیج کی فد ست میں حاضر ہوا اور اس نے عرض کیا کہ میری
آیک بائدی ہے وہ الادی خلومہ ہے اور اللوے لیے پانی لائی ہے۔ ہیں اس سے اپی قوابش ہوری کرتا ہوں اور اس کے حالمہ
او نے کو تاہد کرتا ہوں۔ آپ نے قربایا اگر تم جاہو تو اس سے عزل کراو ' بد شک جو پکو مقدر کیا گیا ہے وہ عظم بہو جائے گا۔
اور نے کو تاہد وہ مختص آیا اور اس نے کماوہ بادی حالمہ ہوگئ ہے۔ آپ نے قربایا میں نے جسس بتایا تھا کہ جو پکو مقدر ہوگیا
ہے وہ اور کرد ہے گا۔ اسمح مسلم 'فاح ' اسم ' الله کا اور اسم ' الله کا کہ اسم ' اسم '

حضرت جائد من بنان کرتے ہیں کہ ہم عول کرتے ہے اور قرآن نازل ہو رہا تھا۔ سفیان نے کہا اگر یہ کوئی ممنوع چیز ہوتی تو قرآن ہمیں اس سے مع کردیا۔

(منح البخاري عن وتم الحديث: ١٠٠٠ من منح مسلم "فاح" ١٠٣٥) ١٣٠٠ سن الرزي ع، وقم الحديث: ١٣٠٠ سن كبرى للنسائي عن وقم الحديث: ١٩٠٠ سنن ابن باجه عن وقم الحديث ١٠٣٠

حضرت جار ہو ہیں۔ بیان کرتے ہیں کہ ہم رسول اللہ عظیم سے عدمی عزل کرتے تھے "نی منظیم کو اس کی خربیتی و آپ نے اس ہے منع نمیں فرمایا۔ (منج مسلم 'نکل '۱۳۸۰ (۱۳۴۰) ۱۳۸۰)

ول كياجائي الحريد على طريق عنها توليد كاعمل كياجائة وبال مرورت شرى وه مروه باور أكر على رزق كوف كي وجد المراك الم

مل ند کیا کیاتو مورت کی جان کو خطرہ ہے تو پھر ہید عمل داجب ہے اور اگر اس کے بیار ہونے فاخد شد ہو تو پھرعزل کرناجائز ہے۔ اس کی ہوری تعمیل ہم الانعام: ١٠٠١) کی تغیریں لکے بچے ہیں۔ بے حیاتی کے کاموں کاحرام ہونا

حضرت ابو ہریرہ بروش بان کرتے ہیں کہ وسول اللہ مرتبیر نے فرمایا جس وقت کوئی زانی زناکر آے تو وہ موس نسیں ہو آ اورجس وتت کوئی چورچوری کرتاہے تووہ مومن نمیں ہو تانورجس وقت کوئی شراب پیاہے تووہ مومن نمیں ہو یا۔ (مج البخاري " ج٢" رقم المدعث ٨١٥٥ مج مسلم "ايمان " ١٠٠ (١٩٩(١١٥)

حضرت ابن عباس رمنی الله عنمابیان کرتے ہیں کہ رسول الله مینیج نے فرمایا الله تعدلی اس مخص پر نعشتہ کرے جو کسی جانور کے ساتھ بد کاری کرے اور تین بار فرایا اللہ اس مخص پر نعنت کرے جو قوم لوط کا عمل کرے۔

(شعب الايمان عموم أم الحديث ٢٥٠٥ مطبوعه واد الكتب العلميه ويروت ١٠١٠٥)

معرت این مہاس رمنی اللہ عنما بیان کرتے ہیں کہ نی جیج نے فرایا فاعل اور منسول یہ کو قبل کردو اور اس کو جو کسی جانور کے ساتھ بد کاری کرے۔ (شعب الایمان مس وقم الدین: عدم مطبوعہ دار الکتب العلميہ ميروت امالاند)

حضرت ابو جريره جي ين كرت بين كررسول الله سيجير فرماياتمن مخصول سے الله تعالى قيامت كردن بات نسيس كريد كااورندان كاتركيد كريد كااورندان كى طرف نظرار حت) كريد كاوران كي ليدوروناك عزاب بوكاريو دهازاني اور جمونا مكران اور متكير فقير-

المح مسلم 'ايمان '۲۱'المنن الكبرى 'ج م'رقم الديث ١٣٨٤ 'شعب الايمان 'ج م'رقم الديث ٥٠٠٥) حضرت ابوسعید خدری رویش بیان کرتے میں کہ رسول اللہ علیج سے قرمایا دنیا سرسبر میٹھی ہے اور ہے تک اللہ حمیس اس من خلیفہ بنانے والا پھرو کھنے والا ہے کہ تم اس میں کیسا عمل کرتے ہو؟ سنواد نیا کے فتنہ سے بچ اور مور تول سکہ فتنہ ہے يج - اسنن ترزي عهم و فم الحديث: ١٩٨٨ سنن ابن مايه 'ج۴' رقم الحديث: •••ه مجع ابن حبان 'ج۴' رقم الحديث: ١٣٢٩ مسند اجر ' ج٣٠ رقم الدعث:١٩٩٩)

حضرت ابو حريرہ برين بيان كرتے ہيں كرنى ترجي ان تربايا اللہ نے ابن جوم ير اس كے زنا كا حصر لكے ديا ہے جس كوده لا محالہ پائے گا' جمجموں کا زناد یکمنا ہے اور زبان کا زنا پولنا ہے اور فنس تمنا کر آبادر اشتیاء کر آہے اور شرمگاہ اس سب کی تصدیق ادر محذیب کرتی ہے۔

(منج البخاري " يزي از قم الحديث ١٢٣٣ منج مسلم اقدر ٢٠٠١ (١٥٥١ ١٦٢٩ من ايوداؤد "ج ٢ رقم الحديث ٢١٥٢) حضرت ابوالمعه جوجے. بیان کرتے ہیں کہ جو مسلمان کسی عورت کے مان کو دیکھے اور پھراٹی نظر پھیرے تو اللہ اس کے دل من عبادت كي طاوت بيد اكروية اسب- اشعب الايمان عمر رقم الديث: ٥٣٣١)

حسن بن ذکوان کتے تھے کہ خوبصور ت بے ریش لڑ کے حسین دو ٹیزاؤں سے زیادہ فتنہ انگیز ہیں۔

اشعب الاعان مع موكر قم الديث ١٥٠٥)

قتل ناحق کاحرام ہو نااور قتل پرحق کی اقسام قل عاجل كو سيمنااس ير موقوف ب كديه جان لياجائ كه قل يرقل كون كون سه بي - جو مخض نماز يرصفها زكوة دين ے انکار کرے 'اس کو قبل کردیا جائے گلداس لیے معزت ابو برصدیق حض نے انھین زکو ہے قبل کیا تھد

ئبيان ا**نقر ان**

جلدسوم

حضرت عبدالله بن محرد منى الله محتماميان كرتے ہيں كه رسول الله مرجين نے فرمايا مجھے لوگوں ہے قبال كرنے كا تحكم ويا كيا ہے حق کہ وہ یہ شادت دیں کہ انلہ کے سواکوئی عبادت کا مستحق نہیں اور عمد اللہ کے رسول میں اور نماز قائم کریں اور زکو ہ اوا کریں۔ اگر انہوں نے یہ کرلیا تو انہوں نے جھے ہے اپنی جانوں اور مانوں کو بچالیا ' ماسوا ان کے حقوق کے اور ان کا حساب اللہ ہر -- المح البخاري عن رقم الحريث: ٢٥ مع مسلم "إيال ٢٦ (٣٨(٢٢))

اور مرد اشادی شده زانی اور مسلمان کے قاتل کو بھی قتل کرنار حق ہے۔

معرت عبدائلہ بن مسعود بوجن میان کرتے ہیں کہ رسول اللہ معجم نے فرمایا کسی مسلمان محض کو جواس بات کی شمادت ویتا ہو کہ اللہ کے سواکوئی عبادت کامستحق نسی ہے اور میں اللہ کارسول ہوں (اس کو) قبل کرنا مرف تمن میں ہے ایک وجہ ہے جائز ہے۔ شادی شدہ زانی ہو بھی مسلمان کا قاتل ہواور دین اسلام کو ترک کرکے مسلمانوں کی جماعت ہے نکلنے وا ا ہو۔

الميح البحاري عين رقم الدعث ١٨٨٨ ميح مسلم عدود ٥٠٠ (١١٤٦) ١٩٩٧ من الرداؤد عين رقم الدعث، ١٠٠٥٠ من الترزي " ج ٣ أرقم الحدعث: ٤٠ ٣٠ من انتهائي " ج ٤ " د قم الحديث ١٣٠٣ من ابن ماج " ج ٢ أ د قم الحديث؛ ١٢٥٣ م

ایک خبیفہ کے انعقاد کے بعد آگر دو سرے خلفہ کے لیے بیعت کی جائے واس کو قتل کر دیا جائے۔

حعرت ابوسعید خدوی جہتے بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ علیج نے فرمایا جب وو ظینوں کے لیے بیعت کی جائے نو ود مرے کو فتل کردو۔ اسمح مسلم الناء 3 ' ا ۱۸۵۲) ۲۲)

جو محض قوم نوط کا ممل کرے اس کو بھی کش کر دیا جائے۔

معرت ابن عباس رمنی الله عنمابیان كرتے بيل كه رسول الله بريش نے فرمايا تم جس كو قوم لوط كا عمل كرتے و يكهو تو فاعل اور مفعول به کو ممل کردد-

(سنن ايوداؤد 'ج ۴ مر قم الدين: ١٢٣٦ سنن الرزي 'ج ۴ رقم الديث ١٢٦١ سنن ابن مايه 'ج ۴ رقم الديث ١٢٥١) جو مخض جانور کے ساتھ پد فعلی کرے اس کو بھی قبل کر دیا جائے۔

حضرت ابن عماس رمنی اللہ عنما بیان کرتے ہیں کہ جو محض جانوز کے ساتھ بدفعل کرے اس محض کو تحق کر دو اور اس جانور كويمي فحل كروو-(منن البرداؤو "ج" وقم الدعث: ١٣٦٣ من الزيري "ج" وقم الدعث ١٣٦٠

اس مدیث کی شد توی تنیں ہے۔

ڈاکو کو قل کر دیا جائے۔ قرآن جمید میں ہے

السماجراة الديس يحاربون الله ورسولة و بَسُعُونَ مِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُعَيِّلُوا إِلَّ يُصَلِّبُوا أَوْ تُفَقَّلَعَ آيُدِيهِمْ وَآرُحُلُهُمْ يَنِي حِلَافٍ أُونِينَهُ وامِيَ الْأَرْضِ (المائدو٢٣٠)

جو لوگ اللہ اور اس كەرسول سے جنگ كرتے بيل اور زنین میں فساد کرتے ہیں 'ان کی میں سزائے کہ ان کو گل کیا جائے ' یا ان کو سولی دی جائے ' یا ان کے باتھ اور پیر کالف جانوں سے کا اور بے جا کی یاان کو شرید رکرویا جائے۔

اكر وْاكوون نے مل بھى لوچىواور قتل بھى كيابو توان كو قتل كرديا جائے اور اگر انسوں نے صرف مل لو يابو توان كے ہاتھ اور پیر نخالف جانیوں سے (مینی سیدها ہاتھ اور النا پیر) کاٹ دیئے جائیں اور اگر انہوں نے صرف دھمکایا ہو تو ان کو شمرید ر کر دیا جائے۔جو لوگ مسلمان عاکم کے خلاف بعادت کریں ان کو بھی قبل کرویا جائے۔ قر آن مجید میں ہے: فَإِنْ لَكُنُ رِحُدُمُ مَا عَلَى الْأَخْرِي فَقَائِلُوا

آگر ایک جماعت دو سرمی شاعت کے خلاف بھاوت کر ہے

غيان القر أن

ق بانی تمامت سے قال کرو می کہ دہ اللہ کے عم کی طرف

الكني تبيغي حقى تعيين الني أمرالله

يو فض ج تني إد شراب بيئاس كو بحي لل كرد إ جائ

معرت معلویہ دولتے بیان کرتے ہیں کہ رسول افتہ میں ہے قربایا جو مخص خمر اشراب بیاس کو کو ڑے لگاؤ اور اگر وہ جو تھی بار شراب پیئے تو اس کو تحل کردو۔

اسنن الترفري على مرقم الديث وجهم مستف حبد الرزاق على وقم الحديث المدائد على الدراج الديث الديث المدائسين الترفري المتن الترفري المديث المدائم المديث المدائم المديث المدائم المديث المدائم المديث الم

ذى كو قتل كما عاجاز ب اور دى ك قال كو قتل كرديا جات كا

عمو بن شعیب اپنے والدے اور وہ اپنے واواے روایت کرتے ہیں کہ رسول افتہ بڑی لے فرمایا تمام مسلمان (وجوب قصاص عمل) اور سرے کی حتی ہیں۔ ان عمل سے اور ان عمل سے بحریہ قصاص عمل) اور ان عمل سے اور ان عمل سے بحریہ کو بناہ دے گا اور وہ ایک دو سرے کی معلونت کریں گے۔ ان کے قوی کو ان کے ضعیف کے ہاں او چا جائے گا اور ان عمل سے بحریک کو بناہ دے تکے گا اور وہ ایک دو سرے کی معلونت کریں گے۔ ان کے قوی کو ان کے ضعیف کے ہاں او چا جائے گا اور کی مومن کو کافر (حمل) کے بدلہ عمل قبل نسمی کیا جائے گا اور نہ ذی کو اس کے حمد جمل مقتل کی جائے گا۔ اور نہ ذی کو اس کے حمد جمل مقتل کی جائے گا۔ (سنن ابج داؤہ ان ج ۲ ار قم الحد بھٹ دار اللکو اس کے حمد جمل مقتل کے دار اسان ابج داؤہ ان ج ۲ ار قم الحد بھٹ دار اللکو اس کے حمد جمل مقتل کی ایسانے گا۔ (سنن ابج داؤہ ان ج ۲ ار قم الحد بھٹ دار اللکو اس کے حمد جمل کی جائے گا۔ (سنن ابج داؤہ ان ج ۲ ار قم الحد بھٹ دار اللکو ایسانے گا۔ (سنن ابج داؤہ ان کے دائر کی دور دار اللکو است

حضرت عبداللہ بن عمرد منی اللہ منما بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ جیج نے ایک مسلمان کو ایک ذی ہے بدلہ میں قال کر دیا اور فرمایا جو لوگ اپنے محمد کو ہورا کرتے ہیں میں ان میں سب سے زیادہ کرتم ہوں۔

اسنن دار تلنی مع ار قراند عد به ۱۳۳۳ سن کبری طبیعتی اج ۱۸ ص ۲۰ س

قرآن مجیداور اطوعت کی دوشی بی بم نے قل یرفن کی ہے صور تم بیان کی بین:
(۱) نماز پڑھنے ہے انکار کرنے دالے کو قل کرف (۱) زکو قادینے ہے انکار کرنے دالے کو قل کرفا (۱۳) مرتز کو قل کرفا۔
(۱۳) شادی شدہ زائی کو عکسار کرے قل کرفا (۵) مسلمان کے قاتل کو قل کرف (۱۱) ایک قلیفہ منعقو ہونے کے بعد دو مرے مدی خلافت کو قل کرفا (۱۵) جانور کے ساتھ بدفعلی کرنے دالے کو قل کرف (۸) جانور کے ساتھ بدفعلی کرنے دالے کو قل کرفا (۱۱) ذاک کو قبل کرفا کرفا کرفا کرفا کی قاتل کو قبل کرفا (۱۱) ذاک کے قاتل کو قبل کرفا

مسلمان اور ذی کے قائل کو تصاصی میں قتل کیا جائے گالور باتی (۹) کو تعربر افتل کیا جائے گا کور ان کو قتل کرنا حکومت کا منصب ہے۔ حوام میں سے کمی مخص کو انہیں قتل کرنے کا اعتبار نہیں ہے اسلمان کے قائل پر قرآن مجید اور احلومت میں سخت وعیدیں ہیں اہم ان میں سے بحض کاذکر کر دہے ہیں:

فل مومن پر وعید

مَنْ تَغَنُّلُ مُوْمِسًا مُنَعَدِدًا مَحَرَّا أَهُ مَهَدَّا مُعَمَّا أَهُ مَهَدَّمُ مَ حَالِدًا مِنْهَا وَ عَصِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَدَ وَ اَعَذَلُهُ عَدَابًا عَظِيْمًا (النساء: **)

جو عض محی مومن کو عدا تمل کرے تواس کی سزاجنم ہے جس علی دہ بیشہ رہے گااور اللہ اس پہ خضبتاک ہو گااور اس پر لعنت فرمائے گااور اللہ نے اس کے لیے پوایڈ اپ تیار کر رکھا الم ترزی نے سند حسن کے ساتھ معرت ابن عباس دخی الله محتما ہے روایت کیا ہے کہ وسول اللہ بیجیج نے فرایا قیامت کے دن معتول تاتی کو چیشانی کے بالوں ہے پکڑ کرلائے گا در آنمائیکہ اس کی رگوں ہے فون بر رہاہو گا وہ کے گاکہ اے میرے دسیداس نے بھے قبل کیا تھا حتی کہ اس کو عرش کے قریب کھڑا کرے گا۔ معرت ابن عباس کے سات نوگوں نے قبہ کا ذکر کیا تو انہوں نے اس کی توبہ کہ اس کی قبہ کہ اس کی قبہ کہ اس کی قبہ کہ وگی اللہ فرکہ اور الم ابن المنذر نے معرت معلویہ جائے۔ ہوئے۔ ہوئے۔ اس کی قبہ کہ رسول اللہ بیجیج نے فرایا قریب کے ہرگناد کو اللہ معاف فرماوے گا سوااس محض کے جو کمی مومن کو عمر اقتی کرے۔ الم ابن المنذر نے معرت ابو ہریوہ جائے۔ ہوئے۔ کہ جو محض کسی ایک بات ہے ہی مومن کے قبل می تعدون کرے گا قباس کی بیشال پر گھا ہو گا کہ یہ اللہ کی دھت ہے ابو سے باوس ہے۔ الم ابن المنذر نے دھنرت ابو بریوہ جائے گا قباس کی بیشال پر گھا ہو گا کہ یہ اللہ کی دھت ہے ابو سے باوس ہے۔ اس معید بن مصور الم ابن جریز الم ابن المنذر راور الم جیسی نے دوایت کیا ہے کہ ابو سجلز نے کہ اس آیے کا معنی ہے۔ الم سعید بن مصور الم ابن جریز الم ابن المنذر راور الم جیسی نے دوایت کیا ہے کہ ابو سجلز نے کہ اس آیے کہ اس آیے کہ ابو معلز نے کہ اس آیے کہ اور جنم کی سزاکا مستق ہے اگر اللہ جاہے گا قواس کی سراے درگن رفرائے گا

(در مشور عم مع مع ۱۲۸ مع ۱۲ معلیات مطبوعه دار الفکر میروت)

يتيم كے مال ميں بے جاتصرف كاحرام ہونا

الله تعالی نے پہلی فربایا ہے اور ایسمے طریقہ کے بغیر بل میتم کے قریب نہ جاؤ حتی کہ وہ اپنی جو اٹی کو پہنچ جائے اور سور و نساو میں فرمایا ہے اور تیموں کو جانبچتے رہو 'حتی کہ جب وہ نکاح (کی عمر) کو پہنچ جا کمیں اور اگر تم ان میں عقل مندی (کے آثار) دیکمو تو ان کے مال ان کے حوالے کر دو' اور ان کے اسوال کو نفسول تر چی اور جلدیازی ہے نہ کھاؤ' اس ڈر ہے کہ وہ بڑے ہو جا کمی کے۔ اانسام:۱۱)

سور و نسامی اس آیت میں ان کی بدنی قوت کا بھی انتہار کیا ہے جیسا کہ بلوفت کی عمر کو وکنچ کے ذکر ہے طاہر ہو آئے اور ان کی ذہنی صلاحیت اور قوت کا بھی انتہار کیا ہے جیسا کہ اس تیر ہے طاہر ہو آئے کہ تم ان جی مقل مندی کے آثار ویکمو ان کی ذہنی صلاحیت اور قوت کا بھی انتہار کیا ہے جیسا کہ اس تیر ہے طاہر ہو آئے ہو قواس بلت کا فد شہ ہے کہ وہ اپنی خواہشوں اور شوق کو بور آکرتے جی سارا بال ضائع کردے گااور اس کے باس پکھی نیس رہے گااس کے جب تک وہ سمجھ وار نہ ہو جائے۔ اہل وار نہ ہو جائے۔ اہل اس کے جو الے اہل ہو جائے۔ اہل وار نہ ہو جائے۔ اہل اس کے خواہشوں اور شوق کی ہو اور اس میں سمجھ داری کے آثار بھی ظاہر ہوں۔ اہم ابو صنید رحمہ اللہ کے خود کی ہے مر میکیں سال

يتيم كامال ناجائز طور ير كمانے كے متعلق بهت مخت وعميد ہے:

إِنَّ الَّذِينَ بَا كُلُولَ آمُوالَ الْبَنْمَى ظُلْمُ اللهِ الْبَنْمَى ظُلْمُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ ال النَّمَا يَا كُلُولَ فِي بُطُلُوبِهِمْ مَارًا وَسَبَصَلُونَ عِنْ اللهِ مَنْ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الله سَعِيْرًا ٥

الم ابن الى شيد "الم ابو بعلى "الم طران "الم ابن حبان اور الم ابن الى ماتم في معرت ابو بريره برين سے روايت كياب كد رسول الله عنظيم في قربليا قيامت كے ون محمد اوك الى قبرون سے النميں كے در "نحاليك ان كے موضوں سے آگ كے شعطے نكل رہے ہوں كے موض كيا كيا يارسول الله إده كون اوگ بين؟ فربليا كيا تم في ضير ديكھاك الله تعالى في قربايا ہے جو

ئابيان القر أن

وك بيمون كالمل عاحق كعلت بين وواسية بينون من محض أل بحررب بين-

الم ابن جرير أور الم ابن الي حاتم في معرت ابوسعيد خدري بويني سه دوايت كياب كه ني مريد في مريد معراج کے واقعات بیں بیان قرمایا میں نے پچھے لوگوں کو دیکھاان کے جو تٹ ٹونٹوں کے ہونٹوں کی طرح تھے اور ان پر ایک محص مقرر تعاجوان کے ہونٹوں کو پکڑ آاور ان کے مند میں اگ کے برے برے بھرڈال دیا مجروہ بھران کے نیلے وسر ہے نکل جاتے ادروہ زور زورے چلائے تھے میں نے ہم مجمااے جمرائیل ایہ کون لوگ ہیں؟ انسوں نے کمایہ وہ لوگ ہیں جو ناحق شیموں کا مال كملت تتيب

الم بيمل في شعب الايمان من حفرت ابو مريره جريز سه روايت كياب كه رسول الله مينيد في اليا جار ايس مخض يں كر الله يرحل ہے كر أن كو جنت مي داخل شرك اور تدان كوكوئي فعت چكھائے۔دائم الخراسود قور اليتم كالمل احق كھانے والااور مال يلب كانافرمان-(در منور "جماس مهمم مطوعه داو الفكو ايروت مهاسمه)

ناپ تول میں کمی کا ترام ہونا

وَلاَتْسَقُعْمُواالُمِكَبَالُوَالُمِيْرَادَ (هود ١٨٠) اورناپ اور ول می کی نه کرو۔ وَيْفَوْعِ أَوْمُوا الْمِعِكَيَّ الْوَالْمِينُوالَ إِللَّهِ سُبِطُو لأنب عسواالتَّاسَ أَشْيَاهَ عُمُمُ (هود: ١٨٥٠) اور نوگوں کی چزیں کم کرکے انہیں نشمان نہ پانیاؤ۔

حضرت عبدالله بن عماس رمنی الله عنمایان کرتے ہیں کہ جس قوم میں خیانت ظاہر ہوگی ان کے داوں میں را عب ڈال دیا جائے گا' اور جس قوم میں بہ کوت زنامو گاان میں بہ کوت موت ہوگی' اور جو قوم ناپ تول میں کی کرے گی ان کارز ق کاٹ دیا جائے گا'اور جو قوم ناحق نیسلے کرے گی ان میں بہت خون ریزی ہوگی'اور جو قوم حمد شکنی کرے گی اللہ تعالی ان پر و شمن کو مسلط كروس كا-(موطانهم مالك وقم الحديث: ١٩٩٨)

ناحق بات كاحرام هونا

يَأَيُّهَا الَّذِيُّلَ أَمُّنُوا كُونُوا كُوَّاوِمُنَّ بِالْفِسُطِ شَهَدَآء لِلهِ وَلَوْعَنَى ٱلْعُسِكُمُ أَو الْوَالِدَيْنِ وَالْآفْرِيِيْنَ أَنَّ يَكُنُّ غَيِيتًا أَوْ فَهَيْرًا فَاللَّهُ أَوْلَى بِهِمَا فَلَا تُشْبِعُوا الْهَوْي أَنَّ تتغدلوا (السماء ١٥٥)

غَلَا تَحْتَشُوا النَّاسَ وَالْحَشَوْنِيُّ

(السائدو: ۳۳)

حضرت طارق بن شاب رہی بیان کرتے ہیں ایک فض نے رکلب میں دیر دکتے ہوئے ٹی مٹائی سے بوجہا کون سا جماد افضل ہے؟ آپ نے فریلیا ظالم باوشاہ کے سامنے کلمہ حق کمنا۔

(سنن التمائي ع مرار قم الحديث: ٣٢٧٠ مطبويه واد المعرف ميروت ١٣١٢ م) حضرت ابوسعید خدری جایش بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے قربایا ظالم حکمران کے سامنے کل

اے میری قوم اٹاپ اور تول کو انسان کے ساتھ ہور اگرو

اے ایمان والوا انسانے پر انجی طرح کائم رہنے والے ہو جاؤ ور آنحالیک اللہ کے لیے موای دینے والے ہوا خواہ (ود کوائی ؛ خود تمهارے خلاف ہو یا والدین کے یا رشتہ واروں کے ابس کے متعلق کو ای دی ہے ؛ خواہ وہ مائد ار ہویا فقیم اللہ ان دونوں کا تم سے زیادہ فیرخواہ ہے ' گذا تم ای خواہل ک عروى كرك عدل عد كريان كرو-

· بى تم لوگول سے ندارواور محمد سے قادرو۔

جلدموم

طبيان القر أن

حق كهناافنل جهادي_

(سنن ابوداؤد الجهما وقم الحديث: ٣٣٣٣م سنن الزرزي مجما وقم الحديث: ٢١٨ سنن ابن باب من ارقم الحديث ١١١ من امير ا جهم من ١١ جهم من ١١٩ مهم ٢٠١٠ جن من ٢٠١٠ طبع قديم ؛

معرت ابوسعید خدری بر پنی بیان کرتے ہیں کہ آیک دن رسول اللہ ستی بنے خطبہ میں جو باتی فرما کیں ان میں یہ بھی فرمایا کہ جب کمی فخص کو کمی حق بات کاعلم ہو تو دہ او گول کے دباؤ کی وجہ ہے اس کو بیان کرنے ہے بازنہ رہے۔

(سنن الززي على رقم الحديث: ۱۹۸ من ابن باب على المرعة دعه المدعة على مع ابن عبن ابن ١٠ وقم الحديث ١٣٣١ مند احد ابع من ١٩١ ع ١٨ ١٨١ ١٨ ١٥ ٥٠ ٢٠ ١ ١٩٠ ١٠ ١١ من ١٨ طبع قد يم استد احد ابعه المدن شد ١٩٦١ طبع جديد ا داد الفكو المهم الاوسط بع ارقم الحديث ١٨٤٥)

القد تعالى سے بدعمدى كرنے كاحرام مونا

وَآوُفُوْ الِعَهُو اللّهِ إِذَا عَاهَدُ ثُمْ وَلَا تَسَعُّمُوا اللّهِ إِذَا عَاهَدُ ثُمْ وَلَا تَسَعُّمُوا الْآيُمُونَ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّه

فَاعُقَبَهُم يَفَاقًا فِي قُلُوبِهِمْ اللَّهِ يَاوَمُ يَلْقَوْنَهُ بِمَنَا آخُلَفُوا اللَّهَ مَا وَعَلَاوْهُ وَ إِمِنَا كَانُوايَكُوبُونَ (التوبه:22)

اور جب تم عمد کرو تو اللہ ہے کیے ہوئے عمد کو ہورا کرو اور العموں کو پیاکر نے کے بعد نہ تو ژو۔

مواللہ سے ملاقات کے دن تک ان کے دلوں میں نقاق رکھ دیا میو تک انسوں نے اللہ سے کے ہوئے دعد وکی خلاف در زی کی تھی ادر اس نے کہ وہ جموٹ ہوئے تھے۔

معرت عبدالله بن مرر منی الله عنما بیان کرتے ہیں که وسول الله جنید نے فرایا قیامت کے دن جب الله الولین و آخرین کو جمع فرمائے گاتو ہر عمد شکن کے لیے ایک جمنڈ ابلند کیا جائے گااور کما جائے گاکہ بیہ قلال بن فلال کی عمد شکنی کاجمنڈ ا ہے۔ اسمیح البحادی نے ارقم الحدیث: ۱۵۸۷ میج مسلم ، جماو ۴ (۳۳۳۸ (۱۷۳۵) مشن الزدی اجس و قم الحدیث: ۱۵۸۷ سفن ابوداؤد

ج٢ أرقم الحديث: ٢٤٥٦ أصح ابن حبان ع١١ أرقم الحديث ١٣٧٦ مند احد عن قم الديث: ١٣٧٨ مند احد عن ١٥١ مناه ١٠١٠ عام ١٣١١ ع ٢ من ٢٥ ٢٩ ٢٩ ٢٩ ٢١ خبع قد يم مند احد اح ٢ أرقم الحديث: ١٨٧٨ خبع جديد اسن كبرى تليمتى ع ١٥٩٠١٨)

حضرت انس بینی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ سیج ہے خطبہ میں فرمایا سنواجو المانت وار نہ ہو اس کا ایمان نہیں اور جو عمد ہو را نہ کرے وہ دین دار نہیں۔(شعب الایمان'ج ۴٬ رقم الحدیث: ۳۲۵۳)

الله تعالی کافرشاد ہے: بشک یہ میراسد هارات ہے موتم ای راستا کی پیردی کرداور دو مرے راستوں پر نہ چلو' دورائے تہیں اللہ کے راستہ سے الگ کردیں گے۔ ای بات کااللہ نے تہیں موکد تھم دیا ہے آگہ تم (گمرای سے) بجو۔ سر

بدعات ساجتناب كانكم

اس سے پہلی دو آغول میں اللہ تعالی نے تنسیل سے انکام بیان فرائے تھے کہ شرک نہ کو الی باب کے ساتھ نیک سلوک کرو فیرہ سید نو تنسیل اور جزئی انکام تھے۔ اس آیت میں اللہ تعالی نے تنسیل اور کلی تھم بیان فربایا ہے جس میں یہ لو انکام اور باتی تمام شرمی انکام داخل میں اور وہ بہ ہے کہ یہ میری مراط متنقیم ہے اور یکی دین اسلام اور منج تدیم ہے ہم ابتداؤ انکام اور منج تدیم ہے ہم ابتداؤ اور تنسیان اس داستہ کو افتیار کرد اور اگر اس داستہ سے اوھر اوھر ہوئے تو کمرای میں پڑ جاؤ سے اس سے معلوم ہواکہ حق کا راستہ صرف ایک ہے اور باطل کے بہت داستے ہیں۔

حضرت عبدالله بن مسعود بروت بیان کرتے میں کہ ایک دن رسول الله عظیم نے ایک خط کھینچااور فرمایا یہ الله کاراست ہے کھر آپ نے اس کے دائیں اور بائیں جانب متعدد خطوط کینچے اور فرمایا یہ مختف راتے میں اور ان میں سے ہر رائے کی طرف شیطان دموت دے وہا ہے۔ گر آپ نے یہ آپ نے یہ آپ شک یہ میراسید معاراست ہے 'سوتم ای رائے کی ہیروی کرو اور دو مرے داستوں پر نہ چلو۔ (الایہ) (الانعام: ۱۵۲)

(سنن داري نج الرقم الديث ٢٠٦ منداجي ٢٠٢ من أجم الديث. ٣٣٣ ٤ ٢١٣٣ سنن ابن ماجه عجزار قم الديث ١١)

عجابہ نے اس آیت کی تغییر جی کھااس آیت جی دو سرے راستوں سے مراد بدعلت ہیں۔ حضرت عبداللہ بن مسود نے کماعلم کے اٹھنے سے پہلے علم کو حاصل کر لو اور علم کا افسنا ہے ہے کہ اسحاب علم اٹھ جائیں کے۔ علم کو حاصل کرو 'کیونکہ تم میں سے کوئی فخص نہیں جانیا کہ اسے کب علم کی ضرورت چین آئے گی۔ تم فنقریب پچھ یوگوں

کو دیکھو سے جو بے دعویٰ کریں سے کہ وہ حمیس اللہ کی کتاب کی طرف بانا رہے ہیں ملائلہ ان وگوں نے کتاب اللہ کو پس پٹ دال دیا ہے۔ الدائم علم حاصل کرو اور بدعات سے بچو اور تم مباعد آرائی سے اور گرائی میں جانے سے بچو اور قدیم نظریات کے

ساتھ وابستہ راو۔(سنن داری من اور قر الحدیث: ۱۳۳ مطبوعہ دار الکتب العربی میروت ۵۰۰سامه) حضرت عماض بن ماریہ جائیں بیان کرتے ہیں کہ ایک دن فجر کی نماز سے بعد رسول اللہ جبر نے ہمس تھے

حضرت عمواض بن مارہ پر پہنے بیان کرتے ہیں کہ ایک دن جمری نماز سے بعد رسول اللہ بڑیور نے ہمیں نصیحت کی اور وہ بہت موثر نصیحت تھی جس سے آنکھوں سے "نسو جاری ہو گئے اور دل خوفردہ ہوگئے۔ ایک فخص نے کما یہ تو ابوراع ہونے والے فخص کی نصیحت ہے۔ آپ ہم کو کیا وصیت قرباتے ہیں۔ آپ نے فرایا میں تم کو افذہ سے ذرنے کی وصیت کرتا ہوں اور حاکم کا حکم نے اور اس کی اطاعت کرنے کی وصیت کرتا ہوں 'خوادوہ جشی غلام ہو۔ تم میں ہے جو فخص بعد میں زندہ رہ گو' دہ بہت اختلاف و کھے گئے۔ تم نی باتوں میں پڑتے ہے بہت اختلاف و کھے گئے۔ تم نی باتوں میں پڑتے ہے بہتا کہ کو کا دم کرے اور اس سنت کو الذم کرنے اور اس سنت کو الذم کرنے اور ضغاہ راشدین میں میں میں سنت کو لاذم کرے اور اس سنت کو دانتوں ہے پکڑ ہو' یہ مدیث حسن میں جو میں دانتوں ہے پکڑ ہو' یہ مدیث حسن میں جے۔

(سنن الرّدَى على رقم الحديث ١٧٥٥ سن الإداؤد على رقم الحديث ١٨٦٠ سن ابن ماجه على أرقم الحديث ٢٦٠ سن دارى على رقم الحديث ١٥٠ مند احمر على رقم الحديث ١٥٠ المستورك على ١٩٠٠ مل ١٩٠٠)

بدعت کی تعریف آور اس کی اقتهام

علامه مجد الدين ابن الا تير محرجز ري متوفى ١٠١٥ ولكمة بين

علامہ محد طاہر وئی متونی ۱۹۸۷ مدے بھی بدھت کا سعنی بیان کرتے ہوئے ہی لکھائے اور مزید یہ لکھائے کہ بعض بدعات واجب ہوتی ہیں جیسے واجب ہوتی ہیں جیسے متکلمین کا اسلام کی حقانیت اور گراہ فرتوں کے روپر دالا کل قائم کرنااور بعض بدعات مستحب ہوتی ہیں جیسے علمی کرہوں کی تصنیف کرنا وی براس کو بتانا اور تراوع کا اور معض بدعات میاح ہوتی ہیں میسے الواع و انسام کے بنظ سنظمی کھائے۔ (مجمع بحار الانواز من اسلام کے بنظ سند کھائے۔ (مجمع بحار الانواز من اسلام کے اسلام کے اللہ الدینہ المنورہ انتہام کا

علامه سيد محد المن ابن عابدين شاى حنى متوفى ٢٥٢هـ لكمية بين:

بعض برعات واجب ہوتی ہیں میسے گراہ فرتوں کے روپر رمائل قائم کرنااور کتاب و سنت کو سجھنے کے لیے علم نمو کو پڑھنا
اور بعض برعات مستحب ہوتی ہیں بیسے سرائے اور درسہ بنانااور ہروہ نیک کام جو اسلام کے ابتدائی جدیں نمیں تھا اور بعض
برعات مکروہ ہوتی ہیں جیسے مساجد کو مزین کرنا اور بعض بدعات مباح ہوتی ہیں جیسے کھانے چنے کی لذیذ چزیں اور عمرہ کپڑے۔
علامہ طحلوی نے شرح جائے صغیر میں علامہ نووی نے تمذیب میں اور علامہ برکلی نے الفریقہ المحدید میں اس طرح لکھا ہے اور
علامہ مشمی نے بدعت محرمہ کی بیہ تعریف کی ہے ہروہ نیا عقیدہ یا نیا کام یا نیا حال جو رسول اللہ سرجیج ہے ثابت شرہ واسور کے
خلاف ہو اس کو سمی حتم کے شیدیا تمویل کی بیار دین تدیم اور صراط مستقیم بنالیا جائے بیسے شید بیروں کو دھونے کی بجائے ان کا
مسم کرتے ہیں اور موڈوں پر مسم کا انگار کرتے ہیں۔

(ر والحتار "ج" مل ٢٤ ٢ مطبوعه وار احياء الراث العربي ميروت ١٩٠٩ اه)

الله تعالى كارشاوب: عربم في موى كوكتب وى الى فض رفحت بورى كرف كري بي بي كام كيد در آنحاليك وه برجيزى تفسيل اور مدايت اور دحت بهاك وه ابن رب ملاقات رايان في أسر الانعام مهدى الله معلى الله من الله تعليم اسلام كى الله تعالى في المناطقة في الله تعليم الله كى الله تعالى في المناطقة في الله تعليم الله كى مربع و النهاء عليم الله كى الله تعليم الله كل المناف من المناف من المناف تهم بوا بكديد الحكام تعليف كابتدائى عد مرب كر قيامت تك المبت الور مترين -

اور یہ جو فرمایا ہے اس فض پر فعت پوری کرنے کے لئے جس نے نیک کام کے اس بھری نے اس کی تغییریں کہا بی اسرائیل جس محسن رائی فعت پوری کرنے کے لئے یہ اسرائیل جس محسن رائی فعت پوری کرنے کے لئے یہ اسرائیل جس محسن رائی فعت پوری کرنے کے لئے یہ کتاب نازل کا۔ اس کی دو مری تغییریہ ہے کہ صفرت موٹ علیہ السلام الله تعالی کے دیکے ہوئے علم کے مطابق نیک کام کرتے

ہے 'اس کے اللہ تعالی نے ان پر خمت ہوری کرنے کے سلے ان کو کیک اورات ادی۔ مراند تعالی نے فرایاک اس نے ورات میں دین کی کیافتنی دکی این؟ فرایاس میں مریزی تنمیل ہے۔اس ہے مراد یدے کہ اس میں وین کے تام احکام ممتا کہ اور مسائل کی تنعیل ہے۔ اندا اس میں عادے تی سیدنا محد بھی کی نوت اور رمالت كابيان ب اور آپ كى نوت ك تام ولاكل ين اور يه ايت اور و حت ب كاك يه اوگ الله ست ما قات را ايان الے اس سے ماقات کا منی ہو ہے کہ اللہ تعلق نے واب اور عمل کاجو دعدہ کیا ہے اس سے ماقات پر ایمان لے O. یا تم یه دور) کو کو اگر جم یار دیمی کتاب نازل باتی تر بم ان سع زیاده بایت یافته بوت ، و اب تبارے پاس تبایس دب کا وات سے دوش والل آئی الد بدایست الد رخمت و قرای سے زیادہ کون خانم برگا چراندی کے تول کی شکف منقريب ان وكول كو يُرب عدا وہ مرت ہے اشکار کر دے یں کر ان کے

ببيان القر أن

بِمَا كَانُوايَفْعَلُونَ ١

0 2 2 500 4.

الله تعالیٰ کاارشاوے: یہ کآب جس کو ہم نے تازل کیاہے برکت والی ہے افغاتم اس کی پیردی کرداور ڈرتے رہو آکیہ تم پر رحم کیاجائے۔(الانعام:۵۵)

مشرکین پر اتمام جحت کے لیے قر آن مجید کو نازل قرمانا

الله تعالی کاارشادے: (یہ کاب اس لیے نازل کی ہے کہ) کمیں تم یہ (نہ) کمو کہ ہم ہے پہلے صرف دو گروہوں پر کاپ نازل کی مجی توریبے تک ہم اس کے پڑھنے پڑھانے سے غائل تھے۔(الانعام:۲۵۱)

ان تقولوا لللا تقولوا كم من على من الله لكم ان تصلوا لللا ان تصلوا كم من على الله الكم ان تصلوا كم من على الم

(تغیرکیر ع ۵ می ۱۸ مواح البیان یو ۸ می ۱۳۲ بینادی علی حاص افازرونی عیم ۴۲ می ۱۳۸ می ۱۸ می ۱۸ می ۱۸)

اس آیت می الل کم سے خطاب ہے کہ کمیں قیامت کے وان وہ یہ نہ کمیں کہ اس سے پہلے یمود اور فصاری پر تورات اور انجیل نازل کی گئی تھی اور ہم جو تکہ ان پڑھ تھے اس لیے ہم اس کے پڑھنے خطانے سے قاصر تھے اور ہم پر کوئی کاب نازل

تبيان القر آن

نس کی گئی تھی جس کی ہم ہیردی کرتے ہمیں کوئی تھم دیا گیا تھا نہ کسی چیزے روکا گیا تھا۔ ہم نے کوئی وعدہ کیا گیا نہ ہم پر کوئی وعیدہ نازل ہوئی۔ وعیدہ نازل ہوئی۔ وعیدہ نازل ہوئی۔ وعیدہ نازل ہوئی۔ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے: یا تم یہ (نہ) کمو کہ اگر ہم پر (بھی) کملپ نازل کی جاتی تو ہم ان سے زیادہ ہدایت یا فتہ ہوتے ، اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے: یا تم یہ (نہ) کمو کہ اگر ہم پر (بھی) کملپ نازل کی جاتی تو ہم ان سے زیادہ ہدایت یا فتہ ہوتے ، اور اب تمہادے باس تمہادے در بواجہ کی طرف سے روشن ولیل آئی اور بدایت اور رحمت تو اس سے ذیاوہ کون طالم ہوگا جو اللہ کی آئیوں کی تحذیب کرے اور ان سے اعراض کرے ، ہم عنقریب ان لوگوں کو برے عذاب کی مزاویں گے جو ہماری آئیوں کی تحذیب کرنے تھے۔ (الافعام: علام)

اس آیت کا معنی ہے یہ کماپ جس کو ہم نے نازل کیا ہے برکت والی ہے، جاکہ مشرکین مکہ اور قریش قیامت کے دن میں نہ کس کہ ہم ہے پہلے بہود اور نصاری پر کماپ نازل کی گئی تھی، اور وہ یہ نہ کمیں کہ جس طرح ان پر کماپ نازل کی گئی تھی، اور وہ یہ نہ کمیں کہ جس طرح ان پر کماپ نازل کی گئی تھی، اور منع کیاجا آبادر بنایا جا آباد فلال راستہ مجھے ہے اور فلال خلا ہے، تو ہم ان سے کمیں زیادہ مجھے راست پر قائم رہے اور احکام پر عمل کرتے اور منوع کا موں ہے باز زہدے ۔ اللہ تعالی نے فرمایا لوہ اب تمارے پاس تمہاری علی عربی زبان جس کماپ آئی ہے، اور اس جس میٹیز کلام ہے جس کی فظیر قیامت تک کوئی نمیں لوسکته اور سراے پاس تمہاری علی عربی زبان جس کم کا بیان ہے اور جو اس پر عمل کریں اور اس کی اجباع کریں، ان کے لیے یہ رحمت ہے۔ یہ جات ہے اس جس طریق مستقیم کا بیان ہے اور جو اس پر عمل کریں اور اس کی اجباع کریں، ان کے لیے یہ رحمت ہے۔ پہرایت ہے اس جس طریق مستقیم کا بیان ہے دیادہ طالم، خطاکار اور حد سے بڑھنے والا اور کون ہو گاجو اللہ تعالی کے ان واضح والا کی گئریب ان کی محد بین ہے والہ اور اللہ تعالی عندیب ان کی تحدید کرے اور اللہ تعالی عندیس کو دو زرخ کے سخت میں گئریب ان کا کریں۔ ان کی تعرب کرے اور اللہ تعالی عندیب ان کی تحدید کرے۔ اور اس سے اعراض کرے اور اللہ تعالی عندیب ان کہ جین کو دو زرخ کے سخت

عذاب کی سزا دے گاہ کیونکہ میہ اللہ تعالٰی کی واضح نشانیوں ہے منہ پھیرتے تھے۔ اللہ تعالٰی کاارشادہ: وہ صرف میہ انظار کر دہے ہیں کہ ان کے پاس فرشتے آئیں ہی آپ کارپ آئے، یا آپ کے رب کی انظار کر دہے ہیں کہ ان کے پاس فرشتے آئیں ہی انظار کردہ ہے گا ہوگا دہ ہم ہوگا رب کی کوئی نشانی آئے، جس دن آپ کے رب کی بعض نشانیاں آ جائیں گی تو کسی ایسے ہخص کو ایمان لانے سے نفع نہیں ہوگا جو اس سے پہلے ایمان نہ لایا ہو، یا اس نے اپنے ایمان ہیں کوئی نیکی نہ کی ہو، آپ کئے کہ تم بھی انتظار کردادر ہم ہمی انتظار کر

رب بل- (الانعام: ١٥٨)

قیامت ہے پہلے دس نشانیوں کاظہور

اس آیت کامنی سے کہ میہ مشرکین ہو بتوں کو اپنے رب کے مساوی قرار وہتے ہیں اور ہاو جو و آپ کی بسیار کو مشش اور تبلغ کے ایمان نمیں لاتے وہ صرف اس کا انتظار کر رہے ہیں کہ موت کے فرشتے آئیں اور ان کی روحوں کو قبض کر میں ہیا حشر کے دن آپ کا رب مخلوق کے مسامنے اپنی شمان کے موابق آئے یا آپ کے رب کی بعض نشانیاں آئیں جن کے بعد آیامت قائم ہو جائے گی۔ آپ کھنے کہ تم بھی انتظار کرواور ہم بھی انتظار کر درہے ہیں۔

معرت مذیفہ بن اسید خفاری وخافی، بیان کرتے ہیں کہ نبی سی تھی ہمارے پاس تشریف فائے، ہم اس وقت آبس ہیں افتحاد کر دہے ہیں۔ آپ نے فرہایا آبارت انتظام کر دہے ہیں۔ آپ نے دہو کی جب تک کہ تم اس سے پہلے دس نشانیاں نہ دیکے اور گھر آپ نے دہو کی باز کر کیا اور وجال کا اور وابد الدرض کا اور مغرب سے سورج کے طلوع ہونے کا اور حضرت میں ابن مریم ملیحا السلام کے نزول کا اور یاجوی اور ماجوی کا اور تبین باد زمین کے دول کا اور یاجوی اور ماجوی کا اور تبین باد زمین کے دول کا اور کھی کا در مغرب کا دہ مشرق کا دہ مشرق کا دہ مشرق کا دہ مشرق کا دہ مشرب کا دہ مشما اور ایک بار جزیرہ عرب کا دہ مشما اور ایک باد خواب کی جو او گوں کو د تھیل کر مشرق کی طرف نے جائے گی۔

(ميح مسلم الفتن ٢٩٠١) ١٥٠١ (١٩٠١) منن الإداؤة على رقم المدعشد ١٣٣١ منن الترزي عمور قم المدعث ١١٩٠ منن كبرى للتمائل على وقم المديثة ١٣٨٠ من إبن باجه عن وقم المدعث ١٩٠٦ مند احمر عن وقم المدعث ١١٨٣٠ منح ابن حبان عان أ المديث: ١٤١٤ المعيم الكبير "ج" وقم المديث: ٣٠٢٨ " سند احد " وقم المديث: ٨٥٤ مصنف أبن الي شيد "ج١٥٥ ص ١٢١١)

اس مدعث من جس وهو كيس كاذكرب معرت ابن مسعود بولي في اس كي يه تغيير كي ب ك جب كفار قرايش ير فحط مسلط کیا گیا تو انہیں زمین اور آسان کے ورمیان وهو کیں کی شکل کی کوئی چیزو کھائی دی اور حضرت مذیفہ اور حضرت این عمر ومنی اللہ مم نے یہ کماہے کہ قیامت کے قریب ایک دھواں ظاہر ہوگا'جس ہے کفار کادم کھنے گئے گااور مومنوں کو صرف زکام ہوگا' یہ وحوان اہمی تک ظاہر قسی ہوا ہے اور بدو حوال جائیس روز تک رہے گا۔ قرآن جید میں ہمی اس کاذکرے:

سو آپ اس دن کا انظار کریں جب آ سان واضح د مواں فَارْتَقِبُ يَوْمُ تَأْتِي السَّمَّاءُ بِدُحَارٍ ثُرِينِين (الدخان: ١٠) - لاكار

اور جب ان ير إنذ اب كا قول واقع بوجائ كا توجم ان يِّنَ الْأَرْضِ لَكُمِّ مُعْمَمُ أَنَ النَّمَاسَ كَامُوانِا يُسِمَّالًا كَهُ وَيْن عَالِم والدور (داج الارض) ثلايس كروان ہے یا تھی کرے گا ہے اس لیے کہ لوگ جاری باتوں بر بقین

وإذاوقع القول عليهم الخرجالهم كأنة يُوْفِنُونَ ۞ (النمل: ٨٠)

الل تنسيرة ذكركياب كربيد ايك بهت بدى كلوق ب جو صفا بها زكو بجا زكر فك مي اكولى هنص اس سے في تسي سكے كا موسمن بر ایک نشانی نگائے گی تو اس کا چرو جیکئے لگے گااور اس کی آئھموں کے درمیان موسن لکھ دے گی کافر بر نشانی نگائے گی تو اس کا چرہ سیاہ ہو جائے گا اور اس کی آئکموں کے درمیان کافر لکھے دے گی۔اس کی شکل وصورت میں اختلاف ہے اور اس میں مجى اختلاف ہے كہ يہ كس جك سے فكلے كى۔ ان ميں ہے كسى چزكے متعلق مدے مرفوع شيں ہے ، بعض متا فرين تے يہ كما ے کہ بید دابد انسان کی شکل میں ہو گااور اہل پر صت اور کفار ہے مناظمہ کرے گااور ان کو دالا کل ہے ساکت کردے گا۔ (المعمم "ج ٤ من - ٢٣٩-٢٣٩ مطبوعه وارابن كثير كيروت اعاماه)

الله تعالیٰ کاارشادہے: بے شک جن لوگوں نے اپنے دین کو تکڑے تکڑے کر دیا اور وہ بہت ہے فرقے بن کئے' آپ کاان سے کوئی تعلق میں ان کامطلہ اللہ کے سرد ب مجروہ ان کو خردے گاجو یکے وہ کرتے تھے۔ (الانعام ۱۵۹۰) فرقد بندي كي ندمت

اس آیت کی تغییر میں کئی قول ہیں:

تبوہ اور مجاہرے مروی ہے کہ اس سے مراد مبود اور نصاری ہیں۔ سیدنامحہ مزیج کی بعثت سے پہلے وہ ایک دو سرے سے انتآاف کرتے ہے اور بعد میں مختف فرقوں میں بٹ گئے۔

حضرت ابو جریرہ جوہنے بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ جیرہ نے اس ایت کی تغیر میں فرمانی یہ اس است کے الل برصت اور الل الشبهات مين أور الل الفقاله مين-(مجمع الروائع مع على ١٣٠٠ مطبوعه ويوت موسماه)

حضرت عمر جانيز بيان كرتے ميں كه رسول الله اليجيز كے حضرت عائشه رمنى الله عنما اس آيت كى تغيير ميں قرمايا اے عائشہا یہ لوگ احجاب الاحواء اور احجاب برعت ہیں اور اہل بدعت کے سوا ہر گذگار کی توب ہے 'ان کی توب مقبول نہیں ہے 'وہ جھے بری میں اور عی ان سے بیزار ہوں۔ حضرت ابن عباس رمنی الله عنمان اس محمل من تغییر می كمالله تعالی فرموشین كو جماعت كه ماند وابسة ريخ كا محم دیا ہے اور ان کو اختلاف اور قرقتہ بندی سے محم قربلا ہے اور یہ خروی ہے کہ اس سے پہلے اوک اللہ کے دین میں جھڑنے کی د جہ ستے ہلاک ہو <u>گئے</u>۔

(تغيير أمام ابن الي عائم " ح 6 من ١٣٥٠ معليور كمتيد فراد معطيق كد كرد " عاماد) ایک قول یہ ہے کد اس سے مراد مشرکین کے قرقے ہیں ایکس مشرکین فرشتوں کو اللہ کی بیٹیاں کتے تھے ، بعض مشرکین بنوں کو اللہ کا شریک کہتے تھے اور بعض مشرکین متاروں کو۔وو مرا قبل یہ ہے کہ بعض اوگ قرآن مجید کی بعض آجوں کو مائے تے اور بعض کا نکار کرتے ہے اور تیمرا قول ہے کہ اس سے مراواس است کے بدعتی اور گراہ فرقے ہیں۔ ظامد: اس آیت سے مرادیہ ہے کہ مسلمانول کو آلیک تظریر پر منفق ہونا چاہیے اور دین می تفرقہ نیس کرنا چاہیے اور بدعات کو اعتبار نسی کرنا چاہیے۔

- يى سفار آئے كا اى كے بيان مىدى يكون كا اوروقنى ادروقنى

ہے الدی سے پہلا ملال ہول

داکول اوروب لاش کول ۱ حالاتکه وه سر پیمبر <u> نبیان انگر ان</u>

علیها و لا ترا و افران و فرن و افران افران افران افران افران و افران

ڗڿؽؙۄٞؖٛۿ

والاسي مدمران ب

اللہ تعالی کا آرشادہ: ہو مخص اللہ کے ہا آیک ٹی کے کر آئے گا اس کے لیے اس جیسی دیں نیکیوں کا اجر ہو گا اور جو قبض ایک برائی لے کر آئے گا 'اس کو صرف ایک برائی کی سزا لے گی اور ان پر ظلم نہیں کیا جائے گا۔(الانعام، ۱۲۰) وس گنا اجر ' سمات سو گنا اور بے حساب اجر کے محامل

معیدین جمهو اعطاء اور ایرائیم وقیرہ سے روایت ہے کہ اس آیت میں السمست سے ماالہ الداللہ کمنا مراد ہے اور السبیق سے مراد شرک ہے۔

قلوہ نے روایت کیا ہے کہ نی بھیج یہ فراتے ہے کہ اجمال چہ قتم کے ہیں۔ ود عمل (2 او اور سزاکو) واجب کرتے ہیں اور ود عمل برابر برابر کرتے ہیں۔ جو دد عمل واجب کرتے ہیں وہ یہ ہیں۔ جو خض اللہ ہے اس صال علی طاقات کرے کہ اس نے اللہ کے ساتھ کی چڑکو شریک نہ کیا ہو وہ جنت میں وافل ہوگا اور جو عض اللہ کے ساتھ اس صال علی طاقات کرے کہ اس نے اللہ کے ساتھ کی چڑکو شریک نہ کیا ہو اور وہ عمل اللہ کی ساتھ کی راو علی طاقات کرے کہ اس نے شرک کیا ہو و وہ دو ترخ میں وافل ہوگا اور جو دد عمل اجر بدھائے ہیں اور ہو مسلمان اللہ کی راو می خرج کرے اس کو سات سوگنا اجر لے گا اور جو اپنے گروالوں پر خرج کرے اس کو وس گنا اجر لے گا اور جو اپنے گروالوں پر خرج کرے اس کو وس گنا اجر لے گا اور جو عمل برابر برابر ہیں اور جو بندہ برائی کا در دو اس کرائی کی برائی کھی جاتی ہے۔

حطرت ابوسعید خدری دولی کے اس آیت کی تغییر میں کما دس مخذاجر اعراب (دیماتی) باویہ نشین) کے لیے ہے اور مهاجرین کے لیے سات سو کنا جرب۔

صرت عبداللہ بن عمرونے كمايہ آيت اعراب كے متعلق نازل مولى ب- ممي نے يو جيااور مماجرين كے ليے كتااجر

جيان القر أڻ

ے؟ انہوں نے کماوہ اس ب بحت زیارہ ہے اور یہ آیت پڑھی: إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقًالَ ذَرُّووَإِنْ تَكُ حَسَمَةً تُعْمِعِفَهَا وَيُوْتِ مِنْ لَدُنَّهُ أَجْرًا عَظِيتُنا

ب شک اللہ ممی ہر ایک ذروے پر ایر بھی ظلم نہیں کرے كاور اكر كوكى خكى موكى تراس كويوها تاري كالوراييناس

ے او تھیم مطافرائے گا۔ (الشبياء: ۲۰۰۱)

اور جب الله كمي شے كو مظيم فرمائے تو وہ بهت بزي مو كى-(جامع البيان اجر ٨٠٥م ١٥٣٠ ١٥٣٠ مخصا مطبوعه هاد العكو ايروت) نيزالله تعالى في فرلما ب

مبركر في الوس كاجرب حماب ي بوكا

إنتمايكونتي الضيرون أخرهم بغيرجساب

نیک عمل کرنے والوں کو دس ممناا جر بھی ماہ ب مات سومناا جر بھی ماہ باور اللہ اس مات سومناکو وممناہی فرماد بتا ہے: جولوگ اینال کواللہ کی راوی فرج کرتے ہیں 'ان کی مثال اس دانے کی طرح ہے جس نے سات بالیں اکا ئیں ا بال میں مودائے میں اور جس کے لیے جا ہے اللہ برحادیتا ہے اورانلہ بزی د معت والا 'بہت علم والا ہے۔

مَكُلُّ اللَّذِيْسَ يُسْمِغُونَ آمُوَالَهُمْ مِنْ سَيِيْلِ الله كمنيل حَبِّيةِ أَلْبَنْتُ مُنْبِهُم سَمُالِ مِنْ كُلِّ سُتُبُكَةِ تِبَالَةُ حَبَّةٍ وَاللَّهُ يُعَمَّاعِ عُلِمَ لِمَنْ يَمَالَةً وَاللَّهُ وَاسِمْ عَيِلْتُهُ ٥ (البقره ١٧٠)

اور مبركرنے والوں كو اللہ تعالى بے حساب اجر عطافر اللہ ا

اور اگرید اعتراض کیاجائے کہ جب ایک نیکی کاوس گنا جر سل ب تو اگر انسان ایک دن نماز بڑھ لے اور وس دن نماز نہ پڑھے یا رمغمان کے تین دن دوزے رکھ لے اور باتی ستائیں دن روزے نہ رکھے توکیایہ اس کے لیے جائز ہوگا؟ اس کاجواب پہ ہے کہ انسان اس نماز کا ملعت ہے جس کا دس گزا جر ہے اور اس روزے کا ملات ہے جس کا دس گزا جر ہے اور اجر کی یہ کثرت اس عمل کو ساقلہ نمیں کرتی جس کا ہے مکلت کیا گیا ہے اور اجر کی دس شکوں میں جو ایک مثل ہے اس کو حاصل کرنے کا دو مكلت شيں ہے ' بلكہ اس نیك كو كرنے كا مكلت ہے جس كا جردس نیكیوں كی مثل ہے۔

ا کے اور اعتراض سے ہے کہ کافر کا کفراتہ محدود زمانہ میں ہوتا ہے اور اس کو سزالا محدود زمانہ کی ہوتی ہے ، توبیاس جرم کے برابر مزانہیں ہے؟ اس کا جواب ہے ہے کہ مزایس ہے لازم نہیں ہے کہ وہ زمانہ جرم کے برابر ہو مثلاً اس زمانہ بیں ایک مختص کی کو ایک منٹ میں قبل کر دیتا ہے اور اس کو مزاعمر قید کی دی جاتی ہے۔ دو مراجواب میہ ہے کہ یہ مزااس کی نیت کے اعتبار ے ہے ایونک کافری نیت یہ ہوتی ہے کہ وہ دانما کفر کرے گاس لیے اس کو دوام کی سزادی جاتی ہے۔

حطرت ابوذر بوالله بيان كرت مي كدرسول الله عليم في فرمايا الله تعالى ارشاد فرما يا يجدو فض ايك فيل الرائد گان کوئی کمشل دی باس سے زائد نیکیوں کا جرفے گانور جو پرائی لے کر آئے گا اس کو صرف ای کی مثل برائی کی سزا ملے گی'یا میں اس کو بخش دوں گلداور جو ایک بالشت میرے قریب ہو تاہے میں اس کے ایک ہاتھ قریب ہو تا ہوں اور جو میرے ایک ہاتھ قریب ہو آئے میں اس کے جار ہاتھ قریب ہو گاہوں اور جو میرے پاس چل کر آباب میں دوڑ آ ہوا اس کے پاس آبا ہول اور جو مخص روئے زہن کے برابر کناولے کر میرے پاس آئے اور میرے ساتھ کسی کو شریک نہ کیا ہو 'میں آئی ہی سغفرت ك مائد ال علاقات كول ك

(منج مسلم 'الذكروالدعا' ۲۷ مستن ابن ماجه من ۳ ۲ رقم الحديث: ۳ ۸۳ مستد احد ' ج ۱۵ رقم الجديث: ۲۱۳ ۸ مليع قا جره إ

تبيان القر أن

حضرت ابوذر برینی بیان کرتے ہیں کہ میں نے عرض کیا کیا رسول اللہ الم اللہ بھے وصبت کیجئے۔ آپ نے فرایا جب تم کوئی گناہ کردتو اس کے فور ابعد کوئی نیکی کردا وہ نیکی اس ممناہ کو منادے گی میں نے عرض کیا یار سول اللہ کیالا الہ الداللہ بھی نیکیوں میں سے ہے؟ آپ نے فرالمیا یہ تو افعنل نیکی ہے۔ شخ احمد شاکرنے کھااس کی سند ضعیف ہے۔

(منداحر نجها رقم الحدیث ۱۳۳۷ ما معالیان نجه می ۱۳۵۵ تغیرالم این الی ماتم نرقم الحدیث ۱۳۵۸ مجمع الزوائد نجره ۱۳ س۸۱۱)
حضرت ابوزر برینی بیان کرتے بیں کہ نمی جیجیز نے قربلیا تم جمال کسی بھی ہو اللہ سے ورواور گزاد کے بعد نیک عمل کرو اور سرات ابوزر برینی بیان کرتے بیل کرو نکار کے ماتھ ایکے اخلاق کے ماتھ چیش آؤ۔ شخ احمد شاکر نے کمال مدیث کی مند صبح ہے۔
دواس گزاد کو مناد سے گا اور لوگوں کے ماتھ ایکے اخلاق کے ماتھ چیش آؤ۔ شخ احمد شاکر نے کمال مدیث کی مند صبح ہے۔
(مند احمد نجر نہ مال رقم الحدیث: ۱۳۵۵ من التر ذبی نج ۱۳ رقم الحدیث الحدیث

ا جریس جو زیادتی کے یہ مختف مراتب ہیں ان کی توجہ اس طرح بھی ہو سکتی ہے کہ نگل کرنے والے کے احوال اور اس
کے اخلاص کے مراتب بھی مختف ہوتے ہیں۔ مثلاً ایک بھوٹے کو کھلٹا کھلٹا نگل ہے 'لیکن اگر ایک کروڑ ہی کسی بھوکے کو کھاٹا
کھلائے توجیہ اس نے سمند دے ایک قطرہ خرج کیا اگر ایک لکھ پٹی کھلائے تو وہ اس کے اعتباد سے زیادہ خرج ہوگا اور اگر ایسا
مختص کی بھو کہ کو کھلٹا کھلائے جس کے پاس صرف وی کھاٹا ہو اور اس مختص کو کھلٹا کھٹا کروہ خور بھو کا رات گزارے تو یہ تو ایسا
ہونے کوئی کروڑ پتی اپنی سادی دولت راہ فعد ایس خرج کروے ایس کی کل دولت تو وی کھاٹا تھا۔ اس لیے ان کے اجر
کے مراتب بھی مختف ہوں گے اور کروڑ پتی کو دس گنا اجر لیے گا کھ پتی کو سات سو گنا اور اس تیسرے مختص کو ادثہ تعالیٰ ہے
حساب اجر عطافریائے گا۔

الله تعالى كاارشادى: آپ كئے كه ب شك ميرے دب نے جمعے مراط مستم كى بدات فرمائى بـ معتمم دين المكت ايراجيم برياطل عن مستاز اور وه مشركوں من عن نہ تھـ (الانعام ٢١١)

اس سورت میں پہلے اللہ تعالی نے توحید کے دلا کل بیان فرائے۔ پھر مشرکین اور منکرین تقدیم کارد فرہایا اب اس کلام کو اس پر ختم فرہایا کہ معظم دین اور صرائل مشتقیم تو ملت ابراهیم ہے جو اللہ کی توحید اور اس کی عبادت پر بنی ہے اور ہدایت مرف اللہ کی مطاسے حاصل ہوتی ہے 'اور ہر مخض اپنے اعمال کاخود زمہ دار ہے اور ہر مخض کو اس کے عمل کی جزالے گی۔

اس آیت می الله تعالی اسیدنی میده می میجید سے به قرباتا ہے کہ اے محما سلی الله علی دسلم آپ ان بت پر ستوں اور مشرکوں سے کئے کہ بیجہ میں مشرکوں سے کئے کہ بیجہ میرے دی مراط مشتم کی ہدایت دی ہے اور کی طب طیفہ مستقیمہ ہے۔ الله نے جمعے دین مستقیم کی ہدایت دی ہے اور کی طب طیفہ ادیان سے اعراض کرنے والے مستقیم کی ہدایت دی ہے جو مصرت ابراهیم کی طب کو د مصرت ابراهیم کی طب السلام تمام باطل ادیان سے اعراض کرنے والے تھے اور وہ مشرکین اور بعد پر متوں میں سے نس تھے۔

الله تعالی کاار شاوی آپ کئے کے بے شک میری تمان اور میری قربانی اور میری زندگی اور میری موت سب اللہ می کے لیے ہے جو تمام جمانوں کارب ہے۔(الانعام: ۱۲۳) نسب کے کامعتی

صلوٰۃ ہے مراویاتہ تجدی نماز ہے یا نماز عیدہ اور نسسکٹ نیکدی جمع ہاور اس کامعنی ہے ویجہ اور اس کامعن ہے جج اور عموض مینڈھاڈن کرنالور نماز اور ذیجہ کو اس آیت جس اس طرح جمع کیاہے جیے صصل لیربٹ واسمسر (الکوئر ،۱۲) جس جمع کیا ہے۔ حسن بھری نے کماسسکی ہے مراوے میرادین۔ ذجاج نے کمااس ہے مراوے میری عمودت۔ ایک توم نے کما

اس آیت می دسک ے مراد تمام نیک کام اور عبادات میں۔

محسای اس سے مراو ہے میں زندگی میں جو عمل کوں گااور مسانی: اس ہے مراو ہے میں وفات کے بعد جن چزوں کی وصیت کوں گا۔

نماز کاافتتاح اسی وجہت ہے داجب ہے یا تحبیرے

الم شافعی نے اس آیت سے بید استدلال کیا ہے کہ نماز کو اس ذکرے شروع کرناچاہیے "کیونکہ اللہ تعالیٰ نے نبی میں پیر اس کا تھم دیا ہے اور اس کو اپنی کتاب میں نازل کیا ہے اور اس کی تائید صدیث میں بھی ہے:

معرت على بن الى طائب بوين مان كرتي بي حديث في جوي نمازك لي كورك و فرات وحديت وحدي ليدذى مطر السموات والارص حديدا وما امام العشر كيس 10 ان صلاتى وسسكى ومحياى و معانى لله رب العلميس (الهريث)

اسمج مسلم مسلوۃ المسافرین ٢-٣ (اے) المان اور اور اور المان استی المادور اور المان اللہ اور المام الوضیف کے نزدیک اس ذکر کے ساتھ نماز کو شروع کرتاواجب نمیں ہے ، بلکہ نماز کا افتتاح تجبیر کے ساتھ واجب ہے اور اس کے بعد قر آن مجید کو پڑھنا فرض ہے اور اس کے در میان اس ذکر کو بھی پڑھنام سخب اور دیگر اذکار کو بھی۔ مثلاً سسحداری اللہ الملہ و سحمد کے کو کلہ معرت محروج فی نمازی سبحداری اللہ و سحمد کے موجود نمازی سبحداری اللہ و سحمد کے کو کلہ معرت محروج فی نمازی سبحداری اللہ و سحمد کے و سارک اسمعی و سحمد کے و اللہ عید کے پڑھے تھے۔ اسمج مسلم مسلوۃ من ١٩٩٤ مالاه اور نمی بیبیر نے و سارک اسمعی و تعدالی حد کے و الاللہ عید کے پڑھے تھے۔ اسمج مسلم مسلوۃ من ١٩٩٤ مالاه اور نمی بیبیر نے جب اعرائی کو نماز کی تعلیم دی تو فرایا جب تم نماز کے لیے کرئے ہو تو انڈ اکبر کو 'پھر قرآن پڑھو۔ (میج البخاری ' تا رقم الحدیث المرک و جمہدت کاذکر نمیں فرایا اس سے معلوم ہواکہ اس سے افتتاح داجب نمیں ہے ' بلکہ تخبیرے افتتاح داجب اور اس سے افتتاح کرنامتھ سے ۔

الله تعالی کاارشاد ہے: اس کاکوئی شریک نیس ہے اور جھے ہی تکم دیا کیا ہے اور میں سب سے پہلا مسلمان ہوں۔
(الانعام ۱۹۳۰)

ني ويهر كاول المسلمين موما

اس آعت میں یہ تقریع ہے کہ سیدنا تھے رہیج سب سے پہلے مسلمان ہیں۔اگریہ اعتراض کیا جائے کہ کیا آپ سے پہلے معفرت ابرائیم اور دیگر انبیاء علیم السلام مسلمان نہیں تھے؟ تواس کے حسب ذیل جوابات ہیں۔

ا- تاريد في سيدنا فير ويوم معي أول العلق بي - بيساك ال مدعث يسب:

حفرت ابو ہریرہ میں ان کرتے ہیں کہ رسول اللہ میں ہے فرمایا ہم آخر ہیں اور ہم قیامت کے دن سابق ہوں گے۔ (میح مسلم '4'۸۵۵' میح البحاری جاار تم الحدیث ۱۸۵۵' میح البحاری جاار تم الحدیث ۱۸۵۱)

۱۰ نی رفتی سب سے پہلے ہی ہیں جیسا کہ ان احادیث ہیں ہے۔ حضرت ابو ہریء جانی بیان کرتے ہیں کہ محابہ نے پوچھا پارسول اللہ اآپ کے لیے نبوت کب واجب ہوئی؟ فرمایا اس وقت آدم دوع اور جسد کے در میان تقصد اسن الرزی ع۵ وقم الدے شدہ ۱۳۳۳ والا کی انبوۃ قابل تیم عجار قم الدے شدہ) حضرت ابو ہریں جائی بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ جینیو نے فرمایا میں فلت کے اختبار سے تمام نبوں میں اول ہوں اور بعث کے اختبار سے تمام نبوں میں اول ہوں اور بعث کے اختبار سے تمام نبوں میں اول ہوں اور بعث کے اختبار سے تمام نبوں میں اول ہوں اور بعث کے اختبار سے تمام نبوں میں اول ہوں اور بعث کے اختبار سے تمام نبوں ہیں اور بعث کے اختبار سے تمام نبوں میں اور بعث کے اختبار سے تمام نبوں میں اور بعث کے اختبار سے تمام نبوں ہیں اور بعث کے اختبار سے تمام نبوں میں اور بعث کے اختبار سے تمام نبوں ہیں اور بعث سے اختبار سے تمام نبوں ہیں کہ دس کے اختبار سے تمام نبوں میں اور بعث میں اور بعث کے اختبار سے تمام نبوں ہیں کہ دس کے اختبار سے تمام نبوں ہیں اور بعث میں کہ دس کے اختبار سے تمام نبوں ہیں کہ دس کے اختبار سے تمام نبوں ہیں کہ دس کر دست کر دس کر در دس کر قَنُوه بِيَانَ كَرِتْ مِينَ كَهُ وَسُولَ اللهُ مِنْ مِنْ مِنْ اللهِ عَلَى مِن سبب اول ہوں اور بعثت میں سبب آثر ہوں۔ (کتر العمال میں اور آم الحدیث: ۱۹۱۷ کال این مدی میں موسا ۱۹۱۹ میں اور ہوت میں ۱۹۱۹ طبقات این سد میں اور اس ۱۳۹ حظرت عمال میں درساد میں داخل مان کر کے میں کر درسال اور معن کر فرا کے میں کی داری کے میں اور میں کا میں اور ک

حعرت عرباض بن ماریہ بھائے بیان کرتے ہیں کہ میں نے رسول افلہ میں ہے فرائے ہوئے سا ہے کہ ہیں اللہ سے پاس خاتم النبسین تکمنا ہوا تھا اور آدم ہنوز مٹی اور گارے میں تھے۔

(ولا کل النبو ة لابی هیم 'جا'ر قم الحدیث و ۱ المستد و ک ج ۴ می ۱۹۰۰ سند احمد 'ج ۴ می ۱۳۸۸ که ۱۴ طبقات این سعد 'جا'می ۱۹ می مجمع الزوائد 'ج ۸ می ۱۳۲۳)

سا۔ نبی ماہیر اپنی امت میں اول المسلمین ہیں۔ یہ آلاو کا تول ہے۔ اتفیر نام ابن ابی حاتم 'جے 'رقم الدید میں اور المسلمین ہیں۔ یہ آلاو کا تول ہے۔ افزیر نام ابن ابی حاتم 'جے 'اور ہر اللہ تعالی کا ارشاد ہے: آپ کئے کیا میں اللہ کے سواکوئی نور رہ تلاش کروں؟ ملا تک وہ ہر چیز کا رہ ہے اور ہر مختص جو پھی کرتا ہے اس کا وی ذمہ دار ہے اور کوئی ہوجہ اٹھانے والا کسی دو سرے کا ہوجہ نہیں اٹھائے گا' پھرتم نے اپنے رب کی طرف او نتا ہے 'آلا وہ حسیس ان چیز اس کے متعلق خبردے گاجن میں تم اختلاف کرتے تھے۔ (الانوام: ۱۲۲۳)

مرف او نتا ہے 'آلا وہ حسیس ان چیز اس کے متعلق خبردے گاجن میں تم اختلاف کرتے تھے۔ (الانوام: ۱۲۲۳)

روایت ہے کہ کفار نے نبی ہینے ہے کہ ااے محما ہے توج ہمارے دین کی طرف آئمیں اور ہمارے فد اول کی عمادت کریں 'اور اپنے دین کو چھوڑ دیں اور ہم دنیا اور آخرت میں آپ کی ہر ضرورت کے کفیل ہوں مجے۔اس موقع پریہ آیت مازل مولی۔ آپ کئے کیا میں اللہ کے سواکوئی اور رب تلاش کروں؟ ملاہ تکہ وہ ہر چیز کارب ہے ادالجامع لاحکام اللز آن'جزہ' میں امیں اس کے بعد اللہ تعالی نے فرمایا کور ہر محض جو پچھ بھی کرتاہے 'اس کاوی ڈمہ دار ہے۔

نضول کے عقد اور و کیل کے تصرفات میں نداہب نقیماء

منول کی بھی ہے کہ آیک فض کمی دو مرے فض کے لیے اس کی اجازت کے بغیر کوئی چیز خرید ہے۔ اس بھے کا ہواز
اس الک کی مرضی پر موقوف ہے۔ اگر وواس کو جائز قرار دے تو ہے بھے جائز ہے 'ورنہ نسی۔ اس طرح فغیول کا کیا ہوا عقد نکاح
بھی 'لڑکے یا لڑکی کی بعد بھی وضامندی ہے جائز ہو آ ہے ' اہادے دور بھی اکثر نکاح ایسے ہی ہوتے ہیں۔ لڑک ہے نکاح کی
اجازت وکیل لیتا ہے 'لیکن لڑک سے ایجلب و قبول وکیل کی بجائے نکاح خوان کر آ ہے۔ یہ بھی فضول کا عقد ہے 'لیکن جب لڑک
رخصت ہو جاتی ہے تو گویا وہ اس فضول کے عقد پر راضی ہو جاتی ہے اور یہ نکاح بافذ ہو جاتی ہے۔ امام شافعی کے زریک فضول کا
عقد جائز نہیں ہے۔ وہ اس آعت ہے استدلال کرتے ہیں اور ہر فض جو کچھ بھی کرتا ہے 'اس کا وی ذمہ وار ہے (الانعام ساند)
میں دو مرااس کا ذمہ دار نہیں ہے 'اور اس آ ہے کے چیش نظروہ فضول کے عقد کو ناجائز کتے ہیں۔ ایام بالک اور ایام ابو صنیف کے
نزد یک فضول کی جھ جائز ہے اور ان کی دلیل ہے حدے ہے:

عودہ بیان کرتے ہیں کہ نی مزیر نے ان کو ایک دینار عطاکیا ؟ کہ وہ آپ کے لیے ایک بھری خریدیں۔ انہوں نے اس دینار سے دو بھریاں خریدیں 'مجرایک بھری کو ایک دینار کے موش فروخت کر دیا اور نی جیرے کے پاس ایک بھری اور ایک دینار لے كر آ گئے "آپ نے ان كے ليے بيچ ميں يركت كى دعاكى "بحرب بواك وہ منى بھى خريد تے توان كو تفع مو آ

(منج البخاري عن رقم الدعث ١٣٧٣ من الإداؤد عن وقم الدعث ١٣٧٨ من الرزي عن وقم الدعث ١٢٦٢ من ابن اجه "ج"ا رقم المدين و ١٢٠٠ مند احد "ج" وقم الحديث ١٨٣٨ مه ١٨٣٨ طبع بديد "سند احد" ج" اص ٢٠٠ " طبع لذيم)

اس مدے میں یہ دلیل ہے کہ فضول کا عقد مجے ہے اور اصل مخض کی رضاعتدی کے بعد اس کا عقد نافذ ہو جائے گلہ نیز اس مدیث میں یہ ولیل بھی ہے کہ وکیل کا تعرف سمج ہے اور اس کے تعرف سے جو منفعت اے حاصل ہوگی وہ امیل کے کے ہوگی۔امام مالک امام ابو یوسف اور امام محمرین حسن کامیمی قول ہے اور امام ابو صنیفہ رحمہ الله بید فرماتے ہیں کہ آگر کوئی مخص مثلاب کے کہ سوروپے کا ایک کلو بحری کا کوشت ترید کر لاؤ اور وہ سوروپ کا دو کلو بحری کا کوشت لے آئے تو وہ زائد ایک کلو موشت دیل کا ہوگا۔ ہو سکتاہے امام ابو صنیفہ رحمہ اللہ تک سے حدیث نہ کپنجی ہو "کیونکہ اس زمانے جیں احلویث کی نشرو اشاعت کے اس قدر دسائل نہیں تھے مجتنے اب میسریں اور احادث کی اٹناعت میں مدر بجا وسعت ہوئی ہے۔

برائی کے موجد کو اس برائی کے مرتبین کی مزاہیں ہے حصہ لیے گا

اس كے بعد اللہ تعالى نے فرمایا اور كوئى يوجه القائے والا كسى دو مرے كابوجه تسمى اٹھائے كالے اس يريہ اعتراض ہوتا ہے ك قرآن مجید کی بعض آنوں اور بعض امادے سے معلوم ہو تاہے؟ کہ بعض لوگوں کے گناہوں کاعذاب بعض وو سرول کو ہوگا 'اور بیراس آیت کے خلاف ہے:

> وكيتخمكن أثقالهم وآثقالاتع آثفالهم (العبكيوت، ١٣)

لِيَحْمِلُوا أَوْرَارَهُمُ كَامِلَةٌ يُرْعَ الْبِعْيَامَةِ وَ مِنُ أَوْرَارِ الَّذِينَ يُصِلُّونَهُمُ بِغَيْرِ عِلْمِ ٱلْآسَاةِ مَايَرِرُونَ (النحل:٣٥)

اور وہ ضرور ایے ہو جو اٹھا کی کے اور اینے ہو جموں کے ساتھ اور کی پر جو اضائیں کے۔

ما ك وه (الحكير كافر) قيامت ك دن اين (كنابول ك) بورے بوجد اٹھا کی اور پچر بوجد ان لوگوں کے اٹھا کیں جنیں وہ اپنی جمالت ہے تمراء کرتے تھے استوادہ کیسا پر ابوجہ ے تصورہ افعاتے ہیں۔

ای طرح بعض امادیث من محی ب

معرت مبداللہ بن مسعود جہر بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ ملی نے فرایا جس محض کو بھی ظل قل کیا جائے گااس ے فون کی سزا سے ایک حصہ پہلے این آدم (قائل) کو بھی لے گا کیونکہ دہ پہلا مخص تعاجس نے قبل کرنے کی رسم اور ممناہ کو

(مي البواري عمر وقم الحديث و ٢٣٣٥ عمر فم الحديث و ١٨٦٤ عدا وقم الحديث ١٨٦٤ مي مسلم وقم الحديث: ١٨١٨ سنن ترزي' ج۴٬ وقم الحديث: ٢١٨١ سنن نسائي' وقم الحديث: ٣٩٩١ سمد احر' ج۴٬ وقم الحديث. ٣٧٠٠ مصنف عبدالرزاق' وقم الحريث: ١٨١٨ معنف ابن الي شيد "جه مق ١٣٠٠ مج ابن حبان "ج٣"، قم الحديث: ١٨٥٠ من كبرى لليمتى "ج٨" ص١٥) اس سوال کاجواب مدے کہ جن لوگوں نے کسی برائی اور گناہ کو ایجاد کیا تو قیامت تک جتنے لوگ اس برائی پر عمل کریں کے 'و ان کے گناہوں کی سزامیں اس برائی کے ایجاد کرنے والے کا بھی حصہ ہوگا کیو تکہ وہ ان سب او کوں کے لیے اس برائی کے ار تكاب كاسبب بنا تفا اور بعد ك نوكون كى سزاعى كونى كى نسي بوگى ، جيساك اس مدعث عى ب:

حضرت الديريره رويني بيان كرت بي كدوسول الله ويوبر في فرماياجس فض في مايت كي والوت دي واس كوبرايت

تمام عمل کرنے والوں کے برابر اجر ملے گااور ان متبعین کے اجروں میں سے کوئی کی نمیں ہوگی اور جس نے کسی گمراہی کی دعوت دی اُقواس کواس مرای پر تمام ممل کرنے والوں کے پرابر سزالے گی اور ان متبعین کی سزاؤں میں کوئی کی نہیں ہوگی۔ (سنن رَدَى عن رقم المعدة: ١٩٨٦ مع مسلم وقم المعدة عمدان من الإداؤد عن رقم المعدة: ١٩٠١ موطالهم مالك

وقم العصيد ٤٠٠ من الراج ٢٠ وقم المعت العام

کوئی مخض دو سرے کے جرم کی سزانہیں پائے گا'اس قاعدہ کے بعض مستثنیات سمى مخص كودو سرے كے كناد كى سزانسى كے كى سے قاعدہ اس صورت بيں ہے جب وہ مخص دو سروں كو اس كناد ہے منع كر يّا رہے ، ليكن أكر كوئى مخص خود نيك مولور اس كے مائے دو سرے كناه كرتے رہيں اور وہ ان كو منع نہ كرے و اس نيك فض کواس کے عذاب ہو گاکہ اس نے ان دو مردن کو برائی سے نہیں رد کلے قر آن جمید ہیں ہے:

كَأُنُوالْا يَنْنَاهُونَ عَنْ تُنْكَرِفَعَلُوهُ لَبِغْسَ و وایک دو سرے کو ان برے کاموں ہے نہیں روکتے تھے

جوانبول نے کیے تھے "البتروہ بہت پراکام کرتے تھے۔

مَا كَمَانُوا يَعْمَلُونَ (المائده ١٤)

حطرت زينب بنت بيس رمنى الله تعالى عنها بيان كرتى بيس كدنى ويلي فيند سه يد قرمات بوسة بيدار موت الاالد الاالله مرب کے لیے تبای او اس شرے جو قریب آپنچا ایوج ماہوج کی رکلوٹ کے ٹوٹے سے 'آج روم فتح ہوگیا۔مغیان نے اپنے ہاتھ سے دس کاعقد متایا 'می نے عرض کیا' یار سول اللہ اکیا ہم بلاک ہوجا کیں گے 'طابا تک ہم میں نیک لوگ موجود ہوں گے آپ نے فرملا بل جب برائیاں زیادہ موجا تھی گ۔

(منح البخاري ' جه' رقم الحديث: ١٣٣٣ منح مسلم ' فتن ا' (٢٨٨٠) ١٠٠٤ ' سنن الرَّذِي ' جه' رقم الجديث: ١٢٨٣ معنف عبدالرذاق" وقم الحديث: ١٠٠٥ مند الحميدي" وقم الديث: ٢٠٨ مسنف ابن الي شيد" وقم الحديث: ١٩٠٧ مند اند" ج١٠ ، قم الحديث:

١٩٨١ ١٤ اسنن كبري لليمتي"ج ١٠ ١٥ ١٩٠٠

ای طرح اس قاعدہ سے بعض احکام بھی مشتی ہیں مثلاً اگر کوئی مسلمان دو سرے مسلمان کو خطا الل کردے یا اس کا تحق شبہ مد مو (آئل شبہ مدید ہے کہ کوئی مض می کو سزادیے کے تصدے لاشی کو اے اہتھ سے ضرب نگائے اور اس کا تصد لل كمناند مو) تواس كى دعت عاقله پر لازم آتى ہے " آكم اس كا فون رائيكل ند مواب يسل جرم توايك مخص نے كيا ہے اور اس كا آوان اس كے عاقلہ اواكريں كے عاقلہ سے مراو جم كے باپ كى طرف سے وشتہ وار بيں جن كو معبلت كتے بيں ا مديث ثريف پي سي:

حضرت مفہو بن شعبہ برائن مان كرتے ہيں كه أيك مورت نے الى سوكن كو خيمه كى ايك چوب سے مارا در انحاليك وہ معنروب طالم تقی اور (اس ضرب سے) اس کو بلاک کردیا۔ ان بس سے ایک عورت بو نمیان کی تھی۔ رسوں اللہ مانجیر نے قاتلہ کے معبلت (باپ کی طرف سے رشتہ دار) پر منفولہ کی دیت لازم کی 'اور اس کے پیٹ کے بچہ کے تکوان میں ایک باندی یا ایک غلام كارينالازم كيك

(منج مسلم ' التسلم ' ١٣٤٢ ' ١٨٨٢ ' ١٨٨٣ ' سنن الوداؤد' جه وقم الدعث: ١٨٥٨ ' بنن الززي ' جه و وقم الدعث: ١٣١٥ سنن التسائل عه' وقم الحديث: ٣٨٣٤ ٢٨٣١ ٢٨٣٠ ٣٨٣٠ سنن ابن باجد عمر أرقم الحديث: ٣٨٣٠)

ای طرح آگر مسلمانوں کے علمہ میں کوئی مسلمان متخول بلیا جائے اور یہ معلوم نہ ہو کہ اس کا تا آل کون ہے؟ تو اس محلّہ کے پیاں آدی یہ شم کھائیں گے کہ نہ ہم نے اس کو قتل کیا ہے 'نہ ہم اس کے قاتل کو جلٹے ہیں اور ان کے نشم کھانے کے بعد

غياڻ القر أن

اف کلر پر دعت افازم آئے گی' آکد مسلمان کا قتل رائیگل نہ جائے 'اس کو قدامت کتے ہیں' یماں بھی قتل کی اور نے کیا ب اور اس کا آلوان بیر محلہ والے اواکریں کے مدعث میں ہے:

حضرت ابن عباس رمنی الله عنما بیان کرتے ہیں کہ افساد کا ایک فض یہودکی رہٹ والی زیمن میں متحق بالے کیا۔ انہوں فے اس کا نبی جیجیج سے ذکر کیا گئی سے بیات کے بیوٹ ہوئے اوگوں کو بلایا اور ہر آیک سے بیہ تسم لی کہ اللہ کی تشم آنہ میں سے اس کو قتل کیا ہے اور نہ جھے اس کے قاتل کا علم ہے بھران پر دے لازم کردی۔ یہود نے کما ہے فدا بی وی تیملہ ہے جو موی طے السلام) کی شریعت میں تھا۔ (منی دار تھنی جو اور قالی عدد الله میں تعالی اسلام) کی شریعت میں تھا۔ (منی دار تھنی جو اور قرائدے شدہ اور دار الکتب اسلید ابیوت اے اسلام)

الله تعالی کاار شخرے: وی ہے جس نے تم کو زعن می خلیفہ بنایا اور تم میں سے بعض کو بعض پر کی درجات بلندی مطافر انی مطافر انی " ناکہ اس نے جو پکھ حمیس مطافر بلاہے اس می حمداری آزمائش کرے۔ بے شک آپ کارب بہت جلد سرا دینے والا ہے اور بے شک وہ بہت بخشنے والا ہے مد حموان ہے۔ الانعام: ۵۱۸

مسلمانوں کو خلیفہ ہنانے کے محال

اس آیت یس الله تعالی نے فرایا ہے کہ اس نے مسلمانوں کو زیمن میں فلیفہ بنایا ہے اس فلانت کے حسب ذیل محال

ا- سدیا محد بالله فاتم النها إلى اس ليه آپ كى امت فاتم الام بهاور چونكديد امت كيلى تمام امول كرادد ب

٢- اس امت كا برقرن دو سرے قرن كے بعد إس لے برقرن دوسرے قرن كا خليف -

الد تعالى في مسلمانوں كو زين يس الناظيف عليا ؟ أكدود ذين يس الله ك احكام جارى كريس = قر آن مجيد يس ب

وَعَدَ اللّهُ الّذِينَ الرّسُوا مِسْكُمْ وَعَدِلُوا الفَّلِخِت لَبَسْتَعْلِفَتَهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا الشَّنَّفُلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبِلِهِمْ وَلَبُمَكِّنَ الشَّنَّفُلَفَ الَّذِي الْفَيْنَ مِنْ قَبِلِهِمْ وَلَبُمَكِّنَ لَهُمُ دِيُسُهُمُ الَّذِي الْفَعْلَى لَهُمْ وَلَبُبَلِاللَّهُمُ إِنَّ مَنْ بَعُد تَعُوفِهِمُ اللّهِ يَالُونَ الْمَعْلَى لَهُمْ وَلَبُبَلِاللّهُمُ إِنِّ شَهْقًا وَمَنْ كَفَرِّبِعُدَ ذَالِكَ فَالْولِي كُونَ الْفَيسِفُونَ ٥ (النوره)

تم يں ہے جو نوگ ايمان لائے اور انسوں ہے تيك عمل كي ان ہے اللہ فرور ہے اللہ فرور ہے اللہ ہوا ہے كہ وہ ان كو زيمن عي ضرور ہے ضرور ظيفہ بنائے كا جس خرح ان ہے پہلے لوگوں كو ظيفہ بنایا تھا اور ان كے ليے اس دين كو سطيوط كر دے كا جس كو ان كے ليے بند قربالیا ہے اور ان كی صالت فوف كو اس سے بدل دے ہي ہي مورى عبادت كريں كے اور ميرے ما تھ كى كو شرك نيس كريں كے اور ميرے ما تھ كى كو شرك نيس كريں كے اور جس نے اس كے بود باشكرى كى تو وى لوگ ان كى تو وى لوگ ان كے بود باشكرى كى تو وى لوگ ان كے اور جس نے اس كے بود باشكرى كى تو وى لوگ قامل ہيں۔

جن لوگوں کو ہم زمین میں سلطنت عطا قرما کی ' تو وہ نماز قائم کریں اور زکو ڈاداکریں اور نیکی کا تھم دیں اور پرائی ہے ووکیں اور سب کاموں کا انجام اللہ علے کے اختیار میں ہے۔ اللَّذِيْنَ إِنَّ مُّكَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ اَفَامُوا الطَّلُوةُ وَأَنُوا الزَّكُوةَ وَآمُرُوا بِالْمَعُرُوفِ وَ الطَّلُوةُ عَنِ الْمُسْكَيرِ وَ لِلْهِ عَاقِبَةُ الْأَمْرُرِ

· (الحج: ٣١)

مسلمانوں کی آزمائش

اس كے بعد قربايا تم بن سے بعض كو بعض يركن ورجات بلندى مطافر الى الك اس نے جو بجے حميس عطافر إيا ہے اس

<u> جياڻ ال</u>قر اُڻ

می تمهاری آنائش کرے ایجی عزت اور شرف میں اور الل اور شجاعت اور علات میں اور تم میں یہ فرق مراتب اور تفاوت اس وجہ سے فری عرب اللہ تعالی تم سب کو برابر کا درجہ دیے سے عاجز تھا کیکہ اس نے تمہیں آزائش بی والے نے لیے تم کو ان مخلف درجات میں رکھا آ کہ د تیا دالوں پر اور قیامت کے دن سب اوگوں کو معلوم ہو کہ مال اور دن تی کو فراوالی سے کون دولت کے فشہ میں اللہ تعالی کے احتام کو بعظ بیشا اور بیش و مشرت میں پڑکیا اور تفسیل خواہشوں کی اجاع می فراوالی سے کون دولت میں بھیا ہوگیا اور کون ایسا ہو جو دولے ہیے کی دیل جیل کے بدجود خدا سے ڈر آ رہا اور اپنے مال کو اللہ کے احتام کی اطاعت اور علی خداکی فدمت میں مرف کر آ رہا اور اللہ تعالی کا شربیالا آ رہا۔ اس طرح میں ہے اور علی محت کو عبادت کی اور میں اور میان میں مالے کیا اور کون اللہ سے میں خرج کیا اور کون اللہ سے فرج کیا دور میں مالے میں مالے میں دہاری میں عبادت کر آ رہا؟ اور کون تیاری میں ملے فکوے کر آ

مسلمانول کے گناہوں پر مواخذہ اور مغفرت کابیان

المرفراليا" بي تك آب كارب بهت جلد مزادسيندالاب تورسه تك وه بهت بخشف والاسه مد عمران ب"-

لین اللہ تعالی فسائی و فیار کو بہت جار سزاد نے والا ہے۔ اس پر یہ اعتراض ہو تا ہے کہ اللہ تعالی تو قاستوں کوؤ میل دیتا ہے کہ وہ تو یہ کرلیں؟ اور عذاب بھی آخرت میں ہوگا پھر کس طرح فربایا کہ وہ بہت جار سزاد ہے والا ہے؟ اس کا بواب یہ ہے کہ ہر وہ کام جو اللہ تعالی کرنے والا ہے ' وہ اس کے اعتبار ہے بہت قریب ہے اور بہت جار ہونے والا ہے ' جیسا کہ قیاست کے متعلق فرمایا

اور قیامت محل پک جمیکنے می داقع ہو جائے گی' بلکہ وہ اس ہے بھی قریب ترہے۔

وَمَنَا اَمْرُ السَّاعَةِ اِلْا كَلَمْجِ الْمَعَيراَ وُمُوَ اَفْرَبُ (السحل: 22) اِنْهُمْ يَرُونَهُ بَعِيداً فَا وَمَالَهُ قِرِيبًا ٥

ب الدووم حرك مت دور كه ربيس اور بمات

(المعارج ١٠٤) محدقرعب كيربين

نیز بعض او قات اللہ تعالی بعض سلمانوں کی خطائ پر جلدی ونیایس ی گرفت فرمالیتا ہے اور ان کو کسی مصیبت یا تاری میں جلا کردیتا ہے جو ان کے گمناموں کا کفارہ ہو جاتی ہے:

اور تم کو ہو معیبت کینی تو وہ تسمارے کر تو توں کے سبب تقی اور بہت می خطاؤں کو تو وہ معاف فرماد یتا ہے۔

وَمَا أَصَابَكُمُ مِنْ مُصِينَةٍ فَيَمَا كَسَبَتُ اللهُ وَمَا أَصَابَكُمُ مِنْ مُصِينَةٍ فَيَمِمَا كَسَبَتُ الم آيُدِينَكُمُ وَيَعُفُواعَنْ كَيْنَيْرِ (الشورى:٣٠)

عفرت عائشہ رضی اللہ عنها بیان کرتی ہیں کہ رسول اللہ عجیز نے فریلا مسلمان کوجو بھی تکلیف پہنچتی ہے 'خواہ کاٹنا چہمے یا اس سے بھی کم ہو اللہ اس تکلیف کے سبب اس کا کیک درجہ بلند کرتا ہے 'یا اس کا کیک گناہ مثاریتا ہے۔

(مج مسلم البرداصل ٢٠١٠ (٢٥٤٢) ١٠٠٠ من الترزي عن رقم الحديث ١٩٦٤)

صفرت آبو ہریرہ اور حفرت آبوسعید خدری رضی اللہ عنما بیان کرتے ہیں کہ انہوں نے رسول اللہ منتی کو یہ فراتے ہوئے سات کہ مسلمان کو جو بھی معیبت پہنچتی ہے خواہ دائی ہو خواہ تھکاوٹ ہو خواہ کوئی اور بیاری ہو خواہ خم ہو خواہ پریشانی معیبت کو اس کے کتابوں کا کفارہ بناری اے۔

(ميح البخاري عن رقم الحديث: ١٠١١ مع مسلم البروالعله ٥٠ (١٣٣٧ ١٣٣٧ سنن الترزي عن رقم الحديث. ٩١٨)

طبيان القر أن

نیز قربایا "وہ بہت بخشنے والا ہے مد صربان ہے" وہ گمناہوں کو بخش دیتا ہے اور اینے فضل و کرم اور رحمت ہے دنیا یس گناہوں پر پردور کھتا ہے اور آ ترت میں انواع واقسام کی نعتیں عطافرا آ ہے۔

حضرت ابن محروضی اللہ مختمامیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ بچیج نے فرہایا قیامت کے ون مومن کو اس کے رب عزوجل کے قریب کیا جائے گا اللہ تعالی اس کو اپنی رحمت کے بازوجی چھیا لے گا۔ پھر اس سے اس کے گزاہوں کا اقرار کرائے گااور فربائے گا کیا تم اس کے گزاہوں کا اقرار کرائے گااور فربائے گا کیا تم اس اگرائے گا بی نے دنیا میں تم پر پردو فربائے گا میں نے دنیا میں تم پر پردو رکھا تھا اور آئے میں تم میں بخش دیتا ہوں۔ پھرائی کو اس کی نیکوں کا محیفہ دے دیا جائے گا اور کفار و متافقین کو تمام محلوقات کے مائے بالا جائے گا۔ بدودلوگ ہیں جنوں نے اللہ برجموٹ بالا جائھا۔

ا میخ البخاری کچه و قم الحدیث ۲۲۳۳ میخ مسلّم التوب ۴۵٬ ۱۸۳۳ میم مسلّم التوب ۴۵٬ ۱۸۳۳ مسنی این باید کچه و آم الحدیث ۱۸۳۳ السنی الکبریّ النسانگ ش۱۰ د قم الحدیث ۱۳۳۳) حرف آخر

آج ۱۵ رجب ۱۸ اومبر ۱۸ نومبر ۱۹۹۷ء ۱۵ ز اتوار بعد از نماز ظهر سورة الانعام کی تغییر کو ی اس مدیث پر شم کرد با بول اور اس مدیث کے مطابق اللہ تعالیٰ سے امید رکھتا ہوں کہ وہ میری لفزشوں پر پردہ رکھے گا اور آ ترت میں میرے تمام گناہوں کو بخش دے گا۔

الله العالمين اجس طرح آپ نے بچھے سور آ الانعام تک تغییر لکھنے کی معادت بخشی ہے 'اپنے فغل و کرم ہے بچھے باتی قرآن بجید کی تغییر لکھنے کی معاد نے کھول دے اور احادیث میں بجھے وسیع نظر عطا قرآن بجید کی تغییر کسی محتود کی بھی عزت عطا فرما اور محتور الله علی اور باتی محتود کی بھی فرما نے فضل فرما اور محتور کا اور محتور الله فرما اور محتور کے اس تغییر میں شکل مطافر بااور محتور کا دور محتور کا دور محتور کی خوشیاں عطافر باس تغییر کو موثر و کرم سے ججھے و نیا اور آخر سے میں جربری افران معیب اور معاد نین کو موثر اور مغیر بنا اور اس کو تاثیام قیامت فیش آفری اور باتی رکھ 'اس کے مصنف ' محم ' کپوزر ' ناشر' قار کمین ' معیب اور معاد نین کو دنیا اور معاد نین کا معیب اور معاد نین کو دنیا اور معاد نین کا میابیاں اور کا مرائیاں ان کا مقدد کرد ہے۔ آئی یا رب العالمین۔

واحردعواماان الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على سيدما محمد حاتم السبيين قائد العر المحجلين شفيع المدنبيس رحمة للعلميس و على آله الطاهرين واصحابه الكاملين وارواجه الطاهرات امهات المؤميس و على اولياء امته وعلماء ملته من المحدثين والمفسريس والعقهاء والمحتهدين والمسلميس احمعين.



مآخذو مراجع

كتب اليه

١- قرآن مجيد

الم أورات

س. البجيل

كتب احاديث

به المام الإصنيف نعمان بن ثابت منوفي و هام المنام المنام معلور ميرسيداين مزاكرا جي

٥- الم مالك ين الس المبح متوفى الد موطال مالك مطيور وار الفكر ميروت الدسال

١٠ الم عبد الله بن مبارك منوفي معد ممكب الرحد معطبوير وار الكتب العليه ويروت

٥- المم الويوسف يعقوب بن ايرابيم متونى مداء "تلب الأكار معطوعه كتبد الريد مانك في

٨- الم محدين حسن شيباني منوني ١٨١ه موطالهم محر معلوم نور محر كار مناز جوارت كتب كرايل

٩- المعمرين حسن شيباني معونيه ٨ مده الله الأكار معطيور ادارة الفران الراجي الدما

١٠ المام و محيج بن جراح متوفى ١١٨ه مملب الزحد "كتبد الدار ميد منوره مهم مله

۱۱ مام مليمان بن داؤوين جارود طيالي حنى منوفى ١٠ عد استد طيالي مطبور اوارة القرآن الراجي ١٠ عدد

جه المام محمر بن أوريس شافعي امتوني مهوجه المستد معطبوعه وار الكتب العلميه البيروت " ووسله

١٠٠ الم محرين عمروالد متوفيء والم محلب المعازى معلوير عالم الكتب يروت مهومه

١١٠ الم عبد الرزاق بن عام منعال متوفي الهد المصنعة مطبوعه كمتب اسلامي بيوت موسو

44 المام عبد الله بن الزبير حميدي منوني ١٦١ه محكمت مسلبور عالم الكتنب بيروت

١٦- الم معيد بن منصور خراسال كي مولى على مسنن معيد بن منصور معطبون وار الكتب العلميد ميوت

المام الويكر عبد الله بن محدين الى شيد محولي ١٦٥ مد المصنف المطبوع الوارة القرآن الراحي ٢٠ ١١٥ مد

١٨- الم احرين منبل موفى الاجه المسند معطور مكتر اسلام ييروت مه الله واو الفكر بيروت الماسله

 ۱۹ الم احدين حنبل معتول اسع محلب الزحد معطوير كمنيدوار الباز كمد المكرم اسماسان. ١٠٠ لهم الوعبد الله بن عبد الرحلن وارى منوفي ٥٥ مد منن دارى معليويدوار الكاب العربي موت ٢٠٠٠ ١١- الم أبو مبدالله محرين اساعيل بخاري متوقى ٥٠ مع بقاري معلمور دار الكتب العلميه ميردت موساله ١٢٠ المام إي عبد الله محدين اساميل بخاري منوفي ٢٥٧ه الدب المغر ومعلود وارالمعرف بيروت ١١٧مد ۱۲۰ المام الوالحسين مسلم تن تجلق تخيرى منوفي اسمه السح مسلم بمعلوند مكتبدزاد مصلى الباذ مكد كرمد كاسمار المام أبوعبدالله محمان يزيرابن اجر متولى المدمنن ابن اجر معطوعدواد الفكر بيروت كاالله ٢٥- المام الوداؤد سليمان بن اشعث محسمة في من من من من البوداؤد معلوم دار الفكر اليوت معامله ١٦٠ الم أبوداؤد سليمان بن اشعث بمستاني متولى ٥٥ تعد ممراسل ابوداؤد معلمور نور جر كارخانه تجارت كتب كراجي عام المام الوجيسي الدين فيسي وقدى متوفى الماسين وقدى مطبوعه وارالفكر أيروت مهامه ١٨- الم الوصيي عمن عين ولاى متونى عله عناكل عديد مطبور الكند الجاريد كم مرر الااعلام ٢٩- الم الوير عمودين الي عاصم الشيداني متونى ٨٨ مد الكب الدر مسطور كتب اساري ابيروت ١٠٠٠مه ٠٠٠ الم على بن عمردار تعنى استوفى هم يعد مستن دار تعنى معلوم وارالكتب العليد بيروت كالمبعد امهر المام احر حموين عبدالخالق زار متونى ١٠ مه البحرائر خار المعروف عسند البراد معطور مؤسسة القرآن بيوت ٩٠ ١٠٠٠ ٣١٠ الم الوحيد الرحل احدين شعيب نسائي متوتى ووساء مسنى نسائي معطوعد وارافعرف أبيروت الاسماء ٣٦٠ الم أبو عبد الرحن احمد من شعيب نسائي متوني مه وجعه وعل اليوم والليانة معلمور مؤسسة الكتب اشقافيه أبيوت ٨٠٠٨ المهم المام الوعبد الرحمن احميين شعيب نسائي متوني موسهد مسنن كبري معطبور دار الكتب اصليه أعدات كالملط ٥٧٠- الم احمد بن على المشنى التميمي المتوفى وسوء استدايو يعلى موصلي معطويدوار الرامون تراث اليوت امه مهد ١٣١٠ - المم حبد الله بن على بن جارود فيشابورى متوفى ٢٠٠٥ من من المستنى مسطوعه دار الكتب العلميد ميونت اعامه عا- الم الو بكر محدين إروان رويال مؤلى وجهد معد الرديال مطبوعدوار لكتب الطب عدد عامد ۲۸: الم محمان اسمال من فريد معولي اسمه المح ابن فزير معلور كتب املاي أيروت ١٥٥ ما ١٠٠٠ المام الإيكر عمر من عليمان بالحندي متوني ١٠١٠ مند حمرتن عبد العزيز معلويد موسسه علوم القرآن ومثل ٠٠٠ المم إلى مواند لينقوب بن اسحاق متوني ٢٠٠١ مند أبوعوانه مسطوعه وارالباز مكه محرمه اسم- المم ابوعيد الله محدا تكيم الترزي المتوتى وسوء الوادر الاصول معلوصدار الريان التراث القابرة ١٨٠ معد ١٧٠ الم أبي جعفراجرين محراللهاي متونى ١٠١١م مشكل الناظار معطبور مكتب وارالباز عمد المكرم كاسماء ١٧٦- المام الوجعفرا حمد المحلوي متوفى ١٩٠٥ مشكل الاخار معطيور مؤسسة الرساله أبيروت العاجليم ١١٧- المام الدجعفرا حدين محراللهادي متوفى ١١٠٠ هذا شرح معالى الاعاد معطبوعه مطبع بجنباتي الإكستان لايور مهومها ٥٧٠- المام محمين جعفرين حيمن أجرى متونى ٢٠٠٤ مكارم الاخلاق معلوه ملبع المدنى معراكاتهد اسم المام ابوحاتم محدين مبلن البستي متوفي عن عند محيح ابن مبلن ترتيب ابن ملبون موسنة الرسلة ميروت مهامله ٢ ١٠- اللم ابو بكرا حمد من حسين آجرى منوتي ١٠ ١٠ الثريد بمعلود كمتب دار السلام أرياض معامله ٣٨- الم ابوالغاسم سليمان بن احمد الطبر اني المتوفي ١٠٠٠ هد ومنح صغير معطبون كمتب سفنيه "هدية منوره" ٨٨ سعد "كتب أسلاي "بيمات ٥٠٠٠ ١٠٠٠ فييان القر أن

٥٧٠- الم ابوالقاسم سليمان بن احد الغبر الى المتوفى ١٠٠٠ مع أوسط معطبور كتب المعارف رياض ٥٠٠٠ مده ٥٠ الم الوالقاسم سليمان بن احر اللبراني المتوتى ١٠٠٠ من محم كبير معفود وادا حياء الراش العني ميوت ان- الم ابوالقاسم مليمان بن احر الغبر الى المتوفى واسله استدالثاسين معطيور مؤسسة الرساله أبيروت المدسجة ٥٠ الم ابوالقاسم سليمان بن احد الغبر الى المتونى ١٠ مهد محمل الدعاؤ مطبوع دار الكتب العليه ويروت مساسمه ٣٥٠ الم ابو براحم بن اسحال وجود ي المعرد فسيان السني متونى ١١٠٠ معلى اليوم والبالة معلمور تور كارخانه حجارت كتب مراحي الله عبد الله بن عدى الجرجاني المرجاني المتوني والكال في طعقاء الرجال المطبوع وارالفكر اليوت ٥٥- الم عبدالله بن محدين جعفرالسروف بلي الشيخ متونى ١٠ مد ممكب العلم معلوم وار الكتب العلميد ميروت ۵۲- الم ابوعيد الله عمر بن عبد الله حاكم نيشام ري متوفي ٥٠ مهم المستدرك معلوم دار الباز محمد كرمه ٥٥٠ الم ابوليم احدين عبدالله امبهاني منوني - العد المية الادلياء معلوه وارالكاب العربي بيروت ع- معلم ٨٥- الم الوليم احمين حيد الله اصبال متونى و المعيد ولاكل النبوة المطبوعة والالتفائس بيدت ٥٥- الم اير براح من حيون يمن مول ٥٨ مد سنن كري مطور ترافية المان-١٠٠ المام الإيكراجرين حسين بهتي امتوني ٥٨ مهم ممكب الاساء والصفات معطبوعه واراحياء الراث العملي ميروت ١٠ الم الويكراحم عن حسين بين متوفى ٥٨ مع معرف المنن والأكار معلوم والالكتب العليه ويدت ١٢- المم ابو يكرا مرين حسين يهتى موفى ٥٨ مهد محكب فضا كل الله تقت معطوعه مكتب المتارة ما مهد ١١٠٠ أمام أبو بمراحم بن حسين بيهل منوفي ٥٥ مهم ولا كل النبوة معطبور دار الكتب العلميه ويروت ۱۲۰ الم ابو براحمر بن حسين بيهني منوني ۵۸ مهر الكب الأداب معلمومه دار الكتب العلميه ميروت ٢ - معد ١٥٠ الم ابر براحمان حسين بيهل موفي ٥٨ مه اشعب الايان معلوصداد الكتب العليد ابروت المهماء ٧١٠ أمام الإحمراوسف ابن عبد البرقر لمي ممثولي ميه مهد عامع بيان العلم و فضل مسلبور وار الكتب العلميد ميروت علاله أمام حسين بن مسعود الوى موفى الموفى المراهد المرا السند معطوعه دار الكتب العلمية اليروت الاسام ١٧٠ أمام الوالقاسم على بن الحن ابن صماكر متونى الاحد الخصر تاريخ وسطل معلوم واد الملك ويوت مهر ملاء ١٩٠ الم الوالقاسم على بن الحن ابن مساكر منوفى ك ٥٠ من تنب ماريخ دمثق معليده واد احياء الزاث العربي بيروت مروسا 20- الم خياء الدين محدين عبد الواحد مقدى حنيلي متوفي ١٣٣٠ ه الاحاديث القارة معطور مكتبه النفتة المعلونيد الكه محرمه ١٩٣٠ ه ا- المام ذك الدين عبد العظيم بن عبد التوى المنذري المتوني اهار التربيب والتربيب معليوندوا والحديث الأبرواء معليه عد. الم ابوعيد الله محرين احرماكي قرطبي منوني ١٧٨ و محتذكرة في اسور الماخرة معطبوعه دار الكتب العلميد ميروت ع-١٣٠٠ ١١٠٠ الم ولى الدين المريزي ممتوفى ٢٨٥ه مككوة معطبور وار الفكر عيروت الاسام ١١٠٠ عانظ براق الدين عبد الله بن يوسف زيلني متوتى ١١٠ مضب الرابية معطيوعه مجلس على سورت بهتد ٢٥٠ عليه ۵٥- حافظ تور الدين على بن الي بحراليشي المتونى عدمه بجيم الردا يدمه لموعد دار الكتاب العملي ميروت مهدمه ٧١- مافظ نور الدين على بن اني يكرالبيشي المتوفى عدمة الشف الاستار مسطيور موسسد الرساله اليروت مهم الله 22- صافظة تور الدين على بن إلى بحراليشي المتوفى عدم موار والطلمان معطبوعدار الكتب العلمية البردت ٨٨- لأم محدين محرج وي منوفي ٨٣٣ه وصن حصين معليور مصطفي الباني ولواده معريه معا

29- المام الوالعباس احمد بن الوبكرة ميري شافعي معنوفي ومعهد أندا كدابين البه معلوند واد الكتب العلب أبيروت مهامينية ٨٠- مافظ علاء الدين بن على بن على مادي تركمان متونى و مهد الجو برانتني معلوم و الله المان ٨١- حافظ مش الدين محدين احدة بي منوني ٨٣٨ه و بلخيص المستدوك معلور مكتبه وارالباز كد محرمه ٨٠٠ حافظ شماب الدين احمد بن على بن حجر عسقل في محتولي معده المطالب العالمية مسطوعه مكتبه وارالباز بمكه محرمه ٨٠٠ حافظ جذال الدين ميوطي متوفي الصد البدور السافرة في امور الأخرة مسطوعه دار الكتب العلميه أيروت ١٦٠٠هم ٨٠٠ - حافظ جذال الدين سيوطي ممتوني للعمد "الجامع الصغير معطوى دار المعرف أبيروت كالمسلام ٨٥٠ حافظ جلال الدين ميو هي متوني عصد "جامع الاحاديث الكبير معلموم دار الفكر "بيروت الاسلام ٨٧- حافظ جلال الدين سيوعلي متوفي يعن الدر المتشرّ عني الاحاديث المشتر ومسلمون وارانكر أبيروت الماسم ٨٠- حافظ بدال الدين سيوطي ممتوني المد السائص أنكبري مسلوعه مكتبذ لورب رشوب محمر ٨٨- حافظ جال الدين سيوطي المتولى الله "شرح العدور المطبوعة والكتب النطب اليوت المه مهد ٨٩- عذامه عبدالواب شعراني متوني ١٤٣ م الكشف الغر المطبوع مطبع عامره عمان المعراسية معا ٩٠٠ علامه على منتى بن حسام الدين بندى يربان يورى منوني هيئه و بحز الجيال معلموم مؤسسة الرساله بيروت ٥٠٠ ماه الا اللم حسن بن عبدالله البعري المتوفي والعدا تغيرالحن البعري معطبوت مكتبدا بداويه المد كرمه اسلاما يه. المم ابوزكريا يجي بن زياد فراومتوني - جمه اسطاني القرآن مسلبوعه بيروت المد في الرائمن على بن ايرايم في امتونى عدمه النير في مطبوع ولوالكتب ايران ٢٠ مده ۱۹۰۰ المام الإجعفر محدين جرح طبري متوتى واسهد عامع البريان معطبوعد والمصرف ويوست او معدد وار الفكر أبيروست ١٥١٧ه ٩٥٠ لهم ابواسحاق ايرابيم بن محد الزجاج معنوني وسعد مواب القرآن معطبوير مقبعه سلمان فارسي محران ٧٠ مهد ١٧- الم ابو بكراحد بن على دازى صاص حتى امتونى ١٠٠٥ والدكام القرقان المطبوعد مسيل أكيدى الماءور ١٠٠٠ ما عد علامدان الليث فعرين في سمرتدى منوفي ١٥٥ جد تغير سمرتدى معلود كتيدواد الباز كم كرمد ١١٥٠ عد ٨٨. في الع جعفر في ان حسن طوى منوني ٨٥٠ مد التيبان في تغيير القرآن معطور عالم الكتب اليوت مه علامه كى بن الى طالب متونى ٢ m مد مشكل اعراب المقرآن معلور المثارات نورار إن mm ١٠٠٠ عظامه الإالىمن على بن محمر بن مبيب ماور دى شافعي ممتوتي من مهمة النكت والعيون مسطبوعه دار الكتب العلميه أبيروت ١٠١٠ علامه الوالحن على بن احمد واحدى نيشا يورى متولّ ٥٨ ٣٥٨ و الوسيط المعلمون وار الكتب العرب بيروت ٥١٠٠ ما ١٠٢- علىمد جار الله محمودين محمود معتدى متولي ٥ ما الشاف معطبور فترالبلاغه مقمار إن الالاله ١٠١٠ علامد أبو بكر محد بن عبد الله العروف بابن العربي ما كلي معوفى ٢٠٨٥ على الفر آن معطيوعد واد المعرف أبيرهت ١٠٨٠ عد ١٠٠٠ علامه الوبكر قاضي عبد الحق بن عالب بن عطيه أند لي ممتوفي مهيمه المحرد الدييز مسلبوعه مكتبه تجاريه الكه محرمه ١٠٥٠ في ابوعلى فضل بن حسن طبرى متولى ٨ ١٠٥٠ أجمع البيان معطوعه انتشاد استام رخسو الريان ٢٠ ١١٠٠ ١٠١٠ على مدانوالغرج عبد الرحمن بن على تن محد جوزي منيل متول ١٨٥٠ زادالمسير معطور كتيب اسلامي بيردت ٢٠٠٠ ٢٠١٠ خواجه عبدائله انصاري من علماءالقرن السلوس تكشف الاسراء وعدة الابرار مسطبوعه انتشار أت امير كبير متهران أيم مهيمه

٨٠٠ الم فخرالدين محدين ضياءالدين عمروازي متوفيه ١٠٠ ه ، تغيير كير معطور واراحياء التراث العملي بيروت ١٥١٥٠ ١٠٩- علامه مى الدين ابن على منوفى ٨ ١٠٠ ما تغير الترآن الكريم معلوم المتثارات تامر ضروام إن ١٩٤٨م ١٠٠ علامه ابو عبدالله محدين احد اللي قرطبي متوني ١١٨٠ مر الجامع الدكام القركان معطبوعه وارالفكر أبيروت كاسلام II- قامنی ابوالتیرعبدالله بن عمر مینوی شیرازی شاتعی معنونی ۱۸۵۰ ما افزار احترسل معطبومه دارا انفکر میروت ۱۳۲۸ م ١١٠ علامدام البركات احرين محرصني متونى ١١٥ مدارك الترسل معلمومد الرافكت الشرب الشاور مهد علاسطي بن محرخازن شافعي معوني ١٥٥ عد الباب الأول معلوم وار الكتب العرب الياور ١١٠٠ علامه فظام الدين حبين بن محرتي متوفي والديد الغيرنية ايوري مطبوعه وار السرف أبيروت أو مهد ١٥٠ علامه تقللدين ابن تيميه متوفى ٨ ١٥ ه التغيير الكبير معلومه دار الكتب العلميه ايروت ١٠٠ معد ١١١- علامه حمس الدين محمد من الي بحرابن اهيم الجوزي منوفي الاعد "بدائع التنسير مسطوعه دارابن الجوزي يمكم محرمه مهامها ١٤٤- علامدالواليان عمرين يوسف الدكري موفي مهديمة العراليد مطبوعه وارالفكر أبيروت الهمال ١١٨٠ علامه ابوالحباس بن يوسف المبين الشافعي منوق ١٥٥٠ الدر المعشون مسلبويد دار الكتب العلميد ميردت مهامه ١١٩- حافظ مماد الدين اساميل من حمرين كثير شافعي منوفي مهد عده متغيير القرآن معلموء تواودا يولس مروت مدهم ماله ١٢٠ علامه عبد الرحمن بن محري مخلف جملي من في ١٥٠ هذه تغييرات على معلوم موسسة الاعلى المعبوعات المدوت ١١١- علامد الدائعين أبرابيم بن عرائبقاى المتوفى عدم والعمائدر ومعطبوند وأر الكتب الاملاي مقابره ما الماء ١٢٢- حافظ جذال الدين سيو في منوفي الاحد الدر المتور معطبور مكتبنه وار الفكر بيروت مهاسمه ١٢٦٠ حافظ جلال الدين سيوطي "متوني عامه "جلالين مطبوعه قد مي كتب قائد الراني ١٣٠٠ علامه مى الدين محمرين مصطفي قوجوى ممتوني اهامه "ماشيه شيخ زاده على البيهناوي معطبوعه كمتبديو سفي "ديوبيثه ١٠٥٠ في والله كاشل منوفى عديد منع العدل فين معطور خيابان امرضرو محران ١٣٦- علامدابوافسود محدتن محر تمادي حني متوفى ١٨٨ه و "تغييرا بوانسود مسطيور دارا أفكر ميردت ١٨٨٠ ١٨٠ عاد علامدا فيرشاب الدين فغالى معرى حنى متوفى ١٩ منه معارية القاضي معطيور وارصاور أبيروت معاهمه ١٢٨- علامه احمد جيون جو نيوري متوني • ١٢٨- التغيير ات الاحرب معطيع كري ، بميني ١٧٩٠ علامدا الأعمل حتى حنى متوفى ٢ ١١١٥ وح البيان معطوعه مكتب املاميه الوعد ١٣٠٠ فيخ سليمان بن محرالمسرد نسب بمل منول ٢٠٠٧ه الغوطة الابيه معطبور الملبعد البيته معمر ١٣٠٠ عند اهجه علامداحمة بن محمصلوي الكيامتوني ٢٢٣ جده النبيرصلوي بمطبوعه داراحيا والكتنب العربية ممعر ١٣٢٠ قامني تناءالله بإلى في معوني ١٢٥٥ مد تغيير مظرى معطبوع الوجه تان بك ويد الوكار ١٣٦٠ شاه عبد العزيز محدث والوي استوفي ١٣٦٠ اتغيير عزيزي معلموه مطبح فاروقي ويل ١١٠٠٠ فين محرين على شوكاني منوني ٥٠ عده التح القديم معلموم وار المعرف أبيروت ٥ - الله علامه ابوالفسنل سيد محمود آكوسي حتى منونى من الله من روح المعانى مسلبوعه دار احياء الزائث العملي أبيروت ١٣١٠ أواب مديق حسن خان بعوبالي منوفي ومعد "فخ البيان معطيور معليج اميريه كبري والق معراه معدد ٢٠٠٤ علامه محر بمال الدين قاعي موفي ١٣٠ اله "تغيير القاعي معطوعه وار القار ميروت ١٨٠١م

مأكمدو مراجع ١٣٨- علامد محرد شيع رضا متوفى من الله ، تغيير المناد معلود واد المعرف أي وت وسود علامه عليم فيخ فتطاوى و برى معرى موقى من في الد الحوابي تغير القرآن المكتب تلاملاميه رياض ١٧٠٠ في اشرف على تعانوي محتوفي الاسلام أيان القرآن مسلومه يكرج كميني كالاور اسمه سيد محر فيم الدين مراد آبادي متوفي عاسلات تراش العرفان معلموعه بأج كهني لينذ الدور ١٣٧٠ في محود الحن ديوريدي معزفيه ١٠٠٠ معد وفي شبيرا مرعني معزن معن ماشية القرآن معلور يكري كمين لينذ كا مور ١٧٣٠ علامه محرطا برين عاشور استونى ٨٠ ١١٠٠ التحرير داستور معطبوم ونس ١٧٧٠ ميد محر تطب شهيد موني ٨٥ ٣٠٠ أن قلال القرآن معلمور واراحياء الراث العلي موت ٢٠١١ ١٣٥- مفتى احديار خان تعيى منوني إلا ملاء الور العرفان معطيوندوار الكتنب الاسلامية المجرات الهاد منتي ورشيع ديوبندي متوفي ١٩٠١ معارف القرآن معلويد اوارة المعارف الراحي عامله ٢٧٤- سيد الوالاعلى مودودي متوني به المهد، تنسيم التركان معطبومه أداره ترجمان القرآن كابور ١٣٨- علامه سيد احمد سعيد كاظمى ممتوني ١٠ مهامه النبيان معطبونه كاظمى يبلى كيشتر مكالن ١٨٠٩- علامه محدامين بن محر محار بمكني شعيفي اضواء البيان المطبور عالم الكتب بيردت ١٥٠ استاداح مصطفى الراقي تغير الرافي مطبور دارا حياء التراث العربي بيدت الله آيت لله مكارم شيرازي تنبيرنمونه معلويدار الكتب الاسلاميه مي ان ١٩٠٣مه ١٥٢- جسنس بيركرم شادلااز برى نفياء القرآن مطبوعه فياء القرآن على كيشيز الامور ١٥٠٠ في امن احس اصلاحي مقرع آن معلومة، ان فاؤيريش الامور سه علامه محود صافي اعراب الترآن و صرف و بيانه مسطوع انتشاد است ذرين الران ١٥٥٠ استاذ مي الدين درويش اعراب القرآن ديانه معليومدار اين كثير بيوت ١٥١- وُاكْرُومب زَجِلَى "تغييرمنيرمطور دارانكر "يوت مياسي عصا معيد حوى الاساس في التغيير معطيوعد وارالسلام کتب علوم قرآن ١٥٨- علامه بود الدين محمرين عبد الله ذر كشي متوفى مهديد البرحان في علوم القر أن معطبوعه دار العكر "بيروت ١٥٩- علامه جلال الدين سيد على متوليه و الناتة بن في علوم المقر أن مسلبوير مسيل أكيد مي الابور ١١٠- علامه محد وبدالعظيم زر كافي مناتل العرفان بمطبوعة واراحياه الزاع العراب بيوت كتب شروح حديث ٢٤- حافظ ابو حمدد ابن عبد البراكل منوني ١٢٠ سمه الناسنة كار معلور مؤسسة الرسار ميديت مساسمه ١١٢- مانظ أبو حمرد ابن حيد البراكلي متوني ١٧٠٠ من متميد معطبوند مكتب القدوسيد كلابور مه مهايد ١٩٦٠- علامدابوالوليد سليمكن بن طلف بالى الركسي منول الاسهد المستقى مسلبور مطيح السلوة معرمه ووسعه ١٧٣٠ علامدايو بكرهمة بن عبدالله ابن العربي الكي منوفي ٢٧٥٠ عاد ضة الاحوذي معطوعد واراحياء الراش العربي بيروت كاسماء

١٤٥- المام عبد التقيم بن عبد القوى منذرى متوتى ١٥٠ ه الخقرسن ابوداؤد معليومدوار المعرفد ويروت نبيان القر آن

١٢١٠ حافظ علامد الوالعباس احتدين عمراير اجيم القرطبي المترقي اهامه والمتعمم شرح مسلم معطبوند داراين كثير بيروت كالملاء ١١٠- علامه يخي بن شرف نووي متوفي ا علامه اشرح مسلم معطوعه مكتب زاد مصطفي الباز عامد ١٩٨٠- علامه شرف الدين حسين بن محراطين متوفي ١٧٨ه و مشرح الليبي معطبور اوارة القرآن ١١١٠هـ ٢١٩- علامدانو موالله محرين ظفه وشتاني إلياكل موني ٨ ١٨٠ أكال المثل المعظم معطبور وار الكتب العلي يروت ٥١٧ه ١٠٤٠ حافظ شهاب الدين الدين اليرين عجر عسقلاني متونى عنهمه وهج الباري معلويدوار نشرالكتب الاسلاميه كاجور الوسمام الماء حافظ بدرالدين محمودين إحريين منفي منتوفي ٥٥٥ مد عمرة القارى بمعلوند ادارة اللباعة المنيرية معمر ١٨٧ نهام ١٢١٠ علامه محرين محرسنوى أكلي متونى ١٨٥٥ مكمل أكمال المعلم معطبون وار الكتب العليد بيروت ١٥١١ه ١٤١٠ تلامداجر تسطاني المتوفي عامة ارشاد الساري معطيور ملبعه ميت معراه ما الدراء علامد حيد الرؤف مناوى شافعي امتونى المعالد الميل القدير المعلود وار المعرف اليروت المعلام هدا علامه عبد الرؤف مناوى شافعي منوفى منه شرح الثماكل معليور فور محراصح المطالع بحراجي ١١١١- علامه على بن سلطان محد القارى منوفي ١١١٠ مد بحمد الوسائل معطبور تور محد المسح المطابع مراحي ١٤٤ علامه على بن سلطان محراها دى منول بهه بعد شرح مندال حنيفه مسطبور داد الكتب النغيد ببيوت ٥٠ -١٠٠٠ ٨٨٠ - علامه على بن سلطان عمر القارى امتوني ١٢٠ عند الحرز التمين مسلبوند مطيعة اميري الحساكر معيده معيد ١٨١٠ في حدين على بن عوشو كاني متوتى ٥٠ عد استحد الذاكرين معطوعه مطبع مصطفى البالي دلولان اسعرا ٥٠ سام ١٨٠ في عبد الحق مدد داوى مونى ٥٠ مبعد اشعن اللمطات معطبور معبدتي كالم الكسن ١٨١٠ في عبد الرحل مبادك بورى متوفى ١٠٦٥ المد التحفة الاحوذي مطبوعه فشر المستر الملكن ١٨٦- فيخ الورشاء تشميري متوفى ١٣٥١ العطيض البارى معطبوعه مطيع توازى معر ٢٥٥ سلام ١٨١٠ في شبيرا حد على منوني ١١٠١ه والتي الملم معلمور مكتبد الحاز الراحي ١٨٨٠ في فيرادريس كار حلوى استوفى ١٩٠٠ من التعليق السي معلوير كتب عاديد الامور كت اماء الرحال ١٨٥- علامد الوالفرج عبد الرحمن بن على جوزى متوتى ٢٠٥٠ الملك المتناهيد بمطبوعه مكتنيد الربيه مليعل آياد م ١٨٠٠ ٨٨٠- مافظ جمال لادين ابوالحجاج بوسف مزى متوفى ٢٨٢ه و تنذيب الكمال بسطيوند وارالفكر كيروت مهمهما ١٨٥- علامه مشس الدين محرين احدة بي متونى ٨ حدد ميزان الاعتدال معلود وارالكتب العليد بيوت ١٣٠٧ ١٨٨- مانظ شاب الدين احدين على بن جرعسقان في معنى معمد التفصي التنذيب معطبويد وار الكتب العليد ووات كالمعمد ١٨٩- حافظ شهاب الدين احمد بن على بن حجر مسقلاتي منوني ١٥٨٥ ، تقريب التهذيب معطبوعه وارالكتب العلميه ابيروت اسهمها ١٩٠ علامه على بن سلطان محدالقاري المتوفي معاسد موضوعات كبير معطوير مطبع بينياتي ولي 144 علامراسا عيل بن جماوالجو جرى متوفى 14 سام معلوم دار العلم ميروت معهد سام ١٩٢- علامه حسين بن محدد اغب اصفه لل ممتوني ١٠٥٠ المغروات معطوعه المكتبه المرتضويه مران ١٣٢ ١١٠ ١٩٢٠ علامه جارالله محودين ممز معفضوى متوقى ١٨٠٠٥ الغائق معليور دار الكتب الفليه أبيروت ٢١٠١٠

١٩٨٠ علامه مجرين اثيرالجزري متوفى ١٠٧٥ وتهايد معلويه مؤسسة مطبوعات ايران مهرساه 490- علامد يحي بن شرف نووي موفى الماه المذيب الا عادد اللغات معطبوعد دار الكتب العلمية أبيروت ١٩٦٠ علامه جمال الدين محدين محرم بن منظور افريق ممتوني النامة السمان العرب معلموعه فشرادب الحوذة ، قم مجريان ٥٠ معلمة ١٩١٤ عادم عد الدين عمر بن يعقوب فيروز آبادي معتونى علام التعاموس الحيط معطبوعه واراحياء الراح العربي اليروت ١٩٨٠ علامه محرطا برمد مين معوني ١٨٨ه و بجع بحار الانوار معطبور كتيدوار ظائمان عريد منوره ١٥١٨ه ١٩٩- على سيد تورم رتعني حيني زيدي متوفي ١٠٥ تاه مناح المعوس معلود الملبد الخيرية معمر ١٠٠٠ لو كيس معلوف اليسوى المنجد المطبور المطبعة الغالة ليكه البروت كالمسلام ١٠١٠ في غلام أحدر وير ممتوفى ٥٠ مليد الغات القرآن معطوعه اواره طلوع املام الابور ٢٠٢٠ ابوليم عبدالكيم خان نشر جالند حرى مخائد اللغات مسلبور حار ايذ يميني كابور لتب باردخ مسرت و فضائل ١٠١٠ لهم عبد الملك دين وشام منوتي ١١٧ه مليرة النبوي معطبوعه وارا دياء الراث العربي كردت ماسماء مهدم المام محدان معد مول ١٣٠٥ اللبقات الكبرى مطبوع وارصادر بيروت ١٨٨٠ ١١٠ ٢٠٥٠ الم الوجعفر محرين جرير طبري متوتى والهد المريخ الام والملوك معطور واراهكم أبيروت ٢٠٧- حافظ الإعمد بوسف بن عبد للله بن عجد بن عبد البريمة في ١٠٠٠ من كلاستيماب معطبون. وار الفكر "وروت ٢٠٠٤- قاضي مياش عن موك ألى استونى جهيده الانفاء مطبوعه وارا أفكر أبيروت الاناهم ٢٠٨- على مدايو القامم عبد الرحمن بن عبد الله مسيل متوفي الاهمة الردض المانف مكتبه فاروقيه ملكن ١٠٠٠- علامه حبد الرجمان بن على جوزي متوفى عصصه مينوقا مطبوعه مكتبد نوريه وشوبه المحمر ١١٠٠ علامه ابوالحس على بن الي الكرم السيداني المعروف بابن الاخير متوتى - ١٠٠٠ ما العابه معطبومه دار الفكر بيروت ١٠٠ علامد الدالحن على بن الي الكرم الشيه بل المعروف بابن الاثير متوفى ١٧٠ ما الكال في الأرع مسطوعه دار الكتب العرب أبيروت ١١٢- كلامه مش الدين احمد بن محد بن الي بكرين ملكن "منو في احد" وفيات الاحرين "مطبور منشورات الشريف الرمني المران ١٧١٠- حافظ عماد الدين اساعيل عن عمرين كثير شافعي المتوفي موسات البدائيد والتهايية معطيوي وارالفكر اليروت المهامين ١٦٧٠ حافظ شماب الدين احمد بن على بن جرعسقله أي شافعي منوني ١٥٥٨مه محلاصابه معطبوعه وار انفكر اليروت ۱۶۵- حافظ نور الدين على بن احمد مهودي منوفي 40 ما دفاء الوفاء معطيويد وأراحياء الزاث العربي ميروت أو سمامه ١١٧- علامداحد تسعلان متول معهد والمواهب اللديمة معطبوندوار الكتب العلمية بيروت ١١٤- علامه محدين يوسف الصالحي الشاي منوفي ٢٠٠٠ مد مهل العدي والرشاد معلجوعه وار الكتب المعليد أبيروت المعاصلة ٢١٨- علامد احد بن جركي شافعي منوني مويره والعبواعق الحرقة معطبور مكتبد المقاهرو ٥٥٠ الده ١١٩- علامه على بن سلطان محرالفاري ممتوني ١٨٠ه مثرح الشفاء معطيور واد الفكر البروت ٠٢٠٠ شيخ عبد الحق محدث دالوي ممتولي ٢٥٠ الدي النبوت معطيوير كمتبه نوريه وضويه "محمر ١٢٦٠ علامه الترشاب الدين خفاتي ممتوني والمهد وتعيم الرياض معطويه وارالفكر ميوت ٢٢٢- علامه محد عبد الباتي ذر قاني متوفي ١٩١٠ من شرح الموابب اللدنية معطبور دار الفكر بيروت معهم ١١٠٠

-rrr- في اشرف على تعانوى ممتونى المسلام الشراطيب معلموم آج ميني لميند الراجي كتب نقه حقي ٣٢٣٠ مش الائمه محد بن احمد سرخي متوني ١٨٣ مه البسوط المطبوعه وزار المعرف البروت ١٨٠ معه ٢٢٥- منس الاتمه محدين احمد سرخي موني ١٨٣ مه اشرح سركير مسلوعه المكتيه الثورة الناسلامية افغانستان ٥٠ ١١٠٠ ٢١٧- علامه طاجرين عبد الرشيد عارى منوفى ٢٠٥٥ فلامة النتاوى مطبوعه امير أكيدى كابور عه مااه ١٧٧٠ علامه الويكرين مسعود كالماني متوفى ١٨٥٥ بدائع العنائع معلويه الي اليم معيد اليزكيني مدمهد ٢٢٨- علامه حسين بن منعود لوذجندي منوني ١٩٨٥ مقادي قامني خال معلمور ملبعد كبري البيريد يولاق معر ما ١٩٨٠ ٢٢٩- علامه الإالحن على بن الي بمر مرضيناني "متوفي ميهن عد اليه اولين و آخرين معطبوعه شركت علميه "ملكن ٢٣٠- علامه محمين محود بايرتي متولى ١٨٥ مد منايه معلومه دار الكتب العلميه بيروت كاسماء ٢٧٦- علامه عالم بن العلاء انصاري دبلوي متولي ١٨٧ه فقادي آثار خانيه منطبوعه ادارة القرآن كراجي الاسلام ٢٣٢- علامدايو بكرين على مداو متونى ١٠٠٠ الجويرة التيره مطبوعه مكتبدار اويه المكان ١٣٦٠ علامه محرشاب الدين عن يزازكون استونى علامه الكوئ يزازيه معطور مطيح كبرى اميريه مجولاق معرامات ١٣٢٠ علامه بدر الدين محمود تن احمد يمنى المتونى ٥٨٥٥ بنايه معطبوعد دار الفكر "بيوت" ١٣١١ ١٣٥٥ علامه كمل الدين بن علم مول ٨١٠ وفق القدر مطبور والكنب العلم ويوت ١٥١١ه ٢٣٦- علامه جلال الدين خوار زي محفليه مكتبه نوريد رضويه محمر ٢٣٧- علامد معين الدين المروى المعروف بدهر لامسكين استونى ١٥٥٠ والكوم ملبور ععيد المعارف المعرب معمر ١٨٥٠ الله ١٣٨٠ علامه ابراهيم بن محرملي متونى ١٥٠ و منيته المستملي معلويه مهيل أكيدي الابور موسي ١٣٩٠ علامدابراهيم بن محرملي متوفي ١٥٥ عاصفيري معليور مير وكتب خاند الراجي-١٢٠٠ علامه مجر فراساني متوني ١١٧ه عامع الرموز المطبور مطبع منتي نوا كتشور ١٢٠٠ ١٢٨٠ علاصدة بن الدين تن فيم منونى مده المرارائي مطبور مليد عليه معراسيد ٢٢٧٠ علامه الوالسود محرين محر عمادي متوفى ١٨٨٥ و واشيه الوسعود على طامسكين مطبوع ععية المعارف المعرب معر ١٨٨٠ ٣٢٣- علامه حالدين على تونوى دوى موقى ١٨٥٥ و الأولى حارب معطيوير مطيعه محت معمر ١٣١٥ و ٣٣٣٠ علامه خيرالدين ريلي متوفي ٨٥ واله "فأويل خيريه مسطيوير مطيعه ميينه مسعم " اسبيعه ٢٣٥- علامه علاه فلدين محدين على بن محر حسكني متوتى ٨٨ مله الدر الخار معلويد واراحيا والتراث العربي بيروت ٢٠٠٠ ٢١٧٦- علامه سيداحم بن محرجوى متوفى ١٩٥٨من مغز عيون البصار بمطبوعددار الكتاب العرب اليوت ع معلد ٢٣٤- مانظام الدين متوفى ١٧١٥ و تأوي عالم كيرى مطبوعه مطبح كبرى اميريه بولاق معر ١٠٠٠ ١٢٨٠ علامه سيد محراص أبن علدين شاي متوفى عن بهد منحد الحالق معطبور معبد علميه معرالا الد ١٢٧٩- علامه سيد محراجين ابن علدين شامي منوفي ٢٥٠ عدم استعي العناوي الحلديه معطبوعه وارالا شاعر العربي موسد ٢٥٠- علامه سيد محرائين اين علدين شاي مونى ٢٥٠ عد ورما كل اين علدين معطور ميل أكيدى كابور ٢٩٠ ١٥١٠- علامه سيد محمد التن عليدين شاى متوفى ٢٥ مد "روافعتار معلموم واراحياء الراث العرلي وروت " ٢٥٠ ملاه

٢٥١- علامد الوائحسين على من محرصيب اوردى شافعي متوفي من محمد الحادى الكبير معطوعد دار الفكر ميروت معامله

٢٥٤- علامد الواسحال شيرازي متوني ٥٥ مهد المنزب معطيون واراطم ويروت ميه سواء

٢٥٨- المام محرين فير غرالي ممتوفي ٥٠٥ ما حياء علوم الدين معلموعد دار الخير بيروت الماساء

٢٥٩- علامه يخي بن شرف نودي متوفي ١٤٧ مد شرح المهذب معطيويد داد الفكر أيروت

١٢٠٠ علامه يخي بن شرف نووي متوفي اعلامه أروط الطاليين معطيور كتب اسلاي بيروت ٥٥٠ ملاء

١٣٧٠ علامه جلال الدين سيوهي متوفي ١١٥ من الحاوي للنتاوي معطور يكتبه نوريد رضويه اليعل آباد

١٧١٠ علامه مش الدين محرس الي العباس ولي متوفى مروجه المد تماية المحتاج معطيور وار الكتب العليد أبيروت مهامه

۱۷۹۰ علامه ابدانسیاء علی بن علی شرایل متوفی ۱۸۰۱ ماشید ابدانسیاه علی نمایته المتناج معطبور دار الکتب العلمیه میروت

كتب فقه مالكي

١٧٨٠ المام منون عن معيد توفى الكي متولى ٥٠ مد المدونة الكرى مطبوعه واداميا والرائ العربي بيروت

١٧٥٠ كامنى الوالوليد في بن احمد بن رشد مالكي الدكري موفى ١٨٥٥ يدارت البتيد معطوع دار الفكر ميروت

١٢٦٠ علامه ظليل بن اسحاق اللي امتوفى ١٤٧٥ مختر ظليل المطبوع وارصادر بيروت

١٧٦٠ علامدابو عبدالله عمرين محرالهاب المغربي النوقي محامد موابب الجليل معطوعه كتبدالجاح عليها

١٣٧٨- علامد على بن عبد الله على الخرش المتونى المعد الخرش على مختر خليل معلمومد ارصادر "بيروت

١٣١٠ علامه أبو البركات احدوروم ماكلي متوفى عادو الشرح الكبير معلوعه وأرالفكر بيروت

٢٤٠- علامه من الدين محدين عرف دموتي منوفي الله و ماشيد الدموتي على الشرع الكبير معلموعد وارا أفكو أيروت كنت فقد حقيق

اعلامه علامه موفق الدين عيد الله بن احمد بن الدائد منوني واله والمغني معلموعه دار الفكر اليروت ٥٠ ما

١٧٢٠ علامه موفق الدين عبد للله بن احمد بن تدامه متونى و ١١٠ الكاني مطبوعه دار الكتب العلميد ميوت مهاها

٣٤٣- فيخ ابواله إلى تعلى الدين بن جير متوفى ١٧٤ه المجمور الفتاوي مطبور وياض

مبريرة علامد ابوالحسين على بن سليمان مرداوي متولى عدمه الانصاف معلمومدار احياه التراث العربي أبيوت ٢٠ مهدمه كالتسميد

٢٧٦- فيخ ابوجعفر محدن يعقوب كليني ممتوني ٢٣٩ه الاصول من الكاني معلمور داد الكتب الاسلاميه منهران ٢٧١- فيخ ابوجعفر محدين يعقوب كليني ممتوفي ٢٣٩ه الفروع من الكاني معلمور داد الكتب الاسلاميه متران ٢٧٤- فيخ كمال الدين ميثم بن على بن ميثم البحراني المتوفي ١٨٥ه والشرع نبح البلاغة معلمور مؤسسة الصر بحران ٢٨٠ه

غيان القر أن

۱۷۸- ملایا قربن محر تق مجلس مونی ملاد من الیقین مطبور خیابان نامر خرد مجران ۱۳۷۲ ۱۳۵۰ ۱۷۷- ملایا قربن محر تق مجلس مونی ۱۳۵۰ میات القلوب مطبور کنک فردشت اسلامیه متران ۱۲۷۹- ملایا قربن محر تق مجلس متونی ۱۳۵۰ میات القلوب مطبور کنک فردشت اسلامیه متران

٠٨٠ الم عمر من محد فرال استوفى ٥٠٥ المنتقد من الفقال اسطيور الموراه ١٣٠٥

١٨١- على معدالدين مسعودين عمر تغتازاني متوني الايد الشرح مقائد نسفي معليور تورعيرا اسح الطالع الراحي

١٨٢٠ علامه سعد الدين مسعودين عمر تغتاز اني متوفيه عدية شرح التقاصد معطبور منشود استالشريف الرضي الرياح ومعديد

٣٨٣- علامه ميرسيد شريف على بن تحرير جانى منونى ٨٨٠ شرح الموافق معلبور منشود است الشريف الرمني ممر إن ٢٥٠ ١١٨٥

١٨٨٠- علامه كمال الدين بن علم متوفى ١٨٠ عسائره معطور ملبعه السعادة معر

٢٨٥- علامه كمال الدين محدان محدال موالسود فسيابن الي الشريف الشافعي المتوفى واحد مسامره معطبوير معبد المعادة معر

٢٨٧- علامد على بن سلطان محرالقارى المتونى مود الد الرح فقد أكبر معطور مطيع مصطفى البالي واولاده معر 20 مود

١٨٠٠ علامه سيد فير فيم الدين مراد آبادي مولى علمهد الكب المنقائد معطور بابداد حرم ببالشك مين الراجي

كتب اصول فقه

١٨٨- علامه علاء الدين عبد العزيزين احر البحاري كالتوفي ١٠٥٥ و التفسالا مراد معلوم وار الكتاب العملي ١١٩١١

١٢٨٩- علامد محب الله بمارى منوفى ١١٨٥ بمسلم البوت معلود كمتب اسلاميه مويد

١٩٥٠- علامداح جونوري متوفى ١١٠٠ تورالالوار مطبور الج ايم معيد ايد كيني اراحي

٢٩١- علامد عبد الحق فيرة باوى منوفى ما الله الشرح مسلم الثبوت معلوم مكتبد اسلاميه الويد

كت متفرقه

١٩٩٠ في الوطالب في من الحس الحي المتوني ١٨٠ وي وت القلوب معلور ملبد معرد معري مهد

١٩٣٠ الم ابو ملد همة من محد فرال منول ٥٠٥ من احياء علوم الدين اسطبوعد وارالخير أيروت مها ملاء

١٩٨٠ علامه الوعيد الله محدون احد ماكلي قرطبي متوفي ١٢٨ و الانذكر اسطبور واد الكنب العلميه ويوت الدميد

١٩٥٠ في تقل الدين احمد من حيد منبل مون ١٧٥٥ و الده والملد معلود كتد قابره امعر الا ١٩٠٠

٢٩٧٠ علامه على الدين عجد بن احد ذهبي معوفي ٨ مهدم الكبار معطوعه واراعظ العربي الاجره معر

٢٩٤- علامد عبدالله بن أسد يافعي اعتوفي ١٧٨ عدة وض الرياصين اسطيوير مطبع مصطفي البالي واولاده معرفهم يسعد

١٩٨٠ علار ميرميد شريف على بن محرج مباني متونى ١٨٨ م محمل التويقات معلجوم السبع الخير معمر ٢٠ معد

144- علامداحد بن جريتي كي منوني اعده الصواحل الحرقة مطبوعه كمتبد القايره ١٨٥٠ المد

٠٠٠٠ علامداحين تجريتي كي موني المعامد الزواج المطيور وارالكتب العليه الدوت مهاجله

١٠٠٠ - المام احد من عدى محدد الف والى موقى ماسوسات كالمربين معطوع مديد وبالتنك كميني الراحي ويسا

٣٠٢- علامه سيد فيرين فيرم رتضني حيني زيدي حنى موتى ٥٠٠ه متحاف السادة المنتقين مطبوعه ملبد معر اسعام

٣٠٠ في رشيد احد منكوى استونى ١٠٠٠ الله يل رشيديه كال معلمور عد سعيد ايند سرارا جي

مهمه علامد مصطفى من عبد فند الثير بحالي فليغه أكثف اللنون معلم وعد ملبع اسلاميه علموان ٢٠٠٠

۱۳۰۵- انام احد د ضاقادری مونی ۱۳۰۵ مدید الملنوظ مطبور نوری کتب خانه کابور ۱۳۰۷- شخط د بدالران مونی ۱۳۰۷ مدید المدی معلور مود پریس دیل ۱۳۰۵ مده ۱۳۰۵ مده المدی معلور میود پریس دیل ۱۳۰۵ مود ۱۳۰۷- شخط اشرف علی تفانوی مونی ۱۳۳۶ مده منظ الایمان معلومه ناشران قرآن لینز کابود ۱۳۰۸- شخط اشرف علی تفانوی مونی ۱۳۳۶ مده منظ الایمان معلومه مکتبه تفانوی اگراچی ۱۳۰۸- علامه عبد المحکیم شرف قادری نششیندی منداه یاد سول الله معلومه مرکزی مجلس دخلایود ایم ۱۳۰۹-



سرثيفكيث

یں نے جیان القر آن جلد سوئم تصنیف شیخ الحدیث علامہ غلام رسول سعیدی، مطبوعہ فرید بھہ سٹال اُر دوبازار لاہور کے پروف بھور پڑھے ہیں۔میری وانست کے مطابق اس تغییر کے متن اور تغییر بین درج آیات قرآنی کے الفاظ اور اعراب میں کوئی غلطی جیس ہے۔ میں نے الحمیران کے احدید سر تلیف کیدٹ جاری کیا ہے۔

جراد ایم لینی ظهور احد قینی

WWW.NAFSEISLAM.COM